मरुदेव१०२ तास बिक्रम सहित सु नत्तत्र१०३ तस तस त
किन्नर १०४ सु गौड अर्जुन*दमन करन गोग चहुवान

(पादाकुलकम्)

किन्नर+अंगज अंतरिच्छ१०५हुव,तास सुवर्ण१०६तास
तसवृहद्राज१०८तासधर्म्मी१०९सुत,तासकृतंजय११०
सुद्धोदन११२ताकै तस राहुल११३,तस प्रसेनजित११४हुव
च्छुदक११५तास तास कुंडक११६यह, विद्यमान तव स्वसुर
यासागरसन अतुलरत्न दुव२,तनय सुरथ११७।१तनयाँ
जो वसुदेव६८ रावरी दुलहनि, होवहु यह रानिन चूँडाम
इम विकुच्छि७१अन्वय तुम जानहु,अबनिमि७२अन्वय प्र
निमि७इक्ष्वाकु६तनूज धर्म हित,मख आरंभिय अब्द सह
करन लग्यो गुरुकौं होता जब, काहिय वसिष्ट स्वर्ग जे
बरख पंचसत ५००मित मख रचितहैं, पहिलैं इंद्र बुलाये
वह मखकरि पूरन हुतं ऐहौं, विधिजुत पुनि तव सवहु
यह कहि गये वसिष्ट सुरालय, नृपहिं बिलंब रुच्यो न
गोतम मुनि बुलवाय सत्र किय, दिवसंव करि गुरु आ
मन्न्यौं इतर मोहि तजि जातैं, होहु विदेह भूप निमि ता
नृप हो सुप्त सुनी न सु बानी, पुनि जगि इतरन कथि

*अर्जुन गौड़ का दमन करनेवाला और गोग चहुवाण का विजय
किन्नर हुआ।४।+पुत्र१पुत्र२स्तुतियोग्य।९।३बहुत गुणवाला च्छुद्रक
सो है वसुदेव चहुवाण यह तुम्हारा श्वसुर४वर्तमान है।६।५इस स
शालियों का मस्तक मणि होओ७इस प्रकार विकुच्छि का ८ वंश उ
प्रसिद्ध निमि का वंश कहता हूं१०इक्ष्वाकु के पुत्र निमि ने भ

मरुदेव१०२ तास बिक्रम सहित सु नक्षत्र१०३ तस तस त
किन्नर १०४ सु गौड अर्जुन*दमन करन गोग चहुवान

(पादाकुलकम्)

न्नर+अंगज अंतरिक्ष१०५हुव, तास सुवर्ण१०६, तास
बृहद्राज१०८ तास धर्म्मी१०९सुत, तास कृतंजय११० ता
ोदन११२ताकै तस राहुल११३, तस प्रसेनजित११४हुव
क११५तास तास कुंडक११६यह, विद्यमान तव स्वसुर
सागरसन अतुलरत्न दुव२, तनय सुरथ११७१ तनय बिल्ल
वसुदेव६८ रावरी दुलहनि, होवहु यह रानिन चूँडामा
विकुक्षि७१ अन्वय तुम जानहु, अवनिमि७२ अन्वय प्रा
मि७इक्ष्वाकु६तनूज धर्म हित, मख आरंभिय अब्द सहर
रन लग्यो गुरु को होता जब, कहिय वसिष्ठ स्वर्ग जे
ख पंचसत ५००मित मख रचिहैं, पहिलैं इंद्र बुलाये
मखकरि पूरन हुतैं ऐहौं, विधिजुत पुनि तव सवहु
कहि गये वसिष्ठ सुरालय, नृपहिं बिलंब रुच्यो न
तम मुनि बुलवाय सत्र किय, दिवसेव करि गुरु आ
न्यों इतर मोहि तजि जातैं, होहु विदेह भूप निमि त
प हो सुप्त सुनी न सु बानी, पुनि जगि इतरन कथि

*अर्जुन गौड़ का दमन करनेवाला और गोग चहुवाण का विजय
केन्नर हुआ।४।+पुत्र१पुत्र२स्तुतियोग्य।५।३बहुत गुणवाले चुद्रक
ो हे वसुदेव चहुवाण यह तुम्हारा श्वसुर४वर्तमान है।६।५इस स
ानियों का मस्तक मणि होओ७इसप्रकार विकुक्षि का ८ वंश ज
ासिद्ध निमि का वंश कहता हूं१०इक्ष्वाकु के पुत्र निमि ने ध
ार १२ वर्ष तक ११ यज्ञ करने का आरंभ किया ॥ ८ ॥ ६
के १३ शीघ्र आऊंगा १४ तेरा यज्ञ कराऊंगा १५ स्व
इतना विलंब करना नहीं रुचा और यह १
किया फिर स्वर्ग का १८ यज्ञ करके वसिष्ठ ने
छोडकर दूसरे को गुरु मानलिया इससे हे

तास नंदिवर्धन१० सुकेतु११तस, ताकै देवरात१२ उज्जल जस१९

(पज्झटिका)

हुव तनय तास वृहदुक्थ१३नाम, तस पुत्र महाबर्य१४ सु ललाम ॥
तस सुधृति१५तास हुव धृष्टकेतु१६,हर्यश्व१७तास जय१धर्म२हेतु२०
तस मरु१८प्रतिबंधक१९तास पुत्त,कृतिरथ२०तदीय बल१वीर्य२ जुत्त
तसदेवमीढ२१तसबिबुध२२जानिसुततासमहाधृति२३नाममानि२१
कृतिरात२४तास तस मूर्द्धरोम२५,तस स्वर्णरोम२६ कृतसत्रुहोम
हुव तास ह्रस्वरोमा२७नृपाल,सुव दुव२तदीय हुव बलाबिसाल२२
पहिलोसीरध्वज२८।१गुनगरीय,अनुजातकुसध्वज२८।२पुनिद्वितीय
सीरध्वज२८।१सुतहितकरनसत्र,कुखनतहोहलकरिसहकलत्र२३
कन्न्या सीतासन कढिय तत्थ, सीता२९हि नाम तस दिय समत्थ।
कन्न्या सु जनक रक्खी लडाय, जो पानि गही रघुनाथ जाय २१
रु कुसध्वजकै हुव भानुमान २९,सुत तास तस द्युम्नाऽभिधान३०
सुचि३१तासऊर्जवह३२तासजानि,सेनध्वज३३तसतसकुसि३४प्रमानि
तस रंजन३५ऋतुजित३६ नामतास,सुत तस अरिष्टनेमी३७सुभास
ताकै सतायु३८बैरिन बलीय,तस सुत सुपार्श्व३९संजय४०तदीय२

(दोहा)

संजयकै क्षेमावि४१ हुव, तास अनेना४२ पुत्र ॥
तास मीनरथ४३ सत्यरथि४४, ताकै निगमतनुत्र ॥ २७

(षट्पात्)

बीतहव्य४५ तस तनय तास उपगुरु४६ सुत जानहु ॥
तस अघसर्व४७ रु तससुभास४८ सुश्रुत४९तस मानहु ॥

कहलाया ॥ १६ ॥ १ पुत्र २ सुन्दर३ जय और धर्म का कारण ॥ २० ॥ ४
सके ॥ २१ ॥ ५ शत्रुओं का होम करनेवाला ॥ २२ ॥ ६ गुणों में भारी ७
सका छोटाभाई, जब राजा शीरध्वज पुत्र होने के अर्थ ८ यज्ञ करता
सो हल से१०स्त्री सहित९पृथ्वी को खोदता था तब११ हल की चउ (चू)
कन्या निकली जिसका नाम ही सीता दिया१२जिस से रामचन्द्र ने विव
किया ॥२४॥ २५ ॥१३ द्युम्न नामक१४उसके ॥२६॥ १५वेद का रक्षक (कवच

तास नंदिवर्धन१० सुकेतु११तस, ताकै देवरात१२ उज्जल जस॥१९

(पज्झटिका)

हुव तनय तास बृहदुक्थ१३नाम, तस पुत्र महावीर्य१४ सु ललाम[2]॥
तस सुधृति१५तास हुव धृष्टकेतु१६,हर्यश्व१७तास जय१धर्म[3]हेतु[3]२०
तस मरु१८प्रतिबंधक१९तास पुत्त,कृतिरथ२०तदीय[4] बल१वीर्य२ जुत्त
तसदेवमीढ२१तसबिबुध२२जानिसुततासमहाधृति२३नाममानि२१
कृतिरात२४तास तस मूर्द्धरोम२५,तस स्वर्णरोम२६ कृतसत्रुहोम
हुव तास ह्रस्वरोमा२७नृपाल,सुव दुव२तदीय हुव बलाबिसाल२२
पहिलोसीरध्वज२८।१गुनगरीय,अनुजातकुसध्वज२८।२पुनिद्वितीय
सीरध्वज२८।१सुतहितकरनसत्र,कुखनतहोहलकरिसहकलत्र२३
कन्न्या सीतासन कढिय तत्थ, सीता२९हि नाम तस दिय समत्थ॥
कन्न्या सु जनक रक्खी लडाय, जो पानि गही रघुनाथ जाय २४
रु कुसध्वजकै हुव भानुमान २९,सुत तास तस द्युम्नाऽभिधान३०
सुचि३१तासऊर्जबह३२तासजानि,सेनध्वज३३तसतसकुसि३४प्रमानि
तस रंजन३५ऋतुजित३६ नामतास,सुत तस अरिष्टनेमी३७सुभास
ताकै सतायु३८बैरिन बलीय,तस सुत सुपार्श्व३९संजय४०तदीय२६

(दोहा)

संजयकै क्षेमावि४१ हुव, तास अनेना४२ पुत्र ॥
तास मीनरथ४३ सत्यरथि४४, ताकै निगमतनुत्र ॥ २७ ॥

(षट्पात्)

बीतहव्य४५ तस तनय तास उपगुरु४६ सुत जानहु ॥
तस अघसर्व४७ रु तससुभास४८ सुश्रुत४९तस मानहु ॥

कहलाया ॥ १६ ॥ १ पुत्र २ सुन्दर३ जय और धर्म का कारण ॥ २० ॥ ४उसके ॥ २१ ॥ ५ शत्रुओं का होम करनेवाला ॥ २२ ॥ ६ गुणों में भारी ७ उसका छोटाभाई, जब राजा शीरध्वज पुत्र होने के अर्थ ८ यज्ञ करता था सो हल से१०स्त्री सहित९पृथ्वी को खोदता था तब११ हल की चउ (चू) से कन्या निकली जिसका नाम ही सीता दिया१२जिस से रामचन्द्र ने विवाह किया ॥२४॥ २५ ॥१३ द्युम्न नामक१४उसके ॥२६॥ १५वेद का रक्षक (कवच)

आये निकेत दुलही २ दुलह१ मच्यो हरख मिहिकावतिय
निगमोक्त पथिक वसुदेव ६८ नृप बलकरि भुग्गी बसुमतिय३३

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबंशबर्णने बसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहवेलावर्णनविषयकविवस्वद्वंशविवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशश्रीजानकीजानिजननसमुद्देशननिमि ७ बंशबर्णनसमुपयतबसुदेव ६८ बेला ६८।१ युग्म२ मिहिकावतीगमनं षट्पञ्चाशत्तमो५६ मयूखः ॥ ५६ ॥ आदितोऽष्टनवतितमः ॥ ९८ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

प्रद्योतनके बंश नंदिबर्द्धन राजा हुव ॥
मारि ताहि सिसुनागभूप लिन्नी मागध भुव ॥
इहिं अंतर बसुदेव ६८ सुरथ सालकें निज संजुत ॥
बहुरि अमल बित्थारि विदर्भदेस सु लिन्नौं द्रुत ॥
यह सुनत चढ्यो सिसुनाग इत भोजकटहि संगर भयो ॥
विनुमत्थजुज्झि बसुदेव६८नृप सुजसरक्खि सुरपुर गयो॥ १ ।

(दोहा)

अपने घर मिहकावती नामक पुर में वेद के कहेहुए मार्ग में चलनेवाले ने भूमि को बल पूर्वक भोगी ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुलकलश श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के वंश का कथन और निमि के वंश का वर्णन, विवाह करके वसुदेव और वेला का जोड़ा सहित मिहकावती जाने का छप्पनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५६ ॥ और आदि से अठानवे मयूख हुए ॥ ९८ ॥

१मगध देश की भूमि अपने२शाला सुरथ सहित३शीघ्र. विदर्भ देश को लेकर अपना अधिकार फैलाया यह सुनकर इधर से ४ शिशुनाग नामक राजा लड़ा सो ५ भोजकट नामक नगर में ही युद्ध हुआ ॥ १ ॥

आये निकेत दुलही २ दुलह१ मच्यो हरख मिहिकावतिय
निगमोक्त पथिक वसुदेव ६८ नृप बलकरि भुग्गी वसुमतिय३३

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबंशबर्णाने बसुदेव ६८ बेला ६८।१ विवाहवेलावर्णानविषयकविवस्वद्वंशाबिवर्द्धकवैवस्वतमनुतनुजनुरिक्ष्वाकु ६ पट्टपपुत्रविकुक्षि ७ कुलकलशश्रीजानकीजानिजननसमुद्देशननिमि ७ बंशबर्णानसमुपयतबसुदेव ६८ बेला ६८।२ युग्मर मिहिकावतीगमनं षट्पञ्चाशत्तमो५६ मयूखः ॥ ५६ ॥ आदितोऽष्टनवतितमः ॥ ९८ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृता मिश्रितभाषा)

(षट्पात्)

प्रद्योतनके बंश नंदिबर्द्धन राजा हुव ॥
मारि ताहि सिसुनागभूप लिन्नी मागध भुव ॥
इहिं अंतर बसुदेव ६८ सुरथ सालक निज संजुत ॥
बहुरि अमल बित्थारि विदर्भदेस सु लिन्नौं द्रुत ॥
यह सुनत चढ्यो सिसुनाग इत भोजकटहि संगर भयो ॥
विनुमत्थजुज्झि बसुदेव६८नृप सुजसरक्खि सुरपुर गयो॥ १ ॥

(दोहा)

अपने घर मिहकावती नामक पुर में वेद के कहेहुए मार्ग में चलनेवाले ने भूमि को बल पूर्वक भोगी ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव और वेला के विवाह समय के वर्णन विषय में सूर्यवंश को बढानेवाले वैवस्वत मनु के पुत्र इक्ष्वाकु के पाटवी पुत्र विकुक्षि के कुलकलश श्रीजानकी के पति (रामचन्द्र) के वंश का कथन और निमि के बंश का वर्णन, विवाह करके वसुदेव और वेला का जोड़ा सहित मिहकावती जाने का छप्पनवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ५६ ॥ और आदि से अठानवे मयूख हुए ॥ ९८ ॥

१मगध देश की भूमि अपने२शाला सुरथ सहित३शीघ्र विदर्भ देश को लेकर अपना अधिकार फैलाया यह सुनकर इधर से ४ शिशुनाग नामक राजा लड़ा सो ५ भोजकट नामक नगर में ही युद्ध हुआ ॥ १ ॥

बजिहै सुहि कछवाह बलि, याके सुतके अंस ॥ १० ॥
विश्वराज कूरम प्रमुख, भजे लरि गतभाग ॥
इनको पुर साकेत हू, छिन्निलयो सिसुनाग ॥ ११ ॥
कछुकछु भुव पाई दुहुँन२, अंतरबेदी आय ॥
कन्न्या हुव या कूर्मकैं, सुरसा७१।१गुनन निकायँ ॥१२॥
आयो ताहि विवाहि यह, सुपहु महीधर७१सूर ॥
स्वसुर कूर्म दायज दयो, पृथुल नेह वसु पूर ॥ १३ ॥
कत्सबोध हुव कूर्मकैं, तासौं कुल कछवाह ॥
विश्वराजकै पुत्र हुव, मलयराज नरनाह ॥ १४ ॥
राष्ट्रेश्वर सिव तुष्ट किय, मलयराज तपसिद्ध ॥
तिनके बर ताकैं तनय, रष्ट्रकूट हुव इद्ध ॥ १५ ॥
तासौं कुल रठोड़ यह, जानहु संभररामँ ॥
सुरसा७१।१सहित महीधर७१हु, उत जस किय उद्दामँ ॥ १६ ॥
भयो महीधरके तनय, वामदेव७२अभिधान ॥
वज्र रिपुन सुरतरु कविन, आहव१दान२अमान ॥ १७ ॥

के पुत्र से फिर कछवाहा वंश चलेगा ॥ १० ॥ विश्वराज और कूर्म १ आदि लड़कर विना चेत भागे और इनका २ अयोध्यापुर ३ शिशुनाग नामक राजा ने छीनलिया ॥ ११ ॥ ५ अन्तर्वेद में आकर (हरिद्वार से लेकर प्रयाग तक की भूमि को अन्तर्वेद कहते हैं) इन दोनों (विश्वराज और कूर्म) ने कुछ कुछ ४ भूमि पाई ६ इसी कूर्म के ७ गुणों की घर ॥ १२ ॥ ८ श्रेष्ठ राजा ९ बड़े नेह से १० धन से पूर्ण ॥ १३ ॥ इसी कूर्म के ११ कत्सबोध नामक पुत्र हुआ जिससे कछवाहा कुल कहलाया और विश्वराज के मलयराज नामक पुत्र राजा हुआ ॥ १४ ॥ मलयराज ने १२ राष्ट्रेश्वर महादेव को तप करके प्रसन्न किया (जोधपुर की ख्यात में राष्ट्रश्येना कुलदेवी के नाम से राष्ट्रकूट वंश प्रसिद्ध होना लिखा है) जिनके वर से राष्ट्रश्येन नामक १३ कान्तिमान् पुत्र हुआ ॥ १५ ॥ १९ हे चहुवाण रामसिंह! इसी राष्ट्रश्येना से १४ राठोड़ों का कुल हुआ जानो १६ निरंकुश ॥ १६ ॥ १७ वामदेव नामवाला हुआ सो शत्रुओं के लिये वज्र, कवियों के लिये १८ कल्पवृक्ष १९ युद्ध में और दान में २० अमाप (प्रमाण रहित) ॥ १७ ॥

बजिहै सुहि कछवाह बलि, याके सुतके अंस ॥ १० ॥
विश्वराज कूरम प्रमुख, भजे लरि गतभाग ॥
इनको पुर साँकेत हू, छिन्निलयो सिसुनाग ॥ ११ ॥
कछुकछु भुव पाई दुहुँनर, अंतरबेदी आय ॥
कन्न्या हुव या कूर्म्मकैं, सुरसा७१।१गुनन निकाय ॥१२॥
आयो ताहि विवाहि यह, सुपहु महीधर७१सूर ॥
स्वसुर कूर्म दायज दयो, पृथुल नेह बसुं पूर ॥ १३ ॥
कत्सबोध हुव कूर्मकै, तासौं कुल कछवाह ॥
विश्वराजकै पुत्र हुव, मलयराज नरनाह ॥ १४ ॥
राष्ट्रेश्वर सिव तुष्ट किय, मलयराज तपसिद्ध ॥
तिनके बर ताकै तनय, रष्ट्रकूट हुव इद्ध ॥ १५ ॥
तासौं कुल रट्ठोड़ यह, जानहु संभरराम ॥
सुरसा७१।१सहित महीधर७१हु, उत जस किय उद्दाम ॥ १६ ॥
भयो महीधरकै तनय, वामदेव७२अभिधान ॥
बज्र रिपुन सुरतरु कविन, आहव१दान२अमान ॥ १७ ॥

के पुत्र से फिर कछवाहा वंश बजेगा ॥ १० ॥ विश्वराज और कूर्म १ आदि लड़कर विना चेत भागे और इनका २ अयोध्यापुर ३ शिशुनाग नामक राजा ने छीनलिया ॥ ११ ॥ ५ अन्तर्वेद में आकर (हरिद्वार से लेकर प्रयाग तक की भूमि को अन्तर्वेद कहते हैं)इन दोनों(विश्वराज और कूर्म)ने कुछ कुछ ४ भूमि पाई ६ इसी कूर्म के ७ गुणों की घर ॥ १२ ॥ ८ श्रेष्ठ राजा ९ बडे नेह से १० धन से पूर्ण ॥ १३ ॥ इसी कूर्म के ११ कत्सबोध नामक पुत्र हुआ जिससे कछवाहा कुल कहलाया और विश्वराज के मलयराज नामक पुत्र राजा हुआ ॥ १४ ॥ मलयराज ने १२ राष्ट्रेश्वर महादेव को तप करके प्रसन्न किया (जोधपुर की ख्यात में राष्ट्रश्येना कुलदेवी के नाम से राष्ट्रकूट वंश प्रसिद्ध होना लिखा है) जिनके वर से राष्ट्रश्येन नामक १३ कान्तिमान् पुत्र हुआ ॥ १५ ॥ १५ हे चहुवाण रामसिंह! इसी राष्ट्रश्येना से १४ राठोड़ों का कुल हुआ जानो १६ निरंकुश ॥ १६ ॥ १७ वामदेव नामवाला हुआ सो शत्रुओं के लिये वज्र, कवियों के लिये १८ कल्पवृक्ष १९ युद्ध में और दान में २० अमाप (प्रमाण रहित) ॥ १७ ॥

रैवत मनुकुलजात पर्‍यो मरुराज महारति६॥
लाहोरभूप मदनेस७ पुनि बाहुजंकुलसंभव पर्‍यो ॥
सिबंसि सल८हु पेसोरपति कलहँ काय तिलतिल पर्‍यो ।२२।
बामदेव९ चहुवान पर्‍यो करनाट नरेश्वर ॥
चित्रसेन१० नेपालराज रविकुलभव दुद्धर ॥
कंकटसेन११ कलिंगराज ससिकुल उज्जालक ॥
तस बंसहि रनधीर१२ देस कुंतल्ल परिपालक ॥
सूकरनरेस प्रथुदेव१३ पुनि चालुकअन्वय उद्धरन ॥
तौंवर नरेस कोसंबिपति पांडवकुलभव संवरन१४ ॥ २३ ॥

(दोहा)

नत्ती कूरमभूपको, पर्‍यो वीर बुधसेन १५ ॥
इत्यादिक दस अग्गसत११०, आये काम धरेन ॥ २४॥
जुद्ध भयो अतिघोर जिम, नृप तस सुनहु निदान ॥
भूपगये सब भीमकौं, मारनहित मुलतान ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

भीमनाम तिन दिनन हुतो मुलतान महीपति॥
अर्कजनन अंगार मलिन तक्की तिहिं दुर्मति ॥
दै मिच्छनपँहँ दूत भनी इतउत हितभावहिं॥

१मनु के कुल में उत्पन्न हुआ २ब्रह्मा के हाथों से पैदा हुए क्षत्रिय कुल में जन्म लेनेवाला (क्षत्रियों के मुख्य पांच वंश मानेगये हैं अर्थात् सूर्यवंश १ चन्द्रवंश २ मनुवंश ३ बाहुजवंश ४ और५अग्निवंश) सल नामक ३ चन्द्रवंशी राजा ४ युद्ध में अपने शरीर को तिल तिल के समान करके गिरा ॥ २२ ॥ ५ कुन्तल देश की पालना करनेवाला ६ सूकर क्षेत्र का राजा ७ सोलंखी वंश का उद्धार करनेवाला ९ कौसांबी पुर का संवरण नामक पांडववंशी ८ तँवर राजा ॥ २३ ॥ राजा कूरम का १० पोता ११ राजा काम आये ॥ २४॥ जिसप्रकार यह घोर युद्ध हुआ है राजा रामसिंह उसका १२ कारण सुनो कि १३ भीम को मारने को सब राजा मुलतान में गये ॥२५॥ १४ सूर्यवंश का १५ अंगारा (जलानेवाले) उस १६ नीच ने १७ खोटी बुद्धि ताकी १८ म्लेच्छों के पास दूत भेजकर कहलाया कि हमारा और तुम्हारा दोनों का

रैवत मनुकुलजात पर्यो मरुराज महारतिङ॥
लाहोरभूप मदनेस७ पुनि बाहुजंकुलसंभव पर्यो ॥
सिबंसि सल८हु पेसोरपति कलहँ काय तिलतिल पर्यो ।२२।
बामदेव९ चहुवान पर्यो करनाट नरेश्वर ॥
चित्रसेन१० नेपालराज रविकुलभव दुद्धर ॥
कंकटसेन११ कलिंगराज ससिकुल उज्जालक ॥
तस बंसहि रनधीर१२ देस कुंतल परिपालक ॥
सूकरनरेस पृथुदेव१३ पुनि चालुक्यान्वय उद्धरन ॥
तौंवर नरेस कोसंबिपति पांडवकुलभव संवरन१४ ॥ २३ ॥

(दोहा)

नंत्ती कूरमभूपको, पर्यो बीर बुधसेन १४ ॥
इत्यादिक दस अग्गसत११०, आये काम धरेनं ॥ २४॥
जुद्ध भयो अतिघोर जिम, नृप तस सुनहु निदान ॥
भूपगये सब भीमकौं, मारनहित मुलतान ॥ २५ ॥

(षट्पात्)

भीमनाम तिन दिनन हुतो मुलतान महीपति॥
अर्कजनन अंगार मलिन तक्की तिहिं दुर्मति ॥
दै म्लिच्छनपँहँ दूत भनी इतउत हितभावहिं॥

मनु के कुल में उत्पन्न हुआ २ब्रह्मा के हाथों से पैदा हुए चत्रिय कुल में जन्म लेनेवाला (चत्रियों के मुख्य पांच वंश मानेगये हैं अर्थात् सूर्यवंश १ चन्द्रवंश २ मनुवंश ३ बाहुजवंश ४ और५अग्निवंश) सल नामक ३ चन्द्रवंशी राजा ४ युद्ध में अपने शरीर को तिल तिल के समान करके गिरा ॥ २२ ॥ ५ कुन्तल देश की पालना करनेवाला ६ सूकर चेत्र का राजा ७ सोलंखी वंश का उद्धार करनेवाला ९ कौसांबी पुर का संवरण नामक पांडववंशी ८ तँवर राजा ॥ २३ ॥ राजा कूरम का १० पोता ११ राजा काम आये ॥ २४॥ जिसप्रकार यह घोर युद्ध हुआ हे राजा रामसिंह उसका १२ कारण सुनो कि १३ भीम को मारने को सब राजा मुलतान में गये ॥२५॥ १४ सूर्यवंश का १५ अंगारा (जलानेवाले) उस १६ नीच ने १७ खोटी बुद्धि ताकी १८ म्लेच्छों के पास दूत भेजकर कहलाया कि हमारा और तुम्हारा दोनों का

तामाँहिं भूप श्रीधर७३तनय गंगाधर७४नामक भयो ॥
उत्तानदेव चालुकसुता प्रभा७४।१परनि जिहिं जस लयो ॥ २९ ॥

(दोहा)

दिष्ट[2] जोर तिनही दिनन, कनकसेन रठोर ॥
कान्यकुब्ज पत्तन[3] लयो, जत्थ रह्यो बरजोर ॥ ३० ॥

पादाकुलकम्

बसु[4] इक[5]अर्बुज१०००००००००दयो गंगाधर७४,
कीनें[6] आढ्य कवि[7]न बिबुध[8]न घर ॥
वीस२०वेर बद्रीनारायन, जाय भूप पोखे उतके जन[9] ॥३१॥
धर्म[10]अवधि कलिकाल कर्ण ध्रुव[10], महादेव७५ताके तनूज[11] हुव ॥
लोकसेन कूरमकी तनुजा[12], लक्ष्मीसेन कुमरकी अनुजा ॥ ३२ ॥
रंभा७५।१नाम लोक अभिरामाँ[13], ब्याही महादेव७५ वह बामाँ[14]॥
अश्वमेधमख[15] पुनि आरंभिय, दै भटसंग तुरंग छोरिदिय ॥ ३३ ॥
पैंसठि६५ नृपन[16] बिजय तिन पायो, इम हय फिरत मगधभुव आयो ॥
तँहँ दर्भक सिसुनागबंसभव, पाट[17]लिपुत्र नगर धरनीधव[18] ॥ ३४ ॥
जिहिं अतिबल मंडलपति[19] दुर्जय, हंकि सुभट पकरायलयो हय ॥
इतके बीर परे रनअंकुर[20], मिहिकावती कतिक आये मुरि ॥३५॥

१पुत्र २भाग्य के बल से ३कान्यकुब्ज(कन्नोज)नामक पुर को लिया वहां बलवान् होकर रहा ॥३०॥ गंगाधर चहुवाण ने एक५अर्ब४धन दिया जिससे कवियों के और ७ पण्डितों के घर ६ धनवान होगये ८ उधर के मनुष्यों का पालन किया॥३१॥ गंगाधर के धर्म की ९ सीमा और कलियुग १० का निश्चै ही कर्ण. महादेव नामक ११ पुत्र हुआ १२ पुत्री ॥ ३२ ॥१३ संसार भर में मनोहर १४ स्त्री १५ यज्ञ ॥ ३३ ॥१६ पैंसठ राजाओं से जिसने विजय पाया और इसप्रकार वह घोड़ा फिरता हुआ मगधदेश की भूमि में आया वहां पर शिशुनाग नामक राजा के वंश में जन्म लेनेवाला दर्भक नामक १७ पटना का १८ राजा ॥ ३४ ॥ १९ मंडलीक "चतुर्योजनपर्यन्तमधिकारो नृपस्य च ॥ यो राजा तच्छतगुणः स एव मण्डलेश्वरः॥"(सोलह कोश वर्गात्मक भूमि जिसके अधिकार में होवे वह नृप तथा राजा कहलाता है इससे सौ गुणी भूमि जिसके अधिकार में होवे वह मंडलेश्वर है)२०युद्ध में

तामाँहिँ भूप श्रीधर७३तनय गंगाधर७४नामक भयो ॥
उत्तानदेव चालुकसुता प्रभा७४।१परनि जिहिँ जस लयो ॥ २९ ।

(दोहा)

दिष्ट[2] जोर तिनही दिनन, कनकसेन रठोर ॥
कान्यकुब्ज पत्तन[3] लयो, जत्थ रह्यो बरजोर ॥ ३० ॥

पादाकुलकम्

बसु[4] इकअब्ज[5]१००००००००० दयो गंगाधर७४,
कीनैं आढ्य[6] कवि[7]न बिबुध[8]न घर ॥
वीस२०वेर बद्रीनारायन, जाय भूप पोखे उतके जन[8] ॥३१॥
धर्मअवधि[9] कलिकाल कर्ण[10] ध्रुव,महादेव७५ताके तनूज[11] हुव ॥
लोकसेन कूरमकी तनुजा[12], लक्ष्मीसेन कुमरकी अनुजा ॥ ३२ ॥
रंभा७५।१नाम लोक अभिरामा[13],व्याही महादेव७५ वह बामा[14]॥
अश्वमेधमख[15] पुनि आरंभिय, दै भटसंग तुरंग छोरिदिय ॥ ३३ ॥
पैंसठि६५ नृपन[16] बिजय तिन पायो,इम हय फिरत मगधभुव आयो ॥
तँहँ दर्भक सिसुनागबंसभव, पाट[17]लिपुत्र नगर धरनीधव[18] ॥ ३४ ॥
जिहिँ अतिबल मंडलपति[19] दुर्जय,हंकि सुभट पकरायलयो हय ॥
इतके बीर परे रनअंकुर[20], मिहिकावती कतिक आये मुरि ॥३५॥

१पुत्र२भाग्य के बल से३कान्यकुब्ज(कन्नोज)नामक पुर को लिया वहां बलवान् होकर रहा ॥३०॥ गंगाधर चहुवाण ने एक५अर्ब४धन दिया जिससे कवियों के और ७ पण्डितों के घर ६ धनवान होगये ८ उधर के मनुष्यों का पालन किया॥३१॥ गंगाधर के धर्म की ९ सीमा और कलियुग १० का निश्चै ही कर्ण. महादेव नामक ११ पुत्र हुआ १२ पुत्री ॥ ३२ ॥१३ संसार भर में मनोहर १४ स्त्री १५ यज्ञ ॥ ३३ ॥१६ पैंसठ राजाओं से जिसने विजय पाया और इसप्रकार वह घोड़ा फिरता हुआ मगधदेश की भूमि में आया वहां पर शिशुनाग नामक राजा के वंश में जन्म लेनेवाला दर्भक नामक १७ पटना का १८ राजा ॥ ३४ ॥ १९ मंडलीक " चतुर्योजनपर्यन्तमधिकारी नृपस्य च ॥ यो राजा तच्छतगुणः स एव मण्डलेश्वरः॥"(सोलह कोश वर्गात्मक भूमि जिसके अधिकार में होवे वह नृप तथा राजा कहलाता है इससे सौ गुणी भूमि जिसके अधिकार में होवे वह मंडलेश्वर है)२०युद्ध में

रविअन्वय नेपाल नृप, दुर्गसेन की दोय१ ॥
सुता स्वयंबरतैं हरी, हठी स्वयंबर होय ॥ ४४ ॥
बंगराज रबिदेव मुख, जित्ते सब नृप जंग ॥
अर्प्पं परनि दुव२अंगना, आयो निलय अभंग ॥ ४५ ॥
पहिली१मन्न्या७७१नाम पटु, धन्न्या७७।२अपरा धन्य ॥
निपुन रम्यौं बहुकाल नृप, इनजुत रसिक अनन्यँ ॥ ४६ ॥
मन्न्यामैं नृप मान७७सौं, भयउ चक्रधर७८पुत्र ॥
अहित कडंगरको अनल, गो१द्विज२धर्म३तनुत्र ॥ ४७ ॥
सूकरपति चालुक्यनृप, मल्लदेव तनया सु ॥
परनि राम राधा७८।१प्रिया, आयो निजगृह आसु ॥ ४८ ॥
उपयमतैं चोथी४निसहि, राधा७८।१धारिय गर्भ ॥
नहिंतो कुल अजपालके, रहतो इक्क१न अर्भ ॥ ४९ ॥

[पादाकुलकम्]

कुल सिसुनाग नंदिबर्द्धन सुव, मागधराज महानंदी हुव ॥
दासीजठरज नंद भयो तस, सो यँहँ करन लगो सबको बस ५०

(षट्पात्)

महापद्म उपटंक नंद मगधेस महाबल ॥
पाटलिपुत्र नरेस भयो तिन दिनन बिजैफल ॥
परसुराम यह अपर लग्यो छत्रियकुल मारन ॥

१सूर्यवंशी पुत्रियों को २ अपने मन से आपही पति हो कर ॥ ४४ ॥ ३बंगाले के राजा रविदेव को आदि देकर ४आप दोनों स्त्रियों को परण कर घर आया ॥ ४५ ॥ ५चतुर ६दूसरी ७अद्वितीय रसिक ॥ ४६ ॥ ८शत्रुओं रूपी तुस(वुस)का अग्नि ९कवच ॥ ४७ ॥ १०शीघ्र ॥ ४८ ॥ विवाह करने से चौथी रात्रि में ही गर्भ धारण करलिया नहीं तो अजयपाल के कुल में एक भी बालक नहीं रहता ॥ ४९ ॥ शिशुनाग राजा के वंश में नंदिवर्धन का पुत्र महानन्दी मगधदेश का राजा हुआ जिसके दासी के पेट से नन्द नामक पुत्र हुआ सो सब राजाओं को बश में करनेलगा ॥ ५० ॥ महापद्म की पदवी (खिताब)वाला मगधदेश का स्वामी यह नन्द बडा बलवान हुआ, वह पटना का राजा उन दिनों में विजय के फल को प्राप्त करनेवाला हुआ, क्षत्रियों के कुल को नाश करने के लिये मानों यह दूसरा ही परशुराम

रविअन्वय नेपाल नृप, दुर्गसेन की दोय२ ॥
सुता स्वयंबरतैं हरी, हठी स्वयंबर होय ॥ ४४ ॥
बंगराज रबिदेव मुख, जित्ते सब नृप जंग ॥
अप्प४ परनि दुव२अंगना, आयो निलय अभंग ॥ ४५ ॥
पहिली१मन्न्या७७।१नाम पटु, धन्न्या७७।२अपरा धन्य ॥
निपुन रम्यौ बहुकाल नृप, इनजुत रसिक अनन्य ॥ ४६ ॥
मन्न्यामैं नृप मान७७सौं, भयउ चक्रधर७८पुत्र ॥
अहित कडंगरको अनल, गो१द्विज२धर्म३तनुत्र ॥ ४७ ॥
सूकरपति चालुक्यनृप, मल्लदेव तनया सु ॥
परनि राम राधा७८।१प्रिया, आयो निजगृह आसु ॥ ४८ ॥
उपयमतैं चोथी४निसहि, राधा७८।१धारिय गर्भ ॥
नहिंतो कुल अजपालके, रहतो इक१न अर्भ ॥ ४९ ॥

[पादाकुलकम्]

कुल सिसुनाग नंदिबर्द्धन सुव, मागधराज महानंदी हुव ॥
दासीजठरज नंद भयो तस, सो यँहँ करन लगो सबको वस ५०

(षट्पात्)

महापद्म उपटंक नंद मगधेस महाबल ॥
पाटलिपुत्र नेरस भयो तिन दिनन बिजैफल॥
परसुराम यह अपर लग्यो छत्रियकुल मारन ॥

१सूर्यवंशी पुत्रियों को २ अपने मन से आपही पति हो कर ॥ ४४ ॥३बंगाले के राजा रविदेव को आदि देकर४आप दोनों स्त्रियों को परण कर घर आया॥४५॥५चतुर६दूसरी७अद्वितीय रसिक॥४६॥ ८शत्रुओं रूपी तुस(बुस)का अग्नि९कवच ॥४७॥१०शीघ्र ॥ ४८ ॥ विवाह करने से चौथी रात्रि में ही गर्भ धारण करलिया नहीं तो अजयपाल के कुल में एक भी बालक नहीं रहता ॥ ४९ ॥ शिशुनाग राजा के वंश में नंदिवर्धन का पुत्र महानन्दी मगधदेश का राजा हुआ जिसके दासी के पेट से नन्द नामक पुत्र हुआ सो सब राजाओं को बश में करनेलगा॥ ५० ॥महापद्म की पदवी (खिताब)वाला मगधदेश का स्वामी यह नन्द बडा बलवान हुआ, वह पटना का राजा उन दिनों में विजय के फल कोप्राप्त करनेवाला हुआ,चत्रियों के कुल को नाश करने के लिये मानों यह दूसरा ही परशुराम

महापद्म१००००००००००००० दल१द्रव्य२पति, वहै नंद मगधेस ॥
जासौं रन तिन दिनन जुरि, जित्यो कौन नरेस ॥ ५७ ॥
कंकन[1] हान सक्यो न कारे, चक्रधर सु चहुवान ॥
चढि धारन[2] मागध चमू, अयुत१०००० हनी अति मान ॥ ५८ ॥
करनलगी वह सहगमन, राधा[3]७८।१सुनि पति नास ॥
रोकी सब ननिहारि तँहँ, दोहदलँच्छन[4] आस[5] ॥ ५९ ॥
पाय समय प्रकट्यो तनय[6], निडर सत्रुजित७९ नाम ॥
गर्भहिमैं नृपता गही, बिंधि अक्खर गतिवाम ॥ ६० ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचंडासिवंशवर्णने बसुदेव ६८ धारातीर्थनिमज्जनश्यामदेव ६९ पद्मा ६९।१ हरिदास ७० रजनी ७०।१ परियन्त कुलकथनलाहोरयुद्धप्रत्यन्तराजनूहपलायनवामदेवादिबहुलाऽऽर्यावर्तनरेन्द्रनिपतनश्रीधर ७३ प्रतिभा ७३।१ गङ्गाधर ७४ प्रभा ७४।१ महादेव ७१ रम्भा ७५।१ ऽवधिसन्ततिसमसनप्रारब्धवाजिमेधमहादेवदर्भकरणपतनरम्भा ७५।२ सहगमनशार्ङ्गधर ७६ ललिता ७६।१ मानसिंह ७७ मन्न्या ७७।१ धन्न्या ७७।२ चक्रधर ७८ राधा७८।१ ऽवसानसन्तानसूचनमहापद्मनन्दनिमित्तकचक्रधरादित्रकुलाबिन

राजा ने विजय नहीं पाया ॥ ५७ ॥ १ कंकण (विवाह समय में बांधा हुआ डोरड़ा) भी नहीं खोल सका २ तरवारों की धारों पर चढकर मगध देश की दश हजार सेना को मारी ॥ ५८ ॥ ३राधा सती होने लगी जिसके ४ गर्भ का लक्षण ५ हुआ जानकर सब ने रोकी ॥ ५९ ॥६पुत्र८ ब्रह्मा के अक्षरों की उलटी गति से उसने गर्भ में ही७ राजापन पाया ॥६०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में वसुदेव का धारातीर्थ में स्नान करना, श्यामदेव पद्मा, हरिदास रजनी पर्यन्त कुल का कथन, लाहोर के युद्ध में म्लेछ देश के राजा नूह का भागना और वामदेव आदि आर्यावर्त देश के बहुत राजाओं का रणभूमि में पड़ना, श्रीधर प्रतिभा, गङ्गाधर प्रभा, महादेव रंभा पर्यन्त सन्तान का संक्षेप, अश्वमेध का प्रारंभ करके महादेव का दर्भकरणक के युद्ध में पड़ना, रंभा का सती होना, शार्ङ्गधर ललिता, मानसिंह मन्या, चक्र

महापद्म१०००००००००००० दल१द्रव्य२पति, वहै नंद मगधेस ॥
जासौं रन तिन दिनन जुरि, जित्यो कोन नरेस ॥
कंकन[1] हान सक्यो न करि, चक्रधर सु चहुवान ॥
चढि धारनं[2] मागध चमू, अयुत१०००० हनी अति मान ॥ ५८ ॥
करनलगी वह सहगमन, राधा[3]७८।१सुनि पति नास ॥
रोकी सब ननिहारि तँहँ, दोहदलच्छन[4] आस[5] ॥ ५९ ॥
पाय समय प्रकट्यो तनय[6], निडर सत्रुजित७९ नाम ॥
गर्भहिमैं नृपता गही, बिंधि अक्खर गतिबाम ॥ ६० ॥
इति श्रीबंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ वीतिहोत्रचंडासिबंशवर्णने बसुदेव ६८ धारातीर्थनिमज्जनश्यामदेव ६९ पद्मा ६९।१ हरिदास ७० रजनी ७०।१ पर्यन्त कुलकथनलाहोरयुद्धप्रत्यन्तराजनूहपलायनवामदेवादिबहुलाऽऽर्यावर्तनरेन्द्रनिपतनश्रीधर ७३ प्रतिभा ७३।१ गङ्गाधर ७४ प्रभा ७४।१ महादेव ७५ रम्भा ७५।१ ऽवधिसन्ततिसमसनप्रारब्धवाजिमेधमहादेव७५दर्भकरणपतनरम्भा ७५।१ सहगमनशार्ङ्गधर ७६ ललिता ७६।१ मानसिंह ७७ मन्न्या ७७।१ धन्न्या ७७।२ चक्रधर ७८ राधा७८।१ ऽवसानसन्तानसूचनमहापद्मनन्दनिमित्तकचक्रधरादित्त्रकुलबिन

राजा ने विजय नहीं पाया ॥ ५७ ॥ १ कंकण (विवाह समय में बांधा हुआ डोरड़ा) भी नहीं खोल सका २ तरवारों की धारों पर चढकर मगध देश की दश हजार सेना को मारी ॥ ५८ ॥ ३राधा सती होने लगी जिसके ४ गर्भ का लक्षण ५ हुआ जानकर सब ने रोकी ॥ ५९ ॥६पुत्र८ ब्रह्मा के अक्षरों की उलटी गति से उसने गर्भ में ही७ राजापन पाया ॥६०॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में बसुदेव का धारातीर्थ में स्नान करना, श्यामदेव पद्मा, हरिदास रजनी पर्यन्त कुल का कथन, लाहोर के युद्ध में म्लेछ देश के राजा नूह का भागना और बामदेव आदि आर्यावर्त देश के बहुत राजाओं का रणभूमि में पड़ना, श्रीधर प्रतिभा, गङ्गाधर प्रभा, महादेव रंभा पर्यन्त सन्तान का संक्षेप, अश्वमेध का प्रारंभ करके महादेव का दर्भकरणक के युद्ध में पड़ना, रंभा का सती होना, शार्ङ्गधर ललिता, मानसिंह मन्या, चक्र

इकसत१०० अग्निष्टोम१ त्रिसत३०० मख बाजिपेय२ किय
मख तिम चातुरमास३ च्यारि सहँस रु चउरासिय४०८४ ॥
पुंडरीक४ पंचास५० जजे भूपाल सत्रुजित ॥
पौर्णमास५ अरु दर्स६ सदा बिरचे बिधि संचित ॥
निगमोक्त सद्धि अप्पन निलय अग्निहोत्र धारन करयो ॥
सुत सावधान होतहि सुपहु बैखानस ब्रत अद्दरयो ॥ ४ ॥

(दोहा)

तनय सत्रुजितकै भयो, हलधर८०नाम गहीर॥
पितर१देव२द्विज३भक्तिपर, विदित दान१रन२बीर ॥ ५ ॥
लहि जुब्बन हलधरकुमर, सब निजराज्य सम्हारि॥
सत्रुजित७९हिं सम्मर्द दयो, सासन तस सिरधारि ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

हलधरसिर अभिसेक बिरचि तब नृपति सत्रुजित ॥
पट्ट पंच५सिख अप्पि होय बंधुनकरि बंदित ॥
अग्निहोत्र लै संग सबन समुझाय आय१०व्यय२ ॥
जया सहित बन जाय बस्यो बहु अब्द बीतभय ॥
अष्टांग जोग सद्धि रु उभय२भौतिक बपु छोरत भये ॥
गोरक्ष सिद्ध संगति सफल प्रकृति गंजि पारहि गये ॥७॥

१यज्ञ.पचास पुण्डरीक यज्ञ.इसप्रकार राजा शत्रुजित् ने यज्ञ कियेऔर पूर्णमासी और ४ अमावास्या का सदैव ही ५ वेदोक्त साधन करके अपने ६ घर में अग्निहोत्र धारण किया और पुत्र के सावधान होते ही उस श्रेष्ठ राजा ने वानप्रस्थ व्रत को धारण किया ॥ ४ ॥ गंभीर ॥ ५ ॥ शत्रुजित् की आज्ञा शिर पर धारण करके उसको हर्ष दिया ॥ ६ ॥ सिंहासन देकर. आमद खरच समझाकर.स्त्री सहित.बहुत वर्षों तक निर्भय होकर वसा और योग के आठ अङ्ग हैं जिनको साधन करके दोनों भौतिक (स्थूल शरीर और लिङ्गशरीर को भौतिक शरीर कहते हैं) शरीरों को छोडा अर्थात् मुक्त होगया क्योंकि लिङ्गशरीर मुक्ति में ही जीव से जुदा होता है प्रकृति (जगत् का कारण जिससे जन्म मरण होता है) को लोपकर पार (मुक्त) होगया ।७।

इकसत१०० अग्निष्टोम१ त्रिसत३०० मख वाजिपेय२ किय
मख तिम चातुरमास३ च्यारि सहँस रु चउरासिय४०८४ ॥
पुंडरीक४ पंचास५० जजे भूपाल सत्रुजित ॥
पौर्णामास५ अरु दर्स६ सदा बिरचे बिधि संचित ॥
निगमोक्त सद्धि अप्पन निलय अग्निहोत्र धारन करयो ॥
सुत सावधान होतहि सुपहु बैखानस ब्रत अद्दरयो ॥ ४ ॥

(दोहा)

तनय सत्रुजितकै भयो, हलधर८०नाम गँहीर॥
पितर१देव२द्विज३भक्तिपर, विदित दान१रन२बीर ॥ ५ ॥
लहि जुब्बन हलधरकुमर, सब निजराज्य सम्हारि॥
सत्रुजित७९हिं सम्मर्द दयो, सासन तस सिरधारि ॥ ६ ॥

(षट्पात्)

हलधरसिर अभिसेक बिरचि तब नृपति सत्रुजित ॥
पट्ट पंच५सिख अप्पि होय बंधुनकरि बंदित ॥
अग्निहोत्र लै संग सबन समुझाय आय१०व्यय२ ॥
जयाँ साहित बन जाय बस्यो बहु अब्द बीतभय ॥
अष्टांग जोग सद्धि रु उभय२भौतिक बपु छोरत भये ॥
गोरक्ष सिद्ध संगति सफल प्रकृति गंजि पारहि गये ॥७॥

१यज्ञ.पचास पुण्डरीक यज्ञ.इसप्रकार राजा शत्रुजित् ने यज्ञ किये और पूर्णमासी और ४ अमावास्या का सदैव ही ५ वेदोक्त साधन करके अपने ६ घर में अग्निहोत्र धारण किया और पुत्र के सावधान होते ही उस श्रेष्ठ राजा ने वानप्रस्थ व्रत को धारण किया ॥ ४ ॥ गंभीर ॥ ५ ॥ शत्रुजित् की आज्ञा शिर पर धारण करके उसको हर्ष दिया ॥ ६ ॥ सिंहासन देकर. आमद खरच समझाकर.स्त्री सहित.बहुत वर्षों तक निर्भय होकर बसा और योग के आठ अङ्ग हैं जिनको साधन करके दोनों भौतिक (स्थूल शरीर और लिङ्गशरीर को भौतिक शरीर कहते हैं) शरीरों को छोडा अर्थात् मुक्त होगया क्योंकि लिङ्गशरीर मुक्ति में ही जीव से जुदा होता है प्रकृति (जगत् का कारण जिससे जन्म मरण होता है) को लोपकर पार (मुक्त) होगया ।७।

सोरठा

ससिकुल¹ द्रविड नरेस, संभुसुता चित्रांगदा८०।१ ॥
वय१गुन२रूप३बिसेस, हलधर८०कर ताको गहिय ॥११॥
माघ अमा² जिहिं भूप, रवि उपराग³ प्रयोग गत ॥
उचित पात्र⁴अनुरूप, द्विजन खर्ब१००००००००००हाटक⁵ दयो
हलधर निर्भय हिंतु, जन्यौं तनय चित्रांगदा ॥
बभ्रुवाह जयहिंतु, ज्यौं मणिपुर चित्रांगदा ॥ १३ ॥
उचित तास अभिधान⁶, द्विजन महाधन्वा८१दयो ॥
नय१जय२धर्म३निधान, भयो यहहु बिख्यात भुव ॥ १४ ॥
ससिकुल उत्तम सूर, नृप कलिंग सासन करत ॥
पटुताकी गुन पूर, सुता उमा८१।१परन्यौं सु पहु ॥ १५ ॥

षट्पात्

चंद्रायन प्रामार नगर उज्जैन भूप इत ॥
गंगा न्हावन गयउ जई ऊखर सूकर जित ॥
कछु बासर रहि न्हाय दान नाना प्रकार करि ॥
मुख्य घट्ट⁹ खट६बेर श्राद्ध किन्नैं बिधि अनुसरि ॥
सत्तमी७बेर जावत तहाँ रोक्यो मग दुस्सलकुमर ॥
तुम गये छ६दिन कहि मुक्कली अज्ज हमहु जावत अडर१६

जिनका भी कर्म किया ॥ १० ॥ १ चन्द्रवंशी द्रविड़ देश के राजा शंभु की पुत्री ॥ ११ ॥ माघ मास की २ अमावास्या के ३ सूर्य ग्रहण पर प्रयाग में जाकर ४ पात्र के सदृश (जैसा पात्र था वैसा) दान दिया ५ सोने की मोहरें (शास्त्रों में सौलह मासों की स्वर्ण संज्ञा है)दीं ।१२।भयरहित हलधर से चित्रांगदा ने ऐसा पुत्र जना जैसा मणिपुर में अर्जुन से चित्रांगदा ने बभ्रुवाहन को जना था ॥ १३ ॥ ६ नाम ॥१४॥ ७वह राजा ॥१५॥ ऊखर क्षेत्र का जीतने वाला)"रेणुका शूकरःकाशी काली कालौ बटेश्वरौ॥ कालिञ्जरो महाकाल ऊखरा नव मुक्तिदाः"इति वराहपुराणे) उज्जैन का राजा चंद्रायण८जिधर सूकर (सोरमजी)है उधर गंगा न्हाने को गया९उस मुख्य घाट सोरमजीपर छै बेर जाकर श्राद्ध किये और सातवीं बेर जाते समय सूकर क्षेत्र के स्वामी दुस्सल कुमर ने रोका कि तुम तो आगे छःबेर गये हो आज सोरमघाट पर निर्भय हम जावेंगे

सोरठा

ससिकुल१ द्रविड नरेस, संभुसुता चित्रांगदा८०।१ ॥
वय१गुन२रूप३बिसेस, हलधर८०कर ताको गहिय ॥११॥
माघ अमा जिहिं भूप, रवि उपराग३ प्रयोग गत ॥
उचित पात्र४अनुरूप, द्विजन खर्ब१०००००००००००हाटक५ दयो
हलधर निर्भय हिंतु, जन्यौं तनय चित्रांगदा ॥
बभ्रुवाह जयहिंतु, ज्यौं मणिपुर चित्रांगदा ॥ १३ ॥
उचित तास अभिधान६, द्विजन महाधन्वा८१दयो ॥
नय१जय२धर्म३निधान, भयो यहहु बिख्यात भुव ॥ १४ ॥
ससिकुल उत्तम सूर, नृप कलिंग सासन करत ॥
पटुताकी गुन पूर, सुता उमा८१।१परन्यौं सु७ पहु ॥ १५ ॥

षट्पात्

चंद्रायन प्रामार नगर उज्जैन भूप इत ॥
गंगा न्हावन गयउ जई ऊखर सूकर जिंत ॥
कछु बासर रहि न्हाय दान नाना प्रकार करि ॥
मुख्य घट्ट८ खट६बेर श्राद्ध किन्नैं बिधि अनुसरि ॥
सत्तमी७बेर जावत तहाँ रोक्यो मग दुस्सलकुमर ॥
तुम गये छ६दिन कहि मुक्कली अज्ज हमहु जावत अडर१६

जिनका भी कर्म किया ॥ १० ॥ १ चन्द्रवंशी द्रविड़ देश के राजा शंभु की पुत्री ॥ ११ ॥ माघ मास की २ अमावास्या के ३ सूर्य ग्रहण पर प्रयाग में जाकर ४ पात्र के सदृश (जैसा पात्र था वैसा) दान दिया ५ सोने की मोहरें (शास्त्रों में सौलह मासों की स्वर्ण संज्ञा है) दीं ।१२।भयरहित हलधर से चित्रांगदा ने ऐसा पुत्र जना जैसा मणिपुर में अर्जुन से चित्रांगदा ने बभ्रुबाहन को जना था ॥ १३ ॥ ६ नाम ॥१४॥ ७वह राजा ॥१५॥ ऊखर क्षेत्र का जितने वाला) "रेणुका शूकरःकाशी काली कालौ बटेश्वरौ॥ कालिञ्जरो महाकाल ऊखरा नव मुक्तिदाः" इति बराहपुराणे) उज्जैण का राजा चंद्रायण८जिधर सूकर (सोरमजी) है उधर गंगा न्हाने को गया६उस मुख्य घाट सोरमजीपर छै बेर जाकर श्राद्ध किये और सातवीं बेर जाते समय सूकर क्षेत्र के स्वामी दुस्सल कुमर ने रोका कि तुम तो आगे छःबेर गये हो आज सोरमघाट पर निर्भय हम जावेंगे

दोहा

क्षेमदेव चालुक कुमर, बिनुसिर दुस्सल बीर ॥
चउ४गज अरु चंद्रायन सु, हनि रु पर्‍यो हमगीर ॥ २३ ॥
अविबाहित हो यह कुमर, अपज सूरवतंस ॥
ताहि मन्नि दुस्सल पितर, पुज्जत चालुक बंस ॥ २४ ॥

षट्पात्

कुमर मरन सुनि क्षेमदेव चतुरंग लज्ज करि ॥
वसु८सुत मोक्कलभानु आदि अप्पन हरोल धरि ॥
खिल प्रमार दल हनन चल्यो पद्धर गंगातट ॥
सुनि यह मालव सेन अखिल भग्गो बट उब्बट ॥
उज्जैन मयाधर नृपननृप चंद्रायन गद्दिय चढ्यो ॥
चालुक१प्रमार २ बंसन बिदित बैर असह तबतैं बढ्यो ॥२५॥

(दोहा)

मल्लिनाग मुनिराज इत, लहि अपमान बिसेस ॥
सुत अष्टक८ जुत संहर्‍यो, महापद्म मगधेस ॥ २६ ॥
सूद्र बरन ते जनक१ सुत८, नव९हि नामकरि नंद ॥
दुर्मद लखि दै साप द्रुत, किय चाणक्य निकंद ॥ २७ ॥

(पादाकुलकम्)

क्षेमदेव सोलंखी का दुस्सल नामक कुमर विना मस्तक चार हाथी और चन्द्रायण को मारकर खड़ा हुआ ।२३।विना विवाहा और विना संतान वीरों का मुकुट था जिसको दुस्सल नामक पितर मानकर सोलंखी वंश अब तक पूजते हैं।२४। चतुरंगसेना तैयार करके मोकल और भानु आदि आठ पुत्रों को आगे करके पँवार की बाकी की सेना को मारने के लिये सीधा गंगा किनारे पर चला उम्रवट (विना मार्ग) उज्जैन में राजाओं के राजा चन्द्रायन की गद्दी पर मयाधर बैठा ॥ २५ ॥ इधर चाणक्य मुनि ने अपमान पाकर सम्पूर्ण आठ पुत्रों सहित मगध देश के राजा महापद्म (नन्द) को मारा ॥ २६ ॥ वे पिता पुत्र सब शूद्र वर्ण (नन्द, दासी के पेट से पैदा हुआ था इससे सब शूद्र थे) के और नव ही नन्द नाम के थे?चाणक्य मुनि ने नाश किया ॥ २७ ॥

दोहा

क्षेमदेव चालुक कुमर, बिनुसिर दुस्सल बीर ॥
चउ४गज अरु चंद्रायन सु, हनि रु पर्यो हमगीर ॥ २३ ॥
अविबाहित हो यह कुमर, अप्रज सूरवतंस ॥
ताहि मन्नि दुस्सल पितर, पुज्जत चालुक बंस ॥ २४ ॥

षट्पात्

कुमर मरन सुनि क्षेमदेव चतुरंग लज्ज करि ॥
वसु८सुत मोत्कलभानु आदि अप्पन हरोल धरि ॥
खिल प्रमार दल हनन चल्यो पद्धर गंगातट ॥
सुनि यह मालव सेन अखिल भग्गो बट उब्बट ॥
उज्जैन मयाधर नृपननृप चंद्रायन गद्दिय चढ्यो ॥
चालुक१प्रमार २ बंसन बिदित बैर असह तबतैं बढ्यो ॥२५॥

(दोहा)

मल्लिनाग मुनिराज इत, लहि अपमान बिसेस ॥
सुत अष्टक८ जुत संहर्यो, महापद्म मगधेस ॥ २६ ॥
सूद्द बरन ते जनक१ सुत८, नव९हि नामकरि नंद ॥
दुर्मद लखि दै साप द्रुत, किय चाणक्य निकंद ॥ २७ ॥

(पादाकुलकम्)

क्षेमदेव सोलंखी का दुस्सल नामक कुमर बिना मस्तक चार हाथी और चन्द्रायण को मारकर खड़ा हुआ।२३।बिना विवाहा और बिना संतान वीरों का मुकुट था जिसको दुस्सल नामक पितर मानकर सोलंखी वंश अब तक पूजते हैं।२४। चतुरंगसेना तैयार करके मोकल और भानु आदि आठ पुत्रों को आगे करके पँवार की बाकी की सेना को मारने के लिये सीधा गंगा किनारे पर चला उब्बट (बिना मार्ग) उज्जीन में राजाओं के राजा चन्द्रायन की गद्दी पर मयाधर बैठा ॥ २५ ॥ इधर चाणक्य मुनि ने अपमान पाकर सम्पूर्ण आठ पुत्रों सहित मगध देश के राजा महापद्म (नन्द) को मारा ॥ २६ ॥ वे पिता पुत्र सब शूद्र वर्ण (नन्द, दासी के पेट से पैदा हुआ था इससे सब शूद्र थे) के और नव ही नन्द नाम के थे १चाणक्य मुनि ने नाश किया ॥ २७ ॥

अंगज मृत सुमिरन जिम आवैं, सकटालहिं तिम नृप न सुहावैं।३४।
नंदहि नासकरन कछु हेरन, फिरैं बिपिन लै मिस हयफेरन॥
कबहु लखे चाणक्य बिहारत, दर्भमूल खनि तक्रहिं डारत ॥३५॥
करहु कहा सकटाल कह्यो जहँ, मुनि कौटिल्य दयो उत्तर तहँ ॥
है इहिंमग व्याहन मैं जावत, अटक्यो कुस चुभि चरन दुखावत।३६।
तरुवैद्यक बिच यह दिन्नी कहि, मिटैं दर्भनिजमूल तक्र लहि ॥
चुभि पय मोहि लग्न च्युत किन्नौं, दर्भन मूल तक्र इम दिन्नौं।३७।
सचिव कह्यो न पढे तिहिं होते, तो तुम दर्भ कहाकरि खोते ॥
बिप्र कह्यो मैं मुनि वच्छायन, करि अभिचार मिटातो कुसवन।३८।
सु सुनि मंत्र सकटाल बिचारयो, जिहिं वदलो कुससौंहु न टारयो॥
सो नरको हेलन नन सहिहैं, द्रुतहि सपुत्र नंदकौं दहिहैं॥ ३९ ॥
यह आलोचि बिप्र प्रति बुल्ल्यो, श्राद्धकरन आसय नृप खुल्ल्यो॥
अधिकृत होहु तहाँ चलि अप्पहि, मुनिहिं संग लै गौ सु यहै कहि४०
श्राद्ध करन लग्गो सु नंद जहँ, तहँ कायस्थ लैगयो तिनकँहँ ॥
पात्र कहि रु बैठारे आसन, रद१ नख२ कपिस धरत वच्छायन४१

आवे तब सकटाल को वह राजा नहीं सुहावै ॥ ३४ ॥ वन में घोड़ा फेरने के मिस से फिरै सो कभी फिरतेहुए ने डाभ के मूल को खोदकर उसकी जड़ में छाछ (गोरस) डालतेहुए चाणक्य मुनि को देखा॥ ३५ ॥१ चाणक्य मुनि ने उत्तर दिया ॥ ३६ ॥ वृक्ष सम्बन्धी वैद्यक ग्रन्थों में यह लिखा है कि डाभ की जड़ में छाछ डालने से वह मिटजाता है२विवाह से च्युत कर दिया अर्थात् विवाह नहीं होने पाया इसकारण से मैंने डाभ की जड़ में छाछ दिया है ॥३७॥ जब सकटाल ने कहा कि तुम इतने नहीं पढे होते तो डाभ का नाश कैसे करते तब उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं वात्स्यायन नामक मुनि हूं सो ३ मारण मोहन आदि मंत्र तन्त्र (मंत्र तंत्र के मारण मोहन उच्चाटन में वात्स्यायन मुनि प्रसिद्ध थे और इस कार्य के आचार्य थे) से डाभ के वन को मिटादेता ॥ ३८ ॥ ४ वह मनुष्य का अपराध सहन नहीं करैगा सो नन्द को पुत्रों सहित शीघ्र ही भस्म करैगा ॥३९॥५विचार करके,६वहां चलके आप अधिकारी होओ ॥ ४० ॥ ७ वह नन्द १० वात्स्यायन (चाणक्य) के ८ दन्त और नख ९ पीले थे ॥ ४१ ॥

अंगज मृत सुमिरन जिम आवैं, सकटालहिं तिम नृप न सुहावैं।३४।
नंदहि नासकरन कछु हेरन, फिरैं बिपिन ले मिस हयफेरन॥
कबहु लखे चाणक्य बिहारत, दर्भमूल खनि तक्रहिं डारत ॥३५॥
करहु कहा सकटाल कह्यो जहँ, मुनि कौटिल्य दयो उत्तर तहँ ॥
है इहिंमग व्याहन मैं जावत,अटक्यो कुस चुभि चरन दुखावत।३६।
तरुवैद्यक बिच यह दिन्नी कहि, मिटैं दर्भनिजमूल तक्र लहि ॥
चुभि पय मोहि लग्न च्युत किन्नौं, दर्भन मूल तक्र इम दिन्नौं।३७।
सचिव कह्यो न पढे तिहिं होते, तो तुम दर्भ कहाकरि खोते ॥
बिप्र कह्यो मैं मुनि वच्छायन,करि अभिचार मिटाता कुसवन।३८।
सु सुनि मंत्र सकटाल बिचारयो,जिहिं बदलो कुससौंहु न टारयो॥
सो नरको हेलन नन सहिहैं, द्रुतहि सपुत्र नंदकौं दहिहैं॥ ३९ ॥
यह आलोचि बिप्र प्रति बुल्ल्यो, श्राद्धकरन आसय नृप खुल्ल्यो॥
अधिकृत होहु तहाँ चलि अप्पहि,मुनिहि संग लै गौ सु यहै कहि४०
श्राद्ध करन लग्गो सु नंद जँहँ, तँहँ कायस्थ लैगयो तिनकँहँ ॥
पात्र कहि रु बैठारे आसन,रद१ नख२ कपिस धरत वच्छायन४१

आवे तब सकटाल को वह राजा नहीं सुहावै ॥ ३४ ॥ वन में घोड़ा फेरने के मिस से फिरै सो कभी फिरतेहुए ने डाभ के मूल को खोदकर उसकी जड़ में छाछ (गोरस) डालतेहुए चाणक्य मुनि को देखा॥ ३५ ॥१चाणक्य मुनि ने उत्तर दिया ॥ ३६ ॥ वृक्ष सम्बन्धी वैद्यक ग्रन्थों में यह लिखा है कि डाभ की जड़ में छाछ डालने से वह मिटजाता है२विवाह से च्युत कर दिया अर्थात् विवाह नहीं होने पाया इसकारण से मैंने डाभ की जड़ में छाछ दिया है ॥३७॥ जब सकटाल ने कहा कि तुम इतने नहीं पढे होते तो डाभ का नाश कैसे करते तब उस ब्राह्मण ने कहा कि मैं वात्स्यायन नामक मुनि हूं सो ३ मारण मोहन आदि मंत्र तन्त्र (मंत्र तंत्र के मारण मोहन उच्चाटन में वात्स्यायन मुनि प्रसिद्ध थे और इस कार्य के आचार्य थे) से डाभ के वन को मिटादेता ॥ ३८ ॥ ४ वह मनुष्य का अपराध सहन नहीं करैगा सो नन्द को पुत्रों सहित शीघ्र ही भस्म करैगा ॥३९॥५बिचार करके,६वहां चलके आप अधिकारी होओ ॥ ४० ॥ ७ वह नन्द १०. वात्स्यायन (चाणक्य) के ८ दन्त और नख ९ पीले थे ॥ ४१ ॥

मलयकेतु नृपकै यह रक्खस, जाय सचिव भो हो प्रकटित जस॥
सु इम बुल्लि मुनिबर हिय लायो, मंत्री रक्खस नाम बनायो॥४७॥
सकटालहु लै बैर नंद सन, कासी गयो तजन निज उपघन॥
चंद्रगुप्त१रक्खस२हुव हितमय, मगध तिन्है दै मल्लिनाग गय४८
बच्छायन वे नंद९हनैं जब, पंद्रहसत१५००कलिबर्ष गये तब॥
चंद्रगुप्तकहँ नीति परायन, करि स्वच्छंद गये बच्छायन॥४९॥

(दोहा)

गनित प्रबंधनसैं हु यह, तबसौं हुव संकेत॥
नंद कहैं नव९जानियत, इम तिहिं अर्थ उपेत॥५०॥
कामतंत्र१चाणक्य पुनि, नीतितंत्र चाणक्य२॥
न्यायभाष्य३इत्यादि मुनि, बिरचे इतर असक्य॥५१॥
देवदत्त८२सुत इत भयो, महाधन्व नृपकेर॥
जुद्ध करी नहि देर जिहिं, दैन करी नहि देर॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो तृतीय ३ राशौ बीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने दृष्टप्राशिताऽन्नपुत्रराधा ७८।१ ज्वलनस्नानकरणशत्रुजि ७१ ज्जया ७९।१ ऽग्निष्टोमाऽऽदिप्रभूतसत्राऽनुष्टानसाधितगार्हस्थ्यगृहीतवैखानसव्रतसमनुष्ठितयोगतद्दम्पाति१देह

वह राक्षस मलयकेतु नामक (जो पर्वतराज का पुत्र था) नैपाल के राजा के पास जाकर उस का सचिव होगया था जिसको १इस प्रकार बुलाकर।४७।२नन्द से वैर लेकर३शरीर४मगध का राज्य चन्द्रगुप्त को देकर चाणक्य मुनि भी गये।४८। ५चाणक्य ने उन नन्दों को मारे जब कलियुग के पन्द्रह सौ वर्ष गये थे६स्वतंत्र करके चाणक्य गये॥४९॥ ज्योतिष के गणित के ग्रन्थों में जब से यह संकेत हुआ है कि नन्द के कहने से नव माने जाते हैं सो नन्द शब्द इस अर्थ सहित हुआ॥५०॥ उस चाणक्य ने कामशास्त्र (वात्स्यायन कामसूत्र के नाम से) और चाणक्यनीति के नाम से नीतिशास्त्र किये और न्यायशास्त्र पर भाष्य इत्यादि और भी दूसरों से नहीं होसके ऐसे किये॥५१॥५२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में पुत्र का अन्नप्राशन देखकर राधा का अग्निस्नान करना (जलना) शत्रुजित् और जया का अग्निष्टोम आदि बहुत यज्ञों का अनुष्टान

मलयकेतु नृपकैं यह रक्खस, जाय सचिव भो हो प्रकटित जस॥
सु इम बुल्लि मुनिबर हिय लायो, मंत्री रक्खस नाम बनायो॥४७॥
सकटालहु लै बैर नंद सन, कासी गयो तजन निज उपघन॥
चंद्रगुप्त१रक्खस२हुव हितमय, मगधैं तिन्है दै मल्लिनाग गय॥४८॥
बच्छायन वे नंद९हनैं जब, पंद्रहसत१५००कलिबर्ष गये तब॥
चंद्रगुप्तकहँ नीति परायन, करि स्वच्छंद गये बच्छायन ॥४९॥

(दोहा)

गनित प्रबंधनसैं हु यह, तबसौं हुव संकेत ॥
नंद कहैं नव९जानियत, इम तिहिं अर्थ उपेत ॥५०॥
कामतंत्र१चाणाक्य पुनि, नीतितंत्र चाणाक्य२ ॥
न्यायभाष्य३इत्यादि मुनि, बिरचे इतर असक्य ॥ ५१ ॥
देवदत्त८२सुत इत भयो, महाधन्व नृपकेर ॥
जुद्ध करी नहि देर जिहिं, दैन करी नहि देर ॥५२॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ बीतिहोत्रचरणडासिवंशवर्णने दृष्टप्राशिताऽन्नपुत्रराधा ७८।१ ज्वलनस्नानकरणशत्रुजि ७१ जया ७९।१ ऽग्निष्टोमाऽऽदिप्रभूतसत्राऽनुष्ठानसाधितगार्हस्थ्यगृहीतवैखानसव्रतसमनुष्ठितयोगतद्दम्पाति१देह

वह राक्षस मलय केतु नामक (जो पर्वतराज का पुत्र था) नैपाल के राजा के पास जाकर उस का सचिव होगया था जिसको १इसप्रकार बुलाकर।४७।२नन्द से वैर लेकर ३शरीर ४मगध का राज्य चन्द्रगुप्त को देकर चाणक्य मुनि भी गये।४८। ५चाणक्य ने उन नन्दों को मारे जब कलियुग के पन्द्रह सौ वर्ष गये थे ६स्वतंत्र करके चाणक्य गये ॥४९ ॥ ज्योतिष के गणित के ग्रन्थों में जब से यह सङ्केत हुआ है कि नन्द के कहने से नव माने जाते हैं सो नन्द शब्द इस अर्थ सहित हुआ ॥५०॥ उस चाणक्य ने कामशास्त्र (वात्स्यायन कामसूत्र के नाम से) और चाणक्यनीति के नाम से नीतिशास्त्र किये और न्यायशास्त्र पर भाष्य इत्यादि और भी दूसरों से नहीं होसके ऐसे किये ॥ ५१ ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में पुत्र का अन्नप्राशन देखकर राधा का अग्निस्नान करना (जलना) शत्रुजित् और जया का अग्निष्टोम आदि बहुत यज्ञों का अनुष्ठान

पौराँनिक[1] चारन सुकवि, उग्रश्रवकुल अर्क[2] ॥
बीततमा पूजे सबिधि, तिनसो नृप सुनि तर्क[3] ॥ ३ ॥
सत१००सासन[4] गज इक्क१सत१००,हय वर तरल[5] हजार१००० ॥
कोटि१००००००० कनक[6] सत१००किंकरी[7], दये इतेक उदार ॥४॥
विप्र[8]१सूत[9]२मागध[10]३बिबुध[11]४, सबहिं अजाचक श्रील[12] ॥
करे भूप जिहिं मोज[13] करि, कृपनन मुख जरि कील ॥५॥
देवदत्तकै पुत्र हुव, दामोदर८३नर ईस ॥
करि जिहिं भक्ति प्रसन्न किय, गिरिजा[14] सहित गिरीस[15] ॥६॥
पुष्करनाम त्रिगर्तपति[16], भूप भानुकुल भूत[17] ॥
सुगुणा८३।१तस तनया सची[18], परनी तिहिं पुरुहूत[19] ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि उपयम[20] मुरि मग्ग देस चल्लत दामोदर८३ ॥
जंबुमार्गबन आय भानु उपरक्त[21] अमा[22] पर ॥
तहँ पुर पट्टनि नाम सरित चम्मलि[23] तहँ दंपति[24] ॥
दत्त[25] अयुत१००००गोदान सहित नानाविधि संहति[26] ॥
दुलहनि उपेत[27] क्रीडत दुलह नानाबन१उपबन२नदि३न ॥
इक१अब्द अंत मिहिकावतिय इम पत्तो चहुवान ईस[28] ॥८॥

---

१ पुराण की वृत्ति को धारण करनेवाले अथवा पुराण जाननेवाले रोमहर्षण सूत के वंशवाले चारण श्रेष्ठ कवि उग्रश्रवा नामक सूत के वंश के. २ सूर्य. वीततमा से ३ न्यायशास्त्र सुनके उनको पूजा और ४ सौ उदक ग्राम एक सौ हाथी ५ चंचल श्रेष्ठ हजार घोड़े६ सोने की करोड़ मोहरें ७ सौ दासियें उस उदार ने वीततमा को दिये ॥ ४ ॥ ८ ब्राह्मण ९ चारण १०भाट और११पंडित सभी को याचक करके उसने१३दान(रीझ)से सबको १२ धनवान् करके कृपणों के मुख में कील जड़ दी ॥५॥ १४ पार्वती सहित १५ महादेव को प्रसन्न किये ॥ ६ ॥ १६ जालंधर देश का पति (सुशर्मा का देश) १७ हुआ १८ इन्द्राणी को १९ उस इन्द्र ने परनी ॥ ७ ॥ २० विवाह करके २१ अमावास्या के दिन२२ सूर्य ग्रहण पर २३ चामल नदी है जहां पर २४स्त्रीपुरुष ने जोड़े से दश हजार गौवें सहित नानाप्रकार के २६ इकट्ठे २५ दान दिये २७ सहित २८ चहुवाणों का राजा तथा सूर्य ॥ ८ ॥

पौरांनिक[1] चारन सुकवि, उग्रश्रवकुल अर्क[2] ॥
बीततमा पूजे सबिधि, तिनसों नृप सुनि तर्क[3] ॥ ३ ॥
सत१००सासनं[4] गज इक्क१सत१००,हय वर तरल[5] हजार१००० ॥
कोटि१०००००००कनक[6] सत१००किंकरी[7], दये इतेक उदार ।४।
विप्र[8]१सूत[9]२मागध[10]३बिबुध[11]४, सबहिं अजाचक शील[12] ॥
करे भूप जिहिं मोजं[13] करि, कृपनन मुख जरि कील ॥५॥
देवदत्तकै पुत्र हुव, दामोदर८३नर ईस ॥
करि जिहिं भक्ति प्रसन्न किय, गिरिजा[14] सहित गिरीस[15] ।६।
पुष्करनाम त्रिगर्त[16]पति, भूप भानुकुल भूत[17] ॥
सुगुणा८३।१तस तनया सची[18], परनी तिहिं पुरुहूत[19] ॥ ७ ॥

षट्पात्

करि उपयमं[20] मुरि मग्ग देस चल्लत दामोदर८३ ॥
जंबुमार्गबन आय भानु उपरक्त[21] अमा[22] पर ॥
तँहँ पुर पट्टनि नाम सरित चम्मलि[23] तँहँ दंपति[24] ॥
दत्त[25] अयुत१००००गोदान सहित नानाविधि संहति[26] ॥
दुलहनि उपेत[27] क्रीडत दुलह नानाबन१उपबन२नदि३न ॥
इक१अब्द अंत मिहिकावातिय इम पत्तो चहुवान ईन[28] ॥८॥

---

१ पुराण की वृत्ति को धारण करनेवाले अथवा पुराण जाननेवाले लोमहर्षण सूत के वंशवाले चारण श्रेष्ठ कवि उग्रश्रवा नामक सूत के वंश के. २ सूर्य. बीततमा से ३ न्यायशास्त्र सुनके उनको पूजा और ४ सौ उदक ग्राम एक सौ हाथी ५ चंचल श्रेष्ठ हजार घोड़े६ सोने की करोड़ मोहरें ७ सौ दासियें उस उदार ने बीततमा को दिये ॥ ४ ॥ ८ ब्राह्मण ९ चारण १०भाट और११पंडित सभी को याचक करके उसने१३दान(रीझ)से सबको १२ धनवान् करके कृपणों के मुख में कील जड़ दी ॥५॥ १४ पार्वती सहित १५ महादेव को प्रसन्न किये ॥ ६ ॥ १६ जालंधर देश का पति (सुशर्मा का देश) १७ हुआ १८ इन्द्राणी को १९ उस इन्द्र ने परनी ॥ ७ ॥ २० विवाह करके २१ अमावास्या के दिन२२ सूर्य ग्रहण पर २३ चामल नदी है जहां पर २४स्त्रीपुरुष ने जोड़े से दश हजार गौवें सहित नानाप्रकार के २६ इकट्ठे २५ दान दिये २७ सहित २८ चहुवाणों का राजा तथा सूर्य ॥ ८ ॥

(षट्पात्)

कासीनाथ८४तनूज[1] भयो कोबिद[2] लीलाधर८५ ॥
दया८५।१ताहि परिनाय लयो उपराम[3] दयापर ॥
सुतहिँ अप्पि कर्णाट गयो भूपति बदरीबन॥
देह तज्यो भाजि जोग गह्यो सत[4]१चित२आनँद३घन ॥
धरनी[5] भुजंग लीलाधर८५सु भुम्मि बिदित बिक्रम भयो ॥
जिहिँ कोक नाम बंदी[6]जनहिँ दोय अयुत२००००हाटक[7] दयो१४

(दोहा)

तंत्रन[8] बिच बिनु तोल, हाटक संख्या होय तँहँ॥
कोबिद जानहु कोल, सोलह१६ मास सुबर्ण प्रति॥१५॥
हितमय सुरतरु[9] होय, बिप्रहु सनमाने बहुत ॥
दिय सासन[10] सतदोय२००, पटु[11] पंडित श्रीकंठकँहँ ॥१६॥

(दोहा)

लीलाधर८५कै सुत भयो, धरनीधर८६अभिधान[12] ॥
नीति१पढ्यो द्विज नंदसौं, सलसौं वेद२सुजान॥१७॥

(षट्पात्)

श्रीधर सुत मदसेन सुपहु लीलाधर सालक[13] ॥
जनक[14] बैर इत जानि चढयो कुंतलभुवपालक[15] ॥
चहुवानहु चतुरंग सजि झेल्यो वह सम्मुख ॥
जामिप[16]१सालक२जुगल२रच्यो संगर अर्जुन रुख[17] ॥

१पुत्र२पण्डित३परम दया धारण करके विरक्त होगया ४ सच्चिदानन्दघन (ब्रह्मस्वरूप)लिया५भूमि रूपी वेश्या का पति६कोक नामक भाट को७सोने की मोहरें दीं॥१४॥८शास्त्रों में जहां विना तोल स्वर्ण की संख्या होवे तहां पंडितों का नियम सोलह माषा सुवर्ण का जानो ॥१५॥ ९कल्पवृक्ष होकर १०उदक ग्राम११चतुर ॥१६॥१२धरनीधर नामवाला॥ १७ ॥१३लीलाधर का शाला१४पिता का वैर जानकर कुन्तल देश की भूमि को १५पालन करने-वाला चढ़ा१६बहिनोई और शाला दोनों१७अर्जुन की भांति

(षट्पात्)

कासीनाथ८४तनूज[1] भयो कोबिद[2] लीलाधर८५ ॥
दया८५।१ताहि परिनाय लयो उपराम[3] दयापर ॥
सुतहिं अप्पि कर्णाट गयो भूपति बदरीबन॥
देह तज्यो भजि जोग गह्यो सत[4]१चित२आनँद३घन ॥
धरनी भुजंग लीलाधर८५सु भुम्मि बिदित बिक्रम भयो ॥
जिहिं कोक नाम बंदीजनहिं[6] दोय अयुत२००००हाटक[7] दयो१४

(दोहा)

तं[8]त्रन बिच बिनु तोल, हाटक संख्या होय तँहँ॥
कोबिद जानहु कोल, सोलह१६ मास सुबर्ण प्रति॥१५॥
हितमय सुरतरु[9] होय, विप्रहु सनमाने बहुत ॥
दिय सास[10]न सतदोय२००, पटु[11] पंडित श्रीकंठकहँ ॥१६॥

(दोहा)

लीलाधर८५कै सुत भयो, धरनीधर८६अभिधान[12] ॥
नीति१पढ्यो द्विज नंदसौं, सलसौं वेद२सुजान॥१७॥

(षट्पात्)

श्रीधर सुत मदसेन सुपहु लीलाधर सालक[13] ॥
जनक[14] वैर इत जानि चढ्यो कुंतलभुव[15]पालक ॥
चहुवानहु चतुरंग सज्जि झेल्यो वह सम्मुख ॥
जामिप[16]१सालक२जुगल२रच्यो संगर अर्जुन रुख[17] ॥

१पुत्र२पण्डित३परम दया धारण करके विरक्त होगया ४ सच्चिदानन्दघन (ब्रह्मस्वरूप)लिया५भूमि रूपी वेश्या का पति६कोक नामक भाट को७सोने की मोहरें दीं॥१४॥८शास्त्रों में जहां विना तोल स्वर्ण की संख्या होवे तहां पंडितों का नियम सोलह माषा सुवर्ण का जानो ॥१५॥ ९कल्पवृक्ष होकर १०उदक ग्राम११चतुर ॥१६॥१२धरनीधर नामवाला॥ १७ ॥१३लीलाधर का शाला१४पिता का वैर जानकर कुन्तल देश की भूमि को १५पालन करनेवाला चढा१६बहिनोई और शाला दोनों१७अर्जुन की भांति

ब्याही नृप बिक्रमहिँ भयो सहदेव तत्र भव ॥
इंद्रप्रस्थ भुव छिन्नि जाहि कुरुपति निकासि दिय॥
तब मातुल अरिघाट ताहि करनाट भूप किय ॥
मारयो सुनाभ हैहयमुकुट पुनि जनपद पुंड्रक लयो ॥
मातुल सहाय हरिसेन सुत बालहु तिम देहहि दयो॥२४॥

(दोहा)

यह प्रताप आनर्तपति, सब उदंत सुनवाय ॥
कुल निज जो आसान किय, दिय सो प्रकट दिखाय॥ २५ ॥
बह निमित्त लै उच्चरिय, क्यौं तहँ ब्याहन देर॥
रिस पचाय धरनीधर८६हु, बुल्ल्यो सुनि तिहिँ बेर॥ २६ ॥
हन्यौं जयद्बलनैं जबहि, नृप कृतबर्मा४५नाम ॥
सल नामक तस स्वसुर सन, कछु न सरयो तब काम२७
छिन्नि जयद्बलनैं लयो, हमसौं पुंड्रक देस ॥
जानहु इत उपकार जो, आनहु तो घर एस ॥ २८ ॥
सुनि सिटाय आनर्तपति, कह्यो बन्यौं सुहि अच्छ ॥
अकरनसौं अल्पहि करन, कहत भलो नयदच्छ ॥ २९ ॥

सुंग ने सम्मति नामक पुत्री को विक्रम चहुवान को विवाही थी जिससे सहदेव का १ जन्म हुआ २ तब मामा ३ हैहय कुल के मुकुट सुनाभ को मारकर पुंड्रक ४ देश लिया और हरिसेन के पुत्र बाल ने भी मामा (गोग चहुवाण) की सहाय पर तिल तिल समान कट कर शरीर दिया है ॥ २४ ॥ ५ वृत्तान्त सुनाकर ६ अपने कुल ने जो चहुवाणों पर उपकार किये थे वे प्रकट करके दिखादिये ॥ २६ ॥ ७ वह कारण बताकर कह ॥ २६ ॥ कृतवर्मा चहुवान को जयद्बल ने मारा तब कृतवर्मा का स्वसुर सल नामक चन्द्रवंशी था जिससे कुछ कार्य नहीं सरा ॥ २७ ॥ जयद्बल ने हमारः पुंड्रक देश छीनलिया सो तुम हम पर उपकार किया चाहते हो तो वह पीछा हमको दिलाओ ॥ २८ ॥ आनर्त देश के राजा ने कहा कि जो कुछ हम से बना सो ही अच्छा है कुछ नहीं करनेवाले से न्यून करनेवाले को नीतिचतुर भला कहते हैं ॥ २९ ॥

ब्याही नृप बिक्रमहिं भयो सहदेव तत्र[1] भव ॥
इंद्रप्रस्थ भुव छिन्नि जाहि कुरुपति निकासि दिय॥
तब मातुल[2] अरिघाट ताहि करनाट भूप किय ॥
मारयो सुनाभ हैहयमुकुट[3] पुनि जनपद पुंड्रक[4] लयो ॥
मातुल सहाय हरिसेन सुत बालहु तिम देहहि दयो॥२४॥

(दोहा)

यह प्रताप आनर्तपति, सब उदंत[5] सुनवाय ॥
कुल निज जो आसान[6] किय, दिय सो प्रकट दिखाय॥ २५ ॥
वह निमित्त[7] लै उच्चरिय, क्यों तहँ ब्याहन देर॥
रिस पचाय धरनीधर८६हु, बुल्ल्यो सुनि तिहिं बेर॥ २६ ॥
हन्यौं जयद्वलनैं जबहि, नृप कृतबर्मा४५नाम ॥
सल नामक तस स्वसुर सन, कछु न सरयो तब काम२७
छिन्नि जयद्वलनैं लयो, हमसौं पुंड्रक देस ॥
जानहु इत उपकार जो, आनहु तो घर एस ॥ २८ ॥
सुनि सिटाय आनर्तपति, कह्यो बन्यौं सुहि अच्छ ॥
अकरनसौं अलपहि करन, कहत भलो नयदच्छ ॥ २९ ॥

सुंग ने सम्मति नामक पुत्री को विक्रम चहुवान को विवाही थी जिससे सहदेव का १ जन्म हुआ २ तब मामा ३ हैहय कुल के मुकुट सुनाभ को मारकर पुंड्रक ४ देश लिया और हरिसेन के पुत्र बाल ने भी मामा (गोग चहुवाण) की सहाय पर तिल तिल समान कट कर शरीर दिया है ॥ २४ ॥ ५ वृत्तान्त सुनाकर ६ अपने कुल ने जो चहुवाणों पर उपकार किये थे वे प्रकट करके दिखादिये ॥ २६ ॥ ७ वह कारण बताकर कह ॥ २६ ॥ कृतवर्मा चहुवान को जयद्बल ने मारा तब कृतवर्मा का स्वसुर सल नामक चन्द्रवंशी था जिससे कुछ कार्य नहीं सरा ॥ २७ ॥ जयद्बल ने हमारा पुंड्रक देश छीनलिया सो तुम हम पर उपकार किया चाहते हो तो वह पीछा हमको दिलाओ ॥ २८ ॥ आनर्त देश के राजा ने कहा कि जो कुछ हम से बना सो ही अच्छा है कुछ नहीं करनेवाले से न्यून करनेवाले को नीतिचतुर भला कहते हैं ॥ २९ ॥

सट्ठि६०बरस बय इत सु भयो रमनेस८७*धराधन ॥
उपज्यो न**तदपि ताकैं तनय पन लिय तव कारि सिव प्रनुत ॥
रावरे भेट सिर मम करौं संकर प्रभु जो देहु सुत॥३५॥

दोहा

दैवजोग पन लेत यह, तनय उपज्जिय तास॥
बाल छपाकर जिम बढिय, दिन प्रति भगवतदास८८॥३६॥
छन्नै नृप संधा लई, जानी इक्क१ न जाहि ॥
पुनि बुल्ल्यो अचलेस प्रभु, अर्बुद गिरि सिव आँहि॥३७॥
तिनके दरसन काज मैं,जावत सत्वर जत्थ ॥
इक अप्पन कुल जन्मभुव१,तित्थ२विदित पुनि तत्थ ॥३८॥

षट्पात्

इम कहि नृप रमसेन ८७ सचिव सामंत रक्खि तँहँ ॥
सेना कछु लै संग गयो अर्बुद गिरीस जँहँ ॥
सिव पूजन किय पुब्बं भक्ति १ उच्छव २ श्रद्धा ३ जुत ॥
पुनि तँहँ तीरथ बहुत हुते तिन बिच न्हायो नुत ॥
अभिधानं सुकवि तिनके कहत वंदन करि अति नम्म्र वनि॥
एकाग्र श्रवन धारहु नृपति रामसिंह चहुवान मनि ॥३९॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

---

*राजा(भूमि ही है धन जिसके)**तो भी उसके पुत्र नहीं हुआ १ शिव से बहुत नम्र होकर यह प्रण लिया कि २हे महादेव मुझे पुत्र दो तो मैं आपके मस्तक भेट करूं ।३५। ३ द्वितीया के चन्द्र समान बढा॥३६॥यह४प्रतिज्ञा राजा ने ली थी ५ है ॥ ३७ ॥ जहां पर ६ शीघ्र जाता हूं, वह आबू एक तौ अपने कुल की जन्मभूमि (चहुवान वहां पर ही उत्पन्न हुआ था इससे) है फिर वह प्रसिद्ध ७ तीर्थ भी है ॥ ३८ ॥ कामदार और ८ उमराओं को राजधानी में रखकर ९ आबू पर्वतराज पर गया वहां १० प्रथम महादेव का पूजन किया ११ स्तुतियोग्य१२उन तीर्थों के नाम ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)कहते हैं सो १३ हे रामसिंह एकाग्र होकर सुनो ॥ ३९ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में देवदत्त का कुसुमा से विवाह करना,कन्नोज के राजा

सट्ठि६०बरस बय इत सु भयो रमनेस८७*धराधन ॥
उपज्यो न**तदपि ताकै तनय पन लिय तब कारि सिव प्रनुत॥
रावरे भेट सिर मम करौं संकर प्रभु जो देहु सुत॥३५॥

दोहा

दैवजोग पन लेत यह, तनय उपज्जिय तास॥
बाल छपाकर[३] जिम बढिय, दिन प्रति भगवतदास८८॥३६॥
छन्नै नृप संधा लई, जानी इक्क[१] न जाहि ॥
पुनि बुल्ल्यो अचलेस प्रभु, अर्बुद गिरि सिव आहि॥३७॥
तिनके दरसन काज मैं,जावत सत्वर[६] जत्थ ॥
इक अप्पन कुल जन्मभुव१,तित्थ२बिदित पुनि तत्थ ॥३८॥

षट्पात्

इम कहि नृप रमसेन ८७ सचिव सामंत रक्खि तँहँ ॥
सेना कछु लै संग गयो अर्बुद गिरीस जँहँ ॥
सिव पूजन किय पुब्ब[१०] भक्ति १ उच्छव २ श्रद्धा ३ जुत ॥
पुनि तँहँ तीरथ बहुत हुते तिन बिच न्हायो नुत[११] ॥
अभिधान[१२] सुकवि तिनके कहत बंदन कारि अति नम्म्र बनि॥
एकाग्र श्रवन धारहु नृपति रामसिंह[१३] चहुवान मनि ॥३९॥
इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय ३ राशौ

---

*राजा(भूमि ही है धन जिसके)**तो भी उसके पुत्र नहीं हुआ१शिव से बहुत नम्र होकर यह प्रण लिया कि२हे महादेव मुझे पुत्र दो तो मैं आपके मस्तक भेट करूं।३५। ३ द्वितीया के चन्द्र समान बढा॥३६॥यह४प्रतिज्ञा राजा ने ली थी ५ है ॥ ३७ ॥ जहां पर ६ शीघ्र जाता हूं, वह आबू एक तौ अपने कुल की जन्मभूमि (चहुवान वहां पर ही उत्पन्न हुआ था इससे) है फिर वह प्रसिद्ध ७ तीर्थ भी है ॥ ३८ ॥ कामदार और ८ उमराओं को राजधानी में रखकर ९ आबू पर्वतराज पर गया वहां १० प्रथम महादेव का पूजन किया ११ स्तुतियोग्य१२उन तीर्थों के नाम ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल)कहते हैं सो १३ हे रामासिंह एकाग्र होकर सुनो ॥ ३९ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन में देवदत्त का कुसुमा से विवाह करना,कन्नोज के राजा

लगी मरन वह गोतमी, बिधवा गर्भ निहारि ॥
*नभबानी कहि तीर्थ फल, दिन्नी तब सु निवारि ॥३॥

पज्झटिका

मुनिबर बसिष्टको कुंड२÷जत्थ,करि श्राद्ध भूप किय×न्हान तत्थ
अग्गैं जँहँ नारद मुनिहु न्हाय,सबसौं सु अधिक बरन्यौं सुभाय४
देवी अरुंधती१जुत बसिष्ट२, पूजे नरेस तहँ धर्मनिष्ट ॥
पुनि भद्रकर्णन्हद३भूप पत्त[1],करि न्हान श्राद्ध करि दान दत्त[2] ॥५॥
तत्थहु पबित्र सिवलिंग आहि,बिधिसौं किय अर्चित[4] प्रनमि ताहि
हुव भद्रकर्ण सिबगन जु अग्ग, तानैं सु तीर्थ बिरच्यो सुमग्ग[5]६
सिवकै असुरनकै भयउ जुद्ध, बढि तत्थ लरयो यह गन प्रबुद्ध[6]।
जहँ असुचि नाम दानव चलाय,गुह१बीरभद्र२मुखँ दिय भजाय७
तहँ भद्रकर्ण मारयो सु दुष्ट, बर मंगि कहयो ठहै संभु तुष्ट ॥
गन अक्खिय मैं अर्बुद अगेस,प्रभुंलिंग सहित न्हद किय सुवेस८
गिरिजाजुत[11] निबसँहु[12] तहँ समत्थ, हर कहिय सदा मम बास तत्थ
जहँ माघ चउद्दसि१४[13]असित जाय, न्हावैं सु रहैं ममलोक आय९
केदार तीर्थ४पुनि न्हाय आप, गंगा१रु सरस्वति२ के मिलाप॥
किय अर्चन१तर्पन२श्राद्ध३कर्म, भूदेवन[14] अप्पिय[15] भूमि भर्म[16] ॥१०॥
रविबंसि भूप अजपाल अग्ग, पूछ्यो वसिष्ट सन कर्म मग्ग ॥
किहिंपुण्यज़ोरममराज्यआहिँ[17], महिषी१सुत२आदिहुहुकममाँहिँ[18]११
पुनि कहिय सूद्र हो अग्ग राय, रानीहु सबर्ण ही सभाय॥
तुम दुव रहि छुधित[19] दुर्भिक्षकाल,भुव भ्रमत गये अर्बुद[20] विहाल१२

पुत्र जना ॥ २ ॥ * आकाश वाणी ने ॥ ३ ॥ ÷ जहां पर × स्नान ॥ ४ ॥ १ पहुंचा २ दिया ॥ ५ ॥ ३ है ४ पूजित किया ५ श्रेष्ट मार्ग से ॥ ६ ॥ ६ पंडित ७ आदि ॥ ५ ॥ ८ शिव ने प्रसन्न होकर कहा ९ अर्बुद नामा पर्वतराज पर १० आके लिंग सहित एक द्रह (जलाशय) किया है ॥ ८ ॥ ११ पार्वती सहित यहां १२ वास करो १३ माघ वदि चवदस के दिन जाकर ॥ ९ ॥ १४ ब्राह्मणों को १५ दिया १६ सुवर्ण ॥ १० ॥ किस पुण्य के जोर से मुझे यह राज्य मिला १७ है १८ राणी पुत्र आदि सब मेरे हुकुम में हैं ॥ ११ ॥ बसिष्ट ने कहा कि हे राजा तू पहिले शूद्र था १९ भूखे २० आबू पर गये ॥ १२ ॥

लगी मरन वह गोतमी, बिधवा गर्भ निहारि ॥
*नभबानी कहि तीर्थ फल, दिन्नी तब सु निवारि ॥३॥

पज्झटिका

मुनिबर बसिष्टको कुंड२÷जत्थ, करि श्राद्ध भूप किय×न्हान तत्थ
अग्गैं जहँ नारद मुनिहु न्हाय, सबसौं सु अधिक बरन्यौं सुभाय४
देवी अरुंधती१जुत बसिष्ट२, पूजे नरेस तहँ धर्मनिष्ट ॥
पुनि भद्रकर्ण्ण ह्रद३भूप पत्त[1], करि न्हान श्राद्ध करि दान दत्त[2] ॥५॥
तत्थहु पबित्र सिवलिंग[3] आहि, बिधिसौं किय अर्चितें[4] प्रनमि ताहि
हुव भद्रकर्ण्ण सिवगन जु अग्ग, तानैं सु तीर्थ बिरच्यो सुमग्गं[5]६
सिवकै असुरनकै भयउ जुद्ध, वढि तत्थ लरयो यह गन प्रबुद्ध[6]।
जहँ असुचि नाम दानव चलाय, गुह१बीरभद्र२मुखँ दिय भजाय७
तहँ भद्रकर्ण्ण मार्‍यो सु दुष्ट, बर मंगि कह्यो[8] है संभु तुष्ट ॥
गन अक्खिय मैं[9] अर्बुद[10] अगेस, प्रभुलिंग सहित ह्रद किय सुवेस८
गिरिजाजुत[11] निबसहु[12] तहँ समत्थ, हर कहिय सदा मम बास तत्थ
जहँ माघ चउद्दसि[13]१४असित जाय, न्हावैं सु रहैं ममलोक आय९
केदार तीर्थ४पुनि न्हाय आप, गंगा१रु सरस्वति२ के मिलाप॥
किय अर्चन१तर्पन२श्राद्ध३कर्म, भूदेवन[14] अप्पिय[15] भूमि भर्म[16] ॥१०॥
रविबंसि भूप अजपाल अग्ग, पूछ्यो वासिष्ट सन कर्म मग्ग ॥
किहिंपुण्यज़ोरममराज्यआँहिं[17], महिषी[18]१सुत२आदिहुहुकममाँहिं११
पुनि कहिय सूद्र हो अग्ग राय, रानीहु सबण्णा ही सभाय॥
तुम दुव रहि छुधितें[19] दुर्भिक्षकाल,भुव भ्रमत गये अर्बुदं[20] विहाल१२

पुत्र जना ॥ २ ॥ * आकाश वाणी ने ॥ ३ ॥ ÷ जहां पर × स्नान ॥ ४ ॥ १ पहुंचा २ दिया ॥ ५ ॥ ३ है ४ पूजित किया ५ श्रेष्ठ मार्ग से ॥ ६ ॥ ६ पंडित ७ आदि ॥ ७ ॥ ८ शिव ने प्रसन्न होकर कहा ९ अर्बुद नामा पर्वतराज पर १० आके लिंग सहित एक द्रह (जलाशय) किया है ॥ ८ ॥ ११ पार्वती सहित यहां १२ वास करो १३ माघ वदि चवदस के दिन जाकर ॥ ९ ॥ १४ ब्राह्मणों को १५ दिया १६ सुवर्ण ॥ १० ॥ किस पुण्य के ज़ोर से मुझे यह राज्य मिला १७ है १८ राणी पुत्र आदि सब मेरे हुकुम में हैं ॥ ११ ॥ बसिष्ट ने कहा कि हेराजा तू पहिले शूद्र था १९भूखे२०आबू पर गये ॥ १२ ॥

गंगा तु पुब्बसायर पइठ्ठ, दूजी२हुव पच्छिमसिंधु निट्ठ ॥
केदार सहित ए सरित दोय२, अर्बुद किम निबसत इक्क होय।२२।
बोले पुलस्त्य इम समयपाय, ब्रह्मादि जुरे सब मेरु आय ॥
गंगा१प्रयाग२मुख तीर्थ सर्ब, धरि देह गये महिमा अखर्ब ॥२३॥
मघवा बिरंचिसौं जोरि हत्थ, पूछे समस्त जुगधर्म सत्थ ॥

विधि कहिय जुगत्रय३पुराय बास,

कलिमाँहिं कह्यो सब तीर्थ नास ॥ २४ ॥

यह सुनत कंपि तीरथ असेस बुल्ले अगम्य कलिकै जु देस ॥
सो देहु अप्प हमकों पसस्त, कलिमाँहि तहाँ रहिहैं समस्त।२५।
अर्बुद तब अक्खिय कंजजात,तँहँ सब स्वअंसें करि रहहु तात॥
कलिको बल अर्बुदपर चलै न,वह करहु जाय सब तीर्थ ऐनं।२६।
आश्रय सु पाय तीरथ असेस, तबसौंहि रहत अर्बुद नगेसं ॥
गंगा१रु सरस्वति२इहिं निदान,नहि द्वैरहि उहाँ सब तीर्थ थान।२७।
मंकणाकनाम हुव बिप्र अग्ग, अर्बुद तप सद्ध्यो जिहिं उदग्ग ॥
चुभिदर्भ इक्क१दिन कर प्रवेस,सौं कर सु कढ्यो नहि रुधिर लेस२८
सो देखत अप्पहिं जानि सिद्ध, नच्चन लगो सु मुनि मोदविद्ध॥
तपके प्रभाव तस संग एस, अवनीहु लगी नच्चन असेस ॥२९॥
पठये तब देवन सिव पसस्त,तिन भस्म निकास्यो खानि स्वहस्त॥

गंगा तो १ पूर्व समुद्र में पैठी और सरस्वती नदी पश्चिम समुद्र मं २ नाश हुई ३ ये दोनों नदियें शामिल होकर आबू पर कैसे निवास करती हैं ४आदि सबतीर्थ५इन्द्र ने६ब्रह्मा से हाथजोड़कर७सब युगों के धर्म पूछे८ सम्पूर्ण तीर्थ धूजकर९जिस देश में कलियुग नहीं जासके तिस देश को हमें बताओ वहां जाकर हम सब कलियुग में रहेंगे१०ब्रह्मा ने आबू को बताया कि वहां तुम सब११अपने अपने अंशों से जाकर रहो१२उसको सब तीर्थ अपना घर बनाओ ॥२६॥१३आबू पर्वतराज पर रहते हैं१४इसकारण से गंगा और सरस्वती वहां पर हैं१५ये दोनों ही नहीं किन्तु सभी तीर्थों का वहां स्थान है ॥२७॥१६उदग्र तप साधा उसके हाथ में एक दिन डाभ चुभ गया१७उस हाथ से लेश मात्र भी रुधिर नहीं निकला ॥ २८ ॥१८उसके साथ सम्पूर्ण भूमि भी नचने लगी १९ देवताओं ने शिव को मंगल(शुभ) करने को

गंगा तु पुव्वसायर पइठ्ठ, दूजी[२]हुव पच्छिमसिंधु निठ्ठ ॥
केदार सहित ए सरित दोय[२], अर्बुद किम निबसत[३] इक्क होय।२२।
बोले पुलस्त्य इम समयपाय, ब्रह्मादि जुरे सब मेरु आय ॥
गंगा[१]प्रयाग[२]मुख[४] तीर्थ सर्ब, धरि देह गये महिमा अखर्ब ॥२३॥
मघवा[५] बिरंचिसौं[६] जोरि हत्थ, पूछे समस्त जुगधर्म[७] सत्थ ॥
विधि कहिय जुगत्रय[३]पुराय बास,
कलिमाँहिं कह्यो सब तीर्थ नास ॥ २४ ॥
यह सुनत कंपि तीरथ असेस बुल्ले अगम्य कलिकै[८] जु देस ॥
सो देहु अप्प हमकौं प्रसस्त, कलिमाँहि तहाँ रहिहैं[९] समस्त।२५।
अर्बुद तब अक्खिय कंजजात[१०],तँहँ सब स्वअंसँ[११] करि रहहु तात॥
कलिको बल अर्बुदपर चलै न,वह करहु जाय सब तीर्थ अैन[१२]।२६।
आश्रय सु पाय तीरथ असेस, तबसौंहि रहत अर्बुद नगेस[१३] ॥
गंगा[१]रु सरस्वति[२]इहिं निदान[१४],नहि द्वै[१५]हि उहाँ सब तीर्थ थान।२७।
मंकणकनाम हुव बिप्र अग्ग, अर्बुद तप सद्ध्यो जिहिं उदग्ग[१६] ॥
चुभिदर्भ इक्क[१]दिन कर प्रवेस,सौ[१७] कर सु कढ्यो नहि रुधिर लेस२८
सो देखत अप्पहिं जानि सिद्ध, नच्चन लगो सु मुनि मोदविद्ध॥
तपके प्रभाव तस संग एस, अवनीहुँ[१८] लगी नच्चन असेस ॥२९॥
पठये तब देवन[१९] सिव प्रसस्त,तिन भस्म निकास्यो खनि स्वहस्त॥

गंगा तौ १ पूर्व समुद्र में पैठी और सरस्वती नदी पश्चिम समुद्र म २ नाश हुई ३ ये दोनों नदियें शामिल होकर आबू पर कैसे निवास करती हैं ४आदि सबतीर्थ५इन्द्र ने६ब्रह्मा से हाथ जोड़कर७सब युगों के धर्म पूछे८ जिस देश में कलियुग नहीं जासके तिस देश को हमें बताओ वहां जाकर हम सब कलियुग में रहेंगे१०ब्रह्मा ने आबू को बताया कि वहां तुम सब११अपने अपने अंशों से जाकर रहो१२उसको सब तीर्थ अपना घर बनाओ ॥२६॥१३आबू पर्वतराज पर रहते हैं१४इसकारण से गंगा और सरस्वती वहां पर हैं१५ये दोनों ही नहीं किन्तु सभी तीर्थों का वहां स्थान है ॥२७॥१६उदग्र तप साधा उसके हाथ में एक दिन डाभ चुभ गया१७उस हाथ से लेश मात्र भी रुधिर नहीं निकला ॥ २८ ॥१८उसके साथ सम्पूर्ण भूमि भी नचने लगी १९ देवताओं ने शिव को मंगल(शुभ) करने को

सब हेतु पुच्छि दै अंगसंग, बर लेहु कह्यो जो मन उमंग ॥
तिहिं कहिय इहाँ इहिं दिन जुन्हाय, सुरप्रिय सु होय लहि दिव्यकाय ।३६।
लै मोहि चलहु बर अपर एस, लैगो तथास्तु कहि तिहिं सुरेस ॥
अर्बुदसौं इम बपु रूप श्रेय, अच्छरि भई सु वपु नामधेय ॥ ४० ॥
अद्यावधि तिहिं दिन न्हान तत्थ, सो सौंझ आत सुररमनि सत्थ ॥
तहँ रूपतीर्थ ढिग पुब्ब देस, अति दिग्घ उपलमय है गनेस ॥४१॥
इक तिलक रुक्ख गजमुख समीप, इहिं तल अथाह इक बिल महीप
जब स्वर्ग गयो बलि असुरराय, सुर संक दुरे जित तित पलाय ४२
तब अदिति जाय तिहिं बिवरमज्झ, तप करत भई हरिहित असज्ज
हरि तुष्टै बसे तस गर्भ आय, लिय जन्म माघसित तीज पाय ४३
तिहिं कारन इतरनतैं बिसेस, हुव रूपतीर्थ अतिपुराय देस ॥
सितस्वच्छ अदितितप बिवरमाँहिं, इक संखरूप बर उपल आँहिं ।४४।
जल जास पानकरि तिलक जुत्त, बंझाहु वृद्ध पावत सुपुत्त ॥
यह रूपतीर्थ महिमा अमान, रमनेस करिय तहँ न्हान दान ।४५।
पुनि अंबरीष आश्रम पधारि, किय बिधि समस्त तहँ पुरायकारि
जहँ अंबरीस इक बिष्णु तर्ष, अनसनं तप साद्धिय अयुत १०००० बर्ष ४६
व्है इंद्र लगे बर देन विष्णु, सो नृप लयो न तिन्ह जानि जिष्णु ॥
खिजि इंद्र तबहि लिय बज्र हत्थ, तदपि सु डरयो न हरिभक्त तत्थ ४७

इन्द्र ने आकर देखी ॥ ३८ ॥ १सब कारण पूछकर उससे आलिंगन करके कहा २ देवताओं को प्रिय ॥ ३९ ॥ ३दूसरा वह वपु४नामक अप्सरा हुई ॥४०॥५ अब तक ६ देवताओं की स्त्रियों के साथ संध्या को साथ आती है ७ पत्थर का बनाहुआ गणेश है ॥ ४१ ॥ ८ छिन्नरुह (वृक्ष विशेष) ९ इन्द्र १० भागकर उस विवर में छिपे थे ॥ ४२ ॥ ११ असह १२ विष्णु ने प्रसन्न होकर अदिति के गर्भ में वास किया और माघ सुदि तीज को जन्म लिया ॥ ४३ ॥ इसकारण से वह १३ अन्य तीर्थों से विशेष है अदिति ने जिस १५विवर में तप किया था वहां स्वच्छ और १४ स्वेत १६पत्थर का शंख है ॥ ४४ ॥१७बांझ और बूढी स्त्री भी पुत्र पाती है १८ अमाप ॥ ४५ ॥ विष्णु के दर्शनों की१९इच्छावाले ने२०निराहार ॥ ४६ ॥ विष्णु२१इन्द्र का स्वरूप करके वर देने लगे२२उनको इन्द्र जानकर ॥ ४७ ॥

सब हेतु पुच्छि दै अंगसंग, बर लेहु कह्यो जो मन उमंग ॥
तिहिँकहियइहाँइहिँदिनजुन्हाय,सुरप्रियसुहोयलहिदिव्यकाय ।३९।
लैमोहि चलहु बर अपर एस, लैगो तथास्तु कहि तिहिँ सुरेस ॥
अर्बुदसौँ इम बपु१रूप२श्रेय,अच्छरि भई सु वपु नामधेय ॥ ४० ॥
अद्यावधि तिहिँदिन न्हान तत्थ, सो साँझ आत सुररमनि सत्थ ॥
तँहँ रूपतीर्थ ढिग पुब्ब देस, अति दिग्घ उपलमँय है गनेस१ ॥४१॥
इक तिलक रुक्ख१गजमुख समीप,इहिँ तल अथाह इक बिल१महीप
जब स्वर्ग गयो बलि असुरराय, सुर१संक्रर२दुरे जित तित पलाय४२
तब अदिति जाय तिहिँ बिवरमज्झ,तप करतभई हरिहित असज्ज
हरि तुष्टे बसे तस गर्भ आय, लिय जन्म माघसित तीज३पाय४३
तिहिँ कारन इतरनतैँ बिसेस, हुव रूपतीर्थ६ अतिपुराय देस ॥
सितस्वच्छअदिततिपबिवरमाँहिँ,इकसंखरूपवरउपल१आँहिँ ।४४।
जल जास पानकरि तिलक जुत्त, बंझाँहु वृद्ध पावत सुपुत्त ॥
यह रूपतीर्थ६ महिमा अमान, रमनेस करिय तँहँ न्हान दान ।४५।
पुनि अंबरीष आश्रम७ पधारि, किय बिधि समस्त तँह पुरायकारि
जँहँ अंबरीस इक बिष्णु तर्ष,अनसनंतपसाद्धियअयुत१०००० बर्ष४६
व्है इंद्र लगे बर देन विष्णु,सो नृप लयो न तिन्ह जानि जिष्णु ॥
खिजि इंद्र तबहि लिय बज्र हत्थ,तदपि सु डरयो न हरिभक्त तत्थ४७

इन्द्र ने आकर देखी ॥ ३८ ॥ १सब कारण पूछकर उससे आलिंगन करके कहा २ देवताओं को प्रिय ॥ ३९ ॥ ३दूसरा वह वपु४नामक अप्सरा हुई ॥४०॥५ अब तक ६ देवताओं की स्त्रियों के साथ संध्या को साथ आती है ७ पत्थर का बनाहुआ गणेश है ॥ ४१ ॥ ८ छिन्नरुह (वृक्ष विशेष) ९ इन्द्र १० भागकर उस विवर में छिपे थे ॥ ४२ ॥ ११ असह १२ विष्णु ने प्रसन्न होकर अदिति के गर्भ में बास किया और माघ सुदि तीज को जन्म लिया ॥ ४३ ॥ इसकारण से वह १३ अन्य तीर्थों से विशेष है अदिति ने जिस १५विवर में तप किया था वहां स्वच्छ और १४ स्वेत १६पत्थर का शंख है ॥ ४४ ॥१७बांझ और बूढी स्त्री भी पुत्र पाती है १८ अमाप ॥ ४५ ॥ विष्णु के दर्शनों की१९इच्छावाले ने२०निराहार ॥ ४६ ॥ विष्णु२१इन्द्र का स्वरूप करके वर देने लगे२२उनको इन्द्र जानकर ॥ ४७ ॥

कुटिलाविरूपश्राकृतिकराल, बनभ्रमततृसित जलहितविहाल ।५७।
मध्यान्ह समय रविग्रहन होत, तिहिँ कुंड पैठि दिय सलिलगोत[1]॥
ततकाल भई अतिदिव्यदेह, आई जलबाहिर निकसि एह ॥५८॥
तहँबालखिल्ल्यछअयुत६००००मुनीस, आराधततपकरिलोकईस[2]
तस[3] पतिहु तदनु[4] बालक उपेत[5], आयो पुलिंद वह बिकल चेत५९
पुच्छी पुलिंद बरबपु[6] भई सु, मम तिय इत आई कित गई सु ॥
सो सुनत कह्यो इहिँ कुंड न्हाय,मैं नाथ लयो यह रूप पाय।६०।
जल ससुत[7] धस्यो यह सुनत जावँ[8], रवि तावँ[9] तज्यो तमग्रस्तभाव॥
सुंदर भयो न ताको सरीर, मरिगो पुलिंद तब व्है अधीर ॥६१॥
मणिकर्णिका सु लखि चिति[10] बनाय,जरिबेहि लगी तस संग जाय
तब मुनिन यहै बरजी निहोरि, सु सती रही न पतिसंग छोरि६२
तब मुनिन तास करि दिव्यकाय, दिन्नौं पुलिंद तपबल जिवाय ॥
किन्नौं तस पुत्तहु दिव्यदेह, अक्खिय पुलिंद प्रति बचन एह ।६३।
तू अग्ग बिस्वजित नाम भूप, रमनी१ सुत१ जुत[11] हो दिव्यरूप ॥
बासर[12] इक१तीन३हि चढि बिमान, दिवँ[13] जानलगे तुम देहवान[14]६४
मुनि संख[16] मिले मगबिच बिरत्त[15], तिन्ह लंघि यान तव अग्गपत्त[17]॥
परि अबहि नारि सुत सहित पाप,सठ व्याध होहु दिय संख सापद५
तैं कहिय कहहु उद्धार काल, मुनि कहिय भ्रमत बनबन बिहाल
मारिहै तू अर्बुद अद्रि जाय, पुनि बालखिल्ल्य दैहैं जिवाय ॥६६॥

---

१ जल में गोता लगाया ॥ ५८ ॥२विष्णु भगवान् की आराधना करते हैं ३ मणिकर्णिका का पति भी ४ जिस पीछे ५ बालक सहित आया ॥ ५९ ॥ ६ श्रेष्ठ शरीरवाली होगई थी जिससे पूछा ॥ ६० ॥ ७ पुत्र सहित ८ जब यह भीतर घुसा ९ तब सूर्यग्रहण मिटचुका था इसकारण से पुलिन्द का शरीर सुन्दर नहीं हुआ ॥ ६१ ॥ १० चिता बनाकर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ मुनियों ने पुलिन्द से कहा कि ११स्त्री और पुत्र सहित दिव्य रूपवाले थे१२एक दिन १३ स्वर्ग जाने लगे १४ देह सहित [स्थूल शरीर से स्वर्ग में जाना दुर्लभ माना जाता है] ॥ ६४ ॥ १५ विरक्त १६ शंख नामक मुनि मार्ग में मिले उनको लांघकर तू आगे १७ गया ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

कुटिला बिरूप आकृति कराल, बन भ्रमत तृसित जल हित बिहाल ।५७।
मध्यान्ह समय रविग्रहन होत, तिहिँ कुंड पैठि दिय सलिलगोत[1] ॥
ततकाल भई अतिदिव्यदेह, आई जलबाहिर निकसि एह ॥५८ ॥
तहँ बालखिल्ल्य छ अयुत ६०००० मुनीस, आराधत तप करि लोकईस[2]
तस[3] पतिहु तदनु[4] बालक उपेत, आयो पुलिंद वह बिकल चेत ५९
पुच्छी पुलिंद बरबपु[6] भई सु, मम तिय इत आई कित गई सु ॥
सो सुनत कह्यो इहिँ कुंड न्हाय, मैं नाथ लयो यह रूप पाय ।६०।
जल ससुत धस्यो यह सुनत जाव, रवि ताव तज्यो तमग्रस्तभाव ॥
सुंदर भयो न ताको सरीर, मरिगो पुलिंद तब व्है अधीर ॥६१ ॥
मणिकर्णिका सु लखि चिति[10] बनाय, जरिवेहि लगी तस संग जाय
तब मुनिन यहै बरजी निहोरि, सु सती रही न पतिसंग छोरि ६२
तब मुनिन तास करि दिव्यकाय, दिन्नौं पुलिंद तपबल जिवाय ॥
किन्नौं तस पुत्तहु दिव्यदेह, आक्खिय पुलिंद प्रति बचन एह ।६३।
तू अग्ग बिस्वजित नाम भूप, रमनी[11]१ सुत१ जुत हो दिव्यरूप ॥
बासर[12] इक१ तीन३ हि चढि बिमान, दिवँ[13] जानलगे तुम देहँवान[14] ६४
मुनि संख[15] मिले मगबिच बिरत्त[16], तिन्ह लंघि यान तब अग्गपत्त[17] ॥
परि अबहि नारि सुत सहित पाप, सठ व्याध होहु दिय संख साप ६५
तैं कहिय कहहु उद्धार काल, मुनि कहिय भ्रमत बनबन बिहाल
मरिहै तू अबुर्द अद्रि जाय, पुनि बालखिल्ल्य दैहैं जिवाय ॥६६॥

---

१ जल में गोता लगाया ॥ ५८ ॥ २ विष्णु भगवान् की आराधना करते हैं ३ मणिकर्णिका का पति भी ४ जिस पीछे ५ बालक सहित आया ॥ ५९ ॥ ६ श्रेष्ठ शरीरवाली होगई थी जिससे पूछा ॥ ६० ॥ ७ पुत्र सहित ८ जब यह भीतर घुसा ९ तब सूर्यग्रहण मिटचुका था इसकारण से पुलिन्द का शरीर सुन्दर नहीं हुआ ॥ ६१ ॥ १० चिता बनाकर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ मुनियों ने पुलिन्द से कहा कि ११ स्त्री और पुत्र सहित दिव्य रूपवाले थे १२ एक दिन १३ स्वर्ग जाने लगे १४ देह सहित [स्थूल शरीर से स्वर्ग में जाना दुर्लभ माना जाता है] ॥ ६४ ॥ १५ विरक्त १६ शंख नामक मुनि मार्ग में मिले उनको लांघकर तू आगे १७ गया ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

आनी बराह अवनी उठाय, तिहिँ थप्पि कह्यो रहि अचल काय॥
भूँ कहिय रहहु मम पिट्ठि नाहँ, तिय नेह तबहि बुल्ले बराह।७७।
अर्बुदगिरि है इक सर सुढार, बसिहौं तहाँहि तव कथितकार ॥
इम कहि रु बसे अर्बुद बराह, अति पुराय भयो वह न्हद अथाह॥७८
तहँ सज्झि भूप बेदोक्त राह, पहुँच्यो प्रभास तीर्थ१४हु सचाह ॥
सहि दच्छ प्रजापति दत्त साप, ससि जहँ प्रभा लही सिव प्रताप।७९।
अग्गैं बनि दुल्लह रजनिईस, व्याही दच्छसुता सत्तवीस२७ ॥
ससि तदपि रोहिनीसौं प्रसन्न, पितु सरन सोति तव खिल२६ प्रपन्न८०
सुनि दच्छ कुपित दिय घोर साप, तू चंद्र लेहु खयरोग ताप ॥
तब बिकल चंद्र लहि घोर खैन, सज्झिय तप अर्बुदअद्रि ऐन।८१।
तहँ जाहि अयुत१०००० हायन बिताय, ईसान तुष्ट दिय दरस आय॥
किय इंदु अरज बर दैन काल, जगदीस व्याधि मेटहु जटाल॥८२
बल्लि तीर्थ यहै मम तप बिपाप, न्हद ख्यात होहु अघहर दुराप॥
सिवकहियतोहिखयदियजुदच्छ, पच्छैंसुघटिजावहुबढहुपच्छ॥८३॥
तव अंग प्रभा हुव अत्त तात, यह होहु प्रभासहि खेत्र ख्यात ॥
लहि चंद्रग्रहन१पुनि चंद्रबार२, यह श्राद्ध गयाफल दैनहार॥८४॥
सिव गुप्त भये करि इम निदेस, तहँ जाय कृत्य सब किय नरेस॥
पुंड्रोदक१५तीरथ बहुरि पत्त, किय पान१न्हान२बहुदान३तत्त।८५।

जाते ॥ ७६॥ २भूमि को ३ भूमि ने वराह से कहा कि४ हे पति मेरी पीठ पर रहो ॥ ७७ ॥ ५ सुन्दर तालाव ६ तेरा कहा करनेवाला ॥ ७८ ॥ दक्ष प्रजापति का ७दियाहुआ श्राप सहन करके८चन्द्रमा ने पीछी अपनी९कान्ति शिव के प्रताप से ली ॥ ७९ ॥ १० चन्द्रमा ने दुल्लह बनकर दक्ष की सत्ताईस पुत्रियां विवाही थीं११तोभी चन्द्रमा रोहिणी से ही प्रसन्न था तब बाकी की छब्बीस ही अपने पिता के शरण १२ आईं ॥ ८० ॥ १३ क्षय रोग लेकर आबू पर्वत के १४ स्थान पर तप साधा ॥ ८१ ॥ दश हजार १५ वर्ष बिताकर शिव ने १६ प्रसन्न होकर १८ हे जटाधारी जगदीश यह १७ रोग मेटो ॥ ८२ ॥ १९ पुनि२०दुर्लभ२१दक्ष ने जो क्षयरोग दिया है वह एक२२ पक्ष में घट जावेगा और एक पक्ष में बढेगा ॥ ८३ ॥ तेरे शरीर की२३ कान्ति यहां पर हुई है ॥ ८४ ॥ ८५ ॥

आनी बराह अवनी[2] उठाय, तिहिँ थप्पि कह्यो रहि अचल काय॥
भू[3] कहिय रहहु मम पिट्ठि नाहँ[4], तिय नेह तबहि बुल्ले बराह।७७।
अर्बुदगिरि है इक सर[5] सुढार, बसिहौं तहाँहि तव कथितकार[6]॥
इम कहि रु बसे अर्बुद बराह, अति पुण्य भयो वह ह्रद अथाह।७८
तँहँ सद्धि भूप बेदोक्त राह, पहुँच्यो प्रभास तीर्थ१४हु सचाह॥
सहि[7] दच्छ प्रजापति दत्त[7] साप, ससि[8] जँहँ प्रभा[9] लही सिव प्रताप।७९।
अग्गैं बनि दुल्लह रजँनिईस, व्याही दच्छसुता सत्तवीस२७॥
ससि तदपि[11] रोहिनीसौं प्रसन्न, पितु सरन सोति तब खिल२६प्रपन्न[12]८०
सुनि दच्छ कुपित दिय घोर साप, तू चंद्र लेहु खयरोग ताप॥
तब बिकल चंद्र लहि घोर खैन[13], सद्धिय तप अर्बुदअद्रि ऐन[14]।८१।
तँहँ जाहि अयुत१००००हायन[15] बिताय, ईसान तुष्ट[16] दिय दरस आय॥
किय इंदु अरज बर दैन काल, जगदीस व्याधि[17] मेटहु जटाल[18]८२
बल्लि[19] तीर्थ यहै मम तप बिपाप, ह्रद ख्यात होहु अघहर दुराप[20]॥
सिवकहिय तोहि खय दिय जु द[21]च्छ, पच्छैं[22] सु घटि जावहु बढहु पच्छ॥८३॥
तव अंग प्रभा[23] हुव अत्र तात, यह होहु प्रभासहि खेत्र ख्यात॥
लहि चंद्रग्रहन१पुनि चंद्रबार२, यह श्राद्ध गयाफल दैनहार॥८४॥
सिव गुप्त भये करि इम निदेस, तहँ जाय कृत्य सब किय नरेस॥
पुंड्रोदक१५तीरथ बहुरि पत्त, किय पान१न्हान२बहुदान३तत्त।८५।

जाते॥ ७६॥ २भूमि को ३ भूमि ने बराह से कहा कि४ हे पति मेरी पीठ पर रहो॥ ७७॥ ५ सुन्दर तालाव ६ तेरा कहा करनेवाला॥ ७८॥ दक्ष प्रजापति का ७दियाहुआ श्राप सहन करके८चन्द्रमा ने पीछी अपनी९कान्ति शिव के प्रताप से ली॥ ७९॥ १० चन्द्रमा ने दुल्लह बनकर दक्ष की सत्ताईस पुत्रियां विवाही थीं११तोभी चन्द्रमा रोहिणी से ही प्रसन्न था तब बाकी की छब्बीस ही अपने पिता के शरण १२ आई॥ ८०॥ १३ क्षय रोग लेकर आबू पर्वत के १४ स्थान पर तप साधा॥ ८१॥ दश हजार १५ वर्ष बिताकर शिव ने १६ प्रसन्न होकर १८ हे जटाधारी जगदीश यह १७ रोग मेटो॥ ८२॥ १९ पुनि२०दुर्लभ२१दक्ष ने जो क्षयरोग दिया है वह एक२२ पक्ष में घट जावेगा और एक पक्ष में बढेगा॥ ८३॥ तेरे शरीर की२३ कान्ति यहां पर हुई है॥ ८४॥ ८५॥

मिटितीर्थन१नरकन२केर मग्ग, सुर इष्ट[1] थके मख सुख समग्ग॥
अमरन[2] तब अर्बुद बहुरि आय, देवी प्रति बिन्नति किय हिताय[3]।९५।
लखि तोहि सबहि सुरलोक जात,अब उचित इहाँ रहिबो न मात॥
ऐसो उपाय करि चलहु आप, जिम डिगसकै न बाष्कलि सपाप
सुनि तत्थ पादुका[4] थप्पि स्वीय,जड रक्खि तिमहि बाष्कलि बलीय
देवी प्रयानकिय स्वीय लोक,किय कृत्य भूप[6] तत्थहु विसोक।९७।
पुनि सुक्क तीर्थ१७चहुवान जाय,किय न्हान दान हिय भक्ति लाय॥
अग्गैं इक समिल रजक[8] दच्छ, ल्यायो नृप बस्त्रन करन स्वच्छ॥९८॥
इक[9] सकुनि गयो लै तिन्ह उठाय, डारे सब नीलीकुंड[10] जाय ॥
रजक[11]हु लगि सत्वर[12] पिट्ठि तास,नीलीगत देखे मलिन बास[13]।९९।
तिन्ह लै रु आय भरि खरन[14] भार,सकुटुंब सु भज्जन[15] भो तयार॥
इक कीर सुता[16] तहँ कहिय आय,क्यौं भजहु सुनहु इन को उपाय।१००
ममभ्रात१मैं२रु मम जनक[17]३मात४,देखहु तुम बपु करि हैं वदात[18]॥
अर्बुद इक पल्वल[19] जल उपेत[20], सब बस्तु होत जिहिं संग स्वेत१०१
धावक[21] सुनि तिहिं जल बस्त्र धोय, हुल्लस्यो[22] करि स्वच्छ सु अभय होय
नृप अग्ग निवेदे कहि निदान[23],प्रत्यक्ष जाय नृप लिय प्रमान।१०२।
दै सुतहिं राज्य तप सद्धि तत्थ, सकुटुंब गयो दिवँ[24] वह समत्थ ॥

इससे तीर्थों के और नरकों के मार्ग मिटगये और जब देवताओं का १ प्रिय यज्ञ का सुख था सो मिटने लगा तब२देवताओं ने आकर३हित के अर्थ विनती की५अपनी ४ पावड़ियें स्थापन करके बलवान् बाष्कालि को जड़ रखकर देवी ने अपने लोक में गमन किया वहां पर ६ राजा रमनेस चहुवाण ने कृत्य किया ॥ ९७ ॥ ७ चतुर ८ धोबी हुआ सो ॥ ९८ ॥ एक ९ पक्षी उन वस्त्रों को लेगया सबको१०नील के कुंड में जाकर डालदिये ११धोबी ने भी १२शीघ्र उस पक्षी के पीछे लगकर नील में गयेहुए१३वस्त्रों को मलीन देखे ॥ ९९ ॥१४गधों पर भरकर१५भागने को तैयार हुआ१६एक धीवर की पुत्री ने कहा ॥ १०० ॥१७पिता१८उज्ज्वल शरीरवाले हैं १९ तालाव २० जल सहित है ॥ १० ॥ २१ धोबी ने सुनकर २२ हर्षयुक्त हुआ २३ वस्त्र उज्ज्वल होने का कारण कहकर वस्त्र राजा के भेट किये और राजा ने भी जाकर प्रत्यक्ष प्रमाण लिया ॥ १०२ ॥ २४ स्वर्ग में गया ॥ १०३ ॥

मिटितीर्थन१नरकन२केर मग्ग, सुर इष्ट३ थके मख सुख समग्ग॥
अमरन२ तब अर्बुद बहुरि आय, देवी प्रति बिन्नति किय हिताय३।९५।
लखि तोहि सबहि सुरलोक जात, अब उचित इहाँ रहिबो न मात॥
ऐसो उपाय करि चलहु आप, जिम डिगसकै न बाष्कलि सपाप
सुनि तत्थ पादुका४ थप्पि स्वीय, जड रक्खि तिमहि बाष्कलि बलीय
देवी प्रयानकिय स्वीय लोक, किय कृत्य भूप६ तत्थहु विसोक।९७।
पुनि सुक्क तीर्थ१७चहुवान जाय, किय न्हान दान हिय भक्ति लाय॥
अग्गैं इक समिल रजक८ दच्छ, ल्यायो नृप बस्त्रन करन स्वच्छ॥९८॥
इक सकुनि९ गयो लै तिन्ह उठाय, डारे सब नीलीकुंड१० जाय ॥
रजकहु११ लगि सत्वर१२ पिट्ठि तास, नीलीगत देखे मलिन बास१३।९९।
तिन्ह लै रु आय भरि खरन१४ भार, सकुटुंब सु भज्जन१५ भो तयार॥
इक कीर सुता१६ तहँ कहिय आय, क्यों भजहु सुनहु इन को उपाय १००
ममभ्रात१मैं२रु मम जनक१७३मात४, देखहु तुम बपु करि हैं वदात१८॥
अर्बुद इक पल्वल१९ जल उपेत२०, सब बस्तु होत जिहिं संग स्वेत१०१
धावक२१ सुनि तिहिं जल बस्त्र धोय, हुलस्यो२२ करि स्वच्छ सु अभय होय
नृप अग्ग निवेदे कहि निदान२३, प्रत्यक्ष जाय नृप लिय प्रमान।१०२।
दै सुतहिं राज्य तप साद्धि तत्थ, सकुटुंब गयो दिवँ२४ वह समत्थ ॥

इससे तीर्थों के और नरकों के मार्ग मिटगये और जब देवताओं का१प्रिय यज्ञ का सुख था सो मिटने लगा तब२देवताओं ने आकर३हित के अर्थ विनती की५अपनी ४ पावड़िये स्थापन करके बलवान् बाष्कलि को जड़ रखकर देवी ने अपने लोक में गमन किया वहां पर ६ राजा रमनेस चहुवाण ने कृत्य किया ॥ ९७ ॥ ७ चतुर ८ धोबी हुआ सो ॥ ९८ ॥ एक ९ पक्षी उन वस्त्रों को लेगया सबको१०नील के कुंड में जाकर डालदिये ११धोबी ने भी १२शीघ्र उस पक्षी के पीछे लगकर नील में गयेहुए१३वस्त्रों को मलीन देखे ॥ ९९ ॥१४गधों पर भरकर१५भागने को तैयार हुआ१६एक धीवर की पुत्री ने कहा ॥ १०० ॥१७पिता१८उज्ज्वल शरीरवाले हैं १९ तालाव २० जल सहित है ॥ १० ॥ २१ धोबी ने सुनकर २२ हर्षयुक्त हुआ २३ वस्त्र उज्ज्वल होने का कारण कहकर वस्त्र राजा के भेट किये और राजा ने भी जाकर प्रत्यक्ष प्रमाण लिया ॥ १०२ ॥ २४ स्वर्ग में गया ॥ १०३ ॥

द्वीपीहु लखत करि दुसह गज्ज, हत्थल प्रसारि हुव हनन सज्ज ११२
कटकट बजाय दंतन कराल, फुल्लाय सटा लिय उद्ध फाल ॥
लांगूल छत्रकरि सिर निसंक, तड्यो प्रसारि नख वज्रटंक ११३
तहँ कहिय धेनु मम बाल बच्छ, दूर्वादि ग्रास परिचय अदच्छ ॥
पय ताहि पिवावन सिक्ख देहु, ऐहौं पुनि जानहु सत्य एहु ११४
मन्नैं न व्याघ्र गिनि बिपति बैन, लग्गी तब सुरभी सपथ लेन ॥
प्रतिभय द्विजहत्या आदि पाप, ते मोहि अनागम देहु ताप ११५
सुनि सपथ बग्घ दिय सिक्ख ताहि, व्रज निज गई सु संधा निबाहि
तर्णक धपाय तँहँ निष्ठि रक्खि, आत्मीय सखिन तस त्रान अक्खि ११६
रोकीहु साधु तिनतैं रुकी न, आई सु बग्घपहँ पन अधीन ॥
द्वीपीहु देखि आनी दयाहि, अक्खिय तू भगिनी धन्य आहि ११७
व्रत ऋत निबाहि आई बहोरि, छलि मोहि गयँ देतो न छोरि ॥
अब जाहु बहिनि निर्भय निकाय, पोखहु जामेयहिँ छीर पाय ११८
यह कहत बग्घ धरि दिव्य अंग, सो भो नरेस कँपिला प्रसंग ॥
सब भूत कहि रु सत्यहिँ सिराहि, तव को अभीष्टँ नृप कहिय ताहि ११९

वह व्याघ्र मारने को तैयार हुआ. जब गर्दन ऊपर के केसों को फुलाकर ऊपर उडा और पूंछ का अपने मस्तक पर छत्र करके वज्रटंक के समान नखों को फैलाकर गर्जा ॥ ११३ ॥ तब गऊ ने कहा कि मेरा बछड़ा दूब आदि घास खाने के अभ्यास में चतुर नहीं है जिसको दूध पिलाने की सीख दे मैं पीछी आजाऊँगी यह सत्य जानो ॥ ११४ ॥ उस धेनु के विपत्ति के वचन (विपत्ति में झूठ बोला ही करते हैं) जानकर व्याघ्र ने नहीं माने तब वह गऊ सोगन करने लगी कि मैं पीछी नहीं आऊँ तो ब्रह्महत्या आदि का मुझे भय होवे ॥ ११५ ॥ व्याघ्र ने उसको सीख दी. अपनी गो शाला में प्रतिज्ञा निवाह कर गई १ बच्छे को २ अपनी सखियों को उस बछड़े की ३ रक्षा करने को कहकर ॥ ११६ ॥ वह ४ उत्तम कुल में उत्पन्न रोकीहुई भी नहीं रुकी ५ व्याघ्र को भी देखकर दया आगई और कहा कि हे बहिन तू धन्य है ॥ ११७ ॥ व्रत को ६ सत्य निवाह कर ७ अपने घर जा और ८ भाणेज को ९ दूध पाकर पोख ॥ ११८ ॥ १० कपिला गऊ के प्रसंग से ११ बीता हुआ वृत्तान्त कहकर उस गो के सत्य की प्रशंसा करके कहा कि तुझे क्या १२ वांछित है सो कह ॥ ११९ ॥

दीपीहु लखत करि दुसह गज्ज, हत्थल प्रसारि हुव हनन सज्ज ११२
कटकट बजाय दंतन कराल, फुल्लाय सटा लिय उद्ध फाल ॥
लांगूल छत्रकरि सिर निसंक, तंडयो प्रसारि नख वज्रटंक ११३
तहँ कहिय धेनु मम बाल बच्छ, दूर्वादि ग्रास परिचय ग्रदच्छ॥
पय ताहि पिवावन सिक्ख देहु, ऐहौं पुनि जानहु सत्य एहु ११४
मन्नैं न व्याघ्र गिनि बिपति बैन, लग्गी तब सुरभी सपथ लैन ॥
प्रतिभय द्विजहत्या आदि पाप, ते मोहि अनागम देहु ताप ।११५।
सुनि सपथ बग्घ दिय सिक्ख ताहि, व्रज निज गई सु संधा निवाहि
तर्णक धपाय तँहँ निठ्ठि रक्खि, आत्मीय सखिन तस त्रान अक्खि ११६
रोकीहु साधुं तिनतैं रुकी न, आई सु बग्घपहँ पन अधीन॥
दीपीहु देखि आनी दयाहि, अक्खिय तू भगिनी धन्य आहि ११७
व्रत ऋत निबाहि आई बहोरि, छलि मोहि गयँ देतो न छोरि ॥
अब जाहु बहिनि निर्भय निकाय, पोखहु जामेयहिं छीर पाय ११८
यह कहत बग्घ धरि दिव्य अंग, सो भो नरेस कपिला प्रसंग ॥
सब भूतं कहि रु सत्यहिं सिराहि, तब को अभीष्टं नृप कहिय ताहि ११९

वह व्याघ्र मारने को तैयार हुआ. जब गर्दन ऊपर के केसों को फुलाकर ऊपर उडा और पूंछ का अपने मस्तक पर छत्र करके वज्रटंक के समान नखों को फैलाकर गर्जा ॥ ११३ ॥ तब गऊ ने कहा कि मेरा बछड़ा दूध आदि घास खाने के अभ्यास में चतुर नहीं है जिसको दूध पिलाने की सीख दे मैं पीछी आजाऊँगी यह सत्य जानो ॥ ११४ ॥ उस धेनु के विपत्ति के वचन (विपत्ति में झूठ बोला ही करते हैं) जानकर व्याघ्र ने नहीं माने तब वह गऊ सोगन करने लगी कि मैं पीछी नहीं आऊँ तो ब्रह्महत्या आदि का मुझे भय होवे ॥ ११५ ॥ व्याघ्र ने उसको सीख दी. अपनी गो शाला में प्रतिज्ञा निवाह कर गई १ बछड़े को २ अपनी सखियों को उस बछड़े की ३ रक्षा करने को कहकर ॥ ११६ ॥ वह ४ उत्तम कुल में उत्पन्न रोकीहुई भी नहीं रुकी ५ व्याघ्र को भी देखकर दया आगई और कहा कि हे बहिन तू धन्य है ॥ ११७ ॥ व्रत को ६ सत्य निवाह कर ७ अपने घर जा और ८ भाणेज को ९ दूध पाकर पोख ॥ ११८ ॥ १० कपिला गऊ के प्रसंग से ११ बीता हुआ वृत्तान्त कहकर उस गो के सत्य की प्रशंसा करके कहा कि तुझे क्या १२ वांछित है सो कह ॥ ११९ ॥

मुनिकौं न दोस पुरहूत[2] मंद, फैलायो तैं जग मृत्युफंद ॥ १२८ ॥
सुख मन्नि नीच भाखि तू असुद्ध, मैंतो त्रिलोक रहिहौं न मुद्ध[3] ॥
यह कहि कृसानु समिट्यो[4] असेस, लोकन रह्यो न संसर्ग लेस।१२९।
अब बिकल इंद अमरन उपेत[5], हेरन कृसानु निजवृत्ति[6]हेत ॥
अर्बुद तिन्ह हेर्‍यो एक अन्हि, बिरुदायो नुतिकरि तत्थ बन्हि।१३०॥
सुनि प्रनति श्रमित सब सुरन जानि, बुल्ल्यो कृसानु रहि पिहितबानि
तैं इंद अदयँ[7] नहिं वृष्टि किन्न, मोबिच अमेध्य[8] तव मुनिन दिन्न१३१
सुनि इंद कह्यो देवापि[9]नाम, जेठो प्रतीपसुत धर्मधाम ॥
तपकरत वहै अरु अनुज तास, अवनी लहि संतनु[2]भूप आस१३२
प्रतिलोम धर्मपथ इक्खि एस, दिन्नौं न घनन बुट्ठन निदेस॥
तुम गुप्त भये जो इहिं निदान, तो चलहु कथित करिहैं प्रमान१३३
इम इक्खि पुष्करावर्त्त अभ्र, भेजे ति भुम्मि बरखे अदभ्र[9]॥
जिहिं निर्ज्झर अर्बुद[10] अंगपदेस, प्रकट्यो कृसानु नंत[11] लखि सुरेस[12]१३४
तबतैं सु अग्निर्तीर्थ२०हि कहात, जँहँ होत महापापन निपात[13] ॥
रमनेस सद्धि तँहँ उचित रीति, पिंडारक तीरथ२१गो सप्रीति।१३५।

में क्रोध किया ॥ १२७ ॥ १ हे मूर्ख २ इन्द्र ॥ १२८ ॥ ३ हे मूर्ख मैं इस त्रिलोकी में नहीं रहूंगा ४ अग्नि सब जगह से खिंचकर इकट्ठा होगया और लोकों में उस का लेशमात्र भी संग नहीं रहा ॥ १२९ ॥ देवताओं ५ सहित इन्द्र विकल हुआ और अपनी ६ जीविका (यज्ञ ही देवताओं की जीविका है) के अर्थ एक दिन उन्होंने आबू पर आकर हे राजा स्तुति कि अग्नि को विरुदाया (उसका उत्साह बढाया) ॥ १३०॥ देवताओं को [नम्र]युक्त जानकर गुप्त रहकर अग्नि बोला ७ निर्दय होकर ८ अशुद्ध [१]३१ ॥ इन्द्र ने कहा कि देवापि नामक राजा का प्रतीप नामक बड़ा पुत्र [धर्म] का धाम है वह तो तप करता है और उसका छोटा भाई शन्तनु [ने] भूमि लेकर राजा होगया है ॥ १३२ ॥ सो धर्म के मार्ग में यह उ-[लटा क्रम] देखकर मेघों को वर्षा करने को आज्ञा नहीं दी और तुम जो इ-[स वर्षा नहीं होने के) कारण से गुप्त होगये हो तो चलो तुम्हारा [कहा] करेंगे ॥ १३३ ॥ इसप्रकार कहकर पुष्करावर्त नामक मेघ को भे-[जा व]ह ९ बहुत वर्षा. आबू १० पर्वत के जिस झरने में १२ इन्द्र को ११ नम्र अग्नि प्रकट हुआ ॥ १३४ ॥ १३ नाश ॥ १३५ ॥

मुनिकौँ न दोस पुरहूत मंद, फैलायो तैं जग मृत्युफंद ॥ १२८ ॥
सुख मन्नि नीच भखि तू असुद्ध, मैंतो त्रिलोक रहिहौँ न मुद्ध ॥
यह कहि कृसानु समिट्यो असेस, लोकन रह्यो न संसर्ग लेस।१२९।
अब बिकल इंद अमरन उपेत, हेरन कृसानु निजवृत्तिहेत ॥
अर्बुद तिन्ह हेर्यो एक अन्हि, बिरुदायो नुतिकरि तत्थ बन्हि।१३०॥
सुनि प्रनति श्रमित सब सुरन जानि, बुल्ल्यो कृसानु रहि पिहितबानि
तैं इंद अदयँ नहिँ वृष्टि किन्न, मोबिच अमेध्य तव मुनिन दिन्न१३१
पुनि इंद कह्यो देवापि१नाम, जेठो प्रतीपसुत धर्मधाम ॥
तपकरत वहै अरु अनुज तास, अवनी लहि संतनु२भूप आस१३२
प्रतिलोम धर्मपथ इक्खि एस, दिन्नौं न घनन बुट्ठन निदेस॥
तुम गुप्त भये जो इहिं निदान, तो चलहु कथित करिहैं प्रमान१३३
इम इक्खि पुष्करावर्त्त अभ्र, भेजे ति भुम्मि बरखे अदभ्र॥
जेहिं निर्झर अर्बुद अंगप्रदेस, प्रकट्यो कृसानु नंत लखि सुरेस१३४
तबतैं सु अग्नितीर्थ२०हि कहात, जँहँ होत महापापन निपात ॥
मनेस सद्धि तँहँ उचित रीति, पिंडारक तीरथ२१गो सप्रीति।१३५।

में क्रोध किया ॥ १२७ ॥ १ हे मूर्ख २ इन्द्र ॥ १२८ ॥ ३ हे मूर्ख मैं इस त्रिलोकी में नहीं रहूंगा ४ अग्नि सब जगह से खिंचकर इकट्ठा होगया और लोकों में उस का लेशमात्र भी संग नहीं रहा ॥ १२९ ॥ देवताओं ५ सहित इन्द्र विकल हुआ और अपनी ६ जीविका (यज्ञ ही देवताओं की जीविका है) के अर्थ एक दिन उन्होंने आबू पर आकर हे राजा स्तुति के अग्नि को विरुदाया (उसका उत्साह बढाया) ॥ १३० ॥ देवताओं को युक्त जानकर गुप्त रहकर अग्नि बोला ७ निर्दय होकर ८ अशुद्ध ३१ ॥ इन्द्र ने कहा कि देवापि नामक राजा का प्रतीप नामक बडा पुत्र र्म का धाम है वह तो तप करता है और उसका छोटा भाई शन्तनु भूमि लेकर राजा होगया है ॥ १३२ ॥ सो धर्म के मार्ग में यह उ- ोम देखकर मेघों को वर्षा करने को आज्ञा नहीं दी और तुम जो इ- र्षा नहीं होने के) कारण से गुप्त होगये हो तो चलो तुम्हारा करेंगे ॥ १३३ ॥ इसप्रकार कहकर पुष्करावर्त नामक मेघ को भे- वह ९ बहुत वर्षा. आबू १० पर्वत के जिस झरने में १२इन्द्र को ११नम्र अग्नि प्रकट हुआ ॥ १३४ ॥ १३ नाश ॥ १३५ ॥

सोच्यो परंतु तू गिरत हेम, अक्षय भयो न वह द्रव्य एम ।१४५।
भो कोटिगुनित अब कह्लिलेहु, अवनीस हिरायो सुनत एहु ॥
निकस्यो सु पुरट निर्गदित प्रमान,सब द्विजन दयो नृप सावधान१४६
तिहिँ पुण्य धनद हुव नृप अधीन, दिनप्रति वहु इच्छित पुरट दीन
तबतैं भुव कनखलतीर्थ२२ख्यात,चहुवान दये तँहँ बसुनँ व्रात।१४७।
पुनि चक्रतीर्थ२३पहुँच्यो नरेस,किय न्हाय श्राद्ध१ बितरनँ२बिसेस
जिहिंतीर्थअग्गहरिबपुँपखारि,निजचक्रतज्योसबदैत्यमारि ॥१४८॥
हरि अंगसंगकरि वह सु तोय, मानुसन्हद२४ गो नृप तत्थ होय
जँहँ न्हाय पुण्य परिचिंत अखर्ब,नॅरजोनि लहत पसु पच्छि सर्ब१४९
अग्गैं मृग व्याधन बेढेमान, प्रबिसे तदीयँ जल बिकल प्रान ॥
ततकाल भये नर ते कुरंगँ, पुच्छे पुनि मृगयुँन लहि प्रसंग १५०
तुम देहु गये मृग कित बताय, उन कहिय भये नर अत्थ आय॥
तजि एनभाव१ अरु एनभावँ२, पूरुष हम पूरुषन्हद प्रभाव १५१

नभाव१ प्रभाव२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

यह सुनत व्याध सर१चाप२डारि, प्रविसे समस्त तस बिमल बारि
धरि सुद्धभाव तँहँ पाप धोय, हिंसाधन निकसे सिद्ध होय ।१५२।
यह लखि प्रभाव तँहँ भीत आय, रज डारि सु मुंद्यो देवराय ॥
अष्टमि८तथापिबुध४वार सत्थ,पसु१पच्छि२हैनँनरजायजत्थ१५३

परन्तु सोना गिरा उसकी तू ने चिन्ता की थी इससे वह धन अक्षय नहीं आ ॥ १४५ ॥ १ सोना २ ऊपर कहे प्रमाण से कढा ॥ १४६ ॥ ३ कुबेर उ राजा के अधीन होगया ४ धन के ५समूह दिये ॥१४७ ॥ ६ दान ७ विष्णु स्नान करके ॥ १४८ ॥ ८ विष्णु के शरीर का स्पर्श होने से वह ९ जल परिचय सहित ११मनुष्य योनि पाते हैं ॥ १४९ ॥ शिकारियों के १२ हुए मृग व्याकुल होकर उस १३ न्हद के जल में घुसे वे१४ मृग तुरन्त ष्य होगये १५ शिकारियों ने पूछा ॥ १५० ॥ १६ मृगपन को और १७ भाव को छोडकर १६ मानुष न्हद के प्रभाव से हम १८ पुरुष होगये हैं ॥ २० निर्मल जल में घुसे २१ हिंसा ही है धन जिनके ऐसे वे शि- सिद्ध होकर निकले ॥ १५२ ॥२२ इन्द्र ने न्हद को धूल डालकर भर व२३मनुष्य होने को तहां जाते हैं ॥ १५३ ॥

कं

सोच्यो परंतु तू गिरत हेम, अच्छय भयो न वह द्रव्य एम ।१४५।
भो कोटिगुनित अब कढ्ढिलेहु, अवनीस हिरायो सुनत एहु ॥
निकस्यो सु पुरट[1] निगदित[2] प्रमान, सब द्विजन दयो नृप सावधान१४६
तिहिं पुराय धनद[3] हुव नृप अधीन, दिनप्रति वहु इच्छित पुरट दीन
तबतैं भुव कनखलतीर्थ२२ख्यात, चहुवान दये तँहँ बसुनं[5] व्रात[5]।१४७।
पुनि चक्रतीर्थ२३पहुँच्यो नरेस, किय न्हाय श्राद्ध१ बितरनं[6]२बिसेस
जिहिंतीर्थअग्गहरिबपुंपखारि, निजचक्रतज्योसबदैत्यमारि ॥१४८॥
हरि अंगसंगकरि[8] वह सु तोय[9], मानुसन्हद२४ गो नृप तत्थ होय
जँहँ न्हाय पुराय परिचिंतं अखर्ब, नरजोनि[11] लहत पसु पच्छि सर्व१४९
अग्गैं मृग व्याधन बेढ्ढमान[12], प्रविसे तदीयं[13] जल बिकल प्रान ॥
ततकाल भये नर ते कुरंगं[14], पुच्छे पुनि मृगयुन[15] लहि प्रसंग १५०
तुम देहु गये मृग कित बताय, उन कहिय भये नर अत्थ आय॥
तजि एनभाव[16]१ अरु एनभावं[17]२, पूरुषं[18] हम पूरुषं[19]न्हद प्रभाव १५१

नभाव१ प्रभाव२अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

यह सुनत व्याध सर१चाप२डारि, प्रविसे समस्त तस बिमंल[20] बारि
धरि सुद्धभाव तँहँ पाप धोय, हिंसाधंन[21] निकसे सिद्ध होय ।१५२।
यह लखि प्रभाव तँहँ भीत आय, रज डारि सु मुंद्यो देवरांय[22] ॥
अष्टमि८तथापिबुध४वार सत्थ, पसु१पच्छि२हैंनं[23]नरजायजत्थ१५३

...न्तु सोना गिरा उसकी तू ने चिन्ता की थी इससे वह धन अक्षय नहीं ...आ ॥ १४५ ॥ १ सोना २ ऊपर कहे प्रमाण से कढा ॥ १४६ ॥ ३ कुबेर ...राजा के अधीन होगया ४ धन के ५समूह दिये ॥१४७॥ ६ दान ७ विष्णु ...स्नान करके ॥ १४८ ॥ ८ विष्णु के शरीर का स्पर्श होने से वह ९ जल ...परिचय सहित ११मनुष्य योनि पाते हैं ॥ १४९ ॥ शिकारियों के १२ ...हुए मृग व्याकुल होकर उस १३ न्हद के जल में घुसे वे१४ मृग तुरन्त ...ष्य होगये १५ शिकारियों ने पूछा ॥ १५० ॥ १६ मृगपन को और १७ ...भाव को छोडकर १९ मानुष न्हद के प्रभाव से हम १८ पुरुष होगये हैं ...॥ २० निर्मल जल में घुसे २१ हिंसा ही है धन जिनके ऐसे वे शि- ...सिद्ध होकर निकले ॥ १५२ ॥२२ इन्द्र ने न्हद को धूल डालकर भर ...व२३मनुष्य होने को तहां जाते हैं ॥ १५३ ॥

कं

तत्थहि कपालमोचन जु छेत्र, अब्रह्महत्य[2] हुव जँहँ त्रिनेत्र[3] ॥
तँहँकियबिधेयथिरचिर[4]तथापि,छायाद्वितीय२नमिटी[5]तदापि ॥१६२॥
इम सोमतीर्थ२ पुष्कर३ प्रभास४, कुरुखेत५अमरकंटक६ सुभास
कनखल७दमजंगल८एकहंस९,पंचनद१०परिप्लव११सुप्रसंस[6]।१६३।
जिस पत्त[7] विरूपाक्ष१२हु जनेस[8], बंलि रुद्रकोटि१३अघहर बिसेस
बिरचतइत्यादिकतीर्थबार[9][10],हायन[11]इमबीतेइकहजार१००० ॥ १६४ ॥
आयो पुनि अर्बुद इंद्रसेन, आपतन[12]१ तीर्थ२ परसे अनेन[13] ॥
बिधिक्रम गयो सु रक्तानुबंध२५,गेरयोस्वदेहतसजलकुगंध ॥१६५
सो हुव सुगंध तहँ कढत न्हाय, छाया द्वितीय२ मिटि तेजछाय ॥
सब दान तत्थ दै इंद्रसेन, अति मुदित चल्यो निज गृह अनेन[14]१६६.
रक्तानुबंधकी तजत सीम, भो पुनि कुगंध द्विरच्छाय भीम[15] ॥
आयो तिहिं तीरथ बहुरि एह, भो तबहि पुब्बजिम[16] दिव्यदेह ।१६७।
तीरथ प्रभाव यह नृप विचाँरि[17], प्रविस्यो चिता सु पावक[18] मजारि
बपु भस्महोत आयो बिमान,सिवलोक गयो चढि नृप सुजान।१६८।
नारदमुनि लखि नृप मुक्ति एस, रक्तानुबंध बरन्यौं बिसेस ॥
अनुबद्ध[19] करैं नर बिषयरक्त, रक्तानुबंध२५इम भुव प्रसक्त[20] ॥ १६९॥
जँहँ श्राद्ध१होत गयासिर[21] समान, दैरुद्रलोक गति न्हान१दान२ ॥
॥ १७० ॥

जहाँ पर१शिव२ब्रह्म हत्या से छूटे थे४बहुत समय तक उचित कार्य किये५तो भी दूसरी छाया नहीं मिटी॥१६२॥ ६श्रेष्ठ प्रशंसा वाले॥१६३॥७गया८ राजा ९पुनि१०समय११वर्ष॥१६४॥१२तीर्थों के ठहरने का स्थान(आबू)को१३निर्दोषी होने के अर्थ परसा॥१६५॥१४निर्दोषी होकर॥१६६॥रक्तानुबंध तीर्थ की सीमा से बाहर निकलते ही१५भयंकर छाया और दुर्गन्धवाला शरीर होगया१६ पहिले निर्मल देह होगया था वैसा ही फिर होगया ॥ १६७ ॥ १७ विचार के १८ अग्नि जलाकर । १६८ ॥ जो मनुष्य विषय में आसक्त होकर १९दोष उत्पादन करें वेभी इस तीर्थ में प्रीति रक्खें तो उनको वांछित फल देता है इसकारण से भूमि पर वह रक्तानुबंध२०प्रसिद्ध है॥१६९॥२१ गया के समान

तत्थहि कपालमोचन जु छेत्र, अब्रह्महत्य हुव जँहँ त्रिनेत्र ॥
तँहँकियबिधेयथिरचिरंतथापि,छायाद्वितीयरनमिटीतदापि ॥१६२॥
इम सोमतीर्थ२ पुष्कर३ प्रभास४, कुरुखेत५अमरकंटक६ सुभास
कनखल७दमजंगल८एकहंस९,पंचनद१०परिप्लव११सुप्रसंस।१६३।
जिम पत्तँ विरूपाच्छ१२हु जनेस, बलि रुद्रकोटि१३अघहर विसेस
बिरचतइत्यादिकतीर्थबार,हायननइमबीतेइकहजार१००० ॥१६४॥
आयो पुनि अर्बुद इंद्रसेन, आयतन१ तीर्थ२ परसे अनेनँ ॥
बिधिक्रम गयो सु रक्तानुबंध२५,गेरयोस्वदेहतसजलकुगंध ॥१६५
सो हुव सुगंध तहँ कढत न्हाय, छाया द्वितीय२ मिटि तेजछाय ॥
सब दान तत्थ दै इंद्रसेन, अति मुदित चल्यो निज गृह अनेनँ१६६
रक्तानुबंधकी तजत सीम, भो पुनि कुगंध द्विरच्छाय भीमँ ॥
आयो तिहिं तीरथ बहुरि एह, भो तबहि पुब्बजिम दिव्यदेह ।१६७।
तीरथ प्रभाव यह नृप विचाँरि, प्रविस्यो चिता सु पावक प्रजारि
बपु भस्महोत आयो बिमान, सिवलोक गयो चढि नृप सुजान।१६८।
नारदमुनि लखि नृप मुक्ति एस, रक्तानुबंध बरन्यों विसेस ॥
अनुबद्ध करैं नर बिषयरक्त, रक्तानुबंध२५इम भुव प्रसक्त ॥ १६९॥
जँहँ श्राद्ध१होत गयासिर समान, दैरुद्रलोक गति न्हान१दान२ ॥
॥ १७० ॥

जहां पर१शिव२ब्रह्म हत्या से छूटे थे४बहुत समय तक उचित कार्य किये५तो भी दूसरी छाया नहीं मिटी॥१६२॥ ६श्रेष्ट प्रशंसा वाले॥१६३॥७गया८ राजा ९पुनि१०समय११वर्ष॥१६४॥१२तीर्थों के ठहरने का स्थान(आबू)को१३निर्दोषी होने के अर्थ परसा॥१६५॥१४निर्दोषी होकर॥१६६॥रक्तानुबंध तीर्थ की सीमा से बाहर निकलते ही१५भयंकर छाया और दुर्गन्धवाला शरीर होगया१६ पहिले निर्मल देह होगया था वैसा ही फिर होगया ॥ १६७ ॥ १७ विचार के १८ अग्नि जलाकर । १६८ ॥ जो मनुष्य विषय में आसक्त होकर १९दोष उत्पादन करें वे भी इस तीर्थ में प्रीति रक्खें तो उनको वांछित फल देता है इसकारण से भूमि पर यह रक्तानुबंध२०प्रसिद्ध है॥१६९॥२१ गया के समान

जननी तुम अप्पहु जो निदेस, सिरधारि सोहि सब्बौं असेस।१७५।
पर्बतजा लै सिसु ईस पास, अक्खिय उदंत जिम पुत्र आस ॥
ईसानकहियसिरमहत१आहि,बपुनायकत्व२सबगुननिबाहि।१७६।
अभिधा महाबिनायक उपेत, व्हैहैं यह चिंतितसिद्धिहेत ॥
अधिकारमुख्यपुनिअप्पिईस,इभतुंडकरयोनिजगनअधीस ॥१७७॥
अरि निखिल विघ्न किन्नैं अधीन, सब पुब्ब दयों पूजन प्रवीन ॥
इम लंबउदर महिमा अपार, हुव बिघ्ननिघ्न सुखकरनहार १७८।
तिहिंसस्त्रउमादियस्वधिति१तत्र,असुअसनअर्थमोदक१अमत्र२ ॥
इहिंगंधखनकभुवभेदिआय,खिरिखिरिगिरेतितसरेआखुखाय ॥१७९॥
सहसा दिपाय अमरत्व सिष्ट, इभमुखके बाहन हुव सु इष्ट ॥
इमहूगनेसप्रकटनप्रतीति,सुदसम१०पुरानविचअन्यरीति ॥ १८० ॥
तँहँ संभुसुक्र भव एकदंत, यँहँ इम सु भेद कल्पन अनंत ॥
सु महादिविनायक मूर्त्ति सुद्ध, प्रकटित अगअर्बुद हे प्रबुद्ध ।१८१।

शास्त्र में अथवा बाराहीसंहिता नामक ज्योतिष के ग्रन्थ में सविस्तर है सो वहां देखो", यह कुमर हाथ जोड़कर शीघ्र बोला कि हे माता तुम जो आज्ञा करो सो ही मस्तक पर धरकर सब करूं ॥१७५॥ उस बालक को पार्वती शिव के पास लेगई और जिसप्रकार बालक हुआ वह वृत्तान्त कहा, महादेव ने कहा कि इस का माथा बड़ा है और शरीर से भी नायक (प्रधान) पन का निर्वाह करेगा इससे ॥ १७६ ॥ १ महाविनायक नाम सहित इसको चिन्तवन करने से सिद्धि देनेवाला होवेगा २ गजानन को ३ गणों का स्वामी किया ॥ १७७ ॥ और अधीश (शिव) ने सम्पूर्ण बिघ्नों का उसको शत्रु बनाया सब से पहिले पूजन दिया, इसप्रकार गणेश की अपार महिमा है वह विघ्नों का नाश और सुख करनेवाला हुआ ॥ १७८ ॥ पार्वती ने कुठार का शस्त्र दिया और भोजन के लिये लड्डू और पात्र दिया, इस लड्डू की गन्ध से भूमि को फोड़ कर मूहा आया ४ लड्डू के कण खाये ॥ १७९ ॥ अचानक श्रेष्ठ देवतापन को प्रकाशमान करके गजानन के प्रिय वाहन हुआ, इसप्रकार भी गणेश की उत्पत्ति विश्वास दायक है, और दशम (ब्रह्मवैवर्त) पुराण में गणेश की उत्पत्ति और प्रकार से लिखी है ॥ १८० ॥ तहां पर गणेश का जन्म महादेव के वीर्य से है सो इसप्रकार कल्पों के भेद से अनेक कथा हैं सो महाविनायक की मूर्ति है पंडित रामसिंह आबू पर्वत पर

जननी तुम अप्पहु जो निदेस, सिरधारि सोहि सव्वों असेस।१७५।
पर्बतजा लौ सिसु ईस पास, अक्खिय उदंत जिम पुत्र आस ॥
ईसानकहियसिरमहत१आहि,वपुनायकत्व२सवगुननिवाहि।१७६।
अभिधा महाबिनायक उपेत, व्हैहै यह चिंतितसिद्धिहेत ॥
अधिकारमुख्यपुनिअप्पिईस,इभतुंडकरयोनिजगनअधीस ॥१७७॥
अरि निखिल बिघ्न किन्नैं अधीन, सब पुव्व दयों पूजन प्रवीन ॥
इम लंबउदर महिमा अपार, हुव बिघ्ननिघ्न सुखकरनहार १७८।
तिहिंसस्त्रउमादियस्वधिति१तब,अरुअसनअर्थमोदक१अमत्र२ ॥
इहिंगंधखनकभुवभेदिआय,खिरिखिरिगिरेतितसरेसुखाय ॥१७९॥
सहसा दिपाय अमरत्व सिष्ट, इभमुखके वाहन हुव सु इष्ट ॥
इमहूगनेसप्रकटनप्रतीति,दसम१०पुरानविचअन्यरीति ॥ १८० ॥
तँहँ संभुसुक्र भव एकदंत, यँहँ इम सु भेद कल्पन अनंत ॥
सु महादिबिनायक मूर्त्ति सुद्ध, प्रकटित अगअर्बुद हे प्रबुद्ध ।१८१।

शास्त्र में अथवा वाराहीसंहिता नामक ज्योतिष के ग्रन्थ में सविस्तर है सो वहां देखो", वह कुमार हाथ जोड़कर शीघ्र बोला कि हे माता तुम जो आज्ञा करो सो ही मस्तक पर धरकर सब करूं ॥१७५॥ उस बालक को पार्वती शिव के पास लेगई और जिसप्रकार बालक हुआ वह वृत्तान्त कहा, महादेव ने कहा कि इस का माथा बड़ा है और शरीर से भी नायक (प्रधान) पन का निर्वाह करेगा इससे ॥ १७६ ॥ १ महाविनायक नाम सहित इसको चिन्तवन करने से सिद्धि देनेवाला होवेगा २ गजानन को ३ गणों का स्वामी किया ॥ १७७ ॥ और अधीश (शिव) ने सम्पूर्ण विघ्नों का उसको शत्रु बनाया सब से पहिले पूजन दिया, इसप्रकार गणेश की अपार महिमा है वह विघ्नों का नाश और सुख करनेवाला हुआ ॥ १७८ ॥ पार्वती ने कुठार का शस्त्र दिया और भोजन के लिये लड्डू और पात्र दिया,इस लड्डू की गन्ध से भूमि को फोड़ कर चूहा आया ४ लड्डू के कण खाये ॥ १७९ ॥ अचानक श्रेष्ठ देवतापन को प्रकाशमान करके गजानन के प्रिय वाहन हुआ, इसप्रकार भी गणेश की उत्पत्ति विश्वास दायक है. और दशम (ब्रह्मवैवर्त) पुराण में गणेश की उत्पत्ति और प्रकार से लिखी है ॥ १८० ॥ तहां पर गणेश का जन्म महादेव के वीर्य से है सो इसप्रकार कल्पों के भेद से अनेक कथा हैं सो महाविनायक की मूर्ति हे पंडित रामसिंह आबू पर्वत पर

बिक्खे बिल सत्तअहि लिंग बिद्ध, अध जानलगे प्रभु वेद इद्ध ॥
कालाग्नि रुद्र तँहँ किय प्रकास, अर्चिनतँचि हरि छवि कृष्ण आस
महिमा दिखाय तस पाय मोह, छिति पिट्ठि आय केसव सछोह॥
बेदोक्त सूक्तँ जपि निर्विकार, वह लिंग पुज्जि किय नुर्त उदार
बिधि उड्ढ चढ अति बिरचि ताय, जिहिँ अंत तदपि पिक्ख्यो न जाय॥
जँहँ इक सुममाला कंजजात, इक्खी क्रकचच्छदमय सु आत
पुच्छिय स्रज हे अर्ज कित प्रयान, सुनि कहिय लखन लिंगावसान
स्रज कहिय मैंहु तजि लिंग सीस, आवत चिरंतरतँ लोकईस
उतरत जुग कोटिन हुव अतीतँ, पायो न तदपि छितितल पुनीत
जोजनइक१तावकँ हंसजात, तोलौं सत१००जोजन मैं बितात
मम बेग जदपि यह तदपि मग्ग, आयतपँन धारत अग्ग अग्ग ॥
मोरहु मराल यह मंत्र पाय, तुम अंत कहहु मो कँहँ बताय १९६
सुनिमुरिविरिंचिस्रजसंगलाय, तँहँआयसहँस१०००हायनबिताय।
छलि कहिय लह्यो हम लिंगछेह, अतिदूर सु प्रत्यय स्रजहि एह
अच्युतकह्योकिनलह्योसुअंत, नलह्योहिकह्योयहसुनि अनंत।
सिव कुपित तत्थ दिय बिधिहिँ साप, तवपूजँक पैहैं नरक ता

में घुसे ॥ १९० ॥ १ लिंग से बेधेहुए २ वेद से वृद्धि पायेहुए विष्णु भगवान् नीचे जाने लगे वहां शिव ने काल अग्नि का प्रकाश किया उसकी ३ज्वाला से ४तपकर विष्णु का रंग५श्याम होगया ॥ १९१ ॥ ६ भूमि की पीठ पर७वेद के कहे हुए मंत्रों से ८स्तुति की॥१९२॥समृद्धिमान् ब्रह्मा उस लिंग के९ऊपर चढे११ब्रह्मा ने एक१०पुष्पों की माला देखी जो १२केतकी के पुष्पों से शोभायमान थी ॥ १९३ ॥ उस १३माला ने पूछा कि हे१४ब्रह्मा कहां जाते हो१५इस लिंग का अन्त देखने को१६अत्यन्त चिर काल से आती ॥ १९४ ॥ क्रोड़ों जुग १७ बीत गये तोभी १८ भूमि तल नहीं पाया, हे ब्रह्म १९ तुम्हारा वेग एक जोजन जाने का है ॥ १९५ ॥ २० आगे से आगे लंपन को धारण करता है २१ तुम्हारे वाहन हंस को पीछा मोड़ दो २२ मुझ को साक्षी बताकर कहदेना कि मैं लिंग का अन्त देखआया ॥ १९६ ॥ २३ छल करके कहा, यह माला इसका २४ विश्वास करानेवाला (सुबूत) ॥ १९७ ॥ २५विष्णु ने कहा कि मैंने तो अन्त नहीं पाया २६ ब्रह्मा को महादेवने श्राप दिया कि तुमको २७ पूजनेवाले नरक पावेंगे ॥ १९८

बिक्खे बिल सत्तऽहि लिंग बिद्ध, अध जानलगे प्रभु वेद इद्ध ॥
कालाग्निरुद्र तँहँ किय प्रकास, अर्चिन तचि हरि छवि कृष्ण आस
महिमा दिखाय तस पाय मोह, छिति पिट्ठि आय केसव सछोह॥
बेदोक्त सूक्तँ जपि निर्विकार, वह लिंग पुज्जि किय नुति उदार
बिधि उर्द्ध चढे अति बिरचि ताय, जिहिँ अंत तदपि पिक्ख्यो न जाय॥
जँहँ इक सुममाला कंजजात, इक्खी ककचच्छदमय सु आत
पुच्छिय स्रज हे अज कित प्रयान, सुनि कहिय लखन लिंगावसान
स्रज कहिय मैंहु तजि लिंग सीस, आवत चिरंतरतैं लोकईस
उतरत जुग कोटिन हुव अतीतँ, पायो न तदपि छितितल्ल पुनीत
जोजनइक१ताव कै हंसजात, तोलौं सत१०० जोजन मैं बितात
मम बेग जदपि यह तदपि मग्ग, आयतपन धारत अग्ग अग्ग ॥
मोरहु मराल यह मंत्र पाय, तुम अंत कहहु मो कँहँ बताय १९६
सुनिमुरिबिरिंचिस्रजसंगलाय, तँहँआयसहँस१०००हायनबिताय॥
छलि कहिय लह्यो हम लिंगछेह, अतिदूर सु प्रत्यय स्रजहि एह
अच्युतकह्योकिनलह्योसुअंत, नलह्योहिकह्योयहसुनि अनंत।
सिव कुपित तत्थ दिय बिधिहिँ साप, तवपूजक पैहैं नरक ताप

सें घुसे ॥ १९० ॥ १ लिंग से बंधेहुए २ वेद से वृद्धि पायेहुए विष्णु भगवान् नीचे जाने लगे वहां शिव ने काल अग्नि का प्रकाश किया उसकी ३ज्वाला से४तपकर विष्णु का रंग५श्याम होगया ॥ १९१ ॥ ६ भूमि की पीठ पर७वेद के कहे हुए मंत्रों से८स्तुति की॥१९२॥समृद्धिमान् ब्रह्मा उस लिंग के९ऊपर चढे११ब्रह्मा ने एक१०पुष्पों की माला देखी जो १२केतकी के पुष्पों से शोभायमान थी ॥ १९३ ॥ उस १३माला ने पूछा कि हे१४ब्रह्मा कहां जाते हो१५इस लिंग का अन्त देखने को१६अत्यन्त चिर काल से आती हूं ॥ १९४ ॥ क्रोड़ों जुग १७ बीत गये तोभी १८ भूमि तल नहीं पाया, हे ब्रह्मा १९ तुम्हारा वेग एक जोजन जाने का है ॥ १९५ ॥ २० आगे से आगे लंबेपन को धारण करता है २१ तुम्हारे वाहन हंस को पीछा मोड़ दो २२ मुझको साक्षी बताकर कहदेना कि मैं लिंग का अन्त देखआया ॥ १९६ ॥ २३ छल करके कहा, यह माला इसका २४ विश्वास करानेवाला (सुबूत) है ॥ १९७ ॥ २५विष्णु ने कहा कि मैंने तो अन्त नहीं पाया २६ ब्रह्मा को महादेवने श्राप दिया कि तुमको २७ पूजनेवाले नरक पावेंगे ॥ १९८ ॥

गंधर्व१अच्छरि२न*मंजु गीत५, नाना बिमान वाहन६**पुनीत॥
कामदु१धेनु२।७पीयूख पान८, हिंसा१न धर्म२निंद्रा३न हान४।९ ॥
जब पुराय रहत जँहँ बित्तिजाय, पावत नृपत्व१तब अवनि आय॥
असुरहु निज अवसर बलउपेत, दिव छिन्नि निर्जरन कढ्ढिदेत।२०८।
तिन कहिय पुरायखय होत तहिं, मामुंन्ह्द२९ मेहि त्वं पुनर्हि ॥
जबतैं मामुंन्हद ख्यात जत्थ, चहुवान जाय किय उचित तत्थ २०९
पुनि निकट चंडिकाश्रम३०पधारि,साद्धिय बिधेयँ श्रुति वच सम्हारि
पहिलैं बिधि सौं बर महिष पाय,हुव त्रि३भुवनपति देवन हटाय२१०
मिलि अमर तबहि गुरमंत मानि, अर्बुद लगे ति तपकरन आनि।
पढि साक्तिमंत्र पूजन पुनीत, आराधत हायन चउ४अंतीत।२११।
तिन अग्ग मास खट६पुनि बिताय,हुव दीप हेति वह प्रकट आय
जिम जिम वह कीला बढिग जत्थ,तिम बढिग अमर्त्यन ओज तत्थ
इहिँ क्रम ६छमासलग बढिअनेजँ,त्रिदसनहुवद्वादस १२तपनतेज॥
बाचस्पति तब करि भुव पवित्र, बिधि उचित रचिय मंडल विचित्र
साक्तेयँ मंत्र जपि बिदित सिष्ट,पुनि किय सु तेज मंडल प्रबिष्ट
एकत्र तेज तँहँ सबन आय, कन्न्या इक प्रकटी रम्म्य काय

*सुन्दर**पवित्र१कल्पवृक्ष२कामधेनु३अमृत पीने के लिये.जब तक पुराय रहता है तब तक ये भोगते हैं और पुराय बीतजाता है तब४भूमि पर आकर राजापन अपना५समय आने पर६बल सहित असुर लोग७स्वर्ग को छीन कर८देवताओं को निकाल देते हैं॥२०८॥मुनि ने कहा कि स्वर्ग में पुराय का क्षय होजाता है तो पाते हैं स्वर्ग की अपेक्षा मामुंन्हद में सुख अधिक है इससे हम स्वर्ग जाना नहीं चाहते सो तुम हमको लेने यहां फिर मत आना अर्थात् अमुं(इस)न्हद पर पुनः (फिर) हि (निश्चै करके) त्वं (तू) मा (मत) एहि (आव) ॥२०९॥ १२ कर्तव्य कर्म १३ वेद के वचनों को सम्हाल कर १४ ब्रह्मा से १५ महिषासुर वर पाकर ॥ २०१० ॥ १६ देवताओं ने १७ बृहस्पति की सलाह मान कर १८ आबू पर्वत पर, आराधना करते चार १९ वर्ष २० बिता कर॥२११॥दीपक की २१ ज्वाला (लोय) में वह (देवी) प्रकट हुई २२ ज्वाला बढी त्यों ही २३ देवताओं का तेज बढा २४ अचल २५ देवताओं का २६ बारह सूर्यों के समान तेज होगया२७ बृहस्पति ने॥ २१२॥ २८ शक्ति सम्बन्धी मन्त्र जपकर उस तेज को उस मंडल में प्रवेश किया

गंधर्व१ अच्छरि२न*मंजु गीत५, नाना बिमान वाहन६*[*]पुनीत॥
कामद्रु१ धेनु२।७पीयूख पान८, हिंसा१न धर्म२निद्रा३न हान४।९॥
जब पुण्य रहत जँहँ बितिजाय, पावत नृपत्व१तब अवनि आय॥
असुरहु निज अवसर बलउपेत, दिवँ छिन्नि निर्जरन कढ्ढिदेत।२०८।
तिन कहिय पुण्यखय होत तहिँ, मामुंन्हद२९ मेहि त्वं पुनर्हि॥
जबतैं मामुंन्हद ख्यात जत्थ, चहुवान जाय किय उचित तत्थ२०९
पुनि निकट चंडिकाश्रम३०पधारि,साध्किय विधेय श्रुति वच सम्हारि
पहिलैं बिधि सौं बर महिष पाय,हुव त्रि३भुवनपति देवन हटाय२१०
मिलि अमर तबहि गुरमंत्र मानि, अर्बुद लगे ति तपकरन आनि।
पढि साक्तिमंत्र पूजन पुनीत, आराधत हायन चउ४अंतीत।२११।
तिन अग्ग मास खट६पुनि बिताय,हुव दीप हेति वह प्रकट आय
जिम जिम वह कीला बढिग जत्थ,तिम बढिग अमर्त्यन ओज तत्थ
इहिँ क्रम ६छमासलग बढिअनेजँ,त्रिदसनहुवद्वादस १२तपनतेज॥
बाचस्पति तब करि भुव पवित्र, बिधि उचित रचिय मंडल्ल विचित्र
साक्तेय मंत्र जपि बिदित सिष्ट,पुनि किय सु तेज मंडल्ल प्रबिष्ट
एकत्र तेज तँहँ सबन आय, कन्न्या इक प्रकटी रम्म्य काय

---

*सुन्दर**पवित्र १कल्पवृक्ष२कामधेनु३अमृत पीने के लिये.जब तक पुण्य रहता है तब तक ये भोगते हैं और पुण्य बीतजाता है तब४भूमि पर आकर राजापन अपना५समय आने पर६बल सहित असुर लोग७स्वर्ग को छीन कर८देवताओं को निकाल देते हैं॥२०८॥मुनि ने कहा कि स्वर्ग में पुण्य का क्षय होजाता है तो पाते हैं स्वर्ग की अपेक्षा मामुंन्हद में सुख अधिक है इससे हम स्वर्ग जाना नहीं चाहते सो तुम हमको लेने यहां फिर मत आना अर्थात् अमुं(इस)न्हद पर पुनः (फिर) हि (निश्चै करके) त्वं (तू) मा (मत) एहि (आव) ॥२०९॥ १२ कर्तव्य कर्म १३ वेद के वचनों को सम्हाल कर १४ ब्रह्मा से १५ महिषासुर वर पाकर ॥ २०१० ॥ १६ देवताओं ने १७ बृहस्पति की सलाह मान कर १८ आबू पर्वत पर, आराधना करते चार १९ वर्ष २० विता कर॥२११॥दीपक की २१ ज्वाला (लोय) में वह (देवी) प्रकट हुई २२ ज्वाला बढी त्यों ही २३ देवताओं का तेज बढा २४ अचल २५ देवताओं का २६ बारह सूर्यों के समान तेज होगया२७ बृहस्पति ने॥ २१३॥ २८ शक्ति सम्बन्धी मन्त्र जपकर उस तेज को उस मंडल में प्रवेश किया

बुल्ली न सिवा[1] तँहँ मुनिन व्रात[2],खलके दूतन प्रति कहिय ख्यात॥
बरवृद्ध[3] महिष मारन बिचार, सक्कत इम अंबा[4] तप सुढार ॥२२४॥
दूतन डरि अक्खिय सुहि उदंत[5], आसुर सुनि कुप्यो चहत अंत ॥
बलि दूत बिचच्छन[6] नाम बुल्लि,खल अनुचित आसय कहिय खुल्लि
तिहिँ लैन बिचच्छन जाहु तत्थ,सजि साम१भेद२बितरन[7]३समत्थ॥
तिन बिराचि दंड४कचगहि प्रतर्जि[8], आनहु तिहिँ सासन धर्म अर्जि[9]
बुल्ल्यो सु जाय खल तिम बहोरि, जुं[10] दयो बिडारि[11] रिस नैन जोरि
सुहि जाय बिचच्छन अक्खि सर्व, आन्यौं कुपाय महिपहिँ अखर्व

स्यंदन[12] त्रिलक्ख३०००००हुव संग सज्ज,
गज इक्कलक्ख १००००० जीमूत[13] गज्ज ॥

हयतीसलक्ख३००००००हंकियगहीर,बानैतअमितपाँइक्क[14]वीर२२८
कंपात धरनि डुंगर[15] डिगात,बनि आयो दानव प्रलय वात[16] ॥
गरदाय[17] कटक[18] अर्बुद गिरीस,सह सचिव अप्प गो तास सीस२२९
दुर्गा समाधि थित जिँहिँ प्रदेस, अक्खिय बिनम्म्र[19] तँहँ जाय एस ॥
जग अतुल भीरु[20] तव रूप जानि, मैं आयो उपयम[21] उचित मानि
गंधर्व ब्याह[22] सह जोरि गंठि, सुख भुग्गि मोहि भजि[23] प्रीत संठि[24]॥
तिय सहँस सट्ठि६००००मम गेह तास,बनि करहु पट्टरानी बिलास

१देवी नहीं बोली तब २ मुनियों के समूह ने दूत से कहा ३वर से बढे हुए महिषासुर को मारने के विचार से४देवी श्रेष्ठ तप करती है ॥ २२४ ॥ ५ वृत्तान्त ६ विचक्षण नामक दूत को बुलाकर ॥२२५॥ ७ दान, ८ धमकाकर बाल पकड़ कर, ९ हे आज्ञा के धर्म को ९ संचय करनेवाले दूत ॥ २२६ ॥ देवी ने क्रोध के नेत्रों से देखकर १० उसको ११ निकाल दिया ॥ २२७ ॥ १२ रथ १३ मेघ के समान गर्जना करनेवाले १४पैदल ।२२८। १५ पर्वतों को डिगाते हुए १६ प्रलय के पवन के समान होकर १७ सेना से आबू पर्वत राज को १८ घेरकर मंत्री के साथ आप पर्वत के मस्तक पर गया १९ विशेष नम्र होकर बोला २० हे सुन्दर स्त्री२१विवाह ॥ २३० ॥२२ वर कन्या परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करलेवें उसको गन्धर्व विवाह कहते हैं २३ मुझको सेवन करके २४ प्रीति के बदले में सुख भोग ॥ २३१ ॥

बुल्ली न सिवा तँहँ मुनिन व्रातं[2],खलके दूतन प्रति कहिय ख्यात॥
बरवृद्ध[3] महिष मारन बिचार, सद्धत इम अंबा[4] तप सुढार ॥२२४॥
दूतन डरि आक्खिय सुहि उदंत, आसुर सुनि कुप्यो चहत अंत ॥
बलि दूत बिचच्छन[6] नाम बुल्लि,खल अनुचित आसय कहिय खुल्लि
तिहिँ लैन बिचच्छन जाहु तत्थ,सजि साम१भेद२बितरनँ३समत्थ॥
तिन बिराचि दंड४कचगहि प्रतर्जि, आनहु तिहिँ सासन धर्म अंर्जि
बुल्ल्यो सु जाय खल तिम बहोरि, जुँ दयो बिडारि[11] रिस नैन जोरि
सुहि जाय बिचच्छन आक्खि सर्व, आन्यौं कुपाय महिषहिँ अखर्व

स्यंदन[12] त्रिलक्ख३०००००हुव संग सज्ज,

गज इक्कलक्ख १००००० जीमूत[13] गज्ज ॥

हयतीसलक्ख३००००००हंकियगहीर,बानैतअमितपाँ[14]इक्कबीर२२८
कंपात धरनि डुंगर[15] डिगात,बनि आयो दानव प्रलय बात[16] ॥
गरदाय[17] कटकें[18] अर्बुद गिरीस,सह सचिव अप्प गो तास सीस२२९
दुर्गा समाधि थित जिँहिँ प्रदेस, अक्खिय बिनम्म्र[19] तँहँ जाय एस ॥
जग अतुल भीरु[20] तव रूप जानि, मैं आयो उपयम[21] उचित मानि
गंधर्व ब्याँह[22] सह जोरि गंठि, सुख भुग्गि मोहि[23] भजि प्रीत[24] संठि॥
तिय सहँस सट्ठि६००००मम गेह तास,बनि करहु पट्टरानी बिलास

१देवी नहीं बोली तब २ मुनियों के समूह ने दूत से कहा ३वर से बढे हुए महिषासुर को मारने के विचार से४देवी श्रेष्ठ तप करती है ॥ २२४ ॥ ५ वृत्तान्त ६ विचक्षण नामक दूत को बुलाकर ॥२२५॥ ७ दान, ८ धमकाकर बाल पकड़ कर, हे आज्ञा के धर्म को ९ संचय करनेवाले दूत ॥ २२६ ॥ देवी ने क्रोध के नेत्रों से देखकर १० उसको ११ निकाल दिया ॥ २२७ ॥ १२ रथ १३ मेघ के समान गर्जना करनेवाले १४पैदल ।२२८। १५ पर्वतों को डिगाते हुए १६ प्रलय के पवन के समान होकर १७ सेना से आबू पर्वत राज को १८ घेरकर मंत्री के साथ आप पर्वत के मस्तक पर गया १९ विशेष नम्र होकर बोला २० हे सुन्दर स्त्री२१विवाह ॥ २३० ॥२२ वर कन्या परस्पर प्रसन्न होकर विवाह करलेवें उसको गन्धर्व विवाह कहते हैं २३ मुझको सेवन करके २४ प्रीति के बदले में सुख भोग ॥ २३१ ॥

करतैं नृप छुट्टत भुवन कंपि, जोरे कर देवन प्रलय जंपि ।२४०।
सु१हि अस्त्र तज्यो सक्तिहु रिसाय, जिहिं मोघ कर्‌यो वह समुख जाय
जब महिष तज्यो आग्नेय जोरि, वारुन२ करि रोक्यो सो वहोरि॥
जे अस्त्र तजे इम सिद्ध जानि, ते सक्ति हरे प्रतिमल्ल तानि ॥
दानव तब माया रचि उदार, कासेर सरूप करि अंधकार॥२४२॥
शृंगन करि डारत सैल शृंग, दोर्‌यो जिम चंपक भुल्लि भृंग ॥
अंबा निज वाहन तब उडाय, जवं करि चढी सु खल पिट्ठि जाय
असि झारि हर्‌यो इम महिप मत्थ, तस रुंड हिंतु इक पुरुख तत्थ
निकर्‌यो धरि खेटक१खग्ग२नग्ग, माता सु गह्यो केसन समग्ग
किय सिर अलग्ग दै असि कराल, पापिष्ट भजाये खिल्ल पयाल ॥
मिलि द्रुहिन१सक्र२जुत हरि१महेसर२, आये तव अर्बुद सुर असेस
सुभ पिक्खि चंडिकाश्रम३० सुढार, वर सवन दये निजनिज विचार
वह तीर्थ भयो तवतैं उदार, हियके अभीष्ट सव देनहार॥२४६॥
करि चंडि दरस मुख तँहँ क्रियार्स, पत्तो नृप नागोद्भेद३१पास ॥
दिय पहिलैं कद्रू सुतन साप, पारिच्छितैं अध्वर जरहु पाप।२४७।
पहुँचे जब वे डरि सेस पास, तब दिय अनंतै उपदेस तास ॥
अर्बुदगिरि सव्हहु तप असेस, दुर्गाहि रिझावहु तिहिं प्रदेस।२४८।

रामसिंह ! वह तृण उस दुष्ट के हाथ से छूटते ही देवताओं ने प्रलय होता है ऐसा कहकर हाथ जोड़े॥२४०॥ १ निरर्थक करदिया २ अग्नि अस्त्र ३ वरुण अस्त्र से ॥२४१॥ ४ साम्हना करनेवाले अस्त्रों को खींच कर छोड ६ अन्धेरा करके ५ महिष [भैंसे] का स्वरूप किया ॥ २४२ ॥ अनेक ७ सींगों से ८ पर्वतों के शिखरों को गिराता हुआ जैसे भूलकर ९ चम्पे के वृक्ष पर भ्रमर जावे तैसे दौड़ा १० शीघ्रता से ॥ २४३ ॥ उसके रुंड ११ से १३ नंगी तरवार और १२ ढाल लिये एक पुरुष निकला जिसको देवी ने समग्र केसों से पकड़ लिया अर्थात् उसके मस्तक के केस पकड़ लिये।२४४। १४ बाकी के दुष्टों को पाताल में भगादिये १५ ब्रह्मा १६ इन्द्र सहित विष्णु महादेव ॥२४५॥ १७ वांछित॥२४६॥ १८ पुण्य करके १९ गया २० कश्यप की स्त्री कद्रू ने अपने पुत्र सर्पों को श्राप दिया था कि हे पापियो तुम २१ परीक्षित के पुत्र (जनमेजय) के २२ यज्ञ में जलोगे॥२४७॥ २३ सर्प २४ शेषनाग ने उसको उपदेश दिया

करतैं नृप छुट्टत भुवन कंपि, जोरे कर देवन प्रलय जंपि ।२४०।
सु१हि अस्त्र तज्यो सक्तिहु रिसाय, जिहिं मोघ करयो वह समुख जाय
जब महिष तज्यो आग्नेय जोरि, वारुन३ करि रोक्यो सो वहोरि॥
जे अस्त्र तजे इम सिद्ध जानि, ते सक्ति हरे प्रतिमल्ल तानि ॥
दानव तब माया रचि उदार, कासैर सरूप करि अंधकार॥२४२॥
शृंगन करि डारत सैल शृंग, दोरयो जिम चंपक भुल्लि भृंग ॥
अंबा निज बाहन तब उडाय, जवं करि चढी सु खल पिट्ठि जाय
असि झारि हरयो इम महिष मत्थ, तस रुंढ निंतु इक पुरुख तत्थ
निकरयो धरि खेटक१ खग्ग२ नग्ग, माता सु गह्यो केसन समग्ग
किय सिर अलग्ग दै असि कराल, पापिट भजाये खिल्ल पयाल ॥
मिलि द्रुहिन१ संक्र२ जुत हरि१ महेसर२, आये तव अर्बुद सुर असेस
सुभ पिक्खि चंडिकाश्रम३० सुढार, वर सवन दये निजनिज विचार
वह तीर्थ भयो तबतैं उदार, हियके अभीष्ट सब दैनहार॥२४६॥
करि चंडि दरस मुख तँहँ क्रियार्स, पत्तो नृप नागोद्भद३१ पास ॥
दिय पहिलैं कद्रू सुतन साप, पारिच्छितें अध्वर जरहु पाप।२४७।
पहुँचे जब वे डॅरि सेस पास, तब दिय अनंतैं उपदेस तास ॥
अर्बुदगिरि सद्धहु तप असेस, दुर्गाहिं रिझावहु तिहिं प्रदेस।२४८।

रामसिंह ! वह तृण उस दुष्ट के हाथ से छूटते ही देवताओं ने प्रलय होता है ऐसा कहकर हाथ जोड़े॥२४०॥ १ निरर्थक करदिया २ अग्नि अस्त्र ३ वरुण अस्त्र से ॥२४१॥ ४ साम्हना करनेवाले अस्त्रों को खींच कर छोड ६ अन्धेरा करके ५ महिष [भैंसे] का स्वरूप किया ॥ २४२ ॥ अनेक ७ सींगों से ८ पर्वतों के शिखरों को गिराता हुआ जैसे भूलकर ९ चम्पे के वृक्ष पर भ्रमर जावे तैसे दौड़ा १० शीघ्रता से ॥ २४३ ॥ उसके रुंड ११ से १३ नंगी तरवार और १२ ढाल लिये एक पुरुष निकला जिसको देवी ने समग्र केसों से पकड़ लिया अर्थात् उसके मस्तक के केस पकड़ लिये।२४४। १४ बाकी के दुष्टों को पाताल में भगादिये १५ ब्रह्मा १६ इन्द्र सहित विष्णु महादेव ॥२४५॥ १७ वांछित॥२४६॥ १८ पुण्य करके १९ गया २० कश्यप की स्त्री कद्रू ने अपने पुत्र सर्पों को श्राप दिया था कि हे पापियो तुम २१ परीच्छित के पुत्र (जनमेजय) के २२ यज्ञ में जलोगे॥२४७॥ २३ सर्प २४ शेषनाग ने उसको उपदेश दिया

आलिंगनादितिन्हकियस्वअर्थ,सिवतदपि टरे द्विजंगिनि समर्थ२५७
जो सुद्धभाव सिवको न जानि, तहँ मुनिन सापदिय कोप तानि॥
अर्बुद अचलेस्वर लिंग एस, द्रुत गिरहु टूक ह्वै भूप्रदेस ॥ २५८
लग्गे यह अक्खत गिरन लोक, सकंप भुम्मि हुव सबन सोक॥
दै जान लगे पब्बय दरार, देवन गन पहुँचे द्रुहिन द्वार ॥ २५९ ॥
अजँ कहिय चलहु मो जुत असेस,मिलि तुष्ट करहु कोपित महेस ॥
जोलौं न लोक ह्वै प्रलय जाय,अँर चलहु करैं तोलौं उपाय ॥२६०॥
ब्रह्मादि अमर तब सब बिहाल, करि संग सोक आये कृपाल ॥
अचलेश्वर नुति कर ह्वै अधीन,कछुकाल कह्वि सिव तुष्टकीन२६१
बुल्ल्ये हर मोमन निर्बिकार,दिय साप तदपि बिप्रन उदार॥
मम लिंग छुँयोलिय तदपि मौंन,कामातुर रोकी स्वकिय क्यौंन२६२
मैं दहन बालखिल्ल्यन समर्थ,पै बिप्र हनैं ह्वै वेद व्यर्थ॥
तुम अब उपाय यह करहु त्रस्त,मम लिंग अमर अर्चहु समस्त२६३
तब लिंग विष्णु१ धाता२ समेत, पूज्यो सब देवन हित उपेत॥
मुनि बालखिल्ल्य मुख उचित मानि,अर्चन हुव लिंगहिं तदनु आनि
पुनि कहि सत१००रुद्रक जप प्रसिद्ध, उतपात लगे तब मिटन इद्ध
तहँ लिंग बहुरि थप्पिय त्रिनैनं, देवन पुनि लग्गे इष्ट दैन२६५
तब सुनत कहिय यह लिंग तोर, दलिहै प्रभु छुवतहि पाप दोर॥

१बालखिल्य मुनियों को समर्थ जानकर शिव उन स्त्रियों से टलगये॥२५७॥शिव के२ उस शुद्धभाव को नहीं जानकर ३ शीघ्र गिरजाओ ॥२५८ ॥४यह कहते ही ५ भूमि धूजनें लगी ६ देवता ब्रह्मा के द्वार पर गये ॥ २५९ ॥ ७ ब्रह्मा ने कहा ९ कोप किये हुए महादेव को ८ प्रसन्न करो १० शीघ्र चलो ॥ २६० ॥ ११ सृष्टि का शोक करके १२स्तुति करके१३शिव को प्रसन्न किये१४स्त्रियों ने मेरे लिङ्ग का स्पर्श किया तब तक मैं मौन रहा उन मुनियों ने१५काम से आतुर हुई १६ अपनी स्त्रियों को क्यों नहीं रोकी ॥२६२ ॥ हे देवताओ तुम सब मेरे लिङ्ग की१७ पूजा करो ॥ २६३ ॥ १८ब्रह्मा१९हित संहित २० आदि २१ जिस पीछे शिवलिङ्ग का पूजन होनेलगा है॥२६४॥ २२ बढे हुए उत्पात मिटनेलगे २३ महादेव ने ॥ २६५ ॥ पापों के२४ फैलाव का नाश करैगा

आलिंगनादि तिन्हकिय स्व अर्थ, सिव तदपि टरे द्विजांगिनि समर्थ[1] २५७
जो सुद्धभाव सिवको[2] न जानि, तहँ मुनिन सापदिय कोप तानि॥
अर्बुद अचलेस्वर लिंग एस, द्रुत[3] गिरहु टूक व्है भूप्रदेस ॥ २५८
लग्गे यह अक्खत[4] गिरन लोक, सांकंप[5] भुम्मि हुव सवन सोक॥
दै जान लगे पब्बय दरार, देवन[6] गन पहुँचे द्रुहिन द्वार ॥ २५९ ॥
अज[7] कहिय चलहु मो जुत असेस, मिलि तुष्ट[8] करहु कोपित[9] महेस ॥
जोलौं न लोक व्है प्रलय जाय, अर[10] चलहु करैं तोलौं उपाय ॥२६०॥
ब्रह्मादि अमर तब सब बिहाल, करि सर्ग[11] सोक आये कृपाल ॥
अचलेश्वर नुति[12] कर व्है अधीन, कछुकाल कह्वि सिव तुष्ट[13] कीन २६१
बुल्ल्ये हर मोमन निर्बिकार, दिय साप तदपि बिप्रन उदार॥
मम लिंग छुयो[14] लिय तदपि मौन, कामातुर[15] रोकी स्व[16] किय क्यौन २६२
मैं दहन बालखिल्ल्यन समर्थ, पै विप्र हनैं व्है वेद व्यर्थ॥
तुम अब उपाय यह करहु त्रस्त, मम लिंग अमर अर्चहु[17] समस्त २६३
तब लिंग विष्णु१ धाता[18]२ समेत, पूज्यो सब देवन हित उपेत[19]॥
मुनि बालखिल्ल्य मुख[20] उचित मानि, अर्चन हुव लिंगहिं तदनु[21] आनि
पुनि कहि सत१००रुद्रक जप प्रसिद्ध, उतपात लगे तब मिटन इद्ध[22]
तहँ लिंग बहुरि थप्पिय त्रिनैनं[23], देवन पुनि लग्गे इष्ट दैन २६५
तब सुनत कहिय यह लिंग तोर, दलिहै प्रभु छुवतहि पाप दोर[24]॥

१ बालखिल्य मुनियों को समर्थ जानकर शिव उन स्त्रियों से टलगये॥ २५७॥ शिव के २ उस शुद्धभाव को नहीं जानकर ३ शीघ्र गिरजाओ ॥२५८ ॥ ४ यह कहते ही ५ भूमि धूजने लगी ६ देवता ब्रह्मा के द्वार पर गये ॥ २५९ ॥ ७ ब्रह्मा ने कहा ९ कोप किये हुए महादेव को ८ प्रसन्न करो १० शीघ्र चलो ॥ २६० ॥ ११ सृष्टि का शोक करके १२ स्तुति करके १३ शिव को प्रसन्न किये १४ स्त्रियों ने मेरे लिङ्ग का स्पर्श किया तब तक मैं मौन रहा उन मुनियों ने १५ काम से आतुर हुई १६ अपनी स्त्रियों को क्यों नहीं रोकी ॥२६२ ॥ हे देवताओ तुम सब मेरे लिङ्ग की १७ पूजा करो ॥ २६३ ॥ १८ ब्रह्मा १९ हित सहित २० आदि २१ जिस पीछे शिवलिङ्ग का पूजन होनेलगा है॥२६४॥ २२ बढे हुए उत्पात मिटनेलगे २३ महादेव ने ॥ २६५ ॥ पापों के २४ फैलाव का नाश करैगा

दमयंतिजनक१जिहिं नृप उदार, सुमिरयो सु पूर्वभव२ पुराय सार२७४
अर्बुद प्रति फग्गुन सतत३ आय, सहृत भयो सु सिवव्रत सुहाय ॥
उपबास१निसा जागर४२उपेत, सो जवन सक्तु हाटक५ समेत२७५
दै द्विजन बहुरि पसु१पच्छि२पुष्ट, तहँ करतभयो सब सक्तु तुष्ट ॥
यह लखि गालवमुनि प्रमुख आय, पुच्छयोनृपविस्मयसवनपाय २७६
तब सक्ति अवनि१धन२दैन तांम, कहि सक्तुदान तहँ कोन काम॥
नृपकथित११ पूर्वभव१२ सुनि निदान१३,सब सक्तु दैनलग्गो सुजान२७७
ऐसैं अचलेश्वर१४ तत्थ आहि, चिंतिय तिन गंगा मिलनचाहि ॥
गिरिजा१५हु न जानैं जिम प्र१६गूढ़, रचि जन्हुसुता१७ बिच प्रीतिरूढ२७८
आक्खिय नंदीमुख१८ गनन एह, इक कुंड सुजल बिरचहु अछेह ॥
करिहौं तप जलबिच कतिक काल,वहु जाहु रचहु तातें बिसाल२७९
सुनि गनन रच्यो तहँ कुंड स्वच्छ,द्रुत१९ सिव२० प्रविष्ट हुव कपटदच्छ२१॥
करि तप मिस गंगा भोगकाम२२,जलमग्न भये हर अष्ट८जाम२३२८०
गिरिजा२४ भय संकित गुप्तबास, लग्गे ति२५ करन गंगा विलास ॥
सिवचिंतित गंगा तहँ सुभाय,अनुभूत२६ सुरत सुख कियउ आय२८१
मुनि नारद कोउक काल माँहिं, निरखे तहँ आय रु रुद्र नाँहिं॥
करि जोगध्यान तब लखि त्रिकाल,जल देखे गंगारत जटाल२७२८२

दमयंती (नलकी स्त्री) का १ पिता उस राजा ने २ पूर्व जन्म के पुण्य को याद करके ॥ २७४ ॥ आबू पर फाल्गुन महीने में ३ निरन्तर आकर ४ जागरण सहित ५ स्वर्ण सहित जव का सत्तू ॥ २७५ ॥ ६ ताजे मोटे करके ७ सत्तू से प्रसन्न किये ८ आदि आकर राजा से पूछा ॥२७६॥ कि तेरी शक्ति ९ भूमि और धन देने की है १० तहां सत्तू देने का क्या काम है ११ राजा का कहाहुआ १२ पूर्वजन्म का १३ कारण सुनकर ॥ २७७॥ १४ अचलेश्वर नामक शिव तहां हैं उन्होंने गंगा से मिलना चाहा १५ पार्वती नहीं जाने ऐसे १६ बहुत गुप्त १७ गंगा में प्रसिद्ध प्रीति रचकर॥ २७८॥ नन्दी को १८ आदि लेकर गणों से कहा ॥ २७९ ॥ २१ कपट करने में चतुर २० महादेव उस कुंड में १९ शीघ्र घुसे २२ गंगा से भोग करने की कामना से तप का मिस करके २३ आठों पहर ॥ २८० ॥ २४ पार्वती के भय से २५ ते (शिव) २६ अनुभव करके ॥ २८१ ॥ २७ शिव को गंगा में रत देखे ॥ २८२ ॥

दमयंतिजनक[1]जिहिँ नृप उदार, सुमिरयो सु पूर्व[2]भव पुराय सार२७४
अर्बुद प्रति फग्गुन [3]सतत आय, सकृत भयो सु सिवव्रत सुहाय ॥
उपबास१निसा जागर[4]२उपेत, सो जवन सक्तु हाटक समेत२७५
दै द्विजन बहुरि पसु१पच्छि२पुष्ट, तँहँ करतभयो सब सक्तु तुष्ट ॥
यह लखिगालवमुनिप्रमुखआय, पुच्छ्योनृपविस्मयसवनपाय २७६
तब सक्ति अवनि१धन२दैन ताम, कहि सक्तुदान तँहँ कोन काम॥
नृपकथित[11] पूर्वभव[12] सुनि निदान[13],सव सक्तु दैनलग्गो सुजान२७७
ऐसैं अचलेश्वर[14] तत्थ आहि, चिंतिय तिन गंगा मिलनचाहि ॥
गिरिजौंहु[15] न जानैं जिम प्रगूढ[16], रचि जन्हुसुता विच प्रीतिरूढ२७८
आक्खिय नंदीमुख[18] गनन एह, इक कुंड सुजल बिरचहु अछेह ॥
करिहौं तप जलविच कतिक काल, वहु जाहु रचहु ताँतैं बिसाल२७९
सुनि गनन रच्यो तँहँ कुंड स्वच्छ, द्रुत सिवं[21] प्रविष्ट हुव कपटदच्छ॥
करि तप मिस गंगा भोगकाम[22], जलमग्न भये हर अष्ट८जाम[23]२८०
गिरिजौं[24] भय संकित गुप्तबास, लग्गे ति[25] करन गंगा विलास ॥
सिवचिंतित गंगा तँहँ सुभाय, अनुभूत[26] सुरत सुख कियउ आय२८१
मुनि नारद कोउक काल माँहिँ, निरखे तँहँ आय रु रुद्र नाँहिँ॥
करि जोगध्यान तबलखि त्रिकाल, जल देखे गंगारत जटाल[27]२८२

दमयंती (नलकी स्त्री) का १ पिता उस राजा ने २ पूर्व जन्म के पुराय को याद करके ॥ २७४ ॥ आबू पर फाल्गुन महीने में ३ निरन्तर आकर ४ जागरण सहित ५ स्वर्ण सहित जव का सत्तू ॥ २७५ ॥ ६ ताजे मोटे करके ७ सत्तू से प्रसन्न किये ८ आदि आकर राजा से पूछा ॥२७६॥ कि तेरी शक्ति ९ भूमि और धन देने की है १० तहां सत्तू देने का क्या काम है ११ राजा का कहाहुआ १२ पूर्वजन्म का १३ कारण सुनकर ॥ २७७॥ १४अचलेश्वर नामक शिव तहां हैं उन्होंने गंगा से मिलना चाहा १५पार्वती नहीं जाने ऐसे १६ बहुत गुप्त १७ गंगा में प्रसिद्ध प्रीति रचकर॥२७८॥ नन्दी को १८आदि लेकर गणों से कहा ॥ २७९ ॥ २१ कपट करने में चतुर २०महादेव उस कुंड में १९शीघ्र घुसे २२ गंगा से भोग करने की कामना से तप का मिस करके २३ आठों पहर ॥ २८० ॥ २४ पार्वती के भय से २५ ते (शिव) २६ अनुभव करके ॥ २८१ ॥ २७ शिव को गंगा में रत देखे ॥ २८२ ॥

जबतैं सिव गंगाकुंड३३जत्थ, सद्धिय विधेय तँहँ प्रीतिसत्थ ॥
पुनिनृपकामेस्वरलिंग३४पत्त, त्र्यंबकहिँपुज्जिकियविहिततत्त।२९२।
पहिलैं जब दर्पक संभु पुट्ठि, लगि लोल दये सब रोप छुट्ठि ॥
गंगाधर कासी१तब जगाम, करिसंग तदपि छोरे न काम ॥२९३
इहिँ क्रम प्रयाग२केदार३आय, नैमिस४रु भद्रकर्णक५निकाय ॥
पुनि जंबुमार्ग६पुष्कर७प्रभास८,दमजंगल९आये सिव उदास२९४
गोकर्ण१०रु गंगाद्वार११गैल, बालि पत्त बटेस्वर१२चलिय बैल ॥
गयासिर१३इम भजिभजि तीर्थ ग्राम, त्रिनयन स्मर देख्यो संग ताम
अर्बुद जब आये श्रमित आप, पहुँच्यो तँहँ धनु करि सज्ज्य चाप॥
उपविष्ट अवनि दे जानु एक१,संधाय विसिख ऐंच्यो सटेक२९६
त्रिनयन जब जान्यौं यह तजै न, नासन तव खोल्यो गोधिनैन ॥
तासौं कढि पावक जाय ताहि,द्रुत भस्म कस्यो यह सस्त्र दाहि२९७
पतिकौं रति यौं तब जानि प्लुष्ट, तपकरि अखंड किय ईस तुष्ट॥
हायन हजार१०००वित्तत महेस, बुल्ले रति मंगहु वर विसेस।२९८।
भाखिय रति मोपति भस्म भान, वपु अक्षत उठ्ठहु सधनु१बान२॥
तब ताहि दयो वर यह त्रिनैन, उठ्यो जगि सोवत मनहु मैन।२९९

कर धनु १ सर २ लहि निज रूप १ काय २,
परिगो उठि लज्जित संभु पाय ॥

---

१ गया २ महादेव को पूज कर ॥ २९२ ॥ ३ कामदेव ने शिव के पीछे लगकर क्रोध करके ४ चपल ५ बाण दिये ६ शिव ७ काशी गये ८ तोभी कामदेव ने साथ नहीं छोडा ॥ २९३ ॥ ९स्थान ॥२९४॥१०शिव का बाहन ११गयातीर्थ१२तीर्थों के समूहों में१३शिव ने कामदेव को तहां भी साथ ही देखा ॥ २९५ ॥ १४ पुष्पधनु (कामदेव) ने धनुष सज्ज करके१५भूमि के आसन पर एक १६ घुटना देकर१७ बाण को सन्धान करके खैंचा ॥ २९६ ॥ १८ शिव ने जाना कि १९ ललाट का (तीसरा) नेत्र खोला २० अग्नि निकलकर ॥ २९७ ॥ २१ दग्ध जानकर २२ वर्ष ॥ २९८ ॥ रति ने कहा कि मेरा पति भस्म २३ प्रतीत होता है सो२४ चत रहित शरीर होकर धनुष बाण सहित उठै २५ कामदेव मानों सोकर उठा होवे ऐसे उठा ॥ २९९ ॥

जबतैं सिव गंगाकुंड३३जत्थ, सद्धिय बिधेय तँहँ प्रीतिसत्थ ॥
पुनिनृपकामेस्वरलिंग३४पत्त, त्र्यंबकहिँपुजिकियविहिततत्त।२९२।
पहिलैं जब दर्पक संभु पुट्ठि, लागि लोलँ दये सब रोपँ रुट्ठि ॥
गंगाधर कासी१तब जगाँम, करिसंग तदपि छोरे न काम ॥२९३
इहिँ क्रम प्रयाग२केदार३आय, नैमिस४रु भद्रकर्णक५निकाय ॥
पुनि जंबुमार्ग६पुष्कर७प्रभास८,दमजंगल९आये सिव उदास२९४
गोकर्ण१०रु गंगाद्वार११गैल, बलि पत्त बटेस्वर१२चलिय वैल ॥
गयसिर१२इम भजिभजि तीर्थ ग्राम, त्रिनयन स्मर देख्यो संग ताम
अर्बुद जब आये श्रमित आप, पहुँच्यो तँहँ धँनु करि सज्ज्य चाप॥
उपविष्ट अवनि दै जानु एक१,संधाय बिसिखँ ग्रैंच्यो सटेक२९६
त्रिनयन जब जान्यौं यह तजै न, नासन तब खोल्यो गोधिनैनं ॥
तासौं कढि पावक जाय ताहि,द्रुत भस्म कस्यो यह सत्व दाहि२९७
पतिकौं रति यौं तब जानि प्लुष्ट, तपकारि अखंड किय ईस तुष्ट॥
हायँन हजार१०००वित्तत महेस, बुल्ले रति मंगहु वर बिसेस।२९८।
भाखिय रति मोपति भस्म भान, बपु अक्षतँ उट्ठहु सधनु१बान२॥
तब ताहि दयो वर यह त्रिनैन, उट्ठ्यो जगि सोवत मनहु मैनं।२९९

कर धनु १ सर २ लहि निज रूप १ काय २,
परिगो उठि लज्जित संभु पाय ॥

---

१ गया २ महादेव को पूज कर ॥ २९२ ॥ ३ कामदेव ने शिव के पीछे लगकर क्रोध करके ४ चपल ५ बाण दिये ६ शिव ७ काशी गये ८ तोभी कामदेव ने साथ नहीं छोड़ा ॥ २९३ ॥ ९स्थान ॥२९४॥१०शिव का वाहन ११गयातीर्थ१२तीर्थों के समूहों में१३शिव ने कामदेव को तहां भी साथ ही देखा ॥ २९५ ॥ १४ पुष्पधनु (कामदेव) ने धनुष सज्ज करके१५भूमि के आसन पर एक १६ घुटना देकर१७ बाण को सन्धान करके खैंचा ॥ २९६ ॥ १८ शिव ने जाना कि १९ ललाट का (तीसरा) नेत्र खोला २० अग्नि निकलकर ॥ २९७ ॥ २१ दग्ध जानकर २२ वर्ष ॥ २९८ ॥ रति ने कहा कि मेरा पति भस्म २३ प्रतीत होता है सो२४ क्षत रहित शरीर होकर धनुष बाण सहित उठै २५ कामदेव मानों सोकर उठा होवे ऐसे उठा ॥ २९९ ॥

धरि ताहि अंगिरा जोगध्यान, पंचम५दिन जान्यौं सिसु अप्रान॥
कहि सबन दयो तिन्ह लखि त्रिकाल[2],बुल्ले तुम जावहु बहुत बाल३०९
छिप्रहि[3] तस आयो आयु छेह, दिनच्यारि४कह्लि तजिहै सु देह ॥
सप्त७हि मुनि सुनि करि बाल सोक,लै ताहि गये तब सत्यलोक३१०
सप्त७न प्रनाम किय प्रथम सुद्ध, पुनि कियउ बाल बंदन प्रबुद्ध॥
बहुजीवन आसिख दय बिरंचि,सुनि बैठे ते हिय अमृत सिंचि३११
बिधि पुच्छिय आगमं[5] हेतु[6] बत्त,तिन प्रनँति पुब्ब किय अरज तत्त॥
यह सिसु मृकंड द्विजको अनाथ,सोवैं सु कालके उदर साथ३१२
हम भुल्लि कह्यो चिरजीवि होहु,सुरज्येष्ठ अप्प किय हुकमसोहु॥
मित्थ्यापन तातैं निज मिटाय,पोतंक बचैं सु करिये उपाय।३१३।
सुनि द्रुहिनं[11] कहिय अब तजहु सोक,लहिहै यह जीवन ज्यौं त्रिलोक
इक१कल्प आयु इम तिहिं दिवाय,पहुँचायो पोतं[12] सु निजनिकाय३१४
द्विज सौं हुव मार्कंडेय दच्छ[13], अर्बुद[14] तप सद्धिय संतत[15] अच्छ ॥
जिहिं आश्रम नृप रमनेस जाय,करि सब विधेय किय पूत[16]काय३१५
उद्दालक थप्पिय लिंग३६एक, बलि तत्थ गयो नृप सह विवेक॥

उनमें से अंगिरा ने योगध्यान से जाना कि आज से पांचवें दिन यह बालक १मरजावेगा२भूत,वर्तमान और भविष्यत् के ज्ञानवाले ने अन्य ऋषियों से कहा कि तुमने तो बालक को बहुत जीवी होने का आशीर्वाद दिया है।३०९। और इसकी आयु का छेह तो ३ शीघ्र ही आगया॥ ३१०॥ ४ ब्रह्मा ने उस बालक को बहुत जीने का आशीर्वाद दिया जिसको सुनकर सप्तऋषि अपने हृदय को मानों अमृत से सींचकर बैठे॥ ३११ ॥ ब्रह्मा ने ५ आने का ६ कारण पूछा ७ नम्रता पूर्वक ॥ ३१२ ॥ ८ हे ब्रह्मा ९ आपने भी वही आज्ञा की है १० बालक बचै सो उपाय करो ॥ ३१३ ॥ ११ ब्रह्मा ने कहा कि अब शोक छोड दो जैसे तीन लोक आयु लेते हैं तैसे ही यह लेवेगा (शास्त्रों में नित्य नैमित्तिक और महा ये तीन प्रकार का प्रलय माना है इनमें मनुष्यों का जीवन मरण तो नित्य प्रलय है और तीनों लोकों का मिटजाना नैमित्तिक प्रलय है और सम्पूर्ण ब्रह्मांड का नाश होकर प्रकृति रूप होजाने को महाप्रलय कहते हैं सो यहां त्रिलोकी के समान आयु कहने से प्रलयान्त अर्थात् एक कल्प की आयु होना कहा) १२ बालक को अपने घर पहुँचाया ॥ ३१४ ॥ १३ चतुर १४ आबू पर्वत पर १५ निरन्तर १६ शरीर को पवित्र

धरि ताहि अंगिरा जोगध्यान, पंचम५दिन जान्यौं सिसु अप्रान॥
कहि सबन दयो तिन्ह लखि त्रिकाल,बुल्ले तुम जावहु बहुत बाल३०९
छिप्रहि तस आयो आयु छेह, दिनच्यारि४कह्हि तजिहै सु देह ॥
सप्त७हि मुनि सुनि करि बाल सोक,लै ताहि गये तब सत्यलोक३१०
सप्त७न प्रनाम किय प्रथम सुद्ध, पुनि कियउ बाल बंदन प्रबुद्ध॥
बहुजीवन आसिख दय बिरंचि,सुनि बैठे ते हिय अमृत सिंचि३११
बिधि पुच्छिय आगम हेतु बत्त,तिन प्रनांति पुव्व किय अरज तत्त॥
यह सिसु मृकंड द्विजको अनाथ,सोवैं सु कालके उदर साथ३१२
हम भुल्लि कह्यो चिरजीवि होहु,सुरज्येष्ठ अप्प किय हुकमसोहु॥
मित्थ्यापन तातैं निज मिटाय,पोतंक बचैं सु करिये उपाय।३१३।
सुनि द्रुहिन कहिय अब तजहु सोक,लहिहै यह जीवन ज्यौं त्रिलोक
इक१कल्प आयु इम तिहिं दिवाय,पहुँचायो पोतं सु निजनिकाय३१४
द्विज सौं हुव मार्कंडेय दच्छ, अर्बुद तप सद्धिय संतत अच्छ ॥
जिहिं आश्रम नृप रमनेस जाय,करि सब विधेय किय पूतकाय३१५
उद्दालक थप्पिय लिंग३६एक, बलि तत्थ गयो नृप सह विवेक॥

उनमें से अंगिरा ने योगध्यान से जाना कि आज से पांचवें दिन यह बालक १मरजावेगा२भूत,वर्तमान और भविष्यत् के ज्ञानवाले ने अन्य ऋषियों से कहा कि तुमने तो बालक को बहुत जीवी होने का आशीर्वाद दिया है।३०९। और इसकी आयु का छेह तो ३ शीघ्र ही आगया॥ ३१०॥ ४ ब्रह्मा ने उस बालक को बहुत जीने का आशीर्वाद दिया जिसको सुनकर सप्तऋषि अपने हृदय को मानों अमृत से सींचकर बैठे॥ ३११ ॥ ब्रह्मा ने ५ आने का ६ कारण पूछा ७ नम्रता पूर्वक ॥ ३१२ ॥ ८ हे ब्रह्मा ९ आपने भी वही आज्ञा की है १० बालक बचै सो उपाय करो ॥ ३१३ ॥ ११ ब्रह्मा ने कहा कि अब शोक छोड दो जैसे तीन लोक आयु लेते हैं तैसे ही यह लेवेगा (शास्त्रों में नित्य नैमित्तिक और महा ये तीन प्रकार का प्रलय माना है इनमें मनुष्यों का जीवन मरण तो नित्य प्रलय है और तीनों लोकों का मिटजाना नैमित्तिक प्रलय है और सम्पूर्ण ब्रह्मांड का नाश होकर प्रकृति रूप होजाने को महाप्रलय कहते हैं सो यहां त्रिलोकी के समान आयु कहने से प्रलयान्त अर्थात् एक कल्प की आयु होना कहा) १२ बालक को अपने घर पहुँचाया ॥ ३१४ ॥ १३ चतुर १४ आबू पर्वत पर १५ निरन्तर १६ शरीर को पवित्र

जँहँ न्हान बनैं जो पुरायतोय, इकबीस२१ पुरुख उद्धार होय॥३२६॥
इक भो अप्रस्तुतनाम अग्ग, महिपाल[2] सु लग्गो पाप मग्ग ॥
नहिं पढन१दान२जप३जजन४नीति५,परधनकौं जिमातिम लैन प्रीति
बिप्रादि बरन ललना[3] बुलाय, रक्खैं तिन लोलुप[4] नीचराय ॥
इकनिस दिय पितरन स्वप्न याहि,चंडाल न डारहु नरक चाहि३२८
सुख स्वर्ग लयो हम करि सुकर्म, वह क्यौं[5] बिगारन भजि अधर्म॥
यह सुनत भूप हिय बोध[6] आय, प्रातहि जागि रोयो कष्टपाय॥३२९॥
अक्खिय बुलाय विप्रन उदंत[7],मम पितरन व्है किम दिर्व महंत॥
द्विज मुनिन कहिय है यह दुराप[9], पापिष्ट करयो तैं सतत[10] पाप ३३०
करि तीर्थ पूंत[11] व्है सह कलत्र[12], सुभ करहु तदनु[13] पितृमेध सत्र[14] ॥
जो सुनत चल्यो तीर्थन जनेस[15],द्रुत न्हाय परसि सब पुरायदेस३३१
आयो पुनि अर्बुद तजि अधर्म, किय कुल संतारन[16] उचित कर्म ॥
ततकाल[17] बिमानन बैठि तास,सब पितर करत हुव स्वर्गबास३३२
निजदेह सहित सोहू नरेस, अमरालय[18] गो लहि पुरायएस ॥
रमनेस तत्थ चहुवानराय, बिधि श्राद्ध१ दान२ मुख सब बनाय३३३
पुनि रामतीर्थ४३ पहुँच्यो पुनीत, पहु[19] सक्त भो तहँ बिहित प्रीत॥
अर्जुन जदुबंसी भूप अग्ग, आत्रेयदत्त[20] लै वर उदग्ग ॥ ३३४ ॥
पुनि धेनु[21] अर्थ जमदग्नि मारि, गो खल लगाय निजबंस गारि ॥
मुनि नारि रेनुका राम[22] माय,सह[23] गोन करयो साध्वी[24] सुभाय३३५

१पवित्र जल में २राजा ३स्त्रियों को बुलाकर ४कामी. उसको ५अब क्यों मिटाता है ६ज्ञान आकर ७ स्वप्न का वृत्तान्त कहा कि हे महन्तो मेरे पितरों को ८ स्वर्ग कैसे मिले ९ दुर्लभ है १०तूने निरंतर पापकर्म किया है ॥ ३३० ॥ ११ पवित्र होकर १२ स्त्री सहित शुभ कार्य करके १३ जिस पीछे पितृमेध नामक १४ यज्ञ कर १५ नरेस ॥ ३३१ ॥१६ कुल का उद्धार करने को१७तुरन्त ॥ ३३२ ॥ १८ स्वर्ग में गया॥ ३३३ ॥१९राजा रमनेस२०दत्तात्रेय से वर लेकर ॥ ३३४ ॥२१गौ के अर्थ जमदग्नि मुनि को मारकर२२ परशुराम की माता २४पतिव्रता के स्वभाव से २३ पति के साथ जल गई॥ ३३५ ॥

जँहँ न्हान बनैं जो पुंण्यतोय, इकबीस२१ पुरुख उद्धार होय॥३२६॥
इक भो अप्रस्तुतनाम अग्ग, महिपाल[2] सु लग्गो पाप मग्ग ॥
नहिं पढन१दान२जप३जजन४नीति५,परधनकौं जिमातिम लैन प्रीति
बिप्रादि बरन ललना[3] बुलाय, रक्खैं तिन लोलुप[4] नीचराय ॥
इकनिस दिय पितरन स्वप्न याहि,चंडाल न डारहु नरक चाहि३२८
सुख स्वर्ग लयो हम करि सुकर्म, वह क्यों वे[5] बिगारन भजि अधर्म॥
यह सुनत भूप हिय बोध[6] आय, प्रातहि जागि रोयो कष्टपाय॥३२९॥
अक्खिय बुलाय बिप्रन उदंत[7],मम पितरन व्है किम दिवं[8] महंत॥
द्विज मुनिन कहिय है यह दुराप[9], पापिष्ट करयो तैं सततं[10] पाप ३३०
करि तीर्थ पूत[11] व्है सह कलत्र[12], सुभ करहु तदनु[13] पितृमेध सत्र[14] ॥
जो सुनत चल्यो तीर्थन जनेस[15],द्रुत न्हाय परसि सब पुण्यदेस३३१
आयो पुनि अर्बुद तजि अधर्म, किय कुल संतारन[16] उचित कर्म ॥
ततकाल[17] बिमानन बैठि तास,सब पितर करत हुव स्वर्गबास३३२
निजदेह सहित सोहू नरेस, अमरालय[18] गो लहि पुण्यएस ॥
रमनेस[19] तत्थ चहुवानराय, बिधि श्राद्ध१ दान२ मुख सब बनाय३३३
पुनि रामतीर्थ४३ पहुँच्यो पुनीत, पहुँ सद्धत भो तँहँ बिहित प्रीत॥
अर्जुन जदुबंसी भूप अग्ग, आत्रेयदत्त[20] लै वर उदग्ग ॥ ३३४ ॥
पुनि धेनु[21] अर्थ जमदग्नि मारि, गो खल लगाय निजबंस गारि ॥
मुनि नारि रेनुका[22] राम माय,सह[23] गोन करयो साध्वी[24] सुभाय३३५

१पवित्र जल में २राजा ३स्त्रियों को बुलाकर ४कामी.उसको ५अब क्यों मिटाता है ६ज्ञान आकर ७ स्वप्न का वृत्तान्त कहा कि हे महन्तो मेरे पितरों को ८ स्वर्ग कैसे मिले ९ दुर्लभ है १०तूने निरंतर पापकर्म किया है ॥ ३३० ॥ ११ पवित्र होकर १२ स्त्री सहित शुभ कार्य करके १३ जिस पीछे पितृमेध नामक १४ यज्ञ कर १५ नरेस ॥ ३३१ ॥१६ कुल का उद्धार करने को१७तुरन्त ॥ ३३२ ॥ १८ स्वर्ग में गया॥ ३३३ ॥१९राजा रमनेस२०दत्तात्रेय से वर लेकर ॥ ३३४ ॥२१गौ के अर्थ जमदग्नि मुनि को मारकर२२ परशुराम की माता २४पतिव्रता के स्वभाव से २३ पति के साथ जल गई॥ ३३५ ॥

द्रुत भेदि गर्त्त अर्बुद प्रदेस, छिपि तव तप सद्धिय तँहँ छपेस ॥ ३४५ ॥
समयानुसार करि सिव प्रसन्न, आक्खिय ससि हम हुव राहु अन्न
अब हो सरण्य भूतेस अप्प, दंमि ताहि नाथ करिए अदप्प ॥ ३४६ ॥
मृड कहिय पीत अमृत सु मरैं न, दृढ उचित सहायहु तोहि दैंन
तवग्रास समय सब सावधान, नर करहिं होम१ जप२ न्हान३ दान४
उनतैं तव मोचन व्है उदार, व्है हैं अमोघफल करनहार ॥
भू भेदि कर्‌यो तैं अवटँ अत्थ, सो चंद्रोद्भेदन४५ नामसत्थ ॥ ३४८ ॥
करि न्हान इहाँ तव ग्रहन काल, लहिहै न मनुज पुनि जन्मलाल ॥
बर्लि न्हान१ दान२ करि सोमवार, व्है सुद्ध लोक बसिहै तिहार ॥ ३४९ ॥
इम आक्खि भये प्रच्छन्न ईस, निजलोक गयो उठि रोहिनीस ॥
जबतैं वह चंद्रोद्भेद४५ जत्थ, सब किय विधेय तँहँ नृप समत्थ ॥ ३५० ॥
अनुक्रम ईसानी सिखर४६ धाय, तँहँ सव विधेय सद्धिय हिताय
अग्गैं गिरीसैं गिरिजा उपेत, हुव सुरत सक्त संतान हेत ॥ ३५१ ॥
मिलि सुरन कर्‌यो तव गुप्तमंत्र, सिव सुक्र उमा लहिकैं स्वतंत्र
बलवान दुसह जनिहै जु बाल, करिहै सु नास सबको कराल ॥ ३५२ ॥
यह करि बिचार सब छोरि ओकं, सिवद्वार गये परि घोर सोक
नंदी तँहँ आक्खिय समय नाँहिं, मृड ढिग सिवाँहि एकांत माँहिं ३५३
किन्नी न बत्त तस सुरन कान, पठयो महेस ढिग जगतप्रान ॥

तब आबू पर शीघ्र १ खड्डा खोदकर उसमें छिपकर २ चन्द्रमा ने तप किया ॥ ३४५ ॥ ३ हे महादेव मैं आपके शरण हूं राहु को ४ दंड देकर ५ घमंड रहित करो ॥ ३३६ ॥ ६ शिव ने कहा कि उसने अमृत पीलिया है इससे मरैगा नहीं परन्तु तुझको उचित सहायता देवेंगे, तेरे ग्रहण के समय सब सावधान होकर ॥ ३४७ ॥ ७ खड्डा ॥ ३४८ ॥ ८ पुनि ॥ ३४९ ॥ ९ चन्द्रमा अपने लोक में गया ॥ ३५० ॥ १० महादेव ११ पार्वती सहित सन्तानउत्पन्न करने के लिये १२ मैथुन करने में आसक्त हुए ॥ ३५१ ॥ १३ देवताओं ने गुप्त सलाह की कि महादेव का १४ वीर्य पार्वती स्वतंत्रता से लेवेगी तो ॥ ३५२ ॥ १५ अपने घर छोड कर १६ नन्दी नामक महादेव के गण ने १७ महादेव के पास एकान्त में पार्वती ही है ॥ ३५३ ॥ १८ पवन को शिव के पास भेजा

द्रुत भेदि गर्त्त[1] अर्बुद प्रदेस, छिपि तव तप सझिय तँहँ छपेसं[2] ३४५
समयानुसार करि सिव प्रसन्न, आक्खिय सासि हम हुव राहु अन्न
अब हो सरराय[3] भूतेस अप्प, दँमि[4] ताहि नाथ करिए अदप्प[5] ॥३४६॥
मृड[6] कहिय पीत अमृत सु मरैं न, दृढ उचित सहायहु तोहि दैंन
तवग्रास समय सब सावधान, नर करहिं होम१ जप२ न्हान३ दान४
उनतैं तव मोचन व्है उदार, व्है हैं अमोघफल करनहार ॥
भू भेदि कस्यो तैं अवट[7] अत्थ, सो चंद्रोद्भेदन४५ नामसत्थ ॥३४८॥
करि न्हान इहाँ तव ग्रहन काल, लहिहैं न मनुज पुनि[8] जन्मलाल॥
बलि न्हान१दान२करि सोमवार, व्है सुद्ध लोक बसिहै तिहार।३४९।
इम आक्खि भये प्रच्छन्न ईस, निजलोक गयो उठि रोहिनीस[9] ॥
जबतैं वह चंद्रोद्भेद४५ जत्थ, सब किय विधेय तँहँ नृप समत्थ।३५०।
अनुक्रम ईसानी सिखर४६ पाय, तँहँ सब विधेय सझिय हिताय
अग्गैं गिरीसं[10] गिरिजा[11] उपेत, हुव सुरत[12] सक्त संतान हेत॥ ३५१ ॥
मिलि सुरन[13] कस्यो तव गुप्तमंत्र, सिव सुक्र[14] उमा लहिकैं स्वतंत्र
बलवान दुसह जनिहैं जु बाल, करिहै सु नास सवको कराल ।३५२।
यह करि बिचार सब छोरि ओकं[15], सिवद्वार गये परि घोर सोक
[16]नंदी तँहँ आक्खिय समय नाँहिं, मृड[17] ढिग सिवाहि एकांत माँहिं३५३
किन्नी न बत्त तस सुरन कान, पठयो महेस ढिग जगतप्रान[18] ॥

तब आबू पर शीघ्र १ खड्डा खोदकर उसमें छिपकर २ चन्द्रमा ने तप किया ॥ ३४५ ॥ ३ हे महादेव मैं आपके शरण हूं राहु को ४ दंड देकर ५ घमंड रहित करो ॥ ३३६ ॥ ६ शिव ने कहा कि उसने अमृत पीलिया है इससे मरैगा नहीं परन्तु तुझको उचित सहायता देवेंगे, तेरे ग्रहण के समय सब सावधान होकर ॥ ३४७ ॥ ७ खड्डा ॥ ३४८ ॥ ८पुनि ॥ ३४९ ॥ ९ चन्द्रमा अपने लोक में गया ॥ ३५० ॥ १०महादेव ११पार्वती सहित सन्तानउत्पन्न करने के लिये १२ मैथुन करने में आसक्त हुए ॥ ३५१ ॥ १३देवताओं ने गुप्त सलाह की कि महादेव का १४वीर्य पार्वती स्वतंत्रता से लेवेगी तो॥ ३५२॥ १५ अपने घर छोड कर १६ नन्दी नामक महादेव के गण ने १७ महादेव के पास एकान्त में पार्वती ही है ॥ ३५३ ॥ १८ पवन को शिव के पास भेजा

लै कछु उद्वर्तन[1] लेप पानि, उपजावहु अंगज[2] जान आनि ॥३६२॥
रचिहै जिम जैसो रूपवान, सुत तैसो ह्वैहैं अति सुजान ॥
औरंससौं[3] जामैं गुन अपुब्ब, पूजा वह लहिहै सवन पुब्ब[4] ॥३६३॥
मृड[5] इम अनेक कहि तिय मनाय, लाये निकाय[6] सुत हरख लाय॥
तबतैं वह तुंग[7] रु तीर्थ धाम, नगपर[8] ईसानीसिखर४६नाम॥३६४॥
तहँ द्विजन पुज्जि मिहिकावतीस[9], आयो सु ब्रह्मपद४७लै असीस॥
पहिलैं पधारि अर्बुद प्रजेस[10], अचलेस दरसहित सुर[11] असेस।३६५।
सुर१मुनिन२सबन तँहँ नाय सीस,अक्खिय विरंचि[12] सन हे अधीस॥
जासौं अकष्ट[13] ह्वै मुक्ति जाय, उपदिष्ट[14] करहु ऐसो उपाय ॥ ३६६॥
बिधि[15] रोप्यो यह सुनि सह विवेक,अर्बुदपर अप्पन चरन एक॥
अरु कहिय छुवहु याकौं उदार, है बिनु प्रयास गति दैनहार३६७॥
अध्वर[16]१ ब्रत२ दान३ रु जप४ अनंत,मम अंघ्रि[17] गिनहु तिनतैं महंत
अर्चैं[18] इहिं पुण्णिम उर्ज्जमास[19], बहुरि न लहैं सु जन गर्भबास३६८
ह्वैहै सित[20]१कृतजुग२मिति विहीन[21],लोहित[22]१त्रेता जुग२प्रमिति[23] लीन३
पीवँल[24]१पुनिद्वापर२लघुप्रमान३,भाँ[25]असित[26]१कलि२रुअतिअलपभाँन
करिश्रवनबचनयहद्रुहिन[27]कोहि, सबहुव कृतार्थ[28]पयपुज्जि सोहि ॥
तबतैं सु ब्रह्मपदतीर्थ४८ तत्त, रमनेसहु पुज्जिय भावरत्त ॥३७०॥

दिन होवेगा १ उवटन का लेप हाथ में लेकर २ पुत्र उपजा ॥ ३६२ ॥ ३ उदर से पैदा होनेवाले से भी उसमें अपूर्व गुण होवेंगे और सब से ४ पहिले पूजा लेवेगा ॥ ३६३ ॥ ५ महादेव इस प्रकार अनेक बातें कहकर ६ अपने घर लाये ७ ऊंचा ८ पर्वत पर ॥ ३६४ ॥ ९मिहिकावती पुर का स्वामी रमनेश चहुवान १०ब्रह्मा ११सब देवता ॥ ६५ ॥१२ब्रह्मा से कहा कि हे स्वामी १३विना कष्ट किये ही जिससे मुक्ति होजावे ऐसा १४ उपदेश करो ॥ ३६६ ॥ यह सुनकर विचार के साथ १५ ब्रह्मा ने आबू पर अपना एक चरण रोपा ॥ ३६७ ॥ १६ यज्ञ, इन सबसे मेरे १७ चरण को बडा जानो १९ कार्तिक की पूर्णिमासी को इसका १८ पूजन करैं ॥ ३६८ ॥ यह चरण २० सत्ययुग में श्वेत रंग का और २१ प्रमाण रहित होवेगा, त्रेतायुग में २२ लाल रंग और २३ प्रमाणवाला, द्वापर में२४ पीला रंग और छोटे प्रमाणवाला, कलियुग में २६ श्याम २५ कान्ति और बहुत अल्प २७ जान पड़ेगा ।३६९। २८ ब्रह्मा का यह वचन सुनकर उस पग को पूज कर सब २९ कृतकार्य हो-

लै कछु उद्वर्तन[1] लेप पानि, उपजावहु अंगज[2] जन्न आनि ॥३६२॥
रचिहै जिम जैसो रूपवान, सुत तैसो व्है है अति सुजान ॥
औरससौं[3] जामैं गुन अपुव्व, पूजा वह लहिहै सबन पुव्व[4] ॥२६३॥
मृड[5] इम अनेक कहि तिय मनाय, लाये निकाय[6] सुत हरख लाय॥
तबतैं वह तुंग[7] रु तीर्थ धाम, नगपर[8] ईसानीसिखर४६नाम॥३६४॥
तँहँ द्विजन पुज्जि मिहिकावतीस[9], आयो सु ब्रह्मपद४७लै असीस॥
पहिलैं पधारि अर्बुद प्रजेस[10], अचलेस दरसहित सुर[11] असेस।३६५।
सुर१मुनिन२सबन तँहँ नाय सीस,अक्खिय विरंचि[12] सन हे अधीस॥
जासौं अकष्ट[13] व्है मुक्ति जाय, उपदिष्ट[14] करहु ऐसो उपाय ॥ ३६६॥
बिधि[15] रोप्यो यह सुनि सह बिबेक,अर्बुदपर अप्पन चरन एक॥
अरु कहिय छुवहु याकौं उदार, है बिनु प्रयास गति दैनहार३६७॥
अध्वर[16]१ ब्रत२ दान३ रु जप४ अनंत,मम[17] अंघ्रि गिनहु तिनतैं महंत
अर्चैं[18] इहिं पुण्णिम उर्ज्जमास[19], बहुरि न लहैं सु जन गर्भवास३६८
व्है है सित१कृत[20]जुग२मिति विहीन[21],लोहित[22]१त्रेता जुग२प्रमिति[23] लीन३
पीवल[24]१पुनिद्वापर२लघुप्रमान३,भाँ[25]असित[26]१कलि२रुअतिअल्पभाँन[27]
करिश्रवनवचनयहद्रुहिन[28]कोहि, सबहुव कृतार्थ[29]पयपुज्जि सोहि ॥
तबतैं सु ब्रह्मपदतीर्थ४८ तत्त, रमनेसहु पुज्जिय भावरत्त ॥३७०॥

दिन होवेगा १ उबटन का लेप हाथ में लेकर २ पुत्र उपजा ॥ ३६२ ॥ ३ उदर से पैदा होनेवाले से भी उसमें अपूर्व गुण होवेंगे और सब से ४ पहिले पूजा लेवेगा ॥ ३६३ ॥ ५ महादेव इस प्रकार अनेक बातें कहकर ६ अपने घर लाये ७ ऊंचा ८ पर्वत पर ॥ ३६४ ॥ ९मिहिकावती पुर का स्वामी रमनेश चहुवान १०ब्रह्मा ११सब देवता ॥ ६५ ॥१२ब्रह्मा से कहा कि हे स्वामी १३विना कष्ट किये ही जिससे मुक्ति होजावे ऐसा १४ उपदेश करो ॥ ३६६ ॥ यह सुनकर विचार के साथ १५ ब्रह्मा ने आबू पर अपना एक चरण रोपा ॥ ३६७ ॥ १६ यज्ञ, इन सबसे मेरे १७ चरण को बडा जानो १९ कार्तिक की पूर्णिमासी को इसका १८ पूजन करैं ॥ ३६८ ॥ यह चरण २० सत्ययुग में श्वेत रंग का और २१ प्रमाण रहित होवेगा, त्रेतायुग में २२ लाल रंग और २३ प्रमाणवाला, द्वापर में २४ पीला रंग और छोटे प्रमाणवाला, कलियुग में २६ श्याम २५ कान्ति और बहुत अल्प २७ जान पड़ेगा ।३६९। २८ ब्रह्मा का यह वचन सुनकर उस पग को पूज कर सब २९ कृतकार्य हो-

थप्पो जु लिंग नृप धुंधुमार, पुज्ज्यो सु सद्धि सबविधि प्रकार ॥
पुनि जाय महौजसन्हद५४प्रवीन, करिन्हान१श्राद्ध२तप३दान४कीन
हनि वृत्र¹ इंद्र भो छबि विहीन, लहि घोर ब्रह्महत्या मलीन ॥
तब जीव² कह्यो करि तीर्थ सक्र, निज तेज लहहु अटि अवनिचक्र³
तब तीर्थ करत अर्बुद पधारि, न्हायो सु महौजसन्हद वलारि⁴ ॥
छिप्रहि⁵ कुभा१रु दुर्गंध२छोरि⁶, वासव स्वकांति पाई वहोरि⁷ ।३८२।
तँहँ न्हाय रु जंबूतीर्थ५५ आय, सद्धिय विधेय⁸ पद्धति सुभाय ॥
निमि हुव विदेह अग्गैं नरेस, आयो सु वृद्ध अर्बुद प्रदेस ॥३८३॥
पुनि ताहि गये मुनिजनहु सर्व, एकत्त्र भये गिरिवर अखर्व ॥
तेनमैं मुनि लोमस भक्ति जुत्त, तीर्थन प्रभाव वरन्यौं बहुत्त३८४।
बुल्ल्यो सु सुनत भुपति विदेह, सठ मैं न तीर्थ परसे सनेह ॥
अब रूढ⁹ भयो जरठत्वं¹⁰ आय, व्है कौनरीति सब तीर्थ हाय।३८५
सो सुनि मुनि लोमस सदय¹¹ सुद्ध, सब तीर्थ बुलाये अद्रि उद्ध¹² ॥
अक्खिय निमिसौं पुनि बचन एह, होवहु न दुखित न्हावहु विदेह
जे तीरथ जंबूद्वीप माँहिं, एकत्र करे ते अत्थ आँहिं¹³ ॥
न्हायो प्रसन्न यह सुनि नरेस, तबतैं सु तीर्थ अर्बुद प्रदेस॥३८७॥
ततकाल दैन निमिकौं प्रतीति, तँहँ उग्गो जंबू तरु¹⁴ सुरीति ॥
तबतैं सु जंबुतीर्थहि५५कहात, तँहँ न्हाय१दान२किय खूब ख्यात॥
पुनि गंगाद्वार५६ हु भूप पत्त, करि ध्यान१न्हान२ बहु दान३दत्त
अचलेस बुलाई जाहि अग्ग, मंदाकिनी सु तँहँ सग्गँ मग्गँ३८९

१ वृत्रासुर को मारकर २ बृहस्पति ने कहा ३ भूमि चक्र पर फिरकर ॥ ३८१ ॥ ४ बल दैत्य का शत्रु (इन्द्र) ५ शीघ्र ही ६ खोटी क्रान्ति ७ इन्द्र ने फिर अपनी क्रान्ति पाई ॥ ३८२ ॥ उचित ८ मार्ग साधकर ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ अब १० बुढापा ९ सवार होगया । ३८५ । ११ दया सहित १२ आबू पर्वत के ऊपर सब तीर्थों को बुलाये ॥ ४८६ ॥ १३यहां पर हैं ॥ ३८७॥१४जांबू का वृत्त ऊगा ॥ ३८८ ॥ १५गंगा को१६संगम करने को१७मार्ग से अचलेश्वर ने पहिले बुलाई थी ॥ ३८९ ॥

थप्पो जु लिंग नृप धुंधुमार, पुज्ज्यो सु सद्धि सबविधि प्रकार ॥
पुनि जाय महौजसन्हद५४प्रवीन, करिन्हान१श्राद्ध२तप३दान४कीन
हनि वृत्र[1] इंद्र भो छबि विहीन, लहि घोर ब्रह्महत्या मलीन ॥
तब जीव[2] कह्यो करि तीर्थ सक्र, निज तेज लहहु अटि अवनिचक्र[3]
तब तीर्थ करत अर्बुद पधारि, न्हायो सु महौजसन्हद वलारि[4] ॥
छिप्रहि[5] कुभा[6]रु दुर्गंध२छोरि, वासव स्वकांति[7] पाई बहोरि ।३८२।
तँहँ न्हाय रु जंबूतीर्थ५५ आय, सद्धिय विधेय पद्धति[8] सुभाय ॥
निमि हुव विदेह अग्गैं नरेस, आयो सु वृद्ध अर्बुद प्रदेस ॥३८३॥
सुनि ताहि गये मुनिजनहु सर्व, एकत्र भये गिरिवर अखर्व ॥
तिनमैं मुनि लोमस भक्ति जुत्त, तीर्थन प्रभाव वरन्यौं बहुत्त३८४।
बुल्ल्यो सु सुनत भुपति विदेह, सठ मैं न तीर्थ परसे सनेह ॥
अब रूढ भयो जरठत्व[10] आय, व्है कोनरीति सब तीर्थ हाय।३८५
सो सुनि मुनि लोमस सदय[11] सुद्ध, सब तीर्थ बुलाये अद्रि उद्ध[12] ॥
आक्खिय निमिसौं पुनि बचन एह, होवहु न दुखित न्हावहु विदेह
जे तीरथ जंबूद्वीप माँहिं, एकत्र करे ते अत्थ[13] आँहिं ॥
न्हायो प्रसन्न यह सुनि नरेस, तबतैं सु तीर्थ अर्बुद प्रदेस॥३८७॥
ततकाल दैन निमिकौं प्रतीति, तँहँ उग्गो जंबू तरु[14] सुरीति ॥
तबतैं सु जंबुतीर्थहि५५कहात, तँहँ न्हाय२दान२किय खूब ख्यात॥
पुनि गंगाद्वार५६ हु भूप पत्त, करि ध्यान१न्हान२ बहु दान३दत्त
अचलेस बुलाई जाहि अग्ग, मंदाकिनी[15] सु तँहँ सग्ग[16] मग्ग[17]३८९

---

१ वृत्रासुर को मारकर २ वृहस्पति ने कहा ३ भूमिचक्र पर फिरकर ॥ ३८१ ॥ ४ बल दैत्य का शत्रु (इन्द्र) ५ शीघ्र ही ६ खोटी कान्ति ७ इन्द्र ने फिर अपनी कान्ति पाई ॥ ३८२ ॥ उचित ८ मार्ग साधकर ॥ ३८३ ॥ ३८४ ॥ अब १० बुढापा ९ सवार होगया । ३८५ । ११ दया सहित १२ आबू पर्वत के ऊपर सब तीर्थों को बुलाये ॥ ४८६ ॥ १३यहां पर हैं ॥ ३८७॥१४जांबू का वृत्त ऊगा ॥ ३८८ ॥ १५गंगा को१६संगम करने को१७मार्ग से अचलेश्वर ने पहिले बुलाई थी ॥ ३८९ ॥

सतपंच५००पानकियजलहिस्वच्छ,हायनहजार१०००पुनिपोनभच्छ
सहि पंच५अग्गि१आतप१अनेहँ, हेमंत२सलिल२वरखा३विगेहँ३
किन्नौं तब दारुन दमि स्वकाय, ईसान भये तव प्रकट आय४००
तँहँ लिंग कढ्यो भुव भेदि तूर्णं, दिन्नौं निदेस पुनि प्रीति पूर्ण
बर इष्ट चित्त तव सो बसिष्ट, निस्संसय मंगहु धर्मनिष्ट ४०१
द्विज तबहि कह्यो परि ज्यौं हु दंड, इहिँ लिंग वास मंडहु अखंड
पुनि ईस कह्यो अब यँहँ सदाहि,बसिहौं वसिष्ट तव हित निबाहि
इसं असित चउद्दसि१४कोउ आय,तव कृत नुति पढिहै प्रनत ताय
थिर सुख मदीय लहिहै सु थान, धरिहै न जन्म पुनि सावधान
मम लिंग कढ्यो अचलहिँ विदारि, अचलेसनाम भजिहै अघारि
चलिहै न छाँह याकी कदापि,थिर ईस दयो इम लिंग थापि
इस मास चउद्दसि१४असित आय,त्यौंही तपस्य गततिथि१४सुभाय
जो श्राद्धकरैं तहँ भक्ति जोरि, बसिबो सु गर्भ न लहैं वहोरि४०५
रहिकैं दिस दक्खिन जँहँ जटाल, पूजैं जु पुष्यनक्षत्र काल ॥
तस पितर तृप्ति पावैं अनंत, हयमेध सत्रफल सो लहंत ।४०६।
वह लिंग पञ्चअमृतनैं न्हवाय, जन धन्य लहैं सिवलोक जाय ॥
पुनि अर्द्ध प्रदक्खिन१अरु प्रनाम२,करि ताहि लहैं नर सर्व काम

हजार वर्ष तक१पवन भक्षण किया२ग्रीष्मऋतु के४समय३पंच अग्नि सही (पांच जगह गोलाकार अग्नि लगाकर बीच में बैठकर तपने को पंचाग्नि तप कहते हैं)हेमन्त ऋतु में जल में बैठकर तप किया और वर्षा में५विना घर रहा ६ शिव प्रकट हुए ७ शीघ्र, हे ९ धर्म की निष्ठावाले वसिष्ठ तुम्हारे चित्त में जो ८ प्रिय होवे वह मांग ॥४०१॥ १० काष्ठके दंड के समान पड़कर११ शिव ने फिर कहा ॥ ४०२ ॥१२आश्विन१३ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को१४तुम्हारी की हुई स्तुति को नम्र होकर १५ मेरा स्थान पावेगा ॥ ४०३ ॥१६ पर्वत को फोड़कर१७पापों को हरण करनेवाला१८ इसकी छाया कभी नहीं डिगैगी ॥ ४०४ ॥ इसीप्रकार १९ फाल्गुन बदि चतुर्दशी को ॥४०५॥ २० महादेव को पुष्य नक्षत्र में लिंग के दक्षिण दिशा में रहकर पूजै २१ अश्वमेध यज्ञ का फल लेता है ॥ ४०६ ॥ २२ पंचामृत (दूध, दही, घृत, खांड और सहत) से स्नान कराकर २३ आधी प्रदक्षिणा (शिव लिंग के पूरी प्रदक्षिणा नहीं देते) और नमस्कार करके सब समय में शिवलोक लेते हैं ॥ ४०७ ॥

सतपंच५००पानकियजलहिस्वच्छ,हायनहजार१०००पुनिपोनभच्छ[1][2]
सहि पंच५अग्गि[3]१आतप१अनेहँ, हेमंत२सलिल२वरखा३विगेहँ३
किन्नौं तव दारुन दमि स्वकाय, ईसान भये तव प्रकट आय४००
तँहँ लिंग कढ्यो भुव भेदि तूर्ण, दिन्नौं निदेस पुनि प्रीति पूर्ण
बर इष्ट चित्त तव सो बसिष्ट, निस्संसय मंगहु धर्मनिष्ट ४०१
द्विज तबहि कह्यो परि ज्यौं हु दंड, इहिं लिंग वास मंडहु अखंड
पुनि ईस कह्यो अब यँहँ सदाहि,बसिहौं वसिष्ठ तव हित निवाहि
इस असित चउद्दसि१४कोउ आय,तव कृत नुति पढिहै प्रनत ताय
थिर सुख मदीय लहिहै सु थान, धरिहै न जन्म पुनि सावधान
मम लिंग कढ्यो अचलहिं विदारि, अचलेसनाम भजिहै अघारि
चलिहै न छाँह याकी कदापि,थिर ईस दयो इम लिंग थापि
इस मास चउद्दसि१४असित आय,त्योंही तपस्य गततिथि१४सुभाय
जो श्राद्धकरैं तहँ भक्ति जोरि, बसिबो सु गर्भ न लहैं वहोरि४०५
रहिकैं दिस दक्खिन जँहँ जटाल, पूजैं जु पुष्यनक्षत्र काल ॥
तस पितर तृप्ति पावैं अनंत, हयमेध सत्रफल सो लहंत ।४०६।
वह लिंग पञ्चअमृतनें न्हवाय, जन धन्य लहैं सिवलोक जाय ॥
पुनि अर्द्ध प्रदक्खिन१अरु प्रनाम२,करि ताहि लहैं नर सर्व काम

हजार वर्ष तक१पवन भक्षण किया२ग्रीष्म ऋतु के४समय३पंच अग्नि सही (पांच जगह गोलाकार अग्नि लगाकर बीच में बैठकर तपने को पंचाग्नि तप कहते हैं)हेमन्त ऋतु में जल में बैठकर तप किया और वर्षा में५विना घर रहा ६ शिव प्रकट हुए ७ शीघ्र, हे ९ धर्म की निष्ठावाले वसिष्ठ तुम्हारे चित्त में जो ८ प्रिय होवे वह मांग ॥४०१॥ १० काष्ठ के दंड के समान पड़कर११ शिव ने फिर कहा ॥ ४०२ ॥१२आश्विन१३ कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को१४तुम्हारी की हुई स्तुति को नम्र होकर १५ मेरा स्थान पावेगा ॥ ४०३ ॥१६ पर्वत को फोड़कर१७पापों को हरण करनेवाला१८ इसकी छाया कभी नहीं डिगेगी ॥ ४०४ ॥ इसीप्रकार १९ फाल्गुन बदि चतुर्दशी को ॥४०५॥ २० महादेव को पुष्य नक्षत्र में लिंग के दक्षिण दिशा में रहकर पूजै २१ अश्वमेध यज्ञ का फल लेता है ॥ ४०६ ॥ २२ पंचामृत (दूध, दही, घृत, खांड और सहत) से स्नान कराकर २३ आधी प्रदक्षिणा (शिव लिंग के पूरी प्रदक्षिणा नहीं देते) और नमस्कार करके सब समय में शिवलोक लेते हैं ॥ ४०७ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके उत्तरायणे चतुर्थराशौ रमणेश८७श्रीमदचलेश्वरार्थशीर्षार्पणं षष्टितमो६०मयूखः॥६०॥

आदितो द्व्युत्तरशततमः ॥ १०२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सिवहिं अप्पि रमनेस८७सिर, लहु[१] पत्तो सिवलोक ॥
मच्यो सुनत मिहकावती, सदन अपूरब सोक ॥ १ ॥
प्रेतकर्म सब सद्धि पुनि, भट१सचिव२न अतिभास ॥
धर्यो तखत तव उदय[२] धर, दिनकर[३] भगवतदास ॥ २ ॥

पट्पात्

भगवतदास नरेस[४] भयो करनाट धराधर ॥
सत्त्र१सास्त्र२पढि सकल प्रथित[५] लिन्नौं उदारपन ॥
मथुरापति जद्दव महीप वसुसेन महाबल ॥
तनया विंदा८८।१तास एह परन्यौं गुन उज्जल ॥
इक१बाजपेय१दुव२मख[६] चयन२कुंडपाय[७]२दुव२जिहिं करे ॥
हाटक समप्पि सूतन[८] सहित भूदेवन[९] आलय[१०] भरे ॥ ३ ॥
प्रतिष्ठानपुर[११] भयउ सातवाहन नरेस इत ॥
कुंतल रट्ठ[१२] अधीस पाय[१३] ससि[१४] बंस प्रतिष्ठित ॥
सर्ववर्म अभिधान[१५] सचिव जाके गुनसागर[१६] ॥
द्विज गुनाढ्य[१७] तिनदिनन भयो कवि विबुध[१८] धुरंधर ॥

राजा रमणेश का श्रीमान् अचलेश्वर के अर्थ मस्तक भेट करने का साठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६० ॥ और आदि से एक सौ दो मयूख हुए ॥१०२॥

१ शीघ्र गया ॥ १ ॥ २ उदयगिरि रूपी तखत पर ३ भगवतदास रूपी सूर्य को धरा ॥ २ ॥ ४ राजा ५ प्रसिद्ध ६ सोमयज्ञ की ७ यज्ञ विशेष ८ स्वर्णों से ९ चारणों सहित १० ब्राह्मणों के ११ घर भर दिये ॥ ३॥ १२ पुरूरवा की राजधानी जो अब विठूर के नाम से प्रसिद्ध है, कुन्तल देश के १३ राष्ट्र (राज्य) का स्वामी १४ चन्द्रवंश को प्राप्त होकर १६ जिसके गुणों का समुद्र सर्ववर्म १५ नामक मंत्री था उन दिनों में १७ गुणाढ्य नामक ब्राह्मण १८ पंडितों में मुख्य.

जरमणेश८७श्रीमदचलेश्वरार्थशीर्षार्पणं षष्टितमो६०मयूखः।६०।
आदितो द्व्युत्तरशततमः ॥ १०२ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सिवहिं अप्पि रमनेस८७सिर, लहु पत्तो सिवलोक ॥
मच्यो सुनत मिहकावती, सवन अपूरव सोक ॥ १ ॥
प्रेतकर्म सब सद्धि पुनि, भट१सचिवरन अतिभास ॥
धरचो तखत तव उदय[2] धर, दिनकर[3] भगवतदास ॥ २ ॥

षट्पात्

भगवतदास नरेस[4] भयो करनाट धराधर ॥
सस्त्र१सास्त्र२पढि सकल प्रथित[5] लिन्नौं उदारपन ॥
मथुरापति जद्दव महीप वसुसेन महाबल ॥
तनया बिंदा८८।१तास एह परन्यौं गुन उज्जल ॥
इक१बाजपेय१दुव२मख चैयन[6]२कुंडपाय[7]२दुव२जिहिं करे ॥
हाटक समप्पि सूतन[9] सहित भूदेवन[10] आलय[11] भरे ॥ ३ ॥
प्रतिष्ठानपुर[12] भयउ सातवाहन नरेस इत ॥
कुंतल रट्ठ[13] अधीस पाय ससि[14] बंस प्रतिष्ठित ॥
सर्ववर्म[15] अभिधान सचिव जाके गुनसागर[16] ॥
द्विज गुनाढ्य[17] तिनदिनन भयो कवि विबुध[18] धुरंधर ॥

राजा रमणेश का श्रीमान् अचलेश्वर के अर्थ मस्तक भेट करने का साठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६० ॥ और आदि से एक सौ दो मयूख हुए ॥१०२॥
१ शीघ्र गया ॥ १ ॥ २ उदयगिरि रूपी तखत पर ३ भगवतदास रूपी सूर्य को धरा ॥ २ ॥ ४ राजा ५ प्रसिद्ध ६ सोमयज्ञ की ७ यज्ञ विशेष ८ स्वर्णो से ९ चारणों सहित १० ब्राह्मणों के ११ घर भर दिये ॥ ३॥ १२ पुरूरवा की राजधानी जो अब बिठूर के नाम से प्रसिद्ध है, कुन्तल देश के १३ राष्ट्र (राज्य) का स्वामी १४ चन्द्रवंश को प्राप्त होकर १६ जिसके गुणों का समुद्र सर्ववर्म १५ नामक मंत्री था उन दिनों में १७ गुणाढ्य नामक ब्राह्मण १८ पंडितों में मुख्य.

मंजुल बापी मज्झ करन लग्गो जलक्रीडन॥
जिम बहु करेनु अंतर अजित केलि मत्तवारन करत ॥
सो इम जनीन छिरकत सलिल रह्यो अटकि चिरकाल रत ।१०।

(शुद्धप्राकृतभाषा गोई)

तह विण्हुसत्तिदुहिआ एक्का राणी कहीअ रायाणं ॥
मं सिंच मोअएहिं कम्पिज्जइ मइ हु सीअलत्तणाओ ॥ ११ ॥

गीर्वाणभाषा उपजातिः

श्रुत्वा तयोक्तं त्वरया चिकीर्षुर्मा मोदकैस्ताडय मानदेति ॥
आनीय सद्योभवलड्डुकांस्तैरताडयत्स स्वरसन्धिमूढः ॥१२॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पादाकुलकम्)

इम पतनी रुचि जानि अनारत, पतिकों पिक्खि मोदकन मारत
बुल्ली तब रानी सु हीनबल, क्यों लड्डुन मारहु वपु कोमल ।१३।

सुन्दर बावड़ी में जलक्रीड़ा करनेलगा जैसे बहुत हथनियों में विजय पायाहुआ मस्त हाथी क्रीड़ा करे तैसे स्त्रियों में जल छिड़कता हुआ बहुत समय तक प्रीति पूर्वक वहां रहा ॥ १० ॥ भाषानुवाद ॥ वहां विष्णुशक्ति की पुत्री एक राणी ने राजा से कहा कि मेरा शरीर शीत से कांपता है इसमें मेरे पर जल मत छिड़को ॥ ११ ॥ जलक्रीड़ा में पानी की मार से घबराई हुई राणी ने कहा हे मान देनेवाले मुझे " मोदकैः ताडय" इसका अन्वय होना है " उदकैः मा ताडय" अर्थात् पानी से मत पीटो. यह सुनकर प्यारी के कहने को शीघ्र करने की इच्छावाले व्याकरण की स्वरसन्धि के जानने में मूर्ख (स्वरसन्धि को नहीं जाननेवाले) उस राजा ने " मोदकैः ताडय" इसका अर्थ लड्डुओं से पीटो ऐसा समझ कर तुरत के बनेहुए लड्डु लाकर उनमे उस राणीको पीटी, यहां स्वरसन्धि यह है कि मा शब्द का आकार और उदक शब्द का उकार मिलकर ओकार होने से मोदक शब्द हुआ है ॥ १२ ॥ इसप्रकार स्त्री की रुचि जानकर मारने लगा सो पति को निरंतर लड्डुओं से मारताहुआ देखकर राणी बोली कि कोमल शरीर को लड्डुओं से

संस्कृत अनुवाद ॥ तत्र विष्णुशक्तिदुहिता एका राज्ञी अकथयत् राजानम् ॥ मां सिञ्च मोदकैः कम्प्यते मया खलु शीतलत्वतः ॥११॥

मंजुल बापी मज्झ करन लग्गो जलक्रीडन॥
जिम बहु करेनु अंतर अजित केलि मत्तवारन करत ॥
सो इम जनीन छिरकत सलिल रह्यो अटाकि चिरकाल रत ।१०।

(शुद्धप्राकृतभाषा गीई)

तह विरहुसत्तिदुहिआ एक्का राणी कहीअ रायाणं ॥
मं सिश्च मोअएहिं कम्पिज्जइ मइ हु सीअलत्तणाओ ॥ ११ ॥

गीर्वाणभाषा उपजातिः

श्रुत्वा तयोक्तं त्वरया चिकीर्षुर्मा मोदकैस्ताडय मानदेति ॥
आनीय सद्योभवलड्डुकांस्तैरताडयत्स स्वरसन्धिमूढः ॥१२॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(पादाकुलकम्)

इम पतनी रुचि जानि अनारत, पतिकों पिक्खि मोदकन मारत
बुल्ली तब रानी सु हीनवल, क्यों लड्डुन मारहु वपु कोमल ।१३।

सुन्दर बावड़ी में जलक्रीड़ा करनेलगा जैसे बहुत हथनियों में विजय पायाहुआ मस्त हाथी क्रीड़ा करे तैसे स्त्रियों में जल छिड़कता हुआ बहुत समय तक प्रीति पूर्वक वहां रहा ॥ १० ॥ भाषानुवाद ॥ वहां विष्णुशक्ति की पुत्री एक राणी ने राजा से कहा कि मेरा शरीर शीत से कांपता है इसमें मेरे पर जल मत छिड़को ॥ ११ ॥ जलक्रीड़ा में पानी की मार से घबराई हुई राणी ने कहा हे मान देनेवाले मुझे " मोदकैः ताडय" इसका अन्वय होना है " उदकैः मा ताडय" अर्थात् पानी से मत पीटो. यह सुनकर प्यारी के कहने को शीघ्र करने की इच्छावाले व्याकरण की स्वरसन्धि के जानने में मूर्ख (स्वरसन्धि को नहीं जाननेवाले) उस राजा ने " मोदकैः ताडय" इसका अर्थ लड्डुओं से पीटो ऐसा समझ कर तुरत के बनेहुए लड्डु लाकर उनसे उस राणीको पीटी, यहां स्वरसन्धि यह है कि मा शब्द का आकार और उदक शब्द का उकार मिलकर ओकार होने से मोदक शब्द हुआ है ॥ १२ ॥ इसप्रकार स्त्री की रुचि जानकर मारने लगा सो पति को निरंतर लड्डुओं से मारताहुआ देखकर राणी बोली कि कोमल शरीर को लड्डुओं से

संस्कृत अनुवाद ॥ तत्र विष्णुशक्तिदुहिता एका राज्ञी अकथयत् राजानम् ॥ मां सिञ्च मोदकैः कम्प्यते मया खलु शीतलत्वतः ॥ १ ॥

मैं प्रभु ताहि भारती मानी, अति उत्तम विद्या जिहिं आनी ॥
जो सुनि नृप अक्खिय गुनाढ्यजित, पढि कतिकाल२ होत नर पंडित
सुनि गुनाढ्य कवि कहिय प्रीति सन, विद्याको मुख प्रथम१०याकरन
बारह१२बरस पढत तिहिं बित्ते, जो छँ६मैंहि मोसौं प्रभु जित्तैं२२
सर्वबर्म अक्खिय तँहँ धीसन, उचित इतो काल न अवनीसन ॥
मैं पढाइ प्रभुकौं खट६मासन, संगत करौं सब्दं अनुसासन ॥२३॥
कह्यो गुनाढ्य सुनत यह सक्रुध, विरचैं जो तू नृपहिं छ६मैं बुध
तो प्राकृत१ देशीय गिरा२ जुत, देवगिरा३ कहिबोहि तजौं द्रुत
सर्बबर्म तब कह्यो प्रसभ सन, पूरन जो न करौं लिन्नौं पन ॥
तव पादुका गुनाढ्य लहौं तो, बारह१२ हायन स्वसिर वहौं तो
यह संधा दुव २ करि गृह आये, जंपित होन हेतु उपजाये, ॥
सर्बबर्म हठ संग कही सो, सोक डाँरि चुभि चित्त रही सो ॥२६॥
संधा दुष्कर कही नारिसन, अबला कह्यो बनैं किम अप्पन ॥
करैं प्रसाद देव बिधि कोहू, सिद्ध होय संधा तब सोहू ॥ २७ ॥
स्वामिकुमार इष्ट तव स्वामी, करहु प्रसन्न तिन्हैं पनकामी ॥
सर्वबर्म लौकैं तब अनसर्न, घोर कर्‍यो तप पाइ कष्ट घन ॥२८॥

१सरस्वती २कितने समय में पढकर मनुष्य पंडित होसक्ता है३जो छै वर्ष में व्याकरण पढादेवै वही मुझसे विजय पावे अर्थात् उससे मैं हारा बुद्धिपूर्वक शर्ववर्म बोला कि इतना समय राजाओं के लिये उचित नहीं ४ शब्दों के अर्थ और अन्वय जानने में कुशल करदूं क्रोधित होकर गुणाढ्य ने कहा कि तू राजा को छै महीनों में पंडित बनादेवै तो प्राकृत और देशभाषा के साथ संस्कृत बोलना ही छोड दूं ॥ २४ ॥ शर्ववर्मा ने हठ करके कहा कि मैंने जो प्रण लिया है इसको पूरा नहीं करूं तो हे गुणाढ्य तेरी पावड़ियें लेकर बारह वर्ष तक मस्तक पर रक्खुं ॥ २५ ॥ यह ५ प्रतिज्ञा करके दोनों घर आये ६ अपने कथन को सत्य करने के कारण ७ डाल कर ॥ २६ ॥ वह कठिन प्रतिज्ञा शर्ववर्म ने अपनी स्त्री से कही स्त्री ने कहा कि यह अपने से कैसे होसक्ता है, किसीप्रकार देवता कृपा करै तब यह प्रतिज्ञा सिद्ध होसक्ती है ॥ २७ ॥ हे पति स्वामिकार्तिक तुम्हारा इष्ट है जिनको प्रण पूर्ण करने की कामना से प्रसन्न करो८उपवास करके

मैं प्रभु ताहि भारती मानी, अति उत्तम बिद्या जिहिं आनी ॥
जो सुनि नृप अक्खिय गुनाढ्यजित,पढि कतिकाल होत नर पंडित
सुनि गुनाढ्य कवि कहिय प्रीति सन,विद्याको मुख प्रथम१०व्याकरन
बारह१२बरस पढत तिहिं बित्ते, जो छै६मैंहि मोसौं प्रभु जित्तैं२२
सर्बबर्म अक्खिय तँहँ धीसन, उचित इतो काल न अवनीसन ॥
मैं पढाइ प्रभुकौं खट६मासन, संगत करौं सब्द अनुसासन ॥२३॥
कह्यो गुनाढ्य सुनत यह सक्रुध, बिरचैं जो तू नृपहिं छ६मैं बुध
तो प्राकृत१ देशीय गिरा२ जुत, देवगिरा३ कहिबोहि तजौं द्रुत
सर्बबर्म तब कह्यो प्रसभ सन, पूरन जो न करौं लिन्नौं पन ॥
तव पादुका गुनाढ्य लहौं तो, बारह१२ हायन स्वसिर वहौंतो
यह संधा दुव २ कारि गृह आये, जंपित होन हेतु उपजाये, ॥
सर्बबर्म हठ संग कही सो, सोक डाँरि चुभि चित्त रही सो ॥२६॥
संधा दुष्कर कही नारिसन, अबला कह्यो बनैं किम अप्पन ॥
करैं प्रसाद देव बिधि कोहू, सिद्ध होय संधा तब सोहू ॥ २७ ॥
स्वामिकुमार इष्ट तव स्वामी, करहु प्रसन्न तिन्हैं पनकामी ॥
सर्वबर्म लैकैं तब अनसर्न, घोर कस्यो तप पाइ कष्ट घन ॥२८॥

१सरस्वती२कितने समय में पढकर मनुष्य पंडित होसक्ता है३जो छैवर्ष में व्याकरण पढादेवै वही मुझसे विजय पावे अर्थात् उससे मैं हारा बुद्धिपूर्वक शर्ववर्म बोला कि इतना समय राजाओं के लिये उचित नहीं ४ शब्दों के अर्थ और अन्वय जानने में कुशल करदूं क्रोधित होकर गुणाढ्य ने कहा कि तू राजा को छै महीनों में पंडित बनादेवै तो प्राकृत और देशभाषा के साथ संस्कृत बोलना ही छोड दूं ॥ २४ ॥ शर्वबर्मा ने हठ करके कहा कि मैंने जो प्रण लिया है इसको पूरा नहीं करूं तो हे गुणाढ्य तेरी पावड़ियें लेकर बारह वर्ष तक मस्तक पर रक्खूं ॥ २५ ॥ यह ५ प्रतिज्ञा करके दोनों घर आये ६ अपने कथन को सत्य करने के कारण ७ डाल कर ॥ २६ ॥ वह कठिन प्रतिज्ञा शर्ववर्म ने अपनी स्त्री से कही स्त्री ने कहा कि यह अपने से कैसे होसक्ता है, किसीप्रकार देवता कृपा करै तब यह प्रतिज्ञा सिद्ध होसक्ती है ॥ २७ ॥ हे पति स्वामिकार्तिक तुम्हारा इष्ट है जिनको प्रण पूर्ण करने की कामना से प्रसन्न करो८उपवास करके

*काणभूति क्रव्याद मित्र चहि,भयो पिसाच कुबेर साप लहि३५

दोहा

धनद[1] दास इक जच्छ[2] हो, सुप्रतीक अभिधान[3] ॥
थूलसिरा क्रव्याद[4] जिहिं, सखा करयो असमान[5] ॥ ३६ ॥
नरबाहन[6] तब सापदिय, संगति नीच निहारि ॥
सँत्वर[7] होहु पिसाच सठ, धी[8] अनुचित अवधारि[9] ॥ ३७ ॥
काणभूति नामक भयो, तब पिसल्ल[10] वह जच्छ ॥
बिंध्यबासिनी[11] बिपिन जो, मिल्यो गुनाढ्य समच्छ[12] ॥३८॥
गृह सकुटुम्ब गुनाढ्य तजि, वीतराग[13] तँहँ आइ ॥
काणभूतिसौं इक कथा, ललित सुनी मन लाइ ॥ ३९ ॥
जो बिद्याधर सप्तमय, अग्ग उमा[14] प्रति ईस[15]॥
बरनी सो सुंदर कथा, किन्नी श्रवन कवीस ॥ ४० ॥
पन जबतैं पूरन करयो, सर्बवर्म मतिसूर ॥
मूक[16] भयो तबतैं दुँमन[17], कवि गुनाढ्य जिम कूर[18] ॥४१ ॥
काणभूतिके संग करि, अब सु बिंध्यबनि[19] आइ ॥
बुध[20] पैसाची बानिमैं, बंद[21] भो मौन बिहाइ ॥ ४२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कथासप्त७बिद्याधर[22]मय जो,सुकवि गुंफि[23] पैसाची[24] करिसो

---

*काण भूति नामक राक्षस को मित्र पाकर १ कुबेर का सेवक सुप्रतीक ३ नामक एक २ यक्ष था जिसने स्थूलशिरा नामक ४ राक्षस को अपना सखा बनाया जो उसके ५ समान नहीं था(राक्षस और मनुष्य में समता नहीं होसक्ती)६ कुबेर ने ७ शीघ्र अनुचित ८ बुद्धि को ९ धारण करके ॥ ३७ ॥ वह यक्ष काणभूति नामक १० पिशाच हुआ सो विंध्यवासिनी ११ वन में गुणाढ्य से १२ रो बरू मिला ॥ ३८ ॥ १३ विरक्त होकर जहां वह पिसाच था वहां आया ॥३९॥ १४ पार्वती को १५ शिव ने कहा था सो उस पिशाच (काणभूति) ने वर्णन की वह गुणाढ्य ने सुनी ॥ ४० ॥ १६ मौन रखनेवाला १७ उदास होकर गुणाढ्य कवि १८ मूर्ख के समान होगया ॥ ४१ ॥ १९ विन्ध्याचल के वन में आकर वह २० पंडित मौन छोडकर पैशाची भाषा में २१ वक्ता (बोलनेवाला)हुआ ॥४२॥२२ सात विद्याधरों की कथा २४ पैसाची भाषा में २३ गूंथी

*काणभूति क्रव्याद मित्र चहि,भयो पिसाच कुबेर साप लहि३५

दोहा

धनद[1] दास इक जच्छ[2] हो, सुप्रतीक अभिधान[3] ॥
थूलसिरा क्रव्याद[4] जिहिं, सखा करयो असमान[5] ॥ ३६ ॥
नरबाहन[6] तब सापदिय, संगति नीच निहारि ॥
सँत्वर होहु पिसाच सठ, धी अनुचित अवधारि ॥ ३७ ॥
काणभूति नामक भयो, तब पिसल्ल वह जच्छ ॥
बिंध्यबासिनी बिपिन जो, मिल्यो गुनाढ्य समच्छ[12] ॥३८॥
गृह सकुटुम्ब गुनाढ्य तजि, वीतराग[13] तँहँ आइ ॥
काणभूतिसोँ इक कथा, ललित सुनी मन लाइ ॥ ३९ ॥
जो बिद्याधर सप्तमय, अग्ग उमा प्रति[14] ईस[15]॥
बरनी सो सुंदर कथा, किन्नी श्रवन कवीस ॥ ४० ॥
पन जबतैं पूरन करयो, सर्बवर्म मतिमूर ॥
मूक[18] भयो तबतैं दुँमन, कवि गुनाढ्य जिम कूर ॥४१ ॥
काणभूतिके संग करि, अब सु बिंध्यवनि[19] आइ ॥
बुध[20] पैसाची बानिमैं, बंद[21] भो मौन बिहाइ ॥ ४२ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

कथासप्त७बिद्याधर[22]मय जो,सुकवि गुंफि[23] पैसाची[24] करिसो

काण भूति नामक राक्षस को मित्र पाकर १ कुबेर का सेवक सुप्रतीक २ नामक
२ यक्ष था जिसने स्थूलशिरा नामक ४ राक्षस को अपना सखा बनाया जो
के ५ समान नहीं था (राक्षस और मनुष्य में समता नहीं होसक्ती) ६ कुबेर
शीघ्र अनुचित ८ बुद्धि को ९ धारण करके ॥ ३७ ॥ वह यक्ष काणभूति
मक १० पिशाच हुआ सो विंध्यवासिनी ११ वन में गुणाढ्य से १२ रो
र मिला ॥ ३८ ॥ १३ विरक्त होकर जहां वह पिसाच था वहां आया।३९।
पार्वती को १५ शिव ने कहा था सो उस पिशाच (काणभूति) ने वर्णन
वह गुणाढ्य ने सुनी ॥ ४० ॥ १६ मौन रखनेवाला १७ उदास होकर गु-
ढ्य कवि १८ मूर्ख के समान होगया ॥ ४१ ॥ १९ विन्ध्याचल के वन में
कर वह २० पंडित मौन छोडकर पैशाची भाषा में २१ वक्ता (बोल-
वाला) हुआ ॥४२॥२२ सात विद्याधरों की कथा २४ पैसाची भाषा में २३ गूंथी

पुनि विद्याधर चरित अपूरब३, क्यौं नहिं कान परैं सु सुनैं सब ॥
लैन लगो अग्गिहु प्रसन्न जिंहिं,अतिकृस भये मृगादि सुनत तिंहिं
कछुक सातबाहनकें हुव गदं, पुच्छिय वैद्य बुलाइ हेतु१.हद२ ॥
भूपति अतिकृस मृगपल चक्खिय,इमं यह रोग चिकिच्छक अक्खिय
त्वरित बुलाइ बंधिक पुच्छे तब, उन अक्खिय वन पसु अति कृस सब
गिरि उप्पर इक सिद्ध महामन, करत होम पढिपढि कछु पत्रन ।५४।
सुनत ताहि खग१मृगर जुरि सारे, विचरन१खान२रु पान३विसारे
सूको मिलत हमैं पल यातैं, वधिकन मुख यह सुनि नृप बातैं ५५।
सत्वरें उठि तिहिं सैल सिधायो, पत्नन होमकरत वह पायो ॥
हुतभुक कथा छलक्ख६०००००करी हुतै,
नृप पाई खिल लक्ख१०००००रही हुतैं ॥ ५६ ॥
नरबाहन दत्तको चरित बर, जामैं कह्यो गुनाढ्य सु धीधर ॥
सो अवसेस रहत नृप पैंतो, परि पायन मंग्यो वह तत्तो ॥ ५७ ॥
जब गुनाढ्य बानी पहिचानी, पैसाची तब रुच्यै प्रमानी ॥
कह्यो गुनाढ्य अब न पछितावहु, जुगर मम छात्रें संग लैजावहु
नव्यैं कथा एर तुमहिं सुनैहैं, पैसाची मज्झहु रस पैहैं ॥
नंदिदेव१ गुनदेव२ दये तब, नृपके संग रु सेसैं कथा३ सब ॥५९॥
इम गृह सातवाहन सु आयो, कथन वहै पुहवी प्रकटायो ॥

है ॥ ५१ ॥ १ विद्याधरों (देवयोनि विशेष) का २ अग्नि भी प्रसन्नता से लेने-लगा इस ग्रंथ को सुनने से खाना पीना छोड देने के कारण मृग आदि ३ दुर्बल होगये ॥ ५२ ॥ सातवाहन राजा के कुछ ४ रोग होगया था जिसका ५ कारण वैद्यों से पूछा ६ हे राजा आपने दुबल ७ मृगों का मांस खाया है ८ इसकारण से यह रोग हुआ है. यह ९ वैद्यों ने कहा ॥ ५३ ॥ १० शिकारियों को बुलाकर पूछा ११ मांस १२ शीघ्र उठकर उस १३ पर्वत पर गया १४ अग्नि में १५ होमदी १६ बाकी एक लक्ष १७ स्तुति योग्य रही १८ श्रेष्ठ बुद्धि को धारण करनेवाले ने १९ पहुंचा २० पैशाची भाषा को २१ सुन्दर मानी २२ मेरे दोनों शिष्यों को २३ यह नवीन कथा २४ बाकी कथा भी सब राजा को दी २५ उस कथा को पृथ्वी में.

पुनि विद्याधर चरित अपूरव३, क्यौं नहिं कान परैं सु सुनैं सब ॥
लैन लगो अग्गिहु प्रसन्न जिहिं, अतिकृस भये मृगादि सुनत तिंहिं
कछुक सातबाहनके हुव गदं, पुच्छिय वैद्य बुलाइ हेतु१ हद२ ॥
भूपति अतिकृस मृगपल चक्खिय, इम यह रोग चिकिच्छक अक्खिय
त्वरित बुलाइ बंधिक पुच्छे तब, उन अक्खिय वन पसु अति कृस सब
गिरि उप्पर इक सिद्ध महामन, करत होम पढिपढि कछु पत्रन।५४।
सुनत ताहि खग१मृगर२ जुरि सारे, विचरन१खान२रु पान३विसारे
सूको मिलत हमैं पल यातैं, वधिकन मुख यह सुनि नृप बातैं ५५।
मत्वरे[12] उठि तिहिं सैल[13] सिधायो, पत्नन होमकरत वह पायो ॥

हुतभुक[14] कथा छलक्ख६०००००करी हुतं[15],
नृप पाई खिल लक्ख१०००००रही हुतं ॥ ५६ ॥

नरबाहन दत्तको चरित वर, जामैं कह्यो गुनाढ्य सु धीधर ॥
सो अवसेस रहत नृप पैतो, परि पायन मंग्यो वह तत्तो ॥ ५७ ॥
जब गुनाढ्य बानी पहिचानी, पैसाची तब रुच्यै प्रमानी ॥
कह्यो गुनाढ्य अब न पछितावहु, जुगर मम छात्रै[22] संग लैजावहु
नव्यै[23] कथा ए२ तुमहिं सुनैहैं, पैसाची मज्झहु रस पैहैं ॥
नंदिदेव१ गुनदेव२ दये तब, नृपके संग ह सेसैं कथा३ सब ॥५९॥
इम गृह सातवाहन सु आयो, कथन वहै पुहवी[25] प्रकटायो ॥

है ॥ ५१ ॥ १ विद्याधरों (देवयोनि विशेष) का २ अग्नि भी प्रसन्नता से लेने-लगा इस ग्रंथ को सुनने से खाना पीना छोड़ देने के कारण मृग आदि ३ दुर्बल होगये ॥ ५२ ॥ सातवाहन राजा के कुछ ४ रोग होगया था जिसका ५ कारण वैद्यों से पूछा ६ हे राजा आपने दुबले ७ मृगों का मांस खाया है ८ इस कारण से यह रोग हुआ है. यह ९ वैद्यों ने कहा ॥ ५३ ॥ १० शिकारियों को बुलाकर पूछा ११ मांस १२ शीघ्र उठकर उस १३ पर्वत पर गया १४ अग्नि में १५ होमदी १६ बाकी एक लक्ष १७ स्तुति योग्य रही १८ श्रेष्ठ बुद्धि को धारण करनेवाले ने १९ पहुंचा २० पैशाची भाषा को २१ सुन्दर मानी २२ मेरे दोनों शिष्यों को २३ यह नवीन कथा २४ बाकी कथा भी सब राजा को दी २५ उस कथा को पृथ्वी में.

जैनभाव उनकैं जदपि, तदपि[2] सुद्ध संतान ॥
जनन[3] छोरि पिक्खहु जैनन, प्रभु यह करहु प्रमान ॥ ६६ ॥
सचिवनके ए बैन सुनि, किन्नी नृप स्वीकार ॥
पठयो चालुक भूप पुर, करन बिबाह कुमार ॥ ६७ ॥
धीरपाल तब धरनिधव, बिधि सब सज्ज बनाइ ॥
कुमर कृष्णादास८९ हिं कुमरि, प्रीति८९।१दई परिनाइ।६८।
बुधन[6]१ कविन२ दै यह बिबिध, स्वापतेय गुन सूरि ॥
आयो आलय परनि इम, पुहबीतल जस पूरि ॥ ६९ ॥
कृष्णादासकैं हू कुमर, सूर भयो सिवदास९० ॥
बालबैयहिं गुनवृद्ध जिहिं, पायो स्वमति प्रकास ॥ ७० ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने भगवद्दास८८बिंदा८८।१बिवहनयज्ञाऽनुष्टान सातवाहनविद्याप्रापणशर्ववर्ममानवर्द्धनत्यक्तसंस्कृतादिभाषात्रय ३ समभ्यस्तपैशाचीकगुणाढ्यबृहत्कथानिर्माणाज्ञाततदनादरतत्स्वकृतिहव्यवाहहवनसातबाहनाखिललक्षकथाप्रतिष्ठापनचण्डासिराजभगवद्दासकुमारकृष्णादास८९प्रीति८९।१परिणयनतत्कुमरशिवदासो९०द्गमनमेकषष्टितमो मयूखः ॥ ६१ ॥ आदितस्त्र्युत्तरशततमः ॥

२तोभी सन्तान तो शुद्ध है ३ मनुष्यों को छोडकर ४कुल को देखो ॥६६॥ ॥६७॥५ भूपति ने ॥६८॥ ६पडितों को ७ धन ८ गुणों में पांडित ९ अपने घर आया१०भूमि तल को यश से पूर्ण करके॥६९॥बालक११अवस्था में ही उस गुणों में वृद्ध ने अपना बुद्धि का प्रकाश पाया ॥ ७० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में भगवतदास बिन्दा का विवाह, और यज्ञ का अनुष्टान; सातवाहन राजा को विद्या प्राप्त होना, शर्ववर्म का मान बढाना, संस्कृत आदि तीनों भाषाओं का छोडकर पैशाची भाषा का अभ्यास करके गुणाढ्य का वृहत्कथा बनाना, और उसका अनादर जानकर उस अपने किये ग्रन्थ को अग्नि में होमना, बाकी की एक लक्ष कथा को सातबाहन का स्थापन करना, चहुवाण राजा भगवतदास के कुमर कृष्णदास का प्रीति नामक स्त्री से विवाह करना, उसके शिवदास कुमर का जन्म होने का इकसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥६१॥ और आदि से एक सौ तीन मयूख हुए ॥ १०३ ॥

जैनभाव उनकै जदपि, तदपि सुद्ध संतान ॥
जनन छोरि पिक्खहु जैनन, प्रभु यह करहु प्रमान ॥ ६६॥
सचिवनके ए बैन सुनि, किन्नी नृप स्वीकार ॥
पठयो चालुक्क भूप पुर, करन बिबाह कुमार ॥ ६७ ॥
धीरपाल तब धरनिधव, बिधि सब सज्ज बनाइ ॥
कुमर कृष्णदास८९ हिं कुमरि, प्रीति८९।१दई परिनाइ।६८।
बुधन१ कविन२ दै यह बिबिध, स्वापतेय गुन सूरि ॥
आयो आलय परनि इम, पुहबीतल जस पूरि ॥ ६९ ॥
कृष्णदासकै हू कुमर, सूर भयो सिवदास९० ॥
बालवयहिं गुनवृद्ध जिहिं, पायो स्वमति प्रकास ॥ ७० ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने भगवद्दास८८बिंदा८८।१विबहनयज्ञाऽनुष्टान सातबाहनबिद्याप्रापणशर्ववर्ममानवर्द्धनत्यक्तसंस्कृतादिभाषात्रय ३ समभ्यस्तपैशाचीकगुणाढ्यबृहत्कथानिर्माणज्ञाततदनादरतत्स्वकृतिहव्यवाहहवनसातबाहनाखिललक्षकथाप्रतिष्ठापनचण्डासिराजभगवद्दासकुमारकृष्णदास८९प्रीति८९।१परिणयनतत्कुमरशिवदासो९०द्गमनमेकषष्टितमो मयूखः॥ ६१ ॥ आदितस्त्र्युत्तरशततमः ॥

२तोभी सन्तान तो शुद्ध है ३ मनुष्यों को छोडकर ४कुल को देखो ॥६६ ॥ ॥६७॥५ भूपति ने ॥६८॥ ६पंडितों को ७ धन ८ गुणों में पंडित ९ अपने घर आया१०भूमि तल को यश से पूर्ण करके॥६९॥बालक११अवस्था में ही उस गुणों में वृद्ध ने अपना बुद्धि का प्रकाश पाया ॥ ७० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में भगवतदास बिन्दा का विवाह, और यज्ञ का अनुष्टान, सातवाहन राजा को विद्या प्राप्त होना, शर्ववर्म का मान बढाना, संस्कृत आदि तीनों भाषाओं का छोडकर पैशाची भाषा का अभ्यास करके गुणाढ्य का बृहत्कथा बनाना, और उसका अनादर जानकर उस अपने किये ग्रन्थ को अग्नि में होमना, बाकी की एक लक्ष कथा को सातवाहन का स्थापन करना, चहुवाण राजा भगवतदास के कुमर कृष्णदास का प्रीति नामक स्त्री से विवाह करना, उसके शिवदास कुमर का जन्म होने का इकसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥६१॥ और आदि से एक सौ तीन मयूख हुए ॥ १०३ ॥

जाइबेको सोक तजि कुंकुमी[1] कर्पट[2] करि घोरन[3] सहित पुरतोरन[4]
खुलाइ अनी उठाइबेकी आज्ञा दई ॥
दोहू २ दलनके मिलिबेमैं अनेक पुद्गल[5] १ प्रानन २ को बि-
छुरिबो भयो ॥
अरु द्विगुसमासके[6] सूत्रके समान कितेक कातरन[7] संख्याही
देखिबेको बिबेक लयो ॥ ३ ॥
कुलटाके अपांगलौं[8] बीरनके भुजदण्ड प्रहारके प्रस्तार[10] रचनलगे॥
अरु भीरुनकी[11] भामिनीके[12] सौभाग्यसमेत सारदीके[13] ससिके[14] स-
मान सूरनके सुजस बचनलगे ॥
तहाँ राजकुमार कृष्णादासनैं कुंतलराजके सेनानी[15] सत्रुजित
सौं जाइ प्रानबाजी लगाई ॥
अरु जीवाके[16] टंकारकरि समरकी[17] सोभा१नागराजके[18] नैन२जो-
गिनीनकी निद्रा३जुत संकरकी समाधि४जगाई ॥ ४ ॥
एक मुहूर्तके[19] आहवमैं[20] सत्रुजितके प्रानतो चहुवानके बानकों
अभ्युत्थान[21] देकैं महामार्गके पथिक[22] भये ॥
अरु कृष्णादासनैं दाहिनीदिसा बाजी[23] बढाइ सातबाहनके सचिवँ[24]-

---

१ केसरिया २ वस्त्र ३ घोड़ों पर चढकर ४ पुर के दरवाजे खुलाकर सेना को आगे बढने की आज्ञा दी ५ अनेक शरीरों से प्राण बिछुड़े और कितने ही ७ कायरों ने ६ द्विगु समास के सूत्र (संख्यापूर्वो द्विगुः) के समान संख्या देखने का ही विवेक लिया अर्थात् द्विगु समास के सूत्र ने जैसे मुख्य करके८संख्या को ग्रहण किया है ऐसे कायरों ने युद्ध करने का कार्य छोडकर सुभटों की संख्या करने का ही कार्य किया ॥ ३ ॥ कुलटा नायिका के ९ कटाक्ष के समान वीरों के भुजदंड शस्त्र प्रहार के १० विस्तार रचने लगे और ११ कायरों की १२ स्त्रियों के सुहाग के सहित १३ शरद पूर्णिमा के १४ चन्द्रमा के समान वीरों के यश बाकी रहने लगे १५ सेनापति १६ धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार से १७ युद्ध की शोभा १८ शेषनाग के नेत्रों ने योगनियों (देवी की दासियों) की निद्रा सहित महादेव की समाधि जगाई ॥ ४ ॥ १९ दो घड़ी के २० युद्ध में २१ ताजीम देकर (उठकर) बड़े मार्ग(परलोक मार्ग) के २२ पन्थी (मार्ग चलनेवाले) हुए २३ घोड़ा बढाकर २४मंत्री.

जाइबेको सोक तजि कुंकुमी[1] कर्पट[2] करि घोरन[3] सहित पुरतोरन[4]
खुलाइ अनी उठाइबेकी आज्ञा दई ॥
दोहू २ दलनके मिलिबेमैं अनेक पुद्गल १ प्रानन २ को बि-
छुरिबो भयो ॥
अरु द्विगु[6]समासके सूत्रके समान कितेक कातरन[7] संख्याही
देखिबेको बिबेक लयो ॥ ३ ॥
कुलटाके अपांगलौं[9] बीरनके भुजदण्ड प्रहारके प्रस्तार[10] रचनलगे॥
अरु भीरुन[11]की भामिनी[12]के सौभाग्यसमेत सारदी[13]के ससि[14]के स-
मान सूरनके सुजस बचनलगे ॥
तहाँ राजकुमार कृष्णदासनैं कुंतलराजके सेनानी[15] सत्रुजित
सौं जाइ प्रानबाजी लगाई ॥
अरु जीवा[16]के टंकारकरि समर[17]की सोभा१नाग[18]राजके नैन२जो-
गिनीनकी निद्रा३जुत संकरकी समाधि४जगाई ॥ ४ ॥
एक मुहूर्त[19]के आहव[20]मैं सत्रुजितके प्रानतो चहुवानके बानकौं
अभ्युत्थान[21] दैकैं महामार्गके पथिक[22] भये ॥
अरु कृष्णदासनैं दाहिनीदिसा बाजी[23] बढाइ सातबाहनके सचिव[24]-

---

१ केसरिया २ वस्त्र ३ घोड़ों पर चढकर ४ पुर के दरवाजे खुलाकर सेना को आगे बढने की आज्ञा दी ५ अनेक शरीरों से प्राण बिछुड़े और कितने ही ७ कायरों ने ६ द्विगु समास के सूत्र (संख्यापूर्वो द्विगुः) के समान संख्या देखने का ही विवेक लिया अर्थात् द्विगु समास के सूत्र ने जैसे मुख्य कर-के८संख्या को ग्रहण किया है ऐसे कायरों ने युद्ध करने का कार्य छोडकर सुभटों की संख्या करने का ही कार्य किया ॥ ३ ॥ कुलटा नायिका के ९ कटाक्ष के समान वीरों के भुजदंड शस्त्र प्रहार के १० विस्तार रचने लगे और ११ कायरों की १२ स्त्रियों के सुहाग के सहित १३ शरद पूर्णिमा के १४ चन्द्रमा के समान वीरों के यश बाकी रहने लगे १५ सेनापति १६ धनुष की प्रत्यञ्चा के टंकार से १७ युद्ध की शोभा १८ शेषनाग के नेत्रों ने योगनियों (देवी की दासियों) की निद्रा सहित महादेव की समाधि जगाई ॥ ४ ॥ १९ दो घड़ी के २० युद्ध में २१ ताजीम देकर (उठकर) बड़े मार्ग(परलोक मार्ग) के २२ पन्थी (मार्ग चलनेवाले) हुए २३ घोड़ा बढाकर २४मंत्री.

बिबाहि राजधर्म बिदितकरयो ॥ ७ ॥

(दोहा)

सत्त७ करे चउमास सेव, इक[1] इक[1] उकथे[1] रु याम[1] ॥
द्विजन भूरि हाटकें दयो, नृप सिवदास[10] सुनाम ॥ ८ ॥
कुमर भूप सिवदासके, पटु उपज्यो हरिपूर्ण[11] ॥
पीछैं यह भुवपालभो, चंड अरिन करि चूर्ण ॥९॥
इत चालुक प्रद्युम्नसुत, इंद्रद्युम्न नरेस ॥
वैष्णाब व्है किन्नौं सुबुधँ, दूर जैन उपदेस ॥ १० ॥

(षट्पात्)

इंद्रद्युम्नहि देस भयो वैष्णाव सब उत्तम ॥
स्वप्नमाँहिं जगदीस मिलै जाकौं जाग्रत सम ॥
मूरति स्वीयं बताइ कह्यो विरचहु मम मंदिर ॥
जगि प्रातहि नृप जाइ स्वप्नंगत चिन्ह लखे थिर ॥
मूरति कढाइ खुदवाइ भुव नियंति भक्ति चालुक नच्यो ॥
पूरबसमुद्र उपकंठ पर रंम्य पृथुल मंदिर रच्यो ॥ ११ ॥

(दोहा)

पुण्यधाम चउ४मैं प्रथित, जानत आस्तिक जाहि ॥
पधराये तँहँ विष्णुप्रभु, विधि वेदोक्त निबाहि ॥ १२ ॥
जाके वपु परसे जलहि, करे संकुष्ट अंकुष्ट ॥

---

१ चातुर्मास्य यज्ञ २ महाव्रत नामक यज्ञ करके ३ आप्तोर्याम नामक यज्ञ विशेष ४ सुवर्ण दिया ॥ ८ ॥ ५ चतुर ६ भयंकर शत्रुओं का ॥ ९ ॥ ७ श्रेष्ठ पंडित ने ॥ १० ॥ ८ जगतेहुए को मिले जैसे ९ अपनी मूर्ति को बता करके कि अमुक स्थान पर है १०स्वप्न में जो चिन्ह देखे थे वेही वहां जाकर देखे ११नियम पूर्वक भक्ति करके १२ पूर्वसमुद्र के समीप (किनारे) मोटा और १३सुन्दर मन्दिर रचा ॥ ११ ॥ जिसको १६ वेद मत माननेवाले लोग १४ पवित्र चार धामों (बद्रीनाथ १ द्वारका २ रामेश्वर ३ जगदीश४) में १५ प्रसिद्ध मानते हैं वहां १७ वेद की कहीहुई बिधि को नि-भाकर विष्णु भगवान् को पधराये ॥ १२ ॥ उनके १८ शरीर से स्पर्श हुए जल से इन्द्रद्युम्न राजा का शरीर १९ कोढ सहित था सो २० कोढ रहित

बिबाहि राजधर्म बिदितकरयो ॥ ७ ॥

(दोहा)

सत्त७ करे चउमास सव, इक१ इक१ उकथ१ रु याम१ ॥
द्विजन भूरि हाटक दयो, नृप सिवदास१० सुनाम ॥ ८ ॥
कुमर भूप सिवदासके, पटु उपज्यो हरिपूर्ण९१ ॥
पीछैं यह भुवपालभो, चंड आरिन करि चूर्ण ॥९॥
इत चालुक प्रद्युम्नसुत, इंद्रद्युम्न नरेस ॥
वैष्णव व्है किन्नौं सुबुध, दूर जैन उपदेस ॥ १० ॥

(षट्पात्)

इंद्रद्युम्नहि देस भयो वैष्णव सब उत्तम ॥
स्वप्नमाँहिं जगदीस मिलै जाकौं जाग्रत सम ॥
मूरति स्वीय बताइ कह्यो विरचहु मम मंदिर ॥
जगि प्रातहि नृप जाइ स्वप्नगत चिन्ह लखे थिर ॥
मूरति कढाइ खुदवाइ भुव नियति भक्ति चालुक्क नच्यो ॥
पूरबसमुद्र उपकंठ पर रम्य पृथुल मंदिर रच्यो ॥ ११ ॥

(दोहा)

पुण्यधाम चउ४में प्रथित, जानत आस्तिक जाहि ॥
पधराये तँहँ विष्णुप्रभु, विधि वेदोक्त निबाहि ॥ १२ ॥
जाके बपु परसे जलहि, करे सकुष्ट अकुष्ट ॥

---

१ चातुर्मास्य यज्ञ २ महाव्रत नामक यज्ञ करके ३ आप्तोर्याम नामक यज्ञ विशेष ४ सुवर्ण दिया ॥ ८ ॥ ५ चतुर ६ भयंकर शत्रुओं का ॥ ९ ॥ ७ श्रेष्ठ पंडित ने ॥ १० ॥ ८ जगतेहुए को मिले जैसे ९ अपनी मूर्ति को बता करके कि अमुक स्थान पर है १०स्वप्न में जो चिन्ह देखे थे वेही वहां जाकर देखे ११नियम पूर्वक भक्ति करके १२ पूर्वसमुद्र के समीप (किनारे) मोटा और १३सुन्दर मन्दिर रचा ॥ ११ ॥ जिसको १६ वेद मत माननेवाले लोग १४ पवित्र चार धामों (बद्रीनाथ १ द्वारका २ रामेश्वर ३ जगदीश४) में १५ प्रसिद्ध मानते हैं वहां १७ वेद की कहीहुई बिधि को नि-भाकर विष्णु भगवान् को पधराये ॥ १२ ॥ उनके १८ शरीर में स्पर्श हुए जल से इन्द्रद्युम्न राजा का शरीर १९ कोढ सहित था सो २० कोढ रहित

हरिपूर्णाहु यातैं हठी, कढ्ढन बैर अकाल[1] ॥
कुन्तलपति सन रंग रुपि, सोयो रन अरिसाल ॥ १८ ॥
नृपति सातबाहन तनय, कुन्तलपति वसुमित्र ॥
हरिपूरन जानैं हन्यौं, करि रन चक्रन[2] चित्र ॥ १९ ॥

षट्पात

बलवानन सन बैर निठ्ठि कढ्ढत बीरहु नर ॥
चहुवाननकी दोर[3] रहैं अबिरत[4] कुन्तलपर[5] ॥
देबीदास९२उदार भयो करनाट महीपति ॥
हरि जदुकुल मरहट्ठ[6] सुता परन्यौं यह कीरति९२।१ ॥
हुव कर्मचंद्र९३ताकै तनय सो रविकुल[7] सिंधुल सुता ॥
सोरठ आय परन्यौं सुपहु जया९३।१नाम सब गुनजुता।२०।

दोहा

उत नरेस वसुमित्र सुत, कुन्तलपति दृढसेन ॥
अर्ज्जमहीमैं[8] इक्क१भो, जासौं अपर[9] जुरेन ॥ २१ ॥

पादाकुलकम्॥

नंत्ती[10] सु[11] नृप सातबाहनको, धरा१कटक[12]२आकर[13] पति धन३को॥
चरम[14]१उदय[15]२विच आन[16] चलावन, रक्खैं हौंस बढैं जिम रावन२२।
तप्यो न सातबाहनहू तैसो, यह दृढसेन सक्तिलय[17]३ऐसो ॥
गंजन[18] ताहि कोन रन गज्जैं, भेजा भचकि सुनत अरि भज्जैं२३

दोहा

१ विना समय वैर लेने से ॥ १७ ॥ २ सेनाओं में आश्चर्य उत्पन्न कराके ॥ १९ ॥ ३ दौड़ (धावा मारना) ४ निरन्तर ५ कुंतल देश पर, यदुवंशी श्रीकृष्ण के वंश में ६ महाराष्ट्र देश के राजा की ७ सूर्यवंशी ॥ २० ॥ ८ आर्यावर्त की भूमि में एक ही हुआ जिससे कोई ९ अन्य युद्ध में नहीं जुड़ा ॥ २१ ॥ ११ वह. सातवाहन राजा का १० पोता १२ सेना १३ खान १४ जो अस्ताचल और १५ उदयाचल के बीच में १६ आण चलाने के लिये रावण के समान इच्छा रक्खें ॥ २२ ॥ १७ प्रभुशक्ति, उत्साहशक्ति और मन्त्रशक्ति इन तीनों शक्तियों में १८ इसको जीतने के लिये गर्जना करै ऐसा कौन

हरिपूर्णाहु यातैं हठी, कड्ढन बैर अकाल ॥
कुन्तलपति सन रंग रुपि, सोयो रन अरिसाल ॥ १८ ॥
नृपति सातबाहन तनय, कुन्तलपति वसुमित्र ॥
हरिपूरन जानैं हन्यौं, करि रन चक्रैन चित्र ॥ १९ ॥

षट्पात

बलवानन सन बैर निट्ठि कड्ढत वीरहु नर ॥
चहुवाननकी दौरै रहैं अविरत कुन्तलपर ॥
देवीदास९२उदार भयो करनाट महीपति ॥
हरि जदुकुल मरहट्ठ सुता परन्यौं यह कीरति९२।१ ॥
हुव कर्मचंद९३ताकै तनय सो रविकुल सिंधुल सुता ॥
सोरठ आय परन्यौं सुपहु जया९३।१नाम सब गुनजुता।२०।

दोहा

उत नरेस वसुमित्र सुत, कुन्तलपति दृढसेन ॥
अर्ज्जमहीमैं इक्क१भो, जासौं अपर जुरेन ॥ २१ ॥

पादाकुलकम्॥

नंत्ती सु नृप सातबाहनको, धरा१कटक२आकर पति धन३को॥
चरम१उदय२विच आंन चलावन, रक्खैं हौंस बढैं जिम रावन२२।
तप्यो न सातबाहनहू तैसो, यह दृढसेन सक्तित्रय३अैसो ॥
गंर्जन ताहि कोन रन गज्जैं, भेजा भचकि सुनत अरि भज्जैं २३

दोहा

---

१ विना समय वैर लेने से ॥ १७ ॥ २ सेनाओं में आश्चर्य उत्पन्न कराके ॥ १९ ॥ ३ दौड़ (धावा मारना) ४ निरन्तर ५ कुंतल देश पर, यदुवंशी श्रीकृष्ण के वंश में ६ महाराष्ट्र देश के राजा की ७ सूर्यवंशी ॥ ८ ॥ ८ आर्यावर्त की भूमि में एक ही हुआ जिससे कोई ९ अन्य युद्ध में नहीं जुड़ा ॥ २१ ॥ ११ वह. सातवाहन राजा का १० पोता १२ सेना १३ खान १४ जो अस्ताचल और १५ उदयाचल के बीच में १६ आण चलाने के लिये रावण के समान इच्छा रक्खे ॥ २२ ॥ १७ प्रभुशक्ति, उत्साहशक्ति और मन्त्रशक्ति इन तीनों शक्तियों में १८ इसको जीतने के लिये गर्जना करै ऐसा कौन

तिल तिल खग्गनं तुट्टि बसे सुरलोक बीरबर ॥
विंदा१रु प्रीति२जस सुनि बिहित कीर्ति१जया२सहगोन किय
इढसेन तनय हरिसेन इत प्रतिष्टान गद्दिय गहिय ॥ २८ ॥

(दोहा)

रामदास९४ नरनाह इत, करत राज्य करनाट ॥
भवनरूप वामन१ भजत, बलि रनरूप बिराट२ ॥ २९ ॥
भुव बिदर्भपति भीमकी, सुता पद्मिनी९४।१ सूर ॥
ससिकुलभव संकेतपुर, परन्यौं पाटवपूर ॥ ३० ॥
देवदत्त१ बिप्रहिं दये, सासनं नवति९०संमद्ध ॥
पंद्रह१५ जय२ पौरानिकहिं, गहि काव्यन रस गेद्ध ॥३१॥
दिय चारन धनदेव३कौं, द्वि२अयुत२०००० हाटक दम्म ॥
निज पुरुखन जस काव्यसुनि, कुंतल सन रन कम्म ॥३२॥
नृप सत्रुघ्न४३ अनेहतैं, सूतकुलहिं हुव साप ॥
पाई भवबृख चारि पुनि, छिज्जत चारन छाप ॥ ३३ ॥
आर्यमित्र लहि हर हुक्म, पटु तब विदित प्रसंस ॥
बासुकि तनया व्याहिकैं, बाढयो पुनि निज बंस ॥ ३४ ॥
रचि हैं अष्टम८ राशिमैं, निजकुल सो सनिदान॥

---

१ खड्गों से टूटकर २ उचित यश सुनकर राजा देवीदास के साथ विन्दा और प्रीति, और कर्मचन्द्र कुमर के साथ कीर्ति और जया नामक स्त्रियां सती हुई ३ प्रतिष्टान पुर की गद्दी पर बैठा ॥ २८ ॥ अपने घर में ४ बावन (ठिंगने) रूप को ५ पुनि ६ युद्ध में विराट स्वरूप को धारण करता है ॥ २९ ॥ ७ पुर विशेष ८ पूर्ण चतुर ॥ ३० ॥ ९ उदक ग्राम १० समृद्धिवाले ११ जय नामक चारण को १२ काव्य का दृढ रसग्रहण करके ॥ ३१ ॥ १३ सोने की मोहरें १४ कुन्तल देश में युद्धकार्य किया था उसका कार्य सुनकर ॥ ३२ ॥ १५ समय से १६ लोमहर्षण नामक सूत के कुल को आप हुआ था सो १७ महादेव के वृषभ को चराकर १८ छीजंतेहुओं ने चारण पदवी पाई ॥ ३३ ॥ आर्यमित्र नामक सूत ने शिव की आज्ञा लेकर १९ चतुर और २० प्रशंसा योग्य २१ वासुकि नाग की अवरी नामक कन्या को व्याहकर फिर अपने वंश को बढाया ॥ ३४ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि पुराण वृत्ति को

तिल तिल खग्गनं[1] तुट्टि बसे सुरलोक बीरबर ॥
विंदा१रु प्रीति२जस सुनि[2] बिहित कीर्ति१जया२सहगोन किय
हठसेन तनय हरिसेन इत प्रतिष्टान[3] गद्दिय गहिय ॥ २८ ॥

(दोहा)

रामदास९४ नरनाह इत, करत राज्य करनाट ॥
भवन[4]रूप बामन१ भजत, बलि[5] रन[6]रूप बिराट२ ॥ २९ ॥
भुव बिदर्भपति भीमकी, सुता पद्मिनी९४।१ सूर ॥
ससिकुलभव संकेत[7]पुर, परन्यौं पाटव[8]पूर ॥ ३० ॥
देवदत्त१ बिप्रहिं दये, सासन[9] नवति९०सं[10]मद्ध ॥
पंद्रह१५ जय२ पौरानिकहिं[11], गहि काव्यन रस गद्ध[12] ॥३१॥
दिय चारन धनदेव३कौं, द्वि२अयुत२०००० हाटक[13] दम्म ॥
निज पुरुखन जस काव्यसुनि, कुंतल सन रन कम्म[14] ॥३२॥
नृप सत्रुघ्न४३ अनेहतैं[15], सूतकुलहिं[16] हुव साप ॥
पाई भवव्रख[17] चारि पुनि, छिज्जत[18] चारन छाप ॥ ३३ ॥
आर्यमित्र लहि हर हुकम, पटु[19] तब विदित प्रसंस[20] ॥
बासुकि[21] तनया व्याहिकैं, बाढयो पुनि निज बंस ॥ ३४ ॥
रचि हैं अष्टम८ राशिमैं, निजकुल सो सनिदान॥

---

१ खड्गों से टूटकर २ उचित यश सुनकर राजा देवीदास के साथ बिन्दा औ-र प्रीति, और कर्मचन्द्र कुमर के साथ कीर्ति और जया नामक स्त्रियां सती हुईं ३ प्रतिष्टान पुर की गद्दी पर बैठा ॥ २८ ॥ अपने घर में ४ बावन (ठिंगने) रूप को ५ पुनि ६ युद्ध में बिराट स्वरूप को धारण करता है ॥ २९ ॥ ७ पुर विशेष ८ पूर्ण चतुर ॥ ३० ॥ ९ उदक ग्राम १० समृद्धिवाले ११ जय ना-मक चारण को १२ काव्य का दृढ रसग्रहण करके ॥ ३१ ॥ १३ सोने की मो-हरें १४ कुन्तल देश में युद्धकार्य किया था उसका कार्य सुनकर ॥ ३२ ॥ १५ समय से १६ लोमहर्षण नामक सूत के कुल को श्राप हुआ था सो १७ म-हादेव के वृषभ को चराकर १८ छीजतेहुओं ने चारण पदवी पाई ॥ ३३ ॥ आ-र्यमित्र नामक सूत ने शिव की आज्ञा लेकर १९ चतुर और २० प्रशंसा यो-ग्य २१ वासुकि नाग की अवरी नामक कन्या को व्याहकर फिर अपने वं-श को बढाया ॥ ३४ ॥ ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि पुराण वृत्ति को

अरि मिहिकावति उप्परहि, पुनि किय कुप्पि पयान ॥४१॥
लैन रामदासहु लख्यो, जब अरि निजपुर जात ॥
आय जुरयो तब अद्ध[1]मैं, घल्लि अचानक घात ॥ ४२ ॥

षट्पात्

रामदास९४नरराज भूप हरिसेन सेन[2]भट ॥
जिम सिचान खर[3]कोन बहुत किन्नैं बट उब्बट[4] ॥
बहु सत्रुन रन व्याह दई अच्छरि नव दुलहनि ॥
तनु[5] तजि अप्प[6]हु त्रिदिव बस्यो सुरराज सभ्य[7] बनि ॥
निज वैर लैन चाह्यो नृपति बिधिजोग सु उलटो बढ्यो ॥
करनाटईस दारुन कलह चाहि टेक धार[8]न चढ्यो ॥ ४३ ॥

दोहा

रामदास९४कौं मारि रन, सत्रु प्रबल हरिसेन ॥
गज्जि महानंद९५हिं गहन, धायो सजव[9] धरे[10]न ॥४४॥
जान्यौं सात्रव मूल[11] जब, रंचहु भुम्मि रहैं न ॥
मैं तिमकरि कुंतल[12] मुरौं, चाहौं निस१दिन२चैन ॥४५॥

षट्पात्

मन्त्रि नियंत[13] यह मंत्र प्रबल हांकिय कुंतलपति ॥
रिपु आवन१ नृप मरन२सुन्यौं पत्तन[14] मिहिकावति ॥
अग्गि[15]कुलहिं करनाट अंखि बदलि रु दिय उत्तर ॥

१मार्ग में॥४२॥रामदास चहुवान ने हरिसेन की२सेना के वीरों को जैसे शिकरा पक्षी ३ तीतर पक्षियों को बिखेर देता है तैसे मार्ग और ४ विना मार्ग बिखेर दिये ५ शरीर छोडकर ६ आप भी ७ इन्द्र का सभासद होकर स्वर्ग में वसा ८ तरवारों की धारों पर चढा अर्थात् कटगया ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र१०भूपति ॥४४॥ भूमि पर शत्रु का ११मूल (जड़) कुछ भी नहीं रहै ऐसा करके मैं१२कुन्तल देश को पीछा जाऊं ॥ ४५ ॥ १३निश्चय यह सलाह मानकर १४मिहिकावती पुरी में १५ जब अग्निकुलवाले (चहुवाणों) को कर्णाट देश ने नेत्र बदल कर(क्रोध से) उत्तर दिया तब हित करनेवाले राज्य

अरि मिहिकावति उप्परहि,पुनि किय कुप्पि प्रयान ॥४१॥
लैन रामदासहु लख्यो, जब अरि निजपुर जात ॥
आय जुरयो तब अद्ध[1]मैं, घल्लि अचानक घात ॥ ४२ ॥

षट्पात्

रामदास९४नरराज भूप हरिसेन सेन[2]भट ॥
जिम सिचान खर[3]कोन बहुत किन्नैं बट उब्बट[4] ॥
बहु सत्रुन रन व्याह दई अच्छरि नव दुलहनि ॥
तनु[5] तजि अप्प[6]हु त्रिदिव बस्यो सुरराज सभ्य[7] बनि ॥
निज बैर लैन चाह्यो नृपति बिधिजोग सु उलटो बढयो ॥
करनाटईस दारुन कलह चाहि टेक धारन[8] चढयो ॥ ४३ ॥

दोहा

रामदास९४कों मारि रन, सत्रु प्रबल हरिसेन ॥
गज्जि महानंद९५हिं गहन, धायो सजव[9] धरेन[10] ॥४४॥
जान्यों सात्रव मूल[11] जब, रंचहु भुम्मि रहैं न ॥
मैं तिमकरि कुंतल[12] मुरौं, चाहौं निस१दिन२चैन ॥४५॥

षट्पात्

मन्नि नियंत[13] यह मंत्र प्रबल हांकिय कुंतलपति ॥
रिपु आवन१ नृप मरन२सुन्यों पैंत्तन[14] मिहिकावति ॥
अग्गिकुल[15]हिं करनाट आंखि बदलि रु दिय उत्तर ॥

१मार्ग में॥४२॥रामदास चहुवान ने हरिसेन की२सेना के वीरों को जैसे शिकरा पक्षी ३ तीतर पक्षियों को बिखेर देता है तैसे मार्ग और ४ बिना मार्ग बिखेर दिये ५ शरीर छोडकर ६ आप भी ७ इन्द्र का सभासद होकर स्वर्ग में बसा ८ तरवारों की धारों पर चढा अर्थात् कटगया ॥ ४३ ॥ ९ शीघ्र१०भूपति ॥४४॥ भूमि पर शत्रु का ११मूल (जड़) कुछ भी नहीं रहै ऐसा करके मैं१२कुन्तल देश को पीछा जाऊं ॥ ४५ ॥ १३निश्चय यह सलाह मानकर १४मिहिकावती पुरी में १५ जब अग्निकुलवाले (चहुवाणों) को कर्णाट देश ने नेत्र बदल कर(क्रोध से) उत्तर दिया तब हित करनेवाले राज्य

होत्रचण्डासिबंशबर्णने कुन्तलराज सातवाहन चहुवाणराजकुमार कृष्णदास ८९ सहितभूपालभगवद्दास ८८ मारणप्रीति८८।१सहितविन्दा ८८।१ सहगमनकर्णाटराजाशिवदास ९० चंद्रकला ९०।१ परिणायनयज्ञानुष्ठानकुमारहरिपूर्ण९१ उत्कलपतिचालुक्यराडिन्द्रद्युम्नश्रीजगदीशमन्दिरप्रतिष्ठापनहरिपूर्ण ९१ चम्पा ९१।१ बिबहनकुमारदेवीदास ९२ जननकुंतलराजरणहरिपूर्णवीरशय्याशयनदेवीदास ९२ कीर्ति९२।१ कर्मचन्द्र ९३ जया ९३।१ पाणिग्रहणकुमाररामदास ९४ प्रादुर्भवनसपुत्रकर्मचन्द्र ९४ नरेशदेवीदास ९२ दृढसेनसमित्तनुत्यजनजया ९३।१ पेतकीर्ति ९२।१ पावकस्नानहरिषेणकुंतलच्छत्रधरणरामदास ९४ पद्मिनी९४।१परिणयनसमनुभूतकाव्यरसकबिजनशासनवितरणपौराणिकचारणपदप्रापणसूचनकर्णाटराजकुमारमहानन्दो९५ उद्भवनहरिसेनरामदास ९४ मारणमिहिकावतीस्वगेहसमानयनसपुत्रपद्मिनी ९४।१ सङ्केतपुरपलायनहरिषेणबिदर्भराजभीमत्रासनश्रुतैतद्विग्रहसपरिकरसपु-

---

वाण वंशवर्णन में कुन्तलदेश के राजा सातवाहन का राजकुमार कृष्णदास सहित राजा भगवतदास को मारना, प्रीति सहित विन्दा नामक दोनों सास बहू का सती होना, कर्णाटदेश के राजा शिवदास का चन्द्रकला को ब्याहना, यज्ञ का अनुष्ठान करना, कुमार हरिपूर्ण का जन्म, उत्कलदेश के पति चालुक्यराज इन्द्रद्युम्न का श्रीजगदीश के मन्दिर की प्रतिष्ठा करना, हरिपूर्ण का चम्पा से विवाह करना, कुमर देवीदास का जन्म, कुन्तलदेश के राजा के युद्ध में हरिपूर्ण का वीरशय्या में सोना, देवीदास का कीर्ति से और कर्मचन्द्र का जया से विवाह होना, कुमर रामदास का जन्म, पुत्र सहित कर्मचन्द्र और राजा देवीदास का दृढसेन के युद्ध में शरीर छोडना, जया सहित कीर्ति नामक दोनों सास बहू का सती होना, हरिसेन का कुन्तल के छत्र को धारण करना, रामदास का पद्मिनी से विवाह करना, काव्यरस का अनुभव करके कविलोगों को उदकग्रास देना, पुराण की वृत्ति धारण करनेवाले सूतों को चारण पद प्राप्त होने की सूचना, कर्णाटदेश के राजा के महानन्द कुमार का जन्म, हरिसेन का रामदास को मारना, अपने घर मिहिकावती से पुत्र को लाकर पद्मावती का संकेतपुर भागना, हरिषेण का विदर्भदेश के राजा भीम को त्रास देना, यह विग्रह सुनकर अपनी परगह

होत्रचण्डासिबंशबर्णने कुन्तलराज सातवाहन चहुवाणराजकुमार कृष्णदास ८९ सहितभूपालभगवद्दास ८८ मारणप्रीति८८।१सहितविन्दा ८८।१ सहगमनकर्णाटराजाशिवदास ९० चंद्रकला ९०।१ परिणायनयज्ञानुष्ठानकुमारहरिपूर्ण९१उत्कलपतिचालुक्यराडिन्द्रद्युम्नश्रीजगदीशमन्दिरप्रतिष्ठापनहरिपूर्ण ९१ चम्पा ९१।१ बिबहनकुमारदेवीदास ९२ जननकुंतलराजरणहरिपूर्णवीरशय्याशयनदेबीदास ९२ कीर्ति९२।१ कर्मचन्द्र ९३ जया ९३।१ पाणिग्रहणकुमाररामदास ९४ प्रादुर्भवनसपुत्रकर्मचन्द्र ९४ नरेशदेवीदास ९२ दृढसेनसमित्तनुत्यजनजयो ९३।१ पेतकीर्ति ९२।१ पावकस्नानहरिषेणकुंतलच्छत्रधरणरामदास ९४ पद्मिनी९४।३परिणायनसमनुभूतकाव्यरसकबिजनशासनवितरणपौराणिकचारणपदप्रापणसूचनकर्णाटराजकुमारमहानन्दो९५उद्भवनहरिसेनरामदास ९४ मारणमिहिकावतीस्वगेहसमानयनसपुत्रपद्मिनी ९४।१ सङ्केतपुरपलायनहरिषेणविदर्भराजभीमत्रासनश्रुतैतद्विग्रहसपरिकरसपु-

---

वाण वंशवर्णन में कुन्तलदेश के राजा सातवाहन का राजकुमार कृष्णदास सहित राजा भगवतदास को मारना, प्रीति सहित विन्दा नामक दोनों सास बहू का सती होना, कर्णाटदेश के राजा शिवदास का चन्द्रकला को व्याहना, यज्ञ का अनुष्ठान करना, कुमार हरिपूर्ण का जन्म, उत्कलदेश के पति चालुक्यराज इन्द्रद्युम्न का श्रीजगदीश के मन्दिर की प्रतिष्ठा करना, हरिपूर्ण का चम्पा से विवाह करना, कुमर देवीदास का जन्म, कुन्तलदेश के राजा के युद्ध में हरिपूर्ण का वीरशय्या में सोना, देवीदास का कीर्ति से और कर्मचन्द्र का जया से विवाह होना, कुमर रामदास का जन्म, पुत्र सहित कर्मचन्द्र और राजा देवीदास का दृढसेन के युद्ध में शरीर छोडना, जया सहित कीर्ति नामक दोनों सास बहू का सती होना, हरिसेन का कुन्तल के छत्र को धारण करना, रामदास का पद्मिनी से विवाह करना, काव्यरस का अनुभव करके कविलोगों को उदकग्राम देना, पुराण की वृत्ति धारण करनेवाले सूतों को चारण पद प्राप्त होने की सूचना, कर्णाटदेश के राजा के महानन्द कुमार का जन्म, हरिसेन का रामदास को मारना, अपने घर मिहिकावती से पुत्र को लाकर पद्मावती का संकेतपुर भागना, हरिषेण का विदर्भदेश के राजा भीम को त्रास देना, यह विग्रह सुनकर अपनी परगह

सकुटुंब नृपहिं रक्ख्यो सहित बरख सत्त७करि करि विनय
चहुवानराज तत्थहि लयो बालापन१तजि तरुन वय२ ॥३॥

(दोहा)

जामातहिं३ अद्धी अवनि, लग्गो तोवँर देन ॥
स्वसुर ग्रास अनुचित समुझि, लुब्भ्यो नहिं नृप लैन ॥४॥

(षट्पात्)

निस इक१ सोवत नृपहिं स्वप्न दिन्नों साकंभरि ॥
करि रन बिंदन कदन सदन यह लेहु अमल करि ॥
गोधि तिलक सिंदूर पुत्र पिक्खहु जब प्रातहि ॥
साजि आवहु तब सेन अवनि पावहु द्रुत आतहि ॥
नृप जग्गि स्वप्न सुमिरन नियत[11] रत्त[12] तिलक हेरत रहैं ॥
बिंदन बिडारि[13] उतकी अवनि चाहुवान भुग्गन चहैं ॥ ५ ॥

(दोहा)

नागज[14] तिलक ललाट निज, जगि इकदिन नृप जानि ॥
तकि साकंभरि[15] इष्ट तब, प्रत्यय[16] लिन्न प्रमानि ॥ ६ ॥

षट्पात्

जननी[17] पहँ नृप जाय स्वप्न कारन सुनाय सब ॥
दल[18] रक्खन कछु द्रव्य तनय मंगिय बिनीत[19] तब ॥
मुद्रा प्रयुत[20]१००००००प्रमेय कंठभूखन[21] माता दिय ॥

पुत्री को १ युवा अवस्था ॥ ३ ॥ २ जमाई को आधी ३ भूमि ४ लोभ नहीं किया ॥ ४ ॥ ५ शाकंभरी देवी ने स्वप्न दिया युद्ध में ६ विन्दा जाति के क्षत्रियों का नाश करके ७ इस घर (सांभर) में अधिकार करलै और हे पुत्र ६ जब प्रभात में उठते ही अपने ८ ललाड़ में सिन्दूर का तिलक देखै तब सेना सझ कर आना सो आते ही १० शीघ्र भूमि पावेगा ११ निश्चय ही १२ लाल तिलक १३ निकाल कर॥ ५ ॥१४सिन्दूर का १५शाकंभरी देवी को इष्ट जानकर यह १६ सुबूत पाया॥ ६ ॥ महानन्द ने १७ माता के पास जाकर१८सेना रखने को १९बहुत नम्र होकर पुत्र ने धन मांगा २०दश लक्ष रुपयों के समान प्रमाण रखनेवाला२१गले का भूषण माता ने

सकुटुंब नृपहिं रक्ख्यो सहित बरख सत्त७करि करि विनय
चहुवानराज तत्थहि लयो बालापन१तजि तरुन[1] वय२ ॥३॥

(दोहा)

जामात[2]हिं अद्धी अवनि, लग्गो तोवँर देन ॥
स्वसुर ग्रास अनुचित समुझि, लुब्भ्यो[4] नहिं नृप लैन ॥४॥

(षट्पात्)

निस इक१ सोवत नृपहिं स्वप्न दिन्नौं साकंभरि ॥
करि रन बिंदन कदन सदन यह लेहु अमल करि ॥
गोधि तिलक सिंदूर पुत्र पिक्खहु जब प्रातहिं ॥
सजि आवहु तब सेन अवनि पावहु हुंत आतहि ॥
नृप जग्गि स्वप्न सुमिरन नियंत[11] रत्त[12] तिलक हेरत रहैं ॥
बिंदन बिडारि[13] उतकी अवनि चाहुवान भुग्गन चहैं ॥ ५ ॥

(दोहा)

नागज[14] तिलक ललाट निज, जगि इकदिन नृप जानि ॥
तकि साकंभरि[15] इष्ट तब, प्रत्यय[16] लिन्न प्रमानि ॥ ६ ॥

षट्पात्

जननी[17] पहँ नृप जाय स्वप्न कारन सुनाय सब ॥
दल[18] रक्खन कछु द्रव्य तनय मंगिय विनीत[19] तब ॥
मुद्रा प्रयुत[20]१००००००प्रमेय कंठभूखन[21] माता दिय ॥

पुत्री को १ युवा अवस्था ॥ ३ ॥ २ जमाई को आधी ३ भूमि ४ लोभ नहीं किया ॥ ४ ॥ ५ शाकंभरी देवी ने स्वप्न दिया युद्ध में ६ विन्दा जाति के चत्रियों का नाश करके ७ इस घर (सांभर) में अधिकार करलै और हे पुत्र ६ जब प्रभात में उठते ही अपने ८ ललाड़ में सिन्दूर का तिलक देखै तब सेना सझ कर आना सो आते ही १० शीघ्र भूमि पावेगा ११ निश्चय ही १२ लाल तिलक १३ निकाल कर ॥ ५ ॥ १४ सिन्दूर का १५ शाकंभरी देवी को इष्ट जानकर यह १६ सुबूत पाया ॥ ६ ॥ महानन्द ने १७ माता के पास जाकर १८ सेना रखने को १९ बहुत नम्र होकर पुत्र ने धन मांगा २० दश लच रुपयों के समान प्रमाण रखनेवाला २१ गले का भूषण माता ने

चंडी रिझाते मिले बिंद१चोहान२,दंडी मनौं फग्गके चच्चरी दान॥
ताली खुली ईसकी रीसकी रारि,नैबेलगी सेसके सीसकी वाँरि
खैबेलगी जुग्गिनी टूक के टारि, गैबेलगी डाकिनी प्रेतकौं गाँरि॥
कट्टैं कलावा खुलैं के करीकंध, तुट्टैं उडैं राति के बीति के बंध १५
भेजाकढैं खुप्परी उच्छटैं भिन्न, खुल्लैं दहीसौंरज्यौं गग्गरी खिन्न
बज्जैं मनौं प्रातकी झल्लरी तेग, गज्जैं घनैं बैरकौं बाहुरैं वेग।१६
पीवैं भरैं साकिनी अस्त्रसौं टोप,जीवैं भजैं भीरु के अंजुनी ओप॥
झूलैं करी अंत्रके हिंडुला प्रेत, खिल्लैं भरी हेतसौं खेचरी खेत।१७
जैपाल ह्वाँ बिंदु भूपालको पुत्त, आयो रिसायो महानंदके हुत्त॥
तापैं भयो भूपके हत्थको वार, जैपालको ह्वै पर्‍यो मत्थ चोफार
चर्डासिको बंस जुज्झे महाकाल,मार्‍यो महानंद यौं बिंदु भूलपा॥
फेरी तहाँ संगही जित्ति चोहान,साकंभरी देसमैं अप्पनी आन १९

(दोहा)

नरबाहन१मार्‍यो नृपति, सुत जयपाल२समेत ॥
साकंभरि जनपंद सकल, पायो विजय उपेत ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

साकंभरि मंदिर१अति सुंदर, बनवायो नूतन धरनीबर ॥

देवी को १ प्रसन्न करते हुए, फाल्गुन मास में गेहर (पुरुषों का नृत्य विशेष) खेलनेवाले २डांडिये देवें जैसे तरवारों के प्रहार करते हुए बिन्दें और चहुवाण मिले जिससे शिव की ३ समाधि खुलगई और शेषनाग के मस्तकों की ५ बाड़ ४ नमनेलगी ॥ १४ ॥ ६ गानेलगी ७ गाली ८ हाथियों के कन्धे, बंध (तंगआदि) तूटकर रीते होकर कितने ही ९ घोड़े उडते हैं ॥ १५ ॥ गागर फूटकर १०मक्खन निकले ऐसे ॥ १६ ॥ टोप में ११ रुधिर भरकर, कितने ही १२ कायर १३ गौवों के समान भागकर जीते हैं १४ हाथियों की आँतों के १५ हिंडोले बनाकर प्रेत झूलते हैं १६ प्रसन्न होती हैं ॥ १७॥१७पुत्र. क्रोध करके महानन्द को१८होम करने आया ॥ १८ ॥ १९ चहुवाण वंशी ॥ १९ ॥ २० सांभर देश.विजय२१सहित पाया ॥ २० ॥२२ साकंभरी देवी का २३ नवीन मन्दिर २४राजा

चंडी रिझाते मिले बिंद१चोहान२,दंडी मनौं फग्गके चच्चरी[2] दान॥
ताली खुली ईसकी रीसकी रारि,नैबेलगी सेसके सीसकी वाँरि
खैबेलगी जुग्गिनी टूक के टारि, गैबेलगी डाकिनी प्रेतकौं गारि॥
कट्टैं कलावा खुलैं के करीकंध, तुट्टैं उडैं राति के बीति के बंध १५
भेजाकढैं खुप्परी उच्छटैं भिन्न, खुल्लैं दहीसौंरज्यौं गग्गरी खिन्न
बज्जैं मनौं प्रातकी झल्लरी तेग, गज्जैं घनैं वैरकौं बाहुरैं वेग।१६
पीवैं भरैं साकिनी अस्त्रसौं टोप,जी वैं भजैं भीरु के अंजुनी ओप॥
झूलैं करी अंत्रके हिंडुला प्रेत, खिल्लैं भरी हेतसौं खेचरी खेत।१७
जैपाल व्हाँ बिंदु भूपालको पुत्त, आयो रिसायो महानंदके हुत्त॥
तापैं भयो भूपके हत्थको वार, जैपालको व्है पर्‌यो मत्थ चो४फार
चउाँसिको बंस जुज्झे महाकाल,मार्‌यो महानंद यौं बिंदु भूलपा॥
फेरी तहाँ संगही जित्ति चोहान,साकंभरी देसमैं अप्पनी आन १९

(दोहा)

नरबाहन१मार्‌यो नृपति, सुत जयपाल२समेत ॥
साकंभरि जनपंद सकल, पायो विजय उपेत ॥ २० ॥

पादाकुलकम्

साकंभरि मंदिर१अति सुंदर, बनवायो नूतन धरनीवर ॥

देवी को १ प्रसन्न करते हुए, फाल्गुन मास में गेहर (पुरुषों का नृत्य विशेष) खेलनेवाले २डांडिये देवें जैसे तरवारों के प्रहार करते हुए बिन्दें और चहुवाण मिले जिससे शिव की ३ समाधि खुलगई और शेषनाग के मस्तकों की ५ बाड़ ४ नमनेलगी ॥ १४ ॥ ६ गानेलगी ७ गाली ८ हाथियों के कन्धे, बंध (तंगआदि) टूटकर रीते होकर कितने ही ९ घोड़े उडते हैं ॥ १५ ॥ गागर फूटकर १०मक्खन निकले ऐसे ॥ १६ ॥ टोप में ११ रुधिर भरकर, कितने ही १२ कायर १३ गौवों के समान भागकर जीते हैं १४ हाथियों की आँतों के १५ हिंडोले बनाकर प्रेत झूलते हैं १६ प्रसन्न होती हैं ॥ १७॥१७पुत्र. क्रोध करके महानन्द को१८होम करने आया ॥ १८ ॥ १९ चहुवाण वंशी ॥ १९ ॥ २० सांभर देश.विजय२१सहित पाया ॥ २० ॥२२ साकंभरी देवी का २३ नवीन मन्दिर २४राजा

धर्म बिथरायो मेटि छुद्रमत मंद यों ॥
कुन्तल नरेस हु सुनें तें त्रासपायो जाहि,
दूरकीनें देसके असेस दुख१दंद२यों ॥
छोरि करनाट चंम्मलीके वार आवतही,
रानी रुमा९५।१पाई रुमा२पाई महानंद यों ॥ २७ ॥

षट्पात्

नृप बिदर्भ पति करन१सुनत आयो पुर सम्भर ॥
इंद्रसेन२तोमर अधीस टोडापति दुद्धर ॥
इक१मातुल२इक१स्वसुर१मिले जामिज१जामात२हिं ॥
समय पाय अभिसिक्त नृपन किन्नौं नृप गातहिं ॥
द्विजबरन दम्मं लक्खन दये निर्यंत पाय जनपद नयो ॥
इम महानंद९५संभर सहर भद्रासन राजत भयो ॥ २८ ॥

दोहा

भुम्मिगई पुनि भूपतिन, आवत निठि अगार ॥
संग रहत लग्गी सदा, बसुधेश्वर कुल बार ॥ २९ ॥
करन१इंद्रसेन२हु कतिक, मासन रहि अति मोद ॥
नृप आये निज निज निलय, करत भीत चउ४कोद॥३०॥
महानंदके हुव तनय, विष्णुदास९६अधिवीर ॥

(कुन्तल देशवालों ने चहुवाणों को मारकर कर्णाट देश छीन लिया था इससे उनको भय हुआ कि चहुवाण प्रबल हुए हैं तो हमसे पीछा बदला लेवेंगे) १ सम्पूर्ण दुःख भूख तिस आदि २ चम्मल नदी के इस पार आते ही महानन्द ने इसप्रकार रुमा नामक राणी और रुमा (सांभर) नामक पुरी को पाई ॥ २७ ॥ तँवरों का पति विदर्भ देश का राजा करण तो मामा और टोडा का राजा इन्द्रसेन स्वसुरा सांभर में जाकर भाणेज और जमाई से मिले और समय पाकर राजा महानन्द के शरीर पर अभिषेक किया३रुपये४निश्चै ही नया देश पाकर सिंहासन पर शोभायमान हुआ ॥ २८ ॥गईहुई भूमि राजाओं के घर में फिर कठिनाई से आती है परन्तु चहुवाण कुल के द्वार पर यह साथ ही लगी रहती है ॥ २९ ॥ ५चारों दिशाओं में भय उपजाते हुए अपने अपने घर आये ॥ ३० ॥ शत्रुओं की भूमि दबाने और

धर्म बिथरायो मेटि छुद्रमत मंद यौं ॥
कुन्तल नरेस हु सुनैं तैं त्रासपायो जाहि,
दूरकीनैं देसके असेस दुख१दंद२यौं ॥
छोरि करनाट चम्मलोके वार आवतही,
रानी रुमा९५।१पाई रुमा२पाई महानंद यौं ॥ २७ ॥

षट्पात्

नृप बिदर्भ पति करन१सुनत आयो पुर सम्भर॥
इंद्रसेन२तोमर अधीस टोडापति दुद्धर ॥
इक१मातुल२इक१स्वसुर१मिले जामिज१जामात२हिं ॥
समय पाय अभिसिक्त नृपन किन्नौं नृप गातहिं ॥
द्विजबरन दम्म३ लक्खन दये नियंत पाय जनपद नयो ॥
इम महानंद९५संभर सहर भद्रासन राजत भयो ॥ २८ ॥

दोहा

भुम्मिगई पुनि भूपतिन, आवत निठ्ठि अगार ॥
संग रहत लग्गी सदा, बसुधेश्वर कुल बार ॥ २९ ॥
करन१इंद्रसेन२हु कतिक, मासन रहि अति मोद ॥
नृप आये निज निज निलय, करत भीत चउ४कोद५॥३०॥
महानंदकै हुव तनय, विष्णुदास९६अधिवीर ॥

(कुन्तल देशवालों ने चहुवाणों को मारकर कर्णाट देश छीन लिया था इससे उनको भय हुआ कि चहुवाण प्रबल हुए हैं तो हमसे पीछा बदला लेवेंगे) १ सम्पूर्ण दुःख भूख तिस आदि २ चम्मल नदी के इस पार आते ही महानन्द ने इसप्रकार रुमा नामक राणी और रुमा (सांभर) नामक पुरी को पाई ॥ २७ ॥ तँवरों का पति विदर्भ देश का राजा करण तो मामा और टोडा का राजा इन्द्रसेन स्वसुरा सांभर में जाकर भाणेज और जमाई से मिले और समय पाकर राजा महानन्द के शरीर पर अभिषेक किया३रुपये४निश्चै ही नया देश पाकर सिंहासन पर शोभायमान हुआ ॥ २८ ॥ गईहुई भूमि राजाओं के घर में फिर कठिनाई से आती है परन्तु चहुवाण कुल के द्वार पर यह साथ ही लगी रहती है ॥ २९ ॥ ५चारों दिशाओं में भय उपजाते हुए अपने अपने घर आये ॥ ३० ॥ शत्रुओं की भूमि दबाने और

नाम मंजुला९९।१तास सुता आकृति१गुन२सुंदरि ॥
चित्तउदधि चहुवान बीर संभर लायो वरि ॥
हुव तास बास सत्रुन हरन गंगादास१००सुभास सुत ॥
जद्दव प्रसक्त तनया रमा१००।१पुरवयान परन्यौं प्रनुतँ।३७।

[दोहा]

गंगादास तनूज हुव, मानसिंह१०१मतिमान ॥
नृपजद्दवकैं श्रीनगर, व्याहयो यह सविधान ॥३८॥
सुता त्रिलोचनकी सुघर, नववय जमुना१०१नाम२॥
दंपति२सुख बिलसे दुलभ, क्रीडन जिम रति१कार्म२॥३९॥

[षटपात्]

मानसिंह१०१सुत सूर विदित प्रकट्यो विश्वंभर१०२ ॥
मूलदेव कछवाह सुता स्यामा१०२।१व्याहयो वर॥
जाए कच्छ बुगलान अंडर दुलहनि यह आनी ॥
मथुरादास१०३महीप तनय ताकै हुव दानी ॥
द्वारका भूप जयदेवकी सुता यहै परन्यौं सुमति१०३।१ ॥
भाखिये कौन अन्वयंभव सु ग्रंथन बिच पाई न गति ।४०।

दोहा

जाको कुल१न लिख्यो लिख्यो, नगर२जनक३अरु नाम४
किम हम तँहँ कल्पित लिखैं, जानैं धर्महिं जाम ॥ ४१ ॥

१स्वरूप से और गुण से सुन्दर २समुद्र के समान चित्तवाला चहुवाण परण लाया जिसके शत्रुओं का घास हरनेवाला ३ श्रेष्ठ कान्तिवाला गंगादास नामक पुत्र हुआ ४ विशेष स्तुतियोग्य ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ५ सुघड़ (श्रेष्ठ घड़नावाली अथवा बुद्धिमान्) ६ नवीन अवस्थावाली ७ स्त्री पुरुष ने जोड़ा से सुख बिलसे और जैसे रति के साथ ८ कामदेव क्रीड़ा करै तैसे क्रीड़ा करी ९ बुगलान पुर में जाकर १०निर्भय ११इसका जन्म किस वंश में था जिसकी गति ग्रंथों में नहीं पाई ॥ ४० ॥ ग्रन्थों में इस कन्या का नाम, इस के पिता और पुर का नाम तो१२लिखा है परन्तु कुल नहीं लिखा तब ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि हम मन से ही१३कल्पना करके कैसे लिखें १४ जहां धर्म को जानते हैं तहां झूठ कैसे लिखें ॥ ४१ ॥

नाम मंजुला९९।१तास सुता आकृति१गुन२सुंदरि ॥
चित्तउदधि चहुवान बीर संभर लायो वरि ॥
हुव तास बास सत्रुन हरन गंगादास१००सुभास सुत ॥
जद्दव प्रसक्त तनया रमा१००।१पुरवयान परन्यौं प्रनुत।३७।

[दोहा]

गंगादास तनूज हुव, मानसिंह१०१मतिमान ॥
नृपजद्दवकै श्रीनगर, व्याह्यो यह सविधान ॥३८॥
सुता त्रिलोचनकी सुघर, नववय जमुना१०१नाम२॥
दंपति२सुख बिलसे दुलभ, क्रीडन जिम रति१काम२॥३६॥

[षटपात्]

मानसिंह१०१सुत सूर विदित प्रकट्यो विश्वंभर१०२ ॥
मूलदेव कछवाह सुता स्यामा१०२।१०व्याह्यो वर ॥
जाय कच्छ बुगलान अंडर दुलहनि यह आनी ॥
मथुरादास१०३महीप तनय ताकै हुव दानी ॥
द्वारका भूप जयदेवकी सुता यहै परन्यौं सुमति१०३।१ ॥
भाखिये कौन अन्वयभव सु ग्रंथन विच पाई न गति ।४०।

दोहा

जाको कुल१न लिख्यो लिख्यो, नगर२जनक३अरु नाम४
किम हम तँहँ कल्पित लिखैं, जानैं धर्महिं जाम ॥ ४१ ॥

१स्वरूप से और गुण से सुन्दर२समुद्र के समान चित्तवाला चहुवाण परण लाया जिसके शत्रुओं का बास हरनेवाला ३ श्रेष्ठ कान्तिवाला गंगादास नामक पुत्र हुआ ४ विशेष स्तुतियोग्य ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ५ सुघड़ (श्रेष्ठ घड़नावाली अथवा बुद्धिमान्) ६ नवीन अवस्थावाली ७ स्त्री पुरुष ने जोड़ा से सुख विलसे और जैसे रति के साथ ८ कामदेव क्रीड़ा करै तैसे क्रीड़ा करी ९ बुगलान पुर में जाकर१०निर्भय११इसका जन्म किस वंश में था जिसकी गति ग्रंथों में नहीं पाई ॥ ४० ॥ ग्रन्थों में इस कन्या का नाम, इस के पिता और पुर का नाम तो१२लिखा है परन्तु कुल नहीं लिखा तब ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि हम मन से ही१३कल्पना करके कैसे लिखें१४ जहां धर्म को जानते हैं तहां झूठ कैसे लिखें ॥ ४१ ॥

सुरकर्ण२हिँकिलराजनगर दिय,अन्वयतासभुरटिया२अक्खिय५२।
महाकर्ण १उत्कल१निवास तजि, रहनलगो सूकरगंगा भँजि ॥
नृप सुदास१०६संभरपतिकै इत,सुत दस१०भये बीररस वंदित५३

(षट्पात्)

बीरभद्र१०७१अरुकासिनाथ१०७२मधुसूदन१०७३वामन१०७४
बलि मुरारि१०७५बाराह१०७६हृषीकेस१०७७हुउदारमन ॥
केसव१०७८पुनि बलभद्र१०७९कमलनयन१०७१०हु सर्वानुज[3]॥
ए१०सुदास अंगभव भये आजानुबाहु भुज॥
जान्यौं न सकल अनुजन जनन बीरभद्र१०७१ अग्रज बली॥
रुक्मिनी१०७१०ब्याहि लायो रसिक कुल जद्दव पंकजकली[6]५४

दोहा

सेनपाल नृपकी सुता, जो कंबलपुर जाय ॥
गृह आनी यह पानि गहि, रानी संभरराय ॥ ५५ ॥
संभरकी करनाटसौं, अवनी चोथे४अंस ॥
सो अब बढत सुदाससौं, वसुधेश्वरके बंस॥ ५६ ॥

[षट्पात्]

बीरभद्र सुत भयउ धारि गोपाल१०८धर्मधुर ॥
सल चालुक तनया पृथा१०८।१सु परन्यौं कौंकनपुर॥
नृप गोपाल तनूज भयो गोविंददास१०९पुनि॥
सो तोवँर संकर सुता सु परन्यौं समर्ता सुनि ॥
अभिधान जास राधा१०८।१बिदित हुव सुपुल तामैं कुमर॥
मानिक्यराज११०नामक सुमति कलि[10] जिहिं लिन्नौं सबनकर५७

१उसका वंश२सोरम घाट पर गंगा का सेचन करके।५३।३सबसे छोटा ४ सुदास के पुत्र ५ इनमें छोटे पुत्रों का वंश कितना चला और कहां रहा सो नहीं जाना ६ यादवों के वंश रूपी कमल की कली ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कर्णाट देश से सांभर की ७ भूमि चौथी पांती थी सो ८ चहुवाण वंश में सुदास से बढनेलगी ॥ ५६ ॥ ९ अपने समान(बराबरीवाला) सुनकर १०युद्ध में जिसने सबसे खिराज लिया ॥ ५७ ॥

सुरकर्ण१हिँकिलराजनगर दिय,अन्वयंतासभुरटिया२अक्खिय५२।
महाकर्ण १उत्कल१निवास तजि, रहनलगो सूकरगंगा भँजि ॥
नृप सुदास१०६संभरपतिकैं इत,सुत दस१०भये बीररस वंदित५३

(षट्पात्)

बीरभद्र१०७।१अरुकासिनाथ१०७।२मधुसूदन१०७।३वामन१०७।४
बलि मुरारि१०७।५बाराह१०७।६हृषीकेस१०७।७हुउदारमन ॥
केसव१०७।८पुनि बलभद्र१०७।९कमलनयन१०७।१०हु सर्वानुज॥
ए१०सुदास अँगभव भये आजानुबाहु भुज॥
जान्यौं न सकल अनुजन जनन बीरभद्र१०७।१ अग्रज बली॥
रुक्मिनी१०७।१०याहि लायो रसिक कुल जद्दव पंकजकली५४

दोहा

सेनपाल नृपकी सुता, जो कंबलपुर जाय ॥
गृह आनी यह पानि गहि, रानी संभरराय ॥ ५५ ॥
संभरकी करनाटसौं, अवनी चोथे४अंस ॥
सो अब बढत सुदाससौं, वसुधेश्वरके बंस॥ ५६ ॥

[षट्पात्]

बीरभद्र सुत भयउ धारि गोपाल१०८धर्मधुर ॥
सल चालुक तनया पृथा१०८।१सु परन्यौं कौंकनपुर॥
नृप गोपाल तनूज भयो गोविंददास१०९पुनि॥
सो तोँवर संकर सुता सु परन्यौं समतां सुनि ॥
अभिधान जास राधा१०८।१बिदित हुव सुपुल तामैं कुमर॥
मानिक्यराज११०नामक सुमति कैंलि जिहिँ लिन्नौं सबनकर५७

१उसका वंश२सोरम घाटपर गंगा का सेचन करके।५३।३सबसे छोटा ४ सुदास के पुत्र ५ इनमें छोटे पुत्रों का वंश कितना चला और कहां रहा सो नहीं जाना ६ यादवों के वंश रूपी कमल की कली ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ कर्णाट देश से सांभर की ७ भूमि चौथी पांती थी सो ८ चहुवाण वंश में सुदास से बढनेलगी ॥ ५६ ॥ ९ अपने समान(बराबरीवाला) सुनकर १०युद्ध में जिसने सबसे खिराज लिया ॥ ५७ ॥

नृप गोविंददास१०९कै हुव सुत,जो माणिक्यराज११०सब गुन जुत॥
एकछत्र प्रतप्यो संभर यह, अधिपति भयो मंडलेस्वर यह ॥ १ ॥
भरयह१स्वरयह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

[दोहा]

इत नृप गोकुलराजसौं, छुट्टो सूकर देस ॥
लयो जोरकरि जद्दवन, गयो निकसि तब एस ॥ २ ॥
सो चालुक दक्खिन अवंनि, धरि बिदर्भ निज धाम ॥
जदुन दरिंत निबस्यो जहाँ, गंजि लये कछु ग्राम ॥ ३ ॥

[एकांत्यानुप्रासिनी]

(रोला)

इत संभर मानिक्यराज११०भो अविरंत दानी ॥
बढती भुम्मि सुदास पहुहु जिंहिं अधिक बढानी ॥
लये बिजैपुर१देवदुर्ग२ऊखापुर३धानी४ ॥
चंदाबारी५बहुरि लुट्टि निज अमल लगानी ॥ ४ ॥
सत्तलपुर६अरु नागनैर७जित्ते जुरि मानी ॥
व्रघ्ननंगर८बलमी९समेत सिवपुर१०सिंहानी११ ॥
जयतारंन१२जालोर१३दुर्ग सुजर्भ्मति१४सिखरानी१५ ॥
पेल१६तिजारा१७सुक्रताल१८मेरट१९बुगलानी२० ॥ ५ ॥
पानीपथ२१अजमेर२२जील२३अब्बू२४घरआनी ॥
धरनीधर२५संचोर२६सीम निज आन फिरानी ॥
पव्वागढ२७किरनाल२८दुर्ग रत्ता२९रजधानी ॥
सिंगानाँ३०कानौंड३१मैंम३२बौंद३३रु भीवानी३४ ॥ ६ ॥
अंतीला३५अर नारनोल३६जज्भर३७तिरभानी३८ ॥

---

१ चार योजन भूमि पर राज करनेवाले को राजा कहते हैं और ऐसे सौ राजा जिसके आधीन होवें उसको मंडलेश्वर कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ २ दक्षिण की भूमि में ३ यादवों से डराहुआ ॥ ३ ॥ ४ निरन्तर दान देनेवाला हुआ ५ देवगढ ६ नेगर विशेष ७ जैतारण ८ सोजत ॥ ५ ॥ ९ अरु

नृप गोविंददास१०९कै हुव सुत,जो माणिक्यराज११०सब गुन जुत॥
एकछत्र प्रतप्यो संभर यह, अधिपति भयो मंडलेस्वर यह ॥ १ ॥
भरयह१स्वरयह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

[दोहा]

इत नृप गोकुलराजसौं, छुट्टो सूकर देस ॥
लयो जोरकरि जद्दवन, गयो निकसि तव एस ॥ २ ॥
सो चालुक दक्खिन अवनि, धरि बिदर्भ निज धाम ॥
जदुन दरित निवस्यो जहाँ, गंजि लये कछु ग्राम ॥ ३ ॥

[एकांत्यानुप्रासिनी]

(रोला)

इत संभर मानिक्यराज११०भो अविरत दानी ॥
बढती भुम्मि सुदास पहुहु जिहिं अधिक बढानी ॥
लये बिजैपुर१देवदुर्ग२ऊखापुर३धानी४ ॥
चंदाबारी५बहुरि लुट्टि निज अमल लगानी ॥ ४ ॥
सत्तलपुर६अरु नागनैर७जित्ते जुरि मानी ॥
व्रघ्ननंगर८बलभी९समेत सिवपुर१०सिंहानी११ ॥
जयतारन१२जालोर१३दुर्ग सुज्झाति१४सिखरानी१५ ॥
पेल१६तिजारा१७सुक्रताल१८मेरट१९बुगलानी२० ॥ ५ ॥
पानीपथ२१अजमेर२२जील२३अब्बू२४धरआनी ॥
धरनीधर२५संचोर२६सीम निज आन फिरानी ॥
पव्वागढ२७किरनाल२८दुर्ग रत्ता२९रजधानी ॥
सिंगानाँ३०कानौंड३१मैंम३२बौंद३३रु भीवानी३४ ॥ ६ ॥
अंतीला३५अर नारनोल३६जजम्भर३७तिरभानी३८ ॥

---

१ चार योजन भूमि पर राज करनेवाले को राजा कहते हैं और ऐसे सौ राजा जिसके आधीन होवें उसको मंडलेश्वर कहते हैं ॥ १ ॥ २ ॥ २ दक्षिण की भूमि में ३ यादवों से डराहुआ ॥ ३ ॥ ४ निरन्तर दान देनेवाला हुआ ५ देवगढ ६ नेगर विशेष ७ जैतारण ८ सोजत ॥ ६ ॥ ९ अरु

साकम्भरि मन१वचन२सुद्ध सेई सुररानी ॥ १२ ॥
अट्ठ८दिसानैं भागधेय अप्पी चउ४आनी ॥
ऐसी भूतल प्रबल आन मच्ची चहुवानी ॥
पिन्नौं गड्डरि १ सारदूल २ इक १ घट्टैं पानी ॥
जे हत्थन धरते कमानं तिन्ह कंठ गिरानी ॥ १३ ॥
कतिकन भौंहन बिछुरि मुच्छ चिबुकँन चिपकानी ॥
कर जिनके तजते न मुट्ठि तिन मत्थ गहानी ॥
जिन मानी ग्रीखम अनेहं निज गेह हिमानी ॥
तिन भूपनकी तपंत जेठ सम्भर थिति जानी ॥ १४ ॥
सिंघनकै १ देखे न देस २ मेघनकै १ पानी २ ॥
रक्खी यह मानिक्यराज११०करि सत्य कहानी ॥
किन्नौं संगर समरसिंह निज दल सेनानी ॥
द्वै सत २०० सासनं द्विजन अत्थ दिन्नैं दिन दानी ॥ १५ ॥
पौरानिक प्रद्युम्नकाज दस१०सौं घड़वानी११ ॥
चारन केसव१कौं बडाद२मधुकौं१ छग्गानी२ ॥
वंदीजनं मेघ१रु मुरारि२किन्नैं धनमानी ॥
बसुधा बाला सबन छोरि नृप हत्थ बिकानी ॥ १६ ॥

---

१ देवी को २ खिराज ३ एक रुपये में से चार आने (चतुर्थांश) ४ चहुवान की ५ भेड़ और सिंह ने एक घाट पर पानी पिया ६ जो हाथों में धनुष धारण करते थे उनके गले में डालदिया ॥१३॥ कितनोंकी मूंछें भौंहों से उलटी मुड़कर ७ ठोडी से चिपकगईं अर्थात् मूछें नीची होगईं (मूँछ नीची करलेना पराजय का लक्षण है) जिनके हाथ खड्ग की ८ मूँठ नहीं छोडते थे उन्होंने खड्ग मस्तक पर रख लिया जिन राजाओं ने माणिक्यराज के ९ समय का ग्रीष्म ऋतु जानी उनके घर में १० शीतलता रही और जिन राजाओं ने जाना कि ग्रीष्म क्या है उनके लिये ११ चहुवान की स्थिति ज्येष्ठमास के सूर्य समान रही ॥ १४ ॥ अपनी सेना का १२ सेनापति १३ ब्राह्मणों को दो सौ १४ उदकग्राम दिये ॥१५॥ प्रद्युम्न नामक १५ चारण को १६ दश ग्रामों के साथ घडवानी नगर दिया १७ छांगाणी नामक ग्राम दिया १८ भाट १९ भूमि रूपी स्त्री सबको छोडकर माणिक्यराज के ही हाथ में बेचीगई अर्थात् इसकी मोल लीहुई होगई ।१६।

साकम्भरि मन१वचन२सुद्ध सेई सुररानी ॥ १२ ॥
अष्ठ८दिसानैं भागधेय अप्पी चउ४आनी ॥
ऐसी भूतल प्रवल आन मची चहुवानी ॥
पिन्नौं गड्डरि १ सारदूल २ इक्क १ घट्टैं पानी ॥
जे हत्थन धरते कमानं तिन्ह कंठ गिरानी ॥ १३ ॥
कतिकन भौंहन बिछुरि मुच्छ चिबुकंन चिपकानी ॥
कर जिनके तजते न मुट्ठि तिन मत्थ गहानी ॥
जिन मानी ग्रीखम अनेहँ निज गेह हिमानी ॥
तिन भूपनकी तपंत जेठ सम्भर थिति जानी ॥ १४ ॥
सिंघनके १ देखे न देस २ मेघनके १ पानी २ ॥
रक्खी यह मानिक्यराज११०करि सत्य कहानी ॥
किन्नौं संगर समरसिंह निज दल सेनानी ॥
द्वै सत २०० सासनं द्विजन अत्थ दिन्नैं दिन दानी ॥ १५ ॥
पौरानिक प्रद्युम्नकाज दस१०सौं घड़वानी११ ॥
चारन केसव१कौं बडाद२मधुकौं१ छग्गानी२ ॥
वंदीजनं मेघ१रु मुरारि२किन्नैं धनमानी ॥
बसुधा बाला सबन छोरि नृप हत्थ विकानी ॥ १६ ॥

---

१ देवी को २ खिराज ३ एक रुपये में से चार आने (चतुर्थांश) ४ चहुवान की ५ भेड़ और सिंह ने एक घाट पर पानी पिया ६ जो हाथों में धनुष धारण करते थे उनके गले में डालदिया ॥१३॥ कितनोंकी मूंछें भौंहों से उलटी मुड़कर ७ ठोडी से चिपकगईं अर्थात् मूछें नीची होगईं (मूँछ नीची करलेना पराजय का लक्षण है) जिनके हाथ खड्ग की ८ मूँठ नहीं छोडते थे उन्होंने खड्ग मस्तक पर रख लिया जिन राजाओं ने माणिक्यराज के ९ समय को ग्रीष्म ऋतु जानी उनके घर में १० शीतलता रही और जिन राजाओं ने जाना कि ग्रीष्म क्या है उनके लिये ११ चहुवान की स्थिति ज्येष्ठमास के सूर्य समान रही ॥ १४॥ अपनी सेना का १२ सेनापति १३ ब्राह्मणों को दो सौ १४ उदकग्राम दिये॥१५॥ प्रद्युम्न नामक १५ चारण को १६ दश ग्रामों के साथ घड़वानी नगर दिया १७ छांगाणी नामक ग्राम दिया १८ भाट १९ भूमि रूपी स्त्री सबको छोडकर माणिक्यराज के ही हाथ में बेचीगई अर्थात् इसकी मोल लीहुई होगई ।१६।

पिता जबहि जुवराजपद, लग्गो याकँहँ दैन॥
कुमर नट्यो तब अरज करि, नये देस लरि लैन ॥२३॥

पट्पात्

क्रिय हनुमान१२१।१कुमार प्रनतं यह अरज पिता प्रति ॥
सिक्खदेहु प्रभु सुतहिँ सदा छत्रन रन संगति ॥
राजकुल१रु मृगराज२वसत सुहि देस विचारत॥
मिलैँ छिति न तब मोहि असन अप्पहु लखि आरतं ॥
निज जनकं धाम पावत निखिल विनु श्रम यह पद्धति वहत ॥
नव भव गहैँ न भूपन तनय किमहु पुत्र ताहि न कहत २४

दोहा

सोदर मम सुग्रीव यह, भुग्गहु संभर भोग ॥
पृथक देस हम पायहैं, जय१नय२समुदयं जोग ॥२५॥

पट्पात्

सु सुनि विस्वपति११०सुपहु खंध थप्पालि सिराहि खिन॥
जंपियं दलं लैजाहु यह हु मन्नी न कुमर इन ॥
जननी निज जँद्दोनि इक्क१अप्पिय मनिभूखन ॥
सो लहि मातुलं निलय अप्प पत्तो मधुपत्तन ॥
भूपति मुकुंद सुत रुक्मरथ धरत छत्र मथुरा नगर॥
जँहँ जाइ बंटि भूखन वह रु कटक नंव्य रक्खिय कुमर।२६।

की हुई भूमि भोगेंगे ॥ २२ ॥ २३ ॥ १ विशेष नम्र होकर क्षत्रियों के सदैव युद्ध ही२संगम है ३ सिंह ४ मुझे अन्य जगह भूमि नहीं मिले तब ५ पीडित जानकर आप भोजन दीजिये ६ अपने पिता का घर ७ सभी पाते हैं यह विना परिश्रम के ८ मार्ग में चलना है परन्तु राजाओं के पुत्र नवीन भूमि नहीं लेवें उनको ९ किसीप्रकार से पुत्र नहीं कहते ॥ २४ ॥ विजय और नीति के १० श्रेष्ठ उदय के योग से ॥ २५ ॥ ११ कहा कि १२ सेना लेजा सो१३कुमरों के सूर्य ने यह भी नहीं माना१४कुमर की माता जादवणी ने१५मणियों का एक भूषण दिया१६मामा के१७ घर१८मथुरा पुरी में गया१९नवीन सेना रक्खी ॥ २६ ॥

पिता जबहि जुवराजपद, लग्गो याकैंहँ दैन॥
कुमर नट्यो तब अरज करि, नये देस लरि लैंन ॥२३॥

पट्पात्

क्रिय हनुमान१।२।१कुमार प्रनतें यह अरज पिता प्रति ॥
सिक्खदेहु प्रभु सुतहिं सदा छत्रन रन संगति ॥
राजकुल१रु मृगराज२वसत गुहि देस विचारत॥
मिलैं छिति न तब मोहि असन अप्पहु लखि आरतें ॥
निज जनक धाम पावत निखिल विनु श्रम यह पद्धति वहत ॥
नव भव गहैं न भूपन तनय किंमहु पुत्र ताहि न कहत २४

दोहा

सोदर मम सुग्रीव यह, भुग्गहु संभर भोग ॥
पृथक देस हम पायहैं, जय१नय२समुदयं जोग ॥२५॥

पट्पात्

सु सुनि विस्वपति११०सुपहु खंध थप्पलि सिराहि खिन॥
जंपियँ दलैं लैजाहु यह हु मन्नी न कुमर इंन ॥
जननी निज जँद्दोनि इक्क१अप्पिय मनिभूखन ॥
सो लहि मातुलैं निलैंय अप्प पत्तो मधुपत्तन ॥
भूपति मुकुंद सुत रुक्मरथ धरत छत्र मथुरा नगर॥
जँहँ जाइ बंटि भूखन वह रु कटक नंव्य रक्खिय कुमर।२६।

की हुई भूमि भोगेंगे ॥ २२ ॥ २३ ॥ १ विशेष नम्र होकर क्षत्रियों के सदैव युद्ध ही२संगम है ३ सिंह ४ मुझे अन्य जगह भूमि नहीं मिले तब ५ पीडित जानकर आप भोजन दीजिये ६ अपने पिता का घर ७ सभी पाते हैं यह विना परिश्रम के ८ मार्ग में चलना है परन्तु राजाओं के पुत्र नवीन भूमि नहीं लेवें उनको ९ किसीप्रकार से पुत्र नहीं कहते ॥ २४ ॥ विजय और नीति के १० श्रेष्ठ उदय के योग से ॥ २५ ॥ ११ कहा कि १२ सेना लेजा सो१३कुमरों के सूर्य ने यह भी नहीं माना१४कुमर की माता जादवणी ने१५मणियों का एक भूषण दिया१६मामा के१७ घर१८मथुरा पुरी में गया१९नवीन सेना रक्खी ॥ २६ ॥

(दोहा)

लै पुरपाटलिपुत्र इम, हुव भूपति हनुमान१।२।२॥
पायो सम्मद विश्वपति, बिक्खि सुतहिं बलवान ॥ ३१ ॥

(पादाकुलकम्)

श्रवन राम नरनाह धरहु सब, चहुवाननकुल भेद फटत अब॥
वंसपुरुख जे प्रथम गिनाये, तिनकै इक१इक१पुत्रहि पाये ॥३२॥
काहूकै न होय दूजो सुत, यहहु असंभव गिनहु नरनुत॥
प्रमति साप रक्खै जो कारन, इक्क१कैहु व्है तब बिस्तार न॥३३॥
तो तेरह१३अजपाल तनय किम, तनय तीन३भटदलनकैहु तिम॥
पुनि इकबीस२१अनंगराज सुव, दसक१०सुदासकैहु कैसैं हुव ३४
प्रमति कह्यो अंतर कछु पैहो, जब चहुवान बहुत बढि जैहो॥
बहुत प्रजा कतिकनकै तातैं, चहिये सोहु सुनी नहिं यातैं॥३५॥
काहूको न चल्यो कुल१जानहु, अल्पहु बढ्यो काहुको मानहु॥
अबलौं बंस रह्यो नहि जिनको,लोभिनै करयो अनादर तिनको३६
कारन द्वैरक बिबुद्धि बिचारै, व्है ते मागध जनन निकारे॥

१पटना को लेकर२हर्ष पाया३देख कर४हे राजा रामसिंह! सुनो५पहिले पीढियें गिनाईं उनमें एक एक ही पुत्र होना पायाजाता है६हे मनुष्यों में स्तुतियोग्य रामसिंह ! किसीके भी दूसरा पुत्र नहीं हुआ यह७नहीं मानने योग्य है८प्रमति ने पहिले श्राप दिया था वह जो सन्तान नहीं बढने का कारण माना जावे तो एक के भी९ सन्तान का विस्तार नहीं होना चाहिये॥ ३३ ॥ १० पुत्र॥ ३४ ॥ ११ इसकारण से कितनों के बहुत सन्तान चाहिये सो भी नहीं हुए ॥ ३५ ॥ अब ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपनी सम्मति लिखते हैं कि किसीका तो वंश चला ही नहीं और किसीका वंश कम बढा उनका अनादर करके १२ लोभी १३ बड़वा भाटों ने उनके नाम अपनी पुस्तकों से निकाल दिये इसकारण से ऊपर की पीढियों में एक एक ही पुत्र होना पाया जाता है. (ग्रन्थकर्ता ने बड़वाभाटों की पुस्तकों पर पूर्ण विश्वास करलिया इसीकारण से इस ग्रन्थ के इतिहास में सम्वतों में और पीढियों के नामों में भूलें रही हैं सो हम दिग्दर्शन न्याय से कहीं कहीं दिखाते जावेंगे और इस टीका की पूर्वपीठिका लिखेंगे वहां पर भी इस विषय में हम अपनी संमति

(दोहा)

लै पुरपाटलिपुत्र[1] इम, हुव भूपति हनुमान११२१॥
पायो सम्मद[2] विश्वपति, बिक्खि[3] सुतहिं बलवान ॥ ३१ ॥

(पादाकुलकम्)

श्रवन राम[4] नरनाह धरहु सब, चहुवाननकुल भेद फटत अब॥
वंसपुरुख[5] जे प्रथम गिनाये, तिनकै इक१इक१पुत्रहि पाये ॥३२॥
काहूकै न होय दूजो२सुत, यहहु असंभव[7] गिनहु नरननुत[6]॥
प्रमति[8] साप रक्खैं जो कारन, इक्क१कैहु व्है तव बिस्तार[9] न॥३३॥
तो तेरह१३अजपाल तनय किम, तनय तीन३भटदलनकैहु तिम॥
पुनि इकबीस२१अनंगराज सुंव[10], दसक१०सुदासकैहु कैसैं हुव ३४
प्रमति कह्यो अंतर कछु पैहो, जब चहुवान बहुत बढि जैहो ॥
बहुत प्रजा कतिकनकै तातैं[11], चहिये सोहु सुनी नहिं यातैं॥३५॥
काहूको न चल्यो कुल१जानहु, अल्पहु बढ्यो काहुको मानहु॥
अबलौं बंस रह्यो नहि जिनको, लोभिन[12] कर्‍यो अनादर तिनको३६
कारन द्वै२कबिबुद्धि बिचारै, व्है ते मागध[13] जनन निकारे॥

१पटना को लेकर २हर्ष पाया ३देख कर ४हे राजा रामसिंह! सुनो५पहिले पीढियें गिनाई उनमें एक एक ही पुत्र होना पायाजाता है६हे मनुष्यों में स्तुतियोग्य रामसिंह ! किसीके भी दूसरा पुत्र नहीं हुआ यह७नहीं मानने योग्य है८ प्रमति ने पहिले श्राप दिया था वह जो सन्तान नहीं बढने का कारण माना जावे तो एक के भी ९ सन्तान का विस्तार नहीं होना चाहिये ॥ ३३ ॥ १० पुत्र ॥ ३४ ॥ ११ इसकारण से कितनों के बहुत सन्तान चाहिये सो भी नहीं हुए ॥ ३५ ॥ अब ग्रन्थकर्ता (सूर्यमल्ल) अपनी सम्मति लिखते हैं कि किसीका तो वंश चला ही नहीं और किसीका वंश कम बढा उनका अनादर करके १२ लोभी १३ बड़वा भाटों ने उनके नाम अपनी पुस्तकों से निकाल दिये इसकारण से ऊपर की पीढियों में एक एक ही पुत्र होना पाया जाता है. (ग्रन्थकर्ता ने बड़वाभाटों की पुस्तकों पर पूर्ण विश्वास करलिया इसीकारण से इस ग्रन्थ के इतिहास में सम्वतों में और पीढियों के नामों में भूलें रही हैं सो हम दिग्दर्शन न्याय से कहीं कहीं दिखाते जावेंगे और इस टीका की पूर्वपीठिका लिखेंगे वहां पर भी इस विषय में हम अपनी संमति

मारू२५मंत्री२६भवर२७महामन, हव्वासी२८दानिक२९अरातिहन
कल्लेचा३०रु बग्गड३१इत्यादिक, वंसभेद तिनमैं गन वादिक ॥
पूरबिया१इतहू कछु पाये, राने सुभट जे सुनहु सुहाये ॥ ४५ ॥

[दोहा]

बेदला१रु कोठारिया२, बहुरि पालसोली३हु ॥
पूरबिया चहुवान ए, करहु श्रवन खिलकी हु ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने च्युतराज्यचालुक्यगोकुलराजविदर्भनिवसनकृतदिग्विजयमाणिक्यराज ११० यादवीहेमा ११०१ परिणयन सत्रदानादिसमनुष्ठानराजकुमारहनुमत् १११ सुग्रीव १११ समुद्भवनत्यक्तशाकम्भरज्येष्ठकुमारमागधराज्यसमासादनपूर्वपुरुषसन्तानाऽभावशङ्कासमाधानहनुमत्सन्ततिचाहुवाणपौर्विकपदप्रापणौकलिंश३१त्तद्भेदप्रकटनं चतुःषष्टितमो६४मयूखः ॥ ६४ ॥

आदितः षड्डुत्तरशततमः ॥ १०६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

---

१ शत्रुओं को मारनेवाले ॥ ४४ ॥ २ उदयपुर के महाराणा के उमराव ॥ ४५ ॥ बेदला, कोठारिया और पारसोली नामक ग्रामों के पति पूरबिया चोहान हैं और ३ बाकी रहे जिनकी भी कथा सुनो ॥ ४६ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाणवंश वर्णन में गोकुलपाल सोलंखी का राज्य छूटकर विदर्भदेश में बसना, माणिक्यराज का दिग्विजय करके यादवी हेमा से विवाह करना, और यज्ञ और दान आदि का अनुष्ठान करना, राजकुमार हनुमान् और सुग्रीव का जन्म, बडे कुमार हनुमान् का सांभर को छोडकर मगधदेश के राज्य को प्राप्त करना, पूर्वपुरुषों में सन्तान के अभाव की शंका का समाधान करना, हनुमान् के वंश के चहुवाणों को पूरबिया चहुवाणों की पदवी प्राप्त होना और उनके इकतीस भेद प्रकट होने का चौसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६४ ॥ और आदि से एक सौ छै मयूख हुए ॥ १०६ ॥

मारू२५मंत्री२६भवर२७महामन, हव्वासी२८दानिक२९अरीतिहन
कलेचा३०रु बग्गड३१इत्यादिक, वंसभेद तिनमैं गन वादिक ॥
पूरबिया१इतहू कछु पाये, राने सुभट जे सुनहु सुहाये ॥ ४५ ॥

[दोहा]

बेदला१रु कोठारिया२, बहुरि पालसोली३हु ॥
पूरबिया चहुवान ए, करहु श्रवन खिलकी हु ॥ ४६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने च्युतराज्यचालुक्यगोकुलराजविदर्भनिवसनकृतदिग्विजयमाणिक्यराज ११० यादवीहेमा ११०।१ परिणयन सत्रदानादिसमनुष्ठानराजकुमारहनुमत् १११।१ सुग्रीव १११।२ समुद्भवनत्यक्तशाकम्भरज्येष्ठकुमारमागधराज्यसमासादनपूर्वपुरुषसन्तानाऽभावशङ्कासमाधानहनुमत्सन्ततिचाहुवाणपौर्विकपदप्रापणैकत्रिंश३१त्तद्भेदप्रकटनं चतुःषष्टितमो६४मयूखः ॥ ६४ ॥

आदितः षड्ुत्तरशततमः ॥ १०६ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

---

१ शत्रुओं को मारनेवाले ॥ ४४ ॥ २ उदयपुर के महाराणा के उमराव ॥ ४५ ॥ बेदला, कोठारिया और पारसोली नामक ग्रामों के पति पूरबिया चोहान हैं और ३ बाकी रहे जिनकी भी कथा सुनो ॥ ४६ ॥
श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाणवंश वर्णन में गोकुलपाल सोलंखी का राज्य छूटकर विदर्भदेश में बसना, माणिक्यराज का दिग्विजय करके यादवी हेमा से विवाह करना, और यज्ञ और दान आदि का अनुष्ठान करना, राजकुमार हनुमान् और सुग्रीव का जन्म, बडे कुमार हनुमान् का सांभर को छोडकर मगधदेश के राज्य को प्राप्त करना, पूर्वपुरुषों में सन्तान के अभाव की शंका का समाधान करना, हनुमान् के वंश के चहुवाणों को पूरबिया चहुवाणों की पदवी प्राप्त होना और उनके इकतीस भेद प्रकट होने का चौसठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६४ ॥ और आदि से एक सौ छै मयूख हुए ॥ १०६ ॥

कलि सहँस्र१०००तीजो३लगत, रुद्धो दंपति१गोन ॥
पापसमय रचिकैं रहैं, वैखानँस बिधि कोन ॥ ६ ॥
पुंज सुता बिमला१११।१परनि, बडगुज्जरि सिवँद्रंग ॥
संभरनृप सुग्रीव१११इत, भुग्गी अवनि अभंग ॥ ७ ॥

[षट्पात्]

नृपसुग्रीव तनूज भयो अंगद११२अजेय कँलि ॥
सो कलिपुर जद्दव सुमित्र तनया बिंझावलि११२।१ ॥
आयो परनि उदार गेह सद्ध्यो श्रुँति संगति ॥
तनय केसरी११३तास भयो संभरपुर भूपति ॥
त्र्यंबक प्रमार दसपुरँ नृपति तनयाँ कमला११३।१नाम तस
परन्यौं नरेस हुव तास पटुँ सुत जयंत११४खट्टन सुजस ॥८॥

(दोहा)

नृप चालुक बडवानगर, संकरदास सुमंत ॥
सीता११४।१ तस तनया सती, परन्यौं भूप जयंत ॥ ९ ॥
चालुक गोकुलराजके, कुल इत गोकुलपाल ॥
पच्छो आय बिदर्भसौं, सूकर लिय अरिसाल ॥ १० ॥

(षट्पात्)

नृप जयंतकै तनय भयो जगदीस११५ महाबल ॥
सो परन्यौं जद्दोनि दुर्ग रनथंभ सज्जि दल ॥
नृप रनधीर सुता रु नाम रंभा११५।१गुन आगर ॥
जिहिं जाठरँ जयराम११६ सूनुं प्रकट्यो मतिसागर ॥
परन्यौं सु भूप गोपालपुर गहिरवार सत्तल सुता ॥
रुक्मिनी११६।१ नाम पतिभक्तिरत सील१रूप२वय३संजुता ॥११ ॥

॥ ५ ॥ १ स्त्रीपुरुष का वन में जाना भी रुक गया २ वानप्रस्थ विधि को रच कर इस पाप समय में कौन रहै ॥ ६ ॥ ३ शिवगढ ॥ ७ ॥ ४ युद्ध में अजेय ५ वेद का साथ ६ मंदसोर पुर का पति ७ पुत्री ८ चतुर ९ यश पैदा करनेवाला ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १० पेट से ११ पुत्र ॥ ११ ॥

कलि सहँस्र१०००तीजो१लगत, रुद्धो दंपति२गोन ॥
पापसमय रचिकैं रहैं, वैखानस३ बिधि कोन ॥ ६ ॥
पुंज सुता बिमला११२।१परनि, बडगुज्जरि सिवंद्रंग ॥
संभरनृप सुग्रीव१११इत, भुग्गी अवनि अभंग ॥ ७ ॥

[षट्पात्]

नृपसुग्रीव तनूज भयो अंगद११२अजेय कलि ॥
सो कलिपुर जद्दव सुमित्र तनया बिंम्भावलि११२।१ ॥
आयो परनि उदार गेह सद्धयो श्रुति संगति ॥
तनय केसरी११३तास भयो संभरपुर भूपति ॥
त्र्यंबक प्रमार दसपुर नृपति तनयाँ कमला११३।१नाम तस
परन्याँ नरेस हुव तास पटु सुत जयंत११४खट्टन सुजस ॥८॥

(दोहा)

नृप चालुक बडवानगर, संकरदास सुमंत ॥
सीता११४।१ तस तनया सती, परन्याँ भूप जयंत ॥ ९ ॥
चालुक गोकुलराजके, कुल इत गोकुलपाल ॥
पच्छो आय बिदर्भसौं, सूकर लिय अरिसाल ॥ १० ॥

(षट्पात्)

नृप जयंतके तनय भयो जगदास११५ महाबल ॥
सो परन्याँ जद्दोनि दुर्ग रनथंभ सज्जि दल ॥
नृप रनधीर सुता रु नाम रंभा११५।१गुन आगर ॥
जिहिं जाठरँ जयराम११६ सूनुं प्रकट्यो मतिसागर ॥
परन्याँ सु भूप गोपालपुर गहिरवार सत्तल सुता ॥
रुक्मिनी११६।१ नाम पतिभक्तिरत सील१रूप२वय३संजुता ॥११॥

॥ ६ ॥ १ स्त्रीपुरुष का वन में जाना भी रुक गया २ वानप्रस्थ विधि को रच कर इस पाप समय में कौन रहै ॥ ६ ॥ ३ शिवगढ ॥ ७ ॥ ४ युद्ध में अजेय ५ वेद का साथ ६ मंदसोर पुर का पति ७ पुत्री ८ चतुर ९ यश पैदा करनेवाला ॥ ८ ॥ ६ ॥ १० ॥ १० पेट से ११ पुत्र ॥ ११ ॥

पांडव सक नभ अद्रि जिन२४७०, करि कलि अब्द अतीत ॥
गिरिधर१२२सद्धी जोग गति, पुत्रहिं दै भुव प्रीत ॥ १७ ॥
इत उज्जैन नरेसको, गोरिल कुमर प्रमार ॥
मार्‍यो अप्रज गोहिल्लन, कारन सहज सिकार ॥ १८ ॥

षट्पात्

यह प्रमार गौरिल्ल कुमार श्रतसेन भूप सुत ॥
कढ्यो लखन निजदेस करन अलसन प्रवृत्तिजुत ॥
नगर नाम गुग्गैर हुतो व्यय४आय५ सम्हारन ॥
एकाकी दिन इक्क बाँजि फेरत पत्तो बन ॥
मदसेन नगर भद्दोरपति नृप गोहिल्ल कछु सत्थ सह ॥
बाराहं पिट्ठि निधरकं बहत आयो फैंकत तुरंग तह ॥१९॥
सूकर गौरिल्ल अग्ग आत ठट्ठो रह्यो सु थकि ॥
कह्यो कुमर परकीय धाम न करहु बिरोध धकि ॥
सूकर अब हम सरन पुहवि सीमा प्रामारन ॥
हनहिं याहि नहि हमहु करहिं पालन लखि कारन ॥
मदसेन अप्प छोरहु प्रसंभ जग गोहिल्ल रक्खहु सुजस ॥
भद्दारभूप तदपि न रुक्यो मार्‍यो तोमर पिट्ठि तस ॥२०॥
बहत कुंत गौरिल्ल कुमार झपटाय तुरंगम ॥
अंस झारि तरवारि कर्‍यो मदसेन अजंगम ॥

युधिष्ठिर के सम्वत के दो हजार चार सौ सत्तर वर्ष जाते और वही कलियुग के वर्ष १ बिताकर ॥ १७ ॥ २ विना सन्तान ॥ १८ ॥ ३ आलसी मनुष्यों को उद्यम में लगाने के अर्थ निकला ४ खर्च ५ आमद सम्हालने के लिये ६ अकेला ७ घोड़ा फेरने को बन में ८ गया ९ सूवर के पीछे १० निश्शंक दौड़ाताहुआ ११ घोड़े को झपटाकर आया ॥१९॥ वह सूवर १२ गौरिल कुमर के सामने आकर थककर १३ खड़ा होगया १४ पराये घर में १५ यह भूमि भी प्रामारों की सीमा में है १६ हे मदसेन आप इस सूवर को मारने का हठ छोड़ दो १७ भदोर का राजा तोभी नहीं रुका और उस सूवर के पीठ पर १८ भाला मारा ॥२०॥ १९ भाला बहते ही २० कन्धे पर तरवार मार

पांडव सक नभ अद्रि जिन२४७०, करि कलि अब्द अतीत[1] ॥
गिरिधर१२२सद्धी जोग गति, पुत्रहिं दै भुव प्रीत ॥ १७ ॥
इत उज्जैन नरेसको, गोरिल कुमर प्रमार ॥
मार्‍यो अप्रज[2] गोहिलन, कारन सहज सिकार ॥ १८ ॥

षट्पात्

यह प्रमार गौरिल कुमार अतसेन भूप सुत ॥
कढ्यो लखन निजदेस करन अलसन प्रवृत्तिजुत[3] ॥
नगर नाम गुग्गैर हुतो व्यर्य४आयर५ सम्हारन ॥
एकाकी[6] दिन इक्क बाँजि फेरत पत्तो बन ॥
मदसेन नगर भद्दोरपति नृप गोहिल कछु सत्थ सह ॥
बाराहँ[9] पिट्ठि निधरकँ[10] बहत आयो फैंकत तुरंग[11] तह ॥१९॥
सूकर[12] गौरिल अग्ग आत ठढ्ढो[13] रह्यो सु थकि ॥
कह्यो कुमर परकीय[14] धाम न करहु बिरोध धकि ॥
सूकर अब हम सरन पुहवि[15] सीमा प्रामारन ॥
हनहिं याहि नहि हमहु करहिं पालन लखि कारन ॥
मदसेन अप्प छोरहु प्रसभ[16] जग गोहिल रक्खहु सुजस ॥
भद्दारभूप तदपि[17] न रुक्यो मार्‍यो तोमर[18] पिट्ठि तस ॥२०॥
बहत कुंत[19] गौरिल कुमार झपटाय तुरंगम ॥
अंसँ[20] झारि तरवारि कर्‍यो मदसेन अजंगम[21] ॥

युधिष्ठिर के सम्वत के दो हजार चार सौ सत्तर वर्ष जाते और वही कलियुग के वर्ष १ बिताकर ॥ १७ ॥ २ विना सन्तान ॥ १८ ॥ ३ आलसी मनुष्यों को उद्यम में लगाने के अर्थ निकला ४ खर्च ५ आमद सम्हालने के लिये ६ अकेला ७ घोड़ा फेरने को वन में ८ गया ९ सूवर के पीछे १० निश्शंक दौड़ाताहुआ ११ घोड़े को झपटाकर आया ॥१९॥ वह सूवर १२ गौरिल कुमर के सामने आकर थककर १३ खड़ा होगया १४ पराये घर में १५ यह भूमि भी प्रामारों की सीमा में है १६ हे मदसेन आप इस सूवर को मारने का हठ छोड दो १७ भदोर का राजा तोभी नहीं रुका और उस सूवर के पीठ पर १८ भाला मारा ॥२०॥ १९ भाला बहते ही २० कन्धे पर तरवार मार

रुद्रसेन अभिधान नाम तनया तस कीरति१२४।१ ॥
संभर भरत१२४सुबुद्धि सती परनी वह सुंदरि ॥
ताकै अर्जुन१२५तनय धीर प्रकट्यो स्वधर्म धरि ॥
नृप करन बिनाफर[1] जदु[2]जनन[3]छब्बर मऊपुर पति सुता ॥
जुथिका१२५।१नाम परन्यौं उचित नृप सुनारि नारिननुता[4]॥२९॥

(पादाकुलकम्)

जयत्पाल प्रतिहार भूप सन,बिंबस्थल छिन्न्यौं इत बिंदन ॥
तत्थ मर्‌यो न गयो जुरि तासौं,इत आयो भजि स्वीय इलासौं[6]३०
मरु जनपदं पत्तन मंडोउर, धरत छत्र नृप गोहिल कुलधुर ॥
लखि खिन रत्ति पैठि तासौं लरि,कट्टि सबन निज अमल लयो करि
गोहिल खिल भाजिगय जयतारन[11], पुनि इम मरु पायो प्रतिहारन॥
सम्भर इत अर्जुन नृपकै सुत,नाम सत्रुजित१२६भो वीरननुत[12]३२
चालुक भीम सुता सो सम्भर[13], कनकप्रभा१२६।१परन्यौं पुर कक्कर॥
सोमदत्त १२७ भो नृप ताको सुत,
जरी सु कनकप्रभा १२६।१ पति बपुर्जुत[14] ॥ ३३ ॥

दोहा

सैंगर नृप सिवराजकी, तनया नंदा१२७।१नाम ॥
अब्भपुर सु संभर अधिप, यह परन्यौं अभिराम ॥ ३४ ॥
सस्सू जिम नंदा१२७।१सती, किय पतिजुत हुत[15] काय ॥
तिनको सुत दुक्खंत१२८तँहँ, हुव प्रभु खग्ग[16] सहाय ॥३५॥

पदवीवाले क्षत्रिय १ बिनाफर नामक २यदुवंशी ३ छबड़ा और मऊ के पति की पुत्री ४ स्त्रियों में स्तुतियोग्य ॥ १९ ॥ जयत्पाल प्रतिहार से ५ बिंदा जाति के क्षत्रियों ने बिंबस्थल छीन लिया ६ अपनी भूमि से भागकर इधर आया ॥ ३० ॥ ७ मारवाड़ देश में ८ मंडोवर पुर में ९ रात्रि का १० समय देखकर ॥ ३१ ॥ गोहिल सब भागकर ११ जैतारण चले गये और मारवाड़ पड़िहारों ने पाया १२ वीरों में स्तुतियोग्य ॥३२ ॥१३ चहुवान १४ पति के शरीर के साथ जली ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ पति के साथ शरीर को १५ होमदिया १६ खड्ग की सहायता से ॥ ३५ ॥

रुद्रसेन अभिधान नाम तनया तस कीरति१२४।१ ॥
संभर भरत१२४सुबुद्धि सती परनी वह सुंदरि ॥
ताकै अर्जुन१२५तनय धीर प्रकट्यो स्वधर्म धरि ॥
नृप करन बिनाफर[1] जदु[2]जनन[3]छबर मऊपुर पति सुता ॥
जूथिका१२५।१नाम परन्यौं उचित नृप सुनारि नारिन[4]नुता॥२९॥

(पादाकुलकम्)

जयत्पाल प्रतिहार भूप सन,बिंबस्थल छिन्न्यौं इत बिंदन[5] ॥
तत्थ मर्‌यो न गयो जुरि तासौं,इत आयो भजि स्वीय इलासौं[6]३०
मरु[7] जनपद[8] पत्तन मंडोउर, धरत छत्र नृप गोहिल कुलधुर ॥
लखि खिन[9] रत्ति[10] पैठि तासौं लरि,कट्टि सबन निज अमल लयो करि
गोहिल खिल भाजिगय जयतारन[11], पुनि इम मरु पायो प्रतिहारन॥
सम्भर इत अर्जुन नृपकै सुत,नाम सत्रुजित१२६भो वीरननुत[12]३२
लुक भीम सुता सो सम्भर[13], कनकप्रभा१२६।१परन्यौं पुर कक्कर॥
सोमदत्त १२७ भो नृप ताको सुत,
जरी सु कनकप्रभा १२६।१ पति बपुजुत[14] ॥ ३३ ॥

दोहा

सँगर नृप सिवराजकी, तनया नंदा१२७।१नाम ॥
अभपुर सु संभर अधिप, यह परन्यौं अभिराम ॥ ३४ ॥
सस्सू जिम नंदा१२७।१सती, किय पतिजुत हुत[15] काय ॥
तिनको सुत दुक्खंत१२८तँहँ, हुव प्रभु खग्ग[16] सहाय ॥३५॥

पदवीवाले क्षत्रिय १ बिनाफर नामक २यदुवंशी ३ छबड़ा और मऊ के पति की पुत्री ४ स्त्रियों में स्तुतियोग्य ॥ १९ ॥ जयत्पाल प्रतिहार से ५ बिंदा जाति के क्षत्रियों ने बिंबस्थल छीन लिया ६ अपनी भूमि से भागकर इधर आया ॥ ३० ॥ ७ मारवाड़ देश में ८ मंडोवर पुर में ९ रात्रि का १० समय देखकर ॥ ३१ ॥ गोहिल सब भागकर ११ जैतारण चलेगये और मारवाड़ पडिहारों ने पाया १२ वीरों में स्तुतियोग्य ॥३२॥१३ चहुवान १४ पति के शरीर के साथ जली ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ पति के साथ शरीर को १५ होमदिया १६ खड्ग की सहायता से ॥ ३५ ॥

सुद्धांतं छोरि निकस्यो न सठ भ्रमि कुलपद्धति भुल्ल्यो ॥
तिहिँ लखि अचेत जिततित तकत दाव दुसह द्रोहिनँ दयो ॥४१॥
जयतपाल नृप जनँन बढ्यो मरु अमल बिथारन ॥
पुष्कर लग जिन दिनन पुहँवि छाई प्रतिहारन ॥
दुद्धर दिस दिस दोरि लुट्टि परधन जे लावत ॥
पावत जोहि प्रमँत्त छिप्र छिति तास छुरावत ॥
उनमाँहिं नाम मंगल अडर प्रातिहार मारोट पति ॥
तिँहिं आय नेरं सम्भर तबहि गरदायउ परिबेखं गति॥४२॥
लगी भरत सन घटन विस्वपति छिति ज़ु वढाई ॥
रहत जात रघुराम अष्ट८जोजन अपनाई ॥
ताकौं मंगल तक्कि सहर घेर्‌यो साकम्भर ॥
जंत्रमुक्त आयुधन समर किन्नौं खट६बासर ॥
करि हल्ल दिवस सत्तम७कर्‌यो पुर प्रवेस मंगल सजव ॥
न मर्‌यो गयो सु रघुराम नृप भज्ज्यो तजि आँर्जित बिभव ४३

दोहा

निंदित निंदा आधुनिक, मागधलोक लिखैँ न ॥
जो कुपुत्र पुब्बहु भये, तो हम जानैँ हैं न ॥४४॥

वह मूर्ख १ जनाने को छोडकर बाहर नहीं निकला और भ्रम में पड़कर अपने कुल के २ मार्ग को भूलगया ३ शत्रुओं ने दाव दिया ॥ ४१ ॥ जयतपाल के ४ वंश ५ मारवाड़ में अधिकार बढाने को निकला ६ भूमि को दबाली ७ जिनको उन्मत्त अथवा आलसी देखें उसीकी भूमि ८ शीघ्र छुडालेवें, जैसे सूर्य चन्द्रमा के चारों ओर १० परिधि (कुंडली) फिरजाती है तैसे ९ सांभर नगर को मंगल नामक पड़िहार ने घेरलिया ॥ ४२ ॥ विश्वपति ने ११ भूमि बढाई थी वह भरत से घटने लगी १२ सांभर को १३ बाण आदि यंत्र से चलनेवाले आयुधों से छै १४ दिन युद्ध किया और सातवें दिन हल्ला करके १५ शीघ्र सांभर में घुसा १६ अपने संचित किये विभव को छोडकर भागा ॥ ४३ ॥ इस समय के बड़वाभाट निन्दनीय पुरुष की निन्दा नहीं लिखते इसकारण से पहिले भी जो कोई कुपुत्र हुआ होगा तो उसको हम ने नहीं जाना ॥ ४४ ॥

सुद्धांते छोरि निकस्यो न सठ भ्रमि कुलपद्धति भुल्लयो ॥
तिहिँ लखि अचेत जितातित तकत दाव दुसह द्रोहिनँ दयो॥४१॥
जयतपाल नृप जनँन बढ्यो मरु अमल बिथारन ॥
पुष्कर लग जिन दिनन पुहँवि छाई प्रतिहारन ॥
दुद्धर दिस दिस दोरि लुट्टि परधन जे लावत ॥
पावत जोहि प्रमँत्त छिप्र छिति तास छुरावत ॥
उनमाँहिँ नाम मंगल अडर प्रातिहार मारोट पति ॥
तिँहिँ आय नैरँ सम्भर तबहि गरदायउ परिवेखँ गति॥४२॥
लगी भरत सन घटन विस्वपति छिति जु वढाई ॥
रहत जात रघुराम अठ्ठ८जोजन अपनाई ॥
ताकोँ मंगल तक्कि सहर घेरयो साकम्भँर ॥
जंतमुक्त आयुधन समर किन्नौँ खटक्षबासँर ॥
करि हल्ल दिवस सत्तम७करयो पुर प्रवेस मंगल सजवँ ॥
न मरयो गयो सु रघुराम नृप भज्ज्यो तजि आँर्जित बिभव ४३

दोहा

निंदित निंदा आधुनिक, मागधलोक लिखैँ न ॥
जो कुपुत्र पुब्बहु भये, तो हम जानैँ हैँ न ॥४४॥

वह मूर्ख १ जनाने को छोडकर वाहर नहीं निकला और भ्रम में पड़कर अपने कुल के २ मार्ग को भूलगया ३ शत्रुओं ने दाव दिया ॥ ४१ ॥ जयतपाल पड़िहार का ४ वंश ५ मारवाड़ में अधिकार बढाने को निकला ६ भूमि को दबाली ७ जिनको उन्मत्त अथवा आलसी देखें उसीकी भूमि ८ शीघ्र छुडालेवें, जैसे सूर्य चन्द्रमा के चारों ओर १० परिधि (कुंडली) फिरजाती है तैसे ९ सांभर नगर को मंगल नामक पड़िहार ने घेरलिया ॥ ४२ ॥ विश्वपति ने ११ भूमि वढाई थी वह भरत से घटने लगी १२ सांभर को १३ बाण आदि यंत्र से चलनेवाले आयुधों से छै १४ दिन युद्ध किया और सातवें दिन हल्ला करके १५ शीघ्र सांभर में घुसा १६ अपने संचित किये विभव को छोडकर भागा ॥ ४३ ॥ इस समय के बड़वाभाट निन्दनीय पुरुष की निन्दा नहीं लिखते इसकारण से पहिले भी जो कोई कुपुत्र हुआ होगा तो उसको हम ने नहीं जाना ॥ ४४ ॥

भूमी बिनु को भूप देत दुहिता दारिद्रघर ॥
तामाँहिं भयो अरिउडु तपन समरसिंहकैं वीर सुत ॥
मानिक्यराज१२४अभिधानधँर जो बालहि गुन सर्व जुत५२

दोहा

अर्जुन तोमर अप्पये, जामातहिं दस१०गाम॥
तत्थहि खोयो आयु तिहिं, राज्य हीन रघुराम ॥ ५३ ॥

षट्पात्

समरसिंह बय तँहँ सम्हारि उपयाम विरचि इम ॥
तनय पाय कुलतंतु जतन भुव काज रचे जिम ॥
सुपहु राम तिम सुनहु दोरि मंडिय भुव कारन ॥
लिय मारव धर लुट्टि परिय ओदकें प्रतिहारन ॥
सतसत्त७००पदग साँदी त्रिसत३००धीर बीर भट संग धरि
बहुबेर नैर सम्भर बिभव लायो संभर लूटकरि ॥ ५४ ॥
समरसिंह इकसमय घेरि सम्भरपुर गोधन ॥
बंधि धनिक बहु बँनिक चल्यो प्रेरत निज जोधन ॥
मंगल सुत प्रतिहार नाम नाहर जिहिं जाहिर ॥
सो त्रिसहँस३०००दल सज्जि लग्यो बाँहर कढि वाहिर ॥
अँवमर्द जुद्ध मिलि दल उभय२कोस तीन३उप्पर कर्यो॥
चहुवान मारि नाहर सचमुँ पहर जुज्झि अप्पँहु पर्यो॥५५॥

दोहा

१पुत्री २तारों रूपी शत्रुओं पर ३सूर्य रूपी माणिक्यराज ४नाम को धारण करनेवाला५जमाई को६विवाह७कुल का सहारा रूप (कुलभर में एक ही पुत्र था इससे कुलतन्तु कहागया) ८ हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह सुनो ९दौड़ा दौड़ना (धाड़ाडालना) १० मारवाड़ की भूमि को ११ त्रास पड़ी १२ पैदल १३ घोड़ों के सवार १४ सांभरपुर के विभव को १५चहुवान लूटलाया॥५४॥ १६ धनवान १७ बनियों को १८ अपने लोगों की सहायता और शत्रुओं का पीछा करने को देशभाषा में बाहर कहते हैं १९ दोनों सेनाओं ने मिलकर पीड़ाकारी युद्ध किया २० नाहर चहुवाण की सेना को मारकर २१ आप भी

भूमी बिनु को भूप देत दुहिता[1] दारिद्रघर ॥
तामाँहिं भयो अरिउडु[2] तपन[3] समरसिंहकै वीर सुत ॥
मानिक्यराज१३४अभिधानधर[4] जो बालहि गुन सर्व जुत५२

दोहा

अर्जुन तोमर अप्पये, जामाततहिं[5] दस१०गाम॥
तत्थहि खोयो आयु तिहिं, राज्य हीन रघुराम ॥ ५३ ॥

षट्पात्

समरसिंह बय तँहँ सम्हारि उपयाम[6] विरचि इम ॥
तनय पाय कुलतंतु[7] जतन भुव काज रचे जिम ॥
सुपहु राम[8] तिम सुनहु दोर[9] मंडिय भुव कारन ॥
लिय मारव[10] धर लुट्टि परिय ओदक[11] प्रतिहारन ॥
सतसत्त७००पदग[12] सादी[13] त्रिसत३००धीर बीर भट संग धरि
बहुबेर नैर सम्भर[14] बिभव लायो संभर[15] लूटकरि ॥ ५४ ॥
समरसिंह इकसमय घेरि सम्भरपुर गोधन ॥
बंधि धनिक[16] बहु बनिक[17] चल्यो प्रेरत निज जोधन[18] ॥
मंगल सुत प्रतिहार नाम नाहर जिहिं जाहिर ॥
सो त्रिसहँस३०००दल सज्जि लग्यो बाहर[19] कढि वाहिर ॥
अँवमर्द[19] जुद्ध मिलि दल उभयर२कोस तीन३उप्पर कर्यो॥
चहुवान मारि नाहर सचमुँ[20] पहर जुज्झि अप्पहु[21] पर्यो॥५५॥

दोहा

१पुत्री २तारों रूपी शत्रुओं पर ३सूर्य रूपी माणिक्यराज ४नाम को धारण करनेवाला५जमाई को६विवाह७कुल का सहारा रूप (कुलभर में एक ही पुत्र था इससे कुलतन्तु कहागया) ८ हे श्रेष्ठ राजा रामसिंह सुनो ९दौड़ा दौड़ना (धाड़ाडालना) १० मारवाड़ की भूमि को ११ त्रास पड़ी १२ पैदल १३ घोड़ों के सवार १४ सांभरपुर के विभव को१५चहुवान लूटलाया॥५४॥ १६ धनवान १७ बनियों को १८ अपने लोगों की सहायता और शत्रुओं का पीछा करने को देशभाषा में बाहर कहते हैं १९ दोनों सेनाओं ने मिलकर पीड़ाकारी युद्ध किया २० नाहर चहुवाण की सेना को मारकर २१ आप भी

११४।१ वंशसमसनचालुक्यगोवलपालपुनःशूकरराज्यानुष्ठानजायन्तिजगदीश ११५ रम्भा ११५।१ जयराम ११६ रुक्मिणी ११६।१ विजयराम प्रभा, कृष्ण ११८ लक्ष्मी ११८।१ जितयुद्ध ११९ राधिका ११९।१ गोबर्द्धन १२० दया १२०।१ मोहन १२१ विजया १२१।२ गिरधर १२२ सुरता १२२।१ जननपरम्पराकथनपुत्रदत्तराज्यगिरधरयोगसाधनप्रामारगौरिल १ गोभिलवंशमदसेन १ मिथोमरणाऽवन्ती १ भद्रपुर २ तद्वैरवर्द्धनगौरिधर्युदयराम १२३ भानुमती १२३।१ भरत १२४ कीर्त्य १२४।१ ऽर्जुन १२५ यूथिका १२५।१ न्तसन्ततिसूचनत्यक्ताविन्दाक्रान्तविम्बस्थलप्रतिहारजयत्पालपुनर्मरुराज्यसमासादनगोभिलजयतारणपुरपलायनशाकम्भरराडाऽऽर्जुनिशत्रुजित१२६कनकप्रभा१२६।१सोमदत्त१२७नन्दा १२७।१ दुःखन्त १२८ ललिता १२८।१ ऽन्तवंशवर्णनहतबैसामर१ यादवकर्ण२दौःखन्तिभीम १२९ चन्द्रावली १२९।१ परिणायनतत्सन्ततिलक्ष्मण १३० रमा १३०।१ पर्शुराम १३१ श्री १३१।१ रघुराम १३२ दया १३२।१ कुलपारम्पर्यकथनप्रतिहारमङ्गलशाकम्भरस्वीकरणारघुरा

जयन्त सीता के वंश का संक्षेप से कहना, चालुक्य गोवलपाल का फिर शूकर क्षेत्र पर राज्यानुष्ठान होना, जयन्त का पुत्र जगदीश-रंभा जयराम रुक्मिणी-विजयराम-प्रभा कृष्ण-लक्ष्मी जितयुद्ध-राधिका गोवर्धन-दया मोहन-बिजया गिरधर-सुरता के वंश की परम्परा का कथन,पुत्र को राज्य देकर गिरधर का योग साधना,पँवार गौरिल और गोभिल वंशी मदसेन का परस्पर माराजाना और उज्जीण भद्रपुर में उस वैर का बढना, गोरिधरि उदयराम-भानुमती भरत-कीर्ति अर्जुन-यूथिका के अन्त तक सन्तान की सूचना विन्दाक्रान्त से बिम्बस्थल छूटकर प्रतिहार जयत्पाल को फिर मारवाड़ राज्य का प्राप्त होना, गोभिलों का जैतारण पुर को भागना,सांभर के राजा अर्जुन के पुत्र शत्रुजित्-कनकप्रभा सोमदत्त-नन्दा दुक्खन्त-ललिता के अन्त तक वंश का वर्णन, बंस अमर और यादव करण का माराजाना, दुक्खन्त के पुत्र भीम का चन्द्रावलि से विवाह करना उसकी सन्तान लक्ष्मण रमा परसुराम-श्री रघुराम,दया के कुल की परंपरा को कथन, मंगल प्रतिहार का सांभर को लेना, रघुराम का अधनपुर (भाणपुरा अथवा बधनोर)

११४।१ वंशसमसनचालुक्यगोवलपालपुनःशूकरराज्यानुष्ठानजायन्तिजगदीश ११५ रम्भा ११५।१ जयराम ११६ रुक्मिणी ११६।१ विजयराम प्रभा, कृष्ण ११८ लक्ष्मी ११८।१ जितयुद्ध ११९ राधिका ११९।१ गोवर्द्धन १२० दया १२०।१ मोहन १२१ विजया१२१।१ गिरधर १२२ सुरता १२२।१ जननपरम्पराकथनपुत्रदत्तराज्यगिरधरयोगसाधनप्रामारगौरिल १ गोभिलवंशमदसेन १ मिथोमरणाऽवन्ती १ भद्रपुर २ तद्वैरवर्द्धनगौरिधर्युदयराम १२३ भानुमती-१२३।१ भरत १२४ कीर्त्य १२४।१ ऽर्जुन १२५ यूथिका १२५।१ न्तसन्तातिसूचनत्यक्ताविन्दाक्रान्तबिम्बस्थलप्रतिहारजयत्पालपुनर्मरुराज्यसमासादनगोभिलजयतारणपुरपलायनशाकम्भरराडाऽऽर्जुनिशत्रुजित१२६कनकप्रभा१२६।१सोमदत्त१२७नन्दा १२७।१ दुःखन्त १२८ ललिता १२८।१ ऽन्तवंशवर्णनहतवैसामर१ यादवकर्ण२दौक्खन्तिभीम १२९ चन्द्रावली १२९।१ परिणायनतत्सन्ततिलक्ष्मण १३० रमा १३०।१ पर्शुराम १३१ श्री १३१।१ रघुराम १३२ दया १३२।१ कुलपारम्पर्यकथनप्रतिहारमङ्गलशाकम्भरस्वीकरणरघुरा

जयन्त सीता के वंश का संक्षेप से कहना, चालुक्य गोवलपाल का फिर शूकर क्षेत्र पर राज्यानुष्ठान होना, जयन्त का पुत्र जगदीश-रंभा जयराम रुक्मिणी-विजयराम-प्रभा कृष्ण-लक्ष्मी जितयुद्ध-राधिका गोवर्धन-दया मोहन-विजया गिरधर-सुरता के वंश की परम्परा का कथन,पुत्र को राज्य देकर गिरधर का योग साधना,पँवार गौरिल और गोभिल वंशी मदसेन का परस्पर माराजाना और उज्जीण भद्रपुर में उस वैर का बढ़ना, गोरिधरि उदयराम-भानुमती भरत-कीर्ति अर्जुन-यूथिका के अन्त तक सन्तान की सूचना विन्दाक्रान्त से बिम्बस्थल छूटकर प्रतिहार जयत्पाल को फिर मारवाड़ राज्य का प्राप्त होना, गोभिलों का जैतारण पुर को भागना,सांभर के राजा अर्जुन के पुत्र शत्रुजित्-कनकप्रभा सोमदत्त-नन्दा दुक्खन्त-ललिता के अन्त तक वंश का वर्णन, बंस अमर और यादव करण का माराजाना, दुक्खन्त के पुत्र भीम का चन्द्रावलि से विवाह करना उसकी सन्तान लक्ष्मण रमा परसुराम-श्री रघुराम,दया के कुल की परंपरा को कथन, मंगल प्रतिहार का सांभर को लेना, रघुराम का ब्रध्नपुर (भाणपुरा अथवा बधनोर)

सुमिरावहु इहिँ बैर नन, जामिज ज्वलन स्वभाव ॥ २ ॥
बंधि प्रबंध करोल बहु, दये स्वसासुत संग ॥
प्रचुर रचायो तिन पटुन, रस आखेटक रंग ॥ ३ ॥
नाहर जिम हत्थन हनैं, गंजि नाहरन ग्राम ॥
अक्खिय जग याको अपर, नाहरराज१३४हु नाम ॥ ४ ॥

[षट्पात्]

इक दिवस चहुवान तुरग आरूढ बिखम बन ॥
एकाकी१अतिदूर गयो मृगयारस सज्जन ॥
रहि पद्धति दुव२रत्ति अद्रि अर्बुद तीजे३दिन ॥
मारत मत्त मइंद अप्प पहुँच्यो सम्भर इन ॥
तँहँ ताहि अधिक लग्गिय छुहा हयजुत भोजन ध्येयपहुव ॥
उत्तर्यो तबहि हनि कोल इक सुभ ईसानीसिखर भुव ॥ ५ ॥
अप्प उचित कछु रक्खि सेस तुरगहिँ खवाय पल ॥
संध्याबंदन सद्धि पितर१सुर२मुनिन३अप्पि जल ॥
पावकसिद्ध सु पलल कर्यो सुचि सूलप्रोत करि ॥
बैश्वदेव बिधि बिरचि खानलग्गो दोनन भरि ॥
पिट्ठिसौं हत्थ कढि अग्ग इक ओड्यो काहुक सूल्य हित ॥

का बैर याद मत करना क्योंकि भाणेज का स्वभाव अग्नि के समान है ॥ २ ॥ यह प्रबन्ध करके शिकार खिलानेवाले (शिकार की खबर देनेवाले) लोगों को बहिन के पुत्र की साथ करदिये जिन चतुरों ने शिकार का बहुत रंग लगादिया ॥ ३ ॥ जैसे सिंह अन्य पशुओं को मारता है इसप्रकार हाथों से सिंहों के समूह मारे इसकारण से इसका दूसरा नाम लोक में नाहरराज कहागया ॥ ४ ॥ घोड़े पर चढाहुआ अकेला शिकार करने गया सो मार्ग में दो रात्रि रहकर तीजे दिन आबू पर्वत पर सिंहों को मारता आबू पर चहुवाणों का राजा गया१क्षुधा२कर्तव्य३सूवर को मारकर४आबू पर ईशानी शिखर है उसकी भूमि पर ५बाकी का मांस घोड़े को खिलाकर ६अग्नि पर भुनाहुआ मांस जो सूल में पिरोकर अग्नि पर सेकागया उससे बैश्वदेव (अन्न से होम, बलिदान, अतिथिभोजन करने को बैश्वदेव कर्म कहते हैं) करके७दूना (वृक्ष के पत्रों से बनायाहुआ पात्र) में भरकर खानेलगा।

सुमिरावहु इहिँ बैर नन, जामिज ज्वलन स्वभाव ॥ २ ॥
बंधि प्रबंध करोल बहु, दये स्वसासुत संग ॥
प्रचुर रचायो तिन पटुन, रस आखेटक रंग ॥ ३ ॥
नाहर जिम हत्थन हनैं, गंजि नाहरन ग्राम ॥
अक्खिय जग याको अपर, नाहरराज१३४हु नाम ॥ ४ ॥

[षट्पात्]

इक दिवस चहुवान तुरग आरूढ विखम बन ॥
एकाकी१अतिदूर गयो मृगयारस सज्जन ॥
रहि पद्धति दुव२रत्ति अद्रि अर्बुद तीजे३दिन ॥
मारत मत्त मइंद अप्प पहुँच्यो सम्भर इन ॥
तँहँ ताहि अधिक लग्गिय छुहा हयजुत भोजन ध्येयहुव ॥
उत्तरयो तबहि हनि कोल इक सुभ ईसानीसिखर भुव॥५॥
अप्प उचित कछु रक्खि सेस तुरगहिँ खवाय पल ॥
संध्याबंदन सद्धि पितर१सुर२मुनिन३अप्पि जल ॥
पावकसिद्ध सु पलल करयो सुचि सूलप्रोत करि ॥
बैश्वदेव बिधि बिरचि खानलग्गो दोनन भरि॥
पिठ्ठिसौँ हत्थ कढि अग्ग इक ओड्यो काहुक सूल्य हित ॥

का बैर याद मत करना क्योंकि भाणेज का स्वभाव अग्नि के समान है ॥ २ ॥ यह प्रबन्ध करके शिकार खिलानेवाले (शिकार की खबर देनेवाले) लोगों को बहिन के पुत्र की साथ करदिये जिन चतुरों ने शिकार का बहुत रंग लगादिया ॥ ३ ॥ जैसे सिंह अन्य पशुओं को मारता है इसप्रकार हाथों से सिंहों के समूह मारे इसकारण से इसका दूसरा नाम लोक में नाहरराज कहागया ॥ ४ ॥ घोड़े पर चढाहुआ अकेला शिकार करने गया सो मार्ग में दो रात्रि रहकर तीजे दिन आबू पर्वत पर सिंहों को मारता आप पर चहुवाणों का राजा गया१क्षुधा२कर्तव्य३सूवर को मारकर४आबू पर ईशानी शिखर है उसकी भूमि पर ५बाकी का मांस घोड़े को खिलाकर ६अग्नि पर भुनाहुआ मांस जो सूल में पिरोकर अग्नि पर सेंकागया उससे वैश्वदेव (अन्न से होम, वलिदान, अतिथिभोजन करने को वैश्वदेव कर्म कहते हैं) करके७दूना (वृक्ष के पत्रों से वनायाहुआ पात्र) में भरकर खानेलगा

दया कह्यो सुतसुत भुव दब्बहु, गुन बहु पाय वृथा जिन गब्बहु॥
पुत्रक कै बीरन गति पावहु, कै साकम्भर भूप कहावहु ॥१२॥
समरसिंह मारयो मंगलसुत, निर्जरलोक गयो अप्पहु नुत ॥
जनत तनूज छत्रिया जाको, तुम अब लाल कुमावहु ताको।१३।
चिरतैं गूढ रोकि हम रक्खी, उचित निहारि अज्ज यह अक्खी ॥
सूकर१सिंह२हनैं हि न सरिहैं, प्रतिहारन गंजे कल परिहैं ॥१४॥
बय तव लग्यो सत्रहस१७बच्छरै, मंडहु बासुदेवसम मच्छर ॥
बंसहिं मच्छरीक जिहिं बज्जत, जो नहि वैरगयोकरि गज्जत१५
पितामही सासन इम पावत, नत्ती कहिय बीर उफनावत ॥
जननी चिरँकरि मोहि जनाई, बेस बनन भ्रमि मोघ बिताई।१६।
श्रीदुर्गा गर्त देस१सुनायो, पिता हन्यो२सु बैर अब पायो ॥
करिबो पोरुख अवधि सुज्झपर, नियति अधीन फलहिं पावत नर१७
इम निज पितामही सन अक्खिय, रनबुंध बीर बीर पुनि रक्खिय॥
दम्मं दुलक्ख३०००००चक्रधरसौं लहि,

दया नामक माणिक्यराज की दादी ने कहा कि हे पौत्र! तुम्हारी भूमि को दया- दया नामक माणिक्यराज की दादी ने कहा कि हे पौत्र! तुम्हारी भूमि को दबाओ और वीरता के गुण पाकर वृथा गर्व मत करो. हे पुत्र! यातो वीरों की गति को पाओ (युद्ध करके मारे जाओ) अथवा सांभर का राजा कहाओ (सांभर पीछा लो) मंगल के पुत्र ने तुम्हारे पिता समरसिंह को मारा है वह स्तुतियोग्य देवलोक में गया है सो जिस कार्य के लिये चात्रिया स्त्रियें पुत्र जनती हैं हे लाल तू भी वह कार्य कर, अर्थात् पिता का वैर ले ॥ १३ ॥ इस वार्ता को हम ने बहुत समय से छिपा रक्खी थी आज वह कही है १सूवर२प्रतिहारों को विजय करेगा जब चैन पड़ेगा३वर्ष४वासुदेव चहुवान ने श्रीकृष्ण के साथ मत्सरता की थी ऐसे करो (पराये उत्कर्ष को नहीं चाहकर अपना उत्कर्ष चाहने को मत्सरता कहते हैं) इसीकारण से चहुवाणों के वंश को मच्छरीक कहते हैं. वे चहुवान वैर को गयाहुआ जानकर गर्जना नहीं करते५दादी की आज्ञा६वीर रस में उफनते हुए पोते ने कहा.७देरी से जनाई इससे वनों में भ्रमकर आयु वृथा बिता दी ॥१६॥८गयाहुआ देश नो देवी ने सुनाया९ अवधि पर्यन्त पराक्रम करना मेरे हाथ है और मनुष्यों को फल भाग्य से मिलते हैं॥१७॥१०युद्ध में पंडित उस वीर ने फिर वीरों को नौकर रक्खे११ रुपये चक्रधर तँवर से लेकर सेना सजी ॥ १८ ॥

दया कह्यो सुतसुत भुव दब्बहु, गुन बहु पाय वृथा जिन गव्बहु॥
पुत्रक कै बीरन गति पावहु, कै साकम्भर भूप कहावहु ॥१२॥
समरसिंह मारयो मंगलसुत, निर्जरलोक गयो अप्पहु नुत ॥
जनत तनूज छत्रिया जाको, तुम अब लाल कुमावहु ताको।१३।
चिरतैं गूढ रोकि हम रक्खी, उचित निहारि अज्ज यह अक्खी ॥
सूकर१सिंह२हनैं हि न सरिहैं, प्रतिहारन गंजे कल परिहैं ॥१४॥
बय तव लग्यो सत्रहम१७बच्छर३, मंडहु बासुदेव४सम मच्छर ॥
बंसहिं मच्छरीक जिंहिं बज्जत, जो नहि बैरगयोकरि गज्जत१५
पितामही सासन इम पावत, नत्ती कहिय बीर६ उफनावत ॥
जननी चिरँकरि मोहि जनाई, बेस बनन भ्रमि मोघ बिताई।१६।
श्रीदुर्गा गर्त देस१सुनायो, पिता हन्यो२सु बैर अब पायो ॥
करिबो पोरुख अवधि मुज्झपर, नियति अधीन फलहिं पावत नर१७
इम निज पितामही सन अक्खिय, रनबुध बीर बीर पुनि रक्खिय॥
दम्म११ दुलक्ख३०००००चक्रधरसौं लहि,

दया नामक माणिक्यराज की दादी ने कहा कि हे पौत्र! तुम्हारी भूमि को दया-कर दबाओ और वीरता के गुण पाकर वृथा गर्व मत करो. हे पुत्र! या तो वीरों की गति को पाओ (युद्ध करके मारे जाओ) अथवा सांभर का राजा कहाओ (सांभर पीछा लो) मंगल के पुत्र ने तुम्हारे पिता समरसिंह को मारा है वह स्तुतियोग्य देवलोक में गया है सो जिस कार्य के लिये चात्रिया स्त्रियें पुत्र जनती हैं हे लाल तू भी वह कार्य कर, अर्थात् पिता का वैर ले ॥ १३ ॥ इस वार्ता को हम ने बहुत समय से छिपा रक्खी थी आज वह कही है १सूवर २प्रतिहारों को विजय करेगा जब चैन पड़ेगा ३वर्ष ४वासुदेव चहुवान ने श्रीकृष्ण के साथ मत्सरता की थी ऐसे करो (पराये उत्कर्ष को नहीं चाहकर अपना उत्कर्ष चाहने को मत्सरता कहते हैं) इसीकारण से चहुवाणों के वंश को मच्छरीक कहते हैं. वे चहुवान वैर को गयाहुआ जानकर गर्जना नहीं करते ५दादी की आज्ञा ६वीर रस में उफनते हुए पोते ने कहा. ७देरी से जनाई इससे वनों में भ्रमकर आयु वृथा बिता दी ॥१६॥ ८गयाहुआ देश तो देवी ने सुनाया ९अवधि पर्यन्त पराक्रम करना मेरे हाथ है और मनुष्यों को फल भाग्य से मिलते हैं॥१७॥१०युद्ध में पंडित उस वीर ने फिर वीरों को नौकर रक्खे ११रुपये चक्रधर तँवर से लेकर सेना सजी ॥ १८ ॥

तातैं वह जिन तकहु करहु मोघ न उपकारहि ॥
करिहैं संभर कहिय अप्प सासन अनुसारहि ॥
विस्वपति लये टोडादि तहँ संबंध सु जीरन परयो॥
जिम जनक१जनक मातुल२तिमहि किम अकांड संसय कर्यो

॥ सारङ्गः ॥

यौं तोमराधीससौं अक्खि चोहान,हंकी चमू भद्द कादंबिनी मान
खुल्ले करी धुज्जिबो दै धराकाज,बाजी चले झंपि ज्यौंलावपैं बाज
बैरीनकौं बंटते विप्फुरे बीर, माये नही देस ज्यौं उप्फनैं छीर ॥
छायो सबै खेहके मेहसौं गैन, व्युत्थानव्है उग्घरे ईसके नैन।२५।
डारी पुरानी करी खल्लरी ईस, चिंती नई बैलपै बाहिबे वीस ॥
चंडीहुनैं चक्खिबे बीर कालेज, आन्यौं स्वयं सिंहमैं वेग आमेज
लै लै लगे अप्पनैं अप्पनैं बाह, हेरंब१औ अग्गिभू२बप्पकी राह
व्हैतीचली साकिनी पानपैं प्रीत, गैतीचली डाकिनी जुग्गिनी गीत
प्रारब्धकौं पुज्जिकैं पत्थरे प्रेत, चिंती वर्पा गिद्धनी चिल्हनी चेत॥
सुंडीरकौं सिक्खिबे पिक्खिबे सेन, बज्जी अकस्मातही नारदीबेन

साथ उपकार किया है उसको वृथा मत करना.चहुवान ने कहा कि आपकी आज्ञा के अनुसार ही करेंगे१वह संबन्ध जीर्ण होगया था२जैसे पिता हैं तैसे ही पिता का मामा हैं ऐसी अवस्था में आपने विना प्रकरण अथवा विना समय यह सन्देह क्यों किया ॥ २३॥भाद्रपद की मेघमाला के समान सेना चली और भूमि को धुजाते हुए हाथी खुले और लवा पक्षी पर बाज जाता है उस वेग से घोड़े चले ॥ २४ ॥ जैसे उफनता हुआ दूध पात्र में नहीं समाता तैसे वीरों के शरीर कवचों में नहीं समाये३आकाश ४समाधि खुलकर शिव के नेत्र खुलगये ॥२५ ॥ पुरानी५गजचर्म को डाल कर बैल पर नई चर्म लादने को शिव ने चाहा६वीरों के कलेजे चखने के लिये७सिंह पैं पलाण किया ॥ २६ ॥ अपने अपने वाहन ले ले कर गणेश और स्वामिकार्तिक पिता (महादेव) के पीछे लगे. रुधिर पीने पर साकिनी (देवी की दासियों)की प्रीति होती चली और डाकिनी व योगिनी (देवी की दासियें) गीत गाती चलीं ॥ २७ ॥ भाग्य की प्रशंसा करके प्रेत(देवयोनि विशेष) फैले८मज्जा को९वीरता को सीखने और सेना को देखने को अचानक नारद की वीणा बजी॥२८॥

तातैं वह जिन तकहु करहु मोघ न उपकारहि ॥
करिहैं संभर कहिय अप्प सासन अनुसारहि ॥
विस्वपति लये टोडादि तँहँ संबंध सु ज़ीरन परयो ॥
जिम जनक१जनक मातुल२तिमहि किम अकांड संसय करयो

॥ सारङ्गः ॥

यौं तोमराधीससौं अक्खि चोहान,हंकी चमू भद्द कादंबिनी मान
खुल्ले करी धुज्जिबो दै धराकाज,बाजी चले झंपि ज्यौंलावपैं बाज
बैरीनकौं बंटते विप्फुरे बीर, माये नहीं दंस ज्यौं उप्फनैं छीर ॥
छायो सबै खेहके मेहसौं गैन, व्युत्थानव्है उग्घरे ईसके नैन।२५।
डारी पुरानी करी खल्लरी ईस, चिंती नई बैलपै बाहिबे बीस ॥
चंडीहुनैं चक्खिबे बीरे कालेज, आन्यौं स्वयं सिंहमैं बेग आमेज
लै लै लगे अप्पनैं अप्पनैं वाह, हेरंब१औ अग्गिभू२बप्पकी राह
व्हैतीचली साकिनी पानपैं प्रीत, गैतीचली डाकिनी जुग्गिनी गीत
प्रारब्धकौं पुज्जिकैं पत्थरे प्रेत, चिंती वर्पा गिद्धनी चिल्हनी चेत॥
सुंडीरकौं सिक्खिबे पिक्खिबे सेन, बज्जी अकस्मातही नारदीबेन

साथ उपकार किया है उसको वृथा मत करना.चहुवान ने कहा कि आपकी आज्ञा के अनुसार ही करेंगे१वह संबन्ध जीर्ण होगया था२जैसे पिता हैं तैसे ही पिता का मामा हैं ऐसी अवस्था में आपने बिना प्रकरण अथवा बिना समय यह सन्देह क्यों किया ॥ २३॥भाद्रपद की मेघमाला के समान सेना चली और भूमि को धुजाते हुए हाथी खुले और लवा पक्षी पर बाज जाता है उस वेग से घोड़े चले ॥ २४ ॥ जैसे उफनता हुआ दूध पात्र में नहीं समाता तैसे वीरों के शरीर कवचों में नहीं समाये३आकाश४समाधि खुलकर शिव के नेत्र खुलगये ॥२५ ॥ पुरानी५गजचर्म को डाल कर बैल पर नई चर्म लादने को शिव ने चाहा६वीरों के कलेजे चखने के लिये७सिंह पैं पलाण किया ॥ २६ ॥ अपने अपने वाहन ले ले कर गणेश और स्वामिकार्तिक पिता (महादेव) के पीछे लगे. रुधिर पीने पर साकिनी (देवी की दासियों)की प्रीति होती चली और डाकिनी व योगिनी (देवी की दासियें) गीत गाती चलीं ॥ २७ ॥ भाग्य की प्रशंसा करके प्रेत(देवयोनि विशेष) फैले८मज्जा को९वीरता को सीखने और सेना को देखने को अचानक नारद की वीणा बजी॥२८॥

दो रैं लगे पिट्ठिके बेरमैं दच्छ, ईसानज्यौं अक्कपैं रच्छके पच्छ ३६
सादीनके पाय के झंझटैं सूर, चंपैं बली कन्ह ज्यौं चंड चाणूर॥
केते चढैं केतुपैं टारिबे काय, जानौं नटी मत्त ज्यौं बंसपैं जाय
बुल्लैं कटारीनतैं फट्टते बच्छ, रेजा मनौं दोहरे दारिबे दच्छ ॥
तक्राटतैं कै दही मंथनीमाँहिं, पारावती वानिकैं निब्बली नाँहिं
अच्छी बरच्छी लगैं सुंडिके आय, पच्छीसकी त्रोटिज्यौं पन्नगैं पाय
छुट्टैं कहाँ देहतैं प्रानकी रोक, ज्यौं भूप बैदेहतैं नारकी लोक ३९
कंपे कहाँ भीरु कुक्कैं मुरे मग्ग, सिद्धी मनौं अट्ठ८गाधेयके अग्ग॥
बाराहकी दक्ष१औ कुम्भकी पिट्ठि२, नैंबेलगीं भारतैं धारतैं निट्ठि
फुट्टैं करी उच्छटैं के महामत्त, गैंगत्त१ठाँ ओर२व्है ओर१ठाँ गत्त२
चोफारव्है भद्रजातीनके मत्थ, मुत्ती झरैं भाद्रके मेघ ज्यौं तत्थ
बाहित्थतैं निक्खसैं रत्तकी धार, ज्यौं साँवरे सैलतैं गैरिकासार ॥
जासौं डरैं भीरु तापैं किते जाय, गाधेयपैं ज्यौं हरिश्चन्द्र भूराय॥

१समय में चतुर२कितनेक लोग पीठ पर लगकर दौड़ते हैं जैसे राक्षस के पक्ष में होकर महादेव सूर्य के पीछे दौड़े थे (यह एक प्राचीन कथा है.)घोड़ों के सवारों के पैर पकड़कर शूर झटकते हैं सो मानों बलदेव और श्रीकृष्ण चंड और चाणूर मल्लों को झटकते हैं३ध्वजा पर चढते हैं ॥३७॥ ४कटारियों से हृदय फटते हैं सो मानों चतुर लोग दोहरे रेजों (वस्त्र विशेष) को चीरते हैं किधों दही की गागर में मन्थान दंड (रई) का शब्द होता है किधों बल पूर्वक कपोत की बोली होती है ॥ ३८ ॥५हाथी की सुंड में बरछी लगती है सो मानों गरुड़ की चंचू में सर्प लटकता है ॥ ३९॥६मार्ग से मुड़कर कायर ऐसे कांपते हैं जैसे विश्वामित्र के आगे आठों सिद्धियां कांपैं७नमने लगीं ॥ ४० ॥ बाणों से हाथी फूटकर महावत उछटते हैं और हाथियों के अंग और के और जगह होजाते हैं अथवा हाथियों के शरीरों के स्थान में अन्य होजाते हैं और उन अन्यों के स्थान पर गात्र (सकट) जाखड़े होते हैं. भद्रजाति हाथियों के मस्तक चौफाड़ होकर भाद्रपद मास के मेघ के समान मोतियों का झड़ होता है ॥ ४१ ॥ हाथियों के ललाट के अधोभाग (पीतवान) से रुधिर की धारा निकलती है जैसे काले पर्वत से गैरों का रस निकलता है उससे कितने ही कायर डरते हैं और कितने ही उस पर ऐसे जाते हैं जैसे विश्वामित्र पैं हरिश्चंद्र भूपति गया था ॥४२॥

दोरैं लगे पिट्ठिके बेरमैं दच्छ, ईसानज्यौं अक्कपैं रच्छके पच्छ ३६
सादीनके पाय के भ्भ्क्टैं सूर, चंपैं बली कन्ह ज्यौं चंड चाणूर॥
केते चढैं केतुपैं टारिबे काय, जानौं नटी मत्त ज्यौं बंसपैं जाय
बुल्लैं कटारीनतैं फट्टते बच्छ, रेजा मनौं दोहरे दारिबे दच्छ ॥
तक्काटतैं कै दही मंथनीमाँहिं, पारावती बानिकैं निव्वली नाँहिं
अच्छी बरच्छी लगैं सुंडिके आय, पच्छीसकी त्रोटि ज्यौं पन्नगैं पाय
छुट्टैं कहाँ देहतैं प्रानकी रोक, ज्यौं भूप बैदेहतैं नारकी लोक३९
कंपे कहाँ भीरु कुक्कैं मुरे मग्ग, सिद्धी मनौं अट्ठ८गाधेयके अग्ग॥
बाराहकी दट्ठ१ओ कुम्भकी पिट्ठि२,नैबेलगी भारतैं धारतैं निट्ठि
फुट्टैं करी उच्छटैं के महामत्त,गैगत्त१ठाँ ओर२व्है ओर१ठाँ गत्त२
चोफार व्है भद्रजातीनके मत्थ, मुत्ती भ्करैं भाद्रके मेघ ज्यौं तत्थ
बाहित्थतैं निक्खसैं रत्तकी धार, ज्यौं साँवरे सैलतैं गैरिकासार॥
जासौं डरैं भीरु तापैं किते जाय, गाधेयपैं ज्यौं हरिश्चन्द्र भूराय॥

१समय में चतुर२कितनेक लोग पीठ पर लगकर दौड़ते हैं जैसे राक्षस के पक्ष में होकर महादेव सूर्य के पीछे दौड़ थे (यह एक प्राचीन कथा है.)घोड़ों के सवारों के पैर पकड़कर शूर भटकते हैं सो मानों बलदेव और श्रीकृष्ण चंड और चाणूर मल्लों को भटकते हैं३ध्वजा पर चढते हैं ॥३७॥ ४कटारियों से हृदय फटते हैं सो मानों चतुर लोग दोहरे रेजों (वस्त्र विशेष) को चीरते हैं किंधों दही की गागर में मन्थान दंड (रई) का शब्द होता है किंधों बल पूर्वक कपोत की बोली होती है ॥ ३८ ॥५हाथी की सुंड में बरछी लगती है सो मानों गरुड़ की चंचू में सर्प लटकता है ॥ ३९॥६मार्ग से मुड़कर कायर ऐसे कांपते हैं जैसे विश्वामित्र के आगे आठों सिद्धियां कांपैं७नमने लगी ॥ ४० ॥ बाणों से हाथी फूटकर महावत उछटते हैं और हाथियों के अंग और के और जगह होजाते हैं अथवा हाथियों के शरीरों के स्थान में अन्य होजाते हैं और उन अन्यों के स्थान पर गात्र (सकट) जाखड़े होते हैं. भद्रजाति हाथियों के मस्तक चौफाड़ होकर भाद्रपद मास के मेघ के समान मोतियों का भड़ होता है ॥ ४१ ॥ हाथियों के ललाट के अधोभाग (पीलवान) से रुधिर की धारा निकलती है जैसे काले पर्वत से गैरों का रस निकलता है उससे कितने ही कायर डरते हैं और कितने ही उस पर ऐसे जाते हैं जैसे विश्वामित्र पै हरिश्चन्द्र भूपति गया था ॥४२॥

जुज्झारकी मुच्छ भूसौं करैं बत्त, बुल्लैं किती बक्र तू मैं जिती मत्त॥
कोदंडकी जंघद्वै२यौं नमैं काल, मत्ती नटी लेत ज्यौं फीलपैं फाल४९
बुल्लंत ज्या प्रानकी गाहकी घत्ति, चल्लैं चटट्ठैं घटीजंत्र ज्यौं रत्ति॥
भिंटैं नही रत्तहू बानके पच्छ, अच्छे गिनैं अठ्ठ८ज्यौं टारि बीभच्छ५०
बुल्लैं किते खग्ग[2] यौं आकरेपान, गोविंदके[3] अग्ग ज्यौं झल्लरी गान॥
के छिंछि छुट्टैं हबक्कैं घनैं घाय, धारा मनौं जावकी[4] जंत्रकी जाय५१
बाजारमैं मत्त ज्यौं साकिनी सत्थ, घल्लैं घनी घुम्मिकैं बीरसौं बत्थ॥
लोटैं लगे इक्कपैं इक्क बेहोस, खोले मनौं देवनैं म्रृत्युके कोस[5]५२॥
वैखानसी वृत्ति लौं के महावीर, संचैं नही आयुहू कल्हिके सीर॥
चल्लैं गदा १ तोत्र[6] २ कत्ती ३ छुरी ४ चक्र ५,
झारैं खरे खग्ग८के सँव ज्यौं सक्र॥ ५३ ॥
के कर्त्तरी ७ ऊन ८ त्यौं सूल ९ कट्टार १०,
पत्री ११ बरच्छी १२ इलीं १३ निक्खसैं पार॥
झेलैं कटे सीस यौं उद्ध कामौंरि[11], गैंदा गहैं बाल ज्यौं औरकौं टारि

को धारण करके॥ ४८॥ बीरों की मूँछें भौंहों से बातें करती हैं कि तू कितनी टेढी है अर्थात् कुछ टेढी नहीं है जैसी कि मैं मस्त होकर टेढी हूं? धनुष की२हाथी पर॥४९॥प्राणों की ग्राहकी रखकर प्रत्यंचा बोलती है कि जैसे रात्रि में अरहट चरराट शब्द करके चलता है. बाण इतने वेग से चलते हैं कि अपने पंखों के रुधिर लगने ही नहीं देते हैं सो मानों नव ही रसों में बीभत्स रस को छोडकर बाकी के आठ रसों को उत्तम समझते हैं (रुधिर लगने से बीभत्स रस होजाता है इससे रुधिर को लगने ही नहीं देते)॥५०॥ तरवार के तेज पाण लगने से३विष्णु भगवान् के आगे४जावक के रंग से भरे हुए जल के फुँहारे की धार जावे जैसे॥ ५१ ॥५मानों मृत्यु के खजाने खोलदिये हैं॥ ५२॥ वानप्रस्थ वृत्ति के समान कल के सूर्य के लिये अपनी आयु का संचय नहीं करते.वानप्रस्थ आश्रम वाले आगामी दिन के लिये किसी वस्तु का संचय नहीं करते हैंऐसे हीवीर लोक भी अपनी आयु आगामी दिन के लिये नहीं रखते६भाला७इन्द्र वज्र पटके जैसे॥५३॥ ८खड्ग विशेष९बाण१० गुप्ती (शस्त्रविशेष). कटेहुए मस्तकों को११महादेव ऊपर ही झेलते हैं

जुज्झारकी मुच्छ भूसौं करैं बत्त, बुल्लैं किती बक्र तू मैं जिती मत्त॥
कोदंडकी जंघद्वै२यौं नमैं काल, मत्ती नटी लेत ज्यौं फीलपैं फाल४९
बुल्लंत ज्या प्रानकी गाहकी घत्ति, चल्लैं चटक्कैं घटीजंत्र ज्यौं रत्ति॥
भिंटैं नही रत्तहू बानके पच्छ, अच्छे गिनैं अठ्ठ ज्यौं टारि बीभच्छ५०
बुल्लैं किते खग्ग३ यौं आकरेपान, गोविंदकेँ अग्ग ज्यौं झल्लरी गान॥
के छिंछि छुट्टैं हबक्कैं घनैं घाय, धारा मनौं जावकी जंत्रकी जाय५१
बाजारमैं मत्त ज्यौं साकिनी सत्थ, घल्लैं घनी घुम्मिकैं बीरसौं बत्थ॥
लोटैं लगे इक्कपैं इक्क बेहोस, खोले मनौं दैवनैं मृत्युके कोस५२
वैखानसी वृत्ति लौं के महावीर, संचैं नही आयुहू कल्हिके सीर॥
चल्लैं गदा १ तोत्र २ कत्ती ३ छुरी ४ चक्र ५,
झारैं खरे खग्ग६के संब ज्यौं सक्र॥ ५३॥
के कत्तरी ७ ऊन ८ त्यौं सूल ९ कट्टार १०,
पत्री ११ बरच्छी १२ इली १३ निक्खसैं पार॥
झेलैं कटे सीस यौं उद्द कामारि, गैंदा गहैं बाल ज्यौं ओरकौं टारि

को धारण करके॥ ४८॥ वीरों की मूँछें भौंहों से बातें करती हैं कि तू कितनी टेढी है अर्थात् कुछ टेढी नहीं है जैसी कि मैं मस्त होकर टेढी हूं?धनुष की२हाथी पर॥४९॥प्राणों की ग्राहकी रखकर प्रत्यंचा बोलती है कि जैसे रात्रि में अरहट घरराट शब्द करके चलता है. बाण इतने वेग से चलते हैं कि अपने पंखों के रुधिर लगने ही नहीं देते हैं सो मानों नव ही रसों में बीभत्स रस को छोडकर बाकी के आठ रसों को उत्तम समझते हैं (रुधिर लगने से बीभत्स रस होजाता है इससे रुधिर को लगने ही नहीं देते)॥५०॥ तरवार के तेज पाण लगने से३विष्णु भगवान् के आगे४जावक के रंग से भरे हुए जल के फ़ुँहारे की धार जावे जैसे॥ ५१ ॥५मानों मृत्यु के खजाने खोलदिये हैं॥ ५२॥ वानप्रस्थ वृत्ति के समान कल के सूर्य के लिये अपनी आयु का संचय नहीं करते.वानप्रस्थ आश्रम वाले आगामी दिन के लिये किसी वस्तु का संचय नहीं करते हैं ऐसे ही वीर लोक भी अपनी आयु आगामी दिन के लिये नहीं रखते६भाला७इन्द्र वज्र पटके जैसे॥५३॥ ८खड्ग विशेष९बाण१० गुप्ती (शस्त्रविशेष). कटेहुए मस्तकों को११महादेव ऊपर ही झेलते हैं

चोरैं कहाँ ओरसौं सूरको चेत, होरैं कहाँ जोरसौं उप्फनैं हेत ॥
मोरैं कहाँ ऊढ ज्यौं बाँहसौं बाँह, छोरैं कहाँ गूढ ज्यौं कूपकीछाँह६२
घालैं कहाँ आंखिमैं आंखि अछीहि, झालैं कहाँ हत्थसौं दूर ठछीहि
अछीहि डारैं कहाँ अप्पनी माल, गछीहि डारैं मनौं मोहके जाल ६३
यौंयौं बिमानावली३ बीर बैठारि, जैबेलगी नाककौं नाकिनी नारि
साकंभरीमच्छरीयौंजुरयो जंग, खायो प्रतीहारकोचक्र चो४अंग।६४।
भाई हने रुद्र११ही बेनु५ बंसीय, सौं धीरके पुत्र तीनौं३प्रसंसीय॥

काका उभैं२थाल६के बंधु पंचास,
चालीससै ४००० बाहिनी७ और त्यौंतास ॥ ६५ ॥

रक्खे इते त्यागमैं मच्छरीराय८, नीकैं सुनौं जो बन्यो बच्छरीन्याय९
केतो बढो सौरसौं चांद्र जो मान, आवैंनहीं काम सो अग्ग अख्यान
ज्यौंअब्द१मैंरुद्र११संख्यातिथी-हास, अग्गैंघटीतीन३हूनित्यव्हैंनास।

जोड़ती है ॥ ६१ ॥ दूसरी ओर से शूरों के चित्त को चोरती है और कहीं उफने हुए स्नेह से निहोरती है १ विवाहे हुए के समान ॥ ६२॥ वीरों के नेत्रों में अपने २ तुलहुए नेत्र डालती है और अपने हाथों में तुली (तोली) हुई माला को वीरों के गले में डालती है सो मानों मोह की दृढ जाल डालती है ॥ ६३ ॥ ३ विमानों की पंक्ति में वीरों को बिठाकर स्वर्ग की स्त्रियें स्वर्ग को जानेलगीं. सांभरवाल और चहुवाण इस प्रकार जुड़े और प्रतिहार की चतुरंग सेना को चहुवान खागया ।६४। ४वेणु के वंशवालों को५प्रशंसा योग्य६एक थाल में शामिल भोजन करनेवाले पचास भाई ७ सेना ॥६५॥ ८ चहुवाणों के राजा ने इतने त्याग में (संसार से त्याग दिये) रक्खे ९ यहां पर सम्वत्सरी न्याय वनगया है सो श्रेष्ट रीति से सुनो कि सौरवर्ष से चान्द्रवर्ष का मान (प्रमाण) कितना ही बडा है (कल्प के वर्षों की गणना करने में सौरवर्षों से चान्द्रवर्ष अधिक होते हैं. यथा सूर्य की एक संक्रान्ति के तीस अंश होते हैं जिसमें चन्द्रमा की तिथियें कभी इकतीस कभी बत्तीस और कभी इससे भी अधिक भोगजाती हैं सो धान्यराशि नाप के उदाहरण से अर्थात् धान्य की राशि को सौ रुपये भर सेर से तोलोगे तो नाप में कम उतरैगी और पचास रुपये भर नाप से तोलोगे तो अधिक उतरैगी इसीप्रकार सौरमान से चान्द्रमान बडा है) सो यह तो आगे के आख्यान में काम नहीं आता

चोरैं कहाँ ओरसौं सूरको चेत, होरैं कहाँ जोरसौं उप्फनैं हेत ॥
मोरैं कहाँ ऊढ ज्यौं बाँहसौं बाँह, छोरैं कहाँ गूढ ज्यौं कूपकीछाँह६२
घाल्लैं कहाँ आंखिमैं आंखि अह्लीहि, भाल्लैं कहाँ हत्थसौं दूर ठह्लीहि
अह्लीहि डारैं कहाँ अप्पनी माल, गह्लीहि डारैं मनौं मोहके जाल ६३
यौंयौं बिमानावली बीर बैठारि, जैबेलगी नाककौं नाकिनी नारि
साकंभरीमच्छरीयौंजुरयो जंग, खायो प्रतीहारकोचक्र चो४अंग।६४।
भाइ हने रुद्र११ही बेनुं बंसीय, सौं धीरके पुत्र तीनौं३प्रसंसीय॥
काका उभै२थालके बंधु पंचास,
चालीससै ४००० बाँहिनी ओर त्यौंतास ॥ ६५ ॥
रक्खे इते त्यागमैं मच्छरीराय, नीकैं सुनौं जो बन्यो बच्छरीन्याय
केतो बढो सौरसौं चांद्र जो मान, आवैंनहीं काम सो अग्ग अख्यान
ज्यौंअब्द१मैंरुद्र११संख्यातिथी-हास, अग्गैंघटीतीन३हूनित्यव्हैंनास।

जोड़ती है ॥ ६१ ॥ दूसरी ओर से शूरों के चित्त को चोरती है और कहीं उफने हुए स्नेह से निहोरती है १ विवाहे हुए के समान ॥ ६२॥ वीरों के नेत्रों में अपने २ तुलहुए नेत्र डालती है और अपने हाथों में तुली (तोली) हुई माला को वीरों के गले में डालती है सो मानों मोह की दृढ जाल डालती है ॥ ६३ ॥ ३ विमानों की पंक्ति में वीरों को बिठाकर स्वर्ग की स्त्रियें स्वर्ग को जानेलगीं. सांभरवाल और चहुवाण इस प्रकार जुड़े और प्रतिहार की चतुरंग सेना को चहुवान खागया।६४। ४वेणु के वंशवालों को५प्रशंसा योग्य६एक थाल में शामिल भोजन करनेवाले पचास भाई ७ सेना ॥६५॥ ८ चहुवाणों के राजा ने इतने त्याग में (संसार से त्याग दिये) रक्खे ९ यहां पर सम्वत्सरी न्याय वनगया है सो श्रेष्ट रीति से सुनो कि सौरवर्ष से चान्द्रवर्ष का मान (प्रमाण) कितना ही बडा है (कल्प के वर्षों की गणना करने में सौरवर्षों से चान्द्रवर्ष अधिक होते हैं. यथा सूर्य की एक संक्रान्ति के तीस अंश होते हैं जिसमें चन्द्रमा की तिथियें कभी इकतीस कभी बत्तीस और कभी इससे भी अधिक भोगजाती हैं सो धान्यराशि नाप के उदाहरण से अर्थात् धान्य की राशि को सौ रुपये भर सेर से तोलोगे तो नाप में कम उतरैगी और पचास रुपये भर नाप से तोलोगे तो अधिक उतरैगी इसीप्रकार सौरमान से चान्द्रमान बडा है) सो यह तो आगे के आख्यान में काम नहीं आता

सत्रह१७हायन वय समय, बिजय लह्यो सबिबेक ॥ ७१ ॥
गगन बान हय पच्छ२७५०गत, जुगकलि हायन जत्थ ॥
नाहर[2] हनि नाहर[3]सुतन, संभर लिय बलसत्थ ॥ ७२ ॥

[षट्पात्]

पुर साकंभर[4] राज्य विश्वपति अग्ग बढायउ ॥
तासौं नाहरराज अधिक बिस्तृत अपनायउ ॥
चक्रधरहिं दिय कछुक कन१रु उपकार२निवारन ॥
लंघि नगर पिप्पाड आन न दये प्रतिहारन ॥
सततीन३००तीन३००कोसन परिधि अवनि भयो संभर अमल ॥
मंडोवरेस जयसिंहसौं बलिबलि लिय बलि दब्बि बल ॥ ७३ ॥

दोहा

पितामही[12]१अरु निज प्रिया२, ब्रध्ननगर सन बुल्लि ॥
नाहर१३४इम स्यामा१३४१ निरंत[13], भुग्गी भुव फलिफुल्लि ७४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने माणिक्यराजदेवीवरप्रापणगोभिल्लशंकरदाससुताश्यामा १३४१ परिणायनब्रध्नपुरागमनव्यूढवाहिनीनाहरराजरुमारणविरचनप्रतिहारमङ्गलवंशविध्वंसनप्राप्तविजयशाकम्भर राज्यपुनःसमुद्धरणं षट्षष्टितमो६६मयूखः ॥ ६६ ॥

वर्ष की १अवस्था में॥७१॥२नाहर प्रतिहार के पुत्रों को मारकर ३माणिक्यराज (इसका दूसरा नाम नाहर था) ने बल पूर्वक सांभर को लिया॥ ७२॥४सांभरपुर के राज्य को५फैलाहुआ६तीन तीन सौ कोस के घेरवाली७भूमि ८ मंडोवर के पति११बल से९बारंबार१०दबाकर खिराज लिया॥७३॥१२दादी और राणी को १३नियुक्त होकर ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में माणिक्यराज को देवी का वर प्राप्त होना, गोभिल शंकरदास की पुत्री श्यामा से विवाह करना, और ब्रध्नपुर में आकर व्यूह रचना सहित अथवा बड़ी सेना से नाहरराज का सांभर में युद्ध करना, और मंगल प्रतिहार के वंश का नाश करना, और विजय पाकर सांभर के राज्य का फिर उद्धार करने का छासठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६६ ॥ और आदि

सत्तह१७हायन वय समय, बिजय लह्यो सबिबेक ॥ ७१ ॥

गगन बान हय पच्छ२७५०गत, जुगकलि हायन जत्थ ॥

नाहर[2] हनि नाहर[3]सुतन, संभर लिय बलसत्थ ॥ ७२ ॥

[षट्पात्]

पुर साकंभर[4] राज्य विश्वपति अग्ग बढायउ ॥

तासौं नाहरराज अधिक बिस्तृत[5] अपनायउ ॥

चक्रधरहिं दिय कछुक ऋन१रु उपकार२निवारन ॥

लंघि नगर पिप्पाड आन न दये प्रतिहारन ॥

सततीन३००तीन३००कोसन परिधि[6] अवँनि[7] भयो संभर अमल ॥

मंडोवरेस[8] जयसिंहसौं बलि[9]बलि[10] लिय बँलि दब्बि बँल[11] ॥ ७३ ॥

दोहा

पितामही[12]१अरु निज प्रियार, ब्रध्ननगर सन बुल्लि ॥

नाहर१३४इम स्यामा१३४१निरँत[13], भुग्गी भुव फलिफुल्लि ७४

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे तृतीय३राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने माणिक्यराजदेवीवरप्रापणगोभिलशंकरदासुताश्यामा १३४१ परिणायनब्रध्नपुरागमनव्यूढवाहिनीनाहरराजरुमारणविरचनप्रतिहारमङ्गलवंशविध्वंसनप्राप्तविजयशाकम्भरराज्यपुनःसमुद्धरणं षट्षष्टितमो६६मयूखः ॥ ६६ ॥

वर्ष की १अवस्था में॥७१॥३नाहर प्रतिहार के पुत्रों को मारकर२माणिक्यराज (इसका दूसरा नाम नाहर था) ने बल पूर्वक सांभर को लिया॥ ७२॥४सांभरपुर के राज्य को५फैलाहुआ६तीन तीन सौ कोस के घेरवाली७भूमि ८ मंडोवर के पति११बल से९बारंबार१०दबाकर खिराज लिया॥७३॥१२दादी और राणी को १३नियुक्त होकर ॥ ७४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के तीसरे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में माणिक्यराज को देवी का वर प्राप्त होना, गोभिल शंकरदास की पुत्री श्यामा से विवाह करना, और ब्रध्नपुर में आकर व्यूह रचना सहित अथवा बड़ी सेना से नाहरराज का सांभर में युद्ध करना, और मंगल प्रतिहार के वंश का नाश करना, और विजय पाकर सांभर के राज्य का फिर उद्धार करने का छासठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ६६ ॥ और आदि

विप्र[1]१सूत[2]२मागध[3]३बंदीजन[4]४,धाम बखसि सब करे धराधन[5] ॥
पहिलैं द्विजन१चारनन२पाई, इहिंक्रम लई सबन अधिकाई ॥७॥
ललित धाम जिन्ह जिन्ह जे जे लिय,रीति सु मंडि मागधन[6] रक्खिय।
रचि समाँस[7] बरनैं रविमल्लहु[8], पितरन अंहति[9] सुनहु रामपहु ॥८॥

(षट्पात्)

प्रथम१मिजल रामगढ१मिजल दूजी२पलसानौं २ ॥
इहिं क्रम लोहग्गल३रु गूढ४खेतट५सिंगानो६ ॥
काल्लुंड७रु भीवानि८दद्दुरी९मैंम१०सामरन११ ॥
बाँद१२रामपुर१३बहुरि प्रथित[10] खरासिंदू१४पत्तन ॥
दिय ए निकेत[11] चउदह १४ द्विजन सूतन[12] अब अप्पिय समद[13] ॥
पहिलैं कलात१रम्माट२पुर रामराज३पुनि रामन्हद४ ॥९॥
सुकगुफा५रु सिंघाट६बहुरि पत्तन[14] पट्टालय७ ॥
कुंडालिका८रु कुहार९जिमहि निवसैथ धानंजय१० ॥
रीवाँ११मच्छीवाट१२इक्क सतलंज[16] धारजह ॥
काल्लेंद्रिय१३रु सतद्रुसेव्य[17] रुप्पड१४गढून१५सह ॥
दसपंच१५उचित ए चारनन दुर्ग[18] द्रव्य आकर[19] दये ॥
नृपराम सुनहु मागधजनन अग्गैं पंच५हि अप्पिये ॥ १० ॥

[दोहा]

मादवपुर१जेजिम२महत, हितदुलत्तहट्टी३रु ॥
दाधिक४संतिल५ए दये, बखसि मागधन बीरु ॥ ११ ॥
पहिलो ठट्ठिल अप्पयो, भट्टन पुनि भूपाल ॥
कलेश्वर१रु ज्वाला२नगर३, तिम चउत्थ४क्षूनताल ॥१२॥

---

१ ब्राह्मण २ चारण ३ बड़वाभाट ४ स्तुतिपाठक भाटों को धरा दे दे कर ५ राजा बनादिये ॥७॥ ६ बड़वाभाटों ने सब लिख रक्खा है ७ उसको संक्षेप से ८ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल भी कहते हैं राजा रामसिंह आप के पितरों का ९ दान सुनो ॥ ८ ॥ १० प्रसिद्ध ११ ये चौदह स्थान ब्राह्मणों को दिये १२ चारणों को १३ मद सहित ॥ ९ ॥ १४ पुर १५ ग्राम १६ जहां पर सतलज नदी की एक धारा है १७ शतद्रु नदी से सेया जानेवाला १८ नगर १९ द्रव्यों की खान दिये

विप्र[१]१सूत[२]२मागध[३]३बंदीजन[४]४,धाम बखसि सब करे धराधनें[५] ॥
पहिलैं द्विजन१चारनन२पाई, इहिँक्रम लई सबन अधिकाई ॥७॥
लालित धाम जिन्ह जिन्ह जे जे लिय,रीति सु मंडि मागधन[६] रक्खिय।
रचि समाँस[७] बरनैं रविमल्लहु[८], पितरन[९] अंहति सुनहु रामपहु ॥८॥

(षट्पात्)

प्रथम१मिजल रामगढ१मिजल दूजी२पलसानों २ ॥
इहिँ क्रम लोहग्गल३रु गूढ४खेलट५सिंगानो६ ॥
कालुंड७रु भीवानि८दद्दुरी९मैंम१०सामरन११ ॥
बाँद१२रामपुर१३बहुरि प्रथित[१०] खरासिंदू१४पत्तन ॥
दिय ए निकेत[११] चउदह १४ द्विजन सूतन[१२] अब अप्पिय समद[१३] ॥
पहिलैं कलात१रम्माट२पुर रामराज३पुनि रामन्हद४ ॥९॥
सुकगुफा५रु सिंघाट६बहुरि पत्तन[१४] पट्टालय७ ॥
कुंडालिका८रु कुहार९जिमहि निवसथ[१५] धानंजय१० ॥
रीवाँ११मच्छीबाट१२इक्क सतलंज[१६] धारजह ॥
कालेंद्रिय१३रु सतद्रुसेव्य[१७] रुप्पड१४गढून१५सह ॥
दसपंच१५उचित ए चारनन द्रंगे[१८] द्रव्य आकरे[१९] दये ॥
नृपराम सुनहु मागधजनन अग्गैं पंच५हि अप्पिये ॥ १० ॥

[दोहा]

मार्दवपुर१जेजिम२महत, हितदुलत्तहट्टी३रु ॥
दाधिक४संतिल५ए दये, बखसि मागधन बीरु ॥ ११ ॥
पहिलो ठठ्ठिल अप्पयो, भट्टन पुनि भूपाल ॥
कलेश्वर१रु ज्वाला२नगर३, तिम चउत्थ४ऋनताल ॥१२॥

---

१ ब्राह्मण २ चारण ३ बड़वाभाट ४ स्तुतिपाठक भाटों को धरा दे दे कर ५ राजा बनादिये ॥७॥ ६ बड़वाभाटों ने सब लिख रक्खा है ७ उसको संक्षेप से ८ ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल भी कहते हैं राजा रामसिंह आप के पितरों का ९ दान सुनो ॥ ८ ॥ १० प्रसिद्ध ११ ये चौदह स्थान ब्राह्मणों को दिये १२ चारणों को १३ मद सहित ॥ ९ ॥ १४ पुर १५ ग्राम १६ जहां पर सतलज नदी की एक धारा है १७ शतद्रु नदी से सेया जानेवाला १८ नगर १९ द्रव्यों की खान दिये

चंडकोटि तिनदिनन अम्ह परपुरुख धुरंधर ॥
दिय पौरानिक्क कुलहिं साप अग्गैं अकृतव्रन ॥
आर्यमित्त तव वेहि विहित वंदे कुलवर्द्धन ॥
मुनि कहिय लहहु करि तुष्ट मृड तिन कुल रक्खिय तिमहि करि॥
प्रभुचरितमाँहिं कहिहैं सु सब कछुक लेहु अब कन्नधरि॥१९॥
व्यास सिस्य हुव पंच५पैल१अरु वैसंपायन२ ॥
मुनि जैमिनि३रु सुमंतु४लोमहरखन५सिच्छायन ॥
छात्र सूतकै छ६मुनि सुमति१मित्रयु२अकृतव्रन३ ॥
जाको कास्यप३यहहु अपर अभिधान पुरानन ॥
सावर्णि४सांसपायन५सुबुध अग्निवर्च६ए सबभये ॥
उग्रश्रवा७हु सप्तम७स्वसुत सूत पठित ए सिक्खये ॥ २० ॥

(दोहा)

इम सत्त७न निजछात्र१अरु, सुत२नत्ती३सिखयेहि ॥
जब गुरुकुलकी जीविका, भूसुर लेत भयेहि ॥ २१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

उग्रश्रव आत्मज उपजे दुव२, पुण्यश्रवा१बडे तिनमैं हुव ॥

में दानपात्र हमारे पुरुषा चंडकोटि नामक उन दिनों में धुरंधर थे " अब आगे चारणों की कुछ कथा कहते हैं" लोमहर्षण वंश के सूत कुल को आगे अकृतव्रण (कारयप) नामक मुनि ने श्राप दिया था तब आर्यमित्र नामक सूत ने अपने कुल की वृद्धि करने के अर्थ उन्हीं अकृतव्रण से नमस्कार किया सो सुनकर अकृतव्रण ने कहा कि महादेव को प्रसन्न करके वंशवृद्धि पाओ तब आर्यमित्र ने शिव को प्रसन्न करके अपने कुल को रक्खा वह सब चरित्र हे स्वामी रामसिंह आप के चरित्र में कहेंगे परन्तु कुछ यहां भी कहते हैं सो श्रवण करो ॥ १९ ॥ १वेदव्यास के२शिक्षा के घर पांच शिष्य हुए३जिसका दूसरा नाम पुराणों में कारयप है,४इन छै मुनियों के सिवाय अपना (लोमहर्षण का) पुत्र उग्रश्रवा ये सातों ही लोहमर्षण सूत से पढ़कर शिक्षित हुए ॥ २० ॥ इसप्रकार इन सातों ने भी अपने शिष्य, पुत्र और पौत्रों को पढ़ाये तब गुरुकुल (सूत पौराणिकों) की जीविका (पुराणादिक की कथा करने की जीविका) ब्राह्मणों ने ली ॥ २१ ॥ लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा के दो पुत्र हुए जिनमें बड़ा पुण्यश्रवा और छोटा सगा भाई

चंडकोटि तिनदिनन अम्ह परपुरुख धुरंधर ॥
दिय पौरानिक कुलहिं साप अग्गैं अकृतव्रन ॥
आर्यमित्त तब वेहि विहित वंदे कुलवर्द्धन ॥
मुनि कहिय लहहु करि तुष्ट मृड तिन कुल रक्खिय तिमहि करि॥
प्रभुचरितमाँहिं कहिहैं सु सब कछुक लेहु अब कन्नधरि ॥१९॥
व्यास सिस्य हुव पंच५पैल१अरु वैसंपायन२ ॥
मुनि जैमिनि३रु सुमंतु४लोमहरखन५सिच्छायन ॥
छात्र सूतकै छ६मुनि सुमति१मित्रयु२अकृतव्रन३ ॥
जाको कास्यप३यहहु अपर अभिधान पुरानन ॥
सावर्णि४सांसपायन५सुबुध अग्निवर्ष६ए सबभये ॥
उग्रश्रवा७हु सप्तम७स्वसुत सूत पठित ए सिक्खये ॥ २० ॥

(दोहा)

इम सत्त७न निजछात्र१अरु, सुत२नत्ती३सिखयेहि ॥
जब गुरुकुलकी जीविका, भूसुर लेत भयेहि ॥ २१ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

उग्रश्रव आत्मज उपजे दुव२, पुरायश्रवा१बडे तिनमैं हुव ॥

में दानपात्र हमारे पुरुषा चंडकोटि नामक उन दिनों में धुरंधर थे " अब आगे चारणों की कुछ कथा कहते हैं" लोमहर्षण वंश के सूत कुल को आगे अकृतव्रण (कास्यप) नामक मुनि ने शाप दिया था तब आर्यमित्र नामक सूत ने अपने कुल की वृद्धि करने के अर्थ उन्हीं अकृतव्रण से नमस्कार किया सो सुनकर अकृतव्रण ने कहा कि महादेव को प्रसन्न करके वंशवृद्धि पाओ तब आर्यमित्र ने शिव को प्रसन्न करके अपने कुल को रक्खा वह सब चरित्र हे स्वामी रामसिंह आप के चरित्र में कहेंगे परन्तु कुछ यहां भी कहते हैं सो श्रवण करो ॥ १९ ॥ १वेदव्यास के२शिक्षा के घर पांच शिष्य हुए३जिसका दूसरा नाम पुराणों में कास्यप है,४इन छै मुनियों के सिवाय अपना (लोमहर्षण का) पुत्र उग्रश्रवा ये सातों ही लोहमर्षण सूत से पढ़कर शिक्षित हुए ॥ २० ॥ इसप्रकार इन सातों ने भी अपने शिष्य, पुत्र और पौत्रों को पढाये तब गुरुकुल (सूत पौराणिकों) की जीविका (पुराणादिक की कथा करने की जीविका) ब्राह्मणों ने ली ॥ २१ ॥ लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा के दो पुत्र हुए जिनमें बडा पुरायश्रवा और छोटा सगा भाई

कासी इक नृप खिन नवमा ९ऽऽवृति, वैष्णावव्रतन पुरान सुनैं धृति १८
जाको नाम————जान्यौं, पारायन श्रुति उचित प्रमान्यौं २७
कास्यप तनय छात्र पाठक जँहँ, कास्यप आदि मुनिहु श्रोता तँहँ
अटत अटत भूमित्रहु आये, लखि सु व्यास आसन रिसलाये २८
ऊँचो कर करि सूत कही यह, अहो बढत विप्रन अब आग्रह ॥
जिनसौं दुर्घट सास्त्र गये जब, पौरानिक जीवन जीवत अब।२९।
बक्ता तँहँ संकास यहै सुनि, कह्यो यह न तुमकौंहि दई मुनि ॥
बिप्रहु कहे इहाँ अधिकारी, तुम जो वृत्ति भिन्न किम टारी॥३०॥
सुनि भूमित्र कह्यो धकि रे सठ, व्है परचौर बहुरि मंडै हठ ॥
को गुरु मूढ रही जँहँ कच्ची, सुनि संकास सिटि न कहि सच्ची३१
अकृतब्रन अबलौं सु पचाई, उर गुरु सुत सुतसुत सुधि आई ॥

आदि कुछ नहीं सूझा. बहुतसे दीन ब्राह्मण बलवानों (तपोबलीऔर विद्या वलियों) से जाकर पुकारे ॥ २६ ॥ काशी में एक समय राजा वैष्णव व्रतों में स्थित होकर अठारह पुराणों की नवमी आवृत्ति (आठ वार पहिले सुन लिये थे अब नवमी वार सुनना प्रारंभ किया) सुनता था जिसका नाम ( ) था उसने पारायण सुनना उचित जाना ॥२७॥ वहां पर काश्यप मुनि का पुत्र जो काश्यप का शिष्य भी था वह राजा को सुनानेवाला हुआ और काश्यप मुनि आदि सुननेवाले हुए वहां पर फिरते हुए भूमित्र आये जिन्हों ने व्यासासन (कथा करने के आसन पर) काश्यप के पुत्र(संकास नामक मुनि) को देखकर क्रोध किया ॥२८॥ ऊंचा हाथ करके भूमित्र नामक सूत ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि अब ब्राह्मणों का आग्रह बढता है. जिन ब्राह्मणों से जब कठिनाई आनेवाले शास्त्र चलेगये तब पुराण सुनाने की (हमारी) वृत्ति से जीने लगे हैं ॥ २९ ॥ संकास नामक कथा करनेवाले ब्राह्मण ने कहा कि वेदव्यास मुनि ने पुराण वृत्ति केवल तुमको ही नहीं दी है ब्राह्मण भी इस कार्य के अधिकारी हैं फिर इस वृत्ति को तुम ने ही जुदी कैसे टाली है।३०। भूमित्र ने क्रोध करके कहा कि अरे मूर्ख पराई वस्तु को चुरानेवाला होकर फिर हठ करता है, कौन मूर्ख तेरा गुरु है कि जिससे तेरी बुद्धि इसप्रकार कच्ची रहगई है, यह सुनकर संकास लज्जित होगया और सच्ची बात पीछी नहीं कहसका ॥ ३१ ॥ अकृतव्रण (काश्यप) ने अब तक सहन किया और उर में अपने गुरु (लोमहर्षण) के पुत्र के दौहित्र का

कासी इक नृप खिन नवमा९ऽऽवृति, वैष्णवव्रतन पुरान सुनैं धृति१८
जाको नाम————-जान्यौं, पारायन श्रुति उचित प्रमान्यौं २७
कास्यप तनय छात्र पाठक जँहँ, कास्यप आदि मुनिहु श्रोता तँहँ
अटत अटत भूमित्रहु आये, लखि सु व्यास आसन रिसलाये २८
ऊँचो कर करि सूत कही यह, अहो बढत बिप्रन अब आग्रह ॥
जिनसौं दुर्घट सास्त्र गये जब, पौरानिक जीवन जीवत अब।२९।
बक्ता तँहँ संकास यहै सुनि, कह्यो यह न तुमकौंहि दई मुनि॥
बिप्रहु कहे इहाँ अधिकारी, तुम जो वृत्ति भिन्न किम टारी॥३०॥
सुनि भूमित्र कह्यो धकि रे सठ, व्है परचौर बहुरि मंडै हठ ॥
को गुरु मूढ रही जँहँ कच्ची, सुनि संकास सिटि न कहि सच्ची३१
अकृतव्रन अबलौं सु पचाई, उर गुरु सुत सुतसुत सुधि आई ॥

आदि कुछ नहीं सूझा. बहुतसे दीन ब्राह्मण बलवानों (तपोबलीऔर विद्या बलियों) से जाकर पुकारे ॥ २६ ॥ काशी में एक समय राजा वैष्णव व्रतों में स्थित होकर अठारह पुराणों की नवमी आवृत्ति (आठ वार पहिले सुन लिये थे अब नवमी वार सुनना प्रारंभ किया) सुनता था जिसका नाम ( ) था उसने पारायण सुनना उचित जाना ॥२७॥ वहां पर काश्यप मुनि का पुत्र जो काश्यप का शिष्य भी था वह राजा को सुनानेवाला हुआ और काश्यप मुनि आदि सुननेवाले हुए वहां पर फिरते हुए भूमित्र आये जिन्हों ने व्यासासन (कथा करने के आसन पर) काश्यप के पुत्र(संकास नामक मुनि) को देखकर क्रोध किया ॥२८॥ ऊंचा हाथ करके भूमित्र नामक सूत ने कहा कि आश्चर्य की बात है कि अब ब्राह्मणों का आग्रह बढता है. जिन ब्राह्मणों से जब कठिनाई आनेवाले शास्त्र चलेगये तब पुराण सुनाने की (हमारी) वृत्ति से जीने लगे हैं ॥ २९ ॥ संकास नामक कथा करनेवाले ब्राह्मण ने कहा कि वेदव्यास मुनि ने पुराण वृत्ति केवल तुमको ही नहीं दी है ब्राह्मण भी इस कार्य के अधिकारी हैं फिर इस वृत्ति को तुम ने ही जुदी कैसे टाली है।३०। भूमित्र ने क्रोध करके कहा कि अरे मूर्ख पराई वस्तु को चुरानेवाला होकर फिर हठ करता है, कौन मूर्ख तेरा गुरु है कि जिससे तेरी बुद्धि इसप्रकार कच्ची रहगई है, यह सुनकर संकास लज्जित होगया और सच्ची बात पीछी नहीं कहसका ॥ ३१ ॥ अकृतव्रण (काश्यप) ने अब तक सहन किया और उर में अपने गुरु (लोमहर्षण) के पुत्र के दौहित्र का

कथित सु बिप्रन मोघ होय कब, उरग गयो रु रही लेखा अब॥
कुप्पि रु गुरुकुल पाप कुमायो,अब भावी औसो सुधि आयो॥४०॥
तुम द्रुत जाहु अद्रितुहिनाचल, आराधहु भव भक्ति अनर्गल ॥
वृखसेवन हर तुमहिं बतैहैं, द्रुत वृख तुष्ट वृद्धि बर दैहैं ॥ ४१ ॥
ताके बर अन्वय बढिहै तव, भव करिहै हरिहै चिंता भव ॥
यासौं हमहु प्रसन्न अनाग्रह, उक्कमिटहु गुरु बंस रहहु यह ॥४२॥
बासुकिनागसुता अवरी बलि, दैहैं तुमहिं रुद्र संसय दलि ॥
तनय होहिं बीस रु सत१२०तामैं, इम बढिहैं गुरुबंस इलामैं।४३।
साप असह इतरन संहारहिं, तुमकौं आर्यमित्र अब टारहिं ॥
आर्यमित्र यह सुनि गृह आये, पुनि जिततित मृत कुल सुनिपाये
कास्यप कथित तबहि आतुर करि, सेये हर अकपट तप अनुसरि
देह उपरि बल्मक उपदेही, अर्जन लगी गही आति एही ॥ ४५॥
सदय उमा लखि सिवहिं सुनाई, रक्खहु प्रभु न यहै निठुराई ॥
प्रान लयैं बालहिं कैसो पय, सूकैं खेत कहा घन संचय॥ ४६ ॥

को जगाकर ६ यकायक॥ ३९ ॥ब्राह्मणों का कहाहुआ वृथा नहीं होता इस-कारण वह लोकोक्ति सत्य हुई कि सर्प तो निकल गया और लकीर बाकी रहगई. क्रोध के वश गुरु के कुल का नाश करके हम ने भी यह पापकर्म किया है परन्तु अब आगे के लिये यह स्मरण हुआ है कि ॥ ४०॥ शीघ्र हिमाचल पर्वत पर जाकर निरन्तर भक्ति से महादेव की आराधना करो वहां महादेव तुमको बैल (महादेव का बाहन) की सेवा करना बतावेंगे वह वृषभ प्रसन्न होकर शीघ्र ही तुम्हारे वंश के बढने का वर देवेगा ॥ ४१ ॥ उसके वर से तुम्हारा वंश बढैगा महादेव चिन्ता हरेंगे और भव (कुशल) करेंगे इस में हठ छोडकर हम भी प्रसन्न हैं कि हमारा कहाहुआ (श्राप) मिटजाओ और हमारे गुरु का यह वंश बनारहो ॥ ४२ ॥ पुनि सन्देह मेटकर शिव तुमको वासुकि नाग की अवरी नामक पुत्री देवेंगे१पृथ्वी में ॥ ४३ ॥ हमारा श्राप औरोंका नाश करैगा और हे आर्यमित्र तुमको बचादेवेंगे२कुल का मरना सुना ॥ ४४ ॥ आर्यमित्र ने काश्यप का कहना शीघ्र करके कपट रहित होकर महादेव का सेवन किया, जब देह के ऊपर उदेही दूसरी देह इकट्ठी करनेलगी, यह गति होगई तब ॥ ४५ ॥ दया सहित पार्वती ने प्राण-गये पीछे बालक को दूध पाना किस काम का है और खेत सूखने पीछे मेघ

कथित सु बिप्रन मोघ होय कब, उरग गयो रु रही लेखा अब॥
कुप्पि रु गुरुकुल पाप कुमायो,अब भावी असो सुधि आयो॥४०॥
तुम द्रुत जाहु अद्रितुहिनाचल, आराधहु भव भक्ति अनर्गल ॥
वृखसेवन हर तुमहिं बतैहैं, द्रुत वृख तुष्ट वृद्धि बर दैहैं ॥ ४१ ॥
ताके बर अन्वय बढिहै तव, भव करिहै हरिहै चिंता भव ॥
यासौं हमहु प्रसन्न अनाग्रह, उक्कमिटहु गुरु बंस रहहु यह ॥४२॥
बासुकिनागसुता अवरी बलि, दैहैं तुमहिं रुद्र संसय दलि ॥
तनय होहिं बीस रु सत१२०तामैं, इम बढिहैं गुरुबंस इलामैं।४३।
साप असह इतरन संहारहिं, तुमकौं आर्यमित्र अब टारहिं ॥
आर्यमित्र यह सुनि गृह आये, पुनि जिततित मृत कुल सुनिपाये
कास्यप कथित तबहि आतुर करि, सेये हर अकपट तप अनुसरि
देह उपरि बल्मक उपदेही, अर्जन लगी गही आति एही ॥ ४५॥
सदय उमा लखि सिवहिं सुनाई, रक्खहु प्रभु न यहै निठुराई ॥
प्रान लयैं बालहिं कैसो पय, सूकैं खेत कहा घन संचय॥ ४६ ॥

को जगाकर १ यकायक॥ ३९ ॥ब्राह्मणों का कहाहुआ वृथा नहीं होता इस-कारण वह लोकोक्ति सत्य हुई कि सर्प तो निकल गया और लकीर बाकी रहगई. क्रोध के बश गुरु के कुल का नाश करके हम ने भी यह पापकर्म किया है परन्तु अब आगे के लिये यह स्मरण हुआ है कि ॥ ४०॥ शीघ्र हिमाचल पर्वत पर जाकर निरन्तर भक्ति से महादेव की आराधना करो वहां महादेव तुमको बैल (महादेव का वाहन) की सेवा करना बतावेंगे वह वृषभ प्रसन्न होकर शीघ्र ही तुम्हारे वंश के बढने का वर देवेगा ॥ ४१ ॥ उसके वर से तुम्हारा वंश बढैगा महादेव चिन्ता हरेंगे और भव (कुशल) करेंगे इस में हठ छोडकर हम भी प्रसन्न हैं कि हमारा कहाहुआ (श्राप) मिटजाओ और हमारे गुरु का यह वंश बनारहो ॥ ४२ ॥ पुनि सन्देह मेटकर शिव तुमको वासुकि नाग की अवरी नामक पुत्री देवेंगे१पृथ्वी में ॥ ४३ ॥ हमारा श्राप औरोंका नाश करैगा और हे आर्यमित्र तुमको बचादेवेंगे२कुल का मरना सुना ॥ ४४ ॥ आर्यमित्र ने काश्यप का कहना शीघ्र करके कपट रहित होकर महादेव का सेवन किया, जब देह के ऊपर उदेही दूसरी देह इकट्ठी करनेलगी, यह गति होगई तब ॥ ४५ ॥ दया सहित पार्वती ने प्राण-गये पीछे बालक को दूध पाना किस काम का है और खेत सूखने पीछे मेघ

सो जातहिं सिर धरि मम सासन, आदर तव करिहै तजि आसन
अग्गैं[2] सन तुमरोहि देस वह, सरजहु प्रजा तहाँ रहि सुख सह ॥
पौरानिक तब जपत पुरारे[3], स्वीय देस आनर्त सिधारे ॥ ५६॥
तँहँ तैसँहि पाय अवरी[4] तिय, करि गेहाश्रम[5] प्रजा प्रकट किय॥

सत रु बीस १२० उपजे तिनके सुत,
जिनतैं चारन खरबि १२० भेदजुत ॥ ५७ ॥

तिनमैं नवम९भेद बैरोचन, जामैं हम[6] सबही मिश्रणजन ॥
हमरे पुब्बपुरुख कातर[7]कटु, चण्डकोटि[8]तिनदिनन हुते पटु॥५८॥
बुल्लत मिश्रित गुंफि छह्वानी, जिन्ह अभिधा[9] मिश्रन जगजानी
प्रकटि बाद[10] दिसदिस जय पायो, बादिबिहण्डन[11] बिरुद कहायो५९
है जिनकेहि नाम मिश्रन हम, वे तिहिं समय हुते जय[12] उद्यम ॥
पायो तिन नृपसौं पट्टालय, जु इतर[13] नृपन राज्य सम कृतजय६०
इतरहु[14] बहु चारन नृप आश्रित, है तिन्ह नाम सुनहु प्रभु करि हित
संभुदेव२उद्धव३संकरखन४, कासीनाथ५अमर६विद्याधन ॥ ६१ ॥
चन्द्रदेव७भास्कर८बाचस्पति९, देवीदास१०मुरारि११महामति ॥
इत्यादिक पौरानिक सूरिनैं[15], दये धाम पन्द्रह१५पन्द्रह१५दिन ६२
पुनि मागध हरिसेन१प्रभाकर२,ईश्वर३चन्द्र४विजय५गुनआकर ॥
च्यारि४भट्ट धनदेव१देवमनि२, खेमपाल३भैरव४विद्याखनि[16]॥६३॥
इनकौं पुर पंच५रु चउ४अप्पिय,मिजल्लन इम कंगुर भुव मप्पिय

जनेगी १ उठकर ॥ ५५ ॥ २ पहिले से वह देश तुम्हारा ही है ३ महादेव के यह कहते ही वह पौराणिक (आर्यमित्र) अपने आनर्त देश में गया ॥५६॥ ऊपर कहे अनुसार४अवरी नामक स्त्री को पाकर५गृहस्थाश्रम करके सन्तान उत्पन्न की ॥५७॥६ग्रंथकर्ता [सूर्यमल्ल]७कटु बोलने में कायर ॥५८॥८ छहों भाषा को मिलीहुई गूंथकर बोलते थे इससे उनका९नाम मिश्रण हुआ १०शास्त्रार्थ करके११बादिविहंडन ऐसी स्तुति कहाई(मिश्रणों को चारणों के याचक लोग वादविहंडन कहते हैं)॥५९॥१२उद्यम को जीतनेवाले१३दूसरे राजाओं के राज्य की १४ और भी १५पंडितों को १६ विद्या की खान ॥ ६३ ॥

सो जातहि सिर धरि मम सासन, आदर तव करिहे तजि आसन
अग्गैं सेन तुमरोहि देस वह, सरजहु प्रजा तहाँ रहि सुख सह ॥
पौरानिक तब जपत पुरारे, स्वीय देस आनर्त सिधारे ॥ ५६ ॥
तहँ तैसँहि पाय अवरी तिय, करि गेहाश्रमें प्रजा प्रकट किय ॥
सत रु बीस १२० उपजे तिनके सुत,
जिनतैं चारन खरवि १२० भेदजुत ॥ ५७ ॥
तिनमैं नवम९भेद बैरोचन, जामैं हमें सबही मिश्रणाजन ॥
हमरे पुब्बपुरुख कातरकट्टु, चराडकोटि१तिनदिनन हुते पट्टु॥५८॥
बुल्लत मिश्रित गुंफि छह्बानी, जिन्ह अभिधा मिश्रन जगजानी
प्रकटि बादें दिसदिस जय पायो, बादिबिहण्डन बिरुद कहायो५९
है जिनकेहि नाम मिश्रन हम, वे तिहिं समय हुते जयें उद्यम ॥
पायो तिन नृपसौं पट्टालय, जु इतरें नृपन राज्य सम कृतजय६०
इतरेंहु बहु चारन नृप आश्रित, हैं तिन्ह नाम सुनहु प्रभु करि हित
संभुदेव२उद्धव३संकरखन४, कासीनाथ५अमर६बिद्याधन ॥ ६१ ॥
चन्द्रदेव७भास्कर८बाचस्पति९, देवीदास१०मुरारि११महामति ॥
इत्यादिक पौरानिक सूरिनें, दये धाम पन्द्रह१५पन्द्रह१५दिन ६२
पुनि मागध हरिसेन१प्रभाकर२,ईश्वर३चन्द्र४विजय५गुनआकर ॥
च्यारि४भट्ट धनदेव१देवमनि२, खेमपाल३भैरव४बिद्याखँनि॥६३॥
इनकौं पुर पंच५रु चउ४अप्पिय,मिजलन इम कंगुर भुव मप्पिय

जनेगी १ उठकर ॥ ५५ ॥ २ पाहिले से वह देश तुम्हारा ही है ३ महादेव के यह कहते ही वह पौराणिक (आर्यमित्र) अपने आनर्त देश में गया ॥५६॥ ऊपर कहे अनुसार४अवरी नामक स्त्री को पाकर५गृहस्थाश्रम करके सन्तान उत्पन्न की ॥५७॥६ग्रंथकर्ता [सूर्यमल्ल]७कटु बोलने में कायर ॥५८॥८ छहों भाषा को मिलीहुई गूंथकर बोलते थे इससे उनका९नाम मिश्रण हुआ १०शास्त्रार्थ करके११बादिविहंडन ऐसी स्तुति कहाई(मिश्रणों को चारणों के याचक लोग वादविहंडन कहते हैं)॥५९॥१२उद्यम को जीतनेवाले१३दूसरे राजाओं के राज्य की १४ और भी १५पंडितों को १६ विद्या की खान ॥ ६३ ॥

बिंटि नगर लाहोर घोर मंडिय घन संगर ॥
केदारहिं करि जेर स्वसुर जनपद[1] दुव२छिन्नैं ॥
दुव२सिवाय लिखवाय च्यारि४कंगुर बस किन्नैं ॥
दिन कछु तदीय[2] अरि ओर दामि[3] सिक्ख पाय सिर दिव घसंत[4] ॥
नाहरनरेस संभर[5]नगर लै दुलहनि आयो लसंत[6]॥७२॥
त्रिसत३००विप्र[7]बुध तत्थ तीस३०पंडित पौरानिक[8] ॥
खट६मागध[9] चउ४भट्ट[10] बिदित बिद्या बल बानिक ॥
तीनलक्ख३०००००पाइक्क[11] लक्ख१०००००सु बिनीत[12] तुरंगम
मत्त सहँस१०००मातंग[13] जानि पव्वय हुव जंगम[14] ॥
ए जाहि सतत[15] सेवत रहैं बहैं दुलभ जस वीतभय[16] ॥
मानिक्यराज लाहोर इम कंकन[17]सह किन्नौं विजय ॥७३॥

[दोहा]

स्वीर्य स्वसुरकी सीममैं[18], लग्गे अट्ठ८मिल्लान[19] ॥
तिन संटैं निवसथ[20] इतर, दैनकहे चहुवान ॥ ७४ ॥
न लये ते जल्हन नृपति, दै दायज सब द्रव्य ॥
करे बिदा बर१कन्यका२, भुव छुराय निज भव्य[21] ॥ ७५ ॥
इम नृप संभर आयकै, कियउ राज्य दुख कढ्ढि॥
धर्म अनुग[22] भुग्गी धरा, बैरीगन रन बढ्ढि[23] ॥७६ ॥
सौत्रामणि पंद्रह१५सवन[24], बाजपेय[25] मख बीस२० ॥

१स्वसुरा के देश २उस जल्हन के अन्य शत्रुओं को ३दंड देकर ४मस्तक से आकाश को घिसता हुआ(यह लोकोक्ति है कि विजय पाकर ऊपर को उठेहुए का मस्तक ऐसे जाता है कि जैसे मस्तक से ब्रह्मांड को घिसता हुआ जाता होवे)५सांभर नगर में६शोभायमान होताहुआ७ब्राह्मण जाति के पंडित८चारण जाति के पंडित९बड़वा भाट१०स्तुतिपाठ करनेवाले भाट११पैदल१२शिक्षा पायेहुए घोड़े१३हाथी मानों१४चलतेहुए पर्वत हैं ऐसे१५निरन्तर१६निर्भय होकर यश को धारण करता है१७कंकण डोरड़ों सहित विजय किया।७३।१८अपने ससुर की सीम में आठ१९मुकाम हुए थे वे ग्राम दान करदिये जिनके बदले में दूसरे २०ग्राम चहुवाण ने देने कहे ॥ ७४ ॥२१राजा केदार से अपनी सुन्दर भूमि छुडाकर ॥ ७५ ॥२२धर्म के साथ२३काटकर ॥ ७६ ॥ २४ यज्ञ २५ यज्ञविशेष

बिंटि नगर लाहोर घोर मंडिय घन संगर ॥
केदारहिं करि जेर स्वसुर जनपद[1] दुव२छिन्नैं ॥
दुव२सिवाय लिखवाय च्यारि४कंगुर बस किन्नैं ॥
दिन कछु तदीय[2] अरि ओर दमि[3] सिक्ख पाय सिर दिव घसंत[4] ॥
नाहरनरेस संभर[5]नगर लै दुलहनि आयो लसंत[6]॥७२॥
त्रिसत३००विप्रबुध[7] तत्थ तीस३०पंडित पौरानिक[8] ॥
खट६मागध[9] चउ४भट्ट[10] बिदित बिद्या बल बानिक ॥
तीनलक्ख३०००००पाइक्क[11] लक्ख१०००००सु विनीत[12] तुरंगम
मत्त सहँस१०००मातंग[13] जानि पब्बय हुव जंगम[14] ॥
ए जाहि सतत[15] सेवत रहैं बहैं दुलभ जस वीतभय[16] ॥
मानिक्यराज लाहोर इम कंकन[17]सह किन्नौं विजय ॥७३॥

[दोहा]

स्वीय[18] स्वसुरकी सीममैं, लग्गे अठ८मिलान[19] ॥
तिन संटैं निवसथ[20] इतर, दैनकहे चहुवान ॥ ७४ ॥
न लये ते जल्हन नृपति, दे दायज सब द्रव्य ॥
करे बिदा बर१कन्यका२, भुव छुराय निज भव्य[21] ॥ ७५ ॥
इम नृप संभर आयकै, कियउ राज्य दुख कढ्ढि॥
धर्म अनुग[22] भुग्गी धरा, बैरीगन रन बढ्ढि[23] ॥७६ ॥
सौत्रामाणि पंद्रह१५सवन[24], बाजपेय[25] मख बीस२० ॥

१स्वसुरा के देश २उस जल्हन के अन्य शत्रुओं को ३दंड देकर ४मस्तक से आकाश को घिसता हुआ (यह लोकोक्ति है कि विजय पाकर ऊपर को उठेहुए का मस्तक ऐसे जाता है कि जैसे मस्तक से ब्रह्मांड को घिसता हुआ जाता होवे) ५सांभर नगर में ६शोभायमान होताहुआ ७ब्राह्मण जाति के पंडित ८चारण जाति के पंडित ९बहवा भाट १०स्तुतिपाठ करनेवाले भाट ११पैदल १२शिक्षा पायेहुए घोड़े १३हाथी मानों १४चलतेहुए पर्वत हैं ऐसे १५निरन्तर १६निर्भय होकर यश को धारण करता है १७कंकण डोरड़ों सहित विजय किया ॥७३॥ १८अपने ससुर की सीम में आठ १९मुकाम हुए थे वे ग्राम दान करादिये जिनके बदले में दूसरे २०ग्राम चहुवाण ने देने कहे ॥ ७४ ॥ २१राजा केदार से अपनी सुन्दर भूमि छुडाकर ॥ ७५ ॥ २२धर्म के साथ २३काटकर ॥ ७६ ॥ २४ यज्ञ २५ यज्ञविशेष

भिरि तानैं केदार भजायो, असुलोभी[1] लाहोर सु आयो ॥
जिहिं निज नंक[2] कटन नन जान्यो, पर सहाय करि नास प्रमान्यौं ८४

दोहा

इक पत्तन मकदूनियाँ, इत जनपद यूनान ॥
जवन सिकंदर नाम जँहँ, सूर भयो सुलतान ॥ ८५ ॥
पुनि तिँहिं संगर रूमपति, संहरि दारासाह ॥
रूम तखत पायो रुचिर, दै सत्रुन उर दाह ॥ ८६ ॥
नोसावा[3] बेगम निपुन, अरु दुवर[4]तास वजीर ॥
इक बली नास[1]रु अपर[5], बिदित अरस्तू[2]वीर ॥ ८७ ॥

षट्पात

अर्ब[1]बलख[2]ईरान[3]आदि मंडल करि अप्पन ॥
आयो गजनी अवधि थिरा हाकिम निज थप्पन ॥
अटक[6] लंघि तस इतहु अमल करिबो मन आयो ॥
पावनँ आसय पत्र प्रथम लाहोर पठायो ॥
अब आत हमहु केदार उत कैसी तुम चाहत कहहु ॥
कै होहु अनुग[8] आदाब करि रन के सज्जहु दृढ रहहु॥८८॥
दुमति स्यार केदार हुतो बिरचैं यह चाहत ॥
मिलैं कबहु मृगराज करैं पीलुहिं प्रतलाहत ॥
हमहु चर्म[1]कछु हड्ड[2]पलल[3]पूतिहु तब पावैं ॥
दलि जल्हन तस देस अखिल जिहिं बल अपनावैं ॥

प्राण का लोभी २उसने अपना नाक कटना नहीं जाना॥८४॥मकदूनिया नामक पुर यूनान देश में था जहां सिकंदर नामक यवन बहादुर ने बादशाह दाराशाह को युद्ध में मारकर रूम का सुन्दर तखत पाया॥८६॥उसके ३नोसावा नामक चतुर बेगम (स्त्री) थी४दूसरा ॥८७॥५भूमि पर६अटक नदी उतर कर७लाहोरवालों का क्या अभिप्राय है इसको जानने के लिये८सेवक॥८८॥दुर्बुद्धि गीदड़ राजा केदार पहिले से यही करना चाहता था कि जो कभी सिंह मिलजावे तो अपनी हाथल (थप्पड़) से हाथी को मारैं उनमें से कुछ चमड़ी हड्डी मांस और दुर्गन्ध हमको भी मिले इसप्रकार उस बलवान के बल से

भिरि तानैं केदार भजायो, असुलोभी लाहोर सु आयो ॥
जिहिं निज नक्क कटन नन जान्यो, पर सहाय करि नास प्रमान्यौं ८४

दोहा

इक पत्तन मकदूनियाँ, इत जनपद यूनान ॥
जवन सिकंदर नाम जँहँ, सूर भयो सुलतान ॥ ८५ ॥
पुनि तिंहिं संगर रूमपति, संहरि दारासाह ॥
रूम तखत पायो रुचिर, दै सत्रुन उर दाह ॥ ८६ ॥
नोसावाँ बेगम निपुन, अरु दुवरतास वजीर ॥
इक्क बली नास१रु अपरं, बिदित अरस्तूरबीर ॥ ८७ ॥

षट्पात

अर्व१बलख२ईरान३आदि मंडल करि अप्पन ॥
आयो गजनी अवधि थिरा हाकिम निज थप्पन ॥
अटकं लंघि तस इतहु अमल करिबो मन आयो ॥
पावनँ आसय पत्र प्रथम लाहोर पठायो ॥
अब आत हमहु केदार उत कैसी तुम चाहत कहहु ॥
कै होहु अनुग आदाब करि रन के सज्जहु दृढ रहहु॥८८॥
दुमति स्यार केदार हुतो बिरचैं यह चाहत ॥
मिलैं कबहु मृगराज करैं पीलुहिं प्रतलाहत ॥
हमहु चर्म१कछु हड्ड२पलल३पूतिहु तब पावैं ॥
दलि जल्हन तस देस अखिल जिंहिं बल अपनावैं ॥

प्राण का लोभी२उसने अपना नाक कटना नहीं जाना॥८४॥मकदूनिया नामक पुर यूनान देश में था जहां सिकंदर नामक यवन बहादुर ने बादशाह दाराशाह को युद्ध में मारकर रूम का सुन्दर तखत पाया॥८६॥उसके ३नोसावा नामक चतुर बेगम (स्त्री) थी४दूसरा ॥८७॥५भूमि पर६अटक नदी उतर कर७लाहोरवालों का क्या अभिप्राय है इसको जानने के लिये८सेवक॥८८॥दुर्बुद्धि गीदड़ राजा केदार पहिले से यही करना चाहता था कि जो कभी सिंह मिलजावे तो अपनी हाथल (थप्पड़) से हाथी को मारैं उनमें से कुछ चमड़ी हड्डी मांस और दुर्गन्ध हमको भी मिले इसप्रकार उस बलवान के बल से

सुनत मिच्छ* संक्रमन इते सम्मलि चढि आये ॥
पट्टनिनरेस हरपालसुत करन१नाम जदुकुल तरनि+ ॥
तोमर÷प्रताप२श्रीनैरपति चंदेरीपति चन्द्रमनि३ ॥ ९३ ॥
पब्बागढ छितिपाल गंगदेव४हु बडगुज्जर ॥
चंदाबारी अधिप चंदकुल कलस गदाधर५ ॥
भुजपति गोहिल अमर६भीम७सैंगर भरेहपति ॥
वाहिल गोकुल चन्द्र८सहित हंसीपति सम्मति ॥
मानिक्यराज९सम्भरमुकुट बैस[2] अमर१०सिवगढ सुपहु ॥
चित्रांग११गोर[3] सिंधुप चढे बिरचन रन इत्यादि बहु ॥९४॥
अटक[4] लंघि इत जवन कटक[5] हंकिय दुरकुंचन ॥
ताजी[6] तुरग[7] त्रिलक्ख३०००००लक्ख पंचक५०००००पदाति[8] गन॥
प्रथम फेट मुलतानराज लिन्नी जयमंगल ॥
चढि धारन लरि चंड पर्‍यो तिलतिल करि अरिदल ॥
लाहोर तदनु[9] पहुचंत जवन समुख जाय केदार[10] सठ ॥
करि प्रनति भेट उपहार[11] करि स्वीय[12] निलय लायउ सहठ[13]९५

दोहा

नरकर[14] पूपी[15] जानि जिम, व्है नत[16] लूम[17] हलाय ॥
उदर दिखावत स्वान[18] इम, हुव केदारहु हाय ॥९६॥
कन्या निज दिय मिच्छकँहँ, सो तिहिं रच्छक[19] संग ॥
परनि पठाई रूमपुर, जवन सज्ज हुव जंग ॥ ९७ ॥

षटपात्

---

*म्लेच्छ का चलना सुनकर+यदुकुल का सूर्य÷तँवर॥९३॥ १राजा २वैस जाति का क्षत्री ३ गोड़ ॥ ९४ ॥ ४ अटक नदी को लांघ कर ५ सेना ६ ताजी देश के उत्पन्न हुए ७ घोड़े ८ पैदल ९ जिस पीछे १० केदार नामक मूर्ख राजा ११ सामग्री भेट करके नम्रता सहित १३ हठ पूर्वक १२ अपने घर में लाया ॥ ९५ ॥ १४ जैसे मनुष्य के हाथ में १५ पुड़ी (रोटी) देखकर १६ नम्र होकर १७ पूँछ को हिलाता हुआ १८कुत्ता पेट दिखाता (पगों में पड़ता) है तैसे ही खेद का विषय है कि केदार होगया ॥ ९६ ॥ १९ सिकंदर ने अपने रक्षक साथ देकर ॥ ९७ ॥

सुनत मिच्छ* संक्रमन इते सम्मलि चढि आये ॥
पट्टनिनरेस हरपालसुत करन१नाम जदुकुल तरनि+ ॥
तोमर÷प्रताप२श्रीनैरपति चंदेरीपति चन्द्रमनि३ ॥ ९३ ॥
पब्बागढ छितिपाल गंगदेव४हु बडगुज्जर ॥
चंदावारी अधिप चंदकुल कलस गदाधर५ ॥
भुजपति गोहिल अमर६भीम७सैंगर भरेहपति ॥
चाहिल गोकुल चन्द्र८सहित हंसीपति सम्मति ॥
मानिक्यराज९सम्भरमुकुट बैस[२] अमर१०सिवगढ सुपहु ॥
चित्रांग११गोर[३] सिंधुप चढे बिरचन रन इत्यादि बहु ॥९४॥
अटक[४] लंघि इत जवन कटक[५] हंकिय दरकुंचन ॥
ताजी[६] तुरग[७] त्रिलक्ख३०००००लक्ख पंचक५०००००पदाति[८] गन॥
प्रथम फेट मुलतानराज लिन्नी जयमंगल ॥
चढि धारन लरि चंड पर्यो तिलतिल करि अरिदल ॥
लाहोर तदनु[९] पहुचंत जवन समुख जाय केदार[१०] सठ ॥
करि प्रनति भेट उपहार[११] करि स्वीय[१२] निलय लायउ सहठ[१३]९५

दोहा

नरकर[१४] पूपी[१५] जानि जिम, व्है नत[१६] लूम[१७] हलाय ॥
उदर दिखावत स्वान[१८] इम, हुव केदारहु हाय ॥९६॥
कन्या निज दिय मिच्छकहँ, सो तिहिं रच्छक[१९] संग ॥
परनि पठाई रूमपुर, जवन सज्ज हुव जंग ॥ ९७ ॥

षटपात

---

*म्लेच्छ का चलना सुनकर+यदुकुल का सूर्य÷तँवर॥९३॥ १राजा २बैस जाति का क्षत्री ३ गोड़ ॥ ९४ ॥ ४ अटक नदी को लांघ कर ५ सेना ६ ताजी देश के उत्पन्न हुए ७ घोड़े ८ पैदल ९ जिस पीछे १० केदार नामक मूर्ख राजा ११ सामग्री भेट करके नम्रता सहित १३ हठ पूर्वक १२ अपने घर में लाया ॥ ९५ ॥ १४ जैसे मनुष्य के हाथ में १५ पुड़ी (रोटी) देखकर १६ नम्र होकर १७ पूँछ को हिलाता हुआ १८कुत्ता पेट दिखाता (पगों में पड़ता) है तैसे ही खेद का विषय है कि केदार होगया ॥ ९६ ॥ १९ सिकंद्र ने अपने रक्षक साथ देकर ॥ ९७ ॥

अचलभानु प्रतिहार भेद पटकत इन अन्तर॥
चाहिल१जद्दव२चविय अवहि ताको नहिं ओसर॥
माँहि माँहिं लरि मरन बुरो नयसूरि बतावत॥
जब टरिहै यह जवन उचित यह तब उर आवत॥
यह कंगुरेस बांधव अखिल आये हम मिंच्छन लरैं॥
भीरकी बेर व्है अरि भनहु किम जल्हन अपकृत करैं१०४

दोहा

सबल बहुरि नृप सम्भरी, जो किम दव्यो जाय॥
जीतैं पुनि अज्जँन जवन,नीको सोहु न न्याय॥१०५॥
अचलभानु तब उच्चरी, सिविरि रही तस सेन॥
सहहु किन रजनी समय, तकि जल्हन गृह तेन॥१०६॥
जवनेस हु यह जानिकैं,मिलि तुमकौं करि मित्त॥
लंघि अटक जैहैं लघुंहि, चुकहु यह सुहि चित्त॥१०७॥
अज्जंन१जवनन२घोर इम, समर भयो दिन सत्त७॥
अचलभानु दिन अष्ठम८हि, घल्लो खल्ल यह घंत्त॥१०८॥

षट्पात्

दिन हिंदुन विपरीत बहुत प्रतिहार कही जब॥
जद्दव१चाहिल२जुगल२भये मारन तयार तब॥
अहँ लरि सब अवनीप रत्ति आये जल्हन घर॥

है॥ १०३॥ १ कहा २ वैर लेने का यह समय नहीं है ३ नीति के पंडित लोग माहोमाह लड़ने को बुरा कहते हैं ४ म्लेच्छ से लड़ने को ५ जल्हन का अपकार कैसे करें॥ १०४॥ फिर यहां पर ६ चहुवान सेना सहित है सो कैसे दबाया जासक्ता है फिर चहुवाण को मार लेने से सिकंदर ७ आर्यों के घर (आर्यावर्त) को जीत लेवे सो भी उचित नहीं है॥१०५॥ ८ चहुवाण की सेना तो डेरों में रहती है और उसको जल्हन के घर में अकेला देख कर ९ रात्रि में क्यों नहीं मारते॥ १०६॥ १० शीघ्र ही चलाजावे ११ यह चूकते हो सो आश्चर्य है॥ १०७॥ १२ आर्यों में और यवनों में १३ घात॥१०८॥ १४ दिन में सब १५ राजा लड़कर १६ रात्रि को

अचलभानु प्रतिहार भेद पटकत इन अन्तर॥
चाहिल१जह्वर२चविये अबहि ताको नहिं ओसर ॥
माँहि माँहिं लरि मरन बुरो नयसूरि बतावत ॥
जब टरिहै यह जवन उचित यह तब उर आवत ॥
यह कंगुरेस बांधव अखिल आये हम मिच्छन लरैं ॥
भीरकी बेर व्है अरि भनहु किम जल्हन अपकृत करैं १०४

दोहा

सबल बहुरि नृप सम्भरी, जो किम दव्यो जाय ॥
जीतैं पुनि अज्जन जवन,नीको सोहु न न्याय ॥१०५॥
अचलभानु तब उच्चरी, सिबिरि रही तस सेन ॥
सद्दहु किन रजनी समय, तकि जल्हन गृह तेन ॥१०६॥
जवनेस हु यह जानिकैं,मिलि तुमकौं करि मित्त ॥
लंघि अटक जैहै लघुंहि, चुक्कहु यह सुहि चित्त ॥१०७॥
अज्जन१जवनन२घोर इम, समर भयो दिन सत्त७॥
अचलभानु दिन अठ्ठम८हि, घल्ली खल यह घंत्त॥१०८॥

षट्पात्

दिन हिंदुन विपरीत बहुत प्रतिहार कही जब ॥
जह्वव१चाहिल२जुगल२भये मारन तयार तब ॥
अहँ लरि सब अवनीपं रत्ति आये जल्हन घर॥

है ॥ १०३ ॥ १ कहा २ वैर लेने का यह समय नहीं है ३ नीति के पंडित लोग माहोमाह लड़ने को बुरा कहते हैं ४ म्लेच्छ से लड़ने को ५ जल्हन का अपकार कैसे करें ॥ १०४ ॥ फिर यहां पर ६ चहुवान सेना सहित है सो कैसे दबाया जासक्ता है फिर चहुवाण को मार लेने से सिकंदर ७ आर्यों के घर (आर्यावर्त) को जीत लेवे सो भी उचित नहीं है ॥१०५॥ ८ चहुवाण की सेना तो डेरों में रहती है और उसको जल्हन के घर में अकेला देख कर ९ रात्रि में क्यों नहीं मारते ॥ १०६ ॥ १० शीघ्र ही चलाजावे ११ यह चूकते हो सो आश्चर्य है ॥ १०७ ॥ १२ आर्यों में और यवनों में १३ घात ॥१०८॥ १४ दिन में सब १५ राजा लश्कर १६ रात्रि को

उब्बरि इतेहि भौननै भजिग इतर भूप पोढे अवनि॥११२॥

[दोहा]

बिनु भूपन अवसेस बल, रचैं कहाँलग रारि ॥
आये आलय अप्पनैं, ते चखाय तरवारि ॥ ११३ ॥
सिद्धहि जय जवनेसकौं, दिन्नौं यह जगदीस ॥
अग्गैं आवन अद्दरयो, उमडि रूपपुर ईस ॥ ११४ ॥

[षट्पात्]

केदारहिं कंगुर दिवाय सुलतान सिकंदर ॥
किय सम्मुह दरकुंच धनी अज्जन जित्तन धर ॥
लघु दिल्लियपुर लंघि अग्ग पूरबदिस आवत ॥
बहुरि अज्जनृप बहुत भये अड्ढे उफनावत॥
स्फुरसेन१प्रथम सैंगरनृपति कालंजरपति रोध किय ॥
इतरहु बुलाय ढिगके अधिप दुव२अवसर रतिवाह दिय११५
कनउजपति बसुदेव२भूप रट्ठोर सज्ज जहँ॥
दतियापति रनमल्ल३भंड भूपति सुमेरु४तहँ ॥
सूकरराज प्रताप५तोगद्६गुग्गौर महीपति ॥
मथुरापति मधुपाल७कुपित इत्यादि जुरे कति ॥
रन तुमुल मास इक१लग रह्यो दइव बिजय जवनन दयो
इक संग नृपन पटके अरव भनि उपाय निष्फल भयो ॥११६॥

दोहा

तिलतिल चढि धारन तबहि, समर भयो स्फुरसेन ॥
कालंजर जल चड्ढिकैं, निवस्यो त्रिदिव अनेन ॥ ११७ ॥

१अपने घरों को भागे२अन्य राजा भूमि पर सोगये (मारेगये) ॥११२॥३बाकी की सेना४अपने घर आये ॥ ११३ ॥ ५ बनाबनाया (सीधा) बिजय ॥ ११४ ॥ ६आर्यों की भूमि जीतकर धनी (स्वामी) होने को ७ शीघ्र ८ रोका ९ और भी समीप के राजाओं को बुलाकर १० रात्रि में सोतीहुई सेना पर छापा मारा ॥ ११५ ॥११ नगर विशेष१२सूकरक्षेत्र का राजा१३घोर संग्राम१४एक साथ घोड़े उठाये ॥ ११६ ॥१५ स्वर्ग में बास किया१६पाप रहित ॥ ११७ ॥

उब्बरि इतेहि भोनन[1] भजिग इतर[2] भूप पोढ अवनि॥११२॥

[दोहा]

बिनु भूपन अवसेस[3] बल, रचैं कहाँलग रारि ॥
आये आलय[4] अप्पनैं, ते चखाय तरवारि ॥ ११३ ॥
सिद्धहि जय जवनेसकौं, दिन्नौं यह जगदीस ॥
अग्गैं आवन अद्दरयो, उमडि रूपपुर ईस ॥ ११४ ॥

[षट्पात्]

केदारहिं कंगुर दिवाय सुलतान सिकंदर ॥
किय सम्मुह दरकुंच धनी अज्जन[6] जित्तन धर ॥
लघु[7] दिल्लियपुर लंघि अग्ग पूरबदिस आवत ॥
बहुरि अज्जनृप बहुत भये अड्डे उफनावत॥
स्फुरसेन१प्रथम सैंगरनृपति कालंजरपति रोध[8] किय ॥
इतरहुं[9] बुलाय ढिगके अधिप दुव२अवसर रतिवांह[10] दिय११५
कनउजपति बसुदेव२भूप रट्ठोर सज्ज जँहँ॥
दतियापति रनमल्ल३भंडे[11] भूपति सुमेरु४तँहँ ॥
सूकर[12]राज प्रताप५तोग६गुग्गैर महीपति ॥
मथुरापति मधुपाल७कुपित इत्यादि जुरे कति ॥
रन तुंमुल[13] मास इक१लग रह्यो दइव बिजय जवनन दयो
इक संग नृपन पटके अरब[14] भनि उपाय निप्फल भयो ॥११६॥

दोहा

तिलतिल चढि धारन तबहि, समर भयो स्फुरसेन ॥
कालंजर जल चड्ढिकैं, निवस्यो त्रिदिव[15] अनेन[16] ॥ ११७ ॥

१अपने घरों को भागे२अन्य राजा भूमि पर सोगये (मारेगये) ॥११२॥३बाकी की सेना४अपने घर आये ॥ ११३ ॥ ५ बनाबनाया (सीधा) बिजय ॥ ११४ ॥ ६आर्यों की भूमि जीतकर धनी (स्वामी) होने को ७ शीघ्र ८ रोका ९ और भी समीप के राजाओं को बुलाकर १० रात्रि में सोतीहुई सेना पर छापा मारा ॥ ११५ ॥११ नगर विशेष१२सूकरक्षेत्र का राजा१३घोर संग्राम१४एक साथ घोड़े उठाये ॥ ११६ ॥१५ स्वर्ग में बास किया१६पाप रहित ॥ ११७ ॥

मग वह जान्यौं कालमुख, रह्यो सवन तव रोकि ॥१२२॥

[षट्पात्]

सुरतबेर नल इक्क१कांत अयमय बनवायो ॥
पारद जिहिं बिच पूरि प्रथित तिहिंठाम रुपायो ॥
सालभंजिका इक्क१रुचिर ताके सिर रक्खिय ॥
चरननसौं भुजअंतकठिन कलजंत्र तत्थ किय ॥
जब आत निकट बाडवज्वलन वह रसेंद्र तब उच्छलत ॥
तसं जोर आनि जिम जिम लगत तिम तिम पुत्तलि कर हलत१२३

[दोहा]

यह प्रबंध करि मिच्छ वह, चलि आयउ पुनि चीन ॥
सुनी खबर तँहँ सँदनकी, कौंलि रूसिन जिम कीन।१२४।

[सौराष्ट्री]

(दोहा)

नोसाबा जिहिं नाम, सो बेगम याकी पकरि ॥
धँकि लैगो निज धाम, मुलक रूसको मिच्छपति॥१२५॥
सु सुनि सिकंदरसाह, सजवँ कुंच करि चीन सन ॥
रूस अटक नदि राह, गंजन अरि बल जुतगयो ॥१२६॥
रूसी वहु हानि रारि, देस जारि करि छौर द्रुत ॥

पीछे फिरते समय१लोहे का मनोहर नल बनवाकर उसमें२पारा भर दिया वह ३प्रसिद्ध नल वहां पर रुपवा दिया उसके ऊपर एक५सुन्दर४पुतली रख दी६कल यंत्र लगादिया(कल का यन्त्र कहने का प्रयोजन यह है कि आप से आप चलने वाला यन्त्र)७बड़वाग्नि जब समीप आवे तब वह८पारा उफनता है९उस(पारे का) जोर ज्यों ज्यों लगे त्यों त्यों उस पुतली का हाथ हिलता है वह यह जनाता है कि इधर कोई मत आओ ॥ १२३ ॥रूसियों ने रूम में जाकर११ युद्ध किया वह अपने १० घर की खबर सुनी ॥ १२४ ॥ १२ क्रोध करके १३ म्लेच्छपति)आर्यावर्त के बाहर जितने रहनेवाले हैं उन सबको प्राचीनग्रन्थकारों ने म्लेच्छ और यवन लिखे हैं इसीकारण से इस ग्रन्थ में भी अन्य देशवासियों के लिये ये शब्द लगाये गये हैं)॥ १२५ ॥ १४ शीघ्र ॥ १२६ ॥ १५भस्म करके१६शीघ्र ॥ १२७ ॥

मग वह जान्यौं कालमुख, रह्यो सवन तव रोकि ॥१२२॥

[षटपात्]

सुरतवेर नल इक्क[1]कांत अयमय बनवायो ॥
पारद[2] जिहिं बिच पूरि प्रथित[3] तिहिंठाम रुपायो ॥
सालभंजिका[4] इक्क[5]रुचिर ताके सिर रक्खिय ॥
चरननसौं भुजअंतकठिन कलजंत्र[6] तत्थ किय ॥
जब आत निकट बाडवज्वलन[7] वह रसेंद्र[8] तब उच्छलत ॥
तसं[9] जोर आनि जिम जिम लगत तिम तिम पुत्तलि कर हलत१२३

[दोहा]

यह प्रवंध करि मिच्छ वह, चलि आयउ पुनि चीन ॥
सुनी खबर तँहँ सैंदन[10]की, कौलि रूसिन जिम कीन॥१२४॥

[सोरठा]

(दोहा)

नोसाबा जिहिं नाम, सो बेगम याकी पकरि ॥
धँकि[12] लैगो निज धाम, मुलक रूसको मिच्छपति[13]॥१२५॥
सु सुनि सिकंदरसाह, सजवँ[14] कुंच करि चीन सन ॥
रूस अटक नदि राह, गंजन आरि वल जुतगयो ॥१२६॥
रूसी वहु हनि रारि, देस जारि करि छौर[15] द्रुत[16] ॥

पीछे फिरते समय १लोहे का मनोहर नल बनवाकर उसमें २पारा भर दिया वह ३प्रसिद्ध नल वहां पर रुपवा दिया उसके ऊपर एक५सुन्दर ४पुतली रख दी६कल यंत्र लगादिया(कल का यन्त्र कहने का प्रयोजन यह है कि आप से आप चलने वाला यन्त्र)७वड़वाग्नि जब समीप आवे तब वह८पारा उफनता है९उस(पारे का) जोर ज्यों ज्यों लगे त्यों त्यों उस पुतली का हाथ हिलता है वह यह जनाता है कि इधर कोई मत आओ ॥ १२३ ॥रूसियों ने रूम में जाकर११ युद्ध किया वह अपने १० घर की खबर सुनी ॥ १२४ ॥ १२ क्रोध करके १३ म्लेच्छपति)आर्यावर्त के बाहर जितने रहनेवाले हैं उन सबको प्राचीनग्रन्थकारों ने म्लेच्छ और यवन लिखे हैं इसीकारण से इस ग्रन्थ में भी अन्य देशवासियों के लिये ये शब्द लगाये गये हैं)॥ १२५ ॥ १४ शीघ्र ॥ १२६ ॥ १५भस्म करके१६शीघ्र ॥ १२७ ॥

२ऽऽदिविप १ पौराणिका२ऽऽर्यपर्णाऽकृतत्रणासूतसन्ततिशपनस मारावितसाम्बशिवसेवितवृपभदत्तवरपौराणिकाऽऽर्यमित्रपुनः स्ववंशवर्द्धनसमाससूचनसमुपयतसीतश्वाशुर्यशुभशक्तदान्तलाहोरराजकेदारमत्सारिकतद्देशचतुष्क ४ समुद्धरणजयमल्लादि ६ भूभुजङ्गनिपातनसुहुःकर्मा १३५ दिसम्भरकुमारदशको १० द्रवनकत्रुरेशजल्हणादोर्दमितपलायितकेदारसमात्तरूमयूनानिसिकन्दरम त्यन्तेन्द्रसमाव्हानसम्भर १ यादवा २ऽऽद्याऽऽर्यनृपजल्हणसहायकरणारूमप्रेषितपरिणीतकेदारदुहितृकसिकन्दरयुद्धाऽभिसरण प्रतिहाराऽचलभानुप्रतियुद्धप्रारब्धविक्रमाऽऽर्यभूपसमूहभेदनकर्ण गोकुलचन्द्रा२ऽऽदिभूरिभूमीशपरस्परसमापनम्लेच्छराडार्यावर्तसम भिसरणपुनःसंसृष्टसम्पातवहुनृपमारण १ विजयन २ कृतानेककौतुकसम्भुक्तचीनादिविषयविभवप्रकुपितगतयवनेन्द्ररूसराशिनपातनदग्धतद्देशरूपराजपत्नीप्रस्थानयनमाणिक्यराज १३४राज्ञीचतुष्क ४ सहगमनसुहुःकर्म १३५ शाकम्भराऽधिपत्यप्रापणं रप्तषष्टितमो मयूखः ॥ ६७ ॥ आदितो नवकोत्तरशततमः ॥१०९॥

सहित शिव की सेवा करना, और शिव के वृषभ के दिये हुए वर से पौराणिक आर्यमित्र का फिर अपने वंश को बढाने की संक्षेप से सूचना, विवाही है सीता जिसने ऐसे सुसर का शुभ करने में समर्थ और लाहोर के राजा केदार को दमन करनेवाले चहुवाण का उस (स्वसुर) के चार देशों को निकालना, जयमल्ल आदि राजाओं को मारना, चहुवान राजा के सुहुःकर्मा आदि दश पुत्रों का जन्म होना, कांगुरा के पति जल्हण के भुजों से दंडित होकर भागे हुए केदार का ले ली है रूम जिसने ऐसे यूनानी म्लेच्छ देश के पति सिकंदर को बुलाना, चहुवान और यादव आदि आर्य राजाओं का जल्हण की सहायता करना, केदार की पुत्री से विवाह करके उसको रूम भेज कर सिकंदर का युद्ध को चलना, प्रतिहार अचलभानु से युद्ध प्रारंभ करना, विक्रम का आर्यभूपों के समूह का भेदना, कर्ण गोकुलचन्द्र आदि बहुत राजाओं का परस्पर कटना (समास) होकर म्लेच्छराजा का आर्यावर्त में आना, फिर रचा है समूह जिन्होंने ऐसे बहुत राजाओं को मारना और विजय करना, अनेक कौतुक करके चीन आदि देशों के वैभव को भोगकर [illegible] गए यवनेन्द्र (सिकंदर) का रूस के बादशाह को मारना,

२ऽऽदिविप्र १ पौराणिका२ऽऽर्यपर्णाऽकृतव्रणासूतसन्ततिशपनस
माराधितसाम्बशिवसेविततद्वृषभदत्तवरपौराणिकाऽऽर्यमित्रपुनः
स्ववंशवर्द्धनसमाससूचनसमुपयतसीतश्वाशुर्यशुभशक्तदान्तलाहो-
रराजकेदारमत्सारिकतद्देशचतुष्क ४ समुक्करणजयमल्लादि ६ भूभु
जङ्गनिपातनमुहुःकर्मा १३५ दिसम्भरकुमारदशको १० इवनक
ङ्कुरराजलहणादोर्दमितपलायितकेदारसमात्तरूमयूनानिसिकन्दरम
त्यन्तेन्द्रसमाह्वानसम्भर १ यादवा २ऽऽद्याऽऽर्यनृपजलहणसहा-
य्यकरणरूमप्रेषितपरिणीतकेदारदुहितृकसिकन्दरयुद्धाऽभिसरण
प्रतिहाराऽचलभानुप्रतियुद्धप्रारब्धविक्रमाऽऽर्यभूपसमूहभेदनकर्ण
गोकुलचन्द्रा२ऽऽदिभूरिभूमीशपरस्परसमापन्नम्लेच्छराडार्यावर्तसम
भिसरणपुनःसंसृष्टसम्पातबहुनृपमारण १ विजयन २ कृताने
ककौतुकसम्भुक्तचीनादिविषयविभवप्रकुपितगतयवनेन्द्ररूसरा-
णिनपातनदग्धतद्देशरूपराजपत्नीप्रत्यानयनमाणिक्यराज १३४रा-
ज्ञीचतुष्क ४ सहगमनमुहुःकर्म १३५ शाकम्भराऽधिपत्यप्रापणं स
प्तषष्टितमो मयूखः ॥ ६७ ॥ आदितो नवकोत्तरशततमः ॥१०९॥

सहित शिव की सेवा करना, और शिव के वृषभ के दिये हुए वर से पौरा-
णिक आर्यमित्र का फिर अपने वंश को बढ़ाने की संक्षेप से सूचना, विवाही
है सीता जिसने ऐसे सुसर का शुभ करने में समर्थ और लाहौर के राजा केदार
को दमन करनेवाले चहुवाण का उस (श्वसुर) के चार देशों को निकालना,
जयमल्ल आदि राजाओं को मारना, चहुवान राजा के मुहुःकर्मा आदि दश
पुत्रों का जन्म होना, कांगुरा के पति जलहण के भुजों से दंडित होकर
भागे हुए केदार का ले ली है रूम जिसने ऐसे यूनानी म्लेच्छ देश के पति
सिकंदर को बुलाना, चहुवान और यादव आदि आर्य राजाओं का जलह-
ण की सहायता करना, केदार की पुत्री से विवाह करके उसको रूम भेज
कर सिकंदर का युद्ध को चलना, प्रतिहार अचलभानु से युद्ध प्रारंभ करना,
विक्रम का आर्यभूपों के समूह को भेदना, कर्ण गोकुलचन्द्र आदि बहुत रा-
जाओं का परस्पर कटना (समास) होकर म्लेच्छराजा का आर्यावर्त में
आना, फिर रचा है समूह जिन्हों ने ऐसे बहुत राजाओं को मारना और
विजय करना, अनेक कौतुक करके चीन आदि देशों के वैभव को भोगकर
[illegible] ए यवनेन्द्र (सिकंदर) का रूस के बादशाह को मारना,

रघुवंशीय-गुहिलोत्त- मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीशसज्जनतादिसद्गुणस-म्पन्न-महाराणा सज्जनसिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा-फतहसिं-हवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजरा-जेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतीवदान-मान-स्वर्णरचितपाद-भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि- तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपा-लक-मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्रा-प्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कवि-वर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां तृतीयो राशिः समाप्तः ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग[दस्तूर] लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता ओनाड़ (अनमू) सिंह के पुत्र, पण्डिता शृङ्गारबा-ई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जो-रावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जि-सकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशि-क्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्ण-व रामानुज सम्प्रदायी श्रीमान् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणावत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्य-कुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदय पुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा फ-तहसिंह वर्म्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भू-मि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यसवंतसिंह वर्मा से पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आद-र जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहा-य और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्ण-सिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में तृतीय राशि समाप्त हुआ ॥

रघुवंशीय-गुहिलोत्त- मेदपाटदेशाऽधिपोदयपुराधीशसज्जनतादिसद्गुणस-म्पन्न-महाराणा सज्जनसिंहवर्म्म, तथैव तदुत्तराधिकारि-महाराणा-फतहसिं-हवर्म्म, भानुवंशभूषण-राष्ट्रकूटकुलाऽवतंस-मरुधराधिप-जोधपुरेश-राजरा-जेश्वर-महाराज-यशवन्तसिंहवर्म्मभ्यो लब्धाऽतिवदान-मान-स्वर्णरचितपाद-भूषणाऽऽदिसत्कारेण, तथा तदुत्तराधिकारि- तत्तुल्यप्रीतिपुरःसरप्रतिपा-लक-मरुधराधीश श्रीसरदारसिंहवर्माश्रितेन, अधीतविद्यां सफलयितुं प्रा-प्तावसरेण, विद्वद्भिर्निजमित्रैर्लब्धसहायोत्साहेन, शाहपुरानिवासिना कवि-वर-बारहठ-कृष्णसिंहेन विरचितायामुदधिमन्थनीटीकायां तृतीयो राशिः समाप्तः ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्ममूर्ति वीर उदार (दातार) सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकु-ट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग[दस्तूर] लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता ओनाड़ (अनमू) सिंह के पुत्र, पण्डिता शृङ्गारबा-ई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जो-रावरसिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जि-सकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशि-क्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्ण-व रामानुज सम्प्रदायी श्रीमान् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणावत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्य-कुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदय पुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा फ-तहसिंह वर्म्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भू-मि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा यसवंतसिंह वर्मा से पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आद-र जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा का आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहा-य और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहठ कृष्ण-सिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में तृतीय राशि समाप्त हुआ ॥

(प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

[सचरणगद्यम्)

मुहुकर्माणो अनुज लालसिंह १३५२ मरुदेसमें आपरो अमल-जमाय महीस हुवो जिणरी संतति समस्त माह्रेचा ३।२ चहुवाण कहीजै ॥

जिण वंसमैं कोटि १००००००० मुद्रारो देणहार देवराज जिसा नरेस हुवा जिकाँरो सुजस संसाररै श्रवणपथमैं रहीजै ॥

लालसिंहरो सोदर हरीसिंह १३५।३ सिंधुदेसरो अधीस हुवो जिणरै पुत्र धुंधेट १३६ ऊपजियो जिकणरो बंस धुंधेडिया ३।३ चहुवाण कहावै॥

जिण कुळमैं अर्जुनसा अजेय राजा प्रकटिया जिकाँरा अभिधानैं प्रभातरै समय प्रभाकरहूँ प्रथम ऊगणमैं आवै ॥ ५ ॥

(दोहा)

हुवो अनुज हरिसिंहरै, समर बळी सादूळ१३५।४ ॥
जिणरैसुतघन१३६।१टंक१३६।२जुग२,थियानिडरजसथूळ॥६॥
घन कीधो पंजाब घर,जय१नंय२अमल जमाय॥
जिणरो कुळ ठावो जगत, पंजाबी३।४पदपाय ॥ ७ ॥
जिण कुळमैं माधव जिसा, अनंड़ हुवा चहुवाण ॥
भाटीरा भुज भाँजिया, जोड़ रण जैसाण ॥ ८ ॥
टाँक४।५कहीजै टंकरा, जिण कुळमैं बहुजाण ॥
दळ खाधो जयचंदरो, चाटै भड़ चहुवाण ॥ ९ ॥
सोदर इम सादूळरो, पूर्णराज१३५।५ बळपूर ॥
राज भदावड़ जिण रचे, पारत्रव दळ दळि पूर ॥ १० ॥

---

१ करोड़ रुपये देनेवाले २ सुनने में रहता पगा भाई ४ जिसका वंश ५ नाम ६ सूर्य से पहिले ॥ ५ ॥ ७ युद्ध में बलवान ८ यश के समूहवाले अथवा यश रूपी वितानवाले ॥ ६ ॥ १० नीति से ७ ॥ ११ अनम्र १२ जैसलमेर से युद्ध करके ॥ ८ ॥ ९ ॥ १३ शत्रुओं की सेना का दलके ॥ १० ॥

(प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

[सचरणगद्यम्)

मुहुक्कमांरो अनुज लालसिंह १३५२ मरुदेसमें आपरो अमल-जमाय महीस हुवो जिणरी संतति समस्त माद्रेचा ३।२ चहुवाण कहीजै ॥

जिण वंसमैं कोटि १०००००००मुद्रारो देणहार देवराज जि-सा नरेस हुवा जिकाँरो सुजस संसाररै श्रवणपथमैं रहीजै ॥

लालसिंहरो सोदर हरीसिंह १३५।३ सिंधुदेसरो अधीस हुवो जिणरै पुत्र धुंधेट १३६ ऊपजियो जिकैणरो बंस धुंधेडिया २।३ चहुवाण कहावै॥

जिण कुळमैं अर्जुनसा अजेय राजा प्रकटिया जिकाँरा अभि-धानं प्रभातरै समय प्रभाकरहूँ प्रथम ऊगणमैं आवै ॥ ५ ॥

(दोहा)

हुवो अनुज हरिसिंहरै, समर बळी सादूळ१३५।४ ॥
जिणरैसुतघन१३६।१टंक१३६।२जुग२,थिरपानिडरजसथूळ॥६॥
घन कीधो पंजाब घर,जय१नंय२अमल जमाय॥
जिणरो कुळ ठावो जगत, पंजाबी३।४पदपाय ॥ ७ ॥
जिण कुळमैं माधव जिसा, अनंड़ हुवा चहुवाण ॥
भाटीरा भुज भाँजिया, जोड़ रण जैसाण ॥ ८ ॥
टाँक४।५कहीजै टंकरा, जिण कुळमैं बहुजाण ॥
दळ खाधो जयचंदरो, चाटै भड़ चहुवाण ॥ ९ ॥
सोदर इम सादूळरो, पूर्णराज१३५।५ बळपूर ॥
राज भदावड़ जिण रचे, पत्त्रव दळ दाळि पूर ॥ १० ॥

१ करोड़ रुपये देनेवाले २सुनने में रहता ... पणा भाई ४जिसका वंश ५नाम ६ सूर्य से पहिले ॥ ५ ॥ ७ युद्ध में बलवान ... ८ यश के समूहवाले अ-थवा यश रूपी वितानवाले ॥ ६ ॥ १० नीति से ... ७ ॥ ११ अनम्र १२ जैस-लमेर से युद्ध करके ॥ ८ ॥ ९ ॥ १३ शत्रुओं की सेना का दलके ॥१०॥

जठैपण[1] बिनां ही माण चहुवाणरो मस्तक पाछो[2] मुरड़ियो
इसड़ी[3] किंवदंतीनैं[4] प्रकास लियो ॥ १४ ॥
इण ही वंशमैं भटनैर पुररै अधीस जसराज[5] सोनगिरै केही
बार जवनांरो जोरदार कटक भांजियो ॥
अर अंतरै समय आपरी पत्नीरो[6] मस्तक गळै बांधि धारां[7] चढि
टूकटूक होय सुरलोकमैं निवास कियो ॥
और भी अनेक सोनगिरा चहुवाण आप आपरो सुजस अर्क[8]
पहली उगावै ॥
जिणनूं[9] सुणियां रावराजेंद्र[10] आप जिसा सुक्षेत्रियांनूं[11] आणंद आवै १५

(दोहा)

नाहररै सप्तम७तनयै,[12] निडर थियो निर्वाण१३५।७ ॥
निर्वाण६।८हि जिणांरो[13] जनन, वाजै विदित वखाण ॥१६॥

पादाकुलकम्

इण कुळही देवट अभिधानी,[14] महीभुजंगै[15] हुवो रणमानी ॥
कुळ जिणरो देवड़ा८।९कहावै, दान१समर२अनुपम[16] दरसावै ।१७।
पावन[17] धाम सिरोही पत्तन, धारै छत्र अजे[18] कीरतिधन[19] ॥
तपै कटक अब्बूंगिरि[20] रै तिम, अब्बूपति उपटंक[21] भजे इम ॥१८॥
अखेराज१ जिण कुळ ऊपजियो, तृणां[22] मुख लियो जिको अरि तजियो
सोढी अधम[23] गई सुणि सत्वर, गंजण खळ गिणियो वपु गत्वर१९

१जहां भी २उलटा फिर गया३ऐसी४ जनश्रुति(दन्तकथा)प्रसिद्ध हुई५अरु६ अपनी स्त्री का ७ तरवारों की धारों पर चढकर ८ सूर्य से प्रथम (सूर्य उदय होने से पहिले याचक लोग जिनका यश कहते हैं अर्थात् प्रभात समय में कृपण अथवा कायर का कोई नाम नहीं लेते हैं इसकारण प्रभात समय में यश करने की अधिक प्रशंसा है)९जिसको१०हे रावराजा रामसिंह!११श्रेष्ठ क्षत्रियों को१२पुत्र हुआ१३उसका वंश ॥१६ ॥१४देवट नामक१५ भूमि रूपी गणिका का पति१६युद्ध में उपमा रहित ॥१७॥१७पवित्र धाम सिरोही पुर १८अब भी१९कीर्ति ही है धन जिनके२०आबू पर्वतके शिखर पर तपता है (आबू पर्वत सीरोही की सीमा में है इससे आबू पर तपना कहा) २१पदवी२२ जिस शत्रु ने मुख में तृण लिया उसीको छोडा.इस अखेराज ने अपनी२३नीच

जठैपण बिनाँ ही प्राण चहुवाणरो मस्तक पाछो मुरड़ियो
इसड़ी[3] किंवदंतीनैं प्रकास लियो ॥ १४ ॥
इण ही वंशमैं भटनैर पुररै अधीस जसराज[2] सोनगिरै केही
बार जवनाँरो जोरदार कटक भाँजियो ॥
अर[5] अंतरै समय आपरी पत्नीरो[6] मस्तक गळै बाँधि धाराँ[7] चढि
टूकटूक होय सुरलोकमैं निवास कियो ॥
और भी अनेक सोनगिरा चहुवाण आप आपरो सुजस अर्क[8]
पहली उगावैं ॥
जिणनूँ[9] सुणियाँ रावराजेंद्र[10] आप जिसा सुछैतियाँनूँ[11] आणंद आवै १५

[दोहा)

नाहररै सप्तम७तनयैं[12], निडर थियो निर्वाण १३५१७ ॥
निर्वाण६।८हि जिणाँरो[13] जनन, बाजै विदित वखाण ॥१६॥

पादाकुलकम्

इण कुळही देवट अभिधानी[14], महीभुजंगैं[15] हुवो रणमानी ॥
कुळ जिणरो देवड़ा८।९कहावै, दान१समर२अनुपम[16] दरसावै ।१७।
पावन[17] धाम सिरोही पत्तन, धारै छत्त अजे[18] कीरतिधन[19] ॥
तपै कटक अब्बूंगिरि[20] रै तिम, अब्बूपति उपटंकैं[21] भजै इम ॥१८॥
अखेराज१ जिण कुळ ऊपजियो, तृणाँ[22] मुख लियो जिको अरि तजियो
सोढी अर्धंगैं[23] गई सुणि सत्वर, गंजण खळ गिणियो वपु गत्वर १९

१जहां भी २उलटा फिर गया ३ऐसी ४ जनश्रुति(दन्तकथा)प्रसिद्ध हुई ५अरु ६ अपनी स्त्री का ७ तरवारों की धारों पर चढकर ८ सूर्य से प्रथम (सूर्य उदय होने से पहिले याचक लोग जिनका यश कहते हैं अर्थात् प्रभात समय में कृपण अथवा कायर का कोई नाम नहीं लेते हैं इसकारण प्रभात समय में यश करने की अधिक प्रशंसा है)९जिसको १०हे रावराजा रामसिंह! ११श्रेष्ठ क्षत्रियों को १२पुत्र हुआ १३उसका वंश ॥१६ ॥१४देवट नामक १५ भूमि रूपी गणिका का पति १६युद्ध में उपमा रहित ॥१७॥ १७पवित्र धाम सिरोही पुर १८अब भी १९कीर्ति ही है धन जिनके २०आबू पर्वत के शिखर पर तपता है (आबू पर्वत सीरोही की सीमा में है इससे आबू पर तपना कहा) २१पदवी २२ जिस शत्रु ने मुख में तृण लिया उसीको छोडा.इस अखेराज ने अपनी २३नीच

इम माणिक्यराजसुत अष्टम८,कृष्णराज१३५।८संगर अणचल[1] क्रम
पांड्यदेस बैभव जिण पायो, बसुमय[2] खंधावार[3] बणायो ॥२७॥
बंस तदीय[4] पंडिया६।१०बज्जै, लखियाँ जिण पैलाँ जळ लज्जै ॥
सुत नाहररै नवम९सुभायक,लसणराज१३५।९खट्टण जस लायक
लड़ि गुजरात प्रांत जिण लीधो, कै दळ गंजि अमल थिर कीधो॥
उणरा कुळ रण ग्रसण अरांती, रजवट[6] धर ठावा गुजराती१०।११

षट्पात्

पहुँ सुत दसम१०प्रबाल१३५।१०देसवगसर धर दव्वी ॥
वगसरिया११।१२जिणबंस मरण सब प्रथम मुरव्वी ॥
अग्गैं जिण कुळ अनड़[9] हुवो चहुवाण हरीमणि ॥
राणनगर अधिराज हल्लं[10] बिक्कम आयो हणि ॥
पैंतीस३५जुद्ध लै जय प्रकट हत्थी[11] सत्तरि७०रीझहित ॥
साँसण पचास५०दीधा सहज वगसरिया११।१२कीधा विदित।३०।

दोहा

हुवा प्रकट माणिक्क१३४हूँ, एगारह११ए भेद ॥
पूरबिया१कढिया प्रथम, बारह१२इम सब वेद[12] ॥ ३१ ॥

(पादाकुलकम्)

पाटव[13] निपुण मुहुकमा१३५पहु[14], बैरी जिण हणिया[15] आहव बहु ॥
दूजो२जिण आव्हय[16] दामोदर१३५, प्रकट थियो[17] दिसदिस बसुधापर
सो माणिक्कराज पट्टप सुत, निडर मुहुक्कर्म१३५बीराँनुत[18] ॥
सम्भर नगर छत्र धरि सम्भर,हुवो प्रबळ नृप समरसिंह हर।३३।

दोहा

रुक्मंगद प्रतिहाररी, सुता सुरूप सुजाण ॥

१निश्चल२धनमय ३ राजधानी ॥ २६ ॥ ४ उसका वंश ॥ २८ ॥ ५ शत्रुओं को ६ रजपूती (रजोगुणों) में ॥ २९ ॥ ७ राजा के दशवें पुत्र, युद्ध में सबसे पहिले मरने में ८ बडप्पन रखनेवाले ६ अनम्र १० हाला जाति के क्षत्रिय विक्रम को ११ हाथी ॥३०॥ १२ मिले ॥ ३१ ॥ १३चतुर और कुशल१४राजा१५मारे१६नाम १७ हुआ ॥ ३२ ॥१८वीरों में स्तुतियोग्य ॥ ३३ ॥

इम माणिक्यराजसुत अष्टम८,कृष्णराज१३५।८संगर अणचल[1] क्रम
पांड्यदेस वैभव[2] जिण पायो, वसुमय[3] खंधावार बणायो ॥२७॥
बंस तदीय[4] पंडिया६।१०बज्जै, लखियाँ जिण पैलाँ[5] जळ लज्जै ॥
सुत नाहररै नवम९सुभायक,लखणराज१३५।९खट्टण जस लायक
लड़ि गुजरात प्रांत जिण लीधो, कै दळ गंजि अमल थिर कीधो॥
उणरा कुळ रण असण अरांती, रजवट[6] धर ठावा गुजराती१०।११

षट्पात्

पहुँ सुत दसम१०प्रबाल१३५।१०देसवगसर धर दव्वी ॥
बगसरिया११।१२जिणवंस मरण सब प्रथम मुरव्वी ॥
अग्गैं जिण कुळ अनड़[9] हुवो चहुवाण हरीमणि ॥
राणनगर अधिराज हल्ल[10] विक्रम आयो हणि ॥
पैंतीस३५जुद्ध लै जय प्रकट हत्थी[11] सत्तरि७०रीफ्हहित ॥
साँसण पचास५०दीधा सहज बगसरिया११।१२कीधा विदित।३०।

दोहा

हुवा प्रकट माणिक्क१३४हूँ, एगारह११ए भेद ॥
पूरबिया१कढिया प्रथम, बारह१२इम सब बेद[12] ॥ ३१ ॥

(पादाकुलकम्)

पाटव[13] निपुण मुहुक्कम१३५पँहु[14], वैरी जिण हँणिया[15] आहव बहु ॥
दूजो२जिण आव्हय[16] दामोदर१३५, प्रकट थियो[17] दिसदिस बसुधापर
सो माणिक्कराज पट्टप सुत, निडर मुहुक्कमी१३५वीराँनुत[18] ॥
सम्भर नगर छत्र धरि सम्भर,हुवो प्रबळ नृप समरसिंह हर।३३।

दोहा

रुकमंगद प्रतिहाररी, सुता सुरूप सुजाण ॥

१निश्चल२धनमय ३ राजधानी ॥ २६ ॥ ४ उसका वंश ॥ २८ ॥ ५ शत्रुओं को ६ रजपूती (रजोगुणों) में ॥ २९ ॥ ७ राजा के दशवें पुत्र, युद्ध में सबसे पहिले मरने में ८ बड़प्पन रखनेवाले ६ अनम्र १० हाला जाति के क्षत्रिय विक्रम को ११ हाथी ॥३०॥ १२ मिले ॥ ३१ ॥१३चतुर और कुशल१४राजा१५मारे१६नाम १७ हुआ ॥ ३२ ॥१८वीरों में स्तुतियोग्य ॥ ३३ ॥

देवै जिण बंटे भुव दीधी, काँकड़ सीम अटीरी कीधी ॥
खिच्ची कुळ दूदो[5] अरि खावण, रोड़ी दुलह[1] हुवो बळ रावण ४२
मारि खळाँघर कूक मचाई, चंडी जिण बहुवार नचाई ॥
राघवगढ जयसिंह[6] जई रण, अजे हुवो दक्खिणदळ अद्दण[2] ४३
के[3] अवसर तोपाँ सिर काछी[4], असह ठेलि कीधो रण आछी ॥
दोलतराव संकि जिण दावाँ, रहियो भीत दमण घण रावाँ ।४४।
खग्ग उदग्ग[6] इसो कुळ खीची, बिरची जग जिण सुजस बगीची
तेगाँ प्रबळ गजाँसिर तोड़ण, माँ नैं गाळि पीठि पग मोड़ण।४५।

[दोहा]

के मागध[7] इणविधि कहै, ग्रंथाँ लिखि जस गान ॥
रामचंद्ररा अनुजरो, अनड़१३६।२हुवो[8] अभिधान ॥ ४६ ॥

(पादाकुलकम्)

बूठो मेघ नहीं जिण बेळा, भैचकि[9] भूप हुवा सब भेळा ॥
जीमणखिच्चजिकाँदीधोजिम,आव्हय[10]खिच्चीराज१।३।१३हुवोइम

[दोहा]

धरे छत्र संभरधणी, रामचंद्र१३६नरराज ॥
किया गरद[11] खैरकोणसा, बैरी गण जिण बाज[12] ॥ ४८ ॥
पट्टणिपति जादव प्रथित[13], सल्लहकरण सुत सूर ॥
बेटी जिण कुळबैरमैं, दीध करण डर दूर ॥ ४९ ॥

---

१ युद्ध का दुलहा ॥ ४२ ॥ दक्षिण की सेना को पचाने का २ आदण (शाक आदि के पचाने को पात्र में पानी भरके अग्नि पर चढाया जावे उसको आदण कहते हैं) ॥ ४३ ॥ कितनी ३ वार चलतीहुई तोपों पर ४ घोड़े ५ दौड़ाकर ॥ ४४ ॥ जिसके खड्ग का ६ अग्रभाग सदैव उछलता रहै ॥ ४५ ॥ कितने ही ७ बड़वाभाट ८ अनड़ नाम हुआ ॥ ४६ ॥ ९ भय से चकित होकर १०नाम ॥ ४७ ॥ जिस१२ शिकरा पक्षी ने शत्रुओं के समूहों को ११ तीतर पक्षियों के समान करदिये ॥ ४८ ॥ १३प्रसिद्ध ॥ ४९ ॥

देवै जिण बंटे भुव दीधी, काँकड़ सीम अटीरी कीधी ॥
खिच्ची कुळ दूदो५ अरि खावण, राड़ी[1] दुलह हुवो बळ रावण ४२
मारि खळाँघर कूक मचाई, चंडी जिण बहुवार नचाई ॥
राघवगढ जयसिंह६ जई रण, अजे हुवो दक्खिणादळ अद्दणाँ[2] ४३
के अवसर[3] तोपाँ सिर[4] काछी[5], असह ठेलि कीधी रण आछी ॥
दोलतराव संकि जिण दावाँ, रहियो भीत दमण घण रावाँ ।४४।
खग्ग उदग्गं[6] इसो कुळ खीची, विरची जग जिण सुजस बगीची
तेगाँ प्रबळ गजाँसिर तोड़ण, माँनैं गाळि पीठि पग मोड़ण।४५॥

[दोहा]

के मागध[7] इणविधि कहै, ग्रंथाँ लिखि जस गान ॥
रामचंद्ररा अनुजरो, अनड़१३६।२हुवो[8] अभिधान ॥ ४६ ॥

(पादाकुलकम्)

बूठो मेघ नही जिण बेळा, भैचकि[9] भूप हुवा सब भेळा ॥
जीमणखिच्चजिकाँदीधोजिम,आव्हथं[10]खिच्चीराज१।३।१३हुवोइम

[दोहा]

धरे छत्र संभरधणी, रामचंद१३६नरराज ॥
किया गरद खैरकोणासा[11], बैरी गण जिण बाजँ[12] ॥ ४८ ॥
पट्टणिपति जादव प्रथित्त[13], सल्लहकरण सुत सूर ॥
बेटी जिण कुळवैरमैं, दीध करण डर दूर ॥ ४९ ॥

---

१ युद्ध का दुलहा ॥ ४२ ॥ दक्षिण की सेना को पचाने का २ आदण (शाक आदि के पचाने को पात्र में पानी भरके अग्नि पर चढाया जावे उसको आदण कहते हैं) ॥ ४३ ॥ कितनी ३ वार चलतीहुई तोपों पर ४ घोड़े ५ दौड़ाकर ॥ ४४ ॥ जिसके खड्ग का ६ अग्रभाग सदैव उछलता रहै ॥ ४५ ॥ कितने ही ७ यड़वाभाट ८ अनड़ नाम हुआ ॥ ४६ ॥ ९ भय से चकित होकर १० नाम ॥ ४७ ॥ जिस १२ शिकरा पक्षी ने शत्रुओं के समूहों को ११ तीतर पक्षियों के समान करदिये ॥ ४८ ॥ १३ प्रसिद्ध ॥ ४९ ॥

उण दळिद्द द्विजरे अरथ, बणि दासी बिंणुमोल ॥
उलटो निजघर अप्पियो, करि अधीन असु कोल ॥ ५७ ॥
उज्जइणीपुर उण समय, प्रतपै रेणु प्रमार ॥
तिणरो दूजो नाम जग आखै करण उदार ॥ ५८ ॥
तिणरो एक सकार तदि, जामिप[१]धन[२]बय[३]जोर ॥
रूपाजीवा रूपरो, सुणियो जिण अतिसोर ॥ ५९ ॥
गणिकाघर सो सठ गयो, कीधो उण सतकार ॥
भजि मोनूं इसड़ी भणी, तिण सकार तिणवार ॥ ६० ॥
कवण चतुर गणिका करै, चारुदत्त घर चित्त ॥
तजि दळिद्द भजि मुज्झ तू, बिलसि अप्रमित वित्त ॥ ६१ ॥
सो बसंतसेना सुणे, कहियो वित्त निकाम ॥
मानौं गुणदासी मनैं, धनदासी घणधाम ॥ ६२ ॥
गडियो जिणरै चित्त गुण, धन तिणरै मन धूळि ॥
दुर्बिध सोही बिबुध द्विज, मानौं जीवनमूळि ॥ ६३ ॥

षट्पात्

तिण सकार इणतोर सतत गणिका समुझाई ॥
बेसबधू गुण बदळि प्रीति लेस न पलटाई ॥
तदि सकार असि तोलि घाव उणरै लगाय घण ॥
मरी जाणि खळ मूढ पिहितै आयो घर अप्पण ॥

१विना मूल्य २प्राण उस ब्राह्मण के आधीन करके ॥ ५८ ॥ ३ अविवाहिता स्त्री (पासवान) का भाई; यथा "मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः। सोयमनूढाभ्राता राज्ञः श्यालः शकार इत्युक्तः ॥ १ ॥" तब अपने४ बहिनोई के, धन के और वय के बल से ५ उस वेश्या के रूप का उस शकार ने शोर सुना ॥ ५९ ॥ ६ ऐसा ७ कहा ॥ ६० ॥ चारुदत्त के घर में कौन चतुर वेश्या चित्त करती है अर्थात् कोई नहीं इसकारण इस ८ दरिद्री को तजकर मुझको भजकर ९ अमाप धन को विलस ॥ ६१ ॥ १० धन निकम्मा है मुझको ११ गुण की दासी जानो धन की दासियें तो बहुत घरों में हैं ।६२। यह १२ दरिद्री है सो ही १३ पंडित है जिसको जीव की जड़ी मानती हूं १४इसप्रकार१५निरन्तर१६उस वेश्या ने१७तब१८तरवार उठाकर१९छिपाकर

उण दळिद्द द्विजरे अरथ, बणि दासी बिणमोल[1] ॥
उलटो निजघर अप्पियो, करि अधीन असु[2] कोल ॥ ५७ ॥
उज्जइणीपुर उण समय, प्रतपै रेणु प्रमार ॥
तिणरो दूजो२नाम जग आखै करण उदार ॥ ५८ ॥
तिणरो एक सकार[3] तदि, जामिप[4]१धन२वय३जोर ॥
रूँपाजीवा रूपरो, सुणियो जिण अतिसोर ॥ ५९ ॥
गणिकाघर सो सठ गयो, कीधो उण सतकार ॥
भजि मोनूँ इसड़ी भणी, तिण सकार तिणवार ॥ ६० ॥
कवण चतुर गणिका करै, चारुदत्त घर चित्त ॥
तजि दळिद्द भजि मुज्झ तू, बिलसि अप्रमित वित्त ॥ ६१ ॥
सो बसंतसेना सुणे, कहियो बित्त निकाम ॥
मानौं गुणदासी[11] मनैं, धनदासी घणधाम ॥ ६२ ॥
गडियो जिणरै चित्त गुण, धन तिणरै मन धूळि ॥
दुर्विध[12] सोही बिबुध[13] द्विज, मानौं जीवनमूळि ॥ ६३ ॥

षट्पात्

तिण सकार इणतोर[14] सततं[15] गणिका समुझाई ॥
वेसबधू[16] गुण बदळि प्रीति लेस न पलटाई ॥
तदि[17] सकार असि[18] तोलि घाव उणरै लगाय घण ॥
मरी जाणि खळ मूढ पिहितैं[19] आयो घर अप्पण ॥

१बिना मूल्य २प्राण उस ब्राह्मण के आधीन करके ॥ ५८ ॥ ३ अविवाहिता स्त्री (पासवान) का भाई; यथा" मदमूर्खताभिमानी दुष्कुलतैश्वर्यसंयुक्तः। सोयमनूढाभ्राता राज्ञः श्यालः शकार इत्युक्तः ॥ १ ॥" तब अपने४ बहिनोई के, धन के और वय के बल से ५ उस वेश्या के रूप का उस शकार ने शोर सुना ॥ ५९ ॥ ६ ऐसा ७ कहा ॥ ६० ॥ चारुदत्त के घर में कौन चतुर वेश्या चित्त करती है अर्थात् कोई नहीं इसकारण इस ८ दरिद्री को तजकर मुझको भजकर ९ अमाप धन को बिलस ॥ ६१ ॥ १० धन निकम्मा है मुझको ११ गुण की दासी जानो धन की दासियें तो बहुत घरों में हैं ।६२। यह १२ दरिद्री है सो ही १३ पंडित है जिसको जीव की जड़ी मानती हूं १४इसप्रकार१५निरन्तर१६उस वेश्या ने१७तब१८तरवार उठाकर१९छिपाकर

प्रकट बडो संग्रामसीह१३७।१ पहु, मतिधर सुकवि मिलिंद कंज मंहु

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४राशौ वीति-होत्रचवाडासिवंशवर्णने लालसिंहा१३५ऽऽदिनव९माणिक्यराज १३४ पुत्रप्रसूतमाद्रेचाऽऽद्येकादश११चहुवानभेदप्रकटनपट्टपतिमुहुःकर्म १३५।१प्रातिहारीमहीपकुमारी १३५।१ परिणायनतत्पुत्ररामचन्द्र १३६।१ खिच्चिराजो १३६।२ द्भवनतत्कनिष्ठकुलखिच्चिभेदप्रापणरामचंद्र १३६ यादवीशीला१३६।१वैन्दीविध्यु १३६।२ पयमनगणिकावसन्तसेनादुर्विधचारुदत्तगुणानुरञ्जनशकारतिरस्करणकोशलेशसूद्रकतद्गणिकानुरागनाटकनिर्माणकृतपुत्राऽभिषेकविन्दाधिराजपावकप्रविशनरामचन्द्रसन्ततिद्वादश १२ संग्रामसिंहा १३७।१ दिसम्भवनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ आदितो दशोत्तर शततमः ॥ ११० ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

[दोहा]

पूगी दिवँ अवसाणपर, सीळा१३६।१ निधि १३६।२नृपसत्थ
भूपभाव संग्राम १३६ भजि, प्रथित हुवो रणपत्थ ॥ १ ॥

१बुद्धिमान् श्रेष्ठ कवियों रूपी २ भ्रमरों का कमल और३मधु (सहत) ॥६६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में लालसिंह आदि माणिक्यराज के नव पुत्रों का जन्म होना और माद्रेचा आदि चहुवाणों में ग्यारह भेद प्रकट होना, पाटवी मुहुकर्म का प्रतिहार वंश की महीपकुमारी से विवाह करना, उसके पुत्र रामचन्द्र और खिच्चीराज का पैदा होना, उस छोटे के कुल से खीची भेद प्राप्त होना, रामचन्द्र का यादव जाति की स्त्री शीला और विन्दा जाति की स्त्री विधि से विवाह करना, वसन्तसेना गणिका का दरिद्री चारुदत्त के गुणों में प्रीति करना, शकार का अनादर करना, कोशल देश के राजा शूद्रक का उस गणिका के प्रीति का नाटक बनाकर पुत्र के अभिषेक करके उस विन्द क्षत्रियों के राजा का अग्नि में प्रवेश करना, रामचन्द्र के संग्रामसिंह आदि बारह सन्तान होने का पहला मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और आदि से एक सौ दश मयूख हुए ॥ ११० ॥

४ स्वर्ग में गई ५ अन्त समय में ६ युद्ध में अर्जुन के समान प्रसिद्ध हुआ ।१।

प्रकट बडो संग्रामसीह१३७।१पहु,मतिधर सुकवि मिलिंद कंज मंहु

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४राशौ वीति-होत्रचरणडासिवंशबर्णने लालसिंहा१३५ऽऽदिनव९माणिक्यराज १३४ पुत्रप्रसूतमाद्रेचाऽऽद्येकादश११चहुवानभेदप्रकटनपट्टपतिमुहु:कर्म १३५।१प्रातिहारीमहीपकुमारी १३५।१ परिणायनतत्पुत्ररामचन्द्र१३६।१ खिच्चिराजो १३६।२ द्भवनतत्कनिष्ठकुलाखिच्चिभेदप्रापणारामचंद्र १३६ यादवीशील्ला१३६।२वैन्दीविध्यु १३६।२ पयमनगणिकाबसन्तसेनादुर्विधचारुदत्तगुणानुरञ्जनशकारतिरस्करणाकोशलेशसूद्रकतद्गणिकानुरागनाटकनिर्माणकृतपुत्राऽभिषेकविन्दाधिराजपावकप्रविशनरामचन्द्रसन्ततिद्वादश १२ संग्रामसिंहा १३७।१ दिसम्भवनं प्रथमो १ मयूखः ॥ १ ॥ आदितो दशोत्तर शततमः ॥ ११० ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

[दोहा]

पूगी दिवँ ग्रवसाणपँर, सीळा१३६।१ निधि १३६।२न्त्रपसत्थ
भूपभाव संग्रामँ १३६ भजि, प्रथित हुवो रणपत्थ ॥ १ ॥

१बुद्धिमान् श्रेष्ठ कवियों रूपी २ भ्रमरों का कमल और३मधु (सहत) ॥९९॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण बंशवर्णन में लालसिंह आदि माणिक्यराज के नव पुत्रों का जन्म होना और माद्रेचा आदि चहुवाणों में ग्यारह भेद प्रकट होना, पाटवी मुहुकर्मा का प्रतिहार वंश की महीपकुमारी से विवाह करना, उसके पुत्र रामचन्द्र और खिचीराज का पैदा होना,उस छोटे के कुल से खीची भेद प्राप्त होना, रामचन्द्र का यादव जाति की स्त्री शीला और विन्दा जाति की स्त्री विधि से विवाह करना, वसन्तसेना गणिका का दरिद्री चारुदत्त के गुणों में प्रीति करना, शकार का अनादर करना, कोशल देश के राजा शूद्रक का उस गणिका के प्रीति का नाटक बनाकर पुत्र के अभिषेक करके उस बिन्द क्षत्रियों के राजा का अग्नि में प्रवेश करना, रामचन्द्र के संग्रामसिंह आदि बारह सन्तान होने का पहला मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ और आदि से एक सौ दश मयूख हुए ॥ ११० ॥

४ स्वर्ग में गई ५ अन्त समय में ६ युद्ध में अर्जुन के समान प्रसिद्ध हुआ ॥१॥

जिणमैं नृप लक्खण१बाहु जोर, उपजे अनेक नरनाह ओर॥११॥
जिम पुष्टपाळ५लहु तास भ्रात, जिण पुट्ठवाल४।४।१७चहुवाण जात
जगमाल१हुवो तिणकुळ अजेय,संकर२तिम भूधर२*नियत श्रेय१२
रण÷कोविद छट्ठो६मलयराज,मलयेचा५।४।१८जिण संतति समाज
इणहीकुळ गिरिधर१इंद्रसेण२, दिपिया उदार खळत्रासदेण१३।
सप्तम७चाहोड़ज कुळ सुजाण, चाहोड़६।४।१९कहावै चाहुवाण॥
मंगल१मुकुंद२जिणवंस माँहि, वसुधेस हुवा नय१जय२निबाहि१४
अष्टम८हरीण जिणकुळ उदार,बाजे हरीण७।४।२०चहुवाण वार॥
जिण सोदर मल्हण नवम ९ जोध,
सबकुळ तदीय माल्हण ८।४।२१ सुबोध ॥ १५ ॥
महराज१भूप इणभेदमाँहि, दीधा बहु साँसण क्रपण दाहि ॥
भड़ दसमौ१०मोत्कलवारभ्रात,जिणवंसमुक्कला९।४।२२ एमजात
इणभेदमाँहि भूपति अनंग१, भिड़ि जंगकिया चउ४भूप भंग ॥
डोहण रण तदनुज चक्रडाण११,
पहु तेण चक्कठाण १०।४।२४ प्रमाण ॥ १७ ॥
इणवंस हुवो नृपभोज१अग्ग, अरि जूह जेण हणिया उदग्ग ॥
विभु सर्वअनुज सूकट १२ सुबोध,
जिणवंस सूकटा ११।४।२४ प्रथित जोध ॥ १८ ॥
इणवंस प्रबळ नृपभीम१एक, अरि भूप कैद कीधा अनेक ॥
इम रामचंद्र१३६नृपहू उदार, कुळ चाहुवाण ग्यारह११प्रकार१९
संग्रामसीह१३७१पट्टप नरेस, धरि छत्र हुवो संभर धरेस ॥
दोसत२००गज साँसण तीसदोय३२,तृण जेम दिया कुळ चाढितोय

* निश्चै ही श्रेष्ठ हुआ ॥ १२ ॥÷युद्ध में पंडित १ शोभित हुए ॥ १३ ॥ २ राजा हुए ॥ १४ ॥ ३ सहोदर (सगा भाई) ४ उसके कुल के ५ हुए ॥ १६ ॥ ६ युद्ध में शत्रुओं को मथनेवाला ७ उसका छोटा भाई ८ हे राजा रामसिंह ॥ १७ ॥ ९ शत्रुओं के समूह १० मारे ११ हे प्रभु रामसिंह १२ सबसे छोटा श्रेष्ठ ज्ञानवाला सूकट हुआ १३ प्रसिद्ध वीर ॥ १८ ॥ १४ ग्यारह भेद हुए ॥ १९ ॥ १५ सांभर का राजा हुआ १६ वंश को जल चढाकर (शोभायमान

जिणमैं नृप लक्खण१बाहु जोर, उपजे अनेक नरनाह ओर॥११॥
जिम पुष्टपाळ५लहु तास भ्रात, जिण पुट्ठवाल४।४।१७चहुवाण जात
जगमाल१हुवो तिणकुळ अजेय,संकर२तिम भूधर२*नियत श्रेय१२
रण÷कोविद छट्ठो६मलयराज,मलयेचा५।४।१८जिण संतति समाज
इणहीकुळ गिरिधर१इंद्रसेण२, दिपिया उदार खळत्रासदेण॥१३॥
सप्तम७चाहोड़ज कुळ सुजाण, चाहोड़६।४।१९कहावै चाहुवाण॥
मंगल१मुकुंद२जिणवंस माँहि, वसुधेस हुवा नय१जय२निवाहि१४
अष्टम८हरीण जिणकुळ उदार,बाजै हरीण७।४।२०चहुवाण वार॥
जिण सोदर मल्हण नवम ९ जोध,
सबकुळ तदीयँ माल्हण ८।४।२१ सुबोध ॥ १५ ॥
महराज१भूप इणभेदमाँहि, दीधा बहु साँसण रूपण दाहि ॥
भड़ दसमों१०मोत्कलवारभ्रात,जिणवंसमुक्कला९।४।२२ एप्रजात
इणभेदमाँहि भूपति अनंग१, भिड़ि जंगकिया चउ४भूप भंग ॥
डोहणौं रण तदनुजँ चक्रडाण११,
पहु तेण चक्कठाण १०।४।२४ प्रमाण ॥ १७ ॥
इणवंस हुवो नृपभोज१अग्ग, अरि जूह जेण हणिया उदग्ग ॥
विभु सर्बअनुजे सूकट १२ सुबोध,
जिणवंस सूवटा ११।४।२५ प्रथित जोध ॥ १८ ॥
इणवंस प्रबळ नृपभीम१एक, अरि भूप कैद कीधा अनेक ॥
इम रामचंद्र१३६नृपहूँ उदार, कुळ चाहुवाण ग्यारह११प्रकार१९
संग्रामसीह१३७।१पट्टप नरेस, धरि छत्र हुवो संभर धरेसैं ॥
दोसत२००गज साँसण तीसदोय३२,तृण जेम दिया कुळ चाढितोय

---

* निश्चै ही श्रेष्ठ हुआ ॥ १२ ॥÷युद्ध में पंडित १ शोभित हुए ॥ १३ ॥ २ रा-
जा हुए ॥ १४ ॥ ३ सहोदर (सगाभाई) ४ उसके कुल के ५ हुए ॥ १६ ॥ ६
युद्ध में शत्रुओं को मथनेवाला ७ उसका छोटा भाई ८ हे राजा रामसिंह
॥ १७ ॥ ९ शत्रुओं के समूह १० मारे ११ हे प्रभु रामसिंह १२ सबसे छोटा
श्रेष्ट ज्ञानवाला सूकट हुआ १३ प्रसिद्ध वीर ॥ १८ ॥ १४ ग्यारह भेद हुए
॥ १९ ॥ १५ सांभर का राजा हुआ १६ वंश को जल चढाकर (शोभायमान

बंस कबंधाँ*बाधियो, मारे जिण खळ मान ॥ २८ ॥
**अमर लोक पूगो अठी, ÷सम्भर नृप संग्राम१३७॥
कीधो राधा१३७।१+सहक्रमण, नव९खंडाँ करि नाम॥२९॥
सिवादत्त१३८धरि छत्र सिर, निडर हुवो नरनाह ॥
प्रथित[1] जाय किलराजपुर, विधिसह कीध विवाह । ३० ।

षट्पात्

चंद्रसेण चालुक्क सुता आह्वयँ[2] जिण श्यामा१३८।१ ॥
प्रिया निपुण लो परणि अधिप आणी अभिरामा[3] ॥
भूपति भोगादित्य१३९जनमलीधो इण जाँठर[4] ॥
धलदुर सेंगर धीर सुता परणी जिण सम्भर ॥
माधवी१३९।१नाम पतिव्रत मगन[5] सँविया[6] जिण पटु दोय२सुत
सिवदत्त१४०।१वळे[7] चित्रक१४०।२सुमति नीति विदित संसारनुत[8]

दोहा

प्रकटहुवा चीता१४०।२५प्रचुरें[9], चित्रकरा चहुवाण ॥
जिणकुळमें गजबळ१जिसा, थियाँ[10] अचळ आथाण ॥३२॥

षट्पात्

दळण खळाँ सिवदत्त१४०प्रबळ वधियो सम्भरपति ॥
मुलक लूटि मेवाड़ कियो फग्गुणें[11] तरु कीसति ॥
समर जीति सीहोर पिसुँण[12] कीधा घण पद्धर[13] ॥
अठी नगर उजैण हुवो नृप इंद्रसेणाहर[14] ॥
गंधर्वसेण सुत मन गँहिर[15] पलटण सक[16] अजमीढपर[17] ॥

जिसने राठोड़ों के वंश को* बढाया** स्वर्ग लोक ÷ चहुवाण + सहगमन १ प्रसिद्ध ॥ ३० ॥ २ नाम जिसका ३ सुन्दर ४ जिसके पेट से ५ पतिव्रत में मग्न (डूबीहुई) ६ दो पुत्र जने ७ पुनि ८ संसार में स्तुतियोग्य ॥ ३१ ॥ ९ बहुत १० हुआ ॥३२॥ पत्ते झड़कर ११ फागण मास में वृक्ष नग्न होजाता है जिस माफिक मेवाड़ देश को करदिया १२ शत्रुओं को १३ सीधे करदिये १४ इन्द्रसेन का पौत्र (पोता) और गन्धर्वसेन का पुत्र मन का १५ गंभीर १६ युधिष्ठिर का १७ सम्वत पलटने पर

बंस कबंधाँ*बाधियो, मारे जिण खळ मान ॥ २८ ॥
**अमर लोक पूगो अठी, ÷सम्भर नृप संग्राम१३७॥
कीधो राधा१३७।१+सहक्रमण, नव९खंडाँ करि नाम॥२९॥
सिवादत्त१३८धरि छत्र सिर, निडर हुवो नरनाह ॥
प्रथित जाय किलराजपुर, विधिसह कीध विवाह । ३० ।

षट्पात्

चंद्रसेण चालुक सुता आ२हय जिण श्यामा१३८।१ ॥
प्रिया निपुण लो परणि अधिप आणी अभिरामा ॥
भूपति भोगादित्य१३९जनमलीधो इण जाठर ॥
धलपुर सेंगर धीर सुता परणी जिण सम्भर ॥
माधवी१३९।१नाम पतिव्रत मगन सँविया जिण पटु दोय२सुत
सिवदत्त१४०।१वँळे चित्रक१४०।२सुमति नीति विदित संसारनुत

दोहा

प्रकटहुवा चीता१४०।२५प्रचुर, चित्रकरा चहुवाण ॥
जिणकुळमें गजवळजिसा, थियाँ अचळ आथाण ॥३२॥

षट्पात्

दळण खळाँ सिवदत्त१४०प्रबळ वधियो सम्भरपति ॥
मुलक लूटि मेवाड़ किपो फग्गुणें तरु कीमति ॥
समर जीति सीहोर पिसुण कीधा घण पद्धर ॥
अठी नगर उज्जैण हुवो नृप इंद्रसेणाहरं ॥
गंधर्वसेण सुत मन गंहिर पलटण सँक अजमीढपर ॥

जिसने राठोड़ों के वंश को* बढाया** स्वर्ग लोक ÷ चहुवाण + सहगमन १ प्रसिद्ध ॥ ३० ॥ २ नाम जिसका ३ सुन्दर ४ जिसके पेट से ५ पतिव्रत में मग्न (डूबीहुई) ६ दो पुत्र जने ७ पुनि ८ संसार में स्तुतियोग्य ॥ ३१ ॥ ९ बहुत १० हुआ ॥३२॥ पत्ते झड़कर ११फागण मास में वृक्ष नग्न होजाता है जिस माफिक मेवाड़ देश को करदिया १२ शत्रुओं को १३ सीधे करदिये १४ इन्द्रसेन का पौत्र (पोता) और गन्धर्वसेन का पुत्र मन का १५ गंभीर १६ युधिष्ठिर का १७ सम्वत पलटने पर

अर नीति[1]शृंगार[2]बैराग्य३री त्रिसती३०० नूँ आदिलेर औ-रभी अनेक ग्रंथ निर्माणकीधा भर्तृहरी ॥३९॥

एक १ दिन राजारै अर्थ कोई तपस्वीन महारसायणरो निदान[3] एक अपूर्ब स्वादु फळ दीधो ॥

सो राजानैं आपरा प्राणारो औषध अनंगसेना जाणि अवँ-रोध जाय राणीरै अर्थ निवेदनकीधो॥

राणी तो कळिजुगरो रूप ऐहा अभिरूपँ अवनीसरो तिर-स्कार[8] करि सुँद्धांतरै आश्रित अनेक जन रहै जिकाँमैं कोई दो-२ ही लोकरो खोवणाहार ठाँळियो॥

जिणरी संगतिरै प्रभाव स्वर्गलोकरो मार्ग मुँद्रितकराय कुम्भी-पाकरो निवास भाँळियो ॥ ४० ॥

सो आपरा स्वामीरो दीधो अपूर्व चमत्कारिक फळ राणी अ-नंगसेनाँनैं[14] जाँररै भेटकीधो ॥

जिण जाँररोपण चित्त अनंगसेनारी अपेक्षाकरि एक बाँरबि-लासिनीमैं विसेसकरि आसक्त[17] रहै तिणाँनूँ इणा जायदीधो ॥

जिण बारांगना[19] सोही फळ राजारै उचित जाणि राजद्वार आ-य पाछो निवेदन कियो ।

सो देखताँही प्रतिहायन बाणवैंलाख९२००००० निष्कमुद्रारो[21] मुलक माळव तृणारै समान छोड़ि प्रामारवंसरै प्रभाकरै[22] जोगलियो आपरा अनुज विक्रमरै उज्जइणीरा आधिपत्यरो अभिसेक करि राजाभर्तृहरि दुर्गम पर्वताँमैं निवास धारियो ।

१तीन शतक२बनाये ॥ ३९ ॥ ३ कारण ४ जनाने में जाकर ५ भेट (राणी को दिया) किया ६ ऐसे ७ पंडित अथवा मनोहर ८ राजा का ९ अनादर करके १० जनाना के ११ हेरा१२बन्ध कराके १३ देखा (विचारा) ॥४०॥ १४ उपपति को दिया१५भी१६वेश्या में१७वशीभूत होरहा था१८जिसको १९ उस गणिका ने२०प्रतिवर्ष२१सोने का सिक्का (मोहर) की आमद का मा-लवा देश २२ सूर्य ॥ १४ ॥ २३ स्वामिपन का

अर नीति१शृंगार२बैराग्य३री त्रिसती३०० नूँ आदिलेर औ-
रभी अनेक ग्रंथ निर्माण[2]कीधो भर्तृहरी ॥३९॥

एक १ दिन राजारै अर्थ कोई तपस्वीन महारसायणरो
निदान[3] एक अपूर्ब स्वादु फळ दीधो ॥

सो राजानैं आपरा प्राणारो औषध अनंगसेना जाणि अवँ-
रोध[4] जाय राणीरै अर्थ निवेदन[5]कीधो॥

राणी तो कळिजुगरो रूप ऐड़ा[6] अभिरूप[7] अवनीसरो[8] तिर-
स्कार[9] करि सुंद्धांतरै[10] आश्रित अनेक जन रहै जिकाँमैं कोई दो-
२ ही लोकरो खोवणहार ठाँळियो[11]॥

जिणरी संगतिरै प्रभाव स्वर्गलोकरो मार्ग मुंद्रित[12]कराय कुम्भी-
पाकरो निवास भाँळियो[13] ॥ ४० ॥

सो आपरा स्वामीरो दीधो अपूर्व चमत्कारिक फळ राणी अ-
नंगसेनानैं जाररै[14] भेटकीधो ॥

जिण[15] जाररोपण चित्त[16] अनंगसेनारी अपेक्षाकरि एक वाँरबि-
लासिनीमैं बिसेसकरि आसक्त[17] रहै तिणनूँ इण जायदीधो ॥

जिण बारांगना सोही फळ राजारै उचित जाणि राजद्वार आ-
य पाछो निवेदन कियो ।

सो देखताँही प्रतिहायन बाणवैंलाख९२००००० निष्कमुद्रारो[21]
मुलक माळव तृणारै समान छोड़ि प्रामारवंसरै प्रभाकरै[22] जोगलियो
आपरा अनुज विक्रमरै उज्जइणीरा आधिपत्यरो[23] अभिसेक
करि राजाभर्तृहरि दुर्गम पर्वताँमैं निवास धारियो ।

१तीन शतक२बनाये ॥ ३९ ॥ ३ कारण ४ जनाने में जाकर ५ भेट (राणी को दिया) किया ६ ऐसे ७ पंडित अथवा मनोहर ८ राजा का ९ अनादर करके १० जनाना के ११ हेरा१२बन्ध कराके १३ देखा (विचारा) ॥४०॥ १४ उपपति को दिया१५भी१६वेश्या में१७वशीभूत होरहा था१८जिसको १९ उस गणिका ने२०प्रतिवर्ष२१सोने का सिक्का (मोहर) की आमद का मालवा देश २२ सूर्य ॥ १४ ॥ २३ स्वामिपन का

आपरा अग्रजरी चर्या[1] इणारीति सुणि बंगराजे[2] गौड़ हरिश्चंद्ररी राणी पण पतिरा[3] महाप्रस्थानरै[4] अनंतर[5] निज पुत्र गोपीचंदरै योही बीतराग जोगरो उपदेस लगायो ॥

अर बंग जिसा देसरो आधिराज भाव[6] छुडाय अखंड मोद स्वरूप जाणणारो जल दिखाय सूतोसो जगायो ॥

कोई कहै दोही २ माँमा१ भाणेजाँ२नूँ[6] जोगरो उपदेस सिद्ध-राज गोरक्ष आय सुणायो ॥

इणबातरोतो असंभव नहीं परंतु गोरक्षरा कान फाटा कहै ति-णरो प्रमाण तो कठैही न पायो ॥ ४४ ॥

ग्रंथ पुरुषपरिक्षारै निर्माताँ[7] विद्यापति मिश्र राजा गंधर्बसेणरै तीन३ पुत्र लिखिया ॥

तिकाँमैं बडो हरी१ बीचलो सक२ तिणसूं छोटो बिक्रम३ इ-णरीति सूचर्क[8] किया ॥

याँ तीन ३ भायाँमैं बडै हरीतो एक१ही बर्ष राजकरि छो-टा सोदर[9] सकनूँ अवंतीरो राज आंपियो[10] ॥

अर सकरै[11] अनंतर राजा बिक्रम अवंतीरो आधिराज[12] होय च्यारि ४ ही चरणाँ सहित बेदधर्म निश्चल थापियो ॥ ४५ ॥

इसड़ी[13] पुरुषपरीक्षामैं लिखी जिकोतो इणरीति होइ तोभी असंभव न जाणीजै ॥

परंतु कविलोकाँरा मतमैं तो घणाँग्रंथाँरो एक आसय मि-लै तिकोही सिद्धांत प्रमाणीजै ॥

इणरीति अग्रज हरीरै अनंतर[14] प्रामारराज बिक्रम अवंतीरा आ-धिपत्यरो[15] अभिसेक पायो ॥

अर आगैं देवराजरो रचियो आठ ८ हात उछ्रित[16] आठ ८

---

१ बडे भाई के चरित्र इस प्रकार सुनके २ बंगाला के राजा ३ पति के स्वर्ग गये ४ पीछे ५ स्वामिपन छुटाकर ६ को ॥ ४४ ॥ ७ बनानेवाला ८ जनाये ९ सहोदर को १० दिया ११ पीछे १२ स्वामी ॥ ४५ ॥ १३ ऐसी १४ पीछे १५ स्वामिपन का, इन्द्र का रचाहुआ आठ हाथ १६ ऊंचा

आपरा अग्रजरी चर्या इणरीति[1] सुणि बंगराजे[2] गौड़ हरिश्चंद्ररी राणी पण पतिरा[3] महाप्रस्थानरै अनंतरै[4] निज पुत्र गोपीचंदरै योही बीतराग जोगरो उपदेस लगायो ॥

अर बंग जिसा देसरो आधिराजभावं[5] छुडाय अखंड मोद स्वरूप जाणणारो जल दिखाय सूतोसो जगायो ॥

कोई कहै दोही २ मॉमाँ१ भाणेजाँ२नूँ[6] जोगरो उपदेस सिद्ध-राज गोरक्ष आय सुणायो ॥

इणबातरोतो असंभव नही परंतु गोरक्षरा कान फाटा कहै तिणरो प्रमाण तो कठैही न पायो ॥ ४४ ॥

ग्रंथ पुरुषपरिक्षारै निर्माताँ[7] विद्यापति मिश्र राजा गंधर्बसेणरै तीन३ पुत्र लिखिया ॥

तिकाँमैं बडो हरी१ बीचलो सक२ तिणसूं छोटो बिक्रम३ इणरीति सूचर्क[8] किया ॥

याँ तीन ३ भायाँमैं बडे हरीतो एक१ही बर्ष राजकरि छोटा सोदर[9] सकनूं अवंतीरो राज आंपियो[10] ॥

अर सकरै[11] अनंतर राजा बिक्रम अवंतीरो अधिराज[12] होय च्यारि ४ ही चरणाँ सहित बेदधर्म निश्चल थापियो ॥ ४५ ॥

इसड़ी[13] पुरुषपरीक्षामैं लिखी जिकोतो इणरीति होइ तोभी असंभव न जाणीजै ॥

परंतु कविलोकाँरा मतमैं तो घणाँग्रंथाँरो एक आसय मिलै तिकोही सिद्धांत प्रमाणीजै ॥

इणरीति अग्रज हरी रै अनंतरै[14] प्रामारराज बिक्रम अवंतीरा आधिपत्यरो[15] आभिसेक पायो ॥

अर आगैं देवराजरो रचियो आठ ८ हात उछ्रित[16] आठ ८

---

१ बडे भाई के चरित्र इस प्रकार सुनके २ बंगाला के राजा ३ पति के स्वर्ग गये ४ पीछे ५ स्वामिपन छुडाकर ६ को ॥ ४४ ॥ ७ बनानेवाला ८ जनाये ९ सहोदर को १० दिया ११ पीछे १२ स्वामी ॥ ४५ ॥ १३ ऐसी १४ पीछे १५ स्वामिपन का, इन्द्र का रचाहुआ आठ हाथ १६ ऊंचा

पणाप्राप्तराज्यबितीर्णबहुशासनसंग्रामसिंह१३७यादवीराधा१३७।१ परिणायनतत्पुत्रशिवादत्तो १३८ द्भवनविजितदिक्कान्यकुब्जनरेशश्रुतस्वकीर्तिकार्मध्वजरामदेवबन्दीजनलालकोटि १०००००० मुद्रासम्प्रदानीकरणशतकेतुमुख्यतत्पुत्रबिंशति २० प्रादुर्भवनसंग्रामसिंह १३७ सार्थराधा १३७।१ ज्वलनस्नानाशिवादत्त १३८ श्यामा १३८।१ भोगादित्य १३६ माधवी १३९।१ बिबहनतत्पुत्रशिवदत्त १४०१ चित्रक १४०।२ युग्म२समुद्भवनचित्रकवंशचीताऽभिधेयभवनाशिवदत्त १४० मेदपाटबिध्वंसनसिंहपुरयुद्धबिजयनसमनुष्टितराज्यप्रपञ्चिताऽनेकप्रबन्धसन्मानितपौराणिकप्रतिमल्लमालवेन्द्रप्रमारराजभर्तृहरियोगाऽनुष्ठानप्राप्तराज्यविक्रमादित्ययशोविस्तरणो द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ आदित एकादशोत्तरशततमः ॥ १११ ॥

[प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा]

[सचरणगद्यम्]

जिण राजा बिक्रमरै द्विजराज धन्वन्तरि१अमर२संकू३बेताळ ४घटखर्पर५बराहमिहिर६काळीदास७बररुचि८तथा क्षपणाक सिद्धसेण दिवाकर९ए नव९ही कवि पण्डित नव९रत्न कहाया ॥

भाइयों से उपजे हुए चहुवाण कुल में बालेसा आदि ग्यारह भेद प्राप्त होना, राज्य पाकर बहुत उदकग्राम देकर संग्रामसिंह का यदुवंशी राधा से विवाह करना, उसके शिवादत्त पुत्र का होना, दिग्विजय करके कन्नोज के राजा का अपनी कीर्ति सुनकर राठोड़ रामदेव का लाल नामक भाट को करोड़ रुपये देना, उसके शतकेतु आदि बीस पुत्रों का होना, संग्रामसिंह के साथ राजा का जलना, शिवादत्त-श्यामा भोगादित्य-माधवी का विवाह होना, उसके पुत्र शिवदत्त और चित्रक दोनों का जन्म होना, चित्रक के वंश के चीता नामवाले प्रसिद्ध होना, शिवदत्त का मेवाड़ देश को लूटना, सिंहपुर के युद्ध में विजय पाना, श्रेष्ठ प्रकार से राजा करके अनेक ग्रन्थ रचना, और प्रतिमल्ल नामक चारण का सन्मान करके पंवार राजा भर्तृहरि का योग लेना, और राज्य पाकर विक्रमादित्य का यश फैलाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से एक सौ ग्यारह मयूख हुए॥

१ ढूंढिया (जैन मत का साधु) अथवा जैनमतावलंबी जती

पराप्राप्तराज्यवितीर्णबहुशासनसंग्रामसिंह१३७यादवीराधा१३७।१ परिणयनतत्पुत्रशिवादत्तो १३८ ऽद्भवनविजितदिक्कान्यकुब्जनरेशश्रुतस्वकीर्तिकामध्वजरामदेवबन्दीजनलालकोटि १०००००० मुद्रासम्प्रदानीकरणशतकेतुमुख्यतत्पुत्रविंशति २० प्रादुर्भवनसंग्रामसिंह १३७ सार्थराधा १३७।१ ज्वलनस्नानशिवादत्त १३८ श्यामा १३८।१ भोगादित्य १३६ माधवी १३९।१ विवहनतत्पुत्रशिवदत्त १४०१ चित्रक १४०।२ युग्म२समुद्भवनचित्रकवंशचीताऽभिधेयभवनशिवदत्त १४० मेदपाटविध्वंसनसिंहपुरयुद्धविजयनसमनुष्ठितराज्यप्रपञ्चिताऽनेकप्रबन्धसन्मानितपौराणिकप्रतिमल्लमालवेन्द्रप्रमारराजभर्तृहरियोगाऽनुष्ठानप्राप्तराज्यविक्रमादित्ययशोविस्तरणं द्वितीयो २ मयूखः ॥ २ ॥ आदित एकादशोत्तरशततमः ॥ १११ ॥

[प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा]

[सचरणगद्यम्]

जिण राजा बिक्रमरै द्विजराज धन्वन्तरि१अमर२संकू३बेताळ४घटखर्पर५बराहमिहिर६काळीदास७बररुचि८तथा क्षपणक[1] सिद्धसेण दिवाकर९ए नव९ही कवि पण्डित नव९रत्न कहाया ॥

भाइयों से उपजे हुए चहुवाण कुल में बालेसा आदि ग्यारह भेद प्राप्त होना, राज्य पाकर बहुत उदकग्राम देकर संग्रामसिंह का यदुवंशी राधा से विवाह करना, उसके शिवादत्त पुत्र का होना, दिग्विजय करके कन्नोज के राजा का अपनी कीर्ति सुनकर राठोड़ रामदेव का लाल नामक भाट को करोड़ रुपये देना, उसके शतकेतु आदि बीस पुत्रों का होना, संग्रामसिंह के साथ राधा का जलना, शिवादत्त-श्यामा भोगादित्य-माधवी का विवाह होना, उसके पुत्र शिवदत्त और चित्रक दोनों का जन्म होना, चित्रक के वंश के चीता नामवाले प्रसिद्ध होना, शिवदत्त का मेवाड़ देश को लूटना, सिंहपुर के युद्ध में विजय पाना, श्रेष्ठ प्रकार से राजा करके अनेक ग्रन्थ रचना, और प्रतिमल्ल नामक चारण का सन्मान करके पंवार राजा भर्तृहरि का योग लेना, और राज्य पाकर विक्रमादित्य का यश फैलाने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से एक सौ ग्यारह मयूख हुए॥

[1] ढूंढिया (जैन मत का साधु) अथवा जैनमतावलंबी जती

बादकल्प१ ऽऽदिक अनेक ग्रंथ सुणीजै ॥
जिकाँमैं जैन१ तथागत२ मतविसेसरातो विनापरिचयं किण
रीति सुणीजै रै पुणीजै ॥
इणतरह ओरभी अनेक विद्यारा अर्णवं हजाराँ कवि पंडित अलौकिक चमत्कारचित्रित वाणीरा विलासकरि प्रवीण पुरुषांरा चित्तग्रहै जिण समयरा कोविदलोक अवंती अधीसरा दीधाअन्नरा आश्रय बिनां कुमारिका मंडळ मैं कवणा रहै ॥

जिण नरेस आया१अर्थीनूँ एक १, देखिया २ नूँ दस१०,संलापी ३ नूँ सत,१०० सभ्य ४ नूँ सहस्र १०००, अभिरूप ५ नूँ अयुत १००००, लक्षवेधी ६ नूँ लक्ष१०००००, प्रातिभ ७ नूँ प्रयुत १००००००,अजेयकोटि कल्पक ८ नूँ कोटि१०००००० मुद्रा देणारो नियम लीधो ॥
अर आयो १ ही पाल २ माँगणाँ १ ही गुण २दीठोही १ देय

बिना अभ्यास(पहचान)किये कैसे कहाजावे और कहाजावे "यहां सुणीजै और पुणीजै ये दोनों मरुभाषा के कथन अर्थ में एकार्थवाची शब्द हैं सो विशेष निषेधार्थ के लिये दोनों पर्याय शब्दों का प्रयोग किया है क्योंकि जहां विशेषता जतानी होती है तहां एक ही शब्द का दोवार अथवा एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग कियाजाता है जैसे विशेष निषेधार्थ में "नहीं नहीं" अथवा स्वीकारार्थ में "हां हां" ऐसे ही यहां भी जानो अर्थात् बिना जाने कदापि नहीं कहा जासका समुद्र पंडित लोक आधार बिना भरतखंड में कोई नहीं रहा. उस विक्रम राजा ने याचना करने को जो कोई आगया उसको एक रुपया, और जिस याचक को राजा ने देख लिया उसको दश रुपये, अच्छे बोलनेवाले को सौ रुपये, धर्म अर्थ सहित वचनों से सभा को वश करनेवाले को हजार रुपये, पंडित को दश हजार रुपये,दूसरे के मन के भाव को जान लेनेवाले अथवा लक्षणा वृत्ति आदि साहित्य जानने वाले को लाख रुपये,ज्ञानी अथवा शास्त्रार्थ में सामना करनेवाला अथवा प्रतिभान्वित(विशेष बुद्धिमान)को दश लाख रुपये,नहीं जीतने में आवे ऐसी कोटि (शास्त्रार्थ के लिये कोई विषय नियत कियाजावे उसको कोटि कहते हैं) की कल्पना करनेवाले को एक करोड़ रुपये देने का जिसने नियम लिया. और जो कोई पुरुष राजा के समीप याचना करने को चलागया उसीको दान का पात्र जाना और जिसने याचना की यह याचना

बादकल्प१ऽऽदिक अनेक ग्रंथ सुणीजै ॥
जिकाँमैं जैन१ तथागत२ मतविसेसरातो विनापरिचयं किण
रीति सुणीजै२ रै पुणीजै३ ॥

इणतरह ओरभी अनेक विद्यारा अर्णवें४ हजाराँ कवि पंडित अलौकिक चमत्कारचिणित वाणीरा विलासकरि प्रवीण पुरुषांरा चित्तगहै जिणं समयरा कोविद५लोक अवंती अधीसरा दीधाअन्नरा आश्रय विनां कुमारिकां मंडळ मैं कवण रहै ॥

जिण नरेस आया१अर्थीनूँ एक १, देखिया २ नूँ दस१०,संलापी ३ नूँ सत,१०० सभ्य ४ नूँ सहस्र १०००, अभिरूप ५ नूँ अयुत १००००, लक्षवेधी ६ नूँ लक्ष१०००००, प्रातिभ ७ नूँ प्रयुत १००००००,अजेयकोटि कल्पक ८ नूँ कोटि१००००००० मुद्रा देणरो नियम लीधो ॥

अर आयो १ ही पात्र २ माँगणाँ १ ही गुण २दीठोही १ देय

विना अभ्यास(पढेबिना)किये कैसे कहाजावे और३ कहाजावे "यहां सुणीजैऔर पुणीजै ये दोनों मरुभाषा के कथन अर्थ में एकार्थवाची शब्द हैं सो विशेष निषेधार्थ के लिये दोनों पर्याय शब्दों का प्रयोग किया है क्योंकि जहां विशेषता जतानी होती है तहां एक ही शब्द का दोवार अथवा एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग कियाजाता है जैसे विशेष निषेधार्थ में "नहीं नहीं" अथवा स्वीकारार्थ में "हां हां" ऐसे ही यहां भी जानो अर्थात् विना जाने कदापि नहीं कहा जासका समुद्र पंडित६ लोक आधार विना भरतखंड में कोई नहीं रहा. उस विक्रम राजा ने याचना करने को जो कोई आगया उसको एक रुपया, और जिस याचक को राजा ने देख लिया उसको दश रुपये, अच्छे बोलनेवाले को सौ रुपये, धर्म अर्थ सहित वचनों से सभा को वश करनेवाले को हजार रुपये, पंडित को दश हजार रुपये,दूसरे के मन के भाव को जान लेनेवाले अथवा लक्षणा वृत्ति आदि साहित्य जानने वाले को लाख रुपये,ज्ञानी अथवा शास्त्रार्थ में सामना करनेवाला अथवा प्रतिभान्वित(विशेष बुद्धिमान्)को दश लाख रुपये,नहीं जीतने में आवे ऐसी कोटि (शास्त्रार्थ के लिये कोई विषय नियत कियाजावे उसको कोटि कहते हैं) की कल्पना करनेवाले को एक करोड़ रुपये देने का जिसने नियम लिया. और जो कोई पुरुष राजा के समीप याचना करने को चलागया उसीको दान का पात्र जाना और जिसने याचना की यह याचना

बिप्ररो संकल्प सिद्ध न कीधो जिको योरंक आराधणारा किसा अंगमैं चूको ॥ ७ ॥

जगदंबा कहियो चाहैजिसो कष्ट करो भावनाँ सुद्ध न होय जं-रैं ऊ कष्ट मातंगराँ[3] न्हाणाँजिम वृथा फळ बतावै ॥

इसड़ो आसय जाणि अंवतीरै अधीस अरज कीधी मोनूँ वर बखसो जिको योही आपरो भक्त पावै ॥

इणरीति देवीरा वरदान जिसड़ी दुर्लभचीज ब्राह्मणानूँ दिवाय हरिरो अनुजँ उज्जैणि आयो॥

अर सारदससीरी चन्द्रिकानूँ आपरी छाँयारो करणहार चोर तरफ चारु जस चलायो ॥८॥

इणाही तरह देवीरा निदेससूं जाचकाँनूँ देणकाज राजा बडा-हरै सदाही सुवर्णगासि[11] सिद्धकीधो ॥

अर जिकणरै बदळै ऊकळता कडाहरा तेलमैं आपरोही कलेवर[12] झोकि[13] दीधो ॥

जिणारा सिद्धांत प्रमाणिक पंडिताँरा रचिया प्रबंधामैं[14] इणरीति सुणीजै जिकोपण बळा विंध्य[15] रा अधीस रामभूपाळ अंग१उपांग २ सहित सुणीजै ॥ ९ ॥

पांड्यदेसरा नरेस पंडिया चहुवाण समुद्रसेणनैं विक्रमरै अर्थ दंडमैं अनेक द्रव्य भेट भेजिया तिके अवंतीरै अधीस सुणताँही जिण वेतालिकनूँ[16] दीधो तिको कीर्तिप्रतानक नाम बोधकर[17] पहली राजा बडाहरै आश्रित रहियो ॥

---

२ जब ३ हाथी के ४ स्नान के समान ५ मुझको ६ भर्तृहरि का ७ छोटा भाई ८ अरु ९ शरद ऋतु के चन्द्रमा की चांदनी को अपनी १० छाया के समान (साथ चलनेवाली अथवा छाया का रंग श्याम होता है सो उस चंद्रिका को भी श्याम बतानेवाला उज्वल यश) करनेवाला उज्वल यश चारों ओर फैलाया ॥ ८ ॥ ११ सुवर्ण का समूह १२ अपना शरीर १३ डाल दिया १४ ग्रन्थों में १५ विंध्याचल की शाखा बुन्दी के राज्य में है जिसको आडाबळा कहते हैं सो ही विशेषण रामसिंह के साथ लगायागया है कि हे आडाबळा नामक पर्वत के स्वामी रामसिंह ॥ ९ ॥ १६ भाट को १७ भाट

बिप्ररो संकल्प सिद्ध न कीधो जिको योरंक आराधगारा किसा अंगमैं चूको ॥ ७ ॥

जगदंबा कहियो चाहैजिसो कष्ट करो भावनाँ सुद्ध न होय जं-रैं ऊ कष्ट मातंगराँ न्हाणाँजिम वृथा फळ बतावै ॥

इसड़ो आसय जाणि अंवतीरै अधीस अरज कीधी मोनूँ वर बखसो जिको योही आपरो भक्त पावै ॥

इणरीति देवीरा वरदान जिसड़ी दुर्लभचीज ब्राह्मणाँनूँ दिवाय हरिरो अनुजँ उज्जैणि आयो॥

अरं सारदससीरी चन्द्रिकानूँ आपरी छाँयारो करणहार चोढ़ तरफ चारु जस चलायो ॥८॥

इणही तरह देवीरा निदेससूं जाचकाँनूँ देणकाज राजा वडा-हरै सदाही सुवर्णरासि सिद्धकीधो ॥

अर जिकणरै बदळै ऊकळता कडाहरा तेलमैं आपरोही कलेवर झोकि दीधो ॥

जिणरा सिद्धांत प्रमाणिक पंडिताँरा रचिया प्रबंधामैं इणरीति सुणीजै जिकोपण बळा विंध्य २रा अधीस रामभूपाळ अंग१उपांग २ सहित सुणीजै ॥ ९ ॥

पांड्यदेसरा नरेस पंडिया चहुवाण समुद्रसेणनैं विक्रमरै अर्थ दंडमैं अनेक द्रव्य भेट भेजिया तिके अवंतीरै अधीस सुणताँही जिण वैतालिकनूँ दीधा तिको कीर्तिप्रतानक नाम वोधकर पहली राजा वडाहरै आश्रित रहियो ॥

---

२ जव ३ हाथी के ४ स्नान के समान ५ मुझको ६ भर्तृहरि का ७ छोटा भाई ८ अरु ९ शरद ऋतु के चन्द्रमा की चांदनी को अपनी१० छाया के समान (साथ चलनेवाली अथवा छाया का रंग श्याम होता है सो उस चंद्रिका को भी श्याम बतानेवाला उज्वल यश) करनेवाला उज्वल यश चारों ओर फैलाया ॥ ८ ॥ ११ सुवर्ण का समूह १२ अपना शरीर १३ डाल दिया १४ ग्रन्थों में १५ विंध्याचल की शाखा बुन्दी के राज्य में है जिसको आडावळा कहते हैं सो ही विशेषण रामसिंह के साथ लगायागया है कि हे आडावळा नामक पर्वत के स्वामी रामसिंह ॥ ९ ॥ १६ भाट को १७ भाट

बंसभास्कररै वाँरै राखिवा जिसो न जाणियो॥

अर गंधर्वसेण[1]नूं जयंत[2] रो हरि[3]नूं हुतासण[4]रो विक्रमनूं धर्म[2]रो अवतार कहियो तिणसूंभी प्रकासणरै[5] उचित प्रमाणियो१२

औरभी सातबाहन[6]रा चरित्रनूं आदिलेर[7] आस्थिपाल १ वीसलदेव२ वल्लभाचार्य३रा चरित्र पर्यन्त इसाही प्रमाणिकाँरै लिखियाँ कहीगई तथा कही जावसी॥

तिणकारणकरि कोई कोई उदंतँरा संभवमैं संदेह[8] दीसे तथापि समर्थाँरो[9] लेख बलात्कारसूंही[10] खटावसी॥

इणरीति राजाबडाहरा अंगरो समस्त पळ[11] खाय तिणनूं[12] पाछो सजीव करि भगवती वर लेणरो हुकम दीधो॥

जरै बडाहभी जिणतरह प्रतिदिन अरजकरतो तिणरीति अर्थीजनाँनूं[13] देणकाज आपरै द्वार सुवर्णरो राँसि[14] संपादनैं[15] होणरोही प्रसाद[16] माँगि स्वकीय सदनआय[17] प्रभातही सो पुरटपुंज[18] जाचकाँनैं लुटाय अपूर्व जस लीधो॥ १३ ॥

यो सब राजा बडाहरो लोमअंचक[19] आचार देखि प्रामारराज विक्रमरा मनमैं दयारो समुद्र ऊपणियो॥

अरैं[20] बडाहरा प्रस्थानैंरा[21] समयरै पूर्वही आपरा अंगअंगमैं छुरिकारा[22] छतँ[23] लगाय समस्त स्वादुद्रव्य मिलाय पूर्वरी तरह तप्त तैलरा कटाहमैं बारबार झंपालेर भद्रकाळीनूँ प्रसन्नकरि बिनाँही

---

१ गंधर्वसेन को २ जयन्त (इन्द्र का पुत्र) का ३ भर्तृहरि को ४ अग्नि का और विक्रम को धर्म के अवतार कहे ५ इसकारण से भी प्रसिद्ध करना उचित जाना॥ १२॥ ६सातवाहन के चरित्र को (तीसरे राशि में कहागया जिसको) आदि लेकर ७ वृत्तान्त के८ होने में संदेह दीखता है अर्थात् ऐसे वृत्तान्तों का होना असंभव है९तोभी बडे लोग लिखआये हैं उनका लिखना१०हठ से ही ठहरैगा अर्थात् ऐसे वृत्तान्तों को सत्य मत मानना११मांस१२उसको१३याचक लोगों को देने के लिये१४ समूह१५इकट्ठा होने का १६ वर मांगकर १७ अपने घर आकर वह १८ सोने का समूह १९ रोमांचक (सुनते ही शरीर के रोम खड़े होजावें ऐसा)२० अरु२१बडाह के चलने के समय से पाहिले ही२२ छुरियों के२३घाव लगाकर

बंसभास्कररै वाँरै राखिबा जिसो न जाणियो॥

अर गंधर्वसेण१नूं[1] जयंत[2]२ रो हरि[3] १नूं हुतासण[4]२रो विक्रम१नूं धर्म२रो अवतार कहियो तिण[5]सूंभी प्रकासणरै उचित प्रमाणियो१२

औरभी सातबाहन१रा चरित्र[6]नूं आदिलेर आस्थिपाल १ बीसलदेव२वल्लभाचार्य३रा चरित्र पर्यन्त इसाही प्रमाणिकाँरै लिखियाँ कहीगई तथा कही जावसी ॥

तिणकारणकरि कोई कोई उदंत[7]रा संभव[8]मैं संदेह दीसे तथापि[9] समर्थाँरो लेख बलात्कार[10]सूंही खटावसी ॥

इणरीति राजाबडाहरा अंगरो समस्त पळ[11] खाय तिण[12]नूं पाछो सजीव करि भगवती बर लेणरो हुकम दीधो ॥

जरै बडाहभी जिणतरह प्रतिदिन अरजकरतो तिणरीति अर्थी[13]जनाँनूं देणकाज आपरै द्वार सुवर्णरो रासि[14] संपादन[15] होणरोही प्रसाद[16] माँगि स्वकीय सदन आय[17] प्रभातही सो पुरटपुंज[18] जाचकाँनूँ लुटाय अपूर्व जस लीधो ॥ १३ ॥

यो सब राजा बडाहरो लोमंचक[19] आचार देखि प्रामारराज विक्रमरा मनमैं दयारो समुद्र ऊपणियो ॥

अरु[20] बडाहरा प्रस्थान[21]रा समयरै पूर्वही आपरा अंगअंगमैं छुरिकारा[22] छत[23] लगाय समस्त स्वादुद्रव्य मिलाय पूर्वरी तरह तप्त तैलरा कटाहमैं बारबार झंपालेर भद्रकाळीनूँ प्रसन्नकरि बिनाँही

---

१ गंधर्वसेन को २ जयन्त (इन्द्र का पुत्र) का ३ भर्तृहरि को ४ अग्नि का और विक्रम को धर्म के अवतार कहे ५ इसकारण से भी प्रसिद्ध करना उचित जाना ॥ १२ ॥ ६सातवाहन के चरित्र को (तीसरे राशि में कहागया जिसको) आदि लेकर ७ वृत्तान्त के८ होने में संदेह दीखता है अर्थात् ऐसे वृत्तान्तों का होना असंभव है९तोभी वडे लोग लिखआये हैं उनका लिखना१०हठ से ही ठहरैगा अर्थात् ऐसे वृत्तान्तों को सत्य मत मानना११मांस१२उसको१३याचक लोगों को देने के लिये१४ समूह१५इकट्ठा होने का १६ वर मांगकर १७ अपने घर आकर वह १८ सोने का समूह १९ रोमांचक (सुनते ही शरीर के रोम खड़े होजावें ऐसा)२० अरु२१बडाह के चलने के समय से पहिले ही२२ छुरियों के२३घाव लगाकर

एवं दुर्विधाँश्चौराँश्च परिचेतुकामो रङ्कवेशमादाय बिक्रमादित्य एकदाऽवन्तीबहिर्गतः कस्मिँश्चिद्देवताऽऽयतने तस्थौ; तत्र चत्वारश्चौराः सरीसृप१मुख्याः समागत्य मन्त्रयाम्बभूवुरित्थं चोचुर्यदिदं परस्त्यादानीतमोदनमत्राऽशित्वा पुरं प्रविशाम इति ॥ १६ ॥

तच्छ्रुत्वैव विक्रमस्तदुच्छिष्टं मत्कृते दत्तेत्याकर्ण्य स्तेयिनो जगदुः, रे कस्त्वमिति श्रुत्वा राजोवाच महाघस्मरः क्षुधाकुलितो रङ्कः प्रस्थातुमसमर्थोऽहं तिष्ठामीति ॥१७॥

तच्छ्रुत्वा चौराः परस्परमूचुरये रङ्क! त्वमस्माभिर्दिवाप्यत्रैव दृष्टः कथमिदानीमपि दारुणोऽनेहसि डाकिनी१पिशाच२वेताल३क्रीडनीये महापुरीपरिसरे दारुणे देवालये तिष्ठसि ॥ १८ ॥

राजा चोचे तदाकर्ण्य देवयात्राप्रवृत्तलोकान् समुद्दिश्याऽशनार्थमहमसमर्थोऽत्रायातः कथमपि तमाहारमन्तरा दुष्पूरोदरश्चराडबुभुक्षुरन्यत्र व्रजितुमपि न शक्नोमि ॥१९॥

ब्रुवते स्म चौरा यदि तुभ्यमुच्छिष्टमन्नं दास्यामस्तदा किं नः

नहीं किन्तु ब्राह्मण था ॥१५॥ इस रीति दरिद्री चोरों को पहिचान ने की इच्छा से कंगाल का रूप धारण कर विक्रमादित्य एक समय उज्जैण नगरी से बाहर निकल एक देव मन्दिर में ठहरा था वहां पर सरीसृप नामक है मुखिया जिन्हों का ऐसे चार चोर आकर सलाह करने लगे और इसप्रकार बोले कि यह घर से लायाहुआ भात (चांवल) यहां खाकर नगर में चलें बस ॥१६॥ यह सुनके विक्रम बोला उसका उच्छिष्ट(खाने से बचे जो ऊँठ ठ) मुझे देना यह सुनके चोर बोले अरे तू कौन है? यह सुनके राजा बोला मैं बहुत खानेवाला भूख से घबरायाहुआ दरिद्री चलने को समर्थ नहीं सो बैठा हूं।१७। यह सुनके चोर आपस में बोले अरे दरिद्री! तुझको हम लोगों ने दिन को भी इहां ही देखा था कैसे अब भी तू डाकिनी भूत प्रेतों के खेलने के कठिन समय में बडी नगरी के पास के भयानक मन्दिर में बैठा है ॥ १८ ॥ यह सुनके राजा बोला देवयात्रा (देवदर्शन करने) में लगेहुए लोगों को जानके अशक्त मैं भोजन के अर्थ किसीप्रकार इहां आगया हूं इस भोजन के बिना नहीं भराजानेवाला है पेट जिसका ऐसा मैं मारे भूख के दूसरी जगह जाने को भी समर्थ नहीं हूं ॥ १९ ॥ चोर बोले यदि तुझे उच्छिष्ट अन्न देवें तो हम लोगों का क्या काम करैगा यह सुनके प्रामारराज

एवं दुर्विधाँश्चौराँश्च परिचेतुकामो रङ्कवेशमादाय बिक्रमादित्य एकदाऽवन्तीबहिर्गतः कस्मिँश्चिद्देवताऽऽयतने तस्थौ; तत्र चत्वारश्चौराः सरीसृप१मुख्याः समागत्य मन्त्रयाम्बभूवुरित्थं चोचुर्यदिदं परस्त्यादानीतमोदनमत्राऽशित्वा पुरं प्रविशाम इति ॥ १६ ॥

तच्छ्रुत्वैव विक्रमस्तदुच्छिष्टं मत्कृते दत्तेत्याकर्ण्य स्तेयिनो जगदः, रे कस्त्वमिति श्रुत्वा राजोवाच महाघस्मरः क्षुधाकुलितो रङ्कः प्रस्थातुमसमर्थोऽहं तिष्ठामीति ॥१७॥

तच्छ्रुत्वा चौराः परस्परमूचुरये रङ्क! त्वमस्माभिर्दिवाप्यत्रैव दृष्टः कथमिदानीमपि दारुणेऽनेहसि डाकिनी१पिशाच२वेताल३क्रीडनीये महापुरीपरिसरे दारुणे देवालये तिष्ठसि ॥ १८ ॥

राजा चोचे तदाकर्ण्य देवयात्राप्रवृत्तलोकान् समुद्दिश्याऽशनार्थमहमसमर्थोऽत्रायातः कथमपि तमाहारमन्तरा दुष्पूरोदरश्चण्डबुभुक्षुरन्यत्र व्रजितुमपि न शक्नोमि ॥१९॥

ब्रुवते स्म चौरा यदि तुभ्यमुच्छिष्टमन्नं दास्यामस्तदा किं नः

नहीं किन्तु ब्राह्मण था ॥१५॥ इस रीति दरिद्री चोरों को पहिचान ने की इच्छा से कंगाल का रूप धारण कर विक्रमादित्य एक समय उज्जीण नगरी से बाहर निकल एक देव मन्दिर में ठहरा था वहां पर सरीसृप नामक है मुखिया जिन्हों का असे चार चोर आकर सलाह करने लगे और इसप्रकार बोले कि यह घर से लायाहुआ भात (चांवल) यहां खाकर नगर में चलें बस ॥१६॥ यह सुनके विक्रम बोला उसका उच्छिष्ट(खाने से बचे जो ऊँठ ठ) मुझे देना यह सुनके चोर बोले अरे तू कौन है? यह सुनके राजा बोला मैं बहुत खानेवाला भूख से घबरायाहुआ दरिद्री चलने को समर्थ नहीं सो बैठा हूं।१७। यह सुनके चोर आपस में बोले अरे दरिद्री! तुझको हम लोगों ने दिन को भी इहां ही देखा था कैसे अब भी तू डाकिनी भूत प्रेतों के खेलने के कठिन समय में बडी नगरी के पास के भयानक मन्दिर में बैठा है ॥ १८ ॥ यह सुनके राजा बोला देवयात्रा (देवदर्शन करने) में लगेहुए लोगों को जानके अशक्त मैं भोजन के अर्थ किसीप्रकार इहां आगया हूं इस भोजन के विना नहीं भराजानेवाला है पेट जिसका ऐसा मैं मारे भूख के दूसरी जगह जाने को भी समर्थ नहीं हूं ॥ १९ ॥ चोर बोले यदि तुझे उच्छिष्ट अन्न देवें तो हम लोगों का क्या काम करैगा यह सुनके प्रामारराज

तदोचे सरीसृपः फेरुभाषितं मिथ्या नैव भवतीति श्रुत्वेतर ऊचुः प्रत्यक्षबाधितेऽर्थे केदृशी दुःशङ्केति मिथः सँल्लाप्य तं रङ्कमग्रे कृत्वा पञ्चाऽपि पुरं प्रति विविशुः। सार्थपतिगृहे संधिमनुष्ठाय बहूनि धनानि मुषित्वा पुटभेदनाद्बहिरागत्य निखाय च जनाऽगम्यभूमिं क्षिप्त्वा च तत्र धनभारं प्रच्छन्नतया ततश्चत्वारो ४ऽपि तस्कराः सरसि विहितस्नानाः पुनर्नगरमागत्य गञ्जागृहं विविशू राजा तु स्वस्थानमागत्य समाजमण्डपे दत्त्वाऽवसरं सर्वेभ्यो भद्रासनोपविष्टो दण्डनायकमाकारयित्वा निदिदेश ॥ २३ ॥

रे साहसाऽध्यक्ष! मत्पुटभेदनपालनाऽप्रवीण! किञ्चिद्धि तमस्विनीचरितं नाऽवगन्ताऽसि त्वयि प्रमत्ते पतितोऽशेषराज्यरक्षाभूरितरभारो मदंस एवाऽतोऽधुनैव गच्छाऽमुकचत्वरादमुकदिशायाममुकप्रतोल्यां पिचण्डिलनाम्ना आसुतीवलस्याऽऽवसथे परिप्लुतां पिबन्तश्चत्वार ४ श्चौरास्तिष्ठन्ति तान्निगडेन सन्दानितान्कृत्वाऽऽनय तूर्णम् ॥ २४ ॥

राजा होने का भ्रम नहीं है) ॥ २२ ॥ तब सरीसृप ने कहा श्याल का कहना मिथ्या नहीं है यह सुनकर सब बोले प्रत्यक्ष से जो सिद्ध है उस में झूठा सन्देह क्यों? इस प्रकार आपस में बातचीत करके उस रङ्क को आगे करके पांचों ही नगर में घुसे और नगर सेठ के घर में सेंध (चोरी करने को भींत फोड़ना) लगाकर बहुतसा धन चोरों ने नगर के बाहर आ एकान्त स्थान में खड्डा खोद कर उस में कोई न जाने उस प्रकार सम्पूर्ण धन डाल दिया, तिस पीछे चारों ही चोर तालाब में स्नान कर पीछे नगर में आकर कलाल के घर में घुसे और राजा तो अपने स्थान पर आ सभामंडल में सबको सावकाश देकर सिंहासन पर बैठा हुआ कोटवाल को बुलाकर बोला ॥२३॥ अरे कोटवाल! मेरे नगर की रक्षा में असमर्थ तू कुछ भी रात्रि के समाचार नहीं जानता तेरे उन्मत्त होजाने पर तो सम्पूर्ण राज्य की रक्षा का बड़ा भारी भारवाला मेरा कंधा ही टूटा, इसकारण अभी ही जाकर अमुक चौक से अमुक दिशा में अमुक गली में पिचण्ड नामक कलाल के घर में मदिरा पीते हुए चार चोर बैठे हैं जिनको जंजीरों से बांध कर शीघ्र लेआओ

तदोचे सरीसृपः फेरुभाषितं मिथ्या नैव भवतीति श्रुत्वेतर ऊचुः प्रत्यक्षबाधितेऽर्थे कीदृशी दुःशङ्केति मिथः सँल्लाप्य तं रङ्कमग्रे कृत्वा पञ्चाऽपि पुरं प्रति विविशुः । सार्थपतिगृहे संधिमनुष्ठाय बहूनि धनानि मुषित्वा पुटभेदनाद्बहिरागत्य निखाय च जनाऽगम्यभूमिं क्षिप्त्वा च तत्र धनभारं प्रच्छन्नतया ततश्चत्वारो ४ऽपि तस्कराः सरसि विहितस्नानाः पुनर्नगरमागत्य गञ्जागृहं विविशू राजा तु स्वस्थानमागत्य समाजमण्डपे दत्त्वाऽवसरं सर्वेभ्यो भद्रासनोपविष्टो दण्डनायकमाकारयित्वा निदिदेश ॥ २३ ॥

रे साहसाऽध्यक्ष! मत्पुटभेदनपालनाऽप्रवीण! किञ्चिद्धि तमस्विनीचरितं नाऽवगन्ताऽसि त्वयि प्रमत्ते पतितोऽशेषराज्यरक्षाभूरितरभारो मदंस एवाऽतोऽधुनैव गच्छाऽमुकचत्वरादमुकादिशायाममुकप्रतोल्यां पिचण्डिलनाम्ना आसुतीवलस्याऽऽवसथे परिप्लुतां पिबन्तश्चत्वार ४ श्चौरास्तिष्ठन्ति तान्निगडेन सन्दानितान्कृत्वाऽऽनय तूर्णम् ॥ २४ ॥

राजा होने का भ्रम नहीं है) ॥ २२ ॥ तब सरीसृप ने कहा श्याल का कहना मिथ्या नहीं है यह सुनकर सब बोले प्रत्यक्ष से जो सिद्ध है उस में झूठा सन्देह क्यों? इस प्रकार आपस में बातचीत करके उस रङ्क को आगे करके पांचों ही नगर में घुसे और नगर सेठ के घर में सेंध (चोरी करने को भींत फोड़ना) लगाकर बहुतसा धन चोरों ने नगर के बाहर आ एकान्त स्थान में खड्डा खोद कर उस में कोई न जाने उस प्रकार सम्पूर्ण धन डाल दिया, तिस पीछे चारों ही चोर तालाब में स्नान कर पीछे नगर में आकर कलाल के घर में घुसे और राजा तो अपने स्थान पर आ सभामंडल में सबको सावकाश देकर सिंहासन पर बैठा हुआ कोटवाल को बुलाकर बोला ॥२३॥ अरे कोटवाल! मेरे नगर की रक्षा में असमर्थ तू कुछ भी रात्रि के समाचार नहीं जानता तेरे उन्मत्त होजाने पर तो सम्पूर्ण राज्य की रक्षा का बड़ा भारी भारवाला मेरा कंधा ही टूटा, इसकारण अभी ही जाकर अमुक चौक से अमुक दिशा में अमुक गली में पिचण्ड नामक कलाल के घर में मदिरा पीते हुए चार चोर बैठे हैं जिनको जंजीरों से बांध कर शीघ्र लेआओ

निक्षेपकं कथं न शोचथ श्रुत्वा स इत्थं विक्रमवचनं प्रोवाच सरीसृपः कोऽस्माकं दुर्बोधसमुत्थः प्रत्यवायप्रमादः ॥ २८ ॥

एवमाकर्ण्योवाच गन्धर्वसेनसूनुरये स्फुट एवायं युष्माकं प्रमादो निश्चीयते यद्वीरवृत्तिसमर्था अपि चौरवृत्त्या जीवितुं जीवयितुं चेच्छथेति श्रुत्वोचे सरीसृपो देव दुर्बुद्धिरेव कारणं चौरवृत्तिधारणस्य ॥ २९ ॥

बिक्रम उवाच रे दुर्विनीता यद्येवं स्वीकुरुथ तदा किं न त्यजथ तां निरयनिक्षेपिकां दुर्वृत्तिं पुनरूचुश्चौरास्तछ्रुत्वा हे देव दरिद्रतैव स्तैन्यपरित्यागप्रतिबन्धिकारिपन्थिनी ॥ ३० ॥

[तथाहि मधुमाधवी]

निन्द्यं नियोजयति भोजयति प्रदुष्टं,
पापांश्च भिक्षयति शिक्षयति च्छलादीन् ॥
देहीति घोषयति पोषयतीह चौर्यं,
किं नो न कारयति दुर्विधभावदायः ॥ ३१ ॥

[अक्षरगणद्यम्]

कहने से की हुई अपनी भूल का तो शोच करते हो परन्तु अपनी मूर्खता रूपी दोष से उत्पन्न हुआ जो पराया धन लेलेने का पाप उस को छोडदेने का विचार क्यों नहीं करते हो, इसप्रकार विक्रम के वचन सुनकर वह सरीसृप बोला कौनसा पापापराध हमारी मूर्खता से हुआ है॥ १८ ॥ इतना सुनकर गंधर्वसेन के पुत्र (विक्रम) ने कहा यह चौड़े ही तुमारा अपराध दीखरहा है जो शूरवीरों की जीविका के समर्थ हो तोभी चोरों की जीविका से जीने की और जिलाने की इच्छा रखते हो. इतना सुनकर सरीसृप बोला महाराज चोरपन की वृत्ति धारण करने का कारण तो मूर्खता ही है॥२९॥विक्रम ने कहा अरे मूर्खो यदि ऐसा मानते हो तो क्यों नहीं छोडदेते उस नरकों में पटकनेवाली खोटी जीविका को, यह सुनकर फिर चोर बोले हे महाराज चोरी कर्म को दूर न करने देनेवाली बैरिणी दरिद्रता ही है ॥ ३० ॥ देखिये (मधुमाधवीछंद)निन्दनीय कार्मों में लगाता है, ठण्ढा बासी भोजन कराता है, पापों की याचना कराता है, कपट आदि की शिक्षा देता है, दीजिये(देओ देओ) इसी शब्द को घुकाता है, चोरी कर्म का पोषण कराता है, इसी

निक्षेपकं कथं न शोचथ श्रुत्वा स इत्थं विक्रमवचनं प्रोवाच सरीसृपः कोऽस्माकं दुर्बोधसमुत्थः प्रत्यवायप्रमादः ॥ २८ ॥

एवमाकर्ण्योवाच गन्धर्वसेनसूनुरये स्फुट एवायं युष्माकं प्रमादो निश्चीयते यद्वीरवृत्तिसमर्था अपि चौरवृत्त्या जीवितुं जीवयितुं चेच्छथेति श्रुत्वोचे सरीसृपो देव दुर्बुद्धिरेव कारणं चौरवृत्तिधारणास्य ॥ २९ ॥

विक्रम उवाच रे दुर्विनीता यद्येवं स्वीकुरुथ तदा किं न त्यजथ तां निरयनिक्षेपिकां दुर्वृत्तिं पुनरूचुश्चौरास्तछ्रुत्वा हे देव दरिद्रतैव स्तैन्यपरित्यागप्रतिबन्धिकारिपन्थिनी ॥ ३० ॥

[तथाहि मधुमाधवी]

निन्द्यं नियोजयति भोजयति प्रदुष्टं,
पापाँश्च भिक्षयति शिक्षयति च्छलादीन् ॥
देहीति घोषयति पोषयतीह चौर्यं,
किं नो न कारयति दुर्विधभावदायः ॥ ३१ ॥

[अथ रणगद्यम्]

कहने से की हुई अपनी भूल का तो शोच करते हो परन्तु अपनी मूर्खता रूपी दोष से उत्पन्न हुआ जो पराया धन लेलेने का पाप उसको छोडदेने का विचार क्यों नहीं करते हो, इसप्रकार विक्रम के वचन सुनकर वह सरीसृप बोला कौनसा पापापराध हमारी मूर्खता से हुआ है॥ १८ ॥ इतना सुनकर गंधर्वसेन के पुत्र (विक्रम) ने कहा यह चौडे ही तुमारा अपराध दीखरहा है जो शूरवीरों की जीविका के समर्थ हो तोभी चोरों की जीविका से जीने की और जिलाने की इच्छा रखते हो. इतना सुनकर सरीसृप बोला महाराज चोरपन की वृत्ति धारण करने का कारण तो मूर्खता ही है॥२९॥ विक्रम ने कहा अरे मूर्खो यदि ऐसा मानते हो तो क्यों नहीं छोडदेते उस नरकों में पटकनेवाली खोटी जीविका को, यह सुनकर फिर चोर बोले हे महाराज चोरी कर्म को दूर न करने देनेवाली बैरिणी दरिद्रता ही है ॥ ३० ॥ देखिये (मधुमाधवीछंद)निन्दनीय कामों में लगाता है, ठण्ढा बासी भोजन कराता है, पापों की याचना कराता है, कपट आदि की शिक्षा देता है, दीजिये(देओ देओ) इसी शब्द को घुकाता है, चोरी कर्म का पोषण कराता है, इसी

माहूय प्राप्तराज्यतस्करचरित्रनिरूपणाय प्रस्थापयामास । स च प्रच्छन्नदूतो गत्वा शाल्मलिपुरेऽधिगतसुवृत्तान्तः पुनराजगाम राजसमीपम् ॥ ३४ ॥

तत उवाच बिक्रमः, सुचेतन ! कथय सरीसृपोदन्तामिति निशम्योचे संदेशहारको देव ! तथ्यं कथयाम्यलीकभाषणमनुचितं चारपुरुषस्येति. यथा जन्तोश्चक्षुषी अतिवार्द्धके किञ्चिन्न पश्यतस्तथा राजाऽप्यनृतभाषणाचारेणोति यथा दृष्टं तच्चरितं पद्यैर्वर्णयामि शृणोतु देवः ॥ ३५ ॥

[तथाहि भुजङ्गप्रयाते]

खलायाऽघसक्तात्मने धर्महर्त्रे परस्त्री१परद्रव्य२ विप्लावकर्त्रे ॥
वितीर्याऽप्यऽहो देव तस्मै सुराज्यं बिसृष्टा हि तत्रत्यसाधुभ्य आपत् ॥३६॥
सितां मेलयित्वा पयःपानदातॄन्सुगन्धादिकं घ्रेयमापूर्य पातॄन् ॥
निसर्गेण दुष्टो दशत्येव सर्वान् कृतं तेन नामाऽनुरूपं चरित्रम्॥३७॥

[तथाह्युपजातिः]

क्षुधाऽसमर्थस्तरुणोऽतिचण्डो ग्रहीतुमप्याखुमहिर्न शक्तः ॥

को भेजदिया, और वह गुप्त दूत शाल्मली पुर में जाकर सर्व वृत्तान्तों (समाचारों) को जान पीछा राजा के पास आया ॥ ३४ ॥ तब राजा बिक्रम ने कहा सुचेतन! कहो सरीसृप के समाचार. यह सुनकर सन्देशाहार (सन्देशा लेजाने और लानेवाला दूत) बोला महाराज! सत्य बात कहता हूं मिथ्या कहना दूत पुरुष को उचित नहीं. जैसे प्राणी के नेत्र अत्यन्त वृद्ध अवस्था में कुछ नहीं देखते तैसे ही राजा भी मिथ्या भाषण करने वाले दूत से कुछ नहीं जानते इस कारण उसके चरित्र जैसे मैंने देखे हैं श्लोकों से वर्णन करता हूं सुनिये महाराज ॥३५॥ हे महाराज पापों में आसक्त रहनेवाले, धर्म का नाश करनेवाले, पराई स्त्री और पराये धन को बिगाड़नेवाले उस दुष्ट को सुन्दर राज्य देकर वहां के रहनेवाले सज्जनों को बिपत्ति ही आपने दी है ॥ ३६ ॥ सुगन्ध आदि (गुलाब जल केवड़ा) से सुगन्धित कर और मिश्री मिलाय कटोरे भर भर दुग्ध पान करानेवाले सबों को स्वभाव से दुष्ट काटता ही है. उसने सब काम नामानुरूप (सरीसृप उसका नाम है और सरीसृप सांप का नाम है) किया ॥ ३७ ॥ जो भयंकर युवा (जवान) सर्प मारे भूख के अशक्त होकर चूहे को पकड़ने में भी समर्थ न था

माहूय प्राप्तराज्यतस्करचरित्रनिरूपणाय प्रस्थापयामास । स च प्रच्छन्नदूतो गत्वा शाल्मलिपुरेऽधिगतसुवृत्तान्तः पुनराजगाम राजसमीपम् ॥ ३४ ॥

तत उवाच बिक्रमः, सुचेतन ! कथय सरीसृपोदन्तमिति निशम्योचे संदेशहारको देव ! तथ्यं कथयाम्यलीकभाषणमनुचितं चारपुरुषस्येति. यथा जन्तोश्चक्षुषी अतिवार्द्धके किञ्चिन्न पश्यतस्तथा राजाऽप्यनृतभाषणाचारेणेति यथा दृष्टं तच्चरितं पद्यैर्वर्णयामि शृणोतु देवः ॥ ३५ ॥

[तथाहि भुजङ्गप्रयाते]

खलायाऽघसक्तात्मने धर्महर्त्रे परस्त्री१परद्रव्य२ विद्रावकर्त्रे ॥
वितीर्याऽप्यऽहो देव तस्मै सुराज्यं बिसृष्टा हि तत्रत्यसाधुभ्य आपत् ॥
सितां मेलयित्वा पयःपानदातॄन्सुगन्धादिकं ग्रेयमापूर्य पातॄन् ॥
निसर्गेण दुष्टो दशत्येव सर्वान् कृतं तेन नामाऽनुरूपं चरित्रम् ॥ ३७ ॥

[तथाह्युपजातिः]

क्षुधाऽसमर्थस्तरुणोऽतिचण्डो ग्रहीतुमप्याखुमहिर्न शक्तः ॥

को भेजदिया, और वह गुप्त दूत शाल्मली पुर में जाकर सर्व वृत्तान्तों (समाचारों) को जान पीछा राजा के पास आया ॥ ३४ ॥ तब राजा विक्रम ने कहा सुचेतन! कहो सरीसृप के समाचार. यह सुनकर सन्देशाहार (सन्देशा लेजाने और लानेवाला दूत)बोला महाराज! सत्य बात कहता हूं मिथ्या कहना दूत पुरुष को उचित नहीं. जैसे प्राणी के नेत्र अत्यन्त वृद्ध अवस्था में कुछ नहीं देखते तैसे ही राजा भी मिथ्या भाषण करने वाले दूत से कुछ नहीं जानते इस कारण उसके चरित्र जैसे मैंने देखे हैं श्लोकों से वर्णन करता हूं सुनिये महाराज ॥३५॥ हे महाराज पापों में आसक्त रहनेवाले, धर्म का नाश करनेवाले, पराई स्त्री और पराये धन को बिगाड़नेवाले उस दुष्ट को सुन्दर राज्य देकर वहां के रहनेवाले सज्जनों को विपत्ति ही आपने दी है ॥ ३६ ॥ सुगन्ध आदि (गुलाब जल केवड़ा) से सुगन्धित कर और मिश्री मिलाय कटोरे भर भर दुग्ध पान करानेवाले सबों को स्वभाव से दुष्ट काटता ही है. उसने सब काम नामानुरूप (सरीसृप उसका नाम है और सरीसृप साप का नाम है)किया ॥ ३७ ॥ जो भयंकर युवा (जवान) सर्प मारे भूख के अशक्त होकर चूहे को पकड़ने में भी समर्थ न था

संभवति ॥ ४१ ॥

निशम्येति सुचेतनाद्विक्रमः प्रच्छन्नवेशधारी शाल्मलिपुरं गत्वा सरीसृपचर्यां संपरीक्ष्य पश्चाद्राजपदादवतार्य पूर्वामेव दशां प्रापितं तं चौरं हतवाँश्च निर्दयं गन्धर्वसेनसूनुर्मालवेन्द्रः ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनान्तर्गतप्रामारराजविक्रमचरित्रे धन्वन्तर्यादिनव ९ रत्नप्रपञ्चितप्रबन्धविवेचनगृहीतमहौदार्यविक्रमसंसारदुःखनिरासनियमग्रहणचित्रकूटसिद्धदेवीवरदानदूरीकृतवडाहदुःखसदैवतद्वारसुवर्णराशिसम्पादनकीर्तिप्रतानवैतालिकार्थपाण्ड्यराजचहुवाणसमुद्रसेनप्रेषितदण्डोपकरणादानचौरचतुष्क४दुःस्थभावदूरीकरणसरीसृपराज्याऽऽसनाऽऽरोहणश्रुततद्दुर्वृत्तविक्रमपुनस्तन्मारणं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥ आदितो द्वादशोत्तरशततमः ॥११२॥

[गीर्वाणभाषा]

(अचरणगद्यम्)

सम्भव है ॥ ४१ ॥ इस प्रकार विक्रम ने सुचेतन से सुन गुप्त वेश धारण कर शाल्मलीपुर जाकर सरीसृप की रचना को भलीभांति जानकर पीछे राजपद से उतारा पहले की ही दशा में प्राप्त करके उस चोर को गंधर्वसेन के बेटे मालवेन्द्र (विक्रम) ने निर्दय होकर मारा ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्नि से उत्पन्न हुए चहुवाण के वंश वर्णन के बीच में पुंवार राजा विक्रमादित्य के चरित्र में धन्वतरि आदि नवरत्नों के रचेहुए ग्रन्थों का विवेचन, और बडीभारी उदारता को ग्रहण करके विक्रम का संसार के दुःखों को दूर करने का नियम लेना,चित्रकूट पर्वत पर सिद्धेश्वरी देवी के वरदान से वडाहराजा का दुःख दूर कर नित्य उसके द्वार पर सोने का ढेर लगाना, कीर्तिप्रतान नामक भाट को पाण्डयदेश के राजा चहुवाण समुद्रसेन की भेजीहुई दण्ड की सामग्री का देना,चार चोरों की दुर्गति का दूर करना, सरीसृप को राजसिंहासन पर बैठाना,और सरीसृप के खोटे वृत्तान्त सुनकर फिर विक्रम से उस सरीसृप के मारेजाने का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आरम्भ से ११२ मयूख हुए ॥

संभवति ॥ ४१ ॥
निशम्येति सुचेतनाद्विक्रमः प्रच्छन्नवेशधारी शाल्मलिपुरं गत्वा सरीसृपचर्यां संपरीक्ष्य पश्चाद्राजपदादवतार्य पूर्वामेव दशां प्रापितं तं चौरं हतवाँश्च निर्दयं गन्धर्वसेनसूनुर्मालवेन्द्रः ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनान्तर्गतप्रामारराजविक्रमचरित्रे धन्वन्तर्यादिनव ९ रत्नप्रपञ्चितप्रबन्धविवेचनगृहीतमहौदार्यविक्रमसंसारदुःखनिरासनियमग्रहणचित्रकूटसिद्धदेवीवरदानदूरीकृतवडाहद्दुःखसदैवतद्वारसुवर्णराशिसम्पादनकीर्तिप्रतानवैतालिकार्थपाण्ड्यराजचहुवाणसमुद्रसेनप्रेषितदण्डोपकरणदानचौरचतुष्क४दुःस्थभावदूरीकरणसरीसृपराज्याऽऽसनाऽऽरोहणश्रुततद्दुर्वृत्तविक्रमपुनस्तन्मारणं तृतीयो३मयूखः ॥ ३ ॥ आदितो द्वादशोत्तरशततमः ॥११२॥

[गीर्वाणभाषा]

(अचरणगद्यम्)

सम्भव है ॥ ४१ ॥ इस प्रकार विक्रम ने सुचेतन से सुन गुप्त वेश धारण कर शाल्मलीपुर जाकर सरीसृप की रचना को भलीभांति जानकर पीछे राजपद से उतारा पहले की ही दशा में प्राप्त करके उस चोर को गंधर्वसेन के बेटे मालवचंद्र (विक्रम) ने निर्दय होकर मारा ॥ ४२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्नि से उत्पन्न हुए चहुवाण के वंश वर्णन के बीच में पुंवार राजा विक्रमादित्य के चरित्र में धन्वतरि आदि नवरत्नों के रचेहुए ग्रन्थों का विवेचन, और बडीभारी उदारता को ग्रहण करके विक्रम का संसार के दुःखों को दूर करने का नियम लेना,चित्रकूट पर्वत पर सिद्धेश्वरी देवी के वरदान से वडाहराजा का दुःख दूर कर नित्य उसके द्वार पर सोने का ढेर लगाना, कीर्तिप्रतान नामक भाट को पाण्डयदेश के राजा चहुवाण समुद्रसेन की भेजीहुई दण्ड की सामग्री का देना,चार चोरों की दुर्गति का दूर करना,सरीसृप को राजसिंहासन पर बैठाना,और सरीसृप के खोटे वृत्तान्त सुनकर फिर विक्रम से उस सरीसृप के मारेजाने का तीसरा ३ मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आरम्भ से ११२ मयूख हुए ॥

न्नेन विक्रमार्केण स एव द्विज ऊचे हे विप्र एतेष्वेकं१ यत्तेऽभिरोचते तद्रत्नं गृहाणेति ॥ ४ ॥

विप्रश्च गृहं गत्वा स्वकुटुम्बमेकत्र समानीय प्रत्येकं १ पप्रच्छ कीदृशं रत्नं ग्राह्यमिति श्रुत्वा च तद्वचनं तत्पुत्र१ आह बलसंपादकं १ स्नुषा २ऽऽह भूषणसंपादकं २ ब्राह्मणपत्न्या३ह सुभोज्यसंपादकं ३ स्वयं ४ चाह द्रव्यसंपादकं ४ रत्नं ग्राह्यमिति श्रुत्वा राजदूतेन तद्विवादं राज्ञे निवेदितं, तद्राज्ञा च महावदान्येन रत्नचतुष्कमपि दत्तं तस्मै सकुटुम्बद्विजायेति लोमाञ्चकमौदार्यं विक्रमादित्यस्याभवत् ॥५॥

एकदा विक्रमो मृगयारसमनुभवितुमेकाकी १ हयद्वितीयो २ गतोऽटव्यां तत्रैव कश्चिद्द्विजकुमार एधांस्याहर्तुं पूर्वं गतः पश्चात्स राजा तत्र दिङ्मूढो मार्गं पप्रच्छ ॥६॥

तदा विप्रपुत्रेण क्षुत्१तृट्२परीताङ्गस्य राज्ञः फलजलादिनाऽऽतिथ्यमनुष्ठितं मार्गं च दर्शितं राजा च त्वत्तोऽहं नाऽनृणीत्युक्त्वाऽवन्तीं गत्वा ब्राह्मणकृतसत्कारं प्रकटीकृत्य सभायां तत्प्रतिष्ठा च

से कहा हे ब्राह्मण इनमें से जिस पर तेरी रुचि होवे वह एक रत्न लेले तब उस ब्राह्मण ने घरपर जाके अपने घर के लोगों को इकट्ठे कर एक एक से पूछा कि कौनसा रत्न लेना चाहिये उस ब्राह्मण के वचन सुनके पुत्र ने तो कहा बल सम्पादन करनेवाला, बहिन बोली गहना देनेवाला, ब्राह्मण की स्त्री ने कहा सुन्दर भोजन देनेवाला, और स्वयं (खुद) ने कहा धन देनेवाला रत्न लेना चाहिये, इस प्रकार चारों के विवाद को राज दूत ने सुन के राजा से जा कहा और बडे दातार राजा ने भी चारों ही रत्न उस कुटुम्बी ब्राह्मण को देदिये इस प्रकार रोमाञ्च करनेवाली उदारता विक्रमादित्य की हुई॥५॥ एक समय विक्रमादित्य मृगया (शिकार) का आनन्द लेने को, घोड़ा ही है दूसरा साथी जिसके ऐसा अकेला वन में गया उसी बन में एक ब्राह्मण का लड़का लकड़ियें लेने को पहिले से ही चलागया था पीछे से उस राजा ने वहां पर दिशा भूल होकर मार्ग पूछा ॥ ६ ॥ तब ब्राह्मण पुत्र ने भूख और प्यास से घबराये हुए राजा का फल जल आदि से सत्कार किया और मार्ग भी बताया और राजा ने मैं तुम से उरण नहीं यह कहकर उज्जीण में जाय ब्राह्मण के किये हुए सत्कार को प्रकट करके सभा के बीच उस ब्राह्मण

ऽन्नेन विक्रमार्केण स एव द्विज ऊचे हे विप्र एतेष्वेकं१ यत्तेऽभिरोचते तद्रत्नं गृहाणेति ॥ ४ ॥

विप्रश्च गृहं गत्वा स्वकुटुम्बमेकत्र समानीय प्रत्येकं १ पप्रच्छ कीदृशं रत्नं ग्राह्यमिति श्रुत्वा च तद्वचनं तत्पुत्र१ आह बलसंपादकं १ स्नुषा २ऽऽह भूषणसंपादकं २ ब्राह्मणपत्न्या३ह सुभोज्यसंपादकं ३ स्वयं ४ चाह द्रव्यसंपादकं ४ रत्नं ग्राह्यमिति श्रुत्वा राजदूतेन तद्विवादं राज्ञे निवेदितं, तद्राज्ञा च महावदान्येन रत्नचतुष्कमपि दत्तं तस्मै सकुटुम्बद्विजायेति लोमाञ्चकमौदार्यं विक्रमादित्यस्याभवत् ॥५॥

एकदा विक्रमो मृगयारसमनुभवितुमेकाकी १ हयद्वितीयो २ गतोऽटव्यां तत्रैव कश्चिद्द्विजकुमार एधांस्याहर्तुं पूर्वं गतः पश्चात्स राजा तत्र दिङ्मूढो मार्गं पप्रच्छ ॥६॥

तदा विप्रपुत्रेण क्षुत्१तृट्२परीताङ्गस्य राज्ञः फलजलादिनाऽऽतिथ्यमनुष्ठितं मार्गं च दर्शितं राजा च त्वत्तोऽहं नाऽनृणीत्युक्त्वाऽवन्तीं गत्वा ब्राह्मणकृतसत्कारं प्रकटीकृत्य सभायां तत्प्रतिष्ठा च

से कहा हे ब्राह्मण इनमें से जिस पर तेरी रुचि होवे वह एक रत्न लैलै तब उस ब्राह्मण ने घरपर जाके अपने घर के लोगों को इकट्ठे कर एक एक से पूछा कि कौनसा रत्न लेना चाहिये उस ब्राह्मण के बचन सुनके पुत्र ने तो कहा बल सम्पादन करनेवाला, बहिन बोली गहना देनेवाला, ब्राह्मण की स्त्री ने कहा सुन्दर भोजन देनेवाला, और स्वयं (खुद) ने कहा धन देनेवाला रत्न लेना चाहिये, इस प्रकार चारों के विवाद को राज दूत ने सुन के राजा से जा कहा और बड़े दातार राजा ने भी चारों ही रत्न उस कुटुम्बी ब्राह्मण को देदिये इस प्रकार रोमाञ्च करनेवाली उदारता विक्रमादित्य की हुई॥५॥ एक समय विक्रमादित्य मृगया (शिकार) का आनन्द लेने को, घोड़ा ही है दूसरा साथी जिसके ऐसा अकेला वन में गया उसी वन में एक ब्राह्मण का लड़का लकड़ियें लेने को पहिले से ही चलागया था पीछे से उस राजा ने वहां पर दिशा भूल होकर मार्ग पूछा ॥ ६ ॥ तब ब्राह्मण पुत्र ने भूख और प्यास से घबराये हुए राजा का फल जल आदि से सत्कार किया और मार्ग भी बताया और राजा ने मैं तुम से उरण नहीं यह कहकर उज्जीण में जाय ब्राह्मण के किये हुए सत्कार को प्रकट करके सभा के बीच उस ब्राह्मण

राजा त्वाह हे साहसविधायकाः प्राड्विवाकादयो भो इतरे सभ्य-लोकाः पौरलोकाश्च शृणुत सर्वेऽप्यहमस्य देवदत्तद्विजकृतोपकारस्य कदापि नाऽनृणीभवाम्यतः सत्कार्य एवासावित्युक्त्वा तस्य विप्रस्याऽभ्युत्थान१ सन्मान२दान३ विधानैः सत्कारमकरोद्विप्रश्च राज्ञः परमकृतज्ञतां बुध्वा क्रमचित्रं सुप्रसन्नमानीय परिषदि सस्वप्नेहं सभूषणां समर्पितवान्धात्रीप्रमुखपरिलालकजनेभ्यः ॥११॥ एकदोज्जयिनीवासी कश्चिच्छ्रेष्ठी स्वधनप्रमाणाऽनभिज्ञः सांयात्रिको जगाम समुद्रान्तर्द्वीपे तत्र क्वचिच्चन्द्रकान्तशिलाबद्धसरसस्तटे भगवतीस्थानं तद्वामभागे स्त्री१पुरुष२युग्मं २ च पृथक्च्छिरोविष्टं तत्रैवैकतः शिलायां लेखश्च दृष्टः। स चेत्थं यदि कश्चित्सत्त्ववान्नरः स्वशिरसा देव्यै बलिमाहरेत्तदा पृथक्शिरसी रुण्डयोः संहितीभूय युग्मं २ सजीवं भवेदिति दृष्ट्वाऽवन्तीमागत्य

हुए समाज के लोगों (न्यायकार्य के अधिकारियों) ने मारना, निकालना और सर्वस्वहरण करलेना आदि अनेक प्रकार के दण्ड राजा को सुनाये राजाने तो कहा कि हे दण्ड देनेवाले न्यायकारीलोगो! हे दूसरे सभासद लोगो! और नागरिकलोगो! सब ही सुनो. मैं इस देवदत्त ब्राह्मण के किये हुए उपकार से कभी भी उरण नहीं हूँ इसकारण यह तो सत्कार के ही योग्य है ऐसा कहकर उस ब्राह्मण का अभ्युत्थान (ताजीम) सन्मान और दान देने आदि कामों से सत्कार किया और ब्राह्मण ने राजा की पूर्ण कृतज्ञता जानकर सुप्रसन्न क्रमचित्र को लाय सभा के बीच धातृ (धाय)आदि पालन करनेवाले लोगों के अर्पण किया ॥ ११ ॥ एक समय उज्जीण में रहने वाला कोई सेठ जिसको अपने धन का ठिकाना नहीं था वह जहाज का व्योपारी होकर समुद्र के बीच के टापू में गया था वहां पर कहीं चन्द्रकान्त (मणिविशेष) की चट्टानों से बंधे हुए तालाव की तीर पर देवी का मन्दिर और उस के वामभाग में एक स्त्री पुरुष का जोड़ा जिन के मस्तक जुदे कटे हुए, और वहीं पर एक तरफ शिला (पत्थर) पर लेख (लिखाहुआ) देखा वह लेख इसप्रकार था कि "यदि कोई शक्तिमान् पुरुष अपने मस्तक का देवी को बलिदान देवै तो दोनों धड़ कटे हुए शिरों से मिलकर जोड़ा (स्त्री पुरुष)सजीवन होजावे" इन सब बातों को देख उज्जीण आकर उस सेठ ने राजा से कहा और वह महापराक्रमी राजा वहां जाकर देवी को बलिदान देना मन में ठान अपना शिर काटने लगा उसी समय भगवती ने "मतमत" ऐसा

राजा त्वाह हे साहसविधायकाः प्राड्विवाकादयो भो इतरे सभ्यलोकाः पौरलोकाश्च शृणुत सर्वेऽप्यहमस्य देवदत्तद्विजकृतोपकारस्य कदापि नाऽनृणीभवाम्यतः सत्कार्य एवासावित्युक्त्वा तस्य विप्रस्याऽभ्युत्थान१ सन्मान२दान३ विधानैः सत्कारमकरोद्विप्रश्च राज्ञः परमकृतज्ञतां बुध्वा क्रमाचित्रं सुप्रसन्नमानीय परिषदि सस्वप्नेहं सभूषणां समर्पितवान्धात्रीप्रमुखपरिलालकजनेभ्यः ॥११॥ एकदोज्जयिनीवासी कश्चिच्छ्रेष्ठी स्वधनप्रमाणाऽनभिज्ञः सांयात्रिको जगाम समुद्रान्तर्द्वीपे तत्र क्वचिच्चन्द्रकान्ताशिलाबद्धसरसस्तटे भगवतीस्थानं तद्वामभागे स्त्री१पुरुष२युग्मं २ च पृथक्च्छिरोविष्टं तत्रैवैकतः शिलायां लेखश्च दृष्टः। स चेत्थं यदि कश्चित्सत्त्ववान्नरः स्वशिरसा देव्यै बलिमाहरेत्तदा पृथक्शिरसी रुण्डयोः संहितीभूय युग्मं २ सजीवं भवेदिति दृष्ट्वाऽवन्तीमागत्य

हुए समाज के लोगों (न्यायकार्य के अधिकारियों) ने मारना, निकालना और सर्वस्वहरण करलेना आदि अनेक प्रकार के दण्ड राजा को सुनाये राजाने तो कहा कि हे दण्ड देनेवाले न्यायकारिलोगो! हे दूसरे सभासद लोगो! और नागरिकलोगो! सब ही सुनो. मैं इस देवदत्त ब्राह्मण के किये हुए उपकार से कभी भी उऋण नहीं हूँ इसकारण यह तो सत्कार के ही योग्य है ऐसा कहकर उस ब्राह्मण का अभ्युत्थान (ताजीम) सन्मान और दान देने आदि कामों से सत्कार किया और ब्राह्मण ने राजा की पूर्ण कृतज्ञता जानकर सुप्रसन्न क्रमाचित्र को लाय सभा के बीच धातृ (धाय)आदि पालन करनेवाले लोगों के अर्पण किया ॥ ११ ॥ एक समय उज्जीण में रहने वाला कोई सेठ जिसको अपने धन का ठिकाना नहीं था वह जहाज का व्योपारी होकर समुद्र के बीच के टापू में गया था वहां पर कहीं चन्द्रकान्त (मणिविशेष) की चट्टानों से बंधे हुए तालाव की तीर पर देवी का मन्दिर और उस के वामभाग में एक स्त्री पुरुष का जोड़ा जिन के मस्तक जुदे कटेहुए, और वहीं पर एक तरफ शिला (पत्थर) पर लेख (लिखाहुआ) देखा वह लेख इसप्रकार था कि "यदि कोई शक्तिमान् पुरुष अपने मस्तक का देवी को बलिदान देवै तो दोनों धड़ कटे हुए शिरों से मिकलर जोड़ा (स्त्री पुरुष)सजीवन होजावे" इन सब बातों को देख उज्जीण आकर उस सेठ ने राजा से कहा और वह महापराक्रमी राजा वहां जाकर देवी को बलिदान देना मन में ठान अपना शिर काटने लगा उसी समय भगवती ने "मतमत" ऐसा

वरेण सरः पूरयित्वा कनकपुरुषं तदुद्यापने द्विजभोजनार्थं दत्त्वा प्रत्यागमदवन्तीं गान्धर्वसेनिः ॥१३॥

विक्रमपुरोधसस्त्रिपुष्करनाम्नः कमलाकरसंज्ञः पुत्रो निसर्गमूर्खो जातस्तं प्रत्येकदा पित्रोक्तं हे पुत्र प्राप्ते मनुष्यपुद्गले पाण्डित्यमसाध्यं नैव भवति तथापि कस्त्वमीदृशो यस्य पुच्छ१विषाण२विहीनस्य ते न विद्या१न तपो२नाप्यंहति३र्न चापि शीलं४न गुणो५न धर्म६स्तथाविधस्त्वंभूभारभत गच्छ कश्मीरानित्युक्तः कमलाकरो माधुमतेषु गत्वा चन्द्रमौलिनामानमुपाध्यायमाराधितवांस्ततो विद्यामवाप्य पण्डितो भूत्वा मालवान्प्रस्थितो मार्गे कान्तिपुरीमगात् ॥ १४ ।

तत्र स्वःस्त्रीगर्वसर्वस्वापहारिदिव्यदेह१रूप२सौभाग्य३लावण्य शालिनी काचिन्नरमोहिनी नाम सामान्यकन्या ददृशे कमलाकरेण द्रष्टा च मूर्छालुभावमवाप्नोतीति दृष्ट्वा तां त्रैपुष्करिरपि निरिङ्गितं पपात ॥१५।

नरमोहिन्यावुदवसिते त्वेको राक्षसोऽधितिष्ठति यो नरस्तस्या

के निमित्त देकर गन्धर्वसेन का पुत्र (विक्रम) पीछा उज्जैण आया ॥ १३ ॥ त्रिपुष्कर नामक विक्रमादित्य के पुरोहित के कमलाकर नामक पुत्र प्रकृति से ही मूर्ख हुआ उससे एक समय पिता ने कहा कि हे पुत्र ! मनुष्य के शरीर को पाने पर पण्डिताई होना असाध्य नहीं है तो भी ऐसा तू कौन है जिसके पूँछ और सींग नहीं. तेरे में न तो विद्या है, न तप, न लाभहानि, न शील, न गुण और न धर्म है ऐसा केवल पृथ्वी का भार तू कश्मीर जा. इसप्रकार कहने में आकर कमलाकर कश्मीर में जाकर चन्द्रमौलि नामक उपाध्याय (गुरु)की सेवा करने लगा. उससे विद्या पढ पंडित हो मालव देश (मालवा) को जाताहुआ कांतीपुरी में पहुँचा॥१४॥ उस कान्तीपुरी में स्वर्ग की स्त्रियों के घमण्ड के सर्वस्व को हरण करनेवाली, सुन्दर शरीर, रूप, सौभाग्य और लावण्य (कांति) से भरीहुई कोई नरमोहिनी नाम की सामान्य कन्या कमलाकर की दृष्टि आई कि जिसको देखनेवाला मूर्छा खावै, त्रिपुष्कर का पुत्र (कमलाकर)भी उस को देखकर मूर्छित होके पड़गया॥१५॥ नरमोहिनी के घर में एक राक्षस रहता है और वह राक्षस

वरेण सरः पूरयित्वा कनकपुरुषं तदुद्यापने द्विजभोजनार्थं दत्त्वा प्रत्यागमदवन्तीं गान्धर्वसेनिः ॥१३॥

विक्रमपुरोधसस्त्रिपुष्करनाम्नः कमलाकरसंज्ञः पुत्रो निसर्गमूर्खो जातस्तं प्रत्येकदा पित्रोक्तं हे पुत्र प्राप्ते मनुष्यपुद्गले पाण्डित्यमसाध्यं नैव भवति तथापि कस्त्वमीदृशो यस्य पुच्छ१विषाण२विहीनस्य ते न विद्या१न तपो२नाप्यंहति३र्न चापि शीलं४न गुणो५ न धर्म६स्तथाविधस्त्वं भूभारभत गच्छ कश्मीरानित्युक्तः कमलाकरो माधुमतेषु गत्वा चन्द्रमौलिनामानमुपाध्यायमाराधितवांस्ततो विद्यामवाप्य पण्डितो भूत्वा मालवान्प्रस्थितो मार्गे कान्तिपुरीमगात् ॥ १४ ॥

तत्र स्वःस्त्रीगर्वसर्वस्वापहारिदिव्यदेह१रूप२सौभाग्य३लावण्यशालिनी काचिन्नरमोहिनी नाम सामान्यकन्या ददृशे कमलाकरेण द्रष्टा च मूर्छालुभावमवाप्नोतीति दृष्ट्वा तां त्रैपुष्करिरपि निरिङ्गितं पपात ॥१५॥

नरमोहिन्याबुदवसिते त्वेको राक्षसोऽधितिष्ठति यो नरस्तस्या

के निमित्त देकर गन्धर्वसेन का पुत्र (विक्रम) पीछा उज्जैण आया ॥ १३ ॥ त्रिपुष्कर नामक विक्रमादित्य के पुरोहित के कमलाकर नामक पुत्र प्रकृति से ही मूर्ख हुआ उससे एक समय पिता ने कहा कि हे पुत्र! मनुष्य के शरीर को पाने पर पण्डिताई होना असाध्य नहीं है तो भी ऐसा तू कौन है जिसके पूँछ और सींग नहीं. तेरे में न तो विद्या है, न तप, न लाभहानि, न शील, न गुण और न धर्म है ऐसा केवल पृथ्वी का भार तू कश्मीर जा. इसप्रकार कहने में आकर कमलाकर कश्मीर में जाकर चन्द्रमौलि नामक उपाध्याय (गुरु)की सेवा करने लगा. उससे विद्या पढ पंडित हो मालव देश (मालवा) को जाताहुआ कांतीपुरी में पहुँचा॥१४॥ उस कान्तीपुरी में स्वर्ग की स्त्रियों के घमण्ड के सर्वस्व को हरण करनेवाली, सुन्दर शरीर, रूप, सौभाग्य और लावण्य (कांति) से भरीहुई कोई नरमोहिनी नाम की सामान्य कन्या कमलाकर की दृष्टि आई कि जिसको देखनेवाला मूर्छा खावै, त्रिपुष्कर का पुत्र (कमलाकर)भी उस को देखकर मूर्छित होके पड़गया॥१५॥ नरमोहिनी के घर में एक राक्षस रहता है और वह राक्षस

दर्कमुखादित्थं श्रुतवान्समुद्रान्तरे राक्षसद्वीपे राक्षसो राजा मानुषी प्रजा वर्तते तत्र प्रजाभी राक्षसस्य भोजनाय प्रत्यहमेकः पुरुषः कल्पितस्तत्र मम प्राग्भवमित्रपुत्रस्याद्य मरणावसरसंभवस्तस्य दुःखं ममेति ॥ १९ ॥

तच्छ्रुत्वैव परमदयालुर्विक्रमो योगपादुकाभ्यां १ वाऽग्निकोकिलनामाभ्यां वेतालाभ्यां२वाऽन्यतरेण वा केनचिदुपायेन ३तद्द्वीपे गत्वा सायन्तने राक्षसभुवनपरशिलायां निविष्टं पित्रादिबन्धुभिर्निसृष्टं मरणभयेनोद्विग्नं पुरुषं तं दृष्ट्वा गान्धर्वसेनिराह ॥ २० ॥

भो महाभाग याहि त्वं निःशङ्कमत्राहं तिष्ठामि कस्त्वं कस्मान्म्रियस इत्याद्युक्त्वा तमप्रैषीद्राक्षसेन चायं हृष्टवदनो दृष्टस्तत आह कस्त्वं सत्त्वशिरोमणे मरणादपि यन्न बिभेषि,विक्रमेणोक्तं किं मत्स्वरूपेण त्वया क्रियते गृहाण भक्ष्यं यद्व्यर्थयायिनोपघनेन सफलं गम्यते परकृते तन्मेलय मे प्रियतमं मित्रं दीनार्थमरणसंज्ञकं ततो वरं ब्रूहीति राक्षसोक्तं निशम्य गाधर्वसेनिनोचे नोचेद्दीनव-

---

किसी पर्वत में किसी वस्तु को सम्पादन करनेवाले के मुख से यह सुना कि समुद्रान्तर(इस समुद्र से दूसरे समुद्र)में राक्षसद्वीप में राक्षस तो राजा और मानुषी प्रजा है वहां पर प्रजा ने राक्षस के भोजनार्थ प्रतिदिन एक मनुष्य देने का संकल्प कर रक्खा है तिसमें आज मेरे पुराने मित्र के पुत्र के मरने की पूरी सम्भावना है तिसका मुझे दुःख है ॥ १९ ॥ यह सुनते ही परमदयालु विक्रमादित्य योगपादुकाओं से वा अग्नि और कोकिल नामक बेतालों से अथवा किसी और ही उपाय से उस द्वीप में जाके सायंकाल के समय में पिता आदि बन्धुओं से घर के बाहर निकालागया और राक्षस के घर बाहर की एक वधशिला पर बैठे हुए और मरने के डर से घबराये हुए उस पुरुष को देखकर गन्धर्वसेन का पुत्र (विक्रम) बोला॥२०॥ हे महाभाग तू बेधड़क चला जा.यहां पर मैं बैठता हूं तू कौन है?और क्यों मरता है?इत्यादि कहकर उसको बिदा किया और राक्षस ने इस विक्रम को प्रसन्न वदन देखकर कहा कि हे पराक्रमियों में शिरोमणि तू कौन है? जो मरने से भी नहीं डरता. विक्रम ने कहा मेरे स्वरूपज्ञान से तुमको क्या करना है अपना भक्ष्य लो जो शरीर व्यर्थ ही चलाजानेवाला है वह आज परोपकार से सफल जाता है उस मेरे अत्यन्त प्यारे शरीर मित्र को जो एक

दक्कमुखादित्थं श्रुतवान्समुद्रान्तरे राक्षसद्वीपे राक्षसो राजा मानुषी प्रजा वर्तते तत्र प्रजाभी राक्षसस्य भोजनाय प्रत्यहमेकः पुरुषः कल्पितस्तत्र मम प्राग्भवमित्रपुत्रस्याद्य मरणावसरसंभवस्तस्य दुःखं ममेति ॥ १९ ॥

तच्छ्रुत्वैव परमदयालुर्विक्रमो योगपादुकाभ्यां १ वाऽग्निकोकिलनामाभ्यां वेतालाभ्यां२वाऽन्यतरेण वा केनचिदुपायेन३तद्द्वीपे गत्वा सायन्तने राक्षसभुवनपरशिलायां निविष्टं पित्रादिबन्धुभिर्निसृष्टं मरणभयेनोद्विग्नं पुरुषं तं दृष्ट्वा गान्धर्वसेनिराह ॥ २० ॥

भो महाभाग याहि त्वं निःशङ्कमत्राहं तिष्ठामि कस्त्वं कस्मान्म्रियस इत्याद्युक्त्वा तमप्रैषीद्राक्षसेन चायं हृष्टवदनो दृष्टस्तत आह कस्त्वं सत्त्वशिरोमणे मरणादपि यन्न विभेषि,विक्रमेणोक्तं किं मत्स्वरूपेण त्वया क्रियते गृहाण भक्ष्यं यद्व्यर्थयायिनोपघनेन सफलं गम्यते परकृते तन्मेलय मे प्रियतमं मित्रं दीनार्थमरणसंज्ञकं ततो वरं ब्रूहीति राक्षसोक्तं निशम्य गाधर्वसेनिनोचे नोचेद्दीनव-

---

किसी पर्वत में किसी वस्तु को सम्पादन करनेवाले के मुख से यह सुना कि समुद्रान्तर(इस समुद्र से दूसरे समुद्र)में राक्षसद्वीप में राक्षस तो राजा और मानुषी प्रजा है वहां पर प्रजा ने राक्षस के भोजनार्थ प्रतिदिन एक मनुष्य देने का संकल्प कर रक्खा है तिसमें आज मेरे पुराने मित्र के पुत्र के मरने की पूरी सम्भावना है तिसका मुझे दुःख है ॥ १९ ॥ यह सुनते ही परमदयालु विक्रमादित्य योगपादुकाओं से वा अग्नि और कोकिल नामक बेतालों से अथवा किसी और ही उपाय से उस द्वीप में जाके सायंकाल के समय में पिता आदि बन्धुओं से घर के बाहर निकालागया और राक्षस के घर बाहर की एक वधशिला पर बैठे हुए और मरने के डर से घबराये हुए उस पुरुष को देखकर गन्धर्वसेन का पुत्र (विक्रम) बोला॥२०॥ हे महाभाग तू बेधड़क चला जा.यहां पर मैं बैठता हूं तू कौन है?और क्यों मरता है?इत्यादि कहकर उसको विदा किया और राक्षस ने इस विक्रम को प्रसन्न वदन देखकर कहा कि हे पराक्रमियों में शिरोमणि तू कौन है? जो मरने से भी नहीं डरता. विक्रम ने कहा मेरे स्वरूपज्ञान से तुमको क्या करना है अपना भक्ष्य लो जो शरीर व्यर्थ ही चलाजानेवाला है वह आज परोपकार से सफल जाता है उस मेरे अत्यन्त प्यारे शरीर मित्र को जो एक

[गीर्वाणभाषा ॥ अचरणगद्यम् ॥]

कश्चिदुज्जयिन्यामतीतप्रमाणस्वापतेयपतेर्वणिज आत्मजः पुरन्दरनामाऽऽसीत्,स पितरि मृतेऽसद्व्यवहारेण धनव्ययमकार्षीद्वन्धुभिरपीत्थं निवारितो लक्ष्मीः पुरुषस्य महत्त्वं यां जगदम्बां प्रसूयोदन्वा१नपि रत्नाकरो वधूकृत्य मधुजिर२त्रिलोकीशो मातृकृत्य कन्दर्पो३जगच्चित्तानन्दनो भगिनीकृत्य चाऽलक्ष्मी४रुद्दालकक्रोडक्रीडनकं बभूव, यस्यां सद्मनि स्थितायामालस्यं१स्थिरतां, चापल्यं२मुद्योगितां, मूकत्वं३मितभाषितां, धौर्त्यं४चतुरतां, पात्राऽपात्रविवेकत्वशून्यत्व५मुदारतामवाप्य महादोषा अपि गुणीभवेयुरिति च॥१॥

स तु स्वजनवचनरचनमनादृत्योवाच भवितव्यं येन तेन तु भाव्यमेव लाङ्गलिफलाम्बुवद्येन च न भाव्यं कदापि तेन नैव भवनीयं खकुसुमवदिति सर्वांस्तृणीकृत्य दानभोगादिभिः सर्वं वसु क्षयं प्रापयित्वा निर्धनः पुरन्दर आलुलोच वनमेव श्रेयो न पुनर्निर्धनत्वेन बन्धुवर्गेष्वायुर्व्यय इति ॥ २ ॥

उज्जैण नगरी में कोई एक अथाह धनवाले सेठ का पुरन्दर नामक पुत्र था. उसने पिता के मरजाने पर दुराचार से धन खर्च किया. बान्धव लोगों ने भी इसप्रकार मना किया कि पुरुष का बडप्पन लक्ष्मी ही है. जिस जगत् की माता लक्ष्मी को उत्पन्न करके समुद्र तो रत्नाकर हुआ, स्त्री बनाकर विष्णु तीन लोक का नाथ हुआ, माता बनाकर कामदेव संसार के चित्त में आनन्द करनेवाला हुआ और बहिन बनाकर अलक्ष्मी उद्दालक ऋषि के अङ्क (गोद) में क्रीड़ा करनेवाली हुई है जिस लक्ष्मी के घर में स्थित होने पर आलस्य तो धीरता, चपलता उद्योगी होना, मूकता (किसी से न बोलना) मितभाषी होना, धूर्त्तता चतुराई और योग्य अयोग्य का ज्ञान न होना उदारता होकर बडे बडे दोष भी गुण रूप होजाते हैं इति ॥ १ ॥ उस पुरन्दर ने तो आत्मीय जनों के बचनों का अनादर करके कहा कि जो होने वाला है वह तो होवे हीगा जैसे नारियल के फल में जल, और जो न होने का है वह कदापि न होगा जैसे आकाश में पुष्प, इसप्रकार सर्व को तृणवत् (तुच्छ) समझ कर सम्पूर्ण धन का दान भोग आदि से नाशकर दरिद्री होकर वह पुरन्दर शोचने लगा कि अब तो बनवास ही अच्छा है और दरिद्री होकर बान्धववर्गों में जन्म बिताना अच्छा नहीं ॥ २ ॥

[गीर्वाणभाषा॥ अचरणगद्यम् ॥]

कश्चिदुज्जयिन्यामतीतप्रमाणस्वापतेयपतेर्वणिज आत्मजः पुरन्दरनामाऽऽसीत्, स पितरि मृतेऽसद्व्यवहारेण धनव्ययमकार्षीद्बन्धुभिरपीत्थं निवारितो लक्ष्मीः पुरुषस्य महत्त्वं यां जगदम्बां प्रसूयोदन्वा१नपि रत्नाकरो वधूकृत्य मधुजिर२त्रिलोकीशो मातृकृत्य कन्दर्पो३जगच्चित्तानन्दनो भगिनीकृत्य चाऽलक्ष्मी ४रुद्दालकक्रोडक्रीडनकं बभूव, यस्यां सद्मनि स्थितायामालस्यं१स्थिरतां, चापल्य२मुद्योगितां, मूकत्वं३मितभाषितां, धौर्त्यं४चतुरतां, पात्राऽपात्रविवेकत्वशून्यत्व५मुदारतामवाप्य महादोषा अपि गुणीभवेयुरिति च॥१॥

स तु स्वजनवचनरचनमनादृत्योवाच भवितव्यं येन तेन तु भाव्यमेव लाङ्गलिफलाम्बुवद्येन च न भाव्यं कदापि तेन नैव भवनीयं खकुसुमवदिति सर्वांस्तृणीकृत्य दानभोगादिभिः सर्वं वसु क्षयं प्रापयित्वा निर्धनः पुरन्दर आलुलोच वनमेव श्रेयो न पुनर्निर्धनत्वेन बन्धुवर्गेष्वायुर्व्यय इति ॥ २ ॥

उज्जैण नगरी में कोई एक अथाह धनवाले सेठ का पुरन्दर नामक पुत्र था. उसने पिता के मरजाने पर दुराचार से धन खर्च किया. बान्धव लोगों ने भी इसप्रकार मना किया कि पुरुष का बडप्पन लक्ष्मी ही है. जिस जगत् की माता लक्ष्मी को उत्पन्न करके समुद्र तो रत्नाकर हुआ, स्त्री बनाकर विष्णु तीन लोक का नाथ हुआ, माता बनाकर कामदेव संसार के चित्त में आनन्द करनेवाला हुआ और बहिन बनाकर अलक्ष्मी उद्दालक ऋषि के अङ्क (गोद) में क्रीड़ा करनेवाली हुई है जिस लक्ष्मी के घर में स्थित होने पर आलस्य तो धीरता, चपलता उद्योगी होना, मूकता (किसी से न बोलना) मितभाषी होना, धूर्तता चतुराई और योग्य अयोग्य का ज्ञान न होना उदारता होकर बडे बडे दोष भी गुण रूप होजाते हैं इति ॥ १ ॥ उस पुरन्दर ने तो आत्मीय जनों के बचनों का अनादर करके कहा कि जो होने वाला है वह तो होवेहीगा जैसे नारियल के फल में जल, और जो न होने का है वह कदापि न होगा जैसे आकाश में पुष्प, इसप्रकार सर्व को तृणवत् (तुच्छ) समझ कर सम्पूर्ण धन का दान भोग आदि से नाशकर दरिद्री होकर वह पुरन्दर शोचने लगा कि अब तो बनवास ही अच्छा है और दरिद्री होकर बान्धववर्गों में जन्म बिताना अच्छा नहीं ॥ २ ॥

रटपूर्णाः सन्ति तान्गृहाणेत्युक्त्वाऽऽनयामास विक्रमस्तान्नवा९ऽपि दुर्लभषोड़श१६वर्णसुवर्णकुम्भान्पुरन्दराय दत्त्वा स्वपुरीं प्रत्यैत् ४

एकदा वनायुजविनीतवाजिनं नर्तयन्विजने नखरायुधानां पोत्रिणां च फालवेगं विफलीकुर्वन् विक्रमो वने वर्षासु विहरन्नदीपूरेण ह्रियमाणां प्रियाद्वितीयं २ बहुविप्लवविपन्नं वार्बहिर्निष्क्रसत्फूत्कुर्वन्तमन्तरन्तर्निमज्जद्बुद्बुदयन्तं पुरुषं ददर्श ॥ ५ ॥

तन्नृयुग्मं २ कोपि दयादेवीनिरीक्षितोऽन्यो जनो न निस्सारयाञ्चकार तदा महानुकम्पोपेतो गान्धर्वसेनिस्तुरगमुत्सृज्य कर्षूपूरे प्रविश्य स्त्रिया सहितं तं मानुषं मध्येनदितटं निन्ये, स चाऽस्मै सर्वकामसम्पादिकां मूलिकामदात्तामादाय प्रत्यागच्छति विक्रमे तां कश्चिद्दीनो ययाचे तदा तस्मै एव दुःस्थाय तृणमिव तां मूलिकां विसृज्य पुरीं प्रत्यैत्प्रमारर्षभः ॥६॥

कदाचिदेकाकी क्वापि गहने विचरन विक्रमः सिद्धं ददर्श प्रणनाम च तेनोचेऽवन्त्यधीश गान्धर्वसेने कुतस्त्वमागत इति

मेरे घर में सुवर्ण से भरेहुए नव घड़े हैं सो लीजिये इतना कहकर ले आई विक्रमादित्य उन नव ही कुन्दन के समान सुवर्ण से भरेहुए घड़े पुरन्दर को देकर पीछा उज्जीण आया ॥ ४ ॥ एक समय बनायु देश के सुशिक्षित घोड़े को एकान्त में नचातेहुए बन में सिंहों की छलांगें और सूकरों (सूरों) के बेग को निष्फल करते हुए बर्षाकाल में बिचरते हुए विक्रमादित्य ने नदी के प्रवाह में बहते हुए स्त्री सहित बहुत उलटापलटी से घबरायेहुए पानी से ऊपर निकलने पर फूत्कार करते हुए थोड़ी थोड़ी छेटी पर डूबते हुए बुदबुदा के समान पुरुष को देखा ॥ ५ ॥ उस स्त्रीपुरुष के जोड़े को किसी भी दयावान् पुरुष ने नहीं निकाला तब बड़ी कृपा करके गन्धर्वसेन का पुत्र (विक्रम) घोड़े को छोड़ नद के प्रवाह में धस कर स्त्री सहित पुरुष को नदी के तीर पर ले आया तब उस पुरुष ने सर्व कामों को सिद्ध करनेवाली एक जड़ी विक्रम को दी उस जड़ी को लेकर विक्रमादित्य के पीछे आते समय एक गरीब ने वह जड़ी मांगी तब उसी दीन दुखिया को वह जड़ी तृणवत् देकर पंवार राजा पीछा उज्जीण नगरी आया ॥ ६ ॥ किसी समय किसी बन में अकेले घूमते हुए बिक्रमादित्य ने एक सिद्ध को देखा और उसको प्रणाम किया उस ने कहा हे उज्जीण के पति गंधर्वसेन के

रटपूर्णाःसन्ति तान्गृहाणेत्युक्त्वाऽऽनयामास विक्रमस्तान्नवा९ऽपि दुर्लभषोड़श१६वर्णसुवर्णकुम्भान्पुरन्दराय दत्त्वा स्वपुरीं प्रत्यैत् ४

एकदा वनायुजविनीतवाजिनं नर्तयन्विजने नखरायुधानां पोत्रिणां च फालवेगं विफलीकुर्वन् विक्रमो वने वर्षासु विहरन्नदीपूरेण न्हियमाणं प्रियाद्वितीयं २ बहुविप्लवविपन्नं वार्बहिर्निष्क्रसत्फूत्कुर्वन्तमन्तरन्तर्निमज्जद्बुद्बुदयन्तं पुरुषं ददर्श ॥ ५ ॥

तन्नृयुग्मं २ कोपि दयादेवीनिरीक्षितोऽन्यो जनो न निस्सारयाञ्चकार तदा महानुकम्पोपेतो गान्धर्वसेनिस्तुरगमुत्सृज्य कर्षूपूरे प्रविश्य स्त्रिया सहितं तं मानुषं मध्येनदितटं निन्ये, स चाऽस्मै सर्वकामसम्पादिकां मूलिकामदात्तामादाय प्रत्यागच्छति विक्रमे तां कश्चिद्दीनो ययाचे तदा तस्मै एव दुःस्थाय तृणमिव तां मूलिकां विसृज्य पुरीं प्रत्यैत्प्रमारर्षभः ॥६॥

कदाचिदेकाकी क्वापि गहने विचरन् विक्रमः सिद्धं ददर्श प्रणनाम च तेनोचेऽवन्त्यधीश गान्धर्वसेने कुतस्त्वमागत इति

मेरे घर में सुवर्ण से भरेहुए नव घड़े हैं सो लीजिये इतना कहकर ले आई विक्रमादित्य उन नव ही कुन्दन के समान् सुवर्ण से भरेहुए घड़े पुरन्दर को देकर पीछा उज्जीण आया ॥ ४ ॥ एक समय बनायु देश के सुशिक्षित घोड़े को एकान्त में नचातेहुए बन में सिंहों की छलांगें और सूकरों (सूरों) के बेग को निष्फल करते हुए बर्षाकाल में बिचरते हुए विक्रमादित्य ने नदी के प्रबाह में बहते हुए स्त्री सहित बहुत उलटापलटी से घबरायेहुए पानी से ऊपर निकलने पर फूत्कार करते हुए थोड़ी थोड़ी छेटी पर डूबते हुए बुदबुदा के समान पुरुष को देखा ॥ ५ ॥ उस स्त्रीपुरुष के जोड़े को किसी भी दयावान् पुरुष ने नहीं निकाला तब बड़ी कृपा करके गन्धर्वसेन का पुत्र (विक्रम) घोड़े को छोड़ नद के प्रवाह में धस कर स्त्री सहित पुरुष को नदी के तीर पर ले आया तब उस पुरुष ने सर्व कामों को सिद्ध करनेवाली एक जड़ी विक्रम को दी उस जड़ी को लेकर विक्रमादित्य के पीछे आते समय एक गरीब ने वह जड़ी मांगी तब उसी दीन दुखिया को वह जड़ी तृणवत् देकर पंवार राजा पीछा उज्जीण नगरी आया ॥ ६ ॥ किसी समय किसी बन में अकेले घूमते हुए बिक्रमादित्य ने एक सिद्ध को देखा और उसको प्रणाम किया उस ने कहा हे उज्जीण के पति गंधर्वसेन के

कारमिव पञ्चतां यातस्तादियममृतफला सुस्वादुराज्यवल्ली तं राजतरुमावेष्टितेति ॥ ९ ॥
तेषु पञ्चस्वेवं विवदमानेष्वेकेनोचे येनाऽस्मदधिष्ठानाऽनोकहाऽधः स्थीयते तमेव कल्पपादपं प्रातर्वेष्टितैतन्नगरस्कन्धावारवल्लीति जयशेखरोप्यधःस्थो निशम्य तदोक्तं महिषीसखस्तदेव पत्तनमियाय तत्रत्यश्च राजानुत्पन्नप्रजो गतरात्रावेव ममार ततो मन्त्रिभिः प्रत्यूषकाले कञ्चनमायान्तमवेक्षमाणैरयं जयशेखर एव तन्नीवृदाधिपत्येऽभिषिक्तो नरेन्द्रतां प्रापितः ॥ १० ॥
एवमतीते बह्वनेहसि तद्देशसीमास्पर्द्धिभिर्भुजङ्गैरभ्यागत्य परिवेष्ट्य च तदधिष्ठानं रुरुधेऽयं तु जयशेखरस्तथापि प्रसन्नसुखललितजल्पनो राज्ञ्या सह द्यूतरसिकोऽक्षानेवाऽदीव्यत्तदा महिष्योचे नाथ परचक्रे समायाते कुतोऽप्रयत्नपरेण स्थीयते तदाकर्ण्य जयशेखरेण जगदे मानिनि ! किमस्मत्प्रयत्नेन राज्यं त्विदं तन्न्यग्रोधतरुस्थैः पञ्चभिर्यक्षैर्दत्तं तैरेव पुनः प्रतिहर्तुं शक्यते भियं विहाय

गहने के समान पंचत्व को प्राप्त होवेगा अर्थात् मर जायगा तब यह अमृत फलवाली स्वादिष्ट राज्य रूपी लता कौन से राज्य वृक्ष के लिपटेगी ॥ ९ ॥ इस प्रकार उन पांचों ही विवाद करनेवालों में से एक ने कहा कि जो कोई हम लोगों के निवास के वृक्ष के नीचे ठहरा है उसी कल्पवृक्ष से प्रातःकाल इस नगर की राजधानी रूप लता लिपटेगी तब नीचे बैठे हुए जयशेखर ने यह बात सुनी और राणी ही है मित्र जिसके अर्थात् राणी के साथ उसी नगर में गया और वहां का सन्तान हीन राजा रात्रि ही में मरगया था तब प्रातःकाल में किसी नये आयेहुए को हेरनेवाले मंत्रिलोगों ने इस जयशेखर को ही उस देश के स्वामिपन का अभिषेक कर नरेन्द्रपन को प्राप्त किया ॥ १० ॥ इसप्रकार बहुत से दिन व्यतीत होने पर उस देश की सीमा पर द्वेष करनेवाले राजाओं ने आकर उस राजधानी को चौतर्फ से घेर कर रोक ली, तोभी यह जयशेखर तो प्रसन्नता और ललित सम्भाषण पूर्वक राणी के साथ द्यूतरसिक होकर जुआ ही खेलता रहा, तब राणी ने कहा हे स्वामी! शत्रुओं की सेना आगई और आप विना उपाय कैसे बैठे हो तब स्त्री के वचन सुनकर जयशेखर ने कहा हे मानिनी! अपने प्रयत्न से क्या है? यह राज्य तो उस वटवृक्ष में रहनेवाले पांचों यक्षों का दियाहुआ है सो

कारमिव पञ्चतां यातस्तादियममृतफला सुस्वादुराज्यवल्ली तं राजतरुमावेष्टितेति ॥ ९ ॥
तेषु पञ्चस्वेवं विवदमानेष्वेकेनोचे येनाऽस्मदधिष्ठानाऽनोकहाऽधःस्थीयते तमेव कल्पपादपं प्रातर्वेष्टितैतन्नगरस्कन्धावारवल्लीति जयशेखरोप्यधःस्थो निशम्य तदोक्तं महिषीसखस्तदेव पत्तनमियाय तत्रत्यश्च राजानुत्पन्नप्रजो गतरात्रावेव ममार ततो मन्त्रिभिः प्रत्यूषकाले कञ्चनमायान्तमवेक्षमाणैरयं जयशेखर एव तन्नीवृदाधिपत्येऽभिषिक्तो नरेन्द्रतां प्रापितः ॥ १० ॥
एवमतीते बह्वनेहसि तद्देशसीमास्पर्द्धिभिर्भुजङ्गैरभ्यागत्य परिवेष्ट्य च तदधिष्ठानं रुरुधेऽयं तु जयशेखरस्तथापि प्रसन्नसुखललितजल्पनो राज्ञ्या सह द्यूतरसिकोऽक्षानेवाऽदीव्यत्तदा महिष्योचे नाथ परचक्रे समायाते कुतोऽप्रयत्नपरेण स्थीयते तदाकर्ण्य जयशेखरेण जगदे मानिनि ! किमस्मत्प्रयत्नेन राज्यं त्विदं तन्न्यग्रोधतरुस्थैः पञ्चभिर्यक्षैर्दत्तं तैरेव पुनः प्रतिहर्तुं शक्यते भियं विहाय

गहने के समान पंचत्व को प्राप्त होवेगा अर्थात् मर जायगा तब यह अमृत फलवाली स्वादिष्ट राज्य रूपी लता कौन से राज्य वृक्ष के लिपटेगी ॥ ९ ॥ इस प्रकार उन पांचों ही विवाद करनेवालों में से एक ने कहा कि जो कोई हम लोगों के निवास के वृक्ष के नीचे ठहरा है उसी कल्पवृक्ष से प्रातःकाल इस नगर की राजधानी रूप लता लिपटेगी तब नीचे बैठे हुए जयशेखर ने यह बात सुनी और राणी ही है मित्र जिसके अर्थात् राणी के साथ उसी नगर में गया और वहां का सन्तान हीन राजा रात्रि ही में मरगया था तब प्रातःकाल में किसी नये आयेहुए को हेरनेवाले मंत्रिलोगों ने इस जयशेखर को ही उस देश के स्वामिपन का अभिषेक कर नरेन्द्रपन को प्राप्त किया ॥ १० ॥ इसप्रकार बहुत से दिन व्यतीत होने पर उस देश की सीमा पर द्वेष करनेवाले राजाओं ने आकर उस राजधानी को चौतर्फ से घेर कर रोक ली, तोभी यह जयशेखर तो प्रसन्नता और ललित सम्भाषण पूर्वक राणी के साथ द्यूतरसिक होकर जुआ ही खेलता रहा, तब राणी ने कहा हे स्वामी! शत्रुओं की सेना आगई और आप विना उपाय कैसे बैठे हो तब स्त्री के वचन सुनकर जयशेखर ने कहा हे मानिनी! अपने प्रयत्न से क्या है? यह राज्य तो उस वटवृक्ष में रहनेवाले पांचों यक्षों का दियाहुआ है सो

रत्नं तदादाय प्रत्यागच्छति प्रामारराजि कश्चिद्दुर्विधस्तद्रत्नमयाच-
त राजापि तस्मै तृणमिव तदा तददात् ॥ १३ ॥

कदाचिद्धंसरोमपूर्णोपधानायां शय्यायां सुप्तस्य विक्रमस्य दुः-
स्वप्नोऽभवत्तत उत्थाय प्रातः समाजे स तदकथयत्समज्यया चो-
चे राजन्नीदृक् स्वप्नं तु किञ्चिदरिष्टं सूचयतीति तच्छान्त्यै दानमनु-
ष्ठेयमित्याकर्ण्य महावदान्योऽनित्यानि शरीराण्यनित्या एव सम्प-
दोऽनित्यमेवैन्द्रियं सौख्यमिति संचिन्त्य भाण्डागाराण्यनररीका-
रयित्वोज्जयिन्यां डिण्डिमघोषणां प्रेरयामास तदित्थमेकवारं य-
द्यस्मै रोचते तदेव स गृह्णातु कोशेभ्य इति दिनत्रयं३यावद्दुःस्वप्न-
वैफल्याय परम्परानिचितनानास्वापतेयकोशानलुण्टयत्परैर्ज्जनप-
दैश्च लोकैरहो वदान्यता विक्रमस्य ॥ १४ ॥

एकदा वराहमिहिरादिभिर्ज्योतिर्विद्भिरुक्ते शनिरोहिणीशकटभे-
दनिमित्ते द्वादश १२ वार्षिकदुर्भिक्षागमे केनचिदायातसिद्धेनैवमूचे
राजन्नेतद्दुर्भिक्षवैफल्याय द्वात्रिंश३२ल्लक्षणधरो नरः स्वशिरो बलिं

प्रसन्न होकर एक चिन्तामणि रत्न विक्रमादित्य को दिया उसको लेकर पी-
छे आतेहुए राजा से किसी दरिद्री ने मांग लिया और उस राजा ने भी
उस रत्न को तृणवत् देदिया ॥ १३ ॥ किसी समय हंस के केशों से भरेहुए
तकियेवाली शय्या में सोतेहुए विक्रमादित्य को दुःस्वप्न हुआ, तब उठकर
प्रातःकाल सभा में विक्रम ने वह स्वप्न कहा तब सभा ने कहा कि महाराज!
ऐसा स्वप्न तो किसी अशुभ को जनानेवाला है इसकारण उस की शान्ति
के अर्थ दान करना चाहिये, यह सुनकर बड़े दातार विक्रमादित्य ने शरीर
सम्पत्ति और इन्द्रियों के सुख ये सब अनित्य (नाश होनेवाले) हैं ऐसा
विचार करके खजानों के किवाड़ खुलवा दिये और उज्जैण में इसप्रकार
ढूंढी पिटवा दी कि जिस को जो वस्तु अच्छी लगै उसी वस्तु को वह एक बार
खजानों से लेवै, इस प्रकार तीन दिन तक उस दुःस्वप्न को बिफल करने के
हेतु पुस्तों (पीढियों) से इकट्ठे हुए अनेक प्रकार के धन के भण्डार लुटाये
तब देशी लोगों ने बिक्रमादित्य की उदारता का आश्चर्य किया।१४।एक समय
बराहमिहिर आदि ज्योतिषियों के कहे शनैश्चर से रोहिणी नक्षत्र का शकट
टूटने (रोहिणी नक्षत्र शकट के आकार है जिसके मध्य में शनैश्चर के आने

रत्नं तदादाय प्रत्यागच्छति मामारराजि कश्चिद्दुर्विधस्तद्रत्नमयाचत राजापि तस्मै तृणमिव तदा तददात् ॥ १३ ॥

कदाचिद्धंसरोमपूर्णोपधानायां शय्यायां सुप्तस्य विक्रमस्य दुःस्वप्नोऽभवत्तत उत्थाय प्रातः समाजे स तदकथयत्समज्यया चोचे राजन्नीदृक् स्वप्नं तु किञ्चिदरिष्टं सूचयतीति तच्छान्त्यै दानमनुष्ठेयमित्याकर्ण्य महावदान्योऽनित्यानि शरीराण्यनित्या एव सम्पदोऽनित्यमेवैन्द्रियं सौख्यमिति संचिन्त्य भाण्डागाराण्यनररीकारयित्वोज्जयिन्यां डिण्डिमघोषणां प्रेरयामास तदित्थमेकवारं यद्यस्मै रोचते तदेव स गृह्णातु कोशेभ्य इति दिनत्रयं३ यावद्दुःस्वप्नवैफल्याय परम्परानिचितनानास्वापतेयकोशानलुण्टयत्परैर्ज्जनपदैश्च लोकैरहो वदान्यता विक्रमस्य ॥ १४ ॥

एकदा वराहमिहिरादिभिर्ज्योतिर्विद्भिरुक्ते शनिरोहिणीशकटभेदनिमित्ते द्वादश १२ वार्षिकदुर्भिक्षागमे केनचिदायातसिद्धेनैवमूचे राजन्नेतद्दुर्भिक्षवैफल्याय द्वात्रिंश३२ल्लक्षणधरो नरः स्वशिरो बलिं

प्रसन्न होकर एक चिन्तामणि रत्न विक्रमादित्य को दिया उसको लेकर पीछे आतेहुए राजा से किसी दरिद्री ने मांग लिया और उस राजा ने भी उस रत्न को तृणवत् देदिया ॥ १३ ॥ किसी समय हंस के केशों से भरेहुए तकियेवाली शय्या में सोतेहुए विक्रमादित्य को दुःस्वप्न हुआ, तब उठकर प्रातःकाल सभा में विक्रम ने वह स्वप्न कहा तब सभा ने कहा कि महाराज! ऐसा स्वप्न तो किसी अशुभ को जनानेवाला है इसकारण उस की शान्ति के अर्थ दान करना चाहिये, यह सुनकर बड़े दातार विक्रमादित्य ने शरीर सम्पत्ति और इन्द्रियों के सुख ये सब अनित्य (नाश होनेवाले) हैं ऐसा विचार करके खजानों के किवाड़ खुलवा दिये और उज्जैण में इसप्रकार डूंडी पिटवा दी कि जिस को जो वस्तु अच्छी लगै उसी वस्तु को वह एक बार खजानों से लेवै, इस प्रकार तीन दिन तक उस दुःस्वप्न को बिफल करने के हेतु पुस्तों (पीढियों) से इकट्ठे हुए अनेक प्रकार के धन के भण्डार लुटाये तब देशी लोगों ने बिक्रमादित्य की उदारता का आश्चर्य किया। १४ एक समय बराहमिहिर आदि ज्योतिषियों के कहे शनैश्चर से रोहिणी नक्षत्र का शकट टूटने (रोहिणी नक्षत्र शकट के आकार है जिसके मध्य में शनैश्चर के आने

तिर्यक्करणपरिडतेन जगत्प्राणेनाऽप्यऽकस्मादेवाऽभिमुखं ववे॥१६॥

युगपदेव स्पष्टजडीकरणकरकाकलापैस्तडित्तरुणीसमालिङ्गितैर्विश्वबधिरीकरणमन्त्रनिर्घातैः कुलीर १४ केशरि १५ कालोत्थैरिव सान्द्रविस्तीर्णैः स्वैरिणीजनाभिसरणसामग्रीसंपत्तिसर्वस्वैर्दिनकरदरितदरी १ द्रोणि २ गर्त ३ शरणागतडाकिनी १ प्रेत २ पुण्यजन ३ प्रियान्धतमसबन्धुभिरुज्जागरितपेचक १ पिङ्गला १ परोष्णी ३ प्रमुखसत्त्वैः प्रामारराजध्रुवधैर्यपरीक्षिपिणुभिरिव धाराधरैश्च समुज्जजृम्भिरे* ॥ १७ ॥

तत्कालोचितविहिताऽवस्थे शनैः सरणसूरौ नरेन्द्रे तत्सव्यककुभि काचिद्वृद्धशूद्री विश्लिष्यत्सर्वाऽवयवसंधिर्मूर्तिमतीव विपत्तिः काष्ठनिचयाय समागता करस्त्रस्तव्रश्चनाऽनुत्थितेध्मभारा समाहूतबली १ पलित २ यमकिंकरा तृप्तालुस्त्राहीत्याचक्रन्द ॥ १८ ॥

स्त्री (पृथ्वी) के समुद्र रूपी लहँगे (घागरा) को चलायमान करनेवाला संसार में भय करनेवाले भाङ्कार शब्द से डरानेवाला धूली के समूह से प्रचण्ड स्त्री रूपी पृथ्वी के ललाट रूपी पटड़ी पर मार्ग भुलानेवाला बहतीहुई नदी की धारा के वेग को तिरछा करदेने में परिडत ऐसा वायु अचानक ही संमुख बहने लगा ॥ १६ ॥ साथ ही उसके स्पर्श से ही जड़ कर देनेवाले ओलों से भरेहुए बिजली रूप स्त्री से लिपटेहुए संसार को बहिरा करने को मन्त्र रूपी गर्जनावाले मानों सावन भादों के समय में उठे हों तैसे घटाटोप व्यभिचारिणी स्त्रियों के सहेठ (संकेत स्थान) पर जाने की सामग्री की सम्पदा के सर्वस्व सूर्य से डरकर गुफा द्रोणी (पर्वत की खादरी और खोला) और खड्डों में शरण गये डाकिनी पिशाच और राक्षसों के प्यारे घोर अन्धकार के भाई जगाय दिये हैं उल्लू (घूघू) कोचर और चमगीदड़ (बागल) आदि प्राणियों को जिन्होंने पँवारराजा (विक्रम) के अचल धीरज की परीक्षा लेने की इच्छावाले मेघों ने भी मुंह फाड़े ॥ १७ ॥ उस समय के अनुसार भेष बनाकर धीरे चलने में परिडत विक्रमादित्य के बांई दिशा में ढीली होगई है सम्पूर्ण अवयवों की सन्धियां जिसकी मानों दुःख की मूर्त्ति लकड़ियों का भारा लेने को आईहुई हाथ से गिरपड़ी है कुल्हाड़ी जिसकी नहीं उठता है लकड़ियों का बोझा जिससे लेने को आये हैं जीर्ण चाम और सफेद केश रूपी यमराज के दूत जिसको दुःख से घबराई हुई

---

* " समुज्जजृम्भे" इत्यपेक्षितम् ।

तिर्यक्करणपण्डितेन जगत्प्राणेनाऽप्यऽकस्मादेवाऽभिमुखं ववे॥१६॥

युगपदेव स्पष्टजडीकरणकरकाकलापैस्तडित्तरुणीसमालिङ्गितैर्विश्वबधिरीकरणमन्त्रनिर्घातैः कुलीर २।४ केशरि २।५ कालोत्थैरिव सान्द्रविस्तीर्णैः स्वैरिणीजनाभिसरणसामग्रीसंपत्तिसर्वस्वैर्दिनकरदरितदरी १ द्रोणि २ गर्त ३ शरणागतडाकिनी १ प्रेत २ पुण्यजन ३ प्रियान्धतमसबन्धुभिरुज्जागरितपेचक १ पिङ्गला १ परोष्णी ३ प्रमुखसत्त्वैः प्रामारराजध्रुवधैर्यपरीक्षिषिषुभिरिव धाराधरैश्च समुज्जजृम्भिरे* ॥ १७ ॥

तत्कालोचितविहिताऽवस्थे शनैः सरणसूरौ नरेन्द्रे तत्सव्यककुभि काचिद्वृद्धशूद्री विश्लिष्यत्सर्वाऽवयवसंधिर्मूर्तिमतीव विपत्तिः काष्ठनिचयाय समागता करस्रस्तव्रश्चनाऽनुत्थितेध्मभारा समाहूतबली १ पलित २ यमकिंकरा तृप्तालुस्त्राहीत्याचक्रन्द ॥ १८ ॥

स्त्री (पृथ्वी) के समुद्र रूपी लहँगे (घागरा) को चलायमान करनेवाला संसार में भय करनेवाले भाङ्कार शब्द से डरानेवाला धूली के समूह से प्रचण्ड स्त्री रूपी पृथ्वी के ललाट रूपी पटड़ी पर मार्ग भुलानेवाला बहतीहुई नदी की धारा के वेग को तिरछा करदेने में पण्डित ऐसा वायु अचानक ही संमुख बहने लगा ॥ १६ ॥ साथ ही उसके स्पर्श से ही जड़ कर देनेवाले ओलों से भरेहुए बिजली रूप स्त्री से लिपटेहुए संसार को बहिरा करने को मन्त्र रूपी गर्जनावाले मानों सावन भादों के समय में उठे हों तैसे घटाटोप व्यभिचारिणी स्त्रियों के सहेठ (संकेत स्थान) पर जाने की सामग्री की सम्पदा के सर्वस्व सूर्य से डरकर गुफा द्रोणी (पर्वत की खादरी और खोळा) और खड्डों में शरण गये डाकिनी पिशाच और राक्षसों के प्यारे घोर अन्धकार के भाई जगाय दिये हैं उल्लू (घूघू) कोचर और चमगीदड़ (बागळ) आदि प्राणियों को जिन्होंने पँवारराजा (विक्रम) के अचल धीरज की परीक्षा लेने की इच्छावाले मेघों ने भी मुंह फाड़े ॥ १७ ॥ उस समय के अनुसार भेष बनाकर धीरे चलने में पण्डित विक्रमादित्य के बांई दिशा में ढीली होगई है सम्पूर्ण अवयवों की सन्धियां जिसकी मानों दुःख की मूर्त्ति लकड़ियों का भारा लेने को आईहुई हाथ से गिरपड़ी है कुल्हाडी जिसकी नहीं उठता है लकड़ियों का बोझा जिससे लेन को आये हैं जीर्ण चाम और सफेद केश रूपी यमराज के दूत जिसको दुःख से घबराई हुई

* " समुज्जजृम्भे" इत्यपेक्षितम् ।

दृक्निषङ्गनिस्सरत्कटाक्षनिशितनाराचया मत्तमातङ्गगत्या शरणागतमदनमहाराजसाम्राज्यवितरणया पादप्रक्षेपणप्रहारचक्रितचंडातदोलायमानदेहत्रुट्यत्कटिशङ्कया लोकाऽवलोकनलज्जानिश्शङ्कया कन्दर्पैकातपत्रराज्याऽभिषिक्तया प्राप्ताऽवसरया महाश्रेष्ठिदुहित्रा ज्ञाताऽऽगतजारयाऽऽजग्मे ॥ २१ ॥

मृदुपदाक्षेपमेत्य प्रविश्य च तन्मंदिरे श्वासप्रवेश१निर्गमौ२निशम्य स्वोपपतिमागतं सुप्तमवगत्य तद्धिया निद्राणनृपबाहु१पार्श्व२संधौ प्रविश्य च शलाटुश्रीफलकर्कशाभ्यां तारुण्यकुञ्जरकुम्भाभ्यां स्मरसमिज्जयसामन्ताभ्यां जगद्वशीकरणचूर्णसमुद्गाभ्यां चूचुकमदनमुद्रोज्जृम्भमाणाभ्यां गाढाऽऽलिङ्गनेनाऽप्यनम्रमुखाभ्यां देहदिव्यलतास्फुरत्फलाभ्यां कस्तूरीपिहितचूचुकरङ्गभेदाभ्यां कन्दर्पक्रीडनैककन्दुकाभ्यां यौवन१बाल्य२सूर्योदया१ऽस्ता२ऽचला-

---

से उभरे हुए, कामदेव की लड़ाई में विजय कहानेवाले चर्चित हैं स्तन जिसके, बन्ध किया है पायल आदि गहने के बजने (शब्द) को जिसने, नेत्र रूपी भाते से निकलते है कटाक्ष रूपी तीखे बाण जिसके, मदोन्मत्त हस्ती के समान चलनेवाली, शरण में आये हुए कामदेव महाराज को चक्रवर्ति राज्य देनेवाली, चलने में पैर की ठोकर से झूल खातेहुए लहँगे और हिलनेवाले शरीर से टूट जाने की शङ्कावाली है कमर जिसकी, लोगों के देख लेने की लाज से निडर, कामदेव के एकछत्र राज्य का किया है अभिषेक जिसने, मिलगया है समय जिसको, जाना है अपने जार का आजाना जिसने, ऐसी बड़े सेठ की बेटी आई ॥ २१ ॥ कोमल पैरों की गति को लेकर और उस मिन्दर में घुसकर श्वास का आना जाना सुनके मानों अपना जार आकर सोगया है ऐसा जानकर उसी बुद्धि से सोतेहुए राजा के भुज और पसवाड़े के बीच (बगल) में घुसकर, बील और नारियल के समान कठोर, जवान हाथी के कुम्भस्थल जैसे, कामदेव की लड़ाई जीतनेवाले सामन्त भट (माण्डलिक राजा) संसार को वश में करनेवाले चूर्ण के डिब्बे चूचुक रूपी कामदेव की छाप करके शोभायमान, गाढे आलिङ्गन से भी नहीं होते हैं नीचे मुंह जिनके, शरीर रूपी सुन्दर लता में लगे हुए फल, कस्तूरी के लगने से ही है चूचुकों के रङ्ग का भेद जिन में, कामदेव के खेलने के गेंद, जवानी और लड़कपन रूपी सूर्य के उदय और अस्त होने के पर्वत, जवान

द्विक्षिपङ्गनिस्सरत्कटाक्षनिशितनाराचया मत्तमातङ्गगत्या शरणागतमदनमहाराजसाम्राज्यवितरणया पादप्रक्षेपणप्रहारचक्रितचंडातदोलायमानदेहत्रुट्यत्कटिशङ्कया लोकाऽवलोकनलज्जानिश्शङ्कया कन्दर्पैकातपत्रराज्याऽभिषिक्तया प्राप्ताऽवसरया महाश्रेष्ठिदुहित्रा ज्ञाताऽऽगतजारयाऽऽजग्मे ॥ २१ ॥

मृदुपदाक्षेपमेत्य प्रविश्य च तन्मंदिरे श्वासप्रवेश१निर्गमौ२निशम्य स्वोपपतिमागतं सुप्तमवगत्य तद्धिया निद्राणनृपबाहु१पार्श्व२संधौ प्रविश्य च शलाटुश्रीफलकर्कशाभ्यां तारुण्यकुञ्जरकुम्भाभ्यां स्मरसमिज्जयसामन्ताभ्यां जगद्वशीकरणचूर्णसमुद्गाभ्यां चूचुकमदनमुद्रोज्जृम्भमाणाभ्यां गाढाऽऽलिङ्गनेनाऽप्यनम्रमुखाभ्यां देहदिव्यलतास्फुरत्फलाभ्यां कस्तूरीपिहितचूचुकरङ्गभेदाभ्यां कन्दर्पक्रीडनैककन्दुकाभ्यां यौवन१बाल्य२सूर्योदया१ऽस्ता२ऽचला-

---

से उभरे हुए, कामदेव की लड़ाई में विजय बढानेवाले चर्चित हैं स्तन जिसके, बन्ध किया है पायल आदि गहने के बजने (शब्द) को जिसने, नेत्र रूपी भाते से निकलते है कटाक्ष रूपी तीखे बाण जिसके, मदोन्मत्त हस्ती के समान चलनेवाली, शरण में आये हुए कामदेव महाराज को चक्रवर्ति राज्य देनेवाली, चलने में पैर की ठोकर से घूम खातेहुए लहँगे और हिलनेवाले शरीर से टूट जाने की शङ्कावाली है कमर जिसकी, लोगों के देख लेने की लाज से निडर, कामदेव के एकछत्र राज्य का किया है अभिषेक जिसने, मिलगया है समय जिसको, जाना है अपने जार का आजाना जिसने, ऐसी बड़े सेठ की बेटी आई ॥ २१ ॥ कोमल पैरों की गति को लेकर और उस मिन्दर में घुसकर श्वास का आना जाना सुनके मानों अपना जार आकर सोगया है ऐसा जानकर उसी बुद्धि से सोतेहुए राजा के भुज और पसवाड़े के बीच (बगल) में घुसकर, बील और नारियल के समान कठोर, जवान हाथी के कुम्भस्थल जैसे, कामदेव की लड़ाई जीतनेवाले सामन्त भट (माण्डलिक राजा) संसार को वश में करनेवाले चूर्ण के डिब्बे चूचुक रूपी कामदेव की छाप करके शोभायमान, गाढे आलिङ्गन से भी नहीं होते हैं नीचे मुंह जिनके, शरीर रूपी सुन्दर लता में लगे हुए फल, कस्तूरी के लगने से ही है चूचुकों के रङ्ग का भेद जिन में, कामदेव के खेलने के गैंद, जवानी और लड़कपन रूपी सूर्य के उदय और अस्त होने के पर्वत, जवान

मूल्यमानयिष्ये तुभ्यमिति क्वाऽऽनीतः स हारो मे दीयताम् ।२३।

राजा तु तां नवकिशोरीमालिङ्गननिरतामपि रहसि प्राप्य नाभजन्मनागपि मनोविक्रियां पावकसामीप्यमवाप्यापि हेमन्तघृतपिण्ड इव दृढतरो धैर्यगाम्भीर्यशौर्यसमुपेतो ह्यज्ञेयस्वरवैलक्षण्यमद्यैवानयिष्ये राजमहिषीहारं त्वयापि तावदत्रैव स्थेयमित्युक्त्वा कलाकुशलस्तदपरिचित एवोत्थाय शुद्धान्तं समेत्य पट्टमहिषीं जागरय्य भूतोदन्तमशेषमूचिवान् ॥ २४ ॥

ततश्च कुब्जवामनसौविदल्लाञ्शिबिकया सह प्रस्थाप्य शीघ्रतरमेव तां श्रेष्ठिदुहितरं बलात्कारेणाऽवरोधनं प्रत्याऽऽनाययाम्बभूव राजा प्रत्यक्षमागतायां ह्रीणायामधोमुख्यां तस्यामवतार्य महिषीकण्ठात्तद्धीरकहारं ददावमुष्यै जगाद च पुत्रि नैव त्वया भेतव्यं गृहाण हारं किंतु मनोभवभवा व्यथा तु स्वस्वस्वामिभिरेवाऽपनेया स्त्रीभिरहं तु प्रजादुःखकातरोऽन्यत्सर्वं व्यसनमपाकर्तुं समर्थस्तथैव

से धीरे से बोली, "क्या ऐसे नींद लेनेवाले हो" जो तुमने कहा था कि मैं दूसरे दिन राजा की राणी को मार कर उसका एक अड्ब रुपयों की लागत का बड़े हीरों का हार तेरे अर्थ लाऊंगा सो कहां लाये वह हार मुझे दो ॥ २३ ॥ राजा को उस आलिङ्गन में लगीहुई नवीन किशोर अवस्थावाली को एकान्त में पाकर कुछ भी मन नहीं बिगड़ा. अग्नि के संयोग को पाकर भी शीतकाल के घी के पींडे के समान अत्यन्त ही गाढा धीरता गम्भीरता और वीरता के साथ बोली न पहिचानी जाय तैसे अभी ही राजा की राणी का हार लाता हूं तू तबी तक इहां पर ही ठरहना ऐसा कहकर कला में कुशल विक्रमादित्य ने उस स्त्री से न पहिचाने जाकर ही उठकर रनवास में जाय पटराणी को जगाय संपूर्ण बीते वृत्तान्त कहे ॥ २४ ॥
तदनन्तर विक्रम ने कुबड़े बावने नादरों को पालकी के साथ भेज कर बहुत ही शीघ्र उस सेठ की बेटी को बलात्कार से रनवास में मंगवाई. लज्जा से नीचा मुख किये उसके सामने आने पर पटरानी के गले से वह हीरों का हार उतार कर उसको देदिया और कहा कि हे बेटी! तू डरै मत, हार लेले परन्तु स्त्रियों को कामदेव की पीड़ा तो अपने अपने पतियों से ही मिटानी योग्य है. हाँ प्रजा के दुःखों को काटनेवाला मैं जैसे और सब दुःखों को दूकर रन में समर्थ हूँ तैसे ही यदि तेरा पति कहीं दूर रहता हो तो शीघ्र ही

मूल्यमानयिष्ये तुभ्यमिति क्वाऽऽनीतः स हारो मे दीयताम् ।२३।

राजा तु तां नवकिशोरीमालिङ्गननिरतामपि रहसि प्राप्य नाभजन्मनागपि मनोविक्रियां पावकसामीप्यमवाप्यापि हेमन्तघृतपिण्ड इव दृढतरो धैर्यगाम्भीर्यशौर्यसमुपेतो ह्यज्ञेयस्वरवैलक्षण्यमद्यैवानयिष्ये राजमहिषीहारं त्वयापि तावदत्रैव स्थेयमित्युक्त्वा कलाकुशलस्तदपरिचित एवोत्थाय शुद्धान्तं समेत्य पट्टमहिषीं जागरय्य भूतोदन्तमशेषमूचिवान् ॥ २४ ॥

ततश्च कुब्जवामनसौविदल्लाञ्शिबिकया सह प्रस्थाप्य शीघ्रतरमेव तां श्रेष्ठिदुहितरं बलात्कारेणाऽवरोधनं प्रत्याऽऽनाययाम्बभूव राजा प्रत्यक्षमागतायां ह्रीणायामधोमुख्यां तस्यामवतार्य महिषीकण्ठात्तद्धीरकहारं ददावमुष्यै जगाद च पुत्रि नैव त्वया भेतव्यं गृहाण हारं किंतु मनोभवभवा व्यथा तु स्वस्वस्वामिभिरेवाऽपनेया स्त्रीभिरहं तु प्रजादुःखकातरोऽन्यत्सर्वं व्यसनमपाकर्तुं समर्थस्तथैव

से धीरे से बोली, "क्या असे नींद लेनेवाले हो" जो तुमने कहा था कि मैं दूसरे दिन राजा की राणी को मार कर उसका एक अर्ब रुपयों की लागत का बड़े हीरों का हार तेरे अर्थ लाऊंगा सो कहां लाये वह हार मुझे दो ॥ २३ ॥ राजा को उस आलिङ्गन में लगीहुई नवीन किशोर अवस्थावाली को एकान्त में पाकर कुछ भी मन नहीं बिगड़ा. अग्नि के संयोग को पाकर भी शीतकाल के घी के पींडे के समान अत्यन्त ही गाढा धीरता गम्भीरता और वीरता के साथ बोली न पहिचानी जाय तैसे अभी ही राजा की राणी का हार लाता हूं तू तबी तक इहां पर ही ठरहना ऐसा कहकर कला में कुशल विक्रमादित्य ने उस स्त्री से न पहिचाने जाकर ही उठकर रनवास में जाय पटराणी को जगाय संपूर्ण बीते वृत्तान्त कहे ॥ २४ ॥
तदनन्तर विक्रम ने कुबड़े बावने नादरों को पालकी के साथ भेज कर बहुत ही शीघ्र उस सेठ की बेटी को बलात्कार से रनवास में मंगवाई. लज्जा से नीचा मुख किये उसके सामने आने पर पटरानी के गले से वह हीरों का हार उतार कर उसको देदिया और कहा कि हे बेटी! तू डरै मत, हार लेले परन्तु स्त्रियों को कामदेव की पीड़ा तो अपने अपने पतियों से ही मिटानी योग्य है. हाँ प्रजा के दुःखों को काटनेवाला मैं जैसे और सब दुःखों को दूर करने में समर्थ हूँ तैसे ही यदि तेरा पति कहीं दूर रहता हो तो शीघ्र ही

स्तुरगारूढो नरेन्द्र इत्यहो विक्रमकारुण्यम् ॥ २७ ॥

कदाचित्पृथ्वीं पर्यटता नृपेण चत्वारः ४ कार्पटिका दृष्टास्तान्नृपो यावत्पृच्छेत्तावत्त एवोचुर्देव दैवजीविताः कथञ्चित्प्राप्ताः स्मो यथा पूर्वस्यां बेतालपुरनाम्नि नगरे शोणितप्रिया भगवती भद्रकाली तिष्ठति सा नित्यं नरबलिं कांक्षति यो भक्तिं तदीयां धारयति स स पुरुषः बलिं ददाति तन्निमित्तं मूल्येनाऽपि वैदेशिकजना गृह्यन्ते तदभावे बलात्कारेण प्राप्यन्ते तत्रत्यशाक्तैर्देशान्तरनिवासिनो दीनजनास्तथैव केषुचिद्ध्रियमाणेषु वयं कृच्छ्रेण तेभ्यः पलाय्य समायाता मालवेन्द्रं दीनशरणं त्वामिति ॥ २८ ॥

श्रुत्वैव तद्वाचं निश्शङ्कधीरो राजा तत्रैव जगाम कालिकापुरस्ताच्चैको वैदेशिको वेपमानस्तत्रत्यैस्सन्दानितो बल्यर्थमानीतः स्नापितः स्रक्चन्दननैवेद्यादिभिरर्चितो दृष्टस्ततो राज्ञा धिगेतान् पापकर्मनिष्ठानिति मनस्युक्त्वा रक्षां कर्तुमुद्यतेन जगदे भो लोका एनं मुञ्चत दुर्बलं पुष्टाङ्गस्य मे बलिना कालिका सद्यस्तुष्टा भवि-

---

चढाहुआ बिना खाये पिये ग्वाल आजाने के समय तक वहीं पर ठहरा रहा. यह बडी ही विक्रमादित्य की करुणा है ॥२७॥ किसी दिन पृथ्वी पर विचरते हुए विक्रमादित्य ने चार कावड़ियों को देखा राजा उनसे पूछता ही था कि तिस पहले उन्होंने ही कहा कि महाराज प्रारब्ध से बचेहुए किसी चाल से पहुंच गये हैं. यथा (जैसे) पूर्व दिशा में बेताल नामक नगर में रुधिर (लोहू) की प्यारी भवानी भद्रकाली है वह प्रतिदिन मनुष्य का बलिदान चाहती है उस बलिदान के अर्थ वहां के शाक्तलोग (शक्ति की उपासना करनेवाले) परदेशी मनुष्यों को मोल भी लेते हैं और मोल नहीं मिलने पर बलात्कार (जबरन्) से परदेशी पुरुष को पकड़ लेते हैं तैसे ही हम भी कितनोंक की पकड़ में आगये थे सो बडे ही कष्ट से भागकर मालवा देश के पति दीनों को शरण देनेवाले आप तक पहुंच गये हैं ॥ २८ ॥ उनके वचन सुनते ही निडर धीर राजा वहां पर चलागया और कालिका के सामने बलिदान देने को लाया हुआ स्नान कराकर माला, चन्दन, नैवेद्य आदि सामग्री से पूजा गया, वहां के लोगों ने बान्ध रक्खा है जिस को, ऐसे कांपते हुए एक परदेशी को देखा तब राजा ने" इन पाप कर्म करने वालों को धिक्कार है" ऐसा मन में कहकर इस को बचाने के अर्थ प्रकट कहा

स्तुरगारूढो नरेन्द्र इत्यहो विक्रमकारुण्यम् ॥ २७ ॥

कदाचित्पृथ्वीं पर्यटता नृपेण चत्वारः ४ कार्पटिका दृष्टास्तान्नृपो यावत्पृच्छेत्तावत्त एवोचुर्देव दैवजीविताः कथञ्चित्प्राप्ताः स्मो यथा पूर्वस्यां बेतालपुरनाम्नि नगरे शोणितप्रिया भगवती भद्रकाली तिष्ठति सा नित्यं नरबलिं कांक्षति यो भक्तिं तदीयां धारयति स स पुरुषः बलिं ददाति तन्निमित्तं मल्येनाऽपि वैदेशिकजना गृह्यन्ते तदभावे बलात्कारेण प्राप्यन्ते तत्रत्यशाक्तैर्देशान्तरनिवासिनो दीनजनास्तथैव केषुचिद्ध्रियमाणेषु वयं कृच्छ्रेण तेभ्यः पलाय्य समायाता मालवेन्द्रं दीनशरणं त्वामिति ॥ २८ ॥

श्रुत्वैव तद्वाचं निश्शङ्कधीरो राजा तत्रैव जगाम कालिकापुरस्ताच्चैको वैदेशिको वेपमानस्तत्रत्यैस्सन्दानितो बल्यर्थमानीतः स्नापितः स्रक्चन्दननैवेद्यादिभिरर्चितो दृष्टस्ततो राज्ञा धिगेतान् पापकर्मनिष्ठानिति मनस्युक्त्वा रक्षां कर्तुमुद्यतेन जगदे भो लोका एनं मुञ्चत दुर्बलं पुष्टाङ्गस्य मे बलिना कालिका सद्यस्तुष्टा भवि-

---

चढाहुआ बिना खाये पिये ग्वाल आजाने के समय तक वहीं पर ठहरा रहा. यह बडी ही विक्रमादित्य की करुणा है ॥२७॥ किसी दिन पृथ्वी पर विचरते हुए विक्रमादित्य ने चार कावड़ियों को देखा राजा उनसे पूछता ही था कि तिस पहले उन्होंने ही कहा कि महाराज प्रारब्ध से बचेहुए किसी चाल से पहुंच गये हैं. यथा (जैसे) पूर्व दिशा में बेताल नामक नगर में रुधिर (लोहू) की प्यारी भवानी भद्रकाली है वह प्रतिदिन मनुष्य का बलिदान चाहती है उस बलिदान के अर्थ वहां के शाक्तलोग (शक्ति की उपासना करनेवाले) परदेशी मनुष्यों को मोल भी लेते हैं और मोल नहीं मिलने पर बलात्कार (जबरन्) से परदेशी पुरुष को पकड़ लेते हैं तैसे ही हम भी कितनोंक की पकड़ में आगये थे सो बडे ही कष्ट से भागकर मालवा देश के पति दीनों को शरण देनेवाले आप तक पहुंच गये हैं ॥ २८ ॥ उनके वचन सुनते ही निडर धीर राजा वहां पर चलागया और कालिका के सामने बलिदान देने को लाया हुआ स्नान कराकर माला, चन्दन, नैवेद्य आदि सामग्री से पूजा गया, वहां के लोगों ने बान्ध रक्खा है जिस को, ऐसे कांपते हुए एक परदेशी को देखा तब राजा ने " इन पाप कर्म करने वालों को धिक्कार है" ऐसा मन में कहकर इस को बचाने के अर्थ प्रकट कहा

ऽय एवेति निश्चित्य प्रविवेशोज्जयिनीम् ॥ ३० ॥

अवसरे च स दानाऽध्यक्षविज्ञापितप्रापितो राजसमज्यां गतो विक्रमं च कुलक्षणं दृष्ट्वा खिन्नो बभूव राजा च तं तथाभूतमवेक्ष्य प्रोवाच कुतः खिन्न इति निशम्य सोप्याहाऽहो देवैतत्पुरीपरिसरे तु मया सर्वनृपलक्षणधरो नरो दीनः कश्चित्काष्ठवाही दृष्टस्त्वं च कुलक्षणो राजा दृष्ट इत्यस्मि विषण्णः शास्त्रादास्थामपसारयन् ॥ ३१ ॥

तदुक्तमित्याकर्ण्योवाच विक्रमः सर्वशास्त्रविचक्षणो हे सामुद्रिकाजीविन् शास्त्रेषु सर्वेष्वेव सामान्यविशेषभावो विवेकविचारसाध्यः स नैवाऽदर्शि त्वया शृणवत्र कारणं पक्ष्मलक्षणप्रेक्षणेन ममाऽपि परिचितः स काष्ठवाही किंतु तत्काकुदे काकपदं वर्त्तते तेनैव शुभलक्षणानि न फलन्ति तस्य काष्ठवाहिन इति वचनं त्वयापि स्वशास्त्रे द्रष्टव्यं मम चाऽपसव्यपार्श्वे कर्बुरमन्त्रजालं महाशुभलक्षणमस्ति तेनैवेतराण्यशुभान्याक्रम्य नरेन्द्रतामहं प्रापित इ-

उज्जैण में गया ॥ ३० ॥ और समय पाकर वह दानाध्यक्ष के द्वारा राजसभा में पहुँचा वहां जाकर विक्रमादित्य के भी कुलक्षण देखकर दुःखी हुआ और राजा उसको इसप्रकार दुःखी देखकर बोला क्यों दुःखी हुए हो यह सुनकर उसने कहा महाराज मैंने इस नगरी के प्रान्त में तो सम्पूर्ण राजा के लक्षणों को धारण करनेवाले किसी गरीब लकड़ियें बेच खानेवाले मनुष्य को देखा है और आप जो कुलक्षणी हो तिनको राजा देखा इसकारण मैं सामुद्रिक शास्त्र से श्रद्धा को दूर कर दुःखी हूँ ॥ ३१ ॥ उसका कहना सुनकर सम्पूर्ण शास्त्रों को जाननेवाले विक्रमादित्य ने कहा हे सामुद्रिक शास्त्र की जिविका करनेवाले सब ही शास्त्रों में सामान्य विशेष भाव यथार्थ ज्ञान पूर्वक विचार करने से जानाजाता है सो तुमने नहीं देखा सुनो इसका कारण पक्ष्म के लक्षणों को देखने से. उस लकड़ियें ढोनेवाले को मैं भी जानता हूं किन्तु उसके तालवे पर काकपद चिन्ह है उसीसे उस लकड़ियां ढोनेवाले के शुभलक्षण नहीं फलते हैं ऐसा वचन तुम भी अपने शास्त्र (सामुद्रिक) में देखना और मेरे दाहिने पसवाड़े में कर्बुर मन्त्रजाल नामक बड़ा ही शुभलक्षण है उसीने सब अशुभ लक्षणों को दबाय मुझे राजापन

ष्य एवेति निश्चित्य प्रविवेशोज्जयिनीम् ॥ ३० ॥

अवसरे च स दानाऽध्यक्षविज्ञापितप्रापितो राजसमज्यां गतो विक्रमं च कुलक्षणं दृष्ट्वा खिन्नो बभूव राजा च तं तथाभूतमवेक्ष्य प्रोवाच कुतः खिन्न इति निशम्य सोप्याहाऽहो देवैतत्पुरीपरिसरे तु मया सर्वनृपलक्षणधरो नरो दीनः कश्चित्काष्ठवाही दृष्टस्त्वं च कुलक्षणो राजा दृष्ट इत्यस्मि विषण्णः शास्त्रादास्थामपसारयन् ॥ ३१ ॥

तदुक्तमित्याकर्ण्योवाच विक्रमः सर्वशास्त्रविचक्षणो हे सामुद्रिकाजीविन् शास्त्रेषु सर्वेष्वेव सामान्यविशेषभावो विवेकविचारसाध्यः स नैवाऽदर्शि त्वया शृणवत्र कारणं पद्मलक्षणप्रेक्षणेन ममाऽपि परिचितः स काष्ठवाही किंतु तत्काकुदे काकपदं वर्त्तते तेनैव शुभलक्षणानि न फलन्ति तस्य काष्ठवाहिन इति वचनं त्वयापि स्वशास्त्रे द्रष्टव्यं मम चाऽपसव्यपार्श्वे कर्बुरमन्त्रजालं महाशुभलक्षणमस्ति तेनैवेतराण्यशुभान्याक्रम्य नरेन्द्रतामहं प्रापित इ-

---

उज्जैण में गया ॥ ३० ॥ और समय पाकर वह दानाध्यक्ष के द्वारा राजसभा में पहुँचा वहां जाकर विक्रमादित्य के भी कुलक्षण देखकर दुःखी हुआ और राजा उसको इसप्रकार दुःखी देखकर बोला क्यों दुःखी हुए हो यह सुनकर उसने कहा महाराज मैंने इस नगरी के प्रान्त में तो सम्पूर्ण राजा के लक्षणों को धारण करनेवाले किसी गरीब लकडियें बेच खानेवाले मनुष्य को देखा है और आप जो कुलक्षणी हो तिनको राजा देखा इसकारण मैं सामुद्रिक शास्त्र से श्रद्धा को दूर कर दुःखी हूँ ॥ ३१ ॥ उसका कहना सुनकर सम्पूर्ण शास्त्रों को जाननेवाले विक्रमादित्य ने कहा हे सामुद्रिक शास्त्र की जिविका करनेवाले सब ही शास्त्रों में सामान्य विशेष भाव यथार्थ ज्ञान पूर्वक विचार करने से जानाजाता है सो तुमने नहीं देखा सुनो इसका कारण पद्म के लक्षणों को देखने से. उस लकड़ियें ढोनेवाले को मैं भी जानता हूं किन्तु उसके तालवे पर काकपद चिन्ह है उसीसे उस लकड़ियां ढोनेवाले के शुभलक्षण नहीं फलते हैं ऐसा बचन तुम भी अपने शास्त्र (सामुद्रिक) में देखना और मेरे दाहिने पसवाड़े में कर्बुर मन्त्रजाल नामक बड़ा ही शुभलक्षण है उसीने सब अशुभ लक्षणों को दबाय मुझे राजापन

मीतिशब्दो भवत्यहं च बिभेमि देव एवात्र प्रमाणमित्याकर्ण्य रा-
ज्ञोचे बिभेषि चेत्तल्लग्नं स्वापतेयं त्वं तु मत्कोशाद्गृहाण स्थानं च तद-
स्माकमुत्सृजेति श्रुत्वा स प्रसन्नस्तल्लग्नं वसु गृहीत्वा प्रासादं राज्ञो
ददौ राजा च दिने कृताहतिप्रमुखपुण्यः सर्वैर्निषिध्यमानः स्वशौ-
र्यबलेन तत्प्रासादे प्रविश्य रात्रौ शेते स्म तथैव तत्र ध्वनिरुद्भव-
न्हो पतामीति श्रुत्वा राजाऽऽह शीघ्रमभयेन पत मा विलम्बं कु-
र्वित्युक्तमात्रेणैवाऽक्षयः स्वर्णपुरुषः पपाताऽहो ईदृक्सत्वो विक्रमः

एकदा विक्रमः पराजितैर्दिल्लीपुरप्रान्ताऽधिराजैस्तोमरोपटाङ्किभिः
पाण्डववंशीयक्षत्रियैरालुलोचे तद्यथाऽहो विक्रमेणाऽसकृत्परा-
जिता वयं कमुपायमाश्रयेमेति तज्जयविचारवत्सु सत्सु तेष्वेकेन
वणिक्पुत्रेण जगदे विक्रमनगर्यामुज्जयिन्यां यत्किंचिद्विक्रेतुं लो-
का गच्छन्ति तदेव प्रायस्तत्रत्या गृह्णन्ति यदवशिष्टं स्यात्तत्सायं
प्रामारराजा गृह्णात्यन्यथा न कोपि धनीति नगरकलङ्कं मन्यमाना

पुत्र तो न जाने क्या पड़े इस डर से कुछ भी नहीं बोला और तीन दिन
रात ऐसे ही बिताकर सभा में जाकर राजा से बोला कि मैंने नया मकान ब-
नवाया है तिस में "पड़ता हूं" यह शब्द होता है और मैं डरता हूं अब इस
विषय में महाराज ही साक्षीभूत हैं यह सुनकर राजा ने कहा यदि तू डरता
है तो उस मकान में जो धन लगा है वह तो मेरे भण्डार से ले ले और व-
ह मकान हमको दे दे यह सुनकर वह प्रसन्न हुआ और उसकी लागत का
धन लेकर हवेली राजा को दे दी और राजा तो दिन में दान देना आदि
पुण्य कर्म करके सब लोगों से मना कियागया तोभी अपने पराक्रम के बल
से उस हवेली में घुसकर रात्रि के समय सोता था कि उसी समय में व-
हां पर शब्द हुआ हे पड़ता हूँ यह सुनकर राजा ने कहा निडर होके शीघ्र
पड़ो. इतना सुनते ही अक्षय सुवर्ण पुरुष (जो कभी कम न हो ऐसा सोने
का पुतला) पड़ा. कैसा पराक्रमी विक्रमादित्य है ॥ ३४ ॥ एक समय वि-
क्रमादित्य से हारे हुए दिल्ली प्रान्त के राजा, तोमर पदवी को धारण करने
वाले पाण्डव वंश के क्षत्रियों ने विचार किया कि अरे विक्रमादित्य से
निरन्तर हारे हुए हम लोग क्या उपाय करैं इसप्रकार विक्रमादित्य के वि-
जय का विचार कररहे थे कि उन्हींमें से एक बनिये के बेटे ने कहा कि वि-
क्रमादित्य की नगरी उज्जैण में लोग जो कोई वस्तु बेचने को लेजाते हैं

मीतिशब्दो भवत्यहं च बिभेमि देव एवात्र प्रमाणमित्याकर्ण्य राज्ञोचे बिभेषि चेतल्लग्नं स्वापतेयं त्वं तु मत्कोशाद्गृहाण स्थानं च तदस्माकमुत्सृजेति श्रुत्वा स प्रसन्नस्तल्लग्नं वसु गृहीत्वा प्रासादं राज्ञो ददौ राजा च दिने कृतांहतिप्रमुखपुण्यः सर्वैर्निषिध्यमानः स्वशौर्यबलेन तत्प्रासादे प्रविश्य रात्रौ शेते स्म तथैव तत्र ध्वनिरुद्भवन्नो पतामीति श्रुत्वा राजाऽऽह शीघ्रमभयेन पत मा विलम्बं कुर्वित्युक्तमात्रेणैवाऽक्षयः स्वर्णपुरुषः पपाताऽहो ईदृक्सत्वो विक्रमः

एकदा विक्रमः पराजितैर्दिल्लीपुरप्रान्ताऽधिराजैस्तोमरोपटाङ्किभिः पाण्डववंशीयक्षत्रियैरालुलोचे तद्यथाऽहो विक्रमेणाऽसकृत्पराजिता वयं कमुपायमाश्रयेमेति तज्जयविचारवत्सु सत्सु तेष्वेकेन वणिक्पुत्रेण जगदे विक्रमनगर्यामुज्जयिन्यां यत्किंचिद्विक्रेतुं लोका गच्छन्ति तदेव प्रायस्तत्रत्या गृह्णन्ति यदद्यवशिष्टं स्यात्तत्सार्वं प्रामारराजा गृह्णात्यन्यथा न कोपि धनीति नगरकलङ्कं मन्यमाना

पुत्र तो न जाने क्या पड़े इस डर से कुछ भी नहीं बोला और तीन दिन रात ऐसे ही बिता कर सभा में जाकर राजा से बोला कि मैंने नया मकान बनवाया है तिस में "पड़ता हूं" यह शब्द होता है और मैं डरता हूं अब इस विषय में महाराज ही साक्षीभूत हैं यह सुनकर राजा ने कहा यदि तू डरता है तो उस मकान में जो धन लगा है वह तो मेरे भण्डार से ले ले और वह मकान हमको दे दे यह सुनकर वह प्रसन्न हुआ और उसकी लागत का धन लेकर हवेली राजा को दे दी और राजा तो दिन में दान देना आदि पुण्य कर्म करके सब लोगों से मना कियागया तोभी अपने पराक्रम के बल से उस हवेली में घुसकर रात्रि के समय सोता था कि उसी समय में वहां पर शब्द हुआ कि पड़ता हूँ यह सुनकर राजा ने कहा निडर होके शीघ्र पड़ो. इतना सुनते ही अक्षय सुवर्ण पुरुष (जो कभी कम न हो ऐसा सोने का पुतला) पड़ा. कैसा पराक्रमी विक्रमादित्य है ॥ ३४ ॥ एक समय विक्रमादित्य से हारे हुए दिल्ली प्रान्त के राजा, तोमर पदवी को धारण करने वाले पाण्डव वंश के क्षत्रियों ने विचार किया कि अरे विक्रमादित्य से निरन्तर हारे हुए हम लोग क्या उपाय करैं इसप्रकार विक्रमादित्य के विजय का विचार कररहे थे कि उन्हींमें से एक बनिये के बेटे ने कहा कि विक्रमादित्य की नगरी उज्जैन में लोग जो कोई वस्तु बेचने को लेजाते हैं

तत्र गत्वा स वणिक् चतुष्पथे स्थितो ब्रूते स्म दारिद्र्यमिदं साक्षाद्विक्रेतुमानीतमस्य मूल्यं दीनारसहस्र१०००मित्याकर्ण्य न कोपि तदुपादत्ते स्म, तदा सायं राजद्वारे गत्वा विज्ञापयामास मया दारिद्र्यमिदं विक्रेतुमानीतं तन्न कोपि गृह्णाति स्मेत्यहो निर्धनतोज्जयिन्या निश्चिता मयाऽतो व्रजामीति श्रुत्वा राज्ञैवोचे दारिद्र्यमपि क्रेतव्यं कोशे च स्थापनीयमित्याज्ञां मूर्ध्न्याऽधाय कोशाऽधिकारिभिर्दीनारसहस्रेण१०००सा दारिद्र्यमूर्त्तिः क्रीता स्थापिता च राजकोशे

दारिद्र्ये क्रीते रात्रौ सुप्ते च विक्रमे सप्ताङ्ग७राज्यलक्ष्मीः स्वप्ने राजानमाह हे विक्रमराज विहाय त्वामन्यतो गच्छामीत्याकर्ण्य राजाऽऽह कुतो गच्छसि सा पुनराऽऽह यत्र दारिद्र्यं तत्र न वसामि तच्छ्रुत्वा पुनराह राजा स्वीकृतं त्वहं न त्यजामि तवेच्छा गन्तुमेव चेद्गच्छ तर्हीति निशम्य लक्ष्मीस्तु गता क्षणान्तरे विवेक आगत्याह राजन् यत्र दारिद्र्यं तत्राऽहमपि न वसामि लक्ष्मीरिव गच्छामीत्यपि श्रुत्वा राज्ञोचे यदि तवापि जिगमिषा गच्छ तर्हीति श्रुत्वा

में खड़ा होकर बोलता था कि इस साक्षात् दारिद्र्य को बेचने को लाया हूं इसका मोल एक हजार मुहर है यह सुनकर किसीने भी उसको न ली तब सायंकाल में राजद्वार पर जाकर जनाया कि मैं इस दारिद्र्य को बेचने को लाया जिसको किसीने नहीं लिया इस कारण उज्जीण की दरिद्रता मैंने निश्चय जानी इसकारण जाता हूं यह सुनकर राजा ने ही कहा कि दारिद्र्य को भी मोल ले लो और भण्डार में रख दो.इस आज्ञा को शिर पर रखकर खजानचियों ने उस दारिद्र्य रूप लोहे की मूर्त्ति को एक हजार मुहरों में मोल लेकर राजभण्डार में धर दी ॥ ३७॥ दारिद्र्य मोल लेने पर रात्रि के समय सोतेहुए विक्रमादित्य के सातों अङ्गवाले राज्य की लक्ष्मी ने सुपने में राजा से कहा कि हे विक्रमराज तुझ को छोड़कर और जगह जाती हूं यह सुनकर राजा ने कहा कहां जाती है तब उसने कहा जहां पर दारिद्र्य है तहां पर मैं नहीं रहती यह सुनकर फिर राजा ने कहा जिसका मैंने अङ्गीकार करलिया है उसको नहीं छोडता तेरी जाने की ही इच्छा है तो चली जा यह सुनकर लक्ष्मी तो गई और क्षणभर में विवेक ने आकरकहा हे राजा जहां पर दारिद्र्य है वहां पर मैं भी नहीं रहता लक्ष्मी के समान जाता हूं यह भी सुनकर राजा ने कहा यदि तेरी भी जाने की इच्छा है तो

तत्र गत्वा स वणिक् चतुष्पथे स्थितो ब्रूते स्म दारिद्र्यमिदं साक्षाद्विक्रेतुमानीतमस्य मूल्यं दीनारसहस्र१०००मित्याकर्ण्य न कोपि तदुपादत्ते स्म, तदा सायं राजद्वारे गत्वा विज्ञापयामास मया दारिद्र्यमिदं विक्रेतुमानीतं तन्न कोपि गृह्णाति स्मेत्यहो निर्धनतोज्जयिन्या निश्चिता मयाऽतो व्रजामीति श्रुत्वा राज्ञैवोचे दारिद्र्यमपि क्रेतव्यं कोशे च स्थापनीयमित्याज्ञां मूर्ध्न्याऽधाय कोशाऽधिकारिभिर्दीनारसहस्रेण१०००सा दारिद्र्यसूर्मिः क्रीता स्थापिता च राजकोशे

दारिद्र्ये क्रीते रात्रौ सुप्ते च विक्रमे सप्ताङ्ग७राज्यलक्ष्मीः स्वप्ने राजानमाह हे विक्रमराज विहाय त्वामन्यतो गच्छामीत्याकर्ण्य राजाऽऽह कुतो गच्छसि सा पुनराऽऽह यत्र दारिद्र्यं तत्र न वसामि तच्छ्रुत्वा पुनराह राजा स्वीकृतं त्वहं न त्यजामि तवेच्छा गन्तुमेव चेद्गच्छ तर्हीति निशम्य लक्ष्मीस्तु गता क्षणान्तरे विवेक आगत्याह राजन् यत्र दारिद्र्यं तत्राऽहमपि न वसामि लक्ष्मीरिव गच्छामीत्यपि श्रुत्वा राज्ञोचे यदि तवापि जिगमिषा गच्छ तर्हीति श्रुत्वा

में खड़ा होकर बोलता था कि इस साक्षात् दारिद्र्य को बेचने को लाया हूं इसका मोल एक हजार मुहर है यह सुनकर किसीने भी उसको न ली तब सायंकाल में राजद्वार पर जाकर जनाया कि मैं इस दारिद्र्य को बेचने को लाया जिसको किसीने नहीं लिया इस कारण उज्जैण की दरिद्रता मैंने निश्चय जानी इसकारण जाता हूं यह सुनकर राजा ने ही कहा कि दारिद्र्य को भी मोल ले लो और भण्डार में रख दो. इस आज्ञा को शिर पर रखकर खजानचियों ने उस दारिद्र्य रूप लोहे की मूर्त्ति को एक हजार मुहरों में मोल लेकर राजभण्डार में धर दी ॥ २७॥ दारिद्र्य मोल लेने पर रात्रि के समय सोतेहुए विक्रमादित्य के सातों अङ्गवाले राज्य की लक्ष्मी ने सुपने में राजा से कहा कि हे विक्रमराज तुझ को छोडकर और जगह जाती हूं यह सुनकर राजा ने कहा कहां जाती है तब उसने कहा जहां पर दारिद्र्य है तहां पर मैं नहीं रहती यह सुनकर फिर राजा ने कहा जिसका मैंने अङ्गीकार करलिया है उसको नहीं छोडता तेरी जाने की ही इच्छा है तो चली जा यह सुनकर लक्ष्मी तो गई और क्षणभर में विवेक ने आकरकहा हे राजा जहां पर दारिद्र्य है वहां पर मैं भी नहीं रहता लक्ष्मी के समान जाता हूं यह भी सुनकर राजा ने कहा यदि तेरी भी जाने की इच्छा है तो

तिष्ठ सुखं मदावसथे नृपोक्तामिति निशम्य पुनस्तेनोचे नरेन्द्र! सत्वर मां प्राणैर्योजय तवैव राज्ये क्वापि स्थास्येऽतो हेतोर्मा भूत्ते प्रतिज्ञाभङ्गोऽपीति श्रुत्वा विक्रमेण तां मूर्त्तिं शकटे निधाय राजपुरुषैः सह प्रेषितवानुक्तवांश्च यत्र लक्ष्मीविवेकसत्त्वादयो न भवेयुस्तत्र स्थापयत दारिद्र्यमस्मद्राज्य एवमित्याकर्ण्य पूतस्थिरे राजपुरुषैः परीक्षां कुर्वद्भिः ॥ ४१ ॥

ते विक्रमप्रेषितपुरुषा यत्र यत्रत्यान् वदेयुः किं किं याचध्वे तत्र तत्रत्या एव स्वस्वनिर्वाहोपकाराधिकं किमपि नाऽयाचन्त केचित्परिपूर्णाः स्मः किं याचामह इत्यप्युक्तवन्त एवं दारिद्र्योपयोगिजनान्परिचिन्वत्सु गच्छत्सु तेषु याचध्वमिति वदत्सु जाङ्गलदेशान्तर्गतपुङ्गलोपनाम्नि देशविशेषे कयाचिच्छूद्रयाऽनुनयार्थे यद्येकक्रोशामितदीर्घाऽऽयतपृथिव्यां यावद्धनं मायात्तावन्मह्यं दातुं समर्थाः स्थ तर्हि त्वहं याचे युष्मानिति निशम्य तत्रैव दारिद्र्योपयोगिस्थानं

इस हेतु जहां पर सुख से रहूं तहां पर मुझे निकालो यह सुनकर राजा ने कहा हे भाई दारिद्र्य! मैंने अपनी प्रतिज्ञा टूटने के डर से तुझे अङ्गीकार किया है तुझे कहीं भी नहीं भेजूंगा सुख से मेरे घर में रह यह राजा का कहना सुनकर फिर दारिद्र्य बोला महाराज! शीघ्र मेरे प्राण बचाओ आप ही के राज्य में कहीं रहूंगा इस हेतु आप की प्रतिज्ञा का भंग भी न होगा यह सुनकर राजा ने उस लोहे की मूर्ति को गाड़े में रखकर राजा के मनुष्य उसकी साथ देकर भेजी और कहा जहां पर लक्ष्मी, विवेक और सत्त्व आदि न हों वहां पर मेरे ही राज्य में इस दारिद्र्य को रखना यह सुनकर वैसे ही परीक्षा करते हुए वे राज मनुष्य गये ॥ ४१ ॥ वे राजा के भेजेहुए पुरुष जहां जहां के रहनेवालों से बोले कि क्या क्या चाहते हो वहां वहां के रहनेवालों ने अपने अपने निर्वाह की सामग्री से कुछ भी अधिक नहीं मांगा कितनेक ने ऐसा भी कहा कि हम तो सब तरह से परिपूर्ण हैं क्या मांगैं इस प्रकार दारिद्र्य के उपयोगी जनों को पहचानते हुए मांगो ऐसा कहते हुए चलनेवालों के दूर चले जाने पर जाङ्गल देश के बीच पुंगलोपनामक देशविशेष में किसी शूद्र जाति की स्त्री ने कहा कि यदि एक कोश बगीतमक (एक कोश लम्बी और उतनी ही चौड़ी) पृथ्वी में जितना धन मावै उतना धन देने की शक्ति होवै तो तुम लोगों से मांगूं ऐसा सुनकर वहां

तिष्ठ सुखं मदावसथे नृपोक्तामिति निशम्य पुनस्तेनोचे नरेन्द्र! सत्वर मां प्राणैर्योजय तवैव राज्ये क्वापि स्थास्येऽतो हेतोर्मा भूत्ते प्रतिज्ञाभङ्गोऽपीति श्रुत्वा विक्रमेण तां मूर्तिं शकटे निधाय राजपुरुषैः सह प्रेषितवानुक्तवांश्च यत्र लक्ष्मीविवेकसत्त्वादयो न भवेयुस्तत्र स्थापयत दारिद्र्यमस्मद्राज्य एवमित्याकर्ण्य पूतस्थिरे राजपुरुषैः परीक्षां कुर्वद्भिः ॥ ४१ ॥

ते विक्रमप्रेषितपुरुषा यत्र यत्रत्यान् वदेयुः किं किं याचध्वे तत्र तत्रत्या एव स्वस्वनिर्वाहोपकाराधिकं किमपि नाऽयाचन्त केचित्परिपूर्णाः स्मः किं याचामह इत्यप्युक्तवन्त एवं दारिद्र्योपयोगिजनान्परिचिन्वत्सु गच्छत्सु तेषु याचध्वमिति वदत्सु जाङ्गलदेशान्तर्गतपुङ्गलोपनाम्नि देशविशेषे कयाचिच्छूद्रयाऽनुनयार्थे यद्येकक्रोशमितदीर्घाऽऽयतपृथिव्यां यावद्धनं मायात्तावन्मह्यं दातुं समर्थाः स्थ तर्हि त्वहं याचे युष्मानिति निशम्य तत्रैव दारिद्र्योपयोगिस्थानं

इस हेतु जहां पर सुख से रहूं तहां पर मुझे निकालो यह सुनकर राजा कहा है भाई दारिद्र्य! मैंने अपनी प्रतिज्ञा टूटने के डर से तुझे अङ्गीकार किया है तुझे कहीं भी नहीं भेजूंगा सुख से मेरे घर में रह यह राजा का कहना सुनकर फिर दारिद्र्य बोला महाराज! शीघ्र मेरे प्राण बचाओ आप ही के राज्य में कहीं रहूंगा इस हेतु आप की प्रतिज्ञा का भंग भी न होगा यह सुनकर राजा ने उस लोह की मूर्ति को गाड़ में रखकर राजा के मनुष्य उसकी साथ देकर भेजी और कहा जहां पर लक्ष्मी, विवेक और सत्त्व आदि न हों वहां पर मेरे ही राज्य में इस दारिद्र्य को रखना यह सुनकर वैसे ही परीक्षा करते हुए वे राज मनुष्य गये ॥ ४१ ॥ वे राजा के भेजे हुए पुरुष जहां जहां के रहनेवालों से बोले कि क्या क्या चाहते हो वहां वहां के रहनेवालों ने अपने अपने निर्वाह की सामग्री से कुछ भी अधिक नहीं मांगा कितनोंक ने ऐसा भी कहा कि हम तो सब तरह से परिपूर्ण हैं क्या मांगें इस प्रकार दारिद्र्य के उपयोगी जनों को पहचानते हुए मांगो ऐसा कहते हुए चलनेवालों के दूर चले जाने पर जाङ्गल देश के बीच पुंगलोपनामक देशविशेष में किसी शूद्र जाति की स्त्री ने कहा कि यदि एक कोश मार्गात्मक (एक कोश लम्बी और उतनी ही चौड़ी) पृथ्वी में जितना धन मावै उतना धन देने की शक्ति होवे तो तुम लोगों से मांगूं ऐसा सुनकर वहीं

हेतोरहमपि तत्र यास्यामि किं त्वियं मम पत्नी स्वस्थाने भवता प-
रोपकारविधिना रक्षणीया यावदहमागच्छामीत्युक्त्वा तां त्यक्त्वा
ऽयोम्नि प्रस्थितो नेत्रागोचरतामितः सर्वैरदर्शि तदनन्तरमेव सपा-
र्षदेन राज्ञा गगने रोदनं श्रुतं क्षणमन्तरात्तस्य छिन्नं भुजयुगं प-
पात द्वितीयक्षणे चरणद्वयं पुनः शिरस्ततो मध्यभाग एवं समग्रं
वर्ष्म पतितं. दृष्ट्वा तत्स्त्री प्राह राजंस्त्वं मे भ्राताऽसि तथा कुरु य-
थाहमग्नौ प्रविशामीति वदन्ती सा राज्ञा निवारितापि सर्वसमक्षं
भर्तृदेहखण्डैः सार्धमग्नौ विवेश. राजा च शोकसमाकुलो यावत्श्म-
शानादायाति तावत्स पुमान्प्रत्यायातः प्राह च राजंस्तव प्रसादेने-
न्द्रादीनां जयः संपन्नस्तैश्च बहु मानितोहमायातोऽस्मि ततः प्रसा-
दं कुरु देहि मे पत्नीमित्याकर्ण्य राजा सपरिकरो विषादविवशो
बभूव तेन तु पुनरुक्तं राजन्मम पत्नी त्वदवरोधने वर्तते कुरु त्वमा-
ज्ञां यथाहं गत्वा तामानयामि सविस्मयेन राज्ञोक्तमानयेति श्रुत्वा

का सेवक इहां पर रहता हूं जब काम होता है तब स्वर्ग
जाता हूं सो आज देवताओं के साथ दैत्यों का संग्राम रचा है,
इसी कारण मैं भी वहां पर जाऊंगा किन्तु मैं जब तक पीछा आऊं तब
तक इस मेरी स्त्री को आप अपने स्थान में परोपकार विधि से रक्षा करो
यह कह कर उस स्त्री को वहीं पर छोड़ कर आकाश में चला और सब के
देखते दृष्टि के बाहर हुआ तिस पीछे ही सभा सहित राजा ने आकाश
में रोदन सुना और क्षण भर में उस के कटे हुए दोनों हाथ पड़े दूसरे क्षण
में दोनों पग पड़े फिर शिर तिस पीछे बीच का धड़ इस रीति सम्पूर्ण श-
रीर आ पड़ा जिस को देखकर उस की स्त्री ने कहा महाराज! आप मेरे भा-
ई हैं, सो जैसे मैं अग्नि में प्रवेश होजाऊं वैसा करें. यह कहतीहुई वह स्त्री
राजा के मना करने पर भी सब के सामने पति के शरीर के टुकड़ों के सा-
थ अग्नि में प्रवेश करगई. और शोक से घबराया हुआ राजा जबतक श्म-
शान से पीछा आया तब तक वह पुरुष भी पीछा आया और बोला महा-
राज! आप की कृपा से इंद्रादि देवताओं की जीत हुई है और देवताओं से
बहुत ही सन्मान पाकर मैं आया हूं अब आप कृपा कीजिये मेरी स्त्री मुझे
दीजिये यह सुनकर सब समूह के साथ राजा दुःख में पड़ा तब उसने फि-
र कहा कि महाराज ! मेरी स्त्री आपके रनवास में है आप आज्ञा दीजिये

हेतोरहमपि तत्र यास्यामि किं त्वियं मम पत्नी स्वस्थाने भवता परोपकारविधिना रक्षणीया यावदहमागच्छामीत्युक्त्वा तां त्यक्त्वा व्योम्नि प्रस्थितो नेत्रागोचरतामितः सर्वैरदर्शि तदनन्तरमेव सपार्षदेन राज्ञा गगने रोदनं श्रुतं क्षणमन्तरात्तस्य च्छिन्नं भुजयुगं पपात द्वितीयरक्षणे चरणद्वयं२पुनः शिरस्ततो मध्यभाग एवं समग्रं वर्ष्म पतितं. दृष्ट्वा तत्स्त्री प्राह राजंस्त्वं मे भ्राताऽसि तथा कुरु यथाहमग्नौ प्रविशामीति वदन्ती सा राज्ञा निवारितापि सर्वसमक्षं भर्तृदेहखण्डैः सार्धमग्नौ विवेश. राजा च शोकसमाकुलो यावत्श्मशानादायाति तावत्स पुमान्प्रत्यायातःप्राह च राजंस्तव प्रसादेनेन्द्रादीनां जयः संपन्नस्तैश्च बहु मानितोऽहमायातोऽस्मि ततःप्रसादं कुरु देहि मे पत्नीमित्याकर्ण्य राजा सपरिकरो विषादविवशो बभूव तेन तु पुनरुक्तं राजन्मम पत्नी त्वदवरोधने वर्तते कुरु त्वमाज्ञां यथाहं गत्वा तामानयामि सविस्मयेन राज्ञोक्तमानयेति श्रुत्वा

का सेवक इहां पर रहता हूं जब काम होता है तब स्वर्ग जाता हूं सो आज देवताओं के साथ दैत्यों का संग्राम रचा है, इसी कारण मैं भी वहां पर जाऊंगा किन्तु मैं जब तक पीछा आऊं तब तक इस मेरी स्त्री को आप अपने स्थान में परोपकार विधि से रक्षा करो यह कह कर उस स्त्री को वहीं पर छोड़ कर आकाश में चला और सब के देखते दृष्टि के बाहर हुआ तिस पीछे ही सभा सहित राजा ने आकाश में रोदन सुना और क्षण भर में उस के कटे हुए दोनों हाथ पड़े दूसरे क्षण में दोनों पग पड़े फिर शिर तिस पीछे बीच का धड़ इस रीति सम्पूर्ण शरीर आ पड़ा जिस को देखकर उस की स्त्री ने कहा महाराज! आप मेरे भाई हैं, सो जैसे मैं अग्नि में प्रवेश होजाऊं वैसा करें. यह कहतीहुई वह स्त्री राजा के मना करने पर भी सब के सामने पति के शरीर के टुकड़ों के साथ अग्नि में प्रवेश करगई. और शोक से घबराया हुआ राजा जबतक श्मशान से पीछा आया तब तक वह पुरुष भी पीछा आया और बोला महाराज! आप की कृपा से इंद्रादि देवताओं की जीत हुई है और देवताओं से बहुत ही सन्मान पाकर मैं आया हूं अब आप कृपा कीजिये मेरी स्त्री मुझे दीजिये यह सुनकर सब समूह के साथ राजा दुःख में पड़ा तब उसने फिर कहा कि महाराज ! मेरी स्त्री आपके रनवास में है आप आज्ञा दीजिये

द्दोत्रचण्डासिवंशवर्णनाऽन्तर्गतप्रामारराड्विक्रमचरित्रेदुस्थवणिक्पु-
त्रपुरन्दरसूचिताऽवगतवृत्तान्तविक्रमब्रह्मरक्षोमारणातत्पत्नीनिवेदित
षोडश१६वर्णसुवर्णनिपनवक९पुरन्दराऽर्पणापणीकृतस्वप्राणनदी-
पूरनिमज्जन्नृयुग्म २ निष्कासनतद्ढौकितसर्वार्थसम्पादनमूलिका-
याचमानदीनवितरणश्रुतयक्षपञ्चक५तिहासप्रसन्नसिद्धदत्तचिन्ता
रत्नदुर्विधाऽऽयत्तीकरणदुस्स्वप्ननिमित्तस्वकोशस्वापतेयलुण्टका
ऽर्थप्रक्षेपणज्ञातदुर्भिक्षाऽऽगमसिद्धोक्तस्वशिरश्छेदोद्योगप्रसन्नदेव-
वर्षणस्वतुरङ्गस्थापितवातकरकाविह्वलवृद्धशूद्रीप्राणरक्षणवणि-
क्पुत्रीपरीरम्भाच्युतधैर्यनिवारिततच्चर्यमहिषीहीरकहारतन्मनोर-
थपूरणहयारूढवनगतसोढकष्टनृपपङ्कमग्नगोरक्षणकार्पटिकविज्ञा
पितवेतालपुरगतस्वशिरश्छेदोद्यतलब्धदेवीवरविक्रमतन्नृबलिनिवा
रणातच्छास्त्रज्ञसामुद्रिकलक्षणचमत्कारदर्शनवणिक्सोमदत्तविक्री
तसदनशयाननृपस्वर्णपुरुषपातनदारिद्र्यसंज्ञकलोहपुत्तलकस्वी-

चाहुवाण के वंश के वर्णन के बीच पँवार राजा विक्रमादित्य के चरित्र में दुर्गति में पड़ेहुए बनिये के बेटे पुरन्दर के जनाने से समाचारों को जानकर विक्रमादित्य का ब्रह्मराक्षस को मारना, और उसी ब्रह्मराक्षस की स्त्री के दियेहुए सोलहवें सोने(कुन्दन)से भरे नव घड़े पुरन्दर को देना, और अपने प्राणों के पण से नदी के प्रवाह में बहतेहुए स्त्रीपुरुष के जोड़े को निकालना, उस स्त्री पुरुष के जोड़े की दीहुई सब कामों को सिद्ध करनेवाली जड़ी को एक मांगनेवाले को देदेना, पांच यक्षों की कथा सुनकर प्रसन्न हुए सिद्ध के दिये हुए चिन्तामणि रत्न को एक दुर्गति में पड़ेहुए को देदेना, दुःस्वप्न के निमित्त अपने कोश (खजाने) के धनों को लुटाने के अर्थ देदेना, दुर्भिक्ष के आजाने को जानकर सिद्ध के उपदेश से अपने सिर को काटने रूप उद्योग से प्रसन्न होकर मेघ का वर्षना, अपने घोड़े पर चढाकर वायु और ओलों से घबराई हुई एक बुढिया शूद्रजाति की स्त्री के प्राण बचाना, वणिक् पुत्री (बनिये की बेटी) के आलिङ्गन से भी अचल धैर्य रहकर उसकी करणी को छिपाय पटराणी का हीरों का हार देकर उसका मनोरथ पूर्ण करना, घोड़े पर चढेहुए बन में दुःख सहकर कीचड़ में फंसीहुई गौ की रक्षा करना, कावड़ियों के जनाने से बेतालपुर में जाकर अपना शिर काटने को तैयार होने पर देवी के बरदान से विक्रमादित्य का देवी से नरबलि (मनुष्य का बलिदान) छुडाना, सामुद्रिक शास्त्र के जाननेवाले को सामुद्रिक शास्त्र का

हौत्रचण्डासिवंशवर्णनाऽन्तर्गतप्रामारराड्विक्रमचरित्रेदुस्थवणिक्पु-
त्रपुरन्दरसूचिताऽवगतवृत्तान्तविक्रमब्रह्मरत्नोमारणातत्पत्नीनिवेदित
षोडश१६वर्णसुवर्णनिपनवक९पुरन्दराऽर्पणापणीकृतस्वप्राणनदी-
पूरनिमज्जन्नृयुग्म २ निष्कासनतल्लौकिकतसर्वार्थसम्पादनमूलिका-
याचमानदीनवितरणाश्रुतयक्षपञ्चक५तिहासप्रसन्नसिद्धदत्तचिन्ता
रत्नदुर्विधाऽऽयत्तीकरणादुस्स्वप्ननिमित्तस्वकोशस्वापतेयलुण्टका
ऽर्थप्रक्षेपणाज्ज्ञातदुर्भिक्षाऽऽगमसिद्धोक्तस्वशिरश्छेदोद्योगप्रसन्नदेव-
वर्षणास्वतुरङ्गस्थापितवातकरकाविह्वलवृद्धशूद्रीप्राणरक्षणावणि-
क्पुत्रीपरीरम्भाच्युतधैर्यनिवारिततच्चर्यमहिषीहीरकहारतन्मनोर-
थपूरणहयारूढवनगतसोढकष्टनृपपङ्कमग्नगोरक्षणाकार्पटिकविज्ञा
पितवेतालपुरगतस्वशिरश्छेदोद्यतलब्धदेवीवराविक्रमतन्नृबलिनिवा
रणातच्छास्त्रज्ञसामुद्रिकलक्षणाचमत्कारदर्शनवणिक्सोमदत्तविक्री
तसदनशयाननृपस्वर्णपुरुषपातनदारिद्र्यसंज्ञकलोहपुत्तलकस्वी-

चाहुवाण के वंश के वर्णन के बीच पँवार राजा विक्रमादित्य के चरित्र में दुर्गति में पड़ेहुए बनिये के बेटे पुरन्दर के जनाने से समाचारों को जानकर विक्रमादित्य का ब्रह्मराक्षस को मारना, और उसी ब्रह्मराक्षस की स्त्री के दियेहुए सौलहवें सोने(कुन्दन)से भरे नव घड़े पुरन्दर को देना, और अपने प्राणों के पण से नदी के प्रवाह में वहतेहुए स्त्रीपुरुष के जोड़े को निकालना, उस स्त्री पुरुष के जोड़े की दीहुई सब कामों को सिद्ध करनेवाली जड़ी को एक मांगनेवाले को देदेना, पांच यक्षों की कथा सुनकर प्रसन्न हुए सिद्ध के दिये हुए चिन्तामणि रत्न को एक दुर्गति में पड़ेहुए को देदेना, दुःस्वप्न के निमित्त अपने कोश (खजाने) के धनों को लुटाने के अर्थ देदेना, दुर्भिक्ष के आजाने को जानकर सिद्ध के उपदेश से अपने सिर को काटने रूप उद्योग से प्रसन्न होकर मेघ का वर्षना, अपने घोड़े पर चढाकर वायु और ओलों से घबराई हुई एक बुढिया शूद्रजाति की स्त्री के प्राण बचाना, वणिक्पुत्री (बनिये की बेटी) के आलिङ्गन से भी अचल धैर्य रहकर उसकी करणी को छिपाय पटराणी का हीरों का हार देकर उसका मनोरथ पूर्ण करना, घोड़े पर चढेहुए वन में दुःख सहकर कीचड़ में फंसीहुई गौ की रक्षा करना, कावड़ियों के जनाने से बेतालपुर में जाकर अपना शिर काटने को तैयार होने पर देवी के बरदान से विक्रमादित्य का देवी से नरवलि (मनुष्य का बलिदान) छुडाना, सामुद्रिक शास्त्र के जाननेवाले को सामुद्रिक शास्त्र का

मग्गणाँ[1] वित्तदमरणाँ[2] मरणा सरणाँद[3] सरणागत ॥
सुणि सेवक मृतसुपहुँ[4] गेदी[5] गदसमणा[6] जाणि गत ॥
कृषिकार मुँदिर[7] निष्फल कढत माता जिम सुत लखि मुवो ॥
पड़ताँ नरेस विक्रम पुँहवि[8] हाहा जग रोवतहुवो ॥ ३ ॥
॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

इत चालुक महाराजकेर सुत खट ६ सोरूँपुर ॥
बडो राज १ बलि बीज २ उभय २ प्रकटे धारक धुर ॥
पुनि इनके सांपत्न[9] भ्रात[10] कर्ण १ रु भीमा२दिक ॥
राज १ बीज २ सन रारि पारि हुव चउ ४ हि प्रमादिक ॥
दीने निकासि अग्रज[11] उभय २ तिन तब धर्महि तक्कयो ॥
द्वारका गये परसन दुव २ हि देस सकल अनुजनँ[12] दयो ॥४॥

॥ दोहा ॥

परसि द्वारकाधीस प्रभु, मुरे बहुरि प्रतिमग्ग[13] ॥
अनिहल्लपुरपट्टनि उभय २, आये अटतँ[14] उदग्गँ[15] ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिन दिवसन गुजरात पुरी अनिहल्लपुरपट्टनि ॥
कुल चापोत्कटँ[16] सूर करैं सासन महीपमनि ॥
जानैं चालुक जुग २ हि सदनँ[17] आनैं आदरसन ॥

पुत्र १ धन देनेवाले के मरने से २ याचक ३ शरण देनेवाले के मरने से शरणागत ४ श्रेष्ठ राजा का मरना सुनकर सेवक ५ वैद्य के मरने से ६ रोगी ७ मेघ के खाली जाने से कृषिकार (करसे) और पुत्र को मरा देखकर माता रोवै तैसे राजा विक्रमादित्य के ८ भूमि पर पड़ने से हाहाकार करके संसार रोया ॥ ३ ॥ ९ पुनि १० माता की सोक से पैदा हुए भाई करण और भीम ने राजा और बीज से कलह करके दोनों ११ बडे भाइयों को निकाल दिये १२ छोटे भाइयों को देश देकर दोनों द्वारका गये ॥४॥ १३ उलटे मार्ग १५ उदग्र १४ फिरते हुए ॥ ५ ॥ १६ चावड़ा वंश के क्षत्रिय अथवा चापोत्कट नामक राज (हुकूमत) शासन करता था १७ अपने घर लाया

मग्गर्णां[1] वित्तदमरणां[2] मरण सरणद[3] सरणागत ॥
सुणि[4] सेवक मृतसुपहुँ[5] गंदी[6] गदसमणी[7] जाणि गत ॥
कृषिकार मुँदिर निष्फल कढत माता जिम सुत लखि मुवो ॥
पड़ताँ[8] नरेस विक्रम पुँहवि हाहा जग रोवतहुवो ॥ ३ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

इत चालुक महाराजकेर सुत खट ६ सोरूँपुर ॥
बडो राज १ बलि बीज २ उभय २ प्रकटे धारक धुर ॥
पुनि[9] इनके सापत्न[10] भ्रात कर्ण १ रु भीमा२दिक ॥
राज १ बीज २ सन रारि पारि हुव चउ ४ हि प्रमादिक ॥
दीने निकासि अग्रज[11] उभय २ तिन तब धर्महि तक्कयो ॥
द्वारका गये परसन दुव २ हि देस सकल अनुजन[12] दयो ॥४॥

॥ दोहा ॥

परसि द्वारकाधीस प्रभु, मुरे बहुरि प्रतिमग्ग[13] ॥
अनिहलपुरपट्टनि उभय २, आये अटत[14] उदग्ग[15] ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिन दिवसन गुजरात पुरी अनिहलपुरपट्टनि ॥
कुल चापोत्कट[16] सूर करै सासन महीपमनि ॥
जानैं चालुक जुग २ हि सदनँ[17] आनैं आदरसन ॥

पुत्र १ धन देनेवाले के मरने से २ याचक ३ शरण देनेवाले के मरने से शरणागत ४ श्रेष्ठ राजा का मरना सुनकर सेवक ५ वैद्य के मरने से ६ रोगी ७ मेघ के खाली जाने से कृषिकार (करसे) और पुत्र को मरा देख कर माता रोवै तैसे राजा विक्रमादित्य के ८ भूमि पर पड़ने से हाहाकार करके संसार रोया ॥ ३ ॥ ९ पुनि १०माता की सोक से पैदा हुए भाई कर्ण और भीम ने राजा और बीज से कलह करके दोनों ११ बडे भाइयों कों निकाल दिये १२ छोटे भाइयों को देश देकर दोनों द्वारका गये ॥४॥ १३उलटे मार्ग १५ उदग्र १४ फिरते हुए ॥ ५ ॥ १६चावड़ा वंश के क्षत्रिय अथवा चापोत्कट नामक राज (हुकूमत) शासन करता था १७ अपने घर लाया

षट्पात्

बंधूगढ जदुबंस फबै हरराज बिनाफर ॥
जमुना१४१।१ तनया जास सदन आणी बरि संभर ॥
रुद्रदत्त१४१ जिण निरतै पुत्र जणिया कुळदीपक ॥
सात७ जिके रणसूर प्रथम ईस्वर १४२।१ अवनीपक ॥
भैरव१४२।२तदग्ग[३] खयरव३ अभय अभ्रवाज ४ तिम बग्घउर ५
बंलि ब्रध्नदेव ६ सरखेल१४२।७ बुध धारण सब कुळ धर्म धुर ॥१०॥

दोहा

रुद्रदत्त नरराजरा, इम छ६ भेद चहुवाण ॥
जे पचीस२५ गतं भेद जुत, पहुं[६] इकतीस३१ प्रमाण ॥११॥

पादाकुलकम्

भैरव२कुळ अँभिधा[७]करि संभर, सब भैरव१।६।२६ संगर अग्रेसर
खयरव३बंस हुवा गाहण[९] खळ, चाहुवाण खयरव२।६।२७रणनिश्चळ
अभ्रवाज४कुळरा अवनीपति, अभ्रावा३।६।२८चहुवाण बळी अति
इण कुळ हुवो गदाधर१ उद्धत, जादव दळ[१०] दळिया जिण जुंद्धत[११]
इम जे बग्घउरा५कुळ उज्जळ, बाघोरा४।५।२९चहुवाण महाबळ
ब्रध्नदेव६कुळभव ब्रध्नेचा५।६।३०, मोसर[१२] जगत जिकाँ जस मेचाँ[१३]
हुवो प्रथित[१४] इणकुळ नृप मोहण१, जाड़ेचा हणिया जिण जोहण[१५]
सब सरखेल७तणाँ सरखेला६।६।३१, आहव अरिकुळ देण उथेला[१६]
इणकुळ जंभ१हुवो अवतारी, मारव[१७] चमू सहज जिण मारी ॥
रुद्रदत्त१४१तजताँ बपु राणीं, जमुनाँ१४१।१साथगई जगजाणीं॥
ईश्वर१४२।१ हुवो रुमापुर[१८] ईस्वर, दोय२बार परसे जगदीस्वर ॥

१जिस जमुना ने रुद्रदत्त से १ नियुक्त होकर २ राजा ३ उससे आगे ४ पुनि ॥ १० ॥ ५ पहिले गये हुए भेदों सहित ६ हे राजा रामसिंह ! चहुवाणों के इकतीस भेद मानो ॥ ११ ॥ ७ नाम ८ युद्ध में आगे रहनेवाले ९ शत्रुओं का नाश करनेवाले१०यादवों की सेना को मारी११युद्ध करतेहुए ने ॥१३॥ संसार में जिसको यश करनेके१२अवसर(मौके)१३मिले॥१४॥१४प्रसिद्ध १५ योधन (योद्धाओं को) १६ उलटने वाले१७मारवाड़ की सेना को १८ सांभर

षट्पात्

बंधूगढ जदुबंस फबै हरराज विनाफर ॥
जमुना१४१।१ तनया जास सदन आणी वरि संभर ॥
रुद्रदत्त१४१ जिण निरतै पुत्र जणिया कुळदीपक[२] ॥
सात७ जिके रणसूर प्रथम ईस्वर १४२।१ अवनीपक ॥
भैरव१४२।२तदग्गै[३] खयरव३ अभय अभ्रवाज ४ तिम बग्घउर ५
बँलि ब्रध्नदेव ६ सरखेल१४२।७ बुध धारण सब कुळ धर्म धुर ॥१०॥

दोहा

रुद्रदत्त नरराजरा, इम छ६ भेद चहुवाण ॥
जे पचीस२५ गतँ भेद जुत, पहुँ[६] इकतीस३१ प्रमाण ॥११॥

पादाकुलकम्

भैरव२कुळ अँभिधा[७]करि संभर, सब भैरव ११।२६ संगर अग्रेसर
खयरव३बंस हुवा गाहणं खळ,चाहुवाण खयरव२।६।२७रण निश्चळ
अभ्रवाज४कुळरा अवनीपति, अभ्रावा३।६।२८चहुवाण वळी अति
इण कुळ हुवो गदाधर१ उद्धत, जादव दळं[१०] दळिया जिण जुँद्धत[११]
इम जे बग्घउरा५कुळ उज्जळ, बाघोरा४।५।२९चहुवाण महाबळ
ब्रध्नदेव६कुळभव ब्रध्नेचा५।६।३०, मोसरँ[१२] जगत जिकाँ जस मेचाँ[१३]
हुवो प्रँथित[१४] इणकुळ नृप मोहण१,जाड़ेचा हणिया जिण जोहँण[१५]
सब सरखेल७तणाँ सरखेला६।६।३१,आहव अरिकुळ देण उथेलाँ[१६]
इणकुळ जंभ१हुवो अवतारी, मारवँ[१७] चमू सहज जिण मारी ॥
रुद्रदत्त१४१तजताँ बपु राणीँ, जमुनाँ१४१।१साथगई जगजाणीँ॥
ईश्वर१४२।१ हुवो रुमापुरँ[१८] ईस्वर, दोय२बार परसे जगदीस्वर ॥

जिस जमुना ने रुद्रदत्त से १ नियुक्त होकर २ राजा ३ उससे आगे ४ पुनि ॥ १० ॥ ५ पहिले गये हुए भेदों सहित ६ हे राजा रामसिंह ! चहुवाणों के इकतीस भेद मानो ॥ ११ ॥ ७ नाम ८ युद्ध में आगे रहनेवाले ९ शत्रुओं का नाश करनेवाले१०यादवों की सेना को मारी११युद्ध करतेहुए ने ॥१३॥ संसार में जिसको यश करनेके१२अवसर(मौके)१३मिले॥१४॥१४प्रसिद्ध १५ योधन (योद्धाओं को) १६ उलटने वाले१७मारवाड़ की सेना को १८ सांभर

ईस्वररा तीजा३पुत्र बहुलक३रा वंसरा समस्त बहोला२।७।३५ चहुवाण कहाया ॥

अर[1] जिणरा अनुज गजलदेव४रा कुळरा सब चहुवाण गयला ३।७।३६ इसो उपटंक[2] देस मागधलोकाँ गाया ॥

तिणरा अनुज तिलवाट५रा वंसरा तिलवाडिया४।७।३७ चहुवाण जाणिया ॥

अर तिणरा अनुज चीवक६रा चीवा५।७।३८ सर्पट७रा सर्प्पटा६।७।३९ चित्रराज८रा चित्रावा७।७।४० चहुवाण वखाणियां[3]।२४।

इण चित्रराजरै चंडालीक१ चाहड२ वटराज३ मौरिक४ रैवत५ चंदण६ तथा वंकट७ ए सात७पुत्र जाणिया ॥

जिकाँमैं चंडालीकरा चंडालीक१।४१ चाहडरा चाहड२।४२वटराजरा बडेरा३।४३मौरिकरा मोरी४।४४रेवतरा रेवड़५।४५चंदण६रा चंदण६।४६वंकट७रा कुळरा वंकट७।४७ए सात७भेद चित्रावा चहुवाणाँरा मुँणिया ॥

जिकाँमैं मोरेचाँरै अंतरगत पब्बया१चहुवाण कहिया जिण वंसमैं राजा भीम जिसा महापराक्रमी चहुवाण हुवा ॥

अर[6] साँचोरमैं रणधीर१जयमल्ल२त्रिलोचन३जिसा पृथ्वीरा कँवाड़ उपजिया जिकाँ सोमनाथ संकररो लिंग तोड़ि पाछो जावताँ अलबरा पुत्र नासरुद्दीनरा पुत्र गजनवी सुलतान महमूदसुबुक्तगीँरी फोजाँरा तोड़िया हुवाँ ॥२५॥

दोहा

हरी१ बहोळाँमैं हुवो, चाढण जळ चहुवाण ॥
जिण दहिया दहिया जुड़ै, पावकं दाव प्रमाण ॥२६॥
गयलाँमैं गंभीर१नृप, हुवो अनड़ आसिहत्थ ॥
जिण सैंगर जसराजरो, बळ[12] हणियो भरि बत्थ ॥२७॥

---

१ अरु २ बड़वाभाटों ने कहे ३ वर्णन किया ॥ २४ ॥ ४ कहे ५ भीतर ६ अरु ७ समूह ॥ २५ ॥ जिसने युद्ध करके१०वन में लगीहुई अग्नि के समान ९ दहिया वंश के क्षत्रियों को ८ जलाये ॥ २६ ॥११ अनम्र१२सेना को

ईस्वररा तीजा३पुत्र बहुलक३रा बंसरा समस्त बहोला२।७३५ चहुवाण कहाया ॥

अर[1] जिणरा अनुज गजलदेव४रा कुळरा सब चहुवाण गयला ३।७३६ इसो उपटंक देर मागध[2]लोकाँ गाया ॥

तिणरा अनुज तिलवाट५रा वंसरा तिलवाडिया४।७३७ चहुवाण जाणिया ॥

अर तिणरा अनुज चीवक६रा चीवा५।७३८ सर्पट७रा सर्प्पटा६।७३९ चित्रराज८रा चित्रावा७।७४० चहुवाण बखाणियाँ[3]।२४।

इण चित्रराजरै चंडालीक१ चाहड२ वटराज३ मौरिक४ रैवत५ चंदण६ तथा वंकट७ ए सात७पुत्र जाणिया ॥

जिकाँमैं चंडालीकरा चंडालीक१।४१ चाहडरा चाहड२।४२वटराजरा बडेरा३।४३मौरिकरा मोरी४।४४रेवतरा रेवड़५।४५चंदणा६रा चंदण६।४६वंकट७रा कुळरा वंकट७।४७ए सात७भेद चित्रावा चहुवाणाँरा मुँणिया ॥

जिकाँमैं मोरेचाँरै अंतर्गत पब्बया१चहुवाण कहिया जिण वंसमैं राजा भीम जिसा महापराक्रमी चहुवाण हुवा ॥

अर[6] साँचोरमैं रणधीर१जयमल्ल२त्रिलोचन३जिसा पृथ्वीरा कँवाड़ उपजिया जिकाँ सोमनाथ संकररो लिंग तोड़ि पाछो जावताँ अलबरा पुत्र नासरुद्दीनरा पुत्र गजनवी सुलतान महमूदसुबुक्तगीँरी फोजाँरा तोड़िया ढुवाँ ॥२५॥

दोहा

हरी१ बहोळाँमैं हुवो, चाढण जळ चहुवाण ॥
जिण दहिया दहिया जुड़ै, पावक[10] दाव प्रमाण ॥२६॥
गयलाँमैं गंभीर१नृप, हुवो अनड़[11] आसिहत्थ ॥
जिण सैंगर जसराजरो, बळ[12] हणियो भरि बत्थ ॥२७॥

---

१ अरु २ बड़वाभाटों ने कह ३ वर्णन किया ॥ २४ ॥ ४ कहे ५ भीतर ६ अरु ७ समूह ॥ २५ ॥ जिसने युद्ध करके १०वन में लगीहुई अग्नि के समान ९ दहिया वंश के क्षत्रियों को ८ जलाये ॥ २६ ॥ ११ अनम्र १२सेना को

पावचा२।८।४९प्रवाचक३रा प्रकट, भम्मरिया३।८।५०भम्मर३तणाँ

दोहा

अच्छलकुळ वलभद्र१नृप, वल्लू१ प्रवाचक वंस ॥
अडर[1] हुवा नृप ए उभय२, इतर कुळाँ[2] अवतंस[3] ॥३४॥

षट्पात्॥

चतुर१४४हुवो चहुवाण अनइ[4] संगर अगवाणी[5] ॥
जल्लह सुता जद्दोणि[6] रमा१४४।१ आणि जिण राणी ॥
तास थियाँ सुत तीन३ सूर[7] अग्रज सोमेस्वर१४५।१॥
तुलसीरक्खण१४५।२ तेम अनुज सल१४५।३नाम उजागर[8] ॥
तुलसीरक्खणिया १।९।५१ तिके त्रय३माँहिं वंस मज्झिम[9]२ तणाँ तुलसीरक्खणिया १।९।५१ तिके
कुळ सलाउत्त२।६।५२सल३रा कहै जणाजण रणजुज्झणाँ[10]जिके३५

॥ दोहा ॥

तुलसीरक्खण कुळतिलक, हुवो बिदित हम्मीर१॥
उपजियो सलकुळ असह, बीरराज१ नृप बीर ॥ ३६ ॥
चतुर१४४ साथ पूगी चतुर, सती रमा१४४।१ सुरलोक ॥
सोमेस्वर१४५ संभर सुपहु, थि[11]यो दमणाँ[12] अरिथोक ॥३७॥
प्रातिहार बुधपाळरी, सुता प्रमा१४५।१ गुणसुद्ध ॥
सोमेस्वर परणी सुमति, ललित रूप जसलुद्ध[13] ॥ ३८ ॥
तिण सोमेस्वररै तनय, हुवा उभय२ हमगीर[14] ॥
एक१भरत१४६।१दूजो२उरथ१४६।२,निजकुळ चाढण नीर ॥३९॥
एक१भरत१४६।१दूजो२उरथ१४६।२,निजकुळ चाढण नीर ॥३९॥
डिड्डुरकुळ पीथल१ निडर, अधिप भरत१४६।१भव[15] एस ॥
अस्थिपालकुळ उरथ१४६।२भव, धारो श्रवण धरेस[16] ॥४०॥

---

१ निर्भय २ अन्य कुलों के ३ मुकुट ॥ ३४ ॥ ४ अनम्र ५ युद्ध में अग्रणी ६ यादवणी ७ उसके तीन पुत्र हुए ८ अपने नाम को प्रसिद्ध करने वाले ९ मध्यम (तुलसीरक्खण के) १०युद्ध करनेवाले ॥ ३५ ॥ ११हुआ १२ नाश करनेवाला ॥ ३७ ॥ १३जस के लोभी ने ॥३८॥ १४वीर॥३९॥ डिड्डुर के कुल में भरत से तो पृथ्वीराज हुआ और उरथ के कुल में अस्थिपाल १५हुआ सो १६हे भूपति रामसिंह सुनो ॥ ४० ॥

पावचा१।८।४९प्रवाचक१रा मकट, झम्मरिया१।८।५० झम्मर१तणाँ

दोहा

कच्छलकुळ वलभद्र१नृप, वलू१ प्रवाचक वंस ॥
अडर[1] हुवा नृप ए उभय२, इंतर[2] कुळाँ अवतंस[3] ॥३४॥

षट्पात्॥

चतुर१४४हुवो चहुवाण अनई[4] संगर अगवाणी ॥
जल्लह सुता जद्दोणि[6] रमा१४४।१ आणी जिण राणी ॥
तास थियाँ सुत तीन[7] सूर अग्रज सोमेस्वर१४५।१॥
तुलसीरक्खण१४५।२ तेम अनुज सल१४५।३नाम[8] उजागर ॥
तुलसीरक्खणिया १९।५१ तिके त्रय३माँहिं वंस मज्झिम[9]२ तणाँ ॥
कुळ सलाउत्त१।६१।५२सल३रा कहै जण जण रण[10]जुज्झणाँ जिके३५

॥ दोहा ॥

तुलसीरक्खण कुळतिलक, हुवो बिदित हम्मीर[11]॥
ऊपजियो सलकुळ असह[12], बीरराज१ नृप बीर ॥ ३६ ॥
चतुर१४४ साथ पूगी चतुर, सती रमा१४४।१ सुरलोक ॥
सोमेस्वर१४५ संभर सुपहु, थियो दमणों[12] अरिथोक ॥३७॥
प्रातिहार बुधपाळरी, सुता प्रमा१४५।१ गुणसुद्ध ॥
सोमेस्वर परणी सुमति, ललित रूप जसलुद्ध[13] ॥ ३८ ॥
तिण सोमेस्वररै तनय, हुवा उभय२ हमगीर[14] ॥
एक१भरत१४६।१दूजो२उरथ१४६।२,निजकुळ चाढण नीर ॥३९॥
डिड्डुरकुळ पीथल१ निडर, अधिप भरत१४६।१भवँ[15] एस ॥
अस्थिपालकुळ उरथ१४६।२भव, धारो श्रवण धरेस[16] ॥४०॥

---

१ निर्भय २ अन्य कुलों के ३ मुकुट ॥ ३४ ॥ ४ अनम्र ५ युद्ध में अग्रणी ६ यादवणी ७ उसके तीन पुत्र हुए ८ अपने नाम को प्रसिद्ध करने वाले ९ मध्यम (तुलसीरक्खण के) १०युद्ध करनेवाले ॥ ३५ ॥११हुआ १२ नाश करनेवाला ॥ ३७ ॥१३जस के लोभी ने ॥३८॥१४वीर॥३९॥डिड्डुर के कुल में भरत से तो पृथ्वीराज हुआ और उरथ के कुल में अस्थिपाल १५हुआ सो१६हे भूपति रामसिंह सुनो ॥ ४० ॥

ष्ठितद्वारकायात्राप्रत्यागतचालुक्यराज १ वीज २ गुर्जरदेशान्तर्भूताऽणिहल्लपुरराज्यार्द्धप्रापणनिपातितमातुलवंशराजात्मजचालुक्यमूलराजसर्वतज्जनपदराज्यसमाक्रमणतज्जैनमतनिष्ठनास्तिकीभवनचण्डासिराजशिवदत्त १४० धनचन्द्रा १४०।१ रुद्रदत्त१४१।१यमुना १४१।१ परिणयनेश्वर १४२ प्रमुखरौद्रदत्तिसप्तक ७ समुद्भवनतत्षट्क ६ भैरवादिभिन्नचाहुवाणषट्कप्रापणशाकम्भरराडीश्वर १४२ नवनन्दा १४२।१ रुचिरा १४२।२ विवहनतत्पुत्रोमादत्ता १४३ऽऽद्यऽष्टक ८ समुद्भवनमयूरध्वजादिपुत्रसप्त ७ संततिमोरेचादिभिन्नभेदसप्तक ७ समासादनमोरेचाऽन्तर्गतपव्वयोपाख्या १ संचोरोपाख्या १ द्वय २ प्रकटनचित्रावान्तर्भूतचण्डालीकाऽऽदिभेदसप्त ७ प्रवर्तनशाकम्भरेश्वरपट्टपपुत्रोमादत्त १४३ ललितो १४३।१ द्वहनतश्चतुरा १४४ ऽऽदिपुत्रचतुष्कोत्पादनचतुरसोदरवत्सलादित्रिक ३ वंशीयचाहुवाणवात्सलादिभेदत्रय ३ धारणतत्त्रण ३६ ग्रजशाकम्भरराजचतुर १४४ रमा १४४।१ परिणयनतत्पुत्रसोमेश्वरा १४५ ऽऽदित्रयो ३ द्भवनसोमेश्वर १४५ प्रमा १४५।१ परिणयनतदनुजद्वय २

गुजरात देश के भीतर अनिहलपुर का आधा राज्य पाना, मामा के वंश को मार कर राज के पुत्र सोलंखी मूलराज का मामा के देश और राज्य को लेना, और उसका जैनमत में निष्ठा रखकर नास्तिक होना, चहुवाणराज शिवदत्त का धनचन्द्रा से, रुद्रदत्त का यमुना से विवाह करना, ईश्वर को आदि लेकर रुद्रदत्त के सात पुत्रों का जन्म होना, उन में छः भैरव आदि का चहुवाणों में जुदे छः भेद होना, सांभर के राजा ईश्वर का नवनन्दा और रुचि से विवाह करना, उसके उमादत्त आदि आठ पुत्र होना, मयूरध्वज आदि सात पुत्र की सन्तान मोरेचा आदि सात भेद होना, मोरेचों में पव्वय नामक और संचोरा नामक दो भेद प्रकट होना, चित्रावों के भीतर चंडालीक आदि सात भेद प्रवृत्त होना, सांभर के पति ईश्वर के पाटवी पुत्र उमादत्त का ललिता से विवाह करना, उसके चतुर आदि चार पुत्रों का उत्पन्न होना, चतुर के छोटे भाई वत्सल आदि तीनों के वंशवाले चहुवाणों में वत्सल आदि तीन भेद धारण करना, इन तीनों से बड़ा सांभर के राजा चतुर का रमा को परणना, उसके सोमेश्वर आदि तीन पुत्र होना, सोमेश्वर का प्रमा से विवाह करना, उसके दोनों पुत्रों की सन्तान का

ष्ठितद्वारकायात्राप्रत्यागतचालुक्यराज १ वीज २ गुर्जरदेशान्तर्भूता ऽणहिलपुरराज्यार्द्धप्रापणानिपातितमातुलवंशराजात्मजचालुक्यमूलराजसर्वतज्जनपदराज्यसमाक्रमणातज्जैनमतनिष्ठनास्तिकीभवनचण्डासिराजशिवदत्त १४० धनचन्द्रा १४०।१ रुद्रदत्त१४१।१ यमुना १४१।१ परिणायनेश्वर १४२ प्रमुखरौद्रदत्तिसप्तक ७ समुद्भवनतत्षट्क ६ भैरवादिभिन्नचाहुवाणषट्कद्रपापणशाकम्भरराडीश्वर १४२ नवनन्द्रा १४२।१ रुचिरा १४२।२ विवहनतत्पुत्रोमादत्ता १४३ऽऽद्यऽष्टक ८ समुद्भवनमयूरध्वजादिपुत्रसप्त ७ संततिमोरेचादिभिन्नभेदसप्तक ७ समासादनमोरेचाऽन्तर्गतपल्लवयोपाख्या१ संचोरोपाख्या १ द्वय २ प्रकटनचित्रावान्तर्भूतचण्डालीकाऽऽदिभेदसप्त ७ प्रवर्तनशाकम्भरेश्वरपट्टपपुत्रोमादत्त १४३ ललितो १४३।१ द्वहनतःचतुरा १४४ ऽऽदिपुत्रचतुष्कोत्पादनचतुरसोदरवत्सलादित्रिक ३ वंशीयचाहुवाणवात्सलादिभेदत्रय ३ धारणातत्त्रण ३६ अग्रजशाकम्भरराजचतुर १४४ रमा १४४।१ परिणायनतत्पुत्रसोमेश्वरा १४५ ऽऽदित्रयो ३ द्भवनसोमेश्वर १४५ प्रमा १४५।१ परिणायनतदनुजद्वय २

गुजरात देश के भीतर अनिहलपुर का आधा राज्य पाना, मामा के वंश को मार कर राज के पुत्र सोलंखी मूलराज का मामा के देश और राज्य को लेना, और उसका जैनमत में निष्ठा रखकर नास्तिक होना, चहुवाणराज शिवदत्त का धनचन्द्रा से, रुद्रदत्त का यमुना से विवाह करना, ईश्वर को आदि लेकर रुद्रदत्त के सात पुत्रों का जन्म होना, उन में छः भैरव आदि का चहुवाणों में जुदे छः भेद होना, सांभर के राजा ईश्वर का नवनन्दा और रुचि से विवाह करना, उसके उमादत्त आदि आठ पुत्र होना, मयूरध्वज आदि सात पुत्र की सन्तान मोरेचा आदि सात भेद होना, मोरेचों में पल्लवय नामक और संचोरा नामक दो भेद प्रकट होना, चित्रावों के भीतर चंडालीक आदि सात भेद प्रवृत्त होना, सांभर के पति ईश्वर के पाटवी पुत्र उमादत्त का ललिता से विवाह करना, उसके चतुर आदि चार पुत्रों का उत्पन्न होना, चतुर के छोटे भाई वत्सल आदि तीनों के वंशवाले चहुवाणों में वत्सल आदि तीन भेद धारण करना, इन तीनों से बड़ा सांभर के राजा चतुर का रमा को परणना, उसके सोमेश्वर आदि तीन पुत्र होना, सोमेश्वर का प्रमा से विवाह करना, उसके दोनों पुत्रों की सन्तान का

तस राम १७२ बिजयराज १७३ सु *तदीय,
हरिसिंह १७४ तास हुव गुन **गरीय ॥
सुत तास भयो बरसिंह १७५सूर,
गोविंद १७६ तास गुन १ धर्म २ पूर ॥ ८ ॥
गोविंद तनय हुव त्रय३+गहीर, वरन्यौं तह जेठो भीम१७७।१बीर
क्रम तास अनुज मौक्तिक्क १७७।१ कहंत,
मानिक्यराज१७७।३ तीजो ३ महंत ॥ ९ ॥
मौक्तिक २ कुल मोरी १।१।१५४ खग्ग ख्यात,
मानिक्यबंस मानिक २।१।१५५ कहात ॥
अरु जेष्ठ भीम१७७जो हुव उदार,सुत तास धुरंधर१७८रन सिंगार१०
सुत दोय २ धुरंधरकै सुजान, अग्गूज सहस्रमल्ल१७९।१ऽभिधान
जाको लघुसोदर देवराज १७९।२, संगरानिसंक वपु बीरसाज॥११
जेठसन संजमराज १८० जोध,वरबीर भयो अतिबल सुबोध ॥
जब पिथ्थ महुव्वानैर खेत, छकिलोह पर्यो परिकर समेत ॥१२
इक गिद्ध बैठि नृप उत्तमंग, कढ्ढन दृग लग्गो तहँ कुढंग ॥
अंतिक तस संजमराज१८०एह, दो घायन घुम्मत जिहिँ अनेह१
तजि मोह पाय पुनि चेत तत्थ, संजम कछु खोले दृग समत्थ ॥
नृप इच्छनैं तिच्छन त्रोटिमारि, देख्यो सु गिद्ध कढ्ढत बिदारि१
चंचू छतैं पावत कछुक चेत, नृपकैहु प्रकटहुव हिय निकेत ॥
पै न हुव सक्कि हत्थन हलान, डरिजाय गिद्ध जिम लै उडान१

*उसके**गुणों में भारी+गंभीर१खड्ग चलाने में प्रसिद्ध२सहस्रमल्ल नामक
सगा छोटा भाई, शरीर पर वीरों का साज किये हुए४युद्ध में निःशंक५पृ
थ्वीराज चहुवाण ६ परिग्रह सहित ॥ १२ ॥ पृथ्वीराज के ७ मस्तक पर
बैठकर एक गिद्ध पक्षी बुरी भांति राजा के ८ नेत्र काढने लगा जिसके ९
समीप ही उस १० समय संजमराय नामक सामंत दो घाव लगने से घूम
रहा था ॥ १३ ॥ ११ मूर्छा छोडकर, तीखी १२ चंचू मार कर राजा के १३
नेत्रों को काढते हुए उस गिद्ध को देखा ॥ १४ ॥ १४ चंचू का घाव लगाने
से राजा के हृदय रूपी १५ घर में कुछ चेत हुआ १६ परन्तु हाथ हिलाने

तस राम १७२ बिजयराज १७३ सु *तदीय,
हरिसिंह १७४ तास हुव गुन **गरीय ॥
सुत तास भयो बरसिंह १७५सूर,
गोविंद १७६ तास गुन १ धर्म २ पूर ॥ ८ ॥
गोविंद तनय हुव त्रय३+गहीर, वरन्यौं तह जेठो भीम१७७।१वीर
क्रम तास अनुज मौक्तिक १७७।१ कहंत,
मानिक्यराज१७७।३ तीजो ३ महंत ॥ ९ ॥
मौक्तिक २ कुल मोरी १।१।१५४ खग्ग ख्यात,
मानिक्यबंस मानिक २।११।५५ कहात ॥
अरु जेष्ठ भीम१७७जो हुव उदार,सुत तास धुरंधर१७८रन सिंगार१०
सुत दोय २ धुरंधरकै सुजान, अगूज सहस्रमल्ल१७९।१ऽभिधान[२] ॥
जाको लघुसोदर देवराज १७९।२, संगरनिसंक[३] वपु बीरसाज॥११॥
जेठेसन संजमराज १८० जोध,बरबीर भयो अतिबल सुबोध ॥
जब पित्थ महुव्वानैर खेत, छकिलोह पर्यो परिकर[६] समेत ॥१२॥
इक गिद्ध बैठि नृप उत्तसंगँ, कड्ढन दृग लग्गो तँहँ कुढंग ॥
अंतिक तस संजमराज१८०एह, दो घायन घुम्मत जिहिँ अनेह१३
तजि मोहँ[११] पाय पुनि चेत तत्थ, संजम कछु खोले दृग समत्थ ॥
नृप इच्छनँ[१२] तिच्छन[१३] त्रोटिमारि, देख्यो सु गिद्ध कड्ढत बिदारि१४
चंचू छतँ[१४] पावत कछुक चेत, नृपकै हु प्रकटहुव हिय निकेतँ[१५] ॥
पै[१६] न हुव सक्ति हत्थन हलान, डरिजाय गिद्ध जिम लै उडान१५

*उसके**गुणों में भारी+गंभीर१ खड्ग चलाने में प्रसिद्ध२सहस्रमल्ल नामक३ सगा छोटा भाई, शरीर पर वीरों का साज किये हुए४युद्ध में निःशंक५पृथ्वीराज चहुवाण ६ परिग्रह सहित ॥ १२ ॥ पृथ्वीराज के ७ मस्तक पर बैठकर एक गिद्ध पक्षी बुरी भांति राजा के ८ नेत्र काढने लगा जिसके ९ समीप ही उस १० समय संजमराय नामक सामंत दो घाव लगने से घूम रहा था ॥ १३ ॥ ११ मूर्छा छोडकर, तीखी १३ चंचू मार कर राजा के १२ नेत्रों को काढते हुए उस गिद्ध को देखा ॥ १४ ॥ १४ चंचू का घाव लगाने से राजा के हृदय रूपी १५ घर में कुछ चेत हुआ १६ परन्तु हाथ हिलाने

अभिधान लंगरी धारि एम, खलसाल१भयो लहि प्रान खेम२ ॥२४॥
जब किय नरेस कनउज्ज जंग, अप्पिय तव सेस जु अद्ध३अंग ॥
पुर कान्यकुब्ज वीथी १ बजार२, धोरन चलाय रिपुरक्तधार।२५।
बहु सत्रुरमनि कंकन बिदारि, पहुपंगु चित्त आतंक पारि ॥
बैरो दिखाय कहतो सु बैन, संजमसुव सोयो बीरसैन ॥ २६ ॥
सारंग भुप खिच्ची चुहान, बलि बीर२भ्रात तस बलनिधान ॥
बीरम३चुहान चोरंग जत्थ, अजपाल४भूप रट्ठोर तत्थ ॥ २७ ॥
नृप पंगुकेर मंत्री सुमंत्र५, नरसिंह६बहुरि संगर स्वतंत्र ॥
इत्यादि नृप रु गज बहु गिराय, लंगरधर पहुँच्यो सुरनिकाय२८
गोला लगैं न जो तास गत्त, तो जाय गहैं जयचंद तत्त ॥
संजमसुव ऐसैं लरि असंक, उज्जलकिय आसन अद्धअंक॥२९॥
अरु देवराज१७९सुत बल अपार, प्रकटयो सु आततताई१८०उदार
कनउज्ज जंग जिहिं पित्थ काज, सयजोर हनैं बहु नृप समाज।३०।
कंठीरव केसरिराज१नाम, साजि संग संखधर गन सुधाम ॥

१ नाम हुआ वह प्राण २ कुशल होने पर दुष्टों का साल हुआ ॥ २४ ॥ ४ जब कन्नोज पुर के गली और बजार में शत्रुओं के रुधिर के ५ नाले चलाकर वह आधा अंग भी ३ देदिया अर्थात् मारागया ॥२५॥ ६शत्रुओं की स्त्रियों के राजा जयचंद (जयचन्द्र के पास सेना अधिक होने से वह ७ दलपंगु कहाता था अर्थात् उसके कूंच करने में चन्दोल में रहनेवाली सेना उपड़कर आगे मुकाम करती वह तो हरोल में होजाती और पहिले हरोल में थी वह सेना चन्दोल में होजाती इसीप्रकार आधी सेना कूंच करती और आधी उसी जगह पड़ी रहती यह पांगला (चरण सहित) मनुष्य की चाल चलने से वह दलपंगु कहलाता था) के चित्त पर भय पटककर जो सदैव कहा करता था कि मुझे शत्रु ८ बताओ वह ९ संजम का पुत्र बीरशय्या में सोया ।२६। १० पुनि ॥२७॥ ११ जयचन्द्र के १२ युद्ध में स्वतंत्र १३ लंगरीराय १४ स्वर्ग गया ॥२८॥ उसके १५ शरीर में गोला नहीं लगे तो १६ भूमि का आधा भाग और आधा आसन पाता था जिसको उज्वल करके ॥२९॥ १७ पृथ्वीराज के अर्थ १८ हाथ के बल से ॥ ३० ॥ केसरीराज नामक १९ सिंह २० शंखों को धारण करनेवाले अथवा संखुलावंश के श्रेष्ठ धामवाले क्षत्रियों के सुन्दर

अभिधान लंगरी धारि एम, खलसाल१भयो लहि प्रान खेम२ ॥२४॥
जब किय नरेस कनउज्ज जंग, अप्पिय तव सेस जु अद्धअंग ॥
पुर कान्यकुब्ज वीथी१ वजार२, धोरन चलाय रिपुरक्तधार।२५।
बहु संगुरमानि कंकन विदारि, पँहुपंगु चित्त आतंक पारि ॥
वैरी दिखाय कहतो सु वैन, संजमसुव सोयो बीरसैन ॥ २६ ॥
सारंग भय खिच्ची चुहान, बलि वीर२भ्रात तस वलनिधान ॥
बीरम३चुहान चोरंग जत्थ, अजपाल४भूप रट्ठोर तत्थ ॥ २७ ॥
नृप पंगुकेर मंत्री सुमंत्र५, नरसिंह६बहुरि संगर स्वतंत्र ॥
इत्यादि नृप रु गज बहु गिराय, लंगरधर पहुँच्यो सुरनिकाय२८
गोला लगैं न जो तास गत्त, तो जाय गहैं जयचंद तत्त ॥
संजमसुव ऐसैं लरि असंक, उज्जलकिय आसन अद्धअंक॥२९॥
अरु देवराज१७९सुत बल अपार, प्रकटयो सु आततताई१८०उदार
कनउज्ज जंग जिहिं पित्थि काज, सयजोर हनैं वहु नृप समाज।३०
कंठीरव केसरिराज१नाम, साजि संग संखधर गन सुधाम ॥

---

१ नाम हुआ वह प्राण २ कुशल होने पर दुष्टों का साल हुआ ॥ २४ ॥ ४ जब कन्नोज पुर के गली और बजार में शत्रुओं के रुधिर के ५ नाले चलाकर वह आधा अंग भी ३ देदिया अर्थात् मारागया ॥२५॥ ६शत्रुओं की स्त्रियों के राजा जयचंद (जयचन्द्र के पास सेना अधिक होने से वह ७ दलपंगु कहाता था अर्थात् उसके कूंच करने में चन्दोल में रहनेवाली सेना उपड़कर आगे मुकाम करती वह तो हरोल में होजाती और पहिले हरोल में थी वह सेना चन्दोल में होजाती इसीप्रकार आधी सेना कूंच करती और आधी उसी जगह पड़ी रहती यह पांगला (चरण सहित) मनुष्य की चाल चलने से वह दलपंगु कहलाता था) के चित्त पर भय पटककर जो सदैव कहा करता था कि मुझे शत्रु ८ बताओ वह ९ संजम का पुत्र वीरशय्या में सोया ।२६। १० पुनि ॥२७॥ ११ जयचन्द्र के १२ युद्ध में स्वतंत्र १३ लंगरीराय १४ स्वर्ग गया ॥२८॥ उसके १५ शरीर में गोला नहीं लगै तो १६ भूमि का आधा भाग और आधा आसन पाता था जिसको उज्वल करके ॥२९॥ १७ पृथ्वीराज के अर्द्ध १८ हाथ के बल से ॥ ३० ॥ केसरीराज नामक १९ सिंह २० शंखों को धारण करनेवाले अथवा संखुलावंश के श्रेष्ठ धामवाले क्षत्रियों के सुन्दर

सुत ताकै हुव सिंहवर१५३, पहु संभर अतिमान ॥ २ ॥
तनुज सिंहवरकै भयो, मोहद्रूप१५४महीस ॥
साकंभर अधिराज सो, सबल तप्यो सबसीस ॥ ३ ॥
हुव सुत मोहद्रूपकै, रत्नसिंह१५५रिपुकाल ॥
सेनराज१५६तस तास सुत, संप्रतिराज१५७नृपाल ॥ ४ ॥
संप्रतिराज अनेहँ सन, कछु अंतर अनुमान ॥
लियउ बप्पै चित्तोरगढ, हनि मोरी चहुवान ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

॥
॥
॥
॥
॥
॥ ६ ॥

संप्रतिराज नरेस तनय नृप नागहस्त१५८हुव ॥
स्थूलानंद१५९तदीयं सूर तस लोहधार१६० सुँव ॥
धर्मसार१६१तस धन्य तास सुत बैरिसिंह१६२मित ॥
विबुधसिंह १६३ तस विबुधं योगसूर१६४सु तदीय इत ॥
तस चंद्रराज१६५प्रकटिय तनय जो संभरपुर वास तजि॥
अजमेर आय निवस्यो अडर समुंचित खंधावारं सजि॥७॥
ब्रध्ननगर सन सज्जि अग्ग मानिक्यराज दल ॥

---

८ देवसिंह नामक २ अत्यन्त बलवान् ॥ २ ॥ ३ सांभर का पति ॥ ३ ॥ ४ ॥४ संप्रतिराज के समय से कुछ अन्तर पर५ बापा रावल ने मोरी चहुवाण को मारकर चित्तोड़ गढलिया "बड़वाभाटों की पोथियों में विक्रमी एक सौ इक्कानवे १९१ के सम्वत् में बापा रावल का चित्तोड़ लेना लिखा है सो असत्य हैं क्योंकि नवीन शोध के अनुसार सात सौ इक्कानवे७९१के सम्वत् में बापा रावल का चित्तोड़ लेना साबित है" ॥ ५ ॥ ६ उसके ७ पुत्र ८ पंडित ९ बसा१०उचित ११राजधानी सजकर ॥ ७ ॥

सुत ताकै हुव सिंहवर१५३, पहु संभर अतिप्रान ॥ २ ॥
तनुज सिंहवरकै भयो, मोहद्रूप१५४महीस ॥
साकंभर अधिराज सो, सवल तप्यो सवसीस ॥ ३ ॥
हुव सुत मोहद्रूपकै, रत्नसिंह१५५रिपुकाल ॥
सेनराज१५६तस तास सुत, संप्रतिराज१५७नृपाल ॥ ४ ॥
संप्रतिराज अनेहँ सन, कछु अंतर अनुमान ॥
लियउ बप्प चित्तोरगढ, हनि मोरी चहुवान ॥ ५ ॥

॥ पद्पात् ॥

॥
॥
॥
॥
॥
॥ ६ ॥

संप्रतिराज नरेस तनय नृप नागहस्त१५८हुव ॥
स्थूलानंद१५९तदीय सूर तस लोहधार१६० सुव ॥
धर्मसार१६१तस धन्य तास सुत वैरिसिंह१६२मित ॥
विबुधसिंह १६३ तस विबुध योगसूर१६४सु तदीय इत ॥
तस चंद्रराज१६५प्रकटिय तनय जो संभरपुर वास तजि॥
अजमेर आय निवस्यो अडर समुचित खंधावार सजि॥७॥
ब्रध्ननगर सन सज्जि अग्ग मानिक्यराज दल ॥

---

८ देवसिंह नामक २ अत्यन्त बलवान् ॥ २ ॥ ३ सांभर का पति ॥ ३ ॥ ४ ॥४ संप्रतिराज के समय से कुछ अन्तर पर५ बापा रावल ने मोरी चहुवाण को मारकर चित्तोड़ गढलिया "बड़वाभाटों की पोथियों में विक्रमी एक सौ इक्कानवे १९१ के सम्वत् में वापा रावल का चित्तोड़ लेना लिखा है सो असत्य है क्योंकि नवीन शोध के अनुसार सात सौ इक्कानवे७९१के सम्वत् में बापा रावल का चित्तोड़ लेना साबित है" ॥ ५ ॥ ६ उसके ७ पुत्र ८ पंडित ९ बसा१०उचित११राजधानी संजकर ॥ ७ ॥

अरु अग्रज अनुराजके, पृथ्वीराज१६८सुधाम ॥
पायो *अहिउडु जन्म करि, दूजो२डिड्डुर१६९नाम ॥१६॥
डिड्डुरकुल सब डिड्डुरा१।१२।५६, यह धारत उपटंक ॥
सब चहुवानन सिरमुकुट, संगर अजिर निसंक ॥ १७॥

पादाकुलकम्

डिड्डुर सुत धर्माधिराज१७०हुव, बीसलदेव१७१भयो ताकै सुव ॥
मुद्राअर्ज१०००००००००दैनजोपनकरि,धनअर्जनलग्गोसाहसधरि
बीसकोटि२०००००००० चयहोयसक्योवसु,इहिंविचवीसलदेवतज्योअसु
बसुधापिहितकोटिजेवीस२००००००००हि,धरीरहीतजिगोधरनीसहि
पहुंनृपराम श्रवन खिन पाऊँ, सब यह बिस्तर सहित सुनाऊँ ॥
रासो नाम वीररस छायो, बंदी[१२] चंद जु ग्रंथ वनायो ॥ २० ॥
जो वामैं न असंगत जानी, बरनौं सोहिं धरहु श्रुति वानी ॥
रासे माँहिं जो न कवि रक्खी, भूरि सुकविरमागध३जिहिं सक्खी२१
चंद जदपि अक्खी न तदपि चुनि,सोपै भनौं प्रथित ग्रंथन सुनि ॥
बीसल पट्ट जबहि उवइट्ठो, मुदित लग्यो खट६ प्रकृतिन मिट्ठो२२
प्रथम भूप परन्यौं प्रतिहारी१, पुनि आनी रानी प्रामारी२ ॥
व्याह उचित इत्यादि करे वहु,प्रतप्यो घने नृपन सिर जो पहुं ।२३।

कहते हैं कि वह बिना १६सन्तान मरगया ॥ १५ ॥
* अश्लेषा नक्षत्र में जन्म होने के कारण डिड्डुर नाम पाया क्योंकि अश्लेषा नक्षत्र के जन्मवालों के नाम के आदि अक्षर "डी-डू-डे-डो" होते हैं॥१६॥ १ खिताब २ युद्ध के अखाड़े में॥१७॥ ३ पुत्र ४ अर्ब रुपये देने का पण करके धन ५ संचय करने लगा ॥ १८ ॥ ६ इकट्ठा होसका ७ धन ८ प्राण छोड़ा ९ भूमि में गुप्त १० भूपति (बीसलदेव) छोड़ गया ॥ १९ ॥ ११ हे राजा रामसिंह १२ स्तुतिपाठ करके राजाओं को जगानेवाले भाट चन्द ने रासा नामक ग्रन्थ बनाया ॥ २० ॥ उसमें १३ अनुचित बातें लिखी हैं उनको छोडकर उचित बातों का वर्णन करता हूं सो सुनो और जो बातें रासे में नहीं लिखीं और मैं लिखता हूं जिनके १४ पंडित, कवि और बड़वाभाट १५ साक्षी हैं उपरोक्त लोगों के लेखों से लिखता हूं ॥ २१ ॥ १६ प्रसिद्ध ग्रन्थों से सुनकर १७ बेटा १८ राज्य के छःहो अंगों को प्यारा लगा ॥ २२ ॥ १९ राजा ॥ २३ ॥

अरु अग्रज अनुराजके, पृथ्वीराज१६८सुधाम ॥
पायो *आहिउडु जन्म करि, दूजो२डिड्डुर१६९नाम ॥१६॥
डिड्डुरकुल सब डिड्डुरा१।१२।५६, यह धारत उपटंक ॥
सब चहुवानन सिरमुकुट, संगर अजिर निसंक ॥ १७ ॥

पादाकुलकम्

डिड्डुर सुत धर्माधिराज१७०हुव, बीसलदेव१७१भयो ताकैं सुव ॥
मुद्राअर्बुज१०००००००००दैनजोपनकरि,धनअर्जनलग्गोसाहसधरि
बीसकोटि२००००००००चयहोयसक्योवसु,इहिंबिचबीसलदेवतज्योअसु
बसुधापिहितकोटिजेबीस२००००००००हि,धरीरहीतजिगोधरनीसहि
पहुंनृपराम श्रवन खिन पाऊँ, सब यह बिस्तर सहित सुनाऊँ ॥
रासो नाम बीररस छायो, बंदी[12] चंद जु ग्रंथ बनायो ॥ २० ॥
जो वामैं न असंगत[13] जानी, बरनौं सोहि धरहु श्रुति वानी ॥
रासे माँहिं जो न कवि रक्खी, भूरि सुकवि२मागध३जिहिं सक्खी२१
चंद जदपि अक्खी न तदपि चुनि,सोपै भनौं प्रथित[16] ग्रंथन सुनि ॥
बीसल पट्ट जबहि उववइट्ठो, मुदित लग्यो खट६ प्रकृतिन मिट्ठो२२
प्रथम भूप परन्यौं प्रातिहारी१, पुनि आनी रानी प्रामारी२ ॥
व्याह उचित इत्यादि करे वहु,प्रतप्यो घने नृपन सिर जो पहु ।२३।

कहते हैं कि वह बिना१६सन्तान मरगया ॥ १५ ॥
* अश्लेषा नक्षत्र में जन्म होने के कारण डिड्डुर नाम पाया क्योंकि अश्लेषा नक्षत्र के जन्मवालों के नाम के आदि अक्षर "डी-डू-डे-डो" होते हैं॥१६॥ १ खिताब२ युद्ध के अखाड़े में॥१७॥३ पुत्र ४अर्बुद रुपये देने का पण करके धन ५ संचय करने लगा ॥ १८ ॥ ६ इकट्ठा होसका ७ धन ८ प्राण छोडा ९ भूमि में गुप्त १० भूपति (बीसलदेव) छोड गया ॥ १९ ॥ ११ हे राजा रामसिंह १२ स्तुतिपाठ करके राजाओं को जगानेवाले भाट चन्द ने रासा नामक ग्रन्थ बनाया ॥ २० ॥ उसमें १३ अनुचित बातें लिखी हैं उनको छोडकर उचित बातों का वर्णन करता हूं सो सुनो और जो बातें रासे में नहीं लिखीं और मैं लिखता हूं जिनके १४ पंडित, कवि और बड़वाभाट१५साक्षी हैं उपरोक्त लोगों के लेखों से लिखता हूं ॥ २१ ॥ १६ प्रसिद्ध ग्रन्थों से सुनकर १७ बेटा १८ राज्य के छःही अंगों को प्यारा लगा ॥ २२ ॥ १९ राजा ॥ २३ ॥

नास्तिक बनिक गेह सिसुपनतैं, सुन्यौं अधिक अरहंत सबनतैं ।३१।
मान्नि कुमर सारंग सोहि मत, गह्यो भजन कहि संभु पारगत ॥
अब गौरी सु अधिक आराध्यो, सारंगहु तिम तिम सब साध्यो।३२।
बहुरि गौरी सु गई पुष्करबन, संजम ब्रह्मचर्य ब्रत सध्धन ॥
कुमर तबहु अतिसय दुख कीनौं, दृढकारि तित्थगरन मन दीनौं ३३
ऋसभ१अजित२संभव३अभिनंदन४,विहितसुमति५पद्मप्रभ६वंदन॥
पुनि सुपार्श्व७चंद्रप्रभ८नामक,सुविधि९रु सीतल१०बहुरि सुधामक
पुनिश्रेयांस११रुबासुपूज्य१२पहु, बिमल१३अनंत१४तीर्थकृतगुनबहु
कथित धर्म १५ बहुरि सांति१६ कुंथु १७ अर १८ ॥
मल्लि १९ रु सुव्रत २० निमि २१ रु नमि २२ बर ॥ ३५ ॥
पार्श्व२३बीर२४संकृति२४तीर्थंकर, रटनलग्यो सु कुमर जिनतत्पर
कहैं तथाहि जैन गोमुख१हुव,महायक्ष२तिम त्रिमुख३भक्तिधुव३६
यक्षनायक४ रु तुंबुरु ५ जैसैं, कुसुम ६ बहुरि मातंग ७ हु तैसैं ॥
विजय ८ अजित ९ ब्रह्मा १० यक्षेश्वर११,
कुमार १२ छमुख १३ पाताल १४ किन्नर १५ ॥३७॥
गरुड़१६त्यौंहिंगंधर्व१७जैनजिम,बहुरियक्षेट१८कुबेर१९बरुन२०तिम
प्रथितभृकुटि२१गोमेध२२पार्श्व२३पुनि, मातंग२१हुजिनमतउदारमुनि

छोडदिया, उस सारंग ने जब बचपन में उस १जैन मतवाले बनिये के घर में रहा तब २अरहंत (जैनियों के देवता) को सब से अधिक सुना ॥ ३१ ॥ सारंगकुमर ने भी वही जैन मत माना और वही३जिन पार लगावेगा यह कहकर उसीका भजन ग्रहण किया और अब विधवा हुए पीछे उस ४ गौरी ने भी अर्हन्त की बहुत आराधना की ॥ ३२ ॥ ५ पुनि वह गौरी ६ इन्द्रियों को रोककर ब्रह्मचर्य ब्रत साधने के लिये पुष्कर के वन में तप करने को गई तब कुमर ने अत्यन्त दुःख करके ७ तीर्थंकरों में दृढ मन लगाया ॥ ३३ ॥ ८ कहेगये ९ नमस्कार योग्य १० श्रेष्ठ धामवाले ॥ ३४ ॥ ११ प्रभु १२ बहुत गुणोंवाले तीर्थंकर १३ कहेगये १४पुनि १५ श्रेष्ठ ॥ ३५ ॥ १६ इन चौबीस तीर्थंकरों को १७ जैनधर्म में अथवा जिन (तीर्थंकरों) में तत्पर होकर कुमर रटने लगा १८ इसीप्रकार १९ दृढ भक्ति धारण करनेवाला ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २० पुनि २१ प्रसिद्ध २२ जिनके मत में उदार २३ मुणि (कहेगये) ॥ ३८ ॥

नास्तिक बनिक गेह सिसुपनतैं, सुन्यों अधिक अरहंत सबनतैं ।३१।
मन्त्रि कुमर सारंग सोहि मत, गह्यो भजन कहि संभु पारगत ॥
अब गौरी सु अधिक आराध्यो, सारंगहु तिम तिम सब साध्यो।३२।
बलि गौरी सु गई पुष्करबन, संजम ब्रह्मचर्य ब्रत सब्बन ॥
कुमर तबहु अतिसय दुख कीनौं, दृढकरि तित्थगरन मन दीनौं ३३
ऋसभ१अजित२संभव३अभिनंदन४,बिहितसुमति५पद्मप्रभ६बंदन॥
पुनि सुपार्श्व७चंद्रप्रभ८नामक,सुविधि९रु सीतल१०बहुरि सुधामक
पुनिश्रेयांस११रुबासुपूज्य१२पंहु, बिमल१३अनंत१४तीर्थकृतगुनबहु
कथित धर्म १५ बलि सांति१६ कुंथु १७ अर १८ ॥
मल्लि १९ रु सुब्रत २० निमि २१ रु नेमि २२ बर ॥ ३५ ॥
पार्श्व२३बीर२४संकृति२४तीर्थंकर, रटनलग्यो सु कुमर जिनतत्पर
पार्श्व२३बीर२४संकृति२४तीर्थंकर, रटनलग्यो सु कुमर जिनतत्पर
कहैं तथाहि जैन गोमुख१हुव,महायक्ष२तिम त्रिमुख३भक्तिध्रुव३६
यक्षनायक४ रु तुंबुरु ५ जैसैं, कुसुम ६ बहुरि मातंग ७ हु तैसैं ॥
यक्षनायक४ रु तुंबुरु ५ जैसैं, कुसुम ६ बहुरि मातंग ७ हु तैसैं ॥
विजय ८ अजित ९ ब्रह्मा १० यक्षेश्वर११,
विजय ८ अजित ९ ब्रह्मा १० यक्षेश्वर११,
कुमार१२ छमुख१३ पाताल१४ किन्नर१५ ॥३७॥
गरुड़१६त्यौंहिंगंधर्व१७जैनजिम,बलियक्षेट१८कुबेर१९बरुन२०तिम
प्रथित भृकुटि२१गोमेध२२पार्श्व२३पुनि, मातंग२४हुजिनमतउदारमुनि

छोडदिया, उस सारंग ने जब बचपन में उस १जैन मतवाले बनिये के घर में रहा तब २अरहंत (जैनियों के देवता) को सब से अधिक सुना ॥ ३१ ॥ सारंगकुमर ने भी वही जैन मत माना और वही ३जिन पार लगावेगा यह कहकर उसीका भजन ग्रहण किया और अब विधवा हुए पीछे उस ४ गौरी ने भी अर्हन्त की बहुत आराधना की ॥ ३२ ॥ ५ पुनि वह गौरी ६ इन्द्रियों को रोककर ब्रह्मचर्य ब्रत साधने के लिये पुष्कर के वन में तप करने को गई तब कुमर ने अत्यन्त दुःख करके ७ तीर्थकरों में दृढ मन लगाया ॥ ३३ ॥ ८ कहेगये ९ नमस्कार योग्य १० श्रेष्ठ धामवाले ॥ ३४ ॥ ११ प्रभु १२ बहुत गुणोंवाले तीर्थंकर १३ कहेगये १४पुनि १५ श्रेष्ठ ॥ ३५ ॥ १६ इन चौबीस तीर्थंकरों को १७ जैनधर्म में अथवा जिन (तीर्थंकरों) में तत्पर होकर कुमर रटने लगा १८ इसीप्रकार १९ दृढ भक्ति धारण करनेवाला ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ २० पुनि २१ प्रसिद्ध २२ जिनके मत में उदार २३ मुणि (कहेगये) ॥ ३८ ॥

भूप प्रतिष्ट७रु महासेन८*अथ, नृप सुग्रीव९ महीपति दृढरथ१०
विष्णु११बहुरि बसुपूज्य१२नरेस्वर,कृतबर्मा१३सिंहसेन१४+भूवर.
भानु१५विस्वसेन१६सूर१७सुदर्सन१८,
कुंभ१९ सुमित्र२०विजय२१ छोनीधन ॥
बहुरि समुद्रबिजय२२नृपजानहु, अस्वसेन२३सिद्धार्थ२४प्रमानहु ॥
कहैं जनक ए२४ तित्थयरनके, महत बिकार निवारक मनके ॥
मरुदेवा१ विजया२अरु सेना३, सिद्धार्था४ मंगला५ अनेना ॥४६॥
सुसीमा६रु पृथ्वी७ पुनि जैसैं, विदेत लक्खना८ रामा९ तैसैं ॥
नंदा१०विष्णु११जया१२रुस्यामा१३,
सुयसा१४ बंलि सुव्रता१५ सुधार्मा ॥ ४७ ॥
अचिरा१६श्री१७देवी १८प्रभावती१९,पद्मा२०बप्रा२१सिवारुमावती
वामा२३त्रिसिला२४ए२४सबख्याता,क्रमसैंनतित्थयरनकी माता
चक्रेश्वरी१तथा अजितबला२,दुरितारि३रुकालिका४सुखफला ॥
महाकालिका५ स्यामा६ सांता७ भृकुटि८ सुतारका९हु दृढ दांता
असोका१०रु मानवी११ रु चंडा१२,विदिता१३अंकुसिका१४उद्दंडा
कंदर्पा१५निर्बाणी१६बला१७ रु, धारणी१८रु धरणप्रिया१९चारु
नरदत्ता२०गांधारी२१अंबा२२, पद्मावती२३तथा जगदंबा ॥
सिद्धायिका२४ भक्तिगुनसाध्या, ए२४ जैनी देवी आराध्या ॥५२॥

दोहा

---

*अब+भूपति१भूपति ये चौबीस ही २ तीर्थंकरों के३पिता हैं जो मन के वि-कार को मेटने में ४समर्थ हैं ५ पापरहित ॥ ४६ ॥ ६ प्रसिद्ध ७ पुनि ८ श्रेष्ठ धामवाली९( )१०प्रसिद्ध, ये चौबीस ही ११क्रम से १२ तीर्थंकरों की माता हैं ॥ ४८ ॥ १३ सुख फल की देनेवाली १४ दृढ जितेन्द्रिय ॥ ४९ ॥ १५ उद्दण्ड(उद्धत) १६ सुन्दर ॥ ५० ॥ १७ देवी १८ भक्तिगुण से वश हो-नेवाली, ये चौबीस जैनियों की १९ आराधन करनेवाली शासनदेवियां (धर्म की उन्नति करनेवाली) हैं उपरोक्त तीर्थंकर और उनके माता पिता दे-वियां आदि सब वर्तमान समय के हैं और अब आगे भूतकाल और भवि-ष्यत् काल के लिखते हैं ॥ ५१ ॥

भूप प्रतिष्ठ७रु महासेन८*अथ, नृप सुग्रीव९ महीपति दृढरथ१०
विष्णु११बहुरि बसुपूज्य१२नरेस्वर, कृतबर्मा१३सिंहसेन१४+भूबर.
भानु१५विश्वसेन१६सूर१७सुदर्सन१८,
कुंभ१९ सुमित्र२०बिजय२१ छोनीधनं ॥
बहुरि समुद्रबिजय२२नृपजानहु, अस्वसेन२३सिद्धार्थ२४प्रमानहु ॥
कहैं जनकं एर२४ तित्थयरनकें, महतं बिकार निवारक मनके ॥
मरुदेवा१ विजया२अरु सेना३, सिद्धार्था४ मंगला५ अनेना ॥४६॥
सुसीमा६रु पृथ्वी७ पुनि जैसैं, विदितं लक्खना८ रामा९ तैसैं ॥
नंदा१०विष्णु११जया१२रुस्यामा१३,
सुयसा१४ बंलि सुव्रता१५ सुधार्मा ॥ ४७ ॥
अचिरा१६श्री१७देवी१८प्रभावती१९,पद्मा२०वप्रा२१सिवारुमावती
वामा२३त्रिसिला२४ए२४सबख्यातीं,क्रमसैंनतित्थयरनंकी माता
चक्रेश्वरी१तथा अजितबला२,दुरितारि३रुकालिका४सुखफलीं ॥
महाकालिका५ स्यामा६ सांता७ भृकुटि८ सुतारका९हु दृढ दांतीं
असोका१०रु मानवी११ रु चंडा१२,विदिता१३अंकुसिका१४उद्दंडा
कंदर्पा१५निर्बाणी१६बला१७ रु, धारणी१८रु धरणप्रिया१९चारु
नरदत्ता२०गांधारी२१अंबा२२, पद्मावती२३तथा जगदंबाँ ॥
सिद्धायिका२४ भक्तिगुनंसाध्या, ए२४ जैनी देवी आराध्यां ॥५१॥

दोहा

*अब+भूपति१भूपति ये चौबीस ही ३ तीर्थंकरों के२पिता हैं जो मन के वि-
कार को मेटने में ४समर्थ हैं ५ पापरहित ॥ ४६ ॥ ६ प्रसिद्ध ७ पुनि ८ श्रेष्ठ
धामवाली९( )१०प्रसिद्ध, ये चौबीस ही११क्रम से१२ तीर्थंकरों की
माता हैं ॥ ४८ ॥ १३ सुख फल की देनेवाली १४ दृढ जितेन्द्रिय ॥ ४९ ॥
१५ उद्दण्ड(उद्धत) १६ सुन्दर ॥ ५० ॥ १७ देवी १८ भक्तिगुण से वश हो-
नेवाली, ये चौबीस जैनियों की १९ आराधन करनेवाली शासनदेवियां
(धर्म की उन्नति करनेवाली) हैं उपरोक्त तीर्थंकर और उनके माता पिता दे-
वियां आदि सब वर्तमान समय के हैं और अब आगे भूतकाल और भवि-
ष्यत् काल के लिखते हैं ॥ ५१ ॥

जिनके न बढत लोम रु नखर१सुर नरा२दि वानी बदत॥
गद ईति१बैर२पास न रहैं पूजौं तिन्ह बुल्लहिं प्रनत॥ ५४ ॥
दान१लाभ२उपभोग३भोग४बीर्य५हु अविघ्न जँहँ ॥
हास१अरति२रति३भीति४सोक५मिथ्यात्व६नाँहिं तँहँ ॥
काम७जुगुप्सा८द्वेस९राग१०अज्ञान११रु अविरति१२ ॥
अरु निद्रा१३इत्यादि१८दोस न करैं जिन संगति ॥
इम कहि तदीय मत चहि अखिल श्रवण जनन संगति वहत॥
सारंगदेव वीसल सुवनु गृत्ति दिवस२जिनपर रहत॥ ५५ ॥

(दोहा)

गौरी जब पुष्कर गई, तब अतिदुख सुनि तास ॥
समुझावन वीसल सुपहु, पुत्र बुलायउ पास ॥ ५६ ॥
बनिकभाव लखि सस्त्र विनु, अरु जंपत अरहंत ॥
कुमर तरजि खिजि नृप कह्यो, कापँहँ पढिय कुमंत॥५७॥

आकाश ही वस्त्र हैं ऐसे तीर्थंकर पूजनीय हैं और जिनके केस और नख नहीं बढ़ते और देवताओं की व मनुष्य आदि की भाषा बोलते हैं. रोग, ईति(अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टीडी, चूहे, सुवे, अपनीसेना, पराईसेना ये सात ईति हैं)और वैर जिनके पास ही नहीं रहते उनको विशेष नम्र होकर पूजूं यह सारंगकुमर कहने लगा॥५४॥अब आगे अठारह दोष बताते हैं जो तीर्थंकरों के कुछ विघ्न नहीं करसक्ते जिनमें पांच अन्तराय (विघ्न) दान, लाभ, उपभोग (वस्त्र भूषण स्त्री गृह आदि जो पदार्थ वारंवार भोगने में आते हैं उनको उपभोग कहते हैं) भोग(खान, पान आदि एकवार भोग में आनेवाले पदार्थ) वीर्य ये पांच दोष जिन के विघ्न नहीं करते. हास्य, अप्रसन्न होना, भीति (भय), शोक, सत्यासत्य का विपरीत ज्ञान, कामदेव, घृणा, द्वेष, प्रीति, अज्ञान, त्याग का अभाव, निद्रा, इन अठारह दोषों को आदि लेकर जिनके साथ दोष नहीं करते, इस प्रकार कहकर उन्हीं तीर्थंकरों के सम्पूर्ण मत को सुनने के लिये मनुष्यों के साथ रहने लगा वीसलदेव का पुत्र वह सारंग देव रात दिन तीर्थंकरों में परायण रहने लगा॥५५॥ गौरी जब तप करने को पुष्कर गई तब उसका दुःख सुनकर वीसलदेव ने अपने पुत्र को समझाने को पास बुलाया ॥ ५६ ॥ अर्हन्त को जपता हुआ विना शस्त्र बनिया के समान कुमर को देखकर क्रोध करके राजा ने कहा कि यह कुमन्त्र किससे पढा ॥ ५७ ॥

जिनके न बढत लोम रु नखर२सुर नरा२दि वानी बदत॥
गद ईति१बैर२पास न रहैं पूजौं तिन्ह बुल्लहिं प्रनत॥ ५४ ॥
दान१लाभ२उपभोग३भोग४वीर्य५हु अविघ्न जँहँ ॥
हास१अरति२रति३भीति४सोक५मिथ्यात्व६नाँहिं तँहँ ॥
काम७जुगुप्सा८द्वेस९राग१०अज्ञान११रु अविरति१२ ॥
अरु निद्रा१३इत्यादि१८दोस न करैं जिन संगति ॥
इम कहि तदीय मत चहि अखिल श्रवण जनन संगति बहत॥
सारंगदेव वीसल सुवनु गृत्ति दिवस२जिनपर रहत॥ ५५ ॥

(दोहा)

गौरी जब पुष्कर गई, तब अतिदुख सुनि तास ॥
समुझावन वीसल सुपहु, पुत्र बुलायउ पास ॥ ५६ ॥
बनिकभाव लखि सस्त्र विनु, अरु जंपत अरहंत ॥
कुमर तरजि खिजि नृप कह्यो, कापँहँ पढिय कुमंत॥५७॥

आकाश ही वस्त्र हैं ऐसे तीर्थंकर पूजनीय हैं और जिनके केस और नख नहीं बढते और देवताओं की व मनुष्य आदि की भाषा बोलते हैं. रोग, ईति(अतिवृष्टि, अनावृष्टि, टीडी, चूहे, सुवे, अपनीसेना, पराईसेना ये सात ईति हैं)और वैर जिनके पास ही नहीं रहते उनको विशेष नम्र होकर पूजूं यह सारंगकुमर कहने लगा॥५४॥अब आगे अठारह दोष बताते हैं जो तीर्थंकरों के कुछ विघ्न नहीं करसक्ते जिनमें पांच अन्तराय (विघ्न) दान, लाभ, उपभोग (वस्त्र भूषण स्त्री गृह आदि जो पदार्थ वारंवार भोगने में आते हैं उनको उपभोग कहते हैं) भोग(खान, पान आदि एकवार भोग में आनेवाले पदार्थ) वीर्य ये पांच दोष जिन के विघ्न नहीं करते. हास्य, अप्रसन्न होना, भीति (भय), शोक, सत्यासत्य का विपरीत ज्ञान, कामदेव, घृणा, द्वेष, प्रीति, अज्ञान, त्याग का अभाव, निद्रा, इन अठारह दोषों को आदि लेकर जिनके साथ दोष नहीं करते, इस प्रकार कहकर उन्हीं तीर्थंकरों के सम्पूर्ण मत को सुनने के लिये मनुष्यों के साथ रहने लगा वीसलदेव का पुत्र वह सारंग देव रात दिन तीर्थंकरों में परायण रहने लगा॥५५॥ गौरी जब तप करने को पुष्कर गई तब उसका दुःख सुनकर वीसलदेव ने अपने पुत्र को समझाने को पास बुलाया ॥ ५६ ॥ अर्हन्त को जपता हुआ विना शस्त्र बनिया के समान कुमर को देखकर क्रोध करके राजा ने कहा कि यह कुमन्त्र किससे पढा ॥ ५७ ॥

परम्पराऽऽख्यानसङ्गतयौगशूरिचन्द्रराजाऽजमेरनगरस्कन्धावार-स्थापनशाकम्भरसचिवसन्निवसनचान्द्रराजिकृष्णराजवंशीयडिड्डुरकोश्पाख्याग्रहणडिड्डुरपुत्रधर्माऽधिराजोद्भवनतत्पुत्रवीसलदेवाऽजमेरराज्यसमासादनतत्पुत्रसारङ्गदेवोद्गमनधात्रेयीसङ्गतिकुमारजैनमतधारणज्ञाततदुदन्तवीसलदेवपुत्रतर्जनतत्कालत्यक्तनास्तिक्यशारङ्गदेवशस्त्रग्रहणमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥

आदितः सप्तदशोत्तरशततमः ॥ ११७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पट्पात्

संस्त्र गहत सारङ्ग मुदित वीसल नरेस मन ॥
दै तिहिं संभरद्रंग१ पुत्र पठयो तँहँ पालन ॥
बखसि खास गज२वाजि३सुभग मनिमय सिंहासन४॥
किन्न विदा इम कुमर नैरसंभर दुख नासन ॥
पय जनककेर सुत तव प्रनमि वंधि कटकें लहि वीरगन॥
ततकाल अप्प संभर तरफ कियउ कुंच अजमेर सन॥१॥

पादाकुलकम्

दिय नृप संग मुकुंद१पुरोहित, तिम कृपालु२कायत्थ सचिव तित॥
दिय सुत संग भूप रनदुर्जय, साँचोरा चहुवान वीर त्रय३॥२॥
जे सारंग१ नृसिंह२ भानुवर३, खंधारी वहवल१वलोच वर ॥

आख्यान के साथ योगसूर के पुत्र चन्द्रराज का अजमेर नगर को राजधानी बनाना, सांभर में सचिव को रखना, चन्द्रराज के पुत्र कृष्णराज के वंशी डिड्डुर की सन्तान का डिड्डुर नाम धारण करना, डिड्डुर के पुत्र धर्माधिराज का जन्म होना, उसके पुत्र वीसलदेव का अजमेर में राज्य करना, उसके सारंगदेव नामक पुत्र का उत्पन्न होना, और धाय की संगति से कुमर का जैन मत धारण करना, वह वृत्तान्त जानकर वीसलदेव का पुत्र को धमकाना, उसी समय जैन मत छोड़कर सारंगदेव के शस्त्र धारण करने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से एक सौ सत्रह मयूख हुए ॥ ११७॥

१सांभरपुर देकर वहां भेजा २सुन्दर ३सांभर नगर का दुःख मिटाने को ४सेना

परम्पराऽऽख्यानसङ्गतयोगशूरिचन्द्रराजाऽजमेरनगरस्कन्धावार-
स्थापनशाकम्भरसचिवसन्निवसनचान्द्रराजिकृष्णराजवंशीयडिङ्कुर
को१पाख्याग्रहणडिङ्कुरपुत्रधर्माऽधिराजोद्भवनतत्पुत्रवीसलदेवाऽज-
मेरराज्यसमासादनतत्पुत्रसारङ्गदेवोद्गमनधात्रेयीसङ्गतिकुमारजैन
मतधारणज्ञाततदुदन्तवीसलदेवपुत्रतर्जनतत्कालत्यक्तनास्तिक्य
शारङ्गदेवशस्त्रग्रहणमष्टमो ८ मयूखः ॥ ८ ॥

आदितः सप्तदशोत्तरशततमः ॥ ११७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

षट्पात्

सस्त्र गहत सारङ्ग मुदित वीसल नरेस मन ॥
दै तिहिं संभरद्रंग१ पुत्र पठयो तँहँ पालन ॥
बखसि खास गज२बाजि३सुभगँ मनिमय सिंहासन४॥
किन्न विदा इम कुमर नैरसंभर दुख नासन ॥
पय जनकक्केर सुत तव पनमि बंधि कटक्के लहि वीरगन॥
ततकाल अप्प संभर तरफ कियउ कुंच अजमेर सन॥१॥

पादाकुलकम्

दिय नृप संग मुकुंद१पुरोहित, तिम कृपालु२कायत्थ सचिव तित॥
दिय सुत संग भूप रनदुर्जय, साँचोरा चहुवान वीर त्रय३॥२॥
जे सारंग१ नृसिंह२ भानुवर३, खंधारी वहवल१वलोच वर॥

आख्यान के साथ योगशूर के पुत्र चन्द्रराज का अजमेर नगर को राजधानी बनाना, सांभर में सचिव को रखना, चन्द्रराज के पुत्र कृष्णराज के वंशी डिङ्कुर की सन्तान का डिङ्कुर नाम धारण करना, डिङ्कुर के पुत्र धर्माधिराज का जन्म होना, उसके पुत्र वीसलदेव का अजमेर में राज्य करना, उसके सारंगदेव नामक पुत्र का उत्पन्न होना, और धाय की संगति से कुमर का जैन मत धारण करना, वह वृत्तान्त जानकर वीसलदेव का पुत्र को धमकाना, उसी समय जैन मत छोडकर सारंगदेव के शस्त्र धारण करने का आठवां ८ मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से एक सौ सत्रह मयूख हुए ॥ ११७॥

१सांभरपुर देकर वहां भेजा २सुन्दर ३सांभर नगर का दुःख मिटाने को ४सेना

करि बिचार सरकेर भूप सचिवन निदेस दिय ॥
पुर अजमेर समीप रचहु इक ताल पुराय[2] प्रिय ॥
सासन तिन धरि सीस द्रम्म[3] लक्खन लगाय द्रुत[4] ॥
वीसलसागर नाम रच्यो कासार[5] रीति जुत ॥
अर्थिन लुटाय बैभव अतुल दिय भोजन लक्खन द्विजन ॥
अजमेर नगर बीसल अधिप इम बिलसत चहुवान इन[6] ।१२।

दोहा

संभरसन प्रामारि सो, आई पुनि अजमेर ॥
बिलखानौं नृप तस बिरह, बुल्लिलई[7] तिहिं बेर ॥ १३ ॥

षट्पात्

प्रामारीरस रत्त[8] रहैं बीसलनरेस मन ॥
ऋतुकालहु तजि रीति इतर[9] रानिन इच्छैं नन ॥
तब संवत्ति[10] सब तमकि[11] भई एकत्र सोकभरि ॥
किय उपाय नृपकेर काम[12] नासन बिचार करि ॥
प्रच्छन्न इक्क कापालिकिय[13] बुल्लि रु तस अनुसरि[14] बचन ॥
छितिपहिं[15] खवाय औषध कछुक पूहत[16] कर्‌यो तिन पुरुखपन १४
मदननास[17] लखि मोद सकल छोर्‌यो नृप बीसल ॥
तुरग[18] ब्रह्मचारी सु रहैं खोजत उपाय बल ॥
उज्जमासके[19] अंत गयो न्हावन तीरथगुरु[20] ॥

---

१ तालाव २पवित्र और सुहावना ३लाखों रुपये लगाकर ४शीघ्र ५तालाव, याचकों को बहुत वैभव देकर ६चहुवानों का सूर्य।१२।७बुलवा ली॥१३॥वीसलदेव का मन राणी प्रामारी में ८आसक्त था इस कारण रीति को छोड़कर ९अन्य राणियों को ऋतुकाल में भी नहीं चाहता (ऋतुकाल में स्त्री को ऋतुदान नहीं देने का धर्मशास्त्र में दोष लिखा है) इसकारण सब १०. सोकों ने ११ क्रोध करके १२ राजा के कामदेव का नाश करने का विचार किया और एक १३ कालबेलनी (गारुड़ की स्त्री) को छाने बुलाकर उकके कहने के १४ अनुसार १५ राजा को औषधि खिलाकर उसके पुरुषपन का १६ नाश करदिया ॥ १४ ॥ १७ कामदेव का नाश हुआ जानकर वीसलदेव ने सब आनन्द छोड़ दिया और वह ब्रह्मचारी १८ मन में बल बढाने का उपाय सोचता रहा १९ कार्तिक मास के अन्त में २० पुष्कर स्नान करने को गया वहां

करि बिचार सरकेर भूप सचिवन निदेस दिय ॥
पुर अजमेर समीप रचहु इक ताल[1] पुराय[2] प्रिय ॥
सासन तिन धरि सीस द्रम्म लक्खन लगाय[3] द्रुतं[4] ॥
वीसलसागर नाम रच्यो कासार[5] रीति जुत ॥
अर्थिन लुटाय वैभव अतुल दिय भोजन लक्खन द्विजन ॥
अजमेर नगर वीसल अधिप इम बिलसत चहुवान इन[6] ।१२।

दोहा

संभरसन प्रामारि सो, आई पुनि अजमेर ॥
बिलखानों नृप तस विरह, बुल्लिलई[7] तिहिँ बेर ॥ १३ ॥

षट्पात्

प्रामारीरस रत्त[8] रहैं वीसलनरेस मन ॥
ऋतुकालहु तजि रीति इतर[9] रानिन इच्छैँ नन ॥
तब संवत्ति[10] सब तमकि[11] भई एकत्र सोकभरि ॥
किय उपाय नृपकेर काम[12] नासन बिचार करि ॥
प्रच्छन्न इक्क कापालिकिय[13] बुल्लि रु तस अनुसरि[14] बचन ॥
छितिपहिँ[15] खवाय औषध कछुक पूंहत[16] कर्यो तिन पुरुखपन १४
मदननास[17] लखि मोद सकल छोर्यो नृप वीसल ॥
तुरग ब्रह्मचारी[18] सु रहैं खोजत उपाय बल ॥
उज्जमासके[19] अंत गयो न्हावन तीरथगुरु[20] ॥

---

१ तालाव २ पवित्र और सुहावना ३ लाखों रुपये लगाकर ४ शीघ्र ५ तालाव, याचकों को बहुत वैभव देकर ६ चहुवानों का सूर्य। १२। ७ बुलवा ली ॥ १३ ॥ वीसलदेव का मन राणी प्रामारी में ८ आसक्त था इस कारण रीति को छोड़कर ९ अन्य राणियों को ऋतुकाल में भी नहीं चाहता (ऋतुकाल में स्त्री को ऋतुदान नहीं देने का धर्मशास्त्र में दोष लिखा है) इसकारण सब १० सोकों ने ११ क्रोध करके १२ राजा के कामदेव का नाश करने का विचार किया और एक १३ कालबेलनी (गारुड़ की स्त्री) को छाने बुलाकर उसके कहने के १४ अनुसार १५ राजा को औषधि खिलाकर उसके पुरुषपन का १६ नाश करदिया ॥ १४ ॥ १७ कामदेव का नाश हुआ जानकर वीसलदेव ने सब आनन्द छोड़ दिया और वह ब्रह्मचारी १८ मन में बल बढ़ाने का उपाय सोचता रहा १९ कार्तिक मास के अन्त में २० पुष्कर स्नान करने को गया वहां

॥ षट्पात् ॥

सुनि बीसल करि कुंच आय गोकर्ण[1] ईस थल[2] ॥
अद्रिदरी[3] बिच इक्खि पुज्जि लिंगहिं बिधि पुष्कल[4] ॥
अष्ट१६बिरचि उपचार[5] मत्थ डारिय कुसुमंजलि[6] ॥
आनि प्रदक्खिन अर्द्ध[7] किन्न नुति[8]१नति२बिन्नति३बलि ॥
इक सिद्ध सिवांलयमैं[10] मिल्यो पूजन किय ताकोहि पुनि ॥
परिपाय कह्यो आसय[11] नृपति सिद्ध कह्यो हितलाय सुनि२३

॥ दोहा ॥

होत कहा पूजैं हमहिं, ए सेवहु ईसानैं[12] ॥
सिद्ध होन तव संकलप, चाहत हमहु चुहान ॥ २४ ॥
पुब्बकाल[13] रावन प्रमुख[14], इहाँ तपन तप आय ॥
गिरिस इष्ट कारि घर गये, प्रबल सिद्धि सब पाय ॥ २५ ॥
तातैं संकरलिंग तुम, भजहु भक्तिकरि भूप ॥
इच्छित सब पावहु अरहिं[15], रानिन रति अनुरूप ॥ २६ ॥
दै गरिमा[16]१लघिमा२दुवरहि, औषध इक्क१उपेत[17] ॥
सिद्ध गयो उठि तब सुपहु, हर सेये स्मरहेत[18] ॥ २७ ॥
कलस पूरि गोदुग्ध करि, सिवसिर सहँस[19]१०००चढाय ॥
निर्जल त्रय३उपवास नृप, करे भक्तिनतकाय ॥ २८ ॥

करने को ॥ २२ ॥ १ गोकर्णेश्वर महादेव के स्थल पर २ पर्वत की गुफा में शिवलिंग को देखकर ३ बहुत विधि से ४ षोडशोपचार पूजा करके ५ पुष्पों की अंजलि भरकर मस्तक पर डाली और ६ आधी परिक्रमा करके ८ नम्रता पूर्वक ७ स्तुति करके फिर ९ विशेष नम्रता की १० शिव के मंदिर में. उस सिद्ध से राजा ने अपना ११ अभिप्राय कहा ॥ २३ ॥ १२ इन शिव का पूजन करो॥२४॥१३पहिले समय में रावण १४ आदि यहां पर तपने को आकर शिव का इष्ट धारण करके॥ २५ ॥१५ शीघ्र ही राणियां की रति के सदृश बांछित फल पावेगा ॥ २६ ॥ एक औषधि १७ सहित १६गरिमा और लघिमा नाम की दो सिद्धि(अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियां हैं)दी १८ कामदेव के बढाने के अर्थ महादेव का सेवन किया ॥४७॥ १९ सहस्र धारा करके अथवा गोदुग्ध से भरेहुए सहस्र कलश चढाये ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि बीसल करि कुंच आय गोकर्ण[1] ईस थल ॥
अद्रिदरी[2] बिच इक्खि[3] पुज्जि लिंगहिं बिधि पुष्कल[4] ॥
अष्ट१६बिरचि उपचार[5] मत्थ डारिय कुसुमंजलि ॥
आनि प्रदक्खिन अर्द्ध[6] किन्न नुति[7]१नति२बिन्नति३बलि ॥
इक सिद्ध सिवालय[10]मैं मिल्यो पूजन किय ताकोहि पुनि ॥
परिपाय कह्यो आसय[11] नृपति सिद्ध कह्यो हितलाय सुनि २३

॥ दोहा ॥

होत कहा पूजैं हमहिं, ए सेवहु ईसानें[12] ॥
सिद्ध होन तव संकलप, चाहत हमहु चुहान ॥ २४ ॥
पुब्बकाल[13] रावन प्रमुख[14], इहाँ तपन तप आय ॥
गिरिस इष्ट करि घर गये, प्रबल सिद्धि सब पाय ॥ २५ ॥
तातैं संकरलिंग तुम, भजहु भक्तिकरि भूप ॥
इच्छित सब पावहु अरहि[15], रानिन रति अनुरूप ॥ २६ ॥
दै गरिमा[16]१लघिमा२दुवरहिं, औषध इक्क१उपेत[17] ॥
सिद्ध गयो उठि तब सुपहु, हर सेये स्मरहेत[18] ॥ २७ ॥
कलस पूरि गोदुग्ध करि, सिवसिर सहँस[19]१०००चढाय ॥
निर्जल त्रय३उपवास नृप, करे भक्तिनतकाय ॥ २८ ॥

ने को ॥ २२ ॥ १ गोकर्णेश्वर महादेव के स्थल पर २ पर्वत की गुफा में ...ग को देखकर ३ बहुत विधि से ४ षोडशोपचार पूजा करके ५ ...की अंजलि भरकर मस्तक पर डाली और ६ आधी परिक्रमा करके ८ नम्रता पूर्वक ७ स्तुति करके फिर ९ विशेष नम्रता की १० शिव के मंदिर में. उस सिद्ध से राजा ने अपना ११ अभिप्राय कहा ॥ २३ ॥ १२ इन शिव का पूजन करो॥२४॥१३पहिले समय में रावण १४ आदि यहां पर तपने को आकर शिव का इष्ट धारण करके॥ २५ ॥१५ शीघ्र ही राणियों की रति के सदृश बांछित फल पावेगा ॥ २६ ॥ एक औषधि १७ सहित १६गरिमा और लघिमा नाम की दो सिद्धि(अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियां हैं)दी १८ कामदेव के बढाने के अर्थ महादेव का सेवन किया ॥२७॥ १९ सहस्र धारा करके अथवा गोदुग्ध से भरेहुए सहस्र कलश चढाये ॥ २८ ॥

दूजी२ रत्तिहु सोहि दुख, प्रामारी पुनि पाय ॥
तीजे३ दिन कछु रोग कहि, न गई देवं मनाय ॥ ३६ ॥
ताकी बुल्लि सवत्ति तब, रक्खी बीसल रत्ति ॥
सोहु छुटी भरि नाकसल, घर पत्ती डर घत्ति ॥ ३७ ॥
रानीजन सब इम हुके, इक्क१ इक्क१ निस दुख इक्खि ॥
दासीजन जिततित दुरे, संतत रतंभय सिक्खि ॥ ३८ ॥
एनी१ तिय नरअस्वर सौं, हा करि पावत हारि ॥
बीसलकौं इम लखि विसम, नटी हटी सब नारि ॥ ३९ ॥
औषध इक१ सिद्धीउभय२, संभरकौं दिय सिद्ध॥
जो औषध खातहि जग्यो, याकै दर्पकं इद्ध ॥ ४० ॥
तातैं सब अवरोधं तिय, हाहा करि करि हारि ॥

---

१ रात्रि भी २ इष्टदेव मनाकर प्रामारी की ३सोक को बुलाकर वीसलदेव ने ४ रात्रि में अपने पास रक्खी सोभी ५नासिका में सलवट भरकर (नासिका में सल भरना अत्यन्त दुःख का सूचक है) ७भय भरकर घर ६गई ८निरंतर ९मैथुन करने के भय से ॥ ३८ ॥ १० मृगी स्त्री ११ अश्वपुरुष से (वात्स्यायन कामसूत्र में शश,वृष और अश्व तीन प्रकार के पुरुष लिखे हैं इनमें छः अंगुल से लेकर आठ अंगुल लंबा जिसका लिंग होवे उसका नाम शश, और आठ से लेकर बारह अंगुल के लंबे लिंगवाले का नाम वृष, और बारह अंगुल से अधिक लंबे लिंगवाले का नाम अश्व है, इनमें शश के लिये मृगी स्त्री, और वृष के लिये वड़वा (घोड़ी), और अश्व के लिये हस्तिनी स्त्रीका समागम सम है, और इससे उलटपलट होना विषम है. इस विषमता में छोटे लिंगवाले पुरुष से बड़ी (गहरी) योनिवाली स्त्री के संभोग में स्त्री को अतृप्ति, और लम्बे लिंगवाले पुरुष से लघु योनिवाली स्त्री के संभोग में कष्ट होता है. मतान्तर से चार प्रकार के पुरुष और चार प्रकार की स्त्रियें मानते हैं. यथाह रतिमञ्जरी "शशके पद्मिनी तुष्टा मृगे तुष्टा च चित्रिणी॥ वृषभे शङ्खिनी तुष्टा हये तुष्टा च हस्तिनी" इनमें छः अंगुल के लिंगवाला शश, आठ अंगुल लिंगवाला मृग,दश अंगुल तक लिंगवाला वृषभ और बारह अंगुल तक लंबे लिंगवाला अश्व और इसीप्रमाण से गहरी योनिवाली चार प्रकार की पद्मिनी आदि स्त्रियां हैं) १२ हाहाकार करके हार पाती हैं इसीप्रकार बीसलदेव को १३ विषम देखकर सब स्त्रियें नटकर हट गईं ॥ ३९ ॥ १४ कामदेव १५ वृद्धि पाकर ॥ ४० ॥ १६ जनाने की स्त्रियें

दूजी२ रत्तिहु सोहि दुख, भ्रामारी पुनि पाय ॥
तीजे३ दिन कछु रोग कहि, न गई देवं मनाय ॥ ३६ ॥
ताकी बुल्लि सवत्ति तब, रक्खी बीसल रत्ति[4] ॥
सोहु छुटी भरि नाकसल्ल, घर पत्ती डर घत्ति ॥ ३७ ॥
रानीजन सब इम रुके, इक्क१ इक्क१ निस दुख इक्खि ॥
दासीजन जिततित दुरे, संतत रतंभय सिक्खि ॥ ३८ ॥
एनी१ तिय नरअस्वर सौं, हाँ करि पावत हारि ॥
बीसलकौं इम लखि बिसम, नटी हटी सब नारि ॥ ३९ ॥
औषध इक१ सिद्धीउभय२, संभरकौं दिय सिद्ध॥
जो औषध खातहि जग्यो, याकै दर्पकै इद्ध ॥ ४० ॥
तातैं सब अवरोधं तिय, हाहा करि करि हारि ॥

---

१ रात्रि भी २ इष्टदेव मनाकर भ्रामारी की ३सोक को बुलाकर वीसलदेव ने ४ रात्रि में अपने पास रक्खी सोभी५नासिका में सलवट भरकर (नासिका में सल भरना अत्यन्त दुःख का सूचक है)७भय भरकर घर६गई८निरंतर९मैथुन करने के भय से ॥ ३८ ॥ १० मृगी स्त्री ११ अश्वपुरुष से (वात्स्यायन कामसूत्र में शश,वृष और अश्व तीन प्रकार के पुरुष लिखे हैं इनमें छः अंगुल से लेकर आठ अंगुल लंबा जिसका लिंग होवे उसका नाम शश, और आठ से लेकर बारह अंगुल के लंबे लिंगवाले का नाम वृष, और बारह अंगुल से अधिक लंबे लिंगवाले का नाम अश्व है, इनमें शश के लिये मृगी स्त्री, और वृष के लिये बड़वा (घोड़ी), और अश्व के लिये हस्तिनी स्त्री का समागम सम है, और इससे उलटपलट होना विषम है. इस विषमता में छोटे लिंगवाले पुरुष से बड़ी (गहरी) योनिवाली स्त्री के संभोग में स्त्री को अतृप्ति, और लम्बे लिंगवाले पुरुष से लघु योनिवाली स्त्री के संभोग में कष्ट होता है. मतान्तर से चार प्रकार के पुरुष और चार प्रकार की स्त्रियें मानते हैं. यथाह रतिमञ्जरी "शशके पद्मिनी तुष्टा मृगे तुष्टा च चित्रिणी॥ वृषभे शङ्खिनी तुष्टा हये तुष्टा च हस्तिनी" इनमें छः अंगुल के लिंगवाला शश, आठ अंगुल लिंगवाला मृग,दश अंगुल तक लिंगवाला वृषभ और बारह अंगुल तक लंबे लिंगवाला अश्व और इसीप्रमाण से गहरी योनिवाली चार प्रकार की पद्मिनी आदि स्त्रियां हैं) १२ हाहाकार करके हार पाती है इसीप्रकार वीसलदेव को १३ विषम देखकर सब स्त्रियें नटकर हट गई ॥ ३९ ॥ १४ कामदेव १५ वृद्धि पाकर ॥ ४० ॥ १६ जनाने की स्त्रियें

लिय सोक्कति१ जालोर२ लग, पुहवी अतुल प्रसंस ॥४६॥
कह्यो नृपति घरबंट३ करि, प्रमदा४ इक१ मो पास ॥
हितकरि भेजहु मैं हरूँ, तुम पर जो अरि त्रास ॥ ४७ ॥
प्रकृतिनसौं५ इम कहि सुपहु, पट्टु कायत्थ कृपाल ॥
संभरसौं बुल्ल्यो सचिव, सो द्रुत बुद्धि विसाल ॥ ४८॥
जनक६ पास पठयो जबहि, सचिव कुमर सारंग ॥
आय भेट किन्ने दुर७असि, जटित रत्न हित जंग ॥ ४९ ॥
मंडलाग्र तिनमाँहिंसौं, बीसल नृप इक१ बंधि ॥
चालुक्कन उप्पर चढ्यो, सबल मुच्छ कर१० संधि ॥ ५० ॥
सुररिरहे जे वहु मिले, चढत भूप चहुवान ॥
तस वीसलसागर तटहिं, मंडिय प्रथम मिलान११ ॥ ५१ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचरडासिवंशवर्णने चाहुवाणवीसलदेवत्यक्तजैनधर्मगृहीतप्रहरणस्वकुमारशारङ्गदेवशाकम्भरद्रङ्गप्रेषणाऽजमेरनगरपारिसरबीसलसागरकासारनिर्माणात्यक्तान्यसहधर्मिणीसङ्गधर्माधिराजिनिरन्तरप्रामारीसङ्गसेवनतत्सपत्नीजनभेषजप्रदानवीसलदेवदर्पकना

अत्यन्त १ प्रशंसावाली २ भूमि लेली ॥ ४६ ॥ राजा ने कहा कि तुम्हारे ३ घरों पर बंट करके प्रत्येक दिन एक एक ४ स्त्री हित करके भेजो तो मैं तुम्हारे शत्रु की त्रास है सो मेट दूं ॥ ४७ ॥ ५ राज्य के अमात्यादि छः अंग हैं जिनको यह कहकर सांभर से बड़े बुद्धिमान् कृपाल नामक चतुर कायस्थ को बुलाया ॥ ४८ ॥ ६ पिता बीसलदेव के पास सारंग कुमर ने उस सचिव को भेजा जिसने आकर रत्नों के ८ जड़े हुए दो ७ खड्ग युद्ध के लिये भेट किये ९ खड्ग १० हाथ में मूंछ पकड़कर ॥ ५० ॥ ११ पहला मुकाम बीसलसागर पर दिया ॥ ५१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण बीसलदेव का जैनधर्म छोड़कर शस्त्र ग्रहण कियेहुए अपने कुमर सारंगदेव को सांभर नगर भेजना, अजमेर के समीप की भूमि में बीसलसागर बनाना, अन्य विवाहित स्त्रियों को छोड़कर धर्माधिराज के पुत्र(बीसलदेव)का निरन्तर प्रामारी राणी का संग सेवन करना, उस प्रामारी की सोकों का औषधि देकर बीसलदेव का कामनाश करना, माहात्म्य सुनकर राजा का

लिय सोक्रति१ जालोर२ लग, पुहवी अतुल प्रसंस ॥४६॥
कह्यो नृपति घरबंट करि, प्रमदा इक१ मो पास ॥
हितकरि भेजहु मैं हरूँ, तुम पर जो अरि त्रास ॥ ४७ ॥
प्रकृतिनसौं इम कहि सुपहु, पटु कायत्थ कृपाल ॥
संभरसौं बुल्ल्यो सचिव, सो द्रुत बुद्धि विसाल ॥ ४८॥
जनकं पास पठयो जवहि, सचिव कुमर सारंग ॥
आय भेट किन्ने दु२असि, जटित रत्न हित जंग ॥ ४९ ॥
मंडलाग्र तिनमाँहिसौं, बीसल नृप इक१ बंधि ॥
चालुक्कन उप्पर चढ्यो, सवल मुच्छ कर संधि ॥ ५० ॥
मुररिरहे जे वहु मिले, चढत भूप चहुवान ॥
तस बीसलसागर तटहिं, मंडिय पृथम मिलान ॥ ५१ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णने चाहुवाणबीसलदेवत्यक्तजैनधर्मगृहीतप्रहरणस्वकुमारशारङ्गदेवशाकम्भरदङ्गप्रेषणाऽजमेरनगरपरिसरबीसलसागरकासारनिर्माणात्यक्तान्यसहधर्मिणीसङ्गधर्माधिराजिनिरन्तरप्रामारीसङ्गसेवनतत्सपत्नीजनभेषजप्रदानवीसलदेवदर्पकना

अत्यन्त १ प्रशंसावाली २ भूमि लेली ॥ ४६ ॥ राजा ने कहा कि तुम्हारे ३ घरों पर बंट करके प्रत्येक दिन एक एक ४ स्त्री हित करके भेजो तो मैं तुम्हारे शत्रु की त्रास है सो मेट दूं ॥ ४७ ॥ ५ राज्य के अमात्यादि छः अंग हैं जिनको यह कहकर सांभर से बड़े बुद्धिमान् कृपाल नामक चतुर कायस्थ को बुलाया ॥ ४८ ॥ ६ पिता बीसलदेव के पास सारंग कुमर ने उस सचिव को भेजा जिसने आकर रत्नों के ८ जड़े हुए दो ७ खड्ग युद्ध के लिये भेट किये ९ खड्ग १० हाथ में मूंछ पकड़कर ॥ ५० ॥ ११ पहला मुकाम बीसलसागर पर दिया ॥ ५१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण बीसलदेव का जैनधर्म छोड़कर शस्त्र ग्रहण कियेहुए अपने कुमर सारंगदेव को सांभर नगर भेजना, अजमेर के समीप की भूमि में बीसलसागर बनाना, अन्य विवाहित स्त्रियों को छोड़कर धर्माधिराज के पुत्र(बीसलदेव) का निरन्तर प्रामारी राणी का संग सेवन करना, उस प्रामारी की सोकों का औषधि देकर बीसलदेव का कामनाश करना, माहात्म्य सुनकर राजा का

रघुराज भूप मंडोवरेस, प्रतिहार मिल्यो करि भेट पेस ॥
तिम मद्दनसिंह१नृप प्रातिहार, आयो सु उपायन२ लै उदार॥३॥
नृप सभामुकुट३ गोहिल्ल विनीत,प्राबासर४तोमर प्रनतप्रीत ॥
मेवातईस मोहिल्ल महेस५, दिय भेट दंदुनाँपुर प्रदेस ॥४॥
कूरमनृप अंतरवेद केर, सह ढोकन३ आये हरि६ सुमेर७॥
कूरम अटेरपति बिजयकर्ण८,सो आयो करिकर४ कर५ सुवर्ण५
द्योसापति कूरम सोढदेव९, सोपायन६ आयो बिहित७ सेव ॥
भेटहि पठाय भटनैर भूप, रानिग१०कह्यो हित आनुरूप ॥६॥
मुलतानपति११ रु ठठ्ठामहीप१२, सह भेट सचिव पठये समीप ॥
भट्टीनृप जैसलमेर भानु१३, संक्यो घन बरसत जिम कृसानु९ ॥७॥
गो ब्रह्मतालनृप भजि गनेस१४, दिन्नौं तजि डर भर१० सिंधुदेस ॥
प्रामार उदय१५लग्गो सु पाय, सह जैतसिंह१६ सोढा सुभाय ८
जवनहु बलोच१अरु मेर२जत्थ, सेवन चलि आये भेटसत्थ ॥
॥ ९ ॥

मोरी१ बडगुज्जर२ मलहनास३, निर्वान४ डोड५ लच्छीनिवास११ ॥
आये चंदेल६ रु मंकुवान१२७, सैंगर८ रु बैस९ दाहिम१० सुजान॥१०॥
इत्यादि मिले नृपतैं अनेक, टरिबैठै चालुक१३ बीरटेक ॥
थिर राज्य देस गुजरातथान, अनिहलपुरपट्टनि जोरवान ॥ ११ ॥
चालुकनृप बालुकराज१४ चंड, देत जु बहु भूपन दुसह दंड ॥
आये सगोत्र बहुबंधु ओर, निजदिनन बढे जितातित सजोर॥१२॥

---

१ मंडोवर का पति २भेट लेकर(हाथी घोड़ा आदि राज्य सामग्री को उपायन कहते हैं) ३धोक देने के अर्थ में देशी प्राकृत का ढोकन शब्द है अर्थात् अत्यन्त नम्रता सहित अथवा भेट सहित ४ हाथ में ५ खिराज का सुवर्ण लेकर ॥५॥ ६भेट सहित ७ सेवा करने को ८ अपने सदृश हित प्रकट किया॥६॥मेघ के वर्षने से ९ अग्नि शंक जाता है ऐसे जैसलमेर का भाटी डर गया ॥ ७ ॥ डर के १० भार से सिंधु (सिन्धनदी के पास का) देश छोडकर राजा गनेश ब्रह्मताल में भागगया ॥८॥ ९ ॥ ११ लक्ष्मी का घर १२ झाला १३ सोलंखी ॥११॥ १४ बालुकराज नामक ॥ १२ ॥

रघुराज भूप मंडोवरेस[1], प्रतिहार मिल्यो करि भेट पेस ॥
तिम महनसिंह१नृप प्रातिहार, आयो सु उपायन[2] लै उदार॥३॥
नृप सभामुकुट३ गोहिल्ल बिनीत,प्राबासर४तोमर प्रनतप्रीत ॥
मेवातईस मोहिल्ल महेस५, दिय भेट दंदुनाँपुर प्रदेस ॥४॥
कूरमनृप अंतरवेद केर, सह ढोकन[3] आये हरि६ सुमेर७॥
कूरम अटेरपति बिजयकर्ण८,सो आयो करिकर[4] कर[5] सुवर्ण५
द्योसापति कूरम सोढदेव९, सोपायन[6] आयो बिहितँ सेव ॥
भेटहि पठाय भटनैर भूप, रानिंग१०कह्यो हित आनुरूप ॥६॥
मुलतानपति११ रु ठट्ठामहीप१२, सह भेट सचिव पठये समीप ॥
भट्टीनृप जैसलमेर भानु१३, संक्यो घन बरसत जिम कृसानु ॥७॥
गो बृह्मतालनृप भजि गनेस१४, दिन्नौं ताजि डर भँर सिंधुदेस ॥
प्रामार उदय१५लग्गो सु पाय, सह जैतसिंह१६ सोढा सुभाय ८
जवनहु बलोच१अरु मेर२जत्थ, सेवन चलि आये भेटसत्थ ॥
॥ ९ ॥

मोरी१ बडगुज्जर२ मल्हनास३, निर्वान४ डोड५ लच्छीनिवास[11] ॥
आये चंदेल६ रु मंकुवान[12]७, सैंगर८ रु बैस९ दाहिम१० सुजान।१०।
इत्यादि मिले नृपतैं अनेक, टरिबैठे चालुक[13] बीरटेक ॥
थिर राज्य देस गुजरातथान, अनिहल्लपुरपट्टनि जोरवान ॥ ११ ॥
चालुकनृप बालुकराज[14] चंड, देत जु बहु भूपन दुसह दंड ॥
आये सगोत्र बहुबंधु ओर, निजदिनन बढे जिततित सजोर॥१२॥

---

१ मंडोवर का पति २भेट लेकर(हाथी घोड़ा आदि राज्य सामग्री को उपायन कहते हैं) ३धोक देने के अर्थ में देशी प्राकृत का ढोकन शब्द है अर्थात् अत्यन्त नम्रता सहित अथवा भेट सहित ४ हाथ में ५ खिराज का सुवर्ण लेकर ॥५॥ ६भेट सहित ७ सेवा करने को ८ अपने सदृश हित प्रकट किया॥६॥मेघ के वर्षने से ९ अग्नि शंक जाता है ऐसे जैसलमेर का भाटी डर गया ॥ ७ ॥ डर के १० भार से सिंधु (सिन्धनदी के पास का) देश छोडकर राजा गनेश ब्रह्मताल में भागगया ॥८॥ ९ ॥ ११ लक्ष्मी का घर १२ झाला १३ सोलंखी ॥११॥ १४ बालुकराज नामक ॥ १२ ॥

ऋतु सिसिर माघ इम पारि रोरै[1], चहुवान दलै गुजरात चोर ॥
यह सुनत खिज्जि चालुक अधीस, सजि दंस[2] चढ्यो दंमि[3] नागसीस
श्रीकंठ बुल्लि बंदी[4] स्वकीय, बीसलपँहँ पठयो लखि बलीय[5] ॥
सूचन किय तासौं प्रथम साम[6], न बनैं तब जंपहु लरन नाम ॥२३॥
वह बंदी बीसल अग्ग आय, बुल्यो अनेक नयमय[7] बनाय ॥
जोलौं अरि अरिसिर देत जोर, अच्छी नहिं तोलौं लट ओर ॥२४॥
बपुरे[8] पकराये बनिक[9] ब्रातैं, कैसी यह अतिबलंता[10] कहात ॥
हमरे नृप पठई यह कहाय, मन्नहु स्वतंत्र[11] हमकौं मिटाय ॥२५॥
जो नहिं बिरोध तो गेह जाहु, हठ बैर ततो भुजबल दिखाहु ॥
हो प्रबल अप्प जैहो न हारि, मंडल यह लैहो हमहिं मारि ॥२६॥
रुठो सु सुनत चहुवानराय, अंतिकं[12] लिय चालुकराज आय ॥
बीसल दल मंडिय चक्रव्यूह, जिहँग[13] किय चालुक कटक जूँह[14] ॥२७॥
पहुँचो दुरओर भट होत प्रात, घमसानं[15] मच्यो बलवान घात ॥
संक्यो लखि चालुक[16] स्वीय सत्थ, तुरगँहिं[17] उडाय हुव अग्ग तत्थ २८
दिन च्यारि४ जाम[18] रन हुव दुरंत[19], मंडिय पुनि दोउन१ सिविरं[20] मंत
रनथंभि दुव२हि मुररे नरेस, दिय तिन मिलानं[21] जितातित प्रदेस२९
उपनाँह[22] घायलन किय दुरओर, जान्यौं बिहान[23] चहुवान जोर ॥
चालुक्य सचिव तब मिलि दुचित्तं[24], बिरच्यो प्रपंच इक कपटवित्त[25] ३०

१भय पटककर २कवच सम्हकर शेषनाग के शीस को ३दंडित करके चढा श्रीकंठ नामक अपने४ भाट को बुलाकर ५ बीसल को बलवान् देख कर उसके पास भेजा और उसको जनाया कि पाहिले ६ मिलाप करने का यत्न करना ७ नीतिमय बातें बनाकर ॥ २४ ॥ ८ बिचारे ९ बनियों के समूह को पकड़ाया सो यह कैसा १० बलवान् पन है ११ जब हमको मिटादो तब तुम अपने को स्वतन्त्र मानो ॥२५॥२६॥ चालुकराज सोलंखी को १२ समीप लेलिया १४ सोलंखी की सेना के समूह ने १३ चक्रव्यूह रचा ॥ २७ ॥ १५ युद्ध १६ चालुकराज अपनी सेना को डरी हुई देखकर१७ घोड़ा उड़ाकर तहां आगे हुआ ॥ २८ ॥ चार दिन और चार१८पहर१९ दूर है अन्त जिसका ऐसा युद्ध हुआ २० डेरों में सलाह की २१ मुकाम किये ॥२९॥२२मल्लमपट्टी २३ प्रभात होतेही २४ उदास होकर २५ कपट ही है धन जिनके ऐसे

ऋतु सिसिर माघ इम पारि रोर[1], चहुवान दले गुजरात चोर ॥
यह सुनत खिज्जि चालुक अधीस, सजि दंस[2] चढ्यो दमि[3] नागसीस
श्रीकंठ बुल्लि बंदी[4] स्वकीय, बीसलपँहँ पठयो लखि बलीय[5] ॥
सूचन किय तासौं प्रथम साम[6], न बनैं तब जंपहु लरन नाम ॥२३॥
वह बंदी बीसल अग्ग आय, बुल्यो अनेक नयमय[7] बनाय ॥
जोलौं अरि अरिसिर देत जोर, अच्छी नहिं तोलौं लट ओर ॥२४॥
बपुरे[8] पकराये बनिक[9] ब्रात, कैसी यह अतिबलता[10] कहात ॥
हमरे नृप पठई यह कहाय, मन्नहु स्वतंत्र हमकौं मिटाय[11] ॥२५॥
जो नहिं बिरोध तो गेह जाहु, हठ बैर तो भुजबल दिखाहु ॥
हो प्रबल अप्प जैहो न हारि, मंडल यह लैहो हमहिं मारि ॥२६॥
रुठ्ठो सु सुनत चहुवानराय, अंतिकं[12] लिय चालुकराज आय ॥
बीसल दल मंडिय चक्रव्यूह, जिहिंग[13] किय चालुक कटक जूह[14] ॥२७॥
पहुँचो दुरओर भट होत प्रात, घमसानं[15] मच्यो बलवान घात ॥
संक्यो लखि बालुंक[16] स्वीय सत्थ, तुरगहिं[17] उडाय हुव अग्ग तत्थ २८
दिन च्यारि४ जामं[18] रन हुव दुरंतं[19], संडिय पुनि दोउन२ सिविरं[20] मंत
रनथंभि दुव२हि मुरर नरेस, दिय तिन मिलानं[21] जितजित प्रदेस २९
उपनाह[22] घायलन किय दुरओर, जान्यौं बिहानं[23] चहुवान जोर ॥
चालुक्य सचिव तब मिलि दुचित्तं[24], बिरच्यो प्रपंच इक कपटवित्त[25] ३०

१ भय पटक कर २ कवच सज्ज कर शेषनाग के शीस को ३ दंडित करके चढा श्री-कंठ नामक अपने ४ भाट को बुलाकर ५ बीसल को बलवान् देख कर उसके पास भेजा और उसको जनाया कि पाहिले ६ मिलाप करने का यत्न करना ७ नीतिमय बातें बनाकर ॥ २४ ॥ ८ बिचारे ९ बनियों के समूह को पकड़ाया सो यह कैसा १० बलवान् पन है ११ जब हमको मिटादो तब तुम अपने को स्वतन्त्र मानो ॥२५॥२६॥ बालुकराज सोलंखी को १२ समीप बोलिया १४ सोलंखी की सेना के समूह ने १३ चक्रव्यूह रचा ॥ २७ ॥ १५ युद्ध १६ बालुकराज अपनी सेना को डरी हुई देखकर १७ घोड़ा उड़ाकर तहां आगे हुआ ॥ २८ ॥ चार दिन और चार १८ पहर १९ दूर है अन्त जिसका ऐसा युद्ध हुआ २० डेरों में सलाह की २१ मुकाम किये ॥२९॥ २२ मल्लमपट्टी २३ प्रभात होतेही २४ उदास होकर २५ कपट ही है धन जिनके ऐसे

बीसल प्रमत्त प्रभुता बिगारि, व्है कामुक जैहैं राज्य हारि ॥
दिय नैर बसावन जिहिं निदेस, सो सिद्ध छिन्न[1] लैहैं असेस ॥३९॥
मंगैं सु खरच नवपुर[2] निमित्त, बिस्वस्त[3] देहु कितजात वित्त[4] ॥
चालुक अमात्य यह छल बिचारि, नृप कुंच करायउ नय निहारि ॥
पहु इम गुज्जरधर बिजयपाय, बीसल निजनामक पुर बसाय ॥
अजमेरनैर पुनि आय अप्प, दिनराति गह्यो कंदप्प[5] दप्प[6] ॥ ४१ ॥
बिक्रम सक रस गुन अंक ९३६ बेर, आयो नृपाल नन किय अबेर ॥
तबतैं धरनीधर प्रांत तत्थ, सुबस्यो बीसलपुर रीति सत्थ ॥४२॥

दोहा

बीसल क[illegible]जय, [illegible] इम आय ॥
रच्यो[8] सत[illegible]ल[illegible]य लाय ॥ ४३ ॥
सो गौरी उ[illegible]तप प्रीति ॥
कोउक सिद्ध [illegible]र, जोग भजत निजजीति[13] ॥४४॥
बरखा गेह बित[illegible] पुष्कर सरद पधारि ॥
गिरिकंदर[14] अंदर ग[illegible], निलज सती वह नारि ॥ ४५ ॥
भई समर्थ जु जोग भजि, सप्प्यो[15] नृपहिं रिसाय ॥
मानवभोजी[16] होहु तुम, रक्खस संभरराय ॥४६॥
आक्खिय रासेमांहिं[17] यह, बंदी चंदहु[18] बत्त ॥
बनिकसुताके सापबल, रक्खस भो अघरत्त[19] ॥४७॥

नहीं देवेंगे ॥ ३८ ॥ १ तैयार (बसाहुआ) ॥ ३९ ॥ २ नवीन पुर बसाने के लिये खरच मांगा सो ३ विश्वास करके दे दो ४ धन कहां जाता है ॥४०॥ ५ कामदेव का ६ घमण्ड ग्रहण किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ७ अपने घर ११ स्त्रियों को हृदय से लगाकर ९ निरन्तर १० कामदेव के रस में ८ रच गया ॥ ४३ ॥ १२ बनिये की पुत्री वह गौरी (जिसको बीसलदेव ने पुत्री करके परणाई थी और सारंगदेव कुमर की धाय की पुत्री बहिन थी) पुष्कर के पर्वत में १३ अपने मन को जीतकर ॥ ४४ ॥१४ पर्वत की गुफा में ॥ ४५ ॥ वह गौरी योग करके समर्थ होगई थी जिसने क्रोध करके बीसलदेव को १५ श्राप दिया कि हे सांभर का राजा तू १६ मनुष्यों को खानेवाला राक्षस हो ॥४६॥ १७ पृथ्वीराजरासा में चन्द १८ भाट ने भी यही कहा है कि १९ पाप में

बीसल्ल प्रमत्त प्रभुता बिगारि, व्है कामुक जैहैं राज्य हारि ॥
दिय नैर बसावन जिहिं निदेस, सो सिद्ध छिन्न लैहैं असेस ॥३९॥
मंगैं सु खरच नवपुर[2] निमित्त, बिस्वस्त[3] देहु कितजात वित्त[4] ॥
चालुक अमात्य यह छल्ल बिचारि, नृप कुंच करायउ नय निहारि ॥
पहु इम गुज्जरधर बिजयपाय, बीसल निजनामक पुर बसाय ॥
अजमेरनैर पुनि आय अप्प, दिनराति गह्यो कंदप्प[5] दप्प[6] ॥ ४१ ॥
बिक्रम सक रस गुन अंक ९३६ बेर, आयो नृपाल्ल नन किय अवेर ॥
तबतैं धरनीधर प्रांत तत्थ, सुबस्यो बीसलपुर रीति सत्थ ॥४२॥

दोहा

बीसल क[illegible] जय, [illegible] इम आय ॥
[8]रच्यो सत[illegible] [illegible]य लाय ॥ ४३ ॥
सो गौरी उर[illegible] तप प्रीति ॥
कोउक सिद्ध [illegible]र, जोग भजत निजजीति[13] ॥४४॥
बरखा गेह बित[illegible] पुष्कर सरद पधारि ॥
गिरिकंदर[14] अंदर ग[illegible], निलज सती वह नारि ॥ ४५ ॥
भई समर्थ सु जोग भजि, सप्प्यो[15] नृपहिं रिसाय ॥
मानवभोजी[16] होहु तुम, रक्खस संभरराय ॥४६॥
[17]अक्खिय रासेमाँहिं यह, बंदी चंद[18]हु बत्त ॥
बनिकसुताके सापबल, रक्खस भो अघरत्त[19] ॥४७॥

नहीं देवेंगे ॥ ३८ ॥ १ तैयार (बसाहुआ) ॥ ३९ ॥ २ नवीन पुर बसाने के लिये खरच मांगा सो ३ विश्वास करके दे दो ४ धन कहां जाता है ॥४०॥ ५ कामदेव का ६ घमण्ड ग्रहण किया ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ७ अपने घर ११ स्त्रियों को हृदय से लगाकर ९ निरन्तर १० कामदेव के रस में ८ रच गया ॥ ४३ ॥ १२ बनिये की पुत्री वह गौरी (जिसको बीसलदेव ने पुत्री करके परणाई थी और सारंगदेव कुमर की धाय की पुत्री बहिन थी) पुष्कर के पर्वत में १३ अपने मन को जीतकर ॥ ४४ ॥ १४ पर्वत की गुफा में ॥ ४५ ॥ वह गौरी योग करके समर्थ होगई थी जिसने क्रोध करके बीसलदेव को १५ श्राप दिया कि हे सांभर का राजा तू १६ मनुष्यों को खानेवाला राक्षस हो ॥४६॥ १७ पृथ्वीराजरासा में चन्द १८ भाट ने भी यही कहा है कि १९ पाप में

नतच्छापप्राप्तराक्षसभावसन्देह१ विस्मय २ सूचनतत्सद्भावप्रमाणा
ऽभावदर्शनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥

आदित एकोनविंशत्युत्तरशततमः ॥ ११९ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सोरठा

पच्छिम सन जय पाय, दंमि[1] चालुक बालुकें[2] दुसह ॥
इम बीसल गृह आय, रह्यो अनर्गल[3] काम रत ॥ १ ॥

दोहा

पुष्कर मेला उर्ज्जें[4] पर, पिक्खन बीसल पत्त[5] ॥
नागअद्रि[6] द्रोनिन[7] नृप सु, रमत रह्यो अनुरत्त[8] ॥ २ ॥
द्रोनि इक्क बिच कंदरा, विमल[9] सलिल तरु अंत[10] ॥
तत्थ हुती सु तपस्विनी, गौरी सुंदर गात ॥ ३ ॥
स्वीयँ[11] कुमर सारंगकी, धात्रेयी[12] भगिनी सु ॥
दोरि गही नृप देखतहि, गम्य[13] नही न गिनी सु ॥ ४ ॥

पादाकुलकम्

पुत्री करि अग्ग जु परिनाई, भनी बहिनि सारंगहु भाई ॥
सो पति मरत सहि दुख संजम[14], रही सु पुष्कर गहन[15] मनोरम ॥ ५ ॥
कोउक महंत सिद्ध सेवन करि, अष्ट८हि अंग जोग भव उद्धरि ॥

आश्चर्य सूचन करके इस नवीन समय में ऐसे प्रमाणों का अभाव दिखाने का दशमा मयूख समाप्त हुआ।१०।और आदि से एक सौ उन्नीस मयूख हुए

१ दंड देकर २ बालुकराज सोलंखी को ३ बिना रोक टोक कामदेव में रत रहा ॥ १ ॥ ४ कार्तिक मास में पुष्कर के मेले को देखने बीसलदेव ५ गया ६ नागपहाड़ (अजमेर और पुष्कर के बीच में पर्वत है उसका नाम नागपहाड़ है) की ७ खाद्रियों (पर्वत में दोनों ओर का भाग ऊंचा होकर बीच में गहराई होवे उसका नाम द्रोणि है) अथवा खहोलों में ८ प्रीतिपूर्वक रमता रहा ॥ २ ॥ ९ निर्मल जल और वृक्षों के १० समूह में वह गौरी तपस्विनी थी ॥ ३ ॥ ११ अपने कुमर सारंग की १२ धाय की बेटी बहिन थी उसको राजा ने दौड़कर पकड़ ली और वह १३ गमन करने योग्य नहीं थी इस बात को नहीं गिनी १४ इंद्रियों को रोकने का दुःख सहकर १५ वन में

नतच्छापप्राप्तराक्षसभावसन्देह१ विस्मय २ सूचनतत्सद्भावप्रमाणा
ऽभावदर्शनं दशमो १० मयूखः ॥ १० ॥
आदित एकोनविंशत्युत्तरशततमः ॥ ११९ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सोरठा

पच्छिम सन जय पाय, दमि[1] चालुक बालुकं[2] दुसह ॥
इम बीसल गृह आय, रह्यो[3] अनर्गल काम रत ॥ १ ॥

दोहा

पुष्कर मेला उर्ज्ज[4] पर, पिक्खन बीसल पत्त[5] ॥
नागअद्रि[6] द्रोनिन[7] नृप सु, रमत रह्यो अनुरत्त ॥ २ ॥
द्रोनि इक्क बिच कंदरा, विमल[9] सलिल तरु[10] व्रात ॥
तत्थ हुती सु तपस्विनी, गौरी सुंदर गात ॥ ३ ॥
स्वीयं[11] कुमर सारंगकी, धात्रेयी[12] भगिनी सु ॥
दौरि गही नृप देखतहि, गम्य[13] नही न गिनी सु ॥ ४ ॥

पादाकुलकम्

पुत्री करि अग्ग जु परिनाई, भनी बहिनि सारंगहु भाई ॥
सो पति मरत सह्नि दुख संजम[14], रही सु पुष्कर गहन[15] मनोरम ॥ ५ ॥
कोउक महत सिद्ध सेवन करि, अष्टहि[8] अंग जोग भव उद्धरि ॥

आश्चर्य सूचन करके इस नवीन समय में ऐसे प्रमाणों का अभाव दिखाने का दशमा मयूख समाप्त हुआ।१०।और आदि से एक सौ उन्नीस मयूख हुए
१ दंड देकर २ बालुकराज सोलंखी को ३ बिना रोक टोक कामदेव में रत रहा ॥ १ ॥ ४ कार्तिक मास में पुष्कर के मेले को देखने बीसलदेव ५ गया ६ नागपहाड़ (अजमेर और पुष्कर के बीच में पर्वत है उसका नाम नागपहाड़ है) की ७ खाद्रियों (पर्वत में दोनों ओर का भाग ऊंचा होकर बीच में गहराई होवे उसका नाम द्रोणि है) अथवा खहोलों में ८ प्रीतिपूर्वक रमता रहा ॥ २ ॥ ९ निर्मल जल और वृक्षों के १० समूह में वह गौरी तपस्विनी थी ॥ ३ ॥ ११ अपने कुमर सारंग की १२ धाय की बेटी बहिन थी उसको राजा ने दौड़कर पकड़ ली और वह १३ गमन करने योग्य नहीं थी इस बात को नहीं गिनी १४ इंद्रियों को रोकने का दुःख सहकर १५ वन में

षट्पात्

लखि बीसल *अहि आत बान कोदंड सज्जकिय ॥
अर्द्धचंद्रकरि बान**फटा तस त्वरित कट्टिदिय ॥
लग्गो तरफन भुजग नृपहु***अपदत्र लखन गय ॥
तस पदत्र बिच आय छिप्यो उडि फन सु गरलमय ॥
लखि भूप आय हैवर चढन पय पदत्र पहिरत डस्यो ॥
पयसौं तुराय डार्यो फन सु गरल तास बीसल ग्रस्यो ॥१५॥

[दोहा]

औषध १ मंत्र २ अनेक किय, तदपि सिव न भो तास ॥
जहर लहरि चढि तनु तजिय, बीसल पाय बिनास ॥ १६॥
दम्म अब्ज१००००००००० मित दैनको, संभर पन न भयो सु ॥
कोटिबीस२०००००००० चय करि सक्यो, गड्डी भुव तजिगो सु ।१७।

(षट्पात)

प्रामारी पति मरत कियउ सहगौर्न रीति करि ॥
बुल्ली पावक बिसंत स्त्री जद्दोनि गब्भ धारि ॥
ताकै प्रकटहि तनय सूनु सारंगकेर सुत ॥
अक्खि यह रु सहि आगि हुव सु रानी पतिजुत हुत ॥
तोसौं कढ्यो सु रक्खस त्वरित खाये सबजन खोजकरि ॥
अजमेरनगर उज्जर गयो प्रब्ब जिततित मुलक परि ॥ १८ ॥

॥ १४ ॥ *सर्प को आता हुआ देखकर**फण काट लिया***राजा भी विना पगरक्खी (नंगे पगों से) देखने गया १ उस राजा की पगरखी में वह २ विषवाला फण छिपगया ३ घोड़े पर चढते समय पगरखी पहनते समय डसा ॥१५॥ ४ तोभी उसको ५ कीलन (आराम) नहीं हुआ ॥ १६ ॥ ६ अड़ब रुपये ७ संचय करसका था सो ॥ १७ ॥ ८ सती हुई ९ अग्नि में १० प्रवेश करते समय बोली कि सारंगदेव की स्त्री जादवणी के ११ गर्भ है उसके १२पुत्र होवेगा १३ हमारे पुत्र सारंगदेव के पुत्र होवेगा १४ अग्नि सहन करके पति सहित होम होगई १५ उस चिता से शीघ्र एक १६ राक्षस निकला १७देश में भागण पड़गई अर्थात् देश के लोग इधर उधर भाग गये

षट्पात्

लखि बीसल *अहि आत बान कोदंड सज्जकिय ॥
अर्द्धचंद्रकरि बान**फटा तस त्वरित काट्टिदिय ॥
लग्गो तरफन भुजग नृपहु***अपदत्र लखन गय ॥
तस पदत्र बिच आय छिप्यो उडि फन सु गरलमय ॥
लखि भूप आय हैवर चढन पय पदत्र पहिरत डस्यो ॥
पयसौं तुराय डास्यो फन सु गरल तास बीसल ग्रस्यो ॥१५॥

[दोहा]

औषध १ मंत्र २ अनेक किय, तदपि सिव न भो तास ॥
जहर लहरि चढि तनु तजिय, बीसल पाय बिनास ॥ १६॥
द्रम्म अब्ज१०००००००००मित दैनको, संभर पन न भयो सु ॥
कोटिबीस२०००००००० चय करि सक्यो, गड्डी भुव तजिगो सु ।१७।

(षट्पात्)

प्रामारी पति मरत कियउ सहगोर्न रीति करि ॥
बुल्ली पावक बिसंत स्त्री जद्दोनि गब्भ धरि ॥
ताके प्रकटहि तनय सूनु सारंगकेर सुत ॥
अक्खि यह रु सहि आगि हुव सु रानी पतिजुत हुत ॥
तासौं कढ्यो सु रक्खस त्वरित खाये सबजन खोजकरि ॥
अजमेरनगर उज्जर गयो प्रब्ब जिततित मुलक परि ॥ १८ ॥

॥ १४ ॥ *सर्प को आता हुआ देखकर**फण काट लिया***राजा भी विना पगरक्खी (नंगे पगों से) देखने गया १ उस राजा की पगरखी में वह २ विषवाला फण छिपगया ३ घोड़े पर चढते समय पगरखी पहनते समय डसा ॥१५॥ ४ तोभी उसके ५ कीलन (आराम) नहीं हुआ ॥ १६ ॥ ६ अड्ब रुपये ७ संचय करसका था सो ॥ १७ ॥ ८ सती हुई ९ अग्नि में १० प्रवेश करते समय बोली कि सारंगदेव की स्त्री जादवणी के ११ गर्भ है उसके १२पुत्र होवेगा १३ हमारे पुत्र सारंगदेव के पुत्र होवेगा १४ अग्नि सहन करके पति सहित होम होगी १५ उस चिता से शीघ्र एक १६ राक्षस निकला१७देश में भागमा पडगई अजमेर देश के लोग इधर उधर भाग गये

जुब्बनैर गिरिशृंग जो, उकुरू बैठत आय । २६ ॥

षट्पात्

देवराज जदुवंस भूप रनथंभ दुर्गभुव ॥
अरु गौरी अभिधान सुता ताकै सुंदर हुव ॥
सो दुलहनि सारंगदेव परिनय करि पाई ॥
अप्प चल्यो अजमेर तबहि पीहर पहुँचाई
गौरी गई सु रनथंभगढ हो दोहदलच्छनैं तसहि ॥
जँहँ नियति जोग जद्दोनि जैंनि ललितं भयो सुत समय लहि ।२७।

दोहा

मातुलँ किय उच्छव अमित, तकि डिड्डरकुल तंतु ॥
द्विजन तास अभिधान दिय, अल्हदेव १७३ अमंतु ॥२८॥
सत्त्र१ सास्त्र२ सिच्छौं गहिय, पंच५अब्दं वयपाय ॥
क्रम सह सब विद्या१कला२, सिक्ख्यो मति समुझाय।२९।
बारह१२ हायनँ होत बय, विद्या परखि सुबोध ॥
सब्बन लग्गो सत्त्र सब, जो मृगयारत जोध ॥ ३० ॥

षट्पात्

हरिन१ गँवय२ बाराह३ सिंह४ हत्थनगहि सँद्धैं ॥
सत्त्र करैं कहुँ सफल लाह नैंव नव तँहँ लद्धैं ॥
रनत्थंभपुर दुग्ग दरी द्रोनिनैं बिहरैं जँहँ ॥
एक सिद्ध निसँ अटत तपोधनैं पिक्खि गयो तँहँ ॥

जोबनेर के पर्वत के शिखर पर १ ऊकडू (पगों के बल) बैठता ॥ २६ ॥२ विवाह करके ३ गर्भ सहित ४ भाग्य से यादवणी ५ माता से ६ सुन्दर पुत्र हुआ ॥ २७ ॥ ७ मामा ने ८ उसको डिड्डुर चहुवाण के कुल का एक तन्तु मात्र देखकर ९ नाम १० अपराध रहित ॥ २८ ॥ ११ शिक्षा १२ पांच वर्ष की अवस्था पाकर॥२९॥ १३वर्ष की १४शिकार में प्रीति रखनेवाला ॥३०॥१५रोझ१६मारें१७लाभ १८नवीन नवीन, रणथंभोर१९गढ के पर्वत की २०गुफा और२१खाद्रियों में विहार करै वहां २२ रात्रि को २३फिरते समय २४तप ही हैं धन जिसके ऐसे सिद्ध को देखकर उस के पास गया

जुब्बनैर गिरिशृंग जो, उकुरू बैठत आय । २६ ॥

षट्पात्

देवराज जदुबंस भूप रनथंभ दुर्गभुव ॥
अरु गौरी अभिधान सुता ताकै सुंदर हुव ॥
सो दुलहनि सारंगदेव परिनय करि पाई ॥
अप्प चल्यो अजमेर तबहि पीहर पहुँचाई
गौरी गई सु रनथंभगढ हो दोहदलच्छनं तसहि ॥
जँहँ निर्यति जोग जहोनि जनि लालितं भयो सुत समय लहि ।२७।

दोहा

मातुल किय उच्छव अमित, तकि डिड्डुरकुल तंतु ॥
द्विजन तास अभिधान दिय, अल्लदेव १७३ अमंतु ॥२८॥
सख्ख१ साख्खर सिच्छों गहिय, पंच५ अब्दं वयपाय ॥
क्रम सह सब विद्या१ कला२, सिक्ख्यो मति समुझाय।२९।
बारह१२ हायनं होत बय, विद्या परखि सुबोध ॥
सख्खन लग्गो सख्ख सब, जो मृगयारत जोध ॥ ३० ॥

षट्पात्

हरिन१ गँवय२ बाराह३ सिंह४ हत्थनगहि संद्धैं ॥
सख्ख करैं कहुँ सफल लाह नव नव तँहँ लद्धैं ॥
रनत्थंभपुर दुग्ग दरी द्रोनिनं बिहरैं जँहँ ॥
एक सिद्ध निसं अटत तपोधनं पिक्खि गयो तँहँ ॥

जोवनेर के पर्वत के शिखर पर १ ऊकडू (पगों के बल) बैठता ॥ २६ ॥२ विवाह करके ३ गर्भ सहित ४ भाग्य से यादवणी ५ माता से ६ सुन्दर पुत्र हुआ ॥ २७ ॥ ७ मामा ने ८ उसको डिड्डुर चहुवाण के कुल का एक तन्तु मात्र देखकर ९ नाम १० अपराध रहित ॥ २८ ॥ ११ शिक्षा १२ पांच वर्ष की अवस्था पाकर॥२९॥ १३वर्ष की १४शिकार में प्रीति रखनेवाला ॥३०॥१५रोझ१६मारें१७लाभ १८नवीन नवीन, रणथंभोर१९गढ के पर्वत की २०गुफा और२१खाद्रियों में विहार करै वहां २२ रात्रि को २३फिरते समय २४तप ही है धन जिसके ऐसे सिद्ध को देखकर उस के पास गया

अब तावक प्रनिपत्ति लखि, रीझ्यो बिग्रहराज ॥
मंगहु बर जो इष्ट[1] मन, कोऊ दुर्लभ काज ॥३४॥
अन्नल तब किन्नी अरज, गतराज्यहि[2] प्रभु देहु ॥
करहु बितत[3] बीसल कुलहि, उभय[4] मिल्यो बर एहु ॥३५॥
ईंच्छित[5] भूपहिं अप्पि यह, सिद्ध चलिय स्वच्छंद[6] ॥
आयो गढ रनथंभ इम, संभर पुनि सानंद ॥ ३६ ॥
अन्नलकी अभिधा अपर[6], हुव इम बिग्रहराज ॥
बिक्ख्यो[7] तिहिं मातुल[8] कबहु, करत श्राद्ध[9] मुख काज ॥ ३७ ॥

षट्पात्

सुनि अन्नल सह नाम तत्थ मातामहादि[10] त्रय३ ॥
तिम तर्पन १ पुनि पिंड२ [11]बंदि बिरुदन बलि आव्हय[12]३ ॥
अरु अप्पहिं जामेय[13] कहनि४ ए सब बिचारि उर ॥
आये भरि निज नयन गयो गौरी पँहँ आतुर ॥
कट्टार कढ्ढि गदगद कह्यो बेग जननि सुत सुभ बहँहु[14] ॥
तव अग्ग धरौं सिर कट्टि मम कुलउदंत[15] कै सब कहहु ।३८।
क्यों अप्पन इत रहत क्यों न निज भुम्मि सम्हारत ॥
क्यों न जननि मम बिहित[16] श्राद्ध१तर्पन२ उच्चारत ॥
जनक[17] पितामह नाम क्यों न बंदिय[18] मम जंपत[19] ॥
मोहि कहत जामेय[20] इत सु अबिरत[21] हिय कंपत ॥
जद्दानि सु सुनि रोवत कहिय ध्रुवहिं[22] जानि पुत्रहिं मरत ॥

अब तेरी विशेष नम्रता(दंडवत्) देख कर हे विग्रहराज! मैं प्रसन्न हुआ हूं सो तेरे मन में १ वांछित होवे सो वर मांग२हमारा गयाहुआ राज्य ३ विस्तृत ४ वांछित५ स्वतंत्र ६ दूसरा नाम हुआ, उस विग्रहराज ने कभी ८ मामा को श्राद्ध ९ आदि कर्म करते ७ देखा ॥३७॥ उसमें तीनों१०मातामहों (नानों) के नाम सुने और ११ भाटलोगों के विरुदाने में फिर उन्हींके १२ नाम सुने और अपने को १३ भाणेज कहना, इन सब बातों को विचार कर १४ पुत्र का शुभ चाह कर १५ मेरे कुल का सब वृत्तान्त कहा ॥ ३८ ॥ १६ उचित १७ मेरे पिता और पितामह का नाम १८ भाट लोग क्यों नहीं १९ कहते और मुझको २० भाणेज कहते हैं २१ निरन्तर २२ निश्चै ही पुत्र

अब तावक प्रनिपात्ति लखि, रीझ्यो बिग्रहराज ॥
मंगहु वर जो इष्ट[1] मन, कोऊ दुर्लभ काज ॥३४॥
अन्नल तब किन्नी अरज, गतराज्यहि[2] प्रभु देहु ॥
करहु बितत[3] बीसल्ल कुलहि, उभय[4]मिल्यो बर एहु ॥३५॥
ईंच्छित भूपहिं अप्पि यह, सिद्ध चलिय स्वच्छंद[5] ॥
आयो गढ रनथंभ इम, संभर पुनि सानंद ॥ ३६ ॥
अन्नलकी अभिधा अपर[6], हुव इम बिग्रहराज ॥
बिक्ख्यो तिहिं मातुल[7] कबहु, करत श्राद्ध मुख[8] काज ॥ ३७ ॥

षट्पात्

सुनि अन्नल सह नाम तत्थ मातामहादि[10] त्रय३ ॥
तिम तर्पन १ पुनि पिंड२ [11]बंदि बिरुदन बलि आव्हयं[12]३ ॥
अरु अप्पहिं जामेयं[13] कहनि४ ए सब बिचारि उर ॥
आये भरि निज नयन गयो गौरी पँहँ आतुर ॥
कट्टार कढ्ढि गदगद कह्यो वेग जननि सुत सुभ बहँहु[14] ॥
तव अग्ग धरौं सिर कट्टि मम कुलउदंतं[15] कै सब कहहु ।३८।
क्यौं अप्पन इत रहत क्यौं न निज भुम्मि सम्हारत ॥
क्यौं न जननि मम बिहितं[16] श्राद्ध१तर्पन२ उच्चारत ॥
जनकं[17] पितामह नाम क्यौं न बंदियं[18] मम जंपत[19] ॥
मोहि कहत जामेयं[20] इत सु अबिरतं[21] हिय कंपत ॥
जहँाँनि सु सुनि रोवत कहिय ध्रुवंहिं[22] जानि पुत्रहिं मरत ॥

अब तेरी विशेष नम्रता(दंडवत्) देख कर हे विग्रहराज! मैं प्रसन्न हुआ हूं सो तेरे मन में १ वांछित होवे सो वर मांग२हमारा गयाहुआ राज्य ३ विस्तृत ४ वांछित५ स्वतंत्र ६ दूसरा नाम हुआ, उस विग्रहराज ने कभी ८ श्राद्ध ९ आदि कर्म करते ७ देखा ॥३७॥ उसमें तीनों१०मातामहों [illegible] नाम सुने और ११ भाटलोगों के विरुदान में फिर उन्हींके १२ [illegible] और अपने को १३ भाणेज कहना, इन सब बातों को विचार कर [illegible]का शुभ चाह कर १५ मेरे कुल का सब वृत्तान्त कहा ॥ ३८ ॥ १६ [illegible]७ मेरे पिता और पितामह का नाम १८ भाट लोग क्यों नहीं [illegible] और मुझको २० भाणेज कहते हैं २१ निरन्तर २२ निश्चै ही पुत्र

बुल्ल्यो विग्रहराज तब, जैहौं रक्खस पास ॥
कै अप्पन छिति[१] छोरिहै, कै करिहै मम नास ॥ ४६ ॥
चवि अन्नल[२] औसैं चल्यो, जब सु गह्यो[३] जद्दोनि ॥
कह्यो वह न कीटहु[४] तजैं, तू इच्छत तस[५] छोनि ॥ ४७ ॥
करि साहस[६] अन्नल तदपि, मति कछु ताहि मनाय ॥
पच्छिम दिस हंक्यो प्रबल, तजि रँनथंभ[७] निकाय ॥ ४८ ॥
मन्नि पितामहसौं मिलन, सिद्ध बचन दृढ साहि ॥
जुब्बनेर१ अजमेरके, अंतर[८] पत्त उमाहि ॥ ४९ ॥
न मृग१न खग२न मनुज३जँहाँ, देखे विग्रहराज॥
इक्खि[१०] पवन[११] संचार इक, किय संसय[१२] भुवकाज ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनप्राप्ताऽवसरचाहुवाणवीसलदेवचरिते प्रसभभुक्तगौरीदत्तराक्षसभावशापविकलनृपाऽजमेराऽऽगमन-तपस्विनीपावकप्रविशनगोकर्णायियासुसर्पदष्टमृतवीसलदेवक्र--व्यादीभवनप्रामारीसहगमनश्रुतैतदुदन्तसारङ्गदेवाऽन्तर्वत्नीस्वपत्नीरणस्तम्भपुरप्रेषणस्वयमजमेरागमनक्रव्यादतद्भक्षणपुर

१ जमेरे भाई के घर में ही जना है ॥ ४५ ॥ १ भूमि को छोड़ देवेगा ॥ ४६ ॥ २ ऐसे कहकर अन्नल चला तब ३ यादवणी ने उसको पकड़ लिया और कहा कि वह तो ४ कीड़े को भी नहीं छोड़ता जिससे तू ५ भूमि लेना चाहता है ॥ ४७ ॥ ६ हठ करके ७ रणथंभ स्थान को छोड़के ॥ ४८ ॥ सिद्ध ने कहे थे उन वचनों को दृढ़ पकड़ कर पितामह (ढुंढ राक्षस) से मिलने को उत्साह सहित जोबनेर और अजमेर के बीच में ८ गया ॥ ४९ ॥ ९ पक्षी ११ एक पवन का ही संचार (जाना) १० देखकर भूमि के मिलने में १२ संदेह किया ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में अवसर मिलने से बीसलदेव चहुवाण के चरित्र में हठयुक्त गौरी के दिये हुए राक्षस भाव में श्राप से विकल राजा का अजमेर आना और तपस्विनी का अग्नि में जलना, गोकर्ण महादेव जाने की इच्छा वाले सर्प के डसने से मरकर बीसलदेव का राक्षस होना, और प्रामारी राणी का सती होना, उसका वृत्तान्त सुनकर सारंगदेव का अपनी गर्भिणी स्त्री को

बुल्ल्यो विग्रहराज तब, जैहौं रक्खस पास ॥
कै अप्पन छिति[१] छोरिहै, कै करिहै मम नास ॥ ४६ ॥
चवि अन्नल ऐसैं चल्यो, जब सु गह्यो जद्दोनि[३] ॥
कह्यो वह न कीटहुँ[४] तजैं, तू इच्छत तस[५] छोनि ॥ ४७ ॥
करि साहस[६] अन्नल तदपि, मति कछु ताहि मनाय ॥
पच्छिम दिस हंक्यो प्रबल, तजि रँनथंभ[७] निकाय ॥ ४८ ॥
मन्नि पितामहसौं मिलन, सिद्ध बचन दृढ साहि ॥
जुब्बनैर[१] अजमेरके, अंतर पत्त[८] उमाहि ॥ ४९ ॥
न मृग[१]न खग[२]न मनुज[३]जँहाँ, देखे विग्रहराज॥
इक्खि[१०] पवन[११] संचार इक, किय संसय[१२] भुवकाज ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनप्राप्ताऽवसरचाहुवाणवीसलदेवचरिते प्रसभभुक्तगौरीदत्तराक्षसभावशापविकलनृपाऽजमेराऽऽगमन-तपस्विनीपावकप्रविशनगोकर्णयियासुसर्पदष्टमृतवीसलदेवक्र-व्यादीभवनप्रामारीसहगमनश्रुतैतदुदन्तसारङ्गदेवाऽन्तर्वत्नीस्वपत्नीरणास्तम्भपुरप्रेषणस्वयमजमेरागमनक्रव्यादतद्धलनापुर १ ज-

मेरे भाई के घर में ही जना है ॥ ४५ ॥ १ भूमि को छोड़ देवेगा ॥ ४६ ॥ २ ऐसे कहकर अन्नल चला तब ३ यादवणी ने उसको पकड़ लिया और कहा कि वह तो ४ कीड़े को भी नहीं छोड़ता जिससे तू ५ भूमि लेना चाहता है ॥ ४७ ॥ ६ हठ करके ७ रणथंभ स्थान को छोड़के ॥ ४८ ॥ सिद्ध ने कहे थे उन वचनों को दृढ़ पकड़ कर पितामह (ढुंढ राक्षस) से मिलने को उत्साह सहित जोबनेर और अजमेर के बीच में ८ गया ॥ ४९ ॥ ९ पक्षी ११ एक पवन का ही संचार (जाना) १० देखकर भूमि के मिलने में १२ संदेह किया ॥ ५० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन में अवसर मिलने से बीसलदेव चहुवाण के चरित्र में हठयुक्त गौरी के दिये हुए राक्षस भाव में श्राप से विकल राजा का अजमेर आना और तपस्विनी का अग्नि में जलना, गोकर्ण महादेव जाने की इच्छा वाले सर्प के डसने से मरकर वीसलदेव का राक्षस होना, और प्रामारी राणी का सती होना, उसका वृत्तान्त सुनकर सारंगदेव का अपनी गार्भिणी स्त्री को

यह बीर ढुंढत ढुढकौं जितहो वहै तित पत्तभो ॥
आहारके हित मर्त्त्य आवत पिक्खि जो अनुरत्तभो ॥
कछु व्है प्रसन्न सु जातुधानहु कंदरा सन निक्खर्‌यो ॥
सतपंच५०० हत्थ तदीय बिग्रह दिग्घ पव्वयलौं लस्यो ॥ ४ ॥
कर जास हत्थ असीति८० आयत मंडलाग्र प्रभा करैं ॥
अपसव्य पांय हजारमनमय इक्क डुंडुरकों धरैं ॥
करि ओठ उंढ कराल जो उठि पिक्खि बालक बुल्लयो ॥
जननी१पिता२अभिधान३को तव कोन अन्वय४ मैं भयो ॥५॥
सुनि एह विग्रहराज अक्खिय गौरि नाम प्रसू जन्यौं ॥
चहुवान बीसल ताततात रु नाम अन्नल मो भन्यौं ॥
मरिबो१हि कै हम भू अकंटक राज्य कै करिबो२ कह्यो ॥
इम अप्पके ढिग आयके रन१ कै प्रजा भरिबो२ चह्यो ॥ ६ ॥
बिनु भुम्मि भूपतिबालकौं मरनौं१ भलो सरनौं२ बुरो ॥
निजपुत्त ज्यौं बहनौं पउत्तहि आय आहव अंकुरो ॥
तब याहि अष्टम८ जामहो सु कह्यो तपस्विनिको फुर्‌यो ॥
निजपुत्र पुत्रहिं जानि मोदित व्है तदाकृति तैं दुर्‌यो ॥ ७ ॥
पुनि तास निश्चयकौं परक्खन ढुंढ जृंभित व्है कह्यो ॥

१गया२मनुष्य को आता हुआ देखकर३प्रीतिवाला हुआ(खाने में प्रीति करने वाला हुआ)४राक्षस५उसका शरीर पांच सौ हाथ का६लंबा पर्वत के समान शोभित हुआ जिसके हाथ में अस्सी हाथ७विस्तृत८खड्गकान्ति प्रकाश रही थी ९ दाहिने पग में हजार मन का १० लंगर (लोहे की सांकल) ११ ऊंचे करके १२ नाम १३ किस वंश में तेरा जन्म है ॥ ५ ॥ १४ माता ने १५ पितामह १६ देश में प्रजा को मरना चाहा है ॥६ ॥ अपने१७ पुत्र(सारंग देव) को पहिले खा लिया था वैसे ही १८ अब मुझ पौत्र को भी मारो और युद्ध में आकर १९ खड़े होओ उस समय उस राक्षस का आठवां २० पहर था जिस में उसको मनुष्य बुद्धि रहने के लिये गौरी ने कहा था और उसने कहा था कि तेरे पौत्र से तेरा उद्धार होवेगा वह तपस्विनी का कहना २१ स्मरण हुआ २२ उस स्वरूप से छिपगया ॥ ७ ॥२३ मुख खोलकर कहा कि

यह बीर ढुंढत ढुढकौं जित्तहो[1] वहै तित पत्तभो ॥
आहारके हित मर्त्य[2] आवत पिक्खि जो अनुरत्तभो[3] ॥
कछु व्है प्रसन्न सु जातुधानहु[4] कंदरा सन निक्खरयो ॥
सतपंच५०० हत्थ तदीय बिग्रह[5] दिग्घ पव्वयलौं[6] लस्यो ॥ ४ ॥
कर जास हत्थ असीति८० आयत[7] मंडलाग्र[8] प्रभा करैं ॥
अपसव्य[9] पांय हजारमनमय इक्क डुंडुर[10]कौं धरैं ॥
करि ओठ उद्ध[11] कराल जो उठि पिक्खि बालक बुल्लयो ॥
जननी१पिता२अभिधान[12]३को तव कोन अन्वय[13]४ मैं भयो ॥५॥
सुनि एह विग्रहराज अक्खिय गौरि नाम प्रसू[14] जन्यौं ॥
चहुवान बीसल ताततात[15] रु नाम अन्नल मो भन्यौं ॥
मरिबो१हि कै हम भू अकंटक राज्य कै करिबो२ कह्यो ॥
इम अप्पके ढिग आयके रन१ कै प्रजा[16] भरिबो२ चह्यो ॥ ६ ॥
बिनु भुम्मि भूपतिबालकौं मरनौं१ भलो सरनौं२ बुरो ॥
निज[17]पुत्त ज्यौं [18]बं हनौं पउत्तहि आय आहव अंकुरो[19] ॥
तव याहि अष्टम८ जाम[20]हो सु कह्यो तपस्विनिको फुरयो[21] ॥
निजपुत्र पुत्रहिं जानि मोदित व्है तदाकृति[22] तैं दुरयो ॥ ७ ॥
पुनि तास निश्चयकौं परक्खन ढुंढ जृंभित[23] व्है कह्यो ॥

१गया२मनुष्य को आता हुआ देखकर३प्रीतिवाला हुआ(खाने में प्रीति करने वाला हुआ)४राक्षस५उसका शरीर पांच सौ हाथ का६लंबा पर्वत के समान शोभित हुआ जिसके हाथ में अस्सी हाथ७विस्तृत८खड्गकान्ति प्रकाश रही थी ९ दाहिने पग में हजार मन का १० लंगर (लोहे की सांकल) ११ ऊंचे करके १२ नाम १३ किस वंश में तेरा जन्म है ॥ ५ ॥ १४ माता ने १५ पितामह १६ देश में प्रजा को भरना चाहा है ॥६ ॥ अपने१७ पुत्र(सारंगदेव) को पहिले खालिया था वैसे ही १८ अब मुझ पौत्र को भी मारो और युद्ध में आकर १९ खड़े होओ उस समय उस राक्षस का आठवां २० पहर था जिस में उसको मनुष्य बुद्धि रहने के लिये गौरी ने कहा था और उसने कहा था कि तेरे पौत्र से तेरा उद्धार होवेगा वह तपस्विनी का कहना २१ स्मरण हुआ २२ उस स्वरूप से छिपगया ॥ ७ ॥२३ मुख खोलकर कहा कि

इम अक्खि रक्खस पाय डुड्डुर तत्थही तजि खग्ग लै ॥
भुव अप्पि अन्नलकों चल्यो दिस पुव्वयों नभमग्ग लै ॥
इहिंठाँ विसेस कितेक मागध जो लिखैं मत सो कहों ॥
त ढुंढ अन्नलसों कह्यो तव हत्थ मिच्चुंहि मैं लहों ॥ १३ ॥
कारि वार इक्क६हि खग्गको जिम मत्थ मामके उत्तरै ॥
कछु कंठपैं न लग्योरहैं लव जाय दूरहि जो परैं ॥
इम अक्खि अन्नल अग्ग ढुंढ वइट्ठ कंधर नायकैं ॥
किय तास सीस अलग्ग विग्रहराज खग्ग चलायकैं ॥ १४ ॥
तव डारि डुंडुर अन्य विग्रहें धारि अंवर संचरयो ॥
यह चंदसोंहु विसेस मागधजाति ग्रंथनसैं धरयो ॥
सवठाँ न वृत्त संहत्त पावत चंदकेहु प्रवंध हैं ॥
लिखिदेत केक नई नई हु परंपरा सुहि ग्रंध हैं ॥ १५ ॥
इम अप्पि अन्नलकों मही नभमग्ग रक्खसनैं गह्यो ॥
दिस पुव्व कोउक पुण्यछेत्र स्वदेह उज्झनकों चह्यो ॥
तिसैं भूख पीड़ित यों वहै नभ जात कोउक सिद्धकों ॥
लखि उत्तरयो भुव तास आश्रम आे नम्यों तप इद्धकों ॥ १६ ॥
तव सिद्ध अक्खिय कोन तू सुनि प्रह्व रक्खस यों कही ॥

हाकर ॥ १२ ॥ यह कहकर राक्षस अपने पग का १ लंगर वहीं तजकर २ खड्ग लेकर ३ पूर्वदिशा की ओर आकाशमार्ग में गया, यहां कितने ही ४ बड़वा भाट अपना मत लिखते हैं सो कहता हूं कि वह खड्ग लेकर ढुंढ ने अन्नल से कहा कि मैं तेरे हाथ से ही ५ मृत्यु पाऊं ॥ १३ ॥ ६ मेरा मस्तक उतर जावे ७ लेश मात्र भी कंठ पर नहीं लगा रहै ६ कंधा झुकाकर ८ बैठगया ॥ १४ ॥ १० पग के लंगर को डाल कर दूसरा ११ शरीर धरकर १२ आकाश में गया, यह वृत्तान्त बड़वा जाति के भाटों ने चन्द्रभाट से भी सिवाय लिखा है और चन्द्र के १४ ग्रन्थ (रासे) में भी वृत्तान्त १३ एकसा नहीं मिलता जैसी १५ अंधपरंपरा (एक अन्धे के पीछे दूसरा अन्धा चलकर कुए में गिरने को अन्ध परंपरा कहते हैं) चली आती है वैसे ही चन्द्र ने भी नई नई बातें लिखदी हैं ॥ १५ ॥ १६ अपना शरीर छोडना चाहा १७ प्यास १८ तप से वृद्धि पायेहुए सिद्ध को नमा ॥ १८ ॥ १९ नम्र होकर २० राक्षस

इम अक्खि रक्खस पाय डुडुर तत्थही तजि खग्ग लै ॥
भुव अप्पि अन्नलकों चल्यो दिस पुब्बयाँ नभमग्ग लै ॥
इहिंठाँ विसेस कितेक मागध जो लिखैं मत सो कहाँ ॥
त ढुंढ अन्नलसौं कह्यो तव हत्थ मिच्चुंहि मैं लहाँ ॥ १३ ॥
कारि वार इक्कहि खग्गको जिम मत्थ मासक उत्तरैं ॥
कछु कंठपैं न लग्योरहैं लव जाय दूरहि जो परैं ॥
इम अक्खि अन्नल अग्ग ढुंढ वइट्ठ कंधर नायकैं ॥
किय तास सीस अलग्ग विग्गहराज खग्ग चलायकैं ॥ १४ ॥
तव डारि डुंडुर अन्य विग्गहैं धारि अंबर संचरयो ॥
यह चंदसौंहु विसेस मागधजाति ग्रंथनमैं धरयो ॥
सवठाँ न वृत्त सँदृत्त पावत चंदकेहु प्रबंध है ॥
लिखिदेत केक नई नई हु परंपरा सुहि अंध है ॥ १५ ॥
इम अप्पि अन्नलकों मही नभमग्ग रक्खसनैं गह्यो ॥
दिस पुब्ब कोउक पुण्यछेत्र स्वदेह उज्झनकों चह्यो ॥
तिसैं भूख पीड़ित यों वहै नभ जात कोउक सिद्धकों ॥
लखि उत्तरयो सुत्र तास आश्रम अो नम्यों तप इद्धकों ।१६।
तव सिद्ध अक्खिय कोन तू सुनि प्रहै रक्खस यों कही ॥

होकर ॥ १२ ॥ यह कहकर राक्षस अपने पग का १ लंगर वहीं तजकर २ खड्ग लेकर ३ पूर्वदिशा की ओर आकाशमार्ग में गया, यहां कितने ही ४बड़वा भाट अपना मत लिखते हैं सो कहता हूं कि वह खड्ग लेकर ढुंढ ने अन्नल से कहा कि मैं तेरे हाथ से ही ५ मृत्यु पाऊं ॥ १३ ॥ ६ मेरा मस्तक उतर जावे ७ लेश मात्र भी कंठ पर नहीं लगा रहै ९ कंधा झुकाकर ८ बैठगया ॥ १४ ॥ १० पग के लंगर को डाल कर दूसरा ११ शरीर धरकर १२ आकाश में गया, यह वृत्तान्त बड़वा जाति के भाटों ने चन्द्रभाट से भी सिवाय लिखा है और चन्द्र के १४ ग्रन्थ (रासे) में भी वृत्तान्त १३ एकसा नहीं मिलता जैसी १५ अंधपरंपरा (एक अन्धे के पीछे दूसरा अन्धा चलकर कुए में गिरने को अन्ध परंपरा कहते हैं) चली आती है वैसे ही चन्द्र ने भी नई नई बातें लिखदी हैं ॥ १५ ॥ १६ अपना शरीर छोडना चाहा १७ प्यास १८ तप से वृद्धि पायेहुए सिद्ध को नमा ॥ १८ ॥ १९ नम्र होकर २० राक्षस

बिसवास सो लहि ढुंढ व्हाँ तपकाज पुराय प्रपंचभो ॥
तँहँ *निगमबोध गुफा प्रबेसि रु ढुंढ यौं तप मंडयो ॥
सतसट्ठि१६० +हायन÷कालहू करतैं तहाँ तप त्यौं गयो२२
अजमेरकौं इत पाय अन्नल राज्य अप्पन वित्थरयो ॥
तजिगो जु +डुड्डुर ढुंढ सो निजगेह पूजनमैं धरयो ॥
रनथंभतैं जननी बुलाय सु सर्वउप्पर व्है रह्यो ॥
करि धर्म१नीति२प्रवृत्त मारग आदिराजनको गह्यो॥२३॥
सब नैर१देस२बसाय निश्चल दुर्ग्ग३सज्ज किते करे ॥
चढि भोर[१] घोरन[२] दोर श्रोरन जोर औरनके हरे ॥
सह दैन बीसल अब्ज१०००००००००रुप्पय जो लयो पन सोगयो
भुवमैं रह्यो[३] वसु[३] बीसकोटि२००००००००सिवाय संचित नाँभयो२४
सु[४] बिचारि[४]अन्नल१७३[५]अप्पकौं जु मिल्यो सु दैनलग्यो जहाँ॥
भुवके सबै कविराज१पंडितराज२आय बसे तहाँ ॥
[६]शृंगनृपतिभाषणायज्ञयूपप्रशस्ति नामक विप्र हो ॥
कवि जो प्रबुद्ध अपुब्ब काव्य प्रबंध कल्पन छिप्र हो॥२५॥
सह भूपबीसल ग्रंथ बिग्रहराजको तिहिं नि[१०]र्मयो ॥
जसको प्रकास बिसेसही करि ख्यात[११] भूतलपैं दयो ॥
सारंगधर दुवपद्य[१२] ताबिचके लिखे निज[१३]पद्धती ॥

स्नान करने से उस राक्षस का तमोगुणी चित्त कुछ शीतल होगया *निगमबोध नामक घाट की गुफा में घुसकर + वर्ष के ÷ समय तक ॥२२॥ ढुंढ राक्षस पग का + लंगर छोड गया था उसको अपने घर में पूजन में रक्खा ॥ २३ ॥ १ प्रभात समय २ घोडों पर चढकर अन्य राजाओं के अथवा शत्रुओं के फैलाव को मेटने के लिये उनके बल रहे ३ धन ॥ २४ ॥ ४ यह विचार कर ५ आपको जो कुछ मिलगया वही देने लगा ६ शृंगनृपतिभाषणायज्ञयूपप्रशस्ति नामक ब्राह्मण ७ पंडित ८ अपूर्व काव्य के ग्रन्थ ९ शीघ्र रचने वाला था उसने वीसलदेव सहित विग्रहराज का ग्रन्थ १० बनाया ११ प्रसिद्ध उस ग्रंथ के १२ दो श्लोक शार्ङ्गधर नामक विद्वान् ने १३ अपने पद्धति (शार्ङ्गधरपद्धति) नामक ग्रंथ में "विशिष्ट राजवर्णन" प्रकरण में निम्न लिखित दो श्लोक लिखे हैं. यथा—

बिसवास सो लहि ढुंढ व्हाँ तपकाज पुराय प्रपंचभो ॥
तँहँ *निगमबोध गुफा प्रबेसि रु ढुंढ यौं तप मंडयो ॥
सतसट्ठि१६० +हायन÷कालहू करतैं तहाँ तप त्यौं गयो२२
अजमेरकौं इत पाय अन्नल राज्य अप्पन वित्थरयो ॥
तजिगो जु +डुड्डुर ढुंढ सो निजगेह पूजनमैं धरयो ॥
रनथंभतैं जननी बुलाय सु सर्वउप्पर व्हे रहयो ॥
करि धर्म१नीति२प्रवृत्त मारग आदिराजनको गहयो॥२३॥
सब नैर१देस२बसाय निश्चल दुर्ग्ग३सज्ज किते करे ॥
चढि भोर[1] घोरन[2] दोर भोरन जोर औरनके हरे ॥
सह दैन बीसल अब्ज१०००००००००रुप्पय जो लयो पन सोगयो
भुवमैं रहयो बसु[3] बीसकोटि२००००००००सिवाय संचित नाँभयो२४
सु[4] बिचारि[5]अन्नल१७३अप्पकौं जु मिल्यो सु दैनलग्यो जहाँ॥
भुवके सबै कविराज१पंडितराज२आय बसे तहाँ ॥
[6]शृंगनृपतिभाषणायज्ञयूपप्रशास्ति नामक बिप्र हो ॥
कवि जो प्रबुद्ध अपुब्ब काव्य प्रबंध कल्पन छिप्र हो॥२५॥
सह भूपबीसल ग्रंथ बिग्रहराजको तिहिं निर्मयो ॥
जसको प्रकास बिसेसहो करि ख्यातै भूतलपै दयो ॥
सारंगधर दुवपद्य ताबिचके लिखे निजपद्धती ॥

स्नान करने से उस राक्षस का तमोगुणी चित्त कुछ शीतल होगया *निगमबोध नामक घाट की गुफा में घुसकर + वर्ष के ÷ समय तक ॥२२॥ ढुंढ राक्षस पग का + लंगर छोड गया था उसको अपने घर में पूजन में रक्खा ॥ २३ ॥ १ प्रभात समय २ घोडों पर चढकर अन्य राजाओं के अथवा शत्रुओं के फैलाव को मेटने के लिये उनके बल रहे ३ धन ॥ २४ ॥ ४ यह विचार कर ५ आपको जो कुछ मिलगया वही देने लगा ६ शृंगनृपतिभाषणायज्ञयूपप्रशास्ति नामक ब्राह्मण ७ पंडित ८ अपूर्व काव्य के ग्रन्थ ९ शीघ्र रचने वाला था उसने वीसलदेव सहित विग्रहराज का ग्रन्थ १० बनाया ११ प्रसिद्ध उस ग्रंथ के १२ दो श्लोक शार्ङ्गधर नामक विद्वान् ने १३ अपने पद्धति (शार्ङ्गधरपद्धति) नामक ग्रंथ में "विशिष्ट राजवर्णन" प्रकरण में निम्न लिखित दो श्लोक लिखे हैं. यथा—

अजमेरसौं[1] धुवघाँ तडाग[2]हु स्वीय[3] नामक निर्मयो ॥
अबके समैबिच अन्नसागर[4] नाम जास कहयोगयो ॥२८॥
कति यौं कहैं गढ बिंटुली[5]हु बिसेस अन्नलसौं बन्यौं ॥
जस१ओ प्रताप२तदीय[6] बीसलसौं बडो भुवपैं भन्यौं ॥
सुत सूर विग्रहराजकै जयसिंहदेव१७४बली भयो ॥
निज तातकै दिवजातैं[7] पट्ट तदीय धारि स्वयं लयो ॥२९॥

षट्पात्

अन्नल सुत जयसिंहदेव१७४भूपति समर्थ हुव ॥
पाई जिहिं प्राचीन भाग्यबल करि निधान भुव ॥
गढ बिंटुलि बिच गड्डि धरयो जनक सु कह्यो धन ॥
बीसलसरसनबीसकोटि२०००००००आखं[10]निलियअप्पन।
धर्माधिराज आर्जित[11] धनहु लाय खोज अगनित लये ॥
पहिले निधान[12] उभयरहि सुपँहु[13] द्विजन बंटि अविरत[14] दये॥३०॥
श्रुति[15]१पुरान२नय३धर्म४सकल जयसिंहदेव१७४सुनि ॥
भुव सत्रुन गन भेदि चाहि जिततित लिन्नी चुनि ॥
याकै सुत आनंदमेय१७५प्रकटयौं गुन पूरन ॥
तातैं[16] मरत लहि तखत रारि[17] किन्नैं रिपु चूरन ॥
आनंदमेयनृपकै भये सोमेस्वर१७६।१अरु कृष्ण१७६।२सुत
तिन्ह प्रसवकाल[18] जगहित तब सु नानाधन बरस्यो प्रनुत[19]
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वी-

---

१ उत्तर की ओर २ तालाव भी ३ अपने नाम का बनवाया ४ आनासागर ५ अजमेर का गढ ६ उसका ७ अपने पिता के स्वर्ग जाने पर ॥२९॥ ८ भूमि में गाडा हुआ धन पाया ९ बीसलसागर से बीस क्रोड़ रुपये १० खोद कर निकाल लिये, धर्माधिराज का ११ सम्पादन किया हुआ अगणित धन का भी पता लगाकर लिया, पहिले कहे हुए दोनों १२ धन उस १३ श्रेष्ठ राजा ने ब्राह्मणों को १४ निरन्तर बांट दिये ॥ ३० ॥ १५ वेद १६ पिता के मरने पर १७ युद्ध में १८ उनके जन्म समय में १९ स्तुतियोग्य नाना प्रकार के धन की वर्षा की

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

अजमेरसौं धुवघौं[1] तडागहु[2] स्वीयं[3] नामक निर्मयो ॥
अबके समैबिच अन्नसागर[4] नाम जास कह्योगयो ॥२८॥
कति यौं कहैं गढ बिंटुलीहु[5] बिसेस अन्नलसौं बन्यौं ॥
जस१ओ प्रताप२तदीय[6] बीसलसौं बडो भुवपैं भन्यौं ॥
सुत सूर विग्रहराजकै जयसिंहदेव१७४बली भयो ॥
निज तातकै दिवजातैं[7] पट्ट तदीय धारि स्वयं लयो ॥२९॥

षट्पात्

अन्नल सुत जयसिंहदेव१७४भूपति समर्थ हुव ॥
पाई जिहिं प्राचीन भाग्यबल करि निधान[8] भुव ॥
गढ बिंटुलि बिच गड्डि धरयो जनक सु कह्यो धन ॥
बीसलसरसनबीसकोटि[9]२००००००००आखनिलिय[10]अप्पन।
धर्माधिराज आर्जित[11] धनहु लाय खोज अगनित्त लये ॥
पहिले निधान[12] उभयरहि सुपहु[13] द्विजन बंटि अविरत्त[14] दये॥३०॥
श्रुति[15]१पुरान२नय३धर्म४सकल जयसिंहदेव१७४सुनि ॥
भुव सत्रुन गन भेदि चाहि जिततित लिन्नी चुनि ॥
याकै सुत आनंदमेय१७५प्रकटयो गुन पूरन ॥
तातैं[16] मरत लहि तखत रारि[17] किन्नैं रिपु चूरन ॥
आनंदमेयनृपकै भये सोमेस्वर१७६।१अरु कृष्णा१७६।२सुत
तिन्ह प्रसवकाल[18] जगाहित तब सु नानाधन बरख्यो प्रनुत[19]
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वी-

---

१ उत्तर की ओर २ तालाव भी ३ अपने नाम का बनवाया ४ आनासागर ५ अजमेर का गढ ६ उसका ७ अपने पिता के स्वर्ग जाने पर ॥२९॥ ८ भूमि में गाडाहुआ धन पाया ९ बीसलसागर से बीस क्रोड रुपये १० खोद कर निकाल लिये, धर्माधिराज का ११ सम्पादन किया हुआ अगणित धन का भी पता लगाकर लिया, पहिले कहेहुए दोनों १२ धन उस १३ श्रेष्ठ राजा ने ब्राह्मणों को १४ निरन्तर बांट दिये ॥ ३० ॥ १५ वेद १६ पिता के मरने पर १७ युद्ध में १८ उनके जन्म समय में १९ स्तुतियोग्य नाना प्रकार के धन की वर्षा की

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण

षट्पात्

बाल[1] चंद्र[2] सम बढिग साव कन्ह१ रु सोमेस्वर२ ॥
काल[3] पंच[4] सम कढत पढनलग्गे बिद्या पर ॥
महिपालक आनंदमय पुष्कर प्रसाद लिय ॥
चउ४ आश्रम चउ४ बरन[5] सरन[6] निजनिज सरनी[7] किय ॥
तबतैं सु ढुंढ अदलौं तपहि इत दिल्लिय सढ्ढत रह्यो ॥
कंदरा पिहित[8] कालिंदितट[9] सिद्ध[10] कथित कष्टहि सह्यो ॥ २ ॥
तोमरनृपति अनंगपाल पांडवकुल पुंगव[11] ॥
दिल्लियपुर तिनदिनन दारुद्रोहिन[12] प्रतपै दव[13] ॥
इंद्रप्रस्थ जिहिं अधिप ब्यास[14] करि अधिक बसायउ ॥
निगमबोधलग[15] नैर सीम प्राकार[16] लसायउ ॥
प्रासाद१ कुंज२ उपवन[17]३ प्रचुर[18] पुरबाहिर नाना प्रतिम[19] ॥
क्रीडानिवास जिततित क्रमत भोगत भोग अनंद इम ॥ ३ ॥

दोहा

तोमरकै इक्क१ न तनय, तनया[20] दुव२ हुव तास ॥
जेठी जहँ सुरसुंदरी१, अनुजा[21] कमला२ आस[22] ॥ ४ ॥

षट्पात्

बरख अठ्ठ८ नव ९ बहत रहत कन्यापन रंचक ॥
परिकर[23] कन्या पास सबय[24] तिनकै सतपंचक ५०० ॥
आनंगी[25] इम उभय२ करैं परिसर[26] सह क्रीडन ॥

१द्वितीया के चन्द्रमा के समान२बच्चे३ समय ४वर्ष ५ श्रेष्ठ ६ अपने अपने मा-
र्ग में ७ चलनेवाले किये ८ कंदरा में छिपकर ९ यमुना के किनारे१० सिद्ध
का कहाहुआ कष्ट सहा ॥ २ ॥११श्रेष्ठ१२काष्ठ रूपी शत्रुओं पर १३ अग्नि
रूपी तपता था, जिस राजा ने दिल्ली को १४ विस्तार से बसाया और१५
निगमबोधघाट तक सीमा करके शहर का १६ कोट शोभित किया १७ बाग
१८ बहुत १९ अपने सदृश (अपने विलास करने को चाहिये वैसे) ॥ ३ ॥
२० पुत्रियें २१ छोटी २२ हुई ॥ ४ ॥ छोटी आठ वर्ष की और बडी नव वर्ष
की थी जिनके थोड़ा सा कन्यापन बाकी रहा था (दश वर्ष की अवस्था त-
क कन्यापन मानाजाता है)२४समान अवस्थावाली पांच सौ कन्याओं की
२३ परगह सहित २५ अनंगपाल की पुत्रियें २६ नदी अथवा नगर के समीप

षट्पात्

बाल[1] चंद्र सम[2] बढिग साव कन्ह१ रु सोमेस्वर२ ॥
काल[3] पंच सम[4] कढत पढनलग्गे बिद्या पर ॥
महिपालक आनंदमेय पुष्कर प्रसाद लिय ॥
चउ४ आश्रम चउ४ बरन सरन[6] निजनिज सरनी[7] किय॥
तबतैं सु ढुंढ अबलौं[8] तपहि इत दिल्लिय सढत रह्यो ॥
कंदरा पिहित कालिंदितट[9] सिद्ध कथित[10] कष्टहि सह्यो ॥२॥
तोमरनृपति अनंगपाल पांडवकुल पुंगव[11] ॥
दिल्लियपुर तिनदिनन दारु[12]द्रोहिन प्रतपै दव[13] ॥
इंद्रप्रस्थ जिहिं अधिप व्यास[14] करि अधिक बसायउ ॥
निगमबोध[15]लग नैर सीम प्राकार[16] लसायउ ॥
प्रासाद१ कुंज२ उपवन[17]३ प्रचुर[18] पुरबाहिर नाना प्रतिमं[19] ॥
क्रीडानिवास जिततित क्रमत भोगत भोग अनंद इम ॥३॥

दोहा

तोमरकै इक्क१ न तनय, तनया[20] दुव२ हुव तास ॥
जेठी जँहँ सुरसुंदरी१, अनुजा[21] कमला२ आस[22] ॥ ४ ॥

षट्पात्

बरख अठ्ठ८ नव ९ बहत रहत कन्यापन रंचक ॥
परिकर[23] कन्या पास सबय[24] तिनकै सतपंचक ५०० ॥
आनंगी[25] इम उभय२ करैं परिसर[26] सह क्रीडन ॥

१द्वितीया के चन्द्रमा के समान २बच्चे ३ समय ४वर्ष ५ श्रेष्ठ ६ अपने अपने मा-
र्ग में ७ चलनेवाले किये ८ कंदरा में छिपकर ९ यमुना के किनारे १० सिद्ध
का कहाहुआ कष्ट सहा ॥ २ ॥ ११श्रेष्ठ १२काष्ठ रूपी शत्रुओं पर १३ अग्नि
रूपी तपता था, जिस राजा ने दिल्ली को १४ विस्तार से बसाया और १५
निगमबोधघाट तक सीमा करके शहर का १६ कोट शोभित किया १७ बाग
१८ बहुत १९ अपने सदृश (अपने विलास करने को चाहिये वैसे) ॥ ३ ॥
२० पुत्रियें २१ छोटी २२ हुई ॥ ४ ॥ छोटी आठ वर्ष की और बडी नव वर्ष
की थी जिनके थोड़ा सा कन्यापन बाकी रहा था (दश वर्ष की अवस्था त-
क कन्यापन मानाजाता है) २४समान अवस्थावाली पांच सौ कन्याओं की
२३ परगह सहित २५ अनंगपाल की पुत्रियें २६ नदी अथवा नगर के समीप

सखी सखिन बिच संग सजातीयहि छ६अग्ग सत १०६ ॥
कनी इक्क१ द्विजकेर बंदितनयाँ हु इक्क१ बंत ॥
सब अष्ठ८अग्ग सत१०८हम सखी रंग चहत इक्क१थान रहि
सो देहु१ बहुरि संतति सबन देहु प्रबल बिरहार्क दहि ॥ ८॥
कनी कथित करि करन अस्तुँ कहि पुनि अक्खिय यह ॥
अर्प्यौं जो कछु आनि सोहु स्वीकार करहु सह ॥
पहिलैं दैहैं पितर जितहि परनी तुम जैहो ॥
आय आय सब आयु बहुरि इकथान जितै हो॥
पुत्रहु अजेय सबकै प्रबल वसुधातल ह्वैहैं बिदित ॥
इम अक्खि ढुंढ नभमग्ग उडि हंक्यो कासिय इष्ट हित।९।

॥ दोहा ॥

उडत ढुंढ यह अक्खिगो, बासर कछुक बिहाय ॥
आँऊँ मैं जब अत्थही, सब आवहु समुदाय ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि यह कन्या सकल गई निज निज गृह गावत ॥
इत सु ढुंढ उडिगयउ नैर कासिय सिर नावत ॥
प्रथम१ सिद्धजुगँ२ परसि बहुरि२ जमुना तप३ बित्थैरि[11] ॥
ईसपुरी[12]४ अब३ आय३ धन्य हुव अनघै[13] तेज धरि ॥

तुमारे आधीन हैं, इन सखियों में एक सौ छः सखियें हमारी १ सजातीय (क्षत्रियों की पुत्रियें) और एक २ कन्या ब्राह्मण की और एक ३ भाट की पुत्री ४ बुलाई हुई है. ये एक सौ आठ सखियां हैं सो हम एक स्थान पर रहकर ५ प्रीति चाहती हैं सो वर दो और ६ विरह के अर्क (दुःख) को जलाकर सब को प्रबल संतान दो ॥ ८ ॥ कन्या का कहना सुनकर ७ ऐसा ही होओ. मैं जो कुछ लाकर तुमको दूं उसको तुम सब मंजूर करो ८ पिता देवेंगे उधर ॥९॥ ६ दिन ॥ १० ॥ १० पहिले तो दोनों सिद्धों को परसे और फिर यमुना पर तप११विस्तार कर अब१२काशी पुरी आकर१३पाप रहित तेज को धारण करके धन्य हुआ

सखी सखिन बिच संग सजातीयहि छ६अग्ग सत १०६ ॥
कनी इक्क१ द्विजकेर बंदितनयाँ हु इक्क१ बॅत ॥
सब अष्ट८अग्ग सत१०८हम सखी रंग चहत इक१थान रहि
सो देहु१ बहुरि संतति सबन देहु प्रबल बिरहार्क दहि ॥ ८॥
कनी कथित करि करन अस्तुँ कहि पुनि आक्खिय यह ॥
अप्पौं जो कछु आनि सोहु स्वीकार करहु सह ॥
पहिलैं देहैं पितर जितहि परनी तुम जैहो ॥
आय आय सब आयु बहुरि इकथान बितैहो॥
पुत्रहु अजेय सबकै प्रबल वसुधातल ह्वैहैं विदित ॥
इम अक्खि ढुंढ नभमग्ग उडि हंक्यो कासिय इष्ट हित ।९।

॥ दोहा ॥

उडत ढुंढ यह अक्खिगो, बासर कछुक विहाय ॥
आऊँ मैं जब अत्थही, सब आवहु समुदाय ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि यह कन्या सकल गई निज निज गृह गावत ॥
इत सु ढुंढ उडिगयउ नैर कासिय सिर नावत ॥
प्रथम१ सिद्धजुगँ२ परसि बहुरि२ जमुना तप३ बिस्थॅरि ॥
ईसपुरी४ अब३ आय३ धन्य हुव अनघँ तेज धरि ॥

तुमारे आधीन हैं, इन सखियों में एक सौ छः सखियें हमारी १ सजातीय (क्षत्रियों की पुत्रियें) और एक २ कन्या ब्राह्मण की और एक ३ भाट की पुत्री ४ बुलाई हुई है. ये एक सौ आठ सखियां हैं सो हम एक स्थान पर रहकर ५ प्रीति चाहती हैं सो वर दो और ६ विरह के अर्क (दुःख) को जलाकर सब को प्रबल संतान दो ॥ ८ ॥ कन्या का कहना सुनकर ७ ऐसा ही होओ. मैं जो कुछ लाकर तुमको दूं उसको तुम सब मंजूर करो ८ पिता देवेंगे उधर ॥९॥ ६ दिन ॥ १० ॥ १० पहिले तो दोनों सिद्धों को परसे और फिर यमुना पर तप११विस्तार कर अब१२काशी पुरी आकर१३पाप रहित तेज को धारण करके धन्य हुआ

जंपिय[1] ढुंढ बहोरि जब[2], सब लहिहो पति संग॥
तब प्रवीर जनिहो तनय, जे न पराजित जंग ॥ १८ ॥
भोनन जावहु तजहु भय, पावहु पतिन प्रसाद[3] ॥
गो ढुंढहु इम कहि सुगति, बिनु प्रमाद तपवाद[4]॥ १९ ॥
कन्नी[5] सकल निज निज निलय, पत्ती द्वै वर पाय ॥
जित दैहैं तित जायकैं, इक्कत बसिहैं आय ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

इत पत्तन[7] अजमेर ताजिग आनंदमेय१७५तनु[8] ॥
सोमेस्वर१७६तस सूनु[9] भयो भूपति मघवां मनु[10] ॥
पट्ट लहत जिहिं प्रबल गज्जि गुज्जरधर१गंजिय ॥
मरुधर२जैसलमेर३भुम्मि दब्बि रु अरि भंजिय ॥
दलि रन अनेक खुरसान[11] दल४धारापति रनधीर५हनि ॥
सबनृप हटाय प्रतप्यो सुमति बसुधातल पुरुहूत[12] बनि॥२१॥
इत दिल्लिय१कनउज्ज[13]१उभय२उरझ्के कछु कारन ॥
विजयचन्द्र रट्ठोर चढ्यो तोमर संहारन ॥
सोमेश्वर१७६यह सुनत सज्जि दिल्लिय सहाय पर ॥
पहुँच्यो लै दल प्रचुर[14] ताहि आवत सुनि तोमर ॥
संक्रमि[15] अनंगपालहु समुख मिलि स्वगेह लैगो मुदित ॥
इक१थाल बिरचि दुव२नृप असन[16] हुव प्रसन्न करि परमहित॥२२॥

दोहा

पुच्छि कुसल सँत्त[17]७हि प्रकृति, बिहित चब्बि[18] तंबूल ॥
प्रात चढत थप्पि रु सुपहुं[19], सोये दुव२अरिसूल ॥ २३ ॥

१ढुंढ ने फिर कहा कि २ जब ।१८। पतियों की ३ प्रसन्नता ४ तप की विभूति से श्रेष्ठ गति को गया ॥ १९ ॥ सब ५ कन्या अपने अपने घर दो वर पाकर ६ गईं ॥ २० ॥ ७ अजमेर पुर में ८ शरीर ९ पुत्र १० मानों इन्द्र ११ खुराशाण देश की सेना को १२ इन्द्र बनकर ॥ २१ ॥ दिल्ली और १३कन्नोज के दोनों राजा उलझे १४ बहुत १५ चला १६ भोजन ॥ २२ ॥ १७ राज्य के सातों ही अंगों की कुशलता पूछ कर उचित ताम्बूल १८ चबा कर१९ श्रेष्ठ राजा

जंपियं[1] ढुंढ बहोरि जब[2], सबै लहिहो पति संग ॥
तब प्रवीर जनिहो तनय, जे न पराजित जंग ॥ १८ ॥
भोनन जावहु तजहु भय, पावहु पतिन प्रसाद[3] ॥
गो ढुंढहु इम कहि सुगति, बिनु प्रमाद तपबाद[4]॥ १९ ॥
कन्नी[5] सकल निज निज निलय, पत्ती द्वै[6] बर पाय ॥
जित दैहैं तित जायकैं, इक्कत बसिहैं आय ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

इत पत्तन[7] अजमेर तजिग आनंदमेय१७५तनु[8] ॥
सोमेस्वर१७६तस सूनु[9] भयो भूपति मघवा[10] मनु ॥
पट्ट लहत जिहिं प्रबल गज्जि गुज्जरधर१गंजिय ॥
मरुधर२जैसलमेर३भुम्मि दब्बि रु अरि भंजिय ॥
दलि रन अनेक खुरसान दल[11]४धारापति रनधीर५हनि ॥
सबनृप हटाय प्रतप्यो सुमति बसुधातल पुरुहूत[12] बनि॥२१॥
इत दिल्लिय१कनउज्ज[13]१उभय२उरझ्झे कछु कारन ॥
विजयचन्द्र रट्ठोर चढ्यो तोमर संहारन ॥
सोमेश्वर१७६यह सुनत सज्जि दिल्लिय सहाय पर ॥
पहुँच्यो लै दल प्रचुर[14] ताहि आवत सुनि तोमर ॥
संक्रमि[15] अनंगपालहु समुख मिलि स्वगेह लैगो मुदित ॥
इक१थाल बिरचि दुव२नृप असन[16] हुव प्रसन्न करि परमहित।२२।

दोहा

पुच्छि कुसल सत्त[17]७हि प्रकृति, बिहित चब्बि[18] तंबूल ॥
प्रात चढत थप्पि रु सुपहु[19], सोये दुव२अरिसूल ॥ २३ ॥

१ढुंढ ने फिर कहा कि २ जब ।१८। पतियों की ३ प्रसन्नता ४ तप की विभूति से श्रेष्ठ गति को गया ॥ १९ ॥ सब ५ कन्या अपने अपने घर दो बर पाकर ६ गईं ॥ २० ॥ ७ अजमेर पुर में ८ शरीर ९ पुत्र १० मानों इन्द्र ११ खुराशाण देश की सेना को १२ इन्द्र बनकर ॥ २१ ॥ दिल्ली और १३कन्नोज के दोनों राजा उलझे १४ बहुत १५ चला १६ भोजन ॥ २२ ॥ १७ राज्य के सातों ही अंगों की कुशलता पूछ कर उचित ताम्बूल १८ चबा कर१९ श्रेष्ठ राजा

हंकिय कबंध बरसिंह१ तँहँ देवराज चोरंग दिस ॥
संभर कटार झारिय सहज सो कबंध मारिय सरिस ।२६।
वीरदेव१ रट्ठोर जुरयो वीरम२ प्रमारसन ॥
आयो गज आरूढ बान बरख्यो३ घन ज्यों४ बन ॥
कासूं वीरम कराखि सलपि गजके विदु५ सारिय ॥
बहहि संगि प्रति ऐंचि वीर उर प्रबल प्रहारिय ॥
मुख रत्त बमत गज वह मुरयो व्यसु सु वीर पुहविय परयो॥
उततैं बघेल रिपुसल्ल अव वीरम सन आय रु अरयो ।२७।
धरिय इक्क१ घमसान११ विरचि तासन१२ भट वीरम ॥
सो बघेल रिपुसल्ल छेदि भूतल पटक्यो छम१३ ॥
सुभट वीर१ रिपुसल्ल२ उभय२ परतहि रनअंगन ॥
स्वामि बिजय पँहँ सेस मुररि पहुँचे असुमंगन१४ ॥
कनउज्ज कटक प्रदव१५ परत पहु१६ सोमेस्वर उप्परिय ॥
बित्थारि हुँडुड्ड१७ हुरियार१८ बिधि अरिन ओघ१९ कन कन करिय ॥२८॥
समुख बढत सोमेस तुरग पिल्ल्यो२० नृप तोमर ॥
पहुँचत हय सत १०० पैंड संधन२१ लग्गो ताकै सर ॥

१राठोड़ चोरंगकुल के देवराज चहुवाण की ओर. क्रोध सहित राठोड़ को मारलिया ॥ २६ ॥ मेह जैल वर्षे जैसे, वीरम प्रमार ने वीरदेव के हस्ती के दोनों कुंभस्थलों के बीच में खैंच कर (वल पूर्वक) बरछी मारी और उसी बरछी को पीछे खैंच कर वीरदेव राठोड़ के उर में मारी सो मुख से रुधिर उगलता हुआ हस्ती तो पीछा मुड़ गया और वीरदेव राठोड़ विना प्राण भूमि पर गिरा. शत्रुसाल ॥२७॥ युद्ध. उस शत्रुशाल से. बाघेला वंश के क्षत्रिय शत्रुशाल को. समर्थ वीरम ने भूमि पर गिरा दिया. इन वीरदेव राठोड़ और शत्रुशाल बाघेले के रण भूमि में गिरते ही बाकी के प्राणों की याचना करनेवाले(हमारे प्राण बचाओ यह कहनेवाले) पीछे फिरकर अपने स्वामी विजयचन्द राठोड़ के पास गये. इस प्रकार कन्नोज की सेना में भागण पड़ते ही राजा सोमेश्वर चला सो होली (फाग) खेलने वालों के गोलकुंडा (गेहर) खेल के समान शत्रुओं के समूह को विखेर दिया ॥ २८ ॥ सोमेश्वर को आगे बढता हुआ देखकर अनंगपाल तंवर ने अपना घोड़ा बंढाया सो सौ पैंड तक बढते ही उस के एक गेहरा

हंकिय कबंध बरसिंह१ तँहँ देवराज चोरंग दिस ॥
संभर कटार झारिय सहज सो कबंध मारिय सरिस ।२६।
बीरदेव१ रठोर जुरयो बीरम२ प्रमारसन ॥
आयो गज आरूढ बान बरख्यो घन ज्यों बन ॥
कासूं बीरम कराखि सलपि गजके बिंदु मारिय ॥
वहहि संगि प्रति ऐंचि बीर उर प्रबल प्रहारिय ॥
मुख रत्त बमत गज वह मुरयो व्यसु सु बीर पुहविय परयो॥
उततैं बघेल रिपुसल्ल अब बीरम सन आय रु अरयो ।२७।
धरिय इक्क१ घमसान बिरचि तासन भट बीरम ॥
सो बघेल रिपुसल्ल छेदि भूतल पटक्यो छेम ॥
सुभट बीर१ रिपुसल्ल२ उभय२ परतहि रनअंगन ॥
स्वामि बिजय पँहँ सेस मुररि पहुँचे असुमंगन ॥
कनउज्ज कटक मद्धै परत पहुँ सोमेस्वर उप्परिय ॥
बित्थारि हँडुडु हुरियारि बिधि अरिन ओघ कन कन करिय ॥२८॥
समुख बढत सोमेस तुरग पिल्ल्यो नृप तोमर ॥
पहुँचत हय सत १०० पैंड संधन लग्गो ताकै सर ॥

१राठोड़ चोरंगकुल के देवराज चहुवाण की ओर. क्रोध सहित राठोड़ को मारलिया ॥ २६ ॥ मेह जल वर्षै जैसे, बीरम प्रमार ने बीरदेव के हस्ती के दोनों कुंभस्थलों के बीच में खैंच कर (बल पूर्वक) बरछी मारी और उसी बरछी को पीछे खैंच कर बीरदेव राठोड़ के उर में मारी सो मुख से रुधिर उगलता हुआ हस्ती तो पीछा मुड़ गया और बीरदेव राठोड़ बिना प्राण भूमि पर गिरा. शत्रुसाल ॥२७॥ युद्ध. उस शत्रुशाल से. बाघेला वंश के क्षत्रिय शत्रुशाल को. समर्थ बीरम ने भूमि पर गिरा दिया. इन बीरदेव राठोड़ और शत्रुशाल बाघेले के रण भूमि में गिरते ही बाकी के प्राणों की याचना करनेवाले(हमारे प्राण बचाओ यह कहनेवाले) पीछे फिरकर अपने स्वामी बिजयचन्द राठोड़ के पास गये. इस प्रकार कन्नोज की सेना में भागण पड़ते ही राजा सोमेश्वर चला सो होली (फाग) खेलने वालों के गोलकुंडा (गेहर) खेल के समान शत्रुओं के समूह को बिखेर दिया ॥ २८ ॥ सोमेश्वर को आगे बढता हुआ देखकर अनंगपाल तंवर ने अपना घोड़ा बंढाया सो सौ पैंड तक बढते ही उस के एक गेहरा

मंडलेस कनउज्ज मनि, जो दोउ२न किय जेय ॥ ३३ ॥

षट्पात

तोवँर तरनि अनंगपाल नृप बीरसेन सुव ॥
लहि जय सोम सहाय धरनि अप्पन रक्खी ध्रुव ॥
अब दिल्लिय दुव२आय छलत उपनहँ करे छत ॥
सोम घाय चउसठ्ठि स्वबपु सत्रह१७रन संगत ॥
जयहेतु सुभट दुवघाँ२जिते क्रम प्रसन्न सबबिधि करिय ॥
संभरहिं रक्खि बहुदिन सदन अतिहित कौरव अद्दरिय।३४।
नृप दिल्लीस अनंग सचिव१भट२उचित पुच्छि सब ॥
देस१काल२नय३देखि त्वरित मंडिय रहस्य तब ॥
मंडलेस यह प्रबल बिजय रठ्ठोर कुसस्थल ॥
अबके परिभव अनखि बंध करिहैं अप्पन बल ॥
यह मंत्र रुचत तसमात अब सुरसुंदरि ताके सुतहिं ॥
जेठी बिबाहि द्वेसहिं सजव दूर करहिं अनुपम द्रुतहिं ।३५।

दोहा

भट१सचिव२न नृपके भनत, यह मंत्रहि दृढ अक्खि ॥
पठये चर कनउज्जप्रति, रस सगपन हित रक्खि ॥३६॥

का होना बड़ा नहीं है क्योंकि कन्नोज का राजा मंडलेश्वर है जिसको इन दोनों ने जीत लिया ॥ ३३ ॥ तंवरों का १ सूर्य २ पुत्र ३ निश्चल ४ छलते हुए घावों की ५ मल्लमपट्टी (इलाज) की, सोमेश्वर के चौसठ घाव और ६ अपने (अनंगपाल के) शरीर में सत्रह घाव युद्ध में लगे ७ दोनों और ८ अपने घर में ९ कौरव वंशी तंवर राजा अनंगपाल ने ॥ ३४ ॥ दिल्ली के राजा १० अनंगपाल ने अपने मंत्री और उमराओं से ११ नीति १२ शीघ्र १३ सलाह करी कि कन्नोज का राजा विजयचन्द राठोड़ मंडलेश्वर (चार योजन भूमि जिसके अधिकार में होवे उसको राजा, और ऐसे सौ राजा जिसके अधिकार में होवें उसको मंडलेश्वर कहते हैं) प्रबल है सो इस समय के १४ पराजय होने से क्रोध करके अपना बल बंध कर देवेगा १५ इस कारण यह सलाह रुचती है कि सुरसुन्दरी नामक हमारी बड़ी पुत्री विजयचन्द के पुत्र को विवाह करके इस द्वेष को १६ उपमा रहित १७ शीघ्र दूर करें ॥ ३५ ॥ १८ हलकारे १९ सम्बन्ध के लिये प्रीति रखकर ॥ ३६ ॥

मंडलेस कनउज्ज मनि, जो दोउ२न किय जेय ॥ ३३ ॥

षट्पात

तोवँर तरनि अनंगपाल नृप बीरसेन सुव ॥
लहि जय सोम सहाय धरनि अप्पन रक्खी ध्रुव ॥
अब दिल्लिय दुव२आय छलत उपनद्ध करे छत ॥
सोम घाय चउसट्ठि स्ववपु सत्रह१७रन संगत ॥
जयहेतु सुभट दुवघाँ२जिते क्रम प्रसन्न सबबिधि करिय ॥
संभरहिँ रक्खि बहुदिन सदन अतिहित कौरव अद्दरिय।३४।
नृप दिल्लीस अनंग सचिव१भट२उचित पुच्छि सब ॥
देस१काल२नय३देखि त्वरित मंडिय रहस्य तब ॥
मंडलेस यह प्रबल बिजय रट्ठोर कुसस्थल ॥
अबके परिभव अनखि बंध करिहैं अप्पन बल ॥
यह मंत्र रुचत तसमात अब सुरसुंदरि ताके सुतहिं ॥
जेठी बिबाहि द्वेसहिं सजव दूर करहिं अनुपम द्रुतहिं ।३५।

दोहा

भट१सचिव२न नृपके भनत, यह मंत्रहि दृढ अक्खि ॥
पठये चर कनउज्ज प्रति, स्व सगपन हित रक्खि ॥३६॥

का होना घड़ा नहीं है क्योंकि कन्नोज का राजा मंडलेश्वर है जिसको इन दोनों ने जीत लिया ॥ ३३ ॥ तंवरों का १ सूर्य २ पुत्र ३ निश्चल ४ छलते हुए घावों की ५ मल्लमपट्टी (इलाज) की, सोमेश्वर के चौसठ घाव और ६ अपने (अनंगपाल के) शरीर में सत्रह घाव युद्ध में लगे ७ दोनों और ८ अपने घर में ९ कौरव वंशी तंवर राजा अनंगपाल ने ॥ ३४ ॥ दिल्ली के राजा १० अनंगपाल ने अपने मंत्री और उमरावों से ११ नीति १२ शीघ्र १३ सलाह करी कि कन्नोज का राजा विजयचन्द राठोड़ मंडलेश्वर(चार योजन भूमि जिसके अधिकार में होवे उसको राजा, और ऐसे सौ राजा जिसके अधिकार में होवें उसको मंडलेश्वर कहते हैं) प्रबल है सो इस समय के १४ पराजय होने से क्रोध करके अपना बल बंध कर देवेगा १५ इस कारण यह सलाह रुचती है कि सुरसुन्दरी नामक हमारी बड़ी पुत्री विजयचन्द के पुत्र को विवाह करके इस द्वेष को १६ उपमा रहित १७ शीघ्र दूर करें ॥ ३५ ॥ १८ हलकारे १९ सम्बन्ध के लिये प्रीति रखकर ॥ ३६ ॥

सुरसुंदरि तोमर सुता, बिजयचंद्र बिबही[1] सु ॥ ४२ ॥
कहुँक लिखी जयचंदकौं, व्याही यहहि अनंग[2] ॥
कैसैं तँहँ निश्चय करैं, पावत पृथक[3] प्रसंग ॥ ४३ ॥
कोऊ बिधि होवहु कथा, कोऊ व्याहहु काहि ॥
पै अनंग दुहिता[4] दई, बडी गाधिपुर[5] व्याहि ॥ ४४ ॥
बिजयचंद सन लहि बिजय, सोमहिं गिनि स्वसहाय[6] ॥
कौरव[7] कमला कन्यका, लघु व्याही हितलाय ॥ ४५ ॥

पट्टपात्

अग्गैं परिसर[8] अटत[9] करत स्वसखिन[10] सह[11] क्रीडन ॥
कंदर जमुना कूल[12] ढुंढ वह निरखि तपोधन[13] ॥
पुज्ज ताहि पय प्रनमि मांगि वर लियउ जथामति[14] ॥
अठ्ठ अधिक सत१०८सखिय रहै इक१थान बंधि रति[15]॥
संतति[16] प्रवीर पावहिं सकल ललित इष्ट यह जिहिं लयो॥
कमला सु व्याहि सोमेस कँहँ दायज बहु तोमर[17] दयो ॥
सहँस१००० दत्त संबसथ[18] सहर हिंसार दुर्ग१सह ॥
पटु[19] दासी सय[20]पंच५०० द्विरद[21] मत्त दह[22]१०गुन दह१०० ॥
सप्ति[23] मनोजव[24] सहँस१००० दुलभ मुत्तियमाला[25] दस१० ॥
मनि अनेक अतिमुल्ल दये इत्यादि राक्खि रस[26] ॥
परिगह समेत पहरावनी सबकी करि तोमर सुपहु ॥

१ विवाहना लिखा है. कहीं इसीको विजयचन्द के पुत्र जयचन्दको २अनंगपाल का परनाना लिखा है सो इस प्रकार रासे में ३ जुदे ही प्रसंग मिलते हैं जिसको कैसे निश्चै करें॥४२॥४३॥अनंगपाल ने बड़ी४पुत्री को५कन्नोज पुर विवाही ॥ ४४ ॥ ६ अपनी सहाय ७ कौरव वंशी तंवर अनंगपाल ने अपनी छोटी पुत्री कमला को सोमेश्वर को व्याही ॥ ४५ ॥ आगे ८ पुर के समीप की भूमि में ९फिरते १०अपनी सखियों के ११साथ खेलती थी १२जमुना नदी के किनारे १३तप ही है धन जिसके ऐसे उस ढुंढ को देखा १४बुद्धि के अनुसार १५ प्रीति १६सन्तान १७ तंवर राजा ने॥४५॥१८गाम १९ चतुर २० सत पंच २१ हाथी २२ दश को दश से गुणा किये हुए अर्थात् सौ २३ घोड़े २४ मन के समान वेगवाले २५ मोतियों की माला २६ स्नेह रखकर

सुरसुंदरि तोमर सुता, बिजयचंद्र बिबही[1] सु ॥ ४२ ॥
कहुँक लिखी जयचंदकौं, व्याही यहहि अनंग[2] ॥
कैसैं तहँ निश्चय करैं, पावत पृथक[3] प्रसंग ॥ ४३ ॥
कोऊ बिधि होवहु कथा, कोऊ व्याहहु काहि ॥
पै अनंग दुहिता[4] दई, बडी गाधिपुर[5] व्याहि ॥ ४४ ॥
बिजयचंद्र सन लहि बिजय, सोमहिं गिनि स्वसहाय[6] ॥
कौरव[7] कमला कन्यका, लघु व्याही हितलाय ॥ ४५ ॥

पट्पात्

अग्गैं परिसर[8] अटत[9] करत स्वसखिन[10] सह[11] क्रीडन ॥
कंदर जमुना कूल[12] ढुंढ वह निरखि तपोधन[13] ॥
पुज्ज ताहि पय प्रनमि मांगि वर लियउ जथामति[14] ॥
अष्ठ अधिक सत१०८सखिय रहे इक१थान बंधि रति[15]॥
संतति[16] प्रवीर पावहिं सकल ललित इष्ट यह जिहिं लयो॥
कमला सु व्याहि सोमेस कँहँ दायज बहु तोमर[17] दयो ॥
सहँस१००० दत्त संबसथ[18] सहर हिंसार दुर्ग१सह ॥
पटु[19] दासी सय[20]पंच५०० द्विरद[21] मत्त दह[22]१०गुन दह१०० ॥
सप्ति[23] मनोजव[24] सहँस१००० दुलभ मुत्तियमाला[25] दस१० ॥
मनि अनेक अतिमुल्ल दये इत्यादि राक्खि रस[26] ॥
परिगह समेत पहरावनी सबकी करि तोमर सुपहु ॥

---

१ विवाहना लिखा है. कहीं इसीको विजयचन्द के पुत्र जयचन्दको २अनंगपाल का परनाना लिखा है सो इस प्रकार रासे में ३ जुदे ही प्रसंग मिलते हैं जिसको कैसे निश्चै करें॥४२॥४३॥अनंगपाल ने बड़ी४पुत्री को५कन्नोज पुर विवाही ॥ ४४ ॥ ६ अपनी सहाय ७ कौरव वंशी तंवर अनंगपाल ने अपनी छोटी पुत्री कमला को सोमेश्वर को व्याही ॥ ४५ ॥ आगे ८ पुर के समीप की भूमि में ९फिरते १०अपनी सखियों के११साथ खेलती थी१२जमुना नदी के किनारे१३तप ही है धन जिसके ऐसे उस ढुंढ को देखा १४बुद्धि के अनुसार १५ प्रीति १६सन्तान १७ तंवर राजा ने॥४५॥१८गाम १९ चतुर २० सत पंच २१ हाथी २२ दश को दश से गुणा किये हुए अर्थात् सौ २३ घोड़े २४ मन के समान बेगवाले २५ मोतियों की माला २६ स्नेह रखकर

तोमराऽनङ्गपालगाधिपुरेशराष्ट्रकूटविजयचन्द्रपरिभवनतोमरराज-ज्येष्ठसुतासुरसुन्दरी १ कान्यकुब्जप्रदानकनिष्ठसुताकमला २ सोमेश्वरविवाहनहिंसारदुर्गादिमहामूल्यनानायौतकवितरणाच-हुवाणराजाऽजमेराऽऽगमनसमात्तगर्भराज्ञीदिल्लीप्रेषणातत्कुमा-रपृथ्वीराजोद्भवनं त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥ आदितो द्वाविं-शत्युत्तरशततमः ॥ १२२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सोम पठाई गर्भसह, कमला पीहरकाज ॥
जातैं पुर दिल्लिय जनम, पायउ पृथ्वीराज१७७ ॥ १ ॥
सक्करि १४ उत्तर रुद्र ११ सत ११४, बिक्रम बच्छरं ब्रातं ॥
बरस पंद्रहम१५के बहुरि, जिम सत्रह१७दिन जात ॥ २ ॥
राधं द्वितीया२ असितं ग्रह, गुरु५ गर५ सिद्धि१६ समाज ॥
जिहिं अनेह दिल्लिय जनम, पायउ पृथ्वीराज ॥ ३ ॥

पज्झटिका

संतरुद्र११ससक्करि१४जातसाल१११४,क्रमलगतपंद्रहम१५अब्दकाल
पंखअसितद्वितीया२राधपाय,उंडुचित्रा१४गीष्पति५वारआय ॥४ ॥

श्वर की सहायता से तंवर अनङ्गपाल का कन्नोज के राजा राठोड़ विजयचन्द्र को पराजय देना, तंवर अनङ्गपाल की बडी पुत्री सुरसुन्दरी को कन्नोज,विवाहना,और छोटी पुत्री कमला को सोमेश्वर चहुवान को विवाहना, हिंसारगढ आदि नानाप्रकार के बहुमूल्य दहेज देना, राजा सोमेश्वर चहुवान का अजमेर आना, गर्भ धारण कीहुई राणी को दिल्ली भेजना, उसके कुमर पृथ्वीराज के जन्म होने का तेरहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १३ ॥ और आदि से एक सौ बाईस मयूख हुए ॥ १२२ ॥

१ पीहर के लिये अर्थात् पीहर भेजी ॥ १ ॥ विक्रम के २ वर्षों के ग्यारह सौ चौदह के ३ समूह में पन्द्रहवें वर्ष के सत्रह दिन जाने पर ४ वैशाख ५ वदि दोज के दिन वृहस्पति वार, गर करण, सिद्धि नाम योग मिलने के उस ६ समय में दिल्ली में पृथ्वीराज ने जन्म पाया ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ वर्ष ८ कृष्णपक्ष ९ वैशाख मास की द्वितीया को१० चित्रा नक्षत्र११वृहस्पति वार ॥४॥

तोमराऽनङ्गपालगाधिपुरेशराष्ट्रकूटविजयचन्द्रपरिभवनतोमरराज-ज्येष्ठसुतासुरसुन्दरी १ कान्यकुब्जप्रदानकनिष्ठसुताकमला २ सोमेश्वरविवाहनहिंसारदुर्गादिमहामूल्यनानायौतक वितरणाच-हुवाणराजाऽजमेराऽऽगमनसमात्तगर्भराज्ञीदिल्लीप्रेषणतत्कुमा-रपृथ्वीराजोद्भवनं त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥ आदितो द्वाविं-शत्युत्तरशततमः ॥ १२२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

सोम पठाई गर्भसह, कमला पीहरकाज[1] ॥
जातैं पुर दिल्लिय जनम, पायउ पृथ्वीराज१७७ ॥ १ ॥
सकरि १४ उत्तर रुद्र ११ सत ११.१४, विक्रम वच्छर आतं ॥
बरस पंद्रहम१५के बहुरि, जिम सत्रह१७दिन जात ॥ २ ॥
राधं द्वितीया२ असितं अह, गुरु५ गर५ सिद्धि१६ समाज ॥
जिहिँ अनेह दिल्लिय जनम, पायउ पृथ्वीराज ॥ ३ ॥

पज्झटिका

संतरुद्र११ससकरि१४जातसाल१११४,क्रमलगतपंद्रहम१५अब्दकाल ॥
पखअसितद्वितीया२राधपाय,उडुचित्रा१४गीष्पतिं५वारआय ॥४॥

श्वर की सहायता से तंवर अनङ्गपाल का कन्नोज के राजा राठोड़ विजय-चन्द्र को पराजय देना, तंवर अनङ्गपाल की बड़ी पुत्री सुरसुन्दरी को क-न्नोज विवाहना, और छोटी पुत्री कमला को सोमेश्वर चहुवान को विवाहना, हिंसारगढ आदि नानाप्रकार के बहुमूल्य दहेज देना, राजा सोमेश्वर चहु-वान का अजमेर आना, गर्भ धारण कीहुई राणी को दिल्ली भेजना, उसके कुमर पृथ्वीराज के जन्म होने का तेरहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १३ ॥ और आदि से एक सौ बाईस मयूख हुए ॥ १२२ ॥

१ पीहर के लिये अर्थात् पीहर भेजी ॥ १ ॥ विक्रम के २ वर्षों के ग्यारह सौ चौदह के ३ समूह में पन्द्रहवें वर्ष के सत्रह दिन जाने पर ४ वैशाख ५ बदि दोज के दिन बृहस्पति वार, गर करण, सिद्धि नाम योग मिलने के उ-स ६ समय में दिल्ली में पृथ्वीराज ने जन्म पाया ॥ २ ॥ ३ ॥ ७ वर्ष ८ कृष्ण-पक्ष ९ वैशाख मास की द्वितीया को १० चित्रा नक्षत्र ११ बृहस्पति वार ॥४॥

बिनुगनित ह्वै न संसय विनास,श्रम अधिक कटावत व्यर्थ स्वास८
माघ१०हिके भृगु१ बुध२राध२माँहिं, अक्खे सु असंगत वत्त आँहिं
वदिलग्नअवि१रुझख१२रविबताय,निसजन्मकह्योसोपैनन्याय ।९।
बलिचित्रा१४तारातदिनबुल्लि,भाख्योससि२मृगपति५रासिभुल्लि॥
अरु चैत विसद अष्टम८ अनेह,इम अक्खि भरनि२ नच्छत्र एह ॥१०॥
नवमी९दिनबहुला३कहिनिलज्ज,कहिगोपुनिरोहिनि४दसमि१०कज्ज
कनउज्ज खंडबिच यह कुरीति,पै मूढ करत तोसहु प्रतीति ॥११॥
बिक्खहु सु सूरि रचि अंकब्रात,इनदिनन कबहु ए उड्डु न आत ॥
इत्यादि असंगत बहुत और,जंपिय तिहिं केवल प्रसभ जोर ॥१२॥
सब कौन गनैं लहि यहँ प्रसंग, भाख्यो तदीय बिबुधत्व भंग ॥
कविभोपाढिप्राकृतशब्दकेक,इतरनसक्योसुकछुसिक्खिएक१।१३।

जनाकर सूर्य को द्वादश स्थान में जाकर कहा सो गणित किये विना यह सन्देह नहीं मिटता परन्तु इसमें श्रम अधिक है और इस परिश्रम में वृथा आयु जाती है क्योंकि रासाग्रन्थ अप्रामाणिक होने से इसके लिये श्रम करना व्यर्थ है ॥ ८ ॥ मकर (दशमी) राशि के शुक्र और बुध माघमास में रहते हैं जिनको वैशाख मास में कहे हैं सोभी वार्ता असंगत है और मेष लग्न कहकर मीन का सूर्य बताकर रात्रि का जन्म लिखा सोभी अन्याय है ॥ ९ ॥ फिर उस दिन चित्रा नक्षत्र कहकर सिंहराशि का चन्द्रमा बताया सोभी भूल है और चैत्र सुदि अष्टमी के समय (दिन) इसप्रकार भरणी नक्षत्र कहकर वह निर्लज्ज (चन्द) नवमी के दिन कृत्तिका कहकर फिर दशमी के कार्य में रोहिणी नक्षत्र कहगया, यह कुरीति रासा नामक ग्रन्थ के कन्नोज खंड में है परन्तु मूर्ख लोग सन्तोष करके उसी पर विश्वास करते हैं "चैत्र शुक्ल अष्टमी को भरणी, नवमी को कृत्तिका और दशमी को रोहिणी नक्षत्र कदापि नहीं आते जिसका प्रसिद्ध प्रमाण है कि चैत्र शुक्ल नवमी को पुष्य नक्षत्र में रामचन्द्र का जन्म है सो कृत्तिका से छः नक्षत्रों का अंतर पड़ता है इसकारण चैत्र शुक्ल पक्ष की उक्त तिथियों में उपरोक्त तीनों नक्षत्र कदापि नहीं आसक्ते" ॥ ११ ॥ पण्डित लोग अङ्क समूह (अहर्गण) रचकर देखो सो इन दिनों में ये नक्षत्र कभी नहीं आते, इनको आदि लेकर रासा नामक ग्रंथ में और भी बहुत बातें असंगत हैं सो उस चन्द ने केवल हठ के बल से कही हैं ।१२। जिनको कौन गिने ? प्रसंग पाकर यह उस (चन्द्र) की पंडिताई का भंग कहदिया है कि वह मूर्ख था कितनेक

बिनुगनित ह्है न संसय विनास, श्रम अधिक कटावत व्यर्थ स्वास ८
माघ१०हिके भृगु१ बुध२राध१माँहिं, अक्खे सु असंगत बत्त आँहिं
वदिलग्नअवि१रुझख१२रविबताय, निसजन्मकह्योसोपैनन्याय ।९।
बलिचित्रा१४तारातदिनबुल्लि, भाख्योससि२मृगपति५रासिभुल्लि ॥
अरु चैत विसद अष्टम८ अनेह, इम अक्खि भरनि२ नच्छत्र एह ॥१०॥
नवमी९दिनबहुला३कहिनिलज्ज, कहिगोपुनिरोहिनि४दसमि१०कज्ज
कनउज्ज खंडबिच यह कुरीति, पै मूढ करत तोसहु प्रतीति ॥११॥
बिक्खहु सु सूरि रचि अंकब्रात, इनदिनन कबहु ए उडु न आत ॥
इत्यादि असंगत बहुत और, जंपिय तिहिं केवल प्रसभ जोर ॥१२॥
सब कौन गनैं लहि यहँ प्रसंग, भाख्यो तदीय बिबुधत्व भंग ॥
कविभोपादिप्राकृतशब्दकेक, इतरनसक्योसुकछुसिक्खिएक१।१३।

जताकर सूर्य को द्वादश स्थान में जाकर कहा सो गणित किये बिना यह सन्देह नहीं मिटता परन्तु इसमें श्रम अधिक है और इस परिश्रम में वृथा आयु जाती है क्योंकि रासाग्रन्थ अप्रामाणिक होने से इसके लिये श्रम करना व्यर्थ है ॥ ८ ॥ मकर (दशमी) राशि के शुक्र और बुध माघमास में रहते हैं जिनको वैशाख मास में कहे हैं सोभी वार्ता असंगत है और मेष लग्न कहकर मीन का सूर्य बताकर रात्रि का जन्म लिखा सोभी अन्याय है ॥ ९ ॥ फिर उस दिन चित्रा नक्षत्र कहकर सिंहराशि का चन्द्रमा बताया सोभी भूल है और चैत्र सुदि अष्टमी के समय (दिन) इसप्रकार भरणी नक्षत्र कहकर वह निर्लज्ज (चन्द) नवमी के दिन कृत्तिका कहकर फिर दशमी के कार्य में रोहिणी नक्षत्र कहगया, यह कुरीति रासा नामक ग्रन्थ के कन्नोज खंड में है परन्तु मूर्ख लोग सन्तोष करके उसी पर विश्वास करते हैं "चैत्र शुक्ल अष्टमी को भरणी, नवमी को कृत्तिका और दशमी को रोहिणी नक्षत्र कदापि नहीं आते जिसका प्रसिद्ध प्रमाण है कि चैत्र शुक्ल नवमी को पुष्य नक्षत्र में रामचन्द्र का जन्म है सो कृत्तिका से छः नक्षत्रों का अंतर पड़ता है इसकारण चैत्र शुक्ल पक्ष की उक्त तिथियों में उपरोक्त तीनों नक्षत्र कदापि नहीं आसक्ते." ॥ ११ ॥ पण्डित लोग अङ्क समूह (अहर्गण) रचकर देखो सो इन दिनों में ये नक्षत्र कभी नहीं आते, इनको आदि लेकर रासा नामक ग्रंथ में और भी बहुत बातें असंगत हैं सो उस चन्द्र ने केवल हठ के बल से कही हैं ।१२। जिनको कौन गिने? प्रसंग पाकर यह उस (चन्द्र) की पंडिताई का भंग कहदिया है कि वह मूर्ख था कितनेक

निज नारि द्वि२रागमं करन काज, रहि दिन कितेक चहुवानराज
निज स्वसुर सिक्खदिय जब अनंग, दंपति२तब आये स्वीय द्रंग२१
अजमेर ससुत इम सोम१७६आय, रिपु दमन तप्यो चहुवानराय॥
पहिलैं भजि ढुंढहिं करि प्रनाम, कँमला बर पायउ इष्ट काम२२
सो सत्य कह्यो लिखि चंद सर्व, वह वृत्त कहौं जोपै अखर्व ॥
अठ रु सत१०८जे दूर रु अदूर, सब जयनभई सुत प्रबल सूर२३
जो जो परिनाई जत्थ जत्थ, आई बहोरि इक१ठाम अत्थ ॥
पहिलैं रजपूतनकी प्रजाँहि, अक्खौं छअगसत१०६सर्व आँहि२४
भनि चंद दिखाई भिन्न भिन्न, अधिराजे सुनहु अन्वय अछिन्न ॥
दुलही इक१०व्याही गाधिद्रंग१, भो तस कबंध निहुर१अभंग।२५।
मंडोवर२दिय इक१हे महीप, प्रकटे तस दुव२सुत महन१।२पीप१।३
अब्बुव३इक१०व्याहिय सलख अत्थ, सुत तासजैत१।४प्रकट्यो समत्थ
व्याहिय इक१कंगुर४सुनहु बीर, हुव तनय तास हाहुलि हमीर१।५
नागोर५इक्क१दिय हे नरेस, बलिभद्र१।६तास हुव बलबिसेस।२७।
इक१०व्याही धामिनि६पुर अजेय, गोइंदराय१।७हुव तस सुगेय ॥
जालोर७विबाहिय इक१जास, सुत रामदेव१।८हुव रन सुभास २८
व्याहिय इक१कन्या पुरबयान८, हरिसिंह१।९तास हुव सुत सुजान
दुहिताइक१जैसलमेर९दत्त, सुतअचल१।१०भानु१।११दुव२तससुपत्त
धोसे१०सजन्हड़हिंइक१दीन, पज्जुराणा१।१२कुम्महुवतसप्रबीन॥

१ गोणा फेरा २ अनंगपाल राजा ने ३ स्त्रीपुरुष अपने पुर अजमेर में आये।२१। सोमेश्वर की स्त्री ४ कमला ने ढुंढ राक्षस का सेवन करके बांछित वर पाया था ॥ २२ ॥ जिसको ५ चंद ने लिखकर सत्य कर दिया है अर्थात् यह वृत्तान्त सत्य मानने योग्य नहीं जिसको भी सत्य करके लिख दिया है वह वृत्तान्त ६ बड़ा है तोभी कहता हूं ॥ २२ ॥ कमला आदि एक सौ आठ सखियां कोई समीप और कोई दूर जो जहां थी उसने वहीं वीर पुत्र जने ॥ २३ ॥ ७ सन्तान होट है॥ २४ ॥ ९हे स्वामी रामासिंह उनके त्रुटि रहित (सिलासिलेवार) १० वंश सुनो ११ कन्नोज ॥ २५॥ १२ समर्थ ॥ २६ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १३ धोसा नगर का पति १४ कछवाहा

निज नारि द्विरागमं करन काज, रहि दिन कितेक चहुवानराज ।
निज स्वसुर सिक्खदिय जब अनंग, दंपति२तब आये स्वीय द्रंग२१
अजमेर ससुत इम सोम१७६आय, रिपु दमन तप्यो चहुवानराय॥
पहिलैं भजि ढुंढहिँ करि प्रनाम, कँमला बर पायउ इष्ट काम२२
सो सत्य कह्यो लिखि चंद सर्व, वह वृत्त कहौँ जोपै अखर्व ॥
अठ रु सत१०८जे दूर रु अदूर, सब जयनभई सुत प्रबल सूर२३
जो जो परिनाई जत्थ जत्थ, आई बहोरि इक१ठाम अत्थ ॥
पहिलैं रजपूतनकी प्रजाँहि, अक्खौं छअगसत१०६सर्व आँहि२४
भनि चंद दिखाई भिन्न भिन्न, अधिराज सुनहु अन्वंय अछिन्न ॥
दुलही इक१०व्याही गाँधिद्रंग१, भो तस कवंध निड्डर१अभंग।२५।
मंडोवर२दिय इक१हे महीप, प्रकटे तस दुव२सुत महन१।२पीप१।३
अब्बुव३इक१०व्याहिय सलख अत्थ, सुत तासजैत१।४प्रकट्यो समत्थ
०व्याहिय इक१कंगुर४सुनहु वीर, हुव तनय तास हाहुलि हमीर१।५
नागोर५इक्क१दिय हे नरेस, बलिभद्र१।६तास हुव बलविसेस।२७।
इक१०व्याही धामिनि६पुर अजेय, गोइंदराय१।७हुव तस सुगेय ॥
जालोर७व्विवाहिय इक्क१जास, सुत रामदेव१।८हुव रन सुभास २८
०व्याहिय इक१कन्या पुरबयान८, हरिसिंह१।९तास हुव सुत सुजान
दुहिताइक१जैसलमेर९दत्त, सुतअचल१।१०भानु१।११दुव२तससुपत्त
द्योसे१०सजन्हड़हिँइक१दीन, पज्जुराग१।१२कुम्महुवतसप्रबीन॥

१ गोणा फेरा २ अनंगपाल राजा ने ३ स्त्रीपुरुष अपने पुर अजमेर में आये।२१। सोमेश्वर की स्त्री ४ कमला ने ढुंढ राक्षस का सेवन करके वांछित वर पाया था ॥ २२ ॥ जिसको ५ चंद ने लिखकर सत्य कर दिया है अर्थात् यह वृत्तान्त सत्य मानने योग्य नहीं जिसको भी सत्य करके लिख दिया है वह वृत्तान्त ६ बड़ा है तोभी कहता हूं ॥ २२ ॥ कमला आदि एक सौ आठ सखियां कोई समीप और कोई दूर जो जहां थी उसने वहीं वीर पुत्र जनें ॥ २३ ॥ ७ सन्तान होते हैं ॥ २४ ॥ ९हे स्वामी रामासिंह उनके त्रुटि रहित (सिलसिलेवार) १० वंश सुनो ११ कन्नोज ॥ २५॥ १२ समर्थ ॥ २६ ॥ २८ ॥ २९ ॥ १३ द्योसा नगर का पति १४ कछवाहा

भुजनेर३०कनीइक्क१दियसुभास,तँहँहुवसुतजद्दवजाम१।३८तास ॥
बसुनैर३१इक्क१दियसहविधान,सुततसप्रसंग१।३९खिच्चियसुजान४१
संचोर३२दई इक१गुन सुढार, उद्दिग्ग१।४०तास बाहु प्रकार ॥
किरनाल३३इक्क१दियलग्नकाल,पुंडीरधीर१।४१तसहेनृपाल।४२।

ब्याहिय इक१ कन्या जंबुवास३४,
जुगल२ बरासिंह१।४२हरसिंह२।४३ जास ॥
दिय इक१ बडोद३५ तस गुन दराज,
चालुक सारंग१।४४ रु विंझराज२।४५ ॥ ४३ ॥

दुलहनि इक१ सत्तलनैर३६दीन, हुव तास सूर१।४६जंगर[1] अहीन
इक१दियबर्तिकपुर३७गुनअगार,कुलगौंडसगर१।४७ताकैकुमार॥
इक१कोविवाहबुगलान३८आसँ,जुग२बारडसिंह१।४८रुरैन२।४९जास
ब्याहियनिर्बानाहिँइक१वडार३९,सुततसनारायन१।५०कित्तिसार॥
ब्याहियइक१ बक्करनैर४० बाल, मन अडर तास चंदेल माल१।५१ ।
जिम इक्क१[2]कनी दिय जयनिवास४१, रट्ठोर सामलो१।५२ सूर तास॥
इक१दियडग४२तसदुव२रनवतंस[4],बीरम१।५३बरासिंह२।५४मुहिल्लवंस
लक्खेरिय४३इक१दियविहितलाज, जिहिँसूनुदेवँरोदेवराज५५।४७।
दिय इक्क१ बटेस्वर४४ गुन उदार, भो तास सूनु चालुक्क भार५६ ॥
दिय इक्क१ भानुपुर४५मनवदात[6],जिहिँ सूनु बग्गरी बग्घ५७जात।४८।

दिय इक्क१भानुपुर४५मनवदात,
इक१ सोझति४६ दिय तस दुव२ उदान,
सारंग१।५८ बीर२।५९ प्रतिहार रान ॥

मथुरा४७ इक्क१ दिय सहसुखसमाज, भो तिँहिँ सुत जद्दव भोजराज।
हिंसार४८ इक्क१ दिय मति गहीर, बिक्रम६१ कबंध ताकै प्रबीर ॥
जिन्नोद४९ इक्क१ दिय रीति जुत्त, पहु मोरी सद्दल६२ तास पुत्त।५०।

१ युद्ध में अहीन(न्यूनता रहित)॥४४॥२ हुआ ३कन्या ॥४६॥ ४ युद्ध के मुकुट अर्थात् योद्धाओं के मुकुट ५ देवड़ा ॥ ४७ ॥ ६ उज्वल मनवाला ॥ ४८ ॥
७ सर्प विशेष अर्थात् सर्प के समान क्रोधवाले ॥ ४९ ॥५०॥

हँहुवसुतजद्दवजाम१।३८तास ॥
भुजनेर३०कनीइक१दियसुभास,तँ
बसुनैर३१इक्क१दियसहबिधान,सुततसप्रसंग१।३९खिच्चियसुजान४१
संचोर३२दई इक१गुन सुढार, उद्दिग्ग१।४०तास बाहु प्रकार ॥
किरनाल३३इक्क१दियलग्नकाल,पुंडीरधीर१।४१तसहेनृपाल।४२।

ब्याहिय इक१ कन्या जंबुवास३४,
जुगल२ बरासिंह१।४२हरासिंह२।४३ जास ॥
दिय इक१ बडोद३५ तस गुन दराज,
चालुक सारंग१।४४ रु विंझराज२।४५ ॥ ४३ ॥

दुलहनि इक१ सत्तलनैर३६दीन, हुव तास सूर१।४६जंगर अहीन[1]
इक१दियबर्तिकपुर३७गुनअगार,कुलगौडसगर१।४७ताकैंकुमार॥
इक१कोविवाहबुगलान३८आसँ,जुग२आरडसिंह१।४८रुरैन२।४९जास
ब्याहियनिर्बानाहिँइक१वडार३९,सुततसनारायन१।५०कित्तिसार॥
ब्याहियइक१ बक्करनैर४० बाल, मन अडर तास चंदेल माल१।५१ ।
जिम इक१कनी[3] दिय जयनिवास४१, रट्ठोर सामलो१।५२ सूर तास॥
इक१दियडग४२तसदुव२रनवतंसँ[4],बीरम१।५३बरासिंह२।५४मुहिल्लवंस
लक्खेरिय४३इक१दियविहितलाज, जिहिँसूनुदेवँरोदेवराज५५।४७।
दिय इक्क१ बटेस्वर४४गुन उदार, भो तास सूनु चालुक्क भार५६ ॥
दिय इक्क१भानुपुर४५मनवदातँ[6],जिहिँ सूनु बग्गरी बग्घ५७[7]जात।४८।

इक१ सोझति४६ दिय तस दुव२ उदाँन,
सारंग१।५८ बीर२।५९ प्रतिहार शान ॥
मथुरा४७ इक१ दिय सह सुखसमाज, भो तिँहिँ सुत जद्दव भोजराज।
हिंसार४८ इक्क१ दिय मति गहीर, बिक्रम६१ कबंध ताकैं प्रबीर ॥
जिन्नोद४९ इक्क१ दिय रीति जुत्त, पहु मोरी सद्दल६२ तास पुत्त।५०।

---

१ युद्ध में अहीन(न्यूनता रहित)॥४४॥२ हुआ ३कन्या ॥४६॥४ युद्ध के मुकुट अर्थात् योद्धाओं के मुकुट ५ देवड़ा ॥ ४७ ॥ ६ उज्वल मनवाला ॥ ४८ ॥ ७ सर्प विशेष अर्थात् सर्प के समान क्रोधवाले ॥ ४९ ॥५०॥

कन्याइक१ अप्पियकालरोध८९,बलिराय८७बच्छकुलतससुबोध
आहुड्ड[1]७० इक१ दिय हित उपाय, गहिलोत तास गंभीरराय८८॥
जालप्या७१इक१दियरीतिजुत्तपुष्कर१।८९रुकन्ह२।९०दुव२तासपुत्त
इक१दिय अलोर७२ सुत तस सुजान, उपज्यो पंचायन९१चाहुवान
सहबिधिइक१जीरन७३दियसुभास,तनुजातनार९२प्रतिहारतास६३
सखिगन कमलादिक बीस२०सत्थ, अजमेर७४दई सोमादि अत्थ
सोमज[3] हुव पृथ्वीराज१सुद्ध, लोहान१ आदि इतरनँ अलुद्ध॥६४॥
आजानुबाहु१ लोहान अच्छ, चहुवान लंगरी२ दंददच्छ ॥
धावर१प्रमार१जुग२धीर३ धीर४,बलि मोरी सारंग५हु प्रबीर।६५।
लघुबेधीसिंह६ हु मंडलीक, बंबार७ बीर बलि संभरीक ॥
इत्यादि बीस२०अजमेर आय, हुव बालमित्र पित्थलँ सहाय।६६।
दिल्लीहि रही तेरह१३ उढ़ूढ, तिनकै तिते१३ हि हुव गुन अगूढ॥
चतुरंग आतताई१ चुहान, संखुल सहस्रमल्ल२हु सुजान ॥ ६७ ॥
पुनि बैस चंद३ तोमर महार४, जंगलियराज५ दाहिम उदार ॥
रनधीर६ बहुरि प्रतिहारराय,दिल्ली हुव इत्यादि समुदाय ॥ ६८ ॥
जे तेरह१३ संख्यामान जोध,बंदीस चंद बरनैं सुबोध ॥
छत्रियजाँएइक१सतछ६अग्ग१०६,इमजनतभईसब१२५सुतउदग्ग

पादाकुलकम्

कछु अनंग संबंधि नृपनकी, ही दिल्लिय कन्या हित मनकी ॥
सुभटनँकी[12] खिल[13] सकल सुहाई, पहु तोमर ते इम परिनाई॥७०॥
स्वपुरोहितकी इक्क सुता सहि, सोम पुरोहितकौं दिय संगहि ॥

१ आहड़ नामक नगर में ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ कमला आदि लेकर बीस सखियां अजमेर में राजा सोमेश्वर आदि को व्याहीं ३ सोम का पुत्र पृथ्वीराज हुआ और ४ दूसरों के ५ निर्लोभी लोहान आदि हुए ॥ ६४ ॥ ६ दुःख में चतुर (दुःख में नहीं घबराने वाला) ॥ ६५ ॥ ७ पृथ्वीराज के ॥ ६६ ॥ ८ वहीं विवाही हुई ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ९ भाटों का पति १० क्षत्रियों की कन्या ॥ ६९ ॥ कितनीक तो राजा ११ अनंगपाल के संबंधी राजाओं की कन्या मन से अपनी सखियों में स्नेह रखनेवाली दिल्ली में थीं और १३ बाकी कन्या १२ उमरावों की थीं जिनको तंवर राजा ने इस प्रकार परणाई ॥ ७० ॥ ७१ ॥

कन्याइक१ अप्पियकालरोध६९,बलिराय८७बच्छकुलतससुबोध
आहुट्ठ७० इक्क१ दिय हित उपाय, गहिलोत तास गंभीरराय८८॥
जालप्या७१इक१दियरीतिजुत्तपुष्कर१।८९रुकन्ह२।९०दुव२तासपुत्त
इक१दिय अलोर७२ सुत तस सुजान, उपज्यो पंचायन९१चाहुवान
सहविधिइक१जीरन७३दियसुभास,तनुजातनाैर९२प्रतिहारतास९३
सखिगन कमलादिक बीस२०सत्थ, अजमेर७४दई सोमादि अत्थ
सोमज हुव पृथ्वीराज१सुद्ध, लोहान१ आदि इतरनै अलुद्ध॥९४॥
आजानुबाहु१ लोहान अच्छ, चहुवान लंगरी२ दंददच्छ ॥
धावर१प्रमार१जुग२धीर३ धीर४,बलि मोरी सारंग५हु प्रबीर।९५।
लघुबेधीसिंह६ हु मंडलीक, बंबार७ बीर बलि संभरीक ॥
इत्यादि बीस२०अजमेर आय, हुव बालमित्र पित्थलै सहाय।९६।
दिल्लीहि रही तेरह१३ उढ्ढ, तिनकै तिते१३ हि हुव गुन अगूढ॥
चतुरंग आतताई१ चुहान, संखुल सहस्रमल्ल२हु सुजान ॥ ९७ ॥
पुनि बैस चंद३ तोमर महार४, जंगलियराज५ दाहिम उदार ॥
रनधीर६ बहुरि प्रतिहारराय,दिल्ली हुव इत्यादि समुदाय ॥ ९८ ॥
जे तेरह१३ संख्यामान जोध,बंदीस चंद बरनैं सुबोध ॥
छत्रियजाएइक१सतछ६अग्ग१०६,इमजनतभईसब१२५सुतउदग्ग

पादाकुलकम्

कछु अनंग संबंधि नृपनकी, ही दिल्लिय कन्या हित मनकी ॥
सुभटनकी खिल सकल सुहाई, पहु तोमर ते इम परिनाई॥७०॥
स्वपुरोहितकी इक्क सुता सहि, सोम पुरोहितकौ दिय संगहि ॥

---

१ आहड़ नामक नगर में ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ कमला आदि लेकर बीस सखियां अजमेर में राजा सोमेश्वर आदि को ब्याहीं २ सोम का पुत्र पृथ्वीराज हुआ और ४ दूसरों के ५ निर्लोभी लोहान आदि हुए ॥ ९४ ॥ ६ दुःख में चतुर (दुःख में नहीं घबराने वाला) ॥ ९५ ॥ ७ पृथ्वीराज के ॥ ९६ ॥ ८ वहीं विवाही हुई ॥ ९७ ॥ ९८ ॥९ भाटों का पति१० क्षत्रियों की कन्या॥९९। कितनीक तो राजा११ अनंगपाल के संबंधी राजाओं की कन्या मन से अपनी सखियों में स्नेह रखनेवाली दिल्ली में थीं और१२बाकी कन्या१३उमरावों की थीं जिनको तंवर राजा ने इस प्रकार परणाई ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अजमेर१ मिले कति बीर अरु कति दिल्लिय२ आजानुकर१७६

दोहा

जे पित्थलके जन्मसौं, उपजे प्रथम उदार ॥
बहुत रु कछु सम बेसके, इम हुव बर अनुसार॥७७॥
धीर१रु हाहुलिराज२ से, बहुत बडे कति बीर ॥
विक्रम१ से थोरे बडे, हुव कति रन हम्मीर ॥७८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचराडासिवंशवर्णनाऽन्तर्गतडेड्डुरिकचाहुवाणराजसोमेश्वरचरित्रे राजकुमारपृथ्वीराज १७७ जन्मसमयशक १ सम्वत्सर २ मास३ पक्ष४तिथि५ वार६नक्षत्र७योग८करण९गतेष्टकाल१लग्नसूचनवन्दिचन्दोक्ताऽसङ्गतकाल १ खेटा २ऽऽदिकथनश्रुतदौहित्रजन्मतोमरऽनङ्गपालवर्द्धापनादिमंगलविस्तरणराष्ट्रकूटराजजयचन्द्रवस्त्र१ क्रीडनको२ऽऽदिदिल्लीप्रेषणश्रुतपुत्रप्रादुर्भावदत्तगज१हय२निवसथ ३सहस्रचराडासिराजसोमेश्वरदिल्लीपुराऽऽगमनविहितद्विरागमनस्वराज्ञीकमला१कुमारपृथ्वीराज२पुनरजमेरप्रविशनतत्रत्यतत्रत्यकमलासखीसमाजप्रसूतप्रत्येकसामन्तनाम१जाति२ जन्मस्थान३की-

---

किया, ये १ आजानुबाहु वीर कितनेक तो पृथ्वीराज से अजमेर में मिले और कितनेक दिल्ली में मिले ॥ ७६ ॥ २ समान उमरवाले ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर डिड्डुरकुल के चहुवाण राजा सोमेश्वर के चरित्र में राजकुमार पृथ्वीराज के जन्म समय में शकसम्वत् महीना पक्ष तिथि नक्षत्र योग करण गया हुआ इष्ट समय लग्न की सूचना, चन्द भाट के कहे असंगत समय नक्षत्र आदि कहना, दोहिते का जन्म सुनकर तंवरराजा अनंगपाल का नाड़ीछेदन (नाला काटना) आदि मंगल फैलाना, राठोड़ राजा जयचन्द का वस्त्र और खिलोने आदि दिल्ली भेजना, पुत्र का जन्म सुनकर हज़ार हाथी घोड़े ग्राम देकर चहुवाण राजा सोमेश्वर का दिल्ली पुर आना और गौणा फेरा करके अपनी राणी कमला और कुमर पृथ्वीराज का फिर अजमेर में प्रवेश करना, जहां थीं वहीं पर कमला की सखियों के समाज का पुत्र जनना, और हरएक सामंतों के नाम जाति और जन्मस्थान

अजमेर१ मिले कति बीर अरु कति दिल्लिय२ आजानुकर॥७६॥

दोहा

जे पित्थलके जन्मसौं, उपजे प्रथम उदार ॥
बहुत रु कछु सम बेसके, इम हुव बर अनुसार॥७७॥
धीर१ रु हाहुलिराज२ से, बहुत बडे कति बीर ॥
विक्रम१ से थोरे बडे, हुव कति रन हमगीर ॥७८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचराडासिवंशवर्णनाऽन्तर्गतडेड्डुरिकचाहुवाणराजसोमेश्वरचरित्रे राजकुमारपृथ्वीराज १७७ जन्मसमयशक १ सम्वत्सर २ मास३ पक्ष४तिथि५ वार६नक्षत्र७योग८करण९गतेष्टकाल१लग्नसूचनबन्दिचन्दोक्ताऽसङ्गतकाल १ खेटा २ऽऽदिकथनश्रुतदौहित्रजन्मतोमरस्यानङ्गपालवर्द्धापनादिमंगलविस्तरणाराष्ट्रकूटराजजयचन्द्रवस्त्र१ क्रीडनको२ऽऽदिदिल्लीप्रेषणाश्रुतपुत्रप्रादुर्भावदत्तगज१हय२निवसथ३सहस्रचराडासिराजसोमेश्वरदिल्लीपुराऽऽगमनविहितद्विरागमनस्वराज्ञीकमला१कुमारपृथ्वीराज२पुनरजमेरप्रविशनतत्रत्यतत्रत्यकमलासखीसमाजप्रसूतप्रत्येकसामन्तनाम१जाति२ जन्मस्थान३की-

---

क्रिया, ये १ आजानुबाहु वीर कितनेक तो पृथ्वीराज से अजमेर में मिले और कितनेक दिल्ली में मिले ॥ ७६ ॥ २ सजान उमरवाले ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर डिड्डुरकुल के चहुवाण राजा सोमेश्वर के चरित्र में राजकुमार पृथ्वीराज के जन्म समय में शकसम्वत् महीना पक्ष तिथि नक्षत्र योग करण गया हुआ इष्ट समय लग्न की सूचना, चन्द भाट के कहे असंगत समय नक्षत्र आदि कहना, दोहिते का जन्म सुनकर तंवरराजा अनंगपाल का नाड़ीछेदन (नाला काटना) आदि मंगल फैलाना, राठोड़ राजा जयचन्द का वस्त्र और खिलोने आदि दिल्ली भेजना, पुत्र का जन्म सुनकर हजार हाथी घोड़े ग्राम देकर चहुवाण राजा सोमेश्वर का दिल्ली पुर आना और गौणा फेरा करके अपनी राणी कमला और कुमर पृथ्वीराज का फिर अजमेर में प्रवेश करना, जहां थीं वहीं पर कमला की सखियों के समाज का पुत्र जनना, और हरएक सामंतों के नाम जाति और जन्मस्थान

जिण नाहरराज अणहिल्लपुररा भूपाळ भीम१ अब्बूरा अधीस प्रामार सळख२ मेदपाटरा महीप राउळ समरसिंह३ सूँभी जोर गहियो॥ इणाँ मैं एकरीभी[1] आसंगमैं न आयो[2] आपकैही मनमतै रहियो॥

सो नाहरराज देस१ काळ२ बिचारि दिल्ली आय इणरीति अनंगपाळनूँ प्रसन्न करण सभामैं मिसल माफिक रहियो ॥

अरु कुमार पृथ्वीराजरी तरह देखि प्रसंसारो प्रकर[3] गहियो।४।

जिण समय आपरी सिराह करता प्रतिहारराजनूँ पृथ्वीराज कुमार निज कंठसूँ उतारि सोळह१६ बर्णांरा[4] सुबर्णरी माळा दीधी॥

अर अणंगपाळभी आपरा दौहित्ररै साथ प्रतिहाररी कन्यारा संबंधरी बातकीधी ॥

पछै मातामहसूँ सीख पाय कुमार पृथ्वीराज अजमेर आयो ॥

अर तोमराधीसरो[5] प्रसाद पाय नाहरराज आपरै सदन[6] मंडोवर सिधायो ॥ ५ ॥

अठी अणहिल्लपुररै नरेस चालुकराज भोळारायभीम आखेट[7] रै निमित्त प्रस्थान[8] कियो॥

अर आपरो बांधवबर्ग समस्तही साथलियो ॥

हिरण्याक्षरा अंग ज्यौं महाबराह दंत तुंडाघांत[10] सोभित केही बन१ पर्वत२ घिराय केही सूकर[9] सिंहाँरा प्राणाँरो संघात भगायो॥

अर मृगयारो सवाद[11] अनुभूत[12] करि फौजमैं पाछा पधारणारो निदेस[13] लगायो ॥ ६ ॥

पाछा आवताँ राजारा काका सारंगदेवरा बडापुत्र प्रतापसिंह १ अरिसिंह२ दो२ही सहोदर[14] एक१ नदीरै तीर उचित जळदेखि सायं-

---

१ हिम्मत में नहीं आया अर्थात् नाहरराज को विजय करने की हिम्मत किसी को नहीं हुई २ अरु३ समूह४ अग्नि में सौलह वार तपाये हुए स्वर्ण (कुंनण) की ५ तंवरों का स्वामी ६ घर ७ शिकार के अर्थ ८ गमन किया. हिरण्याक्ष का शरीर वराह अवतार से युद्ध करने से दन्त और१० तुंडों के आघात से अनेक घाओं युक्त होगया था इसप्रकार ९ बडे सूवरों से अपने शरीर को घावों से शोभित करके११ शिकार के स्वाद का१२ अनुभव करके१३ आज्ञा दी. १४ सगे भाई

जिण नाहरराज अणिहल्लपुररा भूपाळ भीम१ अब्बूरा अधीस प्रामार सळख२ मेदपाटरा महीप राउळ समरसिंह३ सूँभी जोर गहियो॥
इणाँ मैं एकरीभी आसंगमैं न आयो[1] रै आपकैही मनमतै रहियो॥
सो नाहरराज देस१ काळ२ बिचारि दिल्ली आय इणारीति अनंगपाळनूँ प्रसन्न करण सभामैं मिसल माफिक रहियो ॥
अरु कुमार पृथ्वीराजरी तरह देखि प्रसंसारो प्रकर[3] गहियो॥४॥
जिण समय आपरी सिराह करता प्रतिहाररराजनूँ पृथ्वीराज कुमार निज कंठसूँ उतारि सोळह१६ बर्णाँरा[4] सुबर्णरी माळा दीधी॥
अर अणंगपाळभी आपरा दौहित्ररै साथ प्रतिहाररी कन्यारा संबंधरी बातकीधी ॥
पछैं मातामहसूँ सीख पाय कुमार पृथ्वीराज अजमेर आयो ॥
अर तोमराधीसरो[5] प्रसाद पाय नाहरराज आपरै सदन[6] मंडोवर सिधायो ॥ ५ ॥
अठी अणिहल्लपुररै नरेस चालुकराज भोळारायभीम आखेटरै[7] निमित्त प्रस्थानकियो[8] ॥
अर आपरो बांधवबर्ग समस्तही साथलियो ॥
हिरणयाक्षरा अंग ज्यौं महाबराह दंत तुंडाघांत[10] सोभित केही बन१ पर्वत२ घिराय केही सूकर[9] सिंहाँरा प्राणाँरो संघात भगायो॥
अर मृगयारो[11] सवाद अनुभूत[12] करि फौजमैं पाछा पधारणारो निदेस[13] लगायो ॥ ६ ॥
पाछा आवताँ राजारा काका सारंगदेवरा बडापुत्र प्रतापसिंह १ अरिसिंह२ दो२ही सहोदर[14] एक१ नदीरै तीर उचित जळदेखि सायं-

---

१हिम्मत में नहीं आया अर्थात् नाहरराज को विजय करने की हिम्मत किसी को नहीं हुई २ अरु३ समूह४ अग्नि में सोलह वार तपाये हुए स्वर्ण (कुंनण) की ५ तंवरों का स्वामी ६ घर ७ शिकार के अर्थ ८ गमन किया. हिरण्याक्ष का शरीर वराह अवतार से युद्ध करने से दन्त और१० तुंडों के आघात से अनेक घाओं युक्त होगया था इसप्रकार ९ बडे सूवरों से अपने शरीर को घावों से शोभित करके ११ शिकार के स्वाद का १२ अनुभव करके १३ आज्ञा दी. १४ सगे भाई

जरैं पत्र बाँचताँही प्रतापसिंह१ अरिसिंह२ गोकुलदास३ गोइंदराज४ हरिसिंघ५ स्यामदास६ भगवद्दास७ सातूं७ ही सूरवीर आप आपरा परिकर सहित चंडासिराजरै वास रहण आया ॥ १० ॥ कुमार पृथ्वीराज खासा हय७ सिरोपावाँ७ सहित सातॉ७नूं सात७ पटा बखसीसकिया ॥

अर सातूँ७ही आपरा सामंताँरै अनुकार जाणि बडाआदरमैं लिया॥ एकसमय सभामैं महाभारतरो उदंत चालताँ वडैभाई प्रतापसिंघ मूँछरै माथै हाथ दियो ॥

सो देखताँही कोपानलमैं मत्त कन्ह चहुवाण ऊठि मूँछरा हाथसहित दाहिणौं खाँधै खङ्गरो प्रहारकियो ॥ ११ ॥ प्रतापसिंघतो उपवीतं उतार दोय टूक हुवो ॥ अर छोटा छ६ही सोदराँ होलीरा हुलियाराँ जिम खङ्गाँरो खेलह मंडियो जुवोजुवो ॥

जिणसमय कुमार पृथ्वीराजतो महलमैं जाय कपाट दीधा ॥ अर दो२ही तरफरा वीराँ आपसमैं निस्संकहोय खङ्गाँरा प्रहारकीधा॥ १२ ॥

डोढीपर हाक सुणताँही सोलंखियाँरो साथ भी आपरा स्वामीनूँ सहायदेण सभारै बीच उलटि आयो ॥ अर दो२ही तरफरा वीराँ आँस्थान रूप बाजारमैं प्राणाँरा क्रय१ विक्रय२ रूप व्यापार मचायो ॥

अवस्था होने से पहिले ही १ परगह २ चहुवाण राजा के ३ अनुकरण करनेवाले (सदृश) ४ वृत्तान्त चलते समय ५ कोप की अग्नि में मस्त होकर ॥ ११ ॥ ६ जनेऊ उतार कर (एक कंधे पर तरवार लगकर दूसरे पसवाड़े में निकल कर शरीर के दो टुकड़े होजावें अर्थात् जिस रीति से शरीर पर जनेऊ रहता है उस रीति से घाव लगने को जनेऊउतार कहते हैं) ७ सगे भाइयों ने. होली के ८ खिलाड़ियों के अथवा होली के खेल (गेहर) के समान ९ जुदा जुदा खेल रचा उसको जनेऊउतार कहते हैं १० सभा रूपी बजार में. प्राणों के ११ खरीदने १२ बेचने का व्यापार मांडा

जरैं पत्र बाँचताँही प्रतापसिंह१ अरिसिंह२ गोकुलदास३गोइं-
दराज४हरिसिंघ५स्यामदास६ भगवद्दास७ सातूं७ ही सूरवीर आप
आपरा परिकर सहित चंडासिराजरै वास रह्या आया ॥ १० ॥
कुमार पृथ्वीराज खासा हय७ सिरोपावाँ७ सहित साताँ७नूं
सात७ पटा बखसीसकिया ॥

अर सातूँ७ही आपरा सामंताँरै अनुकार जाणि बडाआदरमैं लिया॥
एकसमय सभामैं महाभारतरो उदंत चालताँ वडैभाई प्रताप-
सिंघ मूँछरै माथै हाथ दियो ॥

सो देखताँही कोपानलमैं मत्त कन्ह चहुवाण ऊठि मूँछरा हा-
थसहित दाहिणैं खाँधै खड्गरो प्रहारकियो ॥ ११ ॥
प्रतापसिंघतो उपवीतं उतार दोयटूक हुवो ॥
अर छोटा छ६ही सोदराँ होलीरा हुलियाराँ जिम खड्गाँरो खेल्ह
मंडियो जुवोजुवो ॥

जिणसमय कुमार पृथ्वीराजतो महलमैं जाय कपाट दीधा ॥
अर दो२ही तरफरा बीराँ आपसमैं निस्संकहोय सस्त्राँरा प्रहा-
रकीधा॥ १२ ॥

डोढीपर हाक सुणताँही सोलंखियाँरो साथ भी आपरा स्वा-
मीनूँ सहायदेणा सभारै बीच उलटि आयो ॥
अर दो२ही तरफरा बीराँ आँस्थान रूप बाजारमैं प्राणाँरा क्रै-
य१ विक्रैय२ रूप व्यापार मचायो ॥

अवस्था होने से पहिले ही १ परगह २ चहुवाण राजा के ३
अनुकरण करनेवाले (सदृश) ४ वृत्तान्त चलते समय ५ कोप की
अग्नि में मस्त होकर ॥ ११ ॥ ६ जनेऊ उतार कर (एक कंधे प-
र तरवार लगकर दूसरे पसवाड़े में निकल कर शरीर के दो टुकड़े होजावें
उसको जनेऊउतार कहते हैं अर्थात् जिस रीति से शरीर पर जनेऊ रहती
है उस रीति से घाव लगने को जनेऊउतार कहते हैं) ७ सगे भाइयों ने. होली के
८ खिलहाड़ियों के अथवा होली के खेल (गेहर) के समान ९ जुदा जुदा खेल रचा
१० सभा रूपी बजार में. प्राणों के ११ खरीदने १२ बेचने का व्यापार मांडा

अर सिंधुराँरा[1] संघात[2] बैरियाँरा ओत[3] देखताँही कोपरूप दाँवा-
नळमैं दहसी ॥ १६ ॥

दिल्लीरा जावणरा समयसूँ तीजै[3] बरस चहुवाणाँ प्रतिहारनूँ कु-
माररा संबंधरी बात स्मरणमैं गहाई ॥

अर मंडोवर दूत भेजि बिबाहरो प्रारंभ करणरी कहाई ॥
दूतरो बचन श्रवणमैं पड़ताँही नाहरराज कहियो राजा अनंग-
पाळतो संबंधरा संभवरी[6] सहज बात कीधी ॥
जिकोही चहुवाणाँ मगरूरीरै मतै साँची बणाय लीधी ॥१७॥
प्रतिहाराँरी पोळि पधारणरै उचिततो दिल्ली[1] कणाउज्ज[2] अ-
णिहलपुर[3] आदिक नरेस किसा नहीछै ॥
अर नीच क्रव्यादरा[8] कुळनूँ दुहिताँ[10] देणरी किण मूढ कहीछै॥
जिणरीति सुकुंदरा[11] मंदिरनूँ बिहाय[12] खेत्रपाळ[13] पूजणरी श्रद्धा
किसो कापुरुष चित्तधरै ॥
अर त्रयीश[14]रा तिरस्कार करि किसड़ो नीच चंडाळी[15] मंत्ररो सा-
धनकरै ॥ १८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

दूतन पच्छे जाय द्रुत, आक्खिय यह अजमेर ॥
कह्यो चढन कोपित[16] कुँमर, अब नन उचित अबेर ॥१९॥

---

१ हाथियों के २ समूह रूपी शत्रुओं के ३ समूह को देखत ही ४दव की (वन में लगी हुई) अग्नि में जलावेंगे. पृथ्वीराज दिल्ली गया था वहां मंडोवर के राजा नाहरराज की पुत्री से सम्बन्ध की वार्ता हुई थी जिससे तीसरे वर्ष चहुवाणों ने प्रतिहार नाहरराज को पृथ्वीराज के सम्बन्ध की ५ याद दिलाई ६ सम्बन्ध होने में ७ स्वतःस्वभाव ॥ १७ ॥ ८ कन्नोज ९ राक्षस के कुल (वीसलदेव चहुवाण ढुंढ नामक राक्षस होगया था जिसके वंश) को १० पुत्री देने की किस मूर्ख ने कही, जैसे ११ विष्णु भगवान् के मंदिर को १२ छोडकर १३ भैरव की पूजा करने की श्रद्धा और १४ प्रणवमंत्र (ओं ३ म्) का अनादर करके ऐसा कौन नीच है सो वाममार्गवाले १५ देवी के मंत्र का साधन करैगा ॥ १८ ॥ १६ पृथ्वीराज ने क्रोध करके कहा कि अब देरी करना

अर सिंधुराँरा[२] संघात१ बैरियाँरा[३] व्रात२ देखताँही कोपरूप दाँवा-
नळमैं दहसी ॥ १६ ॥

दिल्लीरा जावणरा समयसूँ तीजै३ बरस चहुवाणाँ प्रतिहारनूँ कु-
मारा संबंधरी बात स्मरणमैं[५] गहाई ॥

अर मंडोवर दूत भेजि बिबाहरो प्रारंभ करणरी कहाई ॥
दूतरो बचन श्रवणमैं पड़ताँही नाहरराज कहियो राजा अनंग-
पाळतो संबंधरा संभवरी[६] सहज वात कीधी ॥
जिकोही चहुवाणाँ मगरूरीरै मतै साँची बणाय लीधी ॥१७॥

प्रतिहाराँरी पोळि पधारणरै उचिततो दिल्ली१ कणाउज्ज२ अ-
णिहलपुर३ आदिक नरेस किसा नहीछै ॥
अर नीच क्रव्यादरा कुळनूँ दुहिताँ[१०] देणरी किण मूढ कहीछै॥
जिणरीति मुकुंदरा[११] मंदिरनूँ बिहाय[१२] खेत्रपाळ[१३] पूजणरी श्रद्धा
किसो कापुरुष चित्तधरै ॥
अर तर्यी३रा[१४] तिरस्कार करि किसड़ो नीच चंडाळी मंत्ररो[१५] सा-
धनकरै ॥ १८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

दूतन पच्छे जाय द्रुत, अक्खिय यह अजमेर ॥
कह्यो चढन कोपित[१६] कुँमर, अब नन उचित अबेर ॥१९॥

---

१ हाथियों के २ समूह रूपी शत्रुओं के ३ समूह को देखत ही ४ दव की (वन में लगी हुई) अग्नि में जलावेंगे. पृथ्वीराज दिल्ली गया था वहां मंडोवर के राजा नाहरराज की पुत्री से सम्बन्ध की वार्ता हुई थी जिससे तीसरे वर्ष चहुवाणों ने प्रतिहार नाहरराज को पृथ्वीराज के सम्बन्ध की ५ याद दिलाई ६ सम्बन्ध होने में ७ स्वतःस्वभाव ॥ १७ ॥ ८ कन्नोज ९ राक्षस के कुल (वीसलदेव चहुवाण ढुंढ नामक राक्षस होगया था जिसके वंश) को १० पुत्री देने की किस मूर्ख ने कही, जैसे ११ विष्णु भगवान् के मंदिर को १२ छोडकर १३ भैरव की पूजा करने की श्रद्धा और १४ प्रणवमंत्र (ओं ३ मू) का अनादर करके ऐसा कौन नीच है सो वाममार्गवाले १५ देवी के मंत्र का साधन करैगा ॥ १८ ॥ १६ पृथ्वीराज ने क्रोध करके कहा कि अब देरी करना

हो पट्टनि चालुक्य सचिव जँहँ, तापति नाहर*सुहृद मिल्यो तँहँ॥
पृतनाँ[1] बलि[2] चहुवानन उप्पर, बिखम थान लखि सजी धराबर।२५।
पि[4]थल इत दाहिन मग प[5]द्धर, आवतहो पत्तन[6] मंडोवर ॥
मिलि तिहिँ जुब्बनराव बीचि मग, बुल्ल्यो इत कित धरहु व्यर्थ पग२६
माँरवतो[7] तजिगो मंडोवर, पत्तो[8] धर गुज्जर[9] सीमापर ॥
उतके पथ बन१दुर्ग२बिखम अति, अरु तस चालुक सचिव मित्रमति
यातैं लहि दुर्गम भुव आश्रय, गब्ब[10] धरत प्रतिहार तत्थ गय ॥
पंथभेदी[11] कोउ न है पासहु, सो तुम जावत अग्ग निकासहु ॥२८॥
अद्रि[12] सत्त७ पट्टनि पथ अैहैं, बनहु दुर्ग दिग[13]मूढ बनैहैं ॥
अग्गैं कछु अग्गैं[14] बुल्लावहु, जिन ढिग लैहु प्रमत्त[15] न जावहु ।२९।
जुब्बनराव बत्त यह जंपिय[16], क्रम्यौं[17] सु सुनि धाँवन[18] भुव कंपिय ॥
दूतन किय बिन्नति तीजे३दिन, अड्डो गिरि घंटो कुमरंन ईन[19] ।३०।
मैंना१ मेर२ सहँस चउ४०००मत्ते, रक्खे तत्थ लरन अंनुरत्ते[20] ॥
पर्बत नाम सबन तिन्हें[21] है पति, सो सठ खिन न तजै गिरि संगति[22]३१
जो इनको सुनिहैं[23] वैं पराजय, नाहर तब अैहैं सु कुसल नैंय[24] ॥
यह जानत गिरि ढिग दल आयो, पित्थल कुमर कोप प्रकटायो३२

पट्टनि में सोलंखी राजा भीम का कामदार था उससे नाहरराज * मित्र हो कर मिला २ जिसपीछे उस ३ नाहर भूपति ने चहुआणों पर १ सेना सझी इधर ४ पृथ्वीराज दाहिने मार्ग से ५ सीधा ६ मंडोवर पुर आता था ॥२६॥ ७ मारवाड़ का राजा तो ८ पहुंचा ९ गुजरात भूमि की सीमा पर ॥ २७॥ १० गर्व धारण करता हुआ ११ मार्ग का भेद जाननेवाला कोई पास नहीं है सो तुम आगे जाकर निकाल लेना ॥ २८ ॥ १२ सात पर्वत १३ दिशा भूल बनावेंगे जहां कुछ १४ अगवे बुला लेना और उनको साथ लेकर जाना १५ बावले की भांति मत जाना ॥ २९ ॥ १६ कही सो सुनकर १७ चला, जिसके घोड़ों की १८ दौड़ से भूमि धूज गई १९ हे कुमरों के सूर्य आगे पर्वत का घाटा आडा है ॥ ३० ॥ २० नाहरराज में प्रीति रखनेवाले २१ उन मीणों का पति पर्वत नामवाला है वह मूर्ख क्षण भर भी पर्वत का २२ साथ नहीं छोड़ता ॥ ३१ ॥ २३ अब २४ नीति कुशल ॥ ३२ ॥

हो पट्टनि चालुक्य सचिव जँहँ, तामति नाहर*सुहृद मिल्यो तँहँ॥
पृतनाँ बलि चहुवानन उप्पर, बिखम थान लखि सजी धराबर ।२५।
पिथ्थल इत दाहिन मग पद्धर, आवतहो पत्तन मंडोवर ॥
मिलि तिहिँ जुब्बनराव बीचि मग, बुल्ल्यो इत कित धरहु व्यर्थ पग२६
मारवतो तजिगो मंडोवर, पत्तो धर गुज्जर सीमापर ॥
उतके पथ बन१ दुर्ग२ बिखम अति, अरु तस चालुक सचिव मित्रमति
यातैं लहि दुर्गम भुव आश्रय, गव्व धरत प्रतिहार तत्थ गय ॥
पंथभेदी कोउ न है पासहु, सो तुम जावत अग्ग निकासहु ॥२८॥
अद्रि सत्त७ पट्टनि पथ ऐहैं, बनहु दुर्ग दिग्मूढ बनैहैं ॥
अग्गैं कछु अग्गैं बुल्लावहु, जिन ढिग लेहु प्रमत्त न जावहु ।२९।
जुब्बनराव बत्त यह जंपिय, कम्प्यौं सु सुनि धावन भुव कंपिय ॥
दूतन किय बिन्नति तीजे३दिन, अड्डो गिरि घंटो कुमरन इन ।३०।
मैना१ मेर२ सहँस चउ४०००मत्ते, रक्खे तत्थ लरन अनुरत्ते ॥
पर्वत नाम सबन तिन्हँ है पति, सो सठ खिन न तजै गिरि संगति३१
जो इनको सुनिहैं वे पराजय, नाहर तब ऐहैं सु कुसल नय ॥
यह जानत गिरि ढिग दल आयो, पित्थल कुमर कोप प्रकटायो३२

पट्टनि में सोलंखी राजा भीम का कामदार था उससे नाहरराज * मित्र हो कर मिला २ जिसपीछे उस ३ नाहर भूपति ने चहुवाणों पर १ सेना सजी इधर ४ पृथ्वीराज दाहिने मार्ग से ५ सीधा ६ मंडोवर पुर आता था ॥२६॥ ७ मारवाड़ का राजा तो ८ पहुंचा ९ गुजरात भूमि की सीमा पर ॥ २७॥ १० गर्व धारण करता हुआ ११ मार्ग का भेद जाननेवाला कोई पास नहीं है सो तुम आगे जाकर निकाल लेना ॥ २८ ॥ १२ सात पर्वत १३ दिशा भूल बनावेंगे जहां कुछ १४ अगवे बुला लेना और उनको साथ लेकर जाना १५ बावले की भांति मत जाना ॥ २९ ॥ १६ कही सो सुनकर १७ चला, जिसके घोड़ों की १८ दौड़ से भूमि धूज गई १९ हे कुमरों के मूर्ख आगे पर्वत का घाटा आडा है ॥ ३० ॥ २० नाहरराज में प्रीति रखनेवाले २१ उन मीणों का पति पर्वत नामवाला है वह मूर्ख क्षण भर भी पर्वत का २२ साथ नहीं छोडता ॥ ३१ ॥ २३ अब २४ नीति कुशल ॥ ३२ ॥

धीर मेररा खड्ग प्रहारसूं कन्ह महररो अंस[1] पंसुली सूधो फाड़ि
तोभी घणाँ सात्रवाँरी सुंदरियाँरा[2] कंकणाँरो[3] कोलाहल[4] मि
टाय पड़ियो
मेर१मीणाँ२नैं सिकस्त[4] लेताँही पाछैसूं प्रतिहार नाहरराज
खरैताँरा भारसूं पृथ्वीरा पुड़ झुकावतो बडै वेग आयो ॥
अर पृथ्वीराजरो साथबी महाकालीरी तरफ हल्लीसक[5] रासर
कटाक्ष देतो साम्हैं चलायो ॥ ३८ ॥
गिरिनार१ सिंधुबट्टी२पाटणि३री सीमारै समीप दो२ही तरफसूं
बाजी ऊठिया ॥
कन्ह१कैमास२लोहान३आततार्इ४लंगरीराज५चामुंडराज६इत्या
दिक बानाँबंध[6] सामंत वज्रपातरा विडंबक[7] सस्त्राँरा आघात वढिया ॥
उणसमय कुमार पृथ्वीराज एकादस११[8]अब्दरी अवस्थामैं बी-
राँरै बरजताँ बाजीरी वल्गां[9] उठाय प्रतिहार नाहरराजसूं प्रतिमल्ल[10]
जाय सिरू कीधी ॥
अर दो२ही बीराँरा करवालाँ[11] बावन५२ही बीराँरै अर्थ बीराँरी
बपा[12] खप्पराँमैं भरणारी सैन दीधी ॥ ३९ ॥
तिणसमय चहुवाण कुमार मंडलाग्ररो[13] आघात देर नाहरराज
रा तुरंगरो खंध पाखरसमेत फाड़ियो ॥
जिणरीति भाईनैं पाळो हुवो देखि मारवधरारो[14] कंवाड़ कनक
प्रतिहार[15] असिरो आघात[16] देर पृथ्वीराजरा अश्वरो अंस[17] उडाय पाड़ियो

॥ ३७ ॥ १ कन्धा २ स्त्रियों के कंकणों का ३ विशेष नाद ४ पराजय ५ घूमर के नाच का रास रचनेवाला कटाक्ष देताहुआ चला अर्थात् युद्ध देखकर महाकाली घूमर का नाच (गोलाकार फिरकर बहुत स्त्रियों का सामिल नाच)करेगी सो देखेंगे ॥ ३८ ॥ ६ युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा का चिन्ह धारण करनेवाले सामंतों से वज्रपात के ७ अनुकरण करनेवाले शस्त्रों के प्रहार बढे ८वर्ष ९ घोड़े की बाग उठाय १०मुकाबला किया ११खड्गों ने १२ मज्जा ॥३९॥ १३ खड्ग का प्रहार करके १४ मारवाड़ की भूमि का कपाट (जिसकी विद्यमानता में कोई शत्रु अपनी सीमा में नहीं आसके उसको उस भूमि का कपाट कहते हैं) १५ तरवार की १६ चोट लगाकर १७ कन्धा

धीर मेररा खड्ग प्रहारसूं कन्ह महररो अंस[1] पंसुली सूधो झड़ियो
तोभी घणाँ सात्रवाँरी सुंदरियाँरा[2] कंकणाँरो[3] कोलाहल[4] मि-
टाय पड़ियो ॥
मेर१मीणाँ२नैं सिकस्त[4] लेताँही पाछैंसूं प्रतिहार नाहरराज प-
खरैताँरा भारसूं पृथ्वीरा पुड़ झुकावतो बडै बेग आयो ॥
अर पृथ्वीराजरो साथबी महाकालीरी तरफ हल्लीसक[5] रासरो
कटाक्ष देतो साम्हैं चलायो ॥ ३८ ॥
गिरिनार१ सिंधुबट्टी२पाटणि३री सीमारै समीप दो२ही तरफसूं
बाजी ऊठिया ॥
कन्ह१कैमास२लोहान३आतताई४लंगरीराज५चामुंडराज६इत्या
दिक बानाँबंध[6] सामंत बज्रपातरा विडंबक[7] सस्त्राँरा आघात वढिया ॥
उणसमय कुमार पृथ्वीराज एकादस११अब्दरी[8] अवस्थामैं बी-
राँरै बरजताँ बाजीरी बल्गां[9] उठाय प्रतिहार नाहरराजसूं प्रतिमल्ल[10]
जाय सिरू कीधी ॥
अर दो२ही बीराँरा करवालाँ[11] बावन५२ही बीराँरै अर्थ बीराँरी
बपा[12] खप्पराँमैं भरणारी सैन दीधी ॥ ३९ ॥
तिणसमय चहुवाण कुमार मंडलाग्ररो[13] आघात देर नाहरराज
रा तुरंगरो खंध पाखरसमेत झाड़ियो ॥
जिणरीति भाईनैं पाळो हुवो देखि मारवधरारो[14] कंवाड़ कनक
प्रतिहार असिरो[15] आघात[16] देर पृथ्वीराजरा अश्वरो अंस[17] उडाय पाड़ियो

॥ ३७ ॥ १ कन्धा २ स्त्रियों के कंकणों का ३ विशेष नाद ४ पराजय
५ घूमर के नाच का रास रचनेवाला कटाक्ष देताहुआ चला अर्थात् युद्ध दे-
खकर महाकाली घूमर का नाच (गोलाकार फिरकर बहुत स्त्रियों का सा-
मिल नाच)करेगी सो देखेंगे ॥ ३८ ॥ ६ युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा का
चिन्ह धारण करनेवाले सामंतों से वज्रपात के ७ अनुकरण करनेवाले शस्त्रों
के प्रहार बढे ८वर्ष ९ घोड़े की बाग उठाय १०मुकाबला किया ११खड्गों ने
१२ मज्जा ॥३९॥ १३ खड्ग का प्रहार करके १४ मारवाड़ की भूमि का कपाट
(जिसकी विद्यमानता में कोई शत्रु अपनी सीमा में नहीं आसके उसको
उस भूमि का कपाट कहते हैं) १५ तरवार की १६ चोट लगाकर १७ कन्धा

ऊपरही श्रेलि भद्रकाली लोहितै रूप आसवरा चसंकैरै साथ उपदंस करिपीधी ॥ ४३ ॥

अठी सामंत बलिराज१ बच्छकरणरै प्रतिहाररो माथो स्कंध-त्राण सहित चंडिकारै चढायो ॥

अर सोलंखी भाणुराज१प्रतिहारतेजसिंह२रो मस्तक उडाय महा-रुद्दरा मुखसूँ वाहवाह पढायो ॥

अठीसूँ लोहान आजानुबाहु किंवाण झाडि वीर प्रतिहाररा म-तंगजरो मस्तक कर्णताळ हलावतो तोड़ियो ॥

सो जाणैं आपरी श्रोटिसैं पन्नगनूँ पाय पंखाँरो प्रसारकरतोग-रुड़रो बाळक आकासरा मार्गसूँ हेठो थियो ॥४४॥

घणाँ बीरानूँ प्राणारा वियोगी करि जुद्धरो जस कुँमाररै भेट कीधो ॥

अर केहीबार बाजीनूँ अठीरो अठी उडाय उडाय पीचदीधो ॥

अठीसूँ कन्ह१चहुवाणरो किवाण प्रतिहार नाहरराज२रा म-स्तकसूँ चूकि बाम भुजरै भुजबंध पडियो ॥

सो हीराँरै प्रभाव भूखोहो तक्षकनागरी रसणारै रूप पाछोही ऊँचोचढियो ॥ ४५ ॥

कन्हरा टोप ऊपर नाहरराजरो चंद्रहास आछटियो ॥

जिकणसूँ टोप दोय२टूकहोय पाघरैसाथ कितोक सीस काटियो

तुरंगनूँ लोहछाकियो देखि पाळैही कन्ह१ चहुवाण रीसरैसाथै

---

१ रक्त रूपी मदिरा की २ चुसकी के साथ उस भेजा का ३ खारभंजन करके वह रुधिर रूपी मदिरा पी ॥ ४३ ॥ ४कंधे के कवच सहित५ खड्ग की चोट देकर ६ हाथी के ७ ताड़ वृक्ष के पत्तों के समान कानों को हिलाता हुआ मस्तक तोड़ा ८ चंचू में ९ सर्प को लेकर १०नीचे ११ हुआ (आया) ॥ ४४ ॥ १२ कुमार पृथ्वीराज के १३ घोड़े को १४ सर्प की जिव्हा ऊपर को जाती है इस प्रकार ॥ ४५ ॥ १५ खड्ग १६ वेग से गिरा १७ घोड़े को १८ शस्त्रों से छका हुआ १९ क्रोध करके

ऊपरही ऋोलि भद्रकाली लोहितै रूप आसवरा चसंकैरै साथ उपदंस करिपीधी ॥ ४३ ॥

अठी सामंत बलिराज१ बच्छकरणरा२ प्रतिहाररो माथो स्कंध-त्राण सहित चंडिकारै चढायो ॥

अर सोलंखी भाणुराज१प्रतिहारतेजसिंह२रो मस्तक उडाय महा-रुद्ररा मुखसूँ वाहवाह पढायो ॥

अठीसूँ लोहान आजानुबाहु किंवाण ऋाडि बीर प्रतिहाररा म-तंगजरो मस्तक कर्णताळ हलावतो तोड़ियो ॥

सो जाणौं आपरी त्रोटिसैं पन्नगनूँ पोय पंखाँरो प्रसारकरतोग-रुड़रो बाळक आकासरा मार्गसूँ हेठो थियो ॥४४॥

घणाँ बीरानूँ प्राणारा वियोगी करि जुद्धरो जस कुँमाररै भेट कीधो ॥

अर केहीबार बाजीनूँ अठीरो अठी उडाय उडाय बीचदीधो ॥

अठीसूँ कन्ह१चहुवाणरो किवाण प्रतिहार नाहरराज२रा म-स्तकसूँ चूकि बाम भुजरै भुजबंध पडियो ॥

सो हीराँरै प्रभाव भूखोही तत्तकनागरी रसणारै रूप पाछोही ऊँचोचढियो ॥ ४५ ॥

कन्हरा टोप ऊपर नाहरराजरो चंद्रहास आछटियो ॥

जिकणसूँ टोप दोय२टूकहोय पाघरैसाथ कितोक सीस कटियो

तुरंगनूँ लोहछाकियो देखि पाळैही कन्ह१ चहुवाण रीसरैसाथै

१ रक्त रूपी मदिरा की २ चुसकी के साथ उस भेजा का ३ खारभंजन करके वह रुधिर रूपी मदिरा पी ॥ ४३ ॥ ४कंधे के कवच सहित५ खड्ग की चोट देकर ६ हाथी के ७ ताड़ वृक्ष के पत्तों के समान कानों को हिलाता हुआ मस्तक तोड़ा ८ चंचू में ९ सर्प को लेकर १०नीचे ११ हुआ (आया) ॥ ४४ ॥ १२ कुमार पृथ्वीराज के १३ घोड़े को १४ सर्प की जिव्हा ऊपर को जाती है इस प्रकार ॥ ४५ ॥ १५ खड्ग १६ वेग से गिरा १७ घोड़े को १८ शस्त्रों से छका हुआ १९ क्रोध करके

रगा इगा बीच कुमाररै, हढ लग्गा बळ दाव ॥
बय एकादस११बरसमैं, घटं[1] एकादस११घाव ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिबंशबर्णनाऽन्तर्गतडिङ्गुरवंशबिरोचनशाकम्भरेशपृथ्वीराज १७७ चरित्रे कुमारपृथ्वीराज २ प्रतिहारनाहरराज २ दिल्लीगमनसभास्थितप्रतिहारकुमारप्रशंसाकरणसौमिस्वपुरटमालानाहरराजाऽर्पणतोमरराजस्वदौहित्र १ प्रतिहारी २ संबंधसमौचित्यकथनकुमार १ प्रतिहार २ स्वस्वपत्तनाऽऽगमनगूर्जरधरेशभीमहतगजद्वय २ प्रतापसिंहाऽऽदिपितृव्यपुत्रसप्तक ७ स्वदेशनिष्कासनतत्पृथ्वीराजसमाह्वयनचहुवाणकृष्णाऽऽदिप्रहतदत्तश्मश्रुकरचालुक्यप्रतापसिंहाऽऽदिसप्त ७ सोदरनिपतनतन्मन्तुनिवारककुमारकृष्णदृग्रत्नमयपट्याऽऽरोपणचालुक्यभीमभ्रातृवैरयाचनतत्प्रतिदानाङ्गीकरणशाकम्भरेशदूतराजकुमारोपयामार्थप्रतिहारामार्गणनाहरराजसाक्षेपतदनूरीकरणाश्रितैतदुदन्तकुमारपृथ्वीराजयुद्धा-

१शरीर पर ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर डिङ्गुर वंश विरोचन सांभर के पति कुमर पृथ्वीराज और प्रतिहार नाहरराज का दिल्ली जाना, सभा में स्थित प्रतिहार का कुमर की प्रशंसा करना, सोम के पुत्र पृथ्वीराज का अपनी सोने की माला नाहरराज को देना, तंवरों के राजा अनंगपाल का अपने दौहिते से नाहरराज की पुत्री प्रतिहारी के सम्बन्ध को उचित कहना, कुमर पृथ्वीराज और प्रतिहार नाहरराज का अपने पुरों को आना, गुजरात के राजा भीम के दो हाथियों को मारने से अपने काका के पुत्र प्रतापसिंह आदि सातों को अपने देश से निकालना, उनको पृथ्वीराज का बुलाना, चहुवाण कन्ह आदि के मारने से मूँछ पर हाथ देनेवाले सोलंखी प्रतापसिंह आदि सात सगे भाइयों का माराजाना, उनके अपराध मिटाने को कन्ह के नेत्रों पर रत्नों की जड़ी हुई पट्टी बंधवाना, सोलंखी भीम का भाइयों का बैर मांगना, उसके देने का अस्वीकार करना, चहुवाण राजा सोमेश्वर के दूत का कुमार पृथ्वीराज के विवाह के अर्थ प्रतिहारी (प्रतिहार नाहरराज की पुत्री) को मांगना, (नाहरराज का आक्षेप सहित उसको अस्वीकार करना, यह वृत्तान्त

रखा इरा बीच कुमाररैं, हढ लग्गा बळ दाव ॥
बय एकादस११बरसमैं, घटं एकादस१२घाव ॥ ५० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनाऽन्तर्गतडिङ्गुरवंशविरोचनशाकम्भरेशपृथ्वीराज १७७ चरित्रे कुमारपृथ्वीराज २ प्रतिहारनाहरराज २ दिल्लीदङ्गगमनसभास्थितप्रतिहारकुमारप्रशंसाकरणसौमिस्वपुरटमालानाहरराजाऽर्पणतोमरराजस्वदौहित्र १ प्रतिहारी २ संबंधसमौचित्यकथनकुमार १ प्रतिहार २ स्वस्वपत्तनाऽऽगमनगूर्जरधरेशभीमहतगजद्वय २ प्रतापसिंहाऽऽदिपितृव्यपुत्रसप्तक ७ स्वदेशनिष्कासनतत्पृथ्वीराजसमाह्वयनचहुवाणकृष्णाऽऽदिमहतदत्तश्मश्रुकरचालुक्यप्रतापसिंहाऽऽदिसप्त ७ सोदरनिपतनतन्मन्तुनिवारककुमारकृष्णाद्दग्रत्नमयपट्याऽऽरोपणचालुक्यभीमभ्रातृबैरयाचनतत्प्रतिदानाङ्गीकरणशाकम्भरेशदूतराजकुमारोपयामार्थप्रतिहारामार्गणनाहरराजसाक्षेपतदङ्गीकरणश्रुतैतदुदन्तकुमारपृथ्वीराजयुद्धा-

१शरीर पर ॥५०॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर डिङ्गुर वंश विरोचन सांभर के पति कुमर पृथ्वीराज और प्रतिहार नाहरराज का दिल्ली जाना, सभा में स्थित प्रतिहार का कुमर की प्रशंसा करना, सोम के पुत्र पृथ्वीराज का अपनी सोने की माला नाहरराज को देना, तंवरों के राजा अनंगपाल का अपने दौहिते से नाहरराज की पुत्री प्रतिहारी के सम्बन्ध को उचित कहना, कुमर पृथ्वीराज और प्रतिहार नाहरराज का अपने पुरों को आना, गुजरात के राजा भीम के दो हाथियों को मारने से अपने काका के पुत्र प्रतापसिंह आदि सातों को अपने देश से निकालना, उनको पृथ्वीराज का बुलाना, चहुवाण कन्ह आदि के मारने से मूँछ पर हाथ देनेवाले सोलंखी प्रतापसिंह आदि सात सगे भाइयों का माराजाना, उनके अपराध मिटाने को कन्ह के नेत्रों पर रत्नों की जड़ी हुई पट्टी बंधवाना, सोलंखी भीम का भाइयों का बैर मांगना, उसके देने का अस्वीकार करना, चहुवाण राजा सोमेश्वर के दूत का कुमार पृथ्वीराज के विवाह के अर्थ प्रतिहारी (प्रतिहार नाहरराज की पुत्री) को मांगना, (नाहरराजका आक्षेप सहित उसको अस्वीकार करना, यह वृत्तान्त

णायनतत्प्राप्तनानायौतकसौमिस्वदङ्गाऽजमेरसमागमनं पञ्चदशो १५ मयूखः ॥ १५ ॥ आदितश्चतुर्विंशोत्तरशततमः ॥ १२४ ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

*पित्थल इम आयो परणि, **सम्मद पायो सोम ॥
***अनळ अग्ग प्रतिहार अरि, हणि कीधा घण होम॥१॥

सचरणगद्यम्

जिणसमय गुजरात देसरा सत्तरि हजार ७०००० ग्रामांरोअ-धीस अणहिलपुरपाटणमैं चालुक्य राजाभोळारायभीम राजकरै अर बडा बडा देसपती सीमाड जिणरा प्रस्थानसूं आतंकधरै॥

जिकणरै ब्राह्मण लीलापति१ जती अमरसिंह२चारण चंद्रभाणु३ भाट भैरव४ ए च्यारि४ ही मंत्री सामादिक एकएक उपा-यमैं अद्वितीय रहै॥

अर स्वामीरै अनुकूळ समस्तही खंधावाररो भार आप आपरै अंस बहै ॥ २ ॥

जिकाँरै बळ राजा भीम पारकर१रा जादव२बम्हणबास१रा सोढ़ा१ठठ्ठ१रा मल्हनास२इत्यादिक राजाँनूं रजोगुणरै उफाण दंड लेलेर गांजिया॥

अर बडो आसान करि तिकाँनूँ आप आपरा देस भोगण-दिया ॥

जिण राजा भीम आबूगढरा अधीस प्रामारराज सळखरै इ-च्छणीनाम पुत्री अलौकिक गुण१रूप२री निधान सुणी॥

राज के अपने पुर अजमेर आनेका पनरहवां मयूख समास हुआ ॥ १५ ॥ आदि से एक सौ चौबीस मयूख हुए ॥ १२४ ॥

*पृथ्वीराज. सोमेश्वर ने **हर्ष पाया ***अग्नि रूपी अग्निकुल के सन्मुख प्रतिहार शत्रुओं को मारकर बहुतों को होम करदिये १ सीमा पर राज्य करनेवाले २ गमन करने से ३ साम, दान, दंड और भेद उपाय में ४ राजधानी का भार अपने५कन्धे पर धारण करै६दबाये७इच्छणी नामक८आश्रय

णयनतत्प्राप्तनानायौतकसौमित्रद्भाऽजमेरसमागमनं पञ्चदशो
१५ मयूखः ॥ १५ ॥ आदितश्चतुर्विंशोत्तरशततमः ॥ १२४ ॥
प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

*पित्थल इम आयो परणि, **सम्मद पायो सोम ॥
***अनळ अग्ग प्रतिहार अरि, हणि कीधा घण होम ॥

सचरणगद्यम्

जिणसमय गुजरात देसरा सत्तरि हजार ७०००० ग्रामांरोअ्र-
धीस अणहिलपुरपाटणमैं चालुक्य राजाभोळारायभीम राजकरै
अर बडा बडा देसपती सीमाड जिणरा प्रस्थानसूं आतंकधरै॥
जिकणरै ब्राह्मण लीलापति१ जती अमरसिंह२चारण चंद्रभा-
णु३ भाट भैरव४ ए च्यारि४ ही मंत्री सामादिक एकएक उपा-
यमैं अद्वितीय रहै॥
अर स्वामीरै अनुकूळ समस्तही स्कंधावाररो भार आप आपरै
अंस बहै ॥ २ ॥
जिकाँरै बळ राजा भीम पारकर१रा जादव२बम्हणवास१रा
सोढा१ठठ्ठ१रा मल्हनास२इत्यादिक राजाँनूँ रजोगुणरै उफाण
दंड लेलेर गांजिया ॥
अर बडो आसान करि तिकाँनूँ आप आपरा देस भोगण-
दिया ॥
जिण राजा भीम आबूगढरा अधीस प्रामारराज सळखरै इ-
च्छणीनाम पुत्री अलौकिक गुण१रूप२री निधान सुणी॥

राज के अपने पुर अजमेर आनेका पनरहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥ और आदि से एक सौ चौबीस मयूख हुए ॥ १२४ ॥
*पृथ्वीराज. सोमेश्वर ने**हर्ष पाया***अग्नि रूपी अग्निकुल के सन्मुख प्रतिहार शत्रुओं को मारकर बहुतों को होम करदिये १ सीमा पर राज्य करनेवाले २ गमन करने से ३ साम, दान, दंड और भेद उपाय में ४ राजधानी का भार अपने५कन्धे पर धारण करै६दबाये७इच्छणी नामक८आश्रय

अर इच्छणीरा गुण१ रूप२ चालुक्यराजरा मानसमंदिररा नि-
वासी हुवा तिण दिनसूं राजरी पुत्रीरा गुण१ रूप२रै पडोस आहा-
र १ बिहारा २ दि क्रियारा संकल्प कोईभी रहण न पावैछै ॥
तिणसूं दोरही राजावाँरै ऊंचीआवै इसा प्रपंचसूंतो घणा प्रामारां-
रा घर घूकांरा घुरसाळांरो ही सहवास गहै ॥
अर सूधी लीधाँथकाँ बिटपीसूँ बल्ली रै समान बडाबडा बसुधा-
पाळाँ रै ऊपर अर्बुददेसरो आदेस बधतो रहै ॥ ६ ॥
या सुणताँही जाणाँ बारूदरा गंजमैं दमंगं दीधो किनाँ खीजि-
या नागराजरी पूँछपर पग आणियो ॥
चालता काळसूँ चाळो कीधो किनाँ सूता मृगराजरी नासि-
कारो लोम ताणियो ॥
खेमकर्ण१खंगार२भीम३चंद४प्रताप५पहाडराज६नारायण७दु-
र्गभाण८महणसिंह ९गोइंदराज१०त्रिलोचन११इत्यादिक आपरा
बीराँरै जंगरी उमंग बधाय जैतकुमार मूँछाँरै माथै हाथ दीधो ॥
अर टीलाराबचनरोतिरस्कारकरि इणरीतिउच्चारणरोआरम्भकीधो
नीच नास्तिकाँरो बंस प्रामारराज बिक्रम१भोजर२रा बंसरो सं-
तान किणरीति पावै ॥
अर चांडाळरै मुख सावित्रीरै समान केहरीरो बिभाग फेरंडरै
मुँहुँडै कदापि न खटावै ॥
इसडी कही टीलानूँ बडा तिरस्कारंरै साथ काढियो ॥

को १ मन रूपी मंदिर (घर) में निवास करनेवाले हुए. अर्थात् चालुक्य
राजा का मन उसमेंलगगया २ विरोध बढै ऐसा३रचना से ४ घूघू पक्षी का
घुरसाला जिस घर में होता है वह शून्य होजाता है ५ साथ रहने को धा-
रण करेंगे ६ वृक्ष के साथ ७ बेलि बढती है इस प्रकार ८ राजाओं पर ९ आज्ञा
॥६॥ १० अग्निकण ११ सिंह की १२ केसे १३ खींचा १४ नाहरराज के पुत्र जैत
नामक कुमर ने १५अरु १६ अनादर ॥७॥ सोलंखियों ने जैन मत धारण कर-
लिया इस कारण उनको १७ नास्तिक कहे १८ गायत्री मंत्र १९ सिंह का
२० बंट २१ स्याल के मुख में

अर इच्छणीरा गुण१ रूप२ चालुक्यराजरा मानसमंदिररा निवासी हुवा तिण दिनसूं राजरी पुत्रीरा गुण१ रूप२रै पडोस आहार १ बिहारा २ दि क्रियारा संकल्प कोईभी रहण न पावैछै ॥
तिणसूं दो२ही राजावाँरै ऊंचीआवै इसा प्रपंचसूं तो घणा प्रामारांरा घर घूकांरा घुरसाळांरो ही सहवास गहै ॥
अर सूधी लीधाँथकाँ बिटपीसूँ बल्ली रै समान बडाबडा बसुधापाळाँ रै ऊपर अर्बुददेसरो आदेस बधतो रहै ॥ ६ ॥
या सुणताँही जाणौं बारूदरा गंजमैं दमंगं दीधो किनाँ खीजिया नागराजरी पूँछपर पग आणियो ॥
चालता काळसूँ चाळो कीधो किनाँ सूता मृगराजरी नासिकारो लोम ताणियो ॥
खेमकर्ण१खंगार२भीम३चंद४प्रताप५पहाडराज६नारायण७दुर्गभाण८महणसिंह ९गोइंदराज१०त्रिलोचन११इत्यादिक आपरा बीराँरै जंगरी उमंग बधाय जैतकुमारै मूँछरै माथै हाथ दीधो ॥
अरटीलाराबचनरोतिरस्कारकरिइणरीतिउच्चारणरोआरम्भकीधो
नीच नास्तिकाँरो बंस प्रामारराज बिक्रम१भोज२रा बंसरो संतान किणरीति पावै ॥
अर चांडाळरै मुख साँवित्रीरै समान केहरीरो बिभाग फेरडरै मुँहडै कदापि न खटावै ॥
इसडी कही टीलानूँ बडा तिरस्काररै साथ काढियो ॥

को १ मन रूपी मंदिर (घर) में निवास करनेवाले हुए. अर्थात् चालुक्य राजा का मन उसमेंलगगया २ विरोध बढै ऐसा३रचना से ४ घूघू पक्षी का घुरसाला जिस घर में होता है वह शून्य होजाता है५ साथ रहने को धारण करेंगे६ वृक्ष के साथ ७ बेलि बढती है इस प्रकार ८ राजाओं पर ९ आज्ञा ॥६॥ १० अग्निकण ११ सिंह की १२ केसे १३ खींचा १४ नाहरराज के पुत्र जैत नामक कुमर ने १५अरु १६ अनादर ॥७॥ सोलंखियों ने जैन मत धारण करलिया इस कारण उनको १७ नास्तिक कहे १८ गायत्री मंत्र १९ सिंह का २० बंट २१ स्याल के मुख में

सळख चाहुवाण कुमारसूँ *स्वकीय ×सुतारो संबंध करण
अजमेर द्रंग चलायो ॥
तिणसमय चालुक्यराज अजमेररै मार्ग ÷छद्मघातक भेजिया
या बात जाणि सळख प्रमार बाँई तरफ टळि नागोर आयो ॥
अर संबंधरो वृत्तांत अजमेर कहायो ॥११॥
जरैं अजमेरसूँ प्रामाररै काज सत१००हय पंच५ गज पंचसत
५००निष्क मेवात देस सहित हिंसारदुर्ग१रो पटो कैमासरै साथ
देर बडा आदरसूँ नागोर भेजियो ॥
अर संबंधरो वृत्तांत कहायो जिको समतारा२सत्कार पूर्वक स्वी-
कार कियो ॥
यो उदंत३ श्रवणरो संचारी होताँही भोळारायभीम अणहिल-
पुररै बाहिर मुकाम दीधो ॥
अर सिंधुराँरै सीस पताका खुलाय अनीकाँरा ओघ मिलाय
पृथ्वीरा पुड़ चलावतै जिकण भद्रकालीरै घरे निमंत्रण लगावतै
अर्बुदरै ऊपर प्रस्थान कीधो ॥ १२ ॥
दरकूँचाँ जाय दुर्गरै पृतनारो पळेटो दियो ॥
किनाँ सुमेरुपर्वतरै चोतरफ जंबूद्वीपरो मंडळ थियो ॥
उणसमय समुद्रमैं टापूरै समान अर्बुदाचळरो दुर्ग दृष्टिपथमैं आयो॥
अर पर्वताँरै सीस पविपातरै प्रमाण गढगंजण तोपाँरै श्रवणाँ
अलात देदेर गोळाँरो गँजर लगायो ॥ १३ ॥
हजाराँ मण बारूद उडाय दुर्गमाथै बानैतँ बीराँरा केही हल्लापेलिया॥

सहित * अपनी × पुत्री का ÷ छल से घात करने वाले ॥ ११ ॥ प्रति-वर्ष पांच सौ १ मोहर की आमद का २ बराबरी के सत्कार सहित ३ यह वृत्तान्त४सुनते ही ५ हाथियों के ऊपर६ सेनाओं का७समूह८चलायमान क-रते हुए जिसने ९ न्यूँता देते हुए ने १० आबू पर ११ गमन किया ॥ १२ ॥ १२ सेना का १३ घेरा लगाया १४ घेरा हुआ १५ वज्रपात समान १६ जल-ती हुई बत्ती (अंगारा) १७ निरन्तर आघात लगाया ॥१३॥ १८बानाबंध.

सळख चाहुवाण कुमारसूँ *स्वकीय ×सुतारो संबंध करण
अजमेर द्रंग चलायो ॥
तिणसमय चालुक्यराज अजमेररै मार्ग ÷छद्मघातक भेजिया
या बात जाणि सळख प्रमार बाँई तरफ टळि नागोर आयो ॥
अर संबंधरो वृत्तांत अजमेर कहायो ॥११॥
जरैं अजमेरसूँ प्रामाररै काज सत१००हय पंच५ गज पंचसत
५००निष्क मेवात देस सहित हिंसारदुर्ग१रो पटो कैमासरै साथ
देर बडा आदरसूँ नागोर भेजियो ॥
अर संबंधरो वृत्तांत कहायो जिको समता२रा सत्कार पूर्वक स्वी-
कार कियो ॥
यो उदंत३ श्रवणरो संचारी होताँही भोळारायभीम अणहिल-
पुररै बाहिर मुकाम दीधो ॥
अर सिंधुराँरै सीस पताका खुलाय अनीकाँरा ओघ मिलाय
पृथ्वीरा पुड़ चलावतै जिकण भद्रकालीरै घरे निमंत्रण लगावतै
अर्बुदरै ऊपर प्रस्थान कीधो ॥ १२ ॥
दरकूँचाँ जाय दुर्गरै पृतनारो पँळेटो दियो ॥
किनाँ सुमेरु पर्वतरै चोतरफ जंबूद्वीपरो मंडळ थियो ॥
उणसमय समुद्रमैं टापूरै समान अर्बुदाचळरो दुर्ग दृष्टिपथमैं आयो॥
अर पर्वताँरै सीस पैविपातरै प्रमाण गढगंजण तोपाँरै श्रवणाँ
अलात देदेर गोळाँरो गँजर लगायो ॥ १३ ॥
हजाराँ मण बारूद उडाय दुर्गमाथै बानैतँ बीराँरा केही हल्लापेलिया॥

सहित * अपनी × पुत्री का ÷ छल से घात करने वाले ॥ ११ ॥ प्रति-
वर्ष पांच सौ १ मोहर की आमद का २ बराबरी के सत्कार सहित ३ यह
वृत्तान्त४सुनते ही ५ हाथियों के ऊपर६ सेनाओं का७समूह८चलायमान क-
रते हुए जिसने ९ न्यूँता देते हुए ने १० आबू पर ११ गमन किया ॥ १२ ॥
१२ सेना का १३ घेरा लगाया १४ घेरा हुआ १५ वज्रपात समान १६ जल-
ती हुई बत्ती (अंगारा) १७ निरन्तर आघात लगाया ॥१३॥ १८बाणबंध.

दो२ही तरफसूँ लोहरा प्रभावमैं कसर न देखी तथापि पश्चि-
मरो अधीस जाणि वारसुंदरी रै स्वभाव जयलक्ष्मीरो कटाक्षतो
भोळारायरी तरफ हुवो ॥
अर अल्पधन भुजगँ नायकरै समान लज्जापाय पामाराँरो स-
मूह नाकरूप बिदेसमैं थियो जुवो ॥ १६ ॥
नायकरै विदेस गमण आपरी अंगनारै समान राजपुत्रियाँ भी
कुळरा धर्मरै अनुसार पावकरा प्रवेस बिनाँही उणाही बिदेसमैं ब-
सणरी चाढ लागी ॥
सो धवाँरा धड़ पड़ता देखि खड्ग खेटकरा पाँटवमैं प्रवीण सूर-
भावरै साथ श्रद्धारै समान सात्रवाँरो संहार करती सारीही मध्य
पुररा प्रकोष्ठरै माथै आवती कृपाणाँरै बाढ लागी ॥
खेमकर्ण१ खंगार२ महणसिंह३ गोविंदराज४ त्रिलोचन५ पाँ-
चूंही पामाराँ सीसरै साँटै दुर्ग दीधो ॥
अर जिकाँरा परिग्रहरा जनाँ बी दो२ ही तरफरी कुळ१ लज्जा
२रै अनुसार धाराँधररी धाराँसूं तिलातिल होय पीहर१ सासरै २

---

१ शस्त्रों की विशेषता अथवा प्रताप में कमी नहीं रही २ तोभी भोलाराय भीम को पश्चिम दिशा का ३ पति (गुजरात देश हिन्दुस्थान के पश्चिम भाग में है जहां के पति) जानकर ४ वेश्या के स्वभाव से जयलक्ष्मी का कटाक्ष उसकी ओर हुआ क्योंकि पश्चिम दिशा का पति वरुण है जिसको विभूति का पति मानते हैं इस कारण धन की चाहना से वेश्या के स्वभाव से जयलक्ष्मी ने पश्चिम दिशा के पति की ओर कटाक्ष दिये और प्रमारों का समूह न्यून धनवाले ५ गणिकापति के समान जयलक्ष्मी रूपी गणिका को अपने से विरक्त जानकर लज्जा पाकर६स्वर्ग रूपी विदेश में ७ जुदा हुआ ॥१६॥ अपना पति विदेश जाता है तब उनकी ८ स्त्रियें भी घर में रहना नहीं चाहतीं उसी माफिक राजपुत्रियों ने भी अपने कुलधर्म के अनुसार ९ अग्नि में प्रवेश किया विना ही उसी देश (अपने पति गये उस स्वर्ग) में वास करने की विशेष लगन लगी सो१०पतियों के शरीरों को पड़ते देखकर खड्ग और ११ढाल की १२चतुराई में कुशल१३जनानी डोढी पर आकर १४ तरवारों की धारा से लगी अर्थात् कटमरी १५परगह के लोगों (दासियां आदि) ने१६तरवारों की

दो२ही तरफसूँ लोहरा प्रभावमैं कसर न देखी तथापि पश्चिमरो[3] अधीस जाणि वारसुंदरी रै स्वभाव जयलक्ष्मीरो कटाक्षतो भोळारायरी तरफ हुवो ॥

अर अल्पधन भुजगँ नायकरै समान लज्जापाय प्रामारांरो समूह नाकरूप[6] विदेसमैं थियो जुवो ॥ १६ ॥

नायकरै विदेस गमण आपरी अंगनारै समान राजपुत्रियाँ भी कुळरा धर्मरै अनुसार पावकरा[9] प्रवेस बिनाँही उणाही विदेसमैं बसणरी चाढ लागी ॥

सो धवांरां धड़ पड़ता देखि खड्ग खेटकरा[11] पाटवमैं[12] प्रवीण सूरभावरै साथ श्रद्धारै समान सात्रवांरो संहार करती सारीही मध्य पुररा प्रकोष्ठरै[13] माथै आवती कृपाणाँरै[14] बाढ लागी ॥

खेमकर्ण१ खंगार२ महणसिंह३ गोविंदराज४ त्रिलोचन५ पांचूंही प्रामाराँ सीसरै सांटै दुर्ग दीधो ॥

अर जिकाँरा परिग्रहरा[15] जनां बी दो२ ही तरफरी कुळ१ लज्जा २रै अनुसार धारांधररी[16] धाराँसूं तिलातिल होय पीहर१ सासरै २

---

१ शस्त्रों की विशेषता अथवा प्रताप में कमी नहीं रही २ तोभी भोलाराय भीम को पश्चिम दिशा का ३ पति (गुजरात देश हिन्दुस्थान के पश्चिम भाग में है जहां के पति) जानकर ४ वेश्या के स्वभाव से जयलक्ष्मी का कटाक्ष उसकी ओर हुआ क्योंकि पश्चिम दिशा का पति वरुण है जिसको विभूति का पति मानते हैं इस कारण धन की चाहना से वेश्या के स्वभाव से जयलक्ष्मी ने पश्चिम दिशा के पति की ओर कटाक्ष दिये और प्रमारों का समूह न्यून धनवाले ५ गणिकापति के समान जयलक्ष्मी रूपी गणिका को अपने से विरक्त जानकर लज्जा पाकर ६ स्वर्ग रूपी विदेश में ७ जुदा हुआ ॥ १६ ॥ अपना पति विदेश जाता है तब उनकी ८ स्त्रियें भी घर में रहना नहीं चाहतीं उसी माफिक राजपुत्रियों ने भी अपने कुलधर्म के अनुसार ९ अग्नि में प्रवेश किया विना ही उसी देश (अपने पति गये उस स्वर्ग) में वास करने की विशेष लगन लगी सो १० पतियों के शरीरों को पड़ते देखकर खड्ग और ११ ढाल की १२ चतुराई में कुशल १३ जनानी ड्योढी पर आकर १४ तरवारों की धारा से लगी अर्थात् कटमरी १५ परगह के लोगों (दासियां आदि) ने १६ तरवारों की

तुरंग दोय २ गजराज पैंताळीस४५ कांतलोहमय[1] खड्ग च्यारि ४ रंगदार चामर साथदेर सारंगदेवनूँ गजनवी विदा कीधो ॥

जिण दरकूँचाँ जाय उपहार[2] दिखाय चालुक्यराजरो पत्र दीधो ॥

तिण पत्रमैं आपरै साकंभर[3]१ पातसाहरै नागोर२ यो लेख देखतांहीं सभारैबीच गोरी सहाबुद्दीन कोप गहियो ॥

अर तत्तार१ खुरासाण२ न्याज३ निसुरत्४ रुस्तम्५ फीरोज६ इत्यादिक प्रत्यंतधरारा[4] किंवाड़ प्रवीर[5] जन[6] उठै हूँता तिकांभी चालुक्यराजनूं अतिदर्प[7] कहियो ॥

जवनेस[8] जंपियो बिजयरो बिभाग बीजांनूँ[9] बांटिदेणरो संकल्पतो कांतरलोकां[10] रै सुणीजै ॥

परंतु आपरै रासि संचय करि सहायकनूं कण देणरी अधिकाई मुणीजै[11] ॥ २१ ॥

चालुक्यरै इसो अभिमान किसा भडांरै भरोसै प्रकट थियो[12]॥

आगैभी जिणरो गुजरातदेस वारवाररी चढाईरै अनुसार महमूदगज्नवीरो गंजियो[13]॥

इणरीति मूढ शृगाल[14] सिंहरा सहायसूँ गजराजनूँ गुडाय आपरैही अधीन जाणि ऊँहीं गजराजरो लूम[15] बिभागमैं सिंहनूं देणचहै॥

इणरीति कातर[16] चालुक्य गज्नवीरै प्रताप चहुवाणाँरो देस लेर सहाबुद्दीनरी भेट नागोर निवेदणरी कहै ॥२२॥

तिणसूँ अब पहली चहुवाणाँनूँ बिगाड़ि साथही गुजरातरो विध्वंस[17] करणौं ॥

---

१ लोह विशेष जो आमक, चुम्बक, रोमक और स्वेदक नामों से चार प्रकार का होता है २ भेट ॥ २० ॥ ३ सांभर ४ म्लेच्छदेश के रक्षक वीर ५ लोग वहां ६ थे उन्होंने भी सोलंखी राजा भीम को बहुत ७ घमंडी कहा ८ बादशाह ने कहा कि ९ दूसरों को १० कायर लोकों के सुनते हैं ११ कहते हैं ॥ २१ ॥ १२ हुआ १३ विजय किया हुआ है १४ गीदड़ १५ पूंछ बंट करने में सिंह को देना चाहता है १६ कायर ॥ २२ ॥ १७ नाश

तुरंग दोय २ गजराज पैंताळीस४५ कांतलोहमय[1] खड्ग च्यारि ४ रंगदार चामर साथदे[2] सारंगदेवनूँ गजनवी विदा कीधो ॥

जिण दरकूँचाँ जाय उपहार[2] दिखाय चालुक्यराजरो पत्र दीधो ॥

तिण पत्रमैं आपरै सांकंभर[3]१ पातसाहरै नागोर२ यो लेख देखतांहीं सभारैबीच गोरी सहाबुद्दीन कोप गहियो ॥

अर तत्तार१ खुरासाण२ न्याज३ निसुरत्[4]४ रुस्तुम्५ फीरोज६ इत्यादिक प्रत्यंतधरारां[4] किंवाड़[5] प्रवीर जनं[6] उठै हूँतां तिकांभी चालुक्यराजनूं अतिदर्प[7] कहियो ॥

जवनेस[8] जंपियो बिजयरो बिभाग बीजांनूँ[9] बांटिदेणरो संकल्पतो कांतरलोकां[10]रै सुणीजै ॥

परंतु आपरै रासि संचय करि सहायकनूं कण देणरी अधिकाई सुणीजै[11] ॥ २१ ॥

चालुक्यरै इसो अभिमान किसा भडांरै भरोसै प्रकट थियो[12]॥

आगैभी जिणरो गुजरातदेस बारबाररी चढाईरै अनुसार महमूदगजनवीरो गंजियो[13]॥

इणरीति मूढ शृगाल[14] सिंहरा सहायसूँ गजराजनूँ गुडाय आपरैही अधीन जाणि ऊँहीं गजराजरो लूम[15] बिभागमैं सिंहनूँ देणचहै॥

इणरीति कातर[16] चालुक्य गज्नवीरै प्रताप चहुवाणाँरो देस लेर सहाबुद्दीनरी भेट नागोर निवेदणरी कहै ॥२२॥

तिणसूँ अब पहली चहुवाणाँनूँ बिगाड़ि साथही गुजरातरो बिध्वंस[17] करणाँ ॥

---

१ लोह विशेष जो भ्रामक, चुम्बक, रोमक और स्वेदक नामों से चार प्रकार का होता है २ भेट ॥ २० ॥ ३ सांभर ४ म्लेच्छदेश के रक्षक वीर५ लोग वहां ६ थे उन्होंने भी सोलंखी राजा भीम को बहुत ७ घमंडी कहा ८ बादशाह ने कहा कि ९ दूसरों को १० कायर लोकों के सुनते हैं ११ कहते हैं ॥ २१ ॥ १२ हुआ १३ विजय किया हुआ है १४ गीदड़ १५ पूंछ बंट करने में सिंह को देना चाहता है १६ कायर ॥ २२ ॥ १७ नाश

न कहाऊँ ॥२५॥

इण संधारै अनंतर[1]ही वडो वरूथ[2] बणाय गोरी जवनेस अटक[3]रै वार आयो॥

अर केही नरेसाँरा थाँणाँ भाँजि विजयरा मदमैं मत्तथकै ग्राम साऱूडै मुकाम लगायो ॥

जवनांरा जोरसूँ हिन्दुस्थानमैं ओद्राँव[4] पड़ताँ प्रतिहार नाहरराज मंडोवरसूँ चलाय प्रत्यंत[5]राजरै अधीन बणियो ॥

अर प्रतिदिन पृतना[6]रो प्रस्थान[7] होताँ आघात[8]रै आतंक[9] आर्यावर्त्त हाकार भणियो ॥ २८ ॥

या सुणताँहीं अणहिलपुररो अधीस सेनारा संभार[10]सूँ महीरै मचोळाँ[11] देतो गज़नवीरो वेग झेलणरैकाज जवनेसरो राह रोकि सोझ्तिसहर आडो आय पड़ियो[12] ॥

अर अठी नागोर पहलीरा जुद्धमैं आपरो आबूगढ भीमरै गयो सुणताँही कुमार समेत पृमार सळख अणहिलपुरजाय जुद्धमैं मरणरो प्रपंच[13] घड़ियो॥

जठै सळखरा सत्काररै अर्थ पहली अजमेरसूं कैमास[14] भेजियो जिण नागोर आय प्रामारसूँ कहियो केवळही मरण माँडियाँ वसुधाँ१ [15]र[16] वडाई २ दोरही व्यर्थ जावसी ॥

अर धीरभाव लीधाँ मंत्र[17]री महत्ता[18]रै साथ सोळंखियाँरी सीमाँमैं सारोही फैल खटावसी ॥ २७ ॥

सोही स्वीकार करि प्रामार कैमासरा मंत्ररै अनुसार सन्नद्ध[19] होय नागोर रहियो ॥

अर जवनेसरा आगमरै निमित्त पृथ्वीराज कुमार पितासूँ

१पीछे २सेना ३अटक नदी के इस वार ४ उद्राव (भागना) ५ म्लेच्छराज के आधीन हुआ ६ सेना का ७ कूंच होने से ८ प्रहार के ९ भय से ॥ २१ ॥ सेना के १० समूह से भूमि को ११हिलाता हुआ १२पड़ाव डाला १३ रचना बनाई १४ पृथ्वीराज के कैमास नामक मंत्री को भेजा था १५ भूमि १६ और बड़प्पन १७सलाह के १८ बड़प्पन से ॥ २७ ॥ १९ युद्ध के लिये सज्ज होकर

न कहाऊँ ॥२५॥

इण संधारै[1] अनंतरही वडो वरूथ[2] बणाय गोरी जवनेस अटकै[3] वार आयो॥

अर केही नरेसाँरा थाँणाँ भाँजि विजयरा मदमैं मत्तथकै ग्राम सारूडै मुकाम लगायो ॥

जवनांरा जोरसूँ हिन्दुस्थानमैं ओद्राव[4] पड़ताँ प्रतिहार नाहरराज मंडोवरसूँ चलाय प्रत्यंतराजरै[5] अधीन बणियो ॥

अर प्रतिदिन पृतना[6]रो परस्थान[7] होताँ आघात[8]रै आतंक[9] आर्यावर्त्त हाकार भणियो ॥ २८ ॥

या सुणतांहीं अणिहलपुररो अधीस सेनारा संभार[10]सूँ मही[11]रै मचोळो देतो गज्नवीरो वेग झेलणरैकाज जवनेसरो राह रोकि सोभ्कतिसहर आडो आय पड़ियो[12] ॥

अर अठी नागोर पहलीरा जुद्धमैं आपरो आबूगढ भीमरै गयो सुणताँही कुमार समेत प्रमार सळख अणिहलपुरजाय जुद्धमैं मरणरो प्रपंच[13] घड़ियो॥

जठै सळखरा सत्काररै अर्थ पहली अजमेरसूं कैमास[14] भेजियो जिण नागोर आय प्रामारसूँ कहियो केवळही मरण माँडियां बसुधा[15]१ र[16] बडाई २ दोरही व्यर्थ जावसी ॥

अर धीरभाव लीधाँ मंत्र[17]री महत्ता[18]रै साथ सोळंखियाँरी सीमाँमैं सारोही फैल खटावसी ॥ २७ ॥

सोही स्वीकार करि प्रामार कैमासरा मंत्रै अनुसार सन्नद्ध[19] होय नागोर रहियो ॥

अर जवनेसरा आगमरै निमित्त पृथ्वीराज कुमार पितासूँ

१पीछे२सेना३अटक नदी के इस वार ४ उद्राव (भागना) ५ म्लेच्छराज के आधीन हुआ ६ सेना का ७ कूंच होने से ८ प्रहार के ९ भय से ॥ २१ ॥ सेना के १० समूह से भूमि को११हिलाता हुआ १२पड़ाव डाला १३ रचना बनाई १४ पृथ्वीराज के कैमास नामक मंत्री को भेजा था १५ भूमि १६ और बड़प्पन१७सलाह के १८ बड़प्पन से ॥ २७ ॥ १९ युद्ध के लिये सज्ज होकर

पंरतु पृथ्वीराजरो मंत्री उणारा उक्त रूप इंद्रजालरा उंद्वंधणामैं न आयो रै श्रावकरा प्रेरिया समस्तही फंद जाणिलिया ॥ ३० ॥

निसीथैरै समय धाटीरै संपात दिवाय आपरा गहणाहार गुञ-रातअधीसरा सामंत मंली अमरसिंह समेत जठी तठी पलाय-मान किया ॥

अर गज१ बाजि२ डेरा३ ऊँट४ रह्या जिके लुटायलिया ॥

इणबातरै अनंतर कैमासभी सहोदरं चामुंडराज१ बागड़ी देव-राज २ जादव जाज३ बडगूजर रामदेव४गहिलोत गोइंदराज५ चो रंग लंगरीराज६ हाडा अखैराज७समेत अल्प साथसूँही राजा भी-मरै माथै प्रस्थान कियो ॥

जिको सुणताँही भयहा चंदेल१ महण प्रतिहार२ नृसिंह चहुवा-ण३तेजल प्रमार४ सारंग चालुक्य५ पंचायण चहुवाण६ महणसिंह भाटी७ निडर राठोड़८ जंगळराज दहियो९ कन्न्ह चहुवाण१० चाटे टाँक११ आनताई चहुवाण१२ जयसिंह जादव१३ वंबाळ चहुवार १४भीम जंघाल१५कनक बडगूजर१६ इत्यादिक कतराक सामंत अजमेर छा जिकाँभी कँवरसूँ अरजकरि सहायरै काज कैमासनूँ आय लियो ॥ ३१ ॥

दोहा

जोध प्रथम१आया जिकाँ, मग पूगो कैमास ॥
एकझुण्ड अजमेर सूँ, तीजो३मिळियो तास ॥ ३२ ॥

षट्पात

करि प्रच्छन्न मुकाम सुँहड़ एकल होय सब ॥

---

१ कथन रूप इन्द्रजाल के २ फन्दे में नहीं आया ३ अ-रु ४ सरावगी (जैनी) अमरचंद जती का प्रेरणा किया हुआ ॥ २९ ॥ ५ आधी रात्रि के समय ६ धाड़ा डालनेवालों के समान तथा शत्रुओं के स-न्मुख जाकर शस्त्रों के प्रहार दिलाकर ७ भगादिये ८ पीछे ९ अपनेस-गे भाई १०कूंच किया॥३१॥११ उस कैमास से तीसरा झुंड मिला १२सुभट

परंतु पृथ्वीराजरो मंत्री उणारा उक्त[1] रूप इंद्रजालरा उंदंधणामैं[2]
न आयो रे[3] आवकरा[4] प्रेरिया समस्तही फंद जाणिलिया ॥ ३० ॥
निसीथैरै[5] समय धाटीरै[6] संपात दिवाय आपरा गहणहार गुज-
रातअधीसरा सामंत मंत्री अमरसिंह समेत जठी तठी पलायँ-
मान किया ॥
अर गज१ बाजि२ डेरा३ ऊँट४ रह्या जिके लुटायलिया ॥

इणबातरै अनंतर कैमासभी सहोदर चामुंडराज१ बागड़ी देव-
राज २ जादव जाज३ बडगूजर रामदेव४ गहिलोत गोइंदराज५ चो-
रंग लंगरीराज६ हाडा अखैराज७ समेत अल्प साथसूँही राजा भी-
मरै माथै प्रस्थान कियो ॥

जिको सुणताँही भयहा चंदेल१ महण प्रतिहार२ नृसिंह चहुवा-
ण३ तेजल प्रमार४ सारंग चालुक्य५ पंचायण चहुवाण६ महणसिंह
भाटी७ निडर राठोड़८ जंगळराज दहियो९ कन्ह चहुवाण१० चाटो
टाँक११ आनताई चहुवाण१२ जयसिंह जादव१३ वंबाळ चहुवाण
१४ भीम जंघाल१५ कनक बडगूजर१६ इत्यादिक कतराक सामंत
अजमेर छा जिकाँभी कँवरसूँ अरजकरि सहायरै काज कैमासनूँ
आय लियो ॥ ३१ ॥

दोहा

जोध प्रथम१आया जिकाँ, मग पूगो कैमास ॥
एक झुंड अजमेर सूँ, तीजो[11] मिळियो तास ॥ ३२ ॥

षट्पात

करि प्रच्छन्न मुकाम सुहड़[12] एकत्र होय सब ॥

१ कथन रूप इन्द्रजाल के २ फन्दे में नहीं आया ३ अ-
रु ४ सरावगी (जैनी) अमरचंद जती का प्रेरणा किया हुआ ॥ २९ ॥ ५
आधी रात्रि के समय ६ धाड़ा डालनेवालों के समान तथा शत्रुओं के स-
न्मुख जाकर शस्त्रों के प्रहार दिलाकर ७ भगादिये ८ पीछे ९ अपने स-
गे भाई १० कूंच किया ॥ ३१ ॥ ११ उस कैमास से तीसरा झुंड मिला १२ सुभट

गंगारी सहस्र१०००धारारै समान केही धाराधरौंरी ऊजळो धा-
रा कंकटाँरा कदम्बमैं कढणलागी ॥
जठै स्याम धाराधररी लहर लेती संपाँरा सळाँवाँरी सोभा चढ-
णलागी ॥ ३५ ॥

नागणी लेती तोपरै अभिमुँख धकावै जिणतरह कालेजा क-
राँमैं लीधा प्राणाँरो दुभिक्ष पटकता चहुवाणारा सामंत बीच हुवा॥
अर सस्त्राँ रै संपातं जीवाँरी यात्रा११रमाँथाँरा व्यापार२मंडिया
जुंवा जुवा ॥
झालो सिंहदेवतो प्रथम अणीमैंहीं लोहछकहोय प्राणाँरा पो-
खणमैं लुंभायोथको प्रमदारो पाहुणाँ अपूठो खड़ियो ।
अर कंठीरव कन्न्ह चालुक्यराजरै विजयरो संकल्प बधावतो
निस्संकथको एक१मुंहूर्त्त लड़ियो ॥ ३६ ॥
सामंताँरो बेग कण्ठीरव झेलियो जिण अन्तरायमैं चौलुक्य-
राज सावधान थियो ॥
इतरै चामुण्डराज कंठीरवकन्न्ह नूं देवलोकरा भोगरो अधि-
कारी कियो ॥
प्रामार जैतकुमर जनककरी आणारै अनुसार इच्छणीरै एवज
उर्वसी देणआयो ॥
चालुक्यराजरा एक १ भाई दोय २पुत्र मारि गुजरात कटकमैं
कलकल मचायो ॥ ३७ ।

जगाया १ तरवारों की २ कवचों के ३ समूह में ४ श्याम मेघ की ५ बिजुलियों के ६ चमक की शोभा चढने लगी ॥ ३५ ॥ चलती हुई तोप के ७ सम्मुख जावें जैसे८ कलेजे हाथों में लेकर अर्थात् मृत्यु का भय छोड़कर ९ प्रहार १० अरु११ जुदा जुदा १२ प्राण पालने का १३ लोभ करके अपनी १४ स्त्री का मेहमान होकर भागा १५ दो घड़ी ॥ ३६ ॥ १६ सोलंखी राजा भीम निद्रा से सावधान १७ हुआ १८ को १९ स्वर्गलोक के भोग का अधिकारी किया अर्थात् मारडाला २०पिता की२१ आज्ञा के अनुसार राजा भीम को इच्छणी की एवज उर्वशी अप्सरा देने को आया २२ कोलाहल

गंगारी सहस्र१०००धारारै समान केही धाराधरांरी ऊजळो धा-
रा कंकटांरा कदम्बमैं कढगालागी ॥
जठै स्याम धाराधररी लहर लेती संपांरा सळांवांरी सोभा चढ-
गालागी ॥ ३५ ॥
नागणी लेती तोपरै अभिमुख धकावै जिणतरह काळेजा क-
रमैं लीधा प्राणांरो दुर्भिक्ष पटकता चहुवाणारा सामंत बीच हुवा॥
अर सस्त्रां रै संपात जीवांरी यात्रा११रमाथांरा व्यापार१२मंडिया
जुवा जुवा ॥
झालो सिंहदेवतो प्रथम अणीमैंहीं लोहछकहोय प्राणांरा पो-
खणमैं लुंभायोथको प्रमदारो पाहुणां अपूठो खड़ियो ।
अर कंठीरव कन्न्ह चालुक्यराजरैं विजयरो संकल्प बधावतो
निस्संकथको एक१मुहूर्त्त लड़ियो ॥ ३६ ॥
सामंतांरो बेग कण्ठीरव झेलियो जिण अन्तरायमैं चौलुक्य-
राज सावधान थियो ॥
इतरै चामुण्डराज कंठीरवकन्न्ह नूं देवलोकरा भोगरो अधि-
कारी कियो ॥
प्रामार जैतकुमर जनंकरी आणारै अनुसार इच्छणीरै एवज
उर्वसी देणआयो ॥
चालुक्यराजरा एक १ भाई दोय २पुत्र मारि गुजरात कटकमैं
कलकल मचायो ॥ ३७ ।

जगाया १ तरवारों की २ कवचों के ३ समूह में ४ श्याम मेघ की ५ बिजुलियों के ६ चमक की शोभा चढने लगी ॥ ३५ ॥ चलती हुई तोप के ७ सम्मुख जावें जैसे८ कलेजे हाथों में लेकर अर्थात् मृत्यु का भय छोडकर ९ प्रहार १० अरु११ जुदा जुदा १२ प्राण पालने का १३ लोभ करके अपनी १४ स्त्री का मेहमान होकर भागा १५ दो घड़ी ॥ ३६ ॥ १६ सोलंखी राजा भीम निद्रा से सावधान १७ हुआ १८ को १९ स्वर्गलोक के भोग का अधिकारी किया अर्थात् मारडाला २०पिता की२१ आज्ञा के अनुसार राजा भीम को इच्छणी की एवज उर्वशी अप्सरा देने को आया २२ कोलाहल

इण अन्तरतो राजानूँ गहियो जाणताँही डाभी वीरमदेव१सो-
ढैसारंगदेव२देवडैदेव३बढैलवीरदेव४पामारसिंहदेव५गोजीनृसिंह ६
इत्यादिक वीराँभी आय सहाय दियो ॥
जठै चामुण्डराजरा खड्गरा आघातकरि वाजीसमेत गाजी नृ-
सिंह [2]आजी अंगणमैं खण्डखण्ड होय [3]ढळियो ॥
[4]जैरैं गजारूढ पामार सिंह [5]उरंग असि चलाय आपरा सुरंग[6] हो-
दारै वरव्वर कढतो दाहिमाँरो तुँरंग दळियो ॥ ४१ ॥
सिंहरो वार होताँहीं इणरा [8]कुम्भीरै कलावै चामुण्डराजरो चं-
द्रहास झड़ियो ॥
पछैं गजराज मस्तक समेत दाहिमो वाहणाँ बिहूणाँ हेठो आय
पड़ियो ॥
जोगिणी१बेताळ२प्रेत३डाकिणी४भैरव५गणाँ साँचो हाथ छू-
टणरी प्रसंसाकरी ॥
अर सिंहदेवभी साथही हेठै आय खड्गखेल्ह मचाय महाप्रलय
रा समयरा [12]मैंहानटरी आभाँ[13] धरी ॥ ४२ ॥
जठै रणरूप मदरै मतवाळै चामुण्डराज रंभादिकाँनूँ रिझाव-
तो पामारसिंह किवाणों[14]पात देर पाड़ियो ॥
अर सोढै सारंगदेव चामुण्डराजरै [15]चौंचरै चंद्रहास झाड़ियो ॥
तिणसूँ टोपरा टूक होय मस्तकरो चोथो४अंस खुलियो ॥
अर दाहिमाँरो तोत्रैं[16] लागताँहीं पामार सारंगरो प्राण कढण
पैठणरी पद्धतीसूँ झुलियो ॥ ४३ ॥
बढैल वीरदेवनूँ मारि तिणरै तुरंग चामुंड चाढियो ॥
अर बेताळ वीराँ जठी तठी जयकार पाढियो ॥

---

१ वीर २ युद्ध खेत में ३ गिरा ४ जब
के समान खड्ग को ६ श्रेष्ठ रंग के ७ घोड़े को मारा ॥ ४१ ॥ ८ हाथी
र१०वाहन११ विना नीचे आ गिरा१२ महादेव की१३कान्ति धारण
४२ ॥ १४ तरवार का प्रहार देकर गिराया १५ मस्तक पर १६ भाला
निश्वास के मार्ग को भूल गया अर्थात् मरगया ॥ ४३ ॥

इण अन्तरतो राजानूँ गहियो जाणताँही डाभी वीरमदेव१सो-
लैसारंगदेव२देवडदेव३बढैलबीरदेव४प्रामारसिंहदेव५गोजीनृसिंह ६
इत्यादिक बीराँभी आय सहाय दियो ॥
जठै चामुण्डराजरा खड्गरा आघातकरि वाजीसमेत गाजी नृ-
सिंह आजी अंगणमैं खण्डखण्ड होय ढळियो ॥
जैरै गजारूढ प्रामार सिंह उरंग असि चलाय आपरा सुरंग हो-
दारै बरछ्बर कढतो दाहिमाँरो तुरंग दळियो ॥ ४१ ॥
सिंहरो वार होताँहीं इणरा कुम्भीरै कलावै चामुण्डराजरो चं-
द्रहास झाड़ियो ॥
पछैं गजराज मस्तक समेत दाहिमो वाहणाँ बिहूणो हेठो आय
पड़ियो ॥
जोगिणी१बेताळ२प्रेत३डाकिणी४भैरव५गणाँ साँचो हाथ छू-
टणरी प्रसंसाकरी ॥
अर सिंहदेवभी साथही हेठै आय खड्गखेल्ह मचाय महाप्रलय
रा समयरा महानटरी आभा धरी ॥ ४२ ॥
जठै रणरूप मदरै मतवाळै चामुण्डराज रंभादिकाँनूँ रिझाव-
तो प्रामारसिंह किवाणपात देर पाड़ियो ॥
अर सोढै सारंगदेव चामुण्डराजरै चाँचरै चंद्रहास झाड़ियो ॥
तिणसूँ टोपरा टूक होय मस्तकरो चोथो४अंस खुलियो ॥
अर दाहिमाँरो तोत्रै लागताँहीं प्रामार सारंगरो प्राण कढण
पैठणरी पद्धतीसूँ झुलियो ॥ ४३ ॥
बढैल बीरदेवनूँ मारि तिणरै तुरंग चामुंड चढियो ॥
अर बेताळ बीराँ जठी तठी जयकार पढियो ॥

---

१ बीर २ युद्ध खेत में ३ गिरा ४ जब
के समान खड्ग को ६ श्रेष्ठ रंग के ७ घोड़े को मारा ॥ ४१ ॥ ८ हाथी
पर१०वाहन११ बिना नीचे आ गिरा१२ महादेव की१३कान्ति धारण
४२ ॥ १४ तरवार का प्रहार देकर गिराया १५ मस्तक पर १६ भाला
निश्वास के मार्ग को भूल गया अर्थात् मरगया ॥ ४३ ॥

समान अपूठो अणिहलपुररी तरफ खड़ियो ॥
जठै *संगररो भार आपरै माथै+ओडि गुर्जरधरारो कपाट होय
आपरा बारहसै १२००÷बानैंतां समेत काठी कृष्णदेव चंद्रहासाँरा
चोड़ा बाढ चखावणरैकाज पृथ्वीराजरा बीरां रै थोभ लगाय लड़ियो
जिकणरो सीस महेसरो मनोरथ मोघकरि अनेक धाराधरांरी
धारामांहीं लागि लीन थियो ॥
अर आपरा स्वामी चालुक्यराज भीमनूँ प्राणबचावणरैकाज
अभीष्ट आगारँ जावणरो अवकास दियो ॥ ४७ ॥
जिण झकटमैं जुज्झार होय एक अयुत तीनहजार१३०००से-
नारै साथ अजमेररा अनीकमैं सामंतांरो दसक१० खेतपड़ियो ॥
बिद्रांवणरै समय चालुक्यराज भीम १ सूँ चहुवाण कन्ह २
कहियो सातूँ७हीं भायाँरो बैर वाळणरो संकल्प होयतो इण संगर
सिवाय बेळे किसड़ो अनेहैं आवैछै ॥
अर प्रमारांरा बैरमाथै अब चाहुवाणाँरो चक्र अर्बुदाचळरी स-
रणीरै समुख पाधरोही धकावैछै ॥ ४८ ॥
भूखा केहरी१रो केहर२खींजिया नागराज१रो मणि२मांडणी
झाटकिलेणरो बळ होयतो म्हाँरा प्रस्थानरो राह रोकणरी स-
लाहछै ॥
अर आजरा समयमैं गुजरात रूपी काचाकळसरै सीस चाहुवा-
णाँरा समुद्ररो सीमालोपियो प्रवाह छै इसड़ा कन्हरा वचन गिरि-

(निर्जल, पराक्रम रहित) होकर * युद्ध का भार + झेलकर ÷ बानाब न्धों के साथ १ तरवारों के २ रोक लगाकर ३ महादेव का बिचार इसका मस्तक मुंडमाला में रखने का था उस विचार को व्यर्थ करके अनेक ४ लओं की धारों में लगकर उन्हींमें लीन ५ होगया ६ वांछित (प्यारे) ७ घर जाने का ॥ ४७ ॥ ८ युद्ध (झगड़े) में ९ सेना में १० भागने के समय ११ पीछा लेने का १२ फिर कैसा १३ समय आवेगा १४ सेना १५ मार्ग के ॥ ४८ ॥ १६ सटा (कंधे के बाल) १७ क्रोध कियेहुए सर्प का १८ जबरदस्ती उपाड़ लेने का १९ हमारे जाने का मार्ग रोकना उचित है

समान अपूठो अणिहलपुररी तरफ खड़ियो ॥
जठै *संगररो भार आपरै माथै+ओडि गुर्जरधरारो कपाट होय
आपरा बारहसै १२००÷बानैतां समेत काठी कृष्णदेव चंद्रहासाँरा
चोड़ा बाढ चखावणरैकाज पृथ्वीराजरा बीरां रै थोभ[2] लगाय लड़ियो
जिकणरो सीस महेसरो मनोरथ मोघ[3]करि अनेक धाराधरांरी
धारामांहीं लागि लीन थियो ॥
अर आपरा स्वामी चालुक्यराज भीमनूँ प्राणबचावणरैकाज
अभीष्ट आगारँ जावणरो अवकास दियो ॥ ४७ ॥
जिण झकटमैं जुज्झार होय एक अयुत तीनहजार१३०००से-
नारै साथ अजमेररा अनीकमैं सामंतांरो दसक१० खेतपड़ियो ॥
बिद्रांवणरै समय चालुक्यराज भीम १ सूँ चहुवाण कन्ह २
कहियो सातूँ७हीं भायाँरो बैर वाँ[11]ळणरो संकल्प होयतो इण संगर
सिवाय [12]वेळै किसड़ो अनेहँ[13] आवैछै ॥
अर प्रामारांरा बैरमाथै अब चाहुवाणाँरो चैक्र अर्बुदाचळरी स-
रणी[15]रै समुख पाधरोही धकावैछै ॥ ४८ ॥
भूखा केहरी१रो केहर[16]२खीजिया नागराज१रो मणि२मांडाणी
झाटकिलेणारो बळ होयतो म्हाँरा प्रस्थानरो राह रोकणारी स-
लाहछै ॥
अर आजरा समयमैं गुजरात रूपी काचाकळसरै सीस चाहुवा-
णाँरा समुद्ररो सीमालोपियो प्रवाह छै इसड़ा कन्हरा बचन गिरि-

(निर्जल, पराक्रम रहित) होकर * युद्ध का भार + झेलकर ÷ बानाब-
न्धों के साथ १ तरवारों के २ रोक लगाकर ३ महादेव का बिचार इसका
मस्तक मुंडमाला में रखने का था उस विचार को व्यर्थ करके अनेक ४ ख-
ड्गों की धारों में लगकर उन्हींमें लीन ५ होगया ६ वांछित (प्यारे) ७ घर
जाने का ॥ ४७ ॥ ८ युद्ध (झगड़े) में ९ सेना में १० भागने के समय ११ पी-
छा लेने का १२ फिर कैसा १३ समय आवेगा १४ सेना १५ मार्ग के ॥ ४८ ॥
१६ सटा (कंधे के बाल) १७ क्रोध कियेहुए सर्प का १८ जबरदस्ती उपाड़
लेने का १९ हमारे जाने का मार्ग रोकना उचित है

जंजीर घलाया ॥ ५१ ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४राशौ वीतिहोत्रचराडासिबंशबर्णानान्तर्गतडिङ्गुरवंशबिरोचनशाकम्भरेशपृथ्वीराज १७७ चरित्रे सचिवचतुष्क ४ ससहायचालुक्यराजभीमपारकर १ बम्मणावास २ ठट्ठा ३ ऽऽदिवलिग्रहणसूचनप्रामाररासलक्खकन्येच्छणीसौन्दर्यश्रवणतद्याचितुकामभीमसवर्णदूतटीलाख्यप्रधानप्रेषणप्राप्तार्बुदप्रधानस्वामिपत्रप्रामारार्थनिवेदनसलक्षतद्वाचनश्रुतैतदुदन्ताऽनङ्गीकृतस्वस्रुपयामकुमारजैततिरस्कृतटीलाख्यप्रधाननिष्कासनसुभटदत्तदुर्गभारपृथ्वीराजार्थकन्याबिबाहितुकामसकुटुम्बसलक्खनागोरपुरागमनतदजमेरद्रङ्गपत्रप्रेषणस्वीकृतबिबाहपृथ्वीराजस्वमन्त्रिकैमासार्थश्वशुरसलक्खार्थगज ५ह-य१०० देस १ दुर्ग १ शासनप्रस्थापनश्रुताऽदोदृत्तान्तससैन्यभीमाऽर्बुदुर्गवेष्टनछद्मोपायसहायचालुक्यज्ञातसमरासाध्यदुर्गान्तःप्रविशनक्षमकर्ण १ खंगार २ मथनसिंह ३ गोविन्दराज ४ त्रिलोचना ५ ऽऽदिसखीकदुर्गरक्षकधारातीर्थसरणकतिदिनोषितदु

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर डिङ्गुरवंश के विरोचन (सूर्य) सांभर के पति पृथ्वीराज के चरित्र में चारों सचिवों की सहायता से सोलंखी राजा भीम का पारकर बं भणवास-ठट्ठा आदि से कर लेने की सूचना, पंवार राजा सलख की कन्या इंच्छणी की सुन्दरता सुनकर उसकी याचना के लिये भीम का पत्र सहित टीला नामक प्रधान को भेजना, आबू जाकर टीला प्रधान का अपने स्वामी का पत्र प्रामार के भेट करना, उस पत्र को सलख का बांचना, और उस टीला का वृत्तान्त सुनकर बहिन का विवाह अस्वीकार करके जैत कुमार के अनादर किये हुए टीला नामक प्रधान का निकाला जाना, गढ का भार उमरावों को देकर पृथ्वीराज को कन्या विवाहने की कामना से कुटुंब सहित सलख पंवार का नागोर पुर आना, उसका अजमेर पत्र भेजना, विवाह को स्वीकार करके पृथ्वीराज का अपने मंत्री कैमास के साथ अपने श्वसुर सलख के अर्थ पांच हाथी सौ घोड़े देश और गढ पर आज्ञा स्थापन करना, वृत्तान्त सुनकर भीम को सेना सहित आबू गढ को घेरना, युद्ध से गढ का लेना असाध्य जानकर छलघात से सोलंखी भीम का गढ में प्रवेश करना,

जंजीर घलाया ॥ ५१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४राशौ वीतिहोत्रचरणड्डासिवंशवर्णनान्तर्गतडिड्डुरवंशविरोचनशाकम्भरेशपृथ्वीराज १७७ चरित्रे सचिवचतुष्क ४ ससहायचालुक्यराजभीमपारकर १ बम्मणावास २ ठट्ठा ३ ऽऽदिवलिग्रहणासूचनप्रामारराट्सलक्खकन्येच्छणीसौन्दर्यश्रवणतद्याचितुकामभीमसवर्णदूतटीलाख्यप्रधानप्रेषणप्राप्तार्बुदप्रधानस्वामिपत्रप्रामारार्थनिवेदनसलक्षतद्वाचनश्रुतैतदुदन्ताऽनङ्गीकृतस्वस्रुपयामकुमारजैततिरस्कृतटीलाख्यप्रधाननिष्कासनसुभटदत्तदुर्गभारपृथ्वीराजार्थकन्याबिबाहितुकामसकुटुम्बसलक्खनागोरपुरागमनतदजमेरद्रङ्गपत्रप्रेषणस्वीकृतबिबाहपृथ्वीराजस्वमन्त्रिकैमाससार्थश्वशुरसलक्खार्थगज ५हय१०० देस १ दुर्ग १ शासनप्रस्थापनश्रुताऽदोवृत्तान्तससैन्यभीमाऽर्बुदुर्गवेष्टनछद्मोपायसहायचालुक्यज्ञातसमरासाध्यदुर्गान्तःप्रविशनक्षमकर्णा १ खंगार २ मथनसिंह ३ गोविन्दराज ४ त्रिलोचना ५ ऽऽदिसश्लोकदुर्गरक्षकधारातीर्थस्मरणकतिदिनोषितदु

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर डिड्डुरवंश के विरोचन (सूर्य) सांभर के पति पृथ्वीराज के चरित्र में चारों सचिवों की सहायता से सोलंखी राजा भीम का पारकर बंभणवास-ठट्ठा आदि से कर लेने की सूचना, पंवार राजा सलख की कन्या इंचणी की सुन्दरता सुनकर उसकी याचना के लिये भीम का पत्र सहित टीला नामक प्रधान को भेजना, आबू जाकर टीला प्रधान का अपने स्वामी का पत्र प्रामार के भेट करना, उस पत्र को सलख का बांचना, और उस टीला का वृत्तान्त सुनकर बहिन का विवाह अस्वीकार करके जैत कुमार के अनादर किये हुए टीला नामक प्रधान का निकाला जाना, गढ का भार उमरावों को देकर पृथ्वीराज को कन्या विवाहने की कामना से कुटुंब सहित सलख पंवार का नागोर पुर आना, उसका अजमेर पत्र भेजना, विवाह को स्वीकार करके पृथ्वीराज का अपने मंत्री कैमास के साथ अपने श्वसुर सलख के अर्थ पांच हाथी सौ घोड़े देश और गढ पर आज्ञा स्थापन करना, वृत्तान्त सुनकर भीम को सेना सहित आबू गढ को घेरना, युद्ध से गढ का लेना असाध्य जानकर छलघात से सोलंखी भीम का गढ में प्रवेश करना,

बिसर्जनज्ञातश्रावककपटदत्तनिशीथप्रपातवशीकृताऽरिबिभवबि द्रावितत्वैरिवृन्दनागपुरदुर्गन्यस्तविश्वस्तरक्तकचामुण्डराज १ देवराज २ याज ३ रामदेव ४ गोविन्दराज ५ लङ्गरिराज ६ अक्षयराजो ७ पेतनिर्गतदाधिमराज १ पूर्वप्रस्थितसामन्तसम्मिलनबिदितैतदुदन्ताऽजमेरस्थकुमारपृथ्वीराजपुनःपितृव्यादिसामन्तसङ्घप्रस्थापनतत्पूर्वप्रस्थितसम्मिलनदृढैक्यमतसर्वसामन्तबुद्ध्यतीपुरपरिस्थचालुक्यचमूपरिरातिवाधप्रपातनचक्रयामिकझल्लसिंहदेवपलायनप्रबुद्धभीमयुद्धप्रारम्भणचामुण्डराज १ कण्ठीरवकृष्ण २ निपातनजैतकुमार १ भीमसोदर १ पुत्र २ लय ३ निषूदननिर्दरराज १ प्रारम्भदेव २ निर्दलनयाज १ चालुक्यमारीचशुण्डादण्ड १ बिकर्त्तनसमात्तखड्गपत्तीभूतभीमयथातथयोधनपुण्डीरचन्द्र १ गदाऽऽघातचालुक्यचन्द्रहास १ त्रोटनकैमास १ चालुक्य १ कक्षान्तरनियमनसलक्ष १ तत्कर्ण १ कटुबर्णश्रावण-

भेजना, उस श्रावक का कपट जान कैमास का आधीरात को रतिवाह देना, और भागेहुए शत्रुओं का विभव अपने आधीन करना, और उनके शत्रु समूह को नागोर के गढ में स्थापित करना, और विश्वास लिये हुए रक्षक चामुंडराज, देवराज, याज, रामदेव, गोविन्दराज, लंगरीराज, अक्षयराज सहित निकलेहुए दाधिमराज का पूर्व से प्रस्थान करके सामन्तों से मिलना, इस वृत्तान्त के जानने से अजमेर में स्थित कुमार पृथ्वीराज का काका आदि सामन्तों के समूह का प्रस्थापन करना, उनसे पहिले प्रस्थान कियेहुए सामंतों से मिलना, और सब सामंत एक दृढमत होकर बुध्यति ( ) पुर पड़ी हुई चालुक्य की सेना पर रतिवाह पटकना, छबीना लगानेवाले सिंहदेव झाला का भागना, जग कर सोलंखी भीम का युद्ध प्रारंभ करना, चामुंडराज का कंठीरवकृष्ण को मारना, जैतकुमार का भीम के छोटे भाई को दो पुत्रों सहित मारना, निर्दरराज का प्रारंभदेव को दलना, याज का सोलंखी भीम के सवारी के हाथी के सुंडादंड को काटना, शोभा युक्त खड्ग को ग्रहण करके भीम का यथातथ (जैसा चाहिये वैसा) युद्ध करना, पुंडीरचंद्र का गदा की चोट से चालुक्य भीम का खड्ग तोड़ना, कैमास का चालुक्य को कांख के भीतर रखलेना, भीम के कानों में सलख का कटु बचन सुनाना, मूर्छित पड़े हुए सोलंखी हम्मीर का उठकर दाहिमा कैमास की कांख से कैद हुए

बिसर्जनज्ञातश्रावककपटदत्तनिशीथप्रपातवशीकृताऽरिबिभवबि द्रावितवैरिवृन्दनागपुरदुर्गन्यस्तविश्वस्तरक्षकचामुण्डराज १ देवराज २ याज ३ रामदेव ४ गोविन्दराज ५ लङ्गरिराज ६ अक्षयराजो ७ पेतनिर्गतदाधिमराज १ पूर्वप्रस्थितसामन्तसम्मिलनविदितैतदुदन्ताऽजमेरस्थकुमारपृथ्वीराजपुनःपितृव्यादिसामन्तसङ्घप्रस्थापनतत्पूर्वप्रस्थितसम्मिलनदृढैक्यमतसर्वसामन्तबुद्ध्यतीपुरपरिस्थचालुक्यचमूपरिरात्रिबाधप्रपातनचक्रयामिकझल्लसिंहदेवपलायनप्रबुद्धभीमयुद्धप्रारम्भणचामुण्डराज १ कण्ठीरवकृष्ण २ निपातनजैतकुमार १ भीमसोदर १ पुत्र २ लय ३ निषूदननिर्दरराज १ प्रारम्भदेव२ निर्दलनयाज १ चालुक्यमारीचशुण्डादण्ड १बिकर्त्तनसमात्तखड्गपत्तीभूतभीमयथातथयोधनपुण्डीरचन्द्र १ गदाऽऽघातचालुक्यचन्द्रहास १ त्रोटनकैमास १ चालुक्य १ कक्षान्तरनियमनसलक्ष १ तत्कर्ण १ कटुबर्णश्रावण-

भेजना,उस श्रावक का कपट जान कैमास का आधीरात को रातिबा ह देना,और भागेहुए शत्रुओं का विभव अपने आधीन करना, और उनके शत्रु समूह को नागोर के गढ में स्थापित करना, और विश्वास लिये हुए रक्षक चामुंडराज,देवराज, याज, रामदेव, गोविन्दराज, लंगरीराज, अक्षयराज सहित निकलेहुए दाधिमराज का पूर्व से प्रस्थान करके सामन्तों से मिलना, इस वृत्तान्त के जानने से अजमेर में स्थित कुमार पृथ्वीराज का काका आदि सामन्तों के समूह का प्रस्थापन करना, उनसे पहिले प्रस्थान कियेहुए सामंतों से मिलना, और सब सामंत एक दृढमत होकर बुध्यति ( ) पुर पड़ी हुई चालुक्य की सेना पर रातिवाह पटकना, छबीना लगानेवाले सिंहदेव झाला का भागना, जग कर सोलंखी भीम का युद्ध प्रारंभ करना, चामुंडराज का कंठीरवकृष्ण को मारना, जैतकुमार का भीम के छोटे भाई को दो पुत्रों सहित मारना, निर्दरराज का प्रारंभदेव को दलना, याज का सोलंखी भीम के सवारी के हाथी के सुंडादंड को काटना, शोभा युक्त खड्ग को ग्रहण करके भीम का यथातथ (जैसा चाहिये वैसा) युद्ध करना, पुंडीरचंद्र का गदा की चोट से चालुक्य भीम का खड्ग तोड़ना,कैमास का चालुक्य को कांख के भीतर रखलेना, भीम के कानों में सलख का कटु बचन सुनाना, मूर्छित पड़े हुए सोलंखी हम्मीर का उठकर दाहिमा कैमास की कांख से कैद हुए

नं षोडशो १६ मयूखः* ॥१६॥ आदितः पञ्चविंशोत्तरशततमः ॥१२५॥

प्रायोमरुदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा

सचरणागद्यम्

इणरीति कुमार पृथ्वीराज रा सामंत चालुक्कराजभीमसूँ विज-य पाय आपरा आतंकसूँ गौरीजवनेसनूँ भजाय[1] प्रामाररै साथ अ-र्बुदाचळ जाय तत्काळही[2] अनेक अधिरोहिणी[3] लगाय दुर्गरै अंतर[4] पूगा जिका रावा भीमरा सूरवीर साम्हा हुवा तिके समस्तही चो-ड़ै खेत बाँढिया[5] ॥

अर प्रामारनूँ अर्बुदरो अधीस करि विजयरा दुंदुभी[6] बजाय अ-णिहलपुररा अनीकरा[7] कातर[8] दीठा तिके निरायुध दुर्गरै बाहिर काढिया

जठै प्रामारराज नागोरसूँ आपरो अंतहपुर[9] बुलाय अंगजारा[10] उँपयमरो[11] आरंभकरि विवाहणारै काज अजमेरअधीसरा कुमार पृथ्वीराजनूँ निमंत्रणा[12] दीधो ॥

जिको सुणताँहीं बीराँरा बरूथरै[13] साथ बडी बरात बणाय सेसै[14]

सहित बाकी रहे जो कन्ह आदि उन सब पृथ्वीराज के सामंतों का आबू गढ विजय करने के गमन का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१६॥ और आ-दि से एक सौ पचीस मयूख हुए ॥ १२५ ॥

१ भय २ तुरंत ३ निसरणी ४ भीतर ५ काटे ६ दुंदुभि ७ सेना के ८ कायर ९ जनाना १० पुत्री का ११ विवाह १२ नुंता १३ झुंड १४ बाकी के

*ऊपर के मयूख की थोड़ी सी टीका लिखने पाया था कि मुझ टीकाकार[बारहठ कृष्णसिंह]को संवत् १९५५ पौषशुक्ल दशमी की रात्रि को पक्षाघात[फालिज जिसको लकवा भी कहते हैं]की बीमारी होजा ने से टीका का कार्य बंद होगया था सो परमेश्वर की कृपा से आराम होने पर अब उगनीस सौ छप्पन १९५६ माघ सुदी १ एकम से टीका बनाने का कार्य फिर प्रारंभ किया है यदि इस समय भी प्रमेह का प्रबल रोग मेरे शरीर में विद्यमान है जिसका इलाज होरहा है परंतु भर्तृहरि महाराज ने कहा है कि

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः॥
विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥१॥

भावार्थ—विघ्न के भय से नीच जन कार्य का आरंभ ही नहीं करते और मध्यम जन आरंभ कर वि-घ्न को देख कार्य को छोड बैठते हैं और उत्तम जन वारंवार विघ्न होने से भी उसको मिटाकर कार्य आरंभ करके नहीं परित्याग करते अर्थात् उसको पूरा ही करके छोडते हैं.इसके अनुसार शरीर विद्यमान रहा तो हम भी इस कार्य को पूर्ण करके ही छोडेंगे.

नं षोडशो १६ मयूखः* ॥१६॥आदितः पञ्चविंशोत्तरशततमः॥१२५॥

प्रायोमरुदेशीयाप्राकृतीमिश्रितभाषा

सचरणागद्यम्

इणरीति कुमार पृथ्वीराज रा सामंत चालुक्कराजभीमसूँ विज-य पाय आपरा आतंकसूँ गोरीजवनेसनूँ [१]भजाय पामाररै साथ अ-र्बुदाचळ जाय तत्कालही अनेक अधिरोहिणी लगाय दुर्गरै अंतर पूगा जिका रावा भीमरा सूरवीर साम्हा हुवा तिके समस्तही चो-ड़ै खेत बाढिया ॥

अर पामारनूँ अर्बुदरो अधीस करि विजयरा दुंदुभी बजाय अ-णिहलपुररा अनीकरा कातरदीठा तिके निरायुध दुर्गरै बाहिर काढिया जठै पामारराज नागोरसूँ आपरो अंतहपुर बुलाय अंगजारा उपयमरो आरंभकरि विवाहरा काज अजमेरअधीसरा कुमार पृथ्वीराजनूँ निमंत्रण दीधो ॥

जिको सुणताँहीं वीराँरा वरूथरै साथ वडी बरात बणाय सेसँ

सहित बाकी रहे जो कन्ह आदि उन सब पृथ्वीराज के सामंतों का आबू गढ विजय करने के गमन का सौलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१६॥ और आदि से एक सौ पचीस मयूख हुए ॥ १२५ ॥

१ भय २ तुरंत ३ निसरणी ४ भीतर ५ काटे ६ दुंदुभि ७ सेना के ८ कायर ९ जनाना १० पुत्री का ११ विवाह १२ नूंता १३ झुंड १४ बाकी के

*ऊपर के मयूख की थोड़ी सी टीका लिखने पाया था कि मुझ टीकाकार[बारहठ कृष्णसिंह]को संवत् १९५५ पोषशुक्ल दशमी की रात्रि को पक्षाघात[फालिज जिसको लकवा भी कहते हैं]की बीमारी होजाने से टीका का कार्य बंद होगया था सो परमेश्वर की कृपा से आराम होने पर अब उगनीस सौ छप्पन १९५६ माघ सुदी १ एकम से टीका बनाने का कार्य फिर प्रारंभ किया है यदि इस समय भी प्रमेह का प्रबल रोग मेरे शरीर में विद्यमान है जिसका इलाज होरहा है परंतु भर्तृहरि महाराज ने कहा है कि

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः॥
विघ्नैः पुनःपुनरपि प्रतिहन्यमानाः प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति ॥१॥

भावार्थ—विघ्न के भय से नीच जन कार्य का आरंभ ही नहीं करते और मध्यम जन आरंभ कर विघ्न को देख कार्य को छोड़ बैठते हैं और उत्तम जन वारंवार विघ्न होने से भी उसको मिटाकर कार्य आरंभ करके नहीं परित्याग करते अर्थात् उसको पूरा ही करके छोडते हैं.इसके अनुसार शरीर विद्यमान रहा तो हम भी इस कार्य को पूर्ण करके ही छोडेंगे.

सळख नूँ आपरै कनैं राखणरै काज अजमेर बुलावियो ॥ ३ ॥

किताक सामन्तता पृथ्वीराज जन्मरै पूर्वही चंडासिराज सोमेस्वररो आश्रयलेर अजमेर आयरहिया ॥

अर किताक सामंत तथा बंदी[2] चंद एभी अब कुमारपृथ्वीराजरो विसेस सुजस सुणि अजमेर आया रै[3] आप आपरा पराक्रमरै अनुसार सारौंहीं सम्भरराजरा पटागहिया ॥

तीस३०सामंत तथा रामदेव१द्विजराज[4] यौं इकतीस३१जणाँ अजमेरही जन्मलीधो ॥

इणरीति सोमेस्वररी पाटराणी कमळा वीसलदेवरा वररै अनुसार आपरा अंतहकरणरो आशय सफळ कीधो॥४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

कुमरजन्म पुब्बहि[5] कतिक, पीछैं कतिक प्रबीर॥
आयमिले अजमेर इम, धर जित्तन रनधीर॥ ५ ॥
सुनि कुमार विक्रम समर[6], विजयलेन बहुवेर ॥
तँहँ चन्दहु लाहोर तजि, आनि मिलिय अजमेर ॥ ६ ॥
अतुल[7] तीस३०सामंत अरु, द्विज[8] गुरु राम१उदार ॥
इकतीस३१न अजमेर इन्ह, पायउ जनँन[9] प्रकार ॥ ७ ॥
सिंहवलोकन[10] न्याय सम[11], बडे प्रबंधन[12] बत्त ॥
न पुनरुक्त मन्नहु नृपति, आनि श्रवन अनुरत्त[13] ॥ ८ ॥
तदनंतर[14] दूतन तहाँ, अक्खिय नृपहिं उदंत ॥
मुगल[15] होत मेवात[16]के, हुकम बहिर्गत[17] हंत ॥ ९॥

१चाहुवाण२चंदभाट३अरु४ब्राह्मणों का राजा॥४॥५पहिले ही॥५॥६युद्ध में॥६॥७अमाप८ब्राह्मण९जन्म॥७॥१०सिंहावलोकन न्याय(सिंह अपने भक्ष्य को पीछा फिरकर देखता है इसीप्रकार कहीहुई कथा को फिर कहना सिंहावलोकन न्याय है) के११समान १२बडे ग्रन्थों में अर्थ आती है जिसको हे राजा रामसिंह पुनरुक्त नहीं मानना चाहिये और १३सुनने में प्रीति आनो ॥ ८ ॥ १४उसके पीछे१५समाचार१७मेवात देश विशेष वहांके १६यवनों की जाति

सळख नूँ आपरै कनैं राखणरै काज अजमेर बुलावियो ॥ ३ ॥

कितोक सामन्ततो पृथ्वीराज जन्मरै पूर्वही चंडासिराज सोमे- स्वररो आश्रयलेर अजमेर आयरहिया ॥

अर कितोक सामंत तथा बंदी[2] चंद एभी अब कुमारपृथ्वीराज रो विसेस सुजस सुणि अजमेर आया रै[3] आप आपरा पराक्रमरै अनुसार सारांहीं सम्भरराजरा पटागहिया ॥

तीस३०सामंत तथा रामदेव१द्विजराज[4] यों इकतीस३१जणां अ- जमेरही जन्मलीधो ॥

इणरीति सोमेस्वररी पाटराणी कमळा वीसलदेवरा वररै अनुसार आपरा अंतहकरणरो आशय सफळ कीधो॥४॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

कुमरजन्म पुब्बहि[5] कतिक, पीछैं कतिक प्रवीर॥
आयमिले अजमेर इम, धर जित्तन रनधीर ॥ ५ ॥
सुनि कुमार विक्रम समर[6], विजयलेन बहुवेर ॥
तँहँ चन्दहु लाहोर तजि, आनि मिलिय अजमेर ॥ ६ ॥
अतुलँ[7] तीस३०सामंत अरु, द्विज[8] गुरु राम१उदार ॥
इकतीस३१न अजमेर इन्ह[9], पायउ जनेन प्रकार ॥ ७ ॥
सिंहवँलोकन[10] न्याय सम[11], वडे प्रवंधन[12] वत्त ॥
न पुनरुक्त मन्नहु नृपति, आनि श्रवन अनुरत्त[13] ॥ ८ ॥
तदनंतर[14] दूतन तहाँ, अक्खिय नृपहिं उदंत ॥
मुगल[15] होत मेवात[16]के, हुकम बहिर्गत[17] हंत ॥ ९॥

१चाहुवाण२चंदभाट३अरु४ब्राह्मणों का राजा॥४॥५पहिले ही॥५॥६युद्ध में॥६॥७ अमाप८ब्राह्मण९जन्म॥७॥१०सिंहावलोकन न्याय(सिंह अपने भक्ष्य को पीछा फिरकर देखता है इसीप्रकार कहीहुई कथा को फिर कहना सिंहावलोकन न्याय है) के११समान १२वडे ग्रन्थों में अर्थ आती है जिसको हे राजा रा- मसिंह पुनरुक्त नहीं मानना चाहिये और १३सुनने में प्रीति आनो ॥ ८ ॥ १४उसके पीछे१५समाचार१७मेवात देश विशेष वहांके १६यवनों की जाति

मन्नी न एहु सुतकी महीस, सोमेस चढिग१ मेवात सीस ॥ १७ ॥
कैमास१ संग हुव चढनकाल, चामुंडराज२ पुनि रनअचाल ॥
प्रद्युम्न३ संग कूरम प्रबीर, पुंडीरचंद्र४ भुव हरनपीर ॥ १८ ॥
सकनक५बडगुज्जर राम६सज्जि, गोविंदराज७गहिलोत गज्जि
सामंत निद्धि तजि कुमरसिंह, नृपसंगचले ए ७कसि निखंग२ ।१९।
बाहिर तजि गोपुर३ कढत बेर, क्रमबिहित सकुन हुव विजयकेर ॥
मेवात सोम लहि दिय मिलान४, इत कुमर स्वभट बुल्लिय अमान५२०
तँहँ कहिय नृपहिं नहिं सुतप्रतीति, रन हित गये सु मम अनय रीति
यातैं नृप पुब्बहिं जय उमाहि, चल्लहु चढ अप्पन लरन चाहि ।२१।
इम कहि निसीथ६ रजनी अनेहँ, आयउ कुमार यह पुब्ब एह॥
स्वकं सुभट भये जे भूपसत्थ, सब तेहु छन्न बुल्लियं समत्थ ।२२।
दरकुंच मंडि मेवातदेस, पहुँच्यो कुमार सजि बल्ल११ बिसेस ॥
मुगलहु इत आवत सुनि कुमार, हुव सम्मुह रचि बल्ल१२ लरनहार२३
धर अज्ज१३ सिकंदर अग्ग धाय, पुनि अज्ज कछुक किय मिच्छप्रांय१४
दै तिन्ह रसूल१५ सिक्षा सु दुष्ट, कारि कुंच गयो सुनि रूस क्रुष्ट१६ २४
मेवातदेस ते रहत मत्त, घनरूप चढे रन करन घत्त१७ ॥
जवनन अनीक१८हो मुख्य जोहि, सुभटन प्रचारि हुव सम्मुख सोहि२५
जग रूढ नाम महिमंद जासु१९, अरु कहत मिच्छ महमूद आसु ॥
तिहिं सिलह बंटि कारि दलतयार, किय हल्ल कुमरसिरक्क तलकार२६
तीरन कमान चिल्ला२१ तनंकि, खैंच२२ लोह बाढ बजिजग खनंकि ॥

निवाह ने में समर्थ हूं १ चढ़ा ॥ १७ ॥ २ भाथा ॥ ८ ॥ १९ ॥ ३ शहर का द-
रवाजा ४ मुकाम ५ अतोल (मापरहित) ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ६ आधी रात
के ७ समय ८ पहिले ९ अपने १० बुलाये ॥ २२ ॥ ११ सेना १२ सेना ॥ २३ ॥
आगे सिकन्दर ने धावा करके १३ आर्यों की भूमि से १५ रसूल (मुसलमानों के
पैगंबर) की शिक्षा देकर १४ म्लेच्छों के समान अपने देश पर रूस देशवा-
लों को १६ क्रोधित सुनकर गया ॥ २४ ॥ १७ घात १८ सेना में ॥ २५ ॥ १९ जि-
सका नाम जगत् में रूढ़ि से "महीमन्द" २० है. म्लेच्छलोग उसको "महमूद"
कहते हैं ॥ २६ ॥ धनुष की प्रत्यंचा को २१ खींच कर २२ तीखे लोह के तीखे

मन्नी न एहु सुतकी महीस, सोमेस चढिग मेवात सीस ॥ १७ ॥
कैमास१ संग हुव चढनकाल, चामुंडराज२ पुनि रनअचाल ॥
प्रद्युम्न३ संग कूरम प्रबीर, पुंडीरचंद्र४ भुव हरनपीर ॥ १८ ॥
सकनक५बडगुज्जर राम६सज्जि, गोबिंदराज७गहिलोत गज्जि
सामंत निठि तजि कुमरसिंह, नृपसंगचले ए ७कासि निखंग ।१९।
बाहिर तजि गोपुर कढत बेर, क्रमबिहित सकुन हुव विजयकेर ॥
मेवात सोम लहि दिय मिलान, इत कुमर स्वभट बुल्लिय अमान२०
तँहँ कहिय नृपहिं नहिं सुतप्रतीति, रनं हित गये सु मम अनय रीति
यातैं नृप पुब्बहि जय उमाहि, चल्लहु चढ अप्पन लरन चाहि ।२१।
इम कहि निसीथं रजनी अनेहँ, आयउ कुमार यह पुब्ब एह॥
स्वकं सुभट भये जे भूपसत्थ, सब तेहु छन्न बुल्लियं समत्थ ।२२।
दरकुंच मंडि मेवातदेस, पहुँच्यो कुमार सजि बल बिसेस ॥
मुगलहु इत आवत सुनि कुमार, हुव सम्मुह रचि बल लरनहार२३
धर अज्ज सिकंदर अग्ग धाय, पुनि अज्ज कछुक किय मिच्छप्राय
दै तिन्ह रसूल सिक्षा सु दुष्ट, करि कुंच गयो सुनि रूस क्रुष्ट २४
मेवातदेस ते रहत मत्त, धनरूप चढे रन करन घत्त ॥
जवनन अनीकि हो मुख्य जोहि, सुभटन प्रचारि हुव सम्मुख सोहि२५
जग रूढ नाम महिमंद जासं, अरु कहत मिच्छ महमूद आसं ॥
तिहिं सिलह बंटि करि दलतयार, कियहल्लकुमरसिरक्कतलकार२६
तीरन कमान चिल्ला तनंकि, खैर लोह बाढ वज्जिग खनंकि ॥

निवाह ने में समर्थ हूं १ चढा ॥ १७ ॥ २ भाथा ॥ ८ ॥ १९ ॥३ शहर का द-
रवाजा ४ मुकाम ५ अतोल (मापरहित) ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ६ आधी रात
के ७ समय ८ पहिले ९ अपने १० बुलाये ॥ २२ ॥ ११ सेना १२ सेना ॥ २३ ॥
आगे सिकन्दर ने धावा करके १३आर्यों की भूमि में १५रसूल(मुसलमानों के
पेगंबर) की शिक्षा देकर १४म्लेच्छों के समान अपने देश पर रूस देशवा-
लों को १६ क्रोधित सुनकर गया ॥ २४ ॥ १७घात १८सेना में ॥ २५ ॥ १९ जि-
सका नाम जगत् में रूढि से "महीमन्द" २०है. म्लेछलोग उसको "महमूद"
कहते हैं ॥ २६ ॥ धनुष की प्रत्यंचा को २१ खींच कर २२ तीखे लोह के तीखे

न्द्र २ सामन्तभीमग्रस्तार्बुददुर्गोद्धरण १ तदर्धांशपामारसलक्षकु
मारपृथ्वीराजजामातृकरण २ सजन्य १ यौतक २ सदुर्लभ :
दुर्लभस्वनगरागमन ३ सपुत्रसलक्षाऽऽह्वान ४ सबन्दिचन्द्र १
समस्तसामन्त १०६ सम्मिलन ५ पितृप्रतिरुद्धपृथ्वीराज १७७
मेवातनिर्दलन ६ चहुवाणकृष्ण १ राष्ट्रकूटोत्तमाङ्गद २ विशसन
७ दाधिमकैमास १ पठानबाजीद ३ विध्वंसन ८ बडगूर्ज्जरराम
१ कूर्मनारायण २ निपातन ९ कृतजयकुमारमुगलमहिमन्दनि
ग्रहण १० चण्डासिराजप्रत्यागततनयतर्जन ११ ससूनुसोमेश १७६
स्वपुरागमनं २२ सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥

आदितः पञ्चविंशोत्तरशततमः ॥ १२६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पादाकुलकम्

पछिलैं तजि सारूंडा परिसर, भजिग साह चहुवान भीतिभर॥
बँट्टमाँहिं अजमेर नगर बहु, पाये तिन्हहु गयो लुट्टन पहुँ ॥१॥
लुट्टि कुसाब१मेहरा२ लुट्टिय, छतधनपुर अंध्वस्त न छुट्टिय ॥
इतर पुरहु लुट्टे जे आये, बँसु उपदा गहि कतिक बचाये।२।

भीम का आबूगढ का उद्धार करना, और आबूगढ के अर्धांश पवाँर सलख का कुमार पृथ्वीराज को जवांई करना, जानवालों सहित दुर्लभ दुर्लभदायजा लेकर पृथ्वीराज का अपने नगर में आना, पुत्र सहित सलख को बुलाना, चंद भाट सहित सब एक सौ छः १०६ सामंतों का शामिल होना, पिता को रोककर पृथ्वीराज का मेवात को दलना, चहुवाण कन्ह का राठोड़ उत्तमांगद को मारना, दायमा कैमास का पठान वाजीद को मारना, बडगुजर राम का कछवाहा नारायन का नाश करना, विजय करके कुमार पृथ्वीराज का मुगल महिमिंद को पकड़ना, चहुवान राजा सोमेश्वर का पीछा आये हुए पुत्र को धमकाना, पुत्र सहित सोमेश्वर का अपने नगर में आने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ॥१७॥और आदि से एक सौ छब्बीस मयूख हुए ॥ १२६ ॥

१ जब सारूड़ा गांव के २पास की भूमि में ३ चहुवान के भय से भरकर बादशाह भागा तब ४ मार्ग में ५ प्रभु ॥ १ ॥ ६ जो मार्ग में आये सो नहीं छूटे ७ धन ८ भेट लेकर ॥ २

न्द्र २ सामन्तभीमग्रस्तार्बुददुर्गोद्धरण १ तदधीशप्रामारसलखकुमारपृथ्वीराजजामातृकरण २ सजन्य १ यौतक २ सदुर्लभ ३ दुर्लभस्वनगरागमन ३ सपुत्रसलखाऽऽह्वान ४ सबन्दिचन्द्र १ समस्तसामन्त १०६ सम्मिलन ५ पितृप्रतिरुद्धपृथ्वीराज १७७ मेवातनिर्दलन ६ चहुवाणकृष्ण १ राष्ट्रकूटोत्तमाङ्गद२ विशसन ७ दाधिमकैमास १ पठानबाजीद ३ विध्वंसन ८ बडगूर्ज्जरराम १ कूर्मनारायण २ निपातन ९ कृतजयकुमारमुगलमहिमन्दनिग्रहण १० चण्डासिराजप्रत्यागततनयतर्जन ११ ससूनुसोमेश १७८ स्वपुरागमनं २२ सप्तदशो १७ मयूखः ॥ १७ ॥

आदितः पञ्चविंशोत्तरशततमः ॥ १२६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

पादाकुलकम्

पहिलैं तजि सारूंडा परिसर, भजिग साह चहुवान भीतिभर॥
बैंह्माँहिं अजमेर नगर बहु, पाये तिन्हहु गयो लुट्टन पहु ॥१॥
लुट्टि कुसाब१भेहरा२ लुट्टिय, छतधनपुर अध्वस्त न छुट्टिय ॥
इतर पुरहु लुट्टे जे आये, बसु उपदा गहि कतिक बचाये।२।

भीम का आबूगढ का उद्धार करना, और आबूगढ के अधीश पवांर सलख का कुमार पृथ्वीराज को जवांई करना, जानवालों सहित दुर्लभ दुर्लभदायजा लेकर पृथ्वीराज का अपने नगर में आना, पुत्र सहित सलख को बुलाना, चंद भाट सहित सब एक सौ छः १०६ सामंतों का शामिल होना, पिता को रोककर पृथ्वीराज का मेवात को दलना, चहुवाण कन्ह का राठोड़ उत्तमांगद को मारना, दायमा कैमास का पठान बाजीद को मारना, बडगुज्जर राम का कछवाहा नारायन का नाश करना, विजय करके कुमार पृथ्वीराज का मुगल महमिंद को पकड़ना, चहुवान राजा सोमेश्वर का पीछा आये हुए पुत्र को धमकाना, पुत्र सहित सोमेश्वर का अपने नगर में आने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ॥१७॥और आदि से एक सौ छब्बीस मयूख हुए ॥ १२६ ॥

१ जब सारूंडा गांव केरपाल की भूमि में ३ चहुवान के भय से भरकर बादशाह भागा तब ४ मार्ग में ५ प्रभु ॥ १ ॥ ६ जो मार्ग में आये सो नहीं छूटे ७ धन ८ भेट लेकर ॥ २

कहिय जो न सासन यह करिहो, रुद्ध विकल कारा[2] सरि मरिहो[1] ११
नतो चलहु प्रभु पयन परहु नत, उपदा करि कछु भेट अनुद्धत[3]॥
जँहँ सतपंच५००मत्त गज गज्जहिं,
सँप्रि कुलीन लक्खदुव २००००० सज्जहिं ॥ १२ ॥
प्रबल साह ऐसो गजनीपति, तासों मुरि खोवहु जिन संतति ॥
सुनत एहि ओदक[5] आरब सठ, हुव गोरीस[6] अनुग[7] तजि रनहठ१३
इक्क समय जंगलधर[8] अंतर, आरब आय लूट मंडिय अर[9] ॥
गनिका इक१सामुद्रिक[10] गाई, पुंगल नगर लूटबिच आई ॥१४॥
अधिक रूप१जुब्बन२गुन३अनुपम, स्वर अवरोहँ[11] कंठ कलरवँ[12] सम
ताहि लखत आरब कामातुर, पकरि बिसासि लैगयो निजपुर१५

दोहा

नाम चित्ररेखा निपुन, गनिका आरबगेह ॥
व्है स्वामिनि तबतैं रहत, इतर[13] तियन मनि एह ॥ १६ ॥
सो गनिका उपदा[14] समुझि, आरब नम्रित आय ॥
कौंतर[15] निसुरतके कहँ, पर्यो जवनपति पाय ॥ १७ ॥
किन्नी विविध सलाम करि, इतरहु भेट अनेक ॥
किंकर मैं निजवस कहिय, टारि लरन मन टेक ॥ १८ ॥
इत सु मिल्यो सुनि आरबहिं, महन विंट वंसीयँ[16] ॥
सिंधु उतरि टरिगो सकुचि, भिज्जि अरि कटक गरीयँ[17]॥१९॥

धेगें अर्थात् शीघ्र विजय नहीं होने देवेंगे ॥ १० ॥ २ कैदखाने में १ कैद होकर मरेंगे ॥ ११ ॥ ३ सीधे होकर कुछ सामग्री भेट करो, जिस सहाबुद्दीन गोरी बादशाह के पांच सौ५००मस्त हाथी गर्जन करते हैं और अच्छे खेत के दो लाख ४ घोड़े तय्यार होते हैं ॥ १२ ॥ ५ भय ६ गोर नामक शहर के पति ७ सेवक ॥ १३ ॥ ८ बीकानेर राज्य को जंगलधर कहते हैं ९ शीघ्र १० सामुद्रिक शास्त्र को जाननेवाली ॥ १४ ॥ ११ नीचे स्वरों में १२ कोयल के समान कंठवाली ॥ १५ ॥ १३ और स्त्रियों में मणिरूप ॥ १६ ॥ १४ भेट करना १५ कायर ॥ १७ ॥ महनसिंह १६ वंशी नामक नगर को घेर कर सिन्धु नदी उतर कर शत्रु सेना को भारी १७ समझ कर टलगया ॥ १९ ॥

कहिय जो न सासन यह करिहो,रुंद्ध बिकल कारा सरि मरिहो११
नतो चलहु प्रभु पयन परहु नत, उपदा करि कछु भेट अनुद्धत॥
जँहँ सतपंच५००मत्त गज गज्जहिं,
सप्ति कुलीन लक्खदुव २००००० सज्जहिं ॥ १२ ॥
प्रबल साह ऐसो गजनीपति, तासौं मुरि खोवहु जिन संतति ॥
सुनत एहि ओदर्क आरब सठ, हुव गोरीस अनुगँ तजि रनहठ१३
इक्क समय जंगलधर अंतर, आरब आय लूट मंडिय भर ॥
गनिका इक१सामुद्रिक गाई, पुंगल नगर लूटबिच आई ॥१४॥
अधिक रूप१जुब्बन२गुन३अनुपम, स्वर अवरोहँ कगठ कलरवँ सम
ताहि लखत आरब कामातुर, पकरि बिसासि लैगयो निजपुर१५

दोहा

नाम चित्ररेखा निपुन, गनिका आरबगेह ॥
ठहै स्वामिनि तबतैं रहत, इतर तियन मनि एह ॥ १६ ॥
सो गनिका उपदा समुझि, आरब नम्रित आय ॥
कौतर निसुरतके कहैं, पर्यो जवनपति पाय ॥ १७ ॥
किन्नी विविध सलाम करि, इतरहु भेट अनेक ॥
किंकर मैं निजवस कहिय, टारि लरन मन टेक ॥ १८ ॥
इत सु मिल्यो सुनि आरवहिं, महन विंट बंसीयँ ॥
सिंधु उतरि टरिगो सकुचि, भिजि अरि कटक गरीयँ॥१९॥

वेंगे अर्थात् शीघ्र विजय नहीं होने देवेंगे ॥ १० ॥२ कैदखाने में १ कैद होकर मरेंगे ॥ ११ ॥३ सीधे होकर कुछ सामग्री भेट करो, जिस सहाबुद्दीन गोरी बादशाह के पांच सौ५००मस्त हाथी गर्जन करते हैं और अच्छे खेत के दो लाख ४ घोड़े तय्यार होते हैं ॥ १२ ॥ ५ भय ६ गोर नामक शहर के पति ७ सेवक ॥ १३ ॥ ८ बीकानेर राज्य को जंगलधर कहते हैं ९ शीघ्र १० सामुद्रिक शास्त्र को जाननेवाली ॥ १४ ॥११नीचे स्वरों में१२कोयल के समान कंठवाली ॥ १५ ॥ १३ और स्त्रियों में मणिरूप ॥१६॥ १४ भेट करना १५कायर ॥ १७ ॥ महनसिंह १६ बंशी नामक नगर को घेर कर सिन्धु नदी उतर कर शत्रु सेना को भारी १७ समझ कर टलगया ॥ १९ ॥

कुमर सहायी करन अग्ग हंकिय बिनम्र वह ॥
सोमेस१७६कुमर तद्दिनै समय रचि सिकार खट्टुव रमत ॥
अग्गहि हजूर लायउ उहाँ खत्रिय सुन्दर तास खत ॥२५॥

दोहा

खत्रिय अग्गहि तास खत, दिन्नैं सुन्दरदास ॥
सबही अरज हुसैनकी, बंचिय दै बिसवास ॥ २६ ॥

षट्पात्

सकल बंचि सोमेस कुमर बिन्नति हुसैन कृत ॥
मंत्रिय बर कैमास१सुभट इतरहुँ निज अनुसृत ॥
प्रबल चन्द्र२पुंडीर जोध खिच्चिय प्रसंग३जिम ॥
पुनि कूरम प्रद्युम्न४तत्थ गोविन्दराज५तिम ॥
इत्यादि बुल्लि परिगेंह उचित कहिय स्वीय संधा कुमर ॥
बिक्खैं न अज्जं मिच्छन बदनं अरु तिन्ह तक्कत सरन अंर

दोहा

मिलन कहाँ न लखैं मुखहु, अप्पन उज्जल अज्ज ॥
जानि सरन आयउ जवन, किम निबहैं यह कज्ज ॥२८॥
भटन मंत्रि प्रमुखनं भनिय, बिदित सरन दैबोहि ॥
बदन दिखावैं अनुग बनि, बिनु बिक्खे सम सोहि ॥२९॥
कम्म छुवनको है न कछु, उपदाजुत वह आय ॥

सहित १ विशेष नम्रता से २ उन दिनों में शिकार करने के लिये खाटू शहर में रमते थे ३ हुशेन का खत लाया ॥ २५ ॥२६॥ सोमेश के कँवर ने हुशेन की ५की हुई विनती ४ सब बांच कर ६ श्रेष्ठ मंत्री कैमास और ७ दूसरे पृथ्वीराज की ८उपासना करनेवाले(सेवक)९बुलाकर१०परिगह(पास रहनेवालों को अपनी११प्रतिज्ञा कही कि१२आर्यलोग म्लेछों का१३मुख नहीं देखते हैं और उनको देखते हुए शरण१४ शीघ्र देना चाहिये ॥ २७ ॥ आपन उज्वल आर्य हैं सो मिलना तो कहां उनका मुख भी न देखना चाहिये. और वह यवन शरण जानकर आया है सो यह कार्य कैसे निभेगा१५आदि ने१६चाकर बन कर १७ विना देखे समान है ॥२९॥ १८ कर्म १९ नजराना

कुमर सहायी करन अग्ग हंकिय बिनम्र वह ॥
सोमेस१७६कुमर तद्दिन समय रचि सिकार खट्टुव रमत ॥
अग्गहि हजूर लायउ उहाँ खत्रिय सुन्दर तास खत ॥२५॥

दोहा

खत्रिय अग्गहि तास खत, दिन्नैं सुन्दरदास ॥
सबही अरज हुसैनकी, बंचिय दे बिसवास ॥ २६ ॥

षट्पात्

सकलँ बंचि सोमेस कुमर बिन्नति हुसैन कृत ॥
मंत्रिय वर कैमास१सुभट इतरहुँ निज अनुसृत ॥
प्रबल चन्द्र२पुंडीर जोध खिच्चिय प्रसंग३जिम ॥
पुनि कूरम प्रद्युम्न४तत्थ गोबिन्दराज५तिम ॥
इत्यादि बुल्लि परिगेंह उचित कहिय स्वीय संधा कुमर ॥
बिक्खैं न अज्जे मिच्छन बदनं अरु तिन्ह तक्कत सरन अँर

दोहा

मिलन कहाँ न लखैं मुखहु, अप्पन उज्जल अज्ज ॥
जानि सरन आयउ जवन, किम निबहैं यह कज्ज ॥२८॥
भटन मंत्रि प्रमुखनं भनिय, बिदित सरन दैबोहि ॥
बदन दिखावैं अनुग बनि, बिनु बिक्खे सम सोहि ॥२९॥
कम्म छुवनको है न कछु, उपदाजुत वह आय ॥

सहित १ विशेष नम्रता से २ उन दिनों में शिकार करने के लिये खाटू शहर में रमते थे ३ हुसेन का खत लाया॥ २५ ॥२६॥ सोमेश के कँवर ने हुसेन की ५की हुई विनती ४ सब बांच कर ६ श्रेष्ठ मंत्री कैमास और ७ दूसरे पृथ्वीराज की ८उपासना करनेवाले(सेवक)९बुलाकर१०परिगह(पास रहनेवालों को अपनी११प्रतिज्ञा कही कि१२आर्यलोग म्लेछों का१३मुख नहीं देखते हैं और उनको देखते हुए शरण१४ शीघ्र देना चाहिये ॥ २७ ॥ आपन उज्वल आर्य हैं सो मिलना तो कहां उनका मुख भी न देखना चाहिये. और वह यवन शरण जानकर आया है सो यह कार्य कैसे निभेगा१५आदि ने१६चाकर बन कर १७ विना देखे समान है ॥२९॥ १८ कर्म १९ नजराना

च्यारि४दूत चहुवान पास जवनेस पठाये ॥
नागनेगर उन्ह आय पत्र परिखेद पहुँचाये ॥
हो मम अनुगं हुसैन गो सु तुम ढिग पातुरि गहि ॥
चोर देहु चहुवान चित्त दुहुँ ओर साम चहि ॥
करि कोप बंचि ए दल कुमर दूतन तरँजि निकासि दिय॥
काबल कितीक क्यौं सठ करत हठ सिंहन सिर स्यार हिय ३१

रोला

पच्छे उत दूतन पठाय उद्धत कुमार इत ।
नीतिराज खत्रिय निकेत दिय पुनि हुसैन हित ॥
सुनत एह जवनेस सभा बुल्लिय उमीर सब ।
तँहँ रुस्तम १ तत्तार २ खान सुरसान ३ जुरे जब ॥ ३६ ॥
अरज सबन किय अवहु पत्र इक उचित पठावन ।
संगहि भेजहु साह सेख आरब समुझावन ॥
जिहिं आरब कर जोरि किन्न गनिका उपदा वह ।
तिहिं प्रति दल लिखि त्वरित साह पठवहु निदेस सह॥३७॥
सिन्धुदेस यह सुनत पत्र पठये गजनीपति ।
आरब तुम अजमेर करहु जाय रु उपाय कति ॥
कुमरहिं अक्खहु करहु प्रीति तुम साह परस्पर ।
सह पननारि हुसैन चोर अप्पहु मम अनुचर ॥३८॥

षट्पात्

जो न देहिं तो जोर अखिल अक्खहु जिम अप्पन॥

पान के पास आकर इतना नजराना किया ॥ ३४ ॥ १ बादशाह ने नागोर में २ सभा में ४ चाकर ५ गया ६ पत्र ७ धमका कर कहा कि काबल कितनीक है (गोर शहर काबल की सीमा में था इससे काबल कहा) सो मूर्ख गीदड़ सिंह के मस्तक पर हठ करके दिल चलाता है ॥ ३५ ॥ ८ घर ९ बुलाये ॥ ३६ ॥ १० भेट ११ पत्र ॥ ३७ ॥ १२ कहो १३ गणिका सहित १४ दो १५ मेरा चाकर ॥ ३८ ॥ १६ संपूर्ण अपनी ताकत कह दूं. जैसे

च्यारि[4]दूत चहुवान पास जवनेस पठाये ॥
नागनेगर उन्ह आय पत्र परिखंद पहुँचाये ॥
हो मम अनुगं हुसैन गो सु तुम ढिग पातुरि गहि ॥
चोर देहु चहुवान चित्त दुहुँ ओर साम चहि ॥
करि कोप बंचि ए दल कुमर दूतन तरँजि निकासि दिय॥
काबल कितीक क्यौं सठ करत हठ सिंहन सिर स्यार हिय ३५

रोला

पच्छे उत दूतन पठाय उद्धत कुमार इत ।
नीतिराज खत्रिय निकेत दिय पुनि हुसैन हित ॥
सुनत एह जवनेस सभा बुल्लिय उमीर सब ।
तहँ रुस्तम १ तत्तार २ खान सुरसान ३ जुरे जब ॥ ३६ ॥
अरज सबन किय अबहु पत्र इक उचित पठावन ।
संगहिं भेजहु साह सेख आरब समुझावन ॥
जिहिं आरब कर जोरि किन्न गनिका उपदा वह ।
तिहिं प्रति दल लिखि त्वरित साह पठवहु निदेस सह॥३७॥
सिन्धुदेस यह सुनत पत्त पठये गजनीपति ।
आरन तुम अजमेर करहु जाय रु उपाय कति ॥
कुमरहिं अक्खहु करहु प्रीति तुम साह परस्पर ।
सह पननारि हुसैन चोर अप्पहु मम अनुचर ॥३८॥

षट्पात

जो न दैंहिं तो जोर अखिल अक्खह जिम अप्पन॥

षान के पास आकर इतना नजराना किया ॥ ३४ ॥ १ बादशाह ने २ नागोर में ३ सभा में ४ चाकर ५ गया ६ पत्र ७ धमका कर कहा कि काबल कितनीक है (गोर शहर काबल की सीमा में था इससे काबल कहा) सो मूर्ख गीदड़ सिंह के मस्तक पर हठ करके दिल चलाता है ॥ ३५ ॥ ८ घर ९ बुलाये ॥ ३६ ॥ १० भेट ११ पत्र ॥ ३७ ॥ १२ कहो १३ गणिका सहित १४ दो १५ मेरा चाकर ॥ ३८ ॥ १६ संपूर्ण अपनी ताकत कह दूं. जैसे

दोहा

गजनीपुर आरब गयउ, अक्खिय सकल उदंत[1] ॥
कुमर न देत हुसैंन कँहँ, हठि चाहत रन हंत[3] ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनान्तर्गतडिड्डुरवंशविरोचनशाकम्भरेशपृथ्वीराज१७७ चरित्रे पुरापलायितप्रत्यन्तेन्द्रकुसाब १ भेहरा २ द्यजमेरसीमनगरलुण्टन १ मार्गमिलिततरपुराबिध्वंसन २ दत्तोपायनकतिचिदभयीकरण ३ लुण्टितगक्खरगौरीशसिन्धुदेशसंविशन ४ तत्रत्याऽर्द्धाऽर्द्धदेशपतिनरेन्द्रमथनसिंह १ सेखारब १ द्वय २ ढौकनाऽनादरण ५ कृतमन्त्रयवनेन्द्रप्रत्येकपार्श्वनिसुरतखानप्रेषण ६ मथनसिंह १ तदुक्तानूरीकरण ७ तद्भणितिभीभीतभृत्यीभूतसेखाऽऽरब २ प्रागानीतपण्यप्रमदाचित्ररेखोपदायवनेन्द्रार्पण ८ श्रुतैतदुदन्तबिन्दबंशीयमथनसिंहप्रच्छन्नपलायन ९ चित्ररेखाऽनुचरीभूतगौरीशगजनीगमन १० तिरस्कृताऽन्यस्त्रीम्लेच्छराजतदाऽऽसज्जन ११ यवनेन्द्रबान्धवहुसैन १ पण्यस्त्री २ परस्पर

---

[1] कहे[2] सब वृत्तांत [3] खेद की बात है ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के भीतर डिड्डुरवंश के सूर्य सांभर के पति पृथ्वीराज के चरित्र में पहिले भागेहुए यवनेन्द्र का कुसाब भेहरा आदि अजमेर सीमा के नगर लूटना, मार्ग में मिले उन गाँवों को बल से नाश करना, कितनेकों का भय से नजराना देना, गक्खर को लूटकर सहाबुद्दीन गोरी का सिंधु देश में जाना, तहां देशपति नरेन्द्र मथनसिंह और सेख आरब दोनों के नजराना देने का अनादर करना, सलाह करके बादशाह का हरएक के पास निसुरतखान को भेजना, उसके कहेहुए को मथनसिंह का नामंजूर करना, उस निसुरतखां के कहने से भयभीत होकर सेख आरब का चाकर होना, पहिले आनी हुई चित्ररेखा नामक गणिका का बादशाह के नजर करना, और वृत्तान्त सुनकर बींदा जाति के क्षत्री का छिपकर भागना, चित्ररेखा का अनुचर होकर गोरी पति का गजनी जाना, म्लेच्छराज का और स्त्रियों को छोड देना, वहां बादशाह के बांधव असज्जन उस हुसेन का और उस चित्ररेखा नाम गणिका का परस्पर आसक्त होना, वह वृत्तान्त जानकर बादशाह का

दोहा

गजनीपुर आरब गयउ, अक्खिय सकल उदंत ॥
कुमर न देत हुसैंन कहँ, हठि चाहत रन हंत ॥ ४२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचरडासिवंशबर्णनान्तर्गतडिड्डुरवंशबिरोचनशाकम्भरेशपृथ्वीराज१७७ चरित्रे पुरापलायितप्रत्यन्तेन्द्रकुसाब १ भेहरा २ द्यजमेरसीमनगरलुण्टन १ मार्गमिलिततरपुरबिध्वंसन २ दत्तोपायनकतिचिदभयीकरण ३ लुण्टितगक्खरगोरीशसिन्धुदेशसंविशन ४ तत्रत्याऽर्वाऽर्द्धदेशपतिनरेन्द्रमथनसिंह १ सेखारब १ द्वय २ ढौकनाऽनादरण ५ कृतमन्त्रयवनेन्द्रप्रत्येकपार्श्वनिसुरतखानप्रेषण ६ मथनसिंह १ तदुक्तानूरीकरण ७ तद्भणितिभीभीतभृत्यीभूतसेखाऽऽरब २ प्रागानीतपण्यप्रमदाचित्ररेखोपदायवनेन्द्रार्पण ८ श्रुतैतदुदन्तबिन्दवंशीयमथनसिंहप्रच्छन्नपलायन ९ चित्ररेखाऽनुचरीभूतगोरीशगजनीगमन १० तिरस्कृताऽन्यस्त्रीम्लेच्छराजतदाऽऽसज्जन ११ यवनेन्द्रबान्धवहुसैन १ पण्यस्त्री २ परस्पर

---

१ कहे २ सब वृत्तांत ३ खेद की बात है ॥ ४१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवान वंशवर्णन के भीतर डिड्डुरवंश के सूर्य सांभर के पति पृथ्वीराज के चरित्र में पहिले भागेहुए यवनेन्द्र का कुसाब भेहरा आदि अजमेर सीमा के नगर लूटना, मार्ग में मिले उन गाँवों को बल से नाश करना, कितनेकों का भय से नजराना देना, गक्खर को लूटकर सहाबुद्दीन गोरी का सिंधु देश में जाना, तहां देशपति नरेन्द्र मथनसिंह और सेख आरब दोनों के नजराना देने का अनादर करना, सलाह करके बादशाह का हरएक के पास निसुरतखान को भेजना, उसके कहेहुए को मथनसिंह का नामंजूर करना, उस निसुरतखां के कहने से भयभीत होकर सेख आरब का चाकर होना, पहिले आनी हुई चित्ररेखा नामक गणिका का बादशाह के नजर करना, और वृत्तान्त सुनकर बींदा जाति के खत्री का छिपकर भागना, चित्ररेखा का अनुचर होकर गोरी पति का गजनी जाना, म्लेच्छराज का और स्त्रियों को छोड देना, वहां बादशाह के बांधव असज्जन उस हुसेन का और उस चित्ररेखा नाम गणिका का परस्पर आसक्त होना, वह वृत्तान्त जानकर बादशाह का

भाश्रवण २४ तिरस्कृततदुक्तकुमारसेखमातिप्रस्थापन २५ यवने न्द्रसभाप्रान्तसेखसूतवृत्तनिवेदन २६ मष्टादशो १८ मयूखः ॥१८॥

आदितः सप्तविंशोत्तरशततमः ॥ १२७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

गोरिय सुनि आरब गदित, बिरचि मन्त्र सजि बीर ॥
चढि चल्लिय चहुवानपैं, धारा चक्खन धीर ॥ १ ॥

अन्त्यानुप्रासिनी रोला

साकम्भर सिर कुपित साह चतुरंग चलाये ॥
खिजि रुस्तुम१तत्तारखान२उमडावत आये ॥
सूर जमाम३कमाम४सेख आरब५उफनाये ॥
खानकुतब६खुरसानखान७रसबीर रचाये ॥२॥
मीरमुहब्बत८मोजदीन९०सह न्याज१०सजाये ॥
हाजी११तिम गाजी हुसैन१२बाजीद१३वढाये ॥
मत्त मतंगज मंडलीन कुलगिरि कंपाये ॥
भू डगमग्गी हयन भार दृग नाग दुराये ॥ ३ ॥

मयूख हुआ ॥ १८ ॥ और आदि से एक सौ सत्ताईस मयूख हुए ॥१२७॥

१कहा हुआ २तरवार की धारा चखने के लिये ३साँभर नगर के ऊपर कोप करके बादशाह ने ४चार अंगवाली सेना चलाई, (पाठक लोग शहाबुद्दीन गोरी की तवारीख को देखें तो पृथ्वीराज रासे में लिखे हुए नाम कल्पित जानलेंगे; क्योंकि पृथ्वीराज रासा पृथ्वीराज के समय से बहुत पीछे का बना हुआ है जिसके प्रमाण देखना होवे तो मेवाड के वीरविनोद नामक इतिहास में रावल समरसिंह के चरित्र में देखलेवें. हम भी इस मिथ्या इतिहास पर टीका करके वृथा समय खोते हैं परन्तु सूर्यमल्ल की रचना की हुई कविता को विना टीका छोडदेना उचित नहीं समझते हैं इसीसे यह श्रम किया जाता है, सो गन्ना (शांठा) सींचते समय ढाढूण का वृक्ष आप ही सींचा जाता है) मस्त हाथियों रूपी मंडलि ने५ कुलाचल पर्वत को कंपादिया, (यह अत्युक्ति अलंकार है. आगे भी जहां लोकसीमातिवर्तन होता होवे वहां अत्युक्ति अलंकार जानो जो काव्य का पोषक है) ६ घोडों के भय से भूमि हिलने लगी और ७ शेषनाग

भाश्रवणा २४ तिरस्कृततदुक्तकुमारसेखप्रतिप्रस्थापन २५ यवने
न्द्रसभाप्रान्तसेखभूतवृत्तनिवेदन २६ मष्टादशो १८ मयूखः ॥१८॥

आदितः सप्तविंशोत्तरशततमः ॥ १२७ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

गौरिय सुनि आरब गदित, बिरचि मन्त्र सजि बीर ॥
चढि चल्लिय चहुवानपैं, धारा चक्खन धीर ॥ १ ॥

अन्त्यानुप्रासिनी रोला

साकम्भरं सिर कुपित साह चतुरंग चलाये ॥
खिजि रूस्तुम१तत्तारखान२उमडावत आये ॥
सूर जमाम३कमाम४सेख आरब५उफनाये ॥
खानकुतब६खुरसानखान७रसबीर रचाये ॥२॥
मीरमुहब्बत८मोजदीन९०सह न्याज१०सजाये ॥
हाजी११तिम गाजी हुसैन१२बाजीद१३बढाये ॥
मत्त मतंगज मंडलीन कुलगिरि कंपाये ॥
भू डगमग्गी हंयन भार हग नाग दुराये ॥ ३ ॥

मयूख हुआ ॥ १८ ॥ और आदि से एक सौ सत्ताईस मयूख हुए ॥१२७॥
१कहाहुआ२तरवार की धारा चखने के लिये३सांभर नगर के ऊपर कोप करके बादशाह ने४चार अंगवाली सेना चलाई, (पाठक लोग शहाबुद्दीन गोरी की तवारीख को देखें तो पृथ्वीराज रासे में लिखेहुए नाम कल्पित जानलेंगे; क्योंकि पृथ्वीराज रासा पृथ्वीराज के समय से बहुत पीछे का बनाहुआ है जिसके प्रमाण देखना होवे तो मेवाड़ के वीरविनोद नामक इतिहास में रावल समरसिंह के चरित्र में देखलेवें. हम भी इस मिथ्या इतिहास पर टीका करके वृथा समय खोते हैं परन्तु सूर्यमल्ल की रचना की हुई कविता को विना टीका छोडदेना उचित नहीं समझते हैं इसीसे यह श्रम किया जाता है, सो गन्ना (सांठा)सींचते समय दाहूणा का वृक्ष आप ही सींचा जाता है) मस्त हाथियों रूपी मंडलि ने५ कुलाचल पर्वत को कंपादिया, (यह अत्युक्ति अलंकार है. आगे भी जहां लोकसीमातिवर्तन होता होवे वहां अत्युक्ति अलंकार जानो जो काव्य का पोषक है) ६ घोड़ों के भय से भूमि हिलने लगी और ७ शेषनाग

मैं धर पुंगल लूट मंडि कति हिंदु कुपाये ॥
इत उतके सब इक्क होय सुनि लूट सजाये॥८॥
जिम अंकत मंडन जनून इम मो सिर आये ॥
ऐसे घर घर हिंदु आंहि ठाँठाँ रन ठाये ॥
जिन बीरनतैं रचल जंग नहिं ठाम ठठाये ॥
जो लक्खन धन जल गिराय पय पिठ्ठि लगाये॥९॥
तो अप्पन रहि हैं कितेक बाजी बल आये॥
असुभ सकुन चढतैं अनेक इतै आनि दिखाये॥
आरबकोहु उदंत एह सुनि द्वैरहि रिसाये॥
मिलि हाजी१तत्तार१ मीर दिल दुहुँरन हढाये ॥१०॥
अक्खी तुम गजनी अधीस हम बीर कहाये ॥
कुमर कंठ पटकैं कमान बल बाहु बढाये ॥
ए आरब१ खुरसान२ अज्ज सुनि समर सिंटाये ॥
ए न लरैंतो हम अनेक सिर दैन सजाये ॥ ११ ॥
भूरिमायु भजतैंहु सिंह डरिहै न डराये ॥
हाजरि कै आयो हुसैन अखिलहि कै आये ॥
दिन हिंदुन पलटन निदान सुलतान रिसाये ॥
दल दर कुंचन हुकम देहु यातैं हठ आये ॥१२॥
इम हाजी१तत्तार२अक्खि भय सबन भुलाये ॥
जे नाहर पहिलैं बंजोर पुनि पक्खर छाये ॥
साह कटक बैंडे सिपाह इम रन उमगाये॥
रचि दरकुंचन जवनराज चतुरंग चलाये ॥१३॥

१अपना निशाना मांडकर क्रोध के साथ मेरे ऊपर आये थे ऐसे हिन्दु घर घर में२हैं३ठांम ठांम युद्ध में प्रसिद्ध हैं४यह ठट्ठा नहीं है अर्थात् हांसी नहीं है, जो लाखों का धन डबोकर शत्रुओं की पीठ पर पग लगाये हैं ॥९॥५जल्दी ६ वृत्तान्त ॥ १० ॥ ७डरगये ॥ ११ ॥ ८ एक गीदड़ के भागने से सिंह डराये हुए नहीं डरेंगे ९ किधों ॥ १२ ॥ १० जोर सहित(बलवान्)है फिर

मैं धर पुंगल लूट मंडि कति हिंदु कुपाये ॥
इत उतके सब इक्क होय सुनि लूट सजाये॥८॥
जिम अंकत मंडन जनून इम मो सिर आये ॥
ऐसे घर घर हिंदु आहि ठाँठाँ रन ठाये ॥
जिन बीरनतैं रचन जंग नहिँ ठाम ठठाये ॥
जो लक्खन धन जल गिराय पय पिट्ठि लगाये॥९॥
तो अप्पन रहि हैं कितेक बाजी बल आये॥
असुभ सकुन चढतैं अनेक द्रुत आनि दिखाये॥
आरबकोहु उदंत एह सुनि ढ्रहि रिसाये॥
मिलि हाजी१तत्तार१ मीर दिल दुहुँरन हढाये ।१०।
अक्खी तुम गजनी अधीस हम बीर कहाये ॥
कुमर कंठ पटकैं कमान बल बाहु बढाये॥
ए आरब१ खुरसान२ अज्ज सुनि समर सिंटाये॥
ए न लरैंतो हम अनेक सिर दैन सजाये॥ ११ ॥
भूरिमायु भजतैंहु सिंह डरिहैं न डराये॥
हाजरि कै आयो हुसैन आखिलहि कै आये॥
दिन हिंदुन पलटन निदान सुलतान रिसाये॥
दल दर कुंचन हुकम देहु यातैं हठ आये ॥१२॥
इम हाजी१तत्तार२अक्खि भय सबन भुलाये॥
जे नाहर पहिलैं बंजोर पुनि पक्खर छाये ॥
साह कटक बैंडे सिपाह इम रन उमगाये॥
रचि दरकुंचन जवनराज चतुरंग चलाये ॥१३॥

१अपना निशाना मांडकर क्रोध के साथ मेरे ऊपर आयेथे ऐसे हिन्दु घर घर में२हैं३ठांम ठांम युद्ध में प्रसिद्ध हैं४यह ठट्ठा नहीं है अर्थात् हांसी नहीं है, जो लाखों का धन डबोकर शत्रुओं की पीठ पर पग लगाये हैं ॥९॥५जल्दी ६ वृत्तान्त ॥ १० ॥ ७डरगये ॥ ११ ॥ ८ एक गीदड़ के भागने से सिंह डराये हुए नहीं डरेंगे ९ किधों ॥ १२ ॥ १० जोर सहित(बलवान्)है फिर

दल सारूडा१अचलदंग२अन्तर उफनाये ॥
अज्जन सह गंगोदं१इष्ट चरनोदं२अचाये ॥
गायत्री१जपि सहँस नाम१गीता२मुख गाये ॥
तुररे मंजर तोलसेय टोपन टंकाये ॥ १९ ॥
दैदै समुचित द्विजन दान बसु आढ्यं बनाये ॥
करि निमाज१कलमाँ१कुरान२उत प्रनुतं पढाये ॥
इत हरि१संकर उत इलाह१रबँ२रटन रिझाये ॥
कटक भागत्रय३करि कुमार बिच वीर बटाये ॥ २० ॥
अप्प१रहिय मध्यम अनीक भर ए तँहँ भाये ॥
गुहिलपुत्र गोविंद १देव२बग्गरि बिकसाये ॥
ख्यात कनक३खिच्ची प्रसंग४सहकन्ह५सजाये ॥
बाम२अनीक हुसैन१बीर तस भीर तुलाये ॥ २१ ॥
कासिमखान२कमामखान३रूमी छकछाये ॥
खिजर४करीम५दलेलखान६सहसूर सुहाये ॥
तिन ढिग गुज्जर१प्रातिहार२जदु३सम्भर४जाये ॥
राम१महन२जाम३रु प्रसंगसुत४लरन लुभाये ॥ २२ ॥
इम तीजे३दाहिन३अनीक अक्खैं कति आये ॥
दाधिम१पुंडीर२रु प्रमार३भट तोमर४भाये ॥
चामुराड१रु कैमास२चंद३दुस्सह दरसाये ॥
प्रथित सिंह४सल्लख५रु पहार६बलभार बटाये ॥ २३ ॥
पंच५अनी सज्जित पठान उतहू अनखाये ॥
बाम१अनी खुरसान१बीररस बीर रचाये ॥
तिम अनीक दक्खिन२तुरंग तत्तार१तुलाये ॥

अर्थात् डरे नहीं ॥ १८ ॥ १ पुर, आर्यों ने २ गंगाजल पिया ३ अपने अपने इष्ट का चरणामृत पिया ४ तुलसी के मञ्जरों के तुर्रे टांके ॥ १९ ॥ ५ धन के स्वामी बनाये ६ उधर विशेष स्तुति करके ७ यावनी भाषा में परमेश्वर का वाचक है ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ८ भट ॥ २२ ॥ ९ प्रसिद्ध ॥ २३ ॥ २४ ॥

दल सारूडा१अचलदंग२अन्तर उफनाये ॥
अज्जन सह गंगोदं१इष्ट चरनोंद२अचाये ॥
गायत्री१जपि सहँस नाम१गीता२मुख गाये ॥
तुररे मंजर तोलसेय टोपन टंकाये ॥ १९ ॥
दैदै समुचित द्विजन दान बसु आढ्य बनाये ॥
करि निमाज१कलमाँ१कुरान२उत प्रनुतं पढाये ॥
इत हरि१संकर उत इलाह१खँ२रटन रिझाये ॥
कटक भागत्रय३कारि कुमार बिच बीर बटाये ॥ २० ॥
अप्प१राहिय मध्यम अनीक भर ए तँहँ भाये ॥
गुहिलपुत्र गोविंद १देव२बग्गरि बिकसाये ॥
ख्यात कनक३खिच्ची प्रसंग४सहकन्ह५सजाये ॥
बाम२अनीक हुसैन१बीर तस भीर तुलाये ॥ २१ ॥
कासिमखान२कमामखान३रूमी छकछाये ॥
खिजर४करीम५दलेलखान६सहसूर सुहाये ॥
तिन ढिग गुज्जर१प्रातिहार२जदु३सम्भर४जाये ॥
रास१महन२जाम३रु प्रसंगसुत४लरन लुभाये ॥ २२ ॥
इम तीजे३दाहिन३अनीक अक्खैं कति आये ॥
दाधिम१पुंडीर२रु प्रमार३भट तोमर४भाये ॥
चामुराड१रु कैमास२चंद३दुस्सह दरसाये ॥
प्रथित सिंह४सलख५रु पहार६बलभार बटाये ॥ २३ ॥
पंच५अनी सज्जित पठान उतहू अनखाये ॥
बाम१अनी खुरसान१बीररस बीर रचाये ॥
तिम अनीक दक्खिन२तुरंग तत्तार१तुलाये ॥

अर्थात् डरे नहीं ॥ १८ ॥ १ पुर, आर्यों ने २ गंगाजल पिया ३ अपने अपने इष्ट का चरणामृत पिया ४ तुलसी के मञ्जरों के तुर्रे टांके ॥ १९ ॥ ५ धन के स्वामी बनाये ६ उधर विशेष स्तुति करके ७ यावनी भाषा में परमेश्वर का बाचक है ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ८ भट ॥ २२ ॥ ९प्रसिद्ध ॥ २३ ॥ २४ ॥

झोरी करि तिहिँ गिरतझोलि पर केक पलाये ॥
अनी उभय२ मुरतहि असेस जँहँ साह जुराये ॥ २९ ॥
होत इकठ्ठे जवन हंकि इतके बढि आये ॥
चंद१ जाम२ चामुंडराज३ कैमास४ धकाये ॥
जवनराज हय कट्टि जाम१ दृढ हत्थ दिखाये ॥
बिक्खे साह अनेक बाह पै चढन न पाये ॥ ३० ॥
जवन चंद१ कैमास२ जाम३ रनवंटि रुकाये ॥
इहिँ अंतर चामुंडराज ढिग द्विरद ढराये ॥
गोरीके गल चापगेरि बल आप बताये ॥
कलह तत्थ सामंत काम इतके त्रय३ आये ॥ ३१ ॥
प्रबल मांडलिक१ सुतप्रसंग खिच्ची बहु खाये ॥
सह खल गज्जन बिनुहि सीस असुँ अरिन उडाये ॥
बिक्रम२ राम३ प्रमार बीर खरबाढँ चखाये ॥
गोरीके ढिग गजनगाहि सुरलोक सिधाये ॥ ३२ ॥
साह रहत भग्गे असेस रुकि अल्प रहाये ॥
उतके तत्थ अमीर पंच५ प्रानन बिनु पाये ॥
ज्यान१ जमाम२ कमाम३ खान वपु टूक बनाये ॥
आरब४ गाजी५ पहलवान हक निमक चुकाये ॥ ३३ ॥
उत घायल खुरसान१ आदि प्रतिपंथ पलाये ॥
इत हुसैन१ आदिक अनेक घनघाय घुमाये ॥
सोमकुमर१७७ ते सब सिराहि सुखपाल सुहाये ॥
सहँस वीस२००००इत१उत२सिपाह पलँचारन पाये ॥ ३४ ॥
रवि उग्गत संभरकुमार१ जवनेस२ जुराये ॥

उस गिरतेहुए को झोली में झेलकर कितने ही शत्रु भागगये॥२९॥बादशाह ने अनेक १वाहन देखे परन्तु चढने नहीं पाया २सहाबुद्दीन गोरी के गले में शत्रुओं के ३प्राण ४ तीखे बाढ ५ उलटे मार्ग भागे ६ बहुत घावों से घूमने लगे७ मांस खानेवाले पशुपक्षियों ने खाये ॥ ३४ ॥

झोरी करि तिहिँ गिरत झेलि पर केक पलाये ॥
अनी उभय२ मुरतहि असेस जहँ साह जुराये ॥ २९ ॥
होत इकट्ठे जवन हंकि इतके बढि आये ॥
चंद१ जाम२ चामुंडराज३ कैमास४ धकाये ॥
जवनराज हय कट्टि जाम१ दृढ हत्थ दिखाये ॥
बिक्खे साह अनेक बाह पै चढन न पाये ॥ ३० ॥
जवन चंद१ कैमास२ जाम३ रनबंटि रुकाये ॥
इहिँ अंतर चामुंडराज ढिग द्विरद ढराये ॥
गोरिके गल्ल चापगेरि बल आप बताये ॥
कलह तत्थ सामंत काम इतके त्रय३ आये ॥ ३१ ॥
प्रबल मांडलिक१ सुतप्रसंग खिच्ची बहु खाये ॥
सह खल्ल गज्जन बिनुहि सीस असु अरिन उडाये ॥
बिक्कम२ राम३ प्रमार बीर खरबाढ चखाये ॥
गोरीके ढिग गजनगाहि सुरलोक सिधाये ॥ ३२ ॥
साह रहत भग्गे असेस रुकि अल्प रहाये ॥
उतके तत्थ अमीर पंच५ प्रानन बिनु पाये ॥
ज्यान१ जमाम२ कमाम३ खान बपु टूक बनाये ॥
आरब४ गाजी५ पहलवान हक निमक चुकाये ॥ ३३ ॥
उत घायल खुरसान१ आदि प्रतिपंथ पलाये ॥
इत हुसैन१ आदिक अनेक घनघाय घुमाये ॥
सोमकुमर१७७ ते सब सिराहि सुखपाल सुहाये ॥
सहँस बीस२००००इत१उत२सिपाह पलचारन पाये ॥ ३४ ॥
रवि उग्गत संभरकुमार१ जवनेस२ जुराये ॥

उस गिरतेहुए को झोली में झेलकर कितने ही शत्रु भागगये॥२९॥ बादशाह ने अनेक १वाहन देखे परन्तु चढने नहीं पाया २सहाबुद्दीन गोरी के गले में ३प्राण ४ तीखे बाढ ५ उलटे मार्ग भागे ६ बहुत घावों से घूमने लगे ७ मांस खानेवाले पशुपक्षियों ने खाये ॥ ३४ ॥

कति तिन्ह जित्यो कहत पाय दिल्लिय अजपत्तन ॥
किय नन प्रबंध बिच चंदकवि पूर्बा१पर२सूचन प्रथित ॥
इहिंहेतु हमहु नृपराम२०३यँहँ क्रमबिहीन भूत सु कथित॥ ४० ॥

[दोहा]

साह ग्रहन पुब्बहि सकल, सूर१सुभट२सामंत३ ॥
भावीबस इक्कत भये, जुद्ध त्रितय३परजंत ॥ ४१ ॥

[पादाकुलकम्]

मंडनगढआनंद१७०।१महीपति,अनुजतासजयराज१७०।२बलीअति
अरुदुव२कुमरतरुनबयआवत,हम्मीर१७१।१रुगंभीर१७१।२महामत
ए३हु भये सामंतन अग्रग, पच्छो कबहु न दिय स्वप्नहु पग॥
परनि दंगअजगढ सपरिग्रह, इम जयराज१७०।२गयो पहिलैं वह
पुनिहम्मीर१७१।१कुमरलोचनपुर, अप्पनकरिरुदाहिदहियनउर ॥
पाइ मान पहुँच्यो पित्थल१७७हँ, तदनु बुलाइलयो अनुजहु तँहँ
गढमंडन सन तब गंभीर १७१ हु,
पहुँचि कियो सु कुमर पित्थल १७७ पहु ॥
तनय लह्यो जयराज १७०।२ हु तत्थहि,
अक्खयराज १७१ नाम जय अत्थहि ॥ ४५ ॥

पीर ख्वाजेमुय्यनुद्दीनचिश्ति ने इस युद्ध में विजय पाई और कितने ही कहते हैं कि पृथ्वीराज ने दिल्ली लिये पीछे अजमेर में विजय पाई. यह बात चन्द कवि ने अपने १ ग्रन्थ में २ पहिले कौन वृत्तान्त हुआ पीछे कौन हुआ सो ३ प्रसिद्ध नहीं किया इसलिये हे ४राजा रामसिंह हम भी ५... ति हुई बात को क्रम विना लिखते हैं ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ अब चहुवानों की ...री शाखा वर्णन करते हैं. जिसमें बुन्दी के महारावराजा मुख्य मानेजाते हैं ६ मांडलगढ का आनन्दसिंह राजा था उसका छोटा भाई जयराज ...न् था और आनन्दसिंह के दो कुमर, हम्मीर और गंभीर बडे बुद्धिमान् थे ॥ ४२ ॥ ये तीनों ही पृथ्वीराज के सामन्तों में ७ अग्रणी हुए, वि... करके जयराज अपनी ८परिगह सहित पहिले अजमेर गया ॥ ४ ॥ ...जिस पीछे हम्मीर कुमर ने ९ नंगावा नामक पुर अपना कर १० दा या जाति के क्षत्रियों के उर जलाये ११ जिस पीछे ॥ ४४ ॥ १२ जय के । जये

कति तिन्ह जित्यो कहत पाय दिल्लिय अजपत्तन ॥
किय नन प्रबंध बिच चंदकवि पूर्वा१पर२सूचन प्रथित ॥
इहिंहेतु हमहु नृपराम२०३यँहँ क्रमबिहीन भूत सु कथित॥ ४० ॥

[दोहा]

साह ग्रहन पुव्वहि सकल, सूर१सुभट२सामंत३ ॥
भावीबस इक्कत भये, जुद्ध त्रितय३परजंत ॥ ४१ ॥

[पादाकुलकम्]

मंडनगढआनंद१७०।१महीपति,अनुजतासजयराज१७०।२बलीअति
अरुदुव२कुमरतरुनबयआवत,हम्मीर१७१।१रुगंभीर१७१।२महामत
एउहु भये सामंतन अग्रग, पच्छो कबहु न दिय स्वप्नहु पग॥
परनि ढंगअजगढ सपरिग्रह, इम जयराज१७०।२गयो पहिलैं वह
पुनिहम्मीर१७१।१कुमरलोचनपुर, अप्पनकरिरुदाहिदहियंनउर ॥
पाइ मान पहुँच्यो पित्थल१७७यहँ, तदनु बुलाइलयो अनुजहु तँहँ
गढमंडन सन तब गंभीर १७१ हु,
पहुँचि कियो सु कुमर पित्थल १७७ पहु ॥
तनय लहयो जयराज १७०।२ हु तत्थहि,
अक्खयराज १७१ नाम जयं अत्थहि ॥ ४५ ॥

पीर ख्वाजेमुय्यनुद्दीनचिश्ति ने इस युद्ध में विजय पाई और कितने ही कहते हैं कि पृथ्वीराज ने दिल्ली लिये पीछे अजमेर में विजय पाई. यह बात चन्द कवि ने अपने १ ग्रन्थ में २ पहिले कौन वृत्तान्त हुआ पीछे कौन हुआ सो ३ प्रसिद्ध नहीं किया इसलिये हे ४राजा रामसिंह हम भी ५ ...ति हुई बात को क्रम विना लिखते हैं ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ अब चहुवानों की ...री शाखा वर्णन करते हैं. जिसमें बुन्दी के महारावराजा मुख्य मानेजा... ६ मांडलगढ का आनन्दसिंह राजा था उसका छोटा भाई जयराज ...था और आनन्दसिंह के दो कुमर, हम्मीर और गंभीर बडे बुद्धि... थे ॥ ४२ ॥ ये तीनों ही पृथ्वीराज के सामन्तों में ७ अग्रणी हुए, बि... ॥ ४ ॥ ...करके जयराज अपनी ८परिग्रह सहित पहिले अजमेर गया ...नगर पीछे हम्मीर कुमर ने ९ नैंणवा नामक पुर अपना कर १० दिया ...जिस पीछे ॥ ४४ ॥ १२ जय के ... जाति के क्षत्रियों के उर जलाये ११ जिस पीछे ...

पित्थल १७७ तब दिल्लिय प्रभुताई, पंचमि५ मग्गमास सित पाई ॥
गंगाद्वार प्रांत तोमर गय, भूपसोम१७६दिल्लिय हुव निर्भय ।५५।
पृथ्वीराज१७७चरित जो प्रकटन, सो हम ग्रत्थ कह्यो विस्तरसन॥
खिल चरित्र जगमैं जे ख्यातहिं, क्रम समास ते पुनि दैहैं कहि ॥
जु हम्मीर१७१।१ गंभीर१७१।२चरित जहँ, तक्कहु नृप संक्षिप्त सेस तहँ
तत्थहु ख्यात कतिक दैहैं तजि, भूपराम२०३समर्सन संगति भाजि

दोहा

कुल तहँ पृथ्वीराज१७७को, पीढी सप्त७प्रमान ॥
लिखिहैं नृप हम्मीर१८३लग, जँहँ रनथम्भहु जान ॥५८॥
न हम्मीर१८३पीछैं नृपति, कुल तस प्रकट्यो कोहु ॥
निम्मरान द्रंग११ निकट१२, जननं सुनैं अब जोहु ॥ ५९ ॥
पैंहु चहुवानन पट्टपति, यह डिड्डुरकुल आंहि ॥
पित्थल१७७लग यातैं प्रकट, वरन्यों रीति निवाहि ॥६०॥
याकुलसौं लघु रन अतुल, ओरनसौं गुरु एह ॥
उरथ२४५।२वंस कहियत अखिल, ग्रन्थहतुं जस गेह ।६१।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४राशौ वीति

१शुक्ल पक्ष, सोमेश्वर दिल्ली का निर्भय २ राजा हुआ ॥ ५५ ॥ पृथ्वीराज का चरित्र जो प्रसिद्ध नहीं है सो हमने यहां ३ विस्तार से कहा है ४ बाकी का चरित्र जगत् में विख्यात है वह भी ५ संक्षेप से आगे कहेंगे ॥५६॥ जो हम्मीर और गंभीर के चरित्र हैं वहां पर ६ हे राजा रामसिंह तहां संक्षेप से बाकी का वृत्तान्त जानो. वहां भी ८ संक्षेप के साथ से ७प्रसिद्ध कथा छोडदेवेंगे ॥ ५७ ॥ वहां पर पृथ्वीराज का कुल सात पीढी तक राजा हम्मीर पर्यंत ९ रणतभंवर तक लिखेंगे ॥५८॥ हे राजा रामसिंह हम्मीरसिंह के पीछे उसके कुल में कोई प्रसिद्ध नहीं हुआ १०निम्मराणा नगर में ११ अरु. समीप ही उसका १२ वंश सुनते हैं ॥ ५९ ॥ १३ हे प्रभु चहुवाणों का पाटवी यह डिड्डुर कुल १४ है, इसकारण से रीति के साथ पृथ्वीराज तक प्रसिद्ध वर्णन किया ॥६०॥ इस डिड्डुरकुल से छोटा और युद्ध में अतोल और दूसरों से वडा यह उरथ का १६ संपूर्ण वंश कहता हूं जो१७ इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) का कारण और यश का घर है ॥६१॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चंडासिंहे

पित्थल १७७ तव दिल्लिय प्रभुताई,पंचमि५ मग्गमास सित पाई ॥
गंगाद्वार प्रांत तोमर गय, भूपसोम१७६दिल्लिय हुव निर्भय ॥५५॥
पृथ्वीराज१७७चरित जो प्रकटन, सो हम अत्थ कह्यो विस्तरसन॥
खिल चरित्र जगमैं जे ख्यातहिँ, क्रम समास ते पुनि देहैं कहि ॥
जु हम्मीर१७१।१गंभीर१७१।२चरित जहँ,तकहु नृप संक्षिप्त सेस तहँ
तत्थहु ख्यात कतिक देहैं तजि,भूपराम२०३समर्सन संगति भजि

दोहा

कुल तहँ पृथ्वीराज१७७को, पीढी सप्त७प्रमान ॥
लिखिहैं नृप हम्मीर१८३लग, जहँ रनथम्भहु जान ॥५८॥
न हम्मीर१८३पीछैं नृपति, कुल तस प्रकट्यो कोहु ॥
निम्मरान द्रंग११रु निकट१२,जननैं सुनैं अव जोहु ॥ ५९ ॥
पहु[13] चहुवानन पट्टपति, यह डिड्डुरकुल आंहि ॥
पित्थल[15]१७७लग यातैं प्रकट, वरन्यौं रीति निवाहि ॥६०॥
याकुलसौं लघु रन अतुल, औरनसौं गुरु एह ॥
उरथ२४५।२वंस कहियत अखिल[16], ग्रन्थहेतु[17] जस गेह ।६१।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४राशौ वीति

१शुक्ल पक्ष, सोमेश्वर दिल्ली का निर्भय २ राजा हुआ ॥ ५५ ॥ पृथ्वीराज का चरित्र जो प्रसिद्ध नहीं है सो हमने यहां ३ विस्तार से कहा है ४ बाकी का चरित्र जगत् में विख्यात है वह भी ५ संक्षेप से आगे कहेंगे ॥५६॥ जो हम्मीर और गंभीर के चरित्र हैं वहां पर ६ हे राजा रामसिंह तहां संक्षेप से बाकी का वृत्तान्त जानो. वहां भी ८ संक्षेप के साथ से ७प्रसिद्ध कथा छोडदेवेंगे ॥ ५७ ॥ वहां पर पृथ्वीराज का कुल सात पीढी तक राजा हम्मीर पर्यंत ९ रणतभंवर तक लिखेंगे ॥५८॥ हे राजा रामसिंह हम्मीरसिंह के पीछे उसके कुल में कोई प्रसिद्ध नहीं हुआ १०निम्मराणा नगर में ११ अरु. समीप ही उसका १२ वंश सुनते हैं ॥ ५९ ॥ १३ हे प्रभु चहुवाणों का पाटवी यह डिड्डुर कुल १४ है, इसकारण से रीति के साथ पृथ्वीराज तक प्रसिद्ध वर्णन किया ॥६०॥ इस डिड्डुरकुल से छोटा और युद्ध में अतोल और दूसरों से बडा यह उरथ का १६ संपूर्ण वंश कहता हूं जो १७ इस ग्रन्थ (वंशभास्कर) का कारण और यश का घर है ॥६१॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चंडासि है

तृतीय३ प्रधनप्रारम्भपर्यन्तप्राक्समयसमस्तसामन्तसमागमपुनः सूचन१४तदवसरक्रमसमागतजयराज१७०।२हम्मीर१७१।१ गम्भीर१७१।२जायराज्यत्तयराज १७१ हड्डसामन्तचतुष्टय४सौमि१७७ समाराधनसूचन१५म्लेच्छराजप्रथमग्रहणानंतरतद्वर्षसहोवदातपञ्चमी५समयसामन्तसोम १७६ सम्बोधितकुमारपृथ्वीराजा१७७ र्थदत्तदिल्लीकतोमराऽनङ्गपालगङ्गाद्वारगमन१६ तदवध्यपरिचितपृथ्वीराज १७७ चरित्रविस्तरवर्णन १७ शेषहम्मीर१७१।१गम्भीर १७१।२ समाचारसङ्गतवर्तिष्यमाणताविख्यापन १८ सौमि१७७ पर्य्यन्तचडासि १पट्टधरभरत १४३।१ वंशवर्णनाऽन्तरतदनुजोरथ १४५।२ कुलक्रमकथनसन्धास्वीकरणमेकोनविंशो१९ मयूखः ॥ ॥ १९ ॥ आदितोऽष्टाविंशत्युत्तरशततमः ॥ १२८ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

[दोहा]

हरि१कमला२ईश्वर१उमा२, गनपति१बानी२गाइ ॥
अक्खहिं ग्रंथनिमित्त अब, उरथ१४५।२वंस अधिकाइ॥१॥
सुत कनिष्ठ नृप सोम१४४कौ, उरथ१४५।२भयो चहुवान ॥

समय समस्त सामंतों के मिलने का फिर जनाना, उस समय में क्रम से आये हुए जयराज, हम्मीर, गंभीर, जयराज का पुत्र अत्तयराज हाडा इन चारों का पृथ्वीराज की आराधना करने को जनाना, बादशाह को प्रथम पकड़ने के पीछे उसी वर्ष मार्गशीर्ष सुदि पञ्चमी को सामन्त और सोमेश्वर के समझाने से कुमर पृथ्वीराज के अर्थ दिल्ली का राज देकर तोमर अनंगपाल का गंगाद्वार जाना, उस समय तक अप्रसिद्ध पृथ्वीराज चरित्र का विस्तार से वर्णन करना, बाकी हम्मीर गंभीर के समाचारों के साथ वर्तमानता कहना, पृथ्वीराज पर्यंत चाहुवाणों के पाटवी भरत वंश के भीतर उसके छोटे भाई उरथ के कुल का कथन करने की प्रतिज्ञा करने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १९ ॥ और आदि से एक सौ अट्ठाईस मयूख हुए ।१२८। विशेष करके ब्रजदेश की और प्राकृत की मिली हुई भाषा कहते हैं. विष्णु, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, गणेश और सरस्वती की स्तुति करके इस ग्रन्थ बनाने का कारण जो उरथवंश उसका अब अधिकता से वर्णन करेंगे ॥ १ ॥ एक सौ चवालीस के नम्बर पर राजा सोम हुआ उस राजा सोम के बड़ा

तृतीय३ प्रधनप्रारम्भपर्यन्तप्राक्समयसमस्तसामन्तसमागमपुनः सूचन१४तदवसरक्रमसमागतजयराज१७०।२हम्मीर१७१।१ गम्भीर१७१।२जायराज्यक्षयराज १७१ हड्डसामन्तचतुष्टय४सौमि१७७ समाराधनसूचन१५म्लेच्छराजप्रथमग्रहणानंतरतद्वर्षसहोवदातपञ्चमी५समयसामन्तसोम १७६ सम्बोधितकुमारपृथ्वीराजा१७७र्थदत्तदिल्लीकतोमराऽनङ्गपालगङ्गाद्वारगमन१६ तदवध्यपरिचितपृथ्वीराज १७७ चरित्रविस्तरवर्णन १७ शेषहम्मीर१७१।१गम्भीर१७१।२ समाचारसङ्गतवर्तिष्यमाणताविख्यापन १८ सौमि१७७ पर्य्यन्तचडासि १पट्टधरभरत १४३।१ वंशवर्णनाऽन्तरतदनुजोरथ १४५।२ कुलक्रमकथनसन्धास्वीकरणमेकोनविंशो१९ मयूखः ॥
॥ १९ ॥ आदितोऽष्टाविंशत्युत्तरशततमः ॥ १२८ ॥

(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

[दोहा]

हरि१कमला२ईश्वर१उमा२, गनपति१बानी२गाइ ॥
अक्खहिँ ग्रंथनिमित्त अब, उरथ१४५।२वंस अधिकाइ॥१॥
सुत कनिष्ठ नृप सोम१४४कौ, उरथ१४५।२भयो चहुवान ॥

समय समस्त सामंतों के मिलने का फिर जनाना, उस समय में क्रम से आये हुए जयराज, हम्मीर, गंभीर, जयराज का पुत्र अक्षयराज हाडा इन चारों का पृथ्वीराज की आराधना करने को जनाना, बादशाह को प्रथम पकड़ने के पीछे उसी वर्ष मार्गशीर्ष सुदि पञ्चमी को सामन्त और सोमेश्वर के समझाने से कुमर पृथ्वीराज के अर्थ दिल्ली का राज देकर तोमर अनंगपाल का गंगाद्वार जाना, उस समय तक अप्रसिद्ध पृथ्वीराज चरित्र का विस्तार से वर्णन करना, बाकी हम्मीर गंभीर के समाचारों के साथ वर्तमानता कहना, पृथ्वीराज पर्यंत चाहुवाणों के पाटवी भरत वंश के भीतर उसके छोटे भाई उरथ के कुल का कथन करने की प्रतिज्ञा करने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १९ ॥ और आदि से एक सौ अट्ठाईस मयूख हुए ।१२८। विशेष करके ब्रजदेश की और प्राकृत की मिलीहुई भाषा कहते हैं. विष्णु, लक्ष्मी, शिव, पार्वती, गणेश और सरस्वती की स्तुति करके इस ग्रन्थ बनाने का कारण जो उरथवंश उसका अब अधिकता से वर्णन करेंगे ॥ १ ॥ एक सौ चवालीस के नम्बर पर राजा सोम हुआ उस राजा सोम के बड़ा

मैंनपुरी बिच मारिलयो वह पुर लग्यो न लवं ॥
करि बहु[2] अनीक गढ सज्जकरि मातुल प्रति लिखि मुक्कलिय ॥
युद्धेद्ध[3]भ्रात तावकं अवनि बंधुन हनि भुग्गत बलिय ॥ ८ ॥
पराजितन पुनि पहुँचि द्रुतहि[4] मुख जाय दिखाये ॥
चूडामनिलखि चैंकि[5] बहुल दल सज्ज बनाये ॥
जनक करन बरज्योहु रुक्यो तदपि न गुनराजस[6] ॥
जंबुक[7] सिंह जगाइ त्वरित बसभूत भयो तस ॥
बलकौं भजाइ अरि मारि बहु बहुल[8] जाइ भीरुक[9] बनिक ॥
निजगेह पकरि लायउ निडर चक्रपानि१४६।१चूडामनिक ।९।
चूडामनि सुभचित्त बदिय अच्छिय गिनि बंधव ॥
इन कुमरन अति गंब्ब प्रकट सुहि मन्नि पराभवं ॥
मातुल कुल बहुमारि इतर बहु ठानि पलायित[12] ॥
मैंनपुरिय निज अमल कियउ कलिभाव[13] जाइ कित ॥
मातुल बहोरि करि कैद इम दर्प अतुल बलि छोरिदिय ॥
कछु दब्बि समस्थलिका निकट राज्य बिरचि उद्धतरहिय ॥१०॥

जिसको मैनपुरी में मारकर वह पुर लेलिया जिसको १ क्षण भी नहीं लगा, बहुतसी२सेना इकट्ठी करके गढ को सभकर मामा को लिखा कि युद्ध के भाई ३ तुम्हारी भूमि को तुम्हारे भाइयों को मारकर बल से भोगते हैं ॥ ८ ॥ हारेहुए लोगों ने पहुंच कर ४ शीघ्र ही अपने मुख जादिखाये जिनको देखकर चूड़ामणि ने ५ क्रोध करके बहुत सेना सभी तब पिता करण ने रोका तोभी ६ रजोगुण के कारण नहीं रुका, जैसे ७ गीदड़ सिंह को जगाकर जल्दी उसके वश में होजाता है तैसे सेना को भगाकर ८ बहुतों को साथ लेजाकर बनिया के समान९कायर बना,जिस चूड़ामणि को चक्रपाणि निर्भय होकर अपने घर में पकड़ लाया ॥ ९ ॥ चूड़ामणि ने शुद्ध चित्त से सम्बन्धी जानकर अच्छी बात कही थी परन्तु इन कुमरों ने अत्यन्त१०गर्व प्रकट करके अपना११निरादर माना इससे मामा के बहुत कुल को मार फर और भी बहुतों को१२भगादिया और मैनपुरी में अपना अमल किया सो१३ कलियुग का भाव कहां जावे अर्थात् अच्छा उपदेश करने पर बुरा मानकर उन कलियुगियों ने मामा के कुलको मारकर मामा की भूमि लेकर फिर मामा को कैद कर बहुत घमण्ड से उसको छोड़ दिया और समस्थली के समीप राज्य रचकर अनम्र होकर रहे ॥ १० ॥

मैंनपुरी विच मारिलयो वह पुर लग्यो न लवं ॥
करि बहु अनीक गढ सज्जकरि मातुल प्रति लिखि मुक्कलिय ॥
जुद्धेछ्छ्रात तावकं अवनि बंधुन हनि भुग्गत बलिय ॥ ८ ॥
पराजितन पुनि पहुँचि द्रुतहि मुख जाय दिखाये ॥
चूडामनिलखि चौंकि बहुल दल सज्ज बनाये ॥
जनक करन बरज्योहु रुक्यो तदपि न गुनराजस ॥
जंबुक सिंह जगाइ त्वरित बसभूत भयो तस ॥
बलकौं भजाइ अरि मारि बहु बहुल जाइ भीरुक बनिक॥
निजगेह पकरि लायउ निडर चक्रपानि१४६।१चूडामनिक ।९।
चूडामनि सुभचित्त बदिय अच्छिय गिनि बंधव ॥
इन कुमरन अति गंब्ब प्रकट सुहि मन्नि पराभवं ॥
मातुल कुल बहुमारि इतर बहु ठानि पलायित ॥
मैंनपुरिय निज अमल कियउ कलिभाव जाइ कित ॥
मातुल बहोरि करि कैद इम दर्प अतुल बलि छोरिदिय ॥
कछु दब्बि समस्थलिका निकट राज्य बिरचि उद्धतरहिय ॥१०॥

जिसको मैनपुरी में मारकर वह पुर लेलिया जिसको १ क्षण भी नहीं लगा, बहुतसी२सेना इकट्ठी करके गढ को सझकर मामा को लिखा कि युद्ध के भाई ३ तुम्हारी भूमि को तुम्हारे भाइयों को मारकर बल से भोगते हैं ॥ ८ ॥ हारेहुए लोगों ने पहुंच कर ४ शीघ्र ही अपने मुख जादिखाये जिनको देखकर चूड़ामणि ने ५ क्रोध करके बहुत सेना सझी तब पिता करण ने रोका तोभी ६ रजोगुण के कारण नहीं रुका, जैसे ७ गीदड़ सिंह को जगाकर जल्दी उसके वश में होजाता है तैसे सेना को भगाकर ८ बहुतों को साथ लेजाकर बनिया के समान९कायर बना,जिस चूड़ामणि को चक्रपाणि निर्भय होकर अपने घर में पकड़ लाया ॥ ९ ॥ चूड़ामणि ने शुद्ध चित्त से सम्बन्धी जानकर अच्छी बात कही थी परन्तु इन कुमरों ने अत्यन्त१०गर्व प्रकट करके अपना११निरादर माना इससे मामा के बहुत कुल को मारकर और भी बहुतों को१२भगादिया और मैनपुरी में अपना अमल किया सो१३ कलियुग का भाव कहां जावे अर्थात् अच्छा उपदेश करने पर बुरा मानकर उन कलियुगियों ने मामा के कुलको मारकर मामा की भूमि लेकर फिर मामा को कैद कर बहुत घमण्ड से उसको छोड़ दिया और समस्थली के समीप राज्य रचकर अनम्र होकर रहे ॥ १० ॥

॥ १४ ॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥ १५ ॥

(दोहा)

मैंनपुरिय इत हुव महिप, चक्रपानि१४६।१रनचंड ॥
कियउ राज्य निज खग्गकरि, अंतरवेदि अखंड ॥ १६ ॥
जँहँ चालुक बलराजको, सुत घुग्घुल कहुँ जुद्ध ॥
मन असंक अंमज मर्यो, मन्न्यौं पितर प्रबुद्ध ॥ १७ ॥

(षट्पात्)

कालंजर नृप कन्ह वंस पामार विरोचन ॥
तनया स्यामा१४६।१तासैं धरनिनायक किन्नी धँन ॥
अनुज अवरदेव१४६।२सन भये अवरा५७।१संभर भुव ॥
गोष्टपाल१४६।३सनगुष्टवाल५८।२जाम१४६।४जजाम५९।३हिहुव॥
कुल बकुट१४६।५जात वउडा६०।४कहत ॥
उरथ१४५।२वंस चउ४भेद इम ॥
नृप चक्रपानि१४६।१मुख्यसु निडर, तत्थ रहिय जयपाइतिम।१८।

सौराष्ट्री
दोहा

बहुतहि राज्य वढाइ, रन अनेक जित्ति रु रासिक ॥
स्यामा१४६।१सह सम लाइ,चक्रपानि१४६।१सुरपुरचल्यो।१९

लिखने के लिये मूल में दो षट्पदी छन्द के लिखने की जगह खाली छोड़ दी है) १ विना सन्तान२उस विरोचन की स्यामा नामक पुत्री को ३ भूपति ने ४ स्त्री बनाई ५ चहुवाण ६ उत्पन्न(जाम से उत्पन्न हुए सो जाम ही कहलाये) ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ रागद्वेषादि रहित

॥ १४ ॥

॥

॥

॥

॥

॥

॥ १५ ॥

(दोहा)

मैंनपुरिय इत हुव महिप, चक्रपानि१४६।१रनचंड ॥
कियउ राज्य निज खग्गकरि, अंतरवेदि अखंड ॥ १६ ॥
जँहँ चालुक बलराजको, सुत घुग्घुल कहुँ जुद्ध ॥
मन असंक अंपज मर्‍यो, मन्न्यौं पितर पबुद्ध ॥ १७ ॥

(षट्पात्)

कालंजर नृप कन्ह वंस पामार निरोचन ॥
तनया स्यामा१४६।१तासैं धरँनिनायक किन्नी धँन ॥
अनुज अवरदेव१४६।२सन भये अवरा५७।१संभर भुव ॥
गोष्टपाल१४६।३सनगुठ्ठवाल५८।२जाम१४६।४जजाम५९।३हिहुव॥
कुल बकुट१४६।५जात वउडा६०।४कहत ॥
उरथ१४५।२वंस चउ४भेद इम ॥
नृप चक्रपानि१४६।१मुख्यसु निडर, तत्थ रहिय जयपाइतिम।१८।

सौराष्ट्री

दोहा

बहुतहि राज्य वढाइ, रन अनेक जित्ति रु रासिक ॥
स्यामा१४६।१सह सम्म लाइ, चक्रपानि१४६।१सुरपुरचल्यो१९

लिखने के लिये मूल में दो षट्पदी छन्द के लिखने की जगह खाली छोड़ दी है) १ बिना सन्तान२उस विरोचन की श्यामा नामक पुत्री को ३ [illegible]पानि ने ४ स्त्री बनाई ५ चहुवाण ६ उत्पन्न(जाम से उत्पन्न हुए सो जाम ही कहलाये) ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ ७ रागद्वेषादि रहित

षट्पात्

नृपति देवकीनंद१४७ सुमति हुव चक्रपानि१४६।१ सुत ॥
पुंगल नृप प्रतिहार देव तनया व्याह्यो द्रुत ॥
निपुन सुभद्रा१४७।१ नाम सबन गुन रूप सिराहिय ॥
भुग्गि मिथुन२ चिर भुम्मि चित्त छोरन तिहिं चाहिय ॥
जसोदानंद१४८निज सूनु जब कुमर पट्ट अभिसिक्त किय
बन बिच बिताय निज आयु वपु जोगरीति दोउनरतजिय॥२८॥

दोहा

नृपति जसोदानंद१४८हुव, अति बल रन उद्दाम ॥
सत्तलपुर नृप संभुकै, तनया हुव इक ताम ॥ २९ ॥
जद्दवकुल अभिजात३ जो, नाम सुभद्रा१४८।१ नारि ॥
व्याही भूपति निगमबिधि, बहुधन त्याग बिथारि ॥ ३० ॥

सचरणगद्यम्

राजा जसोदानंद१४८ हू बुध बिप्र बेनीदत्त१ कौं बीसलक्ख २००००००पौरानिक प्रतापकौं पंच५ राजतीमुद्रा दई॥ अरु बंदी धर्मदत्त ३ कौं पंच ५ सासन दै रु कलिमैं कमनीय क्रित्ति लई ॥

सो जसोदानन्द १४८ इंद्रप्रस्थके अधीस तोमर भुवनपाल सौं कलहकरि बहुत बैरिनकी बधूनके बलय बिहीन बाहु बिरचि

---

*महमूद के प्रसिद्ध उमरावों को मारा ॥२७॥ १ जोड़े से बहुत काल तक२ अभिषेक किया ॥ २८ ॥ २९ ॥३ पैदा हुआ४ वेदविधि से ॥ ३० ॥५ पण्डित ६ चारण ७ चांदी के रुपये ८ सुन्दर ९ स्त्रियों के १० कङ्कण (चूड़ियां)

*मांडू के बादशाह महमूद ने विक्रमी सम्बत् १५०५ में और मालवी बादशाह सुलतान महमूद खिलजी ने विक्रमी सम्बत् १४९९ में मेवाड़ पर चढाई की थीं सो महाराणा कुम्भा ने मांडू के बादशाह को तो कैद करलिया, और मालवी बादशाह को पराजित करके भगादिया. इस वृत्तान्त को कविराजा श्यामलदास ने तवारीख फिरस्ता आदि का प्रमाण देकर लिखा है. सो देखो वीरविनोद नामक मेवाड़ की तवारीख के ३२० पत्र में. इससे सिद्ध है कि महमूद के समय में बुधसेन नहीं था क्योंकि महमूद के समय में मेवाड़ पर महाराणा कुम्भा राज करते थे और उनके समय में बूंदी पर राव शांडा था तो बुधसेन का महमूद के समय में होना असंभव है परन्तु ग्रंथकर्ता ने बड्वाभाटों की पोथियों पर विश्वास करलिया होवेगा ॥

षट्पात्

नृपति देवकीनंद१४७ सुमति हुव चक्रपानि१४६।१ सुत ॥
पुंगल नृप प्रतिहार देव तनया व्याह्यो द्रुत ॥
निपुन सुभद्रा१४७।१ नाम सबन गुन रूप सिराहिय ॥
भुग्गि मिथुन२ चिर भुम्मि चित्त छोरन तिहिं चाहिय ॥
जसोदानंद१४८निज सूनु जब कुमर पट्ट अभिसिक्त किय
बन बिच बिताय निज आयु वपु जोगरीति दोउन२तजिय॥२८॥

दोहा

नृपति जसोदानंद१४८हुव, अति बल रन उद्दाम ॥
सत्तलपुर नृप संभुकै, तनया हुव इक ताम ॥ २९ ॥
जद्दवकुल अभिजात जो, नाम सुभद्रा१४८।१ नारि ॥
व्याही भूपति निगमबिधि, बहुधन त्याग बिथारि ॥ ३० ॥

सचरणगद्यम्

राजा जसोदानंद१४८ हू बुध बिप्र बेनीदत्त१ कौं बीसलक्ख २००००००पौरानिक प्रतापकौं पंच५ राजतीमुद्रा दई॥
अरु बंदी धर्मदत्त ३ कौं पंच ५ सासन दै रु कलिमैं कमनीय
क्रित्ति लई ॥
सो जसोदानन्द १४८ इंद्रप्रस्थके अधीस तोमर भुवनपाल सौं
कलहकरि बहुत बैरिनकी बधूनके बलय बिहीन बाहु बिरचि

---

*महमूद के प्रसिद्ध उमरावों को मारा ॥२७॥ १ जोड़े से बहुत काल तक २ अभिषेक किया ॥ २८ ॥ २९ ॥३ पैदा हुआ ४ वेदविधि से ॥ ३० ॥५ पण्डित ६ चारण ७ चांदी के रुपये ८ सुन्दर ९ स्त्रियों के १० कङ्कण (चूड़ियां)

---

*मांडू के बादशाह महमूद ने विंक्रमी सम्बत् १५०५ में और मालवी बादशाह सुलतान महमूद खिलजी ने विंक्रमी सम्बत् १४९९ में मेवाड़ पर चढाई की थीं सो महाराणा कुम्भा ने मांडू के बादशाह को तो कैद करलिया, और मालवी बादशाह को पराजित करके भगादिया. इस वृत्तान्त को कविराजा श्यामलदास ने तवारीख फिरस्ता आदि का प्रमाण देकर लिखा है. सो देखो वीरविनोद नामक मेवाड़ की तवारीख के ३२० पत्र में. इससे सिद्ध है कि महमूद के समय में बुधसेन नहीं था क्योंकि महमूद के समय में मेवाड़ पर महाराणा कुम्भा राज करते थे और उनके समय में बूंदी पर राव शांडा था तो बुधसेन का महमूद के समय में होना असंभव है परन्तु ग्रंथकर्ता ने बड़वाभाटों की पोथियों पर विश्वास करलिया होवेगा ॥

सप्तसहँस७०००सुवर्णको[1] संघात दयो॥

राजा नंदनंद१४९सपत्नीकही[2] पंच५बेर श्रीजगदीसकी यात्रा करि छट्ठी६बेर जावत श्री कासीमहापुरीमैं देह तज्यो ॥

अरु भानुमती १४९।१हू सप्त७कीलमैं[3] स्नानकरि परलोकहू मैं स्वामीको सहवास भज्यो ॥३४॥

दोहा

भूपति केसवराज १५०भो, मदनपुरी नय[4] मंडि ॥

अंहति[5] मग्गन[6] इँभ्य[7] करि, खग्गन अरिगन खंडि॥३५॥

सचरणगद्यम्

केसवराज१५०रामपुरके नरेस रट्ठोर भीमसेनकी कन्या इंदुमती १५०।१बिबाहिलई ॥

तामैं राजकुमार मोहन१५१को जन्महोत विप्रनकौं अनेक अपूर्व समृद्धि दई ॥

केसवराज१५०तो विजयपुरके नरेस प्रामार चंद्रराजसौं संग्रामकरि वीरसज्जामैं सोवतभयो ॥

अरु मोहन१५१नरेश अभिषिक्त[8] होइ पंचासिख[9] पट्ट पाय अंतर्वेदीको आधिपत्य[10] लयो ॥३६॥

(दोहा)

पट्टनि चालुकभीमको, लघुसुत चंद्र तृतीय३ ॥

ताके वंस कटारिया, चालुक बाजिग वलीय ॥३७॥

भ्रात बडो या चंद्रको, गहिल कर्ण नृप जास॥

बसि गर्भहिं[11] बारह१२बरस, सिद्धराज सुत आस ॥ ३८ ॥

मैंहिला[12] आनी मोहन१५१हु, विजया१५१।१नाम बिबाहि॥

१सोलह मासे का एक सुवर्ण होता है ऐसे सुवर्णों का समूह दिया२स्त्री सहित ३ अग्नि में ॥ ३४ ॥ ४ नीति५दान से ६ याचक लोगों को७ धनवान् किये ॥ ३५ ॥ ८ अभिषेक कराके ९ सिंहासन १० मालिकपन ॥३६॥३७॥ ११गर्भ में॥३८॥१२ स्त्री को

सप्तसहँस७०००सुवर्णाको संघात दयो॥
राजा नंदनंद१४९सपत्नीकही पंच५वेर श्रीजगदीसकी यात्रा
करि छट्टा६वेर जावत श्री कासीमहापुरीमैं देह तज्यो ॥
अरु भानुमती १४९।१हू सप्त७कीलमैं स्नानकरि परलोकहू
मैं स्वामीको सहवास भज्यो ॥३४॥

दोहा

भूपति केसवराज १५०भो, मदनपुरी नय मंडि ॥
अंहति मग्गन इंभ्य करि, खग्गन अरिगन खंडि॥३५॥

सचरणगद्यम्

केसवराज१५०रामपुरके नरेस रठोर भीमसेनकी कन्या इंदु-
मती १५०।१बिबाहिलई ॥
तामैं राजकुमार मोहन१५१को जन्महोत बिप्रनकौं अनेक
अपूर्व सम्रद्धि दई ॥
केसवराज१५०तो विजयपुरके नरेस प्रामार चंद्रराजसौं संग्रा-
मकरि वीरसज्जामैं सोवतभयो ॥
अरु मोहन१५१नरेश अभिषिक्त होइ पंचासिख पट्टपाय अंत-
वेंदीको आधिपंत्य लयो ॥३६॥

(दोहा)

पट्टनि चालुकभीमको, लघुसुत चंद्र तृतीय३ ॥
ताके बंस कटारिया, चालुक बाजिग वलीय ॥३७॥
भ्रात बडो या चंद्रको, गहिल कर्ण नृप जास॥
बसि गर्भहि बारह१२बरस, सिद्धराज सुत आस ॥ ३८ ॥
महिला आनी मोहन१५१हु, विजया१५१।१नाम बिबाहि॥

१सोलह मासे का एक सुवर्ण होता है ऐसे सुवर्णों का समूह दिया२स्त्री सहित ३ अग्नि में ॥ ३४ ॥ ४ नीति५दान से ६ याचक लोगों को७ धनवान् किये ॥ ३५ ॥ ८ अभिषेक कराके ९ सिंहासन १० मालिकपन ॥३६॥३७॥ ११गर्भ में॥३८॥१२ स्त्री को

सोमनाथ सिवकौं सतत, भजत भयो यह भूप॥
किन्नैं भक्ति अनन्यकरि, ईस कृपा अनुरूप ॥ ४४ ॥

(सचरणगद्यम्)

चक्रपानि१४६।१सौं गोपाल१५३पर्यंत आठ८हीपीढिनमैं केही प्रवीर अंतर्वेदी मैं बढती बढती आन फेरतही गये ॥

अरु कालपीके जैद्दव करनके समयसौं अद्यावधि बंधुनके विनासको१ अरु मदनपुरीके जयलेकोरबैर कालनमैं छिद्र हेरतही गये।

गोपाल१५३।१के समयपर्यंत चंडासिके कुलकौं चंडही जानि कालपीके नरेस जद्दव प्रतापसेन मदनपुरीको राज्यही दैनकरि करतोयाके पारसौं कोऊ म्लेच्छराजकौं बुलावन अपनौं सोदर वीरसेन पठायो ॥

सो जावतही सैंतालीस सहस्र४७०००सेना समेत सज्जकराइ समस्थलीपर आघात डारन तत्कालही करतोया लंघि आर्यावर्त की सीमामैं लायो॥ ४५ ॥

लंघतही म्लेच्छनको ग्राम लुट्टनको लोभकरि ग्रामनपैं प्रपात डारतभयो ॥

ताकौं जद्दव बीरसेन ऐसैं उत्पात कियैंतो अनेकआर्य अंतर्वेदीके सहाय जैहैं प्रत्यागंमहू दुराप परिजैहैं ऐसैं कहि निवारतभयो॥

तबतो वे म्लेच्छ दरकुंचन अंतर्वेदीकोही उद्देस करि चलाये॥

अरु पुंगलके अधीस प्रतिहार महनसिंह १ पट्टालयके नरेस बिंदबलभद्र२ लाहोरके अधिराज गोभिल विजयपाल३ कंगूरके भूप जावलकर्मसेन४ श्रीनगरके महीप टंकचाहुवाण रंगमल्ल५प्रमुख अनेक आर्यावर्तके छितिपाल रोकतभये तथापि तिनकौं जीति अग्गही आये ॥ ४६ ॥

---

१ निरन्तर २ महादेव ने ३ यादव वंश के क्षत्रिय ४ वैर पीछा लेने में ५ चहुवाण के कुल को ६ भयंकर ही ७ मैनपुरी को ८ अटक नदी के ९ छोटा भाई१०अन्तर्वेदी ॥ ४५ ॥११पीछा जाना १२दुर्लभ होजावेगा ॥ ४६ ॥

सोमनाथ सिवकौं[1] सतत, भजत[2] भयो यह भूप॥
किन्नैं भक्ति अनन्यकरि, ईस कृपा अनुरूप ॥ ४४ ॥

(सचरणागद्यम्)

चक्रपानि१४६।१सौं गोपाल१५३पर्यंत आठ८ ही पीढिनमैं केही प्रबीर अंतर्वेदी मैं बढती बढती आन फेरतही गये ॥

अरु कालपीके जैद्दव[3] करनके समयसौं अद्यावधि बंधुनके विनासको१ अरु मदनपुरीके जयवेको२ बैर[4] कालनमैं छिद्र हेरतही गये।

गोपाल१५३।१के समयपर्यंत चंडासिके कुलकौं[5] चंडही[6] जानि कालपीके नरेस जद्दव प्रतापसेन मदनपुरीको[7] राज्यही दैनकरि करतोयाके[8] पारसौं कोऊ म्लेच्छराजकौं बुलावन अपनौं सोदर[9] वीरसेन पठायो ॥

सो जावतही सैंतालीस सहस्र४७०००सेना समेत सज्जकराइ समरस्थलीपर आघात डारन तत्कालही करतोया लंघि आर्यावर्त की सीमामैं लायो॥ ४५ ॥

लंघतही म्लेच्छनको ग्राम लुट्टनको लोभकरि ग्रामनपैं प्रपात डारतभयो ॥

ताकौं जद्दव बीरसेन ऐसैं उत्पात कियैंतो अनेकआर्य अंतर्वेदीके सहाय जैहैं प्रत्यागम[11]हू दुराप[12] परिजैहैं ऐसैं कहि निवारत भयो॥

तबतो वे म्लेच्छ दरकुंचन अंतर्वेदी[10]कोही उद्देस करि चलाये॥

अरु पुंगलके अधीस प्रतिहार महनसिंह १ पट्टालयके नरेस बिंदबलभद्र२ लाहोरके अधिराज गोभिल विजयपाल३ कंगूरके भूप जावलकर्मसेन४ श्रीनगरके महीप टंकचाहुवाण रंगमल्ल५प्रमुख अनेक आर्यावर्त्तके छितिपाल रोकतभये तथापि तिनकौं जीति अग्गही आये ॥ ४६ ॥

---

१ निरन्तर २ महादेव ने ३ यादव वंश के क्षत्रिय ४ वैर पीछा लेने में ५ चहुवाण के कुल को ६ भयंकर ही ७ मैनपुरी को ८ अटक नदी के ९ छोटा भाई १०अन्तर्वेदी ॥ ४५ ॥ ११पीछा जाना १२दुर्लभ होजावेगा ॥ ४६ ॥

*भजिय कंप तिहिंबेर भुव, **भीरु लजिय गतभान ॥
ललचि छये कौतुक लखन, ***बिबुधन व्योम विमान ॥५०॥
बीरसेन जद्दव१ बहुरि, इक जवनेस वजीर२ ॥
संभर हनि बहुसेनसह, पहुँच्यो पार मबीर ॥ ५१ ॥
देह बिलग्गे घाय दस१०फोजन या बिधि फारि ॥
कढ्यो नृपति हनि बहु कटक, तुमुल भारि तरवारि ॥५२॥
स्वीय सकल सूर१ रु सचिव२, परिकर इतर३उपेत ॥
प्रथम कढ्ढि अवरोध पहु, गो दक्खिन हरहेत ॥ ५३ ॥

षट्पात्

गोदाके उपकंठ[1] नगर आसेर निवेसनं[2] ॥
मंकुवानं[3] हम्मीर धरत जँहँ छत्र धराधनं[4] ॥
पहुँचि तत्थ गोपाल१५३ मारि हम्मीर महीपति ॥
अमल ठानि अप्पन रु किये इतरहु अधीन कति ॥
कढ़ि सेस त्रस्त हम्मीरकुल तबहि देस आनर्त गय ॥
मोरवी मारि कट्टिन लहि रु तत्थ रहिय सब बीतभय ५४

दोहा

इत गोपाल१५३ नरेस यह,अधिप भयो आसेर ॥
किय अपुब्ब गिरिदुर्ग इक१, जो कबहु न व्है जेर॥५५॥
वह तबतैं आसेरगढ, बँहुधा हुव बिख्यात ॥
साकंभर तँहँ थप्पि सिव, बिबिध दये बसु ब्रात ॥ ५६ ॥
इक१ छत्र लै वह अवनि, उरथ१४५ बंस अधिराजं ॥
प्रतप्यो जँहँ गोपल१५३ पहु, सजि बल अतुल समाज ॥५७॥

फौज के बीच में घोड़े उठाये ॥ ४९ ॥ * पृथिवी धूजने लगी ** कायर बेचेत होकर लज्जित हुए *** देवताओं के ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १ गोदावरी नदी के नजीक २ आसेरगढ बसा ३ झाला ४ राजा ५ बाकी का भय से धूजता हुआ हम्मीर का कुल आनर्त देश में गया और मोरवी नगर में काठियों को ६ मारकर वहां निर्भय रहनेलगा ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ७ विशेष करके आसेरगढ़ जभीसे ज्यादा प्रसिद्ध हुआ ८भूमि का ९मालिक हुआ ॥५७॥

*भजिय कंप तिहिंबेर भुव, **भीरु लजिय गतभान ॥
ललचि छये कौतुक लखन, ***बिबुधन व्योम विमान ।५०।
बीरसेन जद्दव१ बहुरि, इक जवनेस वजीर२ ॥
संभर हनि बहुसेनसह, पहुँच्यो पार प्रबीर ॥ ५१ ॥
देह बिलग्गे घाय दस१०फोजन या बिधि फारि ॥
कढ्यो नृपति हनि बहु कटक, तुमुल झारि तरवारि ।५२।
स्वीय सकल सूर१ रु सचिव२, परिकर इतर३उपेत ॥
प्रथम कढ्ढि अवरोध पहु, गो दक्खिन हरहेत ॥ ५३ ॥

षट्पात्

गोदाके उपकंठ[1] नगर आसेर निवेसन[2] ॥
मंकुवान[3] हम्मीर धरत जँहँ छत्र धराधन[4] ॥
पहुँचि तत्थ गोपाल१५३ मारि हम्मीर महीपति ॥
अमल ठानि अप्पन रु किये इतरहु अधीन कति ॥
कढि सेस[5] त्रस्त हम्मीरकुल तबहि देस आनर्त गय ॥
मोरवी मारि काठिन[6] लहि रु तत्थ रहिय सब बीतभय ५४

दोहा

इत गोपाल१५३ नरेस यह,अधिप भयो आसेर ॥
किय अपुब्ब गिरिदुर्ग इक१, जो कबहु न व्है जेर॥५५॥
वह तबतैं आसेरगढ, बँहुधा हुव बिख्यात ॥
साकंभर तँहँ थप्पि सिव, बिबिध दये बसु ब्रात ॥ ५६ ॥
इक१ छत्र लै वह अवनि, उरथ१४५ बंस अधिराज[8] ॥
प्रतप्यो जँहँ गोपल१५३ पहु, सजि बल अतुल समाज ॥५७॥

फौज के बीच में घोड़े उठाये ॥ ४६ ॥ * पृथिवी धूजने लगी ** कायर बेचेत होकर लज्जित हुए *** देवताओं के ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १ गोदावरी नदी के नजीक २ आसेरगढ बसा ३ झाला ४ राजा ५ बाकी का भय से धूजता हुआ हम्मीर का कुल आनर्त देश में गया और मोरवी नगर में काठियों को ६ मारकर वहां निर्भय रहनेलगा ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ७ विशेष करके आसेरगढ़ जभीसे ज्यादा प्रसिद्ध हुआ८भूमि का९मालिक हुआ॥५७॥

यौ ४ रसाऽबरा ५७।१ दिचतुष्क ४ चाहुवाणभेदाविर्भवन तत्तद्वीर्य्यभगवतिसिंह १ समरसिंहा २ऽऽद्युत्कर्षकथन १० चाक्रपाणिदेवकीनन्द १४७ प्रातिहारीसुभद्रा १४७।१ पाणिपीडन १ समभिषिक्तकुमारयशोदानन्द१४८तद्दम्पती१४७योगरीतिवर्ष्मविहान १२ यशोदानन्दयादवीसुभद्रा १४८।१ बिबहन १३ तन्महोदाराभिधान १४तोमरभुवनपालसङ्गरयशोदानन्दवीरशय्याशयन १५ सुभद्रा १४८।१ सहगमन १६ समात्तभद्रासनतत्कुमारनन्दनन्द १४९ त्रासपलायिततोमरभुवनपालस्वपुत्रीभानुमती१४९।१ परिणायन १७ कृतवैरशुद्धिनन्दनन्द १४९ स्वराज्यवृद्धीकरण १८ कुमारकेशवराज१५० जन्मोत्सवसुवर्णसहस्रसप्तक ७००० बितरण १९पश्चाद्वाराणसीसंहननसंस्थान २० भानुमती १४९।१सहगमन१४९चण्डासिराजकेशवराज१५०राष्ट्रकूटीन्दुमती१५०।१ पाणिग्रहण२२पश्चात्पामारचन्द्रराजरणकेशवराज १५० मरण २३ प्राप्तराज्यतत्कुमारमोहन १५१वैसवंशीयविजयाविवहन २४ कृतराज्यतद्दम्पतिसंस्थान २५ मौहनिससुद्रराज १५२ यादवीगङ्गा१५२।१ पयमन २६ भुक्तवैभवसहगामिनीगङ्गा १५२।

प्रथम ही चार भेद होना, और उन उनके वीर्य भगवतसिंह समरसिंह आदि का उत्कर्ष कहना, चक्रपाणि के पुत्र देवकीनन्द का प्रातिहारी सुभद्रा से विवाह करना, कुमर यशोदानन्द का अभिषेक करके उन स्त्रीपुरुष का योगरीति से शरीर छोडना, यशोदानन्द का यादवी सुभद्रा को विवाहना, उस बड़े नामवाले का तोमर भुवनपाल के युद्ध में यशोदानन्द का काम आना, और सुभद्रा का सती होना, उसके कुमर नन्दनन्द का सिंहासन ग्रहण करने के भय से भागकर तंवर भुवनपाल का अपनी पुत्री भानुमती को विवाहदेना, इस प्रकार वैर की शुद्धि करके नन्दनन्द का अपने राज्य की वृद्धि करना, कुमार केशवराज के जन्मोत्सव पर सात हजार सोने की मोहरें बांटना, जिस पीछे काशी में शरीर छोडना, भानुमती का सती होना, चहुवाणों के राजा केशवराज का राठोड़ी इन्दुमती से विवाह करना, जिस पीछे पंवार चन्द्रराज के युद्ध में मारा जाना, उसके कुमार मोहन का राज्य प्राप्त करके वैस वंश की विजया को विवाहना, और राज्य करके

यो ४ रसाऽब्धरा ५७। १ दिचतुष्क ४ चाहुवाणभेदाविर्भवन ९ तत्तद्वीज्यभगवत्सिंह १ समरसिंहा २ऽऽद्युत्कर्षकथन १० चाक्रपाणिदेवकीनन्द १४७ प्रातिहारीसुभद्रा १४७।१ पाणिपीडन ११ समभिषिक्तकुमारयशोदानन्द १४८ तद्दम्पति १४७ योगरीतिवर्ष्मविहान १२ यशोदानन्दयादवीसुभद्रा १४८।१ विवहन १३ तन्महोदार्याभिधान १४ तोमरभुवनपालसङ्गरयशोदानन्दवीरशय्याशयन १५ सुभद्रा १४८।१ सहगमन १६ समात्तभद्रासनतत्कुमारनन्दनन्द १४९ त्रासपलायिततोमरभुवनपालस्वपुत्रीभानुमती १४९।१ परिणायन १७ कृतवैरशुद्धिनन्दनन्द १४९ स्वराज्यवृद्धीकरण १८ कुमारकेशवराज १५० जन्मोत्सवसुवर्णसहस्रसप्तक ७००० वितरण १९ पश्चाद्वाराणसीसंहननसंस्थान २० भानुमती १४९।१ सहगमन १४९ चवाणासिराजकेशवराज १५० राष्ट्रकूटीन्दुमती १५०।१ पाणिग्रहण २१ पश्चात्प्रामारचन्द्रराजरणकेशवराज १५० मरण २३ प्राप्तराज्यतत्कुमारमोहन १५१ वैसवंशीयविजयाविवहन २४ कृतराज्यतद्दम्पतिसंस्थान २५ सौहनिसमुद्रराज १५२ यादवीगङ्गा १५२।१ पयमन २६ भुक्तवैभवसहगामिनीगङ्गा १५२।

प्रथम ही चार भेद होना, और उन उनके वीर्य भगवत्सिंह समरसिंह आदि का उत्कर्ष कहना, चक्रपाणि के पुत्र देवकीनन्द का प्रातिहारी सुभद्रा से विवाह करना, कुमर यशोदानन्द का अभिषेक करके उन स्त्रीपुरुष का योगरीति से शरीर छोडना, यशोदानन्द का यादवी सुभद्रा को विवाहना, उस बड़े नामवाले का तोमर भुवनपाल के युद्ध में यशोदानन्द का काम आना, और सुभद्रा का सती होना, उसके कुमर नन्दनन्द का सिंहासन ग्रहण करने के भय से भागकर तंवर भुवनपाल का अपनी पुत्री भानुमती को विवाह देना, इस प्रकार वैर की शुद्धि करके नन्दनन्द का अपने राज्य की वृद्धि करना, कुमार केशवराज के जन्मोत्सव पर सात हजार सोने की मोहरें बांटना, जिस पीछे काशी में शरीर छोडना, भानुमती का सती होना, चहुवाणों के राजा केशवराज का राठोड़ी इन्दुमती से विवाह करना, जिस पीछे पंवार चन्द्रराज के युद्ध में मारा जाना, उसके कुमार मोहन का राज्य प्राप्त करके बैस वंश की विजया को विवाहना, और राज्य करके

रह्यो प्रथम कुल रावरो, दिल्ली अंकित देस१ ॥ १ ॥
पौंड्र १ सहित कर्णाट २ पुनि, आक्रामि रहिय अधीस ॥
बलि साकंभर३ बसि बनैं, अंतरबेदी४ ईस ॥ २ ॥
अब गोदा१ उपकंठ५ रचि, अतुल दुग्ग आसेर ॥
निडर तत्थ गोपाल १५३ नृप, बिजयकिन्न बहुबेर ॥ ३ ॥
लच्छी१५३।१तँहँ गोपाल१५३सौं, जन्यौं कुमर अभिजात ॥
भौमचंद्र१५४ तस नाम भुव, काव्यन विदित कहात॥ ४ ॥
नाम चंद्रसेन१५४हु नियत, अपर याहिको आहि ॥
सस्त्र१सास्त्र२सिक्ख्यो सकल, आगमं समुझि उमाहि ॥५॥
अनिहलपट्टनिनैर इत, जनपद गुज्जर जत्थ ॥
गहिलकर्ण चालुक्यकै, सुत जो कहिय समत्थ ॥ ६ ॥
सोहु जनक जब स्वर्ग गो, भो तब पट्टनि भूप ॥
जास नाम जयसिंह जिहिं, राज्य करिय अनुरूप ॥ ७ ॥
क्रम पढि मात्र कलंदिका, जोगरीति सब जानि ॥
सिद्धराज यह नाम जिहिं, पायो उचित प्रमानि ॥ ८ ॥
जहँ सक बिक्रमराजको, ससि चउ बेद४४१समत्त ॥
जनम तत्थ जयसिंहको नृप जानहु अनुरत्त ॥ ९ ॥

का कुल पहिले दिल्ली से चिन्हित होकर रहा ॥ १ ॥ फिर पौण्ड्र देश, फिर कर्णाट देश को घेरकर उनके स्वामी रहे. फिर सांभर में रहे फिर अन्तर्वेद के स्वामी बने ॥ २ ॥ और अभी१गोदावरी नदी के २ समीप बडा आसेर गढ बनाकर रहे. वहां निडर गोपाल ने बहुत बेर विजय किया ॥ ३ ॥ तहां लच्छी राणी ने गोपाल से ३ कुलीन पुत्र जना ॥४ ॥ ४शास्त्रों को समझ कर प्रसन्न हुआ ॥ ५ ॥ गुजरात देश में अनिहलपट्टनि पुर में इधर गहिल करण नामक सोलंखी के समर्थ पुत्र कहा ॥ ६ ॥ सोभी पिता के स्वर्ग जाने पर पट्टन का राजा हुआ जिसका जयसिंह नाम था उसी नाम के सदृश राज्य किया ॥ ७ ॥ क्रम से ५ सब विद्या पढ़कर जोग की सब रीतियां जानकर जिसने सिद्धराज यह उचित नाम पाया ॥ ८ ॥ जयसिंह का जन्म विक्रमादित्य के शक में, ४४१ के ६ सम्वत् में हुआ सो हे राजा रामसिंह प्रीति सहित जानो ॥ ९ ॥

रह्यो प्रथम कुल रावरो, दिल्ली अंकित देस१ ॥ १ ॥
पौंड्र १ सहित कर्णाट २ पुनि, आक्रमि रहिय अधीस ॥
बलि साकंभर३ बसि बनैं, अंतरबेदी४ ईस ॥ २ ॥
अब गोदा उपकंठ५ रचि, अतुल दुग्ग आसेर ॥
निडर तत्थ गोपाल १५३ नृप, बिजयकिन्न बहुबेर ॥ ३ ॥
लच्छी१५३।१तँहँ गोपाल१५३सौं, जन्यौं कुमर अभिजातं ॥
भौमचंद्र१५४ तस नाम भुव, काव्यन बिदित कहात॥ ४॥
नाम चंद्रसेन१५४हु नियत, अपर याहिको आहि ॥
सस्त्र१सास्त्र२सिक्ख्यो सकल, आगमँ समुझि उमाहि ॥५॥
अनिहलपट्टनिनैंर इत, जनपद गुज्जर जत्थ ॥
गहिलकर्ण चालुक्यकै, सुत जो कहिय समत्थ ॥ ६ ॥
सोहु जनक जब स्वर्ग गो, भो तब पट्टनि भूप ॥
जास नाम जयसिंह जिहिं, राज्य करिय अनुरूप ॥ ७ ॥
क्रम पढि मात्र कलादिका, जोगरीति सब जानि ॥
सिद्धराज यह नाम जिहिं, पायो उचित प्रमानि ॥ ८ ॥
जहँ सक बिक्रमराजको, ससि चउ बेद४४१समत्तं ॥
जनम तत्थ जयसिंहको नृप जानहु अनुरत्त ॥ ९ ॥

का कुल पहिले दिल्ली से चिन्हित होकर रहा ॥ १ ॥ फिर पौण्ड्र देश, फिर कर्णाट देश को घेरकर उनके स्वामी रहे. फिर सांभर में रहे फिर अन्तर्वेद के स्वामी बने ॥ २ ॥ और अभी१गोदावरी नदी के २ समीप बडा आसेर गढ बनाकर रहे. वहां निडर गोपाल ने बहुत बेर विजय किया ॥ ३ ॥ तहां लच्छी राणी ने गोपाल से ३ कुलीन पुत्र जना ॥४ ॥ ४शास्त्रों को समझ कर प्रसन्न हुआ ॥ ५ ॥ गुजरात देश में अनिहलपट्टनि पुर में इधर गहिल कर्ण नामक सोलंखी के समर्थ पुत्र कहा ॥ ६ ॥ सोभी पिता के स्वर्ग जाने पर पट्टन का राजा हुआ जिसका जयसिंह नाम था उसी नाम के सदृश राज्य किया ॥ ७ ॥ क्रम से ५ सब विद्या पढ़कर जोग की सब रीतियां जानकर जिसने सिद्धराज यह उचित नाम पाया ॥ ८ ॥ जयसिंह का जन्म विक्रमादित्य के शक में, ४४१ के ६ सम्वत् में हुआ सो हे राजा रामसिंह प्रीति सहित जानो ॥ ९ ॥

अरु पीछैंतो वेदबिमुख होइ जैननके जोर करि आस्तिकनके
अध्वर१अध्ययना२दिकको आरंभही उडायो॥
आर्यावर्तही मैं आतंक परयो यातैं अनिहलपुरमैं तो वैष्णव१
शैव २ शाक्तिक ३ सौर² ४ गाणपत ५ स्मार्त६ प्रमुख आस्तिक
कोऊ न रह्यो॥
अरु जयसिंहनैं रानी सोलह १६ बिबाही तिनमैं तृतीया३शा-
कंभराधीस सिंहदेव १५१ की तनया जयक्रमदेवी अनन्य वैष्णव
ही तानैं पतिके आतंकसौं प्रच्छन्न भूगृहमैं जाइ ब्राह्ममुहूर्तमैं वि
धिपूर्वक श्रीविष्णुको सेवन निर्बह्यो ॥ १२ ।
जा समय गौडदेसमैं अर्कको अंस द्विज देवप्रबोध१ अरु जैमि-
निको अंसावतार भट्टाचार्य२ए द्वै२ही महापंडित भये ते आस्तिक
धर्मको ह्रासै जानि अनिहलपुर आये॥
अरु पंडितराज हेमचंद्रके छात्र बनि गुरु सेवनमैं सावधानी रा-
खि जैनमतहीकी पुष्टि करि एक१ही हायनमैं अखिल छात्रन-
सौं अधिक हेमचंद्रके विश्वासपात्र कहाये॥
एकसमय हेमचंद्रनैं जैनीदेवता पद्मावतीको आराधन करत
स्तोत्रपाठके समय निगमकी निंदा करी सो सुनि दोउ २ नकै
नेत्रनमैं नीर आयो ॥
सो भट्टाचार्य१सौंतो न रुक्यो अरु देवप्रबोध२नैं प्रसभ करि छिपायो
तब हेमचंद्र कही भट्टाचार्य१तो निश्चय करि बिप्र है रु
बध्य है परंतु हमारैतो अहिंसाधर्म यातैं अपनैं सप्त७भूम प्रासादके
ऊपरके खंडमैं कीलित करो ॥

१ यज्ञ २ सूर्य को माननेवाले ३ गणपति को माननेवाले ४ वेद को माननेवाले आदि आस्तिक कोई न रहा ५ चहुवाण की पुत्री ६ परम वैष्णव थी ७ तहखाने में जाकर ८ दो घड़ी रात बाकी रहे ९ पूजन ॥१२॥ १० सूर्य का अंश ११ क्षय १२ शिष्य १३ वेद की १४ हठ करके ॥ १३ ॥ १५ मारने योग्य है १६ सात खंड के १७ महल के १८ कैद करो

अरु पीछैंतो वेदाबिमुख होइ जैननके जोर करि आस्तिकनके
अध्वर[1] अध्ययनादिकको आरंभही उडायो॥
आर्यावर्तही मैं आतंक परयो यातैं अनिहलपुरमैं तो वैष्णव१
शैव २ शाक्तिक ३ सौर[2] ४ गाणपत[3] ५ स्मार्त[4] ६ प्रमुख आस्तिक
कोऊ न रह्यो॥
अरु जयसिंहनैं रानी सोलह १६ बिबाही तिनमैं तृतीया३शा-
कंभराधीस सिंहदेव १५१ की तनया जयक्रमदेवी अनन्य[5] वैष्णव
ही तानैं पतिके आतंकसौं प्रच्छन्न भूगृह[6]मैं जाइ ब्राह्ममुहूर्त[7]मैं वि-
धिपूर्वक श्रीविष्णुको सेवन निर्वह्यो ॥ १२ ॥
जा समय गौडदेसमैं अर्क[10]को अंस द्विज देवप्रबोध१ अरु जैमि-
निको अंसावतार भट्टाचार्य२ए द्वै२ही महापंडित भये ते आस्तिक
धर्मको ह्रास[11] जानि अनिहलपुर आये॥
अरु पंडितराज हेमचंद्रके छात्र[12] बनि गुरु सेवनमैं सावधानी रा-
खि जैनमतहीकी पुष्टि करि एक१ही हायनमैं अखिल छात्रन-
सौं अधिक हेमचंद्रके विश्वासपात्र कहाये॥
एकसमय हेमचंद्रनैं जैनीदेवता पद्मावतीको आराधन करत
स्तोत्रपाठके समय निगम[13]की निंदा करी सो सुनि दोउ २ नकैं
नेत्रनमैं नीर आयो ॥
सो भट्टाचार्य१सौंतो न रुक्यो अरु देवप्रबोध२नैं प्रसभ[14] करि छिपायो
तब हेमचंद्र कही भट्टाचार्य१तो निश्चय करि बिप्र है रु
बध्य[15] है परंतु हमारैतो अहिंसाधर्म यातैं अपनैं सप्त[16]७भूम प्रासाद[17]के
ऊपरके खंडमैं कीलित[18] करो ॥

---

१ यज्ञ २ सूर्य को माननेवाले ३ गणपति को माननेवाले ४ वेद को माननेवाले आदि आस्तिक कोई न रहा ५ चहुवाण की पुत्री ६ परम वैष्णव थी ७ तहखाने में जाकर ८ दो घड़ी रात बाकी रहे ९ पूजन ॥१२॥ १० सूर्य का अंश ११ क्षय १२ शिष्य १३ वेद की १४ हठ करके ॥ १३ ॥ १५ मारने योग्य है १६ सात खंड के १७ महल के १८ कैद करो

अरु पातके प्रारंभमैं गीर्वाणगिराकरि
"यदि वेदाः प्रमाणं स्युर्न मृत्युः पतनेन मे ॥"
ऐसो पद्यार्ध कहि अवनिपर आयो परंतु संदेहको सद्म यदि
शब्द कह्यो तातैं जैसैं पहिले समयमैं सुधन्वा नरेन्द्रकै समक्ष गि-
रिसौं गिरते भट्टाचार्य कुमारिलको एक१ दृग फोरयो ॥
तैसैं याहू भट्टको एक१ नेत्र निकासि काणा करयो ॥ १५ ॥
नेत्रके नासहीकरि प्रानरहिगये सोही महानिधान मानि काहू
नटकी शिक्षाकरि वय१ वपु२ के वेस बदलि वाही पुरके परिसरमैं
वर्षनलौं बिचरत एकदिन काहू आराममैं तुलसीको स्तंब निहा-
रयो ॥
अरु बिनाँ रक्षक कोऊ वस्तु न रहै यातैं यह तुलसी जाकी लगा-
ईहै ताहूको इहाँ आगम नियतहै ऐसो संकल्प बिचारयो ॥
तहाँ रात्रिके समय जैनबेसाकियैं एक मालाकार आइ तुलसी-
पत्र१मंजर२लैजात भट्टनैं पूछी तू कोनकाज ऐसो अन्याय करि
या तरुके गुल्मकौं लुंचि कोनठाम जैहै ॥
तब माली कही जैनधर्ममैं अहिंसाही उत्तमहै अरु आप जैन
हो यातैं चालुक्यराजसौं कदापि कहोगेतो मेरे प्रान १ अरु पिंड
२ भिन्नव्हैहै ॥ १६ ॥

पड़ा और पड़ने से पहिले १ संस्कृत भाषा में कहा कि "यदि वेद प्रमाण हैं तो पड़ने से मेरी मृत्यु नहीं होवेगी" यह श्लोक का पूर्वार्द्ध कहकर म कान के ऊपर से २ भूमि पर आया परन्तु यदि शब्द सन्देह का ३ घर है सो ही इसने कहा उस "यदि" शब्द ने जैसे पहिले समय में सुधन्वा राजा के ४ रोबरू पर्वत से गिरते भट्टाचार्य कुमारिल का एक नेत्र फोड़ डाला तैसे ही इस भट्ट का भी एक नेत्र निकास कर काणा किया ॥ १५॥ नेत्र के फूटने से ही प्राण बच गये उसीको ५ बड़ा धन मान कर किसी नट की शिक्षा से अवस्था और शरीर का भेष बदल कर उसी पुर के ६ समीप की भूमि में वर्षों तक विचरता रहा, एक दिन किसी ७ बाग में तुलसी का ८ झाड़ देखा ९ निश्चय है १० माली ११ गुच्छों को तोड़कर ॥१६॥

अरु पातके प्रारंभमैं गीर्वाणगिराकरि
"यदि वेदाः प्रमाणं स्युर्न मृत्युः पतनेन मे ॥"
ऐसो पद्यार्ध कहि अवनिपर आयो परंतु संदेहको सद्म यदि
शब्द कह्यो तानैं जैसैं पहिले समयमैं सुधन्वा नरेन्द्रके समक्ष गि-
रिसौं गिरते भट्टाचार्य कुमारिलको एक१ दृग फोरयो ॥
तैसैं याहू भट्टको एक१ नेत्र निकासि काण करयो ॥ १५ ॥
नेत्रके नासहीकरि प्रानरहिगये सोही महानिधान मानि काहू
नटकी शिक्षाकरि वय१ बपु२ के बेस बदलि वाही पुरके परिसरमैं
बर्षनलौं बिचरत एकदिन काहू आराममैं तुलसीको स्तंब निहा-
रयो ॥
अरु बिनाँ रक्षक कोऊ बस्तु न रहै यातैं यह तुलसी जाकी लगा-
ईहै ताहूको इहाँ आगम नियतहै ऐसो संकल्प बिचारयो ॥
तहाँ रात्रिके समय जैनबेसाकियैं एक मालाकार आइ तुलसी-
पत्र१मंजर२लैजात भट्टनैं पूछी तू कोनकाज ऐसो अन्याय करि
या तरुके गुल्मकौं लुंचि कोनठाम जैहै ॥
तब माली कही जैनधर्ममैं अहिंसाही उत्तमहै अरु आप जैन
हो यातैं चालुक्यराजसौं कदापि कहोगेतो मेरे प्रान १ अरु पिंड
२ भिन्नहैहैं ॥ १६ ॥

पड़ा और पड़ने से पहिले १ संस्कृत भाषा में कहा कि "यदि वेद प्रमाण हैं तो पड़ने से मेरी मृत्यु नहीं होवेगी" यह श्लोक का पूर्वार्द्ध कहकर मकान के ऊपर से २ भूमि पर आया परन्तु यदि शब्द सन्देह का ३ घर है सो ही इसने कहा उस "यदि" शब्द ने जैसे पहिले समय में सुधन्वा राजा के ४ रोबरू पर्वत से गिरते भट्टाचार्य कुमारिल का एक नेत्र फोड़ डाला तैसे ही इस भट्ट का भी एक नेत्र निकास कर काणा किया ॥ १५॥ नेत्र के फूटने से ही प्राण बच गये उसीको ५ बड़ा धन मान कर किसी नट की शिक्षा से अवस्था और शरीर का भेष बदल कर उसी पुर के ६ समीप की भूमि में वर्षों तक विचरता रहा, एक दिन किसी ७ बाग में तुलसी का ८ झाड़ देखा ९ निश्चय है १० माली ११ गुच्छों को तोड़कर ॥१६॥

साकंभरीनैं तैसैंही करि कालज्वरहोत जयसिंहसौं कही द्विजनकौं दानदेहु जातैं ज्वरको निश्चितही नासहोय सोही करि चालुक्यराज बिज्वर[2] भयो ॥

अरु कछुक निर्गमनके[3] प्रामाण्यमैं[4] निश्चयमान्यौं याहीसमयमैं श्रीनृसिंहप्रभुको प्रसाद[5] पाइ बसुधामैं बिचरत सिबिकारूढ[6] अनेक छात्रनँ[7] उपेत देवप्रबोधहू अनिहलपुर गयो ॥

एक उपबनमैं[8] उतरे तहाँ देवप्रबोधके सूदनँ[9] महानसकर्मको[10] प्रारंभकियो तिनकी सुद्धि[11] पाइ हेमचंद्रके अंतेबासिन[12] आइ उद्धानँनको[13] अग्निविध्वंत[14] कर्यो ॥

तहाँ देवप्रबोधाचार्य नालिकेरनकी वृष्टि करी तासौं हैमाशिष्यनके शिर शीर्ण[15] होनलगे तबही मंत्रमूक[16] होय भजे याके अनंतरही चुल्लीनमैं[17] पावक प्रजर्यो ॥ १९ ॥

सो सुद्धि[18] सिद्धराज जयसिंह पाइ श्रौत[19] सूरिनँको[20] संघ[21] समज्ज्यामैं[22] बुलायो ॥

अरु भट्टहू पहिलीरात्रिमैं प्रच्छन्न निकसि देवप्रबोधसौं जाइमिल्योहो यातैं सभामैं संगही आयो ॥

आशीर्बाद करि बैठे तहाँ तिनमैं काहू गणकराज[23] पंचांग सुणायो वा दिन अमाँ[24] ही तापर हेमचंद्र कही है अमाही परंतु आज पूर्णचंद्रसहित राकौ[25] ह्वैजाइतो तुमारे पुस्तक उदपानमैं[26] गिरावैं ॥

अरु अमाही रहैंतो हमारे पुस्तकहू यहैही व्यवस्था[27] पावैं ॥ २० ॥

---

१ चहुवाण वंश की स्त्री ने २ विना ज्वर ३ वेदों के ४ प्रामाणिक होने में ५ प्रसन्नता ६ पालखी में बैठकर ७ शिष्यों सहित ८ बाग में ९ रसोई करनेवालों ने १० रसोई के काम का प्रारम्भ किया तिनकी ११ खबर पाकर हेमचन्द्र के १२ शिष्यों ने आकर १३ चूल्हों की अग्नि का १४ नाश किया अर्थात् बुझादिया तहां देवप्रबोधाचार्य ने नालेरों की वृष्टि करी १५ मस्तक फूटने लगे तब मन्त्र पढ़ने में १६ गूंगे होकर भागे जिसपीछे १७ चूल्हों में अग्नि जला ॥ १९ ॥ १८ खबर १९ वेद के २० पण्डितों के २१ समूह को २२ सभा में बुलाया २३ ज्योतिषी ने २४ अमावास्या थी २५ शरद् पूर्णिमा के समान २६ कूए में गिरावें २७ अवस्था (रीति) ॥ २० ॥

साकंभरीनैं[1] तैसैंही करि कालज्वरहोत जयसिंहसौं कही द्वि-
जनकौं दानदेहु जातैं ज्वरको निश्चितही नासहोय सोही करि
चालुक्यराज बिज्वर[2] भयो ॥
अरु कछुक निगमनके[3] प्रामाण्यमैं[4] निश्चयमान्यौं याहीसमयमैं
श्रीनृसिंहप्रभुको प्रसादि[5] पाइ बसुधामैं बिचरत सिबिकारूढ[6] अनेक
छात्रनँ[7] उपेत देवप्रबोधहू अनिहलपुर गयो ॥
एक उपबनमैं[8] उतरे तहाँ देवप्रबोधके सूदनँ[9] महानसकर्मको[10]
प्रारंभकियो तिनकी सुद्धि[11] पाइ हेमचंद्रके अंतेबासिन[12] आइ उद्धा-
ननको[13] अग्निविध्यात[14] करयो ॥
तहाँ देवप्रबोधाचार्य नालिकेरनकी वृष्टि करी तासौं हेमशिष्य-
नके शिर शीर्ण[15] होनलगे तबही मंत्रमूक[16] होय भजे याके अनंत-
रही चुल्लहीनमैं[17] पावक प्रजरयो ॥ १९ ॥
सो सुद्धि[18] सिद्धराज जयसिंह पाइ श्रौत[19] सूरिनको[20] संघ[21] समज्ज्यामैं[22]
बुलायो ॥
अरु भट्टहू पहिलीरात्रिमैं प्रच्छन्न निकसि देवप्रबोधसौं जाइमि-
ल्योहो यातैं सभामैं संगही आयो ॥
आशीर्बाद करि बैठे तहाँ तिनमैं काहू गणकराज[23] पंचांग सुणा-
यो वा दिन अमाँ[24] ही तापर हेमचंद्र कही है अमाही परंतु आज
पूर्णचंद्रसहित राकौ[25] ह्वैजाइतो तुमारे पुस्तक उदपानमैं[26] गिरावैं ॥
अरु अमाही रहैंतो हमारे पुस्तकहू यहैही व्यवस्था[27] पावैं ॥२०॥

---

१ चहुवाण वंश की स्त्री ने २ विना ज्वर ३ वेदों के ४ प्रामाणिक होने में ५ प्रसन्नता ६ पालखी में बैठकर ७ शिष्यों सहित ८ बाग में ९ रसोई करनेवालों ने १० रसोई के काम का प्रारम्भ किया तिनकी ११ खबर पाकर हेमचन्द्र के १२ शिष्यों ने आकर १३ चूल्हों की अग्नि का १४ नाश किया अर्थात् बुझादिया तहां देवप्रबोधाचार्य ने नालेरों की वृष्टि करी १५ मस्तक फूटने लगे तब मन्त्र पढ़ने में १६ गूंगे होकर भागे जिसपीछे १७ चूल्हों में अग्नि जला ॥ १९ ॥ १८ खबर १९ वेद के २० पण्डितों के २१ समूह को २२ सभा में बुलाया २३ ज्योतिषी ने २४ अमावास्या थी २५ शरद् पूर्णिमा के समान २६ कूए में गिरावें २७ अवस्था (रीति) ॥ २० ॥

अरु अमाकी रात्रिमैं चंद्रको प्रकास कियो औसो उदंत[1] तो केही ग्रंथनमैं जानि नियतही[2] लिखिदयो ॥

औसैं चालुक्यराजसिद्धराज जयसिंह बिशिष्ट[3] वैभवपाइ सबनपैं सासन करि मंडलेश्वर भयो ॥ २२ ॥

जाकै रानी जयक्रमदेवी१ राजकुमार गोभिलराज२ पंडितराज जैन हेमचंद्र३ पंडितराज खौटिकै[4] सौनेयं[5] महाबदान्य४ बंदी[6] मदन५ श्रीकलशनाम गजेन्द्र ६ कुलिसकूट करवाल ७ सप्त७ ही रत्न बसुधामैं बिख्यात जानैं ॥

अरु पौरानिक[7] महाबदान्यकौं१ आनर्तको आधिपत्य[8]२ मागध सामंतकौं१ सहस्र१००० संबसथ[9] २ बंदी स्यामदासकौं १ बग्गड[10][11] के छप्पन५६ ग्राम२ बंदीमदनकौं दसकोटि १०००००००रजत[12]-मुद्रा२ इत्यादिक अनेक बडे दान किये ते रसामैं रोमांचैक[13] मानैं ॥

याके गोभिलराज१ हर्पल२ पूर्णमल्ल३ व्याघ्रराज४ तेजसिंह५ मंडन ६ बडभीबल ७ नील ८ अष्ट ८ पुत्र भये ॥

तिनमैं पट्टपकुमार गोभिलराज१ तो सिद्धराजके अनंतरं[14] अनि-हलपुरको आधिपत्य[15] धारि सिद्धराजसंचित[16] सम्पत्तिनके संघात[17] पाये अरु हर्पल १ पूर्णमल्ल २ अष्टम ८ नील३ सहित अप्रज[18] गये रु व्याघ्रराज बंधूगढ जिति भूप भयो ताके बंसके बघेले१ तेजसिंह २ दक्खिनदेसमैं सरकोपनामक मुंडलपुर जाइ लयो ताके सर-किया २ मंडन ३ रैवतागिरींद्रके उपकंठ जूनाँगढदुर्गको जयकरि

कोई प्रमाण नहीं मिला १ वृत्तान्त २ निश्चय ही ३ विशेष ॥ २२ ॥ ४ खौटिक शाखा के ५ चारण ६ राजाओं को जनानेवाले भाट ७ चारण महावदान्य को आनर्तदेश (द्वारका प्रान्त अर्थात् काठियावाड़ देश) का ८ स्वामीपन दिया और ९ वंशावली लिखनेवाले वड़वा भाट१० ग्राम११ बागड़ (मालवा देश में एक छोटे से प्रान्त का नाम बागड़ है जिसके छप्पन गाम प्रसिद्ध हैं)१२ चांदी के रुपये १३वे दान. भूमि में रोमाञ्चक(जिसके सुनने से शरीर के रोम खड़े होजावें उसको रोमाञ्चक कहते हैं) मानेगये १४ पीछे १५ स्वामिपन १६ संचय किये हुए १७ समूह १८ विना सन्तान मरे

अरु अमाकी रात्रिमैं चंद्रको प्रकास कियो ऐसो उदंत[1] तो केही ग्रंथनमैं जानि नियतही[2] लिखिदयो ॥

ऐसैं चालुक्यराजसिद्धराज जयसिंह बिशिष्ट[3] वैभवपाइ सबनपैं सासन करि मंडलेश्वर भयो ॥ २२ ॥

जाकै रानी जयक्रमदेवी१ राजकुमार गोभिल्लराज२ पंडितराज जैन हेमचंद्र३पंडितराज खौटिकैं[4] सौनेयं[5] महावदान्य४बंदी[6] मदन५ श्रीकलशनाम गजेन्द्र ६ कुलिसकूट करवाल ७ सप्त७ ही रत्न बसुधामैं विख्यात जानैं ॥

अरु पौरानिकैं[7] महावदान्यकौं१ आनर्तको आधिपत्य२[8]मागध सामंतकौं१ सहस्र१००० संबसथं[10] २ बंदी[9] स्यामदासकौं १ बगैंड[11] के छप्पन५६ ग्राम२ बंदीमदनकौं दसकोटि १०००००००रजत-मुद्रा२[12] इत्यादिक अनेक बडे दान किये ते रसामैं रोमांचक[13] मानैं॥

याकै गोभिल्लराज१ हर्पल२ पूर्णमल्ल३ व्याघ्रराज४ तेजसिंह५ मंडन ६ बडशीबल ७ नील ८ अष्ट ८ पुत्र भये ॥

तिनमैं पट्टपकुमार गोभिल्लराज१ तो सिद्धराजके अनंतरैं[14] अनिहलपुरको आधिपत्य[15] धारि सिद्धराजसंचितैं[16] सम्राड्डिनकै संघातैं[17] पाये

अरु हर्पल १ पूर्णमल्ल २ अष्टम ८ नील३ सहित अप्रजैं[18] गये रु व्याघ्रराज बंधूगढ जित्ति भूप भयो ताकै वंसके बघेले१ तेजसिंह २ दक्खिनदेसमैं सरकोपनामक कुंडलपुर जाइ लयो ताके सर-क्रिया २ मंडन ३ रैवतगिरींद्रके उपकंठ जूनाँगढदुर्गको जयकरि

कोई प्रमाण नहीं मिला १ वृत्तान्त २ निश्चय ही ३ विशेष ॥ २२ ॥ ४ खौटिक शाखा के ५ चारण ६ राजाओं को जनानेवाले भाट ७ चारण महावदान्य को आनर्तदेश (द्वारका प्रान्त अर्थात् काठियावाड़ देश) का ८ स्वामीपन दिया और ९ वंशावली लिखनेवाले बड़वा भाट१०ग्राम११बागड़ (मालवा देश में एक छोटे से प्रान्त का नाम बागड़ है जिसके छप्पन गाम प्रसिद्ध हैं)१२चांदी के रुपये १३वे दान. भूमि में रोमाञ्चक(जिसके सुनने से शरीर के रोम खड़े होजावें उसको रोमाञ्चक कहते हैं) मानेगये १४ पीछे १५ स्वामिपन १६ संचय किये हुए १७ समूह १८ विना सन्तान मरे

दीपग्रन्थोक्तहेमचन्द्र १ कुमारपाल २ सामकालीन्यनिरसन ५
जयसिंहसर्वविद्याबलसिद्धराजोपनामसमादान ६ यजन १ पठ-
ना २ द्विवैदिकविधानविध्वंसन ७ चालुक्यषोडश१६राज्ञीविवह-
न ८ तृतीय३ भोगिनीशाकम्भरीजयक्कमदेवीप्रच्छन्नविष्णुपूजन
९ गौडदेशीयपण्डितराजविप्रदेवप्रबोध १ भट्टाचार्य २ सिद्धराजन
गरागमन१०छद्मजैनीभूतद्विजद्वय२हेमचन्द्रपद्मावतीशक्तिसमारा-
धनसमयनिगमनिन्दाश्रवणानन्तरपातितनेत्रजलभट्टाचार्य१कारा
स्थापन११पलायितकृतजैनसेवनप्रायश्चित्तप्राप्तश्रीनृसिंहप्रसादद
वप्रबोध२विविधविनेयशास्त्रपाठन१२जैनस्थानसंलग्नराजप्रासाद
स्थजयक्कमदेवीविष्णुपूजनाऽनन्तरश्रुत्युज्जिहीर्षुप्रश्नरूपपद्यार्धक
थन१३भट्टाचार्यतारस्वरप्रत्युत्तरश्रावण१४मारणभीतहेमहर्म्याऽ
धःप्रपातितवेदप्रामाण्ययदिकथननिस्सृतैक१नेत्रपर्यस्तवयो१वंशर
भट्टाचार्य१तत्पुरप्रान्तविचरण१५कदाचिद्दृष्टतुलसीस्तम्बभट्ट१मा
लाकारमार्गतत्पद्यपत्रीराज्ञीसमीपप्रेषण१६तदवरोधभट्टाऽऽकारण
१७तच्छिक्षाप्रबुद्धराज्ञीनिद्राणपतिपूर्वकेयूरपर्यसन१८द्विजदानन्त-

---

पण्डित का शिष्य होना, हेमचन्द्र और जयसिंह दोनों का दिग्विजय क-
रना, संप्रदायप्रदीप नामक ग्रन्थ में हेमचन्द्र और कुमारपाल का एक समय
में होने का अभाव, जयसिंह का सर्वविद्या बल से सिद्धराज उपनाम ग्रहण
करना, यज्ञ करना और पाठ करना आदि वेदों की रीति का नाश होना, सो-
लंखी का सोलह रानियों का विवाहना, जिनमें तीसरी रानी चहुवाणी ज-
यक्कमदेवी का छाने विष्णुपूजन करना, गौड़ देश के पण्डितराज ब्राह्मण
देवप्रबोध और भट्टाचार्य का सिद्धराज के नगर में आना, छल से जैनी हो
कर दोनों ब्राह्मणों का हेमचन्द्र से पद्मावती देवी के पूजन समय वेदों की
निन्दा सुनना, जिसपीछे नेत्रों से जल पड़तेहुए भट्टाचार्य को कैद करना,
जैन सेवन करते हुए देवप्रबोध का वहांसे भागकर प्रायश्चित्त करना, और
श्रीनृसिंह की प्रसन्नता से नाना प्रकार की शिक्षा पाकर शास्त्र पढना, जै-
न हेमचन्द्र के स्थान से लगेहुए राजमहलों पर खड़ीहुई जयक्कमदेवी का वि-
ष्णु पूजा के पीछे वेदों का उद्धार करने की इच्छा सूचक प्रश्न रूप आधा
श्लोक कहना, और भट्टाचार्य का उच्चस्वर से उत्तर सुनाना, मारने के डर से
हेमाचार्य के घर के ऊपर से नीचे पड़ते समय वेद के प्रमाण होने में यदि शब्द का

सामकालीन्यानिरसन ५ दीपग्रन्थोक्तहेमचन्द्र १ कुमारपाल २ सामकालीन्यानिरसन ५ यजन १ पठ- जयसिंहसर्वविद्याबलासिद्धराजोपनामसमादान ६ चालुक्यषोडश१६राज्ञीविवह- ना २ द्विवैदिकविधानविध्वंसन ७ चालुक्यषोडश१६राज्ञीविवह- न ८ तृतीय३ भोगिनीशाकम्भरीजयक्कमदेवीप्रच्छन्नविष्णुपूजन ९ गौडदेशीयपण्डितराजानिप्रदेवप्रबोध १ भट्टाचार्य २ सिद्धराजन गरागमन१०छद्मजैनीभूताद्विजद्वय२हेमचन्द्रपद्मावतीशक्तिसमारा- धनसमयनिगमानिन्दाश्रवणानन्तरपातितनेत्रजलभट्टाचार्य१कारा स्थापन११पलायितकृतजैनसेवनप्रायश्चित्तप्राप्तश्रीनृसिंहप्रसादद वप्रबोध२विविधविनेयशास्त्रपाठन१२जैनस्थानसंलग्नराजप्रासाद स्थजयक्कमदेवीविष्णुपूजनाऽनन्तरश्रुत्युज्जिहीर्षुप्रश्नरूपपद्यार्धक थन१३भट्टाचार्यतारस्वरप्रत्युत्तरश्रावण१४मारणभीतहैमहर्म्याऽ धःप्रपतितवेदप्रामाण्ययदिकथननिस्सृतैक१नेत्रपर्यस्तवयो१वंशर भट्टाचार्य१तत्पुरप्रान्तविचरण१५कदाचिद्दृष्टतुलसीस्तम्बभट्ट१मा लाकारमार्गतत्पद्यपत्रीराज्ञीसमीपप्रेषण१६तदवरोधभट्टाऽऽकारण १७तच्छित्ताप्रबुद्धराज्ञीनिद्राणपतिपूर्वकेयूरपर्यसन१८द्विजदानन्-

---

पण्डित का शिष्य होना, हेमचन्द्र और जयसिंह दोनों का दिग्विजय क- रना, संप्रदायप्रदीप नामक ग्रन्थ में हेमचन्द्र और कुमारपाल का एक समय में होने का अभाव, जयसिंह का सर्वविद्या बल से सिद्धराज उपनाम ग्रहण करना, यज्ञ करना और पाठ करना आदि वेदों की रीति का नाश होना, सो- लंखी का सोलह रानियों का विवाहना, जिनमें तीसरी रानी चहुवाणी ज- यक्कमदेवी का छाने विष्णुपूजन करना, गौड़ देश के पण्डितराज ब्राह्मण देवप्रबोध और भट्टाचार्य का सिद्धराज के नगर में आना, छल से जैनी हो कर दोनों ब्राह्मणों का हेमचन्द्र से पद्मावती देवी के पूजन समय वेदों की निन्दा सुनना, जिसपीछे नेत्रों से जल पड़तेहुए भट्टाचार्य को कैद करना, और जैन सेवन करते हुए देवप्रबोध का वहांसे भागकर प्रायश्चित्त करना, और श्रीनृसिंह की प्रसन्नता से नाना प्रकार की शिक्षा पाकर शास्त्र पढना, जैं- न हेमचन्द्र के स्थान से लगेहुए राजमहलों पर खड़ीहुई जयक्कमदेवी का वि- ष्णु पूजा के पीछे वेदों का उद्धार करने की इच्छा सूचक प्रश्न रूप आधा श्लोक कहना, और भट्टाचार्य का उच्चस्वर से उत्तर सुनाना, मारने के डर से हेमाचार्य के घर के ऊपर से नीचे पड़ते समय वेद के प्रमाण होने में यदि शब्द का

मेकविंशतितमो२१मयूखः ॥ २१ ॥

आदितस्त्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३० ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

दोहा

भौमचंद्र १५४ भूपति भयो, इम सु दुग्ग आसेर ॥

मन जाको कबहु न मुर्‌यो, बितरन१ हित रन२ बेर ॥१॥

उज्जइनी नृप बिंबइत, अपर जास अभिधान ॥

कृष्ण नाम मागध कहत, सो हुव परम सयान ॥ २ ॥

तास सुता विद्यावती१५४।१, भौमचंद्र भूपाल१५४ ॥

प्रामारी आनी परनि, करि बनीयक निहाल ॥ ३ ॥

भौमचंद्र१५४ नृपकै भयो, प्रामारी बिच पुत्त ॥

भानुराज१५५ जाको भन्यौं, अखिलन नाम अगुत्तँ ॥४॥

सक जँहँ बिक्रमराजको, बसुधा बारन बेद४८१ ॥

भौमचंद्र१५४सुत१५५तँहँ भयो, अरिन करन उच्छेद ॥ ५॥

षट्पात्

कुंतलपति चंद्रकुल नाम बसुसेन नरेस्वर ॥

हैहय अन्वय हेलि सज्जि जँहँ पुत्रि स्वयंवर ॥

बुल्ले सब बसुधेस कहिय बिप्रन तँहँ कारन ॥

सुता हृदय अनुसार व्याह नहि उचित बिचारन ॥

जिम जिम बिसेस यह अंत्यजुग स्वयंबरहु तिम तिम सिथिल

का आख्यान व्रजेश्वर को करोड़ रुपये देने का इक्कीसवां मयूख समाप्त हु-
आ ॥ २१ ॥ और आदि से एक सौ तीस मयूख हुए ॥ १३० ॥
विशेष करके व्रजदेश की और प्राकृत की भाषा मिलीहुई है॥ १आसेर गढ
पर२दान और युद्ध के समय में. जिसका ३ दूसरा ४ नाम ॥२॥ ५याचना
करके ६ निहाल हुआ ॥ ३ ॥ ७ अगुप्त (प्रसिद्ध) ॥ ४ ॥८नाश ॥ ५ ॥ ६ या-
दव, हैहय १० वंश के ११ सूर्य ने पुत्री का स्वयम्बर सजा और सब १२
राजाओं को बुलाये वहां ब्राह्मणों ने कारण सहित कहा कि पुत्री के हृदय
के अनुसार अर्थात् स्वेच्छापूर्वक विवाह करना यह विचार उचित नहीं है
क्योंकि ज्यों ज्यों यह कलियुग विशेष होता जाता है त्यों त्यों स्वयम्बर

सेकविंशतितमो२१मयूखः ॥ २१ ॥
आदितस्त्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३० ॥
(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

दोहा

भौमचंद्र १५४ भूपति भयो, इम सु दुग्ग आसेर ॥
मन जाको कबहु न मुरयो, वितरन१ हित रन२ बेर ॥१॥
उज्जइनी नृप विंबइत, अपर जास अभिधान ॥
कृष्णा नाम मागध कहत, सो हुव परम सयान ॥ २ ॥
तास सुता विद्यावती१५४।२, भौमचंद्र भूपाल१५४ ॥
प्रामारी आनी परनि, करि बनीयक निहाल ॥ ३ ॥
भौमचंद्र१५४ नृपकै भयो, प्रामारी बिच पुत्त ॥
भानुराज१५५ जाको भन्यौं, अखिलन नाम अगुत्त ॥४॥
सक जँहँ विक्रमराजको, वसुधा बारन बेद४८१ ॥
भौमचंद्र१५४सुत१५५तँहँ भयो, अरिन करन उच्छेद ॥ ५॥

षट्पात्

कुंतलपति चंद्रकुल नाम बसुसेन नरेस्वर ॥
हैहय अन्वय हेलि सज्जि जँहँ पुत्रि स्वयंबर ॥
बुल्ले सब बसुधेस कहिय विप्रन तँहँ कारन ॥
सुता हृदय अनुसार व्याह नहि उचित विचारन ॥
जिम जिम बिसेस यह अंत्यजुग स्वयंबरहु तिम तिम सिथिल

का आस्रय व्रजेश्वर को करोड़ रुपये देने का इक्कीसवां मयूख समाप्त हु-
आ ॥ २१ ॥ और आदि से एक सौ तीस मयूख हुए ॥ १३० ॥
विशेष करके व्रजदेश की और प्राकृत की भाषा मिलीहुई है॥ १आसेर गढ
परदान और युद्ध के समय में. जिसका ३ दूसरा ४ नाम ॥२॥ ५ याचना
करके ६ निहाल हुआ ॥ ३ ॥ ७ अगुप्त (प्रसिद्ध) ॥ ४ ॥८नाश ॥ ५ ॥ ९ या-
दव, हैहय १० वंश के ११ सूर्य ने पुत्री का स्वयम्बर सजा और सब १२
राजाओं को बुलाये वहां ब्राह्मणों ने कारण सहित कहा कि पुत्री के हृदय
के अनुसार अर्थात् स्वेच्छापूर्वक विवाह करना यह विचार उचित नहीं है
क्योंकि ज्यों ज्यों यह कलियुग विशेष होता जाता है त्यों त्यों स्वयम्बर

कछुक व्याज[1] करि कलह सिसुन पल[2] खाइ समस्तन ॥
कुमरसहित कंकाल[3] सेस तजिगो सु त्वरासन[4] ॥
पृथुकन[5] अपल[6] कुणपहि[7] पतित कछुक स्वास१ चेतन२ कुमर॥
कुलदेवि स्वीय चिंति रु कियउ आसापूरनि ध्यान अर[8]।१२
हरिय त्रास बहु हुलसि प्रकटि सुमिरत सेवक पँहँ ॥
वसु ८ हत्थन बरवेस जानि भक्त रु प्रसन्न जँहँ ॥
स्वीय[9] कमंडलु सलिल चुलुक पूरि रु किय सेचन[10] ॥
उपचित[11] व्है तव अंग विहसिकरि उट्ठिविवेचन ॥
करजोरि भानुराज१५५हु करिय नुंति[12] अनेक पय नलिन नत ।
जयमहिष१सुंभ२आदिक जइनि अनसु[13] जिवावन चिर अरत[14]॥१३॥

(सौराष्ट्री)

(दोहा)

मोहि जिवायउ माइ, मृतक इते सिसु मित्र मम ॥
अनसुन इनहु उठाइ, सबके घर सम्मद करहु ॥ १४ ॥
देवी सुनत तदीय, सिसु कुणपन[15] सिंच्यो सलिल[16] ॥
बनि जे सांग बलीय, उठ्ठे नुंति[17] करताहिं अखिल ॥ १५ ।
माता कहिय समोद, इस[18] सित छठ्ठी६अज्ज यह ॥

१और कुछ मिससे लड़ाई करके सब बालकों का२मांस खागया और४जल्दी से कुमर के सहित ३ कलेवरों को छोड़गया वे ५ बालक ६ विना मांस ७ मुर्दे पड़ेहुए थे कुछ स्वास और चेत कुमर को था सो अपनी कुलदेवी का चिंतवन करके आशापूर्णा का८ शीघ्र ध्यान किया ॥ १२ ॥ उसने प्रसन्न होकर सेवक के स्मरण से प्रकट होकर भय मिटाया और वह आठ हाथों से और श्रेष्ठ वेष से भक्त जानकर प्रसन्न हुई और ९ अपने कमण्डलु से चुल्लू भर पानी लेकर१०सींचा अर्थात् छिड़का जिससे सब अङ्ग ११पुष्ट होकर विचार के साथ उठा और हाथ जोड़कर अनेक १२स्तुति करके चरण कमलों मे झुक कर बोला कि हे महिषासुर और शुम्भासुर आदि को जीतने वाली तुम्हारी जय हो१३ विना प्राण पड़ेहुओं को बहुत समय होगया है सो१४शीघ्रता से जिलाओ॥१३॥१४॥१५मुर्दे बालकों को१६पानी से१७स्तुति करतेहुए उठे ॥ १५ ॥ देवी ने कहा कि १८ आसोज शुक्ल छठ है सो आनन्द

कछुक व्याजं करि कलह सिसुन पलं खाइ समस्तन ॥
कुमरसहित कंकालं सेस तजिगो सु त्वरासनं ॥
पृथुकन अपलं कुणपहि पतित कछुक स्वास१ चेतन२ कुमर॥
कुलदेवि स्वीय चिंति रु कियउ आसापूरनि ध्यान अरं॥१२॥
हरिय त्रास बहु हुलसि प्रकटि सुमिरत सेवक पँहँ ॥
बसु ८ हत्थन बरवेस जानि भक्त रु प्रसन्न जँहँ ॥
स्वीयं कमंडलु सलिल चुलुक पूरि रु किय सेचंन ॥
उपचितं व्है तब अंग विहसिकरि उट्ठि विवेचन ॥
करजोरि भानुराज१५५हु करिय नुंति अनेक पय नलिन नत ॥
जयमहिष१सुंभ२आदिक जइनि अंनसु जिवावन चिर अरतं॥१३॥

(सौराष्ट्री)

(दोहा)

मोहि जिवायउ माइ, मृतक इते सिसु मित्र मम ॥
अनसुन इनहु उठाइ, सबके घर सम्मद करहु ॥ १४ ॥
देवी सुनत तदीय, सिसु कुणपनं सिंच्यो सलिलं ॥
बनि जे सांग बलीय, उट्ठे नुंति करतहिं अखिल ॥ १५ ॥
माता कहिय समोद, इसं सित छट्ठी६अज्ज यह ॥

१और कुछ १मससे लड़ाई करके सब बालकों का२मांस खागया और४जल्दी से कुमर के सहित ३ कलेवरों को छोड़गया वे ५ बालक ६ विना मांस ७ मुर्दे पड़ेहुए थे कुछ स्वास और चेत कुमर को था सो अपनी कुलदेवी का चिंतवन करके आशापूर्णा का८ शीघ्र ध्यान किया ॥ १२ ॥ उसने प्रसन्न होकर सेवक के स्मरण से प्रकट होकर भय मिटाया और वह आठ हाथों से और श्रेष्ठ वेष से भक्त जानकर प्रसन्न हुई और ९ अपने कमण्डलु से चुल्लू भर पानी लेकर१०सींचा अर्थात् छिड़का जिससे सब अङ्ग ११पुष्ट होकर विचार के साथ उठा और हाथ जोड़कर अनेक १२स्तुति करके चरण कमलों मे झुक कर बोला कि हे महिषासुर और शुम्भासुर आदि को जीतने वाली तुम्हारी जय हो१३ विना प्राण पड़ेहुओं को बहुत समय होगया है सो१४शीघ्रता से जिलाओ॥१३॥१४॥१५मुर्दे बालकों को१६पानी से१७स्तुति करतेहुए उठे ॥ १५ ॥ देवी ने कहा कि १८ आसोज शुक्ल छठ है सो आनन्द

रिसवस गहिरारंभ मरन दोरचो सु फारि मुख॥
कुमरमित्र सब कुमर रहे मूर्छित परि मृतरुख ॥
जानी नृपसुत जबहु समय आयो खेलन सठ ॥
तुहि अरु तब सक्ति हनि रु हनिहौं निर्भय हठ॥
यह चिंति तैंराजि बुल्ल्यो सु अरि आयो बपु धरि अद्रिसम॥
दृगमीचि आस्थिपालहु दरित भो कछु व्याकुल पाइभ्रम २५

[दोहा]

सक्ति कथित नुतिजुत सुमिरि, वहहि सक्ति करि अग्ग ॥
चित्रित जिम रहिगो चकित, सिसुपन सिथिल समग्ग॥२६।
खावन आयो मूढ खल, परसतही उरपार॥
कढी कुमर कासूतैंरी, पीठक भेदि भयार ॥ २७ ॥
कासू बिच रहि कालिका खल हिय१कालिक२खाइ॥
गई जथारुचि इत गिरचो, आसुर हुत अरराइ ॥ २८ ॥

[षट्पात्]

सिसुपनही जगमल्ल कुमर देवीबल कढ्ढिय ॥
इतरहु बाल अचेत हुलासि उठ्ठे चेतन हिय ॥
सबन अप्प बिस्वासि कहिय संवया यह क्रीडन ॥
अप्पन बिच आयो सु परचो रक्खस जगपीडन ॥
आयति उदर्क अप्पन उदित इहि कासू बसि ईस्वरिय ॥
इक१लव बिलंब भो नांहि अरु हि कालिय आसिर कदन किय ।२९

१ मरेहुओं के समान २ समान अवस्थावाला ३ धमकाकर उस शत्रु को ४ बुलाया ५ पर्वत के समान शरीर धारण करके आया६ भयभीत होकर ७स्तुति के साथ८तसवीर के समान ९ बर्छी १० पीठ फाड़ कर ११ बर्छी के बीच१२कलेजा खाकर १३ अरराट शब्द करके ॥२८॥ कुमर ने देवी के बल से बालपन में ही संसार का साल काढ़ दिया१४और भी१५अपने१६ समान अवस्थावालों से कहा कि अपने बीच में यह खेलने को आया था सो जगत् को पीड़ा देनेवाला राक्षस वह पड़ा है इससे जाना कि अपने पूर्व का ल का भाग्य उदय होनेसे इस१७बर्छी में देवी ने वास करके एक१८क्षण बिलम्ब नहीं हुआ१९जल्दी ही कालिका ने२०राक्षस का २१ नाश किया

रिसवस गहिशरंभ मरन दोस्यो सु फारि मुख॥
कुमरमित्र सब कुमर रहे मूर्छित परि मृतरुख[1] ॥
जानी नृपसुत जबहु[2] सवय आयो खेलन सठ ॥
तुहि औहुँ तब सक्ति हनि रु हनिहौं निर्भय हठ॥
यह चिंति[3] तँराजि बुल्ल्यो[4] सु अरि आयो वपु धरि अद्रिसम[5]॥
हगमीचि अस्थिपालहु दरित[6] भो कछु व्याकुल पाइभ्रम २५

[दोहा]

सक्ति कथित नुँतिजुत सुमिरि, वहहि सक्ति कारि अग्ग ॥
चित्रित जिम रहिगो चकित, सिसुपन सिथिल समग्ग॥२६।
खावन आयो मूढ खल, परसतही उरपार॥
कढी कुमर कासूतंरी, शढँक भेदि भयार ॥ २७ ॥
कासू बिच रहि कालिका खल हिय[12] कालिक[13] खाइ॥
गई जथारुचि इत गिरयो, आसुर द्रुत अरराइ ॥ २८ ॥

[षट्पात्]

सिसुपनही जगसल्ल कुमर देवीबल काढ्ढिय ॥
इतरहुँ[14] बाल अचेत हुलासि उठ्ठे चेतन हिय ॥
सबन अप्प[15] बिस्वासि कहिय सबया[16] यह क्रीडन ॥
अप्पन बि[ल] आयो सु पस्यो रक्खस जगपीडन ॥
आयाति उ[दे][17] अप्पन उदित इहि कासू[18] त्रासि ईस्वरिय ॥
इक[18] लव बिलंब भो नहिं[19] अरहि कालिय[20] आँसिर कदन[21] किय ।२९।

१ मोहुओं के कारन २ समान अवस्थावाला ३ धमकाकर उस शत्रु को
४ बुलाया ५ पर्वत के समान शरीर धारण करके आया६ भयभीत होकर
७स्तुति के साथ८तसवीर के समान ९ बर्छी १० पीठ फाड़ कर ११ बर्छी
के बीच१२कलेजा खाकर १३ अरराट शब्द करके ॥२८॥ कुमर ने देवी के
बल से बालपन में ही संसार का साल काढ़ दिया१४और भी१५अपने१६
समान अवस्थावालों से कहा कि अपने बीच में यह खेलने को आया था सो
जगत् को पीड़ा देनेवाला राक्षस वह पड़ा है इससे जाना कि अपने पूर्व का-
ल का भाग्य उदय होनसे इस१७बर्छी में देवी ने वास करके एक१८क्षण
बिलम्ब नहीं हुआ१९जल्दी ही कालिका ने२०राक्षस का २१ नाश किया

द्रुत[1] नाडिंधम[2] ताहि दिन, विदित सिल्प बुलवाइ ॥
दै हाटक[3] नरदेह मित, प्रतिमाँ[4] रुचिर ढराइ ॥ ३७ ॥
मुक्ख्य निलय थप्पी समुभ्किं, पहिलीसोँहु प्रधान ॥
बिरचि प्रतिष्ठा वेदबिधि, दै कोटिन वँसु[5] दान ॥ ३८ ॥
अष्ठ८भुजा प्रतिमा वहै, गढ आसेरहि गोरि ॥
रूपचंद्र१६७ नृपलौं रहिय, वदिहैं गतहु वहोरि ॥ ३९ ॥
याहीतैं कुल रावरे, इँस[6] छट्टीं[7] अवदात[8] ॥
राम२०३नृपति अति महँ रहत, वलि[9] प्रमुखेन विख्यात ॥ ४० ॥
अखिल नगर बिच सुँद्धि[10] यह, पावत वढिग प्रमोद ॥
सिसु निज निज असुँ[11] सह लखे, बिरचत बिबिध बिनोद ॥ ४१ ॥
अधिप अँब्ज[12]१०००००००००चंडीकिँयउ[13], अमितैं[14] द्रव्य उपहारैं[15]
बुल्लि देसदेसन बिबुधँ[16], बिप्रनके बहुबाँर[17] ॥ ४२ ॥
भौम१५४ हु जानी सुत भयउ, देवी इच्छित दास ॥
जो सब चालुक जित्तिकैं, बिरचहिं ह्रौंस[18] बिनास ॥ ४३ ॥
भगिनी अनुजा भानु१५५ की, अग्रज जीवत भ्रात ॥
सूरा१५५ तादिनसौं सततं[19], करि देवीपय पात ॥ ४४ ॥

१शीघ्र ही२सुनार को और प्रसिद्ध कारीगरों को बुलाकर मनुष्य के शरीर के बराबर ३ सोना देकर ४ सुन्दर मूर्ति बनाई ३७ पहिले आशापूर्णा देवी की मूर्ति थी उससे भी बड़ी बनवाकर मुख्य मन्दिर में स्थापन की और वेदविधि से प्रतिष्ठा करके सैकड़ों रुपयों का ५ धन दान किया ॥ ३८ ॥ वह आठ भुजा की देवी की मूर्ति आसेर गढ पर राजा रूपचन्द तक रही और जैसे वह गई तैसे आगे लिखेंगे ॥ ३९ ॥ हे राजा रामसिंह इसीकारण से ६ आसोज महीने की ७ शुक्ल पक्ष की छट के दिन ८ अत्यन्त उत्सव रहता है सो बलिदान ९ आदि से विख्यात है ॥ ४० ॥ १० खबर ११ प्राणों सहित ॥ ४१ ॥ राजा भौमचन्द्र ने एक १२ अड़ब १३ दुर्गापाठ कराये १४ और बहुत सा धन १५ भेट किया १६ पण्डितों को १७ अनेक बार ॥ ४२ ॥ भौमचन्द्र ने जाना कि देवी की इच्छा से देवी का दास पुत्र हुआ है सो सब सोलंखियों को जीतकर उनके नाम के १८ शब्द का नाश करेगा अर्थात् भूमि पर उनका नाम भी नहीं रक्खेगा । ४३ । १९ निरन्तर ॥ ४४ ॥

द्रुत[1] नाडिंधम[2] ताहि दिन, विदित सिल्प बुलवाइ ॥
दै हाटक[3] नरदेह मित, प्रतिमा[4] रुचिर ढराइ ॥ ३७ ॥
मुक्ख्य निलय थप्पी समुझि, पहिलीसौंहु प्रधान ॥
बिरचि प्रतिष्ठा वेदबिधि, दै कोटिन वसु[5] दान ॥ ३८ ॥
अष्ट८भुजा प्रतिमा वहै, गढ आसेरहि गोरि ॥
रूपचंद्र१६७ नृपलौं रहिय, बदिहैं गतहु वहोरि ॥ ३९ ॥
याहीतैं कुल रावरे, इस[6] छट्ठो[7] अवदात[8] ॥
राम२०३नृपति अति महं रहत, बलि प्रमुखन[9] बिख्यात । ४० ।
अखिल नगर बिच सुद्धि[10] यह, पावत बढिग प्रमोद ॥
सिसु निज निज असु[11] सह लखे, बिरचत बिबिध बिनोद ॥४१॥
अधिप अब्ज[12]१०००००००००चंडीकियउ[13], अमित[14] द्रव्य उपहार[15]
बुल्लि देसदेसन बिबुध[16], बिप्रनके बहुबार[17] ॥ ४२ ॥
भीम१५४ हु जानी सुत भयउ, देवी इच्छित दास ॥
जो सब चालुक जित्तिकैं, बिरचहिं व्हांस[18] बिनास ॥ ४३ ॥
भगिनी अनुजा भानु१५५ की, अग्रज जीवत भ्रात ॥
सूरा१५५ तादिनसौं सतत[19], करि देवीपय पात ॥ ४४ ॥

१शीघ्र ही २सुनार को और प्रसिद्ध कारीगरों को बुलाकर मनुष्य के शरीर के बराबर ३ सोना देकर ४ सुन्दर मूर्ति बनाई ३७ पहिले आशापूर्णा देवी की मूर्ति थी उससे भी बडी बनवाकर मुख्य मन्दिर में स्थापन की और वेदविधि से प्रतिष्ठा करके सैकड़ों रुपयों का ५ धन दान किया ॥ ३८ ॥ वह आठ भुजा की देवी की मूर्ति आसेर गढ पर राजा रूपचन्द तक रही और जैसे वह गई तैसे आगे लिखेंगे ॥ ३९ ॥ हे राजा रामसिंह इसीकारण से ६ आसोज महीने की ७ शुक्ल पक्ष की छठ के दिन ८ अत्यन्त उत्सव रहता है सो बलिदान ९ आदि से विख्यात है ॥ ४० ॥ १० खबर ११ प्राणों सहित ॥ ४१ ॥ राजा भीमचन्द्र ने एक १२ अर्बुद १३ दुर्गापाठ कराये १४ और बहुत सा धन १५ भेट किया १६ पण्डितों को १७ अनेक बार ॥ ४२ ॥ भीमचन्द्र ने जाना कि देवी की इच्छा से देवी का दास पुत्र हुआ है सो सब सोलंखियों को जीतकर उनके नाम के १८ शब्द का नाश करेगा अर्थात् भूमि पर उनका नाम भी नहीं रक्खेगा । ४३ । १९ निरन्तर ॥ ४४ ॥

दुदन्तचन्द्रसेन १५४ कौणपकुणपनिरीक्षण ८ प्रत्यागतभूपाऽऽश्विनसितषष्ठीध्नदिनमहन्मातृमहनियमबन्धन ९ त्यक्तोपयमशूरा १५५ सततसर्वमङ्गलाराधन १० कारितवसु ८ बाहुपुरटपार्वतीप्रतिमाकनृपतत्प्रतिष्ठासमयाब्ज १००००००००० चण्डीविधान ११ समधीतकलन्दिकप्राप्तयौवनास्थिपाल १५५ चालुक्याऽर्थकरददानजनकनिवारणं १२ द्वाविंशो २२ मयूखः ॥ २२ ॥

आदितएकत्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३१ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

(दोहा)

भौमचंद्र१५४सन भाखि इम, भानुराज१५५भट सज्जि ॥
पहिलैं पच्छिमही चल्यो, गंजन चालुक गज्जि ॥ १ ॥
अनिहल्लपुर जयसिंह इत, पायउ मृत परलोक ॥
तस सुत गोभिलराज तँहँ, अधिप भयो निज ओक ॥ २ ॥
कुमर आस्थिपाल १५५ हु कटकँ, इत करि सज्ज असेस ॥
प्रथम चल्यो गुजरात पर, दव्वन चालुक देस ॥ ३ ॥

(महाचर्चरी)

(महागीतिकेत्येके)

मारना, वह वृत्तान्त सुनकर चन्द्रसेन का मरेहुए राक्षस को देखना, पीछे आयेहुए राजा का आश्विन सुदि छठ के दिन माता (देवी) का बडा उत्सव करने का नियम बांधना, विवाह करना छोड़कर शूरा का निरन्तर सर्वमंगल करना, आठ हाथों की सोना की पार्वती की मूर्ति कराकर प्रतिष्ठा करवाना, और राजा का अब्बचंडी कराना, और सर्व विद्या पढ़कर आस्थिपाल के युवा होने पर चालुक्य को खिराज देने से पिता का मना करने का बाईसवां मयूख हुआ ॥ २२ ॥ और आदि से एक सौ इगतीस मयूख हुए ॥ १३१ ॥

भौमराज से इसप्रकार कहकर भानुराज वीरों को सझकर गर्जना करके १ सोलंखी को जीतने के लिये पहिले पश्चिम को ही चला ॥ १ ॥ इधर अनिहलपुर में जयसिंह २ मृत्यु पाकर परलोक गया उसका पुत्र गोभिलराज अपने ३ घर में राजा हुआ ॥ २ ॥ ४ सेना ५ सम्पूर्ण ॥ ३ ॥

दुदन्तचन्द्रसेन १५४ कौणपकुणपनिरीक्षण ८ प्रत्यागतभूपा-
ऽऽश्विनसितषष्ठीदिनमहन्मातृमहनियमबन्धन ९ त्यक्तोपयम-
शूरा १५५ सततसर्वमङ्गलाराधन १० कारितवसु ८ बाहुपुरट-
पार्वतीप्रतिमाकनृपतत्प्रतिष्ठासमयाज्ञ १००००००००० चराडी-
विधान ११ समधीतकलन्दिकप्राप्तयौवनास्थिपाल १५५ चालु-
क्याऽर्थकरददानजनकनिवारणं १२ द्वाविंशो २२ मयूखः ॥ २२ ॥
आदितएकत्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३१ ॥
(प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)
(दोहा)

भौमचंद्र१५४सन भाखि इम, भानुराज१५५भट सज्जि ॥
पहिलैं पच्छिमही चल्यो, गंजन चालुक गज्जि ॥ १ ॥
अनिहल्लपुर जयसिंह इत, पायउ मृत परलोक ॥
तस सुत गोभिलराज तँहँ, अधिप भयो निज ओक ॥ २ ॥
कुमर आस्थिपाल १५५ हु कटकं, इत करि सज्ज असेस॥
प्रथम चल्यो गुजरात पर, दव्वन चालुक देस ॥ ३ ॥

(महाचर्च्चरी)
(महागीतिकेत्येके)

मारना, वह वृत्तान्त सुनकर चन्द्रसेन का मरेहुए राक्षस को देखना, पीछे आयेहुए राजा का आश्विन सुदि छठ के दिन माता (देवी) का बडा उत्सव करने का नियम बांधना, विवाह करना छोड़कर शूरा का निरन्तर सर्व मंगल करना, आठ हाथों की सोना की पार्वती की मूर्ति कराकर प्रतिष्ठा करवाना, और राजा का अडबचंडी कराना, और सर्व विद्या पढ़कर आस्थिपाल के युवा होने पर चालुक्य को खिराज देने से पिता का मना करने का बाईसवां मयूख हुआ ॥ २२ ॥ और आदि से एक सौ इगतीस मयूख हुए ॥ १३१ ॥

भौमराज से इसप्रकार कहकर भानुराज वीरों को सझकर गर्जना करके १ सोलंखी को जीतने के लिये पहिले पश्चिम को ही चला ॥ १ ॥ इधर अनिहलपुर में जयसिंह २ मृत्यु पाकर परलोक गया उसका पुत्र गोभिलराज अपने ३ घर में राजा हुआ ॥ २ ॥ ४ सेना ५ सम्पूर्ण ॥ ३ ॥

जूहनाह१प्रभिन्न२मैंगल३व्याल४के लहि मज्झ जुब्बन ॥
घुम्मि कल्पित५केक बुठ्ठत दान१के वमथून२के घन ॥७॥
अग्ग१ पिठ्ठि२ अनेक ओ दुहुँपासके इम लग्गि आरन॥
बारिवाह घटा दबात घटाफबात चले ति बारन ॥
तुक्कि पुक्खर के धपैं भयकार ज्यौं फन फार तच्छक ॥
धार बाजिन पिठ्ठि पारि प्रचारि हंकत कोपकी धक ॥८॥
अप्प प्रेरक केक झंझटि झारि आसनतैं उडावत ॥
पोनके बल मेरुसौं छुटि शृंग ज्यौं टिकिबे न पावत ॥
ईषिका१ प्रतिमान२ गंड३ निजान४ पंचक५ त्यौं अवग्रह६
वातकुंभ७ रु चूलिका८ विदु९ आदि चित्रित देत मामह॥९॥
गात१ त्यौं अपरा२न इक्खत चौंकि धावनमैं चमू गन ॥
पक्षजाल प्रसिद्ध पारत ज्यौं प्रतीप तजें बलीपन ॥

की अवस्थावाला हाथी) और विक (पाठा) कितने ही हैं जिनकी चीसली अच्छी लगती है, और यूथनाथ (हाथियों के समूह का पति) प्रभिन्न (गर्जना करने वाला) मैंगल (मस्तहाथी) व्याल (तिरछी घात करनेवाला) और कितने ही मध्य जोबनवाले हाथी साथ लिये,घूम कर कितने ही कल्पना की हुई वृष्टि करते हैं, दाण के और सुण्ड के फुआरों के मेघ होकर आगे पीछे और दोनों तर्फ अनेक आरें लगती हैं(तीखी वस्तु के थोड़े चुभाने को आर कहते हैं बहुवचन के लिये नकार का प्रयोग करके(आरन)शब्द कहा है)मेघ की घटा को दबाते हुए और अपनी घटा को शोभायमान करते हुए वे हाथी चले. सुण्ड के अग्रभाग को उठाकर कितने ही हाथी दौड़ते हैं ज्यों फनों के समूह से अथवा फनों को फैलाकर भयङ्कर तक्षक नाग दौड़ते हैं पीठ पर घोड़ों की पट्टी लगाकर कोप की ज्वलन में हांकते हैं ॥ ८ ॥ कितने ही हाथी अपने महावतों को झिटक कर आसनों से दूर करके उडाते हैं, सो मानों पवन के बल से सुमेरु पर्वत के शिखर पर से छूटकर कहीं टिकने नहीं पाते, आंख का गोला१दोनों दांतों के बीच का स्थान२कपोल ३ गला४पूंछ का मूल प्रदेश५इसीतरह ललाट६कुम्भस्थल के नीचे का भाग ७ कानों का मूलभाग८कुम्भस्थल के मध्य का भाग ९ आदि में चित्राम किये हुए हाथी अथवा मा (बड़ा) उत्सव देते हैं, "यहां हमको (मा) शब्द के अर्थ में सन्देह है सो पाठक लोक विचारें अथवा कोई अशुद्धता मालूम होती है" ॥ ९ ॥ अपने काले रङ्ग के शरीर को और सायंकाल के सन्ध्या समय को एकसा देखकर अर्थात् सन्ध्या समय को हाथी जानकर क्रोध करके ओज

जूहनाह१प्रभिन्न२मैंगल३व्याल४के लहि मज्झ जुब्बन ॥
घुम्मि कल्पित५केक बुट्ठत दान१के वमथून२के घन ॥७॥
अग्ग१ पिट्ठि२ अनेक ओ दु२हुँपासके इम लग्गि आरन॥
बारिवाह घटा दबात घटाफबात चले ति वारन ॥
तुक्कि पुक्खर के धपैं भयकार ज्यौं फन फार तच्छक ॥
धार बाजिन पिट्ठि पारि प्रचारि हंकत कोपकी धक ॥८॥
अप्प प्रेरक केक झंझटि झारि आसनतैं उडावत ॥
पोनके बल मेरुसौं छुटि शृंग ज्यौं टिकिबे न पावत ॥
इषिका१ प्रतिमान२ गंड३ निजान४ पंचक५ त्यौं अवग्रह६
वातकुंभ७ रु चूलिका८ विदु९ आदि चित्रित देत मामह॥९॥
गात१ त्यौं अपरा२न इक्खत चैंकि धावनमैं चमू गन ॥
पक्ष्मजाल प्रसिद्ध पारत ज्यौं प्रतीप तजे बलीपन ॥

की अवस्थावाला हाथी) और विक (पाठा) कितने ही हैं जिनकी चीसली अच्छी लगती है, और यूथनाथ (हाथियों के समूह का पति) प्रभिन्न (गर्जना करने वाला) मैंगल (मस्तहाथी) व्याल (तिरछी घात करनेवाला) और कितने ही मध्य जोबनवाले हाथी साथ लिये,घूम कर कितने ही कल्पना की हुई वृष्टि करते हैं, दाण के और सुण्ड के फुआरों के मेघ होकर आगे पीछे और दोनों तर्फ अनेक आरें लगती हैं(तीखी वस्तु के थोड़े चुभाने को आर कहते हैं बहुवचन के लिये नकार का प्रयोग करके(आरन)शब्द कहा है)मेघ की घटा को दबातेहुए और अपनी घटा को शोभायमान करते हुए वे हाथी चले. सुण्ड के अग्रभाग को उठाकर कितने ही हाथी दौड़ते हैं ज्यों फनों के समूह से अथवा फनों को फैलाकर भयङ्कर तचक नाग दौड़ते हैं पीठ पर घोड़ों की पट्टी लगाकर कोप की ज्वलन में हांकते हैं ॥ ८ ॥ कितने ही हाथी अपने महावतों को झिटक कर आसनों से दूर करके उडाते हैं, सो मानों पवन के बल से सुमेरु पर्वत के शिखर पर से छूटकर कहीं टिकने नहीं पाते, आंख का गोला१दोनों दांतों के बीच का स्थान२कपोल३ गला४पूंछ का मूल प्रदेश५इसीतरह ललाट६कुम्भस्थल के नीचे का भाग ७ कानों का मूलभाग८कुम्भस्थल के मध्य का भाग ९ आदि में चित्राम कियेहुए हाथी अथवा मा (बड़ा) उत्सव देते हैं, " यहां हमको (मा) शब्द के अर्थ में सन्देह है सो पाठक लोक विचारें अथवा कोई अशुद्धता मालूम होती है" ॥ ९ ॥ अपने काले रङ्ग के शरीर को और सायंकाल के सन्ध्या समय को एकसा देखकर अर्थात् सन्ध्या समय को हाथी जानकर क्रोध करके ओज

लेत के पखराल चाल अराल ज्यौं नखराल पातुरि ॥
जात के चमराल लूमन हालपैं बलिहार है जुरि ॥१३॥
झुंड चंपत रान के अतिमान झंडन लंघि झंपत ॥
के बरच्छिन आनजान उडान के क्रम भुम्मि कंपत ॥
पारसीक१रु कच्छ२बाल्हिक३के बनायुज४जात प्रध्वर१ ॥
आइके अहिभार बक्र२ जिताइ जे हयमेध अध्वर ॥ १४ ॥
बातचक्र बनाव के क[illegible] आवजाव थरक्कि रच्चहिं ॥
नर्त्तकी पलटाव ज्यौं [illegible]भाव फरक्कि नच्चहिं ॥
के मलंगत राह प[illegible]जगाह फैलहिं ॥
जानि लंघन चा[illegible]सो रविबाह गैलहिं ॥ १५ ॥
ऊफनैं जवमैं घ[illegible]त बात बनैं पटीपर ॥
इक्क लंघत इक्क[illegible]नि जानि नटी नटी पर ॥

काटकर पृथक करनेवालों की भांति ऊपट(जंगल)का मार्ग करदेते हैं. कितने ही पाखर(वाले घोड़े टेढी चाल नखरा करनेवाली पातुरि के समान लेते हैं. कितने ही गजगाह (गजगाव) की लूमों की चाल पै अथवा हालरा(कण्ठभूषण) पर बलिहारी जाते हैं. कितने ही झुण्ड रान के दबाने से बडे नाप के झण्डों को कूदकर लांघजाते हैं. कितने ही आवजावों के क्रम से उडान में कई बर्छियों तक की भूमि को धुजादेते हैं, पारस देश, कच्छ देश, बाल्हीक देश, बनायु देश के पैदाहुए पाधर(जिनमें कोई ऐब नहीं) अथवा सीधे दौड़नेवाले ऐसे घोड़े आकर टेढी गति में शेष को भार देनेवाले और अश्वमेध के विजय करानेवाले ॥ १४ ॥ कितने ही गोलकुण्डा और आवजाव करके नाच करते हैं सो मानों वेश्या पलटा और हावभाव करके घूमर देकर नाचती है, कितने ही घोड़े मार्ग में फान्दते हैं सो पांखों की भांति गजगाहों को फैलाते हैं. पहिले समय में वीर क्षत्रिय हाथियों को मारते थे और युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा रखते थे वे ही लोग गजगाह लगाते थे और इसका अर्थ भी यही है कि "गजों को गाहनेवाले" इनको उल्लंघन करना चाहकर सूर्य अपने सप्ताश्व को साथ ही छोड़ता है अर्थात् दौड़ाता है॥ १५ ॥ वेग में उफनते हुए बहुत घोड़े उड़जाते हैं और पटी में पवन बनजाते हैं और एक एक को उल्लंघन करते हैं जैसे अपनी हानि जानकर एक नटनी दूसरी नटनी पर फांदजाती है, ग्रन्थकर्ता कहते हैं कि एक जीभ से मैं कितनी बातें कहूं शीघ्र दिन में दौड़ने पर भी लकीर

लेत के पखराल चाल अराल ज्यौं नखराल पातुरि ॥
जात के चमराल लूमन हालपैं बलिहार ह्वै जुरि ॥१३॥
झुंड चंपत रान के अतिमान झंडन लंघि झंपत ॥
के बरच्छिन आनजान उडान के क्रम भुम्मि कंपत ॥
पारसीक१रु कच्छ२बाल्हिक३के बनायुज४जात प्रध्वर१ ॥
आइके अहिभार बक्र२ जिताइ जे हयमेध अध्वर ॥ १४ ॥
वातचक्र बनाव के क[illegible] आवजाव थरक्कि रच्चहिं ॥
नर्त्तकी पलटाव ज्यौं [illegible] भाव फरक्कि नच्चहिं ॥
के मलंगत राह प[illegible] जगाह फैलहिं ॥
जानि लंघन चाह[illegible] रविवाह गैलहिं ॥ १५ ॥
ऊप्फनैं जवमैं घ[illegible] बात बनैं पटीपर ॥
इक लंघत इक्क[illegible] नि जानि नटी नटी पर ॥

काटकर पृथक[illegible]करनेवालों की भांति ऊपट(जंगल)का मार्ग क-

रदेते हैं. कितने ही पाखर(चालें धीं[illegible] टेढी चाल नखरा करनेवाली पातुरि के समान लेते हैं. कितने ही गजगाह (गजगाव) की लूमों की चाल पै अथवा हालरा(कण्ठभूषण) पर बलिहारी जाते हैं. कितने ही झुण्ड रान के दबाने से बडे नाप के झण्डों को कूदकर लांघजाते हैं. कितने ही आवजावों के क्रम से उडान में कई बर्छियों तक की भूमि को धुजादेते हैं, पारस देश, कच्छ देश, वाल्हीक देश, बनायु देश के पैदाहुए पाधरे(जिनमें कोई ऐब नहीं) अथवा सीधे दौड़नेवाले ऐसे घोड़े आकर टेढी गति में शेषको भार देनेवाले और अश्वमेध के विजय करानेवाले ॥ १४ ॥ कितने ही गोलकुण्डा और आवजाव करके नाच करते हैं सो मानों वेश्या पलटा और हावभाव करके घूमर देकर नाचती है, कितने ही घोड़े मार्ग में फान्दते हैं सो पांखों की भांति गजगाहों को फैलाते हैं. पहिले समय में वीर क्षत्रिय हाथियों को मारते थे और युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा रखते थे वे ही लोग गजगाह लगाते थे और इसका अर्थ भी यही है कि " गजों को गाहनेवाले" इनको उल्लंघन करना चाहकर सूर्य अपने ससाश्व को साथ ही छोड़ता है अर्थात् दौड़ाता है॥ १५ ॥ वेग में उफनते हुए बहुत घोड़े उड़जाते हैं और पटी में पवन बनजाते हैं और एक एक को उल्लंघन करते हैं जैसे अपनी हानि जानकर एक नटनी दूसरी नटनी पर फांदजाती है, ग्रन्थकर्ता कहते हैं कि एक जीभ से मैं कितनी बातें कहूं शीघ्र दिन में दौड़ने पर भी लकीर

मल्लिकाक्ष४ छये नये बयमैं बहैं रयमैं रहैं रत ॥ १९ ॥
बीर के करि पैज इक्क सु इक्क अग्ग बढात बाजिन॥
जीन१ पक्खर२ के जवाहिर चिल्ल मंडत रोचि राजिन॥
भेट होतहि बेगमैं जिन्ह फेट हत्थिनकौं भ्रमावत ॥
भीति दै सफ घातकी उडिआत पुब्बहि भू नमावत ॥२०॥
चित्र धावनलीन के पटु पान पिंड खलीन चट्टत ॥
बक्क धाव अधीन के दृग१ मीन२ कौं करि दीन दट्टत ॥
गम्य गंजि गह्योहि जानहु अग्ग ह्वै जब बग्गउट्ठिय ॥
मग्ग चाल अराल ह्वै कति फग्गकाल गुलालमुट्ठिय ।२१।
के अरोहक हीन भृत्यन हत्थ फाँदत उप्फनैं क्रम ॥
केक सादिन हिट्ठ सत्रुन जिट्ठके दव ज्यौं बनैं जिम ॥
अब्ब यागतिके चले रु मिले भले तिनके अरोहक ॥
सत्रुडोहक सिंह जे मनमत्त अच्छरिवृंद मोहक ॥ २२ ॥

शुक्लवर्ण से घिरीहुई आंखोंवाले नवीन उमर के वेग से चलने में प्रीति रखते हुए शोभायमान हैं ॥ १९ ॥ कितने ही वीर होड लगाकर एक से एक घोड़े को आगे बढाते हैं, कितने ही जीण और पाखर जवाहिरात के चिन्हों से मंढेहुए पंक्तियां प्रकाश करते हैं जिनके वेग में मिलने से टक्कर लगाकर हाथियों को चक्कर खिलाते हैं. खुर के घात का भय देकर भूमि को नमाते हुए पहिले ही उड़आते हैं अर्थात् जिनको खुरघात का भय देते हैं उन तक नहीं पहुंच कर बीच में से ही उड़आते हैं ॥ २० ॥ कितने ही घोड़े आश्चर्य युक्त दौड़ने में लीन हैं और वे चतुर पुष्ट शरीरवाले लगामों को चाटते हैं. कितने ही घोड़े दौड़ने के आधीन होकर नेत्र और मच्छी को दीन करके दबा देते हैं अर्थात् नेत्र और मच्छी से भी ऐसा पलटा नहीं होसक्ता, जो प्राप्त होजाता है उसको जीतकर पकड़ा हुआ ही जानो. जब बाग उठी तब ऐसे घोड़े आगे होकर मार्ग की चाल में टेढे होकर चलते हैं. और कितने ही फाग के समय गुलाल की मुट्ठी के समान उड़ते हैं ॥ २१ ॥ कितने ही घोड़े सवार के बिना नौकरों के हाथ में उफनते हुए कूदते हैं और कितने ही असवारों के नीचे शत्रुओं के लिये जेठ मास की ज्वाला ज्यों बनते हैं. इसप्रकार के घोड़े चले और उनके सवार भी अच्छे मिले. शत्रुओं को हेरनेवाले सिंह समान मनवाले जो मस्त होकर अप्सराओं के समूह को मोहनेवाले ॥ २२ ॥

मल्लिकाक्ष४ छये नये बयमैं बहैं रयमैं रहैं रत ॥ १९ ॥
बीर के करि पैज इक्क सु इक्क अग्ग बढात बाजिन॥
जीन१ पक्खर२ के जवाहिर चित्र मंडत रोचि राजिन॥
भेट होतहि बेगमैं जिन्ह फेट हत्थिनकौं भ्रमावत ॥
भीति दै सफ घातकी उडिआत पुब्बहि भू नमावत ॥२०॥
चित्र धावनलीन के पटु पान पिंड खलीन चट्टत ॥
बक्क धाव अधीन के दृग१ मीन२ कौं करि दीन दट्टत ॥
गम्य गंजि गहयोहि जानहु अग्ग ह्वै जब बग्गउट्ठिय ॥
मग्ग चाल अराल ह्वै कति फग्गकाल गुलालमुट्ठिय ।२१।
के अरोहक हीन भृत्यन हत्थ फाँदत उफनैं क्रम ॥
केक सादिन हिट्ठ सत्रुन जिट्ठके दव ज्यौं बनैं जिम ॥
अब्ब यागतिके चले रु मिले भले तिनके अरोहक ॥
सत्रुडोहक सिंह जे मनमत्त अच्छरिवृंद मोहक ॥ २२ ॥

शुक्लवर्ण से घिरीहुई आंखोंवाले नवीन उमूर के वेग से चलने में प्रीति रखते हुए शोभायमान हैं ॥ १९ ॥ कितने ही वीर होड लगाकर एक से एक घोड़े को आगे बढाते हैं, कितने ही जीण और पाखर जवाहिरात के चित्रामों से मंढेहुए पंक्तियां प्रकाश करते हैं जिनके वेग में मिलने से टक्कर लगाकर हाथियों को चक्कर खिलाते हैं. खुर के घात का भय देकर भूमि को नमाते हुए पहिले ही उड़आते हैं अर्थात् जिनको खुरघात का भय देते हैं उन तक नहीं पहुंच कर बीच में से ही उड़आते हैं ॥ २० ॥ कितने ही घोड़े आश्चर्य युक्त दौड़ने में लीन हैं और वे चतुर पुष्ट शरीरवाले लगामों को चाटते हैं. कितने ही घोड़े दौड़ने के आधीन होकर नेत्र और मच्छी को दीन करके दबा देते हैं अर्थात् नेत्र और मच्छी से भी ऐसा पलटा नहीं होसक्ता, जो प्राप्त होजाता है उसको जीतकर पकड़ा हुआ ही जानो. जब बाग उठी तब ऐसे घोड़े आगे होकर मार्ग की चाल में टेढे होकर चलते हैं. और कितने ही फाग के समय गुलाल की मुट्ठी के समान उड़ते हैं ॥ २१ ॥ कितने ही घोड़े सवार के बिना नौकरों के हाथ में उफनते हुए कूदते हैं और कितने ही असवारों के नीचे शत्रुओं के लिये जेठ मास की ज्वाला ज्यों बनते हैं. इसप्रकार के घोड़े चले और उनके सवार भी अच्छे मिले. शत्रुओं को हेरनेवाले सिंह समान मनवाले जो मस्त होकर अप्सराओं के समूह को मोहनेवाले ॥ २२ ॥

गोन झेलन नाँ सहैं रनरंग खेलनको तदागति॥
बुल्लि मैं पहिलैं न मैं पहिलैं रु बैरिन बंस वंटत॥
जित्ति आरनैं व्हैं जई तउ कित्तिकारन सीस संटत॥ २६॥
पच्छ१के रु विपच्छ२के जिन्ह दच्छ के बितरैं बिसेसन॥
हंकि जे रैनप चलाइ सहै न व्हाँ भर संकि सेसन॥
बिसेसन१किसेसन२अन्त्यानुप्रासः॥१॥
उर्बसी१सुचि२मेनका३रु तिलोत्तमा४पटुभाव पुच्छत॥
के सुकेसि५घृताचि६जुब्बन ज्यौं सुनैं मन त्यौं धरैंमत।२७।
पूर्बचित्ति७ऋतुस्थला८सुरसा९प्रमाथिनि१०के सिराहत॥
पर्णिनी११पश्चिनी१२सुबाहु १३रु सुप्रिया१४कति चित्त चाहत॥
मिश्रकेसि १५अलंबुसा१६रु मरीचि१७जुब्बन के बखानत
अद्रिका१८असिता१९प्रिया२०रु मनोरमा २१बिच भाव आनत२८
ईसलोक१किते किते हरिलोक२के बिधिलोक३इच्छत॥
इक्क१लक्खन मैं बहैं न अरीति अंग रहैं न बिच्छत॥
घात लग्गत काचलौं झरिजात पै मुरिजात नैंक न॥
ढारि हत्थिन रारि पोखत चिल्लह१गिद्ध२सिचान३ढैं४कनैं॥२९॥
यौं प्रबीरनैं ओघैं अंकुरि आस्थिपाल१५५ कुमार हंकिय
चंड जो चतुरंग चल्लत मेह ज्यौं रवि खेह ढंकिय॥

उन बीरों का जाना कोई नहीं झेलसक्ता और युद्धभूमि के खेल में भी २उनकी गति नहीं झेलसक्ते मैं पहिले मारूंगा मैं पहिले मारूंगा ऐसा कहकर वैरियों के वंश को बांटते हैं, ३ युद्ध जीतकर विजयी होगये हैं तोभी कीर्ति लेने के कारण बदले में अपना मस्तक देते हैं॥ २६॥ अपने पक्ष के और पराये पक्ष के बहुतों को कितने ही ४ चतुर ५ बांटते हैं जो हांककर युद्ध पर चलाते हैं तहां शेषनाग ६ भार नहीं सहता॥ २७॥ २८॥ ७ शिवलोक, ८ विष्णुलोक, ९ ब्रह्मलोक, अकेला लाखों में भय नहीं पाता और १० शत्रुओं के शरीर ११ विना घाव नहीं रहते चोट लगने से काच के समान झड़जाते हैं १२ परन्तु नैंक भी नहीं मुड़ते हाथियों को १३ गिराकर युद्ध में चील्ह, गिद्ध, शिकरा और १४ ढीचों का पोषण करते हैं॥ २९॥ इसप्रकार १५ विशेष वीरों के १६ समूह में १७ खड़े होकर १८ भयङ्कर १९ चार अङ्गवाली सेना चलते समय मेघ के समान सूर्य खेह से ढकगया,

गौंन झेलन नाँ सहैं रनरंग खेलनको तदागति॥
बुल्लि मैं पहिलैं न मैं पहिलैं रु बैरिन बंस बंटत॥
जित्ति आरनैं व्है जई तउ कित्तिकारन सीस संटत॥ २६ ॥
पच्छ१के रु विपच्छ२के जिन्ह दच्छ के बितरैं बिसेसन॥
हंकि जे रैंनप चलाइ सहै न व्हाँ भर संकि सेसन॥
बिसेसन१किसेसन२अन्त्यानुप्रासः॥१॥
उर्बसी१सुचि२मेनका३रु तिलोत्तमा४पटुभाव पुच्छत॥
के सुकेसि५घृताचि६जुब्बन ज्यों सुनैं मन त्यौं धरैंमत।२७।
पूर्वचित्ति७ऋतुस्थला८सुरसा९प्रमाथिनि१०के सिराहत॥
पर्णिनी११पणिनी१२सुबाहु १३रु सुप्रिया१४कति चित्त चाहत॥
मिश्रकेसि १५अलंबुसा१६रु मरीचि१७जुब्बन के बखानत
अद्रिका१८असिता१९प्रिया२०रु मनोरमा २१बिच भाव आनत२८
ईसलोक१किते किते हरिलोक२के बिधिलोक३इच्छत॥
इक्क१लक्खन भै वहै न अरीति अंग रहै न बिच्छत॥
घात लग्गत काचलौं झरिजात पैं[12] मुरिजात नैंक न॥
ढारि[13] हत्थिन रारि पोखत चिल्लह१गिद्ध२सिचान३ ढैं४कनैं[14] ॥२९॥
यों प्रबीरनैं[15] ओघैं[16] अंकुरि[17] आस्थिपाल१५५ कुमार हंकिय
चंडै[18] जो चतुरंग[19] चल्लत मेह ज्यों रवि खेह ढंकिय॥

उन वीरों का जाना कोई नहीं झेलसक्ता और युद्धभूमि के खेल में भी २उनकी गति नहीं झेलसक्ते मैं पहिले मारूंगा मैं पहिले मारूंगा ऐसा कहकर बैरियों के वंश को बांटते हैं, ३ युद्ध जीतकर विजयी होगये हैं तोभी कीर्ति लेने के कारण बदले में अपना मस्तक देते हैं॥ २६॥ अपने पक्ष के और पराये पक्ष के बहुतों को कितने ही ४ चतुर ५ बांटते हैं जो हांककर युद्ध पर चलाते हैं तहां शेषनाग ६ भार नहीं सहता॥ २७॥ २८॥ ७ शिवलोक, ८ विष्णुलोक, ९ ब्रह्मलोक, अकेला लाखों में भय नहीं पाता और १० शत्रुओं के शरीर ११ विना घाव नहीं रहते चोट लगने से काच के समान झड़जाते हैं १२ परन्तु नैंक भी नहीं मुड़ते हाथियों को १३ गिराकर युद्ध में चीलह, गिद्ध, शिकरा और १४ ढीचों का पोषण करते हैं॥ २९॥ इसप्रकार १५ विशेष वीरों के १६ समूह में १७ खड़े होकर १८ भयङ्कर १९ चार अङ्गवाली सेना चलते समय मेघ के समान सूर्य खेह से ढकगया,

बप्पके अनु बप्पको बिरहु बंधु बिन्न बटैँ असंकन ॥ ३४ ॥
कढ्ढि कालिकहू परैं कति सत्रु लोहित मुच्छ रंगत ॥
मत्त रुंड ससंधलै करसीस ईसहिँ देत मंगत ॥
के कबंध असंध बाल प्रबंध भंमहभोरि खावत ॥
अच्छरीन छुवंत के अरिजानि गोडिन दै गिरावत ॥ ३५ ॥
के स्वअंत्रन तंत्र ऐंचि कुविंदज्यौँ पटजाल तानत ॥
के नियुद्ध रचैं उभैर अरिमल्ल१ ज्यौँ प्रतिमल्ल२ मानत ।
रुंड केक मलंगि जोधन जाल लोहित लालमंडत ।
के प्रमत्त स्वअंगघातक जानि अप्पन छिप्रछंडत ॥ ३६ ॥
अच्छरीन बिमान के चढि स्वीय रुंड मलंग इक्खत ॥
सत्रु पैं चलि बेग केक कबंध अंधन धाव सिक्खत ॥
केक बंधन रत्त छुट्टत छिंछि जुग्गिनि पत्र झेलत ॥
के बिरबाहुन व्यासकैं पर१अप्पर२पास सु मीडि पेलत॥३७॥

निःशंक होकर बांटते हैं ॥ ३४ ॥ कलेजा निकलकर पड़ता है और कितने ही वीर शत्रुओं के रक्त से मूंछें रंगते हैं. मस्त धड़ प्रतिज्ञा के साथ हाथ में मस्तक लेकर मांगते हुए महादेव को देते हैं, कितने ही धड़ (विना मस्तक धड़ से कुछ क्रिया करे सो कवन्ध कहलाते हैं) विना प्रतिज्ञा किये बालकों की रचना के समान भंभाभोरी (भँवल) खाते हैं. कितने ही कबन्ध अप्सराओं का स्पर्श करके उनको छुटने की देकर गिराते हैं ॥ ३५ ॥ कितने ही अपनी आंतें खींचकर जुलाहों के समान तांणा तणकर कपड़े की जाल तानते हैं कितने ही दो दो मिलकर बाहुयुद्ध करते हैं जैसे एक मल्ल मुकाबिला करनेवाले दूसरे मल्ल को शत्रु मानता है, कितने ही रुण्ड वीरों को फांदकर लोही की लाल जाली मांडते है, कितने ही मस्त अपने अंग को घात करनेवाला जानकर अपने को शीघ्र छोड देते हैं ॥ ३६ ॥ कितने ही अप्सराओं के विमान पर चढ़कर कूदकर अपने धड को देखते हैं कितने ही कबन्ध वेग से शत्रु के पास जाकर अन्ध का दौड़ना सीखते हैं कितने ही कबन्धों के रक्त की पिचकारियां छुटती हैं जिनको जोगनियां पात्र में झेलती हैं. कितने ही दोनों हाथों को फैलाकर अपना पराया जो पास आजावे उसी को मसल कर पीछा हटा देते हैं ॥३७॥

बप्पके अनु बप्पको बिरहु बंधु बिन्न बटैं असंकन ॥ ३४ ॥
कढ़ि कालिकहू परैं कति सत्रु लोहित मुच्छ रंगत ॥
मत्त रुंड ससंधलै करसीस ईसहिं देत मंगत ॥
के कबंध असंध बाल प्रबंध भंभहभोरि खावत ॥
अच्छरीन छुवंत के अरिजानि गोडिन दै गिरावत ॥ ३५ ॥
के स्वअंत्रन तंत्र ऐंचि कुबिंदज्यौं पटजाल तानत ॥
के नियुद्ध रचैं उभै२ अरिमल्ल१ ज्यौं प्रतिमल्ल२ मानत ।
रुंड केक मलंगि जोधन जाल लोहित लालमंडत ।
के प्रमत्त स्वअंगघातक जानि अप्पन छिप्रछंडत ॥ ३६ ॥
अच्छरीन बिमान के चढि स्वीय रुंड मलंग इक्खत ॥
सत्रु पैं चलि बेग केक कबंध अंधन धाव सिक्खत ॥
केक बंधन रत्त छुट्टत छिंछि जुग्गिनि पत्र झेलत ॥
के बिखाहुन व्यासकैं पर१अप्प२पास सु मीडि पेलत।३७।

निःशंक होकर बांटते हैं ॥ ३४ ॥ कलेजा निकलकर पड़ता है और कितने ही वीर शत्रुओं के रक्त से मूंछें रंगते हैं. मस्त धड़ प्रतिज्ञा के साथ हाथ में मस्तक लेकर मांगते हुए महादेव को देते हैं, कितने ही धड़ (विना मस्तक धड़ से कुछ क्रिया करे सो कबन्ध कहलाते हैं) विना प्रतिज्ञा किये बालकों की रचना के समान भांभाभोरी (भँवल) खाते हैं. कितने ही कबन्ध अप्सराओं का स्पर्श करके उनको छुटने की देकर गिराते हैं ॥ ३५ ॥ कितने ही अपनी आंतें खींचकर जुलाहों के समान तांणा तणकर कपड़े की जाल तानते हैं कितने ही दो दो मिलकर बाहुयुद्ध करते हैं जैसे एक मल्ल मुकाबिला करनेवाले दूसरे मल्ल को शत्रु मानता है, कितने ही रुण्ड वीरों को फांदकर लोही की लाल जाली मांडते है, कितने ही मस्त अपने अंग को घात करनेवाला जानकर अपने को शीघ्र छोड देते हैं ॥ ३६ ॥ कितने ही अप्सराओं के विमान पर चढ़कर कूदकर अपने धड को देखते हैं कितने ही कबन्ध वेग से शत्रु के पास जाकर अन्ध का दौड़ना सीखते हैं कितने ही कबन्धों के रक्त की पिचकारियां छूटती हैं जिनको जोगनियां पात्र में झेलती हैं. कितने ही दोनों हाथों को फैलाकर अपना पराया जो पास आजावे उसी को मसल कर पीछा हटा देते हैं ॥३७॥

अंघ्रि१ हत्थर बिहीन बाहन सर्पलौं कति रुंड लुट्टहिं ॥
पंच५धा जिन्ह पिंडतैं छलि रत्त छिंछि छुलक्कि छुट्टहिं ॥
केनके बर माल्य डारत सीसकट्टि समाल्य जावत ॥
घुम्मि छेदककौं सिराहत ज्यौं न अच्छरि जी सुहावत॥४१॥
चित्रजुद्ध कबंध यौं बिरचैं अनेक स्वकित्ति चाहत ॥
सूत१मागध२ बंदि३ दै विरुदावली तिनकौं सिराहत ॥
है उडाइ रु कुद्दि के अरि हत्थि हौदनमैं प्रहारत ॥
सत्र तुट्टत केक पानिन पानकै गजदंत पारत ॥ ४२ ॥
के गदा फटकारि हत्थन भद्रहत्थिन मत्थ फोरत ॥
छुट्टि मुत्तिनकी भरैं करका कि बारिद स्याम छोरत ॥
बीर बत्थन के मिलैं पलपिंडपैं कि बिरोध बग्घन ॥
अप्प सोनित अंजलीभरि केक अक्कहिं देत अग्घन ॥ ४३ ॥

रही ॥४०॥ चरण और हाथ विना के वाहन सर्प के समान और कितने ही रुण्ड लोट रहे हैं, जिनके शरीरों से पिचकारियों के समान रक्त की छींछें पांचों तरफ उडती हैं (चारों दिशा और एक आकाश ये पञ्चधा हुए) कितनों के वरमाला डालते समय मस्तक कटते हैं सो माला सहित ही जाते हैं पीछा फिर कर काटनेवाले की प्रशंसा करते हैं जो अप्सरा को नहीं सुहाता क्योंकि वे जानती हैं कि पीछा जाकर यह सम्पूर्ण ही कट जावेगा तो हम किसको वरेंगी ॥ ४१ ॥ अनेक कबन्ध अपनी किर्त्ति को चाहते हुए आश्चर्य करानेवाला युद्ध करते हैं जिनको चारण, बड़वाभाट, स्तुति करके राजाओं को प्रभात समय में जगानेवाले भाट उत्साहवर्धिनी स्तुति करके उनकी प्रशंसा करते हैं. घोड़े उडाकर कूदकर शत्रुओं को मारते हैं. शस्त्र टूटजाने की अवस्था में कितने ही अपने हाथों से पराक्रम करके हाथियों के दांतों को खींच लेते हैं ॥ ४२ ॥ कितने ही हाथियों पर गदा मारकर भद्रजाति के हाथियों के मस्तक फोड़ते हैं, जिनसे मोतियों की वर्षा होती है किधों श्याम मेघ ओले (गिड़े) वर्षाता है, कितने ही वीर बाहुयुद्ध करके मिलते हैं सो किधों मांस के पिण्ड पर सिंहों का विरोध होता है लोही की अंजलि भरकर कितने ही सूर्य को अर्घ देते हैं

अंघ्रि१ हत्थर२ बिहीन बाहन सर्पलौं कति रुंड लुट्टहिं ॥
पंच५धा जिन्ह पिंडतैं छलि रत्त छिंछि छुलक्कि छुट्टहिं ॥
केनके बर माल्य डारत सीसकट्टि समाल्य जावत ॥
घुम्मि छेदककौं सिराहत ज्यौं न अच्छरि जी सुहावत ॥४१॥
चित्रजुद्ध कबंध यौं बिरचैं अनेक स्वकित्ति चाहत ॥
सूत१मागध२ बंदि३ दै विरुदावली तिनकौं सिराहत ॥
है उडाइ रु कुद्दि के अरि हत्थि होदनमैं प्रहारत ॥
सस्त्र तुट्टत केक पानिन पानकैं गजदंत पारत ॥ ४२ ॥
के गदा फटकारि हत्थन भद्रहत्थिन मत्थ फोरत ॥
छुटि मुत्तिनकी भ्फरैं करका कि बारिद स्याम छोरत ॥
बीर बत्थन के मिलैं पलपिंडपैं कि बिरोध बग्घन ॥
अप्प सोनित अंजलीभरि केक अक्कहिं देत अग्घन ॥ ४३ ॥

रही ॥४०॥ चरण और हाथ विना के वाहन सर्प के समान और कितने ही रुण्ड लोट रहे हैं, जिनके शरीरों से पिचकारियों के समान रक्त की छींटें पांचों तरफ उडती हैं (चारों दिशा और एक आकाश ये पञ्चधा हुए) कितनों के वरमाला डालते समय मस्तक कटते हैं सो माला सहित ही जाते हैं पीछा फिर कर काटनेवाले की प्रशंसा करते हैं जो अप्सरा को नहीं सुहाता क्योंकि वे जानती हैं कि पीछा जाकर यह सम्पूर्ण ही कट जावेगा तो हम किसको वरेंगीं ॥ ४१ ॥ अनेक कबन्ध अपनी किर्त्ति को चाहते हुए आश्चर्य करानेवाला युद्ध करते हैं जिनको चारण, बड़वाभाट, स्तुति करके राजाओं को प्रभात समय में जगानेवाले भाट उत्साहवर्धिनी स्तुति करके उनकी प्रशंसा करते हैं. घोड़े उडाकर कूदकर शत्रुओं को मारते हैं. शस्त्र टूटजाने की अवस्था में कितने ही अपने हाथों से पराक्रम करके हाथियों के दांतों को खींच लेते हैं ॥ ४२ ॥ कितने ही हाथियों पर गदा मारकर भद्रजाति के हाथियों के मस्तक फोड़ते हैं, जिनसे मोतियों की वर्षा होती है किधों श्याम मेघ ओले (गिड़े) वर्षाता है, कितने ही वीर बाहुयुद्ध करके मिलते हैं सो किधों मांस के पिण्ड पर सिंहों का विरोध होता है लोही की अंजलि भरकर कितने ही सूर्य को अर्घ देते हैं

के पिसाच स्वसीस दै गजसीस ईसकृपा उमंगहिँ ॥
योँहि के गिरिजागरैँ लगि त्रस्तव्है तजिजात अंगहिँ ॥ ४७॥
भूत के दुव२दूतव्है भट द्वैर इतैँरु उतैँ भिरावहिँ ॥
गूदचक्खत पुष्ट२ के द्रुत दोरि दुब्बल के गिरावहिँ ॥
केक लोहित पानसौँ तजि भान मर्कट मान कुद्दहिँ ॥
मन्नि आवत कालिका कृत छद्म के नतनैंन मुद्दहिँ ॥ ४८ ॥
केक भैरव१ जुग्गिनी२ भट१ अच्छरी२न हसात नाटक ॥
भार के पल के बहैं भनि अद्ध याबिच देहु भाटक ॥
बाजिहीन कितेक बीरन के स्वपिट्ठि चढाइ है१ बनि ॥
गै बिहीन किते निसादिन त्योँ चढाइ विनीत गै बनि॥४६॥
पैठिकैं अवमर्द्दमैं तिन्ह प्रान१ पिंड२ प्रभिन्न पाचत ॥
बेस स्वीय बनाइ लोहित आद्य पंच५हि खाद्य खावत ॥
च्यारि४ जाम रचक्कलै दुव२चक्क अक्कहिँ सिक्ख अप्पिय ॥

पकड़ लेना चाहता है, कितने ही पिशाच अपने मस्तक पर हाथी का मस्तक लगाकर अर्थात् गणेश का रूप करके महादेव की कृपा को उमंगते हैं, इसीप्रकार कितने ही पार्वती के गले लगते हैं परन्तु भयभीत होकर पार्वती के शरीर को छोड़जाते हैं ॥ ४७ ॥ कितने ही भूत दोनों तरफ के दूत होकर इधर उधर के दोनों वीरों को भिड़ादेते हैं. ताजे मोटे का गूद(मज्जा) चखकर शीघ्र दौड़कर कितने ही दुर्बलों को गिराते हैं. कितने ही रक्तपान से बेचेत होकर बन्दरों के समान कूदते हैं. कालिका देवी को आतीहुई मानकर छल करके नीचे नेत्रों से नेत्र बन्द कर लेते हैं ॥ ४८ ॥ कितने ही भैरव और जोगिनियां नाटक करके वीरों और अप्सराओं को हसाते हैं. कितने ही भूत आदि मांस का भार उठाकर चलते हैं जिनको दूसरे कहते हैं कि इसमें से आधा हमको किराये (भाड़े) देदो. कितने ही भूत घोड़े बनकर अपनी पीठ पर बिना घोड़ेवाले वीरों को चढाते हैं. इसीप्रकार शिक्षा पायेहुए हाथी बनकर हाथियों के विना हाथियों पर सवारों को चढाते हैं।४९। कितने ही उस पीड़ादायक संग्राम में घुसकर उन वीरों के प्राण और पिंडों को विदीर्ण हुए पाते हैं, उस समय अपना(भूतों का)असली वेष बनाकर लोही आदि पांच प्रकार(भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, पेय)के खाने खाते हैं. चार प्रहर टक्कर लेकर दोनों सेनाओं ने सूर्य को सीख दी अर्थात् इतने समय तक युद्ध देखने के

के पिसाच स्वसीस दै गजसीस ईसकृपा उमंगहिँ ॥
यौँहि के गिरिजागरैं लगि त्रस्तव्है तजिजात अंगहिँ ॥ ४७॥
भूत के दुव२दूतव्है भट द्वै२ इतैं रु उतैं भिरावहिँ ॥
गूदचक्खत पुष्ट२ के द्रुत दौरि दुर्बल के गिरावहिँ ॥
केक लोहित पानसौँ तजि भान मर्कट मान कुद्दहिँ ॥
मन्नि आवत कालिका कृत छद्म के नतनैंन मुद्दहिँ ॥ ४८ ॥
केक भैरव१ जुग्गिनी२ भट१ अच्छरी२न हसात नाटक ॥
भार के पल के बहैं भनि अद्ध याबिच देहु भाटक ॥
बाजिहीन कितेक बीरन के स्वपिट्ठि चढाइ है१ बनि ॥
गै बिहीन किते निसादिन त्यौं चढाइ बिनीत गै बनि॥४९॥
पैठिकैं अवमर्द्दमैं तिन्ह प्रान१ पिंड२ प्रभिन्न पाचत ॥
बेस स्वीय बनाइ लोहित आद्य पंच५हि खाद्य खावत ॥
च्यारि४ जाम रचक्कलै दुव२चक्क अक्कहिँ सिक्ख अप्पिय ॥

पकड़ लेना चाहता है, कितने ही पिशाच अपने मस्तक पर हाथी का मस्तक लगाकर अर्थात् गणेश का रूप करके महादेव की कृपा को उमंगते हैं, इसीप्रकार कितने ही पार्वती के गले लगते हैं परन्तु भयभीत होकर पार्वती के शरीर को छोड़जाते हैं ॥ ४७ ॥ कितने ही भूत दोनों तरफ के दूत होकर इधर उधर के दोनों वीरों को भिड़ादेते हैं. ताजे मोटे का गूद(मज्जा) चखकर शीघ्र दौड़कर कितने ही दुर्बलों को गिराते हैं. कितने ही रक्तपान से बेचेत होकर बन्दरों के समान कूदते हैं. कालिका देवी को आतीहुई मानकर छल करके नीचे नेत्रों से नेत्र बन्द कर लेते हैं ॥ ४८ ॥ कितने ही भैरव और जोगिनियां नाटक करके वीरों और अप्सराओं को हसाते हैं. कितने ही भूत आदि मांस का भार उठाकर चलते हैं जिनको दूसरे कहते हैं कि इसमें से आधा हमको किराये (भाड़े) देदो. कितने ही भूत घोड़े बनकर अपनी पीठ पर बिना घोड़ेवाले वीरों को चढाते हैं. इसीप्रकार शिक्षा पायेहुए हाथी बनकर हाथियों के विना हाथियों पर सवारों को चढाते हैं।४९। कितने ही उस पीड़ादायक संग्राम में घुसकर उन वीरों के प्राण और पिंडों को विदीर्ण हुए पाते हैं, उस समय अपना(भूतों का)असली वेष बनाकर लोही आदि पांच प्रकार(भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, चोष्य, पेय)के खाने खाते हैं. चार प्रहर टक्कर लेकर दोनों सेनाओं ने सूर्य को सीख दी अर्थात् इतने समय तक युद्ध देखने के

जनक¹ बैर पर जुद्धकी, बेरहु झल्ल कुबेर ॥
समय सोधि दिन्नी सुता, सुगुन१सुरूप२सुबेर३ ॥ ६० ॥
उमाभक्त दयिता² उमा१५५१,इम लहिकैं बढि अग्ग ॥
भुजन्नृप जद्दव भीमकौं, जित्यो असह उदग्ग³ ॥ ६१ ॥
जोजन चउ४भुजनैर सय, मंदिर मंजु बनाइ ॥
आसापूरनि अंबिका, प्रतिमा दिय पधराइ ॥ ६२ ॥
भाखी जद्दव भीमसौं, मम कुलदेवी मानि ॥
सद्दहु तुम अर्चन⁴ सदा, उपहारन⁵ यँहँ आनि ॥ ६३ ॥
देवीपूजनको द्रुतहि, इम प्रबंध करि अप्प ॥
चल्लिय भेट चढाइ बहु, दलत अरातिन⁶ दप्प⁷ ॥ ६४ ॥

(षट्पात्)

क्रमि समुद्रतट कुमर परासि प्रभु द्वारकेस पय ॥
न्हान१दान२सब सद्धि भेट लक्खन किय निर्भय ॥
तँहँ सुनि देवी हिंगुलाज निकटहि जगरानिय ॥
अंबा भक्ति अनन्न्य मन्नि हंकिय तित मानिय ॥
कहि म्लिच्छदेस⁸ बरज्यो कतिन कहिय तदपि चल्लन कुमर ॥
जननी⁹ निकेत राजत जहाँ बदहु देस सुहि तित्थवर¹⁰ ॥६५॥
चढि पोतन इम आक्खि पत्त¹¹ खाड्डियतट पच्छिम ॥
किय अग्गहु दरकुंच अतुल पृतनाँ¹² उपेत¹³ इम ॥
जवन खलन मग जित्ति कतिन अंकन¹⁴ अंकित करि ॥
हिंगुलाज गय हुलासि भेट उपहार घनैं भरि ॥

॥ ५९ ॥ १ पिता का वैर लेने के लिये युद्ध करने का समय था परन्तु कुबेर नामक झाला ने ॥ ६० ॥ २ पार्वती की प्यारी ३ निरंकुश होकर ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ४ पूजन ५ भेट अथवा सामग्री ॥ ६३ ॥ ६ शत्रुओं का ७ घमण्ड ८ आगे म्लेच्छ देश है सो उसमें जाना मना है यह कितनों ने ही मना किया ९ देवी का मन्दिर जहां पर शोभायमान है उस देश को श्रेष्ठ १० तीर्थ कहा ॥ ६५ ॥ ११ पहुंचा १२ सेना के १३ सहित, कितनों पर १४ अहसानों से चिन्हित करके

जनकं बैर पर जुद्धकी, बेरहु झल्ल कुबेर॥
समय सोधि दिन्नी सुता, सुगुन१सुरूप२सुबेर३ ॥ ६०॥
उमाभक्त दयिता उमा१५५१,इम लहिकैं बढि अग्ग ॥
भुजन्नृप जद्दव भीमकौं, जित्त्यो असह उदग्ग ॥ ६१ ॥
जोजन चउ४भुजनैर सय, मंदिर मंजु बनाइ ॥
आसापूरनि अंबिका, प्रतिमा दिय पधराइ ॥ ६२ ॥
भाखी जद्दव भीमसौं, मम कुलदेवी मानि ॥
सद्दहु तुम अर्चन सदा, उपहारनं यँहँ आनि ॥ ६३ ॥
देवीपूजनको द्रुतहि, इम प्रबंध करि अप्प ॥
चल्लिय भेट चढाइ बहु, दलत अरातिन दप्प ॥ ६४ ॥

(षट्पात्)

क्रमि समुद्रतट कुमर परासि प्रभु द्वारकेस पय ॥
न्हान१दान२सब सद्धि भेट लक्खन किय निर्भय ॥
तँहँ सुनि देवी हिंगुलाज निकटहि जगरानिय ॥
अंबा भक्ति अनन्न्य मन्नि हंकिय तित मानिय ॥
कहि म्लिच्छदेस बरज्यो कतिन कहिय तदपि चल्लन कुमर ॥
जननी निकेत राजत जहाँ बदहु देस सुहि तित्थबर ॥६५॥
चढि पोतन इम आक्खि पत्त खड्डियतट पच्छिम ॥
किय अग्गहु दरकुंच अतुल पृतना उपेत इम ॥
जवन खलन मग जित्ति कतिन अंकन अंकित करि ॥
हिंगुलाज गय हुलसि भेट उपहार घनँ भरि ॥

॥ ५९ ॥ १ पिता का वैर लेने के लिये युद्ध करने का समय था परन्तु कुबेर नामक झाला ने ॥ ६० ॥ २ पार्वती की प्यारी ३ निरंकुश होकर ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ४ पूजन ५ भेट अथवा सामग्री ॥ ६३ ॥ ६ शत्रुओं का ७ घमण्ड ८ आगे म्लेच्छ देश है सो उसमें जाना मना है यह कितनों ने ही मना किया ९ देवी का मन्दिर जहां पर शोभायमान है उस देश को श्रेष्ठ १० तीर्थ कहा ॥ ६५ ॥ ११ पहुंचा १२ सेना के १३ सहित, कितनों पर १४ अहसानों से चिन्हित करके

सुनि यह तोमर सेनपाल दिल्लीस उदंत[1]हि ॥
बुल्लन पठयो सचिव दैन अप्पन दुहिता[2] चाहि ॥
सुनि कुमर स्वीय[3] पुच्छिय सबन अक्खिय यह उपयम[4] उचित
सुहि मन्नि आइ दिल्लियसहर हुव दुल्लह लहि अखिलहित ॥ ७२ ॥

दोहा

मंजु सुता मदनावती१५५।२, सेनपाल नृप स्वीय ॥
कुमर१५५हिं व्याहिय रीतिक्रम, गिनि कुल१ तेज२गरीय[5] ॥७३॥

षट्पात्

स्वसुर हिंतु लै सिक्ख प्रांत उत्तर जित्तत पहु[6] ॥
मिथिलाँ[7] लग जवमंडि पत्ते बलि लेत बढ़्ढि बहु ॥
दक्खिन१ पूरब२ दिसन जत्थतत्थहि जयजानिय ॥
इम सम्मुह उपहार[10] नृपन मुक्कलि हितठानिय ॥
संभरकुमार तब जय सहित कुमरानी दुव२ व्याहकरि ॥
आसेरदुग्ग आइउ असह प्रनमि तात पर्यंकंज[11] परि ॥७४॥

दोहा

संभर मिलत सुपुत्रसौं, लेत छाइ हियलाइ ॥
मह[12] निजपुर किन्नौं महत, अद्भुत बिविध बधाइ ॥ ७५ ॥
पुनि कुलदेवी पय परन, पब्बइ[13] आलय[14] पत्त ॥
सूरा१५५ तहँ भगिनी संतत, पिक्खी पूजन रत्त[16] ॥ ७६ ॥
भ्राता१ भगिनी२ मिलिभये, मोद पयोनिधि[17] मीन ॥
किय अंबाको सद्धि क्रम, अर्चन भक्ति अधीन ॥ ७७ ॥
कुलिसकूट१ अरु श्रीकलस२, किय नृपभेट कुमार ॥

१वृत्तांत२पुत्री३ अपने सचिव आदि से४विवाह ॥७२॥ ५भारी ॥ ७३ ॥६प्रभु७ जनकपुर तथा तिरहुत देश तक ८ वेग से ९ पहुंचा १० भेट (नजराना) ११ पिता के चरण कमलों में पड़कर नमस्कार किया ॥ ७४ ॥ १२ उत्सव॥७५॥ १३ पार्वती के१४ मन्दिर में पहुंचा कर शूरा नामक अपनी बहिन को वहां पर१५ निरन्तर पूजन में१६प्रीति रखनेवाली देखी ॥ ७६ ॥ १७ मोद रूपी समुद्र के मच्छ ॥ ७७ ॥ कुलिशकूट नामक खड्ग और श्रीकलश नामक हस्ती ये दोनों

सुनि यह तोमर सेनपाल दिल्लीस उदंत[1]हि ॥
बुल्लन पठयो सचिव दैन अप्पन दुहिता[2] चहि ॥
सुनि कुमर स्वीय[3] पुच्छिय सबन अक्खिय यह उपयम[4] उचित
सुहि मन्त्रि आइ दिल्लियसहर हुव दुल्लह लहि अखिलहित ॥ ७२ ॥

दोहा

मंजु सुता मदनावती१५५१२, सेनपाल नृप स्वीय ॥
कुमर१५५हिँ व्याहिय रीतिक्रम, गिनि कुल१ तेज२गरीय[5] ॥७३॥

षट्पात्

स्वसुर हिंतु लै सिक्ख प्रांत उत्तर जित्तत पँहु[6] ॥
मिथिलाँ[7] लग जवमंडि[8] पत्त[9] बलि लेत बह्वि बहु ॥
दक्खिन१ पूरब२ दिसन जत्थतत्थहि जयजानिय ॥
इम सम्मुह उपहार[10] नृपन मुक्कलि हितठानिय ॥
संभरकुमार तब जय सहित कुमरानी दुव२ व्याहकरि ॥
आसेरदुग्ग आइउ असह प्रनमि तात पयकंज[11] परि ॥७४॥

दोहा

संभर मिलत सुपुत्रसौं, लेत छाइ हियलाइ ॥
मँह[12] निजपुर किन्नौं महत, अद्भुत बिबिध बढाइ ॥ ७५ ॥
पुनि कुलदेवी पय परन, पब्बइ[13] आलय[14] पत्त ॥
सूरा१५५ तँहँ भगिनी संतत[15], पिक्खी पूजन रत्त[16] ॥ ७६ ॥
भ्राता१ भगिनी२ मिलिभये, मोद पयोनिधि मीन[17] ॥
किय अंबाको सद्धि क्रम, अर्चन भक्ति अधीन ॥ ७७ ॥
कुलिसकूट१ अरु श्रीकलस२, किय नृपभेट कुमार ॥

१वृत्तांत २पुत्री ३ अपने सचिव आदि से ४विवाह ॥७२॥ ५भारी ॥ ७३ ॥ ६प्रभु ७ जनकपुर तथा तिरहुत देश तक ८ वेग से ९ पहुंचा १० भेट (नजराना) ११ पिता के चरण कमलों में पड़कर नमस्कार किया ॥ ७४ ॥ १२ उत्सव ॥७५॥ १३ पार्वती के १४ मन्दिर में पहुंचा कर शूरा नामक अपनी बहिन को वहां पर १५ निरन्तर पूजन में १६ प्रीति रखनेवाली देखी ॥ ७६ ॥ १७ मोद रूपी समुद्र के मच्छ ॥ ७७ ॥ कुलिशकूट नामक खड्ग और श्रीकलश नामक हस्ती ये दोनों

नुराज १५५ ज्वालादेवीदर्शन ९ कृततदर्चनप्राप्तगंगाद्वारकुमार-दिल्लीशतोमरसेनपालस्वगृहाकारणा १० परिणीततत्तोकतोमरीम दनावती१५५।२ कविजितोदक्प्रान्तमिथिलागतकुमारार्थप्राच्या १ ऽऽवाच्य २ नृपगणोपदाप्रेषणा ११ तदनन्तरप्राप्तस्वपत्तनवन्दितजनकसमर्चितकुलदेवीकभगिनीशूरा १५५।१ शक्तिसमाराधन-हृष्टभानुराज १५५ गज १ खड्ग २ रत्नजनकार्थनिवेदन १२ सुतचतु ४ र्दिग्जयप्रकटितप्रमदभौमचन्द्र १५४ रत्नद्वय २ कुमारार्थप्रत्यर्पणं १३ त्रयोविंशो २३ मयूखः ॥ २३ ॥ आदितो द्वात्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

भौमचंद्र१५४ बय चरम[1] भजि, किय परलोक प्रयान ॥
जँरि[2] बिद्यावति१५४।१ अरु जया१५४।२, थिर पत्ती पतिथान[3] ॥१॥
अस्थिपाल१५४ धरि छत्र इम, हुव आसेर अधीस ॥
बसुधा[4]बिच जो बर[5]बिभव, सब भुग्गिय सबसीस ॥ २ ॥

करनेवाले कुमर का पीछा आना, फिर द्वारकेश की पूजा करके सौराष्ट्र मरु सिन्धु में क्रम से प्राप्त होकर अनेक देशों को लांघकर कश्मीर में जाते हुए अटक नदी को उल्लंघन करना, अनुचित जानकर कुमर भानुराज (अस्थिपाल) का पीछा आकर ज्वालामुखी देवी का दर्शन करना, उसका पूजन करके कुमर का गङ्गाद्वार जाकर दिल्ली के राजा सेनपाल के कुमर को अपने घर बुलाना, उसके घर में तोमरी मदनावती को विवाह कर उत्तर दिशा को जीतकर मिथिला प्रान्त में गयेहुए कुमर के लिये पूर्व और दक्षिण के राजाओं का नजराना भेजना, जिसपीछे अपने पुर में आकर अपने पिता को प्रणाम कर कुलदेवी की पूजा करके शूरा नामक बहिन को देवी की पूजा करने से भानुराज का प्रसन्न होकर हाथी और खड्ग रूपी रत्न पिता के अर्थ भेट करना, चारों दिशा का विजय सुनकर आनन्द प्रकट होकर भौमचन्द्र का दोनों रत्न कुमर को देने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२३॥ और आदि से एक सौ बत्तीस मयूख हुए ॥ १३२ ॥

१ अन्त समय का सेवन करके २ जलकर ३ पति के स्थान पर पहुंची ॥ १ ॥
४ पृथ्वी में ५ श्रेष्ठ.

नुराज १५५ ज्वालादेवीदर्शन ९ कृततदर्चनप्राप्तगंगाद्वारकुमार-दिल्लीशतोमरसेनपालस्वगृहाकारणा १० परिणीततत्तोकतोमरीमदनावती१५५।२ कविजितोदक्प्रान्तमिथिलागतकुमारार्थप्राच्या १ ऽऽवाच्य २ नृपगणोपदाप्रेषणा ११ तदनन्तरप्राप्तस्वपत्तनवन्दितजनकसमर्चितकुलदेवीकभगिनीशूरा १५५।१ शक्तिसमाराधन-हृष्टभानुराज १५५ गज १ खड्ग २ रत्नजनकार्थनिवेदन १२ सुतचतु ४ र्दिग्जयप्रकटितप्रमदभौमचन्द्र १५४ रत्नद्वय २ कुमारार्थप्रत्यर्पणं १३ त्रयोविंशो २३ मयूखः ॥ २३ ॥ आदितो द्वात्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

भौमचंद्र१५४ बय चरम भजि, किय परलोक प्रयान ॥
नँरि विद्यावति१५४।१ अरु जया१५४।२, थिर पैत्ती पतिथान ॥१॥
अस्थिपाल१५४ धरि छत्र इम, हुव आसेर अधीस ॥
बसुधाँबिच जो बरँबिभव, सब भुग्गिय सबसीस ॥ २ ॥

करनेवाले कुमर का पीछा आना, फिर द्वारकेश की पूजा करके सौराष्ट्र मरु सिन्धु में क्रम से प्राप्त होकर अनेक देशों को लांघकर कश्मीर में जाते हुए अटक नदी को उल्लंघन करना, अनुचित जानकर कुमर भानुराज (अस्थिपाल) का पीछा आकर ज्वालामुखी देवी का दर्शन करना, उसका पूजन करके कुमर का गङ्गाद्वार जाकर दिल्ली के राजा सेनपाल के कुमर को अपने घर बुलाना, उसके घर में तोमरी मदनावती को विवाह कर उत्तर दिशा को जीतकर मिथिला प्रान्त में गयेहुए कुमर के लिये पूर्व और दक्षिण के राजाओं का नजराना भेजना, जिसपीछे अपने पुर में आकर अपने पिता को प्रणाम कर कुलदेवी की पूजा करके शूरा नामक बहिन को देवी की पूजा करने से भानुराज का प्रसन्न होकर हाथी और खड्ग रूपी रत्न पिता के अर्थ भेट करना, चारों दिशा का विजय सुनकर आनन्द प्रकट होकर भौमचन्द्र का दोनों रत्न कुमर को देने का तेईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२३॥ और आदि से एक सौ बत्तीस मयूख हुए ॥ १३२ ॥

१ अन्त समय का सेवन करके २ जलकर ३ पति के स्थान पर पहुंची ॥ १ ॥
४ पृथ्वी में ५ श्रेष्ठ.

इतकौं आसेरके अधीस *चंडासिराज अस्थिपाल १५५ सौं रा-
नीमदनावती १५५।१ मैं राजकुमार पृथ्वीपाल१५६ नैं जन्मपायो॥
सोहीधारपाल१५६ सोही चंडकिरन१५६सोही चंद्रराज१५६इन
च्यारि४ही नामन करि बिख्यात कहायो ॥ ४ ॥

(दोहा)

पाइ जरा पत्तो नृपति, भानुराज१५५ सुरभोन ॥
उभय२ उमा१५५।१ मदनावती१५५।२, सद्धि गई सहगोन ॥ ५ ॥
पृथ्वीपाल१५६हु सर्ब पढि, जनक छत्र धरि जत्थ ॥
प्रतपि दुग्ग आसेर पैहु, सो हुव सवन समत्थ ॥ ६ ॥
उत्तम राउलकी यहै, तनया रंभा१५६।१ नाम ॥
परन्यौं गढचित्तोर नृप, अंहति रचि उद्दाम ॥ ७ ॥

(सचरणगद्यम्)

इतकौं चंडासिराज पृथ्वीपाल१५६के सालक चित्रकूटके अ-
धीस उत्तमके अंगज राउल भैरवदेव१ जाकौं दूजे२ तीजे३ ना-
मकरि नरब्रह्म२ तथा निर्भय३हू कहैं तानैं मालवके प्रामारनकौं
जीति समरसिंह१सौं मंडू२ अरु मुंज१सौं दसपुर२ द्वै२ही दुर्ग द्रंग
छुराइ लये ॥
अरु चंडासिराज पृथ्वीपाल१५६हू बंदी जयदत्तकौं दसलक्ख
१००००००द्रम्मन समेत दस१०ही गजेंद्र दये॥
पृथ्वीपाल१५६के रानी रंभा१५६।१मैं कुमार सेनपाल१५७ ज-
न्मलह्यो ॥
सोही लोकपाल१५७ सोही आज्ञाकीर्ति१५७ तीन३ही नाम-
नकरि मागधलोकनमैं बिख्यात कह्यो ॥ ८ ॥

---

*चहुवाणराज ॥४॥ राजा अस्थिपाल १वृद्धावस्था पाकर स्वर्ग गया ॥५॥ २ आसेर का राजा होकर ३ समर्थ ॥६॥ चित्तोड़ गढ के उत्तम राउल(चितोड़ गढ पर उत्तम राउल नाम का कोई राजा नहीं हुआ)की रम्भा नाम पुत्री को त्याग देकर निरंकुश होकर परणा ॥७॥ ४ शाला का ५ पुत्र ६ मन्दशोर ७ गढ़वाले नगर ८ रुपयों सहित ९ हाथी १०बड़वाभाटों में ॥ ८ ॥

इतकौं आसेरके अधीस *चंडासिराज अस्थिपाल १५५ सौं रानीमदनावती १५५।१ मैं राजकुमार पृथ्वीपाल१५६ नैं जन्मपायो॥
सोहीधारपाल१५६ सोही चंडकिरन१५६सोही चंद्रराज१५६इन च्यारि४ही नामन करि विख्यात कह्वायो ॥ ४ ॥

(दोहा)

पाइ जरा पत्तो नृपति, भानुराज१५५ सुरभोन ॥
उभय२ उमा१५५।१ मदनावती१५५।२, सद्धि गई सहगोन ॥ ५ ॥
पृथ्वीपाल१५६हु सर्ब पढि, जनक छत्र धरि जत्थ ॥
प्रतपि दुग्ग आसेर पैंहु, सो हुव सवन समत्थ ॥ ६ ॥
उत्तम राउलकी यहै, तनया रंभा१५६।१ नाम ॥
परन्यौं गढचित्तोर नृप, अंहति रचि उद्दाम ॥ ७ ॥

(सचरणगद्यम्)

इतकौं चंडासिराज पृथ्वीपाल१५६के सालक चित्रकूटके अधीस उत्तमके अंगज राउल भैरवदेव१ जाकौं दूजे२ तीजे३ नामकरि नरब्रक्ष२ तथा निर्भय३हू कहैं तानैं मालवके प्रामारनकौं जीति समरसिंह१सौं मंडू२ अरु मुंज१सौं दसपुर२ द्वै२ही दुर्ग द्रंग छुराइ लये ॥
अरु चंडासिराज पृथ्वीपाल१५६हू बंदी जयदत्तकौं दसलक्ख १०००००० द्रम्मन समेत दस१०ही गजेंद्र दये॥
पृथ्वीपाल१५६के रानी रंभा१५६।१मैं कुमार सेनपाल१५७ जन्मलह्यो ॥
सोही लोकपाल१५७ सोही आज्ञाकीर्ति१५७ तीन३ही नामनकरि मागध१०लोकनमैं विख्यात कह्यो ॥ ८ ॥

---

*चहुवाणराज ॥४॥ राजा अस्थिपाल १वृद्धावस्था पाकर स्वर्ग गया ॥५॥ २ आसेर का राजा होकर ३ समर्थ ॥६॥ चित्तोड़ गढ के उत्तम राउल(चितोड़ गढ पर उत्तम राउल नाम का कोई राजा नहीं हुआ)की रम्भा नाम पुत्री को त्याग देकर निरंकुश होकर परणा ॥७॥ ४ शाला का ५ पुत्र ६ मन्दशोर ७ गढ़वाले नगर ८ रुपयों सहित ९ हाथी १०बड़वाभाटों में ॥ ८ ॥

कोकिल १२ चंद्र १३ प्रमुख पंचसत५००पंडितनको प्रंकर आ-
श्रितही आनिरह्यो॥
अरु कालिदासकी कविताको अद्भुत माधुर्य चाखि नरेंद्रनैं या
हीकौं कवींद्र कह्यो ॥
एक समय संकर कविनैं सभामैं आय "राजन्नभ्युदयोस्तु"
कह्यो ताहीकौं सार्दूलविक्रीडित वृत्तमैं उठाइ नरेन्द्रनैं जेजे
प्रश्न किये तिनके उत्तर संकरनैं वाही पद्यकी समाप्ति पर्यंत दै-
कैं रिझायो ताके अधीन बारहलाख १२००००० मुद्रा करी ॥
अरु द्रविडदेसके लक्ष्मीधरनाम कविके त्रिष्टुप् पद्यपर प्रत्यक्षर
लक्ष४४०००००मुद्रा दै रु दधीच१कर्ण२की कीर्ति हरी॥ ११ ॥
लक्ष्मीधरके राखिवेकौं भोज अमात्यसूँ कही कोऊ अनक्षर
होइ ताकौं निकासि वाको गृह इनके अर्थ देहु॥
तब अमात्यनैं दूत भेजे तिननैं एक कुबिंद अपभ्रंस बोलत जा-
नि कह्यो इहाँतैं निकसि और पत्तनको पंथ लेहु॥
तबही कुबिंद भोजकी सभाके समीप आइ कमनीय कविता
बनाय केही उक्ति प्रत्युक्ति करि प्रामाररराजसौं लक्ष१००००० मु-
द्रा लैगयो ॥
अरु भोजनरेंद्रहू रात्रिके समय सुख१दुक्ख२ बारे नरनके नि-
श्चयकौं अपनैं पत्तनमैं प्रचार करतभयो ॥ १२ ॥

---

१ आदि २ समूह. एक समय शङ्कर कवि ने सभा में आकर कहा कि हे रा-
जा तुम्हारी वृद्धि हो अर्थात् प्रताप बढ़ो. इन ऊपर कहे हुए संस्कृत शब्दों
को शार्दूलविक्रीडित ३ छन्द में उठाकर ४ ग्यारह अक्षरों की वृत्ति के छ-
न्द को त्रिष्टुप् कहते हैं सो चारों पदों के चमालीस अक्षर हुए उन अक्षर
अक्षर प्रति लाख लाख रुपये देकर ॥ ११ ॥ ५ मन्त्री से कहा कि कोई ६
विना पढ़ा होवे तो ७ जुलाहे को अशुद्ध बोलता जानकर ८ पुर का ९ सु-
न्दर १० पुर में ११ गया ॥ १२ ॥

कोकिल १२ चंद्र १३ प्रमुख पंचसत५००पंडितनको प्रकर आ-
श्रितही आनिरह्यो॥

अरु कालिदासकी कविताको अद्भुत माधुर्य चाखि नरेंद्रनैं या
हीकौं कवींद्र कह्यो ॥

एक समय संकर कविनैं सभामैं आय "राजन्नभ्युदयोस्तु"
कह्यो ताहीकौं सार्दूलविक्रीडित वृत्तमैं उठाइ नरेन्द्रनैं जेजे
प्रश्न किये तिनके उत्तर संकरनैं वाही पद्यकी समाप्ति पर्यंत दै-
कैं रिझायो ताके अधीन वारहलाख १२००००० मुद्रा करी ॥

अरु द्रविडदेसके लक्ष्मीधरनाम कविके त्रिष्टुप् पद्यपर प्रत्यक्षर
लक्ष४४००००० मुद्रा दे रु दधीच१कर्ण२की कीर्ति हरी॥ ११ ॥

लक्ष्मीधरके राखिवेकौं भोज अमात्यसूं कही कोऊ अनक्षर
होइ ताकौं निकासि वाको गृह इनके अर्थ देहु॥

तव अमात्यनैं दूत भेजे तिननैं एक कुविंद अपभ्रंस वोलत जा-
नि कह्यो इहाँतैं निकसि और पत्तनको पंथ लेहु॥

तबही कुबिंद भोजकी सभाके समीप आइ कमनीय कविता
बनाय केही उक्ति प्रत्युक्ति करि प्रामारराजसौं लक्ष१००००० मु-
द्रा लैगयो ॥

अरु भोजनरेंद्रहू रात्रिके समय सुख१दुक्ख२ वारे नरनके नि-
श्चयकौं अपनैं पत्तनमैं प्रचार करतभयो ॥ १२ ॥

---

१ आदि २ समूह. एक समय शङ्कर कवि ने सभा में आकर कहा कि हे रा-
जा तुम्हारी वृद्धि हो अर्थात् प्रताप बढ़ो. इन ऊपर कहे हुए संस्कृत शब्दों
को शार्दूलविक्रीडित ३ छन्द में उठाकर ४ ग्यारह अक्षरों की वृत्ति के छ-
न्द को त्रिष्टुप् कहते हैं सो चारों पदों के चमालीस अक्षर हुए उन अक्षर
अक्षर प्रति लाख लाख रुपये देकर ॥ ११ ॥ ५ मन्त्री से कहा कि कोई ६
विना पढ़ा होवे तो ७ जुलाहे को अशुद्ध बोलता जानकर ८ पुर का ९ सु-
न्दर १० पुर में ११ गया ॥ १२ ॥

सउंतो वि पुच्छइ अव्वो मराल तं पि एत्तिलमित्तेण वइरपहुडि-रयणगणेण किं काहिसि इअ सोऊण मरालो कहइ सहे स-उंत कासीवासी को वि बह्मणो धाराए आयओ तेण मे पियरं पडि वाणारसीवासफलं बहुयरपुरणं वरिणअं तस्स सवणका-लम्मि च्चिअ पिअरो हीरपुरीपयाणपारंभं करेइ परं महादलिद्दो धणपाहेआउ विणा ण सक्कइ गमिउं णिआउ हेउओ लुत्तमिणं धणं चोरिऊण आणिअं देस्सामि पिअरस्स एदिणा कासीवासं सुहेण सो लहइ कण्णम्मि काऊण दोरएहं पि तक्खराणा वयणं लुत्तं पि धणं परमत्थणिमित्तमिअ मुणिऊण बहुदव्वदाणेण ताणं दुत्थिअभावमवणेऊण जंपिअं पामाररराएण हरे मलिम्मुआ अलाहि काहित्था थिरणं जइ पुणो वि तया छेच्छंतुमाण सिराइं एआउ दिअहाउ अम्हादिण्णादव्वेण अणुचिट्ठह सव्ववावारं सक्कय-

---

शकुन्तोऽपि पृच्छति, हंहो मराल! त्वमपि एतावन्मितेन वज्रप्रभृतिरत्नगणेन किं करिष्यसि, इति श्रुत्वा मरालः कथयति, सखे शकुन्त! काशीवासी कोऽपि ब्राह्मणो धाराया आगतस्तेन मे पितरं प्रति वाराणसीवासफलं बृहत्तरपुण्यं वर्णितम्। तस्य श्रवणकाल एव पिता हीरपुरीप्रयाणप्रारम्भं करोति, परं महादरिद्रो धनपाथेयाद्विना न शक्यते गन्तुम्। तस्माद्धेतोर्लोप्त्रमिदं धनं चोरयित्वा आनीतं दास्यामि पित्रे; एतेन काशीवासं सुखेन स लप्स्यते। कर्णे कृत्वा द्वयोरपि तस्करयोर्वचनं लोप्त्रमपि धनं परमार्थनिमित्तमिति ज्ञात्वा बहुद्रव्यदानेन तयोर्दुःस्थितभावमपनीय जल्पितं प्रमारराजेन; अये! मलिम्लुचौ मा कुरुतं, करिष्यथ स्तैन्यं यदि पुनरपि तदा छिनद्मि युवयोः शिरसी; एतस्माद्दिवसादस्मद्दत्तद्रव्येणानुतिष्ठत सर्वव्यापारम्। संस्कृतश्लो-

---

शकुंत पूछता है कि हे मराल! तू इतने हीरे आदि रत्नों का क्या करेगा? यह सुनकर मराल बोला मित्र शकुंत! एक काशीवासी ब्राह्मण धारानगर से आया उसने मेरे पिता से बहुत पुण्यदायक काशी में रहने का फल व-र्णन किया उसको सुनते ही पिता ने काशी जाने का विचार किया परंतु वह घर में दरिद्र है, इसकारण चोरी का धन लाया हूं सो पिता को दूंगा जिससे वह सुख-पूर्वक काशी में वास को प्राप्त होगा. इसप्रकार दोनों चो-रों की बात सुनकर चुरायाहुआ भी धन परमार्थ निमित्त जानकर बहुतसा द्रव्य देकर उनकी दरिद्रता को दूर करके प्रमारराज भोज ने कहा हे चो-रो चोरी मत करो, जो फिर ऐसा काम करोगे तो तुम्हारा सिर काटूंगा

सउंतो वि पुच्छइ अव्वो मराल तं पि एत्तिलमित्तेण वइरपहुडि-रयणगणेण किं काहिसि इअ सोऊण मरालो कहइ सहे स-उंत कासीवासी को वि वह्मणो धाराए आयओ तेण मे पियरं पडि वाणारसीवासफलं बहुयरपुणणं वणिणअं तस्स सवणका-लम्मि च्चिअ पिअरो हीरपुरीपयाणपारंभं करेइ परं महादलिद्दो धणपाहेआउ विणा ण सक्कइ गमिउं णिआउ हेउओ लुत्तमिणं धणं चोरिऊण आणिअं देस्सामि पिअरस्स एदिणा कासीवासं सुहेण सो लहइ कणम्मि काऊण दोरएहं पि तक्खराण वयणं लुत्तं पि धणं परमत्थणिमित्तमिअ मुणिऊण बहुदव्वदाणेण ताणं दुत्थिअभावमवणेऊण जंपिअं पामाररराएण हरे मलिम्मुआ अलाहि काहित्था थिरणं जइ पुणो वि तया छेच्छंतुमाण सिराइं एआउ दिअहाउ अम्हादिण्णदव्वेण अणुचिठ्ठह सव्ववावारं सक्कय-

शकुन्तोऽपि पृच्छति, हंहो मराल ! त्वमपि एतावन्मितेन वज्रप्रभृतिरत्नगणेन किं करिष्यसि, इति श्रुत्वा मरालः कथयति, सखे शकुन्त ! काशीवासी कोपि ब्राह्मणो धाराया आगतस्तेन मे पितरं प्रति वाराणसीवासफलं बृहत्तरपुण्यं वर्णितम् । तस्य श्रवणकाल एव पिता हीरपुरीप्रयाणप्रारम्भं करोति, परं महादरिद्रो धनपाथेयाद्विना न शक्यते गन्तुम् । तस्माद्धेतोर्लोप्त्रमिदं धनं चोरयित्वा आनीतं दास्यामि पित्रे ; एतेन काशीवासं सुखेन स लप्स्यते । कर्णे कृत्वा द्वयोरपि तस्करयोर्वचनं लोप्त्रमपि धनं परमार्थनिमित्तमिति ज्ञात्वा बहुद्रव्यदानेन तयोर्दुःस्थितभावमपनीय जल्पितं प्रमारराजेन ; अये! मलिम्लुचौ मा कुरुतं, करिष्यथ स्तैन्यं यदि पुनरपि तदा छिनद्मि युवयोः शिरसी; एतस्माद्दिवसादस्मद्दत्तद्रव्येणानुतिष्ठत सर्वव्यापारम् । संस्कृतश्लो-

शकुंत पूछता है कि हे मराल! तू इतने हीरे आदि रत्नों का क्या करेगा? यह सुनकर मराल बोला मित्र शकुंत! एक काशीवासी ब्राह्मण धारानगर से आया उसने मेरे पिता से बहुत पुण्यदायक काशी में रहने का फल व-र्णन किया उसको सुनते ही पिता ने काशी जाने का विचार किया परंतु वह घर में दरिद्र है, इसकारण चोरी का धन लाया हूं सो पिता को दूंगा जिससे वह सुख-पूर्वक काशी में वास को प्राप्त होगा. इसप्रकार दोनों चो-रों की बात सुनकर चुराया हुआ भी धन परमार्थ निमित्त जानकर बहुतसा द्रव्य देकर उनकी दरिद्रता को दूर करके प्रमारराज भोज ने कहा हे चो-रो चोरी मत करो, जो फिर ऐसा काम करोगे तो तुम्हारा सिर काटूंगा

सम्भिाए बहुसु गुणेसु दोसो वि चंदम्मि कलंकव्व लुद्धलोअणपे-च्छणिओ होइ त्ति संबोहिओ वि ण छड्डीअ अवगणं। कालिदासो वि तुलोवमं णयाणं जाणाविअ गओ विलासवईघरं राया वि सहं समाविऊण अप्पणो कयं कालिदासाणायरं तणणायं मुणिअ स-विसाओ कयप्पभोअणो केलीघरागओ तस्स कइंदस्स अच्चायरं चिंतमाणो पत्थरणम्मि उवइट्ठो पत्तपच्छत्तावो ण लहेइ णिद्दं लहिऊणंपि सेज्जं दुद्धफेणसवणणं ॥ १६ ॥

एआरिसववत्थो णिअकंतो णवरि अप्पवाससज्जाए दइअस मीवसमागयाए लीलावईराणीए विसाअकारणं पुच्छिओ जहा-हूअं कहीअ वत्तं देवीए वि भणिअं हंदि पाणनाह कयविघडिअ-सिणेहत्तो अकयसिणेहो वि वरं जह फुट्टिअणयणो जूरइ न तह

बुधब्राह्मण्या सीतया बहुषु गुणेषु दोषोऽपि चन्द्रे कलङ्कवल्लुब्धलोचनप्रेक्ष-णीयो भवतीति संबोधितोपि न तत्याजावज्ञाम्। कालिदासोपि तुलोपमं राजानं ज्ञात्वा गतो विलासवतीगृहम्। राजापि सभां समागत्यात्मना कृ-तं कालिदासानादरं तज्ज्ञातं ज्ञात्वा सविषादः कृतभोजनः केलीगृहागत-स्तस्य कवीन्द्रस्यात्यादरं चिन्तयन् प्रस्तरणे उपविष्टः प्राप्तपश्चात्तापो न ल-भते निद्रां लब्ध्वापि शय्यां दुग्धफेनसवर्णाम् ॥ १६ ॥
एतादृशव्यवस्थो निजकान्तोऽथ आत्मवासशय्याया दयितसमीपसमागतया लीलावतीराज्ञ्या विषादकारणं पृष्टो यथाभूतां कथितवान् वार्ताम्। देव्यापि भणितं हंत प्राणनाथ ! कृतविघटितस्नेहादकृतस्नेहोपि वरं यथा स्फुटितन-

---

कवि की उत्तम कविता सुनकर पांच ग्राम और २० बीस घोड़े दिये. किसी समय रामेश्वर नामक कवि आया उसकी कविता सुनकर एक एक अक्षर पर लक्ष२ द्रव्य दिया. एकवार सभा में कालिदास को वेश्यासक्त जानकर अभ्युत्थान देतेहुए भोज ने भौंह टेढी करी उस समय उसी सभा में स्थित पंडिता ब्राह्मणी सीता ने बहुत गुणों में एक दोष भी हो तो चन्द्रमा में कलंक की नांई बुरा नहीं लगता ऐसा चिताया तब भी भोज ने कालिदास की ओर से अवज्ञा नहीं छोडी तब कालिदास भी तुला के समान थोडे से घटने बढनेवाला राजा का अभिप्राय जानकर बिलासवती वेश्या के घर चलागया. भोज राजा भी सभा से आकर कालिदास का अनादर किया सो उसने जानलिया इस बात को जानकर कष्ट सहित भोजनानंतर शयनस्थान में आये और उस कवीन्द्र कालिदास के अत्यंत आदर को

सीश्राए बहुसु गुणेसु दोसो वि चंदम्मि कलंकव्व लुद्धलोश्रणपे-च्छणीश्रो होइ त्ति संबोहिश्रो वि ण छड्डीश्र अवगणं। कालिदासो वि तुलोवमं राश्राणं जाणाविश्र गश्रो विलासवईघरं राया वि सहं समाविऊण अप्पणो कयं कालिदासाणायरं तरणायं मुणिश्र स-विसाश्रो कयप्पभोश्रणो केलीघरागश्रो तस्स कइंदस्स अच्चायरं चिंतमाणो पत्थरणम्मि उवइट्ठो पत्तपच्छत्तावो ण लहेइ णिद्दं लहिऊणंपि सेज्जं दुद्धफेणसवरणं ॥ १६ ॥

एश्रारिसववत्थो णिश्रकंतो णवरि अप्पवाससज्जाए दइअस मीवसमागयाए लीलावईराणीए विसाश्रकारणं पुच्छिश्रो जहा-हूश्रं कहीश्र वत्तं देवीए वि भणिश्रं हंदि पाणनाह कयविघडिश्र-सणेहत्तो अकयसिणेहो वि वरं जह फुट्टिश्रणायणो जूरइ न तह

बुधब्राह्मण्या सीतया बहुषु गुणेषु दोषोऽपि चन्द्रे कलङ्कवल्लुब्धलोचनप्रेक्ष-णीयो भवतीति संबोधितोपि न तत्याजावज्ञाम्। कालिदासोपि तुलोपमं राजानं ज्ञात्वा गतो विलासवतीगृहम्। राजापि सभां समागत्यात्मना कृ-तं कालिदासानादरं तज्ज्ञातं ज्ञात्वा सविषादः कृतभोजनः केलीगृहागत-स्तस्य कवीन्द्रस्यात्यादरं चिन्तयन् प्रस्तरणे उपविष्टः प्राप्तपश्चात्तापो न ल-भते निद्रां लब्ध्वापि शय्यां दुग्धफेनसवर्णाम् ॥ १६ ॥

एतादृशव्यवस्थो निजकान्तोऽथ आत्मवासशय्याया दयितसमीपसमागतया लीलावतीराज्ञ्या विषादकारणं पृष्टो यथाभूतां कथितवान् वार्ताम्। देव्यापि भणितं हंत प्राणनाथ! कृतविघटितस्नेहादकृतस्नेहोपि वरं यथा स्फुटितन-

---

कवि की उत्तम कविता सुनकर पांच ग्राम और २० बीस घोड़े दिये. कि-सी समय रामेश्वर नामक कवि आया उसकी कविता सुनकर एक एक अ-चर पर लच्च २ द्रव्य दिया. एकवार सभा में कालिदास को वेश्यासक्त जान कर अभ्युत्थान देतेहुए भोज ने भौंह टेढी करी उस समय उसी सभा में स्थित पंडिता ब्राह्मणी सीता ने बहुत गुणों में एक दोष भी हो तो चन्द्रमा में कलंक की नांई बुरा नहीं लगता ऐसा चिताया तब भी भोज ने कालि-दास की ओर से अवज्ञा नहीं छोडी तब कालिदास भी तुला के समान थोड़े से घटने बढनेवाला राजा का अभिप्राय जानकर बिलासवती वेश्या के घर चलागया. भोज राजा भी सभा से आकर कालिदास का अनादर किया सो उसने जानलिया इस बात को जानकर कष्ट सहित भोजनानंतर शयनस्थान में आये और उस कवीन्द्र कालिदास के अत्यंत आदर को

सूरिणो बिलंबमसहमाणा समज्जाणंतरं पासायाउ बाहिरं नीसरंता कुमंतं मंतिऊण वहुत्तरोसा रगणो तंबोलवाहिणीए तरंगवईनामहे आइ दासीए इक्कं महामोल्लमुत्ताहारं रहसि समप्पिऊण भणिअं च तं तए सुहए पाविणो कालिआसस्स देवीए समं रमणाहिसावं णिएण विअद्धत्तणेण जाणाविअ पामारराओ तहेअ कायव्वो जहा तं दुट्ठं मारेइ नरिंदो निक्खासेइ अहव देसाउ इअ सुणिअ हारलुद्धाइ तरंगवईए विप्पडिवन्नं तहा णवरि ईसालुसूरिसंघो वि सव्वो हरिसवारिहिविलीणो गओ अप्पणायालयं हं दि हंदि हद्धी पेच्छह छुच्छगुणाण मच्छरित्तणं कासरा कासारे कीलमाणं पि निसग्गमूढत्तणेण न सहंति गइंदं ॥ १७ ॥

चंडी वि सा एक्कसिअं एकल्ले नरिंदे केलीघरे पासुत्ते तस्स

संतुष्टं चकार कवीन्द्रम्। तद्दर्शनेनेर्ष्यालवः सर्वे ते सूरयो विलम्बमसहमानाः समज्यानन्तरं प्रासादाद्बहिर्निस्सरन्तः कुमन्त्रं मन्त्रयित्वा प्रभूतरोषा राज्ञस्ताम्बूलवाहिन्यै तरङ्गवतीनामधेयायै दास्यै एकं महामूल्यं मुक्ताहारं रहसि समर्प्य भणितं च तैः तस्यै सुभगे पापिनः कालिदासस्य देव्या समं रमणाभिशापं निजेन विश्रब्धत्वेन विज्ञापितः प्रमारराजस्तथैष कारयितव्यः, यथा तं दुष्टं मारयेन्नरेन्द्रो निष्कासयेदथवा देशात् इति श्रुत्वा हारलुब्धया तरंगवत्याऽपि प्रतिपन्नं तथा ; केवलमीर्ष्यालुसूरिसंघोपि सर्वो हर्षवारिधिविलीनो गत आत्मन आलयं, हंत हंत हा धिक् प्रेक्षध्वं तुच्छगुणानां मात्सर्यम् ; कासराः कासारे क्रीडन्नमपि निसर्गमूढत्वेन न सहन्ते गजेन्द्रम्

प्रसन्न किया. इस बात को देखने से ईर्ष्यावाले सब कवि और पंडित बिलंब को नहीं सहते हुए सभा समाप्त हुए पीछे महल से बाहर निकल कर खोटी सलाह करके क्रोध में भरेहुए तरंगवती नामक पान पहुँचानेवाली दासी को एक बडा कीमती मोतियों का हार एकांत में देकर कहने लगे कि हे सुभगे! पापी कालिदास का राणी के साथ कुव्यवहार का अभिशाप विश्वस्त रूप से प्रमारराज भोज से कहना जिससे राजा उस दुष्ट को मरवा देवे, अथवा देश से निकाल देवे; ऐसे सुनकर हार के लोभ से आकर तरंगवती ने भी यह बात मान ली और केवल ईर्ष्यावाले पंडित भी प्रसन्न होतेहुए अपने अपने स्थान को गये. शोक और धिक्कार है ओछे गुणवालों की ईर्ष्या को. देखो भैंसे तड़ाग में क्रीड़ा करतेहुए गजेंद्र को भी स्वभावमूर्ख होने से नहीं देखसकते हैं ॥ १७ ॥ वह दासी भी एक समय राजा अकेले

सूरिणो बिलंबमसहमाणा समज्जाणंतरं पासायाउ बाहिरं नीसरंता कुमंतं मंतिऊण वहुत्तरोसा रण्णो तंबोलवाहिणीए तरंगवईनामहे आइ दासीए इक्कं महामोल्लमुत्ताहारं रहसि समप्पिऊण भणिअं च तं तए सुहए पाविणो कालिआसस्स देवीए समं रमणाहिसावं णिएण विस्सद्धत्तणेण जाणाविअ पामारराओ तहेअ कायव्वो जहा तं दुट्ठं मारेइ नरिंदो निक्खासेइ अहव देसाउ इअ सुणिअ हारलुद्धाइ तरंगवईए विप्पडिवन्नं तहा णवरि ईसालुसूरिसंघो वि सव्वो हरिसवारिहिविलीणो गओ अप्पणायालयं हंदि हंदि हद्धी पेच्छह छुच्छगुणाण मच्छरित्तणं कासरा कासारे कीलमाणं पि निसग्गमूढत्तणेण न सहंति गइंदं ॥ १७ ॥

चंडी वि सा एक्कसिअं एकल्ले नरिंदे केलीघरे पासुत्ते तस्स

संतुष्टं चकार कवीन्द्रम्। तद्दर्शनेनेर्ष्यालवः सर्वे ते सूरयो विलम्बमसहमानाः समज्यानन्तरं प्रासादाद्बहिर्निस्सरन्तः कुमन्त्रं मन्त्रयित्वा प्रभूतरोषा राज्ञस्ताम्बूलवाहिन्यै तरङ्गवतीनामधेयायै दास्यै एकं महामूल्यं मुक्ताहारं रहसि समर्प्य भणितं च तैः तस्यै सुभगे पापिनःकालिदासस्य देव्या समं रमणाभिशापं निजेन विश्रब्धत्वेन विज्ञापितः प्रमारराजस्तथैव कारयितव्यः, यथा तं दुष्टं मारयेन्नरेन्द्रो निष्कासयेदथवा देशात् इति श्रुत्वा हारलुब्धया तरंगवत्याऽपि प्रतिपन्नं तथा ; केवलमीर्ष्यालुसूरिसंघोपि सर्वो हर्षवारिधिविलीनो गत आत्मन आलयं, हंत हंत हा धिक् प्रेक्षध्वं तुच्छगुणानां मात्सर्यम् ; कासराः कासारे क्रीडन्तमपि निसर्गमूढत्वेन न सहन्ते गजेन्द्रम्

प्रसन्न किया. इस बात को देखने से ईर्ष्यावाले सब कवि और पंडित बिलंब को नहीं सहते हुए सभा समाप्त हुए पीछे महल से बाहर निकल कर खोटी सलाह करके क्रोध में भरेहुए तरंगवती नामक पान पहुँचानेवाली दासी को एक बड़ा कीमती मोतियों का हार एकांत में देकर कहने लगे कि हे सुभगे! पापी कालिदास का राणी के साथ कुव्यवहार का अभिशाप विश्वस्त रूप से प्रमारराज भोज से कहना जिससे राजा उस दुष्ट को मरवा देवे, अथवा देश से निकाल देवे; ऐसे सुनकर हार के लोभ से आकर तरंगवती ने भी यह बात मान ली और केवल ईर्ष्यावाले पंडित भी प्रसन्न होतेहुए अपने अपने स्थान को गये. शोक और धिक्कार है ओछे गुणवालों की ईर्ष्या को. देखो भैंसे तड़ाग में क्रीड़ा करतेहुए गजेंद्र को भी स्वभावमूर्ख होने से नहीं देखसकते हैं ॥ १७ ॥ वह दासी भी एक समय राजा अकेले

णीए सहोवइट्ठो रायाणो वि वितुसमुग्गदालीकारणं पुच्छीअ का-
लिदासो वि कहिअ भत्तवल्लहसमीवगया अंगिआरहिअव्व व-
हुअ त्ति सुणिऊण राणी वि विराणायसिलोअत्था सम्हेरा
हेट्ठमुही हूआ तं दट्ठूण तरंगवईकहिअं सच्चं ति मुणिअ
कइं पडि भणिअं कालिदास अम्हकेर देसत्तो नासर
सिग्घं मारइस्सं न जइ त्ति इत्थीचरित्रं कुच्छीअ कालिदासो वि
धारेसजणवयच्चाअं पडिसुणिअ सिग्घमागमिअ विलासवईघरं जं-
पीअ पिए रुट्ठो नरिंदो मं देसाउ निक्खासइ गच्छेमि तम्ह त्ति सु-
णंती पणवहू बोल्लीअ सुहेण पच्छन्नं ठासु मे णिलए भूहरम्मि किं
ते रायाणेण रायदत्तेण वित्तेण वा जिअंतीए मए भुंजसु दासीए मम
घरविहवं समग्गं ति संलाविअ ठाविओ भूहरे कालिदासो तीए

प्रातिसीरान्तरेण राज्या सहोपविष्टः, राज्ञापि वितुषमुद्गदालीकारणं पृ-
ष्टः कालिदासोपि कथितवान्, भक्तवल्लभसमीपगता अङ्गिकारहिता बभूवेति
श्रुत्वा राज्ञी अपि विज्ञाय श्लोकार्थं सस्मेरा अधोमुखी भूता ; तद्दृष्ट्वा
तरंगवतीकथितं सत्यमिति मत्वा कविं प्रति भणितं ; कालिदास! अस्माकं
देशान्निस्सर शीघ्रं मारयिष्यामि न चेदिति स्त्रियाश्चरित्रं कुत्सयामास। का-
लिदासोपि धारेशजनपदत्यागं प्रतिश्रुत्य शीघ्रमागतवान् विलासवतीगृ-
हं ; कथितवान् प्रिये रुष्टो नरेन्द्रो मां देशान्निष्कासयति गच्छामि तस्मादि-
ति शृण्वती पणवधूरवादीत् ; सुखेन प्रच्छन्नं तिष्ठ मे निलये भूगृहे किं ते

करके रनवास में ही रहे और लीलावती को बुलवाकर कालिदास को भी
बुलाया और भोजन करने को बिठाकर नाना प्रकार की व्यंजनादि सामग्री
परोस कर आप परदे की ओट में राणी सहित बैठे और कालिदास से मूंग
की दाल के बिना छिलका होने का कारण पूछा तब कालिदास ने कहा
'भात रूप पति के पास आने से अंगिया से रहित होगई' राणी इसको
सुनकर श्लोक का अर्थ समझकर मुसकराई उसको देखकर तरंगवती की
बात को सत्य मानकर स्त्रीचरित्र की निंदा करतेहुए राजा ने कालिदास
से कहा कि हमारे देश से जल्दी निकल जा नहींतो मरवा गेरूंगा. कालि-
दास भी भोज राजा के देश को छोडने की प्रतिज्ञा करके शीघ्र विलासवती
के घर आगया और कहा कि प्रिये! राजा अप्रसन्न होकर मेरे को देश से
निकालते हैं इससे जाता हूं. यह सुनकर वेश्या बोली मेरे घर में तहखाने
में छिपे रहो. तुमको राजा से अथवा उस के लिये धन से क्या प्रयोजन है ?
मेरे जीते मुझ दासी के समग्र धन को अपने काम में लगाओ. ऐसा कहकर

णीए सहोवइठो रायाणो वि वितुसमुग्गदालीकारणं पुच्छीअ का-
लिदासो वि कहिअ भत्तवल्लहसमीवगया अंगिआरहिअव्व व-
हुअ त्ति सुणिऊण राणी वि विणायसिलोअत्था सम्हेरा
हेठमुही हूआ तं दठूण तरंगवईकहिअं सच्चं ति मुणिअ
कइं पडि भणिअं कालिदास अम्हकेर देसत्तो नासर
सिग्घं मारइस्सं न जइ त्ति इत्थीचरिअं कुच्छीअ कालिदासो वि
धारेसजणवयच्चाअं पडिसुणिअ सिग्घमागमिअ विलासवईघरं जं-
पीअ पिए रुठो नरिंदो मं देसाउ निक्खासइ गच्छेमि तम्ह त्ति सु-
णंती पणवहू बोल्लीअ सुहेण पच्छन्नं ठासु मे णिलए भूहरम्मि किं
ते राणोण रायदत्तेण वित्तेण वा जिअंतीए मए भुंजसु दासीए मम
घरविहवं समग्गं ति संलाविअ ठाविओ भूहरे कालिदासो तीए

प्रातिसीरान्तरेण राज्या सहोपविष्टः, राज्ञापि वितुषमुद्गदालीकारणं पृ-
ष्टः कालिदासोपि कथितवान्, भक्तवल्लभसमीपगता अङ्गिकारहिता बभूवेति
श्रुत्वा राज्ञी अपि विज्ञाय श्लोकार्थं सस्मेरा अधोमुखी भूता ; तद्दृष्ट्वा
तरंगवतीकथितं सत्यमिति मत्वा कविं प्रति भणितं ; कालिदास! अस्माकं
देशान्निस्सर शीघ्रं मारयिष्यामि न चेदिति स्त्रियाश्चरित्रं कुत्सयामास। का-
लिदासोपि धारेशजनपदत्यागं प्रतिश्रुत्य शीघ्रमागतवान् विलासवतीगृ-
हं ; कथितवान् प्रिये रुष्टो नरेन्द्रो मां देशान्निष्कासयति गच्छामि तस्मादि-
ति शृण्वती पणवधूरवादीत् ; सुखेन प्रच्छन्नं तिष्ठ मे निलये भूगृहे किं ते

करके रनवास में ही रहे और लीलावती को बुलवाकर कालिदास को भी
बुलाया और भोजन करने को बिठाकर नाना प्रकार की व्यंजनादि सामग्री
परोस कर आप परदे की ओट में राणी सहित बैठे और कालिदास से मूंग
की दाल के बिना छिलका होने का कारण पूछा तब कालिदास ने कहा
'भात रूप पति के पास आने से अंगिया से रहित होगई' राणी इसको
सुनकर श्लोक का अर्थ समझकर मुसकराई उसको देखकर तरंगवती की
बात को सत्य मानकर स्त्रीचरित्र की निंदा करतेहुए राजा ने कालिदास
से कहा कि हमारे देश से जल्दी निकल जा नहींतो मरवा गेरूंगा. कालि-
दास भी भोज राजा के देश को छोडने की प्रतिज्ञा करके शीघ्र विलासवती
के घर आगया और कहा कि प्रिये! राजा अप्रसन्न होकर मेरे को देश से
निकालते हैं इससे जाता हूं. यह सुनकर वेश्या बोली मेरे घर में तहखाने
में छिपे रहो. तुमको राजा से अथवा उस के लिये धन से क्या प्रयोजन है?
मेरे जीते मुझ दासी के समग्र धन को अपने काम में लगाओ. ऐसा कहकर

मग्गं कहिअं । राणीए वि रायाणस्स सपच्चयं जाणाविअ सईवल्लहाकलंककखेवदुम्मणस्स महाकइविरहखिज्जमाणस्स सिंगारं कुणंतीए अप्पवारं संसुणंतीए आगमिअ पिअस्स सेज्जं कंतेण रममाणाए पसायत्तणं गहिअं।१९।

तत्तो धारेसो विणा कइंदं न सुहं भुंजइ न निद्दाइ न संलवइ तत्तो एक्कसिअं णिअवासअपहायसमए पइणो पुव्वं पबुद्धा लीलावइ सयणाउ हेट्ठोवइट्ठा वल्लई णेऊण पढम१गामसुइसंदब्भेण भइरवझंकारेण जग्गावइ दइअं राया वि जग्गिअ बहुलचउद्दसी १४ उग्गिअससिलेहं१ पिआमुहं२ च दट्ठूण "ओली ताव ण अणुहरइ गोरीमुहकमलस्स,, इअ दोहद्धं रइअं। तत्तो कयणिच्चकच्च१रज्ज

समग्रं कथितम् । राज्यापि राज्ञः सप्रत्ययं विज्ञापितम् । सतीवल्लभाकलङ्काक्षेपदुर्मनसो महाकविविरहखिद्यमानस्य शृङ्गारं कुर्वत्या आत्मद्वारं संशृण्वत्या आगमय्य प्रियस्य शय्यां कान्तेन रममाणया प्रसादवत्वं गृहीतम् ॥ १९ ॥

ततो धारेशो विना कवीन्द्रं न सुखं भुङ्क्ते न निद्राति न संलपति तत एकदा निजवासकप्रभातसमये पत्युः पूर्वं प्रबुद्धा लीलावती शयनादध उपविष्टा वल्लकीं नीत्वा प्रथमग्रामश्रुतिसंदर्भेण भैरवझङ्कारेण जागरितवती दयितम् । राज्ञापि जागरित्वा बहुलचतुर्दश्युदितशशिलेखां प्रियामुखं च दृष्ट्वा रेखा तावन्नानुहरति गौरमुखकमलस्येति दोहार्द्धं रचितम् । ततः कृतनित्यकृत्यो राज्यकार्यक्षणावसरे कारयित्वा समज्ज्यामाकारिता याणा-

दुश्चरित्र कहदिया और राणी ने राजा से अच्छी तरह विश्वास पूर्वक कहलादिया और अपनी पतिव्रता राणी के कलंक लगने से उदास और महाकवि कालिदास के वियोग से दुःखित राजा के पास शृंगार करके अपनी वारी में आई और प्रसन्न हुई ॥ १९ ॥ तदनंतर धारेश भोजराज को कालिदास के विना सुख हुआ न निद्रा आई और किसीसे बात तक करना बंद था ; एक बार अपनी वारी के समय में राजा से पहले जागीहुई राणी लीलावती शय्या से उठकर नीचे बैठी हुई बीणा लेकर पहले ग्राम और श्रुति के संदर्भ से भैरव झंकार से पति को जगाने लगी, राजा जागे और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात में उगीहुई चंद्रमा की रेखा और राणी के मुख को देखकर राजा ने "गौरीमुखकमल की रेखा की भी होड नहीं होती" यह आधा दोहा कहा ; तदनन्तर नित्यकृत्य करके राजा ने कार्य से

मग्गं कहिअं। राणीए वि रायाणस्स सपच्चयं जाणाविअ सईवल्लहाकलंककखेवदुम्मणस्स महाकइविरहखिज्जमाणस्स सिंगारं कुणंतीए अप्पवारं संसुणंतीए आगमिअ पिअस्स सेज्जं कंतेण रममाणाए पसायत्तणं गहिअं॥१९॥

तत्तो धारेसो विणा कइंदं न सुहं भुंजइ न निद्दाइ न संलवइ तत्तो एक्कसिअं णिअवासअपहायसमए पइणो पुव्वं पबुद्धा लीलावई सयणाउ हेट्ठोवइट्ठा वल्लई णेऊण पढम१गामसुइसंदब्भेण भइरवझंकारेण जग्गावइ दइअं राया वि जग्गिअ बहुलचउद्दसी १४ उग्गिअससिलेहं१ पिआमुहं२ च दट्ठूण "ओली ताव ण अणुहरइ गोरीमुहकमलस्स,, इअ दोहद्धं रइअं। तत्तो कयणिच्चकच्च१रज्ज

समग्रं कथितम्। राज्ञ्यापि राज्ञः सप्रत्ययं विज्ञापितम्। सतीवल्लभाकलङ्काक्षेपदुर्मनसो महाकविविरहखिद्यमानस्य शृङ्गारं कुर्वत्या आत्मवारं संशृण्वत्या आगमय्य प्रियस्य शय्यां कान्तेन रममाणया प्रसादत्वं गृहीतम् ॥ १९ ॥

ततो धारेशो विना कवीन्द्रं न सुखं भुङ्क्ते न निद्राति न संलपति तत एकदा निजवासकप्रभातसमये पत्युः पूर्वं प्रबुद्धा लीलावती शयनादधउपविष्टा वल्लकीं नीत्वा प्रथमग्रामश्रुतिसंदर्भेण भैरवझङ्कारेण जागरितवती दयितम्। राज्ञापि जागरित्वा बहुलचतुर्दश्युदितशशिलेखां प्रियामुखं च दृष्ट्वा रेखा तावन्नानुहरति गौरमुखकमलस्येति दोहार्द्धं रचितम्। ततः कृतनित्यकृत्यो राज्यकार्य्येणावसरे कारयित्वा समज्ज्यामाकारिता धाणा-

---

दुश्चरित्र कहदिया और राणी ने राजा से अच्छी तरह विश्वास पूर्वक कहलादिया और अपनी पतिव्रता राणी के कलंक लगने से उदास और महाकवि कालिदास के वियोग से दुःखित राजा के पास शृंगार करके अपनी वारी में आई और प्रसन्न हुई ॥ १९ ॥ तदनंतर धारेश भोजराज को कालिदास के विना सुख हुआ न निद्रा आई और किसीसे बात तक करना बंद था ; एक बार अपनी वारी के समय में राजा से पहले जागीहुई राणी लीलावती शय्या से उठकर नीचे बैठी हुई बीणा लेकर पहले ग्राम और श्रुति के संदर्भ से भैरव झंकार से पति को जगाने लगी, राजा जागे और कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी की रात में उगीहुई चंद्रमा की रेखा और राणी के मुख को देखकर राजा ने "गौरीमुखकमल की रेखा की भी होड नहीं होती" यह आधा दोहा कहा ; तदनन्तर नित्यकृत्य करके राजा ने कार्य से

कारणं भीत्रा तुम्हे कत्तो नरेसाउ ॥ २० ॥

देसाउ१रेसाउ२अन्त्यानुप्रासः ॥

तत्तो वज्जरिए जहत्थपच्चुत्तरे कहिग्रं कइंदेण "कीसग्रदिट्ठी वरिगाग्रइ तडि पहिली चंदस्स १" इग्र एग्रं पुरणसमासं भणह तुम्हे सहाए गमिग्र ग्रहयं पि चालणो महादलिद्दो धणत्थी जसकव्वसावणेण पामारराइणं पसन्नीकाउं वाणारसीए समागग्रो ग्रणुघेत्तव्वो तुम्हेहिं वि ग्राकारणीग्रो सो रायाणं जाणाविऊण गोट्ठीए दिवावणीग्रो जह कव्वं सावएग्रं ति उप्पालिग्र कालिग्रासो पि हि ग्रप्पा ग्रप्पकेरसहिल्लीए गणिग्राए णिलयभूहरे दडवड गग्रो ते वि सव्वे वाणाइणो पाउग्राइभासापंचग्र५पमत्ता णायसमासत्था लद्धुत्तरद्धा हरिससमद्धा पच्चागमिग्र

भीता यूयं कुतो नरेशात् ॥ २० ॥

ततः कथिते यथार्थप्रत्युत्तरे कथितं कवीन्द्रेण कीदृशदृष्टिर्वर्ण्यते तदा प्रतिपचन्द्रस्य इत्येतां पूर्णसमस्यां भणथ ; युष्माभिः सहैव गत्वा अहमपि चारणो महादरिद्रो धनार्थी यशःकाव्यश्रावणेन प्रामारराजं प्रसन्नीकर्त्तु वाराणस्याः समागतोऽनुग्रहीतव्यो युष्माभिरप्याकारणीयः ।स राजानं ज्ञापयित्वा गोष्ठ्यां दापनीयो यथा काव्यं श्रावयेयमिति कथयित्वा कालिदासोपि हि आत्मनाऽऽत्मीयसख्या गणिकाया निलयभूगृहं शीघ्रं गतः। तेपि सर्वे बाणादयः प्राकृतादिभाषापञ्चकप्रमत्ता ज्ञातसमस्यार्था लब्धोत्तरार्द्धा हर्षसमृद्धाः

कालिदास ने चारण का वेष बनाकर नगर के खुले दरवाजे में होकर बाहर जाकर उन पंडितों से भागने का कारण पूछा कि तुम राजा से क्यों डरे हो ॥ २० ॥ पंडितों ने यथार्थ वृत्तान्त कहा तो कालिदास ने कहा "तब प्रतिपदा के चंद्र की कैसी दृष्टि का वर्णन करना" इस संपूर्ण करीहुई समस्या को कहो. मैं चारण हूं और दारिद्र्य दूर करने को धन की इच्छा से यश की कविता सुनाकर भोज राजा को प्रसन्न करने को काशी से आया हूं सो तुम्हारे साथ ही चलूंगा आप मेरे पर कृपा करना और मेरे को राजा के पास बुलाना और ऐसा प्रसन्न करना जिससे मैं कविता सुनाऊं और सभा में कुछ द्रव्य मिलै ऐसा कहकर कालिदास भी आप अपनी मित्र वेश्या के घर के तहखाने में जल्दी चलागया उधर वे सब बाणादि कवि लोक प्राकृतादि ५ भाषाओं के जानने से गर्वित समस्या का अर्थ जानकर उत्तरार्द्ध पाकर प्रसन्न होतेहुए शहर में पीछे आये और रात्री को व्यतीत

कारणं भीआ तुम्हे कत्तो नरेसाउ ॥ २० ॥

देसाउ१रेसाउ२अन्त्यानुप्रासः ॥

तत्तो वज्जरिए जहत्थपच्चुत्तरे कहिअं कइंदेण "कीसअदिट्ठी वरिणअइ तडि पहिली चंदस्स १" इअ एअं पुराणसमासं भणह तुम्हे सहाए गमिअ अहयं पि चालणो महादलिद्दो धणत्थी जसकव्वसावणेण पामारराइणं पसन्नीकाउं वाणारसीए समागओ अणुघेत्तव्वो तुम्हेहिं वि आकारणीओ सो रायाणं जाणाविऊण गोट्ठीए दिवावणीओ जह कव्वं सावएअं ति उप्पालिअ कालिआसो पि हि अप्पा अप्पकेरसहिल्लीए गणिआए णिलयभूहरे दडवड गओ ते वि सव्वे वाणाइणो पाउआइभासापंचअप्पमत्ता णायसमासत्था लद्धुत्तरद्धा हरिससमद्धा पच्छागमिअ

भीता यूयं कुतो नरेशात् ॥ २० ॥

ततः कथिते यथार्थप्रत्युत्तरे कथितं कवीन्द्रेण कीदृशदृष्टिर्वर्ण्यते तदा प्रतिपच्चन्द्रस्य इत्येतां पूर्णसमस्यां भणथ ; युष्माभिः सहैव गत्वा अहमपि चारणो महादरिद्रो धनार्थी यशःकाव्यश्रावणेन प्रामारराजं प्रसन्नीकर्त्तुं वाराणस्याः समागतोऽनुग्रहीतव्यो युष्माभिरप्याकारणीयः।,स राजानं ज्ञापयित्वा गोष्ठ्यां दापनीयो यथा काव्यं श्रावयेयमिति कथयित्वा कालिदासोपि हि आत्मनाऽऽत्मीयसख्या गणिकाया निलयभूगृहं शीघ्रं गतः। तेपि सर्वे बाणादयः प्राकृतादिभाषापञ्चकप्रमत्ता ज्ञातसमस्यार्था लब्धोत्तरार्द्धा हर्षसमृद्धाः

कालिदास ने चारण का वेष बनाकर नगर के खुले दरवाजे में होकर बाहर जाकर उन पंडितों से भागने का कारण पूछा कि तुम राजा से क्यों डरे हो ॥ २० ॥ पंडितों ने यथार्थ वृत्तान्त कहा तो कालिदास ने कहा "तव प्रतिपदा के चंद्र की कैसी दृष्टि का वर्णन करना" इस संपूर्ण करीहुई समस्या को कहो. मैं चारण हूं और दारिद्र्य दूर करने को धन की इच्छा से यश की कविता सुनाकर भोज राजा को प्रसन्न करने को काशी से आया हूं सो तुम्हारे साथ ही चलूंगा आप मेरे पर कृपा करना और मेरे को राजा के पास बुलाना और ऐसा प्रसन्नकरना जिससे मैं कविता सुनाऊं और सभा में कुछ द्रव्य मिलै ऐसा कहकर कालिदास भी आप अपनी मित्र वेश्या के घर के तहखाने में जल्दी चलागया उधर वे सब बाणादि कवि लोक प्राकृतादि ५ भाषाओं के जानने से गर्वित समस्या का अर्थ जानकर उत्तरार्द्ध पाकर प्रसन्न होतेहुए शहर में पीछे आये और रात्री को व्यतीत

सवइघरं सा वि गणिआ अजाणिअरायहिअया णिअकंतगउरव भंससंकिरी किंकरीपमुहेहिं अप्पणायजणेहिं समुवेआ पलित्तज लणोवरिं चिणिऊण कट्ठसंघायं पडणारंभं करंती दिट्ठा णिवेण सम्माणिआ महुरवयणेहिं वारिआ य परिअणेण गेण्हावि- अ करं ॥ २१ ॥

तत्तो णंतरं नरिंदो हम्मिऊण भूहरे पाविअ अंतमणं कालिदा- सं खमाविअ णिआवराहं वोलाविअ बाहिरं चडाविअ पट्टतुरंगं आणिओ रायभवणं लीलावइ वि सत्त७सिहसुद्धसोलह१६वण्ण सुवण्णंव्व सविसेससोहिआ सव्वजणसंतोसुंतो अवहत्थिऊण सी- लसंदेहसंकं किलिकिंचीअ वल्लहेण समं सुणंती सव्वपुरयण१

गृहम् । सापि गणिका अज्ञातराजहृदया निजकान्तगौरवभ्रंशशङ्किनी किङ्क- रीप्रमुखैरात्मीयजनैः समुपेता प्रदीप्तज्वलनोपरि चित्वा काष्ठसंघातं पतना- रम्भं कुर्वती दृष्टा नृपेण सम्मानिता मधुरवचनैः वारिता च परिजनेन गृही- त्वा करम् ॥ २१ ॥

ततोऽनन्तरं नरेन्द्रो गत्वा भूगृहे प्राप्यान्तर्मनसं कालिदासं क्षमाप्य निजापराधमाहूय बहिरारोह्य पट्टतुरंगमानीतो राजभवनम् । लीलावत्यपि सप्तशिखशुद्धषोडशवर्णसुवर्णवत्सविशेषशोभिता सर्वजनसंतोषादप- हस्तयित्वा शीलसंदेहशंकां किलकिंचिता वल्लभेन समं शृण्वती सर्वपुरजन-

पास तहखाने में सोती है. सवेरे ही राजा अपने सब मुसाहिब सर्दारों के साथ पैदल ही कालिदास को लेनेवास्ते विलासवती के घर को आये वि- लासवती ने राजा का अभिप्राय न समझकर अपने पति कालिदास की प्रतिष्ठा बिगड़ने की शंका करके अपनी दासी आदि नौकरों सहित अग्नि पर काठ चिनवाकर उसमें पड़ने का उद्योग करने लगी कि राजा ने यह दशा देखकर मीठे वचनों से उसका सत्कार किया और नौकर चाकरों ने हाथ पकड़कर उसको हटालिया ॥ २१ ॥ तदनंतर राजा ने तहखाने में जाकर कालिदास से अपना अपराध क्षमा कराया और बुलाकर बाहर लाकर अप- ने चढने के घोड़े पर चढाकर अपने महलों में लाये. लीलावती राणी भी अग्नि में तपाये हुए सुवर्ण की तरह विशेष शोभित सब मनुष्यों के संतो- ष से अपने शील के संदेह की शंका को दूर करके हर्षादि चित्त के भावों से युक्त राजा भोज सहित सब पुरवासियों के मुख से अपने सतीत्व की प्रशंसा सुनती रही. तदनंतर बाणादि कविगण भी इर्ष्या छोडकर अभिमान

सवइघरं सा वि गणिश्रा अजाणिश्ररायहिश्रया णिश्रकंतगउरव भंससंकिरी किंकरीपमुहेहिं अप्पणायजणेहिं समुवेश्रा पलित्तज लणोवरिं चिणिऊण कट्ठसंघायं पडणारंभं करंती दिट्ठा णिवेण सम्माणिश्रा महुरवयणेहिं वारिश्रा य परिश्रणेण गेण्हाविश्र करं ॥ २१ ॥

तत्तो णंतरं नरिंदो हम्मिऊण भूहरे पाविश्र अंतमणं कालिदासं खमाविश्र णिश्रावराहं वोलाविश्र वाहिरं चडाविश्र पट्टतुरंगं श्राणिश्रो रायभवणं लीलावई वि सत्त७सिहसुद्धसोलह१६वण्ण सुवण्णंव्व सविसेससोहिश्रा सव्वजणसंतोसुतो श्रवहत्थिऊण सीलसंदेहसंकं किलिकिंचीश्र वल्लहेण समं सुणंती सव्वपुरयण१

गृहम् । सापि गणिका अज्ञातराजहृदया निजकान्तगौरवभ्रंशशङ्किनी किङ्करीप्रमुखैरात्मीयजनैः समुपेता प्रदीप्तज्वलनोपरि चित्वा काष्ठसंघातं पतनारम्भं कुर्वती दृष्टा नृपेण सम्मानिता मधुरवचनैः वारिता च परिजनेन गृहीत्वा करम् ॥ २१ ॥

ततोऽनन्तरं नरेन्द्रो गत्वा भूगृहे प्राप्यान्तर्मनसं कालिदासं क्षमाप्य निजापराधमाहूय बहिरारोप्य पट्टतुरंगमानीतो राजभवनम् । लीलावत्यपि सप्तशिखशुद्धषोडशवर्णसुवर्णवत्सविशेषशोभिता सर्वजनसंतोषादपहस्तयित्वा शीलसंदेहशंकां किलकिंचिता वल्लभेन समं शृण्वती सर्वपुरजन-

पास तहखाने में सोती है. सवेरे ही राजा अपने सब मुसाहिब सर्दारों के साथ पैदल ही कालिदास को लेनेवास्ते विलासवती के घर को आये विलासवती ने राजा का अभिप्राय न समझकर अपने पति कालिदास की प्रतिष्ठा बिगड़ने की शंका करके अपनी दासी आदि नौकरों सहित अग्नि पर काठ चिनवाकर उसमें पड़ने का उद्योग करने लगी कि राजा ने यह दशा देखकर मीठे वचनों से उसका सत्कार किया और नौकर चाकरों ने हाथ पकड़कर उसको हटालिया ॥ २१ ॥ तदनंतर राजा ने तहखाने में जाकर कालिदास से अपना अपराध क्षमा कराया और बुलाकर बाहर लाकर अपने चढने के घोड़े पर चढाकर अपने महलों में लाये. लीलावती राणी भी अग्नि में तपाये हुए सुवर्ण की तरह विशेष शोभित सब मनुष्यों के संतोष से अपने शील के संदेह की शंका को दूर करके हर्षादि चित्त के भावों से युक्त राजा भोज सहित सब पुरबासियों के मुख से अपने सतीत्व की प्रशंसा सुनती रही. तदनंतर बाणादि कविगण भी ईर्ष्या छोडकर अभिमान

१५६।२ पयमन७ जितप्रमारतच्छालकराउलभैरवमंडू१दशपुरा२ क्रमण ८ नृपपृथ्वीपाल १५६ वन्दिजयदत्तार्थद्विरददशक१० समुपेतमुद्रालक्षदशक १००००००दान ९ पार्थ्वीपालिरम्भेयकुमारसैन्यपालो १५७ द्भवन १० धारेश्वरनृपसिंधुलगतदुर्गद्वय २ प्रत्याक्रमण ११ समार्जितसर्वविद्यमहोदारतत्तनयभोजनरेन्द्रवररुचि १ बाण १ द्विपण्डितपञ्चशती ५०० स्वाश्रितीकरण १२ समाहतकालीदासनृपशंकर १ लक्ष्मीधरा २ र्थद्वादश १२ प्रत्यक्षर१ लक्षार्पण १३ तन्निमित्तनिष्कास्यमानकुविन्दार्थलक्ष१००००० मुद्रादान १४ रात्रिचर्याज्ञातदुस्थीभूतबाण १ चौरद्वय २ विपद्विध्वंसन १५ सपुत्रैकबुधविप्रार्थसर्वस्वाभरणार्पण १६ क्रीडाचन्द्रार्थहयविंशति २० युतपञ्च ५ ग्रामीविश्राणन १७ रामेश्वरार्थप्रत्यक्षरलक्षोत्सर्जन १८ वेश्याप्रसङ्गकुत्सनानादृतकालिदासपश्चात्तप्तनृपसमाकारितकालिदासस्वार्द्धासनोपवेशन १९ तदीर्ष्याव

हडुक पृथ्वीपाल का चित्तोड़ के गुहिलोत्त राजा की कन्या रंभा को व्याहना, प्रमारों को जीतकर उस(पृथ्वीपाल) के शाले राउल भैरव का मांडूगढ और मंदसोर पर हमला करना, राजा पृथ्वीपाल का स्तुतिपाठक जयदत्त के लिये दश १० हाथी समेत छ लाख रुपये देना, पृथ्वीपाल के पुत्र रंभा के औरस पुत्र कुमार सैन्यपाल का पैदा होना, धारा के स्वामी राजा सिंधुल का गयेहुए दो किलों पर पीछा हमला करना, सर्वविद्या पढकर बडे उदार सिंधुल के पुत्र महाराजा भोज का वररुचि बाण आदि पांच सौ५०० पंडितों को अपने आश्रित करना, कालिदास का आदर करके शंकर कवि को बारह लाख और लक्ष्मीधर को प्रति अक्षर लक्ष रुपये देना, उसके निमित्त निकालेजाते जुलाहे को लक्ष रुपये देना, रात्रि में विचरने समय जिनकी दुर्दशा जानली है ऐसे बाण और दो चोरों की आपदा का मिटाना, पुत्र सहित एक पंडित ब्राह्मण के लिये अपने समग्र भूषण देना, क्रीडाचंद्र के लिये बीस घोड़े सहित पांच गांव देना, रामेश्वर के लिये प्रति अक्षर लाख१ रुपये देना, वेश्या के प्रसंग से कालिदास की निंदा और अनादर कियाजाने पर पश्चात्ताप करके राजा का कालिदास को बुलाकर अपने अर्द्धासन पर बिठाना, उस (कालिदास) से ईर्ष्यावाले दूसरे कविलोगों का अ... से अंतःपुर में जाने का कलंक लगाना, उसके वृत्तांत को निश्चित ...

१५६।१ पयमन७ जितप्रमारतच्छालकराउलभैरवमंडू१दशपुरा२ क्रमण ८ नृपपृथ्वीपाल १५६ बन्दिजयदत्तार्थद्विरददशक१० समुपेतमुद्रालक्षदशक १०००००० दान ९ पार्थ्वीपालिराम्भेयकुमारसैन्यपालो १५७ द्भवन १० धारेश्वरनृपसिंधुलगतदुर्गद्वय २ प्रत्याक्रमण ११ समार्जितसर्वविद्यमहोदारतत्तनयभोजनरेन्द्रवररुचि १ बाणा ७ द्विपण्डितपञ्चशती ५०० स्वाश्रितीकरण १२ समाद्दतकालीदासन्नृपशंकर १ लक्ष्मीधरा २ र्थद्वादश १२ प्रत्यत्तर१ लक्षा१र्पण १३ तन्निमित्तनिष्कास्यमानकुविन्दार्थलक्ष१००००० मुद्रादान १४ रात्रिचर्याज्ञातदुस्थीभूतबाण १ चौरद्वय २ विपद्विध्वंसन १५ सपुत्रैकबुधविप्रार्थसर्वस्वाभरणार्पण १६ क्रीडाचन्द्रार्थहयविंशति २० युतपञ्च ५ ग्रामीविश्राणन १७ रामेश्वरार्थप्रत्यक्षरलक्षोत्सर्जन १८ वेश्याप्रसङ्गकुत्सनानाद्दतकालिदासपश्चात्तप्तनृपसमाकारितकालिदासस्वार्द्धासनोपवेशन १९ तदीर्ष्याव

हुआ पृथ्वीपाल का चित्तोड़ के गुहिलोत्त राजा की कन्या रंभा को व्याहना, प्रमारों को जीतकर उस(पृथ्वीपाल) के शाले रावल भैरव का मांडूगढ और मंदसोर पर हमला करना, राजा पृथ्वीपाल का स्तुतिपाठक जयदत्त के लिये दश १० हाथी समेत दश लाख रुपये देना, पृथ्वीपाल के पुत्र रंभा के औरस पुत्र कुमार सैन्यपाल का पैदा होना, धारा के स्वामी राजा सिंधुल का गयेहुए दो किलों पर पीछा हमला करना, सर्वविद्या पढकर बडे उदार सिंधुल के पुत्र महाराजा भोज का वररुचि बाण आदि पांच सौ५०० पंडितों को अपने आश्रित करना, कालिदास का आदर करके शंकर कवि को बारह लाख और लक्ष्मीधर को प्रति अक्षर लक्ष रुपये देना, उसके निमित्त निकालेजाते जुलाहे को लक्ष रुपये देना, रात्रि में विचरते समय जिनकी दुर्दशा जानली है ऐसे बाण और दो चोरों की आपदा का मिटाना, पुत्र सहित एक पंडित ब्राह्मण के लिये अपने समग्र भूषण देना, क्रीडाचंद्र के लिये बीस घोडे सहित पांच गांव देना, रामेश्वर के लिये प्रति अक्षर लाख२ रुपये देना, वेश्या के प्रसंग से कालिदास की निंदा और अनादर कियाजाने पर पश्चात्ताप करके राजा का कालिदास को बुलाकर अपने अर्द्धासन पर बिठाना, उस (कालिदास) से ईर्ष्यावाले दूसरे कविलोगों का अ से अंतःपुर में जाने का कलंक लगाना, उसके वृत्तांत को निश्चित

रायभवणो समज्जाठिओ सुअदारागयपंडिअकुडुंबदिओ सिंघलदीव निवेण उवयाए पेसिए सदिव्वसोलह १६ मणिणो सवाय १२५ गइंदे पुलइउं वाहिरमागओ कम्हारदेसीअकइतंडुलदेवणत्थदिणपंच ५ दिरओ दुइअकइअत्थदत्तदह१० गओ इक्कस्स दिअपुत्तस्स अप्पिअइहतीसो३०विज्जकुडुंअपंडिअं दट्ठूण सचमक्कओ दत्तसमासो णवरि पढम१त्थपूरिअसमासस्स तस्स दत्तबहुत्तवित्तसहदह १० गओ दुइअ २ त्थपूरिअसमासाए विज्जकुडुंववहूए दिण्णतम्मणिसोलहओ १६ तइअ ३ त्थभरिअसमासस्स तप्पुत्तस्स अप्पिअसत्तसिंधुरो चोत्थ४त्थसमाचिअसमासाइ तदुहिआइ समप्पिअभाणुमईभूसणो पंचमत्थसाहिअसमासाअ तस्स सुण्हाअ लालावईए समत्तआहरणाइँमग्गाविअ देहीअ अहो दाणसोंडत्तणं दायारमउलिमणिस्स पामारपज्जोअणभोअभूवालस्स

संतुष्टो दत्तप्रत्यत्तरलत्तः समागत्य राजभवने समज्यास्थितः श्रुतद्वारागतपंडितकुटुंबद्विजः सिंहलद्वीपनृपेणोपदायां प्रेषितान् सादिव्यषोडशमणीन् सपादशतं गजेन्द्रान् प्रलोकयितुं बहिरागतः कश्मीरदेशीयकवितंडुलदेवार्थ दत्तपंचद्विरदो द्वितीयकव्यर्थदत्तदशगज एकस्मै द्विजपुत्रायार्पितत्रिंशद्गजो विद्वत्कुटुंबपंडितं दृष्ट्वा सचमत्कृतो दत्तसमस्योथ प्रथमार्थपूरितसमस्यस्यतस्यदत्तबहुवित्तसहितदशगजो द्वितीयार्थपूरितसमस्यायै विद्वत्कुटुंबवध्वै दत्तन्मणिषोडशकः तृतीयार्थभरितसमस्याय तत्पुत्राय अर्पितसप्तसिंधुरः चतुर्थार्थ समासिलसमस्यायैतद्दुहित्रे समर्पितभानुमतीभूषणः पञ्चमार्थसाधितसमस्यायै तत् स्नुषायै लीलावत्याः समस्ताभरणानि आनाय्य ददौ अहो दानशौंडत्वं दातृमौलिमणेः प्रामारप्रद्योतनभोजभूपालस्य। एकदा कोपि नाडिंधमः कुतोपि

के ही पात्रवाले दरिद्र ब्राह्मण के काव्य से प्रसन्न होकर प्रत्येक अक्षर की एक२लाख मुद्रा देकर पीछे आये और सभा में विराजमान हुए कि द्वार पर एक पंडित के कुटुंब के आने की खबर सुनकर सिंहल द्वीप के राजा ने भेट में उत्तम१६मणि और सवा सौ हाथी भेजे थे उनको देखने के लिये बाहर आये उसी वक्त कश्मीर के कवि तण्डुलदेव को ५ हाथी, दूसरे कवि को १० हाथी, एक ब्राह्मण कुमार को३० हाथी दिये, और पंडित के कुटुंब को देखकर आश्चर्य सहित समस्या दी और एक अर्थ से समस्या पूर्ति करनेवाले पंडित को बहुतसा धन और १० हाथी, और पंडित की स्त्री ने दूसरे अर्थ में समस्या की पूर्ति करी तब उसको वे उत्तम १६ मणि देदिये, पंडित के पुत्र ने तीसरे अर्थ में समस्यापूर्ति करी उसको सात७ हाथी दिये, पंडित

रायभवणो समज्जाठिओ सुअदारागयपंडिअकुडुंबदिओ सिंघलदीव निवेणा उवयाए पेसिए सदिव्वसोलह १६ मणिणो सवाय १२५ गइंदे पुलइउं वाहिरमागओ कम्हारदेसीअकइतंडुलदेवणत्थदिणापंच ५ दिरओ दुइअकइअत्थदत्तदह १० गओ इक्कस्स दिअपुत्तस्स अप्पिअइहतीसो ३० विज्जकुडुंबपंडिअं दट्ठूण सचमक्कओ दत्तसमासो णवरि पढम १ त्थपूरिअसमासस्स तस्स दत्तबहुत्तवित्तसहदह १० गओ दुइअ २ त्थपूरिअसमासाए विज्जकुडुंबवहूए दिणणातम्मणिसोलहओ १६ तइअ ३ त्थभरिअसमासस्स तप्पुत्तस्स अप्पिअसत्तसिंधुरो चोत्थ ४ त्थसमाचिअसमासाइ तद्दुहिआइ समप्पिअभाणुमईभूसणो पंचमत्थसाहिअसमासाअ तस्स सुणहाअ लालावईए सभत्तआहरणाइँ मग्गाविअ देहीअ अहो दाणसोंडत्तणं दायारमउलिमणिस्स पामारपज्जोअणभोअभूवालस्स

संतुष्टो दत्तप्रत्यक्षरलक्षः समागत्य राजभवने समज्यास्थितः श्रुतद्वारागतपंडितकुटुंबद्विजः सिंहलद्वीपनृपेणोपदायां प्रेषितान् सादिव्यषोडशमणीन् सपादशतं गजेन्द्रान् प्रलोकयितुं बहिरागतः कश्मीरदेशीयकवितंडुलदेवार्थ दत्तपंचद्विरदो द्वितीयकव्यर्थदत्तदशगज एकस्मै द्विजपुत्रायार्पितत्रिंशद्गजो विद्वत्कुटुंबपंडितं दृष्ट्वा सचमत्कृतो दत्तसमस्योथ प्रथमार्थपूरितसमस्यस्य तस्य दत्तबहुवित्तसहितदशगजो द्वितीयार्थपूरितसमस्यायै विद्वत्कुटुंबवध्वै दत्तन्माणिषोडशकः तृतीयार्थभरितसमस्याय तत्पुत्राय अर्पितसप्तसिंधुरः चतुर्थार्थ समासितसमस्यायैतद्दुहित्रे समर्पित भानुमतीभूषणः पञ्चमार्थसाधितसमस्यायै तत् स्नुषायै लीलावत्याः समस्ताभरणानि आनाय्य ददौ अहो दानशौंडत्वं दातृमौलिमणेः प्रामारप्रद्योतनभोजभूपालस्य। एकदा कोपि नाडिंधमः कुतोपि

के ही पात्रवाले दरिद्र ब्राह्मण के काव्य से प्रसन्न होकर प्रत्येक अक्षर की एक१लाख मुद्रा देकर पीछे आये और सभा में विराजमान हुए कि द्वार पर एक पंडित के कुटुंब के आने की खबर सुनकर सिंहल द्वीप के राजा ने भेट में उत्तम१६मणि और सवा सौ हाथी भेजे थे उनको देखने के लिये बाहर आये उसी वक्त कश्मीर के कवि तण्डुलदेव को ५ हाथी, दूसरे कवि को १० हाथी, एक ब्राह्मण कुमार को३० हाथी दिये, और पंडित के कुटुंब को देखकर आश्चर्य सहित समस्या दी और एक अर्थ से समस्या पूर्ति करनेवाले पंडित को बहुतसा धन और १० हाथी, और पंडित की स्त्री ने दूसरे अर्थ में समस्या की पूर्ति करी तब उसको वे उत्तम १६ मणि देदिये, पंडित के पुत्र ने तीसरे अर्थ में समस्यापूर्ति करी उसको सात७ हाथी दिये, पंडित

णो अग्गम्मि च्चेअ तत्तो पत्तो पुरं पेल्लिअतुरंगो पंचम ५ धाराए फाराए ॥ १ ॥

तत्तो पच्छइ विप्पवडुओ वि सणिअं सणिसमागओ रायवारवाहिरं ठह्वो हुवीअ तं रायदंसणकामं मुणिऊण वेत्तहारिणा विण्णाविओ णरिंदो तुम्हेच्चयभूसणजायं धारंतो पओलीवाहिं वट्टए जइ आणवेइ देवो आणिज्जइ सो भवईअभूसणभूसिओ सहाणेण सहाए. राइणा वि पच्चहिजाणिओ केआरकलमकव्वकत्तारो महीसुरमाणवओ हक्कारिओ पुच्छिओ अ अव्वो विप्पवालअ कत्तो लद्धाइँ एरिसभूसणाइँ तए त्ति सोऊण तेण वि वज्जरिअं धुत्तत्तो तुमत्तो च्चिअ कलमकव्वं निम्माणाविअ सुणंतत्तो पसन्नीहूअत्तो कलमकंपणाकइत्तकहाए। तत्तो पुणो वि णिअभूसणाइं तस्स समप्पिअ

प्रवल्लिततुरंगः पंचमधारया स्फारया ॥ १ ॥

ततः पश्चात् विप्रवटुकोपि शनैः शनैः समागतः राजद्वारबहिःस्थितः अभूत्, तं राजदर्शनकामं ज्ञात्वा वेत्रहारिणा विज्ञापितो नरेन्द्रः,तवैव भूषणजातं धारयन् प्रतोलीबहिः वर्तते, यदि आज्ञापयति देव आनीयते स भवदीयभूषणभूषितः सहानेन सभायाम्; राज्ञापि प्रत्यभिज्ञातः केदारकलमकाव्यकर्ता महीसुरमाणवक आकारितः पृष्टश्च हंहो विप्रबालक कुतो लब्धानि एतादृशभूषणानि त्वयेति श्रुत्वा तेनापि कथितं धूर्तात्त्वत्त एव; कलमकाव्यं निर्माप्य शृण्वंस्ततः प्रसन्नीभवन् कम्पनकवित्वकथया. ततः पुनरपि

पूछा उसने भी उत्तम कविता में स्रग्धरा छन्द से मार्ग बताया तब उस स्त्री को लाख मुद्रा देकर अपने नगर को आते हुए अपने साथ एक ब्राह्मण बालक को देखकर राजापन छिपाकर उससे खेत के धान की कविता बनवाकर अपना सब भूषण देदिया और घोड़े को दौड़ाकर सरपट चाल से अपने नगर में आगये ॥ १ ॥ तदनंतर पीछे २ ब्राह्मण बालक भी धीरे २ राजद्वार पर पहुंचकर बाहर खड़ा रहा उसकी भोजराजा के दर्शन की इच्छा देखकर चोबदार ने राजा से कहा कि आपके गहणे पहनकर एक बालक ड्योढी बाहर खड़ा है आज्ञा होय तो आने दिया जाय राजा ने भी जानकर उस केदार कलम की कविता बनानेवाले ब्राह्मण बालक को बुलवाया और पूछा कि हे विप्रबालक तेरे पास ऐसे

ओ अग्गम्मि च्चेअ तत्तो पत्तो पुरं पेल्लिअतुरंगो पंचम ५ धाराए फाराए ॥ १ ॥

तत्तो पच्छइ विप्पवड्डुओ वि सणिअं सणिसमागओ रायवारबाहिरं ठड्डो हुवीअ तं रायदंसणकामं मुणिऊण वेत्तहारिणा विण्णाविओ णरिंदो तुम्हेच्चेयभूसणजायं धारंतो पओलीबाहिं वट्टए जइ आणवेइ देवो आणिज्जइ सो भवईअभूसणभूसिओ सट्टाणेण सहाए. राइणा वि पच्चहिजाणिओ केआरकलमकव्वकत्तारो महीसुरमाणवओ हक्कारिओ पुच्छिओ अ अव्वो विप्पबालअ कत्तो लद्धाइँ एरिसभूसणाइँ तए त्ति सोऊण तेण वि वज्जरिअं धुत्ततत्तो तुमत्तो च्चिअ कलमकव्वं निम्माणाविअ सुणंतत्तो पसन्नीहूअत्तो कलमकंपणकइत्तकहाए। तत्तो पुणो वि णिअभूसणाइं तस्स समप्पिअ

प्रवल्लिततुरंगः पंचमधारया स्फारया ॥ १ ॥
ततः पश्चात् विप्रबटुकोपि शनैः शनैः समागतः राजद्वारबहिःस्थितः अभूत्, तं राजदर्शनकामं ज्ञात्वा वेत्रहारिणा विज्ञापितो नरेन्द्रः,तवैव भूषणजातं धारयन् प्रतोलीबहिः वर्तते, यदि आज्ञापयति देव आनीयते स भवदीयभूषणभूषितः स्वस्थानेन सभायाम्; राज्ञापि प्रत्यभिज्ञातः केदारकलमकाव्यकर्ता महीसुरमाणवक आकारितः पृष्टश्च हंहो विप्रबालक कुतो लब्धानि एतादृशभूषणानि त्वयेति श्रुत्वा तेनापि कथितं धूर्तात्त्वत्त एव; कलमकाव्यं निर्माप्य शृण्वंस्ततः प्रसन्नीभवन् कम्पनकवित्वकथया. ततः पुनरपि

पूछा उसने भी उत्तम कविता में स्रग्धरा छन्द से मार्ग बताया तब उस स्त्री को लाख मुद्रा देकर अपने नगर को आते हुए अपने साथ एक ब्राह्मण बालक को देखकर राजापन छिपाकर उससे खेत के धान की कविता बनवाकर अपना सब भूषण देदिया और घोड़े को दौड़ाकर सरपट चाल से अपने नगर में आगये ॥ १ ॥ तदनंतर पीछे २ ब्राह्मण बालक भी धीरे २ राजद्वार पर पहुंचकर बाहर खड़ा रहा उसकी भोजराजा के दर्शन की इच्छा देखकर चोबदार ने राजा से कहा कि आपके गहणे पहनकर एक बालक ड्योढी बाहर खड़ा है आज्ञा होय तो आने दिया जाय राजा ने भी जानकर उस केदार कलम की कविता बनानेवाले ब्राह्मण बालक को बुलवाया और पूछा कि हे विप्रबालक तेरे पास ऐसे

२ च्चिम्र अणासिलिट्ठजुवईओ सोवइ त्ति चिंतमाणेण णिवेण को
वि दुइअ२पुरिसो वाहिरओ तं च्चिम्र घरं नीसंकं आहिपच्चुअंतो कु-
ड्डंतरनिलीणेण दिट्ठो सो वि वारसुवगमिअकरग्गेण सणिअम-
ररसद्दं काहीअ तेण पबुद्धा सा इत्थी कवाणा माणेउं उट्ठिआ स-
णिअं कोमलचलणन्नासं कुणंती सावहाणा पइव्वए ॥

कए१वए२अन्त्यानुप्रासः ॥ २ ॥

तओ सा उग्घाडिअ कवाडं अब्भंतरं णेऊण णिअपाणनाहं तस्स
न्हाणपमुहपरिचारिअं करंती पिएण बज्जरिआ अव्वो पिए मम
सेव्वावावडाए तव सिंजिअसद्देण माइ होउ विजयस्स निद्दाभंगो
त्ति अलं परिचारिआए निम्माणसु भोअणं सणिअंसणिअ मारव-
विहूणं तदो मलयसिंघसुंदरीए सिद्धीकए भोअणे मलएण जग्गावि-

इति चिन्तयता नृपेण कोपि द्वितीयपुरुषो बाह्यतस्तदेव गृहं निःशंकमाग-
च्छन् कुड्यान्तरनिलीनेन दृष्टः, सोपि द्वारस्रुतगमितकराग्रेण शनैरररशब्दं च-
कार, तेन प्रबुद्धा सा स्त्री कपाटौ मोक्तुमुत्थिता शनैः कोमलचरणन्यासं कु-
र्वती सावधाना पतिव्रते ॥ ततः सा उद्घाट्य कपाटमभ्यन्तरं नीत्वा नि-
जप्राणनाथं तस्य स्नानप्रमुखपरिचरणं कुर्वती प्रियेण कथिता हन्त प्रिये! म-
म सेवाव्यापृतायास्तव शिञ्जितशब्देन मा भवतु विजयस्य निद्राभंग इति
अलं परिचर्यया निष्पादय भोजनं शनैः शनैः अरवविधूतं; तदा मलयसिंहः
सुंदर्या सिद्धीकृते भोजने मलयेन जागरितो विजयो द्वौ अपि आत्मात्मपी-

---

की नौकरी से थकाहुआ राजभवन से बहुत समय में आकर वस्त्र और श-
स्त्र सहित ही स्त्री को बिना आलिंगन कर सोता है इसीतरह विचारते रा-
जा ने कोई दूसरा पुरुष बाहर से उसी घर में निःशंक आताहुआ भींत की
आड में छिपकर देखा और उस पुरुष ने बारसोत में हाथ देकर धीरे २ कि-
वाड़ खटखटाया उससे जागकर स्त्री किवाड़ खोलने के लिये पतिव्रत में
सावधान धीरे २ पैर धरती हुई उठी ॥ २ ॥ वह स्त्री किवाड़ खोलकर अपने
पति को भीतर लेगई और उसकी स्नान कराने आदि सेवा करनेलगी तब
पति ने कहा कि मेरी सेवा करते तेरे भूषणों के झनकार से बिजय की नीं-
द न खुलजाय इसलिये अब सेवा करना बंदकर और धीरे २ भोजन तैयार
कर जिससे खटका न हो;तब मलयसिंह की स्त्री ने भोजन तैयार करलिया
तब मलय ने विजय को जगाया और दोनों अपने २आसन पर बैटकर

२ चिअ अगासिलिट्ठजुवईओ सोवइ त्ति चिंतमाणेण णिवेण को विडुइअ२पुरिसो वाहिरओ तं चिअ घरं नीसंकं आहिपच्चुअंतो कुड्डंतरनिलीणेण दिट्ठो सो वि वारसुवगमिअकरग्गेण सणिअमररसद्दं काहीअ तेण पबुद्धा सा इत्थी कवाणं माणेउं उट्ठिआ सणिअं कोमलचलणन्नासं कुणंती सावहाणा पइव्वए ॥

कए१वए२अन्त्यानुप्रासः ॥ २ ॥

तओ सा उग्घाडिअ कवाडं अब्भंतरं णेऊण णिअपाणनाहं तस्स न्हाणपमुहपरिचारिअं करंती पिएण बज्जरिआ अव्वो पिए मम सेव्वावावडाए तव सिंजिअसद्देण माइं होउ विजयस्स निद्दाभंगो त्ति अलं परिचारिआए निम्माणसु भोअणं सणिअंसणिअ मारवविहूणं तदो मलयसिंघसुंदरीए सिद्धीकए भोअणे मलएण जग्गावि-

इति चिन्तयता नृपेण कोपि द्वितीयपुरुषो बाह्यतस्तदेव गृहं निःशंकमागच्छन् कुड्यान्तरनिलीनेन दृष्टः, सोपि द्वारसुतगमितकराग्रेण शनैरररशब्दं चकार, तेन प्रबुद्धा सा स्त्री कपाटौ मोक्तुमुत्थिता शनैः कोमलचरणन्यासं कुर्वती सावधाना पतिव्रते ॥ ततः सा उद्घाट्य कपाटमभ्यन्तरं नीत्वा निजप्राणनाथं तस्य स्नानप्रमुखपरिचरणं कुर्वती प्रियेण कथिता हन्त प्रिये! मम सेवाव्यापृतायास्तव शिञ्जितशब्देन मा भवतु विजयस्य निद्राभंग इति अलं परिचर्यया निष्पादय भोजनं शनैः शनैः अरवविधूतं; तदा मलयसिंहः सुंदर्या सिद्धीकृते भोजने मलयेन जागरितो विजयो द्वौ अपि आत्मात्मपी-

की नौकरी से थकाहुआ राजभवन से बहुत समय में आकर वस्त्र और शस्त्र सहित ही स्त्री को बिना आलिंगन कर सोता है इसीतरह विचारते राजा ने कोई दूसरा पुरुष बाहर से उसी घर में निःशंक जाताहुआ भींत की आड में छिपकर देखा और उस पुरुष ने बारसोत में हाथ देकर धीरे २ किंवाड़ खटखटाया उससे जागकर स्त्री किंवाड़ खोलने के लिये पतिव्रत में सावधान धीरे २ पैर धरती हुई उठी ॥ २ ॥ वह स्त्री किंवाड़ खोलकर अपने पति को भीतर लेगई और उसकी स्नान कराने आदि सेवा करनेलगी तब पति ने कहा कि मेरी सेवा करते तेरे भूषणों के झनकार से विजय की नींद न खुलजाय इसलिये अब सेवा करना बंदकर और धीरे २ भोजन तैयार कर जिससे खटका न हो;तब मलयसिंह की स्त्री ने भोजन तैयार करलिया तब मलय ने विजय को जगाया और दोनों अपने २आसन पर बैठकर

मित्तसिरोमणी मे जं विणा जीविएण वि अलं इअ सोऊण मह
च्छरिज्जचमक्कओ भोओ रायभवणमागओ पहाए कयणिच्च-
कज्जो हक्कारिअ सवहुअं मलयसीहं विजयं च तं अप्पणो उठ्ठीअ
समज्जाए रहसि पएसे णेऊण ते मग्गाविअ तत्तलोहगोलअ १
कालभुअंग २ कालऊडे ३ मलयववत्तीए १ विअएण २ य करा
विअ दिव्वतयं ३ अग्गिरूवअयपिंडग्गहणेण १ कण्हसप्पक्कम
णेण २ हलाहलकवलणेण ३ वेणिणा २ वि अव्वाउले अइपस-
न्ने अहिसोहिअमुहे सीलसुद्धे मलयं च महगहीरासयं जाणिअ
तिणहं ३ पि पायपडिओ णरिंदो कहीअ तुमं मलयसिंघ १ वसि
ठ्ठो २ तुमं पि मलयपाणप्पिए १ अरुंधई २ तुवमं विअय १ जी-
वंतमुत्तो वासस्स नंदणो सुअदेवो व्व सइसुद्धो इअ जंपिअ
धारेसो ताणं तिणहं ३ पि तिण्णि ३ सयाइँ गामे समप्पीअ

इति श्रुत्वा महाश्चर्यचमत्कृतो भोजो राजभवनमागतः प्रभाते कृतनित्यकृ-
त्य आहूय सवधूकं मलयसिंहं विजयं च तं स्वयमुत्थाय समज्याया रहसि
प्रदेशे नीत्वा आनाय्य तप्तलोहगोलककालभुजंगकालकूटं मलयवत्या विज-
येन च कारितं दिव्यत्रयम्. अग्निरूपायःपिण्डग्रहणेन कृष्णसर्पाक्रमणेन
हलाहलकवलनेन उभावपि अव्याकुलौ अतिप्रसन्नौ अभिशोभितमुखौ शी-
लशुद्धौ मलयं च महागभीराशयं ज्ञात्वा त्रयस्यापि पादपतितो नरेन्द्रः अ-
कथयत् त्वं मलयसिंह वशिष्ठः,त्वमपि मलयप्राणप्रिये अरुन्धती त्वमपि वि
जय जीवन्मुक्तो व्यासस्य नंदनःशुकदेव इव स्वविशुद्ध इति जल्पित्वा धारेश

नहीं होसकता ऐसा सुनकर बहुत आश्चर्य करताहुआ राजा अपने महलों
में आया और सवेरे ही नित्यकृत्य करके स्त्री सहित मलयसिंह और बिजय
को बुलाकर सभा में से आप उठकर एकांत में लेजाकर वहां मलयवती
और बिजय से तप्तलोह के गोले से, काले सर्प से और विष खिलाने से
तीनों दिव्य परीक्षा कराई तब आग के समान जलते लोहे के गोले से वि-
ष खाने से और काले सर्प के काटने से दोनों का कुछ नहीं बिगड़ा और
अत्यंत प्रसन्नमुख दीखे तब उन दोनों को उत्तम चरित्रवाले और मलय को
परम गंभीर समझकर राजा तीनों के पैरों में गिरकर कहने लगा कि मल-
यसिंह तू तो वशिष्ठ है और यह तेरी स्त्री अरुन्धती है, और हे बिजय
तू जीवन्मुक्त व्यासपुत्र शुकदेव के समान स्वतः शुद्ध है ऐसा कहकर

मित्तसिरोमणी मे जं विणा जीविएण वि अलं इअ सोऊण मह च्छरिज्जचमक्किओ भोओ रायभवणमागओ पहाए कयणिच्चकज्जो हक्कारिअ सवहुअं मलयसीहं विजयं च तं अप्पणो उट्ठीअ समज्जाए रहसि पएसे णेऊण ते मग्गाविअ तत्तलोहगोलअ १ कालभुअंग २ कालऊडे ३ मलयवत्तीए १ विअएण २ य करा विअ दिव्वत्तयं ३ अग्गिरूवअयपिंडग्गहणेण १ कण्हसप्पक्कमणेण २ हलहलकवलणेण ३ वेणिण २ वि अव्वाउले अइपसन्ने अहिसोहिअमुहे सीलसुद्धे मलयं च महगहीरासयं जाणिअ तिण्हं ३ पि पायपडिओ णरिंदो कहीअ तुमं मलयसिंघ १ वसिट्ठो २ तुमं पि मलयपाणप्पिए १ अरुंधई २ तुवमं विअय १ जीवंतमुत्तो वासस्स नंदणो सुअदेवो व्व सइसुद्धो इअ जंपिअ धारेसो ताणं तिण्हं ३ पि तिण्णि ३ सयाइँ गामे समप्पीअ

इति श्रुत्वा महाश्चर्यचमत्कृतो भोजो राजभवनमागतः प्रभाते कृतनित्यकृत्य आहूय सवधूकं मलयसिंहं विजयं च तं स्वयमुत्थाय समज्याया रहसि प्रदेशे नीत्वा आनाय्य तप्तलोहगोलककालभुजंगकालकूटं मलयवत्या विजयेन च कारितं दिव्यत्रयम्. अग्निरूपायःपिण्डग्रहणेन कृष्णसर्पाक्रमणेन हलाहलकवलनेन उभावपि अव्याकुलौ अतिप्रसन्नौ अभिशोभितमुखौ शीलशुद्धौ मलयं च महागभीराशयं ज्ञात्वा त्रयस्यापि पादपतितो नरेन्द्रः अकथयत् त्वं मलयसिंह वशिष्ठः,त्वमपि मलयप्राणप्रिये अरुन्धती त्वमपि विजय जीवन्मुक्तो व्यासस्य नंदनःशुकदेव इव स्वविशुद्ध इति जल्पित्वा धारेश

नहीं होसकता ऐसा सुनकर बहुत आश्चर्य करताहुआ राजा अपने महलों में आया और सवेरे ही नित्यकृत्य करके स्त्री सहित मलयसिंह और बिजय को बुलाकर सभा में से आप उठकर एकांत में लेजाकर वहां मलयवती और बिजय से तप्तलोह के गोले से, काले सर्प से और बिष खिलाने से तीनों दिव्य परीक्षा कराई तब आग के समान जलते लोहे के गोले से विष खाने से और काले सर्प के काटने से दोनों का कुछ नहीं बिगड़ा और अत्यंत प्रसन्नमुख दीखे तब उन दोनों को उत्तम चरित्रवाले और मलय को परम गंभीर समझकर राजा तीनों के पैरों में गिरकर कहने लगा कि मलयसिंह तू तो वशिष्ठ है और यह तेरी स्त्री अरुन्धती है, और हे बिजय तू जीवन्मुक्त व्यासपुत्र शुकदेव के समान स्वतः शुद्ध है ऐसा कहकर

चडिओ पुरपरिसरे पत्तो एक्क मित्थं ढक्किअपलहत्थं पेक्खिअ भूएण भणिअं 'का तं पुत्ति' तीए भणिअं 'नरिंद लुद्धअवहू' निवेण 'हत्थे किमेअं' ताए 'पलं' निवेण 'खामं किं' ताए 'सहयं ववीमि जइ मं अच्चायरापुच्छ से. तुब्भाराइपिअंसुवाहिणिअडे गायंति सिद्धंगणा गीअज्भाणवसा चरंति न मआ तेणं पलं दुब्बलं॥१॥"ति. तक्कालकयउत्तिपच्चुत्तीरहिं आहेडिणीए सिलोए संपज्जमाणे चाउरीचारुत्तणा... क्किओ सिंधुलसुओ ताए पच्चक्खरलक्खं१ अहिलाइँ अप्पाहरणाइँ२ तुरअं३ च तं देऊण जणाजणाजाणिओ पत्तपरिअणाजणो अत्तअन्नसा१हरणो२ पहुपासायं समागओ। अन्नया कालिदासकव्वोत्तारणाए दत्तलक्खो कस्सा वि कइस्स कए दत्तपंचलक्खो पुणो वि मअव्वमणो रणो एकं दलिद्दवुहवम्हणं कट्ठभारं

पुरपरिसरे प्राप्तः एकां स्त्रियमाच्छादितपलहस्तां प्रेक्ष्य भूपेन भणितं, 'का त्वं पुत्रि' तया भणितं 'नरेन्द्र लुब्धकवधूः' 'नृपेण'हस्ते किमेतत्' तया'पलं' नृपेण'क्षामं किं' तया'सहजं ब्रवीमि, यदि मां अत्यादरात् पृच्छसि; तवारिप्रियाश्रुवाहिनीतटे गायंति सिद्धांगना गीतध्यानवशाश्चरंति न मृगास्तेन पलं दुर्बलम्'इति तत्कालकृतोक्तिप्रत्युक्तिभिराखेटिन्याः श्लोके संपद्यमाने चातुरीचारुत्वचमत्कृतः सिंधुलसुतः तस्यै प्रत्यक्षरलक्षं अखिलान्यात्माभरणानि तुरंगं च तं दत्वा जनजनज्ञातः प्राप्तपरिजनजनः आत्तान्यस्वाभरणः प्रभुप्रासादं समागतः॥अन्यदा कालिदासकाव्योत्तारणके दत्तलक्षः कस्यापि कवेः कृते दत्तपंचलक्षः पुनरपि मृगव्यमना अरण्ये रममाण एकं दरिद्रबुधब्राह्मणं काष्ठभारं वहमानं लंघित

उठकर शहर के समीप आए और एक स्त्री को हाथ से मांस को ढके देखकर राजा ने पूछा हे पुत्रि! तू कौन है? उसने कहा हे राजन् मैं अहेड़ी की स्त्री हूं. राजा ने पूछा हाथ में यह क्या है? उसने कहा मांस है. राजा ने पूछा दुर्बल क्यों है? तब उसने कहा कि जो आप आदर पूर्वक पूछते हो तो ठीक कहती हूं कि तुम्हारे शत्रुओं की स्त्रियों के आंसुओं की नदी के किनारे सिद्धों की स्त्रियां गायाकरती हैं उस गान को सुनने में लगे रहने से मृग चरते नहीं हैं इससे मांस दुर्बल है॥१॥ उसी समय इसप्रकार उत्तर प्रत्युत्तरों से और अहेरिन की श्लोक बनाने की चतुराई से चमत्कार को प्राप्त राजा ने उसको प्रत्येक अक्षर के लिये लक्ष मुद्रा, अपने सब भूषण और घोड़ा दिया लोकों ने राजा को जानलिया और अपने साथ के सेवक आगये तब अपने और भूषण पहनकर बड़े महलों में प्रवेश किया. एक बार राजा

चडिओ पुरपरिसरे पत्तो एक्क मित्थं ढक्किअपलहत्थं पेक्खिअ भूए-ण भणिअं 'का तं पुत्ति' तीए भणिअं 'नरिंद लुद्धअवहू' निवेण 'हत्थे किमेअं' ताए 'पलं' निवेण 'खामं किं' ताए 'सहयं ववीमि जइ मं अच्चायरापुच्छ से. तुम्भाराइपिअंसुवाहिणियडे गायंति सिद्धंगणा गीअज्झाणवसा चरंति न मआ तेणं पलं दुब्बलं॥१॥" ति. तक्का लकयउत्तिपच्चुत्तीरहिं आहेडिणीए सिलोए संपज्जमाणे चाउरी चारुत्तणचक्किओ सिंधुलसुओ ताए पच्चक्खरलक्खं१ अहिलाइँ अप्पाहरणाइँ२ तुरअं३ च तं देऊण जणाजणजाणिओ पत्तपरिअणज णो अत्तअन्नसा१हरणो२ पहुपासायं समागओ। अन्नया कालि दासकव्वोत्तारणए दत्तलक्खो कस्स वि कइस्स कए दत्तपंच लक्खो पुणो वि मअव्वमणो रण्णे एक्कं दलिद्दबुहवम्हणं कट्ठभारं

मृगाच्छादितपलहस्तां प्रेक्ष्य भूपेन भणितं, 'का त्वं पुत्रि' तया भणितं 'नरेन्द्र लुब्धकवधूः' 'नृपेण'हस्ते किमेतत्' तया'पलं' नृपेण'चामं किं' तया'सहजं ब्रवीमि, यदि मां अत्यादरात् पृच्छसि; तवारिप्रियाश्रुवाहिनीतटे गायंति सिद्धांगना गीतध्यानवशाश्चरंति न मृगास्तेन पलं दुर्बलम्' इति तत्कालकृतोक्ति प्रत्युक्तिभिराखेटिन्याः श्लोके संपद्यमाने चातुरीचारुत्वचमत्कृतः सिंधुलसुतः तस्यै प्रत्यक्षरलक्षं अखिलान्यात्माभरणानि तुरंगं च तं दत्वा जनजनज्ञातः प्राप्तपरिजनजनः आत्तान्यस्वाभरणः प्रभुप्रासादं समागतः॥ अन्यदा कालिदासकाव्योत्तारणके दत्तलक्षः कस्यापि कवेः कृते दत्तपंचलक्षः पुनरपि मृगव्यमना अरण्ये रममाणः एकं दरिद्रबुधब्राह्मणं काष्ठभारं वहमानं लंघित

उठकर शहर के समीप आए और एक स्त्री को हाथ से मांस को ढके देखकर राजा ने पूछा हे पुत्रि! तू कौन है? उसने कहा हे राजन् मैं अहेडी की स्त्री हूं. राजा ने पूछा हाथ में यह क्या है? उसने कहा मांस है. राजा ने पूछा दुर्बल क्यों है? तब उसने कहा कि जो आप आदर पूर्वक पूछते हो तो ठीक कहती हूं कि तुम्हारे शत्रुओं की स्त्रियों के आंसुओं की नदी के किनारे सिद्धों की स्त्रियां गायाकरती हैं उस गान को सुनने में लगे रहने से मृग चरते नहीं हैं इससे मांस दुर्बल है॥१॥ उसी समय इसप्रकार उत्तर प्रत्युत्तरों से और अहेरिन की श्लोक बनाने की चतुराई से चमत्कार को प्राप्त राजा ने उसको प्रत्येक अक्षर के लिये लक्ष मुद्रा, अपने सब भूषण और घोड़ा दिया लोकों ने राजा को जानलिया और अपने साथ के सेवक आगये तब अपने और भूषण पहनकर बड़े महलों में प्रवेश किया. एक बार राजा

वेसाअविसरणो रायवारमागमिअ पडिहारमुहेण जाणाविआ
ण लद्धलक्खो णिवेण पुणो वि लक्खजुअलं२पत्थसु त्ति पेसिओ
तह च्च तेण पट्ठाविओ लक्खत्तयं३लहि त्ति भणिओ पुणो वि प-
डिप्पेसिओ रायसेवअं सत्थे काऊण पच्चागओ तिण्णि३लक्खाइँ
दह१०य गइंदे पाविअ गओ. कोसाहिआरिएण वि लेहघरे लेहा-
विअं तं ति "लक्खं लक्खं उणो लक्खं मत्ता य दस१०दंतिणो ।
समप्पिअं ति भोएण जाणुदग्घप्पभासणा ।१।" इअ कयक-
ज्जं कइआ वि पामारपइं दुवारिओ कयसज्जं विण्णवीअ देव
ज्ज को वि सुअदेवणामा कई समागओ वारि ठाइ त्ति सोऊण वा-
णो वज्जरिओ तं पि सुअदेवं जाणासि त्ति वाणेण वि

विज्ञाप्य न लब्धलक्षः नृपेण पुनरपि लक्षयुगलं प्रार्थयस्वेति प्रेषितः तथैव त-
न प्रस्थापितः लक्षत्रयं लभस्वेति भणितः पुनरपि प्रतिप्रेषितः राजसेवकं
सार्थे कृत्वा प्रत्यागतः त्रीणि लक्षाणि दश गजेन्द्रान् प्राप्य गतः ॥ कोशाधि-
कारिणापि लेखगृहे लेखितम् "लक्षं लक्षं पुनर्लक्षं मत्ताश्च दशदंतिनः।सम-
र्पितानि भोजेन जानुदघ्नप्रभाषिणे" इति ॥ कृतकार्यं कदापि प्रामारपतिं
दौवारिकः कृतसमज्ज्यं विज्ञापयामास देवाद्य कोपि शुकदेवनामा कविः
समागतः द्वारि तिष्ठति इति श्रुत्वा बाणः कथितः त्वमपि शुकदेवं जानासी-
ति बाणेनापि कथितं शुकस्य सूरित्वसखित्वसमर्थः कालिदास एव नान्यः
ततः सोपि साधितः कालिदासः कथयाति 'सुकविद्वितयं भूप निखिलेपि म-

---

चुराकर लेआया है ऐसा दीखता है इसलिये हम लोकों को चाहिये कि
तेरेको दृढता पूर्वक कैद करलें यह सुनकर ब्राह्मण उदास होकर राजद्वार
पर आया और द्वारपाल के हाथ राजा से निवेदन कराया कि लक्ष नहीं
मिला-राजा ने कहा फिर एक लक्ष जाकर भंडारी से मांग तब ब्राह्मण व-
हां गया वहां पहले के समान कुछ नहीं पाकर राजा के पास आया-राजा
ने कहा तीन ३ लक्ष जाकर मांग तब फिर भंडारी के पास गया वहांसे
खाली हाथ फिर आया तब राजा ने एक सेवक भेज कर तीन लक्ष और
१० हाथी दिवाये, तब भंडारी ने हिसाब की पुस्तक में लिखा "लक्ष लक्ष
और लक्ष अर्थात् तीन लक्ष ३ और दश १० मस्त हाथी भोजराजा ने
जानुदघ्न कहनेवाले ब्राह्मण को दिये ॥" नित्यकृत्य करके सभा में बैठेहुए
राजा भोज से द्वारपाल ने आकर निवेदन किया कि हेराजन् आज शुक-
देव नाम एक कवि आया है सो ड्योढी पर है यह सुनकर राजा ने बाण से

विसाअविसरणो रायवारमागमिअ पडिहारमुहेण जाणाविश्र
ण लद्धलक्खो णिवेण पुणो वि लक्खजुअलं२पत्थसु त्ति पेसिश्रो
तह च्च तेण पट्ठाविश्रो लक्खत्तयं३लेहि त्ति भणिश्रो पुणो वि प-
डिप्पेसिश्रो रायसेवश्रं सत्थे काऊण पच्चागश्रो तिण्णि३लक्खाइँ
दह१०य गइंदे पाविअ गश्रो. कोसाहिश्रारिएण वि लेहघरे लेहा-
विश्रं तं ति "लक्खं लक्खं उणो लक्खं मत्ता य दस१०दंतिणो ।
समप्पिश्रं ति भोएण जाणुदग्घप्पभासणा ।१।" इअ कयक-
ज्जं कइआ वि पामारपइं दुवारिश्रो कयसज्जं विण्णवीअ देव
ज्ज को वि सुअदेवणामा कई समागश्रो वारि ठाइ त्ति सोऊण वा-
णो वज्जरिश्रो तं पि सुअदेवं जाणासि त्ति वाणेण वि

विज्ञाप्य न लब्धलक्षः नृपेण पुनरपि लक्षयुगलं प्रार्थयस्वेति प्रेषितः तथैव त-
न प्रस्थापितः लक्षत्रयं लभस्वेति भणितः पुनरपि प्रतिप्रेषितः राजसेवकं
सार्थे कृत्वा प्रत्यागतः त्रीणि लक्षाणि दश गजेन्द्रान् प्राप्य गतः ॥ कोशाधि-
कारिणापि लेखगृहे लेखितम् "लक्षं लक्षं पुनर्लक्षं मत्ताश्च दशदंतिनः। सम-
र्पितानि भोजेन जानुदघ्नप्रभाषिणे" इति ॥ कृतकार्यं कदापि प्रामारपतिं
दौवारिकः कृतसमज्ज्यं विज्ञापयामास देवाद्य कोपि शुकदेवनामा कविः
समागतः द्वारि तिष्ठति इति श्रुत्वा बाणः कथितः त्वमपि शुकदेवं जानासी-
ति बाणेनापि कथितं शुकस्य सूरित्वसखित्वसमर्थः कालिदास एव नान्यः
ततः सोपि साधितः कालिदासः कथयाति 'सुकविद्वितयं भूप निखिलेपि म-

---

चुराकर ले आया है ऐसा दीखता है इसलिये हम लोकों को चाहिये कि
तेरेको दृढता पूर्वक कैद करलें यह सुनकर ब्राह्मण उदास होकर राजद्वार
पर आया और द्वारपाल के हाथ राजा से निवेदन कराया कि लक्ष नहीं
मिला-राजा ने कहा फिर एक लक्ष जाकर भंडारी से मांग तब ब्राह्मण व-
हां गया वहां पहले के समान कुछ नहीं पाकर राजा के पास आया-राजा
ने कहा तीन ३ लक्ष जाकर मांग तब फिर भंडारी के पास गया वहांसे
खाली हाथ फिर आया तब राजा ने एक सेवक भेज कर तीन लक्ष और
१० हाथी दिवाये, तब भंडारी ने हिसाब की पुस्तक में लिखा "लक्ष लक्ष
और लक्ष अर्थात् तीन लक्ष ३ और दश १० मस्त हाथी भोजराजा ने
जानुदघ्न कहनेवाले ब्राह्मण को दिये ॥" नित्यकृत्य करके सभा में बैठेहुए
राजा भोज से द्वारपाल ने आकर निवेदन किया कि हेराजन् आज शुक-
देव नाम एक कवि आया है सो ड्योढी पर है यह सुनकर राजा ने बाण से

इत्र कहिअ सुअम्मि पठाविए अन्नो को वि कई गोट्ठिमाका-
रिओ मेहताप्पयेण थुणाइ णिवं पज्जेण तं जहा "जं चिंतामणि
कप्परुक्खर सुरगावीउ हिं न साहिज्जए जं ण छेअ परोवयार
णिरएहिं थूल सराहेरहिं वि ॥ तं मेहेण तए माहिं वसुजलेणं
सिंचमाणेण दे धारेएण वहंतएण धुरिअं सव्वे जिअंते सइ॥१॥"
त्ति सुणिअ तस्स वि दत्तवहुत्तलक्खमणुदिणं पुणो कोसव-
सुवुंदव्वयवसणिणं विहुं विक्खोअ अमच्चमउली निवलम्मनि-
लए खडिआए पज्जेण लेहं लिहिअवंतो तं ति "रक्खंति विवयाए
सं" णिवेण वि सुरयसमूसुएण कइ वि सविसेसजग्गंतेण म-
यणावत्तीपयासे खडीलिहिए दीहक्खरे झाऊण वीअं २ चलणं
खडीए लिहिअं तं ति "इब्भाणं विवया कओ" कया वि उणो

पद्येन तद्यथा "यच्चिंतामणिकल्पवृक्षसुरगवीभिर्न साध्यते यन्नैव परोप-
कारनिरतैः स्थूलसूक्ष्मैरपि तन्मेघेन त्वया महीमिव सुजलेन सिञ्चमानेन धौ-
रेयेण वहता धुरां सर्वं जगच्चेष्टते" इति श्रुत्वा तस्यापि दत्तबहुलक्षमनुदिनं
पुनः पुनः कोषवसुवृन्दव्ययव्यसनिनं विभुं वीक्ष्यामात्यमौलिर्नृपनर्मनिलये
खटिकया पद्येन लेखं लिखितवान् "रक्षन्ति विपदर्थं स्वं" नृपेणापि सुरतसमु-
त्सुकेन क्वापि सविशेषं जाग्रता मदनवर्तिप्रकाशे खटीलिखितदीर्घाक्षरे ध्या-
त्वा द्वितीयं चरणं खटिकया लिखितमिति "इभ्यानां विपदः कुतः" कदापि
पुनः अमात्येनागत्य तथ्यं प्रतिमल्लं पादं प्रेक्ष्य तृतीयमपि लिखितमिति

में बुलायागया उसने वडे श्लोक से राजा की स्तुति करी कविता यह थी "जो
काम चिन्तामणि, कल्पवृक्ष और कामधेनु से नहीं सिद्ध होता और परोप-
कार निरत सब छोटे वडों से जो काम सिद्ध नहीं होता सो हे राजन्! मे-
घ के समान पृथ्वी को उत्तम जल से सींचनेवाले और राज्य भार को उ-
ठातेहुए आप से यह सारा संसार जीवित है (१६७) यह सुनकर उसको
भी बहुत सा द्रव्य दिया इसप्रकार नित्य खजाने के द्रव्य को लुटाने में ल-
गे हुए राजा को जानकर वडे अमात्य ने राजा के शयनगृह में खड़िया से
श्लोक का चरण लिखा कि "विपत्ति के वास्ते धन को रख छोडते हैं" तब
राजा ने जागते हुए मोमबत्ती की रोशनी से वह चरण बडे अक्षरों में ख-
ड़िया से लिखा देखकर विचार कर दूसरा चरण खड़िया से लिखा कि
"धनवानों के विपत्ति कहां से हो" कितने दिनों पीछे अमात्य ने अपने लिखे
चरण के उत्तर में दूसरा चरण देखकर फिर तीसरा चरण लिखा कि

इअ कहिअ सुअम्मि पट्ठाविए अन्नो को वि कई गोट्ठिमाका-
रिओ मेहताप्पयेण थुणइ णिवं पज्जेण तं जहा "जं चिंतामणि
कप्परुक्खर सुरगावीउहिं न साहिज्जए जं ण च्चेअ परोवयार
णिरएहिं थूल१ सराहेरहिं वि ॥ तं मेहेण तए महिं वसुजलेणं
सिंचमाणेण दे धारेएण वहंतएण धुरिअं सव्वे जिअंते सइ॥१॥"
त्ति सुणिअ तस्सा वि दत्तवहुत्तलक्खमणुदिणं पुणो कोसव-
सुवुंदव्वयवसणिणं विहुं विक्खीअ अमच्चमउली निवम्मनि-
लए खडिआए पज्जेण लेहं लिहिअवंतो तं ति "रक्खंति विवयाए
सं" णिवेण वि सुरयसमूसुएण कइ वि सविसेसजग्गंलेण म-
यणावत्तीपयासे खडीलिहिए दीहक्खरे झाऊण वीअं २ चलणं
खडीए लिहिअं तं ति "इब्भाणं विवया कओ" कया वि उणो

पद्येन तद्यथा "यच्चिंतामणिकल्पवृक्षसुरगवीभिर्न साध्यते यन्नैव परोप-
कारनिरतैः स्थूलसूक्ष्मैरपि तन्मेघेन त्वया महीमिव सुजलेन सिञ्चमानेन धौ-
रेयेण वहता धुरां सर्वं जगच्चेष्टते" इति श्रुत्वा तस्यापि दत्तबहुलक्षमनुदिनं
पुनः पुनः कोषवसुवृन्दव्ययव्यसनिनं विभुं वीक्ष्यामात्यमौलिर्नृपनर्मनिलये
खटिकया पद्येन लेखं लिखितवान् "रक्षन्ति विपदर्थं स्वं" नृपेणापि सुरतसमु-
त्सुकेन क्वापि सविशेषं जाग्रता मदनवर्तिप्रकाशे खटीलिखितदीर्घाक्षरे ध्या-
त्वा द्वितीयं चरणं खटिकया लिखितमिति "इभ्यानां विपदः कुतः" कदापि
पुनः अमात्येनागत्य तथ्यं प्रतिमल्लं पादं प्रेक्ष्य तृतीयमपि लिखितमिति

में बुलाया गया उसने बड श्लोक से राजा की स्तुति करी कविता यह थी "जो
काम चिन्तामणि, कल्पवृक्ष और कामधेनु से नहीं सिद्ध होता और परोप-
कार निरत सब छोटे बडों से जो काम सिद्ध नहीं होता सो हे राजन्! मे-
घ के समान पृथ्वी को उत्तम जल से सींचनेवाले और राज्य भार को उ-
ठातेहुए आप से यह सारा संसार जीवित है (१६७) यह सुनकर उसको
भी बहुत सा द्रव्य दिया इसप्रकार नित्य खजाने के द्रव्य को लुटाने में ल-
गे हुए राजा को जानकर बडे अमात्य ने राजा के शयनगृह में खड़िया से
श्लोक का चरण लिखा कि "विपत्ति के वास्ते धन को रख छोडते हैं" तब
राजा ने जागते हुए मोमबत्ती की रोशनी से वह चरण बडे अक्षरों में ख-
ड़िया से लिखा देखकर विचार कर दूसरा चरण खड़िया से लिखा कि
"धनवानों के बिपत्ति कहां से हो" कितने दिनों पीछे अमात्य ने अपने लिखे
चरण के उत्तर में दूसरा चरण देखकर फिर तीसरा चरण लिखा कि

अत्थि॥१॥" इअ सुणिअ पज्जरिअं पहुणा तं को सि त्ति तेणं च अहयं जइ देहि अहयं अक्खेमि णिवेण च आगच्छ अहयं ते त्ति पयडिओ पडिरोहओ पि सुणिअ देव हंदि हंदि अउत्तो जूअहारिअसव्वासो रित्थत्थी पहुरित्थपत्थपइट्ठो जं जं चोरिउं चिंतेमि तं तं चोरिआदुरिअदरिओ चयंतो चिट्ठेमि ता ताहे पहुणा पाओणपज्जं पडिअं चउत्थ ४ चवणं चिरअंतं चिंतिअ चोत्थं ४ चवीअ तओ सदएण सामिणा देऊण अहयं अहयं आकारिओ आगओ त्ति पयंपणापसन्नेण भोएण भणिअं इमत्तो वेलत्तो जइ पुणो वि जूअआरी१ चोरिअचारी२ भविस्सइ भवंतो तत्तो उज्झिअअसुं करिस्सं त्ति कहिअ हारिअद्दणं१ पसायलक्खं१ ००००० २ च पच्चप्पीअ पेसिओ पहाए त्ति सुणिअ सइवेण सीसिअं मारिअव्वस्स वि महामहिंदेण दिज्जइ दव्वं ति तओ सामिणा सा-

---

न किंचिदप्यास्ति" इति श्रुत्वा कथितं प्रभुणा त्वं कोसीति तेन च कथितं यदि ददासि अभयमाख्यामि नृपेण च आगच्छ अभयं ते इति प्रकटितः प्रतिरोधकोपि श्रुत्वा देव हंत हंत अयुक्तः द्यूतहारितसर्वस्वः रिक्थार्थी प्रभुरिक्थपस्त्यप्रविष्टः यत् यत चोरायितुं चिंतयामि तत्तत् चोरितात् दुरितदरितस्त्यजन् तिष्ठामि तावदेव प्रभुणा पादोनपद्यं पठितं चतुर्थचरणं चिरयंतं चिन्तयित्वा चतुर्थं कथितवान् ततः सदयेन स्वामिना दत्वा अभयमभयमाकारित आगत इति प्रसन्नेन भोजेन भणितं अस्मात् कालात् यदि पुनरपि द्यूतकारी चोरितचारी भविष्यति भवान् तत उज्झितासुं करिष्यामीति कथयित्वा हारितधनं प्रसादलक्षं च प्रत्यर्प्य प्रेषितः पथाय इति श्रुत्वा सर्वेण शिक्षितं मारितव्यस्यापि महामहेन्द्रेण दीयते द्रव्यं इति ततः

रज से प्रभु के खजाने में घुसा था सो जिस जिस वस्तु को चोरना चाहता हूं उसीके चुराने से पाप होने का भय होता है, तभी चोरी करने से रुकजाता हूं इतने ही में स्वामी ने पौणा श्लोक कहा और चौथा चरण बोलने में देर हुई तब विचारकर चौथा चरण मैंने कहा तब दयालु स्वामी ने अभयदान देकर बुलाया सो मैं आगया. भोज ने प्रसन्न होकर कहा अब से पीछे जो फिर भी तू जुआ खेलेगा या चोरी करेगा तो तेरा बध कराऊंगा ऐसा कहकर उसने जो जुए में हारा था सो और १ लक्ष इनाम के देकर अपने रस्ते भेज दिया इस बात को सुनकर सब ने समझा कि राजा

अत्थि॥१॥" इअ सुणिअ पज्जरिअं पहुणा तं को सि त्ति तेणं च अहयं जइ देहि अहयं अक्खेमि णिवेण च आगच्छ अहयं ते त्ति पयडिओ पडिरोहओ पि सुणिअ देव हंदि हंदि अउत्तो जूअहारिअसव्वसो रित्थत्थी पहुरित्थपत्थपइट्ठो जं जं चोरिउं चिंतेमि तं तं चोरिआदुरिअदरिओ चयंतो चिट्ठेमि ता ताहे पहुणा पाओणपज्जं पडिअं चउत्थ ४ चरणं चिरअंतं चिंतिअ चोत्थं ४ चवीअ तओ सदएण सामिणा देऊण अहयं अहयं आकारिओ आगओ त्ति पयंपणापसन्नेण भोएण भणिअं इमत्तो वेलत्तो जइ पुणो वि जूअआरी२ चोरिअचारी२ भविस्सइ भवंतो तत्तो उज्झिअअसुं करिस्सं त्ति कहिअ हारिअहणं१ पसायलक्खं१ ००००० २ च पच्चप्पीअ पेसिओ पहाए त्ति सुणिअ सइवेण सीसिअं मारिअव्वस्स वि महामहिंदेण दिज्जइ दव्वं ति तओ सामिणा सा-

---

न किंचिदप्यस्ति" इति श्रुत्वा कथितं प्रभुणा त्वं कोसीति तेन च कथितं यदि ददासि अभयमाख्यामि नृपेण च आगच्छ अभयं ते इति प्रकटितः प्रतिरोधकोपि श्रुत्वा देव हंत हंत अयुक्तः द्यूतहारितसर्वस्वः रिक्थार्थी प्रभुरिक्थपस्त्यप्रविष्टः यत् यत् चोरयितुं चिंतयामि तत्तत् चोरितात् दुरितदरितस्त्यजन् तिष्ठामि तावदेव प्रभुणा पादोनपद्यं पठितं चतुर्थचरणं चिरयंतं चिन्तयित्वा चतुर्थं कथितवान् ततः सदयेन स्वामिना दत्वा अभयमभयमाकारित आगत इति प्रसन्नेन भोजेन भणितं अस्मात् कालात् यदि पुनरपि द्यूतकारी चोरितचारी भविष्यति भवान् तत उज्झितासुं करिष्यामीति कथयित्वा हारितधनं प्रसादलक्षं च प्रत्यर्प्य प्रेषितः पथाय इति श्रुत्वा सर्वेण शिक्षितं मारितव्यस्यापि महामहेन्द्रेण दीयते द्रव्यं इति ततः

रज से प्रभु के खजाने में घुसा था सो जिस जिस वस्तु को चोरना चाहता हूं उसीके चुराने से पाप होने का भय होता है, तभी चोरी करने से रुक जाता हूं इतने ही में स्वामी ने पौणा श्लोक कहा और चौथा चरण बोलने में देर हुई तब विचारकर चौथा चरण मैंने कहा तब दयालु स्वामी ने अभयदान देकर बुलाया सो मैं आगया. भोज ने प्रसन्न होकर कहा अब से पीछे जो फिर भी तू जुआ खेलेगा या चोरी करेगा तो तेरा बध कराऊंगा ऐसा कहकर उसने जो जुए में हारा था सो और १ लक्ष इनाम के देकर अपने रस्ते भेज दिया इस बात को सुनकर सब ने समझा कि राजा

तद्दुहित्रर्थभानुमत्याभरणाराणा ११ तत्स्नुषार्थलीलावतीभूषणा-समुत्सर्जन १२ तदनन्तरैकस्वर्णकारार्थतदानीतपद्मरागजटित-जात्यकनककलशमल्यर्पणा १३ मृगयारममाणव्यापादितवराहदिङ्मूढनृपक्षेत्रपालबालिकापथ्याप्रच्छन १४ तन्नृपकीर्तिकलित-काव्यप्रत्युत्तरपुरपदवीपरिचायन १५ तत्तुष्टधारेश्वरतदर्थलक्ष १०००० मुद्राविश्राणन १६ मार्गमिलितकलितकलमकाव्य विप्रवटुकार्थसमर्पितसर्वालङ्करणपार्थिवप्राक्पत्तनागमन १७ चिरसमागततद्विप्रवटुकार्थभूयोभूषणसमर्पणा १८ खनिलब्धनिधानकलशकवयत्कुलालार्थतन्निधिनिपप्रतिवितरणा १९ रात्रिसमयपुरपर्यटत्प्राप्तमलयसिंह १ तत्पत्नी २ विजय ३ शीलसन्देहप्रत्यागतव्यतीतविभावरीकपार्थिवप्राप्ततत्त्रया ३ कारणा २० रहःकारितदिव्यत्रय ३ ज्ञातशुद्धशीलतत्पादपतितनृपतत्त्रिका ३ र्थग्रामविशती ३०० ढौकन २१ तदनन्तरैककव्यर्थदत्तलक्षमृगव्यरसरक्तनष्टघोणिाकश्रमश्रान्तनृपशाखिशैत्यशयन २२ प्रत्यागतपार्तनिकज्ञाताऽप्राप्तप्रभुप्रेक्षणार्थपुनःप्रतिपथप्रसरणा २३

को सात हाथी देना, उसीकी बेटी को भानुमती के गहने देना, उसके बेटे की बहू को लीलावती के गहने देना, उसके अनंतर एक सोनार को उसके लायेहुए माणिक से जड़ेहुए सुवर्ण कलश का पीछा देना, शिकार खेलतेहुए सूकर को मारनेवाले दिशा भूलनेवाले राजा भोज का खेत की रक्षक स्त्री को मार्ग पूछना, उस (भोज) राजा की कीर्ति से युक्त काव्य से प्रत्युत्तर देने में पुर का मार्ग बतलाना, उससे प्रसन्न हुए भोज का उसको लाख मुद्रा देना, मार्ग में मिलेहुए कलम का काव्य बनानेवाले ब्राह्मण बालक को सब गहने देकर राजा का उससे पहिले नगर में आना, देरी से आये हुए उस ब्राह्मण बालक को फिर गहने देना, खोदते मिलेहुए खजाने का कलश लाकर कविता करनेवाले कुम्हार को वह निधान का घड़ा पीछा देना, रात्रि के समय नगर में घूमते मिलेहुए मलयसिंह १ उसकी स्त्री और विजय के शील में संदेह आने से पीछा आ रात्रि को व्यतीत कर राजा का उन तीनों को बुलाना, एकांत में कराईहुई तीन दिव्य परीक्षाओं से जिनका शुद्ध शील जानलिया है ऐसे उन तीनों के पैरों में पड़कर राजा का उन तीनों के लिये तीन सौ ३०० गांव देना, उसपीछे एक कवि को लक्ष देकर

तद्दुहित्रर्थभानुमत्याभरणाराणा ११ तत्स्नुषार्थलीलावतीभूषणा-समुत्सर्जन १२ तदनन्तरैकस्वर्णकारार्थतदानीतपद्मरागजटित-जात्यकनककलशप्रत्यर्पणा१३मृगयारममाणाव्यापादितवराहदि-ङ्मूढनृपक्षेत्रपालबालिकापद्याप्टच्छन १४ तन्नृपकीर्तिकलित-काव्यप्रत्युत्तरपुरपदवीपरिचायन १५ तत्तुष्टधारेश्वरतदर्थलक्ष १०००००मुद्राविश्राणान १६ मार्गमिलितकलितकलमकाव्य विप्रवटुकार्थसमर्पितसर्वालङ्करणपार्थिवप्राक्पत्तनागमन १७ चिरसमागततद्विप्रवटुकार्थभूयोभूषणसमर्पणा१८खनिलब्धनिधा-नकलशकवयत्कुलालार्थतन्निधिनिपप्रतिवितरणा १९रात्रिसम-यपुरपर्यटत्प्राप्तमलयसिंह १ तत्पत्नी २ विजय ३ शीलसन्देह-प्रत्यागतव्यतीतविभावरीकपार्थिवप्राप्ततत्त्रया ३ कारणा २० रहःकारितदिव्यत्रय ३ ज्ञातशुद्धशीलतत्पादपतितनृपतत्त्रिका ३ र्थग्रामत्रिशती ३०० ढौकन २१ तदनन्तरैककव्यर्थदत्तलक्षमृ-गव्यरससरक्तनष्टघोणिकश्रमश्रान्तनृपशाखिशैत्यशयन २२ प्रत्या गतपार्तनिकज्ञाताऽप्राप्तप्रभुप्रेक्षणार्थपुनःप्रतिपथप्रसरणा २३

को सात हाथी देना, उसीकी बेटी को भानुमती के गहने देना, उसके बेटे की बहू को लीलावती के गहने देना, उसके अनंतर एक सोनार को उसके लायेहुए माणिक से जड़ेहुए सुवर्ण कलश का पीछा देना, शिकार खेलतेहुए सूकर को मारनेवाले दिशा भूलनेवाले राजा भोज का खेत की रक्षक स्त्री को मार्ग पूछना, उस (भोज) राजा की कीर्ति से युक्त काव्य से प्रत्युत्तर देने में पुर का मार्ग बतलाना, उससे प्रसन्न हुए भोज का उसको लाख मुद्रा देना, मार्ग में मिलेहुए कलम का काव्य बनानेवाले ब्राह्मण बालक को सब गहने देकर राजा का उससे पहिले नगर में आना, देरी से आये हुए उस ब्राह्मण बालक को फिर गहने देना, खोदते मिलेहुए खजाने का कलश लाकर कविता करनेवाले कुम्हार को वह निधान का घड़ा पीछा देना, रात्रि के समय नगर में घूमते मिलेहुए मलयसिंह १ उसकी स्त्री और विजय के शील में संदेह आने से पीछा आ रात्रि को व्यतीत कर राजा का उन तीनों को बुलाना, एकांत में कराईहुई तीन दिव्य परीक्षाओं से जिनका शुद्ध शील जानलिया है ऐसे उन तीनों के पैरों में पड़कर राजा का उन तीनों के लिये तीन सौ ३०० गांव देना, उसपीछे एक कवि को लक्ष देकर

धानपात्रसम्प्रदानत्वप्रतिशिक्षणं ३२ पञ्चाविंशो २५ मयूखः ॥ २५ ॥

आदितश्चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३४ ॥

(प्राकृतभाषा)

(अचरणगद्यम्)

एक्कसिअं आहेडरसिओ अरण्णे णिवुद्देसागएण धनवालकइ-णा परिचेऊण मग्गमिलिओ भोअभूवालो भणिओ पज्जेण तं जहा-"रिउणो न हणिज्जंति, दट्ठदंतग्गकत्तणा । सइसुद्धतणाहा-रा, मारिज्जंति कहं पसू॥१॥" इअ सोऊण कइत्तणपवीणं णा-ऊण णिवेण पुच्छिअदेसजाइणामेण पिसुणिअं पज्ज-द्धेण तं जहा, "उड्डेंति खं मयगणा कह कोत्थ

एकदा मृगयाखेटरसिकः अरण्ये नृपोद्देशागतेन धनपालकविना परिचित्य मा-र्गमिलितो भोज भूपालो भणितं पद्येन तद्यथा "रिपवो न हन्यन्ते दष्टदंताग्र-कतृणाः स्वविशुद्धतृणाहारा मार्यन्ते कथं पशवः॥" इति श्रुत्वा कवित्वप्रवीणं ज्ञात्वा नृपेण पृष्टदेशजातिनाम्ना पिशुनितं पद्यार्द्धेन तद्यथा "उड्डीयन्ते खं मृगगणाः कथय कोत्र हेतुः कोला विकारणमहो किमिला खनन्ति" तदपि श्रु-त्वा धनपाल उत्तरार्द्धमपि श्रूयतामिति जातिप्रधानं निजमिति तवास्त्रभी-

कहना, उस चोर को जुए में हाराहुआ धन और लक्ष रुपये इनाम देना, रा-जा का मनाकियेहुए उसके दान के प्रधान पात्र को संप्रदान सिखाने का बत्ती-सवां मयूख समाप्त हुआ ॥३२॥ और आदि से एक सौ चौंतीस मयूख हुए ॥१३४॥

एक वार शिकार के शौक से वन में गयेहुए राजा को राजा से मिलने को आये हुए धनपाल कवि ने पहचान कर रस्ते में ही यह श्लोक सुनाया "आ-पदांतों में तृण लेकर आयेहुए शत्रुओं को इसलिये नहीं मारते हो कि के-वल तृण खानेवाले पशुओं को कैसे मारें" यह सुनकर राजा ने अच्छा कवि समझ कर देश और जाति पूछ कर उससे यह आधा श्लोक कहा "आका-श की तर्फ मृग किसकारण उडते हैं और व्यर्थ भूमि को सूकर क्यों खो-दते हैं" इसको सुनकर धनपाल ने कहा उत्तरार्द्ध भी सुनलीजिये "मृग तो तुम्हारे शस्त्रों से डर कर अपनी जाति में मुख्य के पास जाना चाहते हैं, अर्थात् चंद्रमा के गोद में मृग है उसके पास जाने को उछलते हैं और स्व वराह आदि वराह (भगवान् के वराह अवतार) के पास जाने को पृथ्वी

धानपात्रसम्प्रदानत्वप्रतिशिक्षणं ३२ पञ्चाविंशो २५ मयूखः
॥ २५ ॥

आदितश्चतुस्त्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३४ ॥

(प्राकृतभाषा)

(अचरणगद्यम्)

एक्कसिअं आहेडरसिओ अरएणे णिवुद्देसागएण धनवालकइ-
णा परिचेऊण मग्गमिलिओ भोअभूवालो भणिओ पज्जेण तं जहा-
"रिउणो न हणिज्जंति, दट्ठदंतग्गकत्तणा । सइसुद्धतणाहा-
रा, मारिज्जंति कहं पसू॥१॥" इअ सोऊण कइत्तणपवीणं णा-
ऊण णिवेण पुच्छिअदेसजाइणामेण पिसुणिअं पज्ज-
द्धेण तं जहा, "उड्डेंति खं मयगणा कह कोत्थ

एकदा मृगयाखेटरसिकः अरण्ये नृपोद्देशागतेन धनपालकविना परिचित्य मा-
र्गमिलितो भोज भूपालो भणितं पद्येन तद्यथा "रिपवो न हन्यन्ते दष्टदंताग्र-
कतृणाः स्वविशुद्धतृणाहारा मार्यन्ते कथं पशवः" इति श्रुत्वा कवित्वप्रवीणं
ज्ञात्वा नृपेण पृष्टदेशजातिनाम्ना पिशुनितं पद्यार्द्धेन तद्यथा "उड्डीयन्ते खं
मृगगणाः कथय कोत्र हेतुः कोला विकारणमहो किमिलां खनन्ति" तदपि श्रु-
त्वा धनपाल उत्तरार्द्धमपि श्रूयतामिति जातिप्रधानं निजमिति तवास्त्रभी-

कहना, उस चोर को जुए में हाराहुआ धन और लक्ष रुपये इनाम देना, रा-
जा का मनाकियेहुए उसके दान के प्रधान पात्र को संप्रदान सिखाने का बत्ती-
सवां मयूख समाप्त हुआ ॥३२॥ और आदि से एक सौ चौंतीस मयूख हुए।१३४।
एक वार शिकार के शौक से वन में गयेहुए राजा को राजा से मिलने को
आये हुए धनपाल कवि ने पहचान कर रस्ते में ही यह श्लोक सुनाया "अा-
पदांतों में तृण लेकर आयेहुए शत्रुओं को इसलिये नहीं मारते हो कि के-
वल तृण खानेवाले पशुओं को कैसे मारें" यह सुनकर राजा ने अच्छा कवि
समझ कर देश और जाति पूछ कर उससे यह आधा श्लोक कहा "आका-
श की तर्फ मृग किसकारण उडते हैं और व्यर्थ भूमि को सूकर क्यों खो-
दते हैं" इसको सुनकर धनपाल ने कहा उत्तरार्द्ध भी सुनलीजिये "मृग तो
तुम्हारे शस्त्रों से डर कर अपनी जाति में मुख्य के पास जाना चाहते हैं,
अर्थात् चंद्रमा के गोद में मृग है उसके पास जाने को उछलते हैं और
रव वराह आदि वराह (भगवान् के वराह अवतार) के पास जाने को पृथ्वी

देव तवकालधवच्छाहिं विव वसणं वसाणो वारोवेसिओ आजा णआएसं इच्छइ त्ति जाणिअ जयईजारेण वि जंपिअं पविसा-वसु तं तओ वेत्तिणा वि अत्थाए आणिओ खे मंडिअमहप्पमेहं वणिणउं बोल्लिओ दुग्गयदियो वि तोअयतायप्पेण वज्जरंतं विहुं वत्तेण वराणइ तं जहा "सालेएसु सिलायलेसु अचलाभो एषु गड्डेसु दे, सीखंडे सु वहेडएसु अ तहा रित्तेसु पुराणेसु वि। वासं वारिअसव्वसम्म वरिसिंतेणं तए णज्जए णायं अंघइसव्वभोम णणु ते वीसोवआरिव्वयम्॥१॥"इअ पज्जपसन्नेण पहुणा पामार-पदीवेण तस्स वि पच्चक्खरलक्खमप्पिअम् ॥ ३ ॥

एक्कसि अद्धरत्तीए अप्पणो अहिट्ठाणे अट्टमाणो कस्स वि दुग्गयदियस्स दारम्मि दिट्ठदासू पासट्ठिओ पच्छन्नं पिक्खइ परक्ख-

---

यामिव वसनं वसानो द्वारोपवेशितःआज्ञापनादेशं इच्छतीति ज्ञात्वा जगतीजारेणापि जल्पितं प्रवेशय तं ततो वेत्रिणापि आस्थाने आनीतः खे मंडित-माहात्म्यमेघं वर्णयितुं कथितः दुर्गतद्विजोपि तोयदतात्पर्येण कथयंतं विभुं वृत्तेन वर्णयति तद्यथा"शालेयेषु शिलातलेषु अचलाभोगेषु गर्त्तेषु तंश्रीखंडेषु विभीतकेषु च तथा रिक्तेषु पूर्णेष्वपि। वर्षं वारिदसर्वसाम्यं वर्षता त्वया नद्यते ज्ञातं अंहतिसार्वभौम ननु ते विश्वोपकारि व्रतम्"इति पद्यप्रसन्नेन प्रभुणा प्रामारप्रदीपेन तस्मै अपि प्रत्यक्षरं लक्षमर्पितम् ॥ ३ ॥

एकदा अर्द्धरात्रौ आत्मनो अधिष्ठाने अटन् कस्यापि दुर्गतद्विजस्य द्वारे दृष्टदस्युः पार्श्वस्थितः प्रच्छन्नं प्रेक्षते परास्कन्दिप्रवृत्तिं तदा प्रवुद्धा तद्ब्राह्मणव-

---

ने अर्ज करी कि गर्मी की मौसम के धौ वृक्ष के समान मैले वस्त्र पहने कोई कवि ड्योढी पर बैठाहुआ आने को परवानगी चाहता है यह सुनकर राजा ने कहा'भीतर ले आ' तब द्वारपाल महल में लाया और राजा ने आकाश में शोभित मेघ का वर्णन करने को कहा तब कवि ने मेघ के तात्पर्य से कहनेवाले राजा का इस श्लोक से वर्णन किया जिसका आशय यह था कि "धान के खेतों में,शिलाओं पर,पर्वतों पर,गढों में,चंदनों पर,बहेडों पर और सब रीते और भरेहुओं में समानभाव से वर्षा करताहुआ तू गरजता है सो दान करने में सबसे बडा जो तू है तेरा संसारोपकारक व्रत जान लिया इस श्लोक से प्रसन्न होकर प्रमारकुलदीपक राजा भोज ने उसको भी प्रत्येक अक्षर का एक २ लक्ष दिया ॥ ३ ॥ एक वार आधी रात के समय अपनी

न्दिपउत्ति ता पबुद्धा तव्वम्हणवहू पुढवीपिट्ठे पलालपत्थरपसुत्तं पइं पज्जेण पज्जरीअ तंजहा, "वातुं गिरहसु जुरणनत्तयमिणं वं- के बुहुक्खुं सिसुं, पत्थरिण पलालकुट्टिमकलासेज्जाइ सोवावसु॥ सोऊणं इअ दम्पईण वयणं अन्नप्पलद्धं तओ, सव्वं सोल्लिअ त- क्खरो वि तइआ गेहं रुअन्तो गओ॥१॥" इअ दुक्खदुहिअस्स गेहं गच्छमाणस्स चोरस्स महासंतावसूसिअमणस्स चित्ते चिंतं चिंति- ऊण सामिणा वि सहगंतूण घेत्तूण करं कहिअ महयं पि मलि- म्मुओ कया वि पहुपसाएण पत्तक्कडओ तुं दयालुं रोविअ दु- ग्गयदलिद्ददिओवरि सोल्लिअसव्वासं मुणिअ मिलिओ अप्पेमि इणं आवावं तं मं किंकरीकाऊण गेरहसु त्ति देऊण पलोट्टंते प-

धूः पृथिवीपृष्ठे पलालप्रस्तरप्रसुप्तं पतिं पद्येन कथितवती तद्यथा पातु गृहाणेदं जीर्णनक्तकमिमं स्वांके बुभुक्षुं शिशुं प्रस्तारेण पलालकुट्टिमकलाशय्यायां स्वापय॥श्रुत्वा इति दंपत्योः वचनं अन्यप्रलब्धं ततो सर्वं प्रक्षिप्य तस्करोपि तस्या गेहं रुदन् गतः॥१॥"इति दुःखदुःखितस्य गेहं गच्छतः चोरस्य महासंताप- शुष्कमनसः चित्ते चिंतां चिन्तयित्वा स्वामिनापि सह गत्वा गृहीत्वा क- रं कथितं अहमपि मलिम्लुचः कदापि प्रभुप्रसादेन प्राप्तकटकः त्वां दया- लुं रोदितदुर्गतदरिद्रद्विजोपरि प्रक्षिप्तसर्वस्वं ज्ञात्वा मिलितः अर्पयामि इदं आवापं तन्मां किंकरीकृत्य गृहाणेति दत्त्वा प्रत्यावृत्ते प्रभौ प्रत्यावृत्य

राजधानी में फिरतेहुए राजा भोज किसी दरिद्र मनुष्य के दरवाजे पर एक चोर को देखकर बगल की तर्फ खडे रहकर गुप्त रूप से उस चोर की चेष्टा को देखनेलगे इतने ही में ब्राह्मण की स्त्री ने जागकर जमीन पर पराल बि- छाकर सोयेहुए पति से श्लोक में कहा उसका आशय यह था कि "जीर्ण चि- थड़ेवाले भूखे बालक को रक्षा के वास्ते अपने पास लो और पराल के बि- छौने पर सुआ लो" स्त्रीपुरुषों की इसप्रकार बातचीत सुनकर चोर भी और कहींसे चुराकर जो लाया था सो वहां छोडकर रोताहुआ उसके घर से चला- गया इसप्रकार दारिद्र्य से दुःखित ब्राह्मण के घर में जाने से परम कष्ट से दुःखितचित्त चोर के चित्त का भाव विचारकर राजा उसके साथ होलिये और उसका हाथ पकड़कर बोले कि मैं भी चोर हूं किसी समय स्वामी की कृपा से एक कड़ा पाया था सो तुमको, दयालु और दरिद्र और दुःखित दी- न के रोने से दयाकर उसके यहां सब कुछ दे आये जानकर तुम्हारे पास आया हूं और यह कड़ा देता हूं इससे कृपाकर ग्रहण करो इसप्रकार कड़ा

हुम्मि पलोट्टिश्र दासू वि दयालू तं चेश्र कडश्रं पि तस्स चिश्र दिश्रस्स दत्तवंतो त्ति मलिम्मुश्राण मवि श्रहो परदुक्खकायरत्तणं ४

तश्रो पहाए सो च्चिश्र दलिद्ददिश्रो सामिणा समाकारिश्रो तव्वलयव्वएण महग्घवसण१भूसण२भूसिश्रो दिट्ठो पुट्ठो श्र पहुणा श्रहो विप्प भो रत्तीए तारिसदालिद्ददुक्खिश्रो तुमं पत्थरत्थं पलालपूलं पि पिहुलं न पावीश्र गोसम्मि गेहाउ श्रागश्रो एरिसाइं विभूसण१वसणा२इँ वसाणो त्ति कत्तो लद्धाइँ तए दुग्गयदिएण इश्र सोऊण वलयवयन्नवट्टं विप्पेण वि पज्जेण पज्जरिश्रं महामेहरूवएण तं जहा, 'भेएहिं१ जह मच्छ२कच्छव३कुलीरे४हिं पि सुक्कं सरे, चिक्खिल्ले वि गए तवंतसमए मेहेण जं चेट्ठिश्रं॥ तो ताहे च्चिश्र तत्थ कुञ्जरकुलं कुम्भग्गकल्लोलियं, कीलन्तं परिपिज्जइ त्ति पहु-

---

दस्युरपि दयालुस्तमेव कटकमपि तस्मै एव द्विजाय दत्तवान्.इति मलिम्लुचानामपि अहो परदुःखकातरत्वम् ॥ ४॥

ततः प्रभाते स एव दरिद्रद्विजः स्वामिना समाकारितः तद्वलयव्ययेन महार्घवसनभूषणभूषितो दृष्टः पृष्टश्च प्रभुणा अहो विप्र त्वं रात्रौ तादृशदारिद्र्यदुःखितः त्वं प्रस्तरस्थं पलालपूलं अपि पृथुलं न प्राप्तवान् गोसे गृहात् आगत ईदृशानि विभूषणवसनानि वसान इति कुतो लब्धानि त्वया दुर्गत द्विजेन इति श्रुत्वा वलयवदान्यवृत्तं विप्रेणापि पद्येन कथितं महामेघरूपकेण तद्यथा "भेकैः यत्र मत्स्यकच्छपकुलीरैः अपि शुष्कं सरसि चिकिले गते तावति समये मेघेन यच्चेष्टितं। तत्रैव तत्स्थकुंजरकुलं कुम्भाग्रकल्लोलितं क्रीड-

---

देकर राजा लौट आये तब दयावाले चोर ने भी पीछा जाकर वह कड़ा भी उसी दीन ब्राह्मण को देदिया. देखो चोर भी दूसरे के दुःख से कातर होते हैं यह आश्चर्य है ॥४॥ तदनंतर सवेरे ही दरिद्र ब्राह्मण को राजा ने बुलाया तब आया और उसी कड़े को बेचकर खरीदेहुए बहुमूल्य वस्त्र भूषण पहनेहुए देखकर राजा ने पूछा हे ब्राह्मण रात्रि में तो तू ऐसा कंगाल था कि पूरा पराल भी बिछाने को नहीं था और सवेरे घर से ऐसे गहने और वस्त्र धारण करके आया है सो तुझ दरिद्र को ये कहांसे मिले तब कड़ा देने की उदारता का वृत्तांत ब्राह्मण ने महामेघ का रूपक बनाकर इस श्लोक से कहा जिसका अर्थ यह था कि" जिस तालाव को कीच तक सूख जाने से मैंडक मच्छ कछुए और केंकड़े छोडकर चलगये थे उसी मेघ ने ऐसी कृपा करी कि हाथियों का यूथ कुंभ से कलोल करता हुआ उसीमें जल पीता

णा जं पुच्छिअं, जम्पिअम्॥१॥"इअ सुणिअ पुणो वि पच्चक्ख-रलक्खं समप्पीअ तस्स णिवो तंच तक्खरं आकारिअ काईअ म-हद्धं मालअमहीमिहिरो त्ति अहो उआरत्तणं भोअभूवइणो ॥५॥

अन्नया केण वि महादलिद्देण विराहुणामकइणा समागमिअ सहाए सीसिओ सिलोओ सो जहा, "रे धारेस धरेसधुज्जगणणो लेत्तुं खडीखण्डयं, तो पुव्वं पउमासणेण लिहिआ तन्नामलेहा णहे॥ सा होहीअ सुरावया पुण तओ तुम्हारिसाभावओ, चत्तं चारु हुवीअ हो हरवहूताओ तुसारायलो॥१॥"इअ सिलोअं सोऊण सोमणा हसुकइणा सीसिअं सलाहणिज्जं सुकइस्स कव्वं परमिमेण दा-लिद्ददुहिएण कया वि कुह वि न हि रायसहा समिक्खिआ अत्तो गामि ल्लगोट्ठीगरिट्ठे रे त्ति संबोहणं ति सामिणा वि सुणिअ साहिओ सोम-

---

न् परिपिपति इति प्रभुणा यत्पृष्टं तज्जल्पितम्" इति श्रुत्वा पुनरपि प्रत्यक्ष-रलक्षं समर्प्य तस्य नृपः तं च तस्करं आकार्य कृतवान् महर्द्धि मालवमही-मिहिर इति अहो उदारत्वं भोजभूपतेः ॥ ५ ॥

अन्यदा केनापि महादरिद्रेण विष्णुकविना समागत्य सभायां कथितः श्लोकः स यथा 'रे धारेश धरेशधुर्यगणने गृहीत्वा खटीखंडकं तत्पूर्वं पद्मासनेन लि-खिता त्वन्नामलेखा नभसि । सा भूता सुरापगा पुनः ततः त्वादृशाभावतः त्यक्तं चारु बभूव भो हरवधूतातस्तुषाराचलः ॥ १ ॥' इति श्लोकं श्रुत्वा सोमनाथसुकविना कथितं श्लाघनीयं सुकवेः काव्यं परं त्वनेन दारिद्र्यदुःखितेन कदापि कुत्रापि न हि राजसभा समीक्षिता, अतो ग्रामीणगोष्ठीगरिष्ठं रे इति संबोधनं इति स्वामिनापि श्रुत्वा कथितः सोम-

---

है स्वामी ने जो पूछा सो कहा" इसको सुनकर फिर प्रत्येक अक्षर का एक२ लक्ष देकर उस चोर को बुलाकर मालव देश के सूर्यरूप राजा भोज ने ब-हुतसा धन दिया. भोज राजा की उदारता कैसी आश्चर्य रूप थी ॥ ५ ॥

एक वार एक महादरिद्र विष्णु नाम कवि ने सभा में आकर यह श्लोक सु-नाया अर्थात् "रे धारेश पद्मासन ब्रह्मा ने पहले समय में राजाओं में मु-ख्यों की गणना करने को खड़िया लेकर आकाश में तुम्हारे नाम की रेखा लिखी वह आकाशगंगा हुई फिर तुम्हारे समान दूसरा राजा न होने से वह खड़िया गेर दी सो पार्वती का पिता सुंदर हिमालय पर्वत हुआ,, इ-स श्लोक को सुनकर सोमनाथ कवि ने कहा कि कवि की कविता तो प्रशं-

णाहो सिलोएण सो जहा, "अणवज्जं सुपज्जं किं, कलाकुच्छं करिज्जए। भिक्खुहत्थे अहो उच्छू, कया वि कडुओ कहम्॥१।" इअ सीसिअ सामिणा संते वि साहिअ मस्स कइस्स सं सो समप्पइस्सं ति संठावीअ समज्जा समाविआ तओ नीसरंता बाणाइणा विण्हुकइं जाणावीअ जहा सोमणाहसूइअसण्णाए सामिणा सुकइस्स पसाएण पोप्फलं पि पच्चप्पिअं ण हि त्ति हाहा खलखलत्तणम् ॥ ६ ॥

सो वि सोऊण संसयणं समागओ तओ निम्माणिअ नवपज्जपत्तं सोमनाहपंडिअपत्थे पठाविअं तम्मि जं लिहिअं तेण वि पढिअं तं ति, 'एएसु तिन्दुतरुभाभरिएसु भो भो, दावानलेण दलिएसु दुमेसु दुट्ठ" अव्वो न पेल्लसि पओहर पाणिअं तो, मा पेल्ल

नाथः श्लोकेन स यथा "अनवद्यं सुपद्यं किं कलाकुत्सां कार्यते। भिक्षुहस्ते अहो इक्षुः कदापि कटुकः कथम्" इति कथयित्वा स्वामिना स्वान्तेऽपि कथितम्। अमुष्मै कवये स्वं श्वः समर्पयिष्यामि इति संस्थाप्य समज्या समापिता ततो निस्सरन्तो बाणादयो विष्णुकविं ज्ञापितवन्तः यथा सोमनाथसूचितसंज्ञया स्वामिना सुकवये प्रसादेन पूगफलमपि प्रत्यर्पितं नहीति हा हा खलखलत्वम् ॥ ६ ॥

सोऽपि श्रुत्वा संश्रयणं समागतः ततः निर्माप्य नवपद्यपत्रं सोमनाथपंडितपार्श्वे प्रस्थापितं तस्मिन् यल्लिखितं तेनापि पठितं तदिति "एतेषु तिन्दुतरुभा

सनाथ है परंतु इसने दरिद्रता के कारण कभी कहीं राजसभा नहीं देखी इसकारण गंवारों की गोष्ठी में कहने योग्य रे यह संबोधन किया. राजा ने भी सुनकर सोमनाथ से यह श्लोक कहा अर्थात् "उत्तम श्लोक की चतुराई की निंदा क्यों करते हो? भिक्षु के हाथ में भी गन्ना हो तो वह कडुआ कैसे होगा? "इसप्रकार कहकर राजा ने मन में कहा कि इस कवि को सवेरे धन दूंगा ऐसा निश्चय करके सभा समाप्त करी तब वहांसे निकलते बाणादि कवियों ने विष्णु कवि से कहा कि सोमनाथ के चुगली खाने से उत्तम कवि जो तुम हो तुमको राजा ने प्रसन्न होकर सुपारी भी नहीं दी देखो दुष्ट की दुष्टता को ॥ ६ ॥ यह विष्णु कवि, बाणादि कथित वार्ता को सुनकर अपने डेरे आया और एक नवीन श्लोक बनाकर पत्र में लिखकर सोमनाथ पंडित के पास भेजा उसमें जो लिखा था सो उसने पढा उसका तात्पर्य यह था कि "हे मेघ इस तिंदुक वृक्ष की गर्मी से भरेहुए और वनाग्नि से जलेहुए वृक्षों पर जल नहीं बरसावे तो भले ही मत बरसा परंतु

पेल्लसि पुणो कह विज्जुलिं तम्॥१॥"इअ सिलोअं सुणिऊण सोमनाहेण णिअणिहिलमणि१कयण२भूसण३वसण४हय५गय६ पमुहं सव्वं पि सईअं सजायं समप्पिअं विगहुकइस्स सो सो च्चिअ एरिससंपत्तिसमद्धो घरुद्देसेण धाराए नयरीए निक्खसंतो विगहू कयाहेडकीलणेण पच्चागएण पामारपहुणा वि पेक्खिओ पुच्छिओ अ कहसु सुकइसिरमणो मए तव भोअणमित्तं पि न दत्तं तह वि हु तव कत्तो पत्ता एरिससंपत्ति त्ति सुणिअ सीसिअं सुकइणा वि सामिअस्स सब्भसूरिणा सोमणाहेण सव्वा संपि मम समप्पिअं तत्तो एरिसीए इद्धीए अलंकयो गच्छेमि गेहं इअ आकणिणअ इलाईसेण तस्स भो पढिअपज्जस्स पच्चक्खरलक्खं पच्चप्पिअ पट्ठाविओ पत्थं सयं पि संसउहं समागमिअ सोमणाहं

भरितेषु भो भो दावानलेन दलितेषु द्रुमेषु दुष्ट हंत न प्रेरयसि पयोधर पानीयं तस्मा प्रेरयसि पुनः कथमपि विद्युतं ताम्" इति श्लोकं श्रुत्वा सोमनाथेन निजनिखिलमणिकनकभूषणवसनहयगजप्रमुखं सर्वमपि स्वकीयांशजातं समर्पितं विष्णुकवये; सः स एव ईदृशसंपत्तिसमृद्धः गृहोद्देशेन धारायां नगर्यां निस्सरन् विष्णुः कृताखेटक्रीडनेन प्रत्यागतेन ग्रामारप्रभुणापि प्रेक्षितः पृष्टश्च कथय सुकविशिरोमणे मया तुभ्यं भोजनमात्रमपि न दत्तं तथापि अहो तव कुतः प्राप्ता ईदृशी संपदिति श्रुत्वा कथितं सुकविनापि स्वामिनः सभ्यसूरिणा सोमनाथेन सर्वा संपत् मह्यं समर्पिता तत ईदृश्या ऋद्ध्या अलंकृतो गच्छामि गेहमिति आकर्ण्य इलेशेन तस्मै ह्यः पठितपद्यस्य प्रत्यक्षरलक्षं प्रत्यर्प्य प्रस्थापितः पश्चात् स्वयमपि संसन्मुखं समागत्य सोमनाथं समा-

दुष्ट इन पर बिजली भी क्या गिराता है,, इस श्लोक को पढ़कर सोमनाथ कवि ने अपने संपूर्ण मणि सुवर्ण के भूषण वस्त्र घोड़े हाथी आदि जो कुछ अपना था सो सब विष्णु कवि के पास भेजदिया और वह विष्णु कवि ऐसी संपत्ती लेकर अपने घर जाने के लिये धारा नगरी से जाताहुआ शिकार करके पीछे आतेहुए राजा भोज से देखागया और पूछा कि हे सुकवे मैंने तो तेरेको भोजन मात्र भी नहीं दिया तौभी तेरे पास ऐसी सम्पत्ति कहांसे आगई? यह सुनकर कवि ने कहा कि आपकी सभा के पंडित सोमनाथ ने अपनी सब संपत्ति मेरे समर्पण कर दी; सो ऐसी समृद्धि लेकर अब अपने घर जाता हूं यह सुनकर राजा ने पहले दिन सुनाये हुए श्लोक के प्रत्येक अक्षर का लक्ष प्रदान करके विदा किया और आप स-

समाकारिअ तेण वि जं जं विराहुस्स वितरिअं तं तं सव्वं पि तस्स दत्तवंतो त्ति अहो उआरत्तणं भोअभूवस्स ॥ ७ ॥

एवं अणुदिणादिज्जमाणवसुवुंदव्वएण रित्तेसु ससंचिअकोसेसु अमच्चेण संबोहिअदारवालेण साहाविओ सामी साहिओ दुवारिएणं पि जहा हे नाह पहाणामच्चेण विरणाविअं नाह निहिलं पि कोसजायं वहुत्तावित्तव्वएण अत्थि सुन्नसव्वासं तम्हा जह आणा होइ तह करिज्जइ त्ति मं च सुणाविअं तए वि अत्थ आगओ को वि कई ण णिवेआणिज्जो णिवस्स अत्तो मए वि समागयसुकइणो न निवेइज्जं त्ति महाकई वि एक्को अणुअहं आगमिअ रायद्दारे चिट्ठइ तस्स वि अणिवेअणावराहो सोढव्वो सामिणा इअ सुणिअ भूवेण भणिअं पविसावसु सिग्घं सुकइं तं तओ वेत्तिणा वेसिओ उवइट्ठो वत्तेण

कार्यं तेनापि यद्यत् विष्णुकवये वितीर्णं तत्तत्सर्वमपि तस्मै दत्तवान् इति अहो उदारत्वं भोजभूपस्य ॥ ७ ॥

एवमनुदिनदीयमानवसुवृंदव्ययेन रिक्तेषु स्वसंचितकोषेषु अमात्येन संबोध्य द्वारपालेन कथनं कारितः स्वामी कथितः दौवारिकेणापि यथा हे नाथ! प्रधानामात्येन विज्ञापितं नाथ!निखिलमपि कोशजातं प्रभूतवित्तव्ययेन अस्ति शून्यसर्वस्वं तस्मात् यथा आज्ञा भवति तथा क्रियते इति मां प्रति च आज्ञापितम् त्वयापि अत्र आगतः कोपि कविः न निवेदनीयो नृपस्य अतः मयापि समागतसुकवयो न निवेद्यन्ते इति महाकविरपि एकः अन्वहं आगत्य राजद्वारे तिष्ठति तस्यापि च निवेदनापराधः सोढव्यः स्वामिना इति श्रुत्वा भूपेन भणितं प्रवेशय शीघ्रं सुकविं तं ततः वेत्रिणा वेशितः उपविष्टः

भा में आकर सोमनाथ को बुलाकर उसने विष्णु कवि के तांई जो २ दिया था सो सब उसको देदिया. भोज राजा की उदारता कैसी विलक्षण थी ॥ ७ ॥ इसप्रकार नित्य बहुत द्रव्य देने से खजाना खाली होगया तब राजा के पास निवेदन करने को प्रधानामात्य के भेजेहुए द्वारपाल ने राजा से अर्ज करी कि हे स्वामिन् प्रधानामात्य ने निवेदन कराया है कि हे नाथ! बहुत खर्च होने से खजाने में कुछ नहीं रहा है सो अब जैसी आज्ञा हो वैसा कियाजाय और मेरेको भी यह आज्ञा दी है कि यदि यहां कोई कवि आवे तो तू भी राजा से उसकी खबर मत करना इसकारण मैं भी द्वारपर आनेवाले कवियों की खबर नहीं करता हूं सो अपराध क्षमा हो यह सुनकर राजा

वज्जरइ तं जहा "सीअंतेण वि सन्तयं गाहयलें अव्वो अणाल-म्बणं, चञ्चुं फाडिअ चायएण चइअं हुत्तं चिरं चिन्तिअम्॥ ऊसारो कुहतो वि तोअय तए विन्दू वि वुट्ठो न तो, मा विन्दुं विअरेसु देसु सवणे गज्जं गहीरं हरे ॥ १ ॥" सोऊण सिलोअमेअं सामिणा संते सोहिअं हद्धी मम मुणंतमडयस्स पत्थं पाविअ संतयसंकडसिक्कयसोसिआ सलिलसुन्नसरसुक्कसहर सधम्माणो सूरीणो सीअंति इअ आलोइअ तस्स सुअइअस्स सइअसव्वाहरणाइं समप्पिअवंतो त्ति ऊ इलेसस्स उआरत्तणम् ॥ ९ ॥

तओ भूवेण भंडाआरिणं भणिअं सुन्नं मम कोसजायं जइ तो मह पुव्वपुरिसेहिं संचिअकोसेसु संपेक्खिअ इक्कतो आणेसु सुमणिसज्जसुवण्णकलससहासं १००० ति सुणिअ तेण वि

घृष्टेन वर्णयति तद्यथा "सीदतापि सततं नभस्तले हन्त अनालम्बनं चञ्चुं विस्तार्य चातकेन चकितं भूतं चिरं चिन्तितम्। आसारः कुतोऽपि तोयद त्वया विन्दुरपि घृष्टः ननु मा विन्दुं विकर देहि श्रवणे गर्जं गभीरं हरे ।१।" श्रुत्वा श्लोकमेकं स्वामिना स्वांते शोधितं हा धिक् मम जीवन्मृतकस्य पत्त्यं प्राप्य संततसंकटसीत्कृतशोषिताः सलिलशून्यसरःशुष्कशफरसधर्माणः सूरयः सीदन्ति इति आलोच्य तस्य सुकवेः स्वकीयसर्वाभरणानि समर्पितवानिति अहो इलेशस्य उदारत्वम् ॥ ८ ॥

ततो भूपेन भांडागारिणं भणितं शून्यं मम कोशजातं यदि तर्हि मम पूर्वपुरुषैः संचितकोशेषु संप्रेक्ष्य एकस्मात् आनय सुमणिसज्जसुवर्णकलशसहस्र-

ने कहा उस सुकवि को जल्दी भीतर आने दे तब द्वारपाल ने उस कवि को आनेदिया तब आकर बैठा और श्लोक बोला जिसका तात्पर्य यह था कि "कष्ट पाते हुए चातक ने आकाश में निरालंब चोंच फाड़कर आश्चर्य से बहुत देर तक विचार किया कि हे मेघ वर्षा की झड़ी तो कहां एक बिंदु भी नहीं दिया सो भी मत दे परंतु अपना कर्णसुखकारी गर्जन तो सुना" इस श्लोक को सुनकर राजा ने अपने मन में विचारा कि धिक्कार है कि जीवन्मृत जो मैं हूं मेरे राज्य में आकर भी निरंतर आपत्ति के उसासों से सूखे हुए जलशून्य तालाब की मछली की तरह पंडित लोक कष्ट पाते हैं यह विचार कर उस कवि को सब गहने उतार कर देदिये. अहो भोज राजा की उदारता ॥ ९ ॥ तदनंतर भोज राजा ने खजांची से कहा कि जो मेरा सब खजाना खाली होगया तो मेरे पूर्वजों के इकट्ठे कियेहुए खजाने

तहा कए पडिहारेण पयंपिअं देव कम्हारेसुंतो समागओ मुउकुंद-
कई चिट्ठइ दारे त्ति णिसामिअ णरिंदेण सभज्जाए समाकारिओ
जंपीअ पज्जेण जहा, "अहिक्खाअण्णवे तुज्झं, वुड्डंतेण णहेण दे॥
चंदक्कबिंबवाएण, लद्धं लाऊइजामलमू ॥१॥" इमेण वि प-
ज्जेण पच्चक्खरलक्खं लहिअं तहा वि सो मुउकुंदो महालोहमो-
हमारिअमई मुरुक्खो सव्वाइ वि सहाए सलाहसुन्नीकयसंखावं-
तसंतो सब्भत्तणे संतो वि असंतो पुणो वि पज्जेण व-
ज्जरीअ वराओ हद्धी जहा "वारिअ वप्पीहेण, अब्भत्थणउज्झि-
आइँ अंसूइम्॥ तए तेत्तिआइँ विन्दूइँ वि चञ्चूए ण चत्ताइम्॥१॥"
इमीए वि अज्जाए सुणाविआए सदयहिअओ पुणो वि पहू एक्क-

मिति श्रुत्वा तेनापि तथाकृते प्रतिहारेण प्रजल्पितं देव कुतश्चित् आगतः मु-
चुकुंदकविः तिष्ठति द्वारे इति निशम्य नरेन्द्रेण सभार्यायां समाकारितः
प्रत्यपादयत् पद्येन यथा "अभिख्यार्णवे तव मज्जता नभसा ते। चंद्रार्कबिम्ब-
व्याजेन लब्धमलाबूयुग्मकम्" अनेनापि पद्येन प्रत्यक्षरलक्षं लंभितं तथापि
स मुचुकुन्दो महालोभमारितमतिः मूर्खः सर्वस्यामपि सभायां श्लाघाशून्यी-
कृतसंख्यावान् सन् सभ्यत्वे सन्नप्यसन् पुनरपि पद्येन अकथयत् वराकः हा
धिक् यथा "वारिद दात्यूहेन अभ्यर्थन उज्झितान्यश्रूणि तावत्तान्मिता बिन्दवः
अपि चञ्च्वां न त्यक्तानि॥१॥" अनयापि आर्यया श्रावितया सदयहृदयः पुनरपि
प्रभुः एकशतं अर्वणः अर्पयित्वा महादरिद्रः स प्रेषितः पस्त्यं. अन्येष्वपि

में से ढूंढकर एक में से हजार रत्नों से भरे सुवर्णकलश लेआ यह सुन-
कर भंडारी ने ऐसा ही किया. इतने ही में द्वारपाल ने आकर निवेदन कि-
या महाराज! कहींसे मुचुकुंद नाम कवि आया है सो बाहर खड़ा है यह
सुनकर राजा ने उसको सभा में बुलाया उसने श्लोक सुनाया जिसका
तात्पर्य यह था कि "हे भोज तुम्हारे यश रूप समुद्र में डूबतेहुए आकाश
को चंद्रमा सूर्य ये दो तूंबे मिलगये जिनसे डूबने से बचा" इस श्लोक का
प्रत्यक्षर एक लक्ष मिला तब भी वह मुचुकुंद अत्यन्त लोभ में आयाहुआ
मूर्खता से भरी सभा में पंडितों की निंदा कराता हुआ सभ्य होकर भी
मूर्ख की तरह फिर एक आर्या श्लोक बोला (धिक्कार ऐसी मूर्खता को) उ-
सका तात्पर्य यह था कि "हे मेघ चातक के जल मांगने में जितने आंसू के
बिंदु गिरे उतने भी जल बिन्दु उसकी चंचु में नहीं पड़े" इसको सुनकर द-
यालु राजा ने फिर १०० घोड़े देकर उसे अपने घर को बिदा किया और

सयं १०० अव्वाणे अप्पीअ महादालिद्दो स पेसिओ पत्थं अन्नेसु वि कईसु अप्पप्पपत्थं पत्तेसु आतवत्तधारओ भणीअ भूवं पज्जेण जहा "भो धारेस भवंतओ सयलभूभूवालचूडामणो, रत्तीए वि रमेउ रायअइरे छत्तेण हु च्छाइओ॥ जं मा होउ तवासविक्खणवसा वीडाविलक्खो विहू, मा एसा वि अरुंहई भयवई सीलव्वए वीहिआ ।१।" इमेण वि पज्जेण सईअच्छत्तधारअस्स वि दत्तपच्चक्खरलक्खो अन्नया सहाए समाकारिअस्स कुंडिणपुरवासिणो गोवालदेवस्स भूवालो कहिए वि कव्वे णवरि अणप्पंतो गोवालेण मेहतापप्पेण मुणाविओ महीसो पज्जं च जहा "तं तु मेह खणेणं पि,करसे सायरं सरम्॥किन्तु जाओगणो तत्तो, पत्तो यं साससंसयम् ।१।"इअ सोऊण सईअसव्वा-

काविपु आत्मात्मपस्त्यं प्राप्तेपु आतपत्रधारको भणितवान् भूपं पद्येन यथा "भो धारेश भवतः सकलभूभूपालचूडामणे रात्रावपि रन्तुं राजाजिरे छत्रेण खलु च्छादितः।यन्मा भवतु तवास्यवीक्षणवशाद्व्रीडाविलक्षो विधुः मा एषापि अरुंधती भगवती शीलव्यये भीता ॥ १ ॥" अनेनापि पद्येन स्वकीयच्छत्रधारकस्यापि दत्तप्रत्यक्षरलक्षः अन्यदा सभायामाकारितस्य कुंडिनपुरवासिनः गोपालदेवस्य भूपालः कथितेपि काव्ये केवलं अनर्पयन् गोपालेन मेघतात्पर्येण ज्ञापितः महीशः पद्यम् यथा "त्वं तु मेघ क्षणेनापि कुरुषे सागरं सरः। किंतु यादोगणस्ततः प्राप्तोयं श्वाससंशयम् ॥ १ ॥" इति श्रुत्वा स्वकीयसर्वाभरणानि षोडश च सिंधुरान् तस्मै सूरये समर्पयत् सिंधुलसुतः

भी सब कवि अपने २ डेरे को चलेगये, तब छत्र रखनेवाले ने राजा से यह श्लोक कहा "संपूर्ण पृथ्वी के राजाओं में चूडामणि स्वरूप हे भोजराजा आप राजमहल के भीतर रात्रि में भी छत्र की छाया में रहें, क्योंकि आप का मुख देखने से चंद्रमा लज्जा करके उदास न होजाय और यह जो भगवती अरुन्धती का तारा है सो दुश्चरित्र की कलंकिनी न होजाय" इस श्लोक को सुनकर अपने छत्र धारण करनेवाले को भी प्रत्यक्षर लक्ष दिया. एकवार सभा में बुलायेहुए कुण्डिनपुरवासी गोपाल कवि ने श्लोक सुनाया तब भी राजा ने कुछ देने की आज्ञा नहीं दी तब गोपाल ने मेघ के रूपक से कहा कि "हे मेघ ! तू तो क्षणभर में ही तालाब को समुद्र बनादेता है तथापि विना जल कष्ट पानेवाले मत्स्यादिकों को तो प्राणसंकट उपस्थित है" इसको सुनकर सिंधुलपुत्र राजा भोज ने उसको अपने सब भूषण और सोलह

हरणाइँ सोलह१६य सिंधुरे से सूरिस्स समप्पीश्र सिंधुलसुश्रो ॥ ९॥
अन्नया रत्तीए पुरे विहरंतो कुह वि सुत्तपबुद्धाण परोप्परपुच्छिश्र-
गोत्तनामाण भक्खर १ सायल्ल २ नामाण पुहवीसपत्थणाए पत्ता
ण संलावं सुणाइ सयं ताहे भक्खरेण भणिश्रं पज्जं जहा, "नो
पीलान्ति बुहुक्खुणो खु सिसुणो नो जज्जरी गग्गरी, नो चुल्ली
वि किसाणुलेसरहिश्रा काडङ्गरो संथरो ॥ इत्थीए श्रइजज्जराइ
चलणीए गुप्फणे पत्थिश्रा, सूइं पच्चइ पाडिश्रोसिपमया छिच्छी कु
णंती जहा।१।" इमं सिलोश्रं सुणंतेण निवेण पायडीहूएण सव्वा-
हरणाइँ समप्पिश्र भक्खरो वि पेसिश्रो पत्थं पहाए सहाए एक्कसा-
लापुरवासी सायल्लो वि समाकारिश्रो पज्जेण पज्जरइ तं जहा
"भू उद्धरिश्रा १ दलिश्रो, देसिउरो २ वलिसिरी समक्कंता ३॥

अन्यदा रात्रौ पुरे विहरन् कुत्रापि सुप्तप्रबुद्धयोः परस्परपृष्टगोत्रनाम्नोः भा-
स्करशाकल्यनाम्नोः पृथिवीशप्रार्थनायै प्राप्तयोः संलापं शृणोति शयानयोः
भास्करेण भणितं पद्यं यथा "न पीडयन्ति बुभुक्षवः खलु शिशवः नो जर्ज-
रा गर्गरी नो चुल्ली अपि कृशानुलेशरहिता काडंगरः संस्तरः। स्त्रिया अति ज-
र्जरायाः कंचुक्या गुम्फने प्रार्थिता सूचीं प्रत्यपि प्रतिवेशिनः प्रमदा छी छी
कुर्वती यथा ॥ १ ॥" इमं श्लोकं शृण्वता नृपेण पादुकीभूतेन सर्वाभरणानि
समर्प्य भास्करोपि प्रेषितः पस्त्यं, प्रभाते सभायां एकशिलापुरवासी शा-
कल्योपि समाकारितः पद्येन कथयति तद्यथा "भूरुद्धृता दलितं द्वेष्युरः

१६ हाथी दिये ॥ ९ ॥ एकवार रात्रि में शहर में घुसतेहुए राजा ने एक
स्थान पर सोकर जागेहुए और आपस में नाम गोत्र पूछतेहुए राजा के पा-
स आयेहुए भास्कर और शाकल्य नाम दो ब्राह्मणों की बातचीत सुनी
सोतेहुए भास्कर ने श्लोक कहा "बालक भूखे रहते हैं इससे भी मेरेको
बहुत कष्ट नहीं होता, घड़ा फूटाहुआ है उसका भी ऐसा कष्ट नहीं, चूल्हे
में आंच नहीं जलती और भूसे का बिछोना है इसका भी विशेष दुःख नहीं,
जैसा स्त्री के फटे कपड़े को सीने के लिये सुई मांगते समय पाड़ोसी की
स्त्री छी छी करके भौंह सिकोड़ती है वह कष्टदायी है" इस श्लोक को सुन-
कर नम्र होकर राजा ने सब भूषण अपने भास्कर को देकर उसको अपने
घर को बिदाकिया और सबेरे सभा में एक शिलापुरवासी दूसरे शाकल्य
नाम ब्राह्मण को भी बुलाया उसने श्लोक सुनाया जिसका तात्पर्य यह था कि
"पृथ्वी का उद्धार किया, शत्रुओं का हृदय जलाया और बलि (बलवान् राजा

एक्कम्मि जम्मणो तइ, जम्मणातिअए ३ हु जं कयं ह-रिणा॥१॥" इमेण सिलोएण से सायल्लस्स वि समप्पिअं लक्खं १-००००० अन्नया गंगातीरनिवासिणीएवुड्ढावम्हणीए समज्जासमागयाए पज्जेण पज्जरिअं जहा "पयावअग्गी तवऊ अपुव्वो, जग्गेइ धारेस धरावईसु॥ ॥जम्मि प्पइट्ठे परपत्थिवाणं दंतेसु उग्गंति तणाइँ जुद्धे ॥१॥" इमेण पज्जेण पसन्नो समप्पीअ ताए वि रयणपूरिअं निवं निवो त्ति. अहो उआरत्तणं भोअस्स ॥ १० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनान्तर्गतधाराधीशभोजभूपचरित्रे धनपालकव्यर्थरत्नकलशप्रदान १ दामोदरकव्यर्थलक्षमुद्रावितरण २ तदन्यकव्यर्थप्रत्यक्षरलक्षप्रदान ३ तस्करस्वाहृतलोप्त्रदरिद्रद्विजपरस्त्यप्रक्षेपण ४ तत्तुष्टनृपचौरार्थस्ववलयविश्राणन ५ तच्चौर

बलिश्रीः समाक्रान्ता। एकस्मिन् जन्मनि त्वया जन्मत्रितये खलु यत्कृतं हरिणा ॥ १ ॥" अनेन श्लोकेन तेन शाकल्यस्यापि समर्पितं लक्षं. अन्यदा गंगातीरनिवासिन्या वृद्धब्राह्मण्या समज्ज्यासमागतया पद्येन वर्णितम्, यथा "प्रतापाग्निस्तवाहो अपूर्वः जागर्त्ति धारेश धरापतिषु। यस्मिन् प्रविष्टे परपार्थिवानां दन्तेषु रोहन्ति तृणानि युद्धे ॥ १ ॥" अनेन पद्येन प्रसन्नः समर्पितवान् तस्यै अपि रत्नपूरितं निपं नृप इति अहो उदारत्वं भोजस्य ॥ १० ॥

और बलि दैत्य)की लक्ष्मी हरण की तूने एक ही जन्म में वह किया जो विष्णु ने तीन अवतार में किया" इस श्लोक को सुनकर शाकल्य को भी एकलक्ष प्रदान किया. एकबार गंगातीर की रहनेवाली एक वृद्ध ब्राह्मणी ने सभामें आकर श्लोक सुनाया जिसका यह तात्पर्य था कि "हे धारेश अहो आपका प्रताप रूप अग्नि और राजाओंमें कैसा विलक्षण प्रभाव करता है कि जिसके प्रवेश से उन शत्रु राजाओं के युद्ध में दांतों में घास उगआता है" इस श्लोक को सुनने से प्रसन्न होकर राजा ने उसको भी रत्नपूर्ण कलश प्रदान किया. राजा भोज की उदारता धन्य है श्रीवंशभास्कर महाचंपू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के अंतर्गत धारापति भोजराजा के चरित्र में धनपालकवि के लिये रत्नकलश का देना, दामोदर कवि के लिये लाख रुपये देना, उससे अन्य कवि को प्रति अक्षर लक्ष देना, चोर का अपना लायाहुआ चोरी का धन दरिद्री ब्राह्मण को देकर नगर भेजना, उससे प्रसन्न राजा का चोर के लिये अपना कड़ा देना, उस चोर का उस ब्राह्मण के लिये उस इनाम का देना, स-

तदूद्विजार्थंतदावापार्पण ६ मातराकारिततदूद्विजार्थपद्यप्रसन्नपार्थि वप्रत्यक्षरलक्षदान ७ प्रतिग्राहितमहैश्वर्यतत्तस्करतास्कर्यतिर स्करण ८ सोमनाथस्वदूषितकाव्यविष्णुकव्यर्थसर्वस्वसमर्पण ९ गृहजिगमिषुविष्णुकव्यर्थपूर्वश्रावितपद्यप्रसन्ननृपप्रत्यक्षरल क्षसमुत्सर्जन १० सोमनाथार्थसमर्पितसमानसर्वस्वसमर्पण ११ नृपामात्यप्रतिदिनवर्द्धमानदानरिक्तीभूतस्वसञ्चितकोशविज्ञापन १२ तदनन्तरसमागतैकसुकव्यर्थसर्वस्वकीयाभरणसमर्पण १३ नृपपूर्वपुरुषसञ्चितकोशसुमणिसज्जसुवर्णकलशसहस्र १००० समाहरण १४ प्राप्तप्रत्यक्षरलक्षमहादरिद्रमुचुकन्दपुनःप्रार्थितनृ- पतदर्थशता १०० श्वविश्राणन १५ छत्रवाहकपद्यप्रसन्ननृपतद र्थप्रत्यक्षरलक्षार्पण १६ कुण्डिनपुरागतगोपालकव्यर्थषोडश१६ सिन्धुरहसितसर्वाभरणसमर्पण १७ रात्रिचर्यारममाणश्रुतभा- स्करपद्याभिप्रायनृपतदर्थपुनःसर्वाभरणसमुत्सर्जन १८ शाकल्य कव्यर्थलक्षमुद्रावितरण १९ वृद्धब्राह्मणयर्थरत्नानिचितनिपप्रदान २० षड्विंशो २६ मयूखः ॥ २६ ॥

घेरे बुलायेहुए उस ब्राह्मण के लिये श्लोक से प्रसन्न राजा का प्रतिअक्षर लक्ष देना, चोर का पीछा घट्टा ऐश्वर्य देकर उसका चोरी करना मिटाना, सोमनाथ का आपने जिसके काव्य को दूषित किया है ऐसे विष्णु कवि के लिये सर्वस्व देना, घर जाने की इच्छावाले विष्णु कवि को पहले सुनायेहुए श्लोक से प्रसन्न होकर राजा का प्रतिअक्षर लक्ष देना, सोमनाथ के लिये जितना धन दिया था उसके बराबर धन देकर सर्वस्व देना, राजा के मंत्री का प्रतिदिन बढ़तेहुए दान से अपने संचय कियेहुए खजाने का खाली होना निवेदन करना, उसपीछे आयेहुए एक सुकवि को अपने सब गहने देना, राजा के पूर्वजों के संचय कियेहुए खजाने में से उत्तम मणियों से भरेहुए सुवर्ण के हजार कलश लाना, जिसने प्रतिअक्षर लक्ष पालिया है ऐसे महादरिद्री मुचुकुंद को फिर प्रार्थना करने पर उसको राजा का सौ १०० घोड़े देना, छत्र धारण करनेवाले के श्लोक से प्रसन्न होकर राजा का उसको प्रतिअक्षर लक्ष देना, कुंडिनपुर से आयेहुए गोपाल कवि को सोलह हाथी और देदीप्यमान सब गहने देना, शाकल्य कवि को लाख रुपये देना, वृद्ध ब्राह्मणी को रत्नों से भरा घड़ा देने का छब्बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥२६॥

आदितः पञ्चत्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३५ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

अचरणागद्यम्

एक समय कोऊ पोतवाहनैं[1] विज्ञप्तिं[2] करी अहो देव सिंहलं[3]-द्वीपमैं एक अंबिकाके मंदिर राजकन्या अर्चनकौं आवत तानैं मोसौं मालवकी महिमाजुत प्रभुकी प्रसंसा सुनि उँपदाकौं[4] चंदनको खंड[5] दयो जाके गंधकरि जिततितसौं सर्प दोरे आतसो यह श्रीखंड खंड लैआयो ताहि प्रभुकी परिचर्यामैं[6] राखिये असैं कहि देतभयो ताहूकौं प्रामाररराज एकलक्ष १००००० मुद्रा दीनी ॥१॥

याही प्रमान १००००० दामोदर कविकौं दई रु कोऊ वर्धकी[7]की वधूनैं[8] आय संस्कृत पद्यकरि अरजकीनी हे देव पातालवासी बलि नीचो कियो तामैं आश्चर्य नहीं परंतु स्वर्गवासी कल्पद्रुम नीचोकियो या उदारताकौं कोन कहिसकैं असे अभिप्रायको काव्य सुनि ताहूकौं लक्षमुद्रा देतभयो ॥ २ ॥

काहू उँद्यानमैं[9] मिले मल्लिनाथकविकौं अपनौं आवापं[10] दयो जितमैं एक मांत्रिकें[11] पंडित[12] आइ कही हे देव पूर्वसागरके समीपवर्ती उत्कलदेवसौं आपकी उदारता जानि मंत्रविद्याको चमत्कार दिखाइवेकौं चल्योआयो सो जा मूर्खके मस्तकपर कर करो सोसोही सरस्वतीके सर्वस्वकरि महासमर्थ सूरि होइ असी सुनि नृपनैं काहू ग्रामसौं महामूर्ख दासी बुलाइ ताके सिरपैं हाथ दिवायो ताके अनंतरही किंकरीनैं[13] कही जाकी आज्ञाहोइ ताहीको वर्णन करूँ सो सुनि नृपनैं खड्ग दिखायो ताहीको वर्णन शुद्धसंस्कृतकरि करयो सो काव्य सुनतही महाचमत्कार मानि वा मौंलिक[14]

और से एक सौ पैंतीस मयूख हुए ॥ १३५ ॥

१ नाव चलानेवाले (खेवटिया) ने २ अरज करी कि ३ जिसको इस समय लङ्का कहते हैं ४ भेट करने को ५ चन्दन का टुकड़ा लाया हूं जिसको आपकी ६ सेवा में रखकर ॥ १ ॥ ७ खाती (सुथार) की ८ स्त्री ने॥२॥९ वन में १०कङ्कण(कड़ा)दिया ११मन्त्र तन्त्र जाननेवाला १२पण्डित १३दासी ने १४मंत्र

बिप्रकौं सुमणिसज्ज सुवर्णकलसनको पंचक५अर्प्यो ॥ ३ ॥

ऐसैंही महेस्वर १ कामदेव २ सीतभीरु ३ सांभवदेव४हारीत ५ भवभूति ६ जयदेव ७ हरिवर्म८ प्रमुख अनेकही कवि आये तिनकौं बहुतही लक्ष दैकैं केही कमनीय कविताकी माधुरीके मधुको पान कानचसकैं करि करत भयो ॥ ४ ॥

भवभूति १ कालिदास २ के पद्यहू तुलामैं तुलाये तहाँ कालिदासको काव्य ऊंचो रहत अकस्मातही वाके ऊपर पुंडरीक पुष्करको पराग पर्यो तासौं गरिष्ट भयो देखि भवभूतिहू कालिदासकी स्तुति करि सिधायो ॥ ५ ॥

एकसमय श्रीसैलसौं कोऊ महा बीतराग ब्रह्मचारी आयो ताके पयनपरि नृपनैं गार्हस्थ्य धारन करावनकी प्रभूतही प्रार्थना करी सो न मानी रु कह्यो हेनृप हमकौं कछु देबेकी इच्छा हैतो तेरे सभ्य सूरिनैं समेत कासीपुरी पूगिजैबो चाहतहैं जातैं बाग्बिलासके आलंबनकरि पंथको परिश्रम न जानैं सो सुनतही नृपनैं सर्बही स्वकीयं कवि पंडितनकौं ब्रह्मचारीके संग दये ते याकौं सुखसंबादमैं राखि सिवपुरी पहुँचाइबेकौं गये ॥ ६ ॥

अरु कालिदास ब्रह्मचारीके संग न गयो तासौं आज्ञाभंगकी अवज्ञा अवनीसकै आई जानि कालिदास धारासौं निकसि राजा अल्लालके आश्रित जाइरह्यो तहाँहू काव्यके प्रत्यक्षर लक्षलक्ष पाइ समस्तही सूरिबर्गको सिरोमनि रह्यो परंतु ताके प्रच्छन्न

जाननेवाले ब्राह्मण को १ श्रेष्ठ मणियों से सजेहुए सोने के २ पांच कलश दिये ॥ ३ ॥ ३ आदि ४ सुन्दर कविता की मधुरता का ५ अमृत कानों रूपी ६ चुसकी से पिया ॥ ४ ॥ ७ ताकड़ी में ८ अचानक ही उसके ऊपर ९ श्वेत कमल का १०पुष्परज पड़ा जिससे ११भारी हुआ ॥ ५ ॥ १२ हिमालय पर्वत से १३ विरक्त १४ गृहस्थीपन १५बहुत ही १६सभासद १७ पण्डितों सहित १८ कथा वार्त्ता के १९ आधार से २० अपने २१ वार्त्तालाप में २२ काशीपुरी ॥ ६ ॥ २३ घृणा २४ राजा के २५ धारापुर से २६ अक्षर अक्षर प्रति २७ पण्डितों के समूह को

कढिजैवेकरि धाराधीसकौं तो याकी*उत्कंठा ऐसी भई कि को ऊ**भोग्यपदार्थकौं प्रीतिपूर्वक न भोगतभयो ॥ ७ ॥

ताके अनंतर गुर्जरदेससौं महावंद १ महावदान्य २ माघनामा व्रिप सदा सर्वस्व दान करि दुर्भिक्षमैं दरिद्रीभूत प्रबुद्ध पत्नी समेत धारापुरके समीप आइ उतर्यो अरु अपनी अंगना कौं आगम जनाइवेकौं नृपके निकट भेजतभयो सो सुनतही सभामैं बुलाइ प्रमारराजनैं प्रनामकरि कही प्रातः कालही पधारिवेसौं पंथमैं परिश्रम पायो यातैं आतुरता जानिपरी अब आत्मजपैं आज्ञा कीजियें तबमाघपत्नीनैं प्रभातहीको वर्णा-नकरि कही याहू समयमैं अर्कके उदयकरि कमलचक्र १ चक्र-वाकन २ कै प्रमोद इंदुके अस्तकरि कुमुदवनैं १ कौशिकन२कै दुक्खहै यातैं सदासुखी कोऊ न जानौं ऐसे अभिप्रायके पद्यमैं च-मत्कार पाइ माघपत्नीकौं मुद्राको लक्षत्रय३०००० तो महिमा-नीके अर्थ दयो ॥ ८ ॥

अरु कह्यो दूजे २ दिन आपके स्थान ऐहौं यहै सुनि सीख लेकैं माघपत्नी राजद्वारके बाहिर आई तहाँसौं ही अनेक अर्थी-जन माघको औदार्य सुनि सुनि उत्सुक ह्वे तिन्ह माघहीके गुन बर्णन करि करि प्रार्थना करी तिनकौं तीनही लाख३००००० देकैं रीते हाथनही डेरेपर पहुँची तथापि जिनकौं न मिल्यो ऐसे

* चाहना ** भोगने योग्य ॥ ७ ॥ १ बडा वक्ता २ बडा उदार ३ पण्डिता ४ स्त्री सहित ५ स्त्री को ६ माघ का आना जनाने के लिये ७ पुत्र पै ८ माघ की स्त्री ने प्रभात का ही वर्णन करके कहा कि इसी समय में ९ सूर्य के उदय होने से कमल के समूह और १० चकवा पक्षियों के आनन्द है और ११ चन्द्रमा के अस्त होने से १२ रा-त्रिविकाशी कमलों को और १३ घूघू (उलूक) पक्षियों को दुःख है इससे स-दैव सुखी किसीको मत जानो १४ तीन लाख ॥ ८ ॥ १५ माघ की स्त्री १६ याचना करनेवाले १७ उदारता १८ चाहना कररहे थे.

ओरहू अनेक अर्थीजन महादुर्भिक्षकरि दुर्गतसंगही आये ते सब महादरिद्रभाव[1] देखि कपर्दकहू[2] इनके पासि न जानि विमुखही फिरिगये ॥ ९ ॥

तिनमाँहिसौं एक कह्यो हे महामेघ[3] माघ संसारके समस्त गिरि १ नगर २ बन ३ उपबन[4] ४ नदी ५[5] नद ६ कासार[6] ७ कूप ८ पूरनकरि रीतोभयो तोहू बलि १ करन २ दधीच ३ की सोभा लहि संतोषधारि हमारे विमुख जाइबेसौं मनमैं दुक्ख न मानौं ॥ १० ॥

यहै सुनि माघहू पत्नीसौं[7] कह्यो माँगिबेमैं १ लज्जा१ अपघातमैं १ नरक २ यातैं प्रानही कढिचलैं तो भलीहै दरिद्रभावको संतापतो संतोष[8] बारिकरि बुझायो परंतु जाचकनकी[9] आसाके बिघात[10] [illegible] अंतर्दाह[11] मृत्यु जैसे मित्र बिनाँ मिटै नही ऐसी कह[illegible]ही महादुक्खसौं माघ पंडितके प्रान कढिगये ऐसी [illegible]तोहू सुनो १ अरु लिखीहु जानी २ याहीतैं आश्चर्यकारी अनेक बात प्रबंधमैं[13] डारी सो नैं[14] भई तो मिथ्याकथन[15]को दोस पहिले प्रबंधनमैं लिखिबेवारेनकौं लगहु ११

ऐसैं माघको मृत्यु सुनि विप्र सतक[16]१००समेत नरेसहू बाहन बिहीन उहाँ आयो तासौं माघपत्नी कह्यो माघको मृत्यु इहाँ भयो सो अपनैं घरही भयो यातैं अब नरेस उत्तरकर्म अच्छो होइतो अच्छोहै ऐसी कहि नर्मदाके निकट लैजाइ[17] चितापैं चढि आपहू सहगमन[18] करतभई ॥ १२ ॥

१दरिद्री २ कौड़ी भी ३ हे महामेघ रूपी माघ ४बाग ५ बड़ी नदियें ६ तालाब ७ माघ ने अपनी स्त्री से कहा ८ सन्तोष रूपी जल से ९ मांगनेवालों की १० नाश होने से ११ भीतर का दाह (जलना) १२ दन्तकथा १३इस वंशभास्कर ग्रंथ में लिखी है सो १४न हुई होवे तो झूठ १५कहने का दोष पहिले के ग्रंथों में लिखनेवालों को लगो १६सौ ब्राह्मणों सहित १७लेजाकर १८सती हुई

अरु भूपहू औरसपुत्रके प्रमान दाहादिक अखिलही उत्तरक्रिया करतभयो तदनंतर दुर्भिक्षके दरिद्रनकी बुंबन करि विमनीभूत कोउ कवि पंडितनकौं अपनैं पास न पाय प्रतिदिन दुर्बलभाव करि पांडुर प्रतिपदाकी चंद्रलेखा समान भयो ॥१३॥

यह जानि सचिवन अधीसको आसय लहि प्रच्छन्नही पत्र लिखि अल्लालनृपके नगरसौं कालिदास बुलायो इतनैंमैं ब्रह्मचारीकौं वाराणसीपुरी पहुँचाइ औरहू अपनैं आश्रित सुकविनको समाज आयो ॥ १४ ॥

नरेसहू कालिदासकौं अपनैं उद्यांनमैं आयो जानि प्रीतिपूर्वक समुखजाइ सत्कारकारि संग लायो तदनंतर कोऊ सांयात्रिकनैं आइ एक मदनपट्टिका दिखाइ कारन पूछैं कही हे देव मैं केही स्वापतेय संभृत पोतन समेत द्वीपांतरसौं अर्णवके अंसकौं उल्लंघि आवत आवनमैं चतुर्थांस अवसेसैं हो तहाँ कोऊ कारनकरि मेरो एक वहित्र बूडिगयो ताके चौ४ तर्फही जिहाजनकौं लगाइ लंगरडारि मरजीवा डारे सो जितातित करि वहित्रकौं काढिलाये ॥ १५ ॥

तिननैं कही जलके तलपैं कोऊ देवालयसो दीस्यो तामैं फसियो वहित्र निकास्यो वा देवालयके कोऊ प्रदेसमैं एक बहुतबडे खुदे अक्षरकी सिला जानी मैंतो ऐसी सुनतही मदनपट्टिका देदे कैं बहुतही मरजीवा वहोरिहु डारे तिनमैं कोऊ या पट्टिकाकौं

१ सगे पुत्र के समान २ जलाने आदि ३ सब ही ४ कूकने से ५ उदास ६ शुक्ल पक्ष की ७ एकम की ८ चन्द्रमा की कला के समान (शुक्ल पक्ष की एकम के दिन चन्द्रमा की कला बहुत ही क्षीण होती है) ॥ १३ ॥ ९ काशीपुरी ॥ १४ ॥ १० बाग में ११ पोतवणिक् (जहाज में व्यापार करनेवाला) १२ मोम (मैंण) की पट्टी १३ धन से १४ भरीहुई १५ जहाजों सहित अन्य द्वीपों से १६ समुद्र की १७ खाडी को लांघकर आता था और आने में चौथा हिस्सा १८ बाकी था वहां किसी कारण से मेरा एक १९ जहाज डूबगया २० समुद्र में गोता लगाकर समुद्र के तल से माल निकाल लेनेवाले ॥ १५ ॥ २१ मन्दिर २२ नाव २३ मैंणपट्टी

सिलासौं चिपाइलायो तामैं प्रकटलो यह पुष्पिताग्राको पूर्वार्ध[1] उघर्‍यो पायो औसी सुनतही प्रमोदपाइ आपही पट्टिका लैकैं पढतभयो सो विबुधबानीमय[2] पद्यार्ध यह—

इह खलु विषमः पुराकृतानां,
विलसति जन्तुषु कर्मणां विपाकः ॥

याँ[3] पद्यार्द्धकौं पढतही[4] नरेंद्र वा सिलामैं श्रीहनुमंतकृत श्रीरघुनाथ चरित्र मंडित महानाटक खुद्यो जानि वा सांयात्रिककौं[5] कोटि १०००००० मुद्रा देकैं अपनैं कविनतैं याको उत्तरार्द्ध बनावत भयो ताहूसौं तुष्टि[6] न जानि दक्खिन समुद्रके तीर जाइ वाहीके अनुमत[7]करि उहाँही पहुँचि बडे प्रयत्न[8]करि मदनपट्टिका देदेकैं सहस्त्रन मरजीवा डारे ते अनेकवार अनेक पट्टिकानमैं अनेक वृत्त[9] उघारिलाये तिनकौं जिमातिम जोरिकैं हनुमान्नाटकनाम प्रबंध[10] धाराधीस भोजही पुहवीमैं[11] प्रकटाकियो अरु कोऊ कहत वह समग्रही सिला निकसाइ आनी तामैं केही पद्य समग्र खुदेजानैं अरु वाही पूर्वार्द्ध समेत वाही पुष्पिताग्राको उत्तरार्द्धहू कोऊ पट्टिकामैं अविच्छिन्न[12] उघर्‍यो जान्यौं सो इहिं रीति—

'[13]इह खलु विषमः पुराकृतानां, विलसति जन्तुषु कर्मणां विपाकः॥
हरशिरसि शिरांसि यानि रेजुः,शिव शिव तानि लुठन्ति गृध्रपादैः॥१॥'

ऐसैं यह उत्तरार्द्ध मिलिबेतैं अपनैं उपायको फलपाइ राजाभोज ऐसे ऐसे अनेक आनंदमैं आपु बितावतभयो ॥ १६ ॥

---

१ पुष्पिताग्रा नामक छन्द का पूर्वार्ध २ संस्कृत यह आधा श्लोक है ३ इस आधे श्लोक को पढते ही ४ उस पोतवणिक् को ५ सन्तोष ६ उसी पोतवाह की सलाह से ७ बडे उपाय से ८ अनेक छन्द ९ ग्रंथ १० पृथ्वी में ११ विना कटाबढा उठाहुआ मिला सो इसप्रकार है १२ "इस संसार में निश्चय ही पूर्वजन्म के कियेहुए कर्मों का फल प्राणियों में बड़ा विषम है, जो मस्तक (रावण के) महादेव के शिर पर शोभा देते थे वे शिर शिव! शिव!! शिव!!! गिद्धों के पैरों में लोटते हैं ॥"

ऐसैं चंडासिराजें पृथ्वीपाल१५६ के समय महाबुध १ महाउदार २ मालवेंद्र धारापुरीको अधीस प्रामारराज भोज भयो अरु नरेस पृथ्वीपाल १५६ को तनूजें राजकुमार सैन्यपाल १५७ हू सस्त्र१ सास्त्र२ प्रमुखें सर्व विद्या को संग्रह करि किसोरवय पाइ कोऊ समय मातुलगृह चित्रकूट गयो ॥ १७ ॥

तहाँ आपुनैं मातुल निर्भयको पुत्र किरणादित्य जाकौं कृष्णदेव हू कहैं तासहित आखेट क्रीडामैं रमत कृष्णको कलंब सिंहपैं सच्चो न जानि वाही इभारिकों कट्टारसौं कदनकैरि कृष्णदेवसौं कही सच्ची सस्त्रविद्या होती तो प्रामार जनसूरको मध्यमपुत्र सिंधुल मातुलके लये मंडू १ रु दसपुर २ द्वै २ ही दुर्ग क्यौं छुराइलेतो परंतु वीरविद्याको वल नही यातैं सीखिवेको सामर्थ्य होइतो मैं सिखाऊँ ऐसी सुनि किरणादित्य कही सिखाइवेमैं समर्थहो सोही पेत्तेंकी पोलीं प्राशनकरैं यह सुनतही कृष्णके केश पकरि स्वकीय सायकके भल्लसौं पंचशिखकरि अपनैं दुर्ग आसेर आयो ॥ १८ ॥

॥ १६ ॥ १ इसप्रकार चहुवाण राजा २ महापण्डित ३ पुत्र ४ आदि ५ युवावस्था पाकर ॥ १७ ॥ तहां अपने ६ मामा निर्भय का पुत्र ७ किरणादित्य "निर्भय, किरणादित्य, कृष्णदेव. * उदयपुर की शुद्ध वंशावली में इनमें से कोई भी नाम लिखाहुआ नहीं है इससे सिद्ध है कि ये कल्पित नाम और इतिहास दिये हैं सो सत्य नहीं हैं" ८ शिकार ९ खेलने में १० तीर ११ उसी सिंह का १२ नाश करके १३ मामा के लियेहुए मण्डू और १४ मन्दशोर १५ अच्छा हो तो मैं सिखाऊं यह सुनकर किरणादित्य ने काभाषा (चंक्रोक्ति) से कहा कि सीखनेवाले होते हैं वे ही १६ पराई १७ रोटी १८ खाते हैं १९ अपने तीर की भाल से २० मुण्डन करके अपने आसेरगढ आया ॥ १८ ॥

*बड़वाभाटों के लिखायेहुए इस मिथ्या इतिहास को पाठक लोग स्वयं समझ सक्ते हैं कि किसी नाई के सामने किसी छोटे बच्चे को वाल मुंडवाने के लिये विठाया जाता है तो अपना शिर हिलाकर वह बड़ा भी कठिनाई से मुंडन कराने देता है तो लाखों मनुष्यों के स्वामी वीरपुरुष तीर की भाल से कैसे मुंडन करासक्ते हैं परन्तु उपरोक्त नाम ही चित्तोड़ के राजाओं की वंशावली में नहीं हैं तो हमारा विशेष लिखना भी वृथा है. हम इस मिथ्यात्व का दोष ग्रन्थकर्त्ता[सूर्यमल्ल] पर नहीं लगाते, किन्तु यह

विजयपुरके नरेस र-
चंडासि[1]राज कुमार लोकपाल १५६ कौं विजयपुरके नरेस र-
छोर सारंगदेवनैं अपनी अंगेजा लीलावती १५७।१ विबाही ताके
दूजे २ ही दिन आसेरके अधीस चंडासिराज चंडकिरण १५६ के
मृत्युकी सुद्धि[3] सुनि दुल्हही १५७ सहित दुल्लह आज्ञाकीर्ति १५७
अपनैं दुर्ग आसेर आइ पंच[5]शिख पट्टपाइ अपनैं देसको आधिप-
त्य लह्यो ॥ १९ ॥

याही समयके समीप कान्यकुब्ज[6]के अधीस राष्ट्रकूट[7] जयदत्तनैं
पचासकोटि ५०००००००० सुवर्णमय[8] वसुधा बनाइ द्विजनकौं दे-
कै गंगामैं तनुकौं तजतभयो जाके जसकरि अखिलं[10]ही अवनीत-
ल प्रसन्नपन पायो ॥ २० ॥

इतकौं आसेरदुर्गके अधीस साकंभरराज सैन्यपाल १५७ कै
राष्ट्रकूटी लीलावती १५७।१ मैं कुमार शत्रुशल्य१५८प्राकट्य पा-
इ आपुनैं अ[12]न्ववायको अपनैं[13] अधीन आनि अमरपुरके अधीसदा-
धिमै दुर्जन दमकी दु[15]हिता शीलवती १५८ विवाह्यो तामैं राजकु-
मार शत्रुशल्ल्य १५८ सौं राजकुमार कुमारै दामोदर १५९ जन्म
लह्यो याहीसमयके समीप प्रत्यंतदेशनके अंतर्गत अर्बदेसमैं मु-
सलमाननके मतको प्रवर्तक जाकौं आखरी जमाँ कहैं सो मुहु-
म्मदरसूल जन्म लेतभयो ॥ २१ ॥

---

१ चहुवाण २ पुत्री ३ खबर ४ सिंहासन बैठा (पञ्चशिख, सिंह का नाम है और ऊपर आसन रहे उसको सिंहासन कहते हैं) ५ मालिकपन ॥ १९ ॥ ६ कन्नोज के ७ राठोड़ ८ पचास क्रोड़ मोहरें बिछाकर सुवर्णमयी पृथिवी (पुराणों में पृथ्वी का प्रमाण भी पचास करोड़ योजन का है इस कारण से पचास करोड़ पृथ्वी का दान दिया मानों पूरी पृथ्वी) ब-नाकर ब्राह्मणों को दान देकर गङ्गा में ९ शरीर छोड़ा १० सम्पूर्ण ११ भूमि-तल ॥ २० ॥ १२ अपने वंश के १३ घर (स्थान) को १४ दाहिमा १५ पुत्री १६ पिता-मह (दादा) के विद्यमानता में पौत्र को राजकुमार नहीं कहते इसकारण से यहां कुमार कहा है १७ म्लेच्छदेशों के १८ भीतर १९ मुसलमानों के मजहब

दोष बड़वाभाटों की पोथियों का है जिनका ग्रन्थकर्ता ने विना विचारे विश्वास करलिया इसलिये औ-
र भी कहीं असम्भव वृत्तान्त आवे तो ऐसा ही समझना चाहिये ॥

ताके अबूबक्र १ उरम २ हैदर ३ उस्मान ४ ए च्यारि ४ ही मुख्य शिष्यभये तिनकरि म्लेच्छनके अनेक मत उडाइ केही प्रत्यंतनमैं रोजा १ राखिवे २ कलमाँ १ निमाज २ पढिबे ३ प्रमुख कुरानको मत प्रवृत्त कीनों रु अपनैं शिष्य हैदरकों स्वीय सुता फातमाँ बिबाही ताके अमाँमहसन १ अमामहुसैन २ द्वै २पुत्र भये तिनके तावूत जवनलोक अवहू निकासैंजात ऐसैं आखरीजमाँके अनुसार अर्ब १रूम २ ईरान३ प्रमुख प्रत्यंतनमैं पुरातनकों प्रच्छन्नकरि नूतन मत प्रवर्त्तभयो ॥ २२ ॥

इतकों चरम अवस्था पाइ आसेरको अधीस सैन्यपाल १५७ देह तजतभयो तब शत्रुशाल १५८ भूपभयो ताके राजकुमार दामोदर १५९ कों दसपुरके आधिराज मामार मुंजराजनैं अपनी अंगेजा विरोचना १५९।१ बिबाही तदनंतर सत्रुसाल १५८ के स्वर्ग जावतही रानी शीलवती १५८।१ हू सहगमनकरि पतिके पास पहुँची रु आसेरके आधिपत्यके छत्र१ चामर२ दामोदर१५९ धारत भयो तासौं विरोचना१५९।१ मैं राजकुमार नृसिंह१६० नैं प्रादुर्भाव पायो ॥ २३ ॥

इति श्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे चतुर्थ४ राशौ वीतिहोत्रचरणडासि १ वंशवर्णने तदन्तर्गतस्वसम्भवसमयधाराधीश भोजसिंहलेश्वरपुत्रीप्रेषितश्रीखण्डखण्डप्रापण १ तदानेत्रर्थलक्ष १०,०००० मुद्रोत्सर्जन २ दामोदरकन्यर्थलक्ष १०,०००० द्रम्मवितरण ३ वर्द्धकिवध्वर्थलक्ष १०,०००० रौप्यसमर्पण ४ मल्लिनाथ

का वर्ताव करानेवाला ॥ २१ ॥ १ यवनों में २ मजहब मन्त्र ३ आदि ४ अपनी पुत्री ५ यवनों में ६ पुराने मत को ७ छिपाकर ८ नवीन मत जारी हुआ ॥ २२ ॥ ९ वृद्धावस्था १० मन्दशोर पुर के ११ पुत्री १२ जन्म पाया ॥ २३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर अपने समय में जन्म लेनेवाले धारा नगर के पति भोज के अर्थ सिंहलदेश के पति की पुत्री का भेजाहुआ चन्दन का टुकड़ा आना

कंपर्थकटकत्यजन ५ परीक्षितमान्त्रिकपण्डितार्थसुमणिसम्भृतसुवर्णकलशपञ्चका ५ र्पण ६ महेश्वरादिकविकलापार्थविविधवित्तव्रातवितरण ७ कालिदास १ भवभूति २ काव्यतुलनासमयपातितपुण्डरीकपरागपुञ्जवाग्देवीकालिदास १ पद्यगुरूकरण ८ श्रीशैलवास्तव्यब्रह्मचारिसार्थीकृतस्वकीयसूरिवर्गकाशीप्रस्थापन९ तदनङ्गीकृतकालिदासाल्लालनृपाश्रितीभवन १० तदुत्कण्ठितधारेशदुर्मनीभावधारण ११ दुर्भिक्षदुस्थीभूतधारासमागतमाघकविकान्तार्थत्रिलक्ष ३००००० द्रम्मदान १२ प्रतिवलितमाघपत्नीतत्सर्वबित्तवनीयकव्रातार्थवितरण १३ दत्तसर्वस्ववीक्षितविमुखवनीयकवारयाचकाशाभङ्गभीरुमाघकविमरण १४ तत्पत्नीसहगमन १५ स्वयंधारेशतत्प्रेतकर्मसाधन १६ ज्ञातकविविरहितभूपविमनीभावसचिववर्गकालिदासप्रत्यानयन १७ ब्रह्मचारिप्रापितकाशीपुरधारेशसभ्यसकलकविकलापप्रत्यागमन १८ नृपसत्कृतकालिदाससभासमानयन १९ सांयात्रिकसूचितनृपसिन्धुनिमग्नशिलाखनितहनुमत्कृतश्रीरामचरित्रमयमहानाट

उसके लानेवाले को लाख रुपये देना, दामोदर कवि को लाख रुपये दान देना, सुथार की स्त्री को लाख रुपये देना, मल्लिनाथ कवि को कङ्कण (कड़ा) देना, परीक्षा किये हुए मन्त्र जाननेवाले पण्डित के अर्थ अच्छी मणियों से जड़ेहुए सोना के पांच कलश देना, महेश्वर को आदि लेकर कवियों के समूह के लिये नाना प्रकार के धन का समूह दान करना, कालिदास और भवभूति के काव्य तोलने के समय श्वेत कमल के पराग का समूह गिरकर सरस्वती का कालिदास के श्लोक को भारी करना, हिमालय से आयेहुए ब्रह्मचारी का ब्रह्मचर्य सार्थक करके अपने पण्डितों के समूह सहित उसको काशी भेजना, उसके साथ जाना अस्वीकार करके कालिदास का अल्लाल राजा के आश्रय होना, उसकी चाहना से भोज का उदास होना, दुर्भिक्ष से दरिद्री होकर धारा नगर में आयेहुए माघ कवि की स्त्री के अर्थ तीन लाख रुपये देना, पीछे फिरतीहुई माघ की स्त्री का वे सर्व रुपये याचक लोगों के समूह के अर्थ देना, सर्वस्व देकर याचकों के समूह को खाली जातेहुए देखकर याचकों की आशाभङ्ग से कायर माघ कवि का मरना, उसकी स्त्री का सती होना, खुद भोज का उसके प्रेतकर्मों का करना, कवियों के विरह

कसमुद्धरण २० तत्सांयात्रिकार्थकोटि १०००००० मुद्रावितरण २१ तत्समकालीनचण्डासिराजपृथ्वीपाल १५६ कुमारसैन्यपाल १५७ मातुलगृहचित्रकूटगमन २२ स्वकट्टारपातितपश्चास्यमुण्डितमातुलपुत्रप्रत्यागतकुमारसैन्यपाल १५७ राष्ट्रकूटीलीलावती १५७।१ परिणयन २३श्रुतमृतजनकप्रत्यागतलोकपाल१५७ पितृपट्टप्रापण २४ तत्समयसामीप्यवर्त्तिदत्तपञ्चाशत्कोटि-५००००००००सुवर्णमयमहीमूर्त्तिककान्यकुब्जनरेशराष्ट्रकूटजयदत्तगङ्गाप्रवाहतनुत्यजन २५ सैन्यपाल १५७ लीलावती १५७।१ प्रसूतकुलपर्यायप्रगल्भराजकुमारशत्रुशल्य१५८दाधिमीशीलवती १५८।१ पाणिपीडन २६ तदौरसकुमारदामोदरो १५९ द्भवन२७ तत्समयसमीपार्वदेशसमुद्भूतशिष्यचतुष्टय ४ समेतयवनाचार्यमुहम्मदरसूलमुसलमानमतस्थापन २८ चण्डासिराजसैन्यपाल १५७ मरणानन्तरप्राप्तपितृपट्टनरेन्द्रशत्रुशल्य १५७ कुमारदामोदर १५६ प्रामारीविरोचना १५९।१ विवहन२९ स्वर्गप्राप्तशत्रुशल्य-१५८ राज्ञीशीलवती १५८।१ सहगमन ३० धारितनृपलक्ष्मदा

से, राजा का उदास होना जानकर मन्त्रियों का कालिदास को पीछा लाना, ब्रह्मचारी को काशी पहुंचाकर भोज के सभासद सब कविसमूह का पीछा आना, राजा का सत्कार के साथ कालिदास को सभा में लाना, जहाजों से व्यापार करनेवाले बनिये की सूचना करने से राजा का समुद्र में डूबीहुई शिला में खुदे हुए हनुमान् के बनाये हुए श्रीरामचरित्रमय महानाटक का उद्धार करना, उस बनिये को करोड़ रुपये देना, उस भोज के समय में होनेवाले चहुवाण राजा पृथ्वीपाल के कुमर सैन्यपाल का मामा के घर चित्तौड़ जाना, अपने कटार से सिंह को मारकर मामा के पुत्र का मुंडन करके पीछे आयेहुए कुमर सैन्यपाल का राठोड़ी लीलावती से विवाह करना, पिता की मृत्यु सुनकर पीछा आकर लोकपाल का पिता के सिंहासन पर बैठना, उसके समय के समीपवर्ती पचास करोड़ सुवर्णमयी भूमि देकर कन्नोज के राजा राठोड़ जयदत्त का गङ्गा के प्रवाह में शरीर छोड़ना, सैन्यपाल से लीलावती में जन्म पायेहुए कुल की पीढियों में होशियार राजकुमार शत्रुशल्य का दाहिमी शीलवती से विवाह करना, उसके उदर से कुमार दामोदर का जन्म होना, उसके समय के समीप

मोदर १५९ विरोचनौ १५९।१ रसराजकुमारनृसिंहो १६० द्भवनं

३१ सप्तविंशो २७ मयूखः ॥ २७ ॥

आदितः षट्त्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३६ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सचरणगद्यम्

इतकौं चित्रकूटको अधीस हंसराजको पुत्र राउल जोगराज महा-
पातकमैं मोद मानि मूढ नित्यही ब्रह्महत्या करतभयो ॥
ताकौं ताहीको पुत्र बैरिजित १ जाकौं इतर नामनकरि बैरि
राज २ तथा बैराड २ हू कहैं सो मारि विप्रनकौं अभय देकैं चि
त्रकूटको आधिपत्य धरतभयो ॥
याहीसमयके समीप कान्यकुब्जके नरेस राष्ट्रकूट धीरजयके
पुत्र भूपतिनैं अपनी श्रद्धाके अनुसार समीपके देशनमैं हयकौं
फिराइ एक१ अश्वमेध अध्वर कीनौं॥
अरु आसेरके अधीस दामोदर १५९ के राजकुमार नृसिंह १-
६० हू विद्याबल पाइ माहिष्मतीके अधीस चापोत्कट चंद्रराजकी
पुत्री प्रभावती १६०।१ विवाहि पिताके अनंतर आसेरको आधि-
पत्य लीनौं१ ॥ १ ॥

अरब देश में पैदाहुए चार शिष्यों सहित यवनों के आचार्य मुहुम्मद पैगंब-
र का मुसलमानी मत का स्थापन करना, चहुवाण राजा सैन्यपाल के मरे
पीछे पिता के पाट बैठकर नरेन्द्र शत्रुशाल के कुमर दामोदर का प्रामारी
विरोचना से विवाह करना, शत्रुशाल के स्वर्ग जाने पर राणी शीलवती
का सती होना, राजा का चिह्न धारण कियेहुए दामोदर से विरोचना के
उदर से राजकुमार नृसिंह का जन्म होने का सत्ताईसवां मयूख समाप्त हु-
आ ॥ २७ ॥ और आदि से एक सौ छत्तीस मयूख हुए ॥ १३६ ॥

इधर १ चित्तोड़ का स्वामी हंसराज (हंसराज और इनका पुत्र राव-
ल जोगराज ये नाम चित्तोड़ की पाषाणलेखों में निर्णय की हुई वंशाव-
ली में नहीं हैं बड़वाभाटों ने कल्पित नाम लिखदिये हैं) २ दूसरा नाम ३
राठौड़ ४यज्ञ ५माहिष्मती (जो शिशुपाल की राजधानी थी)का पतिप्रभावती

नृसिंह १६० सौं प्रभावती १६०।१ मैं राजकुमार हरिवंस१६१ नैं प्राकट्य पायो ॥

सो कोलके नरेस जादव जयमल्लकी दुहिता१६१।१ दया १६१।१ विवाहि जनकके मरनके अनंतर ताको छत्र धारि देसदेस नमैं दुर्जय कहायो ॥

हरिवंश१६१सौं दया१६१।१मैं राजकुमार हरिजस १६२ जन्म पाइ सर्वविद्याको संग्रह करतभयो ॥

सो दोसाके नरेस वडगुज्जर तेजपालकी तनया हंसावती १६२।१ विवाहि हरिवंसके अनंतर पंच५शिख पट्ट धरतभयो ॥ २॥

हरिजस१६२सौं हंसावती१६२।१मैं राजकुमार सदाशिव१६३जन्मलह्यो जानैं चंदवाटके अधीस गोभिल वलभद्रकी पुत्री पद्माव-ती१६३।१ परनि पिताके अनंतर आसेरको आधिपत्य गह्यो ।३।

सदासिव१६३सौं पद्मावती१६३।१मैं राजकुमार रामदास१६४ नैं प्रादुर्भाव पायो ॥

अरु पद्मावती१६३।१हू सदासिव१६३के संगही सहगमनकरि स्वर्गके नानाविध विलासनको व्रात विलसायो ॥

तव चंडासिराज रामदास१६४हू पिताको पट्टपाइ कान्यकुब्जके अधीस कवंध पुंजराजकी पुत्री प्रेमवती१६४।१ विवाहिआनी ॥

अरु याही पुंजराजके धर्मब्रह्म प्रमुख तेरह१३ पुत्र प्रकटे जिनतैं रठौरनके तेरह१३भेद भये तिनमैं प्रथम१ धर्मब्रह्म१ नवम९ उग्रप्रभ ९हैं हीकी संतति जगतीमैं जाहिर जानी ॥ ४ ॥

याहीसमयके समीप इतकौं अवंतीके अधिराज उदयादित्यके पट्टप पुत्र प्रामारराज जगद्देवसौं भेंटनि कंकाली अपनी कवितासौं रिझाइ वहुतही वित्तें लेकैं औरहू नृपनसौं यथोचित रीझ पाइ अंतर्वेदी मैं अपनैं गृहगई ॥

---

१ जिसपीछे सिंहासन पर बैठा ॥ २ ॥ २ गोहिल ॥ ३ ॥ ३ जन्म ४समूह ५ कनोज के ६ आदि ७ सन्तान ८ पृथ्वी में ॥ ४ ॥ ९ स्वामी १०भाटनी ११धन

सो कितेक बरस बिताइ पश्चिमके भूपनसौं दान लैवेकौं ब
हौरिहु आवतभई ॥

तानैं राजधानी प्रति फिरतफिरत गौर्जरदेशमैं जगद्देवको औदार्य
अद्वितीय कह्यो ॥

तहाँ मूलराजहू जगद्देवके दयैंसौं दस१०गुनौं दैहौं ऐसी कहि
अत्यंत गर्बवह्यो ॥ ५ ॥

बंदिनी कह्यो जगद्देवके दानकौं कोऊ नृप कदापि न पावै ऐसे
विबाद बढतही कंकाली मालवको मार्ग गह्यो अरु मूलराजहू
सर्वस्वही दैवेकौं तयारहोइ रह्यो ॥

बंदिनी तो जावतही अवंती१ अनिहलपुर२के अंतरमैं एक१एक१
कोस प्रति अस्वनकी डाक जगद्देवसौं बनवाइ ताको मस्तकही
माँगत भई ॥

सो सुनतही उदयादित्यके अंगज महामुदित व्हैकैं वलि१ द-
धीच२ सिवि३ कर्ण४ बिक्रम५ भोज६ को वामधुर धारि स्वकीय
सयं करि अपनौं उत्तमांगं उतारिदयो ताकौं स्थालमैं लैकैं पुष्प-
नसौं ढाँकि अस्वनकी डाकमैं अनिहलपुर पहुँचि समज्ज्यापाइ
मूलराजकौं जगद्देवको दान दिखाइ कह्यो दोऊ२ दाननमैं कौन
जई ॥ ६ ॥

प्रामाररराजको मस्तक देखतही मूलराज मुख बिगारि सरबस्व
देन लग्यो ॥

ताको अनादर करि कंकाली कह्यो दीन होत सोहू दीनसौं न
माँगत यातैं मेरे कुलको तेरे कुलकेसौं कदापि न लैहैं ऐसो पन धा
रि अवंती आइ जगद्देवके देहको सीस सहित दाह करायो ॥

---

१ उदारता से २ जिसके समान दूसरा कोई नहीं
॥ ५ ॥ ३ भाटनी (भाट की स्त्री) ने ४ कभी ५ कङ्काली नामवाली ६ पुत्र ७
वाम धुर खींचनेवाले (वामधुर खींचनेवाले वृषभ को बल बहुत करना पड़-
ता है क्योंकि वह सदैव जोतीहुई जमीन में चलता है) ८ अपने ९ हाथ से
१० मस्तक ११ फूलों से १२ सभा में ॥ ६ ॥ १३ उज्जैन

अरु कितेक कहत यासौं देवी प्रत्यक्ष होतही तासौं अवंती आ-
य तत्कालही जिवायो॥

रायो१वायो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

कितेक मागध कहत उदयादित्यके छ ६ पुत्रनमैं पहिलो रन-
धवल१ दूजो२ जगद्देव२ हो सो अग्रजको निकास्यो सपत्नीकही
अनिहलपुर मूलराजके आश्रित जाइरह्यो उहाँ ही यह उदंत भयो॥
अरु कितेक कहत उदयादित्यके बडो जगद्देवहीहो परंतु वा-
के मृत्युके अनंतर वाहीके पुत्रकौं निकासिदयो ताको बंसतो
अद्यावधि गोर्जरदेसमैं विद्यमानहै अरु वाके पितृव्यके रनधवल
राज्य लैलयो ताको वंस मुख्य तामैं अग्रजको औरसक्यौं कह्यो
गयो ॥ ७ ॥

अरु हे बुंदींद्र कान्यकुब्जके अधिराज कामध्वज पुंजके पहिलैं
तेरह१३ पुत्र कहे तिनमैं तेरह१३ भेद राष्ट्रकूटनके कहे ते सुनिवे-
कौं श्रवन देहु ॥

बडो पुत्र धर्मब्रह्म१सोही बडे दानकरि दानेश्वर१कहायो ताके
अन्वयके दानेश्वरा१ रठोर भये तिनमैं मुख्यतो मरुदेसमैं स्वामी-
को स्वसुरसदन मंडपपुर१ पूर्वक जोधपुर२ एहु ॥

दूजो२ पुत्र भानुदीप२भयो ताके अन्वयके अभयपुरके आधि-
पत्यकरि अभयपुरा२ रठोर कहाये ॥

अरु तीजे३ पुत्र वीरचंद्र३के वंसके कपालीके प्रसादकरि

१बड़े भाई का २निकाला हुआ स्त्री सहित ३आधीन ४वृत्तान्त ५अब भी गुजरात देश में मौजूद है उसके ६काके रनधवल ने राज्य लेलिया उसका वंश. बड़े भाई का ७ औरस (विवाहिता स्त्री के उदर से उत्पन्न होवे उसको औरस कहते हैं) सो क्यों कहा ८ कन्नोज के स्वामी ९ कमधज (राठोड़) १० उस- के वंश के दानेश्वरा राठोड़ हुए तिनमें मुख्य तो मारवाड़ देश में ११हे स्वा- मी रामसिंह! आपके १२सुसरे का घर(जोधपुर के राजराजेश्वर महाराजा मानसिंह की पुत्री से बुन्दी के महारावराजा रामसिंह का विवाह हुआ था इससे मंडोवर और जोधपुर को सासरा कहा)१३ मंडोवर १४ महादेव की

कापालिक३ सुनिवेमैं आये ॥ ८ ॥

चोथे४ पुत्र अमरबिजय ४ के अन्ववायके कुरहगढके स्वामि-
त्व करि कुरहा४ सुनैं ॥

अरु पंचम५पुत्र सज्जनविनोदके ५ जल १ खट२ प्राय देसक
रि तथा जलप्रायखेट करि जलखडिया ५ तथा जलखेडिया ५
जानैं अर छट्ठे६ पद्मके बंसके बुगलान देसकरि बुगलानाँ६ सुनैं।

सप्तम ७ अहरके अहर ७ अष्टम ८ वासुदेव ८ के पारकेश्वर
पिनाकीके प्रसादकरि पारक ८ तथा पारकेस ८ ख्यातिमैं आये।

अरु नवम९ पुत्र उग्रप्रभ९के अन्वयके कोऊ कारन करि चं-
देल ९ दसम १० मुकुटमनि १० के बंसके वीरत्वकरि वीर १०
एकादसम ११ भरत ११ के कोऊ निदानकरि वरियाव११ तथा
बरियावर११ द्वादसम१२ कृपासिंधु१२ के कुलके रिपुनकौं क्षय-
रव देवे करि खैरवद१२ तेरहम१३ पुत्र चंद्र१३ के कुलके जयकरि
जयवंत१३ कहाये ॥

इनके अन्वयके ग्रंथनमैं मागधनके मत करि जिन जिन हेतुन
करि जो जो उपटंक जान्यौं सोसो सबही चित्तमैं न आयो ॥

यातैं इच्छानुसारं नामको फलितार्थ देखि चित्तमैं संभवके उ-
चित दीस्यो तैसैंही कहि दिखायो ॥

इनमैं चंदेल ९ नको तथा बरियावर ११ नको कोऊ युक्ति
करि सार्थ लिखिवेमैं मिथ्यासाहस दीसैं ॥

प्रसन्नता से ॥८॥ १स्वामीपन से. विशेषकरके जहां छै जल (नदियां) होवें उस देश को जलखट् कहते हैं जैसे बडी पांच नदियां बहने से पञ्जाब कहाजाता है. तथा २ जल से घिरेहुए खेड़े (छोटा ग्राम) के कारण ३ महादेव की प्रसन्नता से ४ वीरता से ५ किसी कारण से ६ नाश करने का शब्द (मारो मारो ऐसा) कहने से ॥ ९ ॥ इनके ७ वंशावलियों के ग्रन्थों में बड़वाभाटों के मत से जिन जिन ८ कारणों से जो जो ९ खिताब जाने सो सो सभी चित्त में नहीं आये इसकारण से १०ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) कहते हैं कि मेरी इच्छा के अनुसार नाम का ११अर्थ के सहित फल निकले ऐसे देख मन में सम्भव दीखे वे ही कहे १२झूठा हठ

अरु औरनके हू उपटंक लिखे तिनहूमैं जाजा कारन करि जेजे भेद लिखे तिनहूकी व्युत्पत्तिमैं असंगतिपाइ जैसी तुली तैसी विचारि कही हीसैं ॥ १० ॥

अरु इतकौं चंडासिराज रामदास१६४सौं राष्ट्रकूटी रानी प्रेमवती १६४।१मैं राजकुमार रामचंद्र१६५नैं जन्म लहि सर्वविद्याको संग्रह करि देवपुरके अधीस मंकुवानैं मल्लिनाथकी कन्या कोकिला १६५।१व्याहि पिताकेअनंतर पट्टपायो ॥

ताके राजकुमार भागचंद्र १६६ भयो तानैं पठंतापुरके प्रभु प्रामार प्रतापसेनकी पुत्री जयदेवी १६६।१ विवाहि पिताके अनंतर पट्टपाइ अपनौं जस चो४तर्फही चलायो ॥

भूप भागचंद्र १६६ के राजकुमार रूपचंद १६७ भयो सो अमर पुरके अधीस वघेल चालुक्य विजयभानुकी सुता स्यामा १६७।१ विवाहि पिताके अनंतर पट्ट पावत भयो ॥

अरु भागचंद्र १६६ के संग रानी जयदेवी १६६।१ हू सहगमन करि स्वर्गवास लयो ॥ ११ ॥

रूपचंद १६७ सौं स्यामा १६७।१ मैं राजकुमार १६८ मंडन भयो सो पिताके अनंतर पट्ट पाइ अनिहलपुरके अधीस चालुक्य चंद्रपालकी सुता सौभाग्यदेवी१६८।१विवाह्यो ॥

तासौं अवंतीके अधीस प्रामारराज लल्लनैं आसापूरनी दुर्गा की हाटकमयं अष्ट८भुज प्रतिमा प्रमुख वैभव समेत आसेरदुर्ग लैकैं अपनैं बंधु वारड प्रामार अभयराजकौं देदयो सो आखेटक्रीडामैं सुनतही देस१काल२विचारि चंडासिराज मंडन१६८चित्रकूटके राउल तेज-सिंहके समयमैं

१ खिताब २ शब्द की बनावट असङ्गत पाकर जैसी मन में जची तैसी ही विचार के साथ निश्चै ही कही है ३ झाला ४ पीछे ५ सोलंखी ६ सती होकर स्वर्ग गई ७ सोने की ८ मूर्ति ९ आदि १० शिकार खेलने में ११ चित्तोड के राउल * तेज-

*चित्तोड़ पर राउल तेजासिंह का विक्रमी सम्वत् तेरह सौ चौबीस में राज्य करना सिद्ध हुआ है इसकारण से मण्डन चहुवाण का समकालीन होना पाया नहीं जाता

मेवारदेसकी सीमापर आइ अपनैं पराक्रमकरि कछु देस दबाइ मंडनगढ नाम दुर्ग जाकौं अब मंडिलगढ कहैं सो बनाइ उहांको
अधीस बनि अपनौं नरेंद्रपनौं निवाह्यो ॥

या समयमैं राउल तेजसिंह चउसट्ठि ६४ बरसके बयमैं मरुदेशीय मंडपपुरके अधीस प्रतिहार अजरानसौं एक हायनमैं जुद्ध जीति वाहीकी पुत्री पिंगला जाडेचनकी दौहित्री परनिआयो ॥

तानैं आवतही अपनैं देसकी प्राची दिसाको प्रांत दबाइ चंडासि
राज मंडन१६८राज्य करतही पायो ॥ १२ ॥

सो सुनतही दुलहीकौं चित्रकूट पठाइ मंडनगढ आइ महा तुमुल करयो ॥

परंतु देस१तो लूटिलयो अरु दुर्ग२कौं न दाबि सक्यो तब अपनैं चित्तमैं चित्रकूट जाइ मंडपपुरके रनमैं मरी सेनाके संम्मित बहुरि बनाइ त्वरित लैलैहौं ऐसी आलोचि चित्रकूट आइ बहुरि
चण्डासिराज मंडन१६८के ऊपर चढाईपैं चित्त धरयो ॥

इतकौं याही समयसौं कछु पहिलैं नरउरके नरनाह कछवाहको बंधु ईश्वरीसिंह ढुंढाहरके पूर्वप्रांतमैं बडगुज्जरनके अमलमैं आइरह्योहो ताकै पुत्र सोढदेव भयो ताके कुमार दुर्लभराजनैं वा अवनीके अधीसनकौं मारि प्रामाररराजके गुन नेत्र नभ चंद्र १०२३ मित संवतमैं कार्तिक कृष्ण दसमी१०के दिन अपनैं पिताकौं वा प्रांतमैं दोसा१ भांडारेज२को आधिपत्य देकैं सुपुत्र कहायो ॥

सिंह के समय में १ मेवाड़ देश की २ मांडलगढ "इसके लिये मेवाड़ के इतिहास में लिखा है कि मांडलगढ को मांडिया नामक भील ने बसाया था जिसको मारकर महाराणा ने लेलिया" ३ मंडोवर के ४ एक वर्ष में ५ पूर्वदिशा ॥ १२ ॥ ६ भयङ्कर युद्ध ७ चित्तोड़ जाकर ८ मंडोवर के युद्ध में मरीहुई सेना के ९ प्रमाण अर्थात् उतनी ही सेना फिर बनाकर १० मन में विचार कर ढुंढाहड़ के ११पूर्वी हिस्से में १२उस भूमि के स्वामी को मारकर १३तिक्रमी सम्वत् एक हजार तेईस काती वद दशमी के दिन अपने पिता को ऐसे देकर दोसा और भांडारेज का१३ स्वामीपन देकर श्रेष्ठ पुत्र कहाया

याही दुर्लभराजसौं माँचीके रनमैं देवी जंबुवाइ प्रसन्नभई सोही अपनी कुलदेवता मानि ताके प्रसादकरि ग्वालेरको दुर्गहू अपनैं अधीन करि द्यौसा आयो ॥ १३ ॥

ता पीछैं मरहट्टनंके कटकको घेरा सुनि कुमार दुर्लभराज द्यौसासौं ग्वालेर जाइ वाही जुद्धमैं कुमरपनैंही अप्सरा वरतभयो ॥ ताके पुत्र काकिल ह्वो सो अपनैं पितामह सोढदेवके अनंतर आमेर नाम नगर बसाइ पिताके जीते प्रांत सहित उहाँको राज्य करतभयो इतकौं चित्रकूटके राउल तेजसिंह बडी बरूथिनी लैकैं मंडनगढ आइ चंडासिराज मंडन१६८सौं वहोरि च्यारि४ मास लस्यो ॥ तथापि दुर्गकौं न दाविसक्यो तव मंडपपुर१सौं जयपायो तैसैं मंडनपुर२सौं पराजय पाय द्वैरही वेर दर्पहीन होइ चित्रकूटमैं प्रवेस करयो ॥ १४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ वंशवर्णनान्तर्गतस्वसम्भवसमयचित्रकूटा-

---

जयपुर के इतिहास में एक पाषाण लेख से कछवाहों का राज्य ढुंढाड़ देश में विक्रमी सम्वत्६३३लिखा है सो सत्य प्रतीत होता है. देखो इतिहास राजस्थान पृष्ठ८८के नोट को. मूल में सम्वत्१०२३पृथ्वीराजरासा के लिखे अनुसार अपनी पुस्तकों में बनालिया है सो सन्तोषदायक नहीं है. इसी प्रकार पृथ्वीराजरासा में राजपूताना की बडी बडी रियासतों के सम्वतों में फरक करादिया है जिनका संशोधन करके पीछे सही करने में ताम्रपत्र और पाषाणलेख ही एक आधार है सो हमको स्मरण आवेगा वहां वहां लिखते जावेंगे नहीं तो पाठक लोक स्वयं भी विचारते जावें" १ यह एक गाम का नाम है जिसको मांच भी कहते हैं २ जम्बूवाइ नाम की देवी ३ प्रसन्नता से ॥ १३ ॥ ४यहां मरहट्टा शब्द का प्रयोग करने से किसी दक्षिणी राजा से प्रयोजन होवेगा ५ काम आया अर्थात् युद्ध में मारागया६ दादा(दुलहराय कंवरपदमें मारेगये इसकारण से दादा के पाट काकिल बैठा) ७ विजय किये हुए ८ सेना ॥ १४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चौथे राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर अपने सम्भव समय में चित्तोड़ के अधीश रावल योगराज का नित्य ब्राह्मण को मारना, उसके पुत्र वैरिजित का अपने

धीशराजकुलयोगराजानित्यब्रह्महत्याकरण १ तत्पुत्रवैरिजिन्नि-जजनकमारण २ कान्यकुब्जभूपतिकलिवर्जहयमेधकरण ३ परिणीतचापोत्कटीप्रभावती १६०।१ कचराडासिराजकुमारनृसिंह १६० पितृपट्टप्रापण ४ तदौरसहरिवंश १६१ यादवीदया १६१।१ विवहन ५ धृतच्छत्रहरिवंश १६१ पुत्रहर्यशो १६१ वार्हगौर्जरीहंसावती १६२।१ पाणिपीडन ६ तदौरसकुमारसदाशिव १६३ गोभिलीपद्मावती १६३।१ परिणयन ७ तदौरसकुमारराम-दास १६४ पितृपट्टप्रापण ८ सदाशिव १६३ सहधर्मिणीपद्मावती-१६३।१ सहगमन ९ रामदास १६४ राष्ट्रकूटीप्रेमवत्यु १६४।१ पयमन १० कान्यकुब्जाधिराजपुञ्जपुत्रत्रयोदशो १३ द्यूतदानेश्व-रादिराष्ट्रकूटकुलत्रयोदश १३ भेदप्रकटन ११ विशालेश्वरप्रामा-रराजजगद्देवकङ्कालीवन्दिन्यर्थस्वशिरोदान १२ रामदास १६४ प्रेमवत्यौ १६४।१ रसकुमाररामचंद्र १६५ मांकुवाणीकोकिलो-१६५।१ द्वहन १३ तदौरसभागचंद्र १६६ प्रामारीजयदेवी १६६।१ पाणिपीडन १४ तत्पुत्ररूपचन्द्र १६७ चालुक्यीश्यामा १६७।१ प

पिता को मारना, कन्नोज के राजा का कलियुग में मना किये हुए अश्वमेध का करना, चावड़ी प्रभावती का विवाह करके चहुवाण राजकुमार नृसिंह का पिता के पाट बैठना, उसके औरस पुत्र हरिवंश का यादवी दया को विवाहना, छत्र धारण करके हरिवंश के पुत्र हर्यश का बडगुज्जरी हंसावती को विवाहना, उसके उर से पैदा हुए कुमार सदाशिव का गोभिली पद्मावती को विवाहना, उसके औरस कुमर रामदास का पिता के पाट बैठना, सदाशिव के साथ उनकी विवाहिता स्त्री पद्मावती का सती होना, रामदास का राठोड़ी प्रेमवती को विवाहना, कन्नोज के स्वामी पुंज के तेरह पुत्र होना, दानेश्वरा आदि राठोड़ों के कुल में तेरह भेद प्रकट होना, बड़े ऐश्वर्य-वाले प्रामारराज जगत्देव का कङ्काली नामक भाटनी के अर्थ अपना मस्तक दान करना, रामदास प्रेमवती के औरस कुमार रामचन्द्र का झाली कोकिला को विवाहना, उसके औरस भागचन्द्र का प्रमारी जयदेवी से विवाह करना, उसके पुत्र रूपचन्द्र का सोलंखिनी श्यामा के साथ विवाह करना, भागचन्द्र की विवाहिता स्त्री जयदेवी का सती होना, जयचन्द्र और श्यामा के औरस कुमार मंडन का पाट पाये पीछे

रिणायन १५ भागचन्द्र १६६ सहधर्मिणीजयदेवी १६६।१ सहगमन १६ रूपचन्द्र १६७ श्यामो १६७।१ रसकुमारमण्डन १६८ पट्टप्राप्त्यनन्तरचालुकीसौभाग्यदेवी १६८।१ विवहन १७ प्रामारल्लल्लमण्डन १६८ राज्यसमाक्रमण १८ तत्पलायितमण्डन १६८ मेदपाटसीमाप्रान्तस्वनामदुर्गनिर्माण १९ चित्रकूटराजराजकुलतेजःसिंहसमासमरपरास्तमण्डपपुरेणप्रतिहाराऽजराणपुत्री पिङ्गलापरिणायन २० प्रत्यागतमण्डन १६८ परास्तराजकुलतेजःसिंहचित्रकूटागमन २१ नलपुरनृपबन्ध्वीश्वरीसिंहढुण्ढाडपूर्वप्रान्तागमन २२ समाक्रान्तद्योसादिराज्यप्राप्तदेवीजम्बुमातृप्रसादतत्पुत्रदुर्लभराजग्वालेरयुद्धवीरशय्याशयन २३ तत्पुत्रकाकिलामैरनगरनिर्माण २४ महीपमण्डन १६८ रणराजकुलतेजःसिंहपुनःपराभवन २५ मष्टाविंशो ७८ मयूखः ॥ २८ ॥ आदितस्सप्तत्रिंशदुत्तरशततमः ॥१३७॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

॥ सचरणगद्यम् ॥

इतकौं याही समयके समीप म्लेच्छनमैं[1] खुरासानदेसमैं गजनी सहरको अधीस स्वकीयैं स्वामीके सासनके अनुसार[2] अलब भयो

सोलंखिनी सौभाग्यदेवी से विवाह करना, प्रामार लल्ल का मंडन के राज्य को घेरना, उससे भागकर मंडन का मेवाड़ की सीमा प्रान्त पर अपने नाम का किला बनाना, चित्तौड़ के राजा राउल तेजसिंह का एक वर्ष युद्ध करके हारेहुए मंडोवर के प्रतिहार अजराण की पुत्री पिंगला से विवाह करना, पीछा आकर मंडन से हारकर राउल तेजसिंह का चित्तौड़ आना, नरवर के राजा के भाई ईश्वरीसिंह का ढुंढाड़ के पूर्वी प्रान्त में आना, देवी जंबुवाइमाता की प्रसन्नता से द्योसा आदि को घेरकर राज्य प्राप्तकर उसके पुत्र दुर्लभराज का ग्वालेर के युद्ध में काम आना, उसके पुत्र काकिल का आमेर नगर बनाना, राजा मंडन के युद्ध में राउल तेजसिंह का फिर पराजय होने का अट्ठाईसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २८ ॥ और आदि से एक सौ सैंतीस मयूख हुए ॥ १३७ ॥

१ म्लेच्छों में २ अपने मालिक के हुक्म के अनुसार

जाकौं अपनैं प्रभुनैं स्वकीय परिचर्यामैं[1] प्रगल्भ[2] पेखि रज्जुपुत्तलिका ज्यौं[3] जानि आवन जावनमैं विलंब न विक्खि[4] सुबुक्तगीं को खिताब दयो ॥

सोहू स्वामीके सासन समान आर्यावर्त्तकी सीमा करतोया[5] के परतट[6] पर्यंत प्रत्यन्तमैं[7] प्रागल्भ्य प्रसारि[8] उतके आवापसौं[9] अपनैं अधिपतिके[10] आनन्द आनि अटकके पारको आधिपत्य सम्हारि रह्यो ॥

यासमयमैं बुखारेको वादसाह अमीर मनसूर वडे प्रतापकरि केही बिलायतको अधीस[11] भयो ताको गुलाम यह अलव हो[12] ताकौं स्वामिधर्ममैं सावधान जानि खुरासानको अधीस कियो तानैं स्वामीके सासनकरि सहर गजनीको आधिपत्य लह्यो ॥ १ ॥

या अलबके पुत्र नासरुद्दीन भयो तानैं पिताके अनंतर खुरासानको आधिपत्य पाइ बुखारेको सासन सदाही सीसपैं धारि तीनसैं सतसठि ३६७ के हिजरी संवतमैं अपनैं पुत्र महमूद सहित अटक नदीके वार आइ लाहोरके राजा जयपालसौं जंगकरि मुलतान१लमगान२ द्वै२ ही देस दाविलये तहाँ अपनैं मतके देवालय[13] वनाय अपनैं हाकिम राखि गजनी गयो ॥

तापीछे जयपालहू जवनके जीते द्वै २ ही देस पीछे लैकैं अपनैं अधीन करत भयो ॥

यहै सुनतही साहबजादे महमूद सहित सुलतान नासरुद्दीन सुबुक्तगीं वहोरि करतोया[14] लंघि आयो ॥

जासौं जयपालहू घनैं दिन जंगकरि अपनी अभिधाको अर्थ[15] अलभ्य[16] जानि जवनेससौं ऐसो बचन कहायो ॥ २ ॥

१सेवा में२होशियार३रस्सी से बंधीहुई पुतली के समान४देखकर५अटक नदी के६पार के किनारे तक७म्लेच्छों में८होशियारी फैलाकर ९ शत्रु मिटाने की चिन्ता से१०मालिक के ११ मालिक १२ था ॥ १॥१३मसजिद१४अटक नदी १५अपने नाम का अर्थ १६ दुर्लभ अर्थात् नहीं मिले जैसा(उसका नाम जयपाल था सो विजय का पालन नहीं होता देखकर) ॥ २ ॥

देसतो हमरे हमहीकौँ देकैँ इनको महसूल *दरसाल मरजी
होइसो लैबो करो ॥

यह बात जवनेसके पुत्र महमूद तो न मानी ताकौँ मनाइ नासरु
द्दीन कहाई दरसाल दसहजार१०००० ÷द्रम्मपंचास५०हस्तीदेबोकरो
सोही स्वीकार करि बादसाहको कुंच पीछो कराइ जयपालनैं
महसूल देवेको बहानौँ करि वाके भृत्य लाहोरमैं लाइ कैदकरे॥

यहै जानतही जवनेसहू बहोरि आइ जंगकरि जयपालकौँ भ–
जाइ सिंधुनदी जाकौँ नीलावहू कहै ताके परतट पर्यंत अपनौँ
अमलकरि मुद्रामैं अपनैं नामको सिक्का खुदवाइ तुरकमान म्ले-
च्छनकौँ उहाँ हाकिम राखि लाहोरकी सीमाके अनेक सहर लूटि
गजनी लेगयो केही करभ वित्त भरे ॥ ३ ॥

जाही समयमैं बुखारेके बादसाह सामानी पठान अमीर मन–
सूरके पुत्र अमीर नूहनैं उमराव बदले जानि सहाय माँगिवेकौँ
वकील अबूनसर गजनी पठायो ॥

ताकी सुनतही नासरुद्दीन बडी फौज लैकैँ बुखारेकौँ गयो ताकौँ
सुनि अमीरनूह सम्मुह आयो जाकौँ देखतही अलबको अंगज
अस्वसौँ उतरि चरन चुंबनकौँ गयो ताकौँ उरसौँ लगाइ पीछो
हयचढाय अमीरनूह बुखारेमैं आयो ॥

पीछैँ याकैँ संगही अमीरनूह मावरुन्नहर सहरके मालिक अ–
पनैं उमराव समजूरी पठान अबूअलीसौँ जाइ जंगकियो अबूअ–
ली भाजि कुलात गयो इनहू उहाँ जाइ जोरदियो अबूअली १ कु
लातके हाकिम २ द्वै २ ही पलाइ नैसापुरके हाकिम फकरुद्दो–
ला ३ के पासगये उहाँहू इननैं जाइ घेरे तब फकरुद्दोला सहित
तीन३ही भगजि बद्धाँ गये तहाँहु जाइ जंगकरि जय पाइ बद–
हाकिमसहित च्यारि४नकौँ कैदकरि बुखारे आवतही तीनसत

*हरसाल खिराज ÷ रुपये १ खिराज २ नौकर ३ परले किनारे ४ रुपये में५
म्लेच्छों में जातिविशेष ६ ऊंट धन के भरे हुए ॥ ३ ॥ ७ सुबुक्तगी का पुत्र

सत्यासी३८७ मित हिजरी संवतमैं छप्पन५६बरसको वय पाइ ना-
सरुद्दीन मर्‍यो ॥

याको बडो पुत्र महमूद संगही हो ताको अनुज इस्माईल गज-
नी हो सो पिताके मृत्यु सुनतही अनर्थ करि गद्दी बैठिगयो ताकी सु
नि महमूद महागभीर संपन्न संतुष्ट नैसापुर ही रहिगयो जितकमैं तो
जरूरहो याके अनुजकी अनीति करि गजनीको लोक जाइ पुका
र्‍यो तब महमूद लिखी गद्दी दैबो मंजूरहै पै रय्यतकौं खराब कियँतो
जरूर कैदकरूँगा सोहू न मानि वाही राह परिरह्यो सुनि सुलतान
महमूदनैं गजनी आइ अपनैं अनुज इस्माईलकौं कैदकरि नासुरु-
द्दीनके बससैं हो सो सब अपनैं अधीन कर्‍यो ॥ ४ ॥

याहीकी हाकिमीमैं सीस्तानमैं सुवर्णकी खानि निकसी तापी-
छै अमीरनूहनैं फिरि लिखी उहाँका बंदोबस्त करि इहाँ आवो अ-
बतुमको बलक१हिरात२कीहूहाकिमी देहैं ऐसोहुक्मस्वामिकोसुनि
महमूदहू चल्यो जितनैं बलकके पहिले हाकिम बक्तोजनूनैं बुखारे
जाइ अमीरनूहसौं अपनीही हाकिमी पीछी पाइ स्वामीको हुक्म
महमूदपैं यहै पठायो कि बलकपैंतो बक्तोजनूही रहैगो सो सुनि
महमूद नैसापुरही मुकामराखि अपनौं वकील अबुलहसनू भेजि
कहाई पहिलैं क्यौं बुलायो सो अबुलहसनू जाइकही तहाँ बक्तो
जनूके कहेसौं अमीरनूहनैं महमूदको वकीलहू भेददारि उतसौं
फोरि अपनौं वजीर करि लयो ॥

ता पीछैं बक्तोजनू बलकसौं ऐसी लिखी अपनी नैसापुरकी
जमीन महमूद लेताहै सो सुनि नूह चढिआयो ताकी जानि स्वा-
मीसौं लरिबो अनुचित मानि महमूद मुरगाबकी तरफ टरिगयो
जानि नूह नैसापुर आयो तहाँ बक्तोजनूनैं नूहको पहिलो वजीर
फायक १ दूजो २ नयावजीर महमूदको वकील अबुलहसनू३इ
नदोउन२कौं मिलाइ मालिकके नेत्र निकासिडारे सोतो वाही बंद

१अनीति२गहराई३के४साथ सन्तोषी४अपने में मिलालिया५उसी पीड़ा स

नांसौं मरिही गयो अरु वाके अनुज अब्दुलमुल्ककौं बुखारे-
की गद्दी वैठारि बक्तोजन् मुरगाबके समीप महमूद हो तापैं चढि
आयो तहाँहु महमूद बडो जंग करि जबरदस्त भयो ताके डरसौं
फायक१तथा अबुलहसन् जो अबदुलमुल्ककौं लैकैं बुखारेमैं जाइ
वैठे अरु बक्तोजन् नैसापुर आयो सुनि मुरगावसौं महमूदनैं आइ
मारयो अरु उतकौं सगरको बादसाह ईलक बुखारे आइ फायक१
अबुलहसन२सहित अबदुल्मुल्ककौं मारि बुखारेको अधीस भयो
यहै सुनतही महमूद बल्कमैं अमलकरि हिरात२कौं अधीन आनि
सीस्तान३ सांसितकरि नभनंद गुन ३९०मित हिजरीसन्मैं गजनी
आइ अपनैं वकील अबूतय्यवकौं बुखारे भेज कहाई हमारो मा
लिक मारि मालिक भयो यातैं अब जोरहोइतो जंग देहु ऐसी सु
नि ईलकमहमूदकौं बडो बहादुर जानि तावेदारी कुंबूल करि व-
कीलके साथ केही तोफा भेजि गजनीपति महमूद प्रसन्न करयो॥
तापीछैं ही भू निधि राम ३९१मित हिजरीसन्मैं महमूद बहुरिहू
अटक उलंघि पेसोरदेस पर्यंत आइ एक१मास जंगकरि लाहोरके
अधीस जयपालकौं पकरि पठंतेके दुर्गमैं कैदकरि उहाँही अपनैं
मुकाम राखि सीतकाल पर्यंत रहि जयपालसौं करं देवो लिखाइ
लाहोर भेजदयो सो आवतही महमूदके डरसौं अपनैं पुत्र आनंद
पालकौं राज्यदैकैं ज्वलनमैं जरयो ॥ ५ ॥

तापीछैं त्रि नंद गुन ३९३मित हिजरीसालमैं सुलतान्महमूद-
सुबुक्तगीं बहोरिहु अटक उलंघि मुलतानकी सीमामैं सहर भत-
नैंके भूप विजयराजसौं तीन३ अथवा च्यारि४दिन जंगकीनों वि-
जयराज भज्यो ताकौं पृतना पठाइ घिराइलयो तब विजयराज
आत्महत्याकरि मरतभयो ताको सिर काटि महमूदके सुभट मा-
लिक पास लाये तापीछैं महमूद भतनैंकौं लूटि गजनी गयो ॥

१दबिडत२मंजूर३खिराज ४ आगिन में जलगया ५ फौज भेजकर ६आपघात

अरु कितेक कहत बुखारेको बादसाह अलबको स्वामीतो अ-
मीरनूह हो अरु ताके पुत्र अमीरमनसूर भयो॥

तापीछैं सुलतानमहम्मूदगजनवीनैं आर्यावर्तमैं बहोरि आइ सो-
मनाथ सिवको लिंग तोरिबो विचारयो ताकौं सुनि बहुतही आ-
र्यावर्तके अधीसन आइ सुबुक्तगीसौं जंग रच्यो ॥
परंतु दैवके प्राबल्यकारि पचासहजार५०००० आर्यन माँहिंसौं
एक१ न बच्यो ॥

तबतो जवनकौं जबरजानि इहाँके भूपननैं नम्रतापूर्बक महमूदसौं
कहाई हमसौं आठकोटि८०००००० रुपय्ये उपदाके लैकैं मह-
रबान होइ हमारे परम दैवतको लिंग तोरिबेको इरादा छोरिदेहु ॥
सोहु न मानि सोमेश्वरके लिंगकौं करपत्रसौं चिराइ तामाँहिं
सौं निकसे रत्न आठकोटि मुँद्राहूसौं अधिक अर्घके हे तिनकौं
लैकैं बहुतही आर्यनको बिनासकरि सोमेश्वरके मंदिरके कपा-
टन सहित गजनी लैगयो एहु ॥

या रनमैं अनिहलपुर१ के अधीस चालुक्य विजयपाल १भुज
पुर२के भूप जाडेचा कर्मसेन२ मौरवी३ के महीप मंकुवान धीरदे
व३ सिरोही ४ के अधीस देवडा९ महीराज ४ जालपुर ५ के अधी
स सोनगिरा ७ रनधवल ५ बल्लोत्र ६ के स्वामी संचोरा३४ जय
देव ६ नगरकोट ७ के महीप जादव नारायण ७ ऊमरकोट ८के
अधिराज सोढा सत्रुसाल ८ जैसलमेरु ९ के अधीस भट्टी मूलरा
ज ९ ईडर १० के नरेस गोभिलचंद्रसेन १० रैवत के अधिराज
सरबहिया सूरराज ११ प्रमुख पश्चिमके प्रांतके छोटे रु बडे अनेक
राजा मरे

अरु अपनैं धर्मकी रक्षाकरन संचोरको अधीस संचोरा ३४ चहु

---

१ भाग्य की प्रबलता से २ भेंट के ३ करवत (करोंत) से ४ रुपयों
से ५ कीमत के थे ६ झाला ७ जालोर ८ कच्छ भाटी९ आदि

वान रनधीर१ तथा याके सोदर जयमल्ल२ त्रिलोचन३ अरु उरथ वंसीय वकुट६० चहुवान बुधसेन४ जंगलूको पामार अल्हन इत्यादिक महावीर जावते महमूदकी सेनाएँ सौप्तिक दैकैं म्लेच्छकों भजाइ घायन परे ॥ ७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ चतुर्थ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ वंशवर्णनान्तर्गतमत्यन्तचरित्रे बुखारेश्वराऽमीरमन्सूरस्वदासाऽलवार्थखुराशानाधिपत्य १ सहितसुबुक्तगीं पद २ प्रदान १ तन्मरणानन्तरतत्पुत्रनाशुरुद्दीनपरास्तलाहोरनृपजयपालदेशद्वय २ समाक्रमण २ तत्स्थानस्थापितस्वमतोचितदेवालयम्लेच्छराजगजनीगमन ३ पश्चाज्जयपालम्लेच्छजितस्वदेशद्वय २ प्रत्याक्रमण ४ श्रुततदुदन्तप्रत्यागतससुतनासुरुद्दीनपरास्तजयपालतद्देशद्वय २ पणीकृताऽयुत १०००० रौप्यकपञ्चास ५० द्विजप्रतिवर्षढौकनाङ्गीकरण ५ तत्प्रस्थानानन्तरजयपालतद्भृत्यकारामक्षेपण ६ श्रुततद्वृत्तपुनरागतयवनराजभीतजयपालपलायन ७ प्रत्यन्तराजसिन्धुसरित्परतटपर्यन्तसमाक्रान्ततद्देश—

---

१ रतिघाह ॥ ७ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थ राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर यवनों के चरित्र में बुखारे के बादशाह अमीर मनसूर का अपने नौकर अलप के लिये खुराशान के मालिकपन के साथ सुबुक्तगीं को खिताब देना, उसके मरे पीछे उसके पुत्र नाशुरुद्दीन का हारेहुए लाहोर के राजा जयपाल के देशों को घेरना, उस स्थान पर अपने मजहब की मस्जिद बनाकर बादशाह का गजनी जाना, पीछे जयपाल का म्लेच्छ के विजय कियेहुए अपने दोनों देशों का पीछा लेना, सो वृत्तान्त सुनकर नाशुरुद्दीन का अपने पुत्र सहित पीछा आकर हारेहुए जयपाल के दोनों देशों को खिराज युक्त करके दश हजार रुपये और पचास हाथी हरसाल नजराना देने को मंजूर करना, उसके गये पीछे जयपाल का बादशाह के नौकरों को कैद करना, वे समाचार सुनकर फिर आयेहुए बादशाह के भय से जयपाल का भागना, बादशाह का अटक नदी के परले किनारे तक लेकर उन देशों में अपने नाम से जाना जावे ऐसे म्लेच्छों के मत

स्वनामाङ्कितम्लेच्छमतमुद्राव्यवहारप्रवर्तन ८ बुखारेश्वरप्रतीप-स्वभटसमाक्रमणसहायार्थसमाहूतनासुरुद्दीनबुखारागमन ९ द मिततत्सामन्तचतुष्क ४ नासुरुद्दीनमरण १० तत्सुतमहमूदस्वानुजार्थस्वाधिपत्यसमर्पण ११ पश्चात्श्रुततदनयसमागतकाराक्षिप्तानुजमहमूदस्वराज्यसमासादन १२ तद्राज्यसङ्गतसीस्तानप्रान्तसुवर्णखानिनिष्कसन १३ पुनः स्वामिसमाहूतमहमूदनैशापूरपर्यन्तगमन १४ सूचकवक्तोजनशिक्षितस्वामीतदागमनिवारण १५ प्रत्युतमहमूदप्रेपितवकीलाऽबुलहसनस्वसचिवीकरण १६ तत्पराभवार्थस्वयमभिषेणन १७ निजस्वामिनूहप्रतिसल्लत्वकातरमहमूदमुरगावपलायन १८ फायका १ बुलहसन् २ सहितवक्तोजन ३ निजनाथनूहनेत्रनिष्कासन १९ नूहानुजाऽब्दुलमुलकतद्गाद्दिकोपवेशन २० पश्चादेकीभूतदुष्टचतुष्टयमहमूदमारणोपायरणरचन २१ महमूदत्रस्ततत्रय ३ बुखाराप्रद्रवण २२ वक्तो

के रुपये वर्ताव में जारी करना, अर्थात् अपने नाम का सिक्का चलाना, बुखारा के बादशाह के प्रतिकूल हुए उमरावों पर चढाई करने के सहाय के लिये नाशुरुद्दीन का बुखारे जाना, उनके चार उमरावों को दण्ड देकर नाशुरुद्दीन का मरना, उसके पुत्र महमूद का अपने छोटे भाई के लिये गद्दी देना, पीछे उसकी अनीति सुनकर वहां आकर छोटे को कैद करके अपना राज्य लेना, उस राज्य के साथ सीस्तान प्रान्त में सोने की खान का निकलना, फिर मालिक के बुलाये हुए महमूद का नैशापुर तक जाना, चुगली खाने वाले वक्तोजन के सिखाये हुए स्वामी (नूह) का महमूद को आगे आने से उलटा फेरकर महमूद के भेजे हुए वकील अबुलहसन को फोड़ कर अपना मन्त्री बनाना, उसको हराने के लिये नूह का खुद जाना, अपने स्वामी नूह के प्रति साल होने से कायर महमूद का मुरगाव भागना, फायक अबुलहसन सहित अपने मालिक नूह के नेत्र निकालना, नूह के छोटे भाई अब्दुलमुल्क का नूह की गद्दी पर बैठना, पीछे फिर चारों दुष्टों का एक होकर महमूद को मारने के लिये युद्ध करना, महमूद से डरकर तीनों का बुखारे भागना, और वक्तोजन का नैशापुर भागना, यह समाचार सुनकर नैशापुर में जाकर महमूद का वक्तोजन को मारना, बुखारा में जाकर सगर देश के बादशाह ईलक का फाय-

ज़न नैशापुरपलायन २३ श्रुततदुदन्तनैशापुरागतमहमूदव-
क्तोजनविध्वंसन २४ बुखारागतसगरदेशीयम्लेच्छराजेलकफा
यका १ बुल्हसन् २ सहिताऽवदुल्मुल्क ३ निपातन २५ स-
माक्रान्तबल्क १ हिरात २ सीस्तान ३ महमूदबुखारेश्वरीभूते-
लकसमीपस्वामिवैरवालनयुद्धार्थस्ववकीलाऽवुतय्यवप्रेपण २६
श्रुतैतदीलकमहमूदाश्रितीभवन २७ लङ्घितकरतोयापुनरागतमह
मूदपराजितवन्दीकृतजयपालपठन्नादुर्गप्रस्थापन २८ स्वीकृतभृ
त्यत्वमुक्तलाहोरसमागतदत्तपुत्रार्थपट्टजयपालपावकप्रविशन२९
गजनीगतमहमूदपुनरार्यावर्त्तसीमागमन ३० घातितभतनेश्वर-
विजयराज १ यवनराजपुनःप्रतिगमन ३१ बुखारेश्वर २ पौर्वा
पर्यसंशयसूचन ३२ पुनरागतयवनेन्द्रमहमूदसोमनाथशिवलिङ्ग
विदारण ३३ तन्निवारणस्वीकृताष्टकोटि ८००००००० द्रम्मचा
लुक्यविजयपाल १ सूरराज २ यादवकर्मसेन ३ नारायण ४ मू
लराज ५ मंकुवाणधीर ६ चाहुवाणमहीराज ७ रणधवल ८ ज
यदेव ९ प्रामारशत्रुशल्य १० गोभिलचन्द्रसेन ११ प्रमुखपाश्चा

क और अबुलहसन सहित अब्दुलमुल्क का मारना, बलक हिरात सीस्तान लेकर महमूद का बुखारे के मालिक हुए ईलक के पास अपने मालिक का वैर पीछा लेने को युद्ध के लिये अपने वकील अबूतय्यब को भेजना, यह सुनकर ईलक का महमूद का तावेदार होना, अटक नदी लांघकर महमूद का फिर आकर हारेहुए अजयपाल को पठन्ता के गढ में रखना, खिराज देना मंजुर कर छूटके लाहोर आकर पुत्र को पाट बिठाकर अजयपाल का अग्नि में प्रवेश करना, गजनी गयेहुए महमूद का फिर आर्यावर्त्त की सीमा में आना, भतना के राजा विजयराज को मारकर बादशाह का पीछा जाना, बुखारे के बादशाहों में पहले कौन हुआ पीछे कौन हुआ इस सन्देह का जनाना, फिर आये हुए महमूद का सोमनाथ महादेव के लिंग को तोड़ना, उसको मना करने के लिये आठ क्रोड़ रुपये देना स्वीकार करके सोलंखी विजयपाल १ शूरराज २ यादव कर्मसेन ३ नारायण ४ मूलराज ५ झाला धीर ६ चहुवाण महीराज ७ रणधवल ८ जयदेव ९ प्रामार शत्रुशल्य १० गोहिल चन्द्रसेन ११ आदि पश्चिम देश के राजाओं के समूह सहित पचास हजार आर्यसमूह का उस रण में मरना, बाकी के आर्यों के समूह का

ल्यपार्थिवगणसहितपञ्चाशत्सहस्र ५०००० यवनानुचरमरणम् ३५ खिन्नानेकार्यप्रकम्पकारकप्रापणम् ३६ सकलनगरशिवालयकपाटद्वय सहितशिवलिङ्गनिष्कासितमणिगणगजनीसमानयनं ३७ मेकोनत्रिंशो २९ मयूखः ॥ २९ ॥

आदितोऽष्टात्रिंशदुत्तरशततमः ॥ १३८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

[सचरवागद्यम्]

इतकौं मंडनगढके अधीस चंडासिराज मंडन १६८ सौं रानी सौभाग्यदेवी १६८।१ मैं राजकुमार आतमागम १६९ जन्मलयो॥

सो ईडर नरेस गोभिल्ल चंद्रसेनकी पुत्री प्रतापदेवी१६९।१कौं परनि पिताके अनंतर मंडनगढको अधीस भयो॥

नरेंद्र आत्माराम १६९ सौं रानी प्रतापदेवी १६९।१ मैंराजकुमार आनंदराज १७०।१ जयराज १७०।२ ह्वै २ ही सोदर जन्म पायो ॥

तिनमैं अग्रज आनदंराज १७०।१ तो दिल्लीके अधीस तोमर अनंगपालके सामंत राजकोटके राजा प्रतिहार पूर्णमल्लकी दुहिता अरु कमलाकी सखी ऐसी दयावती १७०।१ कौं विवाहि जनकके अनंतर मंडनदुर्गको अधीस कहायो ॥ १ ॥

इतकौं चित्रकूटके अधीस राजकुल तेजसिंहकै प्रतिहारी पिंगलामैं पुत्र समरसिंह भयो ॥

तासौं बत्तीस ३२ बरस पीछैं अजमेर नगरके अधीस चंडासिराज सोमेस्वरसौं तोमरी रानी कमलामैं राजकुमार पृथ्वीराज जन्म लयो॥

प्रहार पाना, बादशाह का शिव के मन्दिर के दोनों किवाड़ों सहित उस लिंग से निकालेहुए मणियों को गजनी लेजाने का उनतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २९ ॥ और आदि से एक सौ अड़तीस मयूख हुए ॥ १३८ ॥

पिता के पीछे १ मांडलगढ को ॥ १ ॥ २ चित्तोड़ के स्वामी राउल तेजसिंह

यासमयके समीप इतकौं गजनीके बादसाह महम्मद सुबुक्त-गींके अनंतर गोरदेसके गोरीपठान अफगान सहाबुद्दीन बडे बल करि खुरासानको आधिपत्य पाइ गजनीकी गद्दीबैठि केही बि-लायत अपनैं आदेसके अधीन करि आर्यावर्त्तमैंहू अनेकबेर आयो॥ ताहूको संक्षेप चंडासिराज पृथ्वीराज १७७ के चरित्रमैं कहि दिखायो ॥ २ ॥

या समयसौं कछु पूर्व कान्यकुब्जके अधीस राष्ट्रकूट अभयचंद्र के पुत्र नरेंद्र विजयचंद्र दाक्खिन बिहीनें आर्यावर्तमैं दिग्विजयकरि बंदी अमरकौं एकअब्ज १००००००००० रजत मुद्रा दई ॥ या विजयचंद्रके पुत्र जयचंद्र भयो सोहू बंदिनकौं द्वै २ अब्ज २०००००००००दै रु अपनैं प्रताप प्रपन्न पृतनाके प्राचुर्यकरि पंगु पद पाइ आर्यावर्त्तमैं कहायो एकजंई ॥

याही समयके समीप अनिहल्लपुरके अधीस चालुक्यराज वि-जयपालके पुत्र भोलारायभीम पिताके अनंतर पंच५सिख पट्टलयो॥ अरु इतकौं मंडपपुरके महीप प्रतिहार अजरानको पुत्र नरेस ना-हरराज तीर्थगुरु पुष्करके प्रसादकरि अपनैं कुंद्द बिहाइ पुष्करके मध्य कुंडकै सबही धातुमय सोपानैं बनावत भयो ॥ ३ ॥

इतकौं द्योसाके अधीस कूर्म जन्हडदेवको पुत्र पज्जुराणा अपनैं पुत्र मलयसिंह सहित स्वकीय अल्प राज्यको प्रबंधकरि बडे पटाके लोभ१ तथा पूर्वप्रोक्त प्रसंग२करि अजमेर राजकुमार पृथ्वीराज

से (समरसिंह पृथ्वीराज का समकालीन नहीं था जिसका वृत्तान्त हम कुछ आगे चलकर लिखेंगे) १ स्वामीपन २ आज्ञा ॥ २ ॥ ३ कन्नोज के ४ राठौड़ ५ दक्षिण के बिना ६ चांदी के रुपये, इस विजयचन्द्र के पुत्र जयचन्द्र हुआ भाट लोगों को दो अड़ब रुपये देकर अपने प्रताप से ७ प्राप्त कीहुई सेना की ८ विशेषता (बहुतायत) से ९ चरण विहीन (पांगला) पन का पद पाकर आर्यावर्त्त में १० विजय करनेवाला कहाया. ११ सिंहासन १२ मण्डोवर का राजा १३ प्रसन्न होने से १४ कोढ मिटाकर १५ पैड़ियें बनाईं ॥ ३ ॥ १६ कछवाहा १७ अपना १८ छोटे से राज्य का १९ ऊपर कहेहुए प्रसंग से अर्थात्

के आश्रित गयो ॥

अरु कान्यकुब्जके[1] नरेस जयचंद्रहू आर्यावर्तके दिग्विजयकरि दक्खिनके प्रयानमैं प्रामारराज नृसिंहके पुत्र अमानसौं मालव छीनि

अवंतीसौंहु[2] निकासिदयो ॥

चंडासिराज आनंदराज१७०।१को अनुज जयराज१७०।२ अपनैं मातुल[3] गृह ईडर गयोहो तहाँहीं अजयगढके अधीस चालुक[4] चतुर्भुजकी पुत्री पुष्पावती१७०।१ परनि सपत्नीकही अजमेरके अधीस चंडासिराज सोमेस्वरके आश्रित पहिलैंही जाइरह्योहो सोतो नरेंद्र सोमेश्वरनैं दिल्लीके अधीस तोमर अनंगपालको सहायकरि कान्यकुब्जके नरेस दिग्विजई विजयचंद्रकों वाहुवल करि पराभव दयो ॥

अरु ताको पुत्र अक्षयराज१७१ सोहू सोमेश्वर१ पृथ्वीराज२ द्वै२ही पितापुत्रन वडे सत्कार सहित राख्यो तानैं चालुक्य भोलारायके रन[6] प्रमुख अनेकही जंगनमैं स्वामीकौं जय दै रु प्रामार सलखनैं सहाबुद्दीन पकरयो ॥

ताही तुमुलमैं लौंन उज्वलकरि अग्रजही जनक जयराजकै पास गयो ॥ ४ ॥

अरु चंडासिराज आनंदराज १७० सौं प्रातिहारी रानी दयावती १७०।१ मैं राजकुमार हम्मीर १७१।१ गंभीर १७१।२ द्वै २ ही सोदर जन्म लेतभये ॥

अरु बयवृद्धिके अनुसार सबही उचित बिद्याको संग्रहकरि अपनैं अन्वयकै अभीष्ट सस्त्रविद्याको विसेस साधन करि खुरलीमैं[12] अद्वितीयही वढिगये ॥

ढुंढ राक्षस का वरदान हुआ था कि तुम १०८ कन्याओं की सन्तान एकत्र हाजाओगी उस वरदान के अनुमार यह भी अजमेर गया. १ कनौज का २ उज्जैण से भी ३ मामा के घर ४ सोलंखी ५ अनादर तथा हार ६ सोलंखी भोलाराय के युद्ध आदि ७ युद्ध में ८ बिना सन्तान ही ॥ ४ ॥ ९ ऊमर बढने के अनुसार १० वंश ११ वाञ्छित १२ बाणविद्या में

जिमजिम अपनैं पितृव्यकेके पुत्र अरु पृथ्वीराजके सुभट अ-क्षयराज १७१।१ की समरपंडितपनकी कीर्ति सुनीं ॥

तिमतिम सर्वही सज्जनकौं समग्ग साधि मंडनपुरही अपनैं पिताकौं खल्लूरिकामैं कारि दिखाई चोथगुनीं ॥ ५ ॥

तहाँ वडे राजकुमार हम्मीर १७१।१ तो मंडनगढके समीप हम्मीरपुर नामक ग्राम वसाइ मंडूके अधीस मंकुवान नृसिंहकी नंदिनी नवश्री१७१।१ बिवाहि पीछैं अपनैं भुजवलकी खट्टी भुम्मि भोगिवो विचारि मंडनपुरसौं अचानक आइ दहिया रनधीरकौं मारि जासौं नैनवा कहैं सो नयनपुर आनिलयो ॥

ताके प्रांतमें निरंकुस राज्य जमाइ कुमारपनमैंही अपनैं जनक आनंदराज १७०।१ कौं आनंद दयो ॥

यहै सुनतही अजमेरसौं राजकुमार पृथ्वीराजनैं सचिव संग वडे सत्कारको पत्र दै रु राजकुमार हम्मीर १७१।१ बुलायो ॥

तानैं जावतही वीरविद्याको वढतो प्रतापदेखि पृथ्वीराजकी आज्ञा पाइ अपनैं अनुज गंभीर १७१।२ के बुलाइवेकौं मंडनगढ नरेस आनंदराज १७०।१ प्रति विज्ञप्तिपत्र पठायो ॥ ६ ॥

लायो१ ठायो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

नरेसनैं गंभीर १७१।२ सौं अजमेर जैवेकी जंपी तहाँ कुमार करजोरिकही आपको१ रु अग्रज२को आदेसतो सदाही सिरपरहै परंतु मोहूपैं पृथ्वीराजही पत्र पठावैंतो आदर जानौं परैं ॥

नहीतो स्वानके समान अनादरको जैवो चाहुवान कुलकी कमनीय कीर्ति हरैं ॥

ऐसैंही उत्तर अजमेर लिखाइ राजकुमारगंभीर १७१।२ सावरके अधीस दोंधिम दुर्गभानुकी दुहिता जसोदा १७१।१ बिवाह्यो ॥

१काका के पुत्र २ युद्ध में पण्डित ३समग्र (सब) ४ अखाड़े में ॥ ५ ॥ ५ ज्ञाला ६ मुत्री ७उपार्जन कीहुई अर्थात् पाईहुई ८अर्जी ॥ ६ ॥ ९ कही १० सुन्दर ११दाहिमा

तामैं कुमर रनधवल१७२।१कौं उत्पन्नकारि एक१*अब्द पर्यन्त पृथ्वीराज पास जैबमैं साहसही निवाह्यो॥ ७ ॥

कारन यह भयोकि गंभीर १७१।१ को पत्र अग्रजके पास अजमेर गयो ताही समय दिल्लीके अधीस तोमर अनंगपाल अपनीं इलाँ[2] दौहित्रकौं देबो विचारि कुमार पृथ्वीराज बुलायो॥

तानैं जनक १ पितृव्यक[3] २ समंतन ३ के सम्मत[4] करि तरह १३ अब्दकी[5] अवस्थामैं दिल्ली आइ मातामह[6]को राज्य पायो ॥

पहिलैं द्वापरके अंतमैं चंडासिराज सहदेव ३८ सौं कौरवराज संतनुनैं दिग्विजयकरि इंद्रप्रस्थ[7] लैलयो ॥

सो तबको गयो एक सत एकोन चालीस१३९ पुरुखनमैं[8] अब चंडासिराजकुमार पृथ्वीराजकै बहोरि आवतभयो ॥ ८ ॥

प्रामारराज विक्रमके संवत ग्यारहसै अट्ठावीस ११२८ के मार्गसिर मासकी पांडुर[9] पंचमी५के दिन पृथ्वीराज दिल्लीको पट्टलह्यो॥

अरु अनंगपाल आत्मजके[10] अभावकरि[11] आकुलीभूत हठपूर्वक हठ उपरामैं[12] धारि गंगाद्वारके उत्तरके प्रांतमैं जाइ रह्यो ॥

कुमार पृथ्वीराज अपनैं जनक नरेंद्र सोमेश्वरकौं गद्दी दैनलग्यो सो न लीनीं तब स्वसुरके दैवज्ञ[13] हरिज्ज्योति१जगज्ज्योति२अपनैं गुरु रामदेव १ अनुज कृष्ण१ सामंत सलख १ कैमास २ प्रमुख[14] सबनके आग्रहपूर्वक काहिबेकरि गद्दी लई ॥

याही बरस कैमास १ चामुंडराज २ द्वै २ही दाहिमैं नाहरराजके तनूजनैं[15] स्वकीय स्वसा[16] पृथ्वीराजकूँ बिबाहिदई॥ ९ ॥

यातैं गंभीर १७१।१ के आह्वानमैं[17] एक १ अब्दको अंतर पर्यो जानि राजकुमार पृथ्वीराज सचिवके संग करि प्रीतिपत्र दैकैं

*वर्ष १ हठ ॥७॥ २पृथ्वी ३काका की ४सलाह से ५वर्ष की ६नाना का ७दिल्ली ८पीढियों में ॥ ८ ॥ ९शुक्ल पक्ष की १०पुत्र नहीं होने के कारण ११घबराकर १२विरक्तपन १३ ज्योतिषी १४ आदि १५ पुत्र १६ बहिन ॥ ९ ॥ १७ बुलाने में

पितृव्यके आनंदराज१७०।१सौं कहाइ मंडगढसौं गंभीर१७१।२हू-
कौं दिल्लीबुलाइ द्वै २ भ्रातनकौं बडे पटा दये ॥
अरु हम्मीर १७१।१ गंभीर १७१।२ अक्षयराज १७१।३ ए ती-
न ३ ही हक्के आहव आहवकी अनी अनीमैं अग्रग भये ॥
द्वै २ ही सोदरन मंकुवानी१ दाहिमी२ द्वै ही कुमरानी दिल्ली
बुलाइ लई ॥
अरु नरेस आनंदराज १७०।१ नैं अपनौं पौत्र रनधवल १७२
तो उपमाताकौं अप्पि मंडनगढही राखि अर्भककी अवस्थाके
उचित शिक्षा दई ॥१०॥
राजकुमार हम्मीर १७१।१ कैहू कुमरानी मंकुवानी १७१।२
मैं कुमार सुमेरु १७२ जन्मलीनौं ॥
अरु चतुर्दस १४ वर्षके वयमैं राजकुमार पृथ्वीराज कुंगुरेके
अधीसके अनुज जद्दव हाहुलीरायहम्मीरकी पुत्रीको पानिग्रहन
करि जाचकनकौं त्यागमैं नानाविध वित्त दीनौं ॥
यह हम्मीरहू वडो पटा पाइ आपुनैं जाँमाताके सामंतनमैंही रह्यो।
अरु याही समय मेवातके कोऊ मुगलको उपद्रव जानि पि-
ताके अनुमतकरि कुमारपृथ्वीराजनैं अपनौं भावीस्वसुर सोलंखी
सारंगदेव १ सालकें कच्छवाह बलिभद्र २ द्वै २ ही भेजे तिनमैं
अनेक म्लेच्छनकौं मारि वहैही धाटिको मालिक मुगल जाइग-
ह्यो ॥ ११ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ वी-
तिहोत्रचरडारि १ वंशवर्णने नरेन्द्रमण्डन १६८ कुमारात्माराम १६९ गोभिलीप्रतापदेवी १६९ परिणायन १ नरेन्द्रात्माराम-

१ काका २ आगे चलनेवाले ३ भाली ४धाय को देकर ५ बालक की ॥१०॥
६ विवाह ७ जमाई ८ सलाह से ९ आगे होनेवाला सुसरा १०शाला॥११॥
श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थ राशि में अग्निवंशी चहु-
वाण वंशवर्णन में राजा मण्डन का कुमर गोभिली प्रतापदेवी से विवाह
करना,नरेन्द्र आत्माराम के पुत्र कुमर आनन्दराज और जयराज दोनों सगे

१६९ तनूजकुमारानन्दराज १७०।१ जयराज १७०।२ सोदरद्वय २ समुद्भवन २ ज्येष्ठानंदराज १७०।१ प्रातिहारीदयावती १७०।१ पाणिपीडन ३ पश्चात्पितृपदप्रापण ४ चित्रकूटाधिराजतेजःसिंहतनयसमरसिंहसमुद्भवन ५ तद्द्वात्रिंशद्वर्षाऽनन्तरसोमेश्वरकूमारपृथ्वीराजप्रसवन ६ प्राप्तखुराषाणाधिपत्यगोरिपठानसहाबुद्दीनगजनीगद्दिकोपविशन ७ जितदिक्त्रय ३ कान्यकुब्जाधीशबिजयचन्द्रामरबन्द्यर्थरौप्यकाब्ज १००००००००० वितरणसूचन ८ तत्पुत्रजयचन्द्रातिप्रतापप्रख्यापन ९ चालुक्यबिजयपालपुत्रभीमगौर्जराधिपत्यग्रहण १० पुष्करप्रसादनिष्कुष्टप्रतिहारनखधरराजतत्तीर्थकुण्डसर्वधातुसोपानसर्जन ११ सपुत्रद्योसेश्वरकूर्मप्रद्युम्नपृथ्वीराजाश्रितीभवन १२ दिग्जयप्रस्थितकान्यकुब्जनरेन्द्रजयचन्द्रपलायितप्रामाराऽमानत्यक्तावन्तीमण्डितमालवसमाक्रमण १३ परिणीतचालुक्यीपुष्पावती १७१।१ कसपत्नीकसमाश्रितसोमेश्वरहड्डाधिराजाऽनुजजयराज १७०।२ भूतपूर्वकान्यकुब्जरणमरणाज्ञापन १४ तत्पुत्राऽक्षयराज १७१ भाविसल-

---

भाइयों का जन्म होना, बड़े आनन्दराज का प्रातिहारी दयावती से विवाह करना, पीछे पिता का पाट पाना, चित्तोड़ के स्वामी तेजसिंह के पुत्र समरसिंह का जन्म होना, उसके बत्तीस वर्ष पीछे सोमेश्वर के कुमर पृथ्वीराज का जन्म लेना, खुराशान का मालिकपन पाकर गोरी पठान सहाबुद्दीन का गजनी की गद्दी पर बैठना, तीन दिशाओं को विजय करके कन्नोज के राजा विजयचन्द्र का अमर नामक भाट को अड़ब रुपये देने को जनाना, उसके पुत्र जयचन्द्र का अत्यन्त प्रताप प्रसिद्ध करना, सोलंखी विजयपाल के पुत्र भीम का गुजरात का स्वामी होना, पुष्कर के प्रसन्न होने से कोढ मिटेहुए प्रतिहार नाहरराज का उस तीर्थकुण्ड के सब धातुओं की पैड़ियें बनाना, पुत्र सहित द्योसा के स्वामी कछवाह प्रद्युम्न का पृथ्वीराज के आश्रित होना, दिग्विजय पर गमन करनेवाले कन्नोज के राजा जयचन्द्र से भागकर पंवार अमान को मालव देश छीन कर उज्जैण से निकालना, चालुकी पुष्पावती से विवाह करके स्त्री सहित सोमेश्वर के आश्रित हड्डाधिराज का छोटा भाई जयराज पहिले ही जारहा जिसका कन्नोज के युद्ध में मारेजाने को जनाना, उसके पुत्र अक्षयराज का होनेवाले

खयुद्धमरणद्योतन १५ हड्डाधिराजानन्दराज १,७० १ दयावत्यौ-१७०।१ रसकुमारहम्मीर ७१।११ गम्भीर १७१।२ सोदरद्वय २ खुरलीपटूभवन १६ व्यूढमंकुवाणिनवश्री १७१।१ कनिर्मापितनिजनामनिवसथहतदभिकरणधीरहम्मीर १७१।१ नयनपुर-राज्यसमाक्रमण १७ पृथ्वीराजप्रेरिततदाश्रितहम्मीरा १७१।१-ऽऽहूयमानगम्भीर१७१।२तद्गमनाऽनूरीकरण १८ तदनन्तरगम्भीर १७१।१ दाधिमीयशोदो १७१।१ द्वहन १९ तदौरसकुमाररणधवल १७२ जनन २० तोमरराजाऽनङ्गपालसमाहूतस्वदौहित्रपृथ्वीराजार्थदिल्लीराज्यसमुत्सर्जन २१ स्वयंप्राप्तोदकप्रदेशबकयोगसमाराधन २२ पृथ्वीराजदिल्लीभद्रासनस्वजनकस्थापन २३ तदनन्तरपरिणीतदाधिमीककुमारपृथ्वीराजसपत्नी १ क-सप्रजावतीरककुमारगम्भीरा १७१।२ ऽऽकारण २४ नृपानन्दराज १७०।५ निजपौत्ररणधवल १७२ स्वसमीपरक्षण २५ हम्मीर १७१।१ नवश्र्यो १७१।१ रससुमेरु ५७२ समुद्भवन २६ पृथ्वीराजयादवहाहुलिराजहम्मीरपुत्रीपाणिग्रहण २७ तद्भावि-

मलव्य के युद्ध में मरने को जनाना, हड्डाधिराज आनन्दराज की दयावती के औरस कुमर हम्मीर और गम्भीर दोनों सगे भाइयों का बाणविद्या में चतुर होना, झाली नयश्री को विवाह कर अपने नाम का ग्राम बसाकर डाभी क्षत्रियों को मारकर धीर हम्मीर का नैणवा पुर का राज्य लेना,पृथ्वीराज के भेजेहुए उसके आश्रित हम्मीर को बुलाने को उस गम्भीर का अस्वीकार करना, जिसपीछे गम्भीर का दाहिमी यशोदा से विवाह करना, उसके उदर से कुमर रणधवल का जन्म होना, तँवरों के राजा अनङ्गपाल के बुलायेहुए अपने दौहित्र पृथ्वीराज के लिये दिल्ली का राज्य देना,अपने उदक दियेहुए देश के अर्थ बुगले का योग (बुगला पक्षी के समान झूठी समाधि) साधना, पृथ्वीराज का दिल्ली के सिंहासन पर अपने पिता को बैठाना, जिसपीछे दाहिमी को विवाह कर कुमर पृथ्वीराज का स्त्री सहित और अपने भाई की स्त्री सहित गम्भीर को बुलाना,राजा आनन्दराज का अपने पौत्र रणधवल को अपने पास रखना, हम्मीर के स्तुति योग्य औरस कुमर सुमेरु का जन्म होना, पृथ्वीराज का यादव हाहुलीराज हम्मीर की पुत्री से विवाह करना, उसके आगे होनेवाले श्वसुर सामन्त सारङ्गदेव और शा-

श्वसुरसामन्तसारङ्गदेव १ श्यालकबलिभद्र २ मेवातदेशघाटिधरमुगलबन्धनं २८ त्रिंशत्तमो ३० मयूखः ॥ ३० ॥ आदित एकोनचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १३९ ॥

(प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा)

सचरणगद्यम्

याही समय चित्रकूटके राजकुल समरसिंह दिल्लीआइ पृथ्वीराजकी सोदर[1] स्वसा पृथा विवाही ॥

अरु याही समय पंद्रहम १५ वर्षके वयमैं कुमार पृथ्वीराज वडगुज्जर रामकी पुत्रीको पानिग्रहन[2] करि प्रीति निवाही ॥

पीछैं चहुवान कन्ह १ दाधिम कइमास २ कछवाह वलिभद्र ३ बाहुप्रकारउद्दिग ४ भट्टीभानु ५ वग्गरीदेवराज ६ जद्दवजाम ७ खिच्चीप्रसंगराज ८ इन अष्ट ८ ही सामंतनकौं पिताके पास दिल्ली राखि कुमार पृथ्वीराज उत्तरदिशाके विजयपर १ तथा मातामहके[3] मिलनपर २ छोटे वडे अनेक अवनीसनसौं[4] उपदा[5] लेत गंगाद्वारसौं पैले प्रांतमैं तोमरराजके पयन प्रनामकरि विजयके लोभ श्रीनगरके स्वामिकौं सांसितकरि[6] अग्गवढ्यो ॥

अरु इतकौं अनिहल्लपुरके अधीस चालुक्यराज भीम यहै छिद्रपाइ कन्हके मारे अपनैं पितृव्यकके[7] सप्त ७ ही पुत्रनको वैर चित्तमैं लाइ वडी वरूथिनी[8] वनाइ नागराजके भोगनकौं[9] नमावत मार्गके महीसनसौं लंचा[10] लेत दिल्लीपर चढ्यो ॥ १ ॥

सो सुनतही चंडासिराज सोमेश्वरहू अष्ट८ही सामंतन समेत दिल्लीसौं कितेक कोसनपर जाइ डल्यो ॥

ले बलिभद्र को मेवात देश में घाटि की भूमि में मुगल को कैद करने का तीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३० ॥ और आदि से एक सौ उनचालीस मयूख हुए ॥ १३९ ॥ १ सगी बहिन २ विवाह करके ३ नाना से मिलने के लिये ४ राजाओं से ५ नजराना लेताहुआ ६ दण्डित करके ७ काका के ८ सेना ९ फणों को १० नजराना लेता हुआ ॥ १ ॥

अरु बडो अवमर्दकरि द्वै२ही पृतनाके प्रवीरन स्वामिननैं चाह्यो सो सोही खेलखेल्यो ॥

प्रारब्धके प्रभावकरि कन्ह १ कैमास २ सहित अष्ट८ही सामंत अरातिनके अनेक ओघ डारि लोहछकहोइ अचेत खेतपरे ॥

अरु अपनैं अनीककौं आकुल जानि चंडासिराज सोमेश्वर वारनसौं वाजीपरैं आइ तरनिकौं तुमुलको तमासो दिखाय वांर्धककै वीरत्वमैं बडो वाहुवल करि गौर्जरदेसकी अनेक वीरपत्निनके वाहु १ प्रकोष्ट २ वलय विहीन करे ॥ २ ॥

कालको प्राबल्य काहूसौं न टारयोजाय यातैं नरेन्द्रामसिंह२०७ जानैं दिल्लीको सहायकरि कान्यकुब्जके अधीस विजयचन्द्रकौं पलायित करि तोमरराजकौं जय दिवायो सो पूर्वोक्त केही जुद्धनको जई चंडासिराज सोमेश्वर वार्धकमैं वीरतल्पैं सोयो ॥

यहै जानतही पारावत भीम सिचानके पृथ्वीराजके अचानक आय परिवेको आतंक आनि आपुनैं घायल खेतमैंही तजि गौर्जर देशमैं दरकुंच जाय स्वास्थ्य पाइ वंदिनैके विरुदनमैं गिनायो सप्त ७ ही वंधुनको वैर धोयो ॥

इतकौं दिल्लीके अवशिष्ट सुभट १ सचिव२न रंगस्थलकौं ढंढोलि[24] अपनैं १ रु चालुक्य २ के सहस्रन घायलन सहित अष्ट ८ ही अचेत सामंतनकौं नृंजानन[25]मैं डारि दिल्लीलाइ वैद्यनके अनुमत[26]करि समस्तकेही दाहो१पैंनाह[27] २ प्रमुख क्षतनकी पूर्ति

१युद्ध करके२सेना३भाग्य के४शत्रुओं के५अनेक समूह गिराकर६हाथी से उतरकर७घोड़े पें चढा और८सूर्य को९भयङ्कर युद्ध का तमाशा दिखाया और १० वुढापे के वीरपन में वडा वाहुवल करके गुजरात देश के अनेक वीरों की ११ स्त्रियों के हाथ और १२ कलाइयों को (कुणी से नीचे का भाग)१३ चूड़ियें विना किये ॥ २ ॥ १४ समय की प्रवलता १५ कन्नोज के राजा १६ भगाकर १७ वीरशय्या सोया अर्थात् काम आया १८ कपोत रूपी भीम पर १९ शिकरा रूपी पृथ्वीराज के २० नैरोग्यता पाकर२१भाटों की कीहुई २२ स्तुति में २३ वाकी के सुभट और मन्त्रियों ने युद्धभूमि को२४हेरकर२५पालखियों में २६ सलाह से २७जलनेवाले घावों पर मलमपटी आदि से

के साधनसहित उल्लाघभावं आनिवेको उपचार करयो ॥
यहै सुनतही पृथ्वीराजकुमार दरकुंचन दिल्ली आइ विधिपूर्वक
प्रेतकर्म करि पिताको छत्र धरयो ॥ ३ ॥
घायन परे जे अष्ट ८ ही सामंत पटुप्रायहोय समज्यामैं आये ॥
तहाँ अति लज्जाकरि सोमेश्वरके वीरतल्पं शयनकों स्मृतिमैं
आनि पितृव्यक कृष्णों नें नरेंद्रसों नेत्र न मिलाये॥
तदनंतर नरेंद्रके सामंत भोलारायपैं जावत ताके पितृव्यक वर-
सिंहको पुत्र हरिदुर्गको अधीस वालुकराय गुज्जरदेसमैं पैठतही
सम्मुह आइ जुरयो सो मारिलयो ॥
अरु द्वारकेसकी यात्राको व्याज करि चालुक्यराज पश्चिमस
मुद्रकी सीमालों टरिगयो ॥ ४ ॥
पलायितकी पीठि जैवो अनुचित जानि सामंतनकों पीछे बुलाइ
याही समय सोलहैं १६ वर्षके बयमैं नरेंद्रपृथ्वीराज समुद्रसिख-
रके अधीस जादवनृपकी पुत्री पद्मावतीरानी जुद्ध जीति आनी ॥
अरु पीछे आवत सहाबुद्दीनकों पकरि दिल्लीआइ छोरि बिरु-
दनमैं कहायो एक मानी ॥
तदनंतरही अपनैं घायलनके वैरपर महुव्वाके राजा चंदेलकबंध
परमालसौं जुद्ध जीत्यो तहाँ संयमराज१से इतके आल१ उदल२
से उतके अतिवीर परे ॥
अरु सत्रहम१७ अब्दकी अवस्थामैं देवगिरिके नरेस राजधन-
की कन्याकों जुद्धजीति लायो ताके उपयामके उत्सवमैं आये
बनीयकनके वित्त करि भौंन भरे ॥ ५ ॥
पीछैं अनिहलपुरपैं चढाईकरि गुजरातको अधीस चालुक्यरा-

घावों को भरने के १उपाय सहित २ नैरोग्यता लाने के ३ इलाज करे ॥ ३॥
४ नैरोग्य होकर ५ सभा में आये ६ वीरशय्या सोने को ७ याद कर-
के ८ काका९कह्न ने पृथ्वीराज से नीचे नेत्र किये १० मिस करके ॥ ४ ॥
११ विवाह के १२ याचक लोगों के धन से घर भरदिये ॥५॥जिसपीछे अ-
निहल पुर पैं चढाई करके गुजरात के स्वामी भोलाराय भीम को मारा

ज भीम मारयो ॥

अरु याही समय तोमरराज अनंगपाल प्रच्छन्न पत्र भेजि सहाबुद्दीनकौं सहाय लै रु कुटुंबके कहेसौं बांतको बुभुक्षु वन्यौं जानैं दौहित्रकौं दई दिल्लीपर पीछो चित चलाइ राज्यके लोभमैं ग्रस्तव्है दरकुंचन आइ जुद्धही प्रसारयो ॥

तहाँ चंडासिराज अपनैं प्रवीरनसौं कही मातामहके विचारमैं म्लेच्छकौं न लाइ दिल्लीको मंगिवो प्रीतिपूर्वक होतो तो अजमेर १ साकंभरं२ सहित देतो परंतु सत्रुनकौं संगलाइ जुद्ध जीति लैवोही उचित दीस्यो यातैं अपनैंहू चित्तमैं जुद्धसौं पराभव पाइ पीछैं देवोही भायो ॥

सोही मंत्र दृढ धारि महा अवमर्द करि सहाबुद्दीनकौं पकरि छोरयो रु अनंगपाल पलायो ॥ ६ ॥

पीछैं अठारहैं१८ वर्षके वयमैं मलयसिंहकी वैमात्रेयी अरु बलिभद्रकी सोदर भगिनी कूर्म प्रद्युम्नकी पुत्रीको पाणिपीडन करि तदनंतर अपनैं वहिनिवैई चित्रकूटके राजकुल समरसिंहकौं संपन्नमैं सीरी राखि कैमासके बुद्धिबलकरि खट्टूके प्रांतमैं धराके अंतरसौं धन निकास्यो ॥

अरु एकोनवीस १९ वर्षके वयमैं धीरकी भगिनी रु पुंडीरचंद्रकी पुत्रीको पाँनिग्रहनकरि विसँमवानको वैभव विकास्यो ॥

वीसमैं २० वर्षमैं दक्खिनदेससौं जुद्धजीति ससित्रता आनी ॥

अरु एकवीसमैं २१ अब्दमैं ऐसैंही जयकारि विवाहयो हंसावती रानीं ॥ ७ ॥

---

१ उछांट की हुई वस्तु को खाने का २ भूखा (खानेवाला) हुआ ३ नाना के ४सांभर ५हारकर ६ पीड़ादायक संग्राम ७ भगा ८ मांई मा की पुत्री ९ विवाह १० जिसपीछे ११वहिनोई(वहिन का पति)१२चित्तोड़ के राउल समरसिंह को१३सम्पत्ति (धन) निकालने में१४शामिल रखके १५ विवाह करके १६कामदेव का

बावीस २२ मैं वर्षमैं अपने सामंत सोलंखी सारंगदेवकी अंगजा इंद्रावतीको पानिग्रहन कर्यो ॥

अरु तुल्ल्यभार[2] सुवर्णकों संटि[3] पातुरि कार्णाटी लईही ताके पास प्रच्छन्न आवत निशीथके निविड अंधकारमैं अजानैं एक आसुग करि कैमासको प्रान हर्यो ॥

कितेक काल पीछैं दाहिमींको औरस पृथ्वीराजको पट्टप कुमार रत्नसिंह१ अरु चामुंडराज२ द्वैरही मातुल१ भागिनेय२ अतिप्रीतिकरि सुरनके वैद्यनलौं सहचारी रहतभये यह जानि सूचक जनन नरेंद्रसौं बारबार कहि बिरोधकी दृढता दिखाई सो सोमसुतहू संका आनि निश्चितही करिलई ॥

अरु ताही भगिनीके पुत्रको पट्टपतिभाव१ अरु अग्रज कैमास२ को बैर२ द्वैरही दुस्सह देखि वृथाही बंध्यबनि[11] अनागस[12] चामुंडराजके चरननमैं बेरी डारि दई ॥ ८ ॥

तापीछैंहू जुद्धजुद्धमैंजयकारि गोरीसहाबुद्दीनकौं पकरिपकरि छोर्यो अरु औरहू अनेक अवनीसनसौं जुद्धजीते सो सर्वही वृत्तांत रासेमैं विदित[13] जानि वृथाही बिस्तार मानि हमनैं पृथ्वीराजके चरित्रमैं न जोर्यो ॥

बंदी चंदनैं अपनैं ग्रंथ रासेमैं बिबाहनके अनुक्रम बिनां[14] इतर चरित्रनके पौर्वापर्य[15] कहाँहू न लिख्यो यातैं जा जाको जहाँ जहाँ

---

१ पुर्गा २ तोल में बराबर का सोना देकर कर्नाटी नामक अथवा कर्नाटक देश की पातुरि (वेश्या) ३ बदले में ली थी उसके पास छाने आतेहुए ४ आधी रात के ५ घने अन्धेरे में विना जाने६एक बाण से कैमास का प्राण लिया ७ मामा ८ भाणेज दोनों ही अत्यन्त प्रीति से ९ अश्विनीकुमारों के समान १० साथ रहने लगे इस बात को जानकर चुगली करनेवाले लोगों ने राजा से बारम्बार अर्ज करके विरोध की दृढता दिखाई सो पृथ्वीराज ने भी सन्देह करके निश्चै ही मानलिया क्योंकि भाणेज को तो अपने पाटवी पुत्र होने से पाट का लोभ और मामा को अपने बडे भाई कैमास का वैर लेनेवाला समझ कर११ मारनेवाला बनकर१२विना दोष ॥ ८ ॥ १३ प्रसिद्ध जानकर चन्द भाट ने विवाहों के क्रम विना१४ अन्य चरित्रों में१५पहिले कौनसा हुआ और पीछे कौनसा हुआ

संभव दीस्यो सो सो तहाँ तहाँ कह्यो परंतु अवेसेस घनैं चरित्र नके समयको निश्चय न पायो या निदानकैंरि सामान्य लिखे तासौं पृथ्वीराजके चरित्रके वृत्तांतनमैं पूर्व१ पर२ भाव न जानिये ॥

अरु असंभूतहु अनेक उदंत लिखे तिनहुमैं मोकौं टारि बंदी चंद प्रमुख पुरातन लेखकारकनकोही अन्यथावादित्व मानिये ॥

ऐसैं अनेक विजय करत विक्रमके ससि सर सिव११५१ सम्मित संवत्सरके चैत्रके प्रथम१ पक्षमैं चंडासिराजपृथ्वीराज१ छ६ मास अधिक छत्तीस ३६ वर्षके वयमैं कान्यकुब्ज जाइ चउसट्ठि ६४ सामंतनकौं वीरतल्प पौढाइ राष्ट्रकूटराज जयचंद्रकी सुता संयोगिता आनीं ॥

ताही तुंमुलमैं सहोदर हम्मीर१७।११ गंभीर १७१।२केही गजनकौं गिराइ कासीके नरेंदसे अनेक अरातिनकी बंनितानकौं वैधव्य देकैं भद्रकालीकौं धपाइ द्वे २ ही कुमार वीरतल्पैं सोये महामानीं ॥

सो जानि मंकुवांनी नवश्री १७।११ दाहिमी जसोदा १७।१२ द्वे २ ही स्वस्वस्वामिनके साथगई सो सुनतही उपरामआनि मंडनगढके अधीस आनंदराज१७०अपनैं पट्टप पुत्रको पुत्र सुमेरु१७२ बुलायो सो वडो पटा वढाइ पृथ्वीराजनैं न भेज्यो अरु गंभीरको पुत्र रनधवल१७२हू दिल्ली बुलायो ॥

तब याहूकौं पितामहनैं न भेज्यो रु याहीके अभिषेककरि अपनैं योगसाधनके बल अवसानमैं परमपद पायो ॥ १० ॥

यह कहीं नहीं लिखा १ बाकी के२इस कारण से ३और असंभव भी अनेक ४ वृत्तान्त लिखे जिनमें ५ मुझ (ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल) को छोड़कर ६ चन्द भाट आदि प्राचीन लिखनेवालों (इतिहास बनानेवालों) को ही झूठ बोलनेवाले मानना चाहिये ॥ ९ ॥ ७ प्रमाणवाले ८ कन्नौज जाकर ९ वीरशय्या १० राठौड़ राजा ११ युद्ध में १२ काशीपुरी के राजा जैसे अनेक राजा १३ शत्रुओं की१४स्त्रियों को १५ विधवापन देके१६ वीरशय्या१७काली१८अपने अपने पतियों के साथ गई १९ विरक्ति २० मांडलगढ के २१ दादा ने २२ अन्त समय में ॥ १० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणो १ चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचराडासि १ वंशवर्णानवीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यव्याख्यानव्याहार्यससूनुनृपानन्दराज१७० चरित्रे चित्रकूटाधिराजराजकुलसमरसिंहसोमीपृथापरिणायन १ पृथ्वीराजगृहद्दौर्ज्जररामदुहितोद्वहन२ पितृपार्श्वस्थापितकृष्णादिसामंताष्टक ८ पृथ्वीराजोदग्विजयन ३ प्राप्तच्छिद्रचालुक्यराजभीमदिल्लीनरेन्द्रसोमेश्वरनिपातन ४ मूर्छितीकृताष्ट ८ सामन्तत्यक्तरङ्गनिपतितस्वयोधसौमित्रस्तभीमस्वपुरप्रतिगमन ५ गवेषितरङ्गसोमसुभट १ सचिव २ प्राप्तप्रहारसजीवदिल्लीसमागतसाधितांऽऽयतिकर्मपृथ्वीराजपितृपट्टप्रापण ७ लज्जितकृष्णादिनृपसामन्तचालुक्यराजबन्धुबालुकराजविध्वंसन८ कृतद्वारकेश्वरवीक्षणव्याजभीमपश्चिमपाथोधिपुलिन ९ सन्नद्धप्रत्यागतसामन्तसौमिबाहुबलविजितसमुद्रशिखराधीशयादवनृपपुत्रीपद्मावतीपाणिपीडन १० प्रत्यागच्छत्पृथ्वीराजसमभिषेणयत्शहाबुद्दीनकीलन१ मोचन २।११ तद्रणाघाताऽसमर्थसामन्तप्रतारणप्रकुपितपृथ्वीराज-

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थ राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज के वंश्यानुवंश्य व्याख्यान के कथन में पुत्र सहित आनन्दराज के चरित्र में चीताड़ के स्वामी रावल समरसिंह का सोम की पुत्री पृथा से विवाह करना, पृथ्वीराज का बडगुज्जर राम की पुत्री से विवाहना, पिता के पास कह्न आदि आठ सामन्तों को रखकर पृथ्वीराज का उत्तर दिशा को विजय करना, छिद्र पाकर सोलंखी राजा भीम का दिल्ली के नरेन्द्र सोमेश्वर को मारना, आठ सामन्तों को मूर्छित करके युद्धभूमि को और अपने पड़ेहुए योद्धाओं को छोडकर सोम के पुत्र से डरकर भीम का अपने पुर में जाना, युद्ध में अनुसन्धान किये हुए सोम के सुभट और सचिव घायल होकर सजीवित अर्थात् उनमें केवल जीव ही बाकी था ऐसे दिल्ली आये और उत्तरकाल के कर्म करके पृथ्वीराज का पाट बैठना, लज्जित हुए कन्ह आदि राजा के सामन्तों का चालुक्यराज के बन्धु बालकराज को मारना, द्वारकेश्वर के दर्शन करने का मिस करके भीम का पश्चिम समुद्र को भागना, सजेहुए पृथ्वीराज का पीछा आकर सामन्तों के साथ बाहुबल से शिखर के अधीश समुद्र को विजय करके उस

महुव्वाधीशचंदेलराष्ट्रकूटपरमालविजयन१२ संगमराजा १ऽऽलो १ ह्नल २ प्रमुखस्व १ पर २ सुभटतद्रणमरण १३ सप्तदश १७ वर्षीयसोमिदोर्जितदेवगिरिनरेशराजधनदुहितोद्वहन १४ तदनन्त-रससामन्तसन्नद्धसौमिचालुक्यराजभीमप्रतिघातन१५ सहायीकृ-तसहाबुद्दीनस्वपरिकरशिक्षितवान्तासितोमराऽनङ्गपालपुनर्दिल्ली प्राप्तिनिमित्तरणप्रारम्भण१६पृथ्वीराजस्वमातामहसहायीभूतशहा बुद्दीनानिग्रहण१ मोक्षण २।१७तत्त्रस्ततोमरराजपलायन१८प-श्चादष्टादश १८ वर्षीयपरिणीतकौर्मीप्रद्युम्नीकसम्मेलितस्वसृ-पतिसमरसिंहसौमिकैमासबुद्धिविविक्तखट्टूपुरप्रान्तनिधिनिष्का-सन १९ पश्चादेकोनविंशति १९ वर्षावस्थसौमिधीरभागिनीपु-र्ण्डीरचन्द्रपुत्रीपाणिग्रहण २० विंशति २० वर्षावस्थसौमिदोर्जित दाक्षिणात्यपार्थिवपुत्रीशशिव्रतोद्वहनै२१ कविंशति २१ हायनव-योराजकन्याहंसावतीहरण २२ द्वाविंशत्य २२ ब्दस्थितिसोलंखि शारङ्गदेवसुतेन्दावत्युपयमन २३ पश्चात्पृथ्वीराजतुल्यस्वर्ण मूल्यक्रीतवारवनिताकार्णाटीप्रसङ्गाऽपराधितमोऽज्ञातानिजमन्त्रि-

---

यादव राजा की पुत्री पद्मावती से विवाह करना, पीछे आये हुए पृथ्वीरा-ज से सामना करने से उस सहाबुद्दीन गोरी को कैद करके छोड़ना, उस रण में ठगेजाकर घायल हुए असमर्थ सामन्तों के कारण कोपेहुए पृथ्वीरा-ज का महूव्वा के स्वामी चन्देला राठोड़ परमाल को विजय करना, संय-मराज और आल उद्दल आदि अपने और पराये सुभटों का उस युद्ध में म-रना, १७ वर्ष की अवस्था में सोम के पुत्र का अपने बाहुबल से विजय कि-येहुए देवगिरि के राजा राजधन की पुत्री से विवाह करना, जिसपीछे सा-मन्तों के साथ सज्ज होकर पृथ्वीराज का सोलंखी भीम को मारना, सहा-यक होकर सहाबुद्दीन का अपने परिकर सहित सिखाये हुए उछांट कीहुई वस्तु को खाने की इच्छावाले अनङ्गपाल को फिर दिल्ली लेने के लिये युद्ध पर आरम्भ करना, पृथ्वीराज का अपने नाना के सहायक सहाबुद्दीन को पकड़कर छोड़ना, उससे डरकर तंवर राजा का भागना, जिसपीछे अठा-रह वर्ष की अवस्था में कछवाहा प्रद्युम्न की पुत्री से विवाह करके अपनी बहिन के पति समरसिंह को एकान्त में शामिल रखकर कैमास के बुद्धि बल से खाटूपुर के प्रान्त में पृथ्वीराज का धन निकालना, जिसपीछे उगनी-

कैमासनिपातन २४ तदनन्तरपिशुनप्रेरितपृथ्वीराजभ्रातृवधदुःखितभागिनेयरत्नसिंहरतदाधिमचामुराडराजचरणान्यसन २५ प्रोक्तेतरसमयानेकवारयवनेन्द्रग्रहण १ मोचण २ सहितसकलसम्परायविजयसूचन २६ बन्दिचन्द्रग्रथितसौमिसर्वचारित्रपौर्वापर्यद्वापरदर्शन २७ कविमिथ्याकथनस्वदोषनिवारण २८ सार्द्धषट्त्रिंश ३६½ द्वर्षवयस्कपृथ्वीराजमराडलेश्वरकान्यकुब्जाधिराजकामध्वजजयचन्द्रसुतासमाहरण २९ तद्रणनिपातितकाशीनरेन्द्राद्यनेकसपत्नसंघहड्डाधिराजकुमारहम्मीर १७१।१ गम्भीर १७१।२ सोदरद्वय २ शूरशय्याशयन ३० तत्पत्नीमंकुवाणीनवश्री १७१।१ दाधिमीयशोदा १७१।२ स्वस्वस्वामिसहगमन ३१ श्रुतैतदुदन्तज्ञाताऽऽहूताऽनागतस्वपौत्रसुमेरु १७२ कमराडनगढराज्यसमभिषिक्तगाम्भीरिरणधवल १७२ कप्राप्तोपरामयोगचर्यारतहड्डा

सवें वर्ष की अवस्था में पृथ्वीराज का धीर की बहिन और पुण्डीरचन्द्र की पुत्री से विवाह करना, बीस वर्ष की अवस्था में पृथ्वीराज का भुजों के बल से विजय की हुई दक्षिण देश के राजा की पुत्री शशिव्रता से विवाह करना, इक्कीसवें वर्ष की अवस्था में राजकन्या हंसावती को हरना, बाईसवें वर्ष की स्थिति में सोलंखी सारङ्गदेव की पुत्री इन्द्रावती से विवाह करना, जिसपीछे बराबर के तोल का सोना देकर पृथ्वीराज की मोल ली हुई कर्नाटकी नामक वेश्या के प्रसङ्ग से बड़े अपराधी विना जाने अपने मन्त्री कैमास को मारना, जिसपीछे चुगलों की प्रेरणा से पृथ्वीराज का भाई के मारने से दुखी और भाणेज रत्नसिंह से प्रीति रखनेवाले दाहिमा चामुण्डराज को कैद करना, कहेहुए अनेक समय में अनेकबार बादशाह को पकड़कर छोड़ने के सहित सब युद्धों में विजय जताना, भाट चन्द के बनायेहुए पृथ्वीराज के चरित्रों में पहिले कौन हुआ और पीछे कौन हुआ इस का सन्देह दिखाना, कवियों के झूठ कहने में अपना (ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल का) दोष मिटाना, साढ़े छत्तीस बर्ष की अवस्था में पृथ्वीराज का मण्डलेश्वर कनौज के स्वामी राठोड़ जयचन्द्र की पुत्री को हरना, उस युद्ध में काशी के राजा आदि अनेक शत्रुओं के समूह को मारकर हड्डाधिराज के कुमार हम्मीर और गम्भीर दोनों सगे भाइयों का माराजाना, उनकी स्त्रियें भाली नवश्री और दाहिमी यशोदा का अपने अपने पतियों के साथ सती होना, यह वृत्तान्त सुनकर बुलानेपर नहीं आनेवाले अपने पोते सुमेरु को

धिराजाऽऽनन्दराज १७० परलोकमापणा३२मेकत्रिंशो३१मयूखः ॥
आदितश्चत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥१४०॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा
[सचरणगद्यम्]

हड्डाधिराज रनधवल१७२ किल्हनपुरके अधीस जाडेचा जद्दव लखधरकी पुत्री पद्मदेवी१७२।१ विवाही ॥

अरु बहोरिहु नरेन्द्र पृथ्वीराज बुलायो तथापि न गयो रु मंडनगढ रहि पितामहकीही आज्ञा निबाही ॥

रनधवल१७२ सौं पद्मदेवी१७२।१ मैं राजकुमार भयो सो प्रतिभल्लनके संरनके दारनकरि सरदार१७३ नाम कहायो ॥

अरु इतकौं दिल्लीढंग नरेंद्रपृथ्वीराज निगमबोधके घट्टपर धातुमय वेध्यरूप जयस्तंभ रोपि कान्यकुब्जके रनमैं मरे सामन्तनके पुत्रनको बल देख्यो तहाँ पुंडीरचंद्रके पुत्र धीर हेमतुल्य हयपैं आरूढ होइ आपुनी कासूं करि वह स्तंभ वेधि स्वामीसौं सत्कारकी सर्व सामग्री समेत हिंसारदुर्ग पायो ॥ १ ॥

यहै दुर्ग पहिलैं स्वकीयैं स्वसुर सलखकौं दयोहो सो पुंडीरनके पटाके प्रांतके समीपहो यातैं धीरकी रुचि जानि प्रामारकौं पट्टालयदुर्ग दे रु हिंसार धीरकौं दयो ॥

अरु भगवतीके भक्त धीरहू प्रसन्नहोइ स्वामिकौं सुनाइ सहाबुद्दीनकौं बहोरि गहिदेवेकौं पन लयो ॥

कलियुगके प्रभावकरि आर्यावर्तमैं अनीति बढी ॥

जानकर मांडलगढ के राज पर गम्भीर के पुत्र रणधवल का अभिषेक करके संसार से विरक्त होकर योग साधन करके हाडों के राजा आनन्दराज के परलोक प्राप्त होने का इकतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३१ ॥ और आदि से एक सौ चालीस मयूख हुए ॥ १४० ॥

१ मांडलगढ २ दादा ३ शत्रुओं के ४ बाणों को ५ विदारण करने से ६ दिल्ली नगर में ७ निगमबोध नामक घाट पर ८ निशाना ९ कन्नौज के १० बर्छी से ॥ १ ॥ ११ अपने १२ देवी के

अरु बडे बडे बीरन *असूयाकीही पाटी पढी ॥ २ ॥

यातैं हिंसारहूसौं अधिक पट्टालय जैसो दुर्ग पायो ॥

तथापि प्रामार जैत१पुंडीरनमैं +प्ररुष्ट होइ ÷कारामैं जाइमंत्रकरि दाधिमचामुंडराजकौंसहायलै रु प्रभुसौं प्रच्छन्न पातसाहपैंपत्रपठायो

तीमैं लिखी इहाँ पुंडीर धीरनैं नरेंद्रसौं तुमारे गहिदैबेकी प्रतिज्ञा करीहै यातैं जब हम कहावैं तबही जगदंबा[१] जालप्याके मंदिरसौं[२] याकौं पकराइ गजनी बुलाइ आजन्म[३] कारामैं धरहु ॥

अरु हमारे नरेंद्रकी आसक्ति गाधिपुरके अधीसकी अंगजा[४]मैं अत्यंत जानि करतोया[५]के समीपको आर्याबर्तको कितोक प्रांत लैबेको प्रारंभ करहु ॥ ३ ॥

ऐसी ईरखाकरि स्वामिद्रोहको बीज बोइ प्रामार १दाधिम २ दोउ२न पुंडीरपैं पाप बिचार्यो तदनंतर[६] बर्षाकालके व्यतीतहोत आश्विनके पांडुर[७] पक्षको आगम जानि नरेंद्रको निदेसपाइ भगवतीको अनन्यभक्त धीर जालंधर जाइ नवरात्रको अनसनब्रत[८] धारि ध्यान लगाइ ज्वालातमाके मंदिरमैं स्वस्तिकासन[९] करि दुर्गासत्तसई७०० के जप करतभयो ॥

ताकी सुद्धि[१०] दाहिम १ प्रामार २ दोउ२न प्रत्यंतराजपैं[११] प्रच्छन्न पठाई सो सुनि शहाबुद्दीन आठ हज्जार८००० गक्खरी[१२] म्लेच्छनकौं फकीरी बेस बनाइ जालप्या भेजि धीरकौं पकराइ गजनी मगाइलयो ॥

धीरके अनेक सुभट मारेगये जा कलहके कोलाहलमैं पकरिबेसौंहू व्युत्थानैं[१३] न पाइ कैदी भयोहु महाधीर धीर ध्यानहीं लगार

*"परगुणेषु दोषाविष्कारः असूया" दूसरे के बढ़ने को सहन नहीं करने का नाम असूया है तथा क्रोध का नाम भी असूया है+क्रोधित होकर÷जेलखाने में जाकर १जालप्या देवी के मन्दिर में२जन्म पर्यन्त३कैद में४पुत्री में५अटक नदी के ॥ ३ ॥ ६ जिस पीछे ७ शुक्ल ८ निराहार९ दोनों पदतलों को जंघाओं पर रखकर पालथी बैठने को स्वस्तिकासन कहते हैं १० खबर ११बादशाह के पास१२गक्खर देश के रहनेवाले गक्खरी कहलाते हैं१३खड

जप करतगयो तानैं करतोधाके पार प्रत्यंतके प्रांतमैं पहुंचत जपनकी समाप्ति आनि अंखि उघारि सय संज्ञाकरि ग्राहकनकी छुप्ति छुराइ आपुनैं अनुगसौं उदक मगाइ कीलितही आचमन१स्नान२ करि व्रतके समापनकी दक्खिनामैं आपुनैं चरनके पंच ५ सेरी प्रमित जात्यं हाटकके शृंखलेंकी एकएक कटिका द्विजनके अभाव दीननकौं दई ॥

पीछैं गजनी जावत जवनेसनैं निगडितही समक्षैं बुलाइ आपुनैं पकरिदेवेकी पूछी तहाँहु निस्संक पुंडीरराज कही मैं सुपर्णा सामंतनाथकी सभामैं तोकौं पन्नगलौं पकरिदेवेकी प्रतिज्ञा लई ४

सो गौरवके साथ कारासौं कढिजैबो बनिजैहै१ रु तू तस्कर लौं ताकत अटक आपगाकौं उल्लांघि ऐहै२ तो अबके आहवमैं तोसे कंगालके कंठमैं कमान डारि सच्ची करि दिखैहौं ॥

अरु पहिलैं केहीवेर कारामैं सह्यो ताहूसौं विसेस संकलनैंको भार सहिबो सिखैहौं ॥

ऐसी अनेक कहतहू धीरकौं पवनंद दैवके प्राबल्य करि प्रसन्नहोइ अंदुकैं उतारि बंध प्रबंध विहीन करि इभ १ अश्व २ अलंकार ३ आच्छादन ४ दैनलग्यो ते न लये रु कही ॥

नहीं होकर २ अटक नदी ३ म्लेच्छों के देश में ४ हाथ का इशारा करके ५ छोत (अस्पर्श के स्पर्श करने को छोत कहते हैं) छुड़ाकर अपने ६ सेवक से ७ पानी मँगाकर ८ कैद में ही ९ समाप्ति की दक्षिणा में अपने पग के पांच सेर के तोल के १० श्रेष्ठ ११ सुवर्ण के १२ पगसांकले (लङ्गर) की एक एक कड़ी ब्राह्मणों के नहीं होने के कारण दीन लोगों को दी १३ कैद कियाहुआ (बन्धाहुआ) ही १४ सन्मुख १५ गरुड़ रूपी मैंने १६ पृथ्वीराज की सभा में १७ सर्प के समान तुझको पकड़ देने की प्रतिज्ञा ली है ॥ ४ ॥ सो १८ बड़प्पन के साथ १९ कैद से छूट जाऊंगा और तू२०चोर के समान २१ नदी २२ सांकलों (जंजीरों) का २३ बादशाह ने२४ भाग्य के बल से२५ जंजीर उतारके बन्धन उपबन्धन तथा बन्धनों का बन्दोबस्त दूर करके हाथी घोड़े और आभूषण२६ वस्त्र

तोहि पकरे पीछैं साहसके साहसमैं इतोकही उपायन अधी-
सकौं दिवाइदैहौं रु दीनपैं दया दिखाइ तेरे ही तंत्रमैं राखि देहौं
म्लेच्छ मालिन मही ॥ ५ ॥

ऐसी अनेक कहतहू धीरकौं प्रत्यंतराज स्वकीय सुभट १ स
चिव २ नके बर्जनसौं बहिर्भूत बनि दिल्लीकौं सीखदेत भयो ॥
अरु धीरहू जालप्पा आइ बिधेय व्रतकौं बहोरि बनाइ प्रस्थि
तपथ इंद्रपस्थ पाइ सभामैं साकंभरराजके समक्ष गयो ॥
याको कीलन सुनि नरेंद्रहू अत्यंत अंतर्मनाहो यातैं देखतही दोरि
उरसौं लगाइ अंबुकमैं अंबु लाइ असाधारन सत्कारकरि सिराह्यो॥
यातैं दाधिम १ पामार २ दोउ २ नके चित्तमैं चुभ्यो रु बहो-
रिहू बिसेसही बिरोध चाह्यो ॥ ६ ॥

तबही चामुंडराज १ जैत २ पुंडीरके माननपैं पाटच्चरलौं प्रकु-
प्पि प्रभुको प्रचुर प्रमाद लिखाइ प्रच्छन्न पत्र दैकैं प्रत्यंतपुरंदरकौं
समयोचित स्वापतेय समप्पि बुलायो सो खुरासानको बीवध बा-
हुनसौं बंधि प्रचुर पृतनाकौं प्रसारि अटककौं उल्लंघि आसुही आयो
चंडासिराजहू सम्मुखही झेलि पहिलैं बेरबेर पकरिबेको बि
स्मरन बताइ प्रघातको प्रारंभ रच्यो वाही अवमर्दमैं आपुनी प्र-
तिज्ञा अर्जुनसी अमोघ दिखाइ बहुत बीबीनकौं बलय बिहीन

*१हठ करने के दंड में इतना ही नजराना मेरे स्वामी को दिलादूंगा३अधि
कार में अर्थात् म्लेच्छदेश की मलिनभूमि तेरे ही अख्तियार में रखदूंगा४बाद
शाह५सबके मना करने से बाहिर होकर६विधि पूर्वक७मार्ग चलकर८दिल्ली९
सन्मुख१०उदास११नेत्रों में१२जल भरकर१३चोर के समान क्रोध करके अपने
स्वामी की १४ बहुत १५ असावधानी लिखाकर छाने पत्र भेजकर १६ यव-
नों के इन्द्र को १७ समय के मुआफिक१८ धन देकर बुलाया सो खुरासान
रूपी १९ कावड़ को अपने भुजों से बांधकर बहुत सेना को फैलाकर अटक
नदी को लांघकर २० जल्दी ही आया२१भूलजाना२२ युद्ध का प्रारम्भ किया
२३उसी पीड़ादायक संग्राम में२४यवन लोकों की स्त्रियों को२५चूड़ियां विना

*मनुष्यों को मारनो१ चोरीकरना२परस्त्रीगमन३गालीदेना४झूठबोलना५ये पांच प्रकार के साहस कहलाते हैं

करि पुंडीरराज सहाबुद्दीनकों पकरि नरेंद्रके समक्ष कीनों ॥
अरु थोरेही दिननमैं अल्पही दंडदिवाइ अग्गैं छोरिबेसौं अधिक इज्जत रखाइ छुराइदीनौं ॥ ७ ॥

पुनिहू पृथ्वीराजको प्रसाद[2] पुंडीरहीपैं प्रचुर प्रकटयो पिक्खि मच्छरी दाधिम १ प्रमार २ के हृदयमैं न मायो ॥
अरु हयनके सोदागर यवन यूसफके संग कालनमीर म्लेच्छकों प्रच्छन्नभूत द्रव्य दैकैं पठाइ चूक कराइ पुंडीरराज मरायो ॥
अरु धीरहू मस्तक उडतही ऊठि प्रत्यांकारसौं असिवर ऐंचि आपुनैं वारसैं आये द्वैसत २०० जवन कितेक कालमैं खंडविहंड करि गिराये ॥
यह हाक होतही पुंडीरके प्रवीरन हजारन म्लेच्छनकों मारि कातरनकों प्रतिमुख फिराये ॥ ८ ॥

यासमयसौं पहिलैं दाधिम १ प्रमार२ दोउ२न पुंडीरको प्रकल्पित असंभवी अपराध कहि गोरीके गहिवे जेसी अनेक अतुलित स्वामिसेवा विसराइ नरेंद्रकों कुपायो सो जानि धीर दिल्लीको पटा तजि खुरासानखेतके विशिष्टवेग बाजी बसावनकों अटक उल्लंघि प्रत्यंतमैं प्रविष्ट भयोहो ॥
अरु दिल्लीससौं रूस्यो जानि सहाबुद्दीन लाखनको पटा दैनलग्यो ताको तिरस्कार करि पृथ्वीराज विनाँ औरनके आश्रित रहिवेकों नटिगयो हो ॥
तहां अपनैं पिताको पटा तजि प्रत्यंतमैं आयो जानि धीरको पुत्र पाउसराय लाहोरदुर्गको हाकिमहो सोहू वाही पत्तन[12]कों लूटि पिताके पास गयो ताकौं देखतही धीर निस्त्रिंश[13] निकासि

---

१ रोषरू ॥ ७ ॥ २ प्रसन्नता ३ चहुवाण ४ छाने ५ विना जाने घात करने को चूक कहते हैं ६ म्यान से खड्ग खींचकर ७ कायरों को ८ पीछे फिरे ॥ ८ ॥ ९ झूठा १० विशेष वेगवाले घोड़े ११ अनादर १२ पुर १३ खड्ग

मारनकौं दोरयो ताहि आपके[1] रु प्रत्यंत[2]के लोकन रोकि अंग-
जके अपराधकी क्षमा कराई ॥

तब प्रत्यंतराजकैं न रह्यो १ रु स्वामीके सहर लाहोरकी लू-
टतैं पुलके प्रान लैनलग्यो २ द्वै २ ही असाधारन कार्य सुनि
पृथ्वीपति पृथ्वीराज सविसेस सत्कार लिखि बहोरिहु बुलायो
सो प्रभुके पत्रकौं पिक्खतही सीसधरि अधीसके उपायन[3]कौं ए-
क १ अद्वितीय अश्व लै रु आवतहो [4]तदनंतर दाधिम १ प्रामार
२ द्वै २ ही दुष्टन ऐसैं यह चूक कराइ पुंडीरराज मरायो इहाँ [5]वं-
दीचंद कहुँकतो पाउसराजकौं धीरको पुलही लिख्यो अरु कहुँ-
क लिख्यो भाई ॥ ९ ॥

वंदीचंदनैं सबही ग्रंथ रासेके [6]प्रभूत [7]प्रस्तावनमैं सहाबुद्दीनकौं
छ ६ बेर पकरयो लिख्यो अरु [8]प्रचुरही प्रकरननमैं पंद्रह १५ बेर
पकरयो लिखि अपनैं [9]आगमसौं [10]अभिरूपनकी [11]आस्थाही उडा-
इदई ॥

सो ढुंढ राक्षससौं लैकैं दिल्लीमैं जवननको आधिपत्य भयो
तहाँलों त्रेता१द्वापर२के संभवी अनेक [12]उदंत लिखि स्वकीय [13]स्वां-
तमैं [14]भावी जननकौं जड जानि जो लिखिहौं सोही सत्य गिनिलैं
हैं ऐसी मानि महाभारतको [15]प्रतिभट [16]प्रबंध बनाइ वा [17]वेलाँके वी-
रनकौं [18]बीभत्सु १ [19]वैकर्तन २ भीष्म ३ द्रोन ४ से दिखाइ [20]नर्तक
की नकल आनि [21]आधुनिक कविनकौं [22]अंधजानि आपुनैं मतमैं

निकालकर १ म्लेच्छ २ पुल के ३ नजर करने को ४ जिसपीछे ५ भाट चन्द ने ॥ ९ ॥ चन्द भाट ने सबही रासा नामक ग्रन्थ के ६ बहुत ही ७ प्रकरणों में सहाबुद्दीन को छै बेर पकड़ना लिखा और ८ बहुत ही प्रकरणों में पन्द्रह बेर पकड़ना लिखकर ९ अपने ग्रन्थ से १० पण्डितों की ११ श्रद्धा १२ वृत्तान्त १३ अपने मन में १४ आगे होनेवाले मनुष्यों को मूर्ख जानकर यह मान लिया कि जो मैं लिखूंगा सो ही सत्य गिन लेंगे सो महाभारत का १५ मुकाबिला करै ऐसा अथवा बाबु १६ ग्रन्थ बनाय उस १७ समय के वीरों को १८ अर्जुन १९ कर्ण, भीष्म, द्रोण जैसे दिखाकर २० भांड की सी नकल लाकर २१ इस समय के कवियों को २२ अन्ध अर्थात् बुद्धिरूपी नेत्रों से हीन

तो विश्वंभरके विग्रह व्यासावतारकीही गद्दी लई ॥

संयोगिताके हरणके अनंतर कितेक मासनलौं पूर्वपाटव राखि नरेंद्रतो अतिही आसक्तहोय राष्ट्रकूटीके रंगहीमैं रच्यो॥

अरु अष्टही प्रहर निरंतरही निकटिरहि वादीके वंदरलौं वसीभूत थनि परतंत्र परयो समुझि संयोगिताहू स्वामीकी सावधानीकी समस्त सामग्रीको संहार करि देसनकौं औरनके आयत्त जानि अखिलनकौं उडाइ आपुनैं रक्षक धरि दिल्लीपुरको प्रबंध विसेस वंधि अवरोधके प्रथम प्रकोष्ठ पर वीर वेस बनाइ पंचसत ५०० प्रमदा राखि जो कोऊ आवैं ताकी लठिनसौं मनोहारि करि भुवनें भेजहु ऐसैं कहि अखिलही इंद्रप्रस्थेकौं अपनैं आयत्तकरि सायंसंध्याके समान साकंभर सूरकौं ग्रसिगई सो जानतही दिल्लीके राज्यमैं अनिमिसन्याय मच्यो ऐसे अनेकही अनुचित जानि साकंभरराजको स्वसुर जद्दव हम्मीर जोमातासौं कछु कहाइवेकौं पहिले प्रकोष्ठ पर्यंत पहुंच्योहो ताहि तक्षतैंही पंगुकी पुत्रीकी पंचसत ५०० प्रमदा नरवेसैं धारि निस्संक खरीही तिन पिक्खतैंही जाइ लठिनके प्रहार पटके तिनसौं पग्घैं गिरगई सो जानतही महा भीरुभावैं गहि हाहुलिहम्मीर अपनैं आस्थानैं आइ सपरिकर दिल्लीकौं दैंक दै रु स्वस्थान कंगुर गयो ॥

जानकर अपने विचार में तो परमेश्वर का १ शरीर वेदव्यास अवतार की ही गद्दी लीनी २ पीछे ३ पहिले के समान चतुरपन रखकर ४ राठोड़ी के ५ वादीगर के ६ आधीन ७ जनाने के प्रथम ८ द्वार (ड्योढ़ी) पर ९ स्त्रियों को १० उसके मकान पर ११ दिल्ली को अपने अधिकार में करके १२सायंकाल की संध्या के समान१३चहुवाण राजा पृथ्वीराज रूपी१४सूर्य को गिटगई सो जानते ही दिल्ली के राज्य में अनिमिषन्याय (मच्छगलागल अर्थात् एक मच्छ दूसरे मच्छ को खाजाता है इसीप्रकार)मचा१५जमाई से१६पहिले द्वार तक१७देखते ही१८जयचन्द की१९स्त्रियां२० पुरुषों की पौषाक पहिनीहुई२१देखते ही २२ पाघ २३ कायरपन २४ निवासस्थान पै आकर २५ परिग्रह सहित दिल्ली को २६ पानी देकर

ऐसैं अनेक उदंतन[1]मैं महीप[2]कौं महा प्रमत्त[3] पाइ आजानुबाहु आदिक कितेक अवसेस[4] सामंतनको संघ[5] आपुनौं गौरव राखिबेकौं जिततित टरि विभक्त[6] भयो ॥ १० ॥

अरु इंद्रप्रस्थमैं ऐसो अंधकार जानि सालक[7]कौं सुनय[8] समुझाइबेकौं चित्रकूटसौं लघुपत्नी[9] पृथा सहित राजकुल समरसिंह दिल्ली आइ सेनासहित निगमबोधके घट्ट[10]पैं परयो ॥

सोहू नृप न जानिबेपायो तासौं सम्मुह जाइबे प्रमुख[11] कोऊ सत्कार न बन्यौं जो जानि पंगुजा[12]के प्रधान स्वामिनीसौं कहाई सो सुनि संयोगिताहू स्वामीके नामकारि ननंद १ ननंदवैई[13] २ की सेनामैं सादर ससत्कार[14] महिमानि मुकलि बद्धमान[15] बिनय दिखाय आपुनैं पितामह[16] विजयपाल बसुधा[17]को विजयकरत अवनीसन[18]सौं उपदा[19]मैं अनेक मनि१ भूखन२ आनैं जे जयचंदके दये यांके[20] संग आये तिनकौं स्वामीकी स्वसौं[21]के अर्थ भेजि दोउ२नको दुर्मनीभाव[22] हरयो

समरसिंहकौं निगमबोधपैं बासर[23]नकी बीसी२० बीतिगई तथापि नरेंद्रतो कामांध पंगुजाके प्रबंधकारि जानिबे न पायो ॥

अरु ऐसो प्रमाद सहाबुद्दीन सुनि कायस्थ धर्मायन १ खत्री नीतिराव२ द्वैरही आधिकारी प्रत्यंत[24]राजतैं प्राभृत[25] पाइ पृथ्वीराजतैं प्रच्छन्न पलटि रहेहे तिनसौं अंग १ उपांग २ उपेत उदंत[26] जानि पूर्वसौं बिसेस बाहिनी[27] बढाइ समस्तही सूरनकौं सज्जकारि दिल्लीपैं चलायो ॥ ११ ॥

१वृत्तांत२पृथ्वीराज को३उन्मत्त अथवा गाफिल देखकर४बाकी के सामन्तों का५समूह६बंट गये यहां दूसरी प्रति में यह पाठ है कि "विरक्त भयो" जिसका अर्थ प्रीतिरहित होना है ॥ १० ॥ ७ अपने साले को८ श्रेष्ठ नीति समझाने के लिये ९ अपनी छोटी रानी पृथा सहित १० घाट पैं उतरे ११ आदि १२ जयचन्द की पुत्री के कामदार १३ नणदोई (नणद के पति) १४ आदर सहित१५बड़ी नम्रता दिखाकर अपने १६ दादा राठोड़ विजयपाल ने१७भूमि को१८राजाओं से१९भेट में२० संयोगिता के साथ२१अपने पति की बहिन के लिये भेजकर नणद और नणदोई दोनों का२२उदासपन मिटाया २३थोड़ दिन बीतगये२४बादशाह से२५तनखा पाकर२६वृत्तान्त२७सेना को

तहाँ सुकर्मसाह नामक दिल्लीको बनिक वानिज्यकौं गजनी गयोहो तानैं स्वकीय सहरपैं पृत्यंतराजको प्रस्थान जानि सजातीयनपैं पत्र पठाइ प्रस्थामैं यहै उदंत जनायो सो पत्र पिक्खत समस्तही श्रेष्ठीजन राजाके गुरु रामदेवपैं जाइ वज्रपातसो वृत्तांत निवेदतभये तब रामदेव १ हू बंदीचंदकौं संग लैकैं कूकते सेठन सहित द्वै २ ही पंगुजाके पस्त्यके पहिले प्रकोष्ठ गये ॥

तिनकौं देखतही पुरुखनके पट १ भूखन २ धरैं पंचसत ५०० प्रमदानको प्रकर पंगुपुत्रीको प्रवीर पृथ्वीराजके परिकरको प्रतिभट हो सो दोरि लछीनकी छाँह करतभयो ॥

तब विप्र १ बंदी२ रामदेव १ चंद २ वौं हननसौं बाहिर कढि आपुनें आननें दिखाइ विनैय विहित बिन्नती करि गोरीके आइवेको अरु अपनें आलयसौं इंद्रप्रस्थके जाइवेको पत्र लिखि स्वामीके सपथ दिवाइ पृथ्वीराजके पास पहुंचाइवेकौं दयो ॥ १२ ॥

सो पत्र किंकरीनें स्वामिनीकौं सुनायो तहाँ प्रामारी प्रच्छन्न पिक्खि आयेको उद्वास करि भित्तिके अंतरसौं कांतकौं कूक सुनाइ दीनी सो जानि संयोगिताहू किंकरीके कर पत्र पहुंचाइ जनावतभई ॥

सो जानतही नरेन्द्र बाहिर आइ वर्तमान वीरनकौं बुलाइ निगमबोध जाइ स्वसाके स्वामीसौं आपुनें मंतुकी क्षमा कराइलई॥

अरु आपुनैं अवसेसें आधिवीरनमैं प्रामार सिंह १ कामध्वज

---

१ बनिया वनज करने को २ अपने ३ अपने ज्ञातिवालों के नाम ४ प्रथा(आडी ओलों में अथवा अपनी रीति के अनुसार साङ्केतिक अक्षरों में) ५सेठ लोक ६ संयोगिता७महल के ८ पहिले द्वार पर गये ९ स्त्रियों का१०समूह११पृथ्वीराज की परिगह को१२शत्रु १३ उस मार(पीट) खाने से बाहर निकलकर१४अपने मुख दिखाकर१५नम्रता के साथ १६अपने घर से दिल्ली को जाने की १७ सोगन दिवाकर ॥ १२ ॥ १८ दासियों ने १९ कूक करके २० दीवार की आड़ से २१ अपने प्यारे पति को २२ निगमबोध नामक घाट पर २३ बहिन के पति से २४ अपराध की २५ बाकी के २६ अधिक वीरों में २७ राठोड़

आर्य २ प्रतिहार सिंह ३ महन४पीप ५ पृथाके *पतिकौं आयो सुनि अजमेरसौं आयो ऐसो आजानुबाहु लोहान ६ बीर मल्ह-- णा ७ जद्दव जाम ८ बडगुज्जर राम ९ खिच्ची प्रसंग १० बग्ग- डी देवराज ११ प्रामार जैत १२ कूर्म बलिभद्द १३ अरु कन्हको पुत्र ईश्वरदास१ कैमासको पुत्र प्रताप२ गोबिंदराजको सूनुं साम- न्तसिंह ३ इत्यादिक उद्भटनकौं[2] बंदी चंदके संग मिलाइ अधिष्ठान मैं आनि इक्कथाल[4] असन करि कही मैं स्त्रीजित होइ कुलकीर्ति खोइ अन्वयको[5] अंगार कहायो रु आपकौं आयें बीस २० बास- र[6] भये तथापि न जानिसक्यो सो अब जानि करजोरि कहतहौं

स्वसाँ सहित आप चित्रकूट पधारिये॥

तब राजकुल कही ऐसे अंधकारको अरिबर्ग अवसरही हेरत यातैं अब सहाबुद्दीनके संपात[१०]की सुनि जैबेमैं क्षात्रधर्मकी च्यें- ति जानि संगही मरिबो स्वीकार कियो यातैं निवारिये ॥ १३ ॥

तब दिल्लीसहू स्वसाके स्वामीकौं सौहसी[११] जानि पट्टपकुमार र- त्नसिंहकौं बुलाइ आपुनों आसन[१२] देनलग्यो सो कुमारहू कलहै[१३]

को आगमजानि न लयो ॥

अरु पिउसियाके पतिके प्रसभ पूर्वक कहैं पिताको प्रस्थान

प्रघातनमैं[१४] पिक्खि नीठिनीठि पीछैं रहतभयो॥

राजकुल समरसिंह सालककौं समुझाइ संग लैंजाइ दाधिम चामुंडराजकी बेरी बिनयपूर्वक निकासि द्वै २ ही दलनके स- त्तरिसहँस्र ७०००० सूरनकौं सज्जकरि सम्मुह चलाइ सहाबुद्दी- नकौं सत्तद्रू[१६]के पारही जाइ अटक्यो ॥

---

*राउल समरसिंह को१पुत्र२महाशयों का३पुर में लाकर ४ भोजन करके५ वंश को जलानेवाला६दिन७बहिन के सहित ८राउल ने ९ दिल्ली पर पड़ने (अचानक घात करने) की खबर सुनकर जाने में क्षात्र धर्म का १० नाश जानकर।१३।११हठ करनेवाला१२पाट१३युद्ध का आगम जानकर नहीं लिया और फूफी(भुआ) के पति राउल समरसिंह के हठ पूर्वक कहने से पिता का १४युद्ध में जाना देखकर१५चित्तोड़ और दिल्ली की सेनाओं के१६अटक नदी

अरु प्रामारराजके संवतकी रुद्रसत पंचावन११५५सम्मित स-माके श्रावनकी अमाके दिन प्रधनको प्रारंभरचि सूरननैं परस्पर सस्त्रनको संपात पटक्यो ॥ १४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रकुराडासि १ वंशवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंशपानुवंश्याख्यानव्याहार्यगाम्भीरिरणधवल१७२ चरित्रे मण्डनदुर्गमहेन्द्रहड्डाधिराजरणधवल१७२ यादवीपद्मोदवी१७२।१ परिणयन १ तदौरसराजकुमारसरदार १७३ समुद्भवन २ सामन्तसन्ततिप्राणपरीक्षकपृथ्वीराजनिगमबोधघट्टधातुमयवेध्य-स्तम्भाऽऽरोपण ३ कास्मूवेधितस्तम्भप्राप्तप्रभुप्रसादहिंसारदुर्गपुण्डीरधीरयवनेन्द्रग्रहणप्रतिज्ञान ४ तन्मत्सरिप्रामारजैत्र १ दाधिमचामुण्ड २ वर्णदूतविज्ञापितप्रत्यन्तराजज्वालात्मिकाध्यानासक्तनिगडितधीराऽऽकारण ५ प्राप्तकरतोयापारविज्ञातव्रत १ जप२ समाप्तिसमयकृतस्वर्णशृंखलदानम्लेच्छसभासङ्गतधीरपुनर्यवनेन्द्रग्रहणप्रतिश्रवण ६ नियतानाहृतम्लेच्छसन्माननत्प्रतिमुक्तस-

१ विक्रम के २ प्रमाण वर्ष के ३ अमावास्या के दिन ४ युद्ध का ५ प्रहार.

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थ राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं में उत्पन्न होनेवाले वंश की कथा के कहने में गम्भीर के पुत्र रणधवल के चरित्र में मांडलगढ के राजा हाडों के पति रणधवल का यादवी पद्मादेवी से विवाह करना,उसके उदर से राजकुमार सरदार का जन्म होना, सामन्तों की सन्तान का बल देखनेवाले पृथ्वीराज का निगमबोध के घाट पर धातुमय निशाने का रोपना, बर्छी से स्तम्भ को वेधकर मालिक की प्रसन्नता से हिंसारगढ पाकर पुण्डीर धीर की बादशाह को पकड़ने की प्रतिज्ञा को जनाना, उससे पराई सम्पत्ति को नहीं सहनेवाले प्रामार जैत और दाहिमा चामुण्ड का अर्जी भेजकर बादशाह को जनाकर ज्वालात्मिका देवी के ध्यान में आसक्त धीर को बन्धवाकर मंगवाना,अटक नदी के पार जाकर प्रसिद्ध व्रत और जप की समाप्ति के समय सोने के लंगर का दान करके म्लेच्छ की सभा में जाकर फिर बादशाह के पकड़ने का सुनाना,

माराधितशक्तिपुण्डीरराजदिल्लीनगरागमन ७ पृथ्वीराजसभासमागतधीरसत्करण ८ तदीर्ष्याप्ररुष्टदाधिम १ प्रामार २ सहाबुद्दीनसमाकारण ९ संहृतसपत्नपुण्डीरप्रतिकीलितप्रत्यन्तराजमोचन १० दाधिम १ प्रामार २ शिक्षितहयविक्रयियवनयूसफसार्थसङ्गतविश्वासघातकम्लेच्छकालनमीरधीरशिरश्छेदन ११ तत्कबन्धयवनशतद्वय २०० संहरण १२ पुण्डीरप्रवीरप्रभूतप्रतिपक्षनिपातन १३ तत्समयपूर्वप्रज्ञातपिशुनद्वय २ प्रेरितप्रभुप्रकोपत्यक्तस्वपट्टसदश्वचिक्रीषुधीरप्रत्यन्तसीमप्रविशनसूचन १४ शहाबुद्दीनसमर्पितसत्कारपट्टतिरस्करणज्ञापन १५ ज्ञातप्रत्यन्तप्रविष्टपितृकलुरिटतलाहोरनगरसमागतपुत्रप्राणाजिहीर्षुधीरपरिकरलोकनिवारणद्योतन १६ प्राप्तश्रुतैतदुदन्तपृथ्वीराजसमाह्वानपलतदर्थक्रीतैकमहार्घहयरत्नप्रत्यागच्छद्धीरप्रोक्तरीतिमार्गसरण १७ वन्दिचन्द्रोक्तवहुवाक्यवृत्तान्तवैतथ्य १ विपर्यय २ निर्धारण १८ नरेन्द्रपृथ्वीराजसंयोगिताऽऽसक्तमीभवन १९ पंगुपुत्रीपरिकरप्रकोष्ठप्राप्तयादवहम्मीरोष्णीषपातन २० ज्ञातैतदुद

निश्चय ही अनादर किये हुए म्लेच्छ से सन्मान पाकर उसका पीछा आकर शक्ति की आराधना करके पुण्डीर राज का दिल्ली नगर में आना, पृथ्वीराज का सभा में आये हुए धीर का सत्कार करना, उसके द्वेष से क्रोधित होकर दाहिमा और प्रामार का सहाबुद्दीन को बुलाना, शत्रुओं का संहार करके पुण्डीर का बादशाह को कैद करके छुड़ाना, दाहिमा और प्रामार के सिखाये हुए घोड़े बेचनेवाले यवन यूसफ के घोड़ों के समूह (पशु समूह को सार्थ कहते हैं) के साथ आये हुए म्लेच्छ कालनमीर का विश्वास घात करके धीर का मस्तक काटना, उस कबन्ध का दो सौ यवनों को मारना, पुण्डीर के वीरों का बहुत से शत्रुओं को मारना, इस समय से पहिले प्रत्यक्ष दोनों चुगलों की प्रेरणा से स्वामी के कोप से अपना पट्टा छोड़कर जितेन्द्रिय भूखे धीर का म्लेच्छ की सीमा में जाने की सूचना करना, सहाबुद्दीन के दिये हुए सत्कार और पट्टे का अनादर जनाना, अपने पिता को म्लेच्छ देश में गया हुआ जानकर लाहौर नगर को लूटकर आये हुए पुत्र के प्राण लेने की इच्छावाले पुण्डीर राज धीर का परिगह के लोगों को मना करने को जनाना, यह वृत्तान्त सुनकर पृथ्वीराज के बुलाने

न्तविरक्तीभूतावशिष्टसामन्तस्वाभिमतौदासीन्यभजन २१ ज्ञाततत्
दन्धकारसमागतसपत्नीकसमरसिंहनिगमबोधस्वाशिविरन्यसन
२२ संयोगितातदर्थमणि १ भूषण २ दिसत्कारप्रेषण २३ नि-
र्णीतपृथ्वीराजप्रमाददिल्लीजिगीषुयवनेन्द्रशहाबुद्दीनाभिषेणन २४
ज्ञातश्रेष्ठिसुकर्मपत्रदिल्लीवाणिग्गण १ द्विजगुरुरामदेव २ बन्दि-
चन्द ३ पंगुजामकोष्ठप्रापण २५ भर्त्सितप्रत्यभिज्ञातबन्दि १ वि-
प्र २ सशपथप्रभुपार्श्वपत्रप्रेषण २६ वाचितवर्णोदूतबहिरागतसाखि
लसामन्तपृथ्वीराज १ समरसिंह २ सम्मिलन २७ समनादृतगृ
हगमनश्यालकसहायीभूतसमरसिंहसौमिकुमाररत्नसिंहससाह-
सदिल्लीस्थापन २८ स्वसृस्वामिसम्मतविरचितविशृंखलदाधिम-
सन्नद्धसैन्यससमर १ सौमि २ सपत्नसम्मुखसमभिषेणन २९ पा
राडवपृशत्कशिव ११५५ सम्मितविक्रमशकश्रावणादर्श ३० दिन

का पत्र पाकर उसके लिये बहुत महंगे मोल का घोड़ा रूपी एक रत्न मो-
ल लेकर पीछे आते हुए धीर का ऊपर कही हुई रीति से मार्ग में मरना,
चन्द भाट के कहे हुए बहुत वाक्यों में वृत्तान्त का मिथ्यापन और उलट प-
लट का निर्धार करना, राजा पृथ्वीराज का संयोगिता में आसक्त होकर
रात्रि होना अर्थात् दिल्ली में अन्धेरा होना, जयचन्द की पुत्री की परिगह का
ड्योढी आये हुए यादव हम्मीर की पाघ गिराना, इस वृत्तान्त को जानकर
विरक्त होकर बाकी के सामन्तों का उदासीन होना, यह अन्धकार जान-
कर आये हुए स्त्री सहित समरसिंह का निगमबोध के घाटपर अपने डेरों
में रहना, संयोगिता का उनके लिये मणि भूषण आदि सत्कार भेजना, पृ-
थ्वीराज का प्रमाद निश्चय होने पर दिल्ली को जीतने की इच्छा से बाद-
शाह सहाबुद्दीन का युद्ध यात्रा करना, सेठ सुकर्म का पत्र जानकर दिल्ली
के बनिये लोक और ब्राह्मणगुरु रामदेव चन्द भाट का संयोगिता की ड्योढी पर
जाना, डराये हुए विचार पूर्वक भाट और ब्राह्मण को सोगन दिलाकर स्वामी के
पास भेजना, पत्र को बांचकर बाहर आये हुए पृथ्वीराजका बाकी के सामन्तों
सहित समरसिंह से मिलना, परम्परा(आगे)के समान आदर करके घर में आकर
शाला की सहाय होकर समरसिंह और पृथ्वीराज का कुमार रत्नसिंह को
हठ पूर्वक दिल्ली में रखना, बहिन के पति की सलाह से दाहिमा को कैद
से छोड़कर सज्ज होकर समरसिंह सहित पृथ्वीराज का शत्रु के सामने युद्ध

रणप्रारम्भणं ३० द्वात्रिंशत्तमो ३२ मयूखः ॥ ३२ ॥
आदित एकचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४१ ॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा
(सचरणगद्यम्)

अमां ३० के दिनसौं पंचमी ५ पर्यंत महा अवमर्द्द मंडत तेरह १३ हजार १३००० सत्रुनकौं संहारि सपरिकर राउल समरसिंह बीरतल्पै लयो ॥

की यात्रा करना, पांडव (पांच) और बाण (पांच) और शिव (ग्यारह) अर्थात् ग्यारह सौ पचपन के प्रमाणवाले विक्रम के शक में श्रावण की अमावास्या के दिन युद्ध प्रारम्भ होने का बत्तीसवां मयूख समाप्त हुआ॥३२॥ और आदि से एक सौ इकतालीस मयूख हुए ॥१४१॥

१ अमावास्या के दिन से २ सब पदार्थों का नाश करनेवाले संग्राम ३ परिग्रह सहित राउल समरसिंह ४ वीरशय्या सोये अर्थात् काम आये (पृथ्वीराज के साथ राउल समरसिंह का माराजाना मिथ्या है; क्योंकि यह दोनों राजा एक समय में नहीं हुए थे. और पृथ्वीराजरासा जो पृथ्वीराज से कई सौ वर्ष पीछे चन्द्र भाट के नाम से किसी भाट ने अपनी जाति की उन्नति दिखाने के कारण से कपोल कल्पित कहानियों से मिथ्या इतिहास लिखकर बनाया है इस रासा नामक झूठे ग्रन्थ के सिवाय अन्य पुस्तकों से तो यह भी नहीं पायाजाता कि पृथ्वीराज के पास चन्द्र नाम का कोई भाट था भी या नहीं, पृथ्वीराजरासे का मिथ्यापन तो ज्योतिष आदि प्रमाणों से इस ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) ने भी अनेक जगह लिखा है परन्तु उनको उस समय का अन्य इतिहास नहीं मिलने के कारण रासे का मिथ्या इतिहास ही लिखना पड़ा जिसके लिये स्वयं सूर्यमल्ल ने लिखा है कि "हम न लिखैं तो किम लिखैं, लद्धो लेख न और" परन्तु सूर्यमल्ल ने भी इतना लिखकर इस मिथ्या इतिहास के अन्तिम सम्वत् ११५५को सत्य मानलिया सो अनुचित है क्योंकि कई फारसी तवारीखों और अनेक पाषाण लेखों (प्रशस्तियों) से सिद्ध है कि पृथ्वीराज और सहाबुद्दीन का यह अन्तिम युद्ध हिजरी सन् ५८८ विक्रमी सम्वत् १२४९ ईसवी सन् ११९२ में हुआ था जिसके उपरोक्त अनेक प्रमाण विद्यमान हैं. रासे में पृथ्वीराज का पकड़ा जाना लिखा है सो भी मिथ्या है क्योंकि वह इसी युद्ध में मारागया था, पृथ्वीराजरासा के कारण केवल इसी ग्रन्थ में सम्वतों की भूल नहीं हुई है किन्तु राजपूताना के समग्र इतिहासों में सम्वतों की गड़बड़

अरु दाहिम चामुंडराज १ जद्दव जाम २ आजानुबाहु लोहान ३ कूर्म बलिभद्र ४ भामार जैत५सिंह ६ खिच्ची प्रसंगराज७व-ग्गडी देवराज ८ वडगुज्जर रामदेव ९ पुंडीर पाउसराज १० रट्ठोर अज्ज ११ वीर मल्लहन १२ प्रतिहार सिंह १३ महन १४ पीप१५ द्विज गुरु रामदेव १६ सस्त्रसंचिव सारंगदेव १७ तांबूलवाहक प्रतिहार वीर १८ प्रमुख पार्थिव पृथ्वीराजको परिकर खंडविहंड होइ काचके कैरीरलौं भरतभयो ॥

मोरी ४४ चाहुवान संकरसिंह १ अरु धौंधेटिक ३ चाहुवान जगम्मनि २ द्वै २ ही भीलुकन भजिकैं चडासिराजके कुलही-के कलंकलगायो ॥

अरु हड्डा ६१ चहुवान हम्मीर १७११ को सूनुं सुमेरु १७२ ग-क्खरके टंक ५ चाहुवान चट्टाको पुत्र सारंगदेव २ सोलंखी भानुरा-ज ३ तीन ३ ही तेरह १३ तुरंग मारि अल्प आहव करि कढिगये परंतु स्वामीकों संकटमैं देखि इन पंच ५ न मांहिंसौं देहडारिबो वि-चारि अर्धासके अड्डो कोऊ न आयो ॥ १ ॥

मचगई है और बड़वाभाटों ने भी पृथ्वीराजरासे के इसी सम्वत् को सम्पूर्ण राजपूताना की रियासतों में पीढियों के कपोल कल्पित नाम लिख-कर जहां तहां झूठे इतिहास लिखकर शृङ्खला बद्ध बनादिया है जिनका छानना अब दुर्घट सा प्रतीत होता है. अब हमको यह जताना है कि चित्तो-ड़ के रावल समरसिंह चित्तोड़ पर किस समय राज्य करते थे जिसके लि-यें कई प्रमाणों से विक्रमी सम्वत् १३३०से लेकर१३४४तक और हिजरीसन् ६७१ से ६८६ तक और ईसवी सन् १२७३ से १२८७ तक रावल समरसिंह का चित्तोड़ पर राज्य करना सिद्ध है जो पृथ्वीराज से अनुमान सौ वर्ष पीछे हुए थे तो यहां पर रावल समरसिंह का माराजाना कदापि सम्भव नहीं है. पाठक लोगों को इस प्रकरण को विशेष देखने की इच्छा होवे तो वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास की २५४ की पृष्ठ में देखें).

१सलहखाने का दरोगा२पान बीड़ा रखनेवाला ३ आदि४राजा पृथ्वीराज का ५ काच के घड़े के समान ६ कायर ७ पुत्र ८ युद्ध ९ आड़ा ॥ १ ॥

नरेन्द्र पृथ्वीराजहु समस्तही सज्जनकों सफलकरि वीरतल्प चाह्यो परंतु गोरि गहिबोही दृढकरि स्वकीय सुभटन सुरसज्जा सुवावत ढालनसों दावि गहि गजनी लैगयो ॥

अरु पंचमी ५ के दिन प्रभुके पकरिबे की दसमीके दिन दिल्ली सुनतही पंगुपुत्रीनैं प्रान तजे रु एकादसी ११ के दिन चंडासिराजके एकादस ११ ही रानी जनन समरसिंहकी सीमंतिनी पृथा सहित आपआपके प्रवीरनकी पत्निन उपेत पंचसत५०० पाँनिग्रहीती प्रमदानके प्रकर ज्वलनमैं जरि स्वस्व स्वामिनको सामीप्य लयो ॥

हेप्रभु रासेमैं ठामठाम चंदभट्टके लेखके विरोधी वाक्यनकों अन्यथाभाव कहाँलों कहिये ॥

एक १एक १ बात बीस २० बीस२०न भेद भजंत जानि ग्रंथके ग्रंथनमैं और कोऊ आलंबन न मानि भिन्नभिन्न भाखननमैं कोऊतो सत्य व्हैहैं ऐसी पहिचानि इहाँतो आगमप्रमानके दुग्धोदधिमैं राजहंसता करि सारा सार टारि तात्त्विकही उदंत गहिये ।२।

(दोहा)

चंबिय चंद दसमी १० दिनहु, दिय पंगजानिय देह ॥
अक्खिय पुनि एकादसिय ११, अखिल जरी तँहँ एह ॥३॥

(सचरणागद्यम्)

यातैं हड्डाधिराज नरेंद्र रामसिंह२०३बन्दीचंद्रके विरुद्ध वाक्यन

१काम आना चाहा परन्तु २ अपने३ संयोगिता ने४ रानी५ विवाहीहुई स्त्रियों का ६ समूह अग्नि में जलकर ७ अपने अपने पतियों के ८ पास गया ९ हे स्वामी रामसिंह १० झूठापन ११ धारण करती जानकर १२ ग्रन्थ यनाने में कोई दूसरा१३ सहारा न जानकर जुदी जुदी रीति से कहने में कोई तो सत्य होवेगा यह जानकर यहां तो १४ ग्रन्थ के प्रमाण में १५ क्षीरसमुद्र में राजहंसता करके (राजहंस दूध को पीकर पानी को छोड़देता है इस माफिक) साच झूठ को छोड़कर १७ वृत्तान्त में १६ सारांश होवे सो ही लीजिये ॥ ४ ॥ १८ कहा १९ संयोगिता ने २० सभी जलगई ॥५॥

के अन्यथाभावकी सूची तो इहाँ अनवसर लिखिवेकरि व्यर्थही प्रवंध वढैं यातैं ग्रंथकी समाप्तिमैं कहिजैहैं ॥

अरु वाहू सूचीमैं जेजे वाक्य संगतहू मैं मौढ्य करि असंगत लिखिदैहों तिनकों स्वामीके सप्रतिभ सभ्य सत्य संभवी दिखाइदैहैं तेतेही समीचीनं भावमैं रहिजैहैं ॥

यदैही भट्ट जाकों पृथ्वीराजकी वारहीं १२ रानी इंद्रावती लिखैं सोही सोलंखी सारंगदेव की सुता अद्यावैधि संसारमैं सौभाग्यदेवी असे दूजे २ नामकरि विख्यात सो विवाहके अनंतर दाधिम कैमासको अंकस्थ पुत्री करि आनीही ताकी सबही सँपत्निनमैं अतिही असूया जानि प्ररुष्ट पहिचानि याके पितृकल्प कैमासके आलयँ खट्टू कितेक कालमैं पहुँचाइदईही सो स्वकीयँ स्वामीके सामंत आयलदुर्गके अधीस खिची दुर्गसेन जाकों नित्यही पंचास ५० पल कुंकुमके उँद्वर्तनसों स्नान करिवेके कारन दूजे२ नामकरि पीवलेपंजरहू कहैं तासों प्रच्छन्न दुश्चारकरि अनर्गलैं रहतभई ताहि जानतही नरेंद्र १ कैमास २ सहित खट्टू आइ दम्य वलीवर्दनसों वँधाइ चिराइडारी ॥

अरु कैमास दुर्गसेनकों सुरंगामैं दोरि जावत गहि मुखमैं तृन लेत भल्लसों वहुंसिख सीस सहित विरूपकरि लत्ताघात दै तारयो

२झूठेपन की ३विना अवसर लिखने से ४ग्रन्थ वढ़ता है ५ हृदय में आवे जैसे वचनों को मैं ६ मूर्खता करके ७ अनुचित लिखदूंगा उनको ८ आपकी उपस्थित बुद्धि के सामने ९ आपके सभासद् सत्य और सम्भवयोग्य दिखा देवेंगे उतने ही १० सत्यता में रहजावेंगे ११ अब तक १२ पीछे दाहिमा कैमास की गोद रक्खी हुई पुत्री करके लाये थे उसकी सब ही १३ सौतों में बहुत असूया जानकर उसको १४ क्रोधित जानकर इसके कल्पना किये हुए पिता कैमास के १५ घर १६ खाटू १७ अपने पति के उमराव १८ उबटना (मालिश) १९ पीले शरीरवाला २० दुराचार (व्यभिचार) करके २१ विना रोक टोक रहने लगी २२तरुण २३वृषभों से २४सुरङ्ग (गुप्तमार्ग) में २५ मुण्डन कियेहुए मस्तक सहित २६ नकटा बनाकर ठोकर की देकर निकाला

तामूढनैं[1] पीछैं कालकूट[2] कवलनकरि[3] दुर्गतिकी यातना[4] धारी ॥ ४ ॥

वा रानी सोलंखिनीको मृत्युमात्र हू चंद नैं पहिलैं न लिख्यो अरु एक १ पट्टरानी प्रातिहारीकोही पूर्व मरन लिखि इहां बडी बेरीके अंतमैं दसमी १० के दिन पतिकौं पकरयो सुनतही पंगुपुत्रीको प्रान बियोग लिखि एकादसी ११ के दिन संयोगिता सहित बारह १२ रानिनको सहगमन[5] लिख्यो तिनमैं संख्यासूचना करि सोलंखिनी रानी सौभाग्यदेवी हू ज्वलनमैं जरी जनाई ॥

अरु बानबेध खंडके अंतमैं यवनेंद्रकौं मारि पृथ्वीराज मरयो ताको स्वप्न दिल्ली संयोगिताकौं आयो लिख्यो सोहू असंगत[6] उदंत अवसरपर लिख्योजैहैं पर असैं गोरीपठान सहाबुद्दीन पृथ्वीराज पार्थिवकौं[7] गजनी लैजाइ बेनीदत्त प्रमुख[8] दस १० द्विजनकौं परिचर्यामैं[9] पासधरि जामिक जवनके आयत्तकरि[10] गुप्तिगेहमैं[11] राख्यो तानैं बासरकी[12] वावनी ५२ पर्यंत अन्न न लयो लिख्यो सो जानतही साहि[13] तहाँ जाइ समुझावनलग्यो सो साकंभरराजनैं[14] असी दृष्टिसौं देख्यो कि होजहाँसौं पचीस २५ पैंडपीछो जाइ नृपके नेत्र निकसाइ आपुनी निर्दय बिरोधिता बताई ॥

तदनंतर[15] सोमसुत[16] स्वप्नमैं सिवको सासन पाइ दीदिवि[17] लैन लग्यो अरु याही अंत्य आहवके[18] आरंभमैं हाहुलिहम्मीरके बुलाइबेकौं चंदभट्टही नगरकोट पठायोहो ताकौं हम्मीरनैं छलसौं देवीके मंदिरमैं रोकि द्वार चूनाँसौं चुनाइ कैदकरि राख्योहो सो भव[19]१ भवानी २बीर३ योगिनी ४ प्रमुख खेचर[20] यो तुमुलको[21] तमासो

१उस मूर्ख ने फिर २जहर ३खाकर ४पीड़ा ॥ ६ ॥ ५सती होना ६ अनुचित वृत्तान्त ७ राजा को ८ आदि ९ सबों में रखकर यवन पहरायतों के १० आधीन करके ११ तहखाने में रक्खा जिसने १२ बावन दिन तक १३ बादशाह ने १४सांभर के राजा पृथ्वीराज ने १५जिसपीछे १६पृथ्वीराज ने १७शिव की आज्ञापाकर अन्न लेने लगा १८युद्ध के १९महादेव २०विद्याधर २१युद्ध का

देखि पीछे चले तव गिरीसके गन वीरभद्रनैं पहिलैं दिल्लीमैं परिचित जानि उहाँआइ द्वार खोलि निकास्यो तानैं इंद्रप्रस्थ आइ अष्ट८दिन अधिक मास द्वय२मैं एकलाख १००००० ग्रंथ रासो बनाइ अंतिम आहवमैं इंद्रप्रस्थके अधीस चंडासिराज रत्नसिंहके मरिवे१ दिल्लीमैं यवनेंद्र कुतबुद्दीनके अमल करिवे २ जयचंद्रके गंगामैं परिवे३ प्रमुखं भावीवृत्तांत हू ईस्वरके अवतार प्रभु परासरपुत्रलौं पूर्वही प्रकासि पीछैं चंद्रहू जोगलै रु गजनी आयो ॥

ऐसे उदंतनसौं असंभूत असंगत अप्रमेय अर्थांस टारि जाजाकौं ज्यौंज्यौं संभवी सूझै त्यौंत्यौं ही श्रोताजन समुझि छमाकरहु सोमसुतके चरित्र संवंधी मेरे वाक्यननैं जो अलीकपनैं पायो ॥५॥

ऐसैं चंद गजनी आवत सहाबुद्दीनके सिपाहनकौं वेध्य वेधत देखि नासा सल्ल दै रु कमनैतनकी कूरता दिखाई अरु सहाबुद्दीनहू राजाके भट्टकौं जोगलै रु आयो सुनि खत्री भीमराजके भवन राख्यो तहाँ चंदहू खत्रीसौं होमकी सामग्री मगाइ महामांत्रिक विधियविधान बिस्तारि अंबिकाकौं आराधितभयो तहाँ पार्वतीहु प्रसन्नहोइ कह्यो तेरो स्वामी सब्दवेधकरि म्लेच्छराजकौं मारि मरिहै ताको उपायकरि इष्टसाधन करहु ऐसैं पार्वतीकी प्रसन्नता पाइ आनंदित भट्टहू प्रत्यंतराजको प्रसादलयो। यवनेंद्र आइवेको हेतु पूछ्यो तहाँ भट्ट कही पहिलैं नरेंद्रनैं तमिस्राके महाअंधकारमैं नेत्रबांधि भल्लाविहीन सैर करि सप्त७धातुमय सप्त७ पूर्णचंद्र सब्दके अनुसार एकही संग बेधेहे तव मो-

१ शिव के २ जानाहुआ (मिलाभेंटा) समझकर ३ युद्ध में ४ दिल्ली के ५आदि ६ आगे होनेवाले वृत्तान्त भी ७ वेदव्यास के समान ८ ऐसे वृत्तान्तों से ९ असम्भव १० अनुचित और प्रमाण रहित चिंतवन में नहीं आवे ऐसे११मिथ्यापन (झूठ) ॥७॥१२ निशाना १३ घर में१४ बडे मन्त्र जाननेवाला विधि पूर्वक मन्त्रों को फैलाकर देवी की आराधना करनलगा१५ वाञ्छित फल की साधना करके१६बादशाह को प्रसन्न किया१७रात्रि के१८ वाण से १९ सात तव

कों अभीष्ट[1] दैनकह्योहो तहाँ मैं कह्योहो जबही कामपरिहै तब मंगिलैहों सो बिनाप्रयोजन न पाइसक्यो इतनेमैं आप नरेंद्रकों कीलितकरि[2] इहाँआनि नेल निकासि अंधकरयो ॥ सो जानि स्वामीको सीघ्रही मारिजैबो मानि अबोभयो यातैं सा हनसाहको सासन होइतो मिलैं सो मंगिबो होइ असी सुनि स-हाबुद्दीन निर्भल्ल बानसों शब्दायमानें धातुबिधु बेधमैं बिस्मय लहि वहैही कौतुक पुनिहू पिक्खिबो प्रमानि अपुनैं अनुगनसों भट्टकों स्वामीसह मिलाइबेको आदेस उच्चरयो ॥६॥

तबही बंदीचंद साहके सिपाहनके संगजाइ उनहीके अनुमत करि दस १० पैंड दूररहि स्वामीकौं सदाही सुनावतो वाही बिरु दसौं उच्चस्वरकरि बिरुदायो ॥ सो सुनतही नरेंद्रहू आपुनैं बंदीको बिरुदावलीलहि रागपैं नाग लौं उरकी आंखिसौं अभिमुख आयो ॥ तहाँ भट्टहू स्वामीकौं सानुकूल[11] जानि कोऊ संकेतितैं[12] कथन-करि समुझावतभयो ॥

तामैं सब्दके अनुसार अग्गैं उलूक[13] बेध्योहो सोही साकूत सु लाइ धातुबिधु[15] बेधनको स्वीकार कराइ अधीसको आसय लै रु यवनेंद्रपैं गयो ॥७॥

सहाबुद्दीनहू बंदीको बचन बिदितकरि यहैही कौतुकको आ लंबन[16] बिचारि वैसैंही सप्त ७ धातु चंद्र बांधि चंदहीकौं भेजि नृप बुलायो तहाँ नृप कही सहाबुद्दीन तीन३बेर कहैं तब सब्दायमा[17] न धातुचंद्रनको बेध करौं॥ अरु न कहैतो मरेकौं कहा मारिहै यातैं म्लेच्छकी जोजोही

१वांछित फल२कैद करके३ बिना भाल (फल) के तीर से४ बजतेहुए धातु के तवे बेधने में५आश्चर्य मानकर६सेवकों को७आज्ञा दी ८ सलाह से९ उत्साह बढ़ानेवाली स्तुति से १० सन्मुख११ प्रसन्न १२ किसी सङ्केत कियेहुए कहने से १३ उल्लू (घूघू) को मारा था १४ अभिप्राय सहित १५ धातु के बनेहुए पूर्ण चन्द्रमा के आकार (तवे)॥९॥१६ आधार१७ शब्द होतेहुए १८ तवों को

सासनां औहैं सोसोही स्वकीय सीसधरौं ॥
सो सुनि भट्ट गोरीसौं कही साहनसाहके फरमानको उत्सुक
नरेन्द्र श्रवनमैं अमृतपान कियो चाहैं ॥
अरु पिछिसौं निदेसदियैं अग्गैं जे सब्दायमान धातुचंद्र तिनको
वेध विसेसता करि निवाहैं ॥८॥
सोहू सुनि सहाबुद्दीन स्वीकारकीनौं तहाँ तत्तारखान प्रमुख
स्वकीय सुभटन रोक्यो ताथापि तिनसौं विपरीत बानि बिधु बेध-
नमैं विसेस आल्हाद आनि वीतिहोत्र वसुधेश्वर वीज्य बुलायो॥
अरु भट्टहू सप्त ७ ही धातुचंद्र अगारी वंधे बताइ पिछिसौं प्र-
त्यंतराजको जंपिवो जताइ साकूत सूचना करि पहिलैं आरवपैं
उलूक वेध्यो सो समुझाइ महीसके मनमैं जन्म जीतिबेको आ-
नंद खुलायो ॥
यवनेंद्रके पहिले वचन१पर सर संधानकरि दूजे२पर आकर्ण
ऐंचतही वंदीहू विरुदनकरि वीरत्व विसेसजगायो ॥
अरु तीजो३ वचन निकसतही पच्छो मुररि म्लेच्छराजके मु-
खहीपैं बान लगायो ॥ ९ ॥
कूर्चितें कलंबकी सलाका वदनमैं व्याप्तहोतही गोरिसहाबु-
द्दीन गैंवाक्षसौं पृथ्वीपर आइपर्यो ॥
सो देखतही चंद हू आपुनैं जटाजूटसौं असिपुत्री निकासि
स्वकीय सिर काटि नृपकौं दई जातैं जंगलराजहू म्लेच्छनसौं
मरिवेमैं द्वापर देखि आत्मघात कर्यो ॥

२आज्ञा३चाहनेवाला॥१०॥ ४आदि५तवे६अग्निवंशी वसुधेश्वर के राज्यवंश में उत्पन्न ऐसे पृथ्वीराज को बुलाया७सामने८बोलना९सांकेतिक शब्दों में जानकर पहिलें शब्द करने पर उलूक वेधा था सो १० कान तक खींचते ही ११ वीरता ॥ ११ ॥ १२ कुचलेहुए १३ बाण की १४ मुख में १५ झरोखे से १६ छुरी १७ अपना १८ सन्देह(मुक्ति होने में सन्देह जानकर)

गोरीकी गद्दीपर अंगजके अभाव याहीको कीत किंकर कुतबुद्दीन १ बैठो जाकों कितेक सुबुक्कगीं महमूदको मोललयो गुलाम कहत तानैं पट्टपावतही खुरासानकों आधिपत्य सावधानीसों म्हारयो ॥

ताको नाम बंदीचंद्रनैं आपुनैं ग्रंथके भावीवृत्तांतमैं बिनयसाहस १ ग्रैसो लिख्यो ताहूनैं राज्यके अंग प्रबलपारि आर्यावर्तको अधीश व्है बो धारयो ॥ १० ॥

इतकों पिताको प्रतिघातनैं सुनि चंडासिराज रत्नसिंह दिल्ली १ लाहोर २ अजमेर ३ संभर ४ के प्रभुत्वको पट्टलयो ॥ अरु सिंधुनदीके वारको कितोक प्रांत प्रत्यंतराजके वसवर्त्ती भयोहो तहाँके गोरीके गोपँनकों गंजि १ गहि २ गिराइ ३ अटक आपगाके उपकंठलों आपुनैं अधीन करतभयो ॥

सो सुनतही कुतबुद्दीन १ अटकनदीकों उल्लंघि उतकी आर्यअवनीकों अपनैंही अधीन करतआयो सो सुनि रत्नसिंह संवितालों सम्मुहजाइ विग्रह बिरचन बिचारयो ॥

तहां कन्हके अंगजं ईश्वरदास १ कैमासके पुत्र प्रताप २ गोबिंदके गात्रजं सामंतसिंह ३ हम्मीरके सूनु सुमेरु ४ पाउसपुंडीरके पट्टपति भानु ५ मोरी ४४ साकंभर संकर ६ टंक ५ संभरी सारंग ७ धाँधेटिक २ चाहुवान जगन्मानि ८ चालुक भानु ११९ जयसिंह २।१० बीरकरन ९।११ चंद्र २।१२ प्रताप ३।१३ प्रमारराज सिंह १४ प्रबर प्रबीरन आपुनैं बलकों बिध्वस्तजानि अरिके अनीकको आधिक्यमानि दिल्लीही सज्जाकियैं संगरको सौलभ्य समुझाइ निवारयो ॥ ११ ॥

१पुत्र के नहीं होने से २ मोल लिया हुआ नौकर ३ स्वामीपन ४ आगे होनेवाले वृत्तान्त में ॥ १२ ॥ ५ मारना सुनकर ६ स्वामीपन का ७ रक्षा करनेवालों को ८नदी के ९समीप तक १०पिता के समान ११ पुत्र १२पुत्र १३ पुत्र १४पुत्र १५ पट्ट का मालिक १६ चहुवाण १७चहुवाण १८ सेना का १९ नाश जानकर २० शत्रु की सेना को अधिक मानकर २१ युद्ध की सुलभता ॥१३॥

तब सबही समरकी सामग्री संचितकरि दिल्लीके दुर्ग दरीमैं दुर्द्धर दंतावलदारकलौं रुपिरह्यो ॥

अरु इतसौं कुतबुद्दीन दरकुंचन आइ महापन्नगलौं पलेटा लगाइ तोपनकरि दंग दह्यो ॥

सात ७ मास अरु द्वै २ दिन तोपनको तुमुलतनि दुर्गकौं टूटत न जानि वैरनको वप्रतलैं बारूदकरि उडायो ॥

तहाँ रत्नसिंह हू रनके समय सिसुनसमेत आपुनैं अनुज सामंतसिंहकौं अवरोध उपेतं प्रच्छन्न निकासि सुभटन समेत धारातीर्थ लहि परलोकपायो ॥ १२ ॥

क़ुतबुद्दीन दिल्लीमैं अमलकरि कान्यकुब्जपर प्रस्थान करयो ॥
सो सुनि जयचंद्र चंडैसिराजको कीलन चिंति त्रिविष्टपतरंगिनीके प्रवाहमैं पैठि मरयो ॥

विद्यापति मिश्रतो पुरुषपरीक्षा ग्रंथमैं ऐसी लिखि पहिली यवनेंद्रनें दान१ भेद२ द्वैरही उपायकरि जयचंद्रकी रानी सुभदेवीकौं स्वपक्षमैं मिलाइ वाके पक्षपातिनकौं स्कन्धावारके समस्त ही अधिकार दिवाइ राठौरराजकौं विद्याधर मंत्रीसौं बिरक्त कराइ तापीछैं गाधिपुर जाइ जुद्धकरि विजयलह्यो ॥

ताही तुमुलमैं मंत्री विद्याधरतो स्वामीको लौंन उज्वलकरि साँचे स्वांतसौं सूरसज्जा सोयो रु सुभदेवीहू म्लेच्छराजनैं मारिडारी अरु जयचंद्र न जानिये कहाँगयो ताको निश्चयही वा प्रबंधमैं न कह्यो ॥ १३ ॥

---

१ गढ़ रूपी गुफा में दुर्धर्ष २ हाथियों का विदारण करनेवाले सिंह के समान ३ घेरा ४ नगर को जलाया ५ भयङ्कर युद्ध फैलाकर ६ कोट की ७ नींव (बुनियाद) ८ जनाना ९ सहित ॥ १४ ॥ १० कन्नोज पर ११ कूंच किया १२ चहुवाण राजा पृथ्वीराज को १३ कैद करना याद करके १४ गङ्गा के प्रवाह में घुसकर मरा. विद्यापति मिश्र ने पुरुषपरीक्षा नामक ग्रन्थ में लिखा है कि १५ अपने पक्ष में मिलाकर उसके पक्षवालों को राजधानी के सभी अधिकार दिलाकर १६ अप्रसन्न १७ सच्चे मन से ॥ १५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचण्डासिवंशवर्णनान्तर्गतपृथ्वीराजचरमचरित्रेचामुण्डराजादिसामन्तसहितराजकुलसमरसिंह १ बीरतल्पशयन १ चाहुवाणशङ्कर १ जगन्मणि २ पलायन २ प्राप्तप्रदरक्षतहड्डसुमेरु १ टङ्कसारङ्गदेव २ चालुक्कभानु ३ निष्क्रसन ३ यवनेन्द्रगृहीतपृथ्वीराजतत्पुरप्रापण ४ श्रुतैतदुदन्तप्रबीरपत्नीपञ्चशती ५०० सहगमन ४ बन्दिवाक्यविरोधदृढीकरण ५ दुश्चारिणीचालुक्कीराज्ञीसौभाग्यदेवीपूर्वमारणसूचन ६ कैमासतदुश्चारिखिञ्चिदुर्गसेनविरवीकरणाज्ञापन ७ यवनेन्द्रद्वापञ्चाशद्दिनावध्यशनायितपृथ्वीराजनेत्रनिष्कासन ८ प्राप्तस्वप्नशिवनिदेशान्धसौम्यन्धोग्रहण ९ रणारम्भसमयेयादवहम्मीरस्वाकारकवन्दिचन्द्रज्वालात्मिकामन्दिररोधन १० बीरभद्रनिष्कासितदिल्लीसमागतचन्द्राष्टषष्टि ६८ दिनावध्येकलक्ष १००००० ग्रन्थरासकनिर्माणलिखन ११ लिखितानेकभाविवृत्तान्तप्राप्तयवनेन्द्रपुरभट्टचन्द्रखत्रिभीमराजभवनहवनकरण १२ देव्याराधनप्राप्ताभीष्टसभासमाहूतयवनेन्द्रपृष्टा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थ राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के भीतर पृथ्वीराज के अन्तिम चरित्र में चामुण्डराज आदि सामन्तों सहित रावल समरसिंह का काम आना, चहुवाण शङ्कर और जगन्मणि का भागना, तीर का घाव पाकर हाडा सुमेरु टङ्क सारङ्गदेव चालुक भानु का निकलना, बादशाह का पृथ्वीराज को पकड़कर उसके पुर में जाना, यह वृत्तान्त सुनकर वीरों की पांच सौ स्त्रियों का सती होना, भाट के विरोधी वचनों का दृढ करना, दुराचारिणी सोलंखिनी राणी सौभाग्यदेवी को पहिले मारने की सूचना करना, कैमास का दुराचारी खीची दुर्गसेन को नाक काटने का जताना, बादशाह का बाव[illegible] दिनतक निराहार रहे पृथ्वीराज के नेत्र निकालना, स्वप्न में प्राप्त हुए शि[illegible] की आज्ञा से सोम के पुत्र पृथ्वीराज का भिक्षा लेना, युद्ध के प्रारम्भ स[illegible]य में यादव हम्मीर का अपने बुलाये चन्द भाट को ज्वालात्मिका देवी के [illegible]न्दिर में बन्द करना, वीरभद्र के निकालेहुए चन्द भाट का दिल्ली आकर [illegible]ठ दिन की अवधि में एक खास ग्रन्थ रासा बनाने का लिखना, अनेक [illegible]वी वृत्तान्त लिखकर बादशाह के शहर (गजनी) में चन्द भाट खत्री [illegible]मराज

गमनकारणवन्दिचन्दनृपपूर्वदेयीकृतदानावशेषत्वकथन १३ श्रु-
तैतद्दाननिमित्तनिर्भल्लविशिखसप्त ७ धातुचन्द्रवेधतद्दिदृक्षुसच-
मत्कृतयवनेन्द्रचन्द १ पृथ्वीराज २ सम्मेलन १४ स्मारितप्राग्गु-
लूकवधसाकूतस्वीकारितशब्दवेधगतप्रत्यागतचन्दरङ्गस्थलनृपा
नयन १५ स्वपरिकरवारणप्रतीपपृष्ठप्रदेशप्रासादप्रग्रीवप्रलग्नप्र-
त्यन्तराजविधुवेधवाग्दान १६ पृथ्वीराजनिर्भल्लबाणबेधितमुख
म्लेच्छराजनिपातन १७ चन्द १ पृथ्वीराज २ शस्त्रीसमाघात-
स्वस्वतनुत्यजन १८ यवनेन्द्रक्रीतकिंकरकुतबुद्दीन १ खुरासा-
णाधिपत्यप्रापण १९ श्रुतपितृपरलोकप्राप्ततत्पट्टचण्डासिराज-
रत्नसिंहयवनाक्रान्तकरतोयाप्रान्तप्रत्याक्रमण २० तत्प्रकुपितदृ
ढवरूथसमाक्रान्तकरतोयाप्राच्यप्रदेशकुतबुद्दीन १ दिल्लीदङ्गवेष्ट
न २१ वीक्षितवारूदवरणविध्वंसनिष्कासितसशिशुवर्गसानुजसा
मन्तसिंहसमुपेतशुद्धान्तजनधारातीर्थपूतसपरिकररत्नसिंहस्वर्ग-
समारोहण २२ श्रुतजितदिल्लीककान्यकुब्जजिगीषुयवनेन्द्राभि
षेणनगङ्गानिमग्नजयचन्द्रविग्रहविहान २३ मिश्रविद्यापतिस्वग्र

के घर में यज्ञ करना, देवी की आराधना से वाञ्छित वर पाकर सभा में बुलाकर बादशाह के आने का कारण पूछने पर चन्द भाट का पृथ्वीराज के दियेहुए दान का बाकी रहने का कहना, उस दान का कारण सुनकर बिना भाल के बाण से धातु के सात तवों का बेधना चमत्कार सहित देखने की इच्छावाले बादशाह का चन्द और पृथ्वीराज को मिलाना, पहिले उलूक के मारने का स्मरण दिलाकर अभिप्राय सहित अथवा सांकेतिक शब्दों से शब्दवेध स्वीकार कराकर बादशाह के पास गयेहुए चन्द का पीछा आकर राजा को अखाड़े में लेजाना, अपनी परिगह के मना करने पर पीठ पीछे महल के झरोखे से लगकर बादशाह का तवे बेधने को कहना, पृथ्वीराज का बिना भाल के बाण से मुख बेधकर बादशाह को मारना, चन्द भाट और पृथ्वीराज का छुरी की घात से अपने अपने शरीर छोडना बादशाह के मोल लियेहुए नौकर कुतबुद्दीन का खुरासान का मालिक होना, पिता का परलोक जाना सुनकर उसके पाट बैठनेवाले चहुवाण रत्नसिंह का यवन के आक्रमण कियेहुए अटक नदी के प्रान्त पर पीछी चढाई करना, उससे क्रोध करके बड़ी सेना से अटक नदीका पूर्व दक्षिण

न्थपुरुषपरीक्षालिखितजयचन्द्रचरमोदन्तसमयराज्ञीशुभदेवीदु-
श्चारसूचन २४ तच्छिद्रागतयवनेन्द्रयुद्धपंगुमन्त्रिविद्याधरधाराती
र्थमरण २५ प्रत्यन्तराजदर्शितदुश्चारशुभदेवीप्रतिघातनप्रकटन
२६ तत्रस्तराष्ट्रकूटराजजयचन्द्रप्रच्छन्नगतिप्रापणं २७ त्रयस्त्रिं-
शत्तमो मयूखः ॥ ३३ ॥

आदितो द्विचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १२४ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सचरणगद्यम्

ऐसैं यवनेंद्र कुतबुद्दीन १ प्रामारराज विक्रमके बसु सर संभु ११५८ संम्मित सकमैं कान्यकुब्जको जय करि जयचंद्रको पट्ट बरदाईसेनकौं दैकैं इंद्रप्रस्थकौं आपुनी राजधानी राखि आर्याव-र्तको पहिलो अधीस भयो ॥

जानैं चंडासिराज पृथ्वीराजके लघुपुत्र सामंतसिंहकौं कुंडल नैरसौं लगाइ मेवातदेसको कितोक प्रांत दयो ॥

इतकौं चित्रकूटके अधिराजैं सीसोद समरसिंहके पुत्र रत्न-सिंहनैं राज्यपायो ॥

का देश लेकर कुतुबुद्दीन का दिल्ली नगर को घेरना, बारूद से कोट का नाश हुआ देखकर अपने छोटे भाई सामन्तसिंह सहित जनाने लोगों को बालकों के समूह सहित निकालकर धारा तीर्थ से पवित्र होकर परिगह सहित रत्नसिंह का स्वर्ग जाना, दिल्ली का विजय कीहुई सुनकर कन्नोज को जीतने की इच्छावाले बादशाह की युद्धयात्रा से गङ्गा में डूबकर जयचन्द का शरीर छोड़ना, मिश्र विद्यापति का अपने ग्रन्थ पुरुषपरीक्षा में लिखे हुए अन्तिम समय राणी शुभदेवी का दुराचार जनाना, उस छिद्र में आये हुए बादशाह के युद्ध में जयचन्द के मन्त्री विद्याधर का धारातीर्थ में मरना, शुभदेवी का दुराचार देखकर बादशाह का उसको मारने के लिये जनाना, वहां पर राठोड़ राजा जयचन्द के प्रच्छन्न गति पाने का तैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३३ ॥ और आदि से एक सौ बयालीस मयूख हुए ॥ १४२ ॥

१ प्रमाणवाले सम्वत् में २ कन्नोज को ३ दिल्ली को ४ स्वामी

अरु इतकौं घोसाके अधीस कूर्म प्रद्युम्नको नाती मलय-
सिंहको पुत्र बिज्जुलदेव आपुनैं प्रांतको अधीस कहायो ॥ १ ॥

कितेक काल पीछैं चित्रकूटके राउल रत्नसिंहके पुत्र कर्ण-
सिंहकै माहप १ राहप २ द्वै२ पुत्र भये तिनमैं माहपतो भुजबल-
की खटी भूमि भोगिवो विचारि वग्गड़ देसकौं जीति डुंगरपुर रा
जधानी रची ताके बंसके सीसोदेतो आहडे ही कहाये ॥

अरु राहप गुजरातके प्रतिहाररानाँ मोकलकौं मारि रानाँ क-
हाये ताके कुलके रानाउत ऐसे भेदकारि ठाये ॥

इतकौं पातसाह कुतबुद्दीन १ कितेही कालके अनंतर ह्यतैं
गिरि देह तजतभयो तब थोरेकाल दिल्लीस आरामसाह२ भयो॥

तापीछैं दिल्लीको तखत कुतबुद्दीनको गुलाम अरु जामाता
ग्वालेर दुर्गको अध्यक्ष इल्तमिश २ सोही समसुद्दीन २ नाम द्व-
योपेतँ कहियत ताही नैं लयो ॥ २ ॥

इतकौं मंडनगढके अधीस हड्डाधिराज रनधवल १७२ के राज-
कुमार सरदार १७३ राजकोटपुरके अधीस बंढेल सरबहिया चा-
लुक्य जल्हनकी पुत्री पट्टिमदेवी १७३।१ परनि पिताके अनंतर
पंच५सिख पट्ट धार्यो ॥

ताके राजकुमार जोधराज १७४ भयो जाहीकौं मागधलोक
भीमसेन १७४ कलिकर्ण १७४ चंद्र १७४ राजचंद्र१७४ वीरमदे-
व १७४ इन छ ६ ही नामनकरि विख्यात कहैं तानैं तारापुरके
पार्थिव गर्जी गजदेवकी सुता स्यामलदेवी १७४।१ बिवाहि जन-
कके अनंतर मंडनदुर्गको स्वामित्व सम्हार्यो ॥

ताके राजकुमार रत्नसिंह १७५ सोही वत्सराज १७५ सोही

१कछवाहा२पोता ॥१॥३उपार्जित कीहुई४बागड़ देश को५आहड़ नामक नगर (जो उदयपुर से एक कोस के अन्तर पर है) में राज्य करने के कारण गुहि-लोतों को आहड़ा कहते हैं ६ जमाई७दो नामों सहित ॥ २ ॥ ८ मांडलगढ के ९मालिकपन

रेनु१७५ इन तीन ३ ही नामनकरि बिदित जान्यौं गयो ॥

अरु नरेस जोधराज १७४ के *अवसानपर गर्जनी स्यामदेवी १७४।१ हू सहगमनकारि स्वर्गबास लयो ॥ ३ ॥

इतकौं दिल्लीके अधीस समसुद्दीन३के पुत्र अपनैं भ्राताचोथे४सुलतान रुकनुद्दीनफीरोज ४कौं गद्दीसौं उतारि वाहीकी बहिनि रजिया१नामबेगम बैठी सो पातसाहनकी गणनामैं न लीनी याहीतैं याके नामपर क्रमअंक संख्या हू न राखी ताहीके समयमैं कितेक जवननैं स्वच्छंद[1] होइ रट्ठोरनसौं कान्यकुब्ज[2] छिन्निलयो ॥

तब कान्यकुब्जको अधीस सिंहदेवहू आखेटमैं[3] यह उदंत सुनि देस १ काल २ देखि द्वारकाधीसके दरसनको निमित्त गहि पश्चिमकी तरफ प्रयान करतभयो ॥

धन्वधरासौं[4] दक्खिनदिस पल्लीपुर[5] आवतही पल्लीकी प्रजान कछुदिन राखि डमरकारकनकौं[6] डराइ आपुनी रक्षा कराई॥

अरु अग्गजावत चापोत्कटनके[7] राज्यमैं चाचोरे नरेस मूलराज आपुनैं जामाता[8] रक्षादित्यकी पुत्री बिबाहिवेको अत्याग्रहकारि नीठि नीठि हुंकृति[9] भराई ॥ ४ ॥

अग्गैं कच्छके अधिराज जड्डेचकैं[10] जद्दव फुल्लराजके पुत्र लक्षधीरनैं अस्वके लोभकरि चापोत्कट मूलराजके जामाता रक्षादित्यको दूजो २ बिबाह करि आपुनी स्वसा[11] दईही ॥

ताके एक पुत्र भए पीछैं प्रमत्त[12] पावतही रक्षादित्यकौं मारि वाको हय छिन्नि सुत सहित स्वसा स्वीय सदनैंही[13] राखि लईही ॥

वा रक्षादित्यकै चापोत्कटीमैं[14] एक १ कन्या भईही ताहि सिंहदेवकौं देकैं जद्दवकौं मारि स्वसुरको बैर लैंदैबेकी विज्ञप्ति[15] करी॥

---

* अन्त समय पर ॥ ३ ॥ १ स्वतन्त्र होकर २ कन्नोज छीन लिया ३ शिकार में यह वृत्तान्त सुनकर ४ मारवाड़ से ५ पाली ६ धाड़ा डालनेवालों को ७ चावड़ों के ८ जमाई ९ हांकारा भराया ॥४॥ १० जाड़ेचा ११ बहिन १२ [illegible] १३ [illegible] १४ चावड़ी १५ अरज

तत्र सिंहदेवनैं त्रिविक्रमकी यात्रा करि पच्छे बाहुरत बिनाँई।
विवाह रत्नादित्यको वैरलैबेकी संधा धरी ॥ ५ ॥
सिंहदेव कही मो वृद्धको विवाहतो उचित नहै परंतु लक्षधीरकौं
मारि रावरे जामाताको वैर लैहैं ॥

तहाँ सकुनिन कही रत्नादित्यकी कन्याको करग्रहनं कियैं
स्वामीके संतान बहुतही बढि धन्वधराके अधीस व्हैहैं ॥
तब दहिया रत्नादित्यकी पुत्री परनि रट्ठोर सिंहदेव जहव लक्षधी-
रकौं मारि मरुमैं आइ डव्भी १ गोहिल२नकौं गंजि सुमिया-
नाँके समीप एकसत चालीस १४० ग्रामन उपेत मेघपपुर दब्बि
राज्य करयो॥

सो सिंहदेवतो पीछैं कान्यकुब्जपर चलावत दिल्लीके छठे ६
पातसाह समसऊद ६ के प्रचारे पुंडीरनसौं जुद्धकरि मरयो. ॥ ६ ॥

सिंहदेवके तीन ३ पुत्र भये तिनमैं बडो आस्थान १ तो मेघ-
पपुरही रहि राज्यकौं बढावतभयो ॥

अरु दूजे २ पुत्र स्वर्णांग २ नैं गोहिलनरेस बलराजकौं मारि
ईडरगढ लैलयो ॥
ताके कुलकेतो समस्तही रट्ठोर ईडरेचा उँपटंककरि ठाये ॥

अरु सिंहदेवके तीजे ३ पुत्र अजपपाल ३ नैं आनर्तदेसके
कछु प्रांत पाये ताके बंसके समस्तही कबंध कोऊ हेतुं करि ब-
ड्डहेल कहाये ॥ ७ ॥

यासमयलौंतो आर्यावर्तमैं जवननको प्रताप विसेसही बढयो॥
तिनकौं अटक उतारि दिल्लीकौं दुलहीकरि भोगिबेवारो कोऊ
न कढयो ॥
याहीसमयसौं आसिख १ प्रनाम २ मेटि प्रथम १ मिलापमैं मुज-
रा १ प्रवर्तभयो रु आर्य भूप स्वकीयें धर्म भूलि स्नान १ संध्या २

१.द्वारकाधीश की२प्रतिज्ञा३विवाह४मारवाड़ में५डाभी वंश के क्षत्रियों को ६.सहित७ पदवी ८ प्रसिद्ध हुए ९ राठोड़ १० किसी कारण से॥७॥ ११.अपने

हीन होइ म्लेच्छनसौं आहार १ विहार २ करन लगे ॥

अरु घरघरही सेरसिंह १ बहादुरसिंह२हुकमसिंह ३बक्तावरसिंह ४ जालमसिंह ५ जोरावरसिंह ६ फतैसिंह ७ फोजसिंह ८ सरदारसिंह ९ दोलतसिंह १० नाहरखान ११ लाडखान १२ ताजखान १३ प्रमुख पुत्रनके नाम धरन लगे ॥ १० ॥

इतकौं हड्डाधिराज रत्नसिंह १७५ नैं ईडरगढके अधीस ईडरिया रठोर सूरराजकी सुता भाग्यवती १७५।१ बिबाही ॥

ताकौं अहिफेनके नसामैं अतिही आसक्त भयो जानि मंडनगढ लैबो बिचारि चित्तोरके रानाँ नागपालनैं छलसौं बुलाइ महिमानी दै रु मोघ मैत्री निबाही ॥

पीछैं मंडनगढ आइ भोजनके निमित्त सर्वही परिकरकौं दुर्गमैं प्रविसाइ हड्डनकौं हटाइ अमल करिलयो ॥

तब रत्नसिंह १७५ मंडनगढसौंही समीप पूर्वको प्रदेस दाबि बंबावद १ नाम दुर्गबनाइ सोही राजधानी राखि दूजो २ दुर्ग आपुनैं नामकरि रत्नगढ २ रचि द्वै २ ही दुर्गनके बलकरि खेडी१ सिंहोली २ अठानौं ३ जादव ४ निंबडी ५ बेघम ६ बिंभ्कोली ७ प्रमुख पुर १ दुर्ग २नमैं अमलकरि राज्यसौं पूर्वसौंहू बिसेस बढाइ सीसोदनको सल्ल होइ रह्यो इहाँ कितेक मागध कहत हड्डाधिराज रत्नसिंह १७५ कौं बंबावद दुर्गतो पिसाचननैं प्रसन्नहोइ बनाइदयो ॥ ११ ॥

रत्नसिंह १७५ सौं भाग्यवती १७५।१ मैं बडो राजकुमार कोल्हन१७६।१छोटे बिंभ्कराज १७६।२द्वै२ही पुत्र भर्गके महाभक्तभये

या बिंभ्कराज१७६।२ नैं पितासौं पटामैं पुरातन हरिभक्त राजा रुक्मांगदकी रानी बिंध्यावलीको बसायो बिंभ्कोलीपुर पाइ बिध्वस्त जानि बहोरि बिधिसौं बिसेस बसाइ सिवके स्वप्नकरि

१आदि॥१०॥२अमल के नशे में३मिथ्या मित्रता४परगह ५मांडलगढ के पास ६आदि७सालटभूत प्रेतों ने९महादेव के पहिले१०बिगड़ाहुआ(नाश प्रायाहुआ

सुवर्णको निधानं जाहि एक सताधिक सहस्र११०० महेसके मंदि-
र वनाइ वित्तकरि वनीपैकनकौं वदान्य करिदये ॥

जाचक जाचक प्रति हाटकंकी हुन्नं दैकैं सोही दूजे नामकरि
हुन्नराज १७६।२ कहायो ॥

सो फुल्लपुरपति संखुला प्रामार सहस्रमल्लकी सुता जांवव-
ती १७६।१ विवाह्यो जानैं रत्नसिंह१७५।१ पीछैं गोवधके निमि-
त्त धोडनगरके रंगस्थलमैं जवननसौं जुद्धकरि विनुही संतान पर
लोक पायो ॥ ८ ॥

या समयसौं पहिलैं इतकौं इड्डाधिराज रत्नसिंह १७५।१ के
तनू तजत रानी भाग्यवती १७५।२ हू संगही अंग भस्मकरयो ॥
अरु कोल्हन १७६।१ नरेस ऊंपरमालदेसके आधिपत्य उपेतं
वंशावंदं दुर्गकी गद्दी पाइ छत्र धरयो ॥

सो बुधपुरके अधीस चालुक्यराज सत्तलकी सुता चंपावती
१७६।१ विवाह्यो ॥

अरु आजन्महीं एकाग्रचित्तकरि परम पांसुपत भाव निवाह्यो ।९
वदरिकाश्रमके समीप केदारेश्वरशिवकी छ ६ वेर यात्राकरि
सप्तमीं७ यात्रामैं संतत साष्टांग प्रनामकरि जैवो स्वीकारकरि ए-
क१ एक१ कोस अति श्रमकरि लंघत सोलह १६ दिनमैं च्यारि
४ जोजनके प्रमान बुंदीग्रामके समीप आयो ॥

अरु मिलानमैं १ भूपभाव धारत प्रयानमैं २ स्वकीय सेनाकौं
कोसकोसके अंतरसौं चोंतरफ दूरही राखि एकांकीही चलायो॥
सत्रहम १७ दिनके प्रस्थानमैं बुंदीसौं ईसान विदिसा ८ पर

---

१ धन २ ग्यारह सौ महादेव के मन्दिर बनाकर धन से ३ याचकों को दाता-
र करदिये ४ सोने की ५ मोहर ६ सांखला ७ बुन्दी के राज्य में धोड़ ना-
मक ग्राम है उसके ८ युद्धस्थल में ॥ ८ ॥ ९ शरीर छोड़ने पर १० मेवाड़ दे-
श के पूर्वी प्रान्त बीझोली के पट्टे को ऊपरमाल कहते हैं ११ मालिकपन के
१२ सहित १३ बम्बावदा १४ जन्म पर्यन्त १५ शिव की भक्ति निबाही ॥ ११ ॥
१६ निरन्तर १७ मुकाम मुकाम में १८ राजापन रखकर १९ चलने में २० इकल्ला

*पादोन[3] कोसके[4] प्रमान पहुँचत बिप्रके बेससौं केदारेश्वर प्रत्यक्ष
होइ वरंब्रूहि कह्यो ॥
तहाँ अनन्यभक्तिके प्रभावसौं निश्चयकरि नरेंदहू पयन परि
तात्त्विक[2] रूपसौं[3] त्र्यंबककों देखिबे चह्यो ॥ १२ ॥

(दोहा)

संकर तब निज रूप सह, दुर्लभ दरसन देत ॥
[4]नुति भूपहु किय पुनि प्रनमि, अवयव[5] अष्ट उपेत[6] ॥ १३॥
सुनत भक्त नुति मुदित सिव, सिरधुनि करत सिराह ॥
कछु[7] सुरधुनि धारा निकसि, परिग कलाप प्रवाह ॥ १४ ॥

(षट्पात्)

[10]सरधि[9] सरन[11] सैन स्रवत हिठ लाहि प्रचुर[12] स्रोत हुव ॥
सिव अक्खिय झरि सरन धरनि प्रकटिय प्रवाह ध्रुव ॥
सो मम बान प्रसंग बानगंगा यह बज्जहि ॥
जाहि छुवत अघ जनन भीत तजितजि सब भज्जहि ॥
तू भक्त मंगि इच्छित अतुल चविय[13] भूप और न चहत ॥
भवभवहि[14] भक्ति भवदीय[15] भव[16] मोहि रुचहु प्रतिदिन महत॥१५

(दोहा)

सुनि अकाम[17] नृपबैन सिव, अक्खिय तू अवसान[18] ॥

ही जला *पौन कोस के १ "वर मांग" यह कहा २ यथार्थ रूप से ३ शिव का दर्शन करना चाहा ॥१२॥४ स्तुति ५ प्रणाम के आठ अङ्गों ६ सहित ॥ १३ ॥ स्तुति सुनकर महादेव ने प्रशंसा करके मस्तक धुना जिससे ७ गंगा की धारा निकलकर वह प्रवाह ८ बाणों के भाथे से गिरा ॥ १४ ॥ १० बाणों के ९ भाथे ११ से टपककर जब नीचे १२ बहुत प्रवाह हुआ तब शिव ने कहा कि "बाणों से टपककर पृथ्वी पर निश्चय ही प्रवाह हुआ है सो मेरे बाणों के प्रसङ्ग से यह बाणगङ्गा ही कहलावेगी जिसके स्पर्श के भय से पाप मनुष्यों को छोड़ छोड़ कर सब भागेंगे, तू भक्त है सो वाञ्छित बड़ा फल मांग" तब राजा ने १३ कहा कि "और नहीं चाहता १४ जन्म जन्म में १६ हे महादेव! १५ आपकी बड़ी भक्ति प्रतिदिन मुझे रुचा करै" ॥ १५ ॥ शिवने राजा के ये १७ कामना रहित बचन सुनकर कहा कि १८ तू अंत समय में

लैहै मम सामीप्य[1] लहि, धारातीर्थ विधान ॥ १६ ॥
कहत दयो खग्गहु[2] किते, रुट्ठि सु गो अहिरूप ॥
पच्छे दिय तव पंच ५ पय, भयकरि पिक्खत भूप ॥ १७ ॥
गिरिस[4] वचन विस्वास गहि, पुनि फन दब्बत पानि ॥
अहिप[5] भयो ततकाल असि, महिप लयो हितमानि ॥१८॥
प्रभु[6] बुल्ले तैं पंच ५ पय, पच्छे दिय भयपाइ ॥
पंचम ५ इम तव कुल पुरुख, यह भुव भुग्गहिं आइ ॥ १९ ॥
पिहित[7] भये प्रमथेस[8] पुनि, स्व भुवन दै अवसान[9] ॥
तहँ पधराये ईस[10] तव, रचि मंदिर चहुवान ॥ २० ॥
केदारेश्वर नाथकरि, धरा विदित[11] यह धाम ॥
जानहु सरगंगा[12] जुताहि, तवतैं भूपति राम ॥ २१ ॥

(सचरणगद्यम्)

ऐसैं श्रीकेदारनाथको वरपाइ कोल्हन १७६।१ नरेस बंबावद दुर्ग आयो ॥
अरु पहिलैं छ ६ वेरकी यात्राहू प्रनामन सहित करी ऐसो-हू लेख कोऊ मागध[13]के पुस्तकमैं पायो ॥
इतकौं दिल्लीके अधीस दयाके समुद्र आपुनैं परिश्रमके मोल-के द्रव्यकी भिस्सा[14]के भोजक न्यायपथके पैंथिक[15] सप्तम ७ यवनेंद्र[16] सुलतान नासुरुद्दीनमहमूद ७ के थानौं आर्यावर्त्तमैं ठाम ठाम बैठि

१ युद्ध में काम आकर मेरी २ समीपता लेवेगा अर्थात् मेरे पास आवेगा ॥ १६ ॥ कितने ही कहते हैं कि शिव ने ३ खड्ग भी दिया था सो सर्परूप होकर रूठ गया उसको देखकर भय से राजा ने पांच पैंड़ पीछे दिये ॥ १७ ॥ परन्तु४शिव के वचन पर विश्वास करके जब फिर हाथ से फण दबाया तब वह ५ सर्पों का पति तुरन्त खड्ग होगया सो राजा ने हित मानकर लेलिया ॥ १८ ॥ ६ शिव बोले कि तूने भय पाकर पांच पग पीछे दिये इसकारण तेरे कुल का पांचवां पुरुष आकर यह भूमि भोगेगा ॥ १९ ॥ फिर ८ महादेव ९ अन्त समय में अपने स्थान आने का वरदान दे-कर७अन्तर्धान होगये१०शिव को ११प्रसिद्ध१२बाणगङ्गा ॥ २१ ॥१३भाट के १४भिक्षा का भोजन करनेवाला१५न्याय के मार्ग में चलनेवाला१६बादशाह

करें[1] लैनलगे ॥

अरु कितेक नरेसतो दिल्लीही आइ सेवनमैं सावधानी दिखाइ किंकरलौं[2] नम्रीभूत व्हैनलगे ॥ २२ ॥

[दोहा]

बदत किते बाईस २२ ही, सूबा हुव तबसाँहि ॥
कति अकबर ३१ बंधे कहत, इतरैं[3] रचे कति याँहि ॥ २३ ॥

(पादाकुलकम्)

अर्ज्जनको[4] इत्यादि अनादर, किते कहत तबतैं लाघव कर ॥
बदतकिते तैंमूरसाँहिबहु,पिसुनैंकतिकिअग्रातिअकबर३१पहु॥२४॥

(सचरणगद्यम्)

तिनही दिननसौं अहिफेनको[5] नसा १ अरु हुक्कायंत्रको पान करिबो आर्यावर्तमैं प्रबर्त भयो ॥
अरु हड्डाधिराज कोल्हन १७६।१ सौं चालुकी रानी चंपावती १७६।१ मैं कुमार आसुपाल१७७जन्मलयो ॥
सोरत्नपुरकेराजारट्ठोररामदेवकीतनुजाराजलदेवी१७७।१बिवाह्यो तामैंकुमारआसुपाल१७७सौंकुमार बिजयपाल१७८प्रादुर्भावपायो॥
तदनंतर आसुपाल १७७ तो कुमारभावमैंही कोऊ असाध्य आमय कर बिग्रह बिहायो ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

मरत कुमर नृप खिन्न मन, भैंव[10] बिरक्त भवभक्त[11] ॥
सोवन चाह्यो रैनसयन[12], पैंहु[13] कुलधर्म प्रसक्त ॥ २६ ॥

१खिराज तथा हांसिल २चाकर के समान झुकने लगे ॥ २२ ॥ ३औरों ने ॥ २३ ॥ ४ आर्यों का इत्यादिक अनादर हुआ. और कितने ही कहते हैं कि जब ही से थोड़ा खिराज जारी हुआ. और कितने ही कहते हैं कि तैमूर से ही बढ़ा परन्तु सुनते हैं कि कितने ही खिराज बादशाह अकबर ने नियत किये ॥ २४ ॥ ५अमल का नशा ६ पुत्री ७ जन्म ८ रोग से ९ शरीर छोड़ा ॥ २५ ॥ १० संसार से विरक्त होकर ११महादेव के भक्त ने १३ हे प्रभु रामसिंह! कुलधर्म में आसक्त होकर१२युद्ध में काम

कहिय भूप गोवध करत, इतउत फिरत अमानं ॥
कटकं मिच्छ जानहु निकट, सुहि मुहि कहहु सुजान ।२७।
क्रम इन वित्तत दिन कछुक, महिप सुन्यौं चरमग्गं ॥
मारत गोगन मिच्छदलं, लक्खैरियपुर लग्ग ॥ २८ ॥
जंपियं कति जवनहु जवन, अप्पन सीमा आइ ॥
हनैं गाइ जब तब हरखि, स्वामी मरन सुहाइ ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

महिपति सोहु न मन्नि सवय भट समर सज्जकिय ॥
विजयपाल्ल १७८ ढिग बुल्लि द्रुतंहि निजछत्र ताहि दिय ॥
सुतसुतकौं करि सुपहु अप्पि सह भुव वंबावद ॥
सत्तसहँस ७००० लहि सेन हांकि रक्खन अज्जनं हद ॥
मिच्छन अनीकपंति मुस्तुफहिं पठई कहि इम दूत प्रति ॥
कै तजहु सर्व गोवध कुटिल कै पयमंडहु होहु कति ॥ ३० ॥

(सचरणागद्यम्)

हड्डाधिराज कोल्हन १७६।१ के दूतको ऐसो वचन सुनतही म्लेच्छनके मालिक मियाँ मुस्तुफाअली पीछी कहाई हमारी पंद्रहहजार१५०००पृतनापैर तुमनैं सातहीसहँस्र७०००सेनासौं चलाइ मरिवोही विचारयो तो तुमारी सीमामैं आइ गोवधकौं निवांरिदैहैं। परंतु ऐसो कोन सो सर्वत्रही गोवधकौं रोकि साहनसाह सुलतान नासुरुद्दीनमहमूद ७ की सेनासौं फैंट लैहैं ॥

आना चाहा ॥ २६ ॥ १ प्रमाण रहित अर्थात् बहुत २ म्लेच्छों की सेना को ॥ २७ ॥ ३ हलकारों द्वारा ४ गौओं के समूह को ५ म्लेच्छों की सेना मारती है ॥ २८ ॥ कितनेही यवनों ने६ कहा कि यवन लोग अपनी सीमा में आकर गौओं को मारें तभी आपका मरना अच्छा लगेगा अर्थात् इस समय आपकी सीमा में नहीं मारते हैं सो नहीं लड़ना चाहिये ॥ २९ ॥ ७ अपनी अवस्था के वीरों को युद्ध के लिये तय्यार करके विजयपाल को पास बुलाकर ८ शीघ्र ९ पोते को राजा करके १० आर्यों की सीमा को रखनेवाले ११ सेनापति ॥ ३० ॥ १२ सेना पर १३ रोक देवेंगे

मरिबोहो मान्यौं तो हमहूकौं जंगके रंगपैं सज्जहोइ परिपंथिनको पंथ जोवतही जानौं ॥
अरु नहीतो घरजाइ तुमारी नीतिके देस १ काल २ पहिचानौं३१

(दोहा)

पहुँ अक्खिय लुट्टहु प्रजा, इतउत जानि अनाथ ॥
हम हड्डे सोहु न सहैं, गोवधतो हद्दं गाथं ॥ ३२ ॥

(षट्पात्)

इमकहि हयन उठाइ रिपुन दल मिलिग रैन १७५ सुवं ॥
तुमुल बजिय तरवारि भाजियं सहसा प्रकंप भुव ॥
लुत्थिन लुत्थि लगाइ बुत्थिं बुत्थिन वहु वट्टिय ॥
तुरक गाहि त्रयसहँस ३००० चाहि इम धारन चट्टिय ॥
मुस्तुफाअली हनि मिच्छ वह चउ ४ दिस बित्थरि कित्ति चैंय॥
कोल्हन १७६।१ नरेस तजि कायं रन गन पुरोगं सिवलोक गय।३३।

(दोहा)

सहँसइक्क १००० अप्पन सुभट, सह अच्छरि गय सग्गं ॥
तजि अच्छरि संभर तक्किय, अष्टापदंहि उदंग्ग ॥ ३४ ॥

इतिश्री बंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ चतुर्थ ४ राशौ बीतिहोत्रचराडासि १ वीज्यवर्णानवीजनृपास्थिपाल १५५ वंश्यानुबंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यहड्डाधिराड्रणधवला १७२

१युद्धस्थल में २ शत्रुओं का मार्ग ॥ ३३ ॥ ३ राजा ने कहा ४ गोवध की तो बड़ी ५ बात है ॥ ३४ ॥ ६ रत्नसिंह का पुत्र ७ भयङ्कर ८ अचानक पृथ्वी धूजनेलगी ९टुकड़े टुकड़े करके१०कीर्ति के समूह को चारों तरफ फैलाकर ११ रण में शरीर छोड़कर१२ समूह का अगवा होकर शिवलोक गया॥३५॥ १३ स्वर्ग गये और अप्सरा को छोड़कर चहुवाण राजा ने१४सुमेरु पर्वत के १५ ऊपर दृष्टि दी अर्थात् कैलास को गया ॥ ३६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण राजा अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के कथन में हड्डाधिराज रणधवल आदि कोल्हण पर्यन्त पांच कुलपुरुषों के चरित्र में जनायेहुए विक्रम के शक और वर्ष में

दिकोल्हरा १७६ पर्यन्तकुलपुरुपपञ्चक५ चरित्रे सूचितशकवर्ष वरदायिसेनार्थदत्तकान्यकुब्जाल्पराज्यपार्थ्वीराज्यसामन्तसिंहार्थदत्तमेवातदेशमितप्रान्तोपेतनारनोलनगरकृतदिल्लीस्कन्धावारय वनेन्द्रकुतबुद्दीना १ र्यावर्त्ताधीशीभवन १ रत्नसिंहचित्रकूटराज्य प्रापण २ विज्जलदेवद्योसाधिपत्यसमासादन ३ राजकुलकर्ण-ज्येष्ठपुत्रमाहपड्डूङ्गरपुरराज्यलभन ४ प्राप्तराणोपटंकतदनुजराह पचित्रकूटराज्यकरण ५ तुरंगपतितदिल्लीशकुतबुद्दीन १ तनुत्यजन ६ तदनन्तरद्वितीया २ रामसाह २ शीघ्रमरणानन्तरप्रथम-१ यवनेन्द्र १ क्रीतदासजामातृसमसुद्दीनश्वशुरपट्टप्रापण ७ परिणीतचालुकीपद्मिमदेवी १७३।१ कहड्डाधिराजरणधवल १७२ कुमारशरदार १७३ मण्डनगढराज्यगद्दीकोपविशन ८ व्यूढगर्जिनीश्यामलदेवी १७४।२ कशारदारियोधराज १७४ जनकानन्तर स्वराज्यसमासादन ९ समुद्भावितकुमाररत्नसिंह १७२ योधरा-

---

वरदाईसेन को कन्नोज देकर छोटे राज्य पृथ्वीराज के सामन्तसिंह के अर्थ मेवात देश के थोड़े हिस्से सहित नारनोल नगर देकर दिल्ली को राजधानी बनाकर बादशाह कुतुबुद्दीन का आर्यावर्त का स्वामी होना, रत्नसिंह का चित्तोड़ का राज्य पाना, बीजलदेव का धोसा का स्वामीपन ग्रहण करना, रावल करणसिंह के बडे पुत्र माहप का डूंगरपुर का राज्य लेना, उसके छोटे भाई राहप का राणा पदवी पाकर चीतोड़ का राज्य करना, घोड़े से गिरकर दिल्ली के बादशाह कुतुबुद्दीन का शरीर छोड़ना, जिसपीछे दूसरे बादशाह आरामशाह के शीघ्र मरे पीछे पहिले बादशाह का मोल लियेहुए चाकर और जमाई समसुद्दीन का सुसरे का पाट पाना, विवाह की हुई पद्मिम देवी में हड्डाधिराज रणधवल के कुमर सरदार का मांडलगढ की राजगद्दी पर बैठना, गर्जी (गर्जना करनेवाले) गजदेव की पुत्री श्यामलदेवी से विवाह करके सरदार के पुत्र योधराज का पिता के पीछे राज्य ग्रहण करना, कुमर रत्नसिंह के जन्म हुए पीछे योधराज का अन्त और श्यामलदेवी का सती होना, स्त्रीरूप (रजिया बेगम) पञ्चम दिल्लीश के समय में म्लेच्छ सेना का कन्नोज लेकर निकालेहुए राठोड़ राजा सिंहदेव का द्वारकाधीश के दर्शनों की इच्छा करना, पाली नगर की रक्षा करके सिंहदेव का चावड़े राजा मूलराज की दौहित्री विवाहने से अस्वीकार करना, रक्षादित्य के घोड़े के लोभी कच्छदेश के पति जाड़ेचा यादव फूलराज के पुत्र लक्ष-

जावसानश्यामलदेवी १७४।१ सहगमन १० स्त्रीरूपपञ्चम ५ दिल्लीशसमयम्लेच्छसेनासमाक्रान्तकान्यकुब्जानिष्कासितराष्ट्रकूट राजसिंहदेवद्वारकाधीशदिदृक्षभवन ११ आतपल्लीपुरसिंहदेवचापोत्कटनरेशमूलराजदौहित्रीपरिणीषास्वीकारण १२ रत्नादित्यहयलुब्धकच्छदेशाधिराजजाटेत्ययादवफौल्लराजिलत्तधीरस्वभगिनीतद्विवाहन १३ भागिनेयजन्मानन्तरलक्षधीरहतप्रमत्तभामदर्भिकरत्नादित्यहयप्रापण १४ प्रत्यागतशाकुनिकस्वीकारितपरिणीतचापोत्कटमूलराजदौहित्रीकराष्ट्रकूटराजासिंहदेवजाटेत्ययादवलत्तधीरनिपातन १४ मर्वागतहतदार्भिक १ गोभिल २ क्षत्रगणप्राप्ततद्राज्यस्कन्धावारीकृतमेघपपुरकान्यकुब्जनिनीषुसिंहदेवषष्ठ ६ दिल्लीशशमसऊद ६ प्रेरितपुण्डीररणमरण १५ सिंहदेवप्रथम १ पुत्राऽऽस्थानमेघपपुरगद्दीकोपविशन१६ समाक्रान्तेडरदुर्गद्वितीय २ पुत्रस्वर्णांगवंशभिन्नोपटङ्कप्रवर्तन१७

धीर का अपनी बहिन रत्नादित्य को विवाहना, भाणज के जन्म होने के पीछे बहिन के पागल होते ही लत्तधीर का डाभी रत्नादित्य को मारकर उसके घोड़े को लेना, पीछे आतेहुए शकुनियों के स्वीकार कराने पर चावड़े मूलराज की दौहती विवाहकर राठोड़ राजा सिंहदेव का जाड़ेचे यादव लत्तधीर को मारना, पीछे आतेहुए डाभी और गोहिल चत्रियों के समूह को मारकर उनके राज्य को लेकर मेघपपुर को राज्यधानी बनाकर *कन्नोज के पति होने की इच्छा से सिंहदेव का छठे दिल्लीश शमसऊद के प्रेरणा कियेहुए पुण्डीरों के युद्ध में मरना, सिंहदेव के (जिनको सीहा सीया अथवा सेवा भी कहते हैं)प्रथम पुत्र आस्थान का मेघपपुर (मेघपपुर खेड़ ग्राम का नाम मालूम होता है क्योंकि आस्थान ने मारवाड़ का प्रथम राज्य खेड़ में स्थापित किया था) की गद्दी पर बैठना, दूसरे पुत्र स्वर्णाङ्ग ने *ईडरगढ लिया जिसके वंश का जुदी पदवी से प्रवृत्त होना, काठियावाड़ के हिस्से को पाकर तीसरे पुत्र जयपाल के कुल का जुदा भेद जनाना,

---

*ग्रंथकर्त्ता[सूर्यमल्ल] ने बड़वाभाटों की लिखाई हुई वंशावली के अनुसार राठोड़ों का राज्य प्रारम्भ से ही कन्नोज में होना लिखा है सो ठीक नहीं है; क्योंकि जोधपुर के इतिहास से सिद्ध है कि राठोड़ों का राज्य प्रथम दक्षिण देश में रहा फिर कन्नोज में राज्य हुआ जिसपीछे मारवाड़ में आये.

*मारवाड़ के इतिहास में ईडरगढ को आस्थान का लेना लिखा है.

प्राप्ताऽऽनर्तदेशांशतृतीय ३ पुत्राजयपालकुलपृथग्भेदाख्यापन
१८ समाक्रान्तार्यावर्त्तकरदीकृतार्यगणयवनेन्द्रस्वस्वसमयप्रताप
विस्तरण१९म्लेच्छसंगतिलुप्तधर्मविस्तृतस्नान१सन्ध्या२ दिनित्य
कर्मराजन्यकस्वस्वसन्ततियावनीसञ्ज्ञास्वीकरण२०हड्डाधिराज
रत्नसिंहे१७५डरगढनरेशराष्ट्रकूटशूरराजसुताभाग्यवती१७५।१परि
णयन२१छलसमाक्रान्तमण्डनदुर्गचित्रकूटराजराणानागपालमो
घमैत्रीविश्वस्तनागफेनप्रमत्तरत्नसिंह १७५निष्कसन२२निर्मातव
म्बावद१रत्नगढ२दुर्गद्वय२रत्नसिंहखेटिकाद्यनेकपुरा२धिपत्यसमा
सादन२३रत्नसिंह१७५भाग्यवत्यो१७५रसपरमपाशुपतकुमारको
ल्हण१७६।१विन्ध्यराज१७६।२युग्मरसमुद्भवन२४पितृविभक्तलब्ध
जीर्णीकृतविन्ध्यावलीपुरस्वप्नपिनाकिप्रसादप्राप्तपुरुद्धनिधाननिर्मा
तशताधिकसहस्र ११०० शिवमन्दिरप्रतियाचकहाटकहुन्नदानवि
दितहुन्नराजा १७६।२ परनामपरिणीतप्रामारीजाम्बवतीक १७६।१

आर्यावर्त लेकर आर्यगण को खिराज देनेवाले बनाकर बादशाहों का अपने अपने समय में प्रताप फैलाना, म्लेच्छों की सङ्गति से विस्तार पाये हुए धर्म और स्नान संध्या आदि का लोप होकर राजाओं का अपनी अपनी सन्तानों के यवन सम्बन्धी नाम अंगीकार करना, हड्डाधिराज रत्नसिंह का ईडरगढ के राजा राठोड़ शूरराज की पुत्री भाग्यवती से विवाह करना, चित्तोड़ के राजा राणा नागपाल का छल करके मांडलगढ लेने में उनकी झूठी मित्रता पर विश्वास करके अमल के नशे में मस्त रत्नसिंह का निकलना, बम्बावदा और रत्नगढ दोनों दुर्ग और खेड़ी आदि अनेक पुर और गढ़ों का स्वामीपन रत्नसिंह का लेना, रत्नसिंह से भाग्यवती के उदर में शिव के परम भक्त कुमार कोल्हण और विन्ध्यराज दोनों का जन्म लेना, पिता के बांटने से मिलेहुए जीर्णोद्धार कियेहुए बीझोली पुर में स्वप्न में शिव की प्रसन्नता से स्वर्ण का धन प्राप्त होने से ग्यारह सौ शिवमन्दिर बनाकर याचक याचक प्रति सोने की मोहर दान देकर दूसरे नाम से हुन्नराज प्रसिद्ध हुए और प्रामारी जाम्बवती को विवाहकर विना सन्तान विन्ध्यराज का गोवध के कारण धोवड़ा ग्राम के पास यवनों के युद्ध में मरना, हड्डाधिराज के अन्त समय पर राठोड़ी भाग्यवती का सती होना, स्वामीपन पाकर सोलंखिनी चम्पावती का विवाह कर कोल्हण का छः बेर केदा-

निस्सन्ततिबिन्ध्यराज १७६।२ गोवधनिमित्तधोटपुरपरिसरयव नरणामरण २५ हड्डाधिराजरत्नसिंहा १७५।१ वसानराष्ट्रकूटी- भाग्यवती १७५।१ सहगमन २६ प्राप्ताधिपत्यपरिणीतचालुकी चम्पावती १७६।२ कोल्हण १७६।१ केदारेश्वरयात्रापट्ट ६ का चरण २७ स्वीकृतसततसाष्टांगप्रणामप्रारब्धसप्तम ७ यात्रयो- जनचतुष्क ४ प्रस्थितकोल्हण १७६।२ विप्रवेशव्योमकेशवीक्ष ण २८ प्रार्थनादर्शिततात्त्विकरूपशम्भुनृपस्तुतिश्लाघाशिरोघूर्ण- नो २९ च्छलत्पृशत्कपताक्षिपथगास्रोतोवाणगंगातीर्थीभवन ३० भक्तीतरवराऽऽमार्गणप्रसन्नभूतेश्वरभक्तावसानभाविनीसामीप्यमु- क्ति १ संग्रामसंस्था २ सूचन ३१ पाक्षिकमतदत्ताहिरूपखड्गत्रस्त पश्चाद्दत्तपञ्च५ पदीकविभुविश्वासितवसुधेशगृह्यमाणनागनिस्त्रि- शीभवन २३ प्रतीपन्यस्तपादसंख्यकुलपुरुषाऽऽधीन्यभावितद्धरा ज्यप्राप्तिज्ञापन ३३ तत्स्थानिनिमित्तशिवालयहड्डाधिराजकोल्ह- ण १७६।२ तन्मन्दिरकेदारेश्वरलिंगप्रतिष्ठापन ३४ पाक्षिकमतो क्तसप्रणामसप्त ७ यात्राकथन ३५ सप्तम ७ दिल्लीशयवने- न्द्रनासुरुद्दीनमहमूद ७ पुण्यभूविशेषसमाक्रमण ३६ द्वाविंशति-

---

रेश्वर की यात्रा करना, निरन्तर आठ अंगों सहित प्रणाम करना स्वीकार करके सातवीं यात्रा का प्रारम्भ करके चार योजन चलकर कोल्हण का ब्रा- ह्मण के वेश में शिव को देखना, असली रूप दिखाने की प्रार्थना से राजा की कीहुई स्तुति की प्रशंसा करके शिव के मस्तक घुमाने से उछलेहुए बा- णों के मार्ग से प्रवाह का बाणगङ्गा नामक तीर्थ होना, प्रसन्न हुए शिव की भक्ति से अन्य वर मांगने की आज्ञा देने पर उस भक्त का आगामी अन्त समय पर शिव के समीप मुक्ति और संग्राम में नाश होने का जनाना, दू- सरे पक्षवालों के मत से दियेहुए सर्प रूपी खड्ग से पांच पैंड पीछे देकर शिव के वचनों पर विश्वास करके ग्रहण कियेहुए सर्प का खड्ग होना, उलटे पग देने की संख्या से उतनी ही (पांच) पीढियों के आधीन भावी समय में उस भूमि का राज्य प्राप्त होने को जनाना, इसकारण से उस स्थान पर शिव का मन्दिर बनाकर हड्डाधिराज कोल्हण का उस मन्दिर में केदारेश्व- र का लिङ्ग स्थापन करना, दूसरों के मत से प्रणाम सहित सात यात्रा का कहना, दिल्ली के पति सातवें बादशाह नासिरुद्दीन महमद का आर्यावर्त

२२ सूत्राऽऽदिप्रवन्धसमयभेदसन्देहसूचन ३७ तत्समयोपज्ञाऽहि
फेनखादन १ हुक्कायन्त्रपान २ प्रसरण ३८ कोल्हण १७६ समु
द्भूत परिणीतराष्ट्रकूटीराजल्लदेवी १७७।१ कसमुत्पादितस्वौरस-
पुत्रविजयपाल १७८ प्राप्तासाध्यगदकुमाराऽऽशुपाल १७७ पर-
लोकप्रापण ३९ भवविरक्तकोल्हण १७६ गोघ्नम्लेच्छागमशुद्धि
पृच्छन ४० श्रुतसमीपसंगतसौरभेयीसूदकसैन्यपुत्रविजयपाला-
१७८ र्थदत्तनृपत्वसज्जीकृतसवयस्कसुभटसैन्यगोवधरोधनिमित्त-
प्रहतयवनेन्द्रचमूपहड्डाधिराजकोल्हण १७६ लक्खैरिपट्टरणामर
ण ४१ यथाक्रमम्त्र्येकसहस्र ३०००।१००० म्लेच्छा १ ऽऽर्य २
भटशूरशय्याशयनं ४२ चतुस्त्रिंशो ३४ मयूखः ॥ ३४ ॥
आदितस्त्रिचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४३ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
व्रजदेशीया प्राकृती १पैशाचिकबहुलं २मरुदेशीया प्राकृती१अपभ्रं
शबहुल२ मितिसर्वत्र विवेचनीयम् ॥
(पादाकुलकम्)
पहु इत चित्तकूटगढ भूपति, राना पृथ्वीमल्ल धर्मरति ॥

की भूमि को विशेष लेना, बाईस सूया आदि के प्रबन्ध में समय का भेद और सन्देह जनाना, उस समय में अमल खाने का और हुक्का पीने का प्रथम ही ज्ञान होकर फैलाना, कोल्हण के पुत्र आशुपाल का राठोड़ी राजलदेवी से विवाह करके औरस पुत्र विजयपाल को प्राप्त करके असाध्य रोग से कुमार आशुपाल का परलोक पाना, संसार से विरक्त कोल्हण का गौओं मारनेवाले म्लेच्छों के आने की खबर छाने सुनकर समीप आयेहुए गौओं के मारनेवालों पर सेना के साथ पौत्र विजयपाल के अर्थ राजापन देकर अपनी अवस्था के वीरों की सेना सजकर गोवध को रोकने के लिये बादशाह के सेनापति को मारकर हड्डाधिराज कोल्हण का लक्खैरी ग्राम के प्रदेश के युद्ध में मरना, यथाक्रम से तीन हजार म्लेच्छ और एक हजार आर्य वीरों का काम आने का चौतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३४ ॥ और आदि से एक सौ तयांलीस मयूख हुए ॥ १४३ ॥
आगे विशेष करके व्रजदेश की और प्राकृत की मिलीहुई भाषा है. और व्रजदेश की भाषा के साथ प्राकृत और पैशाची भाषा अधिक है. और

कासिय पत्त[1] ईस[2] दरसन कहँ, तनु[3] रन तजिय जानि गोबध तहँ ॥१॥

(सचरणगद्यम्)

पहिलैंहू याके पिता रानाँ पुण्यपाल१ जाकौं पूर्णमल्ल१ हू कहैं तानैं अरु याही पृथ्वीमल्लके पितामह नागपाल २ नैंहू बिश्वेश्वरकी यात्रामैं ऐसैंही गोबधके निमित्त महा अवमर्दमैं देहडारे ॥

तैसैंही रानाँ पृथ्वीमल्लहू कासीपुरीके परिसरमैं महारन रचि तनू तजत सुरभिनके संतापक सहस्रन म्लेच्छ मारे ॥

ऐसैं म्लेच्छनको मण्डल प्रतिदिन बलिष्ठ बनि आर्यावर्त्तमैं थानाँ जमावत ठामठाम फैलि आर्यधर्मको न्हास करतभयो ॥

अरु इतकौं रानाँ पृथ्वीमल्लको तनूज भुवनाँग जाकौं दूजे२ नामकरि भीमसिंहहू कहैं सो चित्रकूटको आधिपत्य धरतभयो ।२।

इतकौं बंबावदनैरके नरेस हड्डाधिराज बिजयपाल १७८ भटनैरके भूप संखुला पामार मंडलकी पुत्री रंभावती१७८।१बिबाहिआनी तामैं राजकुमार बंगदेव १७९।१ केसरखान १७९।२ कर्मसिंह१७९।३कुंभराज१७९।४बीरमदेव१७९।५पंच५ही भये महादानी ॥

नरेंद्र बिजयपाल१७८के अवसानपर[11] पामारी रानी रंभावती१७८।१ हू सहगमन करि स्वर्गबास लयो ॥

अरु हड्डाधिराज बंगदेव १७९ पिताको पट्ट धारि खट ६ रानिनकौं बिबाहत भयो ॥३॥

बंगदेवके अनुज केसरखाना १७९।२ दिके[12] चयारि ४ तो बालबयमैं अनूढही[13] परलोक प्राप्त भये ॥

अरु इतकौं चित्रकूटके अधीस रानाँ भुवनांगके पुत्र भीमसिंह

मरुदेश की भाषा के साथ प्राकृत औरअपभ्रंश भाषा बहुत है. सो सब जगह ऐसा ही जानना चाहिये. १ पहुंच कर २ शिव के दर्शनों को ३*शरीर ४ महादेव की ५ युद्ध में ६ समीप ७ गौओं को ८ सन्ताप देनेवाले ९ बलवान् १० नाश ११ अन्त पर ॥ ३ ॥१२केसरखान आदि १३ विना विवा

---

*यह वृत्तांत महाराणा पृथ्वीपाल का नहीं मालूम होता किंतु महाराणा लाखा का प्रतीत होता है.

१जीवन२जाकौं जीन२हू कहत इन द्वै३ही कुमारन प्राकट्य पायो तिनमैं भीमसिंह १ तो भुवनांगके अनंतर चित्रकूटको आधिपत्य लह्यो रु छोटे जीन २ की संततिमैं चंद्रराज भयो. ताके रामपुरको राज्य लहि चंद्राउत्त १ सीसोदे १ कहेगये ॥

नरेंद्र वंगदेव १७९ की छ ६ ही पत्निनमैं पट्टरानी सुजानकुमरी १७९।१ तो सोपुरके नरेस गोड अमरसहायकी सुता जानी॥

अरु दूजी रानी लाडकुमरि १७९।२ वनहटाके स्वामी बीजाउत्त गोहिल कल्यानरायकी पुत्री प्रमानी ॥ ४ ॥

तीजी३ सरसकुमारि१७९।२ नेतके नाथाउत्त दहिया कृष्णकी कन्या चोथी ४ सोभाकुमरि १७९।१ पेलके प्रामार हम्मीरकी अंगजा जानिवेमैं आई ॥

अरु पंचमी ५ जसोदा १७९।५ कूर्म सरदारसिंहकी तनया छट्ठी ६ कृष्णकुमरि १७९।६ गहिलोत्त फतेसिंहकी तनुजा ए द्वै २ ही इहाँ स्थानके निश्चय विहीनही मागधलोकन लिखाई ॥

नरेस वंगदेव१७९ कै राजकुमार देवसिंह१८०।१कर्मन १८०।२ सिंहन १८०।३ नयनसिंह१८०।४अर्डक १८०।५ बर्डक१८०।६नत्थू १८०।७पत्थू१८०।८हिंगुलू१८०।९खड्गहस्त१८०।१०मोहन १८०।११ स्वामिदास १८०।१२ कृष्णदास १८०।१३ ए तेरह१३तनूज भये॥

तिनमैं विधिके वस क्रमहीकरि पट्टरानी१कै प्रथम१ द्वितीय२, दूजी २कै तृतीय ३ चतुर्थ ४, तीजी ३ कै पंचम५ षष्ठ ६, चोथी ४ कै सप्तम ७ अष्टम ८ नवम९, पंचमी ५ कै दसम १० सौं तेरह १३ पर्यंत च्यारि ४ ही जानैंगये ॥ ५ ॥

(दोहा)

---

१ इनका असली नाम जूण था २ स्त्रियों में ॥ ४ ॥ ३ बड़वाभाटों ने ४ पुत्र

अस्थिपाल १५५ तैं इन१८० अवधि, कुल संक्षिप्त कह्यो सु ॥
कहियत अब बिस्तारकरि, हड्डन खिल जु रह्यो सु ॥ ६ ॥
तेरह १३ बंग १७९।१ तनूभवनँ, देव १८०।१ प्रथम कुल दीप ॥
बल जस भुग्गिय राज्य बहु, महि लहि बंग१७९।१महीप ॥७॥

(पादाकुलकम्)

प्रथम१नैर कुंपाड महीपति, भोज कबंध सुता मंजुल मति ॥
चतुर नाम पद्मावति १८०।१ चाहिय ॥
बिधिजुत देव १८०।१ कुमार बिबाहिय ॥ ८ ॥
सुपहुँ भीम जद्दव तनया सुनि ॥
परन्यौं बल्लभ कुमरि १८०।१ नाम पुनि ॥
गौड कृष्ण नृप सुता सुसंगति ॥
इम ब्याहिय तीजी ३ मदनावति १८०।३ ॥ ९ ॥
तीजो ३ बंगदेव १७९।१ सुत सिंहन १८०।३ ॥
धीर बीर ब्याही जिहिँ द्वै २ धन ॥
राजकुमरि १८०।१ पहिली ठकुरायनि ॥
जो चालुक्क सुरतान तनूजनि ॥ १० ॥
पुत्र यहहि सिंहन १८०।३ सन पैहैँ, हड्डन प्रथम१ भेद जिहिँव्है हैं
जोधराज तोमर तनुजाई, हंसकुमरि१८०।२दूजी२पट्ट पाई ॥११॥
इनमैं भयो चालुकी औरस, तनुज प्रबीर नाम घुग्घुल१८१तस ॥

॥ ६ ॥ अस्थिपाल से लेकर १ *देवसिंह पर्यन्त हाडों का वंश२संक्षेप से क-
हा. अब हाडों का ३ बाकी का वंश विस्तार से कहाजाता है ॥६ ॥ बङ्ग के
४ तेरह पुत्र हुए जिनमें कुल को प्रकाशित करनेवाला बंग की भूमि लेकर
बल और यश के साथ बहुत राज्य भोगेगा ॥ ७ ॥ ५ राठोड़ ६ सुन्दर ॥८॥
७ श्रेष्ठ राजा८ अच्छी सङ्गतिवाली ॥ ६ ॥ ९ दो स्त्रियां विवाही १० पुत्री
॥ १० ॥ ११पुत्री ॥ ११ ॥१२ सोलंखिनी के उदर से वीर पुत्र घुग्घुल हुआ

*यहां से पाहिले चहुवाणों की वंशावली के नामों में बहुत संदेह है, आगे देवसिंह से लेकर महारावराजा रामसिंह पर्यंत पीढियों के नाम सब सत्य हैं. कहीं २ इतिहास और संवतों का भेद है सो यथाशक्ति स्थान स्थान पर दिखातेजावेंगे.

भाखत जिहिँ कुल घुग्घुलोत१भुव, हड्डनविच यह प्रथम१भेदहुव१२
भेदनको बिस्तर सब भूपति, अष्टम ८ रासि अंत लिखिहैं अति॥
पै प्रभुचरित अवधिलग पहिलैं, क्रम बिस्तरि पट्टप कुल कहिलैं१३
वंग १७९१२ तनूज नवम ९ हिंगुलु १८०१६ बर ॥
भयो रान लक्खन आश्रित भर ॥
ललित रान बंधव तनया लहि, रचि निज ब्याह रह्यो चित्तोरहि१४

[सचरमागद्यम्]

हड्डाधिराज वंगदेव १७९१२ को नवम ९ पुत्र हिंगुलु१८०१९चित्तोरके अधीस लक्खनके बांधव मोत्कलकी सुता सुप्रियकारदेवी १८०१२ बिवाह्यो ॥

अरु रानाँहीके आश्रित रहि अलाउद्दीन ११ के आहवमैं अग्रजहीं काचके करीरलौं खंडखंड होय स्वामिधर्म निबाह्यो ॥

चित्तोरमैं अद्यावधि जाके प्रासाद विद्यमान कहैं ॥
याही रीति रजपूतनके नाम रजपूतीके अनुसार बिख्यातरहैं ॥२५॥

दोहा

सूर ग्यारहम११वंग१७९सुत, मोहन१८०११गंगा१८०१नाम॥
सहंसमल्ल चालुक सुता, लायो परनि ललाम ॥ १६ ॥
मोहनोत्त१ तस कुल महित, धरत विदित अभिधान ॥
हड्डनमैं यह भेद हुव, दूजो२ प्रथित प्रमान ॥ १७ ॥
इतर वंग१७९ सुत नवहि इम, उज्झि तनू मयओकें ॥

जिसके वंश के भूमि पर घुग्घुलोत कहाते हैं यह हाडों में पहिली शाखा हुई ॥१२॥ हे राजा रामसिंह! शाखाओं का अत्यन्त विस्तार तो अष्टम राशि के अन्त में लिखेंगे परन्तु आप के चरित्र की अवधि तक क्रम करके विस्तार पूर्वक पाटवी कुल को पहिले कहलेते हैं ॥ १३ ॥ वङ्ग का नवमा पुत्र हिङ्गुलु हुआ सो १भड़ (उमराव) चीतोड़ गढ के महाराणा लक्ष्मणसिंह के आश्रित रहा और महाराणा के भाई की पुत्री विवाह कर चित्तोड़ ही रहा ॥ १४ ॥ २ मोकल की ३ विना सन्तान ही ४ काच के घड़े के समान ५ अब तक जिसके ६ महल मौजूद हैं ॥ १५ ॥ ७ सुन्दर, ८ पूजन योग्य९नाम १० प्रसिद्ध वंगदेव के अन्य नव ही पुत्र शरीर रूपी१२घर को११छोडकर

अर्भकभाव अनूढही, पत्ते सब परलोक ॥ १८ ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

सचरणगद्यम्

पहिली चंडासिराज पृथ्वीराज१रो छोटो पुत्र सामंतसिंघ २ दि
ल्लीरा अवमर्दहूँ बाळकथको काढियो जिकणनूँ पातसाह कुत-
बुद्दीन१ मेवातदेसरो कितोक प्रांत दीधो तिणरै पुत्र जयमल्ल ३
तिणरै सुत सोमराज४तिणरै तनूज सूरराज५तिणरै जैतराज६।१
रणधीर६।२ दो२ही पुत्र बीराधिबीर थिया ॥
जिकणमैं जैतराज६।१ आपरा अनुज समेत प्रामारराज बि-
क्रमरा बारहसैचोरासी१२८४रा सकमैं पहिलीरा मालिकनूँ मारि
रणस्थंभदुर्गमैं अमलकरि भाई रणधीर ६ नूँ छाणिरो दुर्ग दीधो
जिकण जैतराजरै अनंतर इणरै पुत्र हम्मीर ७ रणस्थंभरो रा-
जपाइ कोई बडा अपराध ऊपर आपरा प्रधान वणिक टोडरमल्ल
नूँ मारि तिकणरा पुत्र सुरजन१ जयमल्ल२रायपाल३तीनों३ही
नैनूं पाछो अधिकारदे र उरथी लगाइलिया ॥
इणसमयथी कितोक बरसाँ पछैं अर राजकुमार देवसिंह
१८०।१रा बिबाहाँरै पूर्व हड्डाधिराज बंगदेव१७९ चीतोड१ जीरण
२ दसोर३ भाणपुर४रा नरेसाँनूँ गंजि पुर माँडिल१ पानगढ२ साँ
डागढ३ हिंगलाजगढ४ खैरोली५ केथोली६ भैंसरोड७ प्रमुख छो
टा छोटा चोईस२४ दुर्ग दाबिलीधा ॥
अर रजपूतीरै उफाण राँडिरै रसिक चोडै खेत चंद्रहास चखाइ
अनेक दायणाँरा घर घूकाँनूँ घुसणरै काज दीधा ॥ १९ ॥
इण रीतिरा रजोगुणरै प्रकास उण समयरो हाडो राव किण
ही न आसंगियो ॥

---

१ बालकपन में २ विना विवाह ही परलोक गये ॥१८॥
३युद्ध से ४ हृदय से ५ से ६आदि ७ युद्ध के रसिक ८खड्ग९ शत्रुओं के घर
१० उल्लूकों के घुसने को दिये अर्थात् शून्य करादिये ॥ १९ ॥ ११किसीने कायू

अर जिणारो पट्टप कुमार देवसिंह १८०।१भी इसडा पितारा प्रतापमैं जुदोही नाम काढणारे काज पराइ पुहवी लेणारा वीर-रसमैं रंगियो ॥

जिणसमय तीनसै३०० घराँरी वसतीरा बूंदी ग्राममैं जिकण वापी बणाइ डूंमनूं दीधी तिण कारण डूमड़ावाइ१कहीजै तिकण आवूरा पोता अर जिकणारी वणाई गोल्हावाइ२ कहीजै तिण गोल्हा२रा पुत्र उणारा जातिरा मीणाँ जैतारो अमल रहै ॥

अर वाणगंगारो प्रवाह रोकि जिकणारो वणायो छोटो तळा-व हाडाँ ६१ रा राजमैं राव सुर्जन १८९ री माता वडो कीधो तो भी जिणनूँ अजे संसार उणाराही नामकरि जैतसागर कहै॥२०॥ ओछीजातिरे वडो ग्रास हुवाँ वडाँरी ओळिमैं आवणारी हूँस धरै ॥

इण कारण बूँदी समेत छोटावडा वारह १२ ग्रामाँरो ग्रास-पाइ मदकल मातंग मारणारो मन करता सियाळरै समान छत्र-धारियाँरो अनुकरण करै ॥

दैवरा सम विसम प्रवाहरै कारण एक जसराज नाम गोळ वाळ१६ चहुवाण इण मीणाँरै प्रधान हूंतो तिकणारै दोइ२दुहिता सुरूपरी सदनं जाणि जैतारै पुत्र विग्रहराज १ इंद्रद्युम्न २ जसा री पुत्रियाँ विवाहणारी विचारी॥

जरै जसराज वंवावद आइ हाडाँ६१ रा पोलिपात्र सामोर वा रहठ हरसूरनूँ समुझाइ या महा अनर्थरी वात कुमार देवसिंह १८०।१रै कान पटकी तिको सुणताँहीं जसानूँ एकांतमें बुलाइ पूर्वापर जाँणि पहली बूँदीही लेणरी धक धारी ॥ २१ ॥

मं नहीं किया ? भूमि २ बावड़ी बनाकर एक ३ ढोली को दी ॥ २० ॥१अबतक ५ पंक्ति के सामिल ६ मस्त ७ हाथी को मारने का मन करनेवाले गीदड़ के समान राजाओं की ८ नकल करने लगा ९ पुत्रियें १० घर ११ आगे पीछे की बात जानकर ॥ २१ ॥

[दोहा]

बळ मीणाँरो बूझियो, जरैं कही जसराज ॥
बाघ १ ग्राम लंगर बहै, संगर स्याळ २ समाज ॥ २२ ॥

(षट्पात्)

*बदे जसो जिणबार कुँवर अग्गळ जोड़े कर ॥
मीणाँ अधम गँमार घणैं छक अनड़ रहै घर ॥
बीराँ सम्मुह बेग पूँछ पटकैं मंडळ मित ॥
एकण खीची १३ आइ सबळ कीधा खळ संकित ॥
अभिधानँ गंग संगर असह निम्मदेव अँगज निडर ॥
असवार एक१जडिया उठै ओखळिया भालाँ अँरर ॥२३॥

(सचरणगद्यम्)

गागरोणगढरो अधीस नीमदेवरो पुत्र खींची १३ गंगदेव एकल १ असवार केहीबार आइ बूँदीरा जड़िया कँवाड़ाँरै भाला रो प्रहार करै ॥

अर मीणाँनैं जोर कीधो क नहीं इसड़ो हेलो पाड़ि कुलवंत खेतरा बाजीरै बळ उणाही दिन पाछो गागरोणि जाइ देहरी नित्यचर्या साधै जिकणनूँ सुणताँही मीणाँ ओढाव धरै ॥

तिके रंक चंडासिराजरा कुळरी कन्या किणरीति लहै॥
इणकारण आपरो ऊँपर हुवाँ म्हाँरो रजपूतपणाँ रहै ॥२४॥

जब जसराज ने कहा कि ग्रामों में कुत्ते सिंह बनकरलङ्गर बांधे फिरते हैं अर्थात् जिनकी जञ्जीर पर कोई पैर नहीं रखसक्ता परन्तु युद्ध में गीदड़ के समूह के समान हैं ॥ २२ ॥ जसा ने उस समय कुमर के आगे हाथ जोड़कर * कहा कि मीणे नीच और १ मूर्ख अपने घर में घमण्ड से २ अनम्र रहते हैं और वीरों के सामने ३ कुत्ता के समान शीघ्र ही पूंछ पटक देते हैं (कुत्ता को जब भय होता है तब पूंछ नीची कर लेता है) अकेले खीची ने आकर बल सहित दुष्टों को भय युक्त करदिया है जिसका ४ नाम गङ्ग और निम्मदेव का ५ पुत्र निडर और युद्ध में नहीं सहने योग्य अकेला सवार वहां पर (बुन्दी के) ७ जड़ेहुए किवाड़ों पर ६ चोट लगाता है अर्थात् भाले की ओझाड़ लगाता है ॥ २३ ॥ ८ घोड़े के बल से ९ आचरण १० भागते हैं अथवा भय धरते हैं ११ मदत ॥ २४ ॥

जसराजरा वचनाँमैं मीणाँरो इसो अधर्म जाणि नेत्राँमैं जळ आणि कुमार कहियो घोड़ै चढि चालियां इसड़ा अनर्थरा कर-
णहार अंत्यज *पुळियारहोइ जीवता रहिजावै॥
इणकारण योही अधर्म**अनुमतमैं जाणि उणाँनूँ मिळाइ
छळ कीधाँ एक १ भी अधम जीवण न पावै॥
तिणसूँ गंगदेवरो आगम जाणि पहिली सूचना करि मोनूँ बुलाइ गमाराँनूँ म्हाँरो सहायकभाव दिखावणाँ॥
जरैं खीची १३ रो भय टलियाँ विश्वासपाइ धीजियाँनूँ रजपूत करणरैं काज मीणाँरी चाल छोडणरो पत्र कपटकर लिखावणाँ॥ २५॥
म्हाँरै कन्यादानरा फळरी चाह जाणि गमार अत्यंतहर्ष जाणंदमैं ऊफणिया न मावसी॥
अर अधर्मरा अघसूँ अंधहुवा बुलाँवाँ जठैही मरणनूँ आवसी॥
इणरीति समुझाइ राजकुमार देवसिंह १८०।१ भाई गोळवाळ १६ नूँ बूँदी सीखदीधी॥
जरैं कुमाररा दूतनूँ साथलेर जसराजभी छानैं आइ घोड़ै आपरैं खेददिखाइ घरही रहियो अर गागरोणि गुप्त दूत राखि पांच ५ दिन पहली गंगदेवरा आवणरी राजकुमारनूँ सूचना कीधी॥२६॥
गंगदेवरैं खुरासाण खेतरो अतिवेग बाजी सुणियो जिसड़ोही तुरंग सज्जकराइ कुमार १८०।१ एकलही असवार आखेटरो व्याजकरि बंबावदासूँ ईसानदिसारी अटवीमैं बूँदीसूँ पाँच ५ कोस परैंलग जाइ सिकाररा रमणमैं पाँच ५ ही दिन बिताइ एक१ मैंइंद दोइ २ बाराँह गाडाँ घलाइ चाहकरि सायंकाळरैं समय बूँदी आयो॥

---

*भागकर अथवा भागनेवाले होकर ** विचार (सलाह) में १ आने का समय २ मूर्खों को ३जब ४ विश्वास पायेहुओं को ५ चलन(रीति) ६ पाप से ७ जानकारी ८ शिकार का ९ मिस करके १० वन में ११ सिंह १२ सूवर

सो जाणतांहीं मीणां साम्हैंआइ उचित दिखाइ गांवमैं आ-
णि जसराजरै घरे ऊतरणारी इच्छाजाणिआपरो आसय सुणायो॥
मीणां कहियो खीची १३ गंगदेव फजरही आइ भालारो प्र-
हार कँवाडरै करसी अर जसराजरी हवेली द्वाररै समीप इणकारण
आपनूं म्हारे घरे ऊतरणाँ ठीकछै ॥
अरकँवाड़ तूटैतोखीची१३रैआपणानूंमारिलेणारीबातकतरीकछै२७

(दोहा)

कहियो हसि हाडै कँवर, गिणाँ न मोजिम गंग ॥
आज निसा न जडो अररै, रूपणाँ मोनूं रंग ॥ २८ ॥
साल मेटि थाँरो असह, बुँदी अभग बणाइ ॥
णागराम जङ्ग पुर आपरै, जय१ जस२ आल जणाइ ॥ २९॥
सुणियाँ आगम सत्रुरो, अरर जडे न्जि ऐंणाँ ॥
राणीजाणिया किमरहै, विरुद १ धर्म २ कुल ३ बैंण ।३०।

[सचरणगद्यम्]

इणरीति आपरी मरजी मीणाँनूं मनाइ राजकुमार देवसिंह१८०।१
सारी निसा बूँदीरा दरवाजा खुलाइ गोळवाळ१६भाई जसराजरी
हवेली रहियो ॥

अर प्रभातही खीची १३ रा तोमरै कपाटरै लागताँही कुमार
एकल असवार आपाऊपहरो आवतो देखि आसंगमैं अणमावतो
जाणि गंगदेव हेलो भी न देणपायो रै प्राण बचावणानूं बडेवेग बा
जाँ बहोड़ि मऊरो मार्ग गहियो ॥
दोरही जणाँरै समताको तुरंग इणकारण पूगूं१ अर न पूग-
णद्यूं२ इसड़ा संकल्पसौं भदाणाँ ग्रामरै घाँटै जावताँ खीची१३
लासमैं मूढहोइ लागै जेरबंधही घोड़ो चर्मणवतोको दहमैं ठेलियो॥

१किंवाड़२युद्ध में ॥२८॥ २६॥ ३ अपने घर के ॥३०॥ ४ आला, कुमर देवसिंह को ५ अधिक पराक्रमवाला ६ हिम्मत में ७ अकेला ८ घोड़े को पीछा फेर-कर९बराबर के घोड़े थे १०चामल नदी के ११जलाशय (गहरे जल) में घोड़ा

जिकणानूं बूड़तो देखि पाछैंसूं कुमार देवसिंह१८०।१ जेरवंध काटणाँ चीँताइ नासादघ्नें पाणीमैं पैसतानूं वाजीसमेत उवेलियो३१

खीची१३ कुमारनूं ओळखियो जरैंही पाछोआइ कही इसडा संकटसूं वचावै जिको मारणरोतो संकल्पभी लावैनही ॥

अर आपजिसा राजकुमाररो इणतरह अठालग आवणाँ अर्थविहूणाँ खटावैनही ॥

कुमारकहियो जे प्रजानूं पीडितकरै तिकाँरी पूठिलागणाँतो क्षत्रियाँरोही सनातन धर्म जाणीजै ॥

अर धाड़ो१ लूट २ करणाँ महामलिन मनरा अंत्यजाँरोही कर्म प्रमाणीजै ॥ ३२ ॥

खीची१३कहियो प्रजाँनूँ पीडादेणरो कर्मतो हूँभी अंत्यजाँरोही जाणूं

परंतु बुंदीमैं अंत्यजँ ठाकुर कहावै सो दर्प मेटणरै काज इण तरह आइ उणाँरा बळरो अनुमान प्रमाणूं ॥

बळरो निश्चय थियो जतरै आपजिसा वीर रक्षक हुवातो अब म्हेऊ प्रदेसँ लेणरो संकल्प तजियो ॥

परंतु मीणाँरै ठाकुरपणाँ रहियाँ तो रजोगुणरा छकको न्हौंस ऊपजियो ॥ ३३ ॥

कुमार कहियो मीणाँतो ठाकुर कहावणाँ सहजरो जाणि अवतो रजपूताँरी पुत्रियाँनूँ वरण ढूकाँ ॥

अर आपाँरा सगोत्र गोळवाळ १६ जसराजनूँ समताँरो संबंधी करण ढूका ॥

धर्मजुद्धसाँ मारियाँतो पलायनरो आलंबन पाइ इसड़ा अधर्मी समस्तही मरण पावैनही ॥

ढाला १ नाक पर्यन्त २ बचाया ॥ ३१ ॥ ३ विचार ४ विना प्रयोजन ५ प्राचीन ६ शूद्रों का कर्म मानाजाता है ॥ ३२ ॥ ७ चाण्डाल ८ घमण्ड ९ हुआ १० प्रान्त ११ मालिकपन १२ उत्साह का १३ नाश हुआ ॥ ३३ ॥ १४लगे १५ बराबर का १६ भागने का १७ सहारा पाकर

अर छळरा प्रपंचरै साथ बिस्वासबधाइ आघात राळियाँ सूना मैं संग्रहिया[1] जीवाँ जिम एक १ भी जीवतो जावै नहीं॥३४॥

इणकारण कन्यादानरा फळरी ईहा[3] दिखाइ जसराजरी पुत्रियाँनूँ बंबावदै बुलाइ कोई राजकुमाराँ रै पल्लै[4] बाँधि एहा अधर्मरा संकटथी उबारूँ ॥

अर ऊणाँरा बिबाहवाँरा लोभी अंत्यजाँनूँ[5] एकठा बुलाइ सर्व थाही मारूँ ॥

खीची १३ कहियो बंबावदै बिबाहरो बिचार कीधाँ बात छानँ न रहसी जरैंतो अधम बायस[6] आपआपरै मतै उडि इसोही संकल्प ओरठैभी जणावसी ॥

अर ऊणाँरा अमलमैं बूँदीरै समीप बिबाहरो बिचार कीधाँ बिस्वासरी पुष्टि पाइ निस्संदेह हणिया[7] जावसी ॥ ३५ ॥

(दोहा)

आयो बूँदी आपरो, अमल दरारै[8] वार[9] ॥
बधियो रहसी जतनँ बिण[10], प्रतपण म्हाँरो पार ॥ ३६ ॥

सचरणगद्यम्

इसड़ो कहि गंगदेव आपरो आथाँण[11] लीधो ॥

अर कुमार बूंदीआइ खीचीरा बळे[12] न आवणरो अभय दीधो॥

सत्रुरो साल काढि आवता कुमारनूं मीणाँ सहित बूंदीरै लोक बधावणाँ करि आणियो ॥

अर आपआपरै उचित उपदाँरी[13] भेट करि रँडिरो[14] रसिक जोरदार रक्षक जाणियो ॥ ३७ ॥

१प्रहार करने से शिकार के वाड़े में २पकड़ेहुए ॥३४॥ ३इच्छा ४गएठजोड़ा ५जवनों को ६ कौए (कागले) ७ मारेजावेंगे ॥ ३५ ॥ आपके आने से आपका अमल८दरा (स्थानविशेष जो इस समय कोटा के राज्य में है) के९इस ओर (उरली तरफ)१०विना यत्न बढता रहैगा और परली तरफ हम तपेंगे अर्थात् हमारा राज्य रहैगा ॥ ३६ ॥११अपने स्थान गया१२फिर १३ नजर१४युद्ध का रसिक ॥ ३७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचराडासि १ वंशवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यवम्बावदाधीशनृपविजयपाल १७८ वंगदेव १७९।१ कुमारदेवसिंह १८०।१चरित्रे चित्रकूटनरेशराणापृथ्वीमल्लगोवधनिमित्तकाशीरणमरण १ पूर्वतथैवतत्पितृ १ पितामह २ वाराणसीरणशय्याशयनसूचन २ पुण्यभूमिम्लेच्छमण्डलप्रतापविशेषविस्तारण ३ राणाभुवनांगचित्रकूटराज्यसमासादन ४ हड्डाधिराजविजयपाल १७८ प्रामारीरम्भावत्यौ १७८।१ रसवङ्गा १७९।१ दिकुमारपञ्चक ५ समुद्भवन ५ विजयपाला १७८ वसानरम्भावर्ता १७८।१ सहगमन ६ वंगा १७९।१ ऽनुजचतुष्क ४ वालाऽनूढत्वपरलोकप्रापण ७ राणाभुवनाङ्गपुत्रभीमचित्रकूटाधिपत्यग्रहण ८ तदऽनुजजीनाऽपर २ नामजीवनवीज्यचन्द्राउत्तोपटंकख्यापन ९ वङ्गदेव १७९।१ व्यूढ गौडीसुज्ञानकुमारी १७९।१ प्रभृतिराज्ञीपङ्क ६ प्रत्येकनाम १ जात्या २ दिनिर्णयन १० तदौरसदेवसिंहा १८०।१ दित्रयोदश १३

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थ राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बम्बावदा के स्वामी राजा विजयपाल वंगदेव और कुमर देवसिंह के चरित्र में चित्तोड़ के नरेश राणा पृथ्वीमल्ल का गोवध के कारण काशी के युद्ध में मरना, इसीप्रकार पहिले इनके पिता और दादा का काशी के युद्ध में मरने का जनाना, आर्यावर्त में म्लेच्छ मण्डल का प्रताप विशेष फैलाना, राणा भुवनांग का चीतोड़ का राज्य पाना, हड्डाधिराज विजयपाल से प्रामारी रम्भावती के उदर से वंग आदि पांच कुमारों का उत्पन्न होना, विजयपाल के अन्त समय रम्भावती का सती होना, वङ्ग के छोटे चार भाइयों का बालकपन में बिना विवाह परलोक जाना, राणा भुवनांग के पुत्र भीम का चीतोड़ का स्वामी होना, उनके छोटे भाई जीन और दूसरे नाम से जीवन के कारण चन्द्राउत्त पदवी का विख्यात करना, वंगदेव का गौड़ जातिवाली सुज्ञान कुमारी आदि छै राणियों का विवाह और प्रत्येक का नाम और जाति आदि का निर्णय करना, उनके उदर से देवसिंह आदि तेरह कुमारों का प्रकट होना,

कुमारप्रकटन ११ ज्येष्ठ १ कनिष्ठा २ द्विप्रत्येकराज्ञीपृथक्पुत्र त्वसंख्यासमसन १२ भाविवंशविस्तितीर्षाप्रतिज्ञापन१३ पट्टपकुमारदेवसिंह १८०१ राष्ट्रकूटीपद्मावती १८०१ प्रभृतिपत्नीत्रय३ परिणायन १४ बङ्गदेव १७९११ तृतीय ३ पुत्रसिंहण १८०१३ चालुकी १ तोमरी २ द्वय २ विवहन १५ भावितदौरसघुग्घुल्ल १८१ वंशघुग्घुलोत्त १ हड्डभेदप्राथम्य १ प्रख्यापन १६ गौणभेदवंशपरम्पराऽष्टम ८ राश्यन्तलिखनप्रतिज्ञापन १७ राणालक्ष्मणसिंहस्वसामन्तीभूर्तपरिणीतनिजबान्धवपुत्रीसुप्रियकारदेवी १८०११ कबंग १७९११ नवम ९ पुत्रहिंगुल्लु १८०१९ भावियवनराडलाबुद्दीन ११ रणमरणसूचन १८ तदुदन्तप्रतिभूभूततत्प्रासादांकचित्रकूटविख्यापन १९ परिणीतचालुकीगङ्ग १८०११ बंगै १८०१२ कादश पुत्रमोहन १८०१११ बंश्यमोहनोत्त २ द्वितीय २ भेदभावितासूचन २० खिलनव ९ बंग १७९११ पुत्रबाल्यानूढत्वतनुत्यजन २१ पृथ्वीराजबंशीयजैत्रराज्यरणस्तम्भराज्यसमासादन २२ स्वानुजरणधीरार्थछाणिदुर्गप्रदान २३ प्राप्तराज्यहतापराधिबाणि

छोटे बडे आदि प्रत्येक राणी के जुदे जुदे पुत्रों की संख्या संक्षेप से कहना, आगे होनेवाले वंश को विस्तार से कहने की प्रतिज्ञा करना, बडे कुमार देवसिंह का राठौड़ी पद्मावती आदि तीन स्त्रियों से विवाह करना, बंगदेव के तीसरे पुत्र सिंहण का चालुकी और तोमरी दोनों से विवाह करना, होनेवाले औरस पुत्र गुग्घुल्ल के वंश के गुग्घुलोत्तों का हाडा क्षत्रियों में प्रथम शाखा होने को जनाना, छोटी शाखाओं (वंशपरम्परा)का अष्टमराशि के अन्त में लिखने की प्रतिज्ञा करना, राणा लक्ष्मणसिंह के उमराव होकर और उनके बान्धव की पुत्री सुप्रियकारदेवी को विवाह कर बङ्गदेव के नवम पुत्र हिङ्गुलु का आगे होनेवाले बादशाह अलाउद्दीन के युद्ध में मरने की सूचना करना, उस वृत्तान्त के साक्षीभूत (जमानत देनेवाले) पहिले बने हुए महल के चिह्न चीतोड़ पर कहना, गङ्गा नामक सोलंखिनी को विवाह कर बङ्गदेव के ग्यारहवें पुत्र मोहन के वंश के मोहनोत्त इस नाम से आगे होनेवाले समय में हाडा क्षत्रियों में दूसरा भेद होने की सूचना करना, बङ्गदेव के बाकी के नव पुत्रों का विना विवाहे बालक अवस्था में शरीर छोडना, पृथ्वीराज के वंश के जैत्रराज का रणतभवर का राज्य लेना,

कूटोडरमल्लहम्मीरदेवसाधिकारदानतद्वणिक्पुत्रत्रय ३ समाश्वासन २४ कुमारदेवसिंह १८०।१ पाणिपीडनपूर्वहड्डाधिराजबङ्गदेव १७९।१ पुरमाण्डल १ प्रभृतिचतुर्विंशति २४ पुर १ दुर्ग २ समाक्रमण २५ बुन्दीप्रमुखद्वादश १२ ग्रामपतिमीणोपटंकान्त्यजजैत्रपुत्रस्वप्रधानगोलवाल १६ चाहुवाणयशोराजपुत्रीपाणिग्रहणाकांक्षण २६ प्रच्छन्नबम्बावदागतयशोराजद्वारहठहरसूरद्वार-राजकुमारदेवसिंह १८०।१ कर्णतद्वृत्तविज्ञापन २७ रहःसमाहूतपृष्टान्त्यजबलयशोराजखिलगंगदेवत्रस्तान्त्यजविह्वलीभावकथन २८ ज्ञापितसंकेतप्रस्थापितयशोराजाहूतबान्धवदुःखापनिनीषुकापथपथिकान्त्यजजिघांसुकृताच्छोटनव्याजकुमारबुन्द्यागमन२९तत्रत्यसत्कृतनिरर्गलीकारितकपाटदेवसिंह१८०।१प्राप्तपलायितगङ्गदेवपृष्ठधावन ३० निमग्ननिष्कासितविश्वस्तप्रत्यागतगङ्गदेव १ प्रत्यभिजातकुमार २ संलापन ३१ समुपालब्धप्रतिगा

अपने छोटे भाई धीर के अर्थ छाणीगढ देना, राज्य पाकर अपराधी बनिया टोडरमल्ल को मारकर हम्मीरदेव का टोडरमल्ल के तीन पुत्रों को टोडरमल्ल का अधिकार देकर विश्वासना, कुमार देवसिंह के विवाह से पहिले हड्डाधिराज बंगदेव का पुरमांडल आदि चौवीस नगर और गढ़ों का लेना, बुन्दी आदि बारह ग्रामों के पति मीणा पदवीवाले चाण्डाल जैता के पुत्र अपने प्रधान गोलवाल शाखा के चहुवाण यशराज की पुत्रियों से विवाह करने की इच्छा करना, छाने बम्बावदे गयेहुए यशराज का बारहठ (चारण)हरसूर द्वारा राजकुमार देवसिंह के कानों में उस वृत्तान्त की जानकारी करना, एकान्त में बुलायेहुए यशराज से चाण्डालों का बल पूछने पर गङ्गदेव से त्रास पायेहुए सब अन्त्यजों का विह्वल होने का कहना, सङ्केत जनाकर यशराज को पीछा स्थापन करके यशराज को बुलाये हुए भाई के दुःख को ग्रहण करनेवाले और कुमार्ग में जानेवाले चाण्डालों को मारने की इच्छावाले कुमर देवसिंह का शिकार के मिस बुन्दी आना, वहां सत्कार पाकर कवाड़ों को खुले रखकर देवसिंह का भागेहुए गङ्गदेव की पीठ दौड़ना, डूबते हुए को निकालकर विश्वास पाकर पीछे फिरेहुए गङ्गदेव से कुलवान् कुमर देवसिंह का बात करना, उलहना देकर गंगदेव को पीछा फेरकर कुमर का पीछा आना, अनेक उपायों से सीधे करके बुन्दी की

मितगंगकुमारप्रत्यागमन ३२ प्रगुणीकृतनानोपायनबुन्दीप्रजा-
सहितान्त्यजकृतविजयप्रत्यागतकुमारवर्द्धापनं ३३ पञ्चत्रिंशो ३५
मयूखः ॥ ३५ ॥

आदितश्चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४४ ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

दोहा

विरचे एम[1] बधावणाँ, आणि[2] कँवर अति आघ ॥
मीणाँ कहियो अतुल महँ[3], बचिया तो बळ बाघ ॥ १ ॥

(सचरणगद्यम्)

दूजे२दिन महिमानीरी गोठिमैं मीणाँरै सुणताँ जसराज कहि-
यो म्हाँरि पुत्रियाँरै साथ जैतो आपरा पुत्रांरो संबंध कियोचाहै
सो राजकुमाररा आसयमैं तुलैतो कन्या[4]काळरो अति[5]क्रम जा-
णि अठैही बिवाह करूँ ॥

सो स्वामीरै सम्मत[6] हुवाँतो इसड़ो कवण सो मोनूं जातिरै
बहिर्गत[7] करै इणाकारण एक आपरोही आतंक[8] आणि डरूँ॥

कुमार कहियो आगैंभी दहिया जसराज१ ईंदा बळकरण२ गा
जी नेतसिंह३ बीरसहँसमल्ल४ प्रमुख[9] किताही रजपूताँ पंजाबरा
मेर१ कुळमी२ जाट३ जँवन[10]४ जामाताँ[11] किया अर सोढा प्रमार
[12]अंजेभी[13] सिंधुदेसरा जवनाँनूँ पुत्रियाँ बिबाहै जिकेपण जातिरै बहि
र्गत किसडै नरेस करिदिया ॥ २ ॥

प्रजा सहित चण्डालों का विजय करके पीछा आकर कुंमार का बुन्दी के राज को बढाने का पैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३५ ॥ और आदि से एक सौ चवांलीस मयूख हुए ॥ १४४ ॥

१ इसप्रकार २ आज बड़े उत्सव का दिन है कि ३ हे सिंह तुम्हारे बल से हम बचे हैं ॥ १ ॥ ४ दश वर्ष की अवस्था पर्यन्त कन्याकाल (समय) है जिसका ५ उल्लंघन जानकर ६ मालिक की सलाह ७ बाहर ८ भय ९ आदि १० म्लेच्छों को ११ जमाई किये १२ अब भी १३ जोभी ॥ २ ॥

इणकारण जिणरै जमीहोइ सोही सूरवीर ठाकुर कहावै ॥
परंतु जैतो अबहीसौं मीणाँरी चाल छोडि रजपूताँरी राहमैं रह-
णरो लेखकारि सूँपै तो यो संबंध करणमैं आवै ॥
फेरभी कोई काळमैं न्हाण[१] संझा[२] छोडि[१] अखज्ज खाइ[२] मी-
णाँनूं जळ[१] जीमण[२] छुवाइ[३] नात्रो[५] कराइ[४] नारियाँनूं पड़दा बिहूण[६]
राखसी[७]तो म्हारा कुळरी पुत्रियाँ समेत हणियाँजावसी ॥
अर नहीं जैं[८] दहियाँ[१] ईंदाँ[२] गाजियाँ[३] बीराँ[४] सोढाँ[५] रा संबं-
धियाँरै समान एक[१] जैतारो कुटुंबभी म्हारा कुळरो संबंधी होइ
रजपूताँरी राहमैं खटावसी ॥ ३ ॥
म्हारे पण[९] कन्या नही जिणाँथी[१०] म्हाँरो धन लगाइ भाई जसरा-
जरी पुत्रियाँरा कन्यादानरो फळ लेणरी म्हेहीज बिचारी ॥
अर बूँदीराही अमलमैं जैतो कहै जिणठाम सामग्रीरा संचय
करि बरात बुलावणरी धारी ॥
देवसिंह[१८०१]रो इसडो हुकम सुणताँही गँवाराँ[१२] जाणियो क-
हिया जिकाँ दहियाँदिकाँ[१३]रा संबंधियाँ जिम म्हाँनूं संबंधी करणरो
राजकुमाररा मनमैं निश्चय थियो[१४] तो म्हेतो आजहीसौं मीणाँरी
राह छोडि अधीसरा उपदेसमैं रहणाँ अंगीकार[१५] कीधो ॥
इसडो सम्मत[१६] करि काळरा खैंचियाँ प्रेतपतिरी पुरीरा पाहुणाँ[१७]
होइ हुकमरै प्रमाण तत्काळ[१८] ही लेख करि भिलाइ दीधो ॥ ४ ॥
जैत कहियो कोणपकोणमैं[१९] अठाथी एक[१] जोजन अचळैंरी[२०] उ-
पँत्यका[२१]रै आधार उपवसथ[२२] ऊमरथूणाँ मंडपरो मकान मरजीमैं
मानियोजाइतो उठै रहियाँ बंबावदाथी उपयमराँ[२३] उपकँरणरो[२४] आ-
वणाँभी सुगम रहियो ॥

---

[१]चलण रीति [२]स्नान[३]सन्ध्या[४]गोमांस आदि [५] नाता [६] विना [७] मारेजावेंगे [८] जय ॥ ३ ॥ [९] भी [१०]जिससे [११]समूह[१२]मूर्खों ने [१३]दहिया आदि के [१४]हुआ [१५]स्वीकार किया[१६]विचार [१७]यमराज की पुरी के महमान होकर [१८] तुरंत ही ॥ ४ ॥ [१९] दक्षिण दिशा में [२०]पर्वत की [२१] टलेटी (पर्वत के पास की भूमि के ऊपर) [२२] ग्राम [२३] विवाह की [२४]सामग्री का

सोही स्वीकारकरि गोळवाळरी दोरही*दुहितानूं साथलेर रा-
जकुमार देवसिंह १८०।१ ऊमरथूसौं आइ पितासूं÷प्रच्छन्न आपरी
+प्राणप्रिया छोटोकुमराणी गोडि मदनावती १८०।३ नूं बुलाइ
अनेक उचित बाड़ा बणाइ आपरा अमात्यनूं बंदावदै बणादूत दर
उपयमैरै उचित उपहार एकठो कराइ लग्न पूछियो जठै नामकरि
देल्हैं द्विज गणाकराज दाधीच व्यास इणरीति कहियो ॥
लग्नतो एक १ ही मासरै अनंतर आषाढ कृष्ण नवमी ९ रो
ही भलो परंतु सगोलरी कन्या मीणानूं देणामैं लग्नरो विचार
किसड़ो कहावै ॥
रजपूती पाताळमैं गई जिणरो अनुताप आपरै बदळै औरानूं
आवै ॥ ५ ॥

[षट्पात्]

वसु नव बारह १२९८ बरस समय बिक्रम सक संगत॥
सुँचि नवमी९कुर्ज३असित आन बसु चउ४८तेरह१३मत ॥
साठि ६० गगन ० पूषा मैं २७ बीर ५२सत्रह१७सोभन५बणि ॥
तैतिल ४ सोलह१६साठि६०भला कवि ६ गुरु५नअस्त भणि ॥

*पुत्रियों को÷छानें × स्त्री १ मन्त्री को २ पत्र देकर ३विवाह के ४ सामग्री ५ देल्हा नामक ब्राह्मण ज्योतिषी ६ पश्चात्ताप ॥ ५ ॥ विक्रम के शक के साथ बारह सौ अठयानवे के वर्ष में ७ आषाढ २ वदि नवमी ८ मंगलवार १० प्रमाण में अड़तालीस घड़ी तेरह पल ११ रेवती नक्षत्र साठ घड़ी पूर्ण पल १३ शोभन योग १२ बावन घड़ी सत्रह पल १४ तैतिल कर्ण सोलह घड़ी साठ पल(यह लिखना असङ्गत है क्योंकि साठ पल की एक घड़ी होजाती है इसकारण से साठ की पल संज्ञा नहीं होती जैसे पन्द्रह तक आने कहेजा-ते हैं और सोलह आना होनेपर रुपिया होजाता है तब सोलह आने नहीं कहेजाते इसीप्रकार साठ की पल संज्ञा नहीं रहती परन्तु मालूम होता है कि ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल) पद्य का नशा अधिक होने के कारण भूल गये हैं) और १५ शुक्र १६ बृहस्पति १७ अस्त नहीं हैं सोभी अच्छे १८ कहेग-ये हैं क्योंकि शुक्र और बृहस्पति अस्त होते हैं तब विवाह नहीं होता सो अस्त नहीं हैं और

लत्ता १ दिं दोस दसं २ म लखो अल्पं निर्वळ सोपण अठै ॥
वदियो द्विजेण सत्र सुभ विफळ, कुळ दूलह समता कठै ॥ ६ ॥

(सचरणगद्यम्)

हड्डाधिराज वंगदेव१,७९।१भी यो उदंतं जाणि कुमारनूँ वडै वेग
वर्णदूत दियो ॥

तिणमैं गोळवाळ १६ री कन्या अंत्यजाँनूँ दीधाँ थाँरोपण वा-
स म्हाँरी सीमाँरै वहिर्भूत थियो ॥

जरैं दाधीच व्यास देल्हानूँ तंत्व समुझाइ सामोर वारहठ हर-
सूरनूँ वंशावदे भेजि आपरो हार्द पितानूँ जणायो ॥

अर गुजरात छूटाँ केडै सोलंखियाँरी केही पीढी अजमेरामैं
रहियाँ पछै उणाँ रै पाटवी गोइंदराज इणही समयरै समीपटो-
डारा अधीस गोळवाळ १६ चहुवाण सातू १ पातू २ दो२ही भा-
इयाँनूँ मारि टोडारो राजा हुवो ॥

जिकणनूं मीणाँरा मारणरो निश्चय जणाइ उणरो वडोपुत्र
कुंभराज १ तिणहूँ छोटो कन्हड़ २ याँ दो २ ही वंधवानूं वडी ब-
रातरै साथ वैरणनूं वुलाइ मीणाँ रै मावणै जिसड़ो एक १वाडो
जुदोही वणायो ॥ ७ ॥

गोइंदराज कहाइ म्हे गोळवाळाँ १६ नूं मारि टोडो लीधो अर

१ लत्ता आदि (लत्ता १ पात २ युति ३ वेध ४ यामित्र ५ युधपञ्चक ६ एकार्गल ७ उपग्रह ८ क्रान्तिसाम्य ९ दग्धातिथि १०) २ दश दोष विवाह में वर्जनीय हैं जिनमें केवल तीन दोष टालकर सात दोषों के होने पर भी विवाह कर दियाजाता है सो यहां पर इन दश दोषों में से ३ न्यून अर्थात एक दो दोष ही हैं और जो दोष हैं सोभी यहां पर ४ निर्बल हैं परन्तु उस ज्योतिषी ने५ कहा कि ये सब शुभ योग निष्फल हैं क्योंकि वर के कुल की बराबरी नहीं है अर्थात् वर चण्डाल के पुत्र हैं और कन्या क्षत्रिय की पुत्रियां हैं ॥ ६ ॥ ६ वृत्तान्त ७ पत्र ८ बाहिर ९ हुआ १०मर्म ११ अभिप्राय १२पीछे १३विवाह करने के लिये १४समावेश होजावे ऐसा ॥ ७ ॥

आप गोळवाळरी पुत्रियाँनूं बिबाहणारै काज म्हारा कंवराँनूं तेड़ो[1] जठै सत्रुतारी संका हुवै इणाकारणा आपरा बारहठ हरसूरनूं प्रतिभू[2] करि अठै भेजि उणारा धर्मरो बचन दिवाइ आपरी पुत्रियां करि बिबाहो जणैं बरात आवै ॥

सोही स्वीकारकरि कुंभराज १ कन्हड़२ दो२ही कुमरानूं बुलाया जाणि जसराजभी याही अरज कीधी जठै कुमार कहियो मीणाँही प्रसभ[3] पूर्वक बळहीसाँ वर[4] बणाता जिणबीच टोडारा राजा समताँरा[5] संबंधी सोलंखीरा सुत सत्रुभी उचितही खटावै ॥

इसड़ी कहि अंत्यजाँरै[6] उचित बाडामैं बारूद बिछाइ जिकणामैं बरातहूं एक १ प्रहर पहली संबंधियाँ समेत समग्रही मीणाँनूं बुलाइ आँसवमैं अति मत्त कीधा॥

अर बरात न पूगै जिणपहली बारूदमैं दमंग[7] देर उडाइ दीधा ॥ ८ ॥

बरातरा समाधानपर आपरा सुभट१ सचिव२ राखि तत्काळ[8] ही बूंदी आइ अमल कीधो ॥

जठै आपरो थाणाँ राखि पाछो ऊमरथूणाँ जाइ आषाढ कृष्ण नवमी९ कुज३वाररा लग्नपर गोळवाळ १६ री दो२ही पुत्रियाँ रो बिवाह चालुक्कराजरा दो२ही कँवराँरै साथ करदीधो ॥

आपरी पुत्रियाँरै समान धन१ भूषण२ वस्त्र३ दास४ दासी५ गज६ बाजि७ सिबिका[10]८ रथ९ प्रमुख[11] मामग्री देर[12] चौथै४दिन बरातनूँ बिदाकरि फेर बूँदी आयो ॥

अर निदाघ[13]काळरा पवनरै प्रमाणा सपूतीरो सुजस चो४तरफ ही चलायो ॥ ९ ॥

दोहा

१ बुलाते हो सो २ जामिन (जमानत देनेवाला) ३ हठ पूर्वक ४ बींद ५ बराबर के ६ चण्डालों के ७ मध्य में ८ अग्नि ॥ ८ ॥ ९ तुरन्त ही १० पालखी ११ आदि १२ देकर १३ ग्रीष्म समय के पवन के समान ॥ ९ ॥

गज नव वारह १२९८ अब्द गत, सक विक्रम संबंध ॥
दिन नवमी९ आषाढ वदि, मीणाँ तेडि मदंध ॥१०॥
मारि सकल इम पाइ मधु, राखि सनातन राह ॥
धकिं लीधी बूँदी धरा, देवै१८०११कँवर दुबाह ॥११॥
युग्मम् ॥ सचरणगद्यम्

अठे अस्थिपाल १५५ रा अन्वयमैं गंभीर१७१ थी दसमी१०पीढी राजकुमार देवसिंह१८०११ हुवो जिकण चालुक वंसमैं भोला रायभीम थी तेवीस२३मी पीढी गोइंदराज टोडारो अधीस हुवो जिकणरा अढारह १८ अंगजाँमैं वडाहीवडा कुंभराज १ कन्हड़२दो २ ही वंधवाँनूं आपरा सगोत्र गोळवाळ १६ जसराजरी दो२ही पुत्रियाँ विवाही इणकारण मागधलोकाँरा घणाँ ग्रंथाँमैं एक १ही लेख जाणि सोही प्रमाण इणग्रंथमैं राखियो परंतु पीढियाँरी विसेसही विसमताहूँ विरोध आवै ॥

जठै और कोई गति न जाणियाँ चालुक वंसरी तेवीस २३ही पीढियाँमैं घणाँरै अंकस्थ पुत्र हुवाहोइ इसड़ाही संभवरा विचार थी खटावै ॥

इणरीति बूँदी लीधी जठै पहिला स्थनाँ मैं गोल्हावाइ १डुमड़वाइ २ दोइ २ निवाण चाळकदेवी १ खेडादेवी २ अर जठै तारागढ हुवो जिण अद्रिपर चामुंडा ३ ए तीन ३ ही देवियाँरा स्थान साणेश्वर सिवको मंदिर १ छोटो तैड़ाग जैतसागर १ ए सात ७ ही मुख्य आऊठाण पाया ॥

अर ओर सव हाडाँरो राज हुवाँपछैं आपआपरा वाराँमैं आपआपरा धणियाँ वणाया ॥ १२ ॥

१विक्रम के शक से सम्बन्ध रखनेवाले बारह सौ अठ्यानवे के सम्वत् में मद से अन्धेहुए मीणों को २ बुलाकर ॥ १० ॥ ३ मद्य पिलाकर ४ परम्परा का मार्ग रखकर ५ क्रोध करके ६ दोनों हाथों से बाह करनेवाला ॥ ११ ॥ ७ वंश में ८ गम्भीर से ९ पुत्रों में१०बड़वाभाटों के ११घटाबढी से १२गोद रक्खेहुए१३पर्वत पर१४तलाव १५आईठाण १६ समय में ॥ १२ ॥

राजकुमार देवसिंह १८०।१ भी ऊमरथूणारी ऊगमणी सीमा पर पितारा नांमथी बंगेश्वरी देवीको मंदिर बणाइ प्रतिष्ठापूर्बक प्रतिमा पधराइ तेथही बापी बांगाबाइ२बिरचाइ बूंदी आपरो थाणौं राखि बंबावदै जाइ हड्डाधिराज बंगदेव १७९।१ नूं प्रणामकीधो ॥

अर नरेंद्रभी सुपुत्रनूं सुजसरै साथ उरथी लगाइलीधो ॥

तदनंतर पितारा निदेसरै प्रमाण पात्रलोकांरो पूंतारियो उरसंहूं ओघसतो राजकुमार बळे बूंदी आयो ॥

अर रत्नगढ१ बौंल्योलीर भैंसरोड़३ तीन३ ही दुर्गांथी आपरी कितीक सेना बुलाइ बंबावदा १ वररै बामभागमैं बिराजै जिसड़ी बींदणी बूंदी २ नूं बणावणरै काज बैरियांरी वसुधा रूप शृंगाररी सामग्री लेणनूं चलायो ॥ १३ ॥

पहलीरो प्रस्थान प्राचीमैंही करि खटपुर१रा धणौं गोड गजमल्ल१ नूं गंजि पाटणि२रा अधीस मोहिल मनोहरदास२नूं मारि दो२ही नैरं आपरै बसीभूत किया ॥

अर गैणोली १ लाखैरी ४ रा गोडां ३।४ नूं गाहि हड्डाधिराज बंगदेव १७९।१ री आणचलाइ भरोसारा सुभट१ सचिवांरै अधीन करि च्यारि४ ही ठाम थाणां थिर जमाइ दिया ॥

पहली लाखैरी सहररै समीप गोबधरै निमित्त बंबावदाथी चलाइ दिल्लीरा अधीस सप्तम ७ पातसाह नासुरुद्दीन महमूद७रा भडांनूं भांजि चमूरा मालिक मुस्तुफाअली१नूं मारि आपरा पितामहरो पितामह हड्डाधिराज कोल्हण १७६ खेतपडियो ॥

जिकणरी छत्रीरो प्रारंभ लगाइ उणाही अद्रिरो धोंढो लांघि करउर५नगररै घेरो लगाइ प्राकाररै प्रमाण बैरूथरो जाळ जडियो ॥

पहली हड्डाधिराज आनंदराज १७०।१ रा पट्टपकुमार हम्मीर

१ वहां पर ही २ चारण लोगों से ३ पलकारा (बिरुदाया) हुआ ४ आकाश से ५ मस्तक को घिसता हुआ ६ फिर ७ बींद के ८ भूमि रूपी ॥ १३ ॥ पहिले का ९ गमन पूर्व दिशा में करके १० नगर ११ दादा का दादा १२ घाटा १३ कोट के १४ सेना का ॥ १४ ॥

१७१।१ रो पुत्र सुमेरु १७२ बडीवेडीरा घमसाणथी काढियो ॥

जिको दिल्लीशाही पटारो विश्वास पकडि चण्डासिराज रत्न-सिंह १७८।१ कनैं रहियो ॥

जरैं छिद्र देखि दहिया रणधीररे पुत्र लक्खधीर नैणवानगरमैं कूदि हाडांरो थाणों भांजि उठारो अधीसभाव पाछो गहियो जिकणरा वंसमैं इणसमय नैणवारो नरेस दहियो बळराज करउररा अधीस आपरा बंधव दहिया जसकर्णमैं भीड जाणि उणरो सहायक बणि आयो जठे राजकुमार देवसिंघ१८०।१ भी करउरसहररै तीनहजार ३००० फोजरो घेरो राखि दोइहजार २००० वीरांथी दहिया बळराजनूं साम्हों झेलि ऊजळो लोह चलायो ॥ १५ ॥

रात्रिरा समयमैं अचाणक ऊपर पड़ि ग्राम बणसोलीरै खेत विजयरा बंब घुराइ पुळियारैं दहिया बळराजनूं नीठनीठ नैणवान-गर पूगणदीधो ॥

अर रजोगुणरा जोसमैं ऊफणते कुमार पाछो आइ ततका-ळही हल्लो करि दहिया जसकर्णनूं मारि करउरमैं आपरो झंडो झुकाई सत्रुरा खीजन नैणवा पुगाइ नरेस बंगदेव १७९ रो अ-मल कीधो ॥

इणतरह पूर्व १ रा प्रस्थानमैं खटपुर १ पाटणि २ गैणोली ३ लाखेरी ४ करउर ५ पाँचूँ ५ ही नगर परगणाँ सहित लेर राज-कुमार देवसिंह १८०।१ बूँदी आयो ॥

अर इसड़ा सुपुत्रथी मिलणरै काज नरेस बंगदेव १७९।१ भी सूचनाबिणा अचाणकही वंबावदाहूँ बूँदी चलायो ॥१६॥

(दोहा)

ग्राम गुढा लग पूगताँ, सुणो कँवर सब छोड़ि ॥
विणु वाहणाँ बंगेश्वरा, देवी लग गो दोड़ि ॥ १७ ॥

---

१ संकट २ खड्ग की उत्तमता के कारण प्रहार करने पर खड्ग पर रक्त नहीं ठ-हरे उसको ऊजला लोह कहते हैं ॥ १५ ॥ ३ नगारे ४ भागेहुए ५ मरुभाषा में खड़ा करने को झुकाना कहते हैं ॥१६॥ ६ बिना वाहन ॥ १७ ॥

(सचरणगद्यम्)

मिळताँही प्रणामकरि हाथ जोड़िया जठै नरेसभी*नृजान ढबाइ कुळरा दीपक असाधारण वल्लभकुमारनूँ उरथी लगायो ॥

अर बार बार सिराहि भोगाँ मैं***आसक्त आळसी और अवनीसाँरा आसयमैं सूतो बीररस जगायो ॥

उठैहीसुपुत्ररोबणायोवापी[1]समेतआपराअभिधान[2]करिअंकितईश्वरीरो[3] अगार[4]देखिनृजान[5]हूँऊतरिवेदरी[6]व्रज्या[7]करि बंगेश्वरीरो अर्चनकियो॥

अर एक १ ग्रामसहित अनेक द्रव्यरा संघात उपदा[8]करि देवीरै चढाइ कुमाररा जीतियैं पाँचूँ ५ ही परगणाँ सहित बूँदीरो प्रांत कँवरपणाँरा पट्टाथी बिसेस रीझमैं राजकुमारनूँ दियो ॥१८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा

(दोहा)

इम पँहु[11] बुंदिय आय किय, परिसर[12] कटक प्रपात ॥
पानिप[13] बिजय सुपुत्रके, अति अमोद उफनात ॥ १९ ॥
उदित रीझ माँई[14] न उर, प्रसरे उमँगि प्रवाह ॥
बरख्यो जिततित भुँदिर[15] बनि, बसु[16] बिंदुन नरनाह ॥ २० ॥
मागँध[17] हरि १ बंदिय[18] मदन २, आश्रित निज आकारि[19] ॥
दोउ २ न लक्ख[20] १००००० पसाद दिय, बैभव अधिक बढारि॥२१॥

---

* पालखी को ठहराकर ** भोगों के वशीभूत आलसी सोताहुआ वीर रस अन्य राजाओं के आशय में जगाया १ अपने नाम से जानाजावे ऐसा २ देवी का ३ मन्दिर ४ देखकर ५ पालखी से उतरकर ६ वेद की चर्या (वेदमार्ग) से बङ्गेश्वरी देवी का ७ पूजन किया ८ समूह ९ भेट करके अथवा सामग्री चढाकर १० विजय कियेहुए ॥ १८ ॥ इसप्रकार ११ प्रभु बुन्दी आकर १२ पर्वत के समीप की भूमि और पर्वत के घेरे में पड़ाव (मुकाम) करके १३ पुत्र के पराक्रम और यश से अत्यन्त आनन्द में फूला ॥ १९ ॥ उठीहुई रीझ हृदय में १४ नहीं समाई जिसके उमङ्ग के साथ प्रवाह फैले १५ सो मेघ बनकर वह राजा १६ धन रूपी बुन्दों से चारों ओर वर्षा ॥ २० ॥ १७ हरि नामक बड़वाभाट और १८ मदन नामक स्तुतिपाठ करनेवाले भाट को १९ बुलाकर २० लाखपसाव दिये ॥ २१ ॥

(षट्पात्)

बुंदिय पुनि नृप बंग१७९१ रीति नय दिवस पंच५रहि ॥
व्यय दुलक्ख२०००००वसु बंटि द्विजन दंव ओज दुजन दहि॥
सुतहिं अप्पि हित सिक्ख बहुरि आयउ बंबावद ॥
रहि बुंदिय कुमरेस पिहुल पारिय हड्डुन हद ॥
गज१ गाम२ दविन३ अप्पन गहिर हेला वेल्ल समुद्र हुव ॥
राजस उफान चाहत रहत भुग्गन रन परकीय भुव ॥ २२ ॥
सुनिय वंग १७९१ गय सवन देव १८०१कुमरहि रहि बुंदिय ॥
अवसर यह लखि अरिन कलह तिहिं हननं मंत्रकिय ॥
पट्टनि मोहिल मथित हनिय पहिलें जु मनोहर १ ॥
भैंसरोर २ भानेज हुतो वह सुजस समुद्धर ॥
जब बंगदेव १७९१ मंडत विजय रन संहरि चाचिक्क रतन ॥
लिय भैंसरोर२रुचि खेल लगि प्रकटावत रिपु भीरुपन ।२३।
चाचिक्क हरि तब चकित तुमुल भय भैंसरोर तजि ॥
वऱ्यों सेजब वसवान भजि रु मातुल अगार भजि ॥
मातुल तँहँ महिपाल जेलपुर पति कुल जंगर ॥

---

१ नीति के साथ २ खरच करके दो लाख रुपये ब्राह्मणों को देके और ३ अग्नि रूपी ४ प्रताप से शत्रुओं को जलाकर ५ हाडों के राज्य की सीमा को पढाई ६ धन से अपने लोगों के साथ ७ खेल से समुद्र की ८ लहर के समान हुआ और ९ रजोगुण के उफाण में१०पराई ११ भूमि को भोगने की इच्छा करता रहा ॥२२॥१२युद्ध में देवसिंह को१३मारने की सलाह की. मोहिल वंश के क्षत्रिय१४प्रसिद्ध मनोहरदास को पाटण में मारा था यह१५यश का उद्धार करनेवाला भैंसरोड़ का भाणेज था. जब बङ्गदेव दिग्विजय करने को निकला तब चाचिक वंश के क्षत्रिय रत्नसिंह को युद्ध में १६मारकर अपनी रुचि के अनुसार शत्रुओं को१७कायर बनाकर सहज में भैंसरोड़ लेलिया ॥ २३ ॥ तब हरि नामक चाचिक वंश का क्षत्रिय चकित होकर१८युद्ध के भय से भैंसरोड़ छोड़ कर १९ शीघ्र भागकर २० मामा के २१ घर का २२सेवन करके वहां वास किया. उसके मामा महिपाल ने जो जेलपुर का पति और २३ जङ्गड़ कुल में उत्पन्न था.

मन उल्लासि जामेय पास रक्खिय नय तत्पर ॥
आतुर गुमाइ पट्टनि यहहु सल्ह१मनोहरदास २ सुव ॥
पुर जेल पत्त संटेन समय भंडहि होत बिहीन भुव ॥२४॥
सम्मंत किय तब सल्ह१ जनक मातुल हरि२संजुत ॥
हड्ड बंग१७९।१ तुम पुहवि छिन्नि छिद्रन इनं हुव उत ॥
दुसह कुमर तस देव१८०।१प्रबल दब्बिय मम पट्टनि ॥
तुम१ हम२बिनु भुव तुच्छ मंद हुव अहि किं हीनमनि ॥
तुम१ बंधु मम२ रु महिपाल१तुम२इष्ट गौड१दहिया२दुव२हि॥
जुरि इम समस्त इहिं काल जुरि धरनि लेहिं हनि अरि धुवहि२५
सल्ह१ रु हरि२ इम समुझि मंत महिपाल३ सहित सजि॥
गौड१ दभिक२ बोलि बुझि भये इक्कत सम्मत भजि ॥
गौड इक्क गजमल्ल पुत्र मंडन१ खटपुर २पति ॥
लक्खेरियर२ गैनोलि३ हीनबल२ हरि३ मंत्रित मति ॥
करउर१ अधीस जसकर्ण१ सुव वल्लन१ दहिया लघु वयहि॥
इम सब जुजुच्छू जुरि इक्क१मन हंकिय हनन कुमार कहि२६

मन१बढाकर३नीति में तत्पर होकर२भाणेज को पास रखलिया और मनोहरदास के ४ पुत्र इस सल्ह ने कायर होकर पाटणपुर गमादिया और जेलपुर पहुँच कर ५ बदला लेने के समय ७ विना भूमि के ६ भांड हुआ अर्थात् विना भूमि के बदला नहीं लियाजाता इसकारण से फजीहत ही होते हैं सो यह भी हुआ. तब सल्ह ने पिता के मामा हरिसिंह के साथ ८ सलाह की कि हाडा बङ्गदेव ने तुम्हारी ९ भूमि छिद्र देखकर छीन ली और वहांका १० राजा होगया. नहीं सहने योग्य उसके बलवान् कुमर देवसिंह ने मेरा पाटण नगर भी दबालिया इसकारण से तुम और हम दोनों बिना भूमि के तुच्छ होगये ११ किधों मणि के बिना सर्प होवै जैसे हतभाग्य होगये इसकारण से तुम मेरे भाई और तुम्हारा मामा महिपाल और तुम्हारी १२ भलाई करनेवाले गौड़ और दहिया दोनों ही १३ मिलकर इस समय सब १४ युद्ध करके शत्रु को मारकर१५निश्चय ही भूमि लेवेंगे ॥ २५ ॥ सल्ह और हरिसिंह ने इसप्रकार समझकर महिपाल के साथ सलाह की और गौड़ तथा दहिया को१६फिर बुलाकर १७एकमत होकर १८सलाह कीहुई बुद्धि से १९पुत्र २० युद्ध करने की इच्छावाले ॥ २६ ॥

मुक्तादाम

उतैं महिपाल१ दबावन देस, रह्यो सजि जंगर जेलपुरेस॥
सु हड्डनके पहिले अरि सोधि,वन्यौं मिलि जित्तनहार बिरोधि२७
सज्यो हरि२ चाचिकहू तिहिं संग, रह्यो उत बीर रचावन रंग ॥
चले खिलं देवकुमारहि चाहि, मलंगत बाजिन जंग उमाहि॥२८॥
बढे करि हड्डन भू दिसबाम, कुमार सुन्यौं रन सत्रुन काम ॥
सु आवत मेझनदीतट सीम, भिर्यो चलि सम्मुह जुज्झन भीम२९
उतैं सुनि देव १८०।१कुमारहिं आत, रुपे रिपु बानन बात रुकात
हरी१बल२मंडन३तीन३हि गोर, जुर्यो निम मोहिल सल्ह४सजोर
तथा दहिया भट बल्लन तत्थ, सबै इम हंकिय सम्मुह सत्थ ॥
चढे सुनि वंग१७९।१हु हड्ड अधीस,सुपुत्र सहाय चल्यो तिनसीस
कियो नृप कर्मन१८०।२नाम कुमार, उहाँ निज दुर्ग१धरारखवार॥
इतैंचढिकैंदरकुंचनअर्प्प,दयोसुतदेव १८०।१सहायसदर्प्प ॥ ३२ ॥
पिता१सुत २ ज्यौं दुव २भद्दपयोद,मिले इम सत्रुनपैं अतिमोद ॥
बढे उततैं अरि लै हयवग्ग, मिले दुव २मेझनदीतट मग्ग ॥३३॥
तुली कर द्वै २ दलके तरवारि, रुची नहिं बान १ तुपक्क४न रारि॥
उतैं१इतके२उतके१इत२हंकि, झुकेरनचित्रनरोचि १झमंकि ।३४॥
बहे घंसि ज्यौं छुरिका तरबूज, तक्यो सु समै कुपितौं१कुतनूज॥
भयोघमसानप्रलैघनभाव, झरेअसिज्यौंतरितौंझमकाव ॥ ३५ ॥
जितैंतित खग्ग परैं कढिजात, प्रहारन धारन पैंर न पात ॥

१जंगड़ के कुलवाला ॥२७॥ २युद्ध ३बञ्जड़ (बिना जोतीहुई जमीन) में ॥२८॥ ॥ २९ ॥ ४ बाणों से पवन को रोकते हुए ५ गौड़ वंश के क्षत्रिय ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ६ आप (चड्डदेव) ७ घमण्ड सहित ॥ ३२ ॥ ८ भाद्रपद के मेघ के समान ९ घोड़ों की बाग उठाकर ॥ ३३ ॥१०दोनों सेनाओं के हाथों में११ बाण और बन्दूकों से लड़ाई करना नहीं रुचा१२आश्चर्य करनेवाले१३प्रकाश को चमकाकर ॥ ३४ ॥ १४खड्ग १५ छुरी १६ उस समय में परस्पर सहायता नहीं देकर केवल देखते रहे सो खोटे पिता और १७ खोटे पुत्र थे १८ युद्ध १९ प्रलय के मेघ के समान २० बिजुली चमके इसप्रकार ॥३५॥२१पार

समै ताकि ह्वै ढिग मोहिल सल्ह, गही हयवग्ग उबारन गल्ह ॥३६॥
दई नृपके हयखंध प्रदेस, पर्यो हय ग्रौर भयो तव पेसँ ॥
चढ्यो तिहिँवाजिबलीचहुवान,करकिखयबिज्जुवरूपकृपाँन ॥३७॥
दई नृप मोहिलके गल दोरि, गिर्यो रन सल्ह१रिझावत गोरि॥
झवावत बीरपनौँ हय फैंकिँ, चल्यो दहिया तव बल्लन२चैंकिँ॥३८॥
मिल्योतहँमोहन१८०।११बंग१७९।१कुमार,भयोसुततातवटावनभार
दयोतिहिँमोहन१८०।११कोँहयदारि,रचीविनुहैसवयाँसहगारि ॥३९॥
भुवाल लख्यो सुतपैं अतिभार, दई दहिया उर अंसउतार॥
  पर्यो रनमल्लन२ हू तजि प्रान,
  चढ्यो हय मोहन १८०।११ नाम सिचाँन ॥४०॥
महा बिजई इत देवकुमार१८०।१, हठी वढि होरिय ज्यौँ हुँरियार॥
गरज्जत लै ढिग मंडन गोरँ, रिझावत संभु रची रन रोरँ ॥४१॥
दुरखग्ग सु मंडनके सहि देव१८०।१,वहै हनि गोर लयो जयएव॥
गये भजि है२हि हरी१बल २गोर, जयो रन हड्डन अप्पन जोर॥४२॥
भयो इत बंग१७९।१सुन्यौँ सुतभीर, बढे उत चाचिक जंगर बीर॥
मिलाइ घनैँन हरी महिपाल, मचायउ बिप्लवँ उप्परमाल ॥४३॥
लयो पुर जावद१हू जिन लुट्टि, कियो बस अप्पनके पँरकुट्टि॥
  थिराँपति बुंदिय देव १८०।१हिँ थप्पि,
  मुर्यो उत बंग१७९।१मुकासन मप्पि ॥४४॥

नहीं पाते हैं १ बार्ता (अपना यश बाकी रखने के लिये) ॥ ३६ ॥ २ नजर ३ बिजुली के समान ४ तरवार म्यान से खींची ॥३७॥ ५ देवी को प्रसन्न करताहुआ ६ घोड़ा दौड़ाकर वीरपन को शोभा देताहुआ ७ क्रोध करके ॥ ३८ ॥ ८ घोड़े को विदारण किया ९ विनाघोड़े १० अपनी समान अवस्थावाले के साथ ॥ ३९ ॥ ११ राजा ने १२ कन्धे से उदर तक उतार दिया १३ सिचाण नामक घोड़े पर चढा ॥४०॥ १४ होली में फाग खेलने के समान १५ गोड़ को १६ भयङ्कर युद्ध रचा ॥ ४१ ॥ १७ इसप्रकार १८ विजय किया ॥ ४२ ॥ १९ बहुतों को मिलाकर २१ ऊपरमाल नामक देश में जो इस समय मेवाड़ में बिझोली का पट्टा है वहां २० उपद्रव मचाया ॥ ४३ ॥ २२ शत्रुओं को पीटकर २३ बुन्दी की भूमि पर देवसिंह को स्वामी बनाकर ॥ ४४ ॥

जई दरकुंचन जावद जाइ, सबै अरि गंजि दये निकसाइ॥
वली पुरजावद लै इम वंग१७९१,भयो निजनैरै प्रविष्ट अभंग४५

पट्पात्

न्हे बिजई इम हड्ड वंग१७९१आयउ वंबावद॥
देव१८०१हिँ बुंदिय रक्खि हेति वल किय सु कित्ति हद॥
दत घायन उपचार बिरचि उल्लाघँ कुमर वनि ॥
जनकँ चरन पुनि जाइ भयो वंदत अभीष्ट भनि ॥
किय भेट विविध उपदो कुमर जावद विजय निमित्त जँहँ
वंगहु उदार गज१ गाम२वसुं३किय वितरन वहु कविन कँहँ।४६।

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ चतुर्थ ४ राशौ वीतिहोत्रचरडासि १ बीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीवसुधावासववङ्ग देव १७९१ तद्राजकुमारदेवसिंह १८०१२ चरितेगोलवाल १६ चाहुवाणयशोराजकन्याद्वय २ परिणिनीष्वन्त्यजदुश्चरितहड्डाधिराजकुमारदेवसिंह १८०१ विज्ञापन १ विज्ञातान्त्यजाधर्मनिश्चितस्ववंश्यभ्रंश्यगूढनिर्णीतान्त्यजनाशमोहितमैणराजकुमारदेवसिंहा १८०१ ऽऽज्ञादापन २ मैणजैत्रकथितस्थानागतसमाकारितकनिष्टपत्नीकप्रगुणीकृतविवाहोचितोपहारप्रच्छन्नोपयम

---

१ वम्बावदे में २ प्रवेश हुआ ३ शस्त्रों के वल से ४ वहुत कीर्ति की५ इलाज ६ नैरोग्य ७ पिता के ८ वाञ्छित फल देनेवाले कह कर ९ सामग्री १० जावद को विजय करने के कारण ११ धन कवियों को वहुत १२ दान किया॥ ४५ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा वनाने के समय के वचनों में बुन्दी के महीन्द्र वंगदेव के कुमर देवसिंह के चरित्र में गोलवाल चहुवाण यशराज की दो कन्याओं से विवाह करने की इच्छावाले चाण्डालों के खोटे चरित्र की हड्डाधिराज के कुमार देवसिंह से सूचना करना, अन्त्यजों का अधर्म जानकर और निश्चय ही अपने वंश को भ्रष्ट होता जानकर गुप्त रीति से निर्णय करके अन्त्यज

निमित्तनिमन्त्रितटोडापतिचालुक्यराजगोविन्दराजपुत्रद्वय २ समाऽऽह्वयन ३ तत्सूचितगोलवाल १६ वंशवैरस्थितिनिरसन ४ स्वपुत्रीकृतसगोत्रपुत्रीकप्रच्छन्नाकारितचालुक्यरूचपद्वय २ कुमारबुन्दीशान्त्यजबर्गविध्वंसन ५ सगोत्रकन्याद्वय २ चालुक्यकुमारद्वय २ बिवाहन ६ तत्रत्यगजनिधिदृगिन्दु १२९८ मितप्रामारराड्विक्रमसंवत्सूचन ७ चालुक्य १ हड्ड २ कुलद्वय २ परपुरुषन्योन्या १ ऽऽधिक्य २ संशयसमाधान ८ देवसिंह १८०१। समाक्रान्तबुन्दीपूर्वप्रसिद्धस्थानविवेचन ९ कुमारतदूमरथूणाभिधनिवसथसीमपितृनामांकितवापिकोपेतसुमन्दिरबङ्गेश्वरीदेवीप्रतिमाप्रतिष्ठापन १० गतबम्बावदवन्दितवप्तृचरणबुन्दीप्रत्यागतराजकुमारदेवसिंह १८०१। षट्पुर १ पट्टण २ गैणोली ३ लक्खैरी ४ कर्बुर ५ पञ्च ५ पुर १ दुर्गसमाक्रमण ११ लक्खैरीसीमपूर्वरणशय्यासुप्तस्वप्रपितामहकोल्हण १७६ छत्रिकानिर्माणप्रारम्भण १२ कर्बुररणादभिकबलराजसगोत्रयशःकरणसहायीभवन १३ प्रद्रावितबलराजसमाक्रान्तकर्बुर ५ बुन्द्यागतकुमारसम्मिल

मीणों को मोहवश करके नाश करने को कुमर देवसिंह का आज्ञा देना, जैता मीणा के कहेहुए स्थान पर आकर छोटी स्त्री को बुलाकर मीणों को सोध करके विवाह के उचित सामग्री मंगाकर विवाह के लिये नूँता देकर टोडा के पति सोलंखियों के राजा गोविन्दराज के दो पुत्रों को बुलाना, उनकी कहीहुई गोलवाल वंश से वैर की कथा की स्थितिमिटाना, अपने गोत्र की पुत्रियों को अपनी पुत्रियें करके सोलंखी दो दुलहों को छाने बुलाकर बुन्दी के पति कुमर देवसिंह का चाण्डालों के समूह को मारना, अपने गोत्र की दोनों कन्याओं का सोलंखी दो कुमारों से विवाह करना, वहां पर प्रामारों के राजा विक्रम के बारह सौ अट्यानवें के सम्वत् की सूचना करना, सोलंखी और हाडाओं के दोनों कुलों की पीढियों के ज्यादा कमती होने के सन्देह का समाधान करना, देवसिंह के बुन्दी लेने से पहिले के प्रसिद्ध स्थानों का विवेचन करना, कुमार का ऊमरथूणा नामक ग्राम की सीमा में पिता के नाम के चिह्नवाले बावड़ी सहित श्रेष्ठ मन्दिर में बङ्गेश्वरी देवी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा करना, बम्बावदे जाकर पिता के चरणों में नमस्कार करके पीछा बुन्दी आकर देवसिंह का खटूकड़, पाटण, गैणोली, लाखैरी,

नार्थबुन्दीयियासुप्रस्थितहड्डाधिराजस्वपुत्रमार्गसम्मिलन १४ सु
पुत्रप्रतिष्ठापितस्वनामांकितसुबापी १ मन्दिर २ देव्यर्चन १५ बु
न्दीपरिसरविहितशिविरबङ्गदेव १७९।१ मागधहरि १ वन्दिमदना
२ र्थलक्ष १ लक्ष १ वसुवितरणपुरस्सरद्विजसंदोहार्थद्रम्मलक्षद्व
य२००००० समुत्सर्जन १६ कुमारदेवसिंह १८०।१ पूर्वप्राप्तपितृ
दत्तपृष्ठीकृतबुन्दीप्रान्तनिवसन १७ समुषितपञ्चाहोरात्रनृपबम्बा
वददुर्गप्रत्यागमन १८ श्रुतप्रत्यागतबंग १७९।१ राजकुमारदेवसिं
ह १८०।१ जिघांसुभूताभियातिवर्गप्रातीच्यमार्गबुन्द्यागमन १९
दक्षिणदिक्समाक्रमणार्थस्वज्ञातिचाचिकहरिसिंह १ सहितजे-
ल्लपुरपतिजाङ्गडमहिपाल २ सज्जीभवन २० समभिषेणितकुमा
रदेवसिंह १८०।१ मेध्यानदीतटतुमुलरचन २१ श्रुतैतदुदन्तबम्बा
वददुर्गरक्षार्थस्थापितकर्मणा १८०।२ कुमारसहायीभूतहड्डाधिरा
जबङ्गदेव १७९।१ स्वपट्टपकुमारसम्मिलन २२ मोहिलसल्ह १
वङ्गा १७९।२ श्वविदारण २३ द्वितीय २ हयारूढहड्डाधिराजमो-
हिलसल्ह १ निपातन २४ दम्भिकवल्लन २ कुमारमोहन१८०।१।१

करवर इन पांच नगर और गढों का लेना, लाखेरी ग्राम की सीमा में पहिले काम आयेहुए अपने दादा कोल्हण की छत्री बनाने का प्रारम्भ करना, करवर के युद्ध में दहिया बलराज और उसीके सगोत्र यशकरण का सहाय होना, बलराज के भागने पर बुन्दी आयेहुए कुमार से मिलने के अर्थ बुन्दी जाने की इच्छा से प्रस्थान कियेहुए हड्डाधिराज बङ्गदेव का अपने पुत्र देवसिंह से मार्ग में मिलना, श्रेष्ठ पुत्र के प्रतिष्ठा कियेहुए अपने नाम के चिह्नवाले सुन्दर बावड़ी सहित मन्दिर में देवी की पूजा करना, बुन्दी के समीप में जिसने डेरे किये हैं ऐसे बङ्गदेव का बड़वाभाट हरि और स्तुति करनेवाले भाट के लिये लाख लाख द्रव्य देने पूर्वक ब्राह्मणों के समुदाय के लिये दो लाख रुपये देना, कुमर देवसिंह का पिता के दियेहुए पहिले प्राप्त किये परगने के पीछे बुन्दी प्रान्त में निवास करना, अर्थात् कँवर पदा के परगना से अधिक बुन्दी के मिलने पर वहां निवास करना, पांच दिन रात रहकर राजा का बम्बावदा नामक गढ में पीछा जाना, बङ्गदेव को पीछा गयाहुआ सुनकर राजकुमार देवसिंह को मारने की इच्छावाले शत्रु-वर्ग का पश्चिम दिशा के मार्ग से बुन्दी आना, दक्षिण दिशा से हमला

बाजिविध्वंसन २५ कृतशिशुसुतसहायनृपबंग १७९।१ दहिकब
ल्लन २ विशसन २६ कुमारमोहना १८०।११ न्यषिचाणानासह
यारोहणा २६ प्राप्ततत्खड्गाघातद्वय २ राजकुमारदेवसिंह १ गौ-
डमण्डन ३ प्रतिघातन २८ गौडहरिसिंह १ बलभद्र २ बिपला
यन २९ दक्षिणादिक्प्रसारितडमरचाचिकहरिसिंह १ जाङ्गडमहि
पाल २ जावदपुरसमाक्रमण ३० पुत्रपरिच्छिन्नप्रान्तरक्षार्थबुन्दी
स्थापितपट्टपकुमार १८०।१ प्रत्यागतनिष्कासितारातिपुनः समा
सादितजावदपुरबंगदेव १७९।१ स्वस्कन्धावारबम्बावदप्रबिशन ३१
बुन्दीस्थितक्षतव्ययोल्लाघीभूतबम्बावदागतकुमारवन्दितजन-
कार्थोपदानिवेदन ३२ बंगदेव १७९।१ स्वबिजयसूचकबहर्थब-
हुबसुबितरणं ३३ षट्त्रिंशो मयूखः ॥ ३६ ॥

करने के लिये अपनी जातिवाले हरिसिंह के साथ जलपुर के पति जांगड़ कु
ल के महिपाल नामक राजा का सज्ज होना, युद्धयात्रा करके कुमर देवसिं
ह का मेज नदी के किनारे पर युद्ध रचना, यह वृत्तान्त सुनकर बम्बावदा
गढ की रक्षा के लिये कर्मण नामक छोटे पुत्र को स्थापन करके कुमर देव-
सिंह की सहाय करने को हड्डाधिराज बङ्गदेव का अपने पाटवी पुत्र से मि-
लना, मोहिल सल्ह का बंगदेव के घोड़े को मारना, दूसरे घोड़े पर चढकर
हड्डाधिराज का मोहिल सल्ह को मारना, दहिया बल्लन का कुमार मोहन
के घोड़े को मारना, बालक पुत्र की सहाय करके राजा बंगदेव का दहिया
बल्लन को मारना, मोहन कुमार का सिचाण नामक दूसरे घोड़े पर चढना,
उसके खड्ग के दो प्रहार सहकर कुमर देवसिंह का गौड़ मण्डन को मार-
ना, गौड़ हरिसिंह और बलभद्र का भागना, दक्षिण दिशा में उपद्रव फै-
लाकर चाचिक हरिसिंह और जांगड़ महिपाल का जावदपुर पर हमला
करना, पुत्र के छीने हुए प्रान्त की रक्षा के लिये पाटवी कुमार को बुन्दी में
रखकर पीछे आये हुए शत्रुओं को निकाल कर फिर जावदपुर को पाकर बं
गदेव का अपनी राजधानी बम्बावदा में प्रवेश करना, बुन्दी में रहेहुए औ-
र घावों की पीड़ा से नैरोग्य होकर बम्बावदा में आयेहुए कुमार का नम-
स्कार पूर्वक पिता के लिये भेट अर्पण करना, बंगदेव का अपनी विजय को
सूचन करनेवाले बहुत लोगों को बहुत धन देने का छत्तीसवां मयूख समाप्त

आदितः पञ्चचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥ सचरणगद्यम् ॥

तदनंतर वंबावददुर्गके अधीस हड्डाधिराज वंगदेव १७।१ आपुनैं अवसानपर परलोकलह्यो ॥

अरुकुमारदेवसिंह१८।१पिताकोपट्टपाइअवनीकोआधिपत्यगह्यो॥

सो आपुनैं सप्तम ७ कुमार समरसिंह १८।१७ कौं अतिप्रिय वीर विचारि आपकी जीती सीमा समेत बुंदीको आधिपत्य देतभयो॥ अरु वंबावदेसौं उत्तर १ पश्चिम २ कौं प्रांत जो पूर्वपुरुखननैं लयोहो सोहू समस्त बुंदीसौं लगाइदयो ॥ १ ॥

ऐसैं वंबावद १ बुंदी २ द्वै २ ही राज्य बरब्बर बनाइ प्रियपुत्र समरसिंह १८।१७ कौं प्रामारराज विक्रमके तेरहसत १३०० सम्मित सकके माधवमासके अवदात २ पक्षकी तृतीया३ के दिन बुंदीके राज्यको अधीस कस्यो ॥

अरु पट्टपकुमार हरराज १८।१।१ के अर्थ बुंदीके तुंल्यही वंबावददुर्गको राज्य राखि आपहू कितेक वासर बिताइ वैभवसौं विरक्तभाव धस्यो ॥

ऐसैं हड्डाधिराज देवसिंह१८।१के सप्तम७पुत्र समरसिंह१८।१७ पिताके अनुमतंकरि बुंदीसौं लगाइ वंबावददुर्गको अर्द्धराज लयो॥ अरु अष्ट८ही दिसामैं आपुनीं आज्ञाकौं अमोघ करतभयो ॥२॥

षट्पात्

विक्रम सक जिहिंवेर सकल आवत तेरहसत ३००० ॥
विसैंद २ मास वैसाख २ तौक्कि गणकैंन सम्मतँ तत्त ॥

हुआ ॥ ३६ ॥ और आदि से एक सौ पैंतालीस मयूख हुए ॥ १४५ ॥

१ अन्त समय पर २ भूमि का ३ स्वामिपन ४ विजय की हुई ५ देश ॥ १ ॥ ६ समान ७ प्रमाण के ८ वैशाख मास के ९ शुक्ल पक्ष की १० बराबर ही ११दिन१२सलाह से१३सत्य (पीछी नहीं फिरै ऐसी) ।२। तेरह सौ के विक्रम के सम्वत् में तहां१६ ज्योतिषियों की१७सम्मति१८देख कर वैशाख१४सुदि

बनत तीज ३ गुरुवार ५ घटिय त्रेपन ५३ सुर ३३ पल सह ॥
सट्ठि ६० घटिय पल सून्य० मग्ग उडु आत बिरचि मह ॥
सर सर५५सुकर्म७नव वेद४९सम तैतिल४जँहँ इकवीस२१त्रय३॥
बुंदिय बइट्ठ सु कुमर समर१८१।७साधि मुहूरत तिहिं समय।३।

(दोहा)

रविख०रुभं२७रु त्रिगुन३३रुत्रिचउ४३,गतिहयसर५७अरु तान४९।
ससि कु१त्रिहग२३ खचउ४०रु खगुन ३०,
द्वि हग हय ७२२ रु कृति २० जान ॥ ४ ॥
मिलत जीव ५ भृगु ६ मिथुन ३ के, उचित वास्तु दिन अत्थ ॥
समर१८१।७कुमर बुंदिय स्वगृह, मह सह कियउ समत्थ ॥ ५ ॥

[सचरणगद्यम्]

पहिलैं चंडासिराज पृथ्वीराज १७६ के पुत्र राजा रत्नसिंह १७७।१ स्वकीय सिर [१]संटि दिल्ली कुतबुद्दीन१कौं दई तब यवनेंद्र याही रत्नसिंहके अनुज सामंतसिंह १७७।२ कौं कुंडलपुरसौं लगाइ मेवातदेसको कछु प्रांत दयो ॥

ताकैं पुत्र जयमल्ल १७८ ताकैं सुत सोम १७९ ताकैं सूनु[११] सूर १८० ताकैं जैत्र१८१।१रनधीर१८१।२ द्वै२ही पुत्तनको जंकुट[१२] २भयो तिनमैं यासमयसौं पहिलैं दिल्लीके अष्टम ८ यवनेंद्र गयासुद्दीन ८ अपरनाम[१३] बलबन ८ के भट भिल्लनकौं मारि सेसैंन[१४]कौं

तीज गुरुवार त्रेपन घड़ी तेतीस पल १ मृगशिर २ नक्षत्र के आने पर ३ उत्सव रचा. सुकर्मा योग पचपन घड़ी गुनपचास पल ४ तैतिल करण इक्कीस घड़ी तीन पल इस समय कुमर समरसिंह मुहूर्त साधकर बुन्दी की गद्दी पर बैठा ॥ ३ ॥ ५ अरु स्पष्ट सूर्य शून्य राशि ६ सत्ताईस अंश तैंतीस कला तयालीस विकला और गति सत्तावन कला गुनचालीस विकला; स्पष्ट चन्द्रमा एकराशि तेईस अंश चालीस कला और गति सात सौ बाईस कला बीस विकला जानकर ॥ ४ ॥ ७ बृहस्पति और भृगु मिथुन राशि के मिलने पर यहां वास्तु (नांगल) करने का दिन उचित समझकर अपने घर बुन्दी में कुमर समरसिंह को उत्सव के साथ ८ समर्थ किया ॥५॥ ९ अपने मस्तक के १० बदले में ११ पुत्र १२ जोड़ा १३ दूसरे नाम से १४ बाकी

स्वकीय करि भाग्यके बल प्रामारराज विक्रमके बारहसै चौरासी १२८४ के सकमैं रणस्थंभ लयो ॥

तदनंतर जैत्रराज १८।१२ आपुनैं अनुज रनधीर १८।१२ कौं पंचलक्ख ५००००० के पटासहित छानिको दुर्ग दैकैं कितेक काल रणस्थंभपैं राज्यकरि परलोक प्राप्तभयो ॥ ६ ॥

तब ताके तनय हम्मीर १८।२।१ कुमार स्वकीय जनकको भद्रासन लहि रनस्थंभको आधिपत्य पायो ॥

तानैं प्रजाकौं सासन करत कितेककालके अनंतर स्वामिधर्मके साधनसौं विरुद्ध व्यवहार देखि वैश्यजातीय टोडरमल्लनाम आपुनौं अमात्य मारि गिरायो ॥

तोहू ताके तनूज सुर्जन १ जयमल्ल २ रायपाल ३ तीन३ ही सोदर उनकौं उरसौं लगाइ सर्वस्वके सचिव करि तिनहीको विश्वास गह्यो ॥

अरु जवननके जलधिमैं बाडवसो विपक्ष बनि अनेकनकौं अभय दै रु क्षात्रधर्मको निर्वाह करतरह्यो ॥ ७ ॥

हेहड्डाधिराज भूभुजंग राम २०३ कुतबुद्दीन १ सौं इहाँलग दिल्लीके अधीस जवन भये तिनके अनुक्रमसौं नाम पहिलैं न कहेगये॥

यातैं अब एगारम ११ खलजी २ जवनेस अलाबुद्दीन ११ के प्रसंगकरि अखिलनके अभिधान संख्यासहित सुनाइबेके अवसरमैं लये ॥

प्रामारराज विक्रमके सकको सैल सर संभु ११५८ संख्या सम्मित संमामैं गौरी सहाबुद्दीनको गुलाम कुतबुद्दीन १ आर्यावर्तमैं विजयकरि दिल्लीकी गद्दी बैठि पहिलो १ पातसाह होइ इहाँको राज्य करतभयो ॥

के लोगों को ॥ ६ ॥ १ पुत्र २ सिंहासन ३ हुकूमत ४ बर्ताव ५ कामदार को मारडाला ६ पुत्र ७ सगे भाईयों को ८ कामदार करके ९ यवन रूपी समुद्र में १० बड़वाग्नि रूपी ११ शत्रु बनकर ॥ ७ ॥ १२ सब के १३ नाम १४ प्रमाणवाले १५ संवत् में

सो सिंधु १ नदीसौं पूर्वके पारावार २ पर्यंत सवनकौं सासन[3] करि बाँधिकमैं प्रारब्धके प्रमान काहू बाजीसौं गिरिकैं मरतभयो॥८॥

दोहा

क्रीत हुतो महमूदको, गोरीको न गुलाम ॥
किते इमहु याकौं कहत, कविन वस्तु सनँ काम ॥ ९ ॥
जिहिं दिल्लिय नृप राम२०३जब, लहिय पट्ट विधि लेहँ ॥
बिक्रम कृत गज सर कु विधु ११५८, अप्पनं सकँ तँहँ एह ॥१०॥
गगन बेद खट ६४० मान गत, बिक्रम सक जिहिंबेर ॥
सक प्रवृत्त हुव जवन२सम, कथितँ मुहुम्मद१केर ॥ ११ ॥
तिन जवनन अक्खिय तखत, दिल्लिय कुतबुद्दीन१ ॥
बैठो तँहँ निधि नव बिसिख५९९,अब्द रसूल अधीन ॥ १२ ॥
नभ चउ खट६४०अंतर नृप सु , जोर्‍यो तिन्ह सक५९९जात ॥
नव चउ रवि१२४९ सम्मित नियंत, अप्पन सक तँहँ आत ॥१३॥

---

१ पूर्व के समुद्र पर्यन्त २ हुकूमत में करके ३ बुढापे में ४ घोड़े से गिरकर ॥ ८ ॥ कितने ही लोग इसको महमूद का ५ मोल लियाहुआ कहते हैं गोरी का गुलाम नहीं कहते सो ग्रन्थकर्त्ता कहते हैं कि हमको इस बात से प्रयोजन नहीं वस्तु ६ से काम है अर्थात् कुतुबुद्दीन आर्यावर्त्त में प्रथम बादशाह हुआ ॥ ९ ॥ हे राजा रामसिंह! ब्रह्मा के ७ लेख से जब उसने दिल्ली का पाट लिया तब विक्रम का कियाहुआ ग्यारह सौ अट्ठावन ८ अपना ९ यह सम्वत् है।१०।और जब विक्रम के छै सौ चालीस के १० प्रमाणवाला सम्वत् गया तब यवन मुहम्मद का ११ ऊपर कहे अनुसार शक प्रवृत्त हुआ ॥ ११ ॥ उन यवनों ने कहा है कि दिल्ली में कुतबुद्दीन१३हिजरी १२सम्वत् पांच सौ निन्यानवे में बैठा ॥ १२ ॥ हे राजा रामसिंह! छै सौ चालीस का अन्तर उन यवनों के पांच सौ निन्यानवे के शक में मिलायाजावे तो अपना सम्वत् बारह सौ उनचास के१४प्रमाणवाला१५निश्चय ही आता है (यहां पर अङ्कों की जोड़ में दश का अन्तर है क्योंकि छै सौ चालीस में पांच सौ निन्यानवे मिलायेजावें तो बारह सौ उनचालीस होते हैं, बारह सौ उनचास नहीं होते और यह अङ्क गणना शब्दों में लिखीहुई है इसकारण से लेखक दोष भी सिद्ध नहीं होसक्ता; और यह एक ऐसी भूल है कि ग्रन्थकर्त्ता तो क्या सामान्य मनुष्य भी नहीं करसक्ता; ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) को ज्योतिष विद्या में पूर्ण अनुभव

सुपहु राम भासै सु १२३६सक, अप्पन गनित अलीक ॥
एकनवति९१ हायनं अधिक, कढ्ढे होत सु११५८ ठीक ॥१४॥
केवल जवनर२न पुस्तकन, इंग्रेज३न लिखि अंक ॥
लहि अंतर निज सक लिख्यो,त्रि नव कु ससि११९३गत संक१५
इंग्रेज३न नँन दोस यह, भुल्ले जवनर२ विभान ॥
लखि तिन्ह सक निज सक लिख्यो, मन्नँ जवनर२ प्रमान ॥१६॥
इंग्रेज३न सक सन अधिक,हायनँ छप्पन५६ होइ ॥
तव विक्रम सक सुद्धतम, ख चउ तर्क६४०तिन्ह खोइ ॥१७॥
सेस रहैं सुहि जँवनर२सक, अप्पन सक जँहँ उक्त११५८॥
ताके क्रम धृति वान५१८तँहँ, भासँ तिन्ह सक भुक्त॥१८॥

युग्मम्

था और गणित विद्या भी पूर्ण जानते थे जिनके लिये ऐसी भूल से विद्वत्ता में चति नहीं मानी जासक्ती, क्योंकि एक बात के भूलजाने से अविद्वान् नहीं होता और एक बात के आने से विद्वान् नहीं बनसक्ता परन्तु ग्रन्थकर्त्ता कभी कभी मद्य अधिक पीलिया करते थे सो उसी मद्य के नशे का यह दोष मालूम होता है. इसीप्रकार छत्तीस के मयूख के छठे छन्द षट्पदी में साठ की पल संज्ञा लिखी है सो भी मद्यकेनशेका ही दोष जानना चाहिये.) ॥ १३ ॥ हे राजा रामसिंह! अपने गणित से बारह सौ उनचास का सम्वत् १ झूंठा मालूम होता है; क्योंकि इक्कानवे २ वर्ष अधिक होते हैं जिनको३निकालने से ठीक ग्यारह सौ अट्ठावन होते हैं।१४।अङ्गरेजों ने केवल मुसलमानों की पुस्तकों में लिखेहुए संवत् को देखकर ईसवी सन् का अन्तर उसमें मिलाकर अपना अर्थात् ईसवी ग्यारह सौ तरानवे का ईसवी सन् निश्शङ्क होकर लिखदिया है ॥ १५ ॥ यह अङ्गरेजों का दोष ४ नहीं है बिना ५ ज्ञान के यवन लोक भूलगये हैं ६ उन यवनों का सम्वत् देखकर और उसको प्रमाण मानकर अङ्गरेजों ने अपना सन् लिखदिया है ॥ १६ ॥ अङ्गरेजों के शाक से विक्रम के छप्पन ७ वर्ष अधिक होते हैं जब विक्रम का ८ अत्यन्त शुद्ध सम्वत् होता है उनमें से छै सो चालीस निकाले ॥ १७ ॥ तब ९ बाकी रहे सो ही १० मुहम्मद का सन् है जहां पर अपना ग्यारह सौ अट्ठावन के क्रम से यवनों का शाक पांच सौ अठारह भोगता था ऐसा

सक अप्पन गज भूत सिव११५८, हायन छप्पन५६हीन ॥
सक इंग्रेजउन द्वि नभ सिव११०२, ईसा गनित अधीन॥१९॥
संवत निज निज सबनकै, निजनिज लिपि निहचै सु ॥
गोरी जँहँ पित्थल११७६गह्यो, सक सर सर सिव११५५हैसु॥२०॥
बरस तीन३ खट६मास बलि, बिच यह काल बिताय ॥
दिल्ली कुतबुद्दीन१ दृढ, अंगमि बैठो आइ ॥२१॥
कथित रीति तनु हान किय, जब पहिले२ जवनेस॥
पायउ दुख दिल्लिय प्रजा, सदय गिनायउ एस ॥२२॥

सचरणगद्यम्

अैसैं पहिले१पातसाह कुतबुद्दीन१के अनंतर आरामसाह२ना
म दूजो दिल्लीस भयो ॥
थोरेही कालमैं ताके अवसाँनके पीछैं कुतबुद्दीन१को किंकर

मालूम होता है ॥ १८ ॥ अपने ग्यारह सौ अट्ठावन के सम्वत् में से छप्पन
वर्ष निकालदिये जावें तो अङ्गरेजों का ईसवी सन् ईसा की गिनती के आ-
धीन से ग्यारह सौ दो का सन् आता है ॥ १९ ॥ सभी के अपने अपने
सम्वत् अपने अपने१लेखों में निश्चय कियेहुए होते हैं सो २ सहाबुद्दीन गोरी
ने ३ पृथ्वीराज को पकड़ा वह सम्वत ग्यारह सौ पचपन का है.(यहां पर
ग्रन्थकर्त्ता सूर्यमल्ल ने पृथ्वीराजरासा के कारण सम्वतों की गणना में धो-
खा खाया है क्योंकि पृथ्वीराजरासे का इतिहास अनेक स्थानों पर मिथ्या
लिखने पर भी सम्वत् उसी ग्रन्थ का सत्य मान लिया सो अनुचित है. यहां
पर छै सौ चालीस का हिजरी सन् तथा ग्यारह सौ तरानवें का ईसवी सन्
लिखा सो सत्य है; क्योंकि ग्यारह सौ तरानवे में छप्पन मिलाने से पृथ्वी-
राज के मारेजाने का सम्वत् बारह सौ उनचास होता है सो ही पाषाण-
लेख आदि अनेक प्रमाणों से वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में स्पष्ट
लिखाहुआ है. और इसमें सन्देह नहीं कि फारसी तवारीखोंवालों ने बा-
दशाहों के निन्दा सूचक वृत्तान्त छोडदिये हैं परन्तु वे तवारीखें उसी स-
मय की लिखी हुई होने के कारण उनका सम्वत् कदापि मिथ्या नहीं होस-
क्ता इसकारण से ग्रन्थकर्त्ता ने पृथ्वीराजरासे के सम्वत् की पुष्टि करके हि-
जरी और ईसवी सनों का खण्डन किया है सो सत्य नहीं है) ॥ २० ॥
४ अपनाकर ॥ २१ ॥ ५ शरीर छोडा ६ इसको दयासहित गिनाया ॥२२॥
७मृत्यु के पीछे८चाकर

इलतमिस ३ सोही समसुद्दीन ३ ताहीको जामाता भयोहो जानैं ग्वालेरदुर्गसौं आइ तीजो३पातसाह होइ दिल्लीपुरीको पट्टलयो॥

यानैंहू चिरकाले प्रभुसक्तिकौं प्रधान राखि पातसाहीपैं सासन करत जब दिष्टके अनुसार परलोक पायो ॥

तब याको मूढ वडो पुत्र रुकनुद्दीन ४ दिल्लीकी गद्दीबैठि चोथो४ पातसाह कहायो ॥ २३ ॥

दोहा

तस भगिनी लखि सिथिल तिहिं, निज मद रजिया१ नाम ॥
अग्रज अंगमि सब अधिप, अप्प भई अभिराम॥ २४ ॥
साहन गिनतीमैं सुं पहु, नारि सु रक्खी नाँहिं ॥
तातैं नाम निरंकें तस, अंकितें पुरुखन आँहिं ॥ २५ ॥

सचरणगद्यम्

यातैं रजिया१के नाम पर पातसाहनके क्रमकी संख्याको अंक न राख्यो रु पीछैं या भगिनीकौं कितेक कहत मारि१ कितेक कहत विडारि २ याहीको कनिष्ट भ्राता वहरामसाह५ पंचम५ पातसाह होतभयो ॥

याही वहराम५के समयमैं पहिलैं मुगलजातीय जवन २ चंगजखाँ नाम आइ आपुनी बुद्धिमत्ता करि बडी वरूथिनीके साथ चीन १ ख्वारज़म२खुरासान ३ प्रमुखैं समुद्रनकौं मथिकैं तीन३हूसौं जयरूप रत्ननिकासिलयो ॥

इतकौं दिल्लीके पंचम ५ बादसाह वहराम ५ के अनंतर ताही के तनूजं समसुद्दीन ३ के नौंती मसऊदसाह ६ नाम छट्ठे ६

१बहुत समय तक२राजा की तीन शक्तियों में से प्रथम शक्ति३हुकूमत करते समय ४ भाग्य के अनुसार ॥ २३ ॥ ५ उसकी बहिन ६ उसको आलसी देखकर ७ बडे भाई को ८ पकड़कर ९ सुन्दर॥२४॥ १० सो (उसको) ११ उसके नाम पर बादशाहों की गणना का अंक नहीं रक्खा १२ अङ्कवाले नाम पुरुषों का ही १३ थे ॥ २५ ॥ १४ निकालकर १५ छोटा भाई १६ बुद्धिमानी से१७बडी सेना के साथ १८ आदि १९ पीछे २० पुत्र२१ पोता

पातसाह आर्यखंडको आधिपत्य[1] पायो ॥
अरु मसउद्द६के अनंतर[2] याहीको काका समसुद्दीन३को तीजो
३ पुत्र पहिलैं कारा[3]मैं चिरकाल[4] कष्टसहि कढ्यो सो कुरानके
सासनको साधनहार १ धीर २ गंभीर ३ सत्यबादी ४ उदार५ना
सुरुद्दीन ६ महमूद ७ बार्धक[6]मैं दिल्लीको पट्टलहि सप्तम ७ पात-
साह कहायो ॥ २६ ॥

(दोहा)

निज ग्रंथन सम्मत निखिल[7], जिहिं कैदहि बिच जानि ॥
कछु स्वासिल्प बेतन[8] करि रु, असन[9] लयो भय[10] आनि॥२७॥

(षट्पात्)

राज्य लहिहु सुहि रीति नियंत[11] महमूद ७ निबाहिय ॥
यानैं बेगम इक्क १ बिहित[12] कुलरीति बिबाहिय ॥
करत नित्य गृहकृत्य[13] कह्यो इकदिन दुख कारन ॥
दासी इक१प्रभु[14] देहु झरत पुरसे[15] कर झारन ॥
नासुरुद्दीन महमूद ७ निज[16] बेगमको यह सुनि बचन ॥
खिजि कहिय सर्व मालिक खुदा निज अप्पन कहु कोहु नन[17]।२८।

(दोहा)

---

१ स्वामिपन २ पीछे ३ कैद में ४ बहुत समय पर्यंत ५ कुरान के हुक्म के अनुसार चलनेवाला ६ बुढापे में ॥२६॥ उसके ७ सब ग्रंथों की सम्मति है कि जिसने अपने को कैद में जानकर ८ अपने हाथ की कुछ कारीगरी की ९ जीविका से १० परलोक का भय आनकर भोजन किया ॥२७॥ ११ जितेंद्रियपन अथवा अपने आचार में निष्ठा रखने की रीति को १२ उचित १३ घर के काम में १४ हे स्वामि १५ जलेहुए हाथ झरते हैं जिनको झाड़ने के लिये १६ अपना कहीं भी कोई १७ नहीं है (अत्यन्त निषेध दिखाने के लिये निज और अप्पन,एकार्थ वाची दो शब्दों का प्रयोग किया है जैसे नहीं नहीं, हाँ हाँ, आदि कहने की प्रथा है.) ॥ २८ ॥

करनलगी डरि पुब्ब क्रम, बेगम बोलि[2] बुल्ली न ॥
अध्वं[3] तजैं को तँहँ इतर, ऐसे स्वामि अधीन ॥ ३१ ॥
भाग्य बलहु जाकै भयो, ईक्खि[4] धर्म अनुकूल ॥
[5]प्रतिकूलन छिन्नैं पटा१, मान[6] २ न तदापि समूल ॥ ३२ ॥

(पट्पात्)

हरी लाहिय इहिं कहुँ न गंजि जनपदँ लिय गक्खर १ ॥
तिम लवपुर१मुलतान दब्बि गजनी भव४दुद्धर ॥
इत जय मालव५अवनि सद्धि अंतर्बेदीक्सह ॥
जितातित अँदल जमाइ अब्द विंसति२०मतप्पो यह ॥
जस लिय अपुब्ब महमूद७जिहिं पुत्रन जिम पालिय प्रजा ॥
ताके प्रताप अति मोदजुत अभय मिले सिंह१रु अजार ॥३३॥

(दोहा)

लवन१घृता२दिक हीन लहि, सदा असन इहिं साह ॥
मलिन न किय लघु[12]कोहु मन, रहि कुरान मत राह॥ ३४ ॥
इकदिन मान्य[13] अमीर इक१, हुव महमूद हजूर ॥
लहि कुरान तँस कर लिखित, परयो लखत भ्रम पूर ॥३५॥
सुद्धहु कोउक सब्द सो, वानैं काहिय असुद्ध ॥
कुंडल[15] तापैं साह किय, विक्खत सुद्धहु बुद्ध[16] ॥ ३६ ॥

(पट्पात्)

वह जब गयउ अमीर कहि महमूद७सु कुंडल ॥

---

१ पहिले करती थी उस मुआफिक काम करने लगी २ फिर नहीं बोली त-हां ऐसें स्वामि के आधीन रहकर अन्य मनुष्य कौन ३ मार्ग छोड़सक्ता है ॥ ३१ ॥ ५ विरोधी लोगों के पटा और ६ मान (इज्जत) सब छीनलिये तो-भी धर्म४देखकर भाग्यबल जिसके अनुकूल हुआ ॥ ३२ ॥ ७ देश ८ ला-हौर ९ भूमि १० इनसाफ ११ बकरी ॥ ३३ ॥ १२ छोटे मनुष्य का भी मन नहीं विगाड़ा ॥ ३४ ॥ १३ इज्जतवाला १४ महमूद के हाथ की लिखीहुई कु-रान की किताब को देखकर ॥ ३५ ॥१५चौतरफ लकीर फेर दी उस१६बुद्धि-मान् ने ॥ ३८ ॥

सो जिम हो तिम सब्द बहुरि रक्खिय स्वबुद्धिवल ॥
पुच्छिय अनुगन[2] प्रथम किन्न कुंडल असुद्ध गहि ॥
ताके जातहि त्वरित रुद्ध सुहि सुद्ध गयो रहि॥
को यँहँ निदान[3] दासन कहत भनिय साह सुद्धहि भनत॥
मन तास अधिक होतो मलिन ईम[4] असुद्ध[5] बिहितहु बनत ।३७।

दोहा

ऐसो सज्जनसाह यह, हुव जब भूधन[6] हीन ॥
प्रजा भई रोवत प्रचुर[7], आकुल सोकअधीन ॥ ३८ ॥

सचरणगद्यम्

ऐसे सज्जन सप्तम७ पातसाह नासुरुद्दीन महमूद७के अनंतर याहीको दास अरु याहीको भगिनीपति अष्टम८पातसाह गयासुद्दीनबलबन८दिल्लीको पट्ट लह्यो ॥

जाको सेरखाँ१ प्रमुख स्वामिधर्मी पातसाहीके [11] वर्द्धक आपुनें अनेक अमीरनकौं मारिबेसौं सबही संसारनें दुष्ट कह्यो ॥

जानें पहिले सुलतान महमूद७ के मंत्री सेरखान १ आदिक आपुनी अच्छीके इच्छक[12] अनेक अमीर मारिडारे सो सुनतही इतकौं तो निर्भयहोय मुगल १ नें अटकनदीके वारहू आइ लाहोर २ पर्यंत पंजाबको प्रांत दाबिलीनौं ॥

अरु इतकौं तुगरलखान १ नाम बंगदेसके अध्यक्षनें जोर पाइ गयापुरी २ पर्यंत आपुनौं अमलकीनौं ॥ ३९ ॥

दोहा

बलवन ८ पठयो सज्जि बल[13], सोहू जुरि घमसाँन[14] ॥
मोरिदयो बहु मारिकैं, खग्गन तुगरलखान ॥ ४० ॥

२सेवकों ने पूछा ३ कारण ४ इस कारण से ५ अशुद्ध बनादेना ही उचित था ॥ ३७ ॥ ६ भूमि ही है धन जिसके ऐसे बादशाह का नाश हुआ जब ७ बहुत ॥ ३८ ॥ ८ पीछे ९ बहिन का पति १० आदि ११ बादशाही के बढानेवाले १२ भलाई चाहनेवाले ॥३९॥ १३ सेना १४ युद्ध

सचरणगद्यम् ॥

यारीति आपुनो पराजय सुनतही अष्टम८सुलतान गयासुद्दीनवलवन८वडी सेनाके साथ वंगदेसके सूवादारकों जीतिवेके प्रयोजन प्राचीदिसाके प्रांतमैं गयो ॥

तोहू प्रधनके प्रवंधनमैं पाटवकरि कितेक कालतो तुगरल१हू परिपंथीनकी पृतनाके पेचमैं न आवतभयो ॥

एकदिन दिल्लीस वलवन८की सेनाको सामंत मलिकमुहय्युद्दीन१नाम अमीर चालीस४०असवारन सहित सत्रुनकी सेनाके सिविरनकी सुद्धि निश्चित करिवेकेकाज आपुनैं अनीकसौं कढिगयो जानैं सपत्नकी सीमामैं संक्रमि गतो१गत२करत एकठाम काहू उच्चस्थलमैं चढि सवही दिसामैं दुर्जनके देखिवेको दृष्टिदई॥

तानैं एक ओर समीप साध्वसको अभाव जानि प्रमादसौं परी ऐसी वैरी वंगेसकी वाहिनी विलोकिलई ॥ ४१ ॥

दोहा

दलं तुगरलको देखतहि, दोरि मुहय्युद्दीन१ ॥
वलवन८जय वुल्लत वली, पैठो विच सु प्रवीन ॥ ४२ ॥

(षट्पात्)

जिन्ह आवत निज जानि प्रथम नहि रोकिसके पर ॥
तुगरल१ पासहि तेग घुसत डारिय निचोलँ घर ॥
ढिग रच्छक गन ढहत कहत वलवन८ जय कोपित ॥
परदल सकल प्रपात गिनि सु निजघात अगोपित ॥
भिरिवो निवारि तुगरल भजत पथ संरित तरि कढनपर्‍यो ॥
लगि पिट्ठि मुहय्युद्दीन लघुं हनि कलेव अैसु तस हर्‍यो॥४३॥

॥ ४० ॥ १ पूर्वदिशा के देश में गया २ युद्ध के ३ चतुराई से ४ शत्रुओं की ५ सेना के ६ डेरों की ७ खबर निश्चय करने को ८ अपनी सेना से ९ शत्रु की सीमा में १० जाकर ११ जाना आना १२ भय का १३ गाफिल पड़ीहुई १४ बङ्गाला के हाकिम की १५ सेना को देख ली ॥ ४१ ॥ १६ सेना ॥ ४२ ॥१७डेरे में१८प्रसिद्ध१९नदी २० शीघ्र२१बाण मारकर २२उसका प्राण

(दोहा)

भो न तदपि संतुष्ट भट, परि हूदनी बलपीन ॥
तुगरल१ सिर लायो कतरि, द्रुतहि मुहय्युद्दीन ॥ ४४ ॥

(सचरणागद्यम्)

ऐसैं दिल्लीसके दलके महाबीर मुहय्युद्दीन१नैं तुगरलखान१ को सीस स्वामीके समीप लाइधर्‌यो ॥ ताकौं देखि पहलैंतो ऐसी सीघ्रताकरि आइबेमैं याकेहू मरिजैबेको संभव मानि याके संगिन समेत तर्जनाकरि अष्टम८ दिल्लीस गयासुद्दीन बलवन८नैं पीछैं समयपर चालीस४०साँदी सहायकन सहित मुहय्युद्दीन१कौं बैभवकरि बिख्यातकर्‌यो ॥ दिल्लीसको बडो पुत्र मुहुम्मद१तो पहिलैं लाहोरको बिजयकरि मुगलनकौं भजाइ पीछैं लग्यो इहाँ सत्रुननैं साम्हैं होइ मारि लयो ॥ यातैं अष्टम८ दिल्लीस बलवन८के अवसानपर राज्यके समर्थ लोकननैं कैखुसरो १ नामक महमूदसाह७के पुत्रके आधिपत्य को औचित्य उडाइ याही बलवन८के कनिष्ठ पुत्र कुराखान२कौं गद्दी बैठारिबेको निश्चय धारि लयो ॥४५॥

दोहा

कैखुसरो१ महमूद७के, सुतको स्वत्व बिसारि ॥
कुराखान२ निज प्रभुकरन, चाह्यो सबन बिचारि ॥४६॥
धीर१ बीर२ छेम३ धर्मधर४, सदय५ गंभीर६ सुजान ७॥
कुराखान२ बुध नाँहिं करि, थिरहु तज्यो निजथान ॥४७॥

लिया ॥ ४३ ॥ १ तोभी राजी नहीं हुआ २ नदी में ३ काटकर ४ शीघ्र ही ॥ ४४ ॥ ५ साथियों सहित ६ धमकाकर ७ चालीस सवार मुहय्युद्दीन की सहाय करने के लिये साथ थे जिन सहित ८ अन्त समय पर ९ उचितपन को उडाकर ॥ ४५ ॥ १० हक्क को मिटाकर ११अपना स्वामि करने को ॥ ४६ ॥ १२ समर्थ१३गम्भीर१४पण्डित कुराखान ने तख्त बैठने से इनकार करके अपना स्थिर स्थान भी छोड़दिया ॥ ४७॥

कुराखान१को तव कुमर भट१ सचिव२ न मनभाइ ॥
कैकुबाद९अधिपति कर्‌यो चामर१ छत्र२ चलाइ॥४८॥

सचरगागद्यम्

कितेक सचिवादिक धूर्तलोकननैं याही नवम९ जवनेस केकुवाद९को याके पिता कुराखानमैं विस्वासहो ताकों बिगारिदयो तवतो पिताकों प्रतिकूल जानि कैकुवाद९आपुनैं अभीष्ट अनेक व्यसनादिक कुसंगमैं रच्यो अनर्गल रहनलग्यो ॥

अरु सप्तम७ दिल्लीस नासुरुद्दीन महमूद७के पुत्र कैखुसरो १ कों आदिलेकैं अधीसके अभ्युदयके आधार आपुने अनेक अमीरनकों छद्मघातसों मारि मदकत्त मातंगलों वट १ उव्वट २ समान वहनलग्यो॥

तवतो सवही प्रजाकै जवनेस कैकुवाद९मैं अनिच्छा आईजानि याको पिता कुराखान कोऊ यत्नसों समीपजाइ चातुरीके साथ उपदेसदेकैं आपुनैं पुत्रको कुसंग निवारतभयो ॥

अरु ताहीके अनुमतकरि कितेक कुसंगी दुष्ट हे तिनको योगिनीपुरीसों विडारतभयो ॥४९॥

(दोहा॥)

तदपि प्रमादी साह तकि, कैकुवाद९ मतिकूर ॥
घर घर भुरि वैठे घनैं, गहिगहि अधिप गरूर ॥५०॥
वढिगो साह प्रमाद वस, ऐसे खिन अंधार ॥
दुलहनि दिल्ली मारि हग, जोवन लग्गी जार ॥५१॥

मनोहरम्

ऐसे समै फीरोज जलालुद्दीन १० नाम जाको,
खलजी २ जवन कैकुवाद९हिं सो मारिकै ॥

१विरुद्ध जानकर२अपने प्रिय ३ विना रोकटोक रहनेलगा ४प्रताप के५छलघात से६मस्त ७ हाथी के समान ८ सलाह से ९ दिल्ली से १० निकाल दिये ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥

सत्तरि ७० समा बै[1] वीर दिल्लीके तखत बैठि,
पातसाह दसम १० कहायो धुरिधारिकैं ॥
धीरता १ उदारता २ दया ३ दि सब जाके गुन,
पीछैं दै छमा[2] ४ यौं बढी अग्ग[3] डँग[4] डारिकैं ॥
दुष्ट दंडिबेके १ रोकिबेके २ हनिबेके ३ बहु,
बेर बिसवासे तेहु आगस[5] निवारिकैं ॥ ५२ ॥

दोहा

भावी भूप सुभांड[6] १८६।१ सम, अति सहनंत्व[7] अराति[8] ॥
दिल्लीसहिं अंगामि[9] दुमति, खलन गही बढि ख्याति ॥५३॥
क्रूर भतीजा साहको, दुष्ट अलाबुद्दीन ॥
काकाकौं मारन कुँहक[10], लखन छिद्र हुव लीन ॥ ५४ ॥
पुनिपुनि कहिय सु साहप्रति, जिन जानिय तिन जाइ ॥
तदपि न चेत्यो मोह तकि, हितकर मन्नत हाइ ॥ ५५ ॥
बरस सत्त ७ यागति बच्यो, दसम १० जलालुद्दीन १० ॥
कबहु भतीजे व्यालको[11], पहुँच्यो दावहु पीन ॥ ५६ ॥
कट्टि जलालुद्दीन १० कँहँ, संचि दुरित[12] भर सीस ॥
भयउ अलाबुद्दीन ११ भुव, एगारहम ११ अधीस ॥५७॥

[सचरणगद्यम्]

ऐसैं आपुनैं काका दसम१० दिल्लीस जलालुद्दीन१० कौं बि-
स्वासघातसौं मारि याहीको भतीज खलजी २ जवन अलाबुद्दी-
न ११ ग्यारहौं ११ दिल्लीस भयो ॥
अरु समर्थ सामंत[13] १ सचिव २ नकौं गंजि सबनके सिरपैं

१सत्तर वर्ष की अवस्था में २ क्षमा ३ आगे ४ पैंड देकर ५ अपराध ॥ ५२ ॥ बुन्दी के ६ आगे होनेवाले ७ अत्यन्त सहनशील होने के कारण ८ शत्रुओं ने बादशाह को ९ पकड़ कर खोटी बुद्धिवाले दुष्टों ने प्रसिद्धि पाई ॥ ५३ ॥ १० इन्द्रजाली ॥ ५४ ॥ ५५ ॥११भतीजे रूपी सर्प को ॥ ५६ ॥१२पापों का संचय करके मस्तक पर भार उठाकर॥५७॥ १३ उमराव

प्रभुसक्तिकौं[1] प्रसारि उग्रताके अनुसार एक आपुनौंही अमोघ[2] आदेस रहनदयो ॥
जानैं केहीविर मुगलनकौं पराजय दैकैं गुजरात१जैसे जनपद[3] कौं जीति दिल्लीको सूबा बनायो ॥
जाके आंतककरि[4] सुभट १ सचिवादि २ आर्य१म्लेच्छ २ जे जे यामैं अनिच्छा करतहे तिनहूनैं जोर आगैं जेरहोइ मनमैं बुरो मान्यौं तथापि सेवकभाव जनायो ॥ ५८ ॥

दोहा

साह अलाउद्दीन११ सम, उग्र निदेस न ओर ॥
हुव यातैं करजोरि हुव, जेरैं[5] सकल जिहिं जोर ॥५९॥
तदपि लखहु नृप राम २०३ तँहँ, नारिन चित्त निलज्ज ॥
ऐसे पहुकी[6] अंगना[7], करहि कुनारिन कज्ज[8] ॥६०॥

सचरणगद्यम्

ऐसैं इंद्रप्रस्थके[8] दसमैं १० अधीस आपुनैं पितृव्यके[9] निज धर्म के निधान[10] म्लेच्छराज जलालुद्दीन९०कौं मारि ताकी गद्दी पाइ पातसाह अलावुद्दीन ११ आर्यावर्त्तकी अपूर्व सासकता[11] लई ॥
अरु जिततितके आर्यनकौं जेरकरि आपुनी आज्ञाकौं अमोघ प्रसारिदई ॥
एकसमय दुर्दिनके[12] अंधकारमैं स्त्रीजनन सहित मृगयाको रिरंसु[13] कोई महावनकौं विनर १ विहिंस्र २ कराइ ताकी सीमापर आपुनैं अंतरंग इक्केनकौं जामिकैं[14] राखि तिनके बाहिर[15] सेनाको

---

१ राजा की तीन शक्तियों में से प्रथम शक्ति २ पीछा नहीं फिरे ऐसा हुक्म ३ देश को ४ भय से ॥ ५८ ॥ ५ काबू में ॥ ५९ ॥ ६ ऐसे प्रभु की स्त्री ७ कार्य ॥ ६० ॥ ८ दिल्ली के ९ काका १० अपना धर्म ही है धन जिसके ऐसे बादशाह ११ हुकूमत करनेवाला हुआ १२ मेघ से आच्छादित हुए दिन के १३ शिकार खेलने की इच्छावाले किसी बड़े वन को बिना मनुष्य अर्थात् शून्य और विशेष हिंसावाला बनाकर उस वन की सीमा पर अपने खानगी इक्कों को १४ पहरायत रखकर उनके १५ बाहर फौज का

पैरिवेस पारि मध्यमैं सहस्रन नारिन समेत आपही एक१पुरुष आखेट[2]
रमतभयो ॥

अरु सायंसंध्याके समय दृष्टि १ पवन २ दोउ २ नके प्रसार
करि सुद्धांत[3]की स्त्रीनको संघात जत्रकुत्र होइ कुंज१ कंदरा२दि-
क अनेक आश्रय सोधि छिपिगयो ॥ ६१ ॥

एक १हुरम ध्वांत[5] भीरु भई महिमासाहि नाम एक१इक्का जहां
जामिक[6]हो तहाँ आइ वाहीके उरसौं लागि कितेक कालमैं कं-
पादिक त्रास के चिन्ह तजि वाहीकौं प्रिय मानि संभोग चाह्यो॥
अरु महिमासाहिहू स्वामीसौं बहिर्मुख होइ वाही अंगनाको इ-
ष्ट निबाह्यो ॥

ताही समय कोउ सिंहको आगमनभयो जाकौं महिमासाहनैं
भावी बुंदीकै अधीस रविमल्ल[11] १८८।१ के समान सुरतासंनसौंहीं[12]
तीर लगाइ मारयो ॥

अरु बेगमहू यवनेंद्रकौं भूलि याही इक्केकौं आपुनैं असुनको[13]
आलंबन बिचारयो ॥ ६२॥

[दोहा]

किते तबहि भजिगो कहत, सह तिय महिमासाहि ॥
बहुरि पलायो[14] कति बदत, दिल्लीपति उर दाहि ॥ ६३ ॥
तिन कितहु न स्व सरन तक्यो, महिप टारि हम्मीर१८२॥
भजत दुर्ग रनथंभ लहि, धरयो निठि हिय धीर ॥ ६४ ॥
इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे चतुर्थ ४ राशौ

१घेरा लगाकर २शिकार खेलने लगा ३जनाने की स्त्रियों का ४समूह॥६१॥
५ अन्धेरे से कायर होकर ६ पहरायत था वहां आकर ७ भोग करना चाहा
८ विरुद्ध होकर ९ स्त्री का१०वांछितफल११आगे होनेवाले बुन्दीपति सूर्य-
मल्ल के समान१२रति करतेहुए ने ही१३प्राण का आधार ॥ ६२ ॥ १४ भागा
॥ ६३ ॥ ६४ ॥

वीतिहोत्रचण्डासि १ वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५ वंश्या नुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबम्बावदेशबङ्गदेव १७९।१ त त्कुमारदेवसिंह १८०।१ समयचरित्रे हड्डाधिराजबङ्गदेव १७९।१ पर लोकप्राप्यणानन्तरप्राप्तपितृपट्टनरेंद्रदेवसिंह १८०।२ स्वकीयसप्तम पुत्रसमरसिंहा१८१।७र्थस्वार्धराज्यसमेतस्कन्धावारीकृतबुंदीवितरण १ स्वयंवैभवविरक्तभावभजन २समरसिंह१८१।९बुंदीप्रापणसमयसं वत्सहितसाङ्गपंचा५ङ्गादिसाधनीयवास्तुमुहूर्तज्ञापन ३समुदितगुरु५ शुक्रै ६ कराशिसांगत्यसूचनासहिततत्रत्यरवि१चंद्र २ राश्यादिभोग भाषण ४ चंडासिराजपृथ्वीराज१७६कनिष्टपुत्रसामन्तसिंह१७७।२ मुख्यवंशीयसंहतयवनेंद्रभट्टभिल्लजैत्रसिंह१८१।१रणधीर१८१।२भ्रा तृद्वय२रणस्तम्भदुर्गसमाक्रमण ५ वितीर्णस्वानुजरणधीरार्थपञ्च लक्ष५०००००रौप्यकपट्टोपेतछाणिदुर्गजैत्र१८१।२परलोकप्रापण६ प्राप्तपितृपट्टमारितवणिगमात्यसमाश्वासिताधिकारीकृततत्पुत्रसुर्ज न १ जयमल्ल २ रायपाल ३ लिक ३ हम्मीर १८२ क्षात्रधर्मनिर्व

वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा- ओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बम्बावदा के पति बङ्गदेव और उसके पुत्र देवसिंह के समय के चरित्र में हड्डाधिराज बङ्गदेव के परलोक प्राप्त हुए पीछे पिता का पाट पाकर नरेन्द्र देवसिंह का अपने सातवें पुत्र समरसिंह के लिये आधे राज्य सहित बुन्दी को राजधानी बनाकर देना, स्वयं देवसिंह का वैभव से विरक्त होना, समरसिंह के बुन्दी प्राप्त करने के सम्वत् सहित और अङ्गों सहित पञ्चाङ्ग आदि साधने योग्य नांगल करने की सूचना करना, बृहस्पति और शुक्र के एक राशि पर साथ उदय होने की सू- चना सहित तहां पर सूर्य और चन्द्रमा के राशि आदि भोगने का क- थन, चहुवाण राजा पृथ्वीराज के छोटे पुत्र सामन्तसिंह के मुख्य वंशवाले जैत्रसिंह और रणधीर दोनों भाइयों का बादशाह के उमराव भीलों को मारकर रणतभँवर का गढ लेना, अपने छोटे भाई धीर के लिये पांच ला- ख रुपयों का पट्टा सहित छाणीगढ देकर जैतसिंह का परलोक प्राप्त होना, पिता का पाट पाकर बनिया जाति के कामदार को मारकर उसके पुत्र सु- र्जन, जयमल्ल और रायपाल को विश्वास कर पीछे अधिकारी बनाकर हम्मीर

हण ७ दुर्दिनतिमिरसस्त्रीजनमृगयारिरंसुयवनराडलाबुद्दीन ११ प-
त्न्यन्तर १ सेखमहिमासाहि २ सम्मिलन ८ तदासक्तव्यवायब-
न्धस्थितमहिमासाहिबाणविद्याबलसमागतसिंहनिपातन ९ परस्प
रप्रसक्तकथितान्यतरकालपलायितसस्त्रीकमहिमासाहिरणस्त
म्भराजहम्मीर१८२शरणग्रहण १० भूतदिल्लीशयवनेंद्रसङ्ख्या १ समा
ख्या २ सूचनावसरसूचितसंवत्समयप्राप्तदिल्लीपट्टप्रथम१ पातसाहकु
तबुद्दीन १ स्वावसानसमयतुरगपातमरण १ महमूद १सहाबुद्दीन२
२ द्वयान्यतमसम्बन्धितद्दालस्यलेखभेदद्वापरदर्शन १२ नरेंद्रविक्रम
१ मुहम्मदरसूल १ सामसीह ३ सम्वद्धसंबन्धया ३ न्तरसम्यक्त्वसू
चन १३ यवने २ ङ्गेज३ग्रंथादिगदितम्लेच्छदिल्लीसमाक्रमणसम्व
दसाङ्गत्यद्योतन १४ कथितशककालनृपपृथ्वीराज१७६ ग्रहणोत्तर
सार्द्धसमात्रया३ऽनन्तरदिल्लीम्लेच्छमाहिपत्यप्रवर्तन१५द्वितीय२य-
वनेंद्राऽऽरामसाहा २ऽल्पकालराज्यकरण १६ तदनन्तरकुतबुद्दीन
१ दासजामालिलतमिसा ३ परनामत्तृतीय ३ यवनेंद्रसमसुद्दीन ३
चिरराज्यानुष्ठान १७ तदनन्तरदूरीकृत

का चात्रधर्म को निबाहना, मेघ से ढकेहुए दिन के अन्धकार में स्त्रियों सहित शिकार की इच्छावाले बादशाह अलाउद्दीन की स्त्री का छेटी होकर सेख महिमासाह से मिलना, उसमें आसक्त मैथुन करने में स्थित महिमासाह का बाणविद्या के बल से आयेहुए सिंह को मारना, ऊपर कहे अनुसार अथवा किसी दूसरे समय में परस्पर आसक्त हुए महिमासाह का उस स्त्री सहित भागकर रणतभँवर के राजा हम्मीर की शरण लेना, पहले हुए बादशाहों की संख्या और नामों की सूचना और ऊपर जनाये हुए सम्बत् के समय में दिल्ली का पाट पाकर प्रथम बादशाह कुतबुद्दीन का अन्त समय पर घोड़े से गिरकर मरना, महमूद (पैगम्बर) और सहाबुद्दीन दोनों से और अन्य बहुतों से सम्बन्ध रखनेवाले, तदालस्य ( ) लेखों के भेद का सन्देह दिखाना, राजा विक्रम, मुहम्मद रसूल और ईसामसीह तीनों के सम्बतों के अन्तर की सूचना करना, यवन और अङ्गरेजों के ग्रन्थ आदि से कहेहुए म्लेच्छों के दिल्ली लेने के सम्बत् की असत्यता दिखाना, कहेहुए सम्बत् में राजा पृथ्वीराज को पकड़े पीछे साढे ३ महीनों के अनन्तर दिल्ली में यवनों का राज्य पाना, दूसरे बादशाह आरामसाह का थोड़े समय राज्य करना, जिसपीछे कुतुबुद्दीन का चाकर और उसीका

कृताल्पराज्यसमसुद्दीनसुतस्वभ्रातृचतुर्थ ४ यवनेन्द्ररुक्नुद्दीन ४ निरङ्कनामतद्भगिनीरजिया १ प्रासह्यपुरस्सरपितृपट्टप्रापण १८ मारण १ कीलना २ न्यतमोपायदूरीकृतस्त्रीजात्यस्वाम्यतदनुजबहरामसाह ५ पंचम ५ पातसाहीभवन १९ तत्समयसमागतविधिवृद्धवद्धवाहिनीवाल्यमुगलम्लेच्छचङ्गेजखान १ चीन १ ख्वारजम २ खुरासाण ३ दिदेशविजयन २० बहरामा ५ नन्तरतत्पुत्रपष्ठ ६ यवनेन्द्रमसऊदसाह ६ दिल्लीगद्दिकोपविशन २१ तदनन्तरतत्पितृव्यकभाक्सोढकाराकष्टसर्वगुणसम्पन्नवृद्धवयः प्राप्तदिल्लीपट्टदयालुदाससप्तम ७ यवनेन्द्रनासुरुद्दीनमहमूद ७ महानसकर्मकृशदहनदाहदीर्णदोर्लतस्वपत्नीप्रार्थितैक १ किङ्कर्यनर्पण २२ जितगक्खर १ लाहोर २ मुलतान ३ मालव ४ समस्थल्या ५ दिदेशसदाकृतलवण १ घृता २ दिवर्जितस्वशिल्पक्रीतान्नाशनपुत्रवत्पालितप्रजमहमूद ७ स्वावसरसमागतसामन्तान्तरकथनहेतुकस्वलिखितकुरानशुद्धशब्दाऽशुद्धतास्थापन २३

समाई इल्तमिस् जो दूसरे नामसे समसुद्दीन उसका बहुत समय तक राज्य करना, जिसपीछे थोड़े से राज्य करनेवाले चौथे बादशाह रुक्नुद्दीन को बादशाहों की गणना के विना अंकवाली रजिया बेगम का हठ पूर्वक दूर करके आगे होकर पिता का पाट लेना, उसको मारकर अथवा कैद करके वा और उपाय से दूर करके स्त्री जाति को अस्वामि करके उसीके छोटे भाई बहरामशाह का पांचवां बादशाह होना, उसीके समय में विधान पूर्वक बड़ी सेना बांधकर चपल मुगल यवन चङ्गेजखां का चीन, ख्वारजम, और खुरासाण आदि देश विजय करना, बहराम के पीछे उसीका काका जो पहिले कैद में बहुत कष्ट सहकर निकला था उसका सब गुणों से सम्पन्न वृद्धावस्था में दिल्ली का पाट लेकर दयालु स्त्री सहित सातवें बादशाह नासुरुद्दीन महमूद की रसोई के कर्म से दुर्बल और अग्नि की दाह से जलगये हैं हाथ जिसके ऐसी अपनी स्त्री को प्रार्थना करने पर एक दासी नहीं देना, गक्खर १ लाहोर २ मुलतान ३ मालवा ४ अन्तर्वेद ५ आदि देश जीत लेने पर भी सदैव अपने हाथ की कीहुई चीजों को बेचकर विना लवण और विना घृत आदि का भोजन करके पुत्र के समान प्रजा को पालना, और महमूद को अपने समय पर आयेहुए उमराव के कहने के कारण अपने हाथ की लि-

तद्गमनोत्तरानुगपृष्टनिदानसप्तम ७ दिल्लीशतन्मूढचित्ताल्हा-
दार्थतत्क्रियाकथन २४ कृतचिरराज्यमहमूदा ७ नन्तरप्राप्तपट्ट-
परिणीतदिल्लीशभगिनीतद्दासाष्टम ८ पातसाहगयासुद्दीनबल-
वन ८ शेरखाना १ दिश्यालकमान्यमन्त्रिजनमारण २५ तत्स-
मयमुगलयवनगण १ पाश्चात्य २ बङ्गाध्यक्ष १ प्राच्य२ प्रान्त-
समाक्रमण २६ श्रुतप्रतिहतस्वसैन्यसन्नद्धप्रस्थितप्राचीगम्यप्राप्त-
बलवन ८ वीरमुख्यमुहयुद्दीन १ स्वकरकृतबङ्गाध्यक्षतुगरलखा-
न २ मूर्द्धानयन २७ दिल्लीशतत्तर्जनपूर्बकसमुचितावसरसर्वा-
धिकसत्करण २८ यवनेन्द्रज्येष्ठपुत्रमुहम्मद १ प्राक्कालपञ्जावप्रा-
न्तमुगलविजयकरणोत्तरतद्रणमरणाज्ञापन २९ समुत्सादितकै-
खुसरो १ नामकमहमूद ७ पुत्रस्वत्वसामन्त १ सचिव २ वर्ग-
बलवन ८ कनिष्ठसूनुकुराखानकृताधिपत्यप्राप्त्यनादरोत्तरतत्पु-
त्रकैकुबाद ९ नवम ९ यवनेन्द्रीकरण ३० यत्नावसरमिलित-
मनस्विजनककुराखान १ हतकैखुसरोप्रमुखराज्यबर्द्धकबी

खीहुई कुरान के शुद्ध शब्द को अशुद्ध स्थापन करना, उस उमराव के गये पीछे नौकर के कारण पूछने पर उस सातवें बादशाह का उस मूर्ख उमराव के चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया का कहना, बहुत समय पर्यन्त राज करने के पीछे उस बादशाह की बहिन को विवाह कर उसीका दास गयासुद्दीन बलवन आठवां बादशाह हुआ जिसके शेरखां आदि इज्जतदार वजीरों को मारडालने से उसीके समय में पश्चिम देशों के प्रान्त मुगल जाति के यवनों के समूह से और पूर्वदिशा के प्रान्त बङ्गाला के हाकिम से दबालियाजाना, अपनी सेना का नाश सुनकर सज्जीभूत होकर पूर्वदिशा के जाने योग्य प्रान्त में बलवन का जाना, मुख्य वीर मुहयुद्दीन का अपने हाथ में बङ्गाले के हाकिम तुगरलखां का मस्तक लाना, बादशाह का उसको धमकाकर उचित समय पर सब से अधिक सत्कार करना, बादशाह के बडे पुत्र मुहम्मद का पहिले समय में पञ्जाब प्रान्त में मुगलों को विजय करे पीछे उसी युद्ध में मरने की सूचना करना, कैखुसरो नामक महमूदशाह सातवें बादशाह के पुत्र का हक्क उडाकर उमराव और वजीरों के समूह ने बलवन के छोटे पुत्र कुराखान को बादशाह करना चाहा जिसके इनकार करने पर कुराखान के पुत्र कैकुबाद को नवमा बादशाह करना, कैखुसरो आ-

रकुसङ्गदुष्टस्वपुत्रकैकुबाद ९ प्रबोधनपूर्वकदुष्टजननिष्कासन ३१ यवनराजप्रमादप्रागल्भ्यप्रसन्नसामन्तवर्गप्रातीप्यसमादानसमयहत कैकुबाद ९ वर्षसप्तति ७० वयस्कखल्जिजलालुद्दीनफीरोज १० दशम १० दिल्लीशीभवन ३२ क्षान्तानेकानेकापराधदशम १० दिल्लीशतितिक्षुतमत्वसहायसमात्यसापत्न्यविहितवैजन्यविश्वास व्यापादनतद्भ्रातृजलालुद्दीन११ स्वपितृव्यसंहरण ३३ प्राप्तपट्टप्रायः पराजितमुगलमण्डलजितगौर्जरजनपदैकादश ११ दिल्लीशयवनेंद्रालावुद्दीन ११ स्वप्रतापप्रणतसर्वसामन्त १ सचिव २ संघशासन ३४ कारितविनर १ विहिंस्र २ काननसर्वस्त्रीजनसमुपेतमृगयारम मार्गेक १ पुरुषालावुद्दीन ११ पत्यन्तरवृष्टि १ वात २ व्याकुल परिजनपलायनावसरमहिमासाहि १ नामैकस्वभर्तृभटसाम्मिलन ३५ तद्विभ्रमव्यामोहविगतधर्मपशुक्रियाप्रवृत्तमहिमासाहिसमागत सिंहबाणवेधन ३६ पश्चात्तत्पत्न्युपेतसूचितान्यतमसमयपलायित

दि राज्य के बढानेवाले वीरों को मारकर खोटी सङ्गतवाले अपने दुष्ट पुत्र कैकुबाद को समझाकर समय मिलने पर वीर पिता कराखान का दुष्ट जनों को निकालना, बादशाह का प्रमाद प्रगल्भ होने से अप्रसन्न होकर उमरावों के प्रतिकूल होने के समय कैकुबाद को मारकर सत्तर वर्ष की अवस्था में खल्जी जलालुद्दीन फीरोज का दिल्ली पर दशवां बादशाह होना, दशवें बादशाह जलालुद्दीन फीरोज की अत्यन्त क्षमता की सहायता से अनेकानेक अपराध सहन और संग्रह करके शत्रुओं में एकान्त में विश्वास करने से उसके भतीजे का अपने काका जलालुद्दीन को मारना, पट्ट पाकर मुगल मण्डल को प्रायः पराजित करके गुजरात देश को विजय करके ग्यारहवें बादशाह अलाउद्दीन का अपने प्रताप से प्रणाम योग्य होकर सब उमराव और वजीरों के समूह पर हुकूमत करना, वन को बिना मनुष्य और हिंसाशील करके सब स्त्रीजनों के साथ शिकार खेलने में एक ही पुरुष अलाउद्दीन रहा वहां पति से दूर होकर वृष्टि और पवन से व्याकुल निज के लोगों के भागने के समय महिमाशाह नामक अपने पति के योद्धा से मिलना, उस विभ्रम में विपरीत ज्ञान से धर्म छोडकर पशुक्रिया में प्रवृत्त हुए महिमाशाह का आयेहुए सिंह को बाण से मारना, पीछे उस स्त्री सहित जनाये हुए अथवा अन्य समय में भागकर महिमाशाह का रणतभँवर

।हिमासाहि१रणास्तम्भराजचाहुवाणचण्डांशुहम्मीर १८२ नरेन्द्र
।रणाग्रहणां सप्तत्रिंशो ३७ मयूखः ॥३७॥
आदितः षट्चत्वारिंशदुत्तरैकशततमः ॥ १४६ ॥
प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

सरन दैनको यह समय, कहिय जवन करजोरि॥
निडर रहहु अक्खिय नृपहु, क्यों न लरहु वहु कोरि॥१॥

सत्ररणगद्यम्

ऐसैं अभय दैकैं चंडासिराज हम्मीर ७ दिल्लीके अधीस म्लेच्छ राज अलाबुद्दीन११के अपराधी माहिमासाहिकौं आपुनैं सरन राखिलयो ॥

सो जानतही यवनेंद्र सौंपिदैबेकी कहाई तबहू स्वकीय राजधर्म कौं प्रतिभू करि नाँहिं दैबेको उत्तर दयो ॥

तदनन्तर बडे बिस्तारकी बरूथिनी बनाइ दिल्लीको एगारहौं ११ पातसाह अलाबुद्दीन ११ कोपकरि रनथंभपैं चलायो ॥

अरु सेनाके संभारसौं मेदनीकौं मचकावत सेसके सीसनको सहस्र१०००ही हलायो ॥ २ ॥

दोहा

जगती अतिजगती १३१२ जहाँ, बिक्रम सक गतबेर ॥
साह सजव हम्मीर ८२सिर, किय प्रयान बलकेर ॥३॥
सोदर महिमासाहको, मीर गाबरू१ नाम ॥
अरु नवाब अजमत अली२,करन स्वामि जयकाम॥ ४ ॥
अपरनामँ अहम्मद अली३, रनपटु खान करीम ४॥

के राजा चहुवाणों के सूर्य नरेन्द्र हम्मीरसिंह के शरण लेने का सैंतीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ३७ ॥ और आदि से एक सौ छियालीस मयूख हुए ॥ १४६ ॥

१ जामिन (जमानत देनेवाला) २ सेना ३ समूह से ४ भूमि को ॥ १ ॥ २ ॥
५ जिसका दूसरा नाम अहमदअली था

हिम्मति *पुव्व बहादुर ५ हु, अलीखान६ भटभीम ॥५॥
अबदुलखान ७ नवाव अरु, नाम सिकंदर ८ नेक ॥
सिदकीमीर९रहीम१०सह, उमगे जवन अनेक ॥ ६ ॥

रनेक१अनेक२अन्त्यानुप्रासः॥१॥

भुग्गैं दिल्लिय जिन भुजन, तिन बल उब्बत तोर ॥
मह्रमखान१वजीर मति, सज्जिय साह सजोर ॥ ७ ॥

[षट्पात्)

भुजगराज फन भग्गि कमठ खप्पर कररक्किय ॥
किरिपति दंतुलि कोटि विज्जु जुग २ छवि वररक्किय ॥
पीलुन दिसन प्रमेहं १ वढिग अतिसार २ वरब्बर ॥
सहरा दल संक्रमत चमकि भवभूत चराचर ॥
गढगढन गज्ज आकंप गहि चकित लज्ज रक्खन चहत ॥
उपदा पठाइ सद्धत अखिल वीर नियम दुव २ नृप वहत॥८॥

(दोहा)

पहु लक्खन १ चित्तोर १ पति, इक १ सगव्व सीसोद ॥
पर २ संभर रनथंभपुर २, मुरि हम्मीर २ समोद ॥ ९॥
धम्मं १ लज्ज २ अज्जनं धरैं, उभय २ महीपति एह ॥

---

* हिम्मत है आदि में जिसके ऐसा बहादुर अर्थात् हिम्मतिबहादुर. शेषनाग के१ फण टूट कर कमठ की पीठ टूटने लगी और२ वराह की दाँशविजुलियों की छवि के समान दोनों दन्तुलियां के अग्रभाग टूटने लगे और दिशाओं के ४ हाथियों को ५ बहुमूत्र और ६दस्त (पाखाना) बराबर बढा. अचानक सेना के ७ चलने से संसार के चर और अचर सब प्राणी चमके और प्रत्येक गढां में इस गर्जना से धूज कर और चकित होकर अपनी लज्जा रखना चाहने लगे. जब सभी लोक ८ नजराना भेज भेज कर प्रसन्न करने लगे तब वीरों का नियम दो राजाओं ने धारण किया ॥ ८ ॥ एक तो चीतोड़ का पति सीसोदिया राजा ९ गर्व के साथ गढ लक्ष्मणसिंह और १० दूसरा रणथम्भ पुर में चहुवाण हम्मीरसिंह मोद के साथ पीछे मुड़े ॥ ९ ॥ १२ आर्य्यों के ११ धर्म और लाज को ये ही दोनों महीपति धारण करते हैं दूसरे अधम

अनुगभाव[1] सद्धै अवर, बंछै अधम बचेहि ॥ १० ॥
जे जैसैं मृगराज[2] १ कों, जंबुक[3] २ सद्धतजात ॥
इम १ अंतिक[3] रतकील[4] २ वा, लूमें[7] अराल[6] हलात ॥११॥
तें गति संकहि काल तकि, सद्धत आवत साह ॥
दोउ २ न विन औरन दियो, रक्खन अज्जन राह ॥१२॥
आवत दल ढिग अधिपके, रुपि काका रनधीर १८१।२॥
कहि पठई पहिलें करहु, इतकों[8] प्रसभ[7] अमीर ॥ १३ ॥
कै बंदी मोकों करहु, वा तुम होहु असीर ॥
आदि हमारे ईस व्है, प्रभु व्है वा तुम पीर ॥ १४ ॥

॥ पज्झटिका ॥

यह पत्र छानिगढके अधीस, रनधीर १८१।२ पठायउ रक्खि रीस॥
सो सुनत अलाबुद्दीन ११ साह, पहिलैं इत आयउ नद[9]प्रबाह ॥१५॥
विक्रम सक दुव भुव त्रि ससि १३१२वेर, रचि चैत्रविसंद[10]गढछानिघेर।
अबिरत[11] लगाइ तोपन अलात[12], पटके किं[13] पुरंदर[14] बज्रपात॥ १६ ॥
मिलि कटक चंद्र परिवेख[15] मान[16], मंडिय रन तोपन बल अमान[17] ॥
खमान१ अमान २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हम्मीर १८२ पितृव्य[18]क अतिउछाह रनधीर १८१।२ रचियरन समन[19] राह
कलि[20] साह पंच५हायन टिकाय, खल जनन बहुन गो अज्ज[21] खाय।
भट मुख्य साहके च्यारि४भंजि, रन तल्प[22] लह्यो रनधीर १८१।२रंजि।
नृप राम सुनहु चउ४जवन नाम, रनधीर१८१।२दियउ जिन्ह भव[23]बिराम[24]

१ सेवकभाव साधकर बचना चाहते हैं ॥ १० ॥ वे राजा जैसे सिंह को २ गीदड़ प्रसन्न करता है अथवा हाथी के ३ पास ४ कुत्ता ६ बांकी ५पूंछ को हिलाता है ॥ ११ ॥ तैसे समय देखकर डरेहुए राजा आतेहुए बादशाह को प्रसन्न करते हैं. उपरोक्त दोनों राजाओं के विना अन्य किसीने आर्यों का मार्ग नहीं रहने दिया ॥ १२ ॥ ७ हठ ॥ १३ ॥ ८ कैदी ॥ १४ ॥ ९ नदी के वेग के समान ॥ १५ ॥ १० शुक्ल पक्ष में ११ निरन्तर १२ अग्नि १३ किंधों १४ इन्द्र ने वज्र डाला ॥ १६ ॥ चन्द्रमा के १५ घेरे के १६ समान सेना का घेरा डालकर तोपों से १७ अप्रमाण बल से युद्ध रचा इधर हम्मीर के १८ काका ने १९ यमराज की भांति ॥ १७ ॥ २० युद्ध में २१ वह आर्य बहुत दुष्टों को खागया २२ सेझ ॥ १८ ॥ २३ संसार से २४ विश्राम

क्रमअबदुल१अहमद२*वलिकरीम३,अंजमतअली४हुस्तत÷समरसीम
चहुवान मुख्य चउ ४खलनखाइ,आहवझर्‌यो सुरनधीर१८१।२आइ
लैं साह छानिगढ प्रसभ लग्गि,आयउ अल्हनपुर झरत आग्गि२०।
हम्मीर१८२वीर तँहँ भिल्ल भोज, फेरिय द्वि२बेर रतिवाह फोज ॥
अल्हनपुरतैं पुनि साह आइ, रन के गिरि पटक्यो दल रिसाइ२१
तोपन चढाइ तँहँ लाग तक्कि, लिय छाइ दुर्ग गोलन ललक्कि ॥
करि रुंद्ध दरे चउ४फोज फेरि,घाटिनैं चउरासि८४न निबिड घेरि२२
दल बचन गर्त जिततित दिवाइ, लग्गिय रिपु तोपन लाय लाइ॥
चित्तोर रान लक्खन सुचित्त,सुनि यह सहाय दिय महत मित्तँ२३

सजि अष्टि सहँस१६०००दल जव समीरं,

वल्लन करि तिनविच मुख्य वीर ॥

रनथंभ भीर दिय सिक्ख रान, आयउ तव वल्लन खगउडान ।२४।
हय१सैल२खट६जोजनतैं बहोरि, जव धार बेसरनैं भार जोरि ॥
सवरनैं सहाय पथ सैलैं सीस, उल्लंघि लह्यो रनथम्भ ईस ॥२५॥
हम्मीर१८२सुनत अररनैं हटाइ, भंजि समुख कोस१वहु धन बंटाइ॥
सजि अतुल वधाई लाइ संग,रनथंभ पैठि किय सुमह रंग॥२६॥

दिया' अर्थात् युद्ध में मारेजाने के कारण आवागमन मेट दिया * फिर ÷ युद्ध की सीमा में ॥ १९ ॥ १ तोपों से अग्नि झाड़ता हुआ ॥ २० ॥ उस समय हम्मीर के वीर भोज नामक भील ने रतिवाह देकर दो बार फौज को चीर डाली ॥ २१ ॥ २ फौज को चौतर्फ फेरकर चारों मार्ग बन्दकर दिये अथवा चारों ओर फौज फेरकर मार्ग बन्द करदिये और चौरासी ४ सघन ३ घाटियों को घेर लिया ॥ २२ ॥ सेना के बचाव के लिये जित तित ५ खड्ड दिलाकर तोपों को लाकर शत्रु लाय लगाने लगे ६ बड़े (पूजनीय) ७ मित्र ने ॥ २३ ॥ ९ पवन के ८ वेगवाली सौलह हजार सेना सझकर उसमें वल्लन को सेनापति करके १० पक्षि के उडान के समान आया ॥ २४ ॥ ११ ऊंट १२ खचरों पर १३ भीलों की सहायता से १४ पर्वतों के शिखरों के मार्ग से पर्वतों को उल्लंघन करके रनथम्भ पुर के पति को पाया ॥ २५ ॥ १५ किमाड़ों को खुलाकर १६ एक कोस सम्मुख चलकर १७ उस युद्ध में श्रेष्ट उत्सव किया ॥ २६ ॥

आवाज मचिग तोपन अपार, संगीत१दान२हुव बिनु सुमार[1] ॥
प्रचुर[2]हि लुटाइ बसु[3] दीन पोखि, सम्भर लिय साह उछाह सोखि।२७।
जिम मुकरूय बुल्लि तब जवनराज, मह[4] कारन पुच्छिय रचि समाज[5]॥
जब अरज खान महरम बजीर, किय जोरि कर ल बल्लहिं प्रवीर।२८।
चित्तोर रान[6] लक्खन बिचारि, सोलह सहँस्र१६००० पृतना प्रसारि॥
बल्लन चमूप[7] करि हित बढाइ, रनथम्भ भीर पठयो रिसाइ॥२९॥
ते जोजन खट[8]६सर्न मय१तुरंग२, पठवाइ पारि भिल्लन[10] प्रसंग ॥
हम्मीर१८२सुमट लहि भोज भिल्ल, व्है पत्ति[11] गये गिरिपथह ठिल्ल।३०।
बर्द्धापन[12] ताको यह बिसेस, नय १ धर्म २ रीति मंडिय नरेस ॥
सुनि साह कहिय पथ गहन सोधि, बहुरिहु बहु ऐहैं हित प्रबोधि।३१।
अन्नादि सकल जीवन उपाय, याही मग लैहैं ऐंचि आय ॥
इहिंहेतु[13] इहाँके ग्राम्य[14] आनि, जैर[15] देहु लेहु मग मर्म[16] जानि ॥३२॥
रुक्कहु तमाम तुमकोह[17] राह, संचरि[18] सकैं न ब्लि इम सिपाह॥
यह सुनत सँजव जिततित बजीर, प्रतिमग्ग[21] गिरिन पठये प्रवीर।३३।
परि परिधि[22] तीन३जोजन प्रमान, जौलियजरि रुक्किय अखिल जान॥
चलि तोप फैर सहँसन प्रचंड, आरावँ[24] इक मच्चिग अखंड ॥३४॥
फैलिय चटकारिन[25] अमित फैर, नीरहु हुव दुर्लभ निकट नैर[26] ॥
गिरि१बिपिन[27]२भूमि३तरु४कोट५ग्राव६, सब धूमरंग हुव सुचि[29]स्वभाव
गर्तन[30]बिच उत१के इत२ गिरात, पारत इत१के उत२ बज्रपात ॥

१अगणित २बहुत ही ३धन से दिनों का पोषण करके उस चहुवाण ने बाद शाह के उच्छाह को सुखादिया॥२७॥४उत्सव का कारण५सभा रचकर॥२८॥ ६महाराणा गढ लक्ष्मणसिंह ने७सेनापति ॥२९॥८छै योजन से९ऊँट१०भीलों से११पैदल होकर॥३०॥१२उत्सव अथवा सेना की वृद्धि होने से ॥३१॥ १३ इस कारण से१४ग्रामीण लोगों को बुलाकर१५धन देकर१६मार्ग का भेद जान लो ॥ ३२ ॥ १७ पर्वतों का मार्ग १८ आ नहीं सके १९ फिर २० शीघ्र २१ मार्ग मार्ग प्रति ॥ ३३ ॥ २२ तीन योजन पर्यंत घेरा डालकर २३ सेना की जाली जड़कर २४ एक अखंड शब्द मचगया ॥ ३४ ॥ २५ चुटकी बजाने के समान२६पुर के समीप२७बन २८पत्थर२९अग्नि के स्वभाव से॥३५॥ ३० खड्डों

हम्मीर१८२बंधु जल्हन१गंहीर[1], दल्लन२बलि लक्खन रान बीर ३६
काढि कबहुकबहु ए दुवर२ कराल, जुत भटन पारि रतिवाह जाल ॥
भिरि देत साह दल मथि भजाइ, अतिप्रसभं[2] जवन पुनि रुपत आइ ३७
मारत रचि हल्ला बढत मीर, प्रबिसात दुर्ग पच्छे प्रबीर[3] ॥
छिदि गोलन कति तरु होत छार, अंगार मचत जिततित अपार ।३८।
रंचहु रच्यो न तँहँ गगन रम्यं[4], अतिधूम भयउ पच्छिन अगम्यं[5] ॥
खग[6] उडत गिरत कति कुलटँ[7] खाइ, परत किं[8] करेटु[9] झखपोतँ[10] पाइ ३९
लगि बातबेगं[11] अनि उडि अलात, आरत कति कोसन प्रांत जात॥
इम लसत तिमिर गोलन उडान, मानहु अलातँ[12] प्रेतन मसान ॥४०॥
मिटि गहन सु पद्धरँ[13] होत मग्गँ[14], इत१ उत२ प्रपातँ[15] गोलन उदग्गँ[16] ॥
कसमसत सेस भजि भूमिकंप, सुँचि[17]१ अंधकार२ जलदँ[18]१ किं[19] ससंपँ[20]
तपि दूरदूर सरिता[21]१ तडागँ[22]२, थिरहोत सलिल आवँट्टि[23] थागँ[24] ॥
पूँप[25] कि कटाह जलजंतु पंति, भावितँ[26] भटित्रँ[27] हुव भंतिभंति ॥४२॥
ढिग पुरन राल१ गंधक२ कुढारँ[28], छिप्रँहि[29] उडि संगिनँ[30] करत छार ॥
पारदँ[31]३के क्रेतॉ[32] हानिपाइ, उर कुट्टि बुंबँ[33] पारत अघाय ॥ ४३ ॥
कालियँ[34] पन नालियँ[35] गन कितेक, उल्कामय[36] लालिय धरत एक॥

---

१ गम्भीर ॥ ३६ ॥ २ अत्यन्त हठ से ॥ ३७ ॥ ३ विशेष वीर ॥ ३८ ॥ ४ आकाश थोड़ा सा भी सुन्दर नहीं रहा, सब धूँएँ से भरजाने के कारण पक्षियां को ५ जाने योग्य नहीं रहा ६ पक्षी ७ कुलांट (गिरह) खाकर गिरते हैं ८ किधों ९ किलकिला पक्षि १० मच्छी के बच्चे को पाकर गिरता है ॥ ३९ ॥ ११ पवन के बेग से १२ अग्नि, अन्धेरे में गोलों का उडना ऐसा दीखता है जैसा श्मशान में प्रेत अङ्गारे उड़ावें ॥ ४० ॥ गहन वन मिटकर १३ सीधे १४ मार्ग होते हैं १५ ऊपर से गोले १६ पड़ने से १७ अग्नि के साथ अन्धकार ऐसा दीखता है १८ किधों २० विजुली के सहित १८ मेघ ।४१। २१ नदियें २२ तालाब २३ उबलकर २४ गहराई मिटकर पगरस्ता होता है और जल के जन्तु ऐसे हैं जैसे कड़ाह में २५ पूए उबलें, वे भांति २ से २६ पकेहुए २७ सूले (कबाब) होगये ॥ ४२ ॥ २८ बुरे ढंग से २९ शीघ्र ही ३० साथ की वस्तुओं को भस्म करदेती है ३१ पारा के ३२ मोल लेनेवाले ३३ कूक ॥ ४३ ॥ ३४ कालिकों के नियम से कितने ही ३५ तोपों के समूह ३६ अग्निमई एक ला-

भट केक सलिल उपचार[2] भुल्लि, डँहि तोप भरत खिन मरत डुल्लि
गुँटिका[4]१ फुलिंग[5]२ बिखरन विसाल, करका[6]१ खद्योत[7]२ किं जलदकाल
हम्मीर:८२ रत्ति[10] परिखद[11] सुहाइ, इक पुष्पमहल बैठत सु आइ ।४५।
रचिकैं रनके गिरि सिर समाज, रत्तिहि इत बैठत जवनराज ॥
अन्योन्य[12] सभा पिक्खि न अघात, पढि वाहवाह उच्छाह पात ॥४६॥
बिनु चरहु[13] बिदित इत१उत२ उदंत, गहि दूरबीन कच[14]कच गिनंत ॥
संभरढिग इक निसरीति सच्च, चंदकला पातुरि रचत नच्च ॥४७॥
ताकी एडीबिच तक्कि तीर, दिय मीर गाबरू पटु प्रबीर ॥
अक्खिय इत महिमासाहि इक्खि, सर सिद्ध अनुज मोसौंहि सिक्खि
मैं अबहि साहके छत्र मारि, इक१बान देत सिरसौं उतारि ॥
गदि[15] इम रु छत्र दिय द्रुत गिराइ, यह किय अपुब्ब नृप सरन आइ४९
सो पिक्खि नृपहु महिमा[16]दिसाहि, संबोधिय[17] बहुबिध गुन सिराहि॥
इम लरत गये बहु बित्ति अब्द[18],संतत[19] मिट्यो न तँहँ तोप सब्द॥५०॥

(दोहा)

साहहि इम चउदह १४ समा[20], पंच ५ छानि नव ९ पास॥
रन बिरचन रनथंभसौं, बोर्‌यो बिजय बिसास ॥ ५१ ॥
तजि प्रयत्न जवनेस तब, जंपिय[21] दिल्लिय जान ॥
संभर[22] सचिवन तँहँ सठन, अरिपल गाहिय अमान[23] ॥ ५२ ॥

(षट्पात्)

ल रङ्ग धारण करते हैं अर्थात् कालिका रक्तपान करने से जैसे लाल रङ्गवाली होजाती है, तैसे ही अग्नि से तोपें लाल होरही हैं, उनमें कितने ही वीर १ पानी का २ इलाज (पोचारा देना) भूल भूल कर (अत्यन्त भूल दिखाने के लिये भुल्लि और ३डहि, इन एकार्थवाची दो शब्दों का प्रयोग है अथवा दहि, जलने का वाचक है जिसका डाहि हुआ है) ॥ ४४ ॥ ४ गोलियें और ५ अग्निकण दूर तक बिखरते हैं सो ८ मानों ९ मेघ के समय ६ ओले और ७ जुगनू दिखाई देते हैं १० रात्रि में ११ सभा में शोभायमान होता है ॥ ४५ ॥१२ परस्पर ॥४६॥१३बिना हलकारों के ही १४ केस केस गिन लेते हैं ॥ ४७॥४८॥ १५ इसप्रकार कहकर ॥ ४९ ॥ १६ महिमाशाह १७ अपने अभिमुख करके प्रशंसा की १८ वर्ष १९ निरन्तर ॥ ५० ॥२० वर्ष ।५१। २१ कहा २२ चहुवाण के मन्त्रियों ने २३ प्रमाण रहित ॥ ५२ ॥

मिलि सुर्जन १ जयमल्ल २ रायपाल३हु सोदर त्रय३॥
वालनै स्वजनैक वैर भूप बिश्वास बीत भय ॥
मंडि मंत्र निज निलय इक्क १ छन्नैं कढि आयउ ॥
मिलत साह मनमोरि सकल गढ भर्म सुनायउ ॥
हम सचिव रिक्त कोसँन कहहिं महिप सुनत कछि रु मरहिं
रावरो अमल रनथंभगढ किंकर हम छलबल करहिं॥५३॥

(दोहा)

इम कहि साहहि रक्खि इन, लिय गढछानि लिखाइ ॥
अन्न कोस नट्ठे अखिल, अक्खिय भूपहिं आइ ॥ ५४ ॥
वज्रपात सम यह वचन, सुनत दुर्ग हुव सोर ॥
महिपति चहि निश्चय मरन, मह किय वीरन मोर ॥ ५५ ॥
जंपिय महिमासाहि जव, महिप देहु अव मोहि ॥
अप्प कहिय को आइ अरि, तक्कैं मोछित तोहि ॥ ५६ ॥
तिम रानिय आसावतिय १८२।१सौंपन महिमासाहि ॥
पुच्छिय तहँ अक्खिय प्रिया, न वचहु बच न निबाँहि ॥५७॥
इक्क१रानिय आसावतिय१८२।१,देवलकुमरि१८२।२द्वितीय२॥
सज्जभई चहि सहगमनै, गुन सुहि मन्नि गरीयै ॥ ५८ ॥
मरन धारि हम्मीर१८२तब, कहि निज रतन१८३कुमार ॥
गिनि सिसुत्व चित्तोरगढ, पठयो छन्न प्रचार ॥ ५९ ॥
बल्लन लै तिहिं गो बहुरि, तवहि दुग्ग चित्तोर ॥
निंदा सहि नृप रानकी, जो प्रबिस्यो तजि जोर ॥ ६० ॥

षट्पात्

१तीन सगे भाइयों ने३अपने पिता का वैर२पीछा लेने के लिये४अपने घर में ५ भेद ६ रीते (खाली) होना, ७ खजानों का ॥ ५३ ॥ ८ वीरों के मुकुट हम्मीरसिंह ने मरना चाहकर उत्सव किया ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ९ महिमा शाह ने कहा ॥ ५६ ॥ १०वचन का निर्वाह नहीं करके मत बचो ॥५७॥ ११ सती होना१२ भारी ॥५८॥१३अपने कुमर रत्नसिंह को १४ बालक समझकर ॥ ५९ ॥ १५ दुर्ग में १६ घुसा ॥ ६० ॥

इत हम्मीर१८२अधीस अरर प्रातहि खुलाइ अर ॥
साह कटक मथि सजव दारि सिदकी१रु सिकंदर२ ॥
हनि पुनि खानरहीम३खानमहरम४वजीर खल ॥
तिलतिल हेतिनै तुट्टि बसिय सुरलोक महाबल ॥
कति कहल जानि न बचत किय उ हर उपदाँ निज सिर हरखि
माहेमा१रु मीर२दुव२रन मिलत परिग जुज्झि भुजबल परखि ६१

दोहा

सर दुव त्रि ससि१३२५तपस्यँ सित, जँहँ विक्रम सक जात॥
रन रजरज हम्मीर१८२हुव, अंकुरि जस अवदात ॥ ६२ ॥
बरस अष्टि१८हम्मीर१८२वय, सरन रक्खि वह सेख ॥
तीस३०समा बयमैं तदनु, लहि त्रिदिवं रु हुव लेखं ॥६३॥
यह पिक्खत आसावति१रु, देवलकुमरि२उदार ॥
गढ मज्झहि किय सहगमन, रचि दुरपक्खं उद्धार ॥६४॥
मिच्छ अलाबुद्दीन११इम, हनि संगरें हम्मीर१८२ ॥
लहि किल्ला रनथम्भ लिय, बरस चउद्दह१४बीर ॥ ६५ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे चतुर्थ४राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णानबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहित॰ख्यानावसर॰याहार्यबम्बावद १ बुन्दी २ ईश्वरनरे

१ कपाट २ शीघ्र ३ ——स ४ शिव की भेट ॥ ६१ ॥ ५ फाल्गुन *मास के शुक्ल पक्ष में ६ उज्ज्वल अर्थात् खड़ा करके ॥ ६२ ॥ ७ वर्ष ८ जिसपीछे ९ स्वर्ग लेकर १० देवता हुआ ॥ ६३ ॥ ११ भीतर ही १२पीहर सासरा दोनों पक्ष का उद्धार करके ॥ ६४ ॥ युद्ध में हम्मीरसिंह को मारकर.

श्रीवंशभास्कर मह[illegible] और२ पूर्वायण के चतुर्थराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कार[illegible] वाचक [illegible]ज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के [illegible] बम्बावदा और बुन्दी के पति राजा देवसिंह के समय में होनेवा[illegible] के राजा चहुवाण वंश के मुकुट नरेन्द्र

* १३१२ के सम्वत् में यह युद्ध होना लिखकर चित्तोड़ के महाराणा गढ लक्ष्मणसिंह का सहायक होना लिखा सो ठीक नहीं है, क्योंकि उस समय में चित्तोड़ पर लक्ष्मणसिंह नहीं थे जिसका वृत्तान्त पञ्चम राशि की टीका में लिखेंगे और यह सम्वत् भी सही नहीं है सो भी आगे पञ्चमराशि में ही लिखाजावेगा

न्द्रदेवसिंह १८०।१ समकालीनरणस्तम्भराजचण्डासिकुलकोटी-रनरेन्द्रहम्मीर १८२।१ चरित्रेश्रुतेतदुदन्तविज्ञातचाहुवाणप्रत्यनीक-त्वजिगीषुयवनेन्द्रदशूशशित्रिचंद्र१३१२मित विक्रमसमासमयरणस्त-म्भागमन १ चित्रकूटराजशीर्षोद लक्ष्मण १ रणस्तम्भराजचहुवा णहम्मीर १८२ तत्समयक्षात्रधर्मधारकत्वसूचन २ प्रथमपञ्च५वर्ष कृतरणज्ञाततत्कृतस्वभटचतुष्क ४ निपातितरणधीरम्लेच्छराजछा-णिदुर्गसमाक्रमण ३ समागताल्हणपुरसमाश्वासितहम्मीरभटभि-ल्लभोजसौप्तिकद्वय २ विध्वस्तसैन्यम्लेच्छराजरणस्तम्भोपकण्ठरण शैलसमारोहण ४ चित्रकूटराजराणालक्ष्मणहम्मीर १८२।१ सहा-यार्थसेनानीवल्लणसमेतषोडशसहस्र १६००० सैन्यसम्प्रेषण ५ ह-म्मीर १८२ सगौरवतद्दर्शापनश्रुतैतदुदन्तयवनेन्द्रप्रतिबोधितवजीरत त्सानुमतसमस्तसरणि १ सन्ध्या २ दिरोधन ६ हम्मीर १८२ बन्धु जल्हण १ राणाभटवल्लण २ द्वया २ न्तरासौप्तिकादिसंख्यवलप रष्टतनामतारण ७ निशावसरसभासमीक्षणयवनेन्द्रवीरमीरगाव रूसम्भरराजमारङ्गनृत्यङ्गणिकाचन्द्रकलापार्ष्णिप्रदरबेधन ८ महि

हम्मीरसिंह के चरित्र में उसका वृत्तान्त सुनकर चहुवाण की शत्रुता जा-नकर जीतने की इच्छावाले बादशाह का विक्रम के १३१२ के सम्वत में र-णथम्भ (रणतभवँर) आना, चीतोड़ के राजा सीसोदिया लछमणसिंह और रणस्तम्भ के राजा चहुवाण हम्मीरसिंह का उस समय क्षात्रधर्म धारण करने की सूचना करना, प्रथम पांच वर्ष युद्ध करके उसके मारेहुए चार वी-रों को जानकर रणधीर को मारकर बादशाह का छांनीगढ लेना, अल्हनपुर में आने पर हम्मीरसिंह के भरोसेवाले वीर भोज नामक भील के दो रतिवा हों से विध्वंस हुई सेना से बादशाह का रणस्तम्भ के समीप युद्ध के पर्वत पर चढना, चित्तोड़ के राजा महाराणा लक्ष्मणसिंह का सहाय के लिये सेना-पति बल्लन सहित सौलह हजार सेना भेजना, हम्मीरसिंह का गौरव के साथ उत्सव सुनकर बादशाह का वजीर को समझाकर उसकी सलाह से सब मार्ग और पर्वतों की सन्धियों (घाटियों) को रोकना, हम्मीर के भाई जल्हन और राणा के भट बल्हन का जुदे जुदे रतिवाह देकर युद्ध में शत्रु की सेना को तोड़कर नाश करना, रात्रि के समय सभा देखकर बादशाह केवीर मीरगाभरू का चहुवाण की सभा में मारङ्ग नृत्य करतीहुई चन्द्रकला नामक

मासाहिसायकयवनेन्द्रच्छत्रछेदन९ हम्मीरा १८२ ऽमात्यवणिग्भ्रातृत्रय ३ त्यक्तरणस्तरणाजिगमिषूभूतयवनेन्द्रप्रतिमोटन१०तत्प्रसादप्राप्तच्छाणिदुर्गबणिक्त्रय ३ विश्वस्तनृपकर्णमिथ्यानष्टाऽन्नादिनाशनिवेदन ११ नृपज्ञातैतदुदन्तयवनेन्द्रवशीभवितुकाममहिमासाहिनिवारण १२ पतिपृष्टराज्ञ्याऽऽशावती १८२।१ शरणागतप्रेषणावर्जन १३ तदनन्तराऽऽशावती १८२।१ देवकुलकुमारी १८२।२ राज्ञीद्वय २ सहगमननिश्चयन १४ चएडासिराजहम्मीर १८२ स्वीयकुमाररत्नसिंह १८३ वल्लणसार्थचित्रकूटप्रस्थापन१५ प्रातरुद्घाटितदुर्गद्वारकृतावमर्दनिपातितसिदाकि १ सिकंदर २ रहीम ३ महरमा ४ दिम्लेच्छमएडलहम्मीरस्वर्गसमारोहण १६ मतान्तरतन्मूर्द्धशिवसमर्पणसूचन १७ महिमासाहि १ मीरगावरू २प रस्परप्रहारप्राणत्यजन १८ हम्मीरमरणादिसमनर्ष १ वय २ आदि विवेचन १९ प्रेक्षितपतिपतनराज्ञीद्वय २ दुर्गान्तिपावकप्रविशन२० यवनराडल्लाबुद्दीन ११ रणस्तम्भदुर्गसमाक्रमण २१ मष्टत्रिंशो३८

गणिका की एडी में तीर लगाना, महिमाशाह का बाण से बादशाह के छत्र को काटना, हम्मीरसिंह के मन्त्री वैश्य तीन भाइयों का युद्ध को छोडकर जाने की इच्छावाले बादशाह को मोड़ना, उस प्रसन्नता से छाणीगढ पाकर तीनों बनियों का विश्वास कियेहुए राजा के कानों में अन्नादिक खूट जाने से झूठे नाश का निवेदन करना, राजा के यह वृत्तान्त जानने पर बादशाह के वशीभूत होजाने की इच्छा से महिमाशाह का मना करना अर्थात् राजा को मरने से रोकना, पति के पूछने पर रानी आशावती का शरणागत को देने से मना करना, जिसपीछे आशावती और देवलकुमारी दोनों रानियों के सती होने का निश्चय करना, चहुवाण राजा हम्मीरसिंह का अपने कुमार रत्नसिंह को वल्लन के साथ चित्तोड़ भेजना, प्रभात समय गढ के द्वार खोलकर युद्ध करके सिदकी, सिकन्दर, रहीम, महीम, आदि म्लेच्छगण को मारकर हम्मीर का स्वर्ग जाना; मतान्तर से शिव की भेट मस्तक करने की सूचना करना, महिमाशाहि और मीरगाबरू का परस्पर के प्रहारों से प्राण छोडना, हम्मीरसिंह के मरण आदि सब वर्ष और अवस्था का विवेचन करना, पति का नाश देखकर दोनों रानियों का गढ में अग्नि में प्रवेश करना, बादशाह अल्लाउद्दीन का रणस्तम्भ गढ लेने का अड़तीसवां

मयूखः ॥ ३७ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशदुत्तरैकशततमः ॥ १४७ ॥

इतिश्रीमदखिलमहीभृन्मुकुटमल्लीमाल्यमकरन्दमद्यमत्तमिलिन्द मुखरितचरणचिन्हिताऽऽरातिचूडबूंदीपूर्विलासिनीविलासिचाहुवा णचूडामणिभारतीभागधेयजीवन्मुक्तिपद्यापथिकहड्डोढ़ापटाङ्किचा हुवाणमहाराजाधिराजमहारावराजेन्द्र श्रीरामसिंह २०२देवाऽऽज्ञ यागीर्वाणगिरादिषड् ६ भाषावेशसुभ्रूभुजङ्गकाव्याकूपारकर्णधार विग्रहपौराणिकवंशविरोचनचक्रिचरणारविन्दचञ्चरीकचारुचम त्कृतचेतनचारणचक्रचण्डांशुचण्डीदानाऽऽत्मजमिश्रणसुकविसूर्य मल्लविहितवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे मुहुकम्र्माण १३४।२ मारभ्यकुमारसमरसिंह १८१।७ बुन्दीप्राप्तिपर्यंतसप्तचत्वारिंश ४७ रकुलपुरुषपर्यंतसमाचरितवर्णनं चतुर्थो७राशिः समाप्त. ॥ ४ ॥

(शुभंभवतु)

अनुष्टुप् छन्दांसि ॥ ५८७५ ॥

मयूख समाप्त हुआ ॥ ३८ ॥ और आदि से एक सौ सैंतालीस मयूख हुए ॥ १४७ ॥

श्रीमान् सब राजाओं के मुकुटों में रहेहुए मोगरे के पुष्प सम्बन्धी मकरन्द (पुष्परस) रूप मद्य से मस्त हुए भ्रमरों से शब्दायमान चरण करके चिह्न युक्त किये हैं शत्रुओं के मस्तक जिन्होंने,बुन्दी पुरी रूपी स्त्री के विलासि,चहुवाणों के शिरोमणि, सरस्वती है दायभाग में जिनके अथवा सरस्वती से कर लेनेवाले अर्थात् पूर्ण विद्वान्,जीवन्मुक्ति मार्ग के चलनेवाले, हाडा पदवीवाले चहुवाण महाराजाधिराज महारावराजेन्द्र श्रीरामसिंहदेव की आज्ञा से संस्कृत भाषा आदि छै भाषा रूपी गणिकाओं के पति,काव्य रूपी समुद्र के कैवर्तक (खेवटिये) शरीरवाले,चारण वंश के सूर्य, विष्णु भगवान् के चरणारविन्द के भ्रमर, सुन्दर चमत्कारिक बुद्धिवाले चारण गण के सूर्य चण्डीदान के पुत्र मिश्रण (मीशण) शाखा के श्रेष्ठ कवि सूर्यमल्ल के रचेहुए वंशभास्कर नामक महाचम्पू के पूर्वायण में मुहुकर्मा से प्रारम्भ करके कुमार समरसिंह को बुन्दी प्राप्त हुई वहां पर्यन्त ४७ पीढियों के समाचरित वर्णन का चतुर्थ राशि समाप्त हुआ ॥ ४ ॥

श्रीयुत नीतिनिपुण बुद्धिविशारद सज्जनशिरोमणि हरिभक्तिपरायण धर्म-मूर्ति वीर उदार (दातार) सोदा बारहठ शाखा के चारण कुल के मुकुट शाहपुरा के पोलपात्र (शाहपुरा के राज द्वार पर नेग [दस्तूर] लेनेवालों में पात्र) सुयोग्य पिता श्रीनाड़ (अनङ्ग) सिंह के पुत्र, पण्डिता शृङ्गारबाई नामक माता से पाया है जन्म पालन और बालपन की शिक्षा जिसने, श्रेष्ठ शिक्षा पायेहुए आज्ञाकारी पुत्र केसरीसिंह, किशोरसिंह और जोरावर-सिंह से मिटगई है आनेवाले समय में होनेवाली मानसिक चिन्ता जिसकी, पण्डित कवि अपने मामा कविराज श्यामलदास से पाई है काव्यशिक्षा जिसने, सन्तोष आदि गुणों से युक्त विद्वानों के शिरोमणि परम वैष्णव रामानुज सम्प्रदायी श्रीमान् आचार्य सीताराम नामक गुरु से प्राप्त की है संस्कृत विद्या जिसने, सूर्यवंश में पैदाहुए रघुवंशीय राणावत्त शाहपुरा के पति राजाधिराज पदवीवाले नाहरसिंह वर्मा, और आर्यों के सूर्य सूर्यकुल के शिरोमणि रघुवंशी गुहिल राजा के वंशवाले मेवाड़ देश के पति उदयपुर के स्वामी सज्जनता आदि सद्गुणों की समृद्धिवाले महाराणा फतहसिंह वर्मा, और सूर्यवंश के भूषण राठोड़ कुल के मुकुट मारवाड़ भूमि के पति जोधपुर के स्वामी राजराजेश्वर महाराजा जसवंतसिंह वर्मा से पाया है दान, बडप्पन (पूज्यपन) और पैरों में सुवर्ण के भूषण आदि आदर जिसने, तथा उनके उत्तराधिकारी उनके समान प्रीति पूर्वक प्रतिपालक मरुधराधीश श्रीसरदारसिंह वर्मा के आश्रित, मिलगया है पढीहुई विद्या को सफल करने का समय जिसको, पाया है अपने विद्वान् मित्रों से सहाय और उत्साह जिसने, शाहपुरा के रहनेवाले ऐसे सुकवि बारहट कृष्णसिंह की रचीहुई उदधिमन्थनी नामक टीका में चतुर्थ राशि समाप्त हुआ ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ श्रीसरस्वत्यैनमः ॥

श्रीवादरायणायनमः ॥

॥ अथ पञ्चमराशिः प्रारभ्यते ।

ॐनमः पुराणपुरुषोत्तमाय १ गिरीश २ गिरिजा ३ गणपति ४ गिरा ५ गुरु ६ भ्यो ॥ वसुधेश्वर१ वंशवारिजत्राधि १ क्षात्रधर्मखनि २ श्रुतशूरश्मश्रुलोमाञ्चक ३ करुणास्पदीकृतकातरकलाप ४ यथातथराजन्याचारचीयमान ५ मृधाश्वमेधदीक्षादक्षीकरणाकुशल६ कलिकालोदन्तोद्दीपक ७ शौर्यशुश्रूषुमिलिन्दमालतीमरन्द ८ कविकलरवसहकार ९ रसनवक ९ निधिनरवाहन १० कोविदकाश्यपीकमनकीर्तिनौकैवर्त्तक११ प्रबन्धेशभास्कराभिधे श्रूयतां सुधारससहोदरास्वादसूरिभिः सामाजिकैः सह रणरमणीरसिकरावराजेन्द्ररामहरे २०१ पंचमो ५ राशिः ॥ १ ॥

पुराण पुरुषोत्तम (विष्णु भगवान्), महादेव, पार्वती, गणेश, सरस्वती और गुरु को नमस्कार है ॥

चहुवाणवंश रूपी कमल को बढानेवाला (सूर्य), क्षत्रियधर्म की खानि, सुनने से वीरों की मूंछों को रोमांच (खड़ी) करनेवाला, कायरों के समूह पर करुणा करनेवाला, राजाओं के यथार्थ आचार को जतानेवाला, युद्ध रूपी अश्वमेध की दीक्षा देने में कुशल, कलिकाल के वृत्तांत को प्रकाशित करनेवाला, वीरता के सुनने की इच्छावाले भ्रमरों के लिये मालती का पुष्परस, कवि रूपी कोयलों का आम्र, नव रस रूपी नव निधियों का कुबेर, पंडितों की भूमि और मनोहर कीर्ति रूपी नौका का कर्णधार (खेवटिया) ऐसे प्रबंधों के स्वामी वंशभास्कर नामक ग्रंथ में अमृतरस के सहोदर (सदृश) काव्य का स्वाद लेनें में पंडित सभासदों के साथ, हे रण (युद्ध) रूपी कामिनी के रसिक रावराजेन्द्र रामसिंह! यह पंचम राशि सुनिये ॥

चूलिकापैशाचीभाषा ॥ पथ्यागाथा ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥ व्रजदेशीयप्राकृतं १ पैशाचिकबहुलं२मरुदेशीयप्राकृत१मपभ्रंशबहुल२मितिसर्वत्र बोध्यम् ॥

॥ षट्पात् ॥

देवसिंह १८०१ नृप दुसह हेलि हड्डन अन्वय हुव ॥
बंबावद गढ बिलासि धरानि चहुँ ४ ओर जित्ति धुव ॥
अद्ध२ अवनि निज अप्पि समर१८१७कुमरहि बुंदिय सह ॥
कुमर पट्टधर कज्ज अद्ध२ रक्खिय नय आग्रह ॥
बहुबेर भंजि शत्रुन बहुन बहु अपुब्ब जस बित्थरिय ॥
बय चरम पाइ भव बिरत क्रम निवास सुरपुर करिय ॥ ४ ॥

(दोहा)

पुत्रहिं दै आसिख प्रथित, हड्डन पति पन होन ॥
समरसिंह१८१७जननी सती,गौड़ि१८०३कियउ सह गोन॥५॥
देवसिंह १८०१ गृह हुव उदित, बारह १२ सुत बरबीर ॥
जे बारह १२ आदित्यजिम, धाम प्रकासक धीर ॥ ६ ॥

॥ षट्पात् ॥

हुव अग्रज हरराज१८१६अनुज तस हत्थ१८१२प्रबलअति।
अपर २ नाम याकोहि कहत हप्प१८१२हु मागध कति ॥

व्रजदेशीय प्राकृतभाषा में पैशाचीभाषा अधिक है, और मरुदेशीय प्राकृत भाषा में अपभ्रंश भाषा अधिक है, सो सर्वत्र जानना चाहिये ॥

१सूर्य हाडाओं के २ वंश का. अपनी आधी ३ भूमि बुंदी सहित कुँवर समरसिंह को देकर ४ नीति के आग्रह से आधी भूमि पाटवी कुंवर को दी५अंतिम अवस्था पाकर ६ संसार से ७ विरक्त होकर क्रम पूर्वक स्वर्ग में निवास किया ॥ ४ ॥ हाडों के पति होने की पुत्र को ८ प्रसिद्ध आशिष देकर समरसिंह की माता गौडी सती हुई ॥ ५-६ ॥ इसका ९ दूसरा नाम कितने ही मागध लोग हापा कहते हैं ॥७॥

सूर तदनु भटसूर१८१।३तास अभिधा भोज१८१।३हु तिम ।
वहुरिवग्घ१८१।४वलिवाल१८१।५यहहिकृष्ण१८१।५हुद्विरनामइम
तसअनुजनाम चाहड़१८१।६अनुल समरसिंह१८१।७पुनिसुजसमिय
मोत्कल१८१।८वहोरियाको अपर२कर्मचंद्र१८१।८नामहुकहिय॥७॥

(दोहा)

जैत्रमल्ल १८१।९ पुनि जाहिकी, अभिधा सौंड१८१।९हु आस ॥
अनुज तास गोविंद१८१।१०अरु, कुंभपाल१८१।११ तिम तास॥८॥
सालिवाहन१८१।१२हु लघु सवन, क्रमसह देव १८०।१कुमार ॥
जे जिनजिन रानिन जनैं, प्रभु सुहु सुनहु प्रकार ॥ ९ ॥
पहिले पंच५ रु जैत्र९।६ पुनि, सुत रठोरि१८०।१ प्रसूत ॥
जहाँनि१८०।२ हु चउ४ सुत जनैं, पहिलो चाहड़६ पूत ॥१०॥
पुनि मोत्कल८।२ गोविंद१०।३ पटु, अनुज कुंभ११।४अभिधान॥
समरसिंह७।१अंतिम१२।२सहित,हुव२सुव गौंडि१८०।३ निदान॥११॥

॥ षट्पात ॥

हुव अधीस हरराज १८१।१ विसँद जसधर बंबावद ।
सम बुंदिय नृप समर१८१।७ हुव सु लहि अद्ध३ राज्य हद ॥
हरराज१८२।१ ऽनुज हत्थ१८२।२ सूर उपयम दुव २ साझिय ।
क्रमसह प्रथम१ किसोर कुमरि १८२।१ प्रतिहारि पाइ प्रिय॥
रठोरि मानकुमरि१८२।२हुवहुरितहँसुर्जन१८२।१पहिलो१८३।१तनय
रठोरि१८३।२प्रसव गजासिंह१८३।२अरु भीम१८३।३उभय२सुत वीतभय

(दोहा)

हत्थ १८१। २ तनय इम तीन ३ हुव, वढि जिन्ह संतति वीर॥
हड्डन तीजो ३ भेद हुव, हत्थाउत्त १।३ गहीर ॥ १३ ॥
नव ९ अपत्तँ पत्ते निधनँ, भट सूर१८१।३दिक भ्रात ॥

---

१ नाम सौंड २ हुआ ॥ ८-९ ॥ ३ जना ॥ १०-११ ॥ ४ उज्वल यश को धारण करनेवाला बंबावदा में हुआ ५ निर्भय ॥ १२-१३ ॥ ६ बिना संतान ७ नाश को प्राप्त हुए ॥

क्रम बढि तीन३नकेहि कुल, उदित[1] किति अवदात ॥ १४ ॥
बंबावदगढ पति बिदित, हरराज १८१।१हु नरनाह ॥
क्रमसह वसु[2] बुट्ठत करे, बनि दुल्लह छद बिवाह ॥ १५ ॥

॥ सौराष्ट्रीदोहा ॥

अक्खयराज सुता सु, कृष्णाकुमरि १८१।१ सीसोदनिय ॥
कुम्म द्वारकादासु, सुता अमृतकुमरि १८१।२हु सतिय ॥१६॥

॥ पादाकुलकम् ॥

पुनिब्रजकुमरि१८१।३नाम प्रामारिय,रामसाहि तनया निजनारिय ।
जिम अनंद जद्दव तनुजाइय[3],पटु[4] पंक्तिमदेवी१८१।४पुनि पाइय ॥१७॥
चतुर नाम भाउल्लदेवि १८१।५ चहि, लौंनकरन रट्ठोर सुता लहि ॥
धर्मसाहि तोमर धरनीधन[5], पुर गुग्गौर अधीस महामन ॥ १८ ॥
रुचिरसुतातसछट्ठी६रानिय,अनुपमकुमरि१८१।६ब्याहिनृपआनिय।
धरनीधव[6]हरराज१८१।१पुत्रधुव,हुतरनअरिनकरनद्वादस१२हुव॥१९।

॥ षट्पात् ॥

हल्लुव१८२।१लल्लुव१८२।२लोहराज१८२।३हम्मीर१८२।४जिताहव[7],
रनपटुअक्षयराज १८२।५ धीर बलराज १८२।६कित्तिधव[9] ॥
स्याम१८२।७बहुरि सुरतान१८२।८जोध[8] हरदोल१८२।९नाम जिम,
लवनकरन१८२।१०रोपाल१८२।११अनुजद्योपाल१८२।१३प्रथित[10]इम ।
पहिली१ तनूज[11] हल्लुव१प्रबल तिम लल्लुव२ हम्मीर४।३त्रय३,
बल६।१रु[12]हरदोल९।२रोपाल११।३बलि[13]तीन३हिहुवदूजी२तनय॥२०॥

॥ दोहा ॥

लोहराज ३।१ द्योपाल्ल १३।२ लघु, जुगर प्रामारिय ३ जात[14] ॥
स्याम७।१की रु सुरतान८।२की, महित[15] जद्दविय ४ मात ॥२१॥

---

१ उज्ज्वल कीर्ति प्रकाशित की ॥ १४ ॥ २ धन की वृष्टि करके ॥१५-१६ ॥ ३ पुत्री ४ चतुर ॥ १७ ॥ ५ राजा ॥ १८ ॥ ६ भूपति (राजा). युद्ध में शत्रुओं का ७ होम करनेवाले ॥ १९ ॥ ८ युद्ध जीतनेवाले ९ कीर्ति के पति १० प्रसिद्ध ११ पहिली रानी के पुत्र १२ अरु १३ फिर ॥ २० ॥ १४ हुए १५ पूजनीय

लवनकरन१०।१ रट्ठोरि ५ लहि, ससुता हुव हितसंग ॥
तिम पायउ सुत तोमरिय,६ अक्षयराज ५।१ अभंग ॥ २२ ॥
हल्लुव१८।२।१ कुल अवलग रहिय, इनमैं विधि अनुसार ॥
लोहराज१८।२।३ कुल समयलग, वढि नठो खयवार ॥ २३ ॥
कोई मागध इम कहत, बरनि प्रमा विनु वात ॥
लोहराज १८।२।३ कुल अवलगहु, गिनहु देस-गुजरात ॥२४॥
हड्डन चोथो ४ भेदलहि, हल्लू१८।२।१ संतति हड्ड ॥
हल्लूपोते ११४ विदितहुव, बुंदिय रहि सब वड्ड ॥ २५ ॥
सप्तम ७ देव १८०।१ नरेस सुत, समरसिंह १८।१।७ इत सूर ॥
राज्य अद्ध निज करि रक्खिय, पुर बुंदिय बल पूर ॥ २६ ॥
लै चम्मलि पर अद्दिलग, अवनि रही खिल एह ॥
वंवावद सन अधिक वढि, गज्जत हुव निजगेह ॥ २७ ॥
बुधपुरपति चालुक विदित, नृपति मनोहर नाम ॥
हृदयराम अंगज लहिय, दुहिता गुन उद्दाम ॥ २८ ॥
जन मागध अभिधान जिहिं, कहत सुजानकुमारि१८।१।१ ॥
समरसिंह१८।१।७किन्नी सु पट्टु, निंज महिषी यह नारि ॥२९॥
पुनि चंद्राउत रामपुर, सूरज भानुनरेस ॥
मंजु कनी तस हरकुमरि १८।१।७ अपर२ विवाह्यो एस ॥३०॥
कछवाही सुंदरकुमरि१८।१।३, वलि नरनाह बिबाहि ॥
उपयम किन्नँ तीन३ इम, वितरन विविध निबाहि ॥ ३१ ॥
समरसिंह१८।१।७कै च्यार४सुत, प्रथम१कुमर नरपाल१८।२।१।
अपर२नाम नप्प१८।२।१हु यहहि, हुव तदनुज हरपाल१८।२।२॥३२
अपरनाम हप्प१८।२।२हु यह रु, जैत्रसिंह१८।२।३ लघु जास ।

---

१ पुत्रवाली हुई ॥ २२-२३ ॥ २ यथार्थ अनुभव बिना ॥ २४ ॥ ३ सब से [बड़]े ॥ २५-२६-२७-२८ ॥ ४ पटरानी ॥ २९ ॥ ५ सुंदर ६ कन्या ७ दूसरा [विवाह] [क]िया ॥ ३० ॥ ८ विवाह ९ दान की विधि निबाह कर ॥ ३१ ॥ १० [जिसका] [छ]ोटा भाई ॥ ३२ ॥

तदनुज डुंगरसिंह १८२।४ तिम, इम प्रवीर चउ४ आसे ॥ ३३ ॥
पहिले१८२।१।१=२।२दुव२पहिली१८२।१प्रसव, जिमचंद्राउति१८२।१जात
तीजो१८२।३अरु चोथो१८२।४तनय, कछवाही१८१।३जें कहात ॥३४॥
याहि समय रनथंभ अग, दुसह अलाउद्दीन ११ ॥
लग्गो सुनि जिततित मुलक, निपज्यो डमर३ नवीन ॥ ३५ ॥
याहीतैं नृपसीम इत, परतट चम्मलि प्रांत ॥
भिल्लन मंडिय लूट भय, सु न परोक्ष हुव सांत ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

समरसिंह १८१।७ नरनाह तवहि चम्मलि द्रुत उत्तरि ॥
चंड विरचि चतुरंग सवँर तिसहँस३००० रन संहरि ॥
किय निर्भय केथोनि१ सीसवालिय २ वडोद ३ सह ॥
रहलावनि ४ रामगढ ५ मऊ ६ संगोद ७ दयो मह ॥
रच्छक अजेय तँहँ रक्खिकैं महि अधीस पच्छो मुरत ॥
पुनि सवर रुक्कि चम्मलि पुलिन आनि जुरे खिल अंकुरत ॥३७॥
दोहा–पिक्खि अलप परिकर नृपहिं, इम खिल भिल्लन आइ ॥
कोटा जँहँ तँहँ जंग किय, नदि चम्मलि नियराइ ॥३८॥
बुंदीसन पृतना वहुरि, पहुँचि महीपति पास ॥
किय निर्भय हय वीचकरि, नवसत९०० भिल्लन नास ॥३९॥

---

१ चारों वीर हुए ॥ ३३ ॥ कछवाही से २ उत्पन्न हुआ कहते हैं ॥ ३४ ॥ इसी समय रणथंभोर के पर्वत पर अलाउद्दीन का लड़ाई करना सुन कर सब ओर नवीन ३ उपद्रव उत्पन्न हुआ ॥ ३५ ॥ इसी कारण बुंदी की सीमा में ४ चामल नदी के परले किनारे के प्रांत में भीलों ने लूट खसोट शुरू की सो अप्रत्यक्ष रीति पर शांत नहीं हुई ॥ ३६ ॥ चम्मल नदी को ५ शीघ्र पार उतर, भयंकर ६ सेना रच, युद्ध में तीन हजार ७ भीलों को मार कर ८ उत्सव (सुख) दिया. चम्मल नदी के ९ किनारों को रोक कर फिर बाकी के भील १० खड़े हुए ॥ ३७ ॥ राजा को थोड़ी ११ परगह सहित देखकर इस प्रकार बाकी के भीलों ने आकर, अब जहां कोटा है तहां चामल नदी के १२ समीप युद्ध किया ॥ ३८ ॥ १३सेना ॥ ३९ ॥

कोटा जहँ पल्ली स्व करि, कौटिकै नाम किरात ॥
रहतो सो भजिगो दरित, गहन दुरावन गात ॥४०॥
संभरके भट तीनसत३००, खंड खंड हुव खेत ॥
पुरबुंदिय इम समर१८१७पहु, आयो विजय उपेत ॥४१॥
बुंदिय सप्तम७वरस वय, प्रथित पितासन पाइ ॥
समर१८१७ समर मारे सबँर, अतिधृति१९समवय आय॥४२॥
किन्न कुमर हरपाल १८२१२ हित, पुरजज्जाउर१ पेस ॥
जैत्रसिंह१८२१३ हित जयथलर२हिँ, लग्गो देन इलेस ॥४३॥
जैत्र१८२१ कहिय तुमसौं जनकं, जहँ भिल्लन किय जंग ॥
तँहँ मैं चम्मलि पारतट, दव्वौं खल रचि द्रंगं ॥४४॥
सुपहु किन्न स्वीकार सुहि, जैत्र १८२१३ तवहि तँहँ जाइ ॥
मारि भिल्ल कौटिक प्रमुख, वँलि कोटा२ बसवाइ ॥४५॥
वय निज लहि सोलह१६ बरस, पाइ सु भोग्य प्रदेस ॥
भिल्लन खिलन भजाइ भट, अडर रह्यो तँहँ एस ॥४६॥

॥ युग्मम् ॥

सुत लघु डुंगरसिंह १८२१४ हित, अधिप खजूरिय३ अप्पि ॥
सत्रुनसिर प्रतप्यो समर १८१७,महि इम सुतन समप्पि ॥ ४७ ॥

॥ सचरगगद्यम् ॥

बुंदीके अधीस हड्डाधिराज समरसिंह १८१७ को दूजो पुत्र

जहां अय कोटा है तहां अपनी १ पाल (कोश में छोटे ग्राम को तथा लौकिक में भीलों की बस्ती को पाल कहते हैं) बसाकर २ कोट्या नामक ३भील रहता था सो डरकर वन में छिपने के लिये भग गया ॥ ४०-४१ ॥ सात वर्ष की अवस्था में ४ प्रसिद्ध पिता से बुंदी पाकर उन्नीस वर्ष की अवस्था में ५ समरसिंह ने ६ युद्ध में ७ भीलों को मारे ॥ ४२ ॥ ८भूपति देने लगा ॥ ४३ ॥ जैत्रसिंह ने कहा कि ९ हे पिता! जहां पर तुमसे भीलों ने युद्ध किया है तहां चामल नदी के परले किनारे १० नगर रच कर दुष्टों को दबाऊं ॥ ४४ ॥ कोट्या ११ आदि भीलों को मारकर उस कोट्या भील के नाम पर १२फिर कोटा बसाया ॥४५-४६-४७॥

हरपाल १८२।२ जज्जाउरपुर १ को स्वामीभयो ताके संतानती स मस्तही हड्डनमें पंचम ५ भेद पाइ हरपालपोते ३।५ कहाये ॥

अरु कोटा२के अधीस जैत्रसिंह १८२।३ के कुलके हड्डनमैं छट्ठो ६ भेदपाइ जैताउत्त २।६ भये तिनमैंहीं पीछैं तीन ३ पीढी के अनंतर खंधिल १८५ हू सूरता १ उदारता२मैं बिसेसहू बढ्यो जाने बुंदीके संगरमैं मंडूके पातसाहके सोलह १६ सामंत मारि सूरसज्जापैं सयनकरि आपुनौं नाम उबारयो* तासौं एही जैताउत्त २।६खंधिलोत्त २।६ ऐसोहू उपटंक पाइ ठाये ॥

डूंगरसिंह १८२।४ के अन्वयके खजूरी ३ खेटके निवासकरि हड्डनमैं सप्तम७ भेद पाइ खजूरीके३।७ ऐसो उपटंक कहावत भये ॥

अरु सर्वही सूर हितैरनमैं सत्रुनको सोक सहावत वितैरनमैं बित्तकी बाहिनी बहावत स्वकीय सविता संभर संतान सविताकौं सम्मद गहावत भये ॥ ४८ ॥

इतकौं यवनेंद्र अलावुद्दीन रनस्तंभको बिजयकरि चंडासिराज हम्मीर १८२ के पुत्र रत्नसिंह १८३ को रानाँलक्खनके सरनगयोजानि पीछो दिल्लीजाइ दूतनकौं चित्रकूट पठाइ संभरराजके सूनुकौं गहाइदेबेकी कहाई ॥

तामैं रानाँकौं प्रतिकूल जानि बिजयके लोभलगि मेदपाटदेशको लैबो बिचारि सीसोदराज के सम्मुह वर्षाकालकी बाहिनी की बिडंबक बडे बिस्तारकी बाहिनी बहाई ॥

तहाँ कितनौंक कटकतो पातसाहके प्रस्थानके पहिलैंहीं पहुँ-

*अमर किया. १खिताब पाकर२ प्रसिद्ध हुए. डूंगरसिंहके ३वंशके खजूरी नामके ४खेड़ा में रहने के कारण. ५ वीरता में. ६ दान में. ७धन की ८ नदी बहाते हुए अपने ९ पिता को चहुवाण की संतान होने का. युद्ध के रसिक १०सूर्य को ११ हर्ष कराया ॥ ४८ ॥ १२ चीतोड़ को दूत भेज कर चहुवाण राजा हम्मीर के १३ पुत्र रत्नसिंह को पकड़ा देने की कहलाई. १४मेवाड़. १५ नदी की १६अनुकरण (नक़ल) करनेवाला १७ सेना चलाई. कितनी ही १८ सेना तो बादशाह के

चि मेवारमैं डमर मचावत भयो ॥

याही अवसरमैं अचानक जाइ निश्रेनीनकी श्रेनी लगाइ हड्डाधिराज समरसिंह १८।१७ आपुनैं अन्वयके परपुरुष मंडन१६८के रचे मंडनगढनाम दुर्गमैं पैठि आपुनौं अमल रचावतभयो ॥ ४९ ॥

॥ दोहा ॥

पहिलैं यह गढ करि कपट, नागपाल नरनाह ॥
रान लयो नृप रैंन १७५ सौं, रक्खी रंच न राह ॥ ५० ॥
सु अब रान लक्खन समय, संभर नृप समरेस१८।१७॥
गिनि स्वकीय पच्छो गहिय, वलि कछु प्रांत विसेस ॥ ५१ ॥
धर गतैं लक्खन पट्टधर, सुनि कुमार अरिसीह ॥
पठई कहि असे परवं, लुप्पी तुम हित लीह ॥ ५२ ॥
हड्ड कहिय तुमलौं न हम, लयो कपटरचि लेस ॥
पैठि दुग्ग खग्गन प्रहरि, अपनायउ नयं एस ॥ ५३ ॥
सुनि चिंतिय अरिसिंह तव, इत रन करन प्रयान ॥
जानि नियंत आवत जवन, रोक्यो कुमरहिं रान ॥ ५४ ॥
इक१हि अलावुद्दीन११ इत, कहुँ गतैं विपिनैं सिकार ॥
तत्थहि पहुँचि भतीज तस, सुलेमान गहि सारे ॥ ५५ ॥
दे प्रहार मूर्छितदसा, जिहिं काका मृतैं जानि ॥

निकलने से पहिले ही मेवाड़ में पहुंच कर १उपद्रव मचाया. निसरनियों की २ पंक्ति लगाई. अपने ३ वंश के. ४ मांडलगढ ॥ ४९ ॥ ५ रत्नसिंह से ॥५०॥ मांडलगढ को ६अपना जान कर कुछ अधिक प्रांत के साथ पीछा लिया ॥५१॥ भूमि ७ को गईहुई जान कर महाराणा गढलक्ष्मणसिंह के पाटवी कुँवर अरिसिंह ने कहला भेजा कि ऐसे ८ समय में तुमने स्नेह की सीमा का उल्लंघन किया है ॥ ५२ ॥ यह ९ नीति है ॥ ५३ ॥ यह सुन कर अरिसिंह ने युद्ध के लिये इधर आना चाहा परंतु महाराणा ने बादशाह का १०निश्चय ही आना जान कर कुमर को रोक दिया ॥ ५४ ॥ इधर अकेला अलाउद्दीन १२वन में कहीं शिकार खेलने को ११गया था तहां उसके भतीज सुलेमान ने १३तरवार लेकर ॥ ५५ ॥ प्रहार करके मूर्छित दशा में काका को १४ मराहुआ जान,

पुर दिल्लिय निर्भय प्रविसि, आधिपत्य लिय आनि ॥ ५६ ॥

प्रायो मरुदेशीयप्राकृतमिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

इणावीसमय राणाँ लक्खणरो पट्टपकुमार अरिसिंह आखेटमैं रमताँ कोई ग्रामरा परिसरमैं एक चंदाणा जातिरा हळखड़ रजपूतरी पुत्रीनूँ वळमैं अतुळ जाणि प्रसभपूर्वक परणियो ॥

अर केहीदिन उठैही रहि चंदाणी कुमराणीनूँ आधानसहित पिउहर ही मेल्हिआयो पछैं जिण प्रसवरै समय हम्मीरनाम कुमार जणियो ॥

सोतो बाळकथको आपरी मातासमेत पिता१पितामह२रा बुलावणरो अवसर न जाणि नाँनाँरै घरही रहै ॥

अर अठी चित्रकूट चंडासिराज हम्मीर १८।१।१रा पुत्र रत्नसिंह ८३।३नूँ सरणाँ राखि राणा लक्खणसिंहरो मन आपरै आथाण रावता अलाउद्दीन११रा अनीकनूँ चंड चंद्रहास चखावणरी चहै।५७।

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

रूप१८।१।१ भरोसाके भटन, इत मंडनगढ अप्पिं ॥
आयो बुंदिय रन असह, थिर जय जस जग थप्पि ॥ ५८ ॥
पुब्बहि१८।१।१ नृप बुंदीपुरी, विस्तररसह बसवाइ ॥
रक्खी अरि आहव उचित, गुरु प्राकार लगाइ ॥ ५९ ॥
कुमर नृप्प१८।२।१ के हुव कुमर, बुंदियपुर इहिँ बेर ॥
जग जंपत हम्मीर१८।३।१ जिहिँ, कहि आकरँ गुनकेर ॥ ६० ॥
साहगमन चित्तोर सुनि, समरसिंह१८।१।७ नरनाह ॥

दिल्ली में आकर १ बादशाहत ले ली ॥५६॥ २ शिकार में किसी ग्राम के ३ समीप की भूमि में ४ अतोल ५ हठ पूर्वक ६ गर्भ ७ स्थान ८ सेना को भयंकर ९ खड्ग ॥ ५७–५८ ॥ १० विस्तार सहित बसाकर ११ बड़ा १२ कोट बनाकर ॥ ५९ ॥ गुणोंकी १३ खान कह कर ॥ ६०–६१ ॥

सज्जे बुंदिय दुर्गसह, सत्रहसहँस१७००० सिपाह ॥ ६१ ॥
मंडनगढ पुनि मुक्कलिय, सहँससत्त७००० दल सज्जि ॥
रुपि अप्पन बुंदियरह्यो, गिरि मइंदगति गज्जि ॥ ६२ ॥
पठयो दिल्लिय पुव्वही, कन्ह सचिव कायत्थ ॥
साह सु इत पाटव समय, पहुँच्यो वासवंपत्थ ॥ ६३ ॥
जियत सौंदि सतपंच५०० जुत, देखि अल्लावुद्दीन११ ॥
सब मुरि प्रकृति भतीजसन, हुव याकेहि अधीन ॥ ६४ ॥
कैलि भतीजहिँ कुलकरन, तस संगिन सिरतोरि ॥
पट्ट अल्लावुद्दीन११ पहु, बैठो अभय वहोरि ॥ ६५ ॥
पुव्वहि कछु दल पिल्लयो, महि लुट्टन मेवार ॥
चित्तोरहिँ जित्तन चल्यो, अब अप्पहिँ कलिकार ॥ ६६ ॥
लक्खेरिय दर लंघिकैं, अप्पन सीमा आत ॥
उहाँ सालिवाहन१८।१२ अनुज, भेज्यो सम्मुह भ्रात ॥ ६७ ॥
गज इक नाम सु घनगरज, तिम चउ४ खास तुरंग ॥
उपदामँ पठये इते, सोदरं१८।१२ अप्पन संग ॥ ६८ ॥
अति ढिग आवत अप्प१८।७ हू, पेयँ१ खाद्यँ२ करि पेस ॥
गुनआश्रय६ गहि साहसन, आयो मिलि पटु एस ॥ ६९ ॥

पर्वत में १ सिंह के समान गर्जना करके ॥ ६२ ॥ बादशाह की २ नैरोग्यता के समय में ३ दिल्ली गया ॥ ६३ ॥ अलाउद्दीन को पांच सौ ४ सवारों सहित जीवित देख कर उसके भतीजे सुलैमान को छोड कर ५ वजीर आदि राज्य के सब अंग अलाउद्दीन के आधीन होगये ॥ ६४ ॥ ६ कैद करके अपने कुल में होने के ७कारण उसको मारा नहीं, और उसके साथियों के सिर तुड़वाकर अलाउद्दीन फिर पाट बैठा ॥ ६५ ॥ मेवाड़ की भूमि लूटने को कुछ सेना तो पहिले ही भेजी थी ८ युद्ध करनेवाला ॥ ६६ ॥ लाखेरी के दरे को लांघकर बुंदी की सीमा में आते ही शालिवाहन नामक छोटे भाई को राजा ने बादशाह की पेशवाई को भेजा ॥ ६७ ॥ ९ नजराने में अपने १०सगे भाई के साथ॥६८॥ बादशाह के अत्यंत समीप आने पर बुंदी का राजा स्वयं समरसिंह भी ११ पीने के १२ खाने के पदार्थ नजर करके नीति का छठा गुण (आश्रय) ग्रहण करके वह चतुर, बादशाह से मिलकर आया ॥६९॥

पुर खीनाँ दर लंघि पुनि, जात अग्ग जवनेस ॥
बुंदिय मित बंबावदहु, उपदा किन्न असेस ॥ ७० ॥
याही मित[2] चंद्राउतन, सुन्यौं उपायन सोर[3] ॥
पहुँचि चमू जवनेस पुनि, चुनि विंटिय चित्तोर ॥ ७१ ॥
भूप कतिक सहँचर भये, नियति नम्र मिलि मग्ग ॥
संग कतिन दिय भ्रात १ सुत२, इक१रहि रान उदग्ग ॥७२॥
वसु द्रग गुन भू १३२८ मित बरस, बिक्रम नृप सक बेर ॥
जवनराज चित्तोरजँहँ, घोर जोरदिय घेर ॥७३॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेपूर्वायणे पंचम५राशौ वीतिहोत्र
चराडासि १ वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्य

खीएया नामक पुर के दर्रे को लांघ कर बादशाह के आगे जाने पर बुंदी के १ मुवाफ़िक़ बंबावदा के राजा ने भी नजराना पेश किया ॥ ७० ॥ इसी २ मुवाफ़िक़ रामपुरा के चंद्रावत के ३ नजराना करने का शोर सुना ॥ ७१ ॥ कितने ही राजा, अपने ५ नियमों को नम्र करके मार्ग में मिल कर बादशाह के४साथ होगये; और कितनों ही ने अपने भाई और बेटों को साथ करदिया, उस समय६उद्धता को धारण करनेवाले एक महाराणा ही रहे ॥ ७२-७३* ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पंचम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा-

* ग्रन्थकर्ता सूर्यमल्ल ने अलाउद्दीन और राजा हम्मीर चहुवाण की लड़ाई विक्रमी संवत् १३१२ में होना लिख कर चित्तोड़ के महाराणा गढलक्ष्मणसिंह का सहायक होना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि इस समय में तो अलाउद्दीन और गढलक्ष्मणसिंह का जन्म भी नहीं हुआ था. यह संवत् बड़वाभाटों का कल्पना कियाहुआ है. अन्य इतिहासों के देखने से पायाजाता है कि अलाउद्दीन और राजा हम्मीर की लड़ाई विक्रमी सम्वत् १३५६ में हुई थी, जिसमें एक वर्ष भर वीरता से युद्ध करके हम्मीर मारा गया, जिसके पीछे तीसरे वर्ष विक्रमी सम्वत् १३५९ में अलाउद्दीन ने चीत्तोड़ के रावल रत्नसिंह पर चढाई करके चित्तोड़में घोर संग्राम किया सो अन्य इतिहासों में और विशेष करके'वीरविनोद'नामक मेवाड़ के इतिहास में यह युद्ध पद्मिनी रानी के कारण होना लिखा है, परन्तु यह भी संभव है कि हम्मीर का पुत्र रत्नसिंह, रावल रत्नसिंह के शरण चित्तोड़ में चला गया होवे तो युद्ध का एक कारण यह भी होसक्ता है; परन्तु विक्रमी सम्वत् १३२८ में गढलक्ष्मणसिंह के साथ अलाउद्दीन की लड़ाई होना असंभव है; क्योंकि इस समय गढलक्ष्मणसिंह चित्तोड़ की गद्दी पर नहीं थे. महाराणा गढलक्ष्मणसिंह का युद्ध दिल्ली के बादशाह मुहम्मद तुगलक़ के साथ विक्रमी सम्वत् १३९० के लगभग हुआ था; जिसको बड़वाभाटों की भूल से ग्रन्थकर्ता ने सम्वत् १३२८ में अलाउद्दीन के साथ लिख दिया है ॥

विहितव्याख्यानावसरव्याहार्यहड्डाधिराजदेवसिंह १८०।१ चरमसमयसहितबुंदीशसमरसिंह १८१।१ चरिते प्रेष्टागौडी १८०।३ पुत्रसमरसिंहा १८१।७र्थबुंदीयुक्तदत्ताऽर्द्धराज्यहड्डाधिराजदेवसिंह १८०।१ तनुत्यजन १ स्वौरससुतार्थसमर्पितहड्डहेलित्वतृतीय ३ राज्ञीगौडी १८०।३ सहगमन २ नामान्तरख्यातिसहितदेवसिंह १८०।१ जनितद्वादश१२पुत्रोद्देशन ३ प्रतिपुत्रतत्तन्मातृनिश्चयन ४ प्राप्तबंबावदाधिपत्यहरराजा १८१।२ऽनुजहत्थ १८१।२ प्रातिहारी १८१।२।१ राष्ट्रकूटी १८१।२।२ पत्नीद्वय२परिणायन ४ तदौरससुर्जना १८२।२ दिपुत्रत्रय ३ संततिहड्डकुलतृतीय ३ भेदहत्थावुत्तो १।३ पटङ्कप्राप्त्या ५ भटशूरा १८१।३ दिभ्रातृनवक ९ निस्सन्ततिसमापन ६ हड्डाधिराजहरराज १८१।१ शैसोदी १८१।१।१ प्रमुखपत्नीषट्कपरिणायन ६ हल्लू १८२।१ प्रमुखसर्वराज्ञीपुत्रद्वादशक १२ प्रकटन ७ तदन्तस्तृतीय३लोहराज १८२।३ वंशभविष्यत्समाप्तिसूचन ८ ज्येष्ठहल्लू १८२।१ जननहल्लूपौत्रो१।४पटङ्कितहड्डकुलचतुर्थ ४ भावभेदप्रवृत्तिद्योतन ९ प्राप्ताऽर्द्धराज्यकृतबुन्दीस्कन्धावारसमाक्रान्त-

ओं की कथा के वचनों में हड्डाधिराज देवसिंह के अन्त समय सहित बुन्दी के पति समरसिंह के चरित्र में प्यारी गौडी के पुत्र समरसिंह के अर्थ बुंदी सहित आधा राज्य देकर हड्डाधिराजदेवसिंह का शरीर छोडना, अपने औरस पुत्र के अर्थ हाडा क्षत्रियों का सरजपन देकर तीसरी रानी गौड़ी का सती होना, नामान्तर की प्रसिद्धि सहित देवसिंह के बारह पुत्रों का कथन, पुत्र पुत्र प्रति उनकी माताओं का निश्चय करना, बम्बावदा का राजा र हरराज के छोटे भाई हत्थ का प्रतिहारी और राठोड़ी दो स्त्रियों से वि-ह करना, उसके औरस सुर्जन आदि तीन पुत्रों की संतान का हाडों के कुल में तीसरा भेद 'हत्थाउत्त' पदवी पाना, भटसूर आदि नव भाइयों का नस्संतान मरना, हड्डाधिराज हरराज का सीसोदिनी आदि छः स्त्रियों विवाह करना, सब रानियों के हल्लू आदि बारह पुत्र प्रकट होना, उनमें तीसरे लोहराज के वंश की भविष्यत् काल में समाप्ति की सूचना करना बडे हल्लू के जन्म से हल्लूपोते की पदवीवाले हाडों के कुल के चौथे की सूचना करना, आधा राज्य पाकर बुन्दी को राजधानी बनाकर वाम-

चर्मण्वतीपारप्रान्तप्राप्तपितृ १ मातृ २ प्रसादमुख्यीभावहल्लाधिराजसमरसिंह १८।१७ चालुकीसुज्ञानकुमारी १८।१९ प्रभृत्रराज्ञीत्रयो ३ पयमन १०प्रत्येकराज्ञयौरसनरपाला१८।१९ दितत्पुत्रचतुष्क ४ समुद्भवन ११ रणस्तम्भरणसमयश्रुतपरतटप्रान्तभिल्लोपद्रवहल्लाधिराजसमरसिंह १८।१९ शबरसहस्रत्रय ३००० व्यापादन १२कृतनिर्भयपरतटप्रान्तकैथोदादिपुरन्यस्तरक्षकप्रत्यागच्छन्नरेन्द्रयुध्यमानभिल्लशतनवक ९०० संहरण १३ नृपसुभटशतत्रय ३०० शूरशय्याशयन१४ हल्लेन्द्रविध्वस्तपल्लीककौटिकनामपुलिन्दपलायन १५ प्राप्तजज्जावुर १ कोटा२खजूरी३करराजकुमारहरपाल १८२।२ जैत्रसिंह १८२।३ डुंगरसिंह १८२। ४ भाविवंशहरपालपौत्र २।७ जैत्रावुत्त २।८ खर्जूरीको ३।७ पटकत्रयप्राप्तिसूचन १६ यवनशाहअलाउद्दीन ११ चित्रकूटराजराणालक्ष्मणसिंहपार्श्वहाम्मीरिरत्नसिंह१८३ मार्गण १७ शीर्षोदराजतदनङ्गीकरण१८प्रतिश्रुतशरणागतत्राणराणाराष्ट्रजिगीषुप्रतिष्ठासुम्लेच्छराजप्रेरितसैन्यान्तरसेदपा

नदी के पार के प्रांत को लेकर माता पिता की प्रसन्नता से मुख्यभाव को प्राप्त करके हल्लाधिराज समरसिंह का सोलंखिनी सुज्ञान कुमारी आदि तीन रानियों से विवाह करना, प्रत्येक रानी के उदर से नरपाल आदि उसके चार पुत्रों का जन्म होना, रणस्तम्भ के युद्ध समय में चंबल नदी के पार के देश में भीलों का उपद्रव सुन कर हल्लाधिराज समरसिंह का तीन हजार भीलों को मारना, नदी के पार के प्रान्त को निर्भय करके 'कैथूदी' आदि पुरों में रक्षक स्थापन करके पीछे आतेहुए राजा से फिर युद्ध करनेवाले नौ सौ भीलों को मारना, राजा के तीन सौ सुभटों का माराजाना, हल्लेन्द्र की विनाश कीहुई पाल से कोट्या नामक भील का भागना, जज्जाउर १ कोटा २ खजूरी ३ पाकर राज कुमार हरपाल–जैत्रसिंह–डूंगरसिंह के आगे होनेवाले वंश को 'हरपालपोता, जैताउत्त, खजूरीका' इन तीन पदवियोंको पाने की सूचना करना, बादशाह अलाउद्दीन का चित्तोड़ के राजा राणा लक्ष्मणसिंह के पास से हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को मांगना, उससे सीसोद राजा का अस्वीकार करना, पीछा सुनकर शरणागत की रक्षा करनेवाले राणा के राज्य को जीतने की इच्छावाले गौरव से म्लेछराज की भेजीहुई

देशडमरविस्तरण १८ प्राप्तावसरहड्डाधिराजसमरसिंह१८१।७मण्डनगढनामदुर्गसमाक्रमण १९ राणाश्रुतगतदुर्गहड्डेन्द्रयुयुत्सुस्वकीयपट्टपकुमाराऽरिसिंहनिवारण २०मृगयागतप्रहरणप्रहारितैकाकिस्वपितृव्यकदिल्लीशालाबुद्दीन ११मूढदशानिश्चितपरासुत्वतद्भ्रातृजसुलेमानदिल्लीसमाक्रमण २१ तत्समयमृगव्यरमणाणकुमाराऽरिसिंहक्षात्रबन्धुचन्दाणीपरिणयन १२ तत्पितृगृहन्यस्तसभ्रूणाकुमारचित्रकूटागमन २२ तदनन्तरपितृपस्त्यस्थकुमारपत्नीचन्दाणीहम्मीरनामकुमारप्रसवन २३ मण्डनगढस्थापितविश्वस्तरक्षकहड्डाधिराजप्राक्कालमकृतिविस्तारितवसतिबुन्दीपुरागमन२४श्रुतयवनेंद्रागमपुनर्मण्डनगढप्रस्थापितसप्तसहस्र ७००० सैन्यनरेन्द्र १८१।१ बुन्दीदुर्गसप्तदशसहस्र १७००० सुभटसज्जीकरण २५ तत्प्राक्कालस्वकीयसचिवकृष्णनामकायस्थयवनेन्द्रानुमोदनार्थदिल्लीप्रेषण २६ समयप्राप्तपाटवदिल्लीसमागतरुद्धसलेमानविध्वस्ततत्साङ्गिजनपुनःप्राप्तपट्टयवनराडलाबुद्दीन ११ चित्रकूटविजयप्रस्थान २७ हड्डाधिरा-

---

सेना का मेवाड़ में उपद्रव करना, समय पाकर हड्डाधिराज समरसिंह का मांडलगढ नामक गढ लेना. गढ का गयाहुआ सुनकर हड्डेन्द्र से युद्ध करने की इच्छावाले पाटवी कुमर अरिसिंह को राणा का रोकना, शिकार में गये हुए अकेले अपने काका अलाउद्दीन को शस्त्र से प्रहार करके मूर्छित दशा में मराहुआ जान कर उसके भतीजे सुलेमान का दिल्ली लेना, उसी समय में शिकार खेलतेहुए कुमर अरिसिंह का हल्लके वंश के क्षत्रिय 'चन्दानी' से विवाह करना, गर्भ के बालक सहित उस गर्भिणी को उसके पिता के घर में रखकर कुमर का चित्तोड़ आना, जिस पीछे पिता के घर में रहीहुई कुमरानी 'चन्दानी' का 'हम्मीर' नामक कुमार को जन्म देना, मांडलगढ में भरोसे के रक्षक रख कर हड्डाधिराज का पहले समय में शिल्पविद्या से विस्तार पूर्वक बसाईहुई बुन्दी में आना, बादशाह का आना सुन कर फिर मांडलगढ में सात हजार सेना रख कर नरेन्द्र का बुन्दी के गढ में सत्रह हजार सुभटों का सज्ज करना, उनके पहले समय में अपने मंत्री 'कृष्ण' नामक कायस्थ को बादशाह की प्रसन्नता के लिये दिल्ली भेजना, नीरोगता का समय [illegible] अथवा कुछ समय से नीरोगता पाकर दिल्ली में आकर सुलैमान को कैद [illegible]

जस्वसीमागतम्लेच्छराजसमीपगज १ हयो ४ पायनसहितस्वकीयसोदराऽनुजशालिवाहन १६।१२ प्रस्थापन २७ निकटसमागतखाद्य १ पेया २ दिसन्मानितयवनेन्द्रसभास्वयंसम्मिलन २८ पुनः प्रस्थितादिल्लीशबुन्दी १ समानवस्बावद २ रामपुरो ३ पदाप्रापण २९ शरणसमागतराजतासेवकीभावसमादान ३० विस्तृतवरूथयवनेन्द्रचित्रकूटवेष्टनशकसूचनं प्रथमो १मयूखः ॥ १ ॥ आदितः सप्तचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४७ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

दुसह अलावुद्दीन११सौं, लक्खनन्नृप जस लाह ॥
इक्क मुररि गढ अंकुरयो, रक्खो अज्जन राह ॥ १ ॥

गीतिका ॥

बलँ थाँहबर्जित साह यौं नरनाह लक्खन बिंटयो ॥
भुव छाइ जोजन दुग्ग जो गरदाइ फोजन भिंटयो ॥
परिबेसमध्य दिनेसलौं मनुजेसं-रान प्रकासभो ॥

सके साथियों को मारकर अलाउद्दीन का फिर पाट बैठना, चितोड़ को विजय करने के प्रस्थान में हड्डाधिराज का अपनी सीमा में आयेहुए म्लेच्छराज के समीप एक हाथी और चार घोड़े सहित नजराना अपने सगे छोटे भाई शालिवाहन के साथ भेजना, समीप आयेहुए खानपानादि से सन्मान किये हुए बादशाह की सभा में स्वयं समरसिंह का मिलना, फिर गमन कियेहुए बादशाह को बुन्दी की बराबर वस्वावदा और रामपुरावालों का नजराना देना, मार्ग में आयेहुए राजाओं का सेवकभाव ग्रहण करना, बड़ी सेना से बादशाह का चित्तोड़ को घेरने के संवत की सूचना करने का प्रथम मयूख समाप्त हुआ ॥ १ ॥ आदि से १४७ मयूख हुए ॥

१ महाराणा गढलक्ष्मणसिंह. २ गढ में खड़ाहुआ. ३ आर्यों के मार्ग को रक्खा ॥ १ ॥ इस प्रकार ५ अथाह ४ सेना से बादशाह ने राणा लक्ष्मणसिंह को ६ घेरा. उस गढ को फौजों से घेर कर एक योजन भूमि को छाकर. ७ भिड़ा उस समय ८ परिवेष (कुंडलाकार उत्पात सूचक सूर्यचन्द्र के रश्मिमंडल को परिवेष कहते हैं) में. ९ सूर्य के समान १० मनुष्यों का पति महाराणा

लवनोदकौं चउ४कोद लै जंबु द्वीप जंबुव भासभो ॥ २ ॥
वपु ढंकि कंदर बासुकी किं अगेसं मंदर आँवरयो ॥
कि मनौं वराटक वीच वाटक कंज केसरनैं करयो ॥
रिपु वृत्तं दुर्ग नरेंद्रको इम केंद्र सन्निभ ठहैरह्यो ॥
दुहुँ२ ओर घोर सजोर व्है दगि सोर भूतलकौं दह्यो ॥ ३ ॥
मिलि दाँव दुस्सह तावदे अररीव नालिनको मच्यो ॥
तिहिं वार झार फुलिंग फारँ प्रसारमैं गिरि जो तच्यो ॥
लगि चक्क ढक्कन यौं झलक्कन धूम संकुल व्हैलस्यो ॥
वहु विज्जु मिश्रित अभ्र जाति अदभ्र कौंननपैं वस्यो ॥ ४ ॥
वढि वज्र वेर नसात नैरन फेर फेरनपैं वनैं ॥
चहुँ४ओर यौं सुनि सोर संकिय भारज्यौं तरकैं चनैं ॥
धकि वन्हि वित्थरैं पत्थ पत्थर भू थरत्थर व्है झुकी ॥

प्रकाशित हुआ ३ मानों १ क्षारसमुद्र को चारों २ दिशाओं में लेकर जम्बूद्वीप ४ शोभायमान हुआ ॥ २ ॥ ५ किंवा कंदरावाले शरीर को ढककर वासुकि नाग ने ६ पर्वतों के पति मंदराचल को ७ घेरा. किंवा ८ कमल के डब्बे के बीच में ९ कमलगट्टा घिरगया, अथवा मानों उस कमल के डब्बे को कमल की १० केसर (कमल के डब्बे के चारों ओर की शलाकाओं को केसर कहते हैं) ने डब्बे को बीच में करलिया, अथवा शत्रुओं रूपी ११ परिधि (गोलाकार) में राजा का गढ १२ केन्द्र (गोलाकार का मध्यस्थान) के १३ सदृश होरहा है. दोनों ओर भयंकर और बलवान् होकर बारूद ने जलकर भूमितल को जलाया ॥ ३ ॥ दोनों ओर से १४ ज्वाला मिल कर दुःसह ताव देती है, और तोपों का १५ अरराट (अखण्ड शब्द का अनुकरण है) शब्द मचरहा है, उस समय में ज्वाला और १६ अग्निकणों के १७ समूह के फैलाव में वह पर्वत १८ जला, इस प्रकार १९ सेना चमक कर चक्रको ढकनेलगी और धुआँ २०भर कर ऐसा शोभायमान हुआ, मानों बहुत२१बिजुलियों से मिला हुआ २२ मेघ बडे २३ वन पर बसा है ॥४॥ वज्र के समान गोले बढ बढ कर वैर और नगरों का नाश करते हैं, यह बनाव तोपों के फैर फैर के साथ बनता है, भाड में चने तडकें इस प्रकार का शब्द सुन कर चारों दिशाएं शङ्कित हुईं. अग्नि के जलने से, पत्थरों के मार्ग में २४फैलने से भूमि कम्पायमान होकर धुकती है, झड में बरसती हुई मेघमाला नीचे को झुकती है

झर बुट्ठती घनमालतौं फनमाल आलुकको झुकी ॥ ५ ॥
जिम साह चाह सिपाह गोलन दुग्ग डोलन जोरिदै ॥
तिम रानकेभट तोपजालन म्लिच्छ ढालन तोरिदै ॥
सह अर्थ भो वह चित्रकूटहु सोन१ धूम२ कृसानु३ सौं ॥
भुव अंधकार अपार कैं रज वादमंडिय भानुसौं ॥ ६ ॥
गढलग्गि गोलन अट्ट१ गोपुर २ कोट३कंगुर४ के गिरैं ॥
बलँ लग्गि बारन१ बाजिर२बीर३न ब्रुत्थि कोसन लौं किरैं ॥
इत सौध१ गोख२ लदाव३ मंडप४ थंभ५छत्रिय६उल्लटैं ॥
उत केशिका१ अपटी२ बितान३ रु तल्प४ ज्वालनमैं अटैं ॥७॥
पवि बाज गाज दराज तोपन गब्भ गब्भिनिके परैं ॥
अहि१ रत्ति२ तत्ति निवान आवटि नीर सीढिन उत्तरैं ॥
लहि धूम नैनन गैन ऐनन अंधता चिरलौं लगैं ॥
जरिकैं अनेकन पच्छ१ केकन पुच्छ२ चंगनलौं जगैं ॥८॥

उसके समान १ शेषनाग की फणमाला झुकती है ॥ ५ ॥ जिस प्रकार बादशाह की चाह के मुवाफिक सिपाही लोग गोलों से जोर देकर गढ को २ हिंडोला बनादेते हैं, उसी प्रकार महाराणा के वीर तोपों की ज्वाला से अथवा तोपों की जाली से म्लेच्छों के ३ निशानों (झंडों) को तोड़ देते हैं. वह चित्रकूट (चित्तोड़) ४रक्त, धुआँ और ५ अग्नि से सार्थक होगया, अर्थात् आश्चर्य करानेवाला होगया. रज (धूलि) ने पृथ्वी पर अपार अन्धकार करके सूर्य से वाद (हठ) मांड दिया कि मैं तुम्हारा प्रकाश भूमि पर नहीं आने दूंगी ॥ ६ ॥ गोले लगने से गढ की कितनी ही छत्तें, ६ शहर के दरवाजे, कोट और कांगरे गिरते हैं. ७ सेना लग कर हाथी, घोड़े और वीरों की यूथें (टुकड़े) कोसों तक ८गिरती हैं. इधर ९ महल, झरोखे, लदाव १० घुम्मट, खंभे, छत्रियें उलटती हैं; और उधर ११ छोटे डेरे (रावटी) १२ कनात १३ शामियाने और १४ शयन करने के डेरे ज्वाला में जलते हैं ॥ ७ ॥ १५ वज्र के शब्द के समान तोपों की १६ बडी गर्जना से गर्भिणियों के १७ गर्भ पड़ते हैं. १८ दिन १९ रात. गर्मी से निवाणों का पानी उबल कर सीढियें उतर जाता है; और २० आकाश, घरों और नेत्रों में धुआँ भर कर चिर काल तक अन्धपन लाते हैं; अनेक पक्षियों के पंख और कितनों की पूँछें जल कर पतंगों (गुडियों) के समान जलते हैं ॥ ८ ॥

रन कौतुकीन विमान जे कछु उच्च धूमित व्है रहैं ॥
चित चित्र *चंडमरीचि त्यौं रजके अभावहिकौं चहैं ॥
कटिजात हत्थिन सुंडि पन्नगपात अध्वरज्यौं करैं ॥
अगतैं मयूर उडान ज्यौं द्विपं पिट्ठि केतनं उत्तरैं ॥ ९ ॥
इम अंधकार प्रसार लोलक आग्गि गोलक उल्लसैं ॥
हरिचक्रकी कि अलोककेक तमगाढ रंचक भा हसैं ॥
किंमु अर्क अंबुंद चक्कं अंतर अग्गि प्रेतनकी कुंहू ॥
सननंकि जावत पिक्खि भावत नाँ समा उपमा सुहू ॥१०
डगमग्गि सैलन सृंग फैलन लोक गैलनमैं डरैं ॥
बुधं वीर जालं त्रिकाल साधक काल आन्हिक बीसरैं ॥
अतिगाज जात दरारि भूतल पक्क दारिम ओपलैं ॥
तहँ थान नामहि जो लख्यो सहि जो निरंतर तोपलैं ॥११॥
गुरुता परक्खन के चरक्खन चक्र चक्खन भू ग्रसैं ॥

युद्ध देखनेवालों के विमान ऊपर ही धूसरे होरहे हैं, और इसीप्रकार युद्ध देखने के आश्चर्य से * सूर्य अपने चित्त में रज का अभाव चाहता है हाथियों की सूंडें कटकर जनमेजय के २ यज्ञ में १ सर्प पड़ते थे ऐसे पड़ती हैं. ३ पर्वत से मयूर के उडान के समान ४ हाथियों की पीठ से ५ ध्वजाएं उतरती हैं ॥ ९ ॥ इसप्रकार अन्धकार के फैलाव में ६ चपल अग्नि के गोले शोभायमान होते हैं, सो मानों विष्णु के चक्र की कान्ति ७ अतलादिक लोकों के घोर अन्धकार पर ईषत् हास्य करती है, अर्थात् मुसुकुराती है. ८ मानों. १० मेघ के बीच में ९ सूर्य होवे इसीप्रकार ११ सेना में अग्नि दिखाई देती है, अथवा जिस प्रकार १२ नष्टचन्द्रा अमावास्या में प्रेतों की अग्नि दीखै ऐसे दीखती है. वह तोपों के गोलों की अग्नि शीघ्रता से जातीहुई दीखती है उसके समान कोई उपमा नहीं रुचती ॥ १० ॥ पर्वतों के शिखर हिल कर फैलने से मनुष्य मार्ग में डरते हैं. तीनों समय की संध्या करनेवाले बडे १३ पंडित भी उस अंधेरे के १४ समूह में १५ संध्यासमय को भूलते हैं. अत्यन्त गर्जना होने से भूमितल दरार देकर (फटकर) पकीहुई दाड़िम की उपमा लेता है. तहां पर नाम मात्र स्थान दीखता है उसको भी तोपें निरन्तर मिटादेती हैं ॥ ११ ॥ १६ भार की परीक्षा करने को कितने ही चरखों के पहियों को चखने के लिये भूमि उनको गिटती है, वे पहिये मनुष्य और बैलों के ह-

नर१ बैल२ हल्लन जे हमल्लन नाग३टल्लन निक्खसैं ॥
रन मिच्छ बादिक अन्नआदिक दुग्ग मग्गन रोधकैं ॥
बढि रानकेभट मेटि कंटक आत घात प्रबोधकैं ॥ १२ ॥
चढि हल्लके प्रतिमल्ल बाहिरके निसैंनिनदै चढैं ॥
बल बाहु बिस्मय खट्टिकैं तिन्ह कट्टि अंदरके बढैं ॥
कहुँ सोर दट्टन दै सुरंग सु जानि अट्टन के हुलैं ॥
तँहँ तैल१ तोय२न पिल्लिकैं भयमेटि तद्भव तेहु लैं ॥१३॥
कहुँ खग्ग तिच्छन घात मिच्छन आत कंगुर कट्टिदैं ॥
बृक थाप कीसं कलाप कौं बिटपी किं आवत बट्टिदै ॥
कति कुद्दि कंगुर आत पज्जन आँत अज्जन द्वै २ करैं ॥
किंसु भ्रात दोउ२न लोभमज्जन भाग सज्जन लै करैं ॥१४॥
द्रुत दुर्गअंतर साहके बढिजात के भट दूरलौं ॥
हुत खग्ग पावकमज्झ कैं पहुँचात भट वे हूरलौं ॥
कति दहि वत्थन मिच्छ मत्थन कट्टि फैंकत कोटसौं ॥

औरहमल्लों से नहीं निकल कर १ हाथियों के टल्लों से निकलते हैं. युद्ध में हठ करनेवाले म्लेच्छ दुर्ग के मार्गों में अन्न आदि सामग्री को रोक देते हैं. और इधर महाराणा के वीर बढकर, घात लगाकर दुष्टों को मिटा देते हैं. और सामग्री लानेवालों को समझा आते हैं ॥ १२ ॥ कितने ही बाहर के शत्रु इल्ला करना चाह कर, निसेनियें देकर चढते हैं, इधर आश्चर्य करनेवाला बाहुबल उत्पन्न करके उनको काट कर भीतरवाले बाहर बढते हैं. कहीं बारूद दाट कर, सुरङ्ग देकर बारहवाले ऊपर बढते हैं, वहां तेल और पानी डाल कर उनसे उत्पन्न हुए भय को मेट कर ये बढते हैं ॥ १३ ॥ कहीं कंगुरों पर आतेहुए म्लेच्छों को तीक्ष्ण खड्ग की घात से काट देते हैं सो ५ मानों वृक (बघेरा) थप्पड़ की देकर ४ वृक्ष पर आते हुए २ बन्दरों के ३ समूह को बिखेर देता है. कितने ही ६ अंत्यजों के ७ समूह कूद कर कोट के कंगुरों पर आते हैं जिनके ८ आर्यलोग दो दो टुकड़े कर देते हैं ६ मानों दो भाई लोभ में १० निमग्न होकर महात्मा (पिता) अथवा कुलवान के धन के दोभाग करते हैं ॥ १४ ॥ बादशाह के वीर गढ के भीतर शीघ्र दूर तक बढ जाते हैं, उनको गढ के भीतर के लोग खड्ग रूपी अग्नि में ११ होम कर १२ अप्सराओं तक पहुंचाते हैं.

चंल बाल दै किंमु दोट पिल्लत गोट गैंदन चोटसौं ॥१५॥
कति मोरछे तजि मिच्छ दै अधिरोहिनीं चढते कटैं ॥
अरि लंक के गढजात रक्खस घात कैं कपि उल्लटैं ॥
बहु घट्ट गोलन बट्टऽहे तँहँ टट्ट १ अट्ट २ नये बनैं ॥
मिलिकैं दुँरघाँ भैर भै तनैं मिलिकैं परस्पर जै भनैं॥१६॥
भट साहके बढि खातिकों बिच तूलके बुरके भरैं ॥
जिनकी तुपक्कन जेहि मत्थुत रान इच्छक व्है जरैं ॥
अह१रत्ति२ मिच्छ अली अली कहि आनि दुग्गहि आँवरैं॥
सह रत्ति रान सिपाह संचयं पानि पुग्गत संहरैं ॥ १७ ॥
सिलगाइ सोर कुतूंन डारत केक मिच्छन सूल्यऽहे ॥
गुरु ग्रांव गेरन धाव केकन मृत्यु विक्रय मूल्यऽहे ॥
कति दोहरी २ तिहरी ३ किया नट निंदि आवत कोटतैं ॥

कितने ही लोग म्लेच्छों को अङ्क में पकड़, उनके मस्तक काट कर कोट से नीचे फैंकते हैं. सो २ मानों १ चपल बालक ४ गोल गैंदों को ३ दौड़ाने की प्रबल चोट देकर चलाते हैं ॥ १५ ॥ कितने ही म्लेच्छ मोरचे छोड़ कर ५ निसरनियों पर चढतेहुए कटते हैं, सो मानों लंका के शत्रु बन्दर गढ में जातेहुए ६ राक्षसों की घात से उलटते हैं. गोलों से बहुत ७ घाटों (दो पर्वतों की संधि का मार्ग) की संधि ८ मार्ग होते हैं और वहां पर नवीन ९ पगडंडिये (छोटे मार्ग) और १० चौड़े मार्ग बनते हैं. ११ दोनों ओर के १२ भट (वीर) मिलकर भय फैलाते हैं, और मिल कर परस्पर जय बोलते हैं ॥ १६ ॥ बादशाह के वीर बढकर १३ खाई में (चित्तोड़गढ के खाई नहीं है, परंतु गढ के सामान्य रूप से कहागया है) १४ रूई के १५ बोरे भरते हैं, वे बोरे उन यवनों की बंदूकों से १६ उलटे महाराणा के इच्छुक होकर जलते हैं. दिन रात म्लेच्छ 'अली अली' कहकर गढको आकर १७ घेरते हैं जिनको रात्रि के साथ महाराणा के सिपाहियों के १८ समूह पहुंच कर हाथों से नाश करते हैं ॥ १७ ॥ बारूद के १९ कुप्पे (पीपे अथवा सीदड़े) जलाकर ऊपर से डालते हैं, जिससे कितने ही म्लेच्छों के शूले (कबाब) होते हैं. बड़े २० पत्थरों का गिराना और दौड़ाना ही मानों कितनों को मृत्यु २१ बेचने का मूल्य होता है. कितने ही नट की दुहरी तिहरी क्रिया की निन्दा करके कोट से नीचे आते हैं. उनको अपने साहस की आड से गढ के बलवान् लोग घन डाल कर

उन्ह रीझि दै गढके बली बसु डारि साहस ओटतैं ॥ १८ ॥
जरि बस्त्र ×स्रावकदेवलौं कति मिच्छ बैठत जीवदैं ॥
गढके प्रबीर तिन्हैं सिराहन ÷चच्छु चाहन ग्रीवदैं ॥
उफनाइ साहस साह यौं गरदाइ दुर्गहिं अंकुरयो ॥
जिम मन्निकैं महिमान रानहु खान१पान२ किलैं जुरयो ॥ १९ ॥

॥ षट्पात् ॥

रानकुमर १ अरिसिंह बीर कोउक वह बल्लन २॥
हिंगुलु ३ नाम सु हड्ड हुलसि इतिमुख अति हल्लन ॥
कढि कढि जाँमिनिकाल बिरचि सौप्तिक बहुबारन ॥
सेना मथि सहसाहि हनतहुव जवन हजारन ॥
लग्गे सिपाह जिम जिम लुपन तिमातिम साहस साहतकि॥
नवनव अनीक रक्खत निँयत सनैसनै ढिगहुव सरकि ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

समयसमय मिच्छन प्रसरि, द्रहबट्टन करि देस ॥
पिहित बहत अन्नादि पथ, अटकिय प्रहँत असेस ॥ २१ ॥
श्रीलग्राम १ पुर २ लुट्टि सब, जिन रचि प्रलय प्रजारि ॥
आढ्यजनन कारौं अटकि, दिय दुकाल भयकारि ॥ २२ ॥
बित्तलखि अन्नादि बल, प्रजा रुदन दुख पाइ ॥

रीझ देते हैं ॥ १८ ॥ कितने ही म्लेच्छ वस्त्र जल जाने से × श्रावकों (श्रावगियों) के देवता (पार्श्वनाथ) की भांति नग्न होकर, मर कर बैठते हैं. जिन को अपने ÷ नेत्रों से देखने की इच्छा से गढ के वीर लोग प्रशंसा करने को अपनी गर्दन निकालते हैं; इसप्रकार हठ ग्रहण करके बादशाह गढ को घेर कर १ खड़ा हुआ, तिस प्रकार इनको अहिमान जानकर महाराणा ने भी किले में खान–पान इकट्ठा किया ॥ १९ ॥ रणतभँवर की सहाय पर जाने वाला 'बल्लन' नामक २ कोई वीर जिसकी जाति का पता नहीं ३इत्यादि ४रात्रि के समय ५ रतिवाह रचकर ६ सेना ७ निश्चय ॥ २० ॥ ८ फैल कर देश को बरबाद किया ९ गुप्त मार्गों से अन्नादिक सामग्री जाती है १० विशेष हत करके सब रोक दिये ॥ २१ ॥ ११ धनवान् १२ धनवान् लोगों को १३ कैद

भट १ मंत्रिरन रानहिं भनिय, रतन १८३ देहु पकराइ ॥ २३ ॥
आनन इम छन्निय अरज, रान न मंन्निय रंच ॥
सरनग संटै भुव १ रु सिर २, चिंतिय दैन प्रपंच ॥ २४ ॥

॥ षट्पात् ॥

अंगेज तेरह१३ अनुज अठ्ठ८ निज त्तिम दुव२ नत्तिय ॥
वल्लन१ वलि वह बुल्लि घिरन यहगति जिहिं घत्तिय ॥
हिंगुलु३ नाम सु हड्ड भ्रातजाँमात महाभट ॥
इम स्वकीय भट अखिल विरचि एकल मंत्रवट ॥
सूचिय न देहिं हम्मीर१८२सुत घनरस हम दिय सिर१घर२न
वदि यह रु सज्ज रक्खन विरुद लक्खन हुव वाहिर लरन ॥२५॥

(दोहा)

भनत किते हम्मीर१८२भव, दियउ कड्ढि कहुँ दूर ॥
किते रानसकुटुंबके, संग जंग मृत सूर ॥ २६ ॥
अज्जनैं लक्खन सहित इम, मिच्छन लक्खन मारि ॥
वीरसयन सुतो विदित, रानाँ लक्खन रारि ॥ २७ ॥
अंगज वारह१२ वसु८ अनुज, पौत्र उभय२ लहि पास ॥
साह निकट लक्खन सुपहु, रमत पस्यो रन रास ॥ २८ ।
जिहिंन पोढे विदित जग, असिय च्यारि८४ नृप अज्जे ॥
अवनि लोभगिनि रान इम, लुप्पी नन कुललज्ज ॥ २९ ॥
लक्खनको इकपुत्र लघु, अजयसिंह१ अतिवीर ॥
वहुन मारि लहि छतें बच्यो, धनी हुकम वहि धीर ॥ ३० ॥

करके उस बुरे समय में भय दिया ॥२२-२३॥ १ अन्य लोगों ने इस प्रकार गुप्त अर्ज की. २ शरण आयेहुए के ३ बदले में (एवज) ॥ २४ ॥ ४ पुत्र ५ पोते ६ फिर ७ भाई का जमाई ८ सलाह के मार्ग से, हमने शिर और घर को ९ पानी दिया ॥ २५ ॥ १० हम्मीर चहुवाण के पुत्र (रत्नसिंह) को दूर निकाल दिया, और कितने ही कहते हैं कि यह वीर युद्ध में राणा के कुटुम्ब के साथ मारागया ॥२६॥ लाखों ११ आर्यों के साथ लाखों म्लेच्छों को मारकर ॥ २७-२८ ॥ १२ आर्यराजा ॥ २९ ॥ १३ घाव पाकर ॥ ३० ॥

कट्टा पुर चित्तोर कारि, स्वान[1] बिडाल[2] समेत ॥
चल्यो निरंकुस साह चहि, इम गढ बिजय उपेत[3] ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

चवंत किते चित्तोर दुग्ग नृप सयन स्वप्नदिय ॥
अक्खिय सुनहु अधीस सोन[4] मिच्छ[1]न बहु सिंचिय ॥
अज्जर्[2]न लोहित[6] अलप बह्यो मोसिर कछु बिप्लव[7] ॥
होतो अद्ध्[9] हु ह्वाइ ततो रहतो निकेत[8] तव ॥
जावतो गेह मिच्छन जदपि अति सत्वर[10] घर आवतो ॥
जात न रह्यो बं[11] उत जातहौं सेवक जन न सुहावतो ॥ ३२ ॥
रानकहिय जिम रहहु कहहु मुहि जतन कृपागति ॥
कहिय दुर्ग जगकहत चमूसन[12] अधिक चमूपति[13] ॥
सुत[1] भ्राता[2] तव सकल पाइ क्रमसह नृपतापद ॥
मरत तोहि यह मरहिं मोहि दे रुधिरपान मद ॥
तुम बढहु कुलाप[14] मिच्छन तबहि रान मुदित तवघर रहौं ॥
पोखत बिसेस मुहि होत प्रिय कछु भोजक न प्रिय कहौं॥३३॥

(दोहा)

जवन बली लौं हैं जदपि, अहैं तदपि इतैंहि ॥
यह दुर्गन गति आदितैं, जे बलिदेत[15] जितैंहि ॥ ३४ ॥

षट्पात् ॥

सुनि दुर्गोदित[16] स्वप्न रान प्रातहि परिखद रचि ॥
कहियँ[17] एह सब करहु बहुरि इक[1] तंतु रहहु बचि ॥

१कुत्ते २बिल्ली सहित. ३विजयसहित ॥३१॥ कितनेक२कहते हैं. म्लेच्छों ने मुझ को४रक्त से बहुत सींचा है और५आयों का६रक्त ७युद्ध में कम बहा है; यदि यवनों से आधा लोही भी तुम्हारा बहता तो८तुम्हारे ही घर में रहता ९तो भी १०शीघ्र ११ अब यवनों के जाता हूं ॥३२॥ १२ सेना से १३ सेनापति को अधिक कहता है, सभी यवनों से तुम्हारे १४ मुर्दे बढेंगे ॥३३॥ १५ बलिदान देते हैं वहीं रहते हैं ॥३४॥ १६ गढ का स्वप्न में कहाहुआ सुनकर १७महारा-

हो सुतसुत हम्मीर पिहित मातुलगृह पोतहि ॥
सो सुमिरन बिनुसुद्धि हुव न मंतन यह होतहि ॥
यातैं तनूज१ नत्तिय२ अनुज३ संबोधियं इक१ जियन सब ॥
अखिलन वचैंन इम उच्चरिय कुलज रहैं तजि तात कब॥३५॥
निखिल निहारत नृपहिं तनय लघु अजयसिंह तब ॥
किय बिन्नति करजोरि यहहि प्रभु इष्ट ततो अब ॥
मैं कुपुत्र यह मन्नि स्वामिसासन चढाइ सिर ॥
रंनसन मारतमरत कढौं खिलें आयु रहैं किर ॥
यह मन्नि खुल्लि रानहु अररैं कढ्ढि असह घमसान करि ॥
बंगरिनैं हीन बीविन बहुन विरचि गयो दिवनारि बरि ॥३६॥
इम कुमार अरिसिंह१ आदि बारह१२ नृपअंगजं ॥
पाइ पाइ नृपपट्ट गये लरि नाकं ढाहि गज ॥
उभय २ पौत्र बसु८ अनुज इमहि रचिरचि अति आहव ॥
गये त्रिदिवं अरिगंजि धीर बनि समय धराधव ॥
हड्ड सु प्रबीर हिंगुलु१ बहुरि पैरमानन पीवत परयो ॥
बल्लन२समेत बीरन बहुन कलहै काय तिलतिल करयो॥३७॥

(दोहा)

लक्खनको वहपुत्र लघु, अजयसिंह अभिधान ॥
बहु हनि निकस्यो आयुबल, बहु छैत लहि बलवान॥३८॥
रक्खि धरम जिहिं रन रहे, इम रानाँ तेईस २३ ॥

था के १पुत्र अरिसिंह का पुत्र हम्मीरसिंह ३ मामा के घर में ४ बालकपन में २छिपाहुआ था सो यह सलाह होते समय विना५खबर के स्मरण नहीं आया, इनमें से एक के जीवित रहने के लिये सबको ६ समझाया. ७ कुलवान् पुरुष ८पिता को छोड कर कब रहते हैं ॥३५॥ ९ सबको १० युद्ध से ११बाकी की आयु, किल अर्थात् निश्चय है तो निकल जाऊंगा. १२कपाट खोलकर १४ वलय (चूड़ियों) विना १५ अप्सरा को विवाह के स्वर्ग में गया ॥३६॥ राजा के १६पुत्र १७स्वर्ग गये १८स्वर्ग. समय समय पर१९राजा बन बन कर२०शत्रुओं के रण में को२१युद्ध में शरीर को ॥३७॥२२नामवाला. बहुत २३घाव पाकर ॥३८॥

जवनराज लहि दुलभजय, सजवं[1] चढ्यो गढसीस ॥ ३९ ॥
है पौत्र[२] न केते कहत, हो पिहित[२] सु हम्मीर ॥
इम रानाँ इक्कबीस२१ ही, बिदित परे रन बीर ॥ ४० ॥
मही अनल गुन चंद १३३१ मित, जँहँ बिक्रम सक जात ॥
कतल दुर्ग चित्तोर करि, लिय जवनेस लुभात ॥ ४१ ॥
बरस तीन३रन रचि बिकृति२३, सिंचि रान निज सोन[3] ॥
गढ[4]संटै दै असु[5]गये, तदपि रह्यो तबतो न ॥ ४२ ॥

॥ मनोहरम् ॥

घायन त्रि[6]हायन[7]लौं संततं[8] समर मंडि,
राखि रनथंभराज सौंपन सम्हाह्यो नाँ ।
साह्यो हठ बप्प[9]बंस बिरुद बढावनकौं,
रावनकौं पीठ[10]दै सिटावनकौं साह्यो नाँ ॥
जातजान्यौं[11] जननै[12] पै मन न मुरात जान्यौं,
अतहि निबाह्यो अपकीरति बिबाह्यो नाँ ।
देखो रान लक्खन अलावुद्दीन२१ अंतक[13]कौं,
औनँ[14] दैन चाह्यो पर[15] रैनं[16]१८३ दैन चाह्यो नाँ ॥४३॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे १ पञ्चम५राशौ वीतिहो
त्रचराडासि १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं

१ शीघ्र ॥३९॥ कितने ही कहते हैं कि राणा के पौत्र नहीं थे, और हम्मीरसिंह २ गुप्त था इस तरह इकबीस राणा होकर मरे ॥ ४०-४१ ॥ अपने ३ रक्त से ४गढ के बदले में ५प्राण देकर गये तो भी उस समय तो गढ नहीं रहा ॥ ४२ ॥ तीन ६ वर्ष तक ७ निरन्तर ८ रणस्तम्भ के राजा रत्नसिंह को शरण रखकर पीछा देना अङ्गीकार नहीं किया ९ बापा रावळ के वंशवाले ने १० पीठ देकर अर्थात् रावण से भी आगे बढगया ११ वंश को नष्ट होता जाना. १२ परंतु मरने से मन नहीं मोड़ा. १३यमराज को अपना १४ घर देदेना चाहा १५परंतु अपने शरणागत १६रत्नसिंह चहुवाण को देना नहीं चाहा॥४३॥

श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के पंचमराशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंश में उत्पन्न होनेवालों के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश औ

इयविहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसमरसिंह १८१।७ समयचरित्रे वेष्टितचित्रकूटदुर्गम्लेच्छराडलावुद्दीन१।१वर्षत्रय३ नालीयन्त्रमहारणरचन १ राणालक्ष्मणसिंहपट्टपकुमारारिसिंह १ हड्डहिंगुलु ३ क्षत्रियान्तरवल्लना३ऽऽदिवहिरागतदुर्गवीरवृन्दवहुवारसौप्तिकसमाघातयवनेन्द्रसैन्यसंहरण २ म्लेच्छराजप्रगुणीकृतनव्यनव्यभटवर्गविरचितमेदपाटविप्लवदुर्भिक्षप्रवर्तन ३श्रुतप्रजाफूत्कारज्ञातरुद्धाऽन्नादिमार्गदरितदुर्गजनहाम्मीरिरत्नसिंह १८३ प्रत्यर्पणार्थराणाविज्ञापन४प्रतिश्रुतशरणागतत्राणसुतद्वादशक १२ सोदराष्टक८पौत्रजकुटक २ हड्डहिंगुलु १ क्षत्रियान्तरवल्लन २ समुपेत राणालक्ष्मणसिंह १ शूरशय्याशयन ५ हाम्मिरिरत्नसिंह १८३ निस्सरण १ मरण २ संशयसूचन ६ तत्सङ्ग्रामयवनेन्द्रानुगतचतुरशीति ८४ प्रमितार्यपृथ्वीपतिप्राणप्रहाण ७ शस्त्रशीर्णशरीरस्वायुर्बलपरीक्षितप्राणनसर्वानुजराणापुत्राऽजयसिंह १ निष्कसन ८ श्व१ विडाला २ दिसमेतप्रघातितप्राणिवर्गयवनेन्द्रचित्रकूटदुर्गसमाक्रम-

वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र समरसिंह के समय के चरित्र में बादशाह अल्लाउद्दीन का चित्तोड़ को घेर कर तीन वर्ष पर्यन्त तोपों से महायुद्ध करना, राणा लक्ष्मणसिंह के पाटवी कुमार अरिसिंह, हिंगुलु नामक हाडा और बल्लन नामक किसी क्षत्रिय आदि वीरों के समूह का बाहर निकल कर बहुत बार रातिवाह देकर यवनेन्द्र की सेना का संहार करना, बादशाह का गुणवान् नवीन नवीन वीरों को रखकर मेवाड़ में युद्ध और दुर्भिक्ष करना, प्रजा की पुकार सुन कर अन्न आदि सामग्री के मार्ग रुक जाने से डर कर गढ के लोगों का हम्मीर के पुत्र रत्नसिंह को सौंप देने की अर्ज करना, यह सुनकर शरणागत की रक्षा के अर्थ बारह पुत्र, आठ भाई, दो पोते, हिंगुलु हाडा और बल्लन नामक किसी क्षत्रिय सहित राणा लक्ष्मणसिंह का काम आना, हम्मीरसिंह के पुत्र रत्नसिंह के निकलने अथवा मरने के संदेह की सूचना करना, उस संग्राम में यवनेन्द्र के साथ चौरासी राजाओं के प्राणों का जाना, शस्त्रों से कटेहुए शरीर से आयुर्बल और जीवन की परीक्षा करके राणा के सबसे छोटे पुत्र अजयसिंह का निकलना, कुत्ते-बिल्ली आदि सहित प्राणियों को मारकर बादशाह का चित्तोड़गढ लेना

णा ९ मतान्तरकथितत्रयोविंशत्ये २३ कविंशत्य२१ न्यतरसङ्ख्या सम्मितराणामरणप्रकारप्रबोधन १० यवनराडल्लावुद्दीन११सराष्ट्र- चित्रकूटदुर्गसमादानसमयसंवत्सूचनं११द्वितीयो२मयूखः ॥ २ ॥ आदितोऽष्टचत्वारिंशदुत्तरशततमः ॥ १४८ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मंडि अमल मेवारमैं, चढि इम गढ चित्तोर ॥
साहरह्यो तँहँ कतिसमय, जगहिँ जनावत जोर ॥ १ ॥
रान सचिव जे तँहँ रहे, वे बनि साह अधीन ॥
पानिजोरि बुल्ले पिसुन, हुव जय कछु भुवहीन ॥ २ ॥
तकितकि हड्डन छिद्रतम, अनुसरि कपट असेस ॥
रैंन१७५ बंग१७९ इतर२ रानके, दब्बिलये बहुदेस ॥ ३ ॥
बलि इन लुट्टन वाहिनी, पिल्ली ज्यानपनाह ॥
जब मंडनगढ लै सज्यो, समरसिंह१८।१७ हेसाह ॥४॥
हजरत दिल्ली जातही, विक्खतं छिद्र बहोरि ॥
देस धनीके दब्बिहैं, छमँ दैहैं कबछोरि ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनि पिल्लिय खिजि साह दूत बुंदिय१ बंबावद२॥
कहिपठई तुम कुमति हड्ड तजिदेहु रानहद ॥
सु सुनि मंत्र थित समरसिंह१८।१७हरराज१८।११ उभै२हुव॥
भट१ मंत्रि२न तँहँ भनिय भूप तजिदेहु रानभुव ॥
लखि देसकाल समुचित चलन राजनीति अनुसार रहि ॥

दूसरों के मत से कहेहुए तेईस और दूसरी संख्या से इक्कीस के प्रमाण राणाओं के मरने का ज्ञान कराना, बादशाह अलाउद्दीन का राज्य सहित चित्तोड़ लेने के संवत् की सूचना करने का दूसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ २ ॥ और आदि से १४८ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ चुगल ॥ २ ॥ २ अत्यंत छिद्र देखकर ॥३॥ ३ पुनि ४ सेना ५ मांडलगढ ॥४॥ छिद्र ६देखकर७समर्थ हैं सो कब छोड देवेंगे ॥५॥ ८ भेजे ९उचित

साध्यहु न पंच५गुन संधिमुख गुन आश्रय६ इक लेहु गहि ॥६॥
भूप समर१८१।१ तँहँ भनिय इक्क१ मंडनगढ अप्पन ॥
पै अग्रज१८१।१ तर पुहवि वहु सु हुव रान वडप्पन ॥
वह देवो किम उचित लई नृप रैंन१७५ वंग१७९ लरि ॥
जो देवो तव जाहि रहित व्हैवो नृपता करि ॥
मंडन१६८महीप पहिले समय राज्य कियउ यह दुर्गरचि ॥
करि छल सु रान लिन्नौं कुहक सो हम दव्विय समय सचि ॥ ७॥

(दोहा)

नागपाल जव गढगहिय, रचि वंबावद रैंन१७५ ॥
देस इतर तस तव हुतहि, दव्वे प्रतिफल देन ॥ ८ ॥
नृप वंग१७९हु पीछें सु नय, दव्विलये काति देस ॥
सुनत न्याय इम साह तो, आसेरहु दै एस ॥ ९ ॥

॥ षट्पात् ॥

वंबावद वस विदित रान जनपद अनेक रहि ॥
अग्रजको ईसत्व रंच विगरैं न टेक रहि ॥
तोतो आश्रय तक्कि दुर्ग मंडन तजिदेहैं ॥
नतो जियन फल नाँहिं देस मरनहि भँजि देहैं ॥
चिरतैं रहेहु मंगन चहत हाकिम साह अपुव्व हुव ॥
सौंपहु हमैंहु मेवारसव चित्तोरहु चहुवानभुव ॥ १० ॥
भट१ सचिव२न तँहँ भनिय नृपति अपनौंहि निवेरहु ॥
यह मंडनगढ अप्पि साह सासन हित हेरहु ॥
व्है हरराज१८१।१ सहाय हाय बुंदिय जिन हारहु ॥

१ संधि आदि पांच गुण इस समय साध्य नहीं हैं इस कारण से एक छठा गुण (आश्रय) ही लेना चाहिये ॥ ६-७ ॥ २ उलटा फल देने को ॥८॥ ३आसेर गढ चहुवाणों का था सो हमको देवै ॥ ९ ॥४ देश ५ प्रभुता ६ मांडलगढ ७ सेवन करके अर्थात् मर कर ८ बहुत समय से ॥ १० ॥

जिहिँ चित्तोर अजेय पाइ किय बिजय प्रसारहु ॥
मन्नहु भलो न रहिबो मुररि अग्रज भीर बिचारि अब ॥
जवनेस जोर जानहु जबर सहज अज्ज किय जेर सब ॥११॥
मंत्र सु तदपि न मन्नि भूप बिन्नति लिखि भेजिय ॥
हम मंडनगढ हान किय रु सासन प्रमान किय ॥
अमल तत्थ करि अप्प हमहिँ सेवक गिनि तुट्ठहु ॥
अग्रजँ भुव अपनाइ रीति लुप्पि रु जिन रुट्ठहु ॥
रानाँहु पुब्ब नृप रैंन१७५सौं लिय मंडनगढ पट्टलहि ॥
ताकीहु अवनि तब दब्बि तिहिँ राज्यकियउ सम न्याय रहि१२
निजजन सबन निबाह करत अप्पहु करुनाकरि ॥
हमहु कहुँक बस हुकम आयु कट्टहिँ भय अनुसरि ॥
बुल्ले इम लिखि बार स्वीय मंडनगढ तैं सब ॥
सो१ रु अरजर सुनि साह कहिय परभुम्मि रहैं कब ॥
अग्रज नृपत्व जो इष्ट तव तो गत रानप्रदेस तजि ॥
भूपहि रहो बँ निज भुग्गि भुव सेस हमहु मंगैंन सजि॥१३॥

(दोहा)

मंडनगढ किन्नौं अमल, जंपि यह रु जवनेस ॥
सेना पुनि हरराज१८१।१सिर, पिल्लिय तास प्रदेस ॥ १४ ॥
मंडनगढ दिन्नौं समुझि, चवियें साह मनमाँहिँ ॥
हरराज१८१।१हु दैहैं दरितें, जुज्झन क्यों हम जाँहिँ ॥१५॥
यह बिचारि करि दल अधिप, निजभट रुस्तुम१नाम ॥
सेना वह हरराज१८१।१सिर, पिल्ली बिजय प्रकाम ॥ १६॥
दिल्ली जावन अप्प दिगँ, बिजई उचित बिचारि ॥
चित्रकूटगढ त्रान चहि, किय प्रबंध हितकारि ॥ १७ ॥

॥ ११ ॥ १ त्याग (छोड़ा) २ प्रसन्न होओ मेरे ३ बडे भाई की ॥ १२ ॥ ४ अब ॥ १३-१४ ॥ मन में ५ कहा ६ डरकर ॥ १५-१६ ॥ ७ दिग्विजय करने वाला ८ रक्षा ॥ १७ ॥

अहमदखान१ पठान अरु, प्रथित अज्ज प्रामार२॥
स्वर्णगिरे७ चहुवान३ सह, रक्खे गढ रखवार ॥ १८ ॥
करि प्रसाद तिनप्रति कहिय, तुम हत्थन चित्तोर ॥
मेवारहिं रक्खहु मुदित, जितातित दब्बहु जोर ॥ १९ ॥
इन बसकरि चित्तोर इम, बंबावद बल पिल्लि ॥
पत्तो दिल्लिय साह पुनि, क्रमत अज्ज अहि किल्लि ॥ २० ॥
साहकटक हरराज१८१।१सिर, लै रुस्तुम१ बहलीम२ ॥
प्रस्थित सुनि बुंदियपतिहु, सत्वर पत्तो सीम ॥ २१ ॥
हरराज१८१।१हु अनुज१८१।७हिं कहिय, हमरी होहि सु होहि ॥
अप्प लाल बुंदियअधिप, सत्थ न खोवहु सोहि ॥ २२ ॥

॥ षट्पात ॥

सिव१ हरि२ चंडिय३ सौंह अप्प४सह जनक५सौंह अति ॥
रुट्ठि दियउ हरराज१८१।१ तुट्ठि मरनहिं गिनैन तति ॥
पानिजोरि पयप्रनामि हानि निश्चितकहि हड्डन ॥
कहिय मरहु गहि कलह अप्प१८१।१सानुज१८१।७असि१अड्डन२।
जीवत दुंरघाहिं प्रभुता१ रु जस२ धोइ स्वसहिं धमनीं धमत ॥
प्रसभहि गह्यो सु जवनेस प्रभु सो न जत्तनपुब्बहु समत ॥२३॥
समरासिंह१८१।७ इम अक्खि जिट्ठ१८१।१ नासीर भयउ जब ॥
निश्चित मरन निहारि तुमुल हरराज१८१।१रचिय तब ॥
पुर मंडन ढिग परत खान रुस्तुम१ उद्धत खल ॥

१ प्रसिद्ध २ सोनगिरे ॥ १८-१९ ॥ ३ सेना ४ भेजकर ५ पहुंचा ६ आर्यरूपी ७ सर्प को कील कर ॥ २० ॥ ८ प्रस्थान करना सुन कर ९ शीघ्र सीमा पर पहुंचा ॥ २१ ॥ १० हमारी तो जो गति होनी होगी सो होगी परंतु हे लाल ! हमारे साथ तुम बुंदी को मत खोओ ॥ २२ ॥ ११ छोटे भाई सहित १२ दोनों ओर१३जीवसाक्षिणी नाड़ी चलती है जब तक, अथवा लुहार की धौंकनी के समान श्वास लेतेहुए रखेंगे १४यत्न पूर्वक नहीं मिटेगा ॥ २३ ॥ १५ ज्येष्ठमास का १६ सूर्य १७ घोर संग्राम

इन सौप्तिक[1] दिय असह बहुल[2] बंड्डिय मिच्छन बल ॥
कलविंक[3] निकर[4] बिच ढेल[5] क्रम प्रबलजाइ निधरक परिय ॥
पिक्खहु महीप अग्रज प्रथम कलि अपुब्ब समर१८।१७सु करिय॥२४॥
रुस्तुमखान१सु रत्ति[9] आत दल हड्ड अचानक ॥
बचि[10] जिमतिम टरि बिकल तराजि खिल[11] भट रनतानक ॥
मुरि सम्मुह पयमंडि धप्पि बुट्ठिय धाराधर[12] ॥
भ्राता दुहु२न सु भिटि कियउ निजबल काराधर[13] ॥
भजि पुनि कितेहि अंत्यज[14] सुभट सुनि रुस्तुम पकरयो सजव[15] ॥
एकत्थ[16] मिलि रु जुज्झिय असह दहन हड्ड बन घोरदव[17] ॥२५॥
कवच दरि[18] असि[19] कढत तंति सब्बन[20] गति तिच्छन[21] ॥
मारत अज्जे[22]१न मिच्छ[23]२ मडि[24] अज्ज१हु तिम मिच्छन२ ॥
गजन सुंडि१ कटि गिरत खंध२ बाजिन बपु खुल्लत ॥
फुल्लत घातन फांक हक्कि ब्रातन[25] भट हुल्लत ॥
गातन[26] दुहु ओर तृनमित गिनत मात न बीर उफान मन ॥
लज्ज१रु सनेह भ्रातन लखहु रंच भुलात न कुलहि रन ॥२६॥

॥ दोहा ॥

---

१ रातिवाह २ बहुत सेना को ३ काटा ४ चिड़ियों के ५ समूह में ६ ढकल (ढेला) पड़े इसप्रकार ७ युद्ध ८ अपूर्व ॥ २४ ॥ ९ रात्रि में १० बाकी के ११ युद्ध फैलानेवाले दौड़कर १२ खड्ग की वृष्टि की १३ कैद करलिया १४ यवन १५ शीघ्र १६ एकत्र. हाडों रूपी वन को जलाने के लिये असह १७ अग्नि होकर ॥ २५ ॥ कवच को १८ विदारण करके २१ तीक्ष्ण १९ खड्ग २० साबुन में ताँत निकले इस प्रकार निकलते हैं. २२ आर्यों को २३ म्लेच्छ मारते हैं और इसीप्रकार म्लेच्छों को आर्यलोक २४ मसल कर मारते हैं. हाथियों की सूँडें कट कर घोड़े के कंधों पर गिरती हैं सो उनके शरीरों को शोभा देती हैं; और घावों से फाँकें फूलती हैं तो भी ललकार कर अथवा वीर लोक आगे बढ कर वीरों के २५ समूह को बढाते हैं. दोनों ओर के वीर अपने २६ शरीरों को तृण के समान गिनते हैं और वीर रस का उफान मन में नहीं समाता है. बुन्दी और बम्बावदा के राजा दोनों भाइयों की लज्जा और उनके स्नेह को देखो कि युद्ध में अपने कुल को जरा भी नहीं भूलते हैं ॥ २१-२७ ॥

भान न इत१ उत२को भयो, समय रत्ति संग्राम ॥
माँहिं माँहिं कटि बहु मरत, इत१ उत२ जुरि उद्दाम ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

रुस्तुम१कों सुनि रुद्ध भीत आलोचि साहभय ॥
सहँसबीस२०००० दल समिटि जवन मुरे मंडतजय ॥
उदित इतेविच अंक पार१ निज२ चक्क प्रकासन ॥
कोलि पिक्खन बलि कुतुक विघ्नतम निघ्न बिनासन ॥
गन घूक१ चकित२ डरि दुरिगये भये प्रफुल्लित कोक१भट॥
मुख१कंज२विकसि जुग्गिनि१मिलिग बीर२करतहुवबीरवट ॥२८॥
जँहँ उद्धत इक१ जवन द्विरद आरूढ आइ द्रुत ॥
हानिय भूप हरराज १८११ अंग सरपरसर अद्भुत ॥
गज१हु जाइ नृप२ गहिय हड्ड हनि तस आरोहक१ ॥
कुंजरसुंडिय२ कट्टि मोरिदिन्नो परमोहक ॥
तस दंतघात घुम्मत तुमुल होत उदित छदघटिय मिहिर॥
इक१मिच्छ कियउ दै आसि अलग सय१समेत हरराज१८११सिर॥२९
रारि गिरत हरराज १८११ लज्जि यह अनिय१ लरक्किय ॥
जिम मिच्छहु अति जोर सोर घन अग्ग सरक्किय ॥
रुस्तुम१ तिन वह रुद्द लरत १मरत२हु छुराइलिय ॥
इतरहु खट६ नृप अनुज हत्थ१८११२ मुख मारि हाइ लिय ॥
नृपसमरसिंह१८११७दूजी२अनिय२ हेति१ अनल२अरि१करतहुत२

१कैद हुआ सुनकर बादशाह का भय२विचार कर३सूर्य. पराई और अपनी सेना का प्रकाश करने को. पुनि ५ युद्ध का कौतुक देखने और अंधेरे रूपी विघ्न का ६विनाश करने के लिये. उलूक और डरनेवाले लोक डर कर गये चकवे और वीर प्रफुल्लित हुए. वीरों के मुख और कमल विकसित और जोगिनी व बावन वीर मिल कर वीरों के मार्ग करनेलगे ॥ २८ ॥ ७ ती र पर तीर मार कर ८ सवार को ९ हाथी की सूंड को १० शत्रुओं को मूछ देनेवाले को ११ युद्ध में १२ सूर्य. हाथ १३ सहित ॥ २९ ॥ १४भागी १५ रुस्तम को छुडालिया १६ आदि १७ शस्त्रों रूपी १८ अग्नि में शत्रुओं को१९ होम करता था उसके पास

दल*सेस संग तस हुव ×दरित जपि नृप हत छह्अनुजन जुत॥३०॥
एहु अनिय दुव२ अरिन इक्क१बनि तब जय आसय ॥
+सैन्यप रुस्तुम१ सहित गज्जि गरदाइ पासगय ॥
नृप समर१८१७हु निज नियति आयु पूरन तब अद्दरि ॥
अब्बन बीच उठाइ कतल किय खल अचिज्ज करि ॥
रुस्तुम१ समेत हनि दै रसिक पलचारन लोहित१ पलल२॥
समरेस१८१७पत्त बीरन सुगति बीर न भुल्लिय बिरुद१बल२॥३१॥

॥ दोहा ॥

सुत्तो जिम रनभुव समर१८१७, रीति वहहु नृपराम २०२ ॥
सुनहु पारि रुस्तुम१ सहित, किय अपुब्ब जिहिँ काम ॥ ३२ ॥

॥ षट्पात् ॥

हारिगिरत हरराज १८१२ अनुज खट६सहित अचानक ॥
इतके सेस अनीक नृपहि पिक्ख्यो बल तानक ॥
समरसिंह१८१७ जहँ सज्ज प्रधन मंडत बुंदियपति ॥
इक्क१ सु लखि अवलंब गये तहँ कहि अग्गजगति ॥
मिच्छन अनीहु दुव२इक्क१मिलि सख्ख बरासि रुस्तुम१सहित ।
हक्कारि नृपहिँ ढिगआतहुव जय१ जुज्झन२उद्धत अहित ॥३३॥
सोलंखिय नृप सुभट करन१ संकर२ अभिधाकरि ॥
इन दोउ२न बढि अग्ग लियउ बहलीम१ निकट लरि ॥
इक१के असि१ आघात टोप२कट्टिय अति अद्भुत ॥
अपर२ तोत्र१ लागि असह सत्रु२ कछु भिदिय बक्क३जुत ॥

---

* बाकी की सेना + डरकर उसके संग होकर छः भाइयों सहित हरराज राजा का मारा जाना कहा ॥३०॥ + सेनापति१ घेर कर २ भाग्य के अनुसार ३ स्वीकार करके ४ घोड़ों को ५ आश्चर्यवाला कार्य करके ६ रुधिर ७ मांस देकर वह वीर वीरों की गति को गया और अपने विरुद और बल को नहीं भूला ॥ ३१ ॥ ८ हे राजा रामसिंह ॥ ३२ ॥९ सेना ने १० विस्तार करनेवाले ११ युद्ध १२ आधार १३ ललकार कर. उद्धत१४ शत्रु से ॥३३ ॥ १५ नामवरी करके १६ दूसरे का १७ भाला ॥ ३४ ॥

शिसन१ रहीम२ जँहँ जवन जुग२ रुस्तुमखान १ सहायरचि ।
दलमथत मारि चालुक दुहुँन वढिय अग्ग वल आयुवचि ॥३४॥
भूपसुभट भगवंतसिंह३ भट्टिय अग्रेसर ॥
हे जवनन जुग२ हनि रु तकि रुस्तुम१ ढिग सत्वर ॥
इक्क खानओकवत३ नाम मिच्छहिँ हनि निर्भय ॥
कुंजर४ तास जकाइ गज्जि तोमर भ्रमात गय ॥
वारन वढाइ रुस्तुम१ तवहि कलहरुप्पि अद्भुत करिय ॥
कट्टिय हरोल अरु सर निकर भट्टिय३ कनपट्टिय भरिय ॥३५॥
भट्टिय३ परतहि भूप तरल डपटाइ तुरंगम ॥
तकि रुस्तुम१ उर तोत्र दियउ कढि पार गयउ दम ॥
तिमहनि हैदर२ कुतब३ खुरम४ फीरोज५ वहादुर६ ॥
पीवत जवनन प्रान धरिय नृप समर१८१७ समरधुर ॥
इक१ मिच्छ नाममोमिन१ उहाँ दपटि खग्ग आघात दिय ॥
सिर सिवहिँ अप्पि बुंदिय सुपहु लग्गत जिहिँ सुरलोकलिय॥३६॥
काका सिंहन१८०१३केर तनय घुग्घुल १८१ प्रवीर तँहँ ॥
नृपमारक लखि निकट कट्टि द्वैरकिय मोमिन१ कँहँ ॥
मीरन२ सम्मन३ खुरम ४ आदि वानैत वीस२० अरि ॥
संहरि घुग्घुल १८१ सहज वासिय सुरपुर अच्छरि वरि ॥
वारहहजार१२०००डरिमिच्छवलदुव२भ्रातनपरिअयुत१००००दल।
भजि खिलअनीक आवतभये वंवावद१ बुंदिय विकल ॥३७॥

॥ दोहा ॥

ताही रन मुकल१८१तनय, काका मोहन १८०११केर ॥
अठ्ठ८ जवन हनि उव्वरयो, बहि अठ्ठ८हि छत[१२] वेर[१३] ॥३८॥

---

१ आकवतखां नामक २ गिराकर भाला फिराता हुआ गया. बायाँ का३ समूह ॥ ३५ ॥ ४ चपल घोड़े को ५ भाला ६ श्वास निकल गया. समरसिंह ने ७ युद्ध का धुर धारण किया ८ दौड़ कर ॥ ३६ ॥ राजा के ९ मारनेवाले को १० बाकी सेना भाग कर ॥ ३७ ॥ ११ पाकर १२ शरीर पर आठ १२ घाव १३ पाकर

सम¹ निजराज्यहिँ दै सलिल², निरखहु राम³२०२।४नरेस ॥
अग्रज भार बटाइ इम, सँमर⁴ परयो समरेस१८१।७ ॥ ३९ ॥
नरेस१मरेस२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
ही सबठाम समान यह, राजनघर कुलरीति ॥
सोहि मिटत आये सरकि, जवन अधर्मिन जीति ॥ ४० ॥
तदपि रही चित्तोर१ अरु, बुंदिय२पुर यह बात ॥
औरनतैं बढिकैं अधिक, जग जस अबहु न जात ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

इम बंबावद अत्थ भ्रात नव९ परिग जातभुव ॥
हड्डनन्नृप हरराज१८१।१हत्थ१८१।२ पुनि अनुज सत्थहुव ॥
बहुरि भोज१८१।३तिम बग्घ१८१।४बाल१८१।५चाहड़१८१।६उद्धतबल
समरसिंह१८१।७बुंदीस सहित गोविंद१८१।८खंडि खल ॥
नृप देव१८०तनय ए अट्ठ८अरु सिंहन१८०।१सुत घुग्घुल१८१सहित
नव९भ्रात परिग करि जस नियत इम आहव संहरि अहित॥४२॥

(दोहा)

बल खिल मिच्छन लहि बिजय, जितजित अमल जमाइ ॥
रानमुलक जो दबिरह्यो, अखिल लयो अपनाइ ॥ ४३ ॥
अवसरलखि इतरहु अरिन, दब्बे निजनिज देस ॥
पहुहल्लुव१८२।१ वसपरगनाँ उब्बरि खट६ अवसेस ॥ ४४ ॥

षट्पात् ॥

बंबावदगढ१ बिदित बहुरि बेगम२ बिझोलिय३ ॥
भैंसरोर४ रैंनगढ५ सहित पत्तन सिंघोलिय६ ॥

। ३८ ॥ १ बराबर के अपने राज्य को २ पानी देकर ३ हे राजा रामसिंह
देखो बडे भाई का भार बंटाकर समरसिंह ४ युद्ध में गिरा ॥ ३९-४०-४१
। गिरे ६ निश्चय ७ शत्रुओं को ॥ ४२ ॥ ८ बाकी के म्लेच्छों की सेना
। ॥ ४३-४४ ॥

इन प्रभुता लहि अधिप बन्यौं हल्लुव१८२।१ बंबावद ॥
वयलहि तेरह१३ वरस हड्ड रक्खन स्वधर्महद ॥
हुव सज्ज तदपि मिच्छन हनन बहु परिकर रक्ख्यो बरजि ॥
नृपराम२०२लखहुकुलरीति निज लरत१मरत२रहतनलरजि॥४५॥

(दोहा)

समरसिंह१८१।७नृप जनम सक,त्रि नव अर्क१२९३ मित तत्थ ॥
बुंदिय हायनसप्त७ बय, पाई संगर पत्थ ॥ ४६ ॥
रचि गुन भू१३१२मित सक रच्यो, निखिल किरातन नास ॥
किन्नौं ख नयन त्रि ससि१३२०क्रम,बुंदी बिस्तर बास ॥४७॥
सक रस दृग गुन ससि१३२६समय, पिक्खि उचितबय भूप ॥
पुत्र३न हित वंटिय पुहवि, रचि बिभाग अनुरूप ॥ ४८ ॥
मुनि दृग गुन ससि१३२७ सक प्रमिति, जँहँ मंडनगढ जित्ति ।
गंजि लयो चिरतैं गयो, करि उदार जगकित्ति ॥ ४९ ॥
जैत्रसिंह१८२।३ समरेस१८१।७सुत, या१३२७हीसमय अधीन ।
कौटिकं भिल्ल विनासकरि, कोटा नवपुर कीन ॥ ५० ॥
लयो मुहूरत इष्टलखि, तिथि माधव२ सित तीज३ ॥
कोटा बसन प्रवृत्तिकिय, वह्नि किरातन बीज ॥ ५१ ॥
रचि हरराज१८१।१ सहाय रन, संहरि जवन असेस ॥
सक रद गुन ससि१३३२सुक्र सित, स्वर्ग गयउ समरेस१८१।१
समरसिंह१८१।७ रन मृतसुनत, साजि बिचित्र शृंगार ॥
तीन३हि रानिन सत्थ तब, छिप्र कियउ बँपु छारँ ॥ ५३ ॥
पहिली१दूजी२ पंचमी५, इम हरराज१८१।१ उपेत ॥

॥४५-४६-४७-४८-४९ ॥ १ कोट्या नामक भील का नाश करके ॥ ५० ॥ २ वैशाख ३ सुदि ॥ ५१ ॥ ४ जेठ सुदि पक्ष में ॥ ५२ ॥ ५ शीघ्र ६ शरीर को ७ भस्मकिया ॥ ५३ ॥ ८ सहित

काय[1] तीन३रानिन कियउ, हुत[2] पावक[3] पतिहेत ॥ ५४ ॥
हत्था१८१।२दिक घुग्घुल१८१ सहित, सत्त७हि बंधुन संग ॥
जाँया पुनि निजनिज जरी, इक१इक१।७ प्रेम उमंग ॥ ५५ ॥
बरस दोय२जुतबीस२२ बय, इत लहि नियति अधीन ॥
नरपाल१८२सु बुंदियनृपति, हुव नृपतागुन हीन ॥ ५६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम ५ राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ बीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबम्बावदेश १ बुन्दीश२हरराज१८१।१ समरसिंह १८१।७ भ्रातृयुग २ चरिते समाराधितयवनेन्द्रराणासचिववर्गबुन्दी १ बम्बावद २ पैशून्यप्रवर्त्तन १ यवनेन्द्रानुमतत्यक्तमण्डलदुर्गनरेन्द्रसमरसिंह १८१।७ स्वाग्रजहरराज १८१।१ सहायस्वीकरण २ मण्डलदुर्गन्यस्तस्वरक्षकयवनेन्द्रहरराजा१८१।१ ऽऽधीनराणादेशप्रत्याक्रमणार्थरुस्तुम १ दण्डनायकपृतनाप्रेषण ३ यवनाहमद १ क्षत्रियप्रमारान्तर २ चाहुवाणसौवर्णगिर ३ वशीकृतचित्रकूटदुर्गयवनेन्द्रदिल्लीगमन ४ श्रुतज्येष्ठभ्रातृदेशोज्झि-

---

[1]शरीर[2]होम[3]अग्नि में [4] अपनी अपनी स्त्रियें ॥ ५५ ॥ [5] भाग्य के बल से राजापन लिया परंतु राजा के गुणों से हीन था॥५६॥
श्रीवंशभास्करमहाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंशजों के वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बम्बावदा के पति हरराज और बुन्दी के पति समरसिंह दोनों भ्राताओं के चरित्र में आराधन किये हुए बादशाह से राणा के सचिवों का बुन्दी और बम्बावदा की चुगली करना, यवनेन्द्र के मतानुसार मांडलगढ छोड कर राजा समरसिंहका अपने बडे भाई हरराज की सहायता स्वीकार करना, मांडलगढ में अपने रक्षक रख कर बादशाह का हरराज के आधीनवाला राणा का देश पीछा लेने के लिये सेनापति रुस्तुम के साथ सेना भेजना, यवन अहमद, कोई प्रमार क्षत्रिय और सोनगिरा चहुवाण इन के वश में चीतोड का गढ करके बादशाह का दिल्ली जाना, अपने बडे भाई के देश को

र रुस्तु

ष्ठुवहत्नीमम्लेच्छरुस्तुमा २ ऽभिषेणनस्वाग्रजवारणप्रतिकूलबुन्दी-न्द्रपुरमण्डलसमीपसौप्तिकरणरचन ५ भ्रातृद्वय२ मद्रुतप्रत्यागतप्र-त्यनीकपतिरुस्तुम १ निग्रहण ६ सन्तमसमूढसैन्यद्वय २ परस्पर-स्व १ पर २ पक्षसंहरण ७ सूर्योदयसमयनिर्धारितस्व १ पर २प-क्षविंशतिसहस्र२०००० यवनाभिषेणन ८ यवनान्तरगजगृहीतप्र-तिहततदारोहकतद्दन्तविद्धहड्डाधिराजहरराज १८१।१ तद्गजकरक-र्तन ९ कबन्धीकृततदन्ताघातघूर्णितहरराज १८१।१ निपातितह-त्था १८१।२ऽऽदितदनुजषट्क ६ यवनान्तरस्वसैन्यसहायसेनापतिरु-स्तुम १ मोचन १० सैन्यद्वय २ द्वैधीरभावहानानन्तरपुरोगबुन्दी न्द्रसामन्तकर्ण १ शङ्कर २ चालुक्यद्वय २ रुस्तुमा १ऽङ्गखड्ग २ कु त ३ प्रहरण ११ नृपसुभटभट्टिभगवत्सिंह ३ तच्चालुक्यद्वय, २ मारकरोशन १ रहीमा २ ऽऽकबत ३ यवनत्रय ३ निपातन १२ नरेन्द्रसमरसिंह १८१।७ स्वसुभटभट्टिभगवत्सिंह १ मारकगजारू-

---

म्लेच्छों की युद्धयात्रा सुनकर बड़े भाई के मना करने के प्रतिकूल होकर बुन्दी के राजा का मांडलगढ के समीप रतिवाह युद्ध करना, भागकर पीछे मुड़ेहुए सेनापति रुस्तुम को दोनों भाइयों का कैद करना, अन्धकार से मूढ दोनों सैन्यों का परस्पर अपने और शत्रु के पक्ष को मारना, सूर्य उदय होने के समय अपना और पराया पक्ष देखकर बीस हजार यवनों का सन्मुख होना, यवनों में से हाथी को पकड़, उसके सवार को मार कर उस हाथी के दांत की चोट से घायल होकर हड्डाधिराज हरराज का उस हाथी की सूंड को काटना, हाथी के दांत की चोट से घूमतेहुए हरराज को कबन्ध करके (मस्तक काटकर) हत्थ आदि उसके छः छोटे भाइयों को मारकर दूसरे यवनों का सेना की सहायता से रुस्तुम को छुडाना, अपनी दोनों सेना के द्वैधीभाव की हानि के आगे होकर बुन्दी के उमराव कर्ण और शंकर दोनों सोलंखियों का रुस्तुमके अंग में खड्ग और भाला मारना राजा के सुभट भाटी भगवंतसिंह का उन दोनों सोलंखियों को मारनेवाले रोशन रहीम और आकबत इन तीनों यवनों को मारना, राजा समरसिंह का अपने उमराव भाटी भगवंतसिंह को मारनेवाले हाथी पर चढेहुए रुस्तुम

ढरुस्तुम १ सहितहैदर २ कुतब ३ बुरम ४ फीरोज ५ बहादुर ६ नाममुख्ययवनषट्क ६ संहरण १३ मोमिन १ नामम्लेच्छमहावीरम हीपमस्तकपृथक्करण १४ हतनृपमारकमोमिन १ समेतयवनवीर- विंशति २० कबुन्दीन्द्रबन्धुपितृव्यकसिंहण १८०।३ सूनुघुग्घुल १८१ शूरशय्याशयन १५ द्वादशसहस्र १२००० मितम्लेच्छ१ सैन्य १ दशसहस्र १०००० मितार्थ १ सैन्य १ तनुत्यजन१६ निपाति- तप्रवीरयवनाष्टक ८ सोढपरप्रहरणप्रहाराष्टक ८ नृपपितृव्यक- मोहन १८०।११ पुत्रमोकल १८१ स्वायुर्बलजीवन १६ घुग्घुल- १८१ समेतहरराज १८१ समरसिंह१८१।७ऽऽदिवीरतल्पसुप्तभ्रातृन वक ९ निर्धारण १७ प्राप्तविजयावशिष्टम्लेच्छसैन्यसमेतशत्रुवर्ग स्वस्वोद्देश्यबम्बावदढुर्गवशवर्तिदेशसमाक्रमण १८ प्राप्ताखिलप्रदेश षट्क, ६ प्रभुत्वत्रयोदश १३ वर्षवयस्कस्वपरिकरवारितयुयुत्सुहड्डा- धिराजहल्लू १८२।१ बम्बावदाधिपत्यधारण १९ नरेन्द्रसमरसिंह- १८१।७ जन्म १ बुन्दीप्राप्ति २ शबरशातन ३ बुन्दीवसतिविस्तारण ४ तनयत्रि ३ कार्थवसुधाविभजन ५ मराडनगढसमाक्रमण ६ शू-

---

सहित हैदर-कुतुब-कुरम-फीरोज- बहादुर नामक मुख्य छः यवनों को मारना, मोमिन नामक म्लेच्छ का बडे वीर राजा के मस्तक को दूर करना, राजा को मारनेवाले मोमिन सहित वीर यवनों को मार कर बुन्दी के राजा के काका सिंहण के पुत्र भाई घुग्घुल का काम आना, बारह हजार म्लेच्छसेना और दश हजार आर्यसेना का माराजाना, आठ वीर यवनों को मारकर शत्रुओं के शस्त्रों के आठ बडे प्रहार सह कर राजा के काका मोहन के पुत्र मोकल का अपनी आयु के बल से जीना, घुग्घु ल सहित हरराज और समरसिंह आदि नव भाइयों के काम आने का नि- र्धार करना, विजय पाकर बाकी की म्लेच्छसेना सहित शत्रुवर्ग का अपने प्रयोजन से बम्बावदा गढ का वशवर्ति देश लेना, बाकी के छः देश लेकर ते रह वर्ष की अवस्था में अपनी परगह से मना कियेहुए युद्ध की इच्छावाले ह- ड्डाधिराज हल्लू का बम्बावदा का आधिपत्य लेना, नरेन्द्र समरसिंह का जन्म- बुन्दी पाना-भीलों को मारना-बुन्दी की बस्ती को फैलाना-तीनों पुत्रों के

रशय्याशयन ७ शकसूचन २० जैत्रसिंह १८२।३ कोटापुरनिर्माण शक १ मास २ पक्ष ३ तिथि ४ निश्चयन २१ भ्रातृनवक ९ सह गामिनीनिजनिजपत्नीसङ्ख्या १३ समभिधान २२ द्वाविंशति२१ वर्ष-वयस्कनरेन्द्रनरपाल १८२।१ बुन्दीपुराधिपत्यप्रापणं तृतीयो३ मयूखः ॥ ३ ॥ आदित एकोनपञ्चाशदुत्तरशततमः ॥ १४९ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

भूपति पुरबुंदिय भयउ, प्रभुतालहि नरपाल १८२।१ ॥
सिंह १ प्रतिम शूरत्व २ सह, बुद्धिसत्व १ जंह बाल२ ॥१॥
नेतनामपुरपति नृपति, कृष्णसाहि कछवाह ॥
सुततस मोहनसाहिनैं, सुनि कहुँ प्रकट सिराह ॥ २ ॥
निज तनया जो नामकरि, कहियत सरसकुमारि १८२।१ ॥
नप्प१८२।१हिं सो ब्याहिय निपुन, पहिलैं१ सुमह प्रसारि ॥३॥
जैसलमेर नरेसके, बंधुवर्ग बिच बीर ॥
भट्टी कन्हड़देव भो, सिवसरपुर पँ सधीर ॥ ४ ॥
अभिधाकरि तस अंगजा, सूरजकुमरि१८२।२ सुजान ॥
वह दूजैं२ बुंदियअधिप, ब्याहिय उचित विधान ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

लिये भूमि का बंट करना-मांडलगढ लेना और काम आना इनकी सू' करना, जैत्रसिंह के कोटा नगर बसाने के संवत, मास, पक्ष और तिथि ३॥ निश्चय करना, नव भाइयों के साथ अपनी अपनी स्त्रियों के सती होने की संख्या कहना, बाईस वर्ष की अवस्था में राजा नरपाल का बुन्दी पुर के अधिपति होने का तीसरा मयूख समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ और आदि से १४९ मयूख समाप्त हुए ॥

जो वीरता में सिंह के १ सदृश और बुद्धि के २ बल में ३ त्यागने योग्य ४ बालक था ॥ १ ॥ भीतरी बुराइयें नहीं सुन कर प्रकट में ५ प्रसंशा सुनी जिससे ॥ २ ॥ ३ ॥ ६ पति ॥ ४ ॥ ७ पुत्री ॥ ५ ॥

इक१दिवस नृप नप्प१८२१अनुज हप्प१८२१२ सु अच्छोटन ॥
मिलत पितृव्यक जैत्रमल्ल १८१९ संजुत बढिगो बन ॥
जज्जाउर सन जाइ प्रथित टोडापुर पब्बय ॥
गिरिस पुज्जि गोकरन रह्यो गिरि घेरि बडे रॅय ॥
टोडानरेस किल्हन तनय रोपालहु मृगयारमत ॥
तँहँ आय सीम निज कोलत्रय३पिक्खे हड्डन हत्थ हॅत ॥६॥
रुष्ट तबहि रोपाल कहिय हम्मरे समीप क्रमि ॥
करि पालित किंटि कदन खूनकिय सु किम रहैं स्वामि ॥
जो बल तो द्रुत जुरहु न तो सूकरताजि नंठहु ॥
सुनत एह हुव सज्ज लरन काका१ भतीज२ लैंहु ॥
बिनुहयन पिक्खि चालुक बलहिं हड्डन सत्थहु बिनु हयन ॥
रिपुघात जैत्रमल्ल१८१९सु परिग ज़दपि लह्यो चालुक जय न ॥७॥

॥ दोहा ॥

गुटिका लग्गिय सोंड १८१६ सिर, चालुक करतैं चंड ॥
तीन३सुभट इक१ हय तदपि, खंडिकरे बहु खंड ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

बहि सिर गोलिय बिद्ध किद्ध इम जैत्रमल्ल १८१९ कॅलि ॥
तीन३सुभट इक१तुरग१ छेदि सुत्तो रन रस छलि ॥
काका१८१९ मरत कुबैन लुल्लि हरपाल१८२ स्वबीरन ॥
सहसा परि अरिसत्थ दयो करि बिकल १बिदारन२ ॥
सत्तरि७०गिराइ चालुक सुभट जो चालुक भट सद्वि६०जुत ॥
रोपालनाम जीवनरसिक दिय भजाइ हरपाल १८२१२ द्रुत॥

राजा १नरपाल छोटे भाई हरपाल सहित २ शिकार गया ३प्रसिद्ध. बडे ४ वन से. तीन ५ सूवर हाडों के हाथ से ६ मरेहुए देखे ॥ ६ ॥ ७ आकर. पालेहुए ८ सूवरों को मारे सो ९सहन करके कैसे रहैं १० भागो ११ शीघ्र १२ गिरा ॥७॥ १३ मारकर ॥ ८ ॥ १४ युद्ध ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

करि पद्दुत रोपालकहँ, जैत्रमल्ल १८२१९ धरि ज्वाल ॥
सूकर तीन ३ हि संगलै, पुर आयउ हरपाल १८२१२ ॥ १० ॥

॥ षट्पात् ॥

इम जज्जाउर आत भूप सुनतहि अमर्षभरि ॥
पहु तरज्यो नरपाल१८२११ अनुज हरपाल१८२१२अनादरि ॥
काका सहज कटाइ कहिय जीवत आयो किम ॥
पुनि टोडापुर पत्र त्वरित पठयो सकोप तिम ॥
इमलिखिय पितृव्यक१८२१९वैर अव लैहँ हम रन विजयलहि ॥
चालुकहु सुनत हुव अति चकित कन्यादैन उपाय कहि ॥११॥

॥ दोहा ॥

रम्य वहिनि रोपालकी, किल्लहनकी कन्या सु ॥
ग्यहिजनकुमरि१८२१३समाख्य वह, अप्पी नप्प१८२११हिंआसु॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

नाम अपर[2] नारंगदेवि १८२१३ जाकोहि वदत जन ॥
तीजी३ रानिय ताहि परनि किय नप्प १८२११ वीरपन ॥
खुंदिय आवत विपिन[3] तरुन कट्टत लखि खत्तिय[4] ॥
चपल कुठारन चलत प्रीति भूपति हिय पत्तिय ॥
ततकाल गिरत वह छिन्नतरु[5] जानिय जो ए रनजुरैं ॥
कट्टि तो अरिन सहमूल कुल विजयकरैं जस विप्फुरैं ॥१३॥

॥ दोहा ॥

तरुतच्छक[6] सतपंच ५०० तव, रक्खिय नप्प १८२११ नरेस ॥
भट १ मंत्रि २न वरजत भनिय, उचित विचारहि एस ॥ १४ ॥

॥ १०-११ ॥ १ नामवाली ॥ १२ ॥ २ दूजे नाम से ३ वन में४ खातियों को वृक्ष काटतेहुए देखकर ५ कटेहुए वृक्ष ॥ १३ ॥ पांच सौ ६ खातियों को नरपाल ने नौकर रक्खे ॥ १४ ॥

लजि दुलही सोलंखिनी १८२१३, सु सुनि थकी समुझाइ ॥
नैंकनमन्नी नप्प १८२१नृप, प्रचुर मूढपन पाइ ॥ १५ ॥
सजातीय जिततित सकल, लगे हसन सहलोक ॥
तच्छक सतपंचक ५००० तदपि, आयउ रक्खि स्वओक ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

सुनि यह बुन्दिय सोर समय खिच्चिय महेसलहि ॥
रहलावनि १ रामगढ २ मऊ ३ इत्यादि दब्बि महि ॥
मंगरोल ४ रचि अमल बढ्यो चम्मलिलग बैरिय ॥
दहिया १ गौड २ हु दुहु २ न लये करउर १ लक्खैरिय २ ॥
ततकाल कुजस बढिगो तदपि रन खत्तिन पुच्छतरह्यो ॥
तिन सठन मिलहिं अवसर तबहि कुल समूल कट्टहिं कह्यो ॥१७॥

(दोहा)

तोमर दुल्लहराय तिम, जाहि समय लहि जोर ॥
आक्रमि लिय केथोनि १ इम, अरि हुव सब सबओर ॥१८॥

षट्पात् ॥

समय इक्क मधु १ मास तीज २ उज्जल उच्छव तँहँ ॥
बुन्दियपुर हुव बिदित जानि नप्प १८२१ हु प्रमत्त जँहँ ॥
महिप डोड प्रामार सेरगढको जँनि जोरिय ॥
सठ हरराजसु साज्जि गाज्जि लैगो गुनगोरिय ॥
चित्रसो रह्यो नारिन निकर सभा थित सु नरपाल १८२१ सुनि ॥
लगिसंग मुरयो कछुदूरलग पहुँच्यो डोड स्वदुर्ग पुनि ॥१९॥
बुंदिय तदनु सवेग आय दूतन यह अक्खिय ॥

१बहुत मूर्खता पाकर ॥१५॥ २अपनी जातिवाले(क्षत्रिय)अपने ३घर आया॥१६॥ ४खातियों से युद्ध के लिये पूछता रहा ॥१७॥ ५घेरकर ॥१८॥ ६ चैत्र सुदि तीज के दिन गुनगौरि का उत्सव हुआ, वहां डोड प्रमार७माता को जबरी से लेगया. स्त्रियों का ८ समूह चित्राम का सा देखता रहा ॥१९॥ ९ जिस पीछे

यह डोडवंश प्रामारों के वंश की एक शाखा है

पाइ आत रवि*पर्व ÷सुकृत अवसर श्रुति सक्खिय ॥
गंगाद्वारहिँ गोन कल्लिह खिच्चिय महेसकरि ॥
जेंहँ अप्पहु जत्थ सत्थआवहु अरिसंहरि ॥
सुहि कहिय रंक खत्तिन सुलभ मूढनृपहु तिंन्ह मंत्र चढि ॥
प्रतिकूल निवारक परिकरहिँ वेग उतहि लै गो सु वढि ॥२०॥
हुव दुव मिजल महेस अग्ग पिट्ठिसु तस अप्पन ॥
इहिँक्रम उभय २ अनीक पत्तँ धन द्विजन समप्पन ॥
दिन चउ४ गंगाद्वारँ रहे अंतर दुरकोस रचि ॥
इतरहु भूप अनेक जुरिग जहँ जहँ स्व इष्ट जचि ॥
रविपर्व समय निज कर्मरत जानि महेसहिँ नप्पँ१८२१जँहँ ॥
लघु जाइ वेढि मंडिय कलह तिहिँ प्रत्युत किय चित्र तँहँ ।२१।
खिच्चिय नृप तव खिज्जि सज्जि सायुध हुव सत्वर ॥
समयोचितँ कृतसर्व गिनिसु सहसा रन गँत्वर ॥
निजदलजुत हय नँक्खि मंडि हड्डोदँधि मंथन ॥
किय विहँस्त अरिकटक पत्तँ मँतिगति जिहिँ पंथन ॥
भिरतहि वराँक खत्तिय भजत हाहा जिततित हास्यहुव ॥
रहिगो दिदृक्षु नसक्यो निरखि भानुहु ग्रस्त सु रंगभुव ॥२२॥

---

*सूर्य पर्व (ग्रहण) पर जो ÷पुण्य का समय है और जिसका साची वेद है, उन खातियों की १सलाह से चढा ॥२०॥ २पहुंचे ३गंगा के घाट का नाम है. जहां जहां अपनी ४इच्छा थी तहां तहां जमकर रहे ५ सूर्य ग्रहण के समय महेश-दास को अपने ६कामों में तत्पर जानकर ७ नरपाल ने ८ शीघ्र जाकर ९ घेर कर युद्ध रचा तहां उस (महेशदास) ने १०उलटा आश्चर्य किया ॥ २१॥ ११ समय के उचित १२गमनशील; अथवा युद्ध में गया. घोड़े १३ उठाकर १४ हाडों-रूपी समुद्र का मन्थन करके १५ व्याकुल किया. शत्रु की सेना के १६ पहुंचते ही जिस मार्ग जाने की जिसकी १७बुद्धि हुई वह उसी मार्ग गया अर्थात् अपने अपने मतानुसार भाग गये १८ युद्ध से; अथवा अधम खातियों के भागते ही चारों ओर से अट्टाट्ट हास्य हुआ. युद्ध को १९देखने की इच्छा वाला सूर्य

(दोहा)

भज्जत खत्तिय निजभटहु, मगलग्गिय मनमोरि ॥
पहिलैं जिन बरज्यो नृपहिं, नवभटकरत निहोरि ॥ २३ ॥
भग्गो नप्प१८२।१हु दलभजत, ब्याकुल लपन बिगारि ॥
जानीनहिं मतिमंद जिहिं, रजपूतन बल रारि ॥ २४ ॥

निश्शाणी ॥

मारनकज्ज महेसकी पृतना जब पत्ती ॥
कालीरसनासी कढी कोसनैंसन कत्ती ॥
बट१उब्बट२ तक्की तबहि आवन आढत्ती ॥
कोउ न रक्खहु नप्प१८२।१क्रम खोवन भुव खत्ती ॥ २५ ॥
सहसा जातहु सम्मुहे अरि पिक्खि इकट्ठे ॥
रंक पलाये रारितैं मरिबेसन मैंठे ॥
भट कोबिदपनके भये ठाँठाँ जग ठट्ठे ॥
सज्जे खत्तिय सूर तो नरपाल १८२।१ हु नैंट्ठे ॥ २६ ॥

॥ दोहा ॥

पछितायो टोडापतिहु, पाँटव सु करि प्रमान ॥
जो नप्प १८२।१ हिं इम जानतो, करतो कर कन्न्या न ॥२७॥

॥ षट्पात् ॥

इम बिगारि मुख अप्प आइ बुंदिय लज्जित अति ॥

देखने से रुक गया; क्योंकि उपराग होने के कारण युद्धभूमि को नहीं देख सका ॥२२॥२३॥ १ मुख बिगाड़ कर, जिस मूर्ख ने यह नहीं जाना कि युद्ध रजपूतों के बल से होता है खातियों के बल से नहीं ॥ २४ ॥ २ सेना पहुंची ३ म्यानों से तरवार निकली. मार्ग और बिना मार्ग घर आने की ४ आढ़त देखी अर्थात् भगे, ५ खाती ॥ २५ ॥ वे रंक युद्ध से भगे जो मरने में ६ मट्ठ (कृपण) थे. उन वीरों की पण्डिताई की ७ ठाम ठाम ८ हँसीहुई ९ भगे ॥२६॥ १० चतुराई ॥ २७ ॥

रक्खिय पुनि रजपूत मन्त्रि आदर तिन्ह सम्मति ॥
रत्ति चरत सैरिभिन पिक्खि इक दिन मृगयापथ ॥
पटु तिन्ह चारकँ पकरि अक्खि चोरहि लायो अथ ॥
तुमरीहिप्रजा हम कहिय तिन्ह रहत पुष्ट पसु चरि रजनि ॥
निस तबहि भटन इच्छित नृपति भयो जिमावत उचित भनि ॥२८॥

॥ दोहा ॥

जिहिँ तीजो३ निजनाम जग, किय फुटँ पँसर सु काल १८२।१
सिसुजिम इम जोजो सुनैं, मन्नैं सुसु महिपाल ॥ २९ ॥
हल्लू १८२ लघुवय जदपि हो, वंबावद वसुधेस ॥
तदपि उपालंभन तरजि, दिय नप्प १८२।१हिँ उपदेस ॥३०॥
नप्प१८२।१अनुज हप्प१८२।२सु रमनि, जुग२ परन्यो पटजोरि ॥
रामकुमरि१८२।१सीसोदनी, राजकुमरि१८२।२ रट्ठोरि॥३१॥
जैत्र१८२।३हु किय जुग२व्याह जँहँ, उमाकुमरि१८२।१अभिधान॥
सो तोमर दुल्लहसुता, व्याह्यो प्रथम१ विधान ॥ ३२ ॥

॥ भिधान१ विधान२ अन्त्यानुप्रासः ॥१॥

परतटपुर जानैं प्रथम १, थिर दक्खिय केथोनि१ ॥
यातैं गिनि भू वैर इहिँ, दिय दुहिता रन छोनि ॥ ३३ ॥

१सलाह. शिकार के मार्ग में २रात्रि में ३भैंसियों को चरती हुई देखकर उनके चतुर ४चरानेवालों को पकड़ कर उनको चोर कहकर लाया, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारी ही प्रजा हैं और पशु रात्रि में चरकर ५ताजा रहते हैं, तब रात्रि में अपने भटों को वांछित भोजन जिमाना उचित कहकर जिमाने लगा ॥२८॥ जिसने अपने नाम से भोजन का यह तीजा समय ७ *पसर काल के नाम से ६ प्रसिद्ध किया, इसप्रकार वह राजा बालक के समान जो जो सुने सो सो ही मानने लगा ॥ २९ ॥ ८ राजा ने भी ९ दुर्वचनों से धमकाकर ॥ ३० ॥ १० छोटा भाई ११ स्त्रियें १२ गंठजोड़ा (गठजोड़ा) बांधकर ॥ ३२ ॥ १३ ॥

---

*रात्रि की चौथी प्रहर के प्रारम्भ में पशुओं को जंगल में चरानें उसको देशभाषा में पसर कहते हैं सो इस राजा ने भी अपने वीरों को प्रहर रात्रि रहे पसर जिमाना प्रारम्भ किया

अक्खयसिंह सुताहु इम, समकुल पथ लखि सीर ॥
कछवाही आभाकुमरि१८२१२, परन्यौं अपर२ प्रबीर ॥ ३४ ॥
रोक्यो नप्प१८२१ सु डुंगर१४२१४ हु, आयो तदपि उमाहि ॥
करउरपति दाहिया कनी, स्यामा१८२१ को करसाहि ॥३५॥
सहिनसक्यो नरपाल १८२१ इन, अनुजनके अपराध ॥
लग्यो चढन रिपु संधिलखि, बिरचन दोउ२न बाध३ ॥ ३६ ॥

॥ षट्पात् ॥

खत्तिन रक्खत खिज्जि भटन बरज्यो जिन भूपहिं ॥
किय तिनको संकोच रक्खि आदर अनुरूपहिं ॥
कनीदेत तिनकहिय अरिहि लाघव४ अंकूरिय ॥
सुनिइम नगयो सामि सु खमि सु कोटा१ खज्जूरिय ॥
परन्यौं चतुष्क४ हल्लू१८२१नृपहु प्रथम१गौड़ सोपुर नृपति ॥
कन्या दई सु अभिधानकरि अमृतकुमरि१८२१ सुकुमार अति॥३७॥

॥ दोहा ॥

जिम घोसा जसराजकी, कन्या निधि गुनकेर ॥
कछवाही नरबदकुमरि १८२१२, ब्याहिय दूजी२ बेर ॥ ३८ ॥
तीजैं३ चम्मलपारतट, यहहु जैत्र १८२१३ जिम जाइ ॥
तोमर दुल्लह लघु सुता, परन्यौं गौरव पाइ ॥ ३९ ॥
नाम जास केसरिकुमरि १८२१३ पुर केथोनि पधारि ॥
जो लहि साली जैत्र १८२१३ की, आयो कुल अनुकारि ॥४०॥
तिनसौं रुठ्ठो नप्प १८२१ तउ, किय जो तिन हितकाम ॥
संतति कहि कहिहैं सु पैं, अग्रर्किरन अभिराम ॥ ४१ ॥
तनयतीन३ नरपाल १८२१ नृप, पाये गुनन गरीय ॥

॥ ३४ ॥ १ कन्या को २ करग्रहण (विवाह) करके ॥ ३५ ॥ ३ विनाश ॥३६ ४ शीघ्र ५ खड़े हुए ६ शान्त (ठंढा) होकर, सहन करके ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ दु ल्लह नामक तँवर की ७छोटी पुत्री को ॥३९॥४०॥ अगले मयूख में।४१।९बड़

तँहँ अग्रज हम्मीर१८३।१तस, हम्म१८३।१हु नाम द्वितीय ॥ ४२ ॥
नवरंग१८३।२सु मध्यम अनुज, लघु थिरराज१८३।३लसात ॥
पहिलो१कछवाही१८२।१प्रसव, जुग२भटियानी१८२।२जात ॥४३॥
नवरंग१८३।२हिं दिय लाडपुर१, जाको कुल जसजुत्त ॥
इहिन अष्टम८भेद हुव, पटु नवरंगपउत्त२१८ ॥ ४४ ॥
थिरराज१८३।३हिं दिय अनथड़ा२, अन्वय३ तास उदार ॥
जो थिरराजपउत्त१९जग, कहियत नवम९ प्रकार ॥ ४५ ॥
पुत्रन दिन्नी सिसुपनहि, वंटि पुहवि बुन्दीस ॥
सुनहु पंच५हल्लू१८२।१सुतन, अभिधा अब नरईस ॥ ४६ ॥

अमृतकुमरि१८२।१ औरस उभय२,
चंच१८३।१कुंभ१८३।२पटुपूत ॥
वाम१८३।३भोज१८३।४अरुनयन१८३।५त्रय३,
नरवदकुमरि१८२।२प्रसूत ॥ ४७ ॥

इहिन भेद चतुर्थ४हुव, हल्लू१८२।१पौत्र१।४कहात ॥
इन५नामन जुरि ते अखिल, प्रथित उत्त५पद पात ॥ ४८ ॥
पहिलँ१पीछँ२कथनक्रम, उचित समय अनुसार ॥
जानिलेहु नृपराम२०२जिम, इम पटु सभ्य उदार ॥ ४९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५ राशौ वीतिहोत्रचरडासि १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेशनरपाल १८२।१

गुणवान् ॥ ४२ ॥ १ शोभायमान ॥ ४३ ॥ २ नवरङ्गपोतों के नाम से ॥ ४४ ॥
३ वंश ॥ ४५ ॥ ४ नाम ५ हे नरेन्द्र रामसिंह! ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ नामों के अन्त में
६ प्रसिद्ध उत्त पद पाते हैं अर्थात् चञ्चाउत्त, कुम्भाउत्त आदि ॥ ४८ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण के वंशजों के वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंशकी

चरित्रे प्राप्तराज्यनरपाल १८२।१कौर्मी १८२।१भट्टिनी १८२।२प-
त्नीद्वय २ परिणयन १ गोकर्णगिरिमृगयारसिकव्यापादितवराह-
त्रय ३ समरसिंहा १८१।७ ऽनुजजैत्रमल्ल १८१।९नरपाला १८२।१
ऽनुजहरपाल १८२।२ सहितस्वसीममृगव्यमच्छरिचालुक्यरोपालर-
णरचन २ गुटिकाविद्धमूर्द्धनिपातितैक १ हयप्रतिभटत्रय ३ जैत्र-
मल्ल १८१।९ वीरशय्याशयन ३ नाशितशत्रुसप्तति७०कपद्राविताः-
प्रतिपक्षसपोत्रित्रिक ३ हरपाल १८२।२प्रत्यागमन ४ तर्जितानु-
ज १ मार्गितपितृव्यकवैर २ नरपाल १८२।१ तृतीय ३ पत्नीचा-
लुकी १८२।३ पाणिपीडन ५ प्रत्यागच्छन्नरेन्द्रवारकप्रातिकूल्यपू-
र्वकसुभटीकृतपञ्चशत ५०० वर्द्धकिवृन्दरक्षण ६ विज्ञाततद्बालि-
शत्वसगोत्रखिच्चि १३ महेशरहलावणपुरप्रमुखप्रदेशचतुष्क ४ स-
माक्रमण ७ दाभिक १ गौड़ २ तोमर ३ त्रय ३ यथासंख्यपुरकर
वुर १ लक्खैरी २ केथोण ३ समादान ८ सेरगढदुर्गमहीपडोड-
प्रामारहरराजसबलात्कारबुन्दीपुरगुणगौरीसमाहरण ९ तदनु-
द्रुताऽप्राप्तपरपक्षप्रधननरपाल १८२।१ निन्दाप्रादुर्भवन १० दूतप्र

शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेश नरपाल के चरि-
त्र में राज्य पाकर नरपाल का कछवाही और भटियानी दो स्त्रियों से विवा-
ह करना, गोकर्णेश्वर महादेव के पर्वत में शिकार के रसिक तीन सूवरों को
मारकर समरसिंह के अनुज जैत्रमल्ल और नरपाल के अनुज हरपाल सहित
शिकार खेलनेवाले चहुवाणों से सोलंखी रोपाल का युद्ध रचना, गोली से
मस्तक विद्ध होकर एक घोड़े और तीन शत्रुओं को मारकर जैत्रमल्ल का काम
आना, सत्तर शत्रुओं को मारकर शत्रुओं के भागने पर तीनों सूवरों सहित
हरपाल का पीछा आना, छोटे भाई को धमकाकर काका का वैर मांगने पर
नरपाल का तीसरी स्त्री सोलंखिनी से विवाह करना, पीछे आकर नरेन्द्र का
मना करने पर प्रतिकूल होकर पांच सौ खातियों को सुभट बनाकर रखना,
उस की मूर्खता जानकर उसी गोत्रवाले(चहुवाण) खीची महेशदास का रह-
लावणपुर आदि चार प्रदेशों को लेना, दाहिया, गौड़, तोमर इन तीनों का य-
थासंख्या से करवुर, लाखैरी, केथोण लेना, सेरगढ के महीप डोडशाखा के
प्रामार हरराज का बल पूर्वक बुन्दीपुरी की गणगौर का हरना, जिसके पीछे

मुखज्ञातखिचि१३ महेशगंगाद्वारगमनतत्पृष्ठप्रस्थितनरपाल १८२।१
प्राप्तशत्रूद्दिष्टतीर्थदिनचतुष्क ४ समयसमवस्थान ११ पञ्चम ५
दिनसोपप्लवसूर्यसमयसूचितसाध्यसाधनपाटवप्रमत्तपरिपन्थिप्रता-
रण १२ तत्कालसज्जसैन्यप्रत्युत्पन्नप्रज्ञहड्डोदधिमन्मथमन्दरमहेश
त्रस्तवर्द्धकिव्रातविपलायन १३ दृष्टानिष्टकातरीकृतस्वान्तप्र-
द्रुतस्वपरिकरपश्चात्तापितचर्मश्वशुर्यकान्दिशीकबुन्द्यागतनरपाल-
१८२।१ पुनःक्षत्रभटसमर्जन १४ लालिकीपालशिक्षितरात्रिभटभोज
नोपहास्यप्रादुर्भावितत्तृतीय ३ निजनामान्तरनप्पा १८२।१ र्थहल्लू
१८२।१ पालम्भन १५ नप्पा १८२।१ ऽनुजहप्प १८२।२ शैषोद्दी
राष्ट्रकूटी २ द्वितीयाद्वयो २ पयमन १६ तदनुजजैत्रसिंह १८२।३
तोमरी १ कौर्मीपत्नीद्वय २ परिणयन १७ नप्प १८२।१ निवारि
ततदनुजडुङ्गरसिंह १८२।४ समाक्रान्तकर्बुरशत्रुसुतादाभिकी १ पा
णिपीड़न १८ स्वीयसुभटसङ्गजैत्रसिंह १८२।३ डुङ्गरसिंह १८२।४
जिघांसुनप्प १८२।१ निवारण १९ हड्डाधिराजहल्लू १८२।१ गौ-

दौड़ कर प्राप्त नहीं होने से शत्रुओं में नरपाल की युद्ध विषयक निन्दा हो-
ना, दूत आदि से खीची महेशदास का गङ्गाद्वार जाना जानकर उसकी पीठ
पर गमन करके शत्रु के तीर्थ स्थान पर प्राप्त होकर चार दिन पर्यन्त वहां र-
हना, पांचवें दिन सूर्यग्रहण के समय कहेहुए साधन योग्य कार्यों के साधन में
चतुर ऐसे गाफिल शत्रुओं को ताड़ना करना, तुरन्त सेना सजकर उस बुद्धि-
मान् से उत्पन्न हुए हाडों के समुद्र रूपी ज्ञान को मथनेवाले मन्दराचल रूप
महेश से डरकर खातियों के समूह का भागना, अपनी परगह का नाश और
मन के कायरपन से भागे हुए देख कर खेद पायेहुए बाकी के अपने वीरोंस-
हित भयद्रुत बून्दी में आये हुए नरपाल का फिर क्षत्रिय वीरों को इकट्ठा क-
रना, भैंसियों का पालन करनेवालों(ग्वालों)की शिक्षा से वीरों को अपने ना-
म से तीसरा भोजन कराने से उपहास्य होकर नरपाल के अर्थ हल्लू का उ-
पालम्भ देना, नरपाल के छोटे भाई हरपाल का सीसोदिनी और दूसरी रा-
ठोड़ी दोनों से विवाह करना, उसके छोटे भाई जैत्रसिंह का तोमरी और क-
छवाही दो स्त्रियों से विवाह करना, नरपाल के मना करने पर छोटे भाई डूं-

ड़ी १ कौर्मी २ तोमरी ३ राष्ट्रकूटी ४ पत्नीचतुष्क ४ पाणिग्रहण २० नरपाल १८२।१ तनयहम्मा १८३।१ऽपर २ नामहम्मीर १८३।१ नवरङ्ग १८३।२ स्थिरराज १८३।३ त्रय ३ प्राकट्यपूर्वकतत्तन्मातृनिश्चयन २१ यथासंख्यप्राप्तलाडपुरा १ ऽनथड़ा२ऽऽख्यस्थाननवरङ्ग १८३।२ स्थिरराज १८३।३ भाविसन्ताननवरङ्गपौत्र ।१८ स्थिरराजपौत्रो २।९ पटङ्क्तिहड्डकुलाष्टम ८ नवम ९ भेदप्रख्यापन २२ स्वस्वजनन्यवधारणासहितचञ्च१८३।१ बामा १८३।३ ऽऽदिभाविहल्लू १८२।१ पुत्रपञ्चक ५ सन्ततिहड्डकुलचतुर्थ ४ भेद हल्लूपौत्र४ ४ पञ्च ५ प्रकारप्राप्तिप्रकटनं २३ चतुर्थो४ मयूखः ॥ ४ ॥ आदितः पञ्चाशदुत्तरशततमः ॥ १५० ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ (दोहा)

रक्खन खत्तिय १ भजन रन२,पसरचरावन ३ पिक्खि ॥
बढिग सीम आक्रामि बहुत, सत्रुभाव नव सिक्खि ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

दहिया १ तोमर २ द्वैर हु भये दब्बत बुंदिय भुव ॥

गरसिंह का करवुर लेकर दहिया जाति के शत्रु की पुत्री से विवाह करना, अपने सुभटों के समूह का जैत्रसिंह और डूंगरसिंह को मारने से नरपाल का रोकना, हड्डाधिराज हल्लू का गौडी, कछवाही, तोमरी और राष्ट्रकूटी चार स्त्रियों से विवाह करना, नरपाल के पुत्र हम्मा दूसरे नाम से हम्मीर, नवरङ्ग और स्थिरराज तीनों का प्रकट होना और उनकी माताओं का निश्चय करना, यथसंख्या से लाडपुरा और अनथड़ा नामक स्थान पाना और नवरङ्ग और स्थिरराज के आगे होनेवाले सन्तान का नवरङ्गपोता और स्थिरराजपोता पदवी से हाडों के कुल में अष्टम और नवम भेद होने की सूचना करना, अपनी अपनी माता के धारण करने सहित चंच और बाम आदि आगे होनेवाले हल्लू के पांच पुत्रों के बंश का हाडाओं के कुल में चतुर्थ भेद हल्लू पोते का पांच प्रकार की प्राप्ति प्रकट करने का चौथा मयूख समाप्त हुआ॥४॥ और आदि से १५० मयूख हुए ॥

इनके गृह उपयाम हुडु तीन३न अभीष्ट हुव ॥
जैत१८२१३रु डुंगर१८२१४जुगल२वहुरि हल्लू१८२१२हु बिवाहिय॥
यातें तिनपति अहित नप्प१८२१ बुंदीस निबाहिय ॥
हल्लू १ रु जैत्र २ तब इमकहिय बैरिनकी कन्या बिबहि ॥
आवैं सु स्वकुल गौरव गिनत कबहु न लाघव मंतु कहि ॥२॥

पादाकुलकम् ॥

जो तुम अरि जामाता जानत, परपक्षी इम भुल्लि प्रमानत ॥
आवहु तो पहिली मति उज्झत, जुरि पिक्खहु भ्राता कितजुज्झत
तरुतच्छकजितनप्प१८२१भयेतिम, अप्पनगिनहुहमहिंस्त्रीजितइम
भट१रु सचिव२पुच्छे तब भूपति,उन अक्खिय इतही सनेह अति॥४॥
तबनरपाल१८२१२सजिदलसत्वर, प्रथम१चढयोखिच्चिय१३महेसपर
कोटापुरहि प्रपातें जायकिय, इत तँहँ बंधु जुगरहि उपदादिय ५
जैत्रसिंह१८२१३तत्थहिहोजानत, तिहिंस्वागतकियअतिउंपयतानत
अक्खियप्रान१धन२रुवसुधा३पह, सबहि स्वामिआयत्तकित्तिसह६
कोटागतहल्लू१८२१२हु सुनत क्रम, नृपहुअग्रजहिंआइमिल्योनामि
लघुवय१राज्य२पिक्खिनृपमद्दलिय, एकासनबैठन ननइच्छिय ७
भटन कहिय प्रभुकोहि लैनभुव, हल्लू१८२१२से पट्टप सहाय हुव
अधिक राज्य दर्प न इम आनहु,पुहवी तुमहु गई सु प्रमानहु॥८॥
हल्लू१८२१२जनक बिहित उत होई,खमि तुम जनक अनंतरखोइ

१ विवाह २ प्रिय ३ विवाह करके ४ वडप्पन. तुच्छ ५अपराध करना भी नहीं कहना चाहिये ॥ २ ॥ जो तुम शत्रुओं के ६ जमाई जानते हो इसी से ७ शत्रु मानते हो तो भूल है. पहिली बुद्धि को ८ छोडकर युद्ध करके देखो कि भाई किसकी ओर लड़ते हैं. हे नृपाल! तुमको जैसे ९खातियों ने जीत लिया तैसे हमको स्त्रीजित मत समझो ॥४॥ १० शीघ्र सेना सझकर ११मुकाम (पड़ाव) १२नजराना ॥५॥ अत्यन्त १३खरच करके १४आधीन ॥ ६ ॥१५चलकर १६एक गादी पर बैठना नहीं चाहा ॥७॥ राज्य अधिक होने का १७ घमण्ड मत ला- ओ १८ भूमि तुम्हारी ही गई है ॥ ८ ॥ हल्लू के १९ पिता तुम्हारे २०पिता ने

दलिहरराज१८११साह उत दक्खिय, चुच्छ१इततुमरीभ्रवचब्खिय॥९॥
अक्खिस्वीयकाकामुक्कल१८११यह, एकासन बैठन किय आग्रह
नृपहिंपितृव्यकानिक्किनिहोरियजाभुनप१८२११हल्लू१८२११जबजोरिय
हल्लू१८२१२कहियपुव्वहँमरोहित,समर१८१७समरसोयेहितसंचित॥
भुग्गतहम बपु अल्प अल्पसुव,हितवस लोभ ग्रसेहि सत्थहुव॥११॥
द्रुत जानत हमरी लैदेहो, प्रधनकर्म हमरी जो पैहो॥
सुनि औसीहु न नप१८२११सिटायो, यहजानी भटबनि इतआयो॥
सबनछिपी न रही मति सोहू, जानतहुव कोबिद जो जोहू॥
भोजनसमयहु इमइहिं भूपति, मन्नी यह किम उचित मंदमति॥
तबहुतरजिसुक्कल१८१हठतानत, बैठारयो इक१ थाल बखानत॥
गहिकरगाढ जैत्रसिंह१८११३हुजिम,इक्क१थालजिस्मनलिन्नोइम॥१४
अक्खिय दोउरन अंसन अनन्तर, तरुतच्छक्क जिमाकिन्नसुभटतर
जैसँअप्प१८२१२हमहि जिनजानहु, पानिस्वकीयनजुद्धप्रमानहु १५
किय नृप तब इन जुत प्रयान किर, स्वभुत्र लैन पहिलँ१महेसासिर
दूतनअक्खियदंगपलहायथ,परिकर अल्पसु आत निकट पथ॥१६॥

॥ पज्झटिका ॥

इहिं क्रम कोटारसन सुनि सु अड्ड॥
हंकिय सांयं तनयं संय हड्ड॥
नवसहँस ९००० दुहुर न दल बल बिधान॥
पत्ते प्रधान तँहँ बिधिप्रमान॥ १७॥

---

१ तुच्छ लोगों ने तुम्हारी भूमि को अब चबाई (चर्वण की) है॥ ९॥ २घुटना जोड़कर बैठे॥ १०॥ ३ पहिले ४ समरसिंह ५ युद्ध में सोये थे॥ ११॥ ६ युद्ध कर्म ७ उमराव बनकर॥ १२॥ ८ पण्डित थे जो सब समझ गये॥ १३॥ ॥ १४॥ ९ भोजन के पीछे १० खातियों को ११ अत्यन्त सुभट १२ हाथ १३ अपने लोगों के॥ १५॥ १६॥ १४ आड सार्ग अर्थात् उपट १५ सन्ध्या समय १६ फैलाते हुए १७ हाथों से अर्थात् शत्रुओं के लिये अपने हाथों से अन्धेरा

एर लुट्टि हल्लकरि अरर पारि,
चउ ४ अट्ट दुर्ग प्रविसे प्रचारि ॥
हो तँहँ महेस बंधुव पहार,
सम्मुह हुव गिनि ध्रुव मरन सार ॥ १८ ॥
संहारत इतके भटन सूर,
पँहुच्योहिं नप्प १८२१ ढिग दप्पपूर ॥
असिझारिय भूपति अंस आइ,
करि फलकँ दिय सुमुक्कल१८२१ चुकाइ ॥१९॥
दूजी २ सिरँ दिन्नी सिर कराल,
कटि पग्ग गई अंगुल १ कपाल,
हल्लू १८२१ तब जुज्झत अग्ग होइ,
दे असि पँहार किय खंड दोइ २ ॥ २० ॥
सतइक्क १०० पर इतके सिपाह,
उतके मृत सत्तार ७० रंगराहँ ॥
पुर इम सु पल्हायथ १ प्रथम १ पाइ,
सत अठ्ठ ८०० सुभट तँहँ धारि सहाइ ॥ २१ ॥
पुनि दल जयरंजितँ किय प्रयान,
आयो तँहँ खिच्चिय१३ खगउडान ॥
दल इक्कअयुत १००००० सज्जित दुरूह,
जितजित पटैत बढि भटन जूह ॥२२॥

फैलाते हुए चले ॥ १७ ॥ १ कपाट तोड़कर २ पहाड़सिंह ३ निश्चय. मरना ही ४ सार समझ कर; अथवा खड्ग से मरना निश्चय मानकर ॥ १८ ॥ ५ दर्प ६ कन्धे पर ७ ढाल से ॥ १९ ॥ दूसरा प्रहार सिर और ८ पगड़ी पर भयङ्कर दिया; यहां एक शिर शब्द पगडी का वाचक है ९ पगड़ी १० पहाड़सिंह के दो टुकड़े करदिये ॥ २० ॥ ११ युद्ध के मार्ग में ॥ २१ ॥ १२ विजय से प्रीति करनेवाला; अथवा जय होने से प्रसन्न होकर १३ पक्षि.के उडान के वेग से १४ कठिनाई से तर्कना में आवे ऐसा १५ समद ॥ २२ ॥

छतें अल्प नृपहिं तउ सिबिरें छंडि,
हड्डे हुव सम्मुह स्ट्रधहिं मंडि ॥
कुलपँहुप हल्लू१८।२।१ बिजयकास,
नृप नप्प१८।२।१ अनुज हरपाल१८।२।२ नाम ॥ २३ ॥
जिहिं अनुज जैत्रसिंह १८।२।३ हु सजोर ॥
मुक्कल१८।१।१ पुनि काका भटनमोर ॥
हो मुक्कल १८।१।१ पह अरिग्रसनहार ॥
देवा १८।०।१ऽनुज मोहन १८।०।१।१ सुत उदार ॥२४॥
हनि अष्ट ८ अह्व छनलहि गहीरें ॥
बचिगो जु साहदल समर बीर ॥
जिहिं कानि जैत्र१८।२।३ हल्लू१८।२।१ सुसंधं ॥
इक १ थाल निठि लिय नप्प १८।२।१ अंध ॥२५॥
पुनि भूप अंस अरि असि प्रहार,
हड्डनअरि टारिय जिहिं उदार ॥
सो नृप पितृव्य मुक्कल १८।१।१ सधीर,
बलबिच चतुर्थ ४ पह मुख्य बीर ॥ २६ ॥
चउ ४ हड्डन पिल्लिय बल बकारि,
हल्लिय महेस उतसैंन हकारि ॥
हरराज ११ सेरगढ आधिप हंकि,
आयउ महेस २ उपकार अंकि ॥ २७ ॥
मिलि दल उत दोरउन अयुत १०००० मान,
नवसहँस९००० इतहु दोरउन निदान॥

अल्प १ घाव लगा था तो भी राजा को २ डेरों में छोड़कर ३ युद्ध रचकर ४ वंश में पाटवी ॥ २३ ॥ बीरों का ५ मुकुट ६ देवासिंह के छोटे भाई मोहनसिंह का पुत्र ॥ २४ ॥ आठ घाव ७ गहरे पाकर. जिसकी ८ शङ्का से ९ श्रेष्ठ प्रतिज्ञावाला ॥ २५ ॥ २६ ॥ १० उधर से. उपकार का ११ चिन्ह करके; वा उपकार

मचि तुमुल चित्र बढि असिनमार,
रुक्किय रवि कौतुक बहुप्रकार ॥ २८ ॥
मुक्कल १८।१।२ तँहँ अरिभट त्रिदस १३ मारि,
सोयो समरंगन जसप्रसारि ॥
खिच्चिय १३ महेसको सचिव खंडि,
हरपाल १८।२।२ छकिय वपु छत विहंडि ॥२९॥
अतिमोहँ थकत हरपाल १८।२।२ अंग,
अरिदल बढ्यो सु धरि जयउमंग ॥
धीर १ रु हरि२ खिच्चिय १३ हनि धक्यो सु,
छतअधिक जैत्रसिंह १८।२।३ हु छक्यो सु ॥ ३० ॥
बढितँहँ नृपहल्लू १८।२।१ भीमवेस,
मूर्छित मतंगथित कियमहेस ॥
छतविकल झुकत खिच्चिय १३ सछोह,
आयो हरराजसु रचत रोह ॥ ३१ ॥
सरदुव २ तस हल्लू १८।२।१ सहि विसेस,
पहु हनिय खग्ग अरिसिर प्रदेस ॥
कटि टोप द्वि २ तिलँ पैठत कृपान,
भीलुक सु डोढ भजिगो बिभान ॥ ३२ ॥
दलभजत डोढ बनि व्यग्र दंद,
मूर्छित महेस लै भजिग मंद ॥

करके ॥२७॥ १ भयंकर युद्ध मचकर आश्चर्य २ घटा ३ खड्गों की मार से ॥२८॥ ४ युद्धभूमि में ५ शरीर को घावों से ६काटकर ॥२९॥ ७ अत्यंत मूर्छा से ८ अधिक८घावों से ॥३० ॥९ भयङ्कर वेश से अथवा भीमसेन के वेष से १० हाथी पर चढ़ेहुए महेसदास को मूर्छित किया ११घाव से विकल होकर १२ शत्रुओं का रोष (रोक) रचताहुआ ॥ ३१ ॥ दो १३तिल के बराबर १४ तरवार बैठते ही १५ भीरु (कायर) ॥ ३२ ॥ युद्ध में १६ व्याकुल होकर

इतकेहु मुख्य छकि छत[1] अपार,
हल्लू १८।२।१ हि रह्यो रनकरनहार ॥ ३३ ॥
रनखेत खरो यह धवल धीर,
बजवाइ बिजयआनक प्रबीर ॥
हरपाल १८।२।२ जैत्र १८।२।३ छतमूढ[2] हेरि,
निजसिबिर[3] सबन लायो निबेरि[4] ॥ ३४ ॥
कियकाका मुक्कल १८।१।१ दाहकर्म,
नप्प १८।२।१ हिं जयआप्पिय कछु सुनर्म[5] ॥
सतअट्ठ ८०० गिरे इतके सिपाह,
उतकेहि इते ८०० लहि वाहवाह ॥ ३५ ॥
बिद्रुत[6] बल खिच्चि१३न प्रहत[7] बिक्खि,
अपरहु[8] किय हल्लुव १८।२।१ समय इक्खि ॥
कोटापठाइ घायल कितेक,
अलपछत[9] नप्प १८।२।१ लै संग एक १ ॥ ३६ ॥
चढिकैं निस हल्लुव १८।२।१ चाहुवान,
लिय जाइ सीसवाली २ सुथान ॥
खिच्चिय १३ भट हे तिन्ह कछु खपाइ,
दिय नप्प १८।२।१ आंन[10] तत्थहु फिराइ ॥ ३७ ॥
धरि तँहँ सतबारह १२०० सुभट धीर,
पत्ते[11] पुनि कोटा दुव २ प्रबीर ॥

---

१ अनेक १ घावों से ॥ ३३ ॥ २ घावों से मूर्छित हुओं को हेरकर ३ अपने डेरों में ४ युद्ध का ४ निपटारा (निमेड़ा) करके ॥ ३४ ॥ ५ हसी के साथ; अर्थात् नरपाल युद्ध में नहीं गया इस कारण उसकी हसी करके विजय की सूचना की ६ खीचियों की ६ भगीहुई और ७ मरीहुई सेना को देखकर हल्लू ने ८ और भी समय देखकर कार्य किये ९ छोटे घाववाले अकेले नरपाल को संग लेकर ॥ ३७ ॥ १० ढिंढोरा ११ पहुंचे

क्रिय *न्हान हप्प१८२१२ जैत्र १८२१३ हु जितैंक ॥
अवनीस रहे दुव २ तहँ इतैंक ॥ ३८ ॥
जंपिय पुनि हल्लू १८२११ करनजोरि,
हमसौं भई सु किन्नी निहोरि ॥
भुव इम लेदैहो तुमहु भ्रात,
जानहिं तव प्रत्युपकार जात ॥ ३९ ॥
इमकहि वंवावद पत्त अप्प,
निजपुर इतआयउ भूप नप्प १८२१२॥
इकसमय श्रावनिक तीज ३ तत्त,
पुरटोडा पाहुन नप्प १८२११ पत्त ॥ ४० ॥
तव पिउहरं ही रानी तृतीय ३,
गिनितास प्रेम बंधन गरीय ॥
आसार अमित जलपूर जास,
वाजिबल तरि सु तटिनी वनास ॥ ४१ ॥
आगम निसीथ असवार एक १,
टोडापुर पहुँच्यो निवहि टेक ॥
सोलंखिन जातहि मँह प्रसारि,
कंतिदिन तहँ रक्खिय प्रसभंकारि ॥ ४२ ॥
वर्द्धापन १ बादन २ नटन ३ गान ४,
मंचि विविध कुतूहल तान मान ॥
इकदिन गिरि निज्झर गय असेस,
नानाविध क्रीड़त दुव २ नरेस ॥ ४३ ॥

जबतक हरपाल और जैत्रसिंह ने नैरोग्यता का *स्नान किया तबतक दोनों राजा वहीं रहे ॥३८॥ १ पीछा उपकार हुआ जानेंगे ॥ ३९ ॥ २ श्रावण की ३ गया ॥४०॥ ४पीहर(पिता के घर)५ घोड़े के वल से ६बनास नदी तिरा ॥४१॥ ७उत्सव ८हठ करके. उत्सव, वाद्य, नाचने गाने से विविध कौतुक मचा ॥४३॥

किल्हन १ तब गोह्यो तजि स्वकाय,
रोपाल्ल २ हुतो चालुक्कराय ॥
सो स्वीय कुमर नरपाल ३ सत्थ,
जामिपहित[2] बर्द्धन पत्त जत्थ ॥ ४४ ॥
पल्ल १ अन्न २ सिद्ध हुव चउ ४ प्रकार,
अहिफेन[4] १ भंगि २ मादक अपार ॥
बारुनि[5]प्रसंग चालुक बहैं न ॥
नृपकरि सु पान किय रत्तनैंन ॥ ४५ ॥
थिरइक्क १ सिला गिरिकटक थान,
सम[7] १ रुचिर २ दिग्घ ३ आयत[10] ४ समान ॥
बुंदीपहुँचावन तिहिं बिचारि,
हक्कलिय उड्ड १ सँकट[11] २ न हकारि ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

बुंदिसहिं बरज्यो बहुन, उपल्ल[12] न दुर्लभ आँहि ॥
सालक[14] अनुमत[15]लहि सुपहु, तदपि पठावहु ताहि ॥ ४७ ॥

॥ षट्पात् ॥

मद्यबिबस महिपाल भनिय यहसुनत कोपभरि ॥
कातर चालुक कतिक देत दुहिता जु बैर डरि ॥
रोपाल १ सु सहिरहिय तदपि नरपाल २ पुत्र तस,
सह भट ग्रावसमीप[16] जाइठह्यो बिरोधबस ॥

---

१ अपना शरीर छोड गया था २ थहिनोई ॥ ४४ ॥ ३ मांस और चार प्रकार के अन्न पके. ४ अमल ५ नशे की वस्तुएँ. सोलंखी ६ मद्य नहीं पीते थे ॥ ४४ ॥ पर्वत के शिखर पर एक शिला ७ बराबर ८ सुन्दर ९ लंबी १० चौड़ी बराबर थी जिसको बुन्दी पहुंचाने के लिये ओड (खोदनेवाले जाति विशेष) बलदार और ११ गाडों को मंगवाये ॥ ४६ ॥ १२ पत्थर दुर्लभ नहीं १३ हैं तो भी हेराजा १४ साले की १५ मंजूरी लेकर भिजवाओ ॥ ४७ ॥ वीरों के सहित १६ पत्थर के

वुल्ल्यो सु लयेजात न विखम इम रजपूतनके उंपल,
वल जोहु करहु कैसी बनत कंकहु नन चक्खहिँ कुंपल ॥४८॥

॥ दोहा ॥

करखि खग्ग हड्डहु कमत, वहुन गह्यौ धरि बत्थ ॥
मेटतहुव रिस मध्य रहि, सांत्वन करन समत्थ ॥ ४९ ॥
रत्ति वहहि बुंदीसरहि, रस१ विच विरस २ रचाइ ॥
लै निजरानिय प्रात लघु, आलँय प्रविस्यो आइ ॥ ५० ॥
कतिमासन अंतर कढत, मन सुहि अनख प्रमानि ॥
सज्जि फटक१ खनक२रु सकट३,उंपलसु कढ्ढयो आनि॥५१॥

॥ षट्पात् ॥

सज्जि गयउ यहसुनत धाँव बाँजिन वढात धकि,
रह्यो खिजत रोपाल १ तदपि नरपाल २ क्रोध तकि ॥
मचत अचानक तुमुल रुकि पिक्खन लग्गो रवि,
इम भुसुंडे उत्तरत परत अद्रिन मनौंकि पवि ॥
कंकट१ सिरस्क२ बाँहुल३ कटत मुंड अटत विकरालमुख,
सिंहिकासूनु मानहु सतन रवि निश्चलखि ग्रसन रुख ॥
अरि चालुक लखि आत सेनसम्मुह हुव हड्डन,
नप्प१८२१अनुज डुंगर१८२१४सु अग्ग भो गहि असि१अड्डन२
साँवल१विजय२ सुमेरु३ हेरि४ चालुक चतुष्क४ हानि ॥

समीप जा खड़ाहुआ १ पत्थर २ ढींच पक्षी भी ऐसे कायरों के ३ खोटे मांस को नहीं खावेंगे ॥ ४८ ॥ ४ चलतेहुए को ५ शान्त (क्रोध रहित) करने को ६ शीघ्र ७ घर ॥ ५० ॥ ८ खोदनेवाले (बेलदार) ९ गाडे १० पत्थर को ॥ ५१ ॥ ११ दौड़ाकर १२ घोड़ों को १३ भयंकरयुद्ध १४ हाथियों के दांतों सहित शिर उड़नेलगे सो मानों पर्वतों पर १५ वज्र गिरनेलगा १६ कवच १७ टोप १८ दस्ताने कटने लगे और फटेहुए मुख पर से मुंड फिरने लगे सो मानों १९ राहु शरीर सहित होकर; अथवा सैकड़ों राहु होकर सूर्य को युद्ध देखने के लिये २० ठहराहुआ देखकर ग्रसने को तैयार हुआ ॥ ५२ ॥

स्ववपु पाइ छत सत्त७ पर्‍यो जीवत प्रवीर मनि ॥
नरपाल१८२।१नक्खि*तरलित तुरग सजव मिल्यो नरपालसन,
पहिलैं चलाइ दोउ२न प्रदरैं सुरपथैं किय छादित सघन ॥५३॥
मारिय इक्क१ महीप प्रदर चालुक कनपट्टिय ॥
नृपभुज१ सत्रु२ निसंक दुसहचालुक दुव२ दट्टिय ॥
तजि कमान तरवारि झारि अरि कर नृप झारिय ॥
अरिहु सद्धि उपकार प्रास नृपवदन प्रहारिय ॥
चालुकी१८२।१जदपि बरज्यो चतुर बालन साहस तदपि बहि ।
जगकिय अपुब्बनरपाल१८२।१जस सिलसंटैं रनखेतरहि॥५४॥

(दोहा)

सालकको अपसब्य सय, बक्खिय रन बुन्दीस ॥
बचिगो सो निजआयुबल, सल्ल जदपि सर सीस ॥ ५५ ॥
लग्गो तोमर नृपलपन प्रखरैं कढ्यो गलपार ॥
पारि तदपि नव९ अरि पर्‍यो, दिष्टहि फलत उदार ॥ ५६ ॥
परसुराम वह पानि लै, चालुकको चहुवान ॥
पत्तो बुन्दिय करि पिहितैं, सूचन बिहित समान ॥ ५७ ॥

षट्पात् ॥

भूपदेह१८२।१ अरु भ्रात डारि सिबिका वह डुंगर१८२।४ ॥
आये बुन्दिय अनुग कैं१ उर२ जाठर३ कुट्टत कर ॥

---

* चपल १ नरपाल नामक सोलंखी से २ तीर ३ आकाश को ॥ ५३ ॥ ४ ला राजा के ५मुख में मारा ६ मूर्ख हठकरके ७ शिला के बदले में रणखेत रहकर ॥ ५४ ॥ दहिना ८ हाथ ९ मस्तक में बाण का साल था तो भी ५॥ १० मुख में भाला लगासो ११ तीक्ष्ण १२ भाग्य ॥ ५६ ॥ उस सोलंखी १३हाथ को लेकर १४ छिपा कर दोनों को बराबर कहने के लिये बुन्दी पहुं र ॥ ५७ ॥ १५ पालखी में १६ उस डुंगरसिंह को डालकर सेवक लोग १७ स्तक, छाती और पेट को हाथों से कूटतेहुए बुन्दी आये

जिम वह चालुक जान डारि उतके टोडागय ॥
कप खिल फोजन कलह रुप्पि दुव२ जाम वडेरय ॥
नरपाल जात रोपालनृप तरजि ताहि मोरयो मरन ॥
इन कृपान करहीन३है ननजीवहु अक्खिय नरन ॥ ५८ ॥
जि सिविका चढितुरग जनक तर्जित चालुक जँहँ ॥
नुश्रद्दाहु बहोरि कढयो गहि रंदन कुसा कँहँ ॥
नजदल मिलत निहोरि जदपि रोक्यो निजजोधन ॥
नक विडारन ज्वलित रंच मन्निय अवरोध न ॥
म सव्य करहि असिगहि अनखि हड्डन घन वल वीच हुव ॥
रि जुग२ गिराइ नरपाल वह भिरि इम सुत्तो रंगभुव ॥५९॥
ोलंखी जयसिंह१ पंच५ बुंदियभट पारिय ॥
तके गोड़ अमान१ त्रि३ हय रिपु च्यारि४ प्रहारिय ॥
क१ हल्लू चहुवान डोहि अर्णव चालुकदल ॥
नघोरापति एह थक्कि अरि नवक६ महावल ॥
सन मुराइ लहि जयसुजस सहघायल आयो सदन॥
उतकेहु दाहि नरपाल इम पहुँचे टोडा विमनपन ॥ ६० ॥

(दोहा)

बुंदिय नृपवपुं भ्रात इत, वीरी विरचि सुवास ॥
सहगामिनि सोलंखिनिय, कियकछु नेर्म प्रकास ॥ ६१ ॥
असुचि सव्य१ अपसव्य२ इक१, प्रिय तुम द्वि२मुख प्रसिद्ध ॥

सीप्रकार सोलंखी को १ यान में डाल कर उधर के लोग टोडा में गये. उस नरपाल को जाते ही राजा रोपाल ने २ धमकाकर मरने के लिये पीछा फेरा. हाडों के ३खड्ग से ॥ ५८ ॥ ४ दांतों में घोड़े की ५ बाग पकड़कर ६ पिता के निकाल देने की अग्नि से जलतेहुए ने रोकने को नहीं माना ॥ ५९ ॥ सोलंखियों की सेना रूपी ८ समुद्र को ७ डोह (मथ)कर ९ उदासपन से ॥६०॥ १० शरीर ११सुगंधवाली बीड़ी बनाकर १२सती कुछ १३हसी(मस्करी)की ॥६१॥ परशुराम के हाथ में दहिना हाथ कटाहुआ देखकर सोलंखिनी ने कहा कि हे प्यारे तुम्हारे १४बायाँ हाथ बाकी रहा सो तो अशुद्ध

लाऊँ अब कैसे लपन, बीरी सौरभ बिद्ध ॥ ६२ ॥
कर सु डारि संभरकहिय, यह भतीज कर आँहिं ॥
यातैं स्वामिनि धरिअपर२, मन्न्योगत मुखमाँहिं ॥ ६३ ॥
कर दक्खिन चालुक्यको, इम रानिय मुखअग्ग ॥
परसुराम अवसर पटक्कि, लहिय त्राह सिसुलग्ग ॥ ६४ ॥
अनघोरापतिके अनुज, परसुरामकेपानि ॥
रीझि हार बितरन लगी, तिहिं न लयो हठतानि ॥ ६५ ॥
रानी पठयो दूत द्रुत, बदि इम बिरुद बिगोइ ॥
जीवहुरे नरपाल जिन, हड्डन अंकित होइ ॥ ६६ ॥
सुनि पुनि आये निजनसन, कलह सु आयो काम ॥
चिता ज्वलित प्रमुदित चढी, रक्खि सुजस अभिराम ॥ ६७ ॥
तातं कुमति लज्जित तदनु, बिद्या१ नंय२ रन३ बीर ॥
बुंदिय पंद्रह१५ बरस बय, हुव अधिपति हम्मीर १८३११॥६८॥
सक ख इन्दु गुन भू१३१० समय, पायो भव नरपाल १८२११॥
सो लि बेद गुन ससि१३४३ समय, सुत्तो रन रिपुसाल ॥ ६९ ॥

होनेके कारण उस हाथ में बीडी नहीं देसकती और तुम प्रसिद्ध हीद्विमुख हो(यहां द्विमुख शब्द में श्लेष है; अर्थात् एक तो भाले से गर्दन में छिद्र होजाने के कारण दो मुखवाले होगये हो और दूसरा, झूठे को द्विमुख कहते हैं) यहां व्यङ्गय से यह अर्थ निकलता है कि तुम सदैव कहा करते थे कि मैं शत्रु को मारकर मरूंगा और अब अकेले ही मरे इस से झूठे हुए सो यह सुगन्ध की बीड़ी च बाने के लिये किस १ मुख में दूं ॥ ६२ ॥ वह हाथ डालकर परशुराम चहुवाण ने कहा कि यह तो तेरे भतीजे का हाथ है अर्थात् हाथ कटजाने से वह भी योग्य नहीं रहा है और तुम्हारा पति शत्रु को मारकर मरा है जोझूठा नहीं है इस कारण हे स्वामिनि! तेरे पति के२गर्दन में हुए दूसरे मुख में बीड़ी रख; अर्थात् यह वीरता से हुआ मुख है जिसमें धर ॥ ६३-६४ ॥ ३देनेलगी ॥ ६५ ॥ ४उत्साहवर्द्धिनी स्तुति को५बिगाड़ कर६हाड़ों के किये हुए चिन्हवाला होकर ॥ ६६ ॥ आयेहुए७अपने लोगों से सुना कि सोलंखी नरपाल भी काम आया ॥ ६७ ॥ ८पिता की दुर्बुद्धि से लज्जित होकर९जिस पीछे१०नीति ॥ ६८ ॥ ११उत्पत्ति ॥ ६९ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणोपञ्चम ५ राशौ-वीतिहोत्रचरडासि १ वीज्पवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वीज्यानुवीज्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रनरपाल १८२।१चरित्रे नरपाल१८२।१स्वसीमाक्रामकशत्रुदहिक१तोमर२कन्याविवोढस्वानुजजैत१८२।३डुङ्गर१८२।४हल्लू१८२।१लिका३सूयन१ तत्मर्तुपालम्भभ्रातृत्र्यमतिभटभ्रातृपरीक्षितुकामनरपाल१८२।३कोटाऽऽगमन२सस्वागतनिवेदितोपायनजैतसिंह १८२।१स्वाग्रजार्थसर्वस्वनिवेदन३देवानुजमोहन१८०।१२सुत१८२।१मोत्कलकोटागत१८२।१नरपालहल्लू१८२।१युग२समसमैकासनोपवेशन४तथैवसजैत्र१८२।३हल्लू१८२।१नरपाल१८२।१त्रिक३सहभोजन५खिचि१३महेशदासोद्देशाऽभिषेणयन्नरपाल१८२।१स्तखिसमागतपलायथपुरसमाक्रमण ६ मोत्कलं१८३।१वञ्चितैका १ऽऽघातदुर्गपतिखिचिप्रहारखड्गमहारबुन्दीशशीर्षशिरोभागभागभेदसामर्षहल्लू १८२।१ प्रहारनिपातनानन्तरस्व १ पर २ परासुसङ्ख्यासूचन ७ जितस्था

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के अवसर के वचनों में बुन्दी नरेश नरपाल के चरित्र में नरपाल का अपनी सीमा दबानेवाले शत्रु दहिया और तोमरों की कन्याएं विवाहने से अपने छोटे भाई जैत्रसिंह, डुंगरसिंह, हल्लू इन तीनों की असूया करना, भाइयों के प्रति उपालम्भ देने पर भाईपन की शत्रुओं में परीक्षा करने का उनसे उत्तर पाकर नरपाल का कोटे आना, आयेहुए का आदर और नजराना करके जैत्रसिंह का बड़े भाई के अर्थ सर्वस्व निवेदन करना, देवसिंह के छोटे भाई मोहन के पुत्र मोकल का कोटा में गयेहुए हल्लू और नरपाल दोनों को इक पूर्वक एकगद्दी पर बिठाना, इसी प्रकार जैत्रसिंह, हल्लू और नरपाल, तीनों को शामिल भोजन कराना, खीची महेशदास के उद्देश से नरपाल की युद्धयात्रा के मार्ग में आयेहुए पलायथा पुर को लेना, एक आघात से मोकल का राजा को बचाना, और दुर्गपति खीची पहाड़सिंह के प्रहार से बुन्दीश की पगड़ी और मस्तक के भाग के कटने से क्रोधयुक्त हल्लू का पहाड़सिंह को मारने के बाद अपने

नरक्षार्थन्यस्तसुभटशताऽष्टक ८०० पूर्वर्त्तितशिविरस्थापितबुन्दीश क्षतोपचारसानीकप्रस्थितहल्लू १८२।१ हरपाल १८२।२ जैत्रसिंह१८२। ३ मोक्कल १८१।१ हड्डचतुष्क ४ समभ्यागतसायुत १०००० सैन्यखिच्चि १३ महेश १ डोडहरराज २ समायोधन ८ शातित्रयोदश १३ शत्रुहड्डमोक्कलसिंह १८१।१ शूरलोकसमारोहण ९ निपातितखिच्चिसचिवहड्डहरपाल १८२।२ संहतखिच्चिधीरसिंह १ हरिसिंह २ हड्डजैत्रसिंह १८२।३ भ्रातृयुगदुस्सहलोहमोहमिलन १० प्रहरणाबश्चन १ प्रहरण २ प्रगल्भहल्लू १८२।१ प्रहारपीलुपातितमूढमहेश १ प्रेक्षणप्रकुपिताऽभियाताऽभियातिडोडहरराज २ पृशत्कजकुट २ पूजितहाररराजिस्वकरवालाङ्कितशिरश्चर्मप्रामारप्रद्रावण ११ तदीक्षणत्रस्तव्याप्ययानसमाहितस्वामिकखिच्चि १३ चमूपराचीन पलायन १२ संस्कारितमृतपितृव्यकमोक्कल १८१।१ कोटाप्रस्थापितसक्षतसमस्तनृपार्थनिवेदितसनर्मजयरत्ननिर्णीतरव १ परप

और पराये मुरदों के संख्या की सूचना करना, विजय कियेहुए स्थान की रक्षा करने के लिये रक्खेहुए आठ सौ वीरों को प्रवर्तन करके डेरों में स्थित बुन्दीश के घाव का इलाज कराकर फौज सहित प्रस्थान करके हल्लू, हरपाल, जैत्रसिंह और मोकल, इन चारों हाडों का सन्मुख आयेहुवे दश हजार सेना के सहित खिची महेसदास और डोड हरराज से युद्धकरना, तेरह शत्रुओं को मारकर मोकलसिंह का वीर लोक को जाना, खीची के मन्त्री को मारकर हाडा हरपाल; और खिची धीरसिंह और हरिसिंह को मारकर हाडा जैत्रसिंह; इन दोनों भाइयों का दुस्सह शस्त्रों से मूर्छित होना, शस्त्र से ताड़ना कियेहुए और शस्त्र चलाने में प्रौढ ऐसे हल्लू के प्रहार से हाथी से गिरायेहुए मूर्छित महेशदास को देखकर क्रोधयुक्त आयेहुए शत्रु डोड हरराज के दो बाणों से पूजित होकर हल्लूका खड्ग के अन्तिम प्रहार से हरराज के मस्तक को चिन्हित करके प्रामार हरराज को भगाना, उसको देखकर सेना का व्याकुल होकर मूर्छित स्वामी खीची महेसदास को यान में बैठाकर विमुख होकर भागना, मरेहुए काका मोकल का अग्निसंस्कार करके सब घायलों को कोटा भेजकर राजा को हँसी के साथ जय रूपी

रासुसङ्ख्यबुन्दीशसहितदत्तसौप्तिकहल्लु १८२।१ शीर्षपालिकापुरनरपाल १८२।१ वशीकरण १३ तदूदङ्गस्थापितद्वादशशत १२०० सुभटप्रत्यागतकोटाविड़ापितकियद्दिनप्रतिनिन्दितरणविधुरोल्लाघीभूतहप्प१८२।२ जैत १८२।३ जकुट २ हल्लू१८२।१नरपाल १८२।१ स्वस्वपुरागमन १४ तदनन्तरपितृपस्त्यप्रस्थापिततृतीय ३ द्वितीय २ कृच्छ्रोत्तीर्णप्रावृडासारपूरद्धवाशिष्ठीपात्रश्रावणीतृतीया ३ प्राघुणकनरपाल १८२।१ टोडाख्यपुरप्रविशन १५ प्रापितनानाविनोदप्रमोदसानुमन्निर्झरसमीपस्थालकसम्पादितनानाभोज्यभोक्ष्यमाणकापिशायनविक्षिप्तबुद्धितिरस्कृतश्वाशुर्यवर्गनरपाल १८२।१ स्वपुरप्रेषणार्थतत्रत्यैक १ शिलानिष्कासननिमित्तखनक १ शक-

रल निवेदन करके युद्ध में अपने और पराये मुर्दों का निर्णय करके बुन्दीश सहित रतिवाह देकर हल्लू का शीपवाली नगर को फिर नरपाल के आधीन करना, उस नगर में बारह सौ सुभट रखकर पीछे कोटा में आकर कित नेक दिन बिताकर युद्ध में व्याकुल नरपाल की निन्दा करनेवाले हरपाल और जैत्रसिंह दोनों के आराम होने पर हल्लू और नरपाल का अपने अपने नगरों में आना, जिस पीछे पिता के घर में ठहरीहुई तासरी रानी के स्नेह से द्वितीय ( ) वर्षाऋतु की जलधारा से बढ़ी हुई *बनास नदी को कष्ट से उतर कर श्रावण की तीज पर नरपाल का पाहुना होकर टोडा पुर में जाना, अपनी इच्छा के अनुसार नाना प्रकार के विनोद और प्रमोद प्राप्त होकर पर्वत के झरने के समीप साला के सम्पादन कियेहुए नाना प्रकार के भोज्य भोजन करने पर मद्य से बिगड़ीहुई बुद्धिवाले ससुरे की परगह को तिरस्कार करके नरपाल का अपने नगर भेजने के लिये वहां पर स्थित एक शिला को निकालने के लिये बेलदार और गाड़ों को बुलाना, पिता के मनाकरने के विरुद्ध बहिन के पति के दुर्वाक्यों से क्रोध

*इस पूर्ववाहिनी बनास को वासिष्ठीपात्र लिखना भूल है क्योंकि वह बनास नदी आबू पर्वत से निकल कर पश्चिम दिशा में वहती हुई पश्चिम समुद्र में जाती है और यह बनास नदी मेवाड़ के अर्बली पर्वत से निकल कर पूर्व में वहती हुई चंबल में मिलकर पूर्व समुद्र में जाती है यह भूल आबू और अर्बली दोनों नाम एक से होने के कारण हुई प्रतीत होती है जिनको अब भी बहुधा लोग एक ही जानते हैं परन्तु यह उनकी भूल है.

ट २ समाकारण १६ जनकजामिजानिदुर्वाक्यविवृद्धमन्युवारक-पितृप्रतीपकोशाकृष्टकरवालस्वपरिकरसमेतचालुककुमारनरपाल-शिलाखनकसंरोधन १७ मध्यस्थानुनीतप्रत्याकारप्रत्याहितकृपाण दुर्मनोन्युषितैक १ रात्रचालुकीसमुपेतदुराराध्यनरपाल १८।२।१ बुन्द्यागमन १८ सामान्तरसमयसज्जखनक १ शकट २ सैन्य ३ पुनः प्रतिगतनरपाल १८।२।१ शिलानिष्कासनश्रवणसामर्षपितृप्रतिकूलपुनरागतचालुक्यकुमारसमायोधन १९ शकलितचालुक्यचतुष्क ४ सोढप्रहारसप्त७काऽसमर्थसायुर्बलनृपाऽनुजडुङ्गरसिंह १८।२।४ प्रधनाऽजिरपतन २० प्राप्तप्रत्यनीकपत्रवाहयुग २ प्रहारबुन्दीशनिशितनिस्त्रिंशचालुक्यदक्षिणकरकर्त्तन २१ शङ्खसोढैक १ कलम्बचालुक्यकुमारतोमरविद्धवदन १ कृक २ निपातिताभियातिनवक ९ बुन्दीशमहानिद्रालभन २२ बुन्दीप्रस्थापितस्वामिसञ्चर १ टोडागमिताऽसमर्थकुमार २ सैन्यद्वय २ संयोधन २३ पितृप्रतियामितस्वैकहस्तसंहृतद्विड्द्वय २ कुमारनरपालबुन्दीशगतिग्रहण २४ पर

बढकर म्यान से खड्ग निकाल कर परगह सहित सोलंखी कुमार नरपाल का शिला खोदनेवालों को रोकना, मध्यस्थ लोगों की प्रार्थना करने से खड्ग को म्यान में करके उदास मन से एक रात्रि वहीं निवास करके सोलंखिनी सहित कठिनाई से आराधना करने योग्य नरपाल का बुन्दी आना, कई महीनों पीछे बेलदार, गाडे और सेना सझकर पीछा जाकर नरपाल का शिला निकालना सुनकर क्रोध सहित पिता के विरुद्ध फिर आये हुए सोलंखी कुमार का युद्ध करना, चार सोलंखियों का भेदन करके बडे सात प्रहारों से असमर्थ आयुर्बल सहित राजा के छोटे भाई डूंगरसिंह का युद्धभूमि में गिरना, शत्रु के दो बाणों के प्रहारों को प्राप्त करके बुन्दीश का तीखे खड्ग के प्रहार से सोलंखी के दहिने हाथको काटना, ललाट की हड्डी में एक बाण सहन करके सोलंखी कुमार का बुन्दी के राजा के मुख और गर्दन को भाले से बेधना और नव शत्रुओं को मारकर बुन्दीश का काम आना, स्वामी के देह को बुन्दी भेजने और असमर्थ कुमार के टोडा गये पीछे दोनों सेनाओं का युद्ध करना, पिता के पीछे भेजने पर एक हाथ से दो शत्रुओं का संहार करके कुमार नरपाल का बुन्दीश की गति

पक्षीयचालुक्यजयसिंह १ बुन्दीशसुभटपञ्चक ५ संहरण २५ हड्डपक्षीयगौडामानसिंह १ रिपुचतुष्क ४ वाजित्रिक३ विध्वंसन२६ निपातितारिनवक ९ प्रतिगमितप्रत्यनीकसमर्थासमर्थस्वामिसैन्य समेतचाहुवाणहल्लूबुन्द्याव्रजन २७ सहगमनसमयसनर्मस्वस्वामिमन्यावेधमुखवीटकवितितीर्षुसमुचितकरमृगयमाणराज्ञीचालुकीपुरश्चाहुवाणपरशुरामस्वीमततद्भ्रातृजदक्षिणदोर्दर्शन २८ भ्रातृजसंग्राममरणश्रवणससम्मदसमाश्लिष्टस्वामिसंहननराज्ञीचालुकी १८२।३ पावकप्रविशन २९ पञ्चदश १५ वर्षवयस्कहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ पितृपट्टसमादान ३० नरपाल १८२।१ जन्म १ मरण २ समयसम्वत्समासंख्यानं ३१ पञ्चमो ५ मयूखः ॥ ५ ॥
आदितो द्वापञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

(दोहा)

गहि पहिलैं चित्तोडगढ, तँहँ रहि मास कितेक ॥

को प्राप्त होना अर्थात् काम आना, शत्रु सोलंखी जयसिंह का बुन्दी के पांच सुभटों को मारना, हाडों के पक्षवाले गौड़ अमानसिंह का चार शत्रु और तीन घोड़ों को मारना, नव शत्रुओं को मार कर पीछी फिरी हुई समर्थ और असमर्थ स्वामि की सेना सहित चहुवाण हल्लू का बुन्दी आना, सती होने के समय मस्करी (परिहास) से अपने स्वामि के गर्दन में वेधन कियेहुए मुख में बीड़ी देने की इच्छा से दाहिने हाथ को शोधती हुई रानी सोलंखिनी के आगे चहुवाण परशुराम का अपने विचार से उस रानी के भतीजे का दहिना हाथ दिखाना, भतीजे का युद्ध में मरना सुनकर हर्ष सहित स्वामी के शरीर का आश्लेप (मिलाप) करके सोलंखिनी रानी का अग्नि में प्रवेश करना, पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले हड्डाधिराज हम्मीर का पिता का पाट लेना, नरपाल के जन्म और मरण समय के सम्वत् की संख्या सूचन करने का पांचवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ५ ॥

और आदि से एक सौ बावन मयूख समाप्त हुए ॥

सोनगिरे ७।१ प्रामार २ स्वक[1]३, आर्यंक रक्खि तितेक३ ॥१॥
पिछि कटक हरराज १९८१ पर, अप्पसु दिल्लिय आइ ॥
साह भयो अतिबल असह, अज्जन रज्ज[2] उठाइ ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

पच्छिम १ उत्तर २ पुब्ब ३ दियउ दुद्धर पठाइ दल ॥
सूबा निजनिज सीम बंधि तिन किय प्रबंध बल ॥
दक्खिन आयत[3] देखि सुभट बिस्वस्त[4] बंधु साजि ॥
सहसतीस३०००० मित सूर प्रबल पठये भावित[5] भजि ॥
चतुरंग लंघि रेवा[6] चलत अरे समुह आपाच्य[7] ईन[8] ॥
हुव प्रधन[9] कल्पसो घोर है अब बंचन न किम बाच्यइन[11] ॥३॥

पाच्यइन १ बाच्यइन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

(दोहा)

अग्गहु लिय तुरकन अवनि, दक्खिन कछुक दबाइ ॥
सुतो सही सब लखिसमय, प्रधन[12] पराजय पाइ ॥ ४ ॥
रनथंभ १ रु चित्तोर २ लै, मिच्छ सु अब जयमत्त ॥
बाढनलग्गो सीम बहु, पिक्खत नृपन प्रमत्त[13] ॥ ५ ॥

यमत्त १ प्रमत्त २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दक्खिन पहुँचत साहदल, नव भुव लेत निहारि ॥
मेकलजा[14] परतट मिले, रचि उतकेन्नृप रारि ॥ ६ ॥

पादाकुलकम् ॥

बिजयनगर१ बीजापुर २ बीडर३, भागनैर४ आसेर५भूपवर ॥

१रक्षक।१। आर्यों के २राज्य उठाकर।२। ३बडा(लम्बा) ४विश्वासवाले५चिन्तवन करके वा शिक्षित६नर्मदा नदी को उल्लंघन करके७दक्षिण के८राजा९युद्धप्रलय के समान, अब यह११हीन अर्थात् अधम(यवन)स्वामिकैसे होसकता है इसलिये अब१०बचना नहीं है अर्थात् मरजावेंगे परंतु इनके आधीन नहीं होंगे यह ठानकर ॥३॥१२युद्ध में ॥४॥१३आलसी; अथवा असावधान देखकर१४नर्मदा नदी के ॥६॥

कुंड६रुब्रदर७धामिनी८पहुकति, प्रतिष्ठान९नासिक१०पुरयापति७
इत्यादिक लघु१गुरु नृप इक्कत, सीमा खिलहु जात करि सम्मत॥
संगर रचतभये मिच्छन सन, मारत मरत धरत अग्गहि मन ॥८॥
इक्क न जदपि मुख्यो अवनीपति, कहियत तदपि वलिष्ट कालगति॥
बीडर१ भागनगर२ बीजापुर३, धामिनि४कुंड५भूप धारकधुर ॥९॥
ए नृप पंच५काम रनआये, स्वस्व देस अवसेसैं सिधायें ॥
भूप मरे तिनकीहु दक्खि भुव,हठी जवन तिहिंकाल असहहुव२।१०।

सचरणगद्यम् ॥

जा सेनाके सरदार पहिले पातसाह जलालुद्दीन १० हूसौं वि सेसवढाइ वेराट १ प्रमुख केहीदुर्ग लैकैं दक्खिन ४ मैं अलावुद्दी न ११ को दुस्सह प्रताप दिखावतभये ॥

ऐसैं च्यारि ४ ही दिसामैं पहिले अधिकारिनकौं प्रतारि आपु नैं थानाँजमाइ सर्वही नरेसनसौं दिल्लीसकी आज्ञाके अधीन रहि वो लिखावतभये ॥

दक्खिन ४ मैं गई जा सेनाके सरदारन बीजापुर १ भागनगर २ बेराट ३ इन तीन ३ ही दुर्गनमैं आपुनौं निवास राखि अलावु द्दीन ११ को अमोघआदेस प्रवृत्तकीनौं ॥

अरु इनहीनैं प्रारब्धके प्रावल्यकरि जितति आपुनौं जोर ज- माइ साहको सीघ्र मरिबो हू सुनि आपही उतके अधीस व्हैरहे तिननैं नवीन अवनीके अर्जनसौं उपराम न लीनौं ॥ ११ ॥

(दोहा)

साह जाइ चित्तोरसन, दिल्लिय चउ ४ हिं दिसान ॥
पठये दल तिन किय प्रथम, हाकिमजन गन हान ॥ १२ ॥

॥ ७॥ ८ ॥ १ बलवान् ॥ ९ ॥ २बाकी के राजा ॥ १० ॥ ३आदि ४भाग्य के ५प्र बलता से ६भूमि के ७ संग्रह करने से ८निवृत्त नहीं हुए ॥ ११ ॥१२॥

*गोचर कबहुन कालगति, कछु प्रबंध इम कौन ॥
याहिबरस तजि एह गो, देह अलावुद्दीन ११ ॥ १३ ॥
देखहु कुतबुद्दीन १ सौं, इत दस १० साहहि आप ॥
साह अलावुद्दीन ११ सम, पायउ किहिं न प्रताप ॥ १४ ॥
मिच्छनमैंहु न धर्ममति, हनि इकइक प्रभु होइ ॥
हनि गोरि१न खलजी२हुव रु, खलजिन तुगलक३खोइ ॥१५॥

सचरखागद्यम् ॥

जैसैं दिल्लीके दसम १० पातसाह आपनैं काका निजधर्मके निधान महासज्जन खलजी २ जलालुद्दीन १० कौं बिस्वातघातसौं मारि ताहीको भतीज यह अलावुद्दीन ११ उग्रसासनके अनुसार दिल्लीको अधीसभयो ।

तैसैंही पहिले कारामैं डारे याकेभतीज सुलैमानके काहूदासनैं चित्रकूटकौं तोरि पीछैं आगमके अनंतर वाही अब्दमैं यह अलावुद्दीन ११ हू मारिलयो ॥

तापीछैं बारहों १२ पातसाह ऊमर १२ भयो सोहू थोरेही मासनमैं गत होइ वाही अलावुद्दीन ११ को मूढ अंगज मुबारिक १३ साहभयो सोहू अल्पही अब्दमैं आपुनैं काहू दासके करसौं हन्यों गयो ऐसैं अनेक अघनैंकरि बिक्रमके सककी गज गुन गुन गोत्रा १३३८ सम्मित समामैं खलजी२नके घरानैंसौंहू दिल्लीकी अधीसता छूटगई ॥

सो यथार्थ न्यायकारक १ सुसील २ दयाकेनिधान ३ तीजी३ कौमके तुगलक ३ चतुर्दसमैं १४ पातसाह गयासुद्दीन १४ के अधीन भई ॥ १६ ॥

तारीख फिरिस्ता १दिक यावनीके पुस्तकनमैंतो त्रयोदसम १३

काल की गत्ति *देखने में नहीं आती ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १ कैद में २ चित्तोड़ को ३ पुत्र ४पापों से ५ संवत् में ॥ १६ ॥ ६ फारसी भाषा के

पातसाह कुत्बुद्दीना १२५परनाम मुबारिकसाह १३ खलजी २के अनंतर इनहीके कुटुंबको खुसरोखान १४ नाम चउदहौं १४ पातसाह अधिकलिख्यो परंतु आपुनैं ग्रंथनमैं न जान्यौं ॥

अरु यासमयके सासक सर्वसामग्रीसम्पन्न बडेबुद्धिमान सत्यवादी साहब ३ लोकनहू भारतवर्षीय इतिहास १ भूगोलदर्पण२ भूगोलविचार ३ जुगरांफिया ४ प्रमुख केहीपुस्तक बनायि तिनहूमैं खलजी २ मुबारिकसाह १३ तुगलक ३ गयासुद्दीन १४इनदोउ-नके अंतरमैं खुसरोखान १ पातसाह अधिक न मान्यौं ॥

ऐसैं सूचितैं सक समाके समय चउदहौं १४ पातसाह तुगलक ३ गयासुद्दीन १४ दिल्लीके तखतबैठि आपुनैं धर्म १ नीति२के आगमनके अनुसार आर्यावर्तमैं अमोघ आदेस करतरह्यो ॥

अरु राज्यकेकार्य पहिलैंसौं बिगरेदीसे तिनकौं सुधारि उपधां करि परखे भरोसाके अधिकारी ऐसे प्रवृत्त किये जिनआगैं न्यायकौं आदिलकैं समस्तव्यवहारनमैं सबकोहीपक्षपात टरतरह्यो१७

दोहा

सदय १ गभीर २ रु न्याय ३ सम, साह गयासुद्दीन१४ ॥
कति गढ जीरनैं १ सु दृढकरि, कति नूतन २गढकीन॥१८॥
पथभय देसन मेटि पहु, अभयकरे सब ओकैं ॥
लै बहुधन बिहरनलगे, लैहु सौदागरलोक ॥ १९ ॥
पुरखुंदिय हम्मीर १८१ पैंहु, पैंटव सब इत पाइ ॥
जई जनकहेतुकैं कुजस, दिय जसअग्ग दबाइ ॥ २० ॥

१दूसरा नाम२हाकिम३युक्त४अंगरेज लोगोंने भी५भारतवर्ष सम्बन्धी ६आदि ७अनायेहुए विक्रम के शक८संवत् के समय में९शास्त्रों के अर्थात् क़ुरान वगैरः के अनुसार१०वजीर आदि के आशय को परखकर परीक्षा कियेहुए कई११पुराने गढों को दृढ करके ॥१८॥१२घर१३शीघ्र ॥१९॥१४राजा. सच१५चतुराई पाकर पिता के१६कारण अपजस हुआ था उसको अपने जस के आगे दबा दिया॥२०॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

एगारहैं ११पातसाह खलजी २ अलावुद्दीन११ के पीछैं तो जितितहीं जोरपाइ इलाके इलाकेमैं आपआपके इलाकेके अधीस मानि अनेकसूबेनकेसरदारन च्यारि ४ ही दिसामैं दिल्लीसौं मुररि पातसाहीपर डम्मरडार्‌यो ॥

अरु दक्खिनकेहाकिमन मालवको सूबा १ मंडूपुर २ सौं लगाइ कर्णाटकोसूबा १ भिन्नकरि बीजापुर २ को हाकिमीसौं निबार्‌यो ॥

आपुनैंआपुनैं सूबाके बसवर्त्ती समीपकेनरेसनसौं दिल्लीको [२]भागधेय ब[३]लात्कारकरि परो[४]क्षही लैनलगे ॥

अरु अनेकभूपनकौं बुलाइ स्वपक्षपाती करिबेकौं बिनाही [५]भय जसजानि पू[६]र्तीपनकेदेस दैनलगे २ ॥ २१ ॥

इतकौं बुंदीकोअधीस हड्डाधिराज हम्मीर १८३१ मं[७]डपपुरके प्रतिहार नरेसरोपालकी भावती १८३१ नाम पुत्रीको पानिग्रहन करतभयो ॥

अरु दहिया १ रु गौड़ २ द्वै २ ही सत्रुनको [८]सातनकरि करउर १ लक्खैरी २ द्वै २ ही द्रंगनमैं आपुनौं अनीक धरतभयो ॥

खिच्चि १३ महेसराजसौं तीन ३ जुद्धजीति मऊ १ रहलावनि[९]प्रमुख पिताके गुमाये प्रांत स्वकीय बसबर्त्तीकरि ओरहू ओरओरतैं अछूती अवनी दाबि सीमाकेसमीपी सत्रुनके सदन सूते बैर जगाये ॥

अरु केथोनिके तोमर सांसनाकेअनुसार जानि बुंदीकेसेवक करि चरनलगाये ॥ २२ ॥

---

१ उपद्रव (लूटखसोट) २ हांसिल (कर) ३ बल पूर्वक ४ परभारा (बाला बाला) ५ खरच ६ शत्रुओं के ॥ २१ ॥ ७ मंडोवर के ८ नाश करके ९ आदि १० आज्ञा के आधीन ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

नगर सेरगढनाह डोड हरराज वृद्धवय,
विरचिय *चरमविवाह मरत मतिमंद जरामय ॥
जनन गौड़ जिहिँ जनन रहि सु कतिदिन तहँ रानिय ॥
सुनतभई बुंदीस सुजस पुनि पाप प्रमानिय,
पठयो पैलास लिखि इम पिहित धरिधक पूरब बैर घुव ॥
लैजाहु हम्म १८३।१ वैरिन लखत हमहु डोड गुनगौरिहुव ॥२३॥

॥ दोहा ॥

पहुवंचि सु दल जदपि पटु, तदपि वैर हठतानि ॥
मंजु नगर निजजित मऊ, अह निवस्यो बहु आनि ॥२४॥
माघ १ तपस्य २ दु २ मासरहि, जंपिय मन नय जोरि ॥
दिन जिहिँ लैगो ताहिदिन, गहाँ जियत गुनगोरि ॥२५॥

॥ षट्पात् ॥

मऊ इम सु हम्मीर १८३।१ रह्यो सुहि समय निहारत ॥
मधुसित तीज ३ मिलाप चढ्यो दल अतुल प्रचारत ॥
वाहिर उपवन विरचि गोठि भोजन चसकन गहि ॥
हुव प्रमत्त हरराज चित्त अरिजन अभाव चहि ॥
हम्म१८३।१सुत्रि३जामदिनरहिगहनसेनअयुत१००००सहलखिसमय
तहँजाइ मारि रच्छक तिय सु हसि गहिलिन्नी पिट्ठिहय ॥२६॥

दोहा

* अन्तिम विवाह १ बुढापे में. गौड़ २ वंश में जिसका ३ जन्म था वह
रानी कितने ही दिन वहां रही ४पत्र ५ गुप्त. मैं ६डोड की गुनगौरि हूं ॥२३ ॥
७ पत्र ८ चतुर था तो भी. बहुत ९ दिन १० निवास किया ॥२४॥ ११ फाल्गु
न ॥ २५ ॥ १२ चैत्र सुदि तीज. अतुल १३सेना को फैलाता हुआ १४ बाग
में १५ चुसकियें (मद्य पीने के पात्र) १६ तीन प्रहर तक गहन वन में रहकर
१७ घोड़ेकी पीठ पर चढाली ॥ २६ ॥

सुभटन अक्खिय भूपसन, द्वियुनित करि दहतेहि ॥
विसंते कछुक बिलंबि तो, गुनगोरिहु गहतेहि ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

हड्डअधिप हम्मीर १८३।१ स्वीयसुभटन सुबैन सुनि,
सहबल गोंडिसमेत पत्त जँहँ डोड तत्थ पुनि ॥
गदिय तुज्झ गुनगोरि जियत अब हम लैजावत,
नहिं खँत्तिय तवनिलय संढ किम तदपि सिटावत ॥
सुनि तेहु छोरि पंतिन चँसक हेतिन अभिमुख मिलतहुव,
कबलौं सु राम२०३भूपति कहूँ भिरत बनी जिम रंगभुव ॥२८॥
नृपउप्पर हयनक्खि जात हरराज मत्त जँहँ ॥
छकि आसव मदछोह तुरग झंपत गिरयोसु तँहँ ॥
ताहीदलके तुरग दारि खुरघात जानुदिय ॥
दासन दिन्नौं दुतहि हयन फटिजाइ नतो हिय ॥
बिनुस्वामि लरे डोडहु बहुत पै बुंदिय बिधि जोरपर ॥
हरराज तियसु हम्मीर१८३।१हठि नीतिलंघि आनिय नयर ॥२९॥

दोहा

निपुन निहारहु राम २०१ नृप, ग्राम्य प्रसभ मन मानि ॥
अनुचितकिय हम्मीर १८१।१ यह, ऊँढा रानिय आनि ॥३०॥
रनहि बिचारत मरिरह्यो, रुँजा जरठ हरराज ॥

१प्रवेश करते २ विलम्ब करके ॥ २७ ॥ ३ अपने सुभटों के वचन सुन कर जहां डोड हरराज था तहां ४गया ५कहा ६ जीवती हुई गुनगौरि को तुम्हारे ८घर में ७ सुथार नहीं हैं तौ भी ९ हे नपुंसक! क्यों छिटाता है.? पंक्ति में से १०छुसकियें छोड़कर ११ शस्त्रों से १२ सन्मुख मिले १३ हे राजा रामसिंह १४ युद्ध स्थान ॥ २८ ॥१५ उसी हरराज की सेना के घोड़ों ने १६ विदारण करके १७ घुटनों की दी १८ नगर में ॥ २९ ॥ १९प्रवीण था तो भी २०ग्रामीण लोकों के समान मन में २१ हठ करके २२ विवाही हुई ॥ ३० ॥ २३ रोगी २४बुड्ढा.

काहू नन सम्मत कह्यो, करत हम्म १८३।१ यहकाज॥ ३१ ॥
गिनि सँटैं गुनगोरिकैं, हम आनी कहि हम्म१८३।१॥
अनपत्रप विलसे अखिल, कैंमन भोग रुचि कम्म ॥ ३२ ॥
हम्म१८३।१ अनुज नवरंग१८३।२ हुव विरचत तीन३विवाह ॥
राजकुमरि १८३।२।१ सोलंखिनी, लही प्रथम१विधिलाह ।३३।
तोमरकुल भव भावती१८३।२।२, नामसु दूजी२नारि ॥
प्रामारी तीजी३ प्रिया, कहत किसोरकुमारि१८३।२।३ ॥३४॥
तासअनुज थिरराज१८३।३ तिम, पाये उपयम पंच५ ॥
चालुकजा चउ४रुकामिनी१८३।३।१,पहिली सुगुन प्रपंच ॥३५॥
मपञ्च १ प्रपञ्च २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

पट्पात् ॥

अमृतकुमरि१८३।३।२आनंदकुमरि१८३।३।३अक्खयकुमारि१८३।३।४इम
चालुक कुलभव च्यारि४ नारि थिरराज१८३।३ लही जिम ॥
कोकसमाँख्य गुहिल्लपुत्र पुत्री राजकुमरि१८३।३।५ ॥
चतुर प्रिया यह चरम व्याह पंचम५ आनीवरि ॥
हुव दुव२ तनूज हम्मीर१८३।१के तनयाइक१ इम तोकत्रय३॥
वरसिंह१८४।१कुमर अग्रज बहुरि लालसिंह१८४।२लघु वीतभय३६

॥ दोहा ॥

लघु अनुजा इनकी ललित, कुमरी चंद्रकुमारि१८४।१ ॥
प्रतिहारी१८३।१ औरसप्रजा, यह त्रिक३ कुल अनुकारि ॥३७॥
सुपहु विवाही यह सुता, चंद्रकुमरि१८४।१ गजचाल ॥
मैंल्लिनाथके कुमरकों, जासनास जगमाल ॥ ३८ ॥

किसीने १अच्छा नहीं कहा ॥३१॥ २ गुनगोरि के बदले में ३निर्लज्ज ने ४सुन्दर भोग. रुचि के अनुसार ५काम किये ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ६सोलंखी की च्यारों पुत्रियें थीं ॥ ३५ ॥ कोयला ७नामक ८ अन्तिम विवाह तीन ९बालक ॥३६॥ १० छोटी बहिन ॥ ३७ ॥ महेवा नगर के राठोड़ राजा *११मल्लिनाथ के॥३८॥

*मारवाड की तवारीख में मल्लिनाथ के गादी बैठनें का सम्वत विक्रमी १४३१ लिखा है।

लालसिंह १८४१२ लघु पुत्रहित, दिय गैनोलिय १द्रंग ॥
तासहु त्रिक३ हुव दुव२ तनुज, इक१तनुजा सुभ अंग ॥३९॥
जैत्रसिंह१८५१नवब्रह्म१८५१२जुग२,लाल१८५१३सुतनकेनाम ॥
हइन लालाउत्त१६१०हुव, दसम१० भेद उद्दाम ॥ ४० ॥
दसम१० भेदके भेददुव२, जैताउत्त१०१ जथाहि ॥
कहियतपुनि नवब्रह्मके१०१२, निजनिज तोक२ तथाहि ॥४१॥
सुखाँ१८४११नाम सीसोदनी, जाठर यह त्रिक३ जात ॥
कृष्णाकुमरि१८५११नवब्रह्म१८२१२की,अनुजा गुनअवदात॥४२॥
पीछैं यहकन्या प्रथित३, लालसिंह१८४१२ हितचाहि ॥
दई रान हम्मीरके, खित्तल४ कुमरहिं व्याहि ॥ ४३ ॥
बारूचारन५ बैरागिनि, तदनु६ सु खित्तल तांम७ ॥
लरि गैंनोली अब्दलग, क्रम नृप आयो काम ॥ ४४ ॥
पहिलैं इमहिं प्रसंगपरि, आवत भावि उदंत८ ॥
महाप्रबंधन९ रीति मत, समुझहु उचित सुमंत ॥ ४५ ॥

॥ षट्पात् ॥

महीरमन१० हम्मीर १८३११ बप्प११ निज बैर बहोरन ॥
गय टोंडापुर गज्जि सज्जि सेनहिं जय जोरन ॥
तँहँ रोपाल१२तनूज नामसत्तल चालुक नृप ॥
जित्यो जुरि बरजोर सबिल१३ जिम आखु१४ सरीसृप१५ ॥
चउ४जाम अमल टोडा बिरचि पुनि सत्तलहित अप्पि पहु ॥
करि टौंक बिजय हरखात कुल बिदितकिन्न जग कित्तिबहु॥४६॥

॥ ३९ ॥ १ निरंकुश ॥ ४० ॥ २ पुत्र ॥ ४१–४२ ॥ ३ प्रसिद्ध ४ खेत्र सिंह (खेता) को ॥४३॥ ५ बारू नामक सोदा बारहठ शाखा के चारण के वैर पर, [जो इस टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) का सोलहवीं पीढी पर परपुरुष था] ६ जिस पीछे ७तहां पर ॥ ४४ ॥ ८ आगे होनेवाले वृत्तान्त आते हैं ९ बडे ग्रन्थों की रीति के मत से ॥ ४५ ॥ १०राजा हम्मीरसिंह. अपने ११ पिता का वैर लेने के लिये १२ रोपाल का पुत्र १३ बिल सहित १४ चूहे को १५ सर्प

हड्डअधिप हम्मीर १ वीर हम्मीर २ रान बलि ॥
हम्मीर ३ हि प्रतिहार हड्ड हल्लू ४ हु कर्णकलि ॥
मल्लीनाथ ५ कवंध अधिप कछवाह उद्धरन ६॥
सत्तल ७ चालुक गंगसेन ८ प्रामार विदितपन ॥
तुगलक ३ इतैसु दिल्लीतखत धरत गयासुद्दीन १४।९ ध्रुव ॥
नृपराम २०२ चरित इनके निखिल हियधारहु समकालहुव॥४७॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इतकौं दिल्लीकेअधीस यवनेंद्र तुगलक ३ गयासुद्दीन १४ की प्रीति आपुनी ओर देखि सवहीविद्याविसारदजन साहको आश्रयले सुखसौं रहनलगे तिनहींमैं कोऊ पुंजराज नाम वनिक सचिवहो जानैं व्याकरनविपयके सारस्वतनाम ग्रंथपर टीका पुंजराजी वनाई जाके उद्योतकरि सूत्रनकी संगतिमिलाइवेमैं अल्पावस्थ अर्भकनके अंतरके अंधकार वीतिगये ॥

अरु याहीसमयमैं केही सूवेनकेअधीस अलावुद्दीन ११ के अंतके अनंतर दिल्लीसौं फिरेहे तेहू स्वस्वसीमाकौं विसेसवढाइ केहीवेर पातसाही फोजनकौं जीतिगये ॥

इतकौं वुंदीकेअधीस हड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ को पट्टप राजकुमार वरसिंह १८४।१ पत्निनको त्रितय ३ विवाहतभयो ॥

तिनमैं पहिली १ कुमरानी तो चित्तोरकेअधीस सीसोद रान लक्खनके लघुपुत्र अजयसिंहकीसुता प्रभावती १८४।१ नाम दूजी २ रानी खुसहालसिंह कछवाहकीकन्या अहिजनकुमरि १८४।२नाम तीजी३अनुपमसिंह प्रमारकीपुत्री छत्रकुमरि १८४। नाम इन तीन ३ ही तरुनिनके साथ प्रीतिरीति निवाहतभयो४

जीत लेवे ऐसे ॥ ४६ ॥ १ कलियुग में कर्ण ॥ ४७ ॥ २ छोटी अवस्था वाले ३ वालकों के ४ पीछे ५ अपनी अपनी सीमा को. तीन ६ स्त्रियों को स्त्रियों के साथ ॥ ४८ ॥

इतिवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम५राशौ वीतिहोत्रचण्डासि १ वीजयवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५वंश्यानुवंश्य विहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहम्मीर १८३।२ चरिते चित्रकूटन्यस्तरक्षक १ प्रेषितहरराज १८।१।२ युयुत्सुसैन्य २ दिल्लीगतविरचितप्रतिदिक्सैन्यप्रसीमाविजयप्रबन्ध ३ यवनराडलाबुद्दीन११ दक्षिणादिग्जिगीषुत्रिंशत्सहस्र ३०००० पृतनाप्रस्थापन १ रेवाऽपरतटप्राप्ततत्पृतनापतिसम्मुखागतयोत्स्यमानदाक्षिणात्यमहीपमण्डलमुख्यबीडर १ भागनगर २ वीजापुर ३ धामिनी ४ कुण्ड ५ नृपपञ्चक ५ निपातन २ नष्टौजस्कविजयनगरा१ऽऽसेर २ बदर ३ प्रतिष्ठान ४ नासिक ५ पुण्या६दिपृथ्वीशस्वस्वपस्त्यपलायन ३ समाक्रान्तमृतनृपस्थानपञ्चक ५ परास्तप्राक्तनयवनेन्द्रप्रधानकृतवीजापुर १ भागनगर २ वैराट ३ वसतिकश्रुतस्वस्वामिमरणास्वतंत्रदक्षिणाजेतृयवनाऽग्रेसरतत्प्रान्तस्ववशीकरण४कुतबुद्दीनादिजलालुद्दीना१०ऽवधिभूतपूर्वदिल्लीशयवनदशका१०ऽपेक्षाप्रथितप्रतापप्रा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र हम्मीरसिंह के चरित्रमें चित्तोड़ पर रक्षक रखकर हरराज पर युद्ध के लिये सेना भेजकर दिल्ली में जाकर प्रत्येक दिशा में सेना भेजकर विजय का प्रबन्ध करके बादशाह अलाउद्दीन का दक्षिण दिशा को जीतने की इच्छा से तीस हजार सेना भेजना, नर्मदा नदी के परले किनारे पहुंचने पर उस सेना के सेनापति से युद्ध करने को सन्मुख आयेहुए दक्षिण दिशा के राजाओं के समूह में मुख्य बीडर १ भागनगर २ बीजापुर ३ धामिनी ४ कुण्ड ५ पांच नगरों के राजाओं का माराजाना, प्रताप नष्ट होकर बिजयनगर १ आसेर २ बदर ३ प्रतिष्ठान ४ नासिक ५ पुण्या ६ आदि नगर के राजाओं का अपने अपने घर भागना, पहिलेहारेहुए पांचों मृतक राजाओं के स्थान लेकर बादशाह के प्रधान का बीजापुर १ भागनगर २ और वैराट में निवास करने पर अपने स्वामि का मरना सुनकर दक्षिण के विजय करनेवाले यवनों के अग्रेसर उस प्रधान का स्वतन्त्रता पूर्वक उस प्रान्त को वश करना, कुतबुद्दीन से लेकर जलालुद्दीन तक पहले हुए दिल्ली

वल्यैकादशा ११ ऽलावुद्दीन ११ दिल्लीगमनाऽब्दान्तरमरणसूचन ^ तदनन्तरामर १२ मुबारिक १२ दिल्लीशद्वय २ समाप्तिसमनन्तरचतुर्दश १४ यवनेन्द्रतुगलकगयासुद्दीन १४ दिल्लीपट्टप्रापण ६ कथितपुस्तकादिप्रमाणपुरस्सरयवनेशगणनासङ्गनैक १ पातसाहखुसराखाना १ ऽधिक्यनिरसन ७ चतुर्दश १४ दिल्लीशयवनेन्द्रतुगलकगयासुद्दीन १४ राजनीतिपाटवप्रकटन ८ मृतपूर्वैकादशा ११ लावुद्दीना ११ ऽनन्तरप्रतिभटीभूतदिल्लीशदिक्सचिवगणस्वरवसीमासामीप्यराजन्यकभागधेयसमाधान ९ मराडूपुरस्थापितमालवानयोज्य १ वीजापुरवियोजितकर्णाटप्रान्तस्थयवनेन्द्रीभूतदक्षिणदिक्सचिवसंघनिकटवर्त्यनेकनृपगणस्वकीयसेवकीकरण १० बुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराजहम्मीर १८३१ मराडपुरमहीपप्रतिहारगोपालपुत्रीभावती १८३१ पाणिपीडन ११ दहिक १ गौड २ दमनप्रत्युद्भृत करउर १ लक्खेरी २ पुरकुट २ प्रानवानिनरणत्रय ३ पराजितखिचिमहेशराजनिर्गणपूर्वमऊ १ रहनावाणि २ प्रमुखपुरप्रान्तचतु

^ दन बादशाहों की अपेक्षा प्रसिद्ध प्रतापवाले प्रबल ग्यारहवें बादशाह अलाउद्दीन का दिल्ली जाने के एक वर्ष पीछे मरने की सूचना करना, जिस पीछे ऊमर और मुबारिकशाह दो बादशाहों के मरने के पीछे चौदहवें बादशाह तुगलक गयासुद्दीन का दिल्ली का तख्त लेना, कहेहुए पुस्तक आदि के प्रमाणों से बादशाहों की गणना करने में एक बादशाह खुशरोखान का नाम अधिक और क्षेपक होना, चौदहवें बादशाह तुगलक गयासुद्दीन का राजनीति में चतुर होना प्रगट करना, पहले मरे हुए ग्यारहवें बादशाह अलाउद्दीन के पीछे सूबेदारों के समूह का शत्रु होकर अपनी अपनी सीमा के समीप के राजाओं से खिराज लेना, मालवे को मांडूमें मिलाकर बीजापुर के सूबे को कर्णाट की अधीनता से जुदा करके बादशाह के दक्षिण दिशा के सूबेदारों का समीपवाले अनेक राजाओं को सेवक बनाना, बुन्दी के नरेन्द्र हड्डाधिराज हम्मीर का मंडोवर के राजा पड़िहार गोपाल की पुत्री भावती से विवाह करना, दाहिया और गौड़ों का नाश करके करउर और लक्खेरी दोनों पुरों को लेकर शत्रुओं को तीन युद्धों में पराजित करके खीची महेशदास के पहले के निगलेहुए (दबायेहुए) मऊ और

कं ४ हड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ सधौकन १ सारल्य २ तुष्टिप्रति
ग्राहितकैथोनिपुरमूष्टमन्तुतोमरस्वकीयसेवकीकरण ११ परानि
प्रामारडोडहरराजतिरस्कृतौचित्यहम्मीर १८३।१ गुणागौरिविनिमया
धीकृततदूढराज्ञीगौडीसमरसभबुन्द्यानयन १२ हम्मीर १८३।१ ऽनु-
जनवरङ्ग १८३।२ चालुक्यराजकुमार्या १८३।२।१ द्विपत्नीत्रय ३ प-
रिणयन १३ तदनुजस्थिरराज १८३।३ चालुक्यरुक्मिण्या १८३।३।१
द्विपियापञ्चक ५ पाणिपीडन १४ हड्डाधिराजहम्मीरौ १८३।१ रत्त-
कुमारबरसिंह १८४।१ लालसिंह १८४।२ कुमारीचन्द्रकुमारि १८४।१
तोकत्रय ३ समुद्भवन १५ तत्तनयागाष्ट्रकूटस्वीपमल्लिनाथराजकु-
मारजगमालभाविपाणिग्रहणाभणन १६ लालसिंहा १८४।२ र-
सजैत्रसिंह १८५।१ नवब्रह्म १८५।२ कृष्णाकुमारी १८५।१
तुकत्रय ३ प्रादुर्भवन १७ समातृनिश्चयप्राप्तजैत्रावुत्त १ नवब्र-
ह्मका २ पदद्धिहड्डकुलभाविदशम १० भेदलालावुत्त १८।१०
प्रादुर्भावसूचन १८ परिणीतलालसिंह १८४।८ कन्याकृष्णा-
कुमारी १८५।१ कथारूचारणावैरवालकीभून २ राणाहम्मीरे

रहलावण आदि पुत्र और चार प्रान्तों का हड्डाधिराज हम्मीर का नजर के सहित सरलता से प्रसन्नता पूर्वक लेकर कथोणपुर के तोमर का दोष मिटा-कर उसको अपना सेवक बनाना, प्रामार को पराजित करके डोड हरराज का उचित तिरस्कार करके हम्मीर का गुनगौरी के पलटे की कीमत में उसकी विवाहिता रानी गौडी को हठ पूर्वक बुन्दी लाना, हम्मीर के छोटे भाई नव-रंग का सोलंखिनी आदि तीन स्त्रियों से विवाह करना, उसके छोटे भाई स्थिरराज का सोलंखिनी रुक्मिणी आदि पांच स्त्रियों से विवाह करना, हड्डाधि-राज हम्मीरसिंह के औरस कुमार बरसिंह? लालसिंह और कन्या चन्द्रकुमरी तीन बालकों का जन्म होना, उसकी पुत्री का राठाड मल्लिनाथ के पुत्र जगमाल के साथ आगे होनेवाले विवाह का कहना, लालसिंह के औरस जैत्रसिंह, नव-ब्रह्म और कन्या कृष्णकुमारी तीन बालकों का जन्म होना, उनका माताओं सहित निश्चय करके 'जैतावत्त' 'नवब्रह्मका' इस पदवी से हाड़ों के कुल में आगे होनेवाले दशवें भेद 'लालावत्त' के प्रकट होने की सूचना करना, लालसिंह की कन्या कृष्णकुमारी को विवाह करके बारू चारण का बैर लेने में राणा

कुमारचेत्रसिंहगखोलीहल्लभाविरखामरखाख्यापन १९ जनकवैरबालकहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ मलानगोपालिकचालुकसमलार्थस्वविक्रमविजितटोडापुरप्रत्यर्पण २० टोङ्कपुरविजेतृहड्डुशाहम्मीर १ हल्ल २ शैर्पोहहम्मीर ३ पानिहारहम्मीर ४ राष्ट्रकूटमल्लिनाथ ५ कूर्मोद्धरण ६ चालुकसमल ७ प्रामारगङ्गसेन ८ दिल्लीशयवनेन्द्र तुगलक ३ गयासुद्दीन १४।१९ समकालीनत्वसूचन २१ प्रबुद्धजनप्रसन्नदिल्लीशगयासुद्दीन १४ सचिववणिक्पुञ्जराजसुगमशब्दसाधकसारस्वतसूत्रटीकानिर्माण २२ प्राक्प्रतिभटीभूतदिल्लीशसकदिल्लीशसचिवयवनगणबहुकृत्वोदिल्लीसैन्यपराजयन २३ बुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ पट्टपराजकुमारवरसिंह १८४।१ शैर्पीषी १८४।१ कौर्मी १८४।२ प्रामारी १८४।३ पत्नीत्रय ३ भाविपाणिपीडन २४ सूचनं षष्ठो ६ मयूखः ॥ ६ ॥

आदितस्त्रिपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५३ ॥

प्रायोव्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हम्मीरसिंह के पुत्र चेत्रसिंह का गखोली नगर में आगे होनेवाले युद्ध में मारा जाने की सूचना करना, पिता का वैर लेनेवाले हड्डाधिराज हम्मीरसिंह का नम्र होनेवाले मोलखी गोपाल के पुत्र सालल के अर्थ अपने पराक्रम से विजय कियेहुए टोडापुर को पीछा देना, टोंकपुर के विजय करनेवाले हाडा हम्मीर १ हल्लू २ सीसोदिया हम्मीरसिंह ३ पड़िहार हम्मीरसिंह ४ राठोड़ मल्लिनाथ ५ कछवाहा उद्धरण ६ सोलखी सालल ७ प्रामार गङ्गसेन ८ दिल्ली के पति बादशाह तुगलक गयासुद्दीन इनसबका एक समय में होने की सूचना करना, पण्डितों से प्रसन्न होनेवाले दिल्ली के बादशाह गयासुद्दीन के सचिव बनिया पुञ्जराज का सारस्वत के सूत्रों पर शब्दसाधन में सुगम टीका बनाना, पहिले में शत्रु बने हुए सूबेदारों का बादशाह के सचिव और यवनों की सेना को बहुत बार पराजय करना, बुन्दीनरेन्द्र हड्डाधिराज हम्मीर के पाटवी राजकुमार वरसिंह का सीसोदिनी कछवाही और प्रामारी इन तीन स्त्रियों से आगे होनेवाले विवाहों की सूचना करने का छठा मयूख समाप्त हुआ॥६॥

आदि से एक सौ तिरपन मयूख हुए ॥ १५३ ॥

लक्खनगन तनूजलघु, अजयसिंह जयग्रास ॥
अधिक पाइ छन भगि असि, गो करि बहुन बिनास ॥ १ ॥
जातैं ढिग रु प्रतीच्य जग, गूढवार भुव गात ॥
कैलपुरसु जिहिं आक्रम्यौं, पुरबासिन हित पात ॥ २ ॥
साहअमल मेवारसब, स्वामि अहित साह्योहि ॥
तदपि कैलपुर जनन वह, अजयसिंह चाह्योंहि ॥ ३ ॥

पादाकुलकम् ॥

जो प्रमार[१]भंभर[२]जवन[३]न जुरि, कोउक गोपँ तंत्र किय अंकुरि ।
गूढवार हाकिम वह गोपहु, बस तस है औने लघु पुर बहु ॥ ४ ॥
पँत्ति पचास २५ नाम तँहँ पाये, अजयसिंह तिन्ह आय उडाये ॥
पुर गिरि[१]बन[२]दुर्गम गह पायउ, बसि तँहँ जनपद डमर वढायउ ॥५
चित्रकूटलग लूट प्रचारिय, मिच्छहु अजयसिंह बहु मारिय ॥
सादां[१०] तँहँ बारू संबोधियँ[११], भुल्लि भतीज गानपद गाधयँ[१२] ॥ ६ ॥
अग्रजसुत चंदानाऔरस, बसत वान्त आतुलगृह[१३] परबस ॥
है तस भीर उचित जन जोरहिं, तिहिं नृप करि लैबो चितोरहिं॥७॥

षट्पात् ॥

बारू चारन वचन सुधासम अजयसिंह सुनि ॥
जान्यौं जियत भतीज बंस तंतुव पट्टप पुनि ॥
तस मातुलगृह तबहि वेगपठयो सुहि बारुव[१४] ॥
सजवैंजाइ[१५] सादांसु[१६] उचित १ अनुचित २ इक्खतहुव ॥

१घाव पाकर ॥१॥ २लिया ॥२॥ कैलवाड़ा के ३लोगों ने ॥ ३ ॥ चित्तोड़ के रह- प्रमार, सोनागरे चहुवाण और यवनों ने वह कैलवाड़ा नगर एक ४ गोपना- मक; अथवा ग्वाल के ५ वश में ६ खड़े होकर करादिया ॥४॥ ७ पैदल ८ देश में ९ उपद्रव (लूटमार) मचाया ॥५॥ १० सोदा बारहठ शाखा के चारण बारू ने ११ समझाया कि भतीजे (बडे भाई अरिसिंह के पुत्र राज्य के हकदार) भूलकर राणा के पद को १२ रोका है; अर्थात् तुम राणा बनगये हो ॥ ६ ॥ १३ मामा के घर ॥ ७ ॥ १४ उसी बारू नामक चारण को १५ शीघ्र १६ उस सोदा बारहठ ने हम्मीरसिंह चित्तोड़ का राज्य करने

मातुलइ खेत मक्किय पकत*अनल †सिद्धकृतमास ‡इम ॥
पायोसु सुभट१मंचित्र२न सिसुन कारि पंतिन वंटत कत्रोस ॥ ८ ॥
बारू जानहि बिक्खि पइहु बैठारि सआदर ॥
बिंदन सर्मी १ तरबूज २ बिविध त्रपुसिन ३ समेत बर ॥
पृथुकन स्वागत प्रेरि पूंग पृथुकअन पत्रावलि ॥
किय तर्पिन नान कमन बुल्लि रोचकफत्त बलिंबलि ॥
जल सुद्ध सवन संमद जुगत हितकारि प्राघुनं हियहरिय ॥
अरिसिंहतनुज हम्मीर इम चंदानीभव उच्चरिय ॥

॥ दोहा ॥

कितगौं आवन१ बाम किन२, कित जावन३ किहिं काम४ ॥
बीसरिमग दुर्गम बिपिनं, आये हुव अभिराम ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

बारू अक्खिय बीर गन लक्खन स्वधर्मगत ॥
चित्रकूटपति चतुर मन्नि कुलसिंद सूरिमत ॥
रक्खि सरन रतनसी१८३।१बिदित बंसु१ बसु२कुल३बोरिय ॥
सव्वसु४अनुज५बि६सूनु७ अप्प८।९हुव हुंतं जिम होरिय ॥
ससुत अरिसिंह बरज्यो सवन तदपि सरन जन अनतक्कि ॥
सकुटुंब गो सु दवनसरन अजयसिंह रक्खि जिगत जंकि॥११॥

उचित है कि अनुचित है सो देखा; यह हम्मीरसिंह मामा के खेत प
†आश्विन मास में * अग्नि पर मक्का (अर्थात् मक्का के भुट्टे) ‡पकाते हु
और बालकों की पांत बिठाकर १ मक्का बांटते हुए को उमराव और मन्त्रि
ने देखा ॥ ८ ॥ २ देखकर ३ मतुलना (वृक्षविशेष) ४ काकड़ी
बालकों का आदर करके और पत्रावलि में मक्का अथवा मक्का के पिसे हु
कण परोस कर ७ सुन्दर ६ नम्रता करके; तृप्त किये ८ बारम्ब
६ सभा १० पाहुनों के ११ पुत्र ने ॥ ९ ॥ १२ वन में १३ मनोहर ॥ १० ॥
धन १४ प्राण और कुल को डुबोगा और आठ भाई, बारह पुत्र, और अ
खुद होली १६ होम होवे तैसे होम हुए १७ शरण आये हुए की रक्षा देख
१८ गिरकर ॥ ११ ॥

दोहा ॥

बारू तिनको बारहठ, दुर्भंग मैं मोदाहु ॥
भीरु स्वामि सहचर नभो, जियतरह्या कहि जाहु ॥ १२ ॥
अग्ग जात कछु कम्म इत, भो आवन मगभुल्लि ॥
मगबोधक सिसु तुम मिलत, पायो प्रमद प्रफुल्लि ॥ १३ ॥
सोदाके इम बचनसुनि, मुदित उट्ठि हम्मीर ॥
जानतहो निज जन्म जिम, बत्थन मिंल्या बीर ॥ १४ ॥
बाबा काहे गौरव बिहित, बर आसन बैठारि ॥
बुल्लया जोकछु बोधाबेनु, हुव सु छमहु हित हारि ॥ १५ ॥

षट्पात् ॥

जानतहोइ अजान बचन औने सुनि बारुव ॥
जंपिय तैं सिसु जन्म धरिय क्षत्रिय बंसहि धुव ॥
तदपि नाम१ कुलर२जानि३ कहहु प्रगगन निज कित्तिय ॥
बालबयहु तैं बीर जनिलिन जस करि जग जित्तिय ॥
बनि मूढ सोहु प्रात बारहठ जो पुच्छो सु अजानजिम ॥
चित्तारटारि सब हुव चवतें अप्प गुनहु मम मूत इम ॥१६॥

पादाकुलकम् ॥ ॥

स एह बार१गिरि२करि दुर्गम, मितामित इत भुव बँपन मनोरम॥
ल बाहक इत जे रजपूतहु, बपन मिलैं न तिनहु बसुधा बहु॥१७॥

दोहा ॥

निजनिजखेतनके निकट, अप्पन अप्पन औन ॥
रचि इतके कर्षु३क रहत, च्याग्गि४ हु बगन अचैन ॥ १८ ॥

---

१ दुर्भागी शोरा शाखा का चारण ॥ १२ ॥ २ रस्ता बतानेवाले ॥ १३ ॥ ३ (गाढ़) भरके १ मिला ॥ १४ ॥ ४ बडप्पन करके ॥ १५ ॥ ५ कहाँ है ... हो ॥ १६ ॥ यह देश बन और पर्वतों से दुर्गम है इसकारण से इधर थोड़ी ... भूमि ७ बीज बोने का सुन्दर मिलता है यहाँ जितने रजपूत हल चलाने वाले हैं उनको बीज बोने के लिये अधिक भूमि नहीं मिलती ॥ १७ ॥ ८ ... ९ खेतीकरनेवाले ॥१८॥

निकटहि यह मासंत निलय, ऐवक मातुलगृह मोहि ॥
इहाँकहत हुव आगमन, कबहु राजसुनकोहि ॥ १९ ॥
अरिसिंहहि ससनाम अरु, तातहु लक्खन ताग ॥
मातुलकुल १ अरु जननि२ मम, जानत भइहु जास ॥ २० ॥

॥ षट्पात् ॥

अरिसिंह सु यँहँ आत विक्खि जननी मम अतिबल ॥
रंह कानिइन तिहिं परनि हुनहि गो सुनि सत्तुनदल ॥
बीजरूपसों प्रविास जहाँ चांदनी जाठर ॥
प्रसवकालगतिपाइ तनुज मैं हुव दरिद्रनर ॥
सो अब विनाइ पंच ५ छ ६ समा भो इतो रु सुहि जन्मभुव ॥
२जमूढ अबहु जानत१हत धाक मम कुल यहहि ध्रुव ॥२१॥

॥ दोहा ॥

केवल जानौं मातृकुल, इतर न बोध्य उदंत ॥
जानतह्वै जैनकको, मैदनहु जननि सुमंत ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

सांदांगु सुनि प्रसन्न धाइ हम्मीर अंकधरि ॥
अक्खिय तुमहि अधीस कुलहि रक्खन अलपनकरि ॥
रक्खि मग्न नृपरतन १८३।१ सुरार भवदीय पितामह ॥
चित्रकूट अधिराज रानलक्खन १ अतिआग्रह ॥

१दीखता है २घर ३ मामा का यही घर है यहां सुनते हैं कि किसी राजपुत्र का आना हुआ था ॥१९॥ उनके४पिता का नाम भी लक्ष्मणसिंह था॥२०॥ मेरी माता को अत्यन्त बलवान् ५ देखकर चन्द्रमा के ६ उदर में वीर्य रूप से प्रवेश करके ७ अत्यन्त दरिद्री. पांच छः वर्ष बिताकर इतना बडा हुआ हूं और यही मेरी जन्मभूमि है मैं दुःख के कारण और मूर्खता से अब भी नहीं जानता हूं कि मुझको ८ धारण करनेवाला यही कुल है ॥ २१ ॥ ९ माता के कुल को जानता हूं १० अन्य वृत्तान्त का ज्ञान नहीं है ११ पिता के १२ घर को १३ बुद्धिमान् है सो माता जानती होगी ॥२२॥ १४ वह सदा बारहठ १५ गोद में खेलिया १६ आपके १७ दादा ने १८स्वामि

तब तात कुमर अरिसिंहजुत सुनबारह १२ सोदरबसु८न ॥
सुरलोकगयउ पालत सरन उज्झि जवन संगर अंसुन ॥२३॥

॥ दोहा ॥

तनय बच्यो लघु तेरहम १३ अजयसिंह अभिधान ॥
काका जो तब कैलपुर, गहि रु कहावत रान ॥ २४ ॥
लुट्टत पुरचितोर लग, तोहि न जानत तात ॥
कहैं कुमर अरिसिंहकौं, विदित हुती मम बात ॥ २५ ॥
अजयसिंह मारयो अहहि, जियत नांहि परिजानि ॥
भूपमानतजि भटभयो, महत भाग्यफल मानि ॥ २६ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम हम्मीरहिं उचित विकिखँ आगन तिहिं वारव ॥
अजयसिंहकहँ आनि रूप तत्थहि मिलाइ दुवर ॥
मातुलकुल समुझाइ अनुग काका अंजिह्मउर ॥
भ्रातबहू १ रु भतीज २ प्रैनत लैगोसु कैलपुर ॥
सब नैय सिखाइ महद्दय सिसुहिं करि व्यय पृतना प्रचुर किय ॥
जिहिं हनि प्रमार१संभर२जवन३लहिअवसर चित्तोरलिय॥२७॥

॥ दोहा ॥

सूर भतीजहिं प्रभुसमुझि, है गद्दा रु उदास ॥
भवतजि भाव विरक्त भजि, अप्प लह्यो अविनास॥ २८ ॥
नृपतिगम२०३पिक्खहु निश्चैन, कलि४मज्झहु कृत१ कर्म ॥

१ छोडकर २ प्राणों को ॥ २३ ॥ अरिसिंह के कहने से यह बात मैं ३ जानता था ॥२४॥ २५ ॥ मेरे कहने से अजयसिंह तुमको ४ सालिक जानकर ५ राजापन का मान छोडकर ६ लुटेरा उमराव होगया है ॥ २६ ॥ ७ देखकर ८ मामा के कुल को समझाया कि काका (अजयसिंह) ९ सेवक होगया है और वह १० सरल हृदयवाला है यह कहकर बडे भाई की बहू और भतीजे को ११ नम्रता पूर्वक कैलवाडे लेगया १२ नीति १३ खरच करके १४ बहुत १४ सेना इकट्ठी करके ॥२७॥ १६ स्वामि समझकर १७ संसार को छोडकर १८ विरक्त होकर १९ मोक्ष को प्राप्त हुआ॥ २८॥ २० हे राजा रामसिंह! २१ निश्चय हो कलियुग में भी २२ सतयुग

अजयसिंह सीसोदसम, होत अवहु ध्रुवधर्म ॥ २९ ॥
जनमैं ताके तोक जुग २, पहिलो १ सज्जन १ पुत्त ॥
अनुजा तास प्रभावती २ जो कन्यागुन जुत्त ॥ ३० ॥
अजयसिंह तनुंजात वह, सज्जन हुव बुंध १सूर २॥
देनलगो हम्मीर इहिं, पटा उचित वसुपूर ॥ ३१ ॥
जदपि रानहम्मीर हठ, करि थक्किय विधिकोरि ॥
पटा लक्ख१०००००रुप्पय प्रमित, न लयो तदपि निहोरि ॥३२॥
वीर सु तजि मेवार वलि, दक्खिन स्वबल दिखाइ ॥
जित्ति सितारानैर जहँ, प्रतप्यो वेभवपाइ ॥ ३३ ॥
याहीके कुलके अवहु, हुते सितारा हंत ॥
पै अब गोरन प्रवलपन, स्वत्वहिं छोरि सुसंत ॥ ३४ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

जा सज्जनसिंहकी अनुजा प्रभावती १८४१ नाम रानांहम्मीरनैं स्वकीय सोदर्य स्वसाकेसमान सत्कारसहित वित्तको विसेस व्यय विस्तारि अत्यंत उत्सव करि बुंदीकेअधीस हड्डाधिराज हम्मी

के कर्म देखो ॥ २९ ॥ १ बालक २ छोटी बहिन ॥ ३० ॥ वह अजयसिंह का ३पुत्र सज्जनसिंह ४पण्डित और वीर हुआ ५धन से पूर्ण ॥ ३१ ॥ ६ प्रमाणवाला ॥ ३२ ॥ ७ फिरदक्षिण में ८ अपना बल दिखाकर ॥ ३३॥ ९ खेद की बात है कि १० अङ्गरेजों ने उन श्रेष्ठों से ११ अपने हकको छुडालिया ॥ ३४ ॥ १२ अपनी १३ सगी १४ बहिन के समान १५ खरच १६ उत्सव करके

यह कथा बड़वाभाटों की लिखाई हुई होने के कारण इसमें भूल हुई है क्योंकि चित्तोड़ के युद्ध से निकले पीछे थोड़े समय बाद कैलवाड़ा में अपने भतीजे हम्मीरसिंह को राज्य देकर अजयसिंह स्वर्ग को सिधारे और हम्मीरसिंह राजा होकर यवनों से अनेक युद्ध करने के कारण निर्बल होगये तब किसी तीर्थ में अपना शरीर छोड़ने के अर्थ द्वारका जाने लगे सो गुजरात में बारू चारण के ग्राम खोड़में बरवड़ी नामक शक्ति का वरदान पाकर चित्तोड़ लेने के अर्थ पीछे कैलवाड़ा आये और उसी बारू चारण की सहायता से हम्मीरसिंह ने चित्तोड़ का राज्य पीछा लिया जिसका सविस्तर वृत्तांत देखना होवे तो वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में महाराणा हम्मीरसिंह के चरित्र में देखें, यहां अजयसिंह का चित्तोड़ लेना लिखा सो मिथ्या है.

र १८३१२ के पट्टप राजकुमार बरसिंह १८४११ को बिवाहिदई ॥

अरु पितामह लक्खन[1]केसमान स्वकीयसीमामैं सासनकौं सफलकरि दिल्लीके दर्पकौं दाहिवेकी चर्या[2]लई ॥

क्षत्रबंधुन[3]को भानेजहो तथापि नीति पराक्रम २ द्वैर२ ही पदार्थ असाधारन अपनाइ आर्यावर्त्तके अधीसनमैं अग्रगराय आर्यधर्मको आलंबन[4] अद्वितीय भयो ॥

अरु याही रानाँहम्मीरकै खैत्तल[5]नाम कुमार जन्मलीनौं सोहू पिताकीशिक्षाकेप्रमान बाल्यवयमैंही आर्यधर्मकेआधार ऐसे आपुने अन्वय[6]के अनुकूल आगम[7] पढिगयो ॥३५॥

प्रायोमरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणागद्यम् ॥

इणाबातरै अनंतरही[8] एकसमय चीतोड़मैं कमठाँणाँरोकाम चालताँ कोईधालूरी एक१ मूर्त्ति च्यारि४ हाथ धारणाकीधाँ भूतळमाँहिंथी नीसरी[9] ॥

जिकं[10]णारो भाव[11] बिचारणारेकाज राणाँहम्मीर आपरीसभामैं मंगाइ परिकररालोकाँनूँ[12] प्रत्येकँ[13] पूछि परीक्षाकरी ॥

जिकणामूर्त्तिरै एक१ हाथनीचो दूजोर हाथऊंचो तीजो३ बीच मैं तिरछोरहियो ॥

अर चोथो ४ हाथ कंठरैलागो देखि आपआपरी उपलब्धि[14]रै अनुसार साराँही जुदोजुदोभावकहियो ॥ ३६ ॥

जठै सारीहीसभानूँ सुणाइ सो दै चारणा बारू कही या मूर्तितो राणाँहम्मीररो अद्वितीय उदार१ बीर२ पणाँ दिखावणारैकाज पा-

---

१ लक्ष्मणसिंह के २ दिनचर्या(आचरण) ३ हलके चत्रियों का भानजा था तो भी ४ आधार ५ खेत्रसिंह (खेता) ६ वंश के ७ शास्त्र ॥ ३५ ॥ ८ पीछे ही ९ जमीन के भीतर से १० जिसका ११ अभिप्राय १२परगह के लोगों में से १३ प्रत्येक पुरुष से पूछकर १४ ज्ञान ॥ ३६ ॥

ताळलोक१ थी भूलोक८मैं आई ॥

अरु सक्तिरो स्वरूप धारणकरि समग्रही संसाररा स्वांतमें एक १ ही चीतोड़राअधीसरी अधिकता जणाई ॥

नीचो१ हाथ करि सातूँ ७ ही अतलादिक तलालोकाँमैं राणाँ जिसड़ा दूजा२उदार१ वीर२ रो अभाव जतावै ॥

अर ऊँचो हाथकरि भुवरादिक छै६ही ऊर्द्धलोकाँमैं इणारा प्रतिभटरो अनादर बतावै ॥ ३७ ॥

तीजो३ हाथ बीचमैंराखि इणाहीमहीमंडलरैमाथैं राणाँजिसो दूजो२ रजपूत राणीजणियो न कहै ॥

अर इणमैं झूठोहोइतो चोथो ४ कर कंठलगाइ आपरो सीस उतारणरूप सपथरो स्वीकारचहै ॥

सोदारोइसड़ोविदग्धतारोवचनसुणताँहीसारीहीसभावाहवाहकीधो

अर राणाँहम्मीर इण ऊंहारी रीझपर आपरापोळिपाल चारूनूँ सासणाँरा सप्तक ७ समेत बारहलाख १२००००० रूँजतीमुद्रारो विभवदीधो ॥ ३८ ॥

अठी इणसमयरै आगैं हाडाराव हम्मीर १८३।१रा भावी वृद्धवयमैं दिल्लीरा पंद्रहाँ१५ अधीस जवनेस मुहम्मदसाह १५ री पातसाहीमें इणारा पिता पहिलापातसाह गयासुद्दीन १४ रो बणायो पंजाबरो सूबादार नवाब रहीमअली आपरा बाहुबळथी पातसाहबणि दिल्लीजिसड़ी दुलहीनूँ बरणरैकाज आयो ॥

अरु मुहम्मदसाह १५ केही आर्य १ म्लेच्छ २ सुभटाँरा समूह सज्जीभूतकरि चतुरंगिणी चैमूनूँ प्रचारि साम्हाँचलायो ॥

संस्त्रपातरा प्रारंभमैंही सूबापति रहीमअलीरा वीराँरा बाहुबल

---

१ मन में २ नीचे के लोकों में ३ जैसा ४ ऊपर के लोकों में ५ बराबरी करने वाले; 'स्थानापन्न का' ॥ ३७ ॥ ६ हाथ ७ सौगन ८ पण्डिताई का ९ तर्कना की १० चांदी के रुपयों का ॥ ३८ ॥ ११ आगे होनेवाला १२ सेना को

थी दिल्लीरो कातर[1] कटक पलायमान[2] थियो ॥

जठै मुहुम्मदसाह १५ रा मतंगज[3]नूँ मुँड़ाइ कर्णाटराजरैकुमार प्रामार नरसिंहदेव १ कालंजरराजरैकुमार पंडिया १० चाहुवाण चाचिकदेव २ घोडाउठाइ दो२ही राजकुमाराँ मुहुम्मदसाह१५ रैदेखताँ रहीमअलीरो अनीक समस्तही जाइ त्रस्त[5]कियो ॥ ३९ ॥

प्रामाररा प्रहरणाँ[6]रा प्रहारपाइ पीलूरी पीठिहूँ पराङ्मुहोइ पड़ता रहीमअलीरो मस्तक तो चाहुवाण चाचिकदेव काटिलीधो ॥

अर नरसिंहदेवनूँ छिन्नभिन्नहोइ पड़तोदेखि केही जवनानूँ परेतपतिरी पुरीरा पाहुणाकरि ऊँही उत्तमंग आणि मुहुम्मदसाह १५ रै उपायन कीधो ॥

अर कहियो नरसिंहदेवरा सत्रुआँरा सन्निपातहूँ प्राणहीणहोइ पड़ता रहीमअलीरोमस्तकतो आपरा विजयमैं एक प्रमाण पेखावणरे काज मैं ही काटिआणियो ॥

अर नरसिंहदेवतो घणाँम्लेच्छाँरा मस्तक महीतलरो मंडणकरि लोहछकपाइ पड़तोदीठो परंतु मैंतो जिकणरो जीणाँ १ मरणाँ न जाणियो ॥ ४० ॥

चाचकदेवरी सूचनानूँ प्रामाररा पराक्रमरी समतामैं सिराहि मुहुम्मदसाह १५ जाइ खेतसम्हाळियो ॥

अर सैकड़ाँ मृतक म्लेच्छाँरा मंडल[15]रैबीच कर्णाटराजरोकुमार नरसिंहदेव घणाँ घावाँकरि घायलपड़ियो थको भी चेतनासमेतभाळियो[16] ॥

सिबिका[17]मैं उठाइ आणताँ नरसिंह १ कहियो सत्रुरो सिरतो चाचक२ उडायो तिणरा सत्काररैसमय म्हाँरोआदर खटावैनहीं॥

१कायर२भगा ३हाथी को ४पीछा फेरकर ५भयभीत(कम्पायमान)किया ॥३९॥६शस्त्रों के ७हाथी की ८प्राणरहित ९ यमराज की १० वही ११मस्तक १२नजर१३प्रहार से १४दिखाने के लिये ॥४०॥ १५समूह के बीच में१६देखा१७पालखी में

जठै चाचिक २ कहियो मैंतो बिजयमैं केवल प्रमाण पावण रैकाज या कीधी जिणथी ओररी ऊँठी कीर्तिरो भोगणाँ बीतिहोत वसुधेस्वररावंसनूँ कोईकाळमैंभी भावैनहीं ॥ ४१ ॥

इणरीति परस्परमैं प्रसंसाकरता नरसिंहदेव १ चाचिकदेव २ दोरहीराजकुमारानूँ दिल्लीआइ मुहुम्मदसाह १५ चामर १ छत्रा २ दिक समान सत्काररैसाथ केही लाखरुपियाँरो राज्य दीधो ॥

अर पुरुषपरीक्षामैं विद्यापतिमिश्र भी याँ दोही सत्यवीराँरा सुजसरो प्रकासकीधो ॥

जिणसमय विक्रमरा सकरी गगन गज गुण गोत्रा१३८०सम्मित समामैं चउदहौं१४दिल्लीस गयासुद्दीन१४कोई प्रासादरा पड़ता पटळ रै हेठैआइ मरियो तेरैं इणरोपुत्र तुगलक३अलिफखान१५पंद्रहौं१५ पातसाह हुवो जिकणही आपरोमुहम्मदसाह ईंसड़ो दूजो२नामपायो

अर इणराही समयमैं एक हुसैन १ नाम जवन आपराही स्वामी कोई गणंकराज धिमरा वचनरै अनुसार मालवदेसरे पाररा समस्त दक्खिणरी पातसाही पाइ दूजो २ नामकरि अलावुद्दीन कहायो ॥ ४२ ॥

॥ दोहा ॥

अठी कँवर जगमाल इम, इणहीसमय महीप ॥
साहसुता लै साधिया, दल पैला कुलदीप ॥ ४३ ॥

१ जिससे २ उच्छिष्ट ३ अग्निवंशी ४ चहुवाण के वंश को ॥ ४१ ॥ ५ प्रमाणवाले ६ वर्ष में ७ महल की ८ छत के नीचे आकर ९ तब १० ऐसा ११ ज्योतिषी ॥४२॥ १२ बादशाह की * पुत्री को लाकर शत्रुओं की सेना को

इस के लिये राजपूताना में ऐसा प्रसिद्ध है कि जगमाल ने गुजराती बादशाह मुहम्मद बेगड़ा की पुत्री गींदोली को बलात्कार से पकड़कर अपनी पासवान बनाई और कितने ही लोकों का कथन है कि गींदोली गुजराती बादशाह की पुत्री नहीं थी किंतु बादशाह के एक सरदार नव्वाब अब्दुल्लाह की पुत्री थी सो, कैसा ही होवे परंतु गींदोली के कारण आईहुई यवन सेना को परास्त करके जगमाल ने गींदोली को घर में रक्खी जिसके गीत अब भी सम्पूर्ण राजपूताने में गुनगोरी के दिनों में स्त्रियें गाया करती हैं.

सो उदंत अब मूळसह, सप्तम ७ किरण प्रसंग ॥
भाखीजै रचियो भड़ाँ, जिम मेहवपुर जंग ॥ ४४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करेमहाचम्पूकेपूर्वा१यणोपञ्चम५राशौवीतिहोत्रचण्डासि १ वंशवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वीज्यानुवीज्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रहम्मीर १८३।१ तत्कुमारवरसिंह १८४।१ समयसामीप्यसङ्गतस्वपितृव्यकाऽजयसिंह १सहितराणाहम्मीर २ चरित्रे पूर्वरणोकृताऽसुकाऽजयसिंह १ गूढबाटदेशप्राच्यप्रान्तस्थध्वस्ततत्रत्यपारिपान्थिकसत्कृतस्वपक्षपातिवसतिककदलपुरनाम्नगरसमाक्रमण १ निपातितानेकयवन १ त्रासितलुण्टितमेदपाटप्रदेश २ समात्तराणापदाऽजयसिंहार्थचारणबारूतदग्रजाङ्गजहम्मीरमातुलगृहविद्यमानत्वज्ञापन २ तत्प्रेषितबारूसुभटसचिवीकृतसवयस्कबालवृन्दमातामहक्षेत्रनिष्पन्नोपाधान्यपृथुकविभाजकसमात्ततत्समाजस्वामित्वशूरशिशुहम्मीरनिरी

भोली ॥ ४३ ॥ सातवें १ मयूख में ॥ ४४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पंचमराशि में अग्नि वंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हम्मीर और उसके कुमर वरसिंह के समय की समीपता में होनेवाले अपने काका अजयसिंह सहित राणा हम्मीरसिंह के चरित्र में पहले के युद्ध में अपने प्राण को बचाकर अजयसिंह का गोढवाड़ देश के पश्चिम प्रान्त में स्थित वहाँ वाले शत्रुओं का नाश करके अपने पक्षपात वाले लोगों से पूजित होकर कैलवाड़ा नामक नगर को लेना, अनेक यवनों को मार और मेवाड़ देश को लूटकर राणा पद को ग्रहण कियेहुए अजयसिंह के अर्थ चारण बारू का अजयसिंह के बड़े भाई [अरिसिंह] के पुत्र हम्मीरसिंह का मामा के घर में विद्यमान होने की सूचना करना उसके भेजेहुए बारू का अपनी अवस्थावाले बालकों के समूह को उमराव और मंत्री आदि बनाकर अपने नाना के खेत पर पके और भुनेहुए मक्का के फलों को बालकों को बांटते और उस समाज के स्वामिपन को ग्रहण कियेहुए शूर बालक हम्मीरसिंह को देखना, आयेहुए का आदर करके प्रश्नोत्तर से परस्पर के स्वरूप

त्वा ३ सस्वागतभोजितप्रश्नात्तेरानिश्चितान्योन्यस्वरूपवारूसमा नीताऽजयसिंह १ हम्मीर २ सम्मेलन ४ कदलपुरानीतसप्रज १ प्रजावती २कप्रच्छन्नवृद्धबलप्रहतमद्रावितप्रामारादिप्रतीपाऽजयसिंहसुशिक्षितनृपत्वोचितभ्रातृजहम्मीरार्थचित्रकूटसमाक्रमण.५ मेदपाटप्रभूकृतहम्मीरविरक्तपितृव्यकाऽजयसिंहयोगचर्यावपुर्विहान ६ तिरस्कृतराणाहम्मीरार्पितमुद्रालक्ष १००००० प्रमिताऽऽयपट्टत्यक्तमेदपाटाऽजयसिंहसूनुसज्जनसिंहसितारापुरस्कन्धावारदक्षिणादिक्कियत्प्राच्यप्रान्तराज्यसमासादन ७ राणातद्भगिनीप्रभावती १८४१२ बुन्दीशकुमारवरसिंहा १८४१२र्थवितरण ८ प्रथितनयपराक्रमानिरुद्धशासनचित्रकूटाधिराजहम्मीरसूनुकुमारक्षेत्रशैशवसमुचितशिक्षण९ प्रासादपीठभूखननप्रादुर्भूतपाणिचतुष्क ४ वद्धातुपुत्रिकाभावसंभावकसौतेयवार्वर्थसशासनसप्तक ७ द्वादशलक्ष१२०००००द्रम्मवसुवितरण १०दिल्लीशमुहुम्मद १५ सामन्तप्रामारराजकुमारनरसिंहदेव १ परासुपातितप्रतिभटरहीमाशिरःकर्तकचाहुवाणराज

को निश्चय करके बारू का अजयसिंह को लाकर हम्मीर से मिलाना, कैलवाड़ापुर में सन्तान सहित बड़े भाई की स्त्री को प्रच्छन्न रखकर बड़ी सेना से मामार आदि शत्रुओं को मारकर और भगाकर अजयसिंह का राजापन के उचित श्रेष्ठरीतिसे शिक्षा पायेहुवे भतीजे हम्मीरसिंह के अर्थ चित्तोड़गढ को लेना, हम्मीरसिंह को मेवाड़ देश का स्वामी बनाकर विरक्त होकर काका अजयसिंह का योगचर्या से शरीर छोड़ना, राणा हम्मीरसिंह के दियेहुए लाख रुपये की आमद के पट्टे को और मेवाड़ देश को छोड़कर अजयसिंह के पुत्र सज्जनसिंह का सतारा नगर को राजधानी बनाकर दक्षिण दिशा में कितने ही दक्षिण के राज्यों को लेना, उसकी बहिन प्रभावती को महाराणा का बुन्दीश के कुमर बरसिंह के अर्थ देना, नीति और पराक्रम में प्रसिद्ध और जिसकी आज्ञा कभी नहीं रुकती ऐसे चित्तोड़ के राजा महाराणा हम्मीरसिंह का अपने पुत्र चेत्रसिंह को बालकपन की उचित शिक्षा देना, महल की नींव खोदने में निकली हुई चार हाथवाली धातु की पुतली के भाव के कहने से चारण बारू के अर्थ सात शांशण और बारह लाख रुपयों का धन देना, दिल्ली के पादशाह मुहम्मद के उमराव प्रामार राजकुमार नरसिंहदेव के मारकर गिरायेहुए शत्रु रहीम का म-

चाचिकदेव २ स्वामिपुरोयथातथ्यकथन ११ तत्तदसाधारण सत्य २ प्रभावप्रसन्नपवनेन्द्रनरसिंह १ चाचिक २ बहुल पकराज्यसमसत्करण १२ सूचितसंवत्समयदिल्लीशगयासु १४ प्रासादपटलपातप्रमापणानन्तरतत्पुत्राऽलफ़ूखाना १५ मतुगलकूमुहम्मद १५ पञ्चदशपातसाहीभवन१३ तत्समय कतस्वनामालावुद्दीन १ यवनान्तरहुसैन १ स्वस्वामिगण वचनाऽनुसारदक्षिणादिक्यवनेन्द्रताप्रापण १४ मेहवपुरमही ध्वजमल्लिनाथराजकुमारजगमालगौर्जरधरेशयवनेन्द्रमुहम्म हित्रिगिंदुल्लीहरण १ समाहूततत्सैन्यकरण २ वृत्तान्तविस्त माणत्वविख्यापनं १५ सप्तमो ७ मयूखः ॥ ७ ॥

आदितश्चतुःपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५४॥

प्रायोमरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

दोहा ॥

तीडाउत सळखातणौं, मल्लीनाथ १ महीप ॥
जैतमाल२ वीरम ३ जथा, तीन३ तनुज कुळदीप ॥१॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

काटकर चहुवाण राजकुमार चाचिकदेव का स्वामी के आगे सत्यकथन , उनकी असाधारण वीरता से और सत्य कथन के प्रभाव से प्रसन्न होकर शाह का नरसिंह और चाचिक को बहुत लक्ष रुपयों के राज्य देकर बरा त्कार करना, कहेहुए सम्बत् में दिल्लीश गयासुद्दीन का महल की छत से मरने के पीछे उसके पुत्र अलफ़खान और दूसरे नाम से तुगलक् मुह का पन्द्रहवां बादशाह होना,उस समय में अपना नाम अलाउद्दीन प्रसि के यवनों में से हुसेन नामक यवन का अपने स्वामि ज्योतिषी ब्राह्मण हने के अनुसार दक्षिण दिशा में बादशाह होना, महेवापुर के राठोड़ मल्लिनाथ के राजकुमार जगमाल का गुजरात की धरा के पति ाह मुहम्मद बेग की पुत्री गींदोली को हरना, उसकी सेना को बुला ण के वृत्तान्त को विस्तार से कहने की इच्छा प्रकट करने का सातवां म समाप्त हुआ ॥ ७ ॥ और आदि से एक सौ चोपन मयूख हुए ॥ १५४ ॥ तीडा के पुत्र सलखा के कुल को प्रकाश करनेवाले राजा मल्लिनाथ१ जै

पहिली दिल्लीराअधीस एकादसमाँ ११ पातसाह खलजी अला वुदीन ११ रा समयरैंसमीप मेहवनगर राष्ट्रकूट राजा सळखरै म ल्लिनाथ १ जैत्रमल्ल २ वीरमदेव ३ ए तीन ३ पुत्र हुवा ॥

तिकाँमैं जैत्रमल्ल १ नूँ सुमियाणाँ २ वीरमदेव १ नूँ खेड़ २ नामक स्थान वैठणनैं देर दोहीछोटा कुमाराँनूँ कीधा जुंवा ॥

सळखरै अनंतर वडोकुमार मल्लिनाथ मेहवानगररो महीपथियो॥ अर जिकणरैं वीराधिवीर उधाराआँटाँरो लेणहार जगमालना मकुमार जन्मलियो ॥ २ ॥

जिकण कुमार पहिलै विवाह बुंदीरा अधीस हड्डाधिराज हम्मी र १८३।१ री चंद्रकुमरिनाम पुत्रीरो पाणिग्रहणकीधो ॥

अर कुमरपणाँहीं अनेक आहव जीति केहीवैरियाँरा ऋांत दक्षि णदिसारालोकपाळरी पुरीरै पंथ लगाइ धरारोधन धूंपटतै आंड- वाहरूहुवो तिकोही मारिदीधो ॥

एकणसमय दिल्लीरा प्रतीप गुजरातरा जवनेस मुहम्मदवेगड़ साहरै आश्रित पंजावरा सिंधुदेसमैं भाडंगनैररा जोइया मुसलमान हूँता जिको हरामखोरहोइ प्रमादरा औसरमैं साहरीघोड़ी १ समा- धि१ तरवारि विजयनाल २ समेत केहीसुवर्णरा पात्रादिक संभार लूटि आपरा देसनूँ प्रयाणकियो ॥

अर पाछली वाहररो जोरजाणि दलै नाम जोइयाँरैमालिक लूटरी सामग्रीसमेत दाहिणाँ मारगटळि राठोड़ाँनूँ सहायकजाणि आधो वि त्त वाँटणाँकरि मल्लीनाथ महीपरै मेहवैनगर आइ विश्रामलियो॥३॥

माल वीरमदेव ये तीन पुत्र हुए ॥ १ ॥ १ जुदे २ हुआ ३ वैर (जिनसे पहले कभी वैर नहीं होवे उनसे अकारण वैर कियाजावे तिसको उधारावैर लेना कहते हैं)॥ २ ॥ ४विवाह. कई शत्रुओं के ५ समूहों को ६ यमराज की पुरी के मार्ग लगाकर ७ उडातेहुए ने ८ हद से बाहिर; अथवा अपने को रोकने वाला [बाहर (मदत) को रोकनेवाला आडवाहरू कहलाता है] ९ शत्रु १० थे ११ समाधि नामक घोड़ी १२ सामग्री ॥ ३ ॥

जठै घोड़ी १ तरवारि २ दोऊही रत्न दुर्लभजाणि स्वामीराहरा मरोर दंडरैउचित कहि कुमार जगमाल वंठथी लिसेस लेणारी विचारी ॥

सो जाणि राउळ मल्लीनाथ पुत्ररैछानैं जोइयाँनूँ काढिदीधा तिकाँहूँ वित्तरो विभाग लेणारीभी न धारी ॥

बाहरूबणिया जगमालनूँ पीठिलागोजाणि जोइये दलै बीरमदेवकनैं खेड़ जाइ तिकणारो सहाय पायो ॥

अर पीठिलागे जगमाल खेड़रै घेरोलगाइ आपरा काकाहूँ दलानूँ पकड़ाइदेणारो हुकम लगायो ॥ ४ ॥

साहसरैसाथ जगमालरो जोरजाणि घोड़ीसमाधि बीरमदेवनूँ देरै तिकणारे सहाय छानैंकढि लूटरीसामग्रीसमेत दलो भाडंगनै रपूगो ॥

इण अपराधरैऊपर काकानूँ काढि खेड़में आपरो अमल करि दिसादिसारा दोयँणाँरी मही दाविलीधी जिकणसमय कुमाररो प्रताप अँर्करे आभासँ ऊगो ॥

बीरमदेव आपरी जोड़ायत चावोड़ीसमेत देवराज१ गोगराज२ जयसिंह३ विजयराज४ च्यारि४ ही बाळकाँनूँ सेत्रावाग्रामरा ठाकुर साँगळियारजपूत राणिगदेवरै आश्रित राखि तिकणारी पुत्रीरो पाणिग्रहणकरि नवोढानूँ लेर भाडंगनैंरगयो ॥

अर जोइयो दलो आपरा उपकारकरै अर्थ आधाग्राम अर्पण करि बडासत्काररैसाथ विश्रामदेर जिम जिम ताणियो तिमतिम ही नंयो ॥ ५ ॥

दोहा ॥

तठै जनम चूँडालणाँ, हुवो घणाँ मैंहहोइ ॥

१ वंठसे ॥ ४ ॥ २ दंडकर ३ शत्रुओं की ४ सूर्य के ५ समान (प्रतिबिम्ब) ६ स्त्री ७ विवाह ८ नवीन स्त्री को ९ उपकार करनेवाले के अर्थ १० झुका ॥५॥ ११ उत्सव

उद्धतपखा वीरम उठै, वहियो हेत बुडोइ ॥ ६ ॥
अठी कुमर जगमाल ऊ, वरियो अपर२ विवाह ॥
पूरवभव भड़ प्रेतरी, रुचिर सुता कुळराह ॥ ७ ॥

सचरणगद्यम् ॥ पहली एक धाड़वी रजपूत धारातीर्थमैं पड़ियो तोभी कोइक कारणरै प्रभाव आपरा साथसमेत प्रेत हुवो जिकणरै पाछैं प्रजामैं एक१ पुत्री रही ॥

तिकणनूँ जगमालरैअर्थ देर कन्यादानरो सुकृत आपरै उपैदा करणरी पूर्वजन्मरी पत्नीरा स्वप्नमैं कही ॥

तिकणभी आपरो वारहठ भेजि प्रेतनूँ पुत्रीरो पुण्यमिलणरी जणाइ विवाहणरैकाज जगमालनूँ बुलायो ॥

अर सप्त७पदीरै अनंतर दानरो उदंक जामाता पैणिमैं लेर पिसाचराजरैकाज स्वर्गरोद्वार खुलायो ॥ ८ ॥

तिकणरै अनंतर कुमार जगमाल पूर्वानुरागजाणि अहमदाबादराअधीस मरुवाणीमैं वाच्य इसड़ा बेगड़ा मुहम्मदसाह १५ री अंगजा क्रीड़ारैव्याजै आरामर्में आई तिकणनूँलेर रजपूतीरैउफाण मेहवैआइ आपरो दुर्ग संगररैकाज सज्जकीधो ॥

अर जवनजातीय जाया आपरै उचित न हूँती तोभी पातसाहरीपुत्रीजायाि स्वैकीय साहसनूँ सफळहोणरो अवसरदीधो ॥

---

१ निरंकुश होकर. स्नेह को २डुबोकर ॥६॥ प्रेत*होने से ३पहिलेजन्मीहुई किसी वीर की सुंदर पुत्री से ॥७॥ ४धाड़ा डालनेवाला ५तरवार की धारा से मरा तो भी ६ भेट करने की ७स्त्री से ८ सात फेरा फिरे पीछे ९ पानी १० जमाई ने अपने ११हाथ में लेकर ॥८॥ १२मिलने से पहले रूप अथवा गुण के श्रवण करने से स्नेह उत्पन्नहोवे उसको पूर्वानुराग कहते हैं. १३ मरुभाषा में बोलाजानेवाला १४ ऐसा १५ पुत्री.खेलने के १६ मिस से १७ बाग में आई. १८ स्त्री १९अपने

---

*राजपूताने में ऐसी कथा प्रसिद्ध है कि कोई वीर राजपूत युद्ध में काम आकर अपनी पुत्री में अधिक स्नेह होने के कारण प्रेत होगया था सो जगमाल ने उस कन्या से विवाह करके उसके कन्यादान के पुण्य से उस प्रेत का प्रेतपन छुड़ाया इसके बदले में उसने यवनों के युद्ध में जगमाल को विजय दी.

राजामल्लिनाथतो पहलीही पुत्रनूँ जुवराजभावदेर प्रपंचहूँ[1] उदासीन एकांतमैं रहियो ॥

अर जगमाल मस्तकराभारनूँ[2] महागरिष्ट मानि अद्रिरैऊपर[3] दव[4] लगाइ धारातीर्थरैउछाह इसड़ी अनेकबातांरो अवलंब गहियो।९।

जिणरीति बंबावदारैअधीस हड्डाधिराज हालू१८२ सुरसज्जा सोवणारो साधन संपादनकरतै[5] बाणवै९२ वर्षांरो वय बाँसै[6] बाळि[7]यो र[8] अनेक आँटांरा[9] अवंमर्द[10] आँसंगिया[11] तोभी प्रधनमैं[12] पुद्गळरै[13] पैलारो प्रहारभी न पायो ॥

अर सामोरबारहठ लोहठरी पाघरै आँटै[14] मंडोउररा नरेस पड़िहार हम्मीर१नूँ गंजि[15] राणाँ लाखा२रो पण बिगड़ाइ जठैतठै जिम तिम मरणमंडियो परंतु आपरै आगारही[16] अवसाण[17] आयो ॥

इणरीति अनेक धूँकळ[18]करि भुजाँरी कंडूयाँ[19] भागी न जाणि जगमालकुमार अहमदाबादराअधीसनूँ पाँहुणाँ नूँतियो ॥

जरैं[20] साहभी सैंतीसहजार३७००० सेनाभेजी जिकणारा समुद्रमैं मेहवारो मान बहित्र[21]रै बिधान बूँतियो ॥१०॥

॥ मायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

ही धियै[22] गुज्जरसाहकी, पै[23] रट्ठोर प्रबीर ॥
जाहि आनि बुल्ले[24] जवन, धारा चक्खन धीर ॥११॥

॥ षट्पात् ॥

---

१ संसार से २ भारी ३ पर्वत के ऊपर ४ अग्नि लगाकर "पर्वत के ऊपर की लगीहुई अग्नि बुझाने से बुझती नहीं है इस कारण से मिटाने से नहीं मिटनेवाले द्वेष आदि के अर्थ यह उपमा दीजाती है" ॥ ९ ॥ ५ इकट्ठा ६ पीछे ७ रक्खा; अर्थात् बानवे वर्ष की अवस्था बिताई ८ और ९ वैरों के १० युद्ध ११ अपने अधिकार में किये १२ युद्ध में १३ शरीर को. पगड़ी के १४ बदले में "यह कथा आगे आवेगी" १५ जीतकर. अपने १६ घर में ही १७ मरण १८ युद्ध करके १९ खाज (खुजली) २० जब २१ नाव ॥ १० ॥ गुजरात के बादशाह की २२ बेटी यवन थी २३ परन्तु वीर राठोड़ ने तरवार की धारा चखने के लिये यवनों को २४ बुलाये ॥ ११ ॥

सेन सहँस सैंतीस३७००० लुब्भि मेहव पुर लग्गिय ॥
सावन आगम समय ज्वाल तोपन घन जग्गिय ॥
कुमरी चन्दकुमारि हुती बुंदिय निज पिउहर ॥
तँहँ आवन दिन तीज३ वचन सेहसौंहँ दयो बर ॥
जिम पक्ख असित वित्तत सजव तक्कत सोक कुमार तिम ॥
विलुगयँ प्रिया पावक विसंत कँलह गयँ सुधरैसु किम ॥१२॥
भटन नर्मजुत भनिय सोक आरूढ स्वामिसन ॥
अद्रिगिरत सिर ओडि दबे पुव्वैहि किम दुर्मन ॥
कुमर विहसि तव कहिय मरन मन्नौं न अमंगल ॥
पै[12] मैं रहत१ प्रिया नर२ जात१ जातहि धैं१जंगल२॥
बुंदिय पठातभो यह वचन मृतजानहु तीज३ न मिलन ॥
सुमिरि सुं चउत्थि४हड्डिय सतिय काय हाय रक्खहिं किलँन॥१३॥
दाधिम१ भट्टिय२ दंभिक३ कुम्म४ संभर५ जावल६ कुल ॥

१लुब्धकर; अथवा मेहवापुर लेने के लोभ से२सौगन सहित. ज्यों ज्यों३कृष्ण पक्ष ४शीघ्र बीतता था त्यों त्यों कुमार शोक करता था कि गये विना तो प्रिया ५ अग्नि में६प्रवेश करती है और मैं जाता हूं तो७युद्ध बिगड़ता ॥१२॥ शोक पर चढेहुए स्वामिसे उमरावों ने ८ हसी (मस्करी) सहित कहा कि गिरते हुए ९ पर्वत को मस्तक पर १० झेलकर दबने से ११ पहले ही कैसे उदास हो १२ परंतु, मैं रहता हूं तो प्रिया नहीं रहती अर्थात् मरती है और मैं जाता हूं तो १३ मारवाड़ हाथ से जाता है, मैं पहिले बुन्दी यह वचन भेजचुका हूं, कि तीज पर नहीं मिलूं तो मुझको १४ मराहुआ जानना १५ वह स्मरण करके श्रावण सुदि चौथ के दिन सती (पतिव्रता) हाडी खेद की बात है कि १७ निश्चय ही १६ शरीर नहीं रक्खेगी ॥ १३ ॥ १८ * दहिया १६ जावल्या

यहां क्षत्रियों की बहुत शाखाओं के नाम एकत्र देखने से प्रकरणवशात् लिखाजाता है कि क्षत्रियों के प्राचीन और आधुनिक सब मिलाकर छत्तीस वंश प्रसिद्ध हैं, जिनके विषय में यह कहाजाता है कि १० सूर्यवंशी, १०चन्द्रवंशी, १२ ऋषिवंशी और ४अग्निवंशी, ये सब मिलाकर छत्तीस वंश हैं, इनके लिये नवीन घड़ंत करके किसीने यह दोहा भी बनादिया है.

(दोहा) दश रवितें दश चन्दतें, द्वादस रिसी प्रमाण ॥ च्यार सु अग्नीहोत्रतें, यह छत्तीस बखान॥१॥

इन छत्तीस वंशों के जुदे जुदे नाम कहीं नहीं मिलते, पृथ्वीराजरासे में इनके भिन्न भिन्न नाम लिखे हैं परंतु वे मिथ्या हैं; क्योंकि उसमें एक एक वंश की अनेक शाखाओं को जुदे वंश मान लिये हैं सो अनु

डाभिय१।७ सोढे २।८ डोड३।९चेउ४हि पामार स संखुल४।१०॥
मकुवान११ मांगलिक१२ गौड़१३ सैंगर१४ तिम गोहिल्ल१५ ॥
बग्गरि१६ बारर१७ बिंद१८ हल्ल१९ सीसोद२० समोहिल२१ ॥
इंदे१।२२सगोत्रकुकखर२।२३उभय२चापोत्कट२४ चालुक२५चतुर॥
गज्जिय२६ कबंध२७ बडगुज्जर२८हु धारक इकइक जुद्धधुर ॥१४॥
इत्यादिक भट अडर सुनि सु जगमाल उक्त सब ॥
बुल्लिय हम इत बहुत अप्प इष्टहिं सद्दहु अब ॥
पटा अप्पि[6] वसु[7] पृथुल[8] लाड जिहिं लोभ लडाये ॥
दैन सु बदला देव निठि ए दिन निरखाये[9] ॥
पहु[10] जाहु निकसि बुंदिय पिहित[11] पीछैं[12] हम रन भीमपन ॥
जगमाल आन पांमर जवन गंजि भुजन ठिल्लैं गजन ॥१५॥
इक्क तुरग आरूढ कुमर पहसुनि निसीथैं[13] कढि ॥
जल थल लंघत जात बट्टरोकिय[14] बनास[15] बढि ॥
जेरबंध रचि रहित अंस[16] थप्पलि हय हंकिय ॥
तरत बारतट तरुन[17] साख लग्गत पय संकिय ॥
निजकर सम्हारि रोधक[18] नियत[19] द्रुमसिर[20] बंधि रुमाल दिय ॥
तिहिं टारिनै सु इक१कोस तारि बुंदिय निठि निसीथ[21] लिय ॥१६॥
दोहा—उपबन[22] विष्णुबिलास अब, रुचिर जत्थ नृपराम[23] ॥

१डाभी २ झाला ३ कोखर ४ चावड़ा ॥ १४ ॥ ५ निर्भय ६ देकर ७ धन ८ बहुत ९ दिखाये हैं १० हे प्रभु! ११ छिपकर १२ नीच ॥१५॥ १३आधीरात को १४मार्ग रोका १५बनास नदी ने १६ कन्धा थापकर. उरले किनारे के १७वृक्षों की १८ रोकनेवाले को १९ निश्चय २० वृक्ष के मस्तक पर २१ आधी रात को ॥१६॥ जहां अब विष्णुविलास सुन्दर२२बाग है तहां २३ हे राजा रामसिंह!

चित है, इसी पृथ्वीराजरासे के आधार पर कर्नल टॉड ने विदेशी होने के कारण भ्रमकर अपने ग्रन्थ 'टॉड राजस्थान' में लिखदिये हैं सो भी असत्य है, इसके पीछे राजस्थान के इतिहासकर्ताओं में सबसे बडे दो पुरुष हुए; अर्थात् प्रथम तो इसी ग्रन्थ के कर्ता मिश्रण शाखा के चारण सूर्यमल्ल और द्वितीय उदयपुर के कविराज दधिवाड़िया शाखा के चारण श्यामलदास, इन दोनों ने इस प्रकरण को ही छोडदिया; किन्तु श्यामलदास ने तो अपने ग्रंथ 'वीरविनोद' में लिख भी दिया है कि क्षत्रियों के छत्तीस वंशों के भिन्न भिन्न सत्य नाम कहीं नहीं मिलते,इसकारण हम भी इस प्रकरण को छोडते हैं नहीं तो यहां इनके नाम लिखने को स्थान था।

आत तत्थ जगमाल इक, किय धनु दुष्कर[1] काम ॥१७॥

षट्पात्—दोलादिक[2] कौतुकन इतसु बुंदिय विताइ[3] अंह ॥
कुमरी चंद्रकुमारि मंडि शृंगार वडेमहँ[4] ॥
जामिनि जावत जाम[5] विसँन पतिपंथ विलोकन ॥
गैंडार्गढके[7] गोख रही तक्कत हित रोकन ॥
लहि नियतिजोग[9] निद्रा लगत जन दासिन प्रसाद जँहँ ॥
सिर निज लगाइ ग्रीव[10] सिर तंद्रावसहुव[11] सोहु तँहँ ॥१८॥
कछुकारन गिरि[12] कटंक[13] वरन सौधन सक्यो न वनि ॥
अटत[14] सिंह तँहँ आइ तोहि[15] गहिगो सु झंप तनि ॥
उंघत जामिक[16] अधम हम्म[18]ीर तनुजा[17] सु लभ्यहुव ॥
लहँगेकरि अवलंब्र[18] भिदी दढ्ढा न छुई भुव ॥
द्विरदारि[19] लंघि मंडूकदर[20] भ्रमत[21] अग्ग सम्मुह कुमर ॥
जगमाल आत सिंजित[22] सुनि सु आनिय चित्त अचिज्ज[23] अर[24]॥१९॥
तत मेघन संतमस[25] निविड सावन निसीथ[26] लहि ॥
तँहँ कवंध मगटारि रुक्कि हय विटपि[27] ओट रहि ॥
आत निकट हनि ऐंचि मर्दर[28] श्रुति[29] पिट्ठि प्रहारिय ॥

धनुपका १कठिन काम किया॥१७॥२हींदा आदि ३दिन विताकरघडे ४उत्सवसे ५रात्रि का एक ६प्रहर जानेपर ७उदास ८गैंडा नामक गढके झरोखेमें ९भाग्यके योगसे १० झरोखेके ऊपर अपना मस्तक लगाकर वह चन्द्रकुमरी भी ११निद्राके वशहुई; अथवा ऊंघनेलगी॥१८॥किसी कारणसे पर्वत के १२शिखर पर महलों के आडा १३कोट नहीं बनसका था वहां १४फिरताहुआ सिंह आया और झम्प लगाकर १५ उस चन्द्रकुमरी को पकड़कर लेगया. नीच १६ पहरायतों के ऊंघने से हम्मीरसिंह की १७पुत्री सिंहके लेने योग्य हुई परन्तु लहँगेके कारण १८देह में दाढें नहीं भिदीं; अथवा लहंगा लगा रहने से दाढें नहीं भिदीं और सिंह के उठा लेने से भूमि का भी स्पर्श नहीं हुआ. वह १९सिंह २०मण्डूकदरा (स्थान विशेष)को लांघकर २१चलतेहुए २२आभूषणों का शब्द सुनकर २३आश्चर्य २४ शीघ्र ॥ १९ ॥ वहां श्रावण के मेघ से अत्यन्त २५ अन्धकार में २६आधी रात में २७ वृक्ष की ओट में रहकर २८ बाण २९ कान तक खींचकर

कढत पार करि गज्ज डाच कुमरी भुव डारिय ॥
उडि कछुक[1] उद्ध[2] दिय छोरि असु[3] हड्डी इत ठड्ढी[4] सु हुव ॥
पुच्छिय कुमार ढिगजाइ पटु[5] तत्थ्य[6] कहहु इम कौन तुव॥२०॥
पतिस्वर[7] संसयपरत कहिय पहिलैं स्ववृत्त[8] कहि[9] ॥
जंपिय जब जगमाल लाभ प्रिय तब कुमार लहि ॥
अप्पन कहिय उदंत[10] पंथ प्रभुकौं निस पिक्खन ॥
गिरिनितंब[11] गृह गोख आत निद्रा लगि इक्खन[12] ॥
मृगराज झंपि लै मोहि मुख आयो तुम लिय तास अँसु[13]॥
धँव[14] मुदित सुनिसु हय पिट्ठिधरि बिकस्यो हिय जिम रंक बसु[15]॥२१॥
दोहा—कुमरी मग आई कहत, सुनि मेहव दल साह ॥
दये न आवन मैं त्रि ३ दल, नहि किम मन्नैं नाह ॥ २२ ॥
जंपिय कुमरहु नर्म[16]जुत, लौंन[17]मुह मुहलाई[18] ॥
दलपठयैं किम देखते, अद्रिमहल सिर आइ ॥ २३ ॥
उभय २ करत संलाप[19] इम, पतनिय ढंक पधारि ॥
धात्रीगृह[20] प्रच्छन्न धरि, कहि यह तुम्ह कुमारि ॥ २४ ॥
बपु कछु केसरि[21] रद[22] बिसे, उनको कहि उपचार[23] ॥
कहि रजनी प्रकट न करन, द्रुत आयउ नृपद्वार॥२५॥युग्मम् ॥

॥ षट्पात् ॥

सुनत हरख बढि सहर जग्गि परिकर[24] नृपजग्गिय ॥

१ मुख से कुछ २ऊपर उडकर ३प्राण छोडदिये ४खडीहुई ५चतुर ने ६ सत्य
कह ॥ २० ॥ ७ पति की बोली का ८ अपना वृत्तान्त कहो ९ कहा. अपना १०
वृत्तान्त कहा. पर्वत के ११ शिखर पर के महल के झरोखे में १२ नेत्र
मिच गये १३ प्राण. यह सुनकर १४ पति ने प्रसन्न होकर. रङ्क को १५ धन मि
लने के समान ॥ २१ ॥ मेहवा नगर पर बादशाह की सेना सुनकर मार्ग में
कुमरी कहती आई कि हे पति! तीज के दिन नहीं आने के लिये मैंने तीन पत्र
दिये सो क्यों नहीं माने ॥ २२ ॥ कुमर ने भी १६ हसी पूर्वक १७ सुंदर (को
मल) मुख में मुख १८ लगाकर कहा कि पत्र भेजता तो पर्वत के ऊपर के मह
ल में तुझको कैसे देखता? ॥ २३ ॥ दोनों इस प्रकार १९ वार्तालाप करते हुए
स्त्री को ढककर २० धायके घर में छाने धरकर कहा कि यह तुम्हारी कुमरी है
२४ ॥ २१ सिंह के २२ दांत घुसे थे २३ इलाज ॥ २५ २४परगह

सहकुमार वरसिंह १८४।१ लाड जनजन मन लग्गिय ॥
सुनि अंतहपुर सखिन जानि गैंडागढ जाकँहँ ॥
नंगतट चढि नाजरन जनसु सब सुप्त लखे जँहँ ॥
तिनकों जगाइ अक्खिय तरजि लगि नृजान डोढिय रह्यो ॥
कुमरिहिं जगाइ लौकँ चलहु आयउ कुमरहु उम्मह्यो ॥२६॥

दोहा—जाइ झरोखा दासिजन, विछोनाँहि खिल विक्खि ॥
कुके सब नहिंनहिं कहि रु, सिर१उर२कुट्टन सिक्खि॥२७॥

॥ षट्पात् ॥

प्रासादन यँहँ पहुँचि वत्त अति सोक वढारिय ॥
हुव घरघर हाकार रुवत छन्नहि नर १ नारिय २ ॥
अप्प जाइ नृप अद्रिसौध परिसर सब सोधिय ॥
अल्लीभुव लखि अंघ्रि सवन हेतु सु संबोधिय ॥
जामिक जितेक हे तत्थ जिन कट्टि नक्क कड्ढन कहिय ॥
कहि तव उदंत अखिलहि कुमर गूढ कहुँक यह हठ गहिय।२८।

॥ दोहा ॥

तिय धावरँपिय सेनाकिय, जाइ विदितकरि जाहि ॥
धात्रीसहित नृजानधरि, आनी महल उमाहि ॥ २९ ॥
कछुदिन उचित भैषेगकरि, आयँ पैटव एह ॥
दूजी २ आवत तीज ३ दिन, मिले उभय २ सनेह ॥ ३० ॥
मिलन रत्ति प्रातहि गमन, कुमरी सुनि करजोरि ॥
बुल्ली निस सोलह१६ वसे, वसहु इतो १६हि वहोरि ॥ ३१ ॥
कुमर कहिय निस पंच५कहि, आयो स्वभटन अत्थ ॥

१पर्वत के शिखर पर ॥ २६ ॥ विछोना १और २ बाकी देखकर ॥ २७ ॥ ३ पहाड़ के ऊपर के महल के आसपास ४ गीली जमीन में सिंह के ५ पैर देखकर ६ नाक काटकर काढ देने की कही ॥ २८ ॥ स्त्री ने अपने पति ७ धाऊ को इशारे से कहा उसने जाकर उस कुमरी को ८ प्रसिद्ध ९ धाय सहित ॥ २९ ॥ १० इलाज ११ नैरोग्यता होने पर ॥ ३० ॥ ३१ ॥

पटु आतहि तुम पावतो, तिम रहिजातो तत्थ ॥ ३२ ॥
पै अप्पन नमिले प्रिया, अब तुम हुव उल्लाघं ॥
यातैं मिलि करनौं उतहु, अरिनकोहु अति आघ ॥ ३३ ॥
कुमरि कहिय जे स्वसुरजन, किम ते अरि कुमरेस ॥
रक्खहु तिन महिमानि रचि, बांधव जानि विसेस ॥ ३४ ॥
कह्यो कुमर तव किंकरी, चरनन लालन चाहि ॥
जोआनी जवनेंद्रजा इहिंमिस मरन उमाहि ॥ ३५ ॥
मरनहि जो दृढ स्वामिमत, ज्वलन हमहिं देजाहु ॥
तनकरि१ सो विधिवस तदपि, मनकरि२जदपि उमाहु ॥३६॥
इम उत्तर१ पृच्छा२ उचित, कुमरिहिं बोधि कुमार ॥
रक्खि तँहँ रु पुनि त्रिशनिस रहि, इक्कल१ हुव असवार ॥३७॥
संग दये रच्छक स्वसुर, लगवनास तिन्ह लाइ ॥
बंध्यो तरुसिर जो वसन, दक सीमा सु दिखाइ ॥ ३८ ॥
तिनहिं मोरि पहुँच्यो तिमहिं, मेहवपुर जगमाल ॥
अद्यापन तोपन वन्यौं, विस्मय रिपुन विसाल ॥ ३९ ॥
कारन पुच्छि विचारकिय, अंज्जहु निधनक अंज्ज ॥
अन्नादिक रोके अखिल, करि घनजतन कुकज्ज ॥ ४० ॥
नहुत हुतो सब बस्तुबल, कुमर तदपि किय मंत ॥
तोप तुम्ह कढि अब करैं, संगर असिन स्वतंत्र ॥ ४१ ॥
षट्पात्—इमबिचारि निस इक्क अरर खुलवाइ अचानक ॥
सहँसपंच५००००भट सहित निकासि असि तुंमुल प्रलौनक ॥

यहां आते ही तुमको १नैरोग्य पाता तो ॥३२॥ २ रोग रहित ॥ ३३ ॥ कुमरी ने कहा कि हे कुमर! जो तुम्हारे श्वशुर लोक हैं वे क्या शत्रु हैं, इसलिये उनको लागती के (सम्बन्धी) समझकर महिमानी देकर रक्खो ॥ ३४ ॥ ३ बादशाह की पुत्री को ॥ ३५ ॥ ४ अग्नि ॥ ३६ ॥ ५ उत्तर ६ प्रश्न ६ समझाकर ॥ ३७ ॥ ७बनास नदी तक वृक्ष के शिर पर जो ८ रूमाल बांधा था वहां तक ९पानी बहने की सीमा दिखाकर ॥३८-३९॥ १०आर्यलोक और ११आज (अब) धन रहित हैं ॥४०॥ १२तरवारों से ॥४१॥ १३भयंकर युद्ध को १४फैलानेवाले

जुट्टि कुमर जगमाल कुट्टि खल घान खलन किग ॥
बनिज़कार व्यापार श्रेनि गोनिन जनु संचिय ॥
कटकेसँ उभयर हाजी१ कुतबर२जिय विछोरि किन्नों बिजय ॥
पंचहिसहँस५००००मिच्छहु परिग भज्जिग खिलँ अज सिंह भय॥४२॥
परभग्गत गहिपिट्ठि चल्यो कुमरहु तिन्ह चट्टत ॥
हड्ड बजत असि मनहु कूरँ खत्तिय तरुकट्टत ॥
साँदिनबिनु हय सतन सतन बिनुहय चय सादिन ॥
लिय गहाइ जसलोभ वीर अप्पन भँतिवादिन ॥
छिति पैंडपैंड सोनित छछक चलत लुत्थिलुत्थिन चढिग ॥
जगमाल अग्ग आकुल जवन भँद्रव अति तद्दिन पढिग ।४३।
तरुनँ पग्ग रहि कतिन कतिन सूथनँ फटि कंटन ॥
चिबुकँ लोम अति उरझि घनँ रुक्कत गिरि घंटन ॥
करजोरत थकि कतिक पयन इन्ह कतिक जात परि ॥
गूरत वैसन अँपूत कतिक भूरत तोबाकरि ॥
तुरकान मरत१घायन परत२सब छवीससहँस२६०००रु त्रिसत३००
साहको कटक अहमद सहर बनि फग्गुनतरु हुव बिसँत ॥४४॥
दोहा—सिबिरँ रहे उँपहार सब, मुरि तब लुट्टि कुमार ॥
पुरमेहव मेहँव भँतिम, प्रबिस्यो सजय प्रसार ॥ ४५ ॥

१बनजरों ने व्यापार के२थारों को मानों श्रेणीबद्ध संचय किया है३सेनापति४घा की के ५सिंह के भय से जैसे बकरे भागें तैसे भागे॥४२॥ जिसप्रकार६मूर्ख खाती वृक्ष को काटे तिस प्रकार हड्डियों पर तरवारें बजीं७सवारों के बिना८सैकड़ों घोड़े और घोड़ों के विना सैकड़ों सवारों के ९ समूह होगये, यश के लोभ से उस वीर ने अपने १० मांगलिक बाजे बजवाये; अथवा अपने शत्रुओं को पकड़ा लिये. उस दिन ११ भगना ही सीखे ॥ ४३ ॥ कितनों ही की तो पगड़ियां १२वृक्षों में रहगईं और कितनों के १३ पाजामे कांटों में फट गये और कितनेही लोग पर्वतों की घाटियों में१४ दाढ़ी के बाल उलझजाने से रुकने लगे १५ वस्त्रों को मल मूत्र करके १६ अपवित्र करने लगे. निर्लज्ज होकर१७घुसे ॥४४॥१८डेरों में१९सामग्री२०मेघप (इन्द्र) के २१ सदृश ॥ ४५ ॥

कैनी साहकी कतिकहत, यह पहिलैं गृहआनि ॥
प्रेत पुब्बभव पुत्रिको, परन्यौं बचन प्रमानि ॥ ४६ ॥
जिनप्रेतन किन्नौं सु जय, इम अनेकमत ऐन ॥
जिम संभव तिम जानिये, कवि हठ कबहु करैन ॥ ४७ ॥
सोवन जु चहैं रनसयन, सु न लै इतर सहाय ॥
सूरनकी अद्भुत सरनि, क्रमैं पथिक अर्कै काय ॥ ४८ ॥
प्रधन अनंतर निजप्रिया, बुंदियपुरसन बुल्लि ॥
बय बिलास बिलसे बिबिध, खेलायित हितखुल्लि ॥४९॥
जुँव २ सुव हुव जगमालकैं, निजकुल धर्मनिधान ॥
पट्टप तँहँ हड्डामसव, भारमल्ल १ अभिधान ॥ ५० ॥
निधान १ भिधान २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
अनुजनाम रनमल्ल २ यह, गुन रनरचन गहीर ॥
प्रेत प्रथमभव पुत्रिका, औरसहुव अधिबीर ॥ ५१ ॥
जाति प्रेतनी प्रेतजा, कतिजड याहि कहंत ॥
असमय आयो याहिनैं, हन्यौं कंत इम हंत ॥ ५२ ॥
हल्लू १ बंबावद महिप, मेहव नृप जगमाल ॥
रनसोवन चहतहु घरहि, काय तजिय लहि काल ॥ ५३ ॥
इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा॰ पञ्चमराशौ बीजि॰
होलचराडासि १ वंशवर्णननिमित्तहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ बीज्या
नुबीज्याविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीशनरेशहम्मीर १८३ ॥

कितने ही कहते हैं कि बादशाह की १ कन्या को पहिले घर लाकर प्रे॰ की पहले २ जन्म की पुत्री को पीछे परना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ जो यु॰ में काम आना चाहता है सो दूसरों की सहायता नहीं लेता क्योंकि वीर॰ का ३मार्ग एक अद्भुत ही है जिसमें ४अकेला ही चलता है॥४८॥ ५युद्धके पी॰ क्रीड़ाकरनेवाले उत्साहित हुए ने॥४९॥७जुग(दो)८पुत्र॥५०॥॥५१॥६खे॰है॥५०-५३॥

इतिश्री वंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी अ॰ वाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपालके वंश और अनुवंश क्था बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेश हम्मीर के समय के समा॰

समयसमानाऽधिकरणाकराष्ट्रकूटराजकुमारजगमालचरित्रेदिल्ली शाऽलावुद्दीन ११ समयसमकालीनमेहवपुरमहीपराष्ट्रकूटराजसल खौरसमल्लिनाथ १ जैत्रमल्ल २ वीरमदेव ३ तनुजत्रयो ३ द्भवन १ स्वानुजद्वयार्ऽर्थविभक्तसुमियाणा १ खेड २ विभागप्राप्तपितृपट्ट मल्लिनाथजातकुमारबुन्दीशहम्मीर १८३११ पुत्रीपाणिग्रहणसूचन २ दिल्लीशपरिपन्थिगौर्जरदेशाधिकारियवनाश्रितसिन्धुदेशीयसप-रिकरलुण्टितवडवा १ऽसि २ रत्नसहितस्वामिवैभवप्रतिभीपलायि तदलाख्ययवनान्तरमेहवपुरमहीपमालदेवाऽपरनाममल्लिनाथ-सहायविश्रमण ३ स्वपुत्रशङ्कालीशङ्कितमल्लिनाथसहवित्तनिभृत-निष्कासितस्वसहायीभूतवीरमदेवार्थदत्तसमाधिवडवकतदुत्सारित-दलाख्ययवनस्वस्थानगमन ४ तन्मन्तुमत्तत्परास्तप्रद्रावितपितृव्यक कुमारजगमालखेड़नामतत्स्थानसमाक्रमण ५ सेत्रावाख्यसंवसथ-स्थापितससूनुचतुष्क ४ स्वपत्नीचापोत्कटीकपरिणीतसेत्रावेशमा ङ्गलिकराणङ्गदेवपुत्रीकसनवोढवीरमदेवदलाख्ययवनस्थानभाडङ्ग

अधिकरण जिसका ऐसे राठौड़ कुमार जगमाल के चरित्र में दिल्ली के शाह अलाउद्दीन के समय में होनेवाले मेहवापुर के पति राठौड़ों के १ सलखां के मल्लीनाथ १ जैत्रमल्ल २और वीरमदेव ३इन तीन औरस पुत्रों का होना, दोनों छोटे भाइयों के अर्थ सुमियाणा १और खेड़ २पंट देकर पिता का पाट लेकर मल्लीनाथ के कुमर का बुन्दी के पति हम्मीर की पुत्री से विवाह करने की सूचना करना, दिल्ली के पादशाह के शत्रु ऐसे गुजरात देश के अधिकारी यवन के आश्रित,और सिन्धुदेश में रहनेवाले, परगह युक्त, ।ऽ और खड्ग रूपी रत्न सहित स्वामी के वैभव को लूटकर भय से भगेहुए ऐसे दला नामक किसी यवन का मेहवपुर के राजा मालदेव दूसरे नाम से मल्लीना की सहाय में विश्राम करना, अपने पुत्र की शंका से मल्लीनाथ का उस भ से भगेहुए दला को धन सहित गुप्त निकालना और अपने सहायक वीर देव के अर्थ समाधि नामक घोड़ी देकर निकालेहुए दला नामक यवन का अप स्थान जाना, उसका अपराध करने से उससे हारकर भागेहुए काका के खेड़ ना क स्थान को कुमर जगमाल का लेना, सेत्रावा नामक ग्राम में चार पुत्र और च वड़ी स्त्री को रखकर सेत्रावा के पति मांगलिया राणङ्गदेव की पुत्री नवी दुलहिन सहित वीरमदेव का दला नामक यवन के भाड़ङ्गनगर स्थान को जान

नगरगमन ६ यवनसमर्पितसोपायनस्वसीमार्द्धसादरसहवासितप्रत्युपकृतप्रतीपवीरमदेव १ माङ्गलिक्योदरसर्वाऽनुजचुण्डाख्यपञ्चम ५ कुमारसमुद्भवन ७ परिणीतप्रेतीभूतक्षत्रियान्तरपूर्वभवपुत्रीककुमारजगमालस्वगुणगणगलहस्मादेयपूर्वानुरक्तवेलविहारव्याजबहिरागतयवनेन्द्रतुगलक ३ मुहुम्मद १५ सुताहरण ८ तत्प्रेषितसप्तविंशत्सहस्र २७००० सैन्यवेष्टितमेहवपुरमध्यस्थनिर्भययोत्स्यमानकुमारजगमालप्राक्कालप्रस्थानप्रियाप्रस्थापनकृतश्रावणीतृतीया ३ सम्मिलनसमयसन्धाभ्रंशभाविहाड्डीहेतिस्नानसम्भावनादुर्मनीभवन ९ स्वीकृतस्वसमानसंयोधनभटवर्गनिशीथनिस्सारबुन्दीप्रस्थापिततुरङ्गजीर्णवाशिष्ठीवहद्वस्त्रबन्धबुभूषिततद्वारिवेलामर्य्यादनिशीथसमयसप्रसभप्राप्तप्राप्यपुरोपरिसरकुमारजगमालसिंहसंङ्घतितद्व्यस्तस्वसहधर्मिणीसंरक्षण १० मिथःप्रत्यभिज्ञातपुरप्रविष्टकुमारार्पितप्रियाधात्रीधामस्थापन ११ कुमारपरिमार्गणाप्राप्त

अपकार करने पर भी उपकार करनेवाले ऐसे यवन का नजराने सहित अपनी आधी सीमादेकर आदर सहित वास करायेहुए वीरमदेव के मांगलिया णी के पेटसे सब से छोटे चूंडा नामक पांचवें कुमार का जन्म होना, किसी क्षत्रिय के प्रेत होने से पहले जन्मीहुई पुत्री से विवाह करके कुमर जगमाल का अपने गुणगण से पण रूप से ग्रहण कीहुई पूर्वानुराग से बाग में विहार करने के मिष से बाहर आईहुई बादशाह तुगलक मुहम्मद की सुता को हरना, उसकी भेजीहुई *सत्ताईस हजार सेना से घिरेहुए मेहवापुर में निर्भय युद्ध करतेहुए कुमर जगमाल का पहले समय में गईहुई और बुन्दी में ठहरी हुई प्रिया से श्रावण की तीज के समय मिलने की प्रतिज्ञाभंग होने से हाडी के अग्नि में जलजाने की सम्भावना से उदास होना, अपने समान युद्धकरना उमरावों के स्वीकार करने पर आधी रात को निकलकर बुन्दी को प्रस्थान करके घोड़े के बल से वशिष्ठ सम्बन्धिनी (बनास) नदी के प्रवाह की जल की लहर की सीमा के बोध कराने के लिये वस्त्र बांध

* इसी मयूख के दश के छन्द में सैंतीस हजार यवन सेना का आना, लिखकर इनमें से ४२ के छन्द में पांच हजार का माराजाना लिखा है और ४४ के छन्द में छत्तीस हजार तीनसौ सेना का अहमदनगर में पीछा जाना लिखा है और यहां पर सत्ताईस हजार सेना भेजना लिखा है सो पूर्वापर के विरोध से ग्रन्थकर्ता के मद्य के नशे के कारण उपरोक्त गणना की असंगति पाईजाती है.

कुमारीकसंतप्तश्वशुरपरिजनमाप्यस्ववीर्यत्रातप्रियाशुद्धिप्रकाशन१२ पक्षो१ ह्लाघमिलितपत्नीपतिनानानर्मप्रश्नो१ त्तर २ परस्परप्रबोधन १३ विशेषातिवाहितत्रि ३ रात्रप्रतिगच्छत्कुमारश्वाशुर्यसार्थकौतुकार्थवाशिथीतटविटपिवस्त्रबन्धस्वतीर्णवारिवेलाविबोधन १४ प्रतिप्रस्थापितबुन्दीशवीरवृन्दप्रच्छन्नपुरप्रविष्टसाध्यावसरनिस्सृतकुमारसौप्तिकसमरसेनापतिद्वय २ समेतविध्वस्तवैरिवाहिनीशेषविद्रावण १५ लुण्ठितशत्रुशिविरोपहारप्रतिप्रविष्टस्वसद्मसमाहूतप्रियपत्नीकजगमालजातभारमल्ल १ रणमल्ल २ पुत्रद्वय २ प्रसूप्रविवेचन १६ शूरशय्याशिशयिषुहड्डहल्लू १ राष्ट्रकूटजगमाल २ स्वस्वसद्मसमयमरणसूचनमष्टमो८मयूखः ॥८॥ आदितः पञ्चपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५५ ॥

पर आधी रात के समय हठपूर्वक प्राप्त होनेवाली (बुन्दी) पुरी के समीप प्राप्त होकर जगमाल का सिंह को मारकर उससे ग्रहण कीहुई अपनी विवाहिता स्त्री की रक्षा करना, परस्पर पहचान करके पुर में प्रवेश कियेहुए कुमर का अपनी प्रिया को धाय के घर पर छिपाके रखना, कुमर के मांगने पर कुमरी के नहीं मिलने से श्वसुर के अनुचरों को तपाने पर अपने पराक्रम से रक्षा की हुई प्रिया की खबर प्रकट करना एक पक्ष में नैरोग्य होने पर स्त्री और पति का अनेक हसी पूर्वक प्रश्नोत्तर करके परस्पर समझाना, तीन रात्रि विशेष रहकर पीछे जातेहुए कुमर का सुसराल(सासरे)के लोकों के साथ का तमाशा दिखाने के लिये बनास के किनारे पर वृक्ष के ऊपर बांधेहुए वस्त्र से अपनी तिरीहुई जल की लहर का बोध कराना, बुंदीश के वीरों को पीछे भेज कर अपने पुर में छाने प्रवेश करके समय साधकर बाहर निकलकर रतिवाह के युद्ध में दो सेनापतियों सहित शत्रुसेना का नाश करके बाकी की सेना को भगाना, शत्रुओं के डेरों की सामग्री लूटकर अपने घर में पीछा प्रवेश करके अपनी प्यारी स्त्री को बुलाना और जगमाल के भारमल्ल और रणमल्ल दो पुत्रों के जन्म की सूचना करना, शूरशय्या में शयन करने की इच्छावाले हाडा हल्लू और राठोड़ जगमाल दोनों का समय आने पर अपने अपने घर में ही मरने की सूचना करने का आठवां मयूख समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ और आदि से १५५ मयूख हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

बरनहिं अब हल्लू १८२।१ बिहित, इच्छन स्मृति रन एक ॥
सुपहुराम २०३ धारहु श्रवन, टरैं जिम न कुलटेक ॥ १ ॥
सक निधि ससि गुन भू १३१९ समय, भीरुन हावन भीर ॥
हुव हल्लू १८२।१ हरराज १८२।२ के, बानों धारक वीर ॥२॥
पिता १ पितृव्यक २ रनपरत, सक रद गुन ससि १३३२ सोहि ॥
पावत हुव अधिराजपद, दै द्रोहिन दर द्रोहि ॥ ३ ॥

॥ षट्पात् ॥

जनक पट्ट लहि जुगल २ सिंह ऊठ १ रु पंचक५ सिखर ॥
क्रम्यौं अरिनसिर कुप्पि वंम्यौं आसु किं वासुकि बिख ॥
जननि तीन ३ जब जरिय वैरबालन तब बुल्लिय ॥
सत्यकरन तिहिं सिसुहि त्वरित चल्लिय अरि तुल्लिय ॥
जबतो निवारि परिकर जनन हत्थिय गति मोरयो हठन ॥

दोहा॥

इम निलय निढि हांयन उभयर रह्यो सु चिंतित वैर१ रन२ ॥४॥
भाखिय हल्लू१८२।१ निजभटन, सु हो समय सुभसेन ॥
जबतो स्वगढन परजई, है पर प्रविसे हेन ॥५॥
सिसुलखि सो हाहा समय, दिय तुम टारि दुराप ॥
बट अंकुर जिम अहितबढि, अबभुव जटित अमाप ॥६॥

---

१ हे प्रभु रामसिंह ॥ १ ॥ २ ॥ २ काका ३ अय ॥ ३ ॥ सिंहासन और ४ पांच ※ किलंगी वाला सिरपेच ये दोनों लेकर क्रोध करके ५ चला ७ क्रिधों वासुकि सर्प ने विष ६ उगला ८ वैर पीछा लेने को ९ घर में दो १० वर्ष रहा ॥४॥५॥ ११ वटवृक्ष का अंकुर छोटे बीज से बडे विस्तार वाला

※ यह आर्यावर्त की प्राचीन रीति है कि राजा होता है वह पांच किलंगी का सिरपेच बांधता है और युवराज तीन किलंगी का और सर्वसाधारण एक किलंगी का सिरपेच बांधते हैं सो यहां पांच शिखा का सिरपेच लेने से राजा होने की सूचना प्रकट करता है ।

॥ षट्पात् ॥

निजवीरन इम नृपति उपालंभत पछितावत ॥
पुर विंझोलिय१ प्रथम आइ रजगुन उफनावत ॥
सुजन१८२।१ तहँ हत्थ१८१।२ सुत पिक्खि अवहित किल्लापति ॥
तिहिं तुरंग१ गज२ ग्राम३ अप्पि सादर किय उन्नति ॥
रतनगढआइ मातुल रतन बहु मन्निय पुव्वव वितरि ॥
पुनि आइ नृपति सिंहोलि पुर कछुदिन रहिय मुकामकरि ॥७॥

॥ दोहा ॥

किल्लापति सुहु तुष्टकिय, हल्लू१८२।१ नरपुरुहूत ॥
गत निजदुर्गन गंजिवे, देखन पठये दूत ॥८॥
जीरनपति नृप जैत्रको, प्रथम प्रमाद सु पाइ ॥
हिंगुलाजगढ१ लेतहुव, महाप्रघात मचाइ ॥९॥
इमहि भानुपुरईसकौं, तनगिनि दव्वत देस ॥
खेड़ीपुर१ संहरि खलन, निजवस किन्न नरेस ॥१०॥
दसपुर नृपको दव्वयो, जिम पत्तन जिन्नोद३ ॥
दुर्ग त्रितय३ रहि अव्ददुव२, किय संकित चहुँकोद ॥११॥
पहुँच्यो लरि खिल गढन पैं, मिले न विधिवल मूर ॥
बंबावद आयो बहुरि, सत्तह१७ सम वय सूर ॥१२॥

॥ षट्पात् ॥

हल्लू१८२।१ नृपति विवाह प्रथम१ सद्धन गय सोपुर ॥
रक्खिय गृह रखवार भ्रात सुर्जन१८२।१ असंकउर ॥

बढता है इस प्रकार बढकर शत्रुओं ने अब अमाप भूमि जड़ दी(अवकाश रहित करदी) है ॥६॥ १उपालम्भ देताहुआ २ अपने अङ्गों को बचायेहुए (सावधान) ॥ ७ ॥ ३ नरेन्द्र ने ४ गयेहुए ॥ ८ ॥ ५ आलस्य अथवा भूल ॥९ ॥ १० ॥
६ मन्दसोर के राजा का ७ पुर ८ दिशा ॥ ११ ॥ सत्रह ९ वर्ष की अवस्था में

सो काका हत्थ१८२१२ सुत सेमा छ६ बडो हल्ल१८२१२सन ॥
लल्लू१८२१२ पुनि तिम लोहराज१८२१३ जुग२ अनुज महामन ॥
जीरन अधीस प्रामार जो जैत्र२जुरिग लखि छिद्र जव ॥
भानुपुरभूप खिच्चिय परत२ ताकि बिरोध हुव संग तब ॥१३॥
इन बंबावदआइ ताप तोपन दोउ रन दिय ॥
पहु हल्लुव१८२१२ द्रुत परनि कुंच सुनत हि सम्मुहकिय ॥
सुर्जन१ लल्लुव२ सज्जि उभय२ झेले जोलौं अरि ॥
भ्रात जैत्र १८२१३ के भवन धनसु ऊढा कोटा धरि ॥
सादिनं सहस्रपंचक५००० सहित सजव आइ रजनी समय ॥
पविरूप भूप हल्लुव१८२१२ पर्यो अरि गिरि भेदन हंकि हय ॥१४॥

॥ दोहा ॥

रहे सहँस दुव२००० खेत रन, मिलि खिच्ची१ रु प्रमार२॥
भरतसेन१ अरु जैत्र२ भजि, गय सहिघाय अगार ॥१५॥

॥ षट्पात् ॥

बलि कोटासन बुल्लि गौड़ि१ दुलही अंचलगहि ॥
महिला सह जयमत्त दुर्ग प्रविस्यो आहितन दहि ॥
कंकन मोचि सक्यो न बहुरि जीरनपति दुर्बल ॥
रान अनुगबनि रंक द्रुतहि लायो तदीय दल ॥
संभरनरेस कंकनसहित अभिमुख झेलि धपाइ असि ॥
हम्मीरकटक जैत्रहिं हनि रु किय प्रद्रुत बिरुदन बिकासि ॥१६॥

दोहा

प्रधन अङ्क२ किय चढिप्रथम१, हुव जदपिन तँह हारि ॥
तदपि लह्यो दुर्ग न तिकउहि, यह स्वदिष्ट अनुसारि ॥ १७॥

हल्लू से छः १ वर्ष बड़ा था ॥ १३ ॥ २ विवाही हुई स्त्री को पाँच हजार सवारों ३ सहित शत्रुओं रूपी ५ पर्वतों को काटने के लिये ४ वज्र रूप से ॥१४॥ महाराना का ६ सेवक बनकर ७ उनकी सेना को अपनी सहाय पर लाया ८ सामने झेलकर ॥ १६ ॥ १ अपने भाग्य के ॥ १७॥

परनि आत नवम ९ सु प्रधन, जित्यो द्वि २ नृप भजाइ ॥
अव दसम १० हु यह अंगम्यों, खल जीरनपति खाइ ॥ १८ ॥

॥ षट्पात् ॥

व्याह त्रितय ३ किय बहुरि हड्डहल्लुव १८२।२ जसजोरन ॥
तँहँ तृतीय ३ तोमरिय वैर बुंदियमहि सोरन ॥
नृप बुंदियपति नप्प १८२।१ भार चढि पुनि प्रवीरपथ ॥
खिच्चि पहारहि खंडि पुरसु लिय जित्ति पल्हायथ १ ॥
जित्तिय महेस१हरराज२जुग२हल्लुव१८२।१पहु रन वार१२हम
तेरहम१३सीसवालिय २सहर किय बुंदियवस जित्तिक्रम ॥१९॥

॥ दोहा ॥

जीरननृप इत जैत्र सुव, सुंदरदास सनाम ॥
पुनिहु रान हम्मीर प्रति, किय विन्नति जयकाम ॥ २० ॥

॥ षट्पात ॥

सुनि हल्लुव १८२।१ तिन्ह संधि पत्र चित्तोर पठायउ ॥
मंडनगढ नृप नागपाल पहिलैं छलिपायउ ॥
तवहि रैन १७५ इत आइ विरंचि वैठन वंवावद ॥
लियउ अठानाँ १ लरत जिमहि तुमरोगढ जावद २ ॥
लिय वंगदेव१७९।१सुहि वैरलखि पुरमंडल १ केथोलिपुर २
तुमसौं छुटे न तवके गये लये जवन पृतनाँ प्रचुर ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

तिनकौं विलसन लोभतकि, सुंदरको किय संग ॥
सुन रक्खहु अप्पहु समुझि, उँरग डंक जिम अंग ॥ २२ ॥
दसपुर १ जीरन २ भानुपुर ३, चोथो ४ गढचित्तोर ४ ॥

१युद्ध में ॥ १९ ॥ जैत्रसिंह का २पुत्र ॥२०॥ उनका ३मेल सुनकर ४ सेना ५ बहुत ६ भोगने को जिस प्रकार ७सर्प का ८ डंक अंग पर नहीं रखते हैं तिसप्रकार

मंडनगढ इक १ दै मही, इन ४की लिय हम ओर ॥ २३ ॥
मिच्छन रन हरराज १८।१ मृत, जावद मुख ४ गत जत्थ ॥
तुमरे ए ४ गढ हे न तब, तुट्टिय तुम कुल तत्थ ॥ २४ ॥
मंडनगढ १ तुम मूलसौं, लाभ अधिक गिनिलेहु ॥
साहहिं दिय काका समर १८।१७, इतकी रक्खन एहु ॥२५॥
गढ चउ ४ पीछे गहनकी, हो पुनि रक्खत हौंस[२] ॥
क्यों जीरनपति मेलकरि, दुरित[३] भरहु निस १ द्यौंस ॥२६॥
अजयसिंह चित्तोर यह, तुमहिं दयो बलतानि ॥
तस[४] जामाता[५]को हि तुम, करहु हमहिंतजि कानि ॥ २७ ॥
मंडनगढ यौतक[६] मिसहि, दाय उचितहो दैन ॥
अरु नदयो तो रहहु वह, रंच मँदीय रहैन ॥ २८ ॥

॥ षट्पात् ॥

इम हल्लुव १८।२।१ दल इक्किख रान अतिमान रिसायउ॥
सुंदरनृपके संग पुनिहु बल प्रचुर पठायउ ॥
तात १ पितृव्यकतनुज बिंभ १ सिंहरन उभै २ रु बलि ॥
तनुज सु खित्तल १ त्रय ३हि करे बलपति जित्तन कलि ॥
पुनि भरतसेन खिच्चिय पहु जु सुहु प्रबोधि पठयो सहित ॥
धुंडीस हम्म१८।३।१सुनतसु सबल आयउ हल्लुव१८।२।१भीरइत२९

दोहा

काका१८।२।१ की नृप भीरकरि, हुव नासीर[१२] सु हम्म१८।३।१।

सुन्दरदास को मत रक्खो॥२२॥२३॥ जावद१आदि ॥२४॥२५॥२चाहना रखते हो तो३पापइकट्ठे करते हो ॥२६॥ सेना के विस्तार से अजयसिंह ने तुमको यह चित्तोड़ दिया है सो हमको छोड़कर कर४उस अजयसिंह के५जमाई की ही अदब रक्खो ॥२७॥मांडलगढ६दहेज के मिससे ही देना चाहिये था सो न दिया तो वह तुम्हारे ही रहो परन्तु७मेरी भूमि रञ्चमात्र भी न रहेगी ॥२८॥ ८सत्रु ९ सेना १० बहुत ११ युद्ध जीतने के लिये ॥२९॥ १२अग्रणी(सब से आगे)

जदपि रान वरज्यो बहुत, करन तदपि कुल *कम्म ॥ ३० ॥

पटूपात्

वाहवाह कहि उभय २ ×कटक मिलतहि हय हंकिय ॥
ख वढि मेहजिमं खेह किरन +विकिरन रवि ढंकिय ॥
सहसा चलि संकुलित वान १ असि २ ÷कुंत ३ वरच्छिय ४
अंग छिन्न उच्छलत मनहु विनुदक अंक मच्छिय ॥
गिरिजा१गिरीस२विहरत सगन गगन मगन अच्छरि३गहिय॥
इभमुखी१प्रमुख चउसट्ठि६४इम अति अभीष्ट गिनि उम्महिय३१
वाजि दपटि वुंदीस गंजि विंझ१ रु सिंहन२ गय ॥
कार्मू प्रहरि कराल हनिय खित्तल कुमार हय ॥
भरतसेन भूपाल हम्म १८३१ भुज खग्गप्रहारिय ॥
वाहुलें कटि कछु विसंत झपटि हड्डु असिझारिय ॥
भानुपुर पहु सु खिच्चिय भरत१ पुहवि खंड दुव२हुव पर्यो ॥
हयचढि द्वितीय२आयो हनन कुमर१सु पै घायलकर्यो ॥३२॥
वडगुज्जर वलराम१ रानभट वान कानरहि ॥
छुट्यो नृपपर छुधितें गयो गलभेदि त्वैंरागहि ॥
इहिंछत लखि अलसात हनत जीरनवल हल्लुव१८२१ ॥

---

* कर्म ॥ ३० ॥ दोनों × सेनाओं के मिलते ही घोड़े चढाये, आकाश में मेघ के समान खेह (रज) बढकर सूर्य की किरणों के + फैलाव को ढकलिये ÷ भाला. फटेहुए अङ्ग मानों विना १ पानी की २ दुखी मछली के समान उछलते हैं ३ पार्वती और ४ महादेव ५ गणों सहित विहार करते हैं और आकाश में अप्सराओं ने आनन्द ग्रहण किया है और इभमुखी को ६ आदि लेकर ७ चौसठ योगिनियें इस युद्ध को अत्यन्त ८ प्रिय मानकर ह[र्ष] युक्त हुई ॥३१॥ ९ घोड़ा १० दौड़ाकर ११ बर्छी का प्रहार करके १२वाहुत्रा[ण] (दस्ताना) कटकर कुछ १३घुसने पर ॥३२॥ राना के उमराव बलराम क[ा] बाण कान तक रहकर प्राण का १४ भूखा राजा पर छूटा सो १५ शीघ्रता [से] लगा भेदकर निकल गया इस १६घाव से

आयउ बग्गउठाय सहित सोदर लघु लल्लुव१८२।२ ॥
सुरजन१८२।१पुरोगं त्रिक३हत्थ१८२।२सुत जीरनदल अटक्योजुरत
हल्लुव१८२।१भतीज१८३।३अवलंबहुव इत मेवारन आहुरत ॥३३॥
खित्तल१हम्म१८३।१दुरखिन्न गये सिबिरन सिविकागत ॥
बेधक वह बलराम हन्यौं लल्लुव१८२।२ खग्गाहत ॥
सिंहन तिहिं सीसोद रानकाका इन्हरशोकिय ॥
दपट्यो तुरग अदभ्भ अभ्भ अच्छरि अवलोकिय ॥
हरराज१८२।१तनयहम्मीर१८२।४अरुलोहराज१८२।३करिलोहछक्क
हल्लू१८२।१नरिंद उप्पर हठियआयउ आसि चक्खन चसक्क ॥३४॥
सिंहन१आसि नृप१८२।१सीस टोप तिरछीपरि तुट्टिय ॥
नृपके खग्गनिपात छिन्न तससिर वपुछुट्टिय ॥
बेग सुनत यह बिंझ१ अंसे नृपकै झारिय आसि ॥
टरिकरि बाँहुल टूक सोहु तुट्टिय बिधिवस वसि १॥
हल्लुव१८२।१बनात कौतुक बिहसि सहज कट्टिलिय बिंझरसिर॥
बुंदीस अनुज नवरंग१८३।२वलि हनिय हूल कालिकर्ण१किर ॥३५॥
बिंझ१रु सिंहन२वीर परत खित्तल३ छतपावत ॥
मेवारन दल मुरिग छिप्र हड्डनभय छावत ॥
बिनुनृप खिचियबलहु भीत अबलग रहि भाज्जिग ॥
इम हल्लू१८२।१करवाल ब्याल पीवत असु बज्जिग ॥
सुर्जन१८२।१हुभ्रातगज१८२।२भीम१८२।३सहजीरनदलहनिकिन्नजय
मेवार द्रवत ग्रामारमुरि सबन अग्ग भग्ग सु सभय ॥३६॥

---

१ अग्रणी (आगे चलनेवाला) २ आधार हुआ मेवाड़वालों के ३लड़ते समय ॥ ३३ ॥ ४ घायल होकर ५ खड्ग के प्रहार से. घोड़े को ६ अत्यन्त दौड़ाकर ७ आकाश में ८ अत्यन्त घायल करके. तरवार का ९ स्वाद चखने के लिये ॥३४॥ १० खड्ग के प्रहार से. राजा के ११कन्धे पर १२ बाहुत्राण (सुगुन सिलह) के टुकड़े करके १३ हूलवंश के कालिकर्ण नामक क्षत्रिय को गिराकर ॥३५॥ १४ घाव पाकर १५ शीघ्र १६ खड्ग रूपी सर्प १७प्राणों को मेवाड़ के १८ भगते ही "यहां लक्षणा से मेवाड़वालों का भगना समझना चाहिये"

॥ दोहा ॥

हल्लू१८२।१ जिति चउद्दहम१४, रन लागि पिठि रिसात ॥
पुरमंडल१ विच कुद्दि पहु, अमलाकिन्न उफनात ॥ ३७ ॥
निजथाँनाँ धरि तँहँ निडर, पंद्रहम१५ सु जयपाइ ॥
कतिदिन रक्खिय हम्म१८३।१कँहँ, इम बंबावद आइ ॥ ३८ ॥
करि साधन *वैद्यनकथित, हुव ×नीरूज हम्मीर१८३।१ ॥
पहु भतीज तव +भेसयो, बुंदीपत्तन वीर ॥ ३९ ॥

पट्पात् ॥

महिप रान हम्मीर स्ववल हल्लुन जित्यो१सुनि ॥
कृत घायल२ निजकुमर परे रन हुव२काका३ पुनि ॥
वडगुज्जर वलराम१ हूल कलिकर्ण२ मानहरि३ ॥
पुरमंडल गय पेठि ५ कछु न चित्तोर कानंकरि ॥
इत्यादि मंतु पिक्खि सु असह अंहिमेचक गति ऊससिय ॥
हल्लू१८२।१हि हेतु सवको समुभिचढनचाहि कटिपट कसिय॥४०॥
दसपुर १ जीरन २ स्वदल दे रु तिनकेहु बुल्लि दलँ ॥
वाहिर सिविर वनाइ मिजल किय इक्क १ महावल ॥
सेना त्रेपनसहँस ५३००० सज्जि हंकत सीसोदहिं ॥
सुनि बुंदियपति सजव विरचि संबंधि विनोदहिं ॥
पंचम ५ मुकाम हम्म १८३।१ सु पहुंचि कहि मैं खित्तल खिंन्नकिय
औरको नत्थि अपराधयह हनहु मोहि धक्कि वैरकिय ॥ ४१ ॥

॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥* वैद्यों के कहने के अनुसार × नैरोग्य + बुन्दी पुर को भेजा ॥ ३९ ॥ १ शंका (भय) नहीं करके २ अपराध ३ काले सर्प के समान ४ कारण ५ कमरबन्धा ॥ ४० ॥ अपने नाम का ६ पत्र देकर उनकी ७सेना बुलाकर. वाहर ८डेरे किये ९ शीघ्र. कुमर क्षेत्रसिंह को मैंने १० घायल किया है ११ नहीं ॥ ४१ ॥

इम जंपत[1] नृप इक्क१ पत्त[2] जब रान पटालय[3] ॥
सोहु सुनत द्रुत दोरि गिनत अद्भुत सम्मुहगय ॥
मिलि बत्थन हितमानि आनि बैठिय इक१आसन ॥
उपालंभन[4] दुहुँ२ ओर भयउ निर्मित संभासन ॥
सीसोद कहिय लिय साहसैंन[6] जावदआदि प्रदेस जब ॥
कोनसो बैर हल्लू १८२।१ कहत इनकौं चहत छुटान अब॥४२॥
बुंदियपति तब बदिय मोलि खिच्चिय १ प्रामारन ॥
अप्पहु भेजि अनीक[7] कियउ अनुचित बिनुकारन ॥
करि कटकेस[8] कुमार १ बिंभ्क २ सिंहन ३ काका बलि[9] ॥
हल्लू १८२।१ सन अरिहोइ कियउ हितमैंहु अहित[10] कलि ॥
जिहिँ नप्प१८३।१भीरकरि त्रिउरन जय किय बुंदियबस दुर्गदुव२॥
इहिँ लाज मैंहु सज्जित उतहि हितबस काका भीरहुव ॥४३॥

॥ दोहा ॥

मोहि जदपि बरज्यो तुमहु, आयो तदपि उतैंहिँ ॥
कछु छैंत[11] लग्गिय कुमरकै, सो पै मम सयसैंहि[12] ॥ ४४ ॥
रानकहिय तुम १ खित्तल २ रु, बडगुज्जर १ तुम २ बिद्द ॥
सो दोउन लिन्नी समुभ्कि, समता नय रन सिद्द ॥ ४५ ॥
हल्लू १८२।१ ममकाका हनैं१, बिंभ्क १ रु सिंहन २ बीर ॥
पुरमंडल किय अमल २ पुनि, सु किम बनैं समसीर[13] ॥ ४६ ॥
जैत्र १ भरत२ सुत२ एहु जिम, बिन्नति रचत बहोरि ॥
बैलन[14] निजनिज बैरकौं, सो पायन[15] सयजोरि[16] ॥ ४७ ॥

इस प्रकार १कहता हुआ राजा अकेला महाराणा के३डेरों में२गया ४उपालंभों से५रचाहुआ संभाषण हुआ इसने जावदआदि प्रदेश बादशाह६से लिये हैं ॥४२॥ ७सेना ८सेनापति९ फिर१०हित में अहित होकर युद्ध किया ॥४३॥ ११घाव मेरे १२हाथ से ही ॥४४॥४५॥ १३बराबर का सिभ्कारा (मिलाप) ॥४६॥ अपना अपना वैर१४पीछा लेने को १५ पैरों में१६हाथ जोड़कर बिनती की ॥

॥ षट्पात् ॥

पहु अक्खिय रानप्रति सुनहु जिम मिटत वैर सब ॥
सुतमम लाल १८४१२ सुता सु अप्पकुमरहिं दिन्नीं अब ॥
वैर १ सु इम वीसरहु मन्नि सुलभहि पुरमंडल ॥
हम रोकत हल्लू १८२११ हि वेग लेहु सु पठाइ बल ॥
रोचक तुम्हैंहु यहरीति तो करहु मेल बाधक कवन ॥
मिलि माँहिंमाँहिं अप्पन मरत जत्थ तत्थ हसिहैं जवन ॥४८॥
सुनि प्रसन्न सीसोद लाभ नृप कथित मन्निलिय ॥
नव कुंकुमकरि नृपहुं कुमर खित्तल तिलकित किय ॥
समय सु व्याहहु वंदि रु मुरत आयउ पुरमंडल ॥
हल्लू १८२११ कँहँ कछुकज्ज बोधि लैगो स्वसंग बल ॥
लखि यह विलंब पुरमंडलहु रान अमल तोलौं रचिय ॥
दसपुरचमू १ रु जीरनदल २ सु दुम्मन निलय पठाइदिय॥४९॥

॥ दोहा ॥

बुंदिय रहि कतिअब्द बलि, हडनृप सु हम्मीर १८३११ ॥
विरत भयो व्यवहारसौं, वसुमति भुग्गत बीर ॥ ५० ॥
वयविताइ पैंसठि ६५ वरस, विधिजुत उदित विवेक ॥
कासीवास विचारकरि, किय खिल्ल उचित अनेक ॥ ५१ ॥
निज भद्रासन कुमरनिज, वरसिंह१८४१२हिं बैठारि ॥
नियत वस्यो वारानसी, ध्रुवस्वरूप दृढधारि ॥ ५२ ॥
वरसपच्यासी ८५ भुग्गि वय, पीछैं अवसिति पाइ ॥

मेरे पुत्र लालसिंह की पुत्री अब १आपके कुमर को दी २ रोकनेवाला कौन है ३ जहां तहां यवन हसैंगे ॥४८॥ ४राजा के कहने को ५चेत्रसिंह को तिलक युक्त किया ६ कहकर. कुछ ७कार्य के लिये समझाकर ८ मन्दसोर की सेना और जीरन की९सेना को १० उदास करके ११ घर भेजदी ॥ ४९ ॥ १२वर्ष १३ विरक्त ॥ ५० ॥ १४ ज्ञान उत्पन्न होकर १५ बाकी के कार्य ॥५१॥ १६ काशी में १७ निश्चल रूप को ॥ ५२ ॥ १८ अन्तसमय

समाइ ॥ ५३ ॥

कासीही तनु त्यागकिय, सत्यस्वरूप समाइ ॥ ५३ ॥
सक बसु दृग गुन ससि१३२८ समय, भवपायउ इहिं भूप ॥
गुन श्रुति गुन भू१३४३ पर गह्यो, राज्यासन अनुरूप ॥५४॥
बन्हि नंद गुन ससि१३९३ बरस, पुत्रहिं अपि नृपत्व ॥
पुरकासी त्रि कु चउ कु१४१३पर, तनुतजि गो मिलि तत्व ॥५५॥
बयपचीस२५ जावत बरस, पट्ट पंचसिख पाइ ॥
हड्डनृपति बरसिंह१८४१हुव, बुंदिय सुनय बढाइ ॥ ५६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १यणोपञ्चम ५राशौ वी तिहोत्रचहुडासि १ बीज्यवर्णानबीजहड्डाधिराडास्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितविवरणावेला०ण्याहार्यबुन्दीशहड्डनरेन्द्रहम्मीर १८३ १ समयसङ्गतबम्बावदेशहड्डनरेन्द्रहल्लू १८२।१चरित्रे तज्जन्म १ राज्य २ शक्रप्राप्तिसूचन १ भटवर्गत्रयोदश १३ वर्षवयस्कवप्तृवैर विवालयिषुहल्लू १८२।१ सप्रसभप्रतिसोटन २ जितनृपत्रय ३ रणाऽष्टक ८ पंचदश १५ वर्षवयस्कहल्लू १८२।१ हिंगुलाजगढादिगतदुर्गत्रय ३ समाक्रमण ३ सप्तदश १७ समावस्थपरिणीतगौड़ी १क्रमप्त्यागतहल्लू १८२।१ बम्बावदवेष्टकाखिच्चि १ प्रमा-

पाकर ॥ ५३ ॥ १ जन्म ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीश नरेन्द्र हम्मीरसिंह के समय के साथ बम्बावदा के हाडों के नरेन्द्र हल्लू के चरित्र में उसके जन्म और राज पाने के सम्बत् की सूचना करना, तेरह वर्ष की अवस्थावाले, और पिता का वैर पीछा लेनेकी इच्छावाले हल्लू को उमरावों के समूह का हठ पूर्वक पीछा फेरना, तीन राजा और आठ युद्धों को जीतकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले हल्लू का हिंगलाज आदि गये हुए तीन गढ़ों को लेना, सत्रह वर्ष की अवस्था में गौड़ी को विवाहकर पीछे आयेहुए हल्लू का बम्बावदा को घेरनेवाले खीची और प्रमार शत्रुओं को भगाना, दशमयुद्ध में राणा की सहायक सेना को भगाकर जीरण पुर के राजा प्रामार जैत्रसिंह को मारना, फिर तीन विवाह करके न

र २ प्रत्यनीकप्रद्रावण ४ दशम १० रणद्रावितसहायकराणासैन्यजीरणपुरपृथ्वीशप्रामारजैत्रनिपातन५ पुनःप्रणीतपाणिपीड़नत्रय ३ नरपाल १८२।१ सहायजितरणत्रय ३पल्हायथखिचि १ डोडा २ रिनृपद्वय २ हल्लू १८२।१ पल्हायथ १ सीसवाली २ पुरद्वय २ बुंदीवशीकरण ६ तद्वर्जनप्रतीपराणाहम्मीरस्वसहाययुयुत्सु जीरणपतिसार्थस्वपुत्र १ पितृव्यक २ त्रयप्रधानपृतनाप्रधनार्थप्रेषण ७ स्वपितृव्यकसहायसक्षतीकृतचैत्रकुमारबुंदीनरेन्द्रहम्मीर १८३।१ सपाणिपीडस्वपाणित्रकर्त्तकभानुपुरभूपभरतसेनभ्रंशन ८ वीक्षितबलरामविद्धबुन्दीशसहायलल्लू१८२।२ वृहद्गुर्जरबलराम १ विध्वंसन ९ हल्लू १८२।२ स्वानुजलोहराज १८२।३हम्मीर-१८२।४ प्रहारकसिंहण १ विन्ध्यराज २ शीर्षोद्दनिषूदन १० नवरंग १८३।१ राणाभटहूलकलिकर्णकर्तन ११ जितैतच्चतुर्दश १४ युद्धप्रद्रावितशत्रुसैन्यत्रय ३ पञ्चदश १५ प्रधनप्रधानपराक्रमप्राप्तपुरमण्डलाख्यराणापत्तनप्रत्यागतहल्लू १८२।१ प्रापितपाटवहम्मीर-

---

पाल की सहाय होकर तीन युद्ध विजय करके पल्हायथा के खीची और डोड दोनों शत्रु राजाओं को जीतकर हल्लू का पल्हायथा और सीसवाली दोनों पुरों को बुन्दी के पक्ष में करना, उसके मना करने के विरुद्ध राणा हम्मीरसिंह का अपनी सहायता से युद्ध करने की इच्छावाले जीरण के पति के साथ अपने एक पुत्र और दो काका इन तीनों को सेनापति करके युद्ध के अर्थ सेना भेजना, अपने काका के सहाय कुमर चैत्रसिंह को घायल करके बुन्दी के राजा हम्मीर का अपने बाहुत्राण को काट कर बाहु को पीड़ा पहुंचानेवाले भानुपुर के राजा भरतसेन को मारना, बलराम से बुन्दी के राजा को घायल किया हुआ देखकर उसके सहायक होकर लल्लू का बडगूजर बलराम को मारना, हल्लू और अपने छोटे भाई लोहराज का हम्मीर पर प्रहार करनेवाले शीषोदिया सिंहण और विन्ध्यराज को मारना, नवरङ्ग का राणा के भट हूल कलिकर्ण को मारना, उस चौदहवें युद्ध में शत्रुओं को जीतकर तीनों सेनाओं को भगाकर पन्द्रहवें युद्ध में अपने पराक्रम की प्रधानता से राणा के मांडल नामक पुर को लेकर पीछे आयेहुए हल्लू का नैरोग्य होने पर हम्मीर (हामा) को बुन्दी भेजना,

१८३।१ बुंदीप्रस्थापन १२ तदनन्तरवैरविस्मारकस्वपौत्रीसम्प्रदानीकृतक्षेत्रकुमारनिस्सारितहल्लू १८२।१ सैन्यशून्यीकृतपुरमण्डलहड्डाधिराजहम्मीर १८३।१ दशपुर १ जीरण २ सैन्यसमेतहल्लू ७८२।१ कुलनिर्बीजीकर्तुकामप्रस्थितराणाहम्मीरप्रतिस्थापन १३ बुन्द्यागतवीतवयस्कगद्दिकोपवेशितबरसिंह १८४।१ कृतकाशिनिवासभाविसमयप्राप्तावसानहड्डेशहम्मीर १८३।१ जन्म १ राज्य २ प्राप्तिराज्यत्याग ३ तनुत्याग ४ संवत्सूचनं १४ नवमो ९ मयूखः ॥९॥

आदितष्षट्पञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥ १५६ ॥

प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

हल्लू१८२।१ समर चउद्दहम१४, पृतना त्रय३ जयपाइ ॥
अक्षत लखि बपु अप्पनौं, घन रिपुजन गन घाइ ॥ १ ॥
रनरन इम अक्षत रहत, बार्द्धक आवत बिक्खि ॥
मनचिंतिय धारा मरन, समर कुमावन सिक्खि ॥ २ ॥

युग्मम् ॥

बैर पराये लैन बदि, जितजित जुज्झनजाइ ॥
भूप नियति निंदतभयो, अक्षत बपु गृहआइ ॥ ३ ॥

जिस पीछे वैर मिटाने के लिये अपनी पोती कुमर चेत्रसिंह को देकर हल्लू को सेना सहित निकाल कर मांडल नगर को खाली करके हड्डाधिराज हाम्मा का मन्दसोर और जीरण की सेना सहित हल्लू के कुल को निर्बीज करने की कामना वाले प्रयाण कियेहुए राणा हम्मीरसिंह को पीछा भेजना बुन्दी में आकर अवस्था बीतने पर बरसिंह को गद्दी बैठाकर काशी निवास करके आगे आनेवाले समय में मृत्यु पानेवाले हड्डेश हाम्मा के जन्म, राज्य प्राप्ति, राज्य त्याग और शरीर त्याग करने के सम्वत् की सूचना करने का नवमा ९ मयूख समाप्तहुआ और आदि से १५६ मयूख समाप्त हुए ॥

तीनों १सेनाओं से २ घाव रहित अपना ३शरीर देखकर ॥ १ ॥ ४ बुढापा आताहुआ ५ देखकर ६ युद्ध ॥ २ ॥ ७ भाग्य को ॥ ३ ॥

षट्पात् ॥

गेरिधर नृप गुग्गौर जत्थ हरराज१८२।२ बिवाहिय ॥
ो तोमर धनसाहि*सूनु ×जासन असि साहिय ॥
ारउरके कुम्मनृप लुपत सीमा साहसलगि ॥
प्रायउ सहबल अतुल ÷ज्वलन अंतर पूकोपजगि ॥
हल्लू१८२।१ नरिंद सुनतहि हरखि बिनुहिं निमंत्रन पंच्छबनि ॥
ोमर सहाय कुम्महिं तराजि, हुव बिजई प्रतिपंच्छ हनि ॥४ ॥
ाहिलँ बंग १७९।१ नृपाल गाजि चाचिक कृपान गहि ॥
सँरोरगढ गाहिय द्रोहपावक रैंन १ हिं दहिं१ ॥
नतनय हरि२नाम अमर३ चाचिक हरि अंगज ॥
ो प्रसभी इहिंसमय सद्धि इक निसफल संगजँ ॥
सत१००सुभट भिल्ल भट दुवसत२००न दिय निश्रेनिय गढ दुलभ
रोपाल१८२।११तत्थहल्लू१८२।१अनुज लये समुहसूचन समुह॥५॥

दोहा ॥

कलि कटाइ रजपूत कति, ससमर अमर भज्यो सु ॥
सावधान छुवतहि समुह, जय रोपाल १८२।११ भज्योसु ॥६॥
रभज्योसु १ लभज्योसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
निंबड़िपति सालक अमर, तिहिं जुत तस सुधि रक्खि ॥
हल्लू१८२।१ इम रन सत्रहम१७, चाचिककुल गय चक्खि ॥७॥
जव झल्लन जीनोद२ लिय, जुज्झिय दसपुर२ जाइ ॥
उहाँभयो न जय१ न अजय२, इमहु मिलत बिधिआइ॥८॥
हो दहिया हरि नैनवा, भूप अरिहु तसभीर ॥

तँवर धनसाह का*पुत्र×जिस से÷अग्नि बिना१बुलाये२मदत यनके ३ शत्रुओं को मारकर ॥ ४ ॥ ४ द्रोह रूपी अग्नि में रणसिंह को दहनकरके ५हरिसिंह का पुत्र ६ हठी ७ साथी ॥५॥ ८ युद्ध में कितनेही रजपूत कटाकर उस युद्ध से अमरसिंह भगा और रोपाल ने विजय सेवनकिया (पाया) ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥

जित्ति उदासीन हि लयो, पद्मनगर नृप बीर ॥ ९ ॥
बुंदियपति हम्मीर१८३।१ तब, पठयो इम लिखि पत्र ॥
काका १८२।१ तुम अरिभीरकिय, अनुचित दोष अमत्र ॥१०॥
पद्मसेन दाहिम सुपहु, नगर[2] नगर[3] निर्दोष ॥
तिहिं अरिकरि हरि हिततक्यो, पन्नग[4] भरि पयपोष ॥ ११ ॥

षट्पात् ॥

सुनियह हल्लुव१८२।१ सुपहु पत्र बुंदिय इम पिल्लिय ॥
इतेबरस हम आँजि खेल चाहत जिय खिल्लिय ॥
चउद्दहम १४ रन चंड पिक्खि आवत पलितावलि ॥
असुछंडन आग्रहहि वंधि तिम हय नक्खिय बलि ॥
पिक्खहु भतीज१८३।१ नियँतिय प्रबल इक्क१हु छंत[11] अंगन सफल ॥
तरवारि धार तुट्टन[12] तिमहि वंधिय हम हठि मंत्रबल ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

दैन भीर यातैं दु २ बल, लज्जत जावत लाल ॥
तुमहिं रुची जु न तो तुमहु, क्रमहुँ[13] निबल अरिकाल ॥ १३ ॥
हम्म १८३।१ कहिय जो यह गहिय, संधा[14] निबलसहाय ॥
निबलभतीजहु सबलसन, आपकरहु जय आय ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

जंपिय हल्लुव१८२।१ जुज्झि समर१८१।१ काका अग्रज१८१।१ सह
हम गृहहित हुव हुतहि मिच्छ पावक महंत मँह[15] ॥

॥ ९ ॥ वह दोष का १ पात्र है ॥ १० ॥ २ नगर नामक ३ पुर के पति पद्म सिंह को निर्दोष शत्रु बनाकर हरिसिंह का हित किया सो मानों ४ सर्प को ५ दूध पिलाकर पोषण किया है अर्थात् सर्प को दूध पिलाने से भी विषही उत्पन्न होता है ॥ ११ ॥ ६ भेजा ७ युद्ध में ८ श्वेत केशों की पंक्ति आती हुई देखकर ९ प्राण छोडने का १० भाग्य का ११ घाव. तरवार की धारा से १२ मरने का ॥ १२ ॥ १३ चलो ॥ १३ ॥ १४ प्रतिज्ञा. ॥ १४ ॥ बडे १५ उत्सव से

पुनि मम सिसुपन पुहवि गई बंबावदके बस ॥
बुंदीकी बिगरी न तदपि हमहुव बर्द्धक तस ॥
रिपुगिनत मप्प१८७स्वसुरहिं तजि रु जुग२दिवाइ गढ कारि त्रि३जय
आयो रु बहुरि लखिहौं इमहिं ऐहौंतो लखिहौं न ऐय ॥१५॥

॥ दोहा ॥

इमहि तुमारो जो अरिहु, लखिहौं निर्बल लाल ॥
तो ऐहौं द्रुत भीर तस, कटि आसिलौं बनि काल ॥ १६ ॥

॥ षटपात् ॥

ऊनविंस १९ इम विजित तुमुल सद्धि रु तदनंतर ॥
अप्प १८२११बारहम१८२१२अनुज बैर बालिय बसुधांबर
देव १८०११ कुमर जब दंग लुंचिँ मोहिल पट्टनि लिय ॥
सल्ह२ मनोहर १ सूनु आइ लक्खन आराधिय ॥
रक्ख्यो सु रान बग्घोरदै सुत तँदीय अब इहिं समय ॥
हम्मीरराान करि दुर्गपति मंडनगढ रक्ख्यो मलय ३ ॥ १७ ॥
हल्लू१८२११सन बारहम१२लघु सु धोपाल१८२११२कालखहि
अच्छोटन रस अटत पत्त मंडन गढ पासहि ॥
मलयसिंह मोहिल सु स्वल्प परिकर हड्डहिंसुनि ॥
आग बैर सुधिआनि च्यारिसत ४०० सँवर मुख्य चुनि ॥
क्रम तजि स्ववेस पारिचौयक रु भिल्ल निभँ सु दुर्गम भिरयो॥
लघुभ्रात यहहु धोपाल१८२११२लरि खट६घँटिका धारन खिरयो॥१८॥

दोहा ॥

उसके १ बढाने वाले २ शुभ भाग्य को नहीं देखूंगा अर्थात् अवश्य आकर मरूंगा ॥ १५ ॥ १६ ॥ ३ युद्ध ४ अपने बारहवें भाई का बैर ५लिया ६ राजा ने. मोहिलों से ७ खोसकर. महाराणा ८ गढ लक्ष्मणसिंह की सेवा की ९ बागोर नामक पुर देकर १० उसका पुत्र ११ मांडलगढ में १२ मलयसिंह को ॥१७॥१३शिकार के१४भील. वह मलयसिंह भी अपनेको१५लखाने (पहिचानकराने)वाला ऐसा वेषछोडकरभीलों के१६सदृशछः१७घड़ीतक॥१८॥

हन्यौं किरातन[1] किरि[2]हनत, परसीमा घोपाल१८२।२ ॥
बत्त मुधा[3] यह किय बिदित, सुनिहल्लु१८२।२ नट[4]साल ॥१९॥
कोपत नृप१८२।१ भिल्लन कहिय, जाइ पिहित[5] करजोरि ॥
मारक सठ मोहिल मलय, हम सिर धरत निहोरि ॥ २० ॥
अन्नसंग घुन घरट[6]इम, जिनहम पीसेजाँहिं ॥
भंजहु तिहिं बग्घोर[7]भिरि, मरैं न मंड[8]लमाँहिं ॥ २१ ॥

॥ षट्पात ॥

भिल्लनप्रति नृप१८२।१ भनिय आत मंतु[9] न तुम ओरहु ॥
तो बग्गोरहि ताहि देखि हमढिग द्रुत दोरहु ॥
स्वमरन[10] भिल्लन समुझि मलय मग्गहि दिखाइदिय ॥
संभर१८२।१ झपटि सिचान कुणप[11] मोहिल कपोतकिय ॥
अजमेरनृपति साजि गौड़ इत लुट्टन पन मारोट लिय ॥
ताकँहँबचाय हरराज१८२।१सुतकलि[12]इकवीसम२१विजयकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

प्रबल जदपि अजमेरपति, लैनचही लघु[13] लैहि ॥
सो मारोट न धसिसक्यो, हल्लू१८२।१ बिजय यहैहि ॥ २३ ॥
हडुनको कुलबारहठ, हुव पहिलैं हरसूर१ ॥
स्यामदास हुव तासुसुत, पाटव गुन१ रन२ पूर ॥ २४ ॥
समरसिंह१८१।७ बुंदिय सुपहु, सो आदर कवि स्याम[14]२ ॥
पुज्जिचरन किय भेट पुनि, गिनि सासन[15] खट६ग्राम ॥ २५ ॥
पुरी बरोदा परगनाँ, काछेला१ जसकाम ॥

१भीलों ने दूसरों की सीमा में२सूवर को मारतेहुए घोपाल को मारडाला हल्लू को४नटसाल(नहीं निकले ऐसा साल)समझकर यह बात ३ झूठ प्रसिद्ध की ॥१९॥५गुप्त ॥२०॥ अन्न के साथ६ चक्की में घुण(जन्तु विशेष)पीसेजावें इस प्रकार७बागोर में युद्ध करके८मांडलगढ में ॥२१॥ तुम्हारी तरफ ९ दोष नहीं आता है भीलों ने१०अपना मरना समझकर११प्राण रहित १२युद्ध ॥२२॥ १३ शीघ्रलेलेवैंगे ॥ २३ ॥ २४ ॥ १४ श्यामदास के १५ सांसण (उदक) ॥ २५॥२६॥

दोडुंदा२हरिनाँ३ विदित,रोसुंदा४ अभिराम ॥ २६ ॥
चंपखेट५ नामक रुचिर, अरुगिंडोली६ अप्पि ॥
अप्प चढायउ स्याम२ इभं, थिरि स्वंअंस पयथप्पि ॥ २७ ॥

॥ पट्पात् ॥

स्याम२ तनय सामोर सुकवि लोहठ३ अभिधासह ॥
हल्लू१८२।१ जय चउदसम१४ बिरुद्द वरानिय महंतमह ॥
सु निज काव्य सुनि सत्य अठ्ठ८ निवसंथ नृप१८२।१ अप्पिय ॥
अयुत१०००० दम्म आभरन२ सगँय३ हय४ सिचर्य५ समप्पिय ॥
पुनि कहिय अप्प लोहठ३ निपुन करहु इक्क१ उपकार कवि॥
चिरंतँ चहंत हम रनमरन छतंहु तदपि लगि दै न छवि ॥२८॥

॥ दोहा ॥

यातैं तुम चहि हित अटेंहु, धरनि पग्घें मम धारि ॥
रुट्ठावँहु करि नृपन रिपु, अनँत याहि उच्चारि॥२९ ॥
कवि यहसुनि हल्लू१८२।१कथित, लोहठ३ विचरन लग्गि ॥
चिक्खतँहुव भूपन वहुन, असह लगावन अँग्गि ॥ ३० ॥

॥ पट्पात् ॥

मंडोउर जिंहिसमय राज्य धारत अधर्मरत ॥
हम्मीर१ सु प्रतिहार महामहिपँन निलज्जमत ॥
हुव चुंदिय हम्मीर१८३।१ सु पहु ताको यह सालक ॥
विदित कुमर वरसिंह१८४।१को सु मातुलं सुखकालक ॥

१चम्पाखेड़ा २हाथी पर ३ अपने कन्धे पर पैर दिलाकर॥ २७॥ लोहठ ४नानक सामोर शाखा के चारण ने ५ बड़े उत्साह से ६ ग्राम ७ हाथी सहित ८ वस्त्र ९ बहुत समय से १० घाव भी ॥ २८ ॥ पृथ्वी में ११ फिरो मेरी १२ पगड़ी धारण करके १३ क्रोध कराओ इस पगड़ी को १४ अनम्र (नहीं झुकने वाली) कहकर ॥ २९ ॥ १५ देखताहुआ १६ अग्नि ॥ ३० ॥ बड़े १७ राजाओं में १८ साला १९ मामा २० काले मुखवाला

इक बिप्र द्विरागम करि उहाँ लोजावत तिय अति ललित ॥
लंपट बिनकैं प्रतिहार लखि जुहु छिनिय दर्पके ज्वलित ॥३१॥
दिनदस१० लंघित द्विजहि नहिय पामर जब नारिय ॥
आय बिफल अजमेर १ पुनि सु चितोर२ पुकारिय ॥
ईडर३ दसपुर४ इम अवंति५ नरउर६ पट्टनि७ अरु ॥
दिल्लिय८लग करि दोर मलिन किन्नौं नरुप१ रु मरुँ२ ॥
भेरि१ न निर्नाद डिंडिम२ भनित तस पुकार न सुनिय तबहि॥
पुनि आइ कुपित मंडपपुरसु द्विज मृत हुव इम देहदहि ॥ ३२ ॥

॥ दोहा ॥

कुपित अनेक अकज्जकरि, मद्यपानजुत मूढ ॥
हुव जननी१ गोजुग२ सहित, इमसु अग्गि आरूढ ॥ ३३ ॥
उनदिवसन लोहठ२ अटत, पुर मंडोउर पत्त ॥
अल्प अहंनके अंतरहि, तिहिँ बुल्ल्यो कवि तत्त ॥ ३४ ॥

॥ षट्पात् ॥

कवि करि हल्लुव१८२१ कथिते कहिय दिय पट धावक कहँ ॥
पटनमँहु इक१पग्घ प्रनत होवत सु न मोपँहँ ॥
पग्घैं इतर परंतु बिदित हल्लु१८२१ सिरकी बहु ॥
सुर१ द्विज२ कवि३ बिनु सबन प्रनति नकरैं जोपै पहु ॥

ी का १ गौना करके २सुन्दर स्त्री को ३ नकटे ने ४ कामदेव से जलतेहुए ने ३१ ॥ उस ५नीचने ६ मारवाड़ के राजा को और ७ मारवाड़ को. नगारों ८ आवाज में जिस प्रकार डिमडिमी के ९ शब्द को कोई नहीं सुनता उस प्रकार उसकी पुकार को किसीने नहीं सुनी ॥३२॥ माता और दो गौओं सहित वह ब्राह्मण१० अग्नि में जलगया ॥३३॥ ११गया. थोड़े १२दिन पीछे १३ हां॥३४॥ हल्लू का १४कहना करके कहा कि वस्त्र धोबी को देदिये हैं, वस्त्रों एक पगड़ी है सो मुझसे १५ झुका ही नहीं जाता अर्थात् उस पगड़ी को करकर मैं किसीको झुक नहीं सकता. पगड़ियां १६ और भी बहुत हैं परंतु वे सब प्रसिद्ध हल्लू के मस्तक की हैं सो १७ देवता १८ ब्राह्मण और १९चारणों के बिना दूसरों से २१ राजा होवें तोभी नहीं २०नमतीं

ध्रुव कल्हि पग्घ ऐंहँ सु धरिऐहाँ अरु मिलिहँ उभयर२ ॥
जानतो त्वरा तोभैं जबहु देतो पग्घ न विद्दितदेय ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

तुमकिन्नी द्रुतताहि तो, मंतुँ छमहु महिपाल ॥
लै वह पग्घ रु कल्हि लहुं, ऐहौंधरि उत्ताल ॥ ३६
जाचक मैं भूपति जनन, सो आऊँ न समाज ॥
यामैं हल्लुव१८२।१ पग्घ अरिं, अपँडु दिखावत आज ॥ ३७
हल्लू१८२।१ सवपट देत हम, नदई पग्घ निहारि ॥
अक्खिय क्यौं न मिलो यहै, पँटगन मुख्य पुकारि ॥ ३८
हल्लू१८२।१ आक्खिय व्रत हमहिं, व्याहव मरन उमाहि ॥
पग्घ न मम होवत मनत, यह साहस दृढ आहि ॥ ३९ ॥
सुल्ल्यो मैं पग्घैं बहुत, न वहुत तोहु नरेसं ॥
नमिहाँ धारत ओर निज, अनंत पग्घ करि एस ॥ ४० ॥
तवहि रीझि हरराज१८१।१ सुत, बसंन सकल बहुवेर ॥
पग्घनजुत दिन्नैं प्राथितैं, जे होत न कहु जेर ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

कँर्णाकरि सु कविकथित कुहकँ हम्मीर कहाई ॥
हल्लू१८२।१ पग्घहि धरहु आहु रक्खहिँ अधिकाई ॥
प्रथम सु कवि तिम पूज्य१पग्घ हल्लुव१८२।१धृतं धरि पुनि२।
न नमहु मिलहु निसंक सुजस हल्लन रक्ख्योसुनि ॥

---

१ शीघ्रता जानता तो २ हे प्रसिद्ध दयावान् ॥३५॥ ३ जल्दी ही की है सो ४ अपराध माफ करना ५ शीघ्र ६ शीघ्रता से ॥ ३६ ॥ मुझको ७ मूर्ख दिखाती है ॥ ३७ ॥ ८ वस्त्रों में मुख्य फहफर ॥ ३८ ॥ हल्लू ने कहा कि युद्ध में मरने के उत्साह से मेरा नियम है कि मेरी पगड़ी किसीसे झुकती नहीं यह दृढ हठ ९ है ॥ ३९ ॥ १० हे राजा इस पगड़ी को ११ अनम्र कहके ॥ ४० ॥ सब १२ वस्त्र १३ प्रसिद्ध ॥ ४१ ॥ १४ सुनकर उस १५ जालसाज. हल्लू की १६ धारण कीहुई

जंपत यहैंसु परिकर[1] जनन बरज्यो कहि हितहेरि बंलि ॥
ननकरहु पग्घ अपमान नृप कवि तो बुज्झहु टारि कंलि ।४२।

दोहा ॥

तुमकरिहो अपमानतो, सो हल्लू१८२।१ दृढसंध[3] ॥
जीरनपतिसे भंजि जिहिं, गंजे गढ बलबंध ॥ ४३ ॥
जानत सत्रुहु निबल जो, भिरनहोत तसभीर ॥
बैरपराये लेत बढि, धरि लै सु न सुनिधीर ॥ ४४ ॥
भगिनी जेठी भावती१८३।१, बुंदीनृपति बिबाहि ॥
भाम हरम१८३।१ तुमरेभये, ते भँजिहैं रिपुताहि ॥ ४५ ॥
तुमसौं द्रुत[6] सालत्व तजि, हल्लू१८२।१ सहचर ह्वैहिं ॥
इक्कलही हल्लू१८२।१ यहे, लरि जित्ति रु भुवलैहि ॥ ४६ ॥
तिनहिं कहिय हम्मीर तब, छिति ममहल्लू१८२।१ छुत्त ॥
जिती ह्वै सु अप्पौं द्विजन, ह्वैन तदपि मम हुत्त ॥ ४७ ॥
मोसौं संकिय रानखुल[10], बिप्रपुकार पचाइ ॥
बंबावदपंति[11] बप्पुरो, आजि[12] रचहिं किम आइ ॥ ४८ ॥

षट्पात् ॥

सुतको यहहठ सुनत नृपसु जननी हु निवारिय ॥
तदपि महाजड़ तत्थ हड्ड चारन हक्कारिय[13] ॥
लिय जताइ पहिलौंहि मिलहु अनतौंहि[14] हम मन्निय ॥
मिलि लोहठसन तिमहि कपट गौरव आदरकिय ॥
बैठि रु तदीयँ[15] जस काव्यबदि बिरदायउ प्रतिहार पहु ॥

---

१ परगह के लोगों ने २ युद्ध को बचाकर ॥ ४२ ॥ दृढ ३ प्रतिज्ञावाला ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४ बहिनोई. वे शत्रुता को ५ धारण करेंगे ॥ ४५ ॥ तुमसे ६ शीघ्र सालापन छोडकर. हल्लू का ७ साथी होवेगा ॥ ४६ ॥ मेरी जितनी जमीन को हल्लू ८स्पर्श करेगा; अथवा मेरी जितनी जमीन पर हल्लू की छाया पड़ेगी युद्ध में नहीं ९मारा जाऊं तो ॥ ४७ ॥ १० आदि ११ विचारा (बापड़ा) १२युद्ध ॥ ४८ ॥ १३बुलाया १४बिना नमस्कार कियेही १५उसका

सहकंपट रीझि हम्मीर सठ ललित दिन्न सिरुपाव लहुं ॥४९॥
हत्थजोरि प्रतिहार कहिय सवके समान कवि ॥
धरहु ममहु परिधान जदपि सुलभ रु भजैंन छवि ॥
लोहठ सु सुनि सलज्ज कुड्यंअंतर धारनकिय ॥
पटउतारि पहिले रु दासँनिजकर असेस दिय ॥
वेठो सु आइ परिखंद तवहि सठ पिक्खनमिंस दाससन ॥
मंगाइ पग्घ मंडले सिर सु कहिय खिजिवंधन कुजंनं ॥५०॥

दोहा ॥

कोऊ तँहँ सु सक्यो न करि, जमसम हठ्ठन जानि ॥
कवि पिक्खत तव निजकरन, किय सठ सुहि तजिकानि ।५१।
बुल्लि सभा निजवैनकरि, स्वान सु गहि सयँसंधि ॥
अतिमद हल्लू१८२।१ पग्घवह, वालिसँ तस दिय वंधि ॥५२॥

षट्पात् ॥

लोहठकवि पहलखत कढ्ढि कट्टार निसितँ कर ॥
लग्गिय मरन अलुंद लियसु पकराइ खिज्जि खरँ ॥
कहिय कैद जो करहिँ ततो यहवँत्त दृष्टतव ॥
कवन हठ्ठसन कहहिँ जाइ रुठ्ठाइ वडेजँव ॥
इम तजत तोहि जावहु अरँहि काहि इम दियउ विडाँरि कवि ॥
गृह तव पहेहु लंघिंत गयउ छलि ठग छिन्नँ वनिकँ छवि ।५३।

दोहा ॥

१कपट सहित २ सुन्दर ३ शीघ्र ॥४९॥ ४ वस्त्र ५ शोभा नहीं देते हैं तो भी ६ दीवार की आड में अपने ७ सेवक के हाथ में ८ सब ९ सभा में देखने के १० मिस से सेवक से मंगवाकर उस १२खोटे मनुष्य ने क्रोध करके कहा कि ११कुत्ते के मस्तक पर बांध दो ॥ ५० ॥ ५१ ॥ अपने १३ हाथ से. उस१४ मूर्ख ने ॥५२॥ १५ तीखा १६ निर्लोभी १७ गधे ने. यह१८ वार्ता तेरी देखीहुई है. बड़े १९ वेग से २० शीघ्र ही. कवि को २१निकाल दिया २२लंघन करता हुआ धन २३ छिपाये हुए २४ बनिये की भांति ॥ ५३ ॥

संडपपुर वहुरिहु मरत, निज्जन दयो सु निवारि ॥
मैं जानत मरत न मुरत, निथत सती जिम नारि ॥ ५४ ॥
अनसन लोहठ यात इम, सुनि अजमेर अधीस ॥
मिलिसम्मुह लावनलग्यो, सो न मुरयो हठसीस ॥ ५५ ॥
वेतनवस अनुचर वहुत, हे तिन मग्गहिं छाइ ॥
वंबावद छन्न प्रविसि, अप्प दुरयो गृह आइ ॥ ५६ ॥
आवन पुव्वहि नृप यहै, विदित लई सुनि वत्त ॥
पै आयउ प्रच्छन्न कवि, जानिसक्यो सु न जत्त ॥ ५७ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पंचम ५राशौ वीतिहोत्रचरडासि १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराजअस्थिपाल १५५ वंश्याऽनुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुंदीशहम्मीर १८३।२ चरित्रसमानसमयकवम्बावदेशहाररराजिहल्लू १८२।२चरित्रे जितचतुर्दश १४ महारणसैन्यत्रय ३ वीक्षितविक्षतवपुष्कसुखवार्धककागमप्रतिज्ञातरणमरणनिजजनकश्यालकगुग्गौराख्यनगरनरेन्द्रस्वल्पपक्षतोमरगिरिधरसहायीभूतहड्डाधिराजहल्लू १८२।१ षोडश १६ समरनलपुरनरेन्द्रकूर्मपराजयन १सप्तदश१७ सङ्गरमाहिषदुर्गरक्षकसाशुजरोपाल १८२। ११ पराजितदुर्गरुरुसुनिम्बेडीनगरनृपश्यालकचाचि

१अपने लोगों ने. ग्रन्थकर्त्ता(सूर्यमल्ल)कहते हैं कि मेरी समझ में मरनेवाला पुरुष २निश्चय ही सती होनेवाली स्त्री के समान रोकने से नहीं रुकता ॥ ५४ ॥ ३ निराहार ॥ ५५ ॥ ४ तनखाह के कारण ५ मार्ग में छोडकर ॥ ५६ ॥ ५७ ।

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पांचवें राशि में अग्निवंशी चहुवाण के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीपति हम्मीर के चरित्र के समान समयवाले वम्बावदा के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में चौदहवें बड़े युद्ध में तीन सेना को जीत कर अपने शरीर को घाव रहित देख और बुढापे का आगम जान कर युद्ध में मरने के लिये अपने पिता के साले, थोड़े बलवाले, गुग्गौर न अन्नगर के राजा तोमर गिरधर का सहायक होकर हड्डाधिराज हल्लू का सौलहवें युद्ध में नरवरके कछवाहे राजा का पराजय करना, सत्रहवें युद्ध में भैंसरो...

काऽगार १ स्वजानिप २ संहरण २ तदनन्तराऽष्टादश १८ रणप्र स्याक्रान्तजिन्नोदपुरदशपुरनरेन्द्रपोत्स्यनानहल्लू १८२।१ जया १ जया २ प्रापण २ तथैकोनविंशति १९ तमसमाघातस्वसपत्नलो पनपुरनरेशदहिकाहरिसिंहसहायनगरनामनगरनृपदाधिमपद्मसेनप राजयन ४ तत्कारणबुन्दीन्द्रहम्मीरो १८३।१पालब्धहल्लू १८२।१ प्रेषितमत्युत्तरस्वगतिज्ञाप्रख्यापन ५ विंशतितम २० युद्धस्वानुजचो पाल १८२।१२ संहारकव्याघ्रपुरमण्डलदुर्गरक्षकराणासामन्तमोहि लमलयसिंहनिपातन ६ तथैकविंशतितम २१ संख्याजमेरपुरपा र्थिवप्रौढप्रतिप्रस्थापनप्रगल्भहल्लू १८२।१ मारोटपुररक्षण ७ पूर्व कालबुन्दीपसमरसिंह १८१।७ चौराणिकहरसूर १ सूनुश्यामदा सा र्थसारसिन्धुर १ गिराडोली २ प्रभृतिग्रामचतुष्क ४ वितरण विख्यापन ८ वर्णितस्वचतुर्दश १४ विजयविरुदश्यामदास २ सूनु कोहठा ३ र्थमुद्रा १ भूषण २ गज ३ हय४वस्त्र ५ सहितसगौरव ६ दानाऽष्टक ८ समर्पण १ तदनंतरनृपसुरूर्दुहल्लू१८२।१ राजक

गढ़के रचक अपने छोटे भाई गोपाल से पराजित उस दुर्ग पर चढ़ने की इच्छा वाले निम्बड़ी नगरके राजाके साला चालुक्य अमरसिंह को बहिनोई सहित मारना, जिस पीछे अठारहवें युद्ध में घेरेहुए जिलोदपुर और मन्दसोर पुर के राजाओंसे युद्ध करनेमें हल्लू की जय अजयका प्राप्त न होना, तथा उन्नीसवें युद्ध में अपने शत्रु नैणवा पुर के राजा दहिया हरिसिंह की सहाय होकर नगर नामक नगर के राजा दाहिमा पद्मसेन का पराजय करना, इस कारण से बुन्दी के राजा हम्मीर के उपालम्भ देने पर हल्लू का उत्तर भेजने में अपनी प्रतिज्ञा को प्रसिद्ध करना, बीसवें युद्ध में अपने छोटे भाई चोपाल को मारनेवाला महाराणाका उमराव बाघोरपुर का मोहिल मलयसिंह जो मांडलगढ़ का किलेदार था उसको मारना, तथा इक्कीसवें युद्ध में अजमेर पुर के राजा के प्रस्थान में प्रगल्भ हल्लू का मारोठ पुरकी रक्षा करना, पहले समय में बुन्दी के राजा समरसिंह का चारण हरसूर के पुत्र श्यामदास के अर्थ हाथी सहित गींडोली आदि चार ग्राम देने की प्रसिद्धि करना, अपनी चौदहवीं विजय का यश वर्णन करने पर श्यामदास के पुत्र कोहठ के अर्थ रुपये, भूषण, हाथी,

रिपूकरणनिमित्तशिक्षितस्वोष्णीषानमककविलोहठ ३ प्रतिराजधानीप्रेषण १० मण्डपपुरपृथ्वीशप्रतिहारहम्मीरसमात्तस्वनववधूकप्रतिराज्यपूत्कृतिमोघताविमनस्कपुनरागतपीतापेय १ खादिताखाद्य २ स्वसावित्रि १ सुरभियुग २।३ सहितविप्रविशेषवैश्वानरविशन ११ २ स्वप्रसू १ परिकर २ प्रतिषेधप्रतीपमण्डपपुरराजस्वपुरसमागतकौस्ल्यलांतहल्लू १८२।१ष्णीषानसनभावप्रासभ्यप्रबोधितकविलोहठ स्वसमज्ज्यासमाकारण १२ श्रुततत्प्रणीतस्वकाव्यकैतवकलित-प्रासन्न्यपरिधापितस्वदत्तसर्वपटहम्मीरवीक्षणव्याजसमानायितलदुत्तारितहल्लू १८२।१ दत्तपूर्वोष्णीपश्वानाशिरोवेष्टन १३ बलात्कारवारितमुमूर्षणनगरीनिस्सारितागच्छन्नुपेक्षिताऽजमेरनरेन्द्रनाहरलोहठप्रच्छन्नबम्बावदविशनं १५ दशमो १० मयूखः॥१०॥

आदितस्सप्तपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५७॥

घोड़े और वस्त्र सहित बडप्पन के साथ आठ गाम देना, जिस पीछे युद्ध में मरने की इच्छावाले हल्लू का राजाओं को शत्रु बना ने के निमित्त अपनी पगड़ी को अन मनीय होने की शिक्षा करके कवि लोहठ को राजधानियों में भेजना, मंडोवर पुर के राजा प्रतिहार हम्मीर के अपनी नवीन स्त्री को छीन लेने से प्रत्येक राजाओं के आगे कीहुई अपनी पुकार निष्फल होने से उदास होकर पीछा आकर नहीं पीने की वस्तु को पीकर और नहीं खाने की वस्तु को खाकर अपनी माता और दो गउओं सहित किसी ब्राह्मण का अग्नि में प्रवेश करना, अपनी माता और परगह के लोगों के मना करने से विरुद्ध मंडोवर के राजा का अपने नगर में आयेहुए कपट रहित, हल्लू की पगड़ी को नहीं झुकाने का हठ प्रबोध कराने वाले कवि लोहठ को अपनी सभा में बुलाना, उस के बनायेहुए अपने काव्य को सुनकर छली हम्मीरसिंह का प्रसन्नता से दियेहुए अपने सरोपाव के वस्त्रों को पहनाकर उसकी उतारीहुई हल्लू की पहले दीहुई पगड़ी को देखने के मिस से मंगाकर कुत्ते के मस्तक पर बांधना, मरने की इच्छावाले लोहठ को बलपूर्वक रोककर नगरी से निकाला देहुए लोहठ का अजमेर के राजा नाहर को छोडकर छाने बम्बावदा में प्रवेश करने का दसवां मयूख समाप्तहुआ ॥१०॥ और आदि से एक सौ सत्तावन मयूख हुए ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सुकवि सु जब आयोसुन्यों, अनसन* जलआधार ॥
तबहि जाइ हल्लू१८२।१ तँहँ रु, दिय बिस्वास उदार ॥ १ ॥
कहिय तज्यो क्यों अन्न कवि, कथित कियउ सबकाम ॥
तुमपठये दृढमंत्रि तब, यहहि करन अभिराम ॥ २ ॥
अनँत पग्घ सुनि कवि कहिय, लेतो लरन बुलाइ१ ॥
तुमहिं निंदतो२ बात बहु, होतो सागस३ होइ ॥ ३ ॥
पै नवपट पहिरायकैं, इक्खनमिस करि अग्घ ॥
पामर४ किय मंडल५ कैं पर, प्रभुसिरकी वह पग्घ ॥ ४ ॥
नतो अनत सुनि पग्घ निज, कहतो हल्लुव१८२।१ कोन ॥
जो बल तो आवहु जुरन, हम रिपु सम्मुह होन ॥ ५ ॥
गो पहिलैं चित्तोरगढ, रानहु तँहँ पनरक्खि ॥
पग्घ नमत६ जो रजकँ७ पँहँ, आवहु सुहि धरि अक्खि ॥ ६ ॥
एह पंच ५ दिन लखि रहिय, मैं तब कहिय महीस ॥
नमतपग्घ सो अब निकट, सभा उचित रहि सीस ॥ ७ ॥

युग्मम् ॥

है निदेस आऊँ जबहिं, जानि रान हसि जोहु ॥
बुल्ल्यो अनत जु पग्घ वर, सयंग८ दिखावहु सोहु ॥ ८ ॥
नमन९ पग्घ धरि सीस निज, पग्घ यहहु करि पाँनि१० ॥
रानसभा जाइ रु कहिय, इक्खहु यह दिय आनि ॥ ९ ॥
रानकहिय जड़ कविसिरहिं, पूनतकरैं सहपग्घ ॥

---

*निराहार. मेरे १कहने से ॥२॥ २अनन्न ३दोषी ॥३॥ ४नीच ने कुत्ते के ५मस्तक पर ॥४-५॥ जिस पगड़ी को रखकर ६नमते हो सो ७धोबी के पास है तो वह पगड़ी लावे तब धरकर आना ॥६॥७॥ ८ हाथ में लेकर हमको दिखाना ॥८॥ ९नमने वाली पगड़ी अपने मस्तक पर रख और इस पगड़ी को १० हाथ में लेकर ॥९॥

जाकीपग्घ करैं न जिहिं, यह अचिज्ज हित्तअग्घ ॥ १० ॥
सहठ नमावत कविसिरहिं, मूढ सु मोघ महीस ॥
पग्घहुको तब अनतपन, व्है जब हल्लू१८२।१ सीस ॥ ११ ॥
जोरि त्रुटित नृप हम्म१८३।१ जब, कुंमरकनी कियदैन ॥
अनतभाव गो कित उहाँ, अब जो धारत ऐनैं ॥ १२ ॥
बदि इम दै सम्रुचित बिदा, मैं किय रान समाज ॥
इम अवंति१ अजमेर२ मुख्व, इक्खे कति अधिराज ॥१३॥
जावत पट्टनि मैं जबहिं, पुरमंडोउर पत्त ॥
अनुचित तँहँ प्रतिहार यह, रचिय बिग्रह रत्त ॥१४॥
अक्खिय अब हल्लू१८२।१ अवंनि, जो मम छुवहिं जितीक ॥
सेवित रहिं बिप्रन सहज, सीमाँ करहिं समीक ॥१५॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

कविकौं असन कराइ, हल्लू १८२।१ अक्खिय सह सपथ ॥
जुद्ध मरहिं१ कै जाइ, कै मंडोउर निजकरहिं२॥१६॥

॥ षट्पात् ॥

सुतलोहठ यह जंपि आइ हल्लुव१८२।१ निजआलय ॥
भाखिय ममबय भटन मरन हुवसमय मनोमयं ॥
लहिहैं मृत१ दिवलाभ अमृत२रहिहैं मंडोउर ॥
बंबावदभुव बिलासि धरहु अब पुत्र राज्यधुर ॥
कहि इम रु चंद१८३।१जेठोकुमर चच१८३।१हु जिहिं मागध चवत॥
दै ताहि राज्यगाद्दिय बिदित मरन किन्न चहुवानमत ॥१७॥

दोहा ॥

॥१०। १ निरथक. पगड़ी का २अनअपन हल्लूके मस्तक पर होवे तब है॥ ११॥टूटी हुई बात को जोड़कर हामा ने जब अपने ३कुमर की कन्या देनी की तब वह अनअपन कहां गया था जो अब अपने ४घर में धारण करता है॥१२॥१३॥१४॥ ५पृथ्वी को ॥ १५ ॥ १६ ॥ ६ मन माफिक(चाहाहुआ) ७जीवित रहेंगे तो ॥ १७ ॥

वयजुव्वन सुभटन वरजि, समवय वृद्ध सिपाह ॥
करिइक्कत रक्खन कहिय, चिन्ह मरन रनचाह ॥१८॥
अजिरकुंड अक्खिय उनहु, रक्खहु घुसृन घुराइ ॥
जिहिंमरनौं निजवस्त्र जुहि, अकथित बोरहिं आइ ॥१९॥
वरसतीस३० अतिगत वय सु, बोरहुपट पहवैन ॥
नृपकोसुनि लघुवय भटन, उर हुव असह अचैन ॥२०॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

आपरा अजेयँ वीराँरो इसड़ो अभीष्टजाणिकुंकुमरो कुंड घुळाइ हाडांरो अधीस हाल्लु १८२१ वासठि ६२ वर्षरावयमैं पहली आपरावस्त्राँरै बोळ दिवाइ उर्वसीरोवाँदवणियो ॥

जिकणारै साथ तीस ३० वर्षरावयथी विसेस हूँता जिकाँ पंच सत ५०० सुभटाँ केसरराकुंडमैं वस्त्र बोळिया जठै हालू १८२१ रा अनुज रोपाल १८२१९रीपत्नी आपराकांतनूँ इणरीति भणियो ॥

अवळारै एकपतिही परमेश्वरकहीजै जिकाँरोदरसणकरिणो वीजै तिकाँ आप मरणही आसंगियो तो मोनूँ आपरैहीआगैं काठाँचढाइ पधारो ॥

अर जीवणरी आसछ्हैतो मरणिकहुवा सैत्यसंध अग्रजरै साथ जावणरी नधारो ॥२१॥

आपरी अंगनारो इसड़ो अभिमत जाणिरोपाळ १८२१९फाकरा सोढा दामाँरीदुहिता सुगुणा १८२१ नाम इसड़ी आपरी पत्नीनूँ

॥ १८ ॥ १ अखाड़े के कुण्ड में २ केसर घुलवाकर ३ विना कहे डुबोओ ।१९। तीस वर्ष से४ ऊपर की अवस्थावाले ॥ २० ॥ ५ विजय करने में नहीं आवैं ऐसे ६ केसर का ७ डोब ८ डुबोये ९ पति को१०कहा ११सत्य प्रतिज्ञा वाले ॥ २१ ॥ १२ सम्मत (विचार) १३ पुत्री

आपरै आलपही कोठाँचढाइ बम्बावदैआइ अग्नजरोसाथकीधो ॥
सो जाणि हालू१८२।१ नरेंद्रभी पावकमैं पत्नीरो पहिलीप्रवेस प्रमाणथी विरुद्ध विचारि आपराअनुजनूँ उपालम्भ दीधो ॥
कहियो रणरो मरणतो दैवरै अनुकूलहुवाँ होइ जिको नबण-सीतो संसारनूँ मुखदिखावणजिसड़ो रहसीनहीं ॥
अर बेदहूँ बहिर्गत बातबणाइ पतिव्रतापत्नीनूँ पहली प्रज्वाळणरी प्रसंसा कोईभी कहसीनहीं ॥२२॥

दोहा

नीँचा तदि कीधा नयण, पाइ त्रॅपा रोपाळ १८२।११ ॥
इम सजियो हालू१८२।१ अनेड़, कजियेरचण कराळ॥ २३॥
बरसपचासाँ५० हेठ बय, बीसीसात१४० प्रबीर ॥
अट्ठारहबीसी३६० अधिक, धुररण खंचण धीर ॥ २४ ॥
पट कुंकुम सतपंच५०० ही, इमकारि गरक उदार ॥
हुवाबराती सेहरो, हालू१८२।१ रक्खणहार ॥२५॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

प्रस्थानरैप्रथम बारहठ लोहठ नरेसनूँ कहियो मंडोउररैअधीस इम्मीरपढिहार आपणा चरण चंपैजतरी जमीं द्विजाँनूँ देणकही जिणकारण इसड़ैतोर चालियोतो पढिहार केहीपीढियाँथी धन्व-धरारोप्रांत पाइ प्रगल्भ बणिबैठा जिणथी आहवरोआरंभ उरैंही पावसी ॥
अर मंडोउररा राजमार्गमैं पूगाँ प्राण१ पुंद्गळाँ२ रै बियोगबणैंतो द्विजाँरैअर्थ दुर्जनरा द्रंगराँ दानमैं प्रसभपूर्बक प्रभुरोही पुण्यखटाव-सी ॥ २६ ॥

---

१ जलाकर २ उरहना(ओलम्भा) वेद के ३ बाहिर ॥ २२ ॥ ४ लज्जा ५ अनम्र ६ युद्ध ॥ २३ ॥ २४ ॥ ७ मोड़ ॥ २५ ॥ पैरों ८ नीचे आवे जितनी जमीन ९ मारवाड़ का देश. प्राण और १० शरीरों के ११ नगर के देने में ॥ २६ ॥

हालू१८२।१ कहियो मंडोउर पूगियाँभी दंगरोदेवोतो इंदुरा आ दानें अर्थ ऊंचो कर कीधा सावकेरा संकल्परैसमान मोघजाणौं॥

अर विप्र बळियो तिणरी लज्जारो लेसभी न पायो जिणथी घ्राणहीण पामर प्रतिहाररो प्राणमैं प्रियत्वही प्रमाणौं ॥

तोभी मंडोउर पूगि मरांतो रंकरै राजराखणमैं आपरोही आ-सानरहे ॥

अरु मरुमहीरो महीपपणौं पाइ जीवताकुणपनूं सारोही संसार हाडाँरो दानलेणहार कहे ॥ २७ ॥

इसड़ो अमोघउपाइ विचारि कपटरैप्रपंच बाणियाँरीबरातब णाइ बाजियाँरैबदलै रथ१ छकड़ा२ जुताइ किताक प्रबहणौंमैं प्रहरणौं छिपाइ कुंकुमरारंगमैं गरक दुकूलकीधां दूजी२ दिसारै-मार्ग मंडोउर पूगिया ॥

अर राजद्वारजावताँही सस्त्रसमाहि माँहिंपैठा जठै पढिहारबंसरा प्रबीरभी आपरा अधीसनूं धिक्कारधारणकराइ मरणीक थिया ॥ पहली पैंतोलीमैं पैठताँहीं माँहिंलाचोकमैं हाडाँ१ पढिहाराँ२रै अ-चाणक कोरँड़ो लोहबाजियो ॥

परंतु उणसमय जुद्धजाणियांविनाँ ढीलाथका पढिहार हाज-रहूँता तिकाँ दीपकमैं पतंगरैप्रमाण आपरो अंग धारातीर्थमैं प-वित्रकियो ॥ २८ ॥

संगररा करणहारतो एकठाहोइ मंत्रपूर्वक लड़ाईकरताती ठी-कहोती जिणथी गढमाँहिंलापढिहार पाया जिके हाडाँरा सस्त्ररूप अग्निमैं अचाणकही आवटियाँ ॥

---

१ चन्द्रमा को २ पकड़ने के लिये ऊँचा हाथ कियेहुए ३ बालक के समान ४ निरर्थक जानो ५नकटा ६ प्यार. जीवित ७ मृतक ॥२७॥ घोड़ों के ८ एवज ९ डोलियों में १०शस्त्र ११वस्त्र १२ हुए १३ पोल*(द्वार) १४केवल॥२८॥ १५जले

* गोपुरं हि प्रतोल्यां च नगरद्वारयोरपि ॥ इतिमहीपः ॥

अर मरणीकहुवा मच्छरीकाँरा[1] समूह बाटमैं[2] आया सिपाहाँनैं बाढता[3] प्रच्छन्नप्रकोष्टरैसमीप[4] थटियाँ[5] ॥

आपरा अंगजमैं आई असाधारण आपदा ईखि[6] मंडोउररामहीप हम्मीररीमाता बुंदीरानरेस हम्मीर१८३१री सासू मंडोउरहीद्विजाँनूं देणरी जणाइ आपरा अप्रतिभ[7] तनुजनूं तरजियो[8] ॥

अर अंगजरैआगैं डोढीपर आइ एककपाटरै अंतर हाल्लू१८२१ नरेसनूं बुलाइ वैर धोवणरै काज इणरीति बरजियो ॥ २९ ॥

म्हारा कुपुत्ररीकीधीनूँ न धारि एक१आपराही बडप्पणनूँ[9] बिचारि वैर१रै बदळै बेटीबिबाहि कुपुत्र१नूँ प्राण२मोनूं[10] मंडोउररी महीं[11] २ दानकीजै ॥

अरभावती१८३१सुतारास्वसुरआपबिबाहिणिरीप्रार्थनारैप्रमाणबिबाहणरीबातबिरुदाँराबिसेसनिबाहणरीलिहारिअछूतीजसलीजै[12][13] ॥

हाल्लू१८२१ कहियो पूरो बयपाइ संसारहूँ बिरक्तहुवा महीपबंसरै महामंगळमानि मरण१नूँ चाहै तिके बिबाहण२नूँ नचाहै ॥

जिणथी हाडाँरा समग्रही पाँचसै ५०० सिपाह तिकाँनूँ बाँढण[14] काज आपरी समस्तही सेना पेलीजै[15] तो बिस्वंभर[16] बिबाँहिणि[17] १ बिबाँही२ बिहूँ२ संबंधियाँरो बचन निबाहै ॥ ३० ॥

हे बिबाहिणि अजेभी[19] आपरोअनीक[20] मंत्ररामेळकारि समग्रही सज्जहोइ आवैतो म्हाँरा मारणमैं समर्थजाणाँ ॥

अर कपटकरि गढहीमैं अचाणक आइपैठणाँतो आपरा अंगजरो[21] कूडापण१[22] दिखावणरैकाज बेसबदलणमैं म्हारोपण[23] कूड़ापण२ही प्रमाणाँ ॥

१चहुवाणों का समूह२मार्ग में३काटतेहुए४जनानी ड्योढी के समीप ५इकठ्ठे हुए६देखकर७लज्जित पुत्र को८धमकाया॥२९॥९ को१०मुझको११भूमि१२ब्याहिन(समधीकी स्त्री)१३अपूर्व१४काटने के लिये १५भेजो १६परमेश्वर १७ब्याहिन १८ब्याही(समधी)॥ ३० ॥१९ अब भी २० सेना २१ पुत्र का २२ झूठापन २३ भी

जिंणथी अब पड़िहारांरो समग्रही सावधान साथ म्हांरो पणं पूरणनूँ पधारैतो मंडोउर राजरैहीरहियो ॥

इसड़ी कहि पाँचसै ५००ही मरणकें सिपाहाँ समेत हाडैनरेस हालू १८२।१ आपरा रोकिया दुर्गथी वारैंकढि चोगानमैं सज्जहोइ धारातीर्थमैं मरणरोही मनोरथ गहियो ॥ ३१ ॥

तिणसमय पढिहाररा समग्रही सुभट मंडपपुरपत्तनमैं हूँताँ तिके गढ खालीहुवोजाणि माँहिंपैठा तिकाँहूँ प्रतिहारराजकहियो माता री नीतिकरि दुर्गरैवारैं कढिया हाडाँरो पणं अब म्हारै साथ होइ निवाहीजै ॥

अर राजनीतिमैं सदाही भूमिराभोगणहाराँनैं समयरैअनुसार छळवळभी साहीजै ॥

जठै हम्मीररीमाता पुत्रनूँ धिक्कारदेर आपरो भटवर्ग प्रकोष्ठरैसमीप वुलाइ कहियो हाडाँरापणमैं कपट नदीठो जिणथी वैरमैं बिवाहणरोवचन विनयरैसाथ करि काढियो ॥

तिकणनूँ मारताँपहली म्हाँरोमरणाँ विचारि कुपुत्ररै परोत्तहीं हाडाँनूँ कीजै चमरीचालियो ॥ ३२ ॥

जठै रजपूताँ राणनूँ कहियो आपरो आदेस टाळि कुपुत्ररो कहणाँही माँडि गढ छोडिगया हालू१८२।१ जिसड़ा नरेसनूँ बच नहींणहोइ मारणरा आपरारजपूताँनूँ नजाणीजै ॥

अर ब्रह्महत्यारा विलसणहारै आपरा कुपुत्रनूँ केडैकरि म्हारा तो मनमैं स्वामीरी सेंविलीरोही सासन समस्तरै सीस प्रमाणीजै॥

इसड़ीकहि मंडोउररै एक १ उमराव सस्त्रहीणहोइ हाडानरेस

१जिससे२प्रतिज्ञा ३ पूरी करने के लिये ४एसी ५ मरने की इच्छावाले ६ युद्ध में ॥ ३१ ॥ २२ ७ थे ८ प्रतिज्ञा ९ ग्रहण करना चाहिये १० ड्योढी के पास ११ नम्रता के साथ १२परभारा॥३२॥१३भोगनेवाले १४पीछे करके १५माता

हालू१८२।१कनैं जाइ दो २हीतरफ प्रमाणहुवो वचन बताइ अनेक उपाइकरि निबाहणरी धारि बिबाहणरी चही ॥

जठैहाडैकहियोएकुंकुमरादुकूळ*तोअच्छरीगणांरैंउचितजाणिकीधा जिणांथीबिबाहणरोवयव्यतीतहुवोजाणिकेवळमरणरैंही मनोरथ आया तिकाँरैं बिबाहकीधाँतोदो२हीलोकमैं जसरी रीति नरही।३३।

जिणांथी जिताक बिबाहणरैंउचित वयरा बीर म्हाँरैंसाथ आया तिकाँरैं बिबाह बिलसणरी होइतो म्हाँरावारहठ लोहठ३रैं पगाँपड़ि भाई रोपाल१८२।११नूँ सारिखो साथी सूँपि इणाँरैं अंगीकृत करावीजै ॥

अर म्हाँरैंतो धरापैं धराधवाँरै धामधाम धाराँधाराँरी धमचक देखि ओरठैंभी पणरी पूर्णता भरावीजै ॥

जठै इसड़ीसुणि बिहत्तर ७२ बर्षरा बयमैं हाडानरेस हालू१८२।१रा बिबाहणरीबात समयरा सासनकरि अत्यंतही असंभवजाणि पड़िहाररै सुभट पाछोजाइ मंडोवररामहीपरीमाता प्रति कही हालू १८२।१ रा बिबाहणसैंतो आप सिंह५रासिरै बृहस्पतरैंसंगही लग्न जाणीजै ॥

अर एकसोचालीस१४०सिपाह बिबाहणरैंउचित दीठा तिकाँरै स्वीकारकरणरोभी मालिकरा बिबाहबिनाँ असंभवही प्रमाणीजै॥ इसड़ीसुणि हम्मीररीमाता आपरापुत्रनूँ बारहठलोहठ३रैं पगाँलगाइ अंतेउररी डोढीबुलाइ अंजळीउपेत अपराध माँगि कहियो म्हाँरी अरजहूँ हाडानरेसरै आपरा उचित भड़ाँरो उपयम कराइ पाघरो बैरधोवणरी प्रतिश्रुतहुई परंतु सुहड़ाँरै स्वीकारकरावणमैं एक आ

फाही * वस्त्र ॥ ३३ ॥ १ समता (बराबरी) वाला २ स्वीकार ३ राजाओं के ४ घर घर ५ जब सिंह राशि पर बृहस्पति आता है तब विवाह का सर्वथा निषेध माना जाता है इसको लौकिक में सिंहस्थ (सींगस्त) कहते हैं ॥ ३४ ॥ ६ जनाने की ड्योढी पर ७ हाथ जोड़कर ८ विवाह ९ प्रतिज्ञा की हुई १० सुभटों के

परोही आश्रय लीधो जिणथी पुत्र १नूँ प्राण २ मो १नूँ मंडो-उररोराज २ दीजै ॥

अरु रोपाळ१८२।११नूँ न रुचैतो कहणाँ एक*पत्नीरै एवजइ-च्छारै प्रमाण उपयाम कीजै ॥

बारहठ पाछैआइ याहीअरजकीधी सुणि दयारैदरियाव हालू १८२।१ नरेस सातवीसी १४० सुभटाँनूँ पड़िहाररीपौळि पाणिपी-ड़णरी स्वीकारकराई ॥

परंतु कालीराकळस सतीरानाळेरँ पतिपहलीप्रजळी प्रतिव्रता रा प्रियतम रोपाळ १८२।१२ नूँ न भाँई ॥ ३५ ॥

॥ दोहा ॥

बूडो लाजसमुदविच, लखि अग्रज लंकाळ ॥
पाणिजोड़ि दै घण सँपथ,पुणियो तदि रोपाळ१८२।१२॥३६॥
नारि सती वळतीनहीं, विणुवय तोभी व्याह ॥
करतो भाँत न आपँक्रम, राखे जस १ कुळ २ राह ॥ ३७ ॥
तणमुख अब लीधो तिकाँ, तो उचितैं परिणाइ ॥
आप करीजै औरठे, पणपूरण इणपाइ ॥३८॥
मोनूँ अब मरियाँ मिळे, उचित सुजस आभोग ॥
कहो आपही गति कवण, जीवण१ मरण२ दुर जोग ॥३९॥
हेक १ हेक १ दै अब हुकम, पेलीजै पड़िहार ॥

---

* स्त्री १ विवाह २ विवाह ३ पागल स्त्री के मस्तक का घड़ा (वीर) और सती होनेवाली स्त्री के हाथ का ४ नारियल (वीर) "इन दोनों वस्तुओं के न ष्ट होते देर नहीं लगती" ५ जली हुई ६ पति. नहीं ७ रुची ॥३५॥ ८ डूबा ९ रावण (लङ्का का पति) "यहां लक्षणा से रावण के समान हठ करनेवाला सम झना चाहिये और डिंगल भाषा में सिंह को(लंकाळ) कहते हैं" १०सोगन ११ कहा ॥ ३६ ॥ १२ विना अवस्था १३ हे भाई १४ आपके क्रमानुसार मैं भी विवाह नहीं करता ॥ ३७ ॥ जितने विवाह के १५ उचित हैं उनको व्याहकर ॥ ३८ ॥ १६ परिपूर्णता ॥ ३९ ॥

काळचहै हरि जेणाकर, सोहि *हयौं सिरदार ॥४०॥
×पुणियो नृप मरियाँ पछैं, व्याहै ओर न वीर ॥
पणपूरण कीजै पछैं, धरे इतादिन धीर ॥ ४१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणरीतिरो आदेस आपरा अनुजरो अंगीकृतकराइ हाल्लू १८२।१ नरेस आपरा उचितबयरा सातबीसी १४० सुभटाँनूं संबंधियाँसहित पड़िहाराँरी एकसोचाळीस १४० कन्या परिणाइ राजाहम्मीरसहित सभाकरि कहियो भाई रोपाळ १८२।११रो पण पूरण करणनूँ एक १ सिरदार पधारो ॥
अर जिकणारै मरियाँही मंगळहोइ तिकणारा बचावणमैं कोईभी जतन नधारो ॥
जैरैं मरणाँहीमानि अठीरोअठी जोवताँ हम्मीररीसभाहूँ महराज पड़िहार ढाल १ तरवारि २ पकड़ि अखाड़ैआयो ॥
अर अठीहूँ खड्ग १ खेटक ३ समाहि अछूतीअणीरोबाँद रोपाळ १८२।११ हरराजो १८२।१त चलायो ॥ ४२ ॥
आपआपरो दावदेखि खड्गरा बाईस २२ ही मार्ग साधि हाडै१ पड़िहार २ दो २ ही महावीराँ आपसमैं अनेकवार कीधा ॥
अर आपआपरा पराक्रमरैप्रमाण दो २ ही नरेसाँनूँ अचंभो दिखाइ दो २ ही पटैताँ प्रहार टाळिदीधा ॥
उणसमय आपरो वार जाणि पड़िहार महराजरो साँचो हाथ छूटो ॥
जिकणथी अचळरा उपमान रोपाळ १८२।११ हरराजो १८२।१ तरो सीस शृंगरै समान तूटो ॥ ४३ ॥
सीसउडताँही पड़िहार हसिया अर महराज मुरड़ि चालियो ति

---

* सारे॥४०॥ ×कहा॥४१॥ १जब २इधर उधर ३ढाल ४हरराज का पुत्र॥४२॥ ५आश्चर्य६पर्वत के ७शिखर के समान ॥४३॥ ८पीछा फिरकर, अथवा घमंड से

कणांरे लारलागे रोपाळ १८२।११रै रुंडे खड्गपटकि कटारी काढि सातवैं ७ पैंडजावतों कटिवंधे पकड़ि पड़िहाररा पिंडमैं सात७ घायजाड़िया ॥

सो च्यारि ४ ऊभाँ तीन३ पड़ियाँ देरं इणरीति दो२ही बानैतं एक१हीकाळमैं खेतपाड़िया ॥

लोहठ३रापुत्र हरिदास४नूं वंबावदाहूँबुलाइ पडिहाराँरावारहठ नाँधू नगराजरीपुत्री परिणाइ हालू१८२।१ पड़िहारराजा इम्मीरनूं मंडोउर देरं पाघरावैरपर आपरा एक १ बारहठ सातबीसी १४० सुँहड़ाँरैकाज एकसोइकताळीस१४१ कन्या लेर वंबावदैआयो ॥

अर आपरा अनंड़पणाँरै अनुसार मंडोउर आपरी विबाहिणिनूं देणरो सुजस चो४तर्फही चलायो ॥ ४४ ॥

राठोड़ राव चूँडा वीरमदेवोतरै भाग जोरकीधो जिकणाँहूं हालू १८२।१ मंडोउरमैं आपरी आण फेरी नहीं ॥

अर औरही लेसी तो आपणाँ आ ईळा किणरीति छोडीजै इस ही बात महा उदार विचारमैं हेरीनहीं ॥

आपरा वडापुत्र चंद्रराज१८३।१नूं राजदीधो जिणथी वंबावदआइ अवसाणपर्यंत उदासीन रहियो ॥

अर जुद्धजाणियो जठेही जाइजाइ कामआवणरो प्रसंभ गहियो ॥ ४५ ॥

सोतो पछैं इणवातरै अनंतर वीस २०वर्ष बाँसै बाँळियाँ केडै कोईभी कँजियाँमैं मर्मरो प्रहारभी न पायोजाणि विक्रमरा चउदहसै एगारह१४११रै संवत बाणवैं९२वर्षरो वय विताइ हालू१८२।१नरेस

---

१ विना मस्तक का धड़ २ कमरबन्धा ३ देकर ४ चारोतरफ ५ समय में ६ देकर ७ सुभटों के लिये ८ अनक्षपन के अनुसार ९ ब्याहिन को ॥ ४४ ॥ १० जिस कारण से ११ भूमि १२ अन्त समय तक १३ हठ ॥ ४५ ॥ १४ पीछे १५ दिये १६ पश्चात् १७ युद्धों में

बार्द्धक्य[1]मैं बिसेसजिवावणहार आपरा प्रारब्धरी गर्हणा[2]करि बंबाव
दारैबारैंही जोगिणीनाम देवीनूं मस्तकचढाइ अभीष्टलोक पूगो
सोतोउदंत अठै दूरभावी[3] जाणीजै ॥
अर मंडोउरहूँ हालू१८२।१ आवियाँकेडै नरेस हम्मीर १८३।१
कासीबासकीधो जिणपछैं बुंदीरो नरेस बरसिंह१८४।१ हुवो जिण
रोभी अद्वितीय आतंक प्रमाणीजै ॥
जिणसमय चीतोड़रा अधिराज राणा हम्मीररै खेतलनाम कु-
मार गैणोलीरा अधीस हाडा लालसिंह१८४।२री पुत्रीनूं बिबाहण
रैकाज प्रयाणकीधो ॥
जिकणरैसाथ राणाँ त्यागरा जसरो प्रकास प्रसारणरैकाज आपरा
पोळिपातबारहठ बारू सहित बडावडा सुभटाँनूं सज्जकरि हाडाँरी
आसंगमैं नआवै इसड़ो बरातरो वाणिक बणाइदीधो ॥ ४६ ॥
पहली बैरकुमावणरैकाज हालू१८२।१री पाघ लेर बारहठ लो
हठ चित्तोड़गयो जठै राणैंहम्मीर कहियो हाडेहम्मीर १८३।१ आप
रा पुत्ररीपुत्री देर बचायो आपरेघरे अनड़पणाँ जणावै सोतो स्वप्न
रा संकल्परैसमान मोघं मानणमैंआवै ॥
अर साँचामरणीक सरबीराँरा पणतो मातंगाँ[9]पर पताकाँखुल
इ घरबैठा बैरियाँनूं बकारै जठैही सफळहुवो खटावै॥
पहली इसड़ा बचनराबाण लगाया जिणथी एकसोपचीस१२
तोपाँ साथ देर रणरीसामग्रीसूँ सिलहमैं जाड़िया बीर बरातमैं
दाकीधा ॥　टळा
अर मार्गमैं कूटजुद्ध[12] करणरा स्थान जाणिया जिके
दीधा ॥ ४७ ॥

१ बृद्धावस्था में २ निन्दा ३ आगे आनेवाले समय में होनेवाला ४ स्वा
५हिम्मत में ॥४६॥६ अनम्रपन ७ विचार ८निरर्थक ९हाथियों पर १०ध्वजा
ललकारे १२ कपट युद्ध ॥ ४७ ॥ ४८ ॥

दोहा

वणि दुल्लह खेतल बणी, अठी राणसुत एह ॥
गैणोली ब्याहणगयो, लालसुता १८४।२ विधिलेह ॥४८॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पंचम५राशौ वीतिहोत्रचण्डासि१वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रहम्मीर १८३१ समाचरितसमानसमयकवम्वावदेशहारराजिहल्लु १८२।१चरित्रे मण्डपपुरजिंगीषासमर्थनसहितशपथहल्लु १८२।१ समाश्वासितसम्भोजितकविलोहठराणाहम्मीरादिमहीन्द्रमिलनभूतस्वोष्णीषप्रवृत्तिप्रख्यापन १, ज्येष्ठसुतचन्द्रराजा१८३।१ थेदत्तराज्यनिश्चितरणमरणसुभटपंचशती५००समेतकौंकुमीकृतदुकूलविप्रवृन्दमण्डपपुरवितितीर्षुविहितवणिग्जन्यदेशहल्लू१८२।१प्रतिहारपुरप्रविशन२,स्वमरणपूर्वदग्धपत्नीकस्वाग्रजोपालब्धमृधमुमूर्षुहारराजिहड्डरोपाल१८२।११हल्लू १८२।१ सहायीभवन ३. निपातितराज्यद्वाररक्षकविध्वस्तान्तर्भटव्रा

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हम्मीर के समान श्रेष्ठ आचरणवाले और उसीके समय में होनेवाले बम्बावदे के पति हरराज के पुत्र हल्लू के चरित्र में मंडोउरपुर को जीतने का निश्चय किये हुए ऐसे हल्लू से (शपथ पूर्वक) आश्वासन देकर भोजन करायेहुए कवि लोहठ का महाराणा हम्मीरसिंह आदि राजाओं से मिल कर अपनी पगड़ी की प्रवृत्ति प्रसिद्ध करना, बडे पुत्र चन्द्रराज को राज्य देकर युद्ध में मरना निश्चय करके पांच सौ वीरों सहित वस्त्रों को केसर में करके मंडोउरपुर को ब्राह्मणों को देने की इच्छा करके बनियों की बरात के उद्देश से हल्लू का प्रतिहार के पुर में प्रवेश करना, अपने मरने से पहले अपनी स्त्री को जलाने के कारण अपने बडे भाई से उपालम्भ पाये हुए और युद्ध में मरने की इच्छावाले हरराज के पुत्र हाडा रोपाल का हल्लू का सहायक होना, राज्य द्वार के रक्षकों को मारकर भीतर वीरों के समूह को विध्वस्त करने पर हल्लू को समझाइश करके रोकनेके लि

तद्हल्लू १८२१२ समाश्वासननिवारणोद्युक्तप्रतिहारराजहम्मीरजननी तदुष्णीषवैरवालनार्थप्रत्येकसुभटकन्यासम्बन्धस्वीकरण ४,त्यक्त दुर्गबहिरागतहल्लू १८२१२ रणमरणसन्धासाफल्यसमर्थन ५,प्रतिहारपूजितप्रार्थितद्वारहठलोहठ १ हारराजिरोपाल २ प्रतिबोधितहल्लू १८२१२ द्वारहठहरिदासा१ऽधिकरक्षुचितवयोवीरविंशतिसप्तक१४० विवाहन ६, खुरलीद्धमखल्लूरिकाखेलासमात्तखरखड्ग १खेटक२द्वंद्वसमाघातसमुद्युक्तप्रतिहारमहराज१प्रहाराच्छिन्नमूर्द्धकोशकृष्टकट्टारसप्तम ७ पदसम्प्राप्तदत्तप्रहारसप्तक ७ हारराजिरोपाल १ प्रतिहार महराज२ निपातन ७,प्रत्यागतराज्योदासीनहल्लू१८२१२सूचितभाविसम्वत्समयस्वमूर्द्धकालिकोपहारीकरण, ८ कृतकाशीवासहड्डाधिराजहम्मीर १८३१२ ज्येष्ठकुमारवरसिंह १८४१२ बुंदीपुराधिपत्यप्राप्तिपुनःसूचन९, गैणोलीट्टङ्गाधिराजहाम्मीरिलालसिंह १८४१२ पुत्रीपरिणीषुराणाकुमारक्षेत्रलनिष्कासिकाऽनुष्ठान १० राणाना

ये उद्योग करनेवाली ऐसी प्रतिहारों के राजा हम्मीरसिंह की माता का उसकी पगड़ी का वैर देने के लिये प्रत्येक सुभट से कन्याओं का सम्बन्ध करने को स्वीकार करना, गढ छोडकर बाहरआये हुए हल्लू का युद्ध में मरने की प्रतिज्ञा की सफलता का समर्थन करना, प्रतिहार से पूजा और प्रार्थना कियेगये ऐसे बारहठ लोहठ का हरराज के पुत्र रोपाल को समझाना और हल्लू का बारहठ हरिदास को अधिक लेकर उचित अवस्थावाले सातबीसी अर्थात् एकसौ चालीस वीरों को विवाहना, शस्त्रविद्या और अखाड़े की क्रीड़ा में समर्थ, तीक्ष्ण खड्ग और ढाल लियेहुए और द्वन्दयुद्ध के आघात में उद्युक्त ऐसे हरराज के पुत्र रोपाल का प्रतिहार महराज के प्रहार से मस्तक कटने पर म्यान से कटारी निकाल कर प्रतिहार महराज को सात पैंड पर पकड़ कर सात प्रहार देकर मारना,अपने राज्य में पीछे आकर उदासीन हल्लू का जनायेहुए आगे आनेवाले सम्वत् में अपने मस्तक को काली के भेट करना, हड्डाधिराज हम्मीर के काशीवास करने पर उसके ज्येष्ठ कुमर बरसिंह के बुन्दीपुर के अधिपति होने की फिर सूचना करना, गैणोली नगर के पति हम्मीर के पुत्र लालसिंह की पुत्री को विवाहने की इच्छावाले राणा के कुमर क्षेत्रसिंह का यात्रा करना,राणा का अपने उमरावों की सहायता से निर्भय

लीयन्त्रादिसमरसामग्रीसहितसज्जस्वीयसामन्तसहायकनिर्भीकप
रिणिनीषुपुत्रप्रस्थापन ११ मेकादशो ११ मयूखः ॥११॥
आदितोऽष्टपञ्चाशदुत्तरैकशततमः ॥१५८॥
॥ इति हल्लू १८२११ त्रि३मयूखी ॥
प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा

सैगपण हामैं १८३१२ संधियो, बीखे सो बय वात ॥
गैणोली खेतल गयो, बरवणि विदित बरात ॥१॥
कीधा इण खेतलकँवर, आगैं चउ४ उपयाम ॥
हो इणरैं पहिलीहुवो, नंदन लाखोनाम ॥ २ ॥
पोत रमैं सो पोतपण, बरस पंच५ मित बेस ॥
जिण सिसुरो खेतल जनक, आयो व्याहण एस ॥३॥
नीराजन मुख विधि नियम, साधि लगन पळ साच ॥
कन्हकँवरि १८५१२ लाल १८४१२ सुकनँी,आपी खेतल आच॥४॥
मैँहँडे दिन चोथै४ मचे, भूँजाई घणभाँति ॥
जुड़ि संभर१ सीसोद२ जन, प्रसरे चो४सर पाँति ॥५॥

पट्पात् ॥

अतिव्यंजन१ पँळर२ अन्न३ रचे जीमण वंछित रस ॥
आसवैं छकि आपानँ बणे जदुवंस जेथा बस ॥

विवाह करने की इच्छावाले अपने पुत्र को तोपें आदि युद्ध की सामग्री सहित सज्ज करके प्रस्थान कराने का ग्यारहवाँ मयूख समाप्त हुआ ॥ ११ ॥ और आदि से १५८ मयूख हुए ॥

१सम्बन्ध २ क्षेत्रसिंह (खेता) ॥ १ ॥ ३ विवाह ४ पुत्र ॥ २ ॥ ५ बालक ६ खेलते हुं ७ बालकपन में ८ पिता ॥ ३ ॥ ९ आरती १० आदि. लालसिंह की ११ पुत्री १२ हाथ में ॥ ४ ॥ १३ मांढ (मंडप) में १४ रसोई (गोठ) ॥ ५ ॥ १५ मांस१६ मद्य में परिपूर्ण होकर १७ पानगोष्ठी (मतवाल) यदुवंश में हुई थी१८ जिसप्रकार कीहुई. वहां महाराणा के उमराव रत्नसिंह ने.

भणी[1] रयण राणभड़ सबळ हाडाँ कुळ सरणो ॥
इण दुलहीरी ओट अनड़[2] हालू १८२।१ ऊबरणो ॥
सुणि इम बरात बिहँसे[3] सकळ जंपि अतुळ[4] चीतोड़ जय ॥
बारहठ तेण बारू बळे पूळो दव दीधो प्रबय ॥६॥
भाखी इम चय भत्ति मत्त बारू आसव मद ॥
अबकी चिंरथी एह हुई चरणदासि१ वंस हद ॥
चित्तगढहि चहुवाण पृथा पीथल१७६ परणाई ॥
राउळ समर सहाय पुहवि साळै जिम पाइ१ ॥
निधिलीधर२ खण खाटूनगर बधियो सो चीतोड़ बळ ॥
इमलाल१८४।२सुतासाँटैअनड़बाजैबचिहालू१८२।१दिकळ ॥७॥
राणसुहड़ राठोड़ प्रथम१ तिण रयण१ प्रंजाळी ॥
बारू२ धरि बारूद बळे२ भौंखरचढि बाळी ॥
कीधो दुल्लह३ कँवर मिरा छकिये अनुमोदन ॥
बहियो भावी बिखम नराँ रहियो सु बिनोद न ॥
जंपि[12]यो सुकवि लोहठ जँ[13]रैं सुता जाइ१ जावैर सगाँ ॥
कुनरेस किसो जिणबळ कहो भू भोगे पाछापगाँ ॥८॥
पृथीराज१७६री पुहवि समरराउळ राखी सो ॥
नरनर उर छानी न सुकवि ग्रंथाँ साखी सो ॥
तेज समरनृप तात गहे जदि छळि मंडलगढ ॥

---

१ कहा कि हाडों के कुल का यह बडा शरणा है; क्योंकि इसी दुलहिन की आड से २ अनम्र हालू का बचाव हुआ है ३हँसे ४अतोल. ५ वृद्ध बारू बारहठ ने अग्नि में पूला दिया ॥ ६ ॥६ बहुत समय से ७ पृथ्वीराज ने अपनी बहिन पृथा को ब्याही. खाटू नगर में ८ खोदकर धन लिया ॥ ७ ॥ ९ राणा के सुभट १०जलाई ११पर्वत पर चढकर इस बात की मद्य में छकेहुए दुल्लह कुमर चेत्रसिंह ने पुष्टि की १२कहा १३ जब ॥ ८ ॥

वेवावद२ रैणागढ२ रैण१७५ रचिया रावणरढ ॥
उणठाम तपे हाडो अनड़ पुर१ गढ२ लै जावद१ प्रमुख ॥
संतापपटकि चीतोड़सिर रहियो एकल वाघरुख ॥९॥
सो कुळवाट सम्हाळि वळे नृप वंग१७६ महाबळ ॥
पुरमंडल१ मुख प्रांत खंडिलीधा आहड़ खळ ॥
अब हालू १८२।१ रण असह कँवर दुल्लह घायलकरि॥
जुगकाका हंणि जेण धरादावी पाणिपँ धरि ॥
मोड़ियो राण हामैं सुमति १८३।१करि सगपण सो हितकियो ॥
सीसोद नतो चीतोड़सिर जाइकवण उणरण जियो ॥ १० ॥
दोहा—आणी सो मुख वात अब, हालू १८२।१वचण सहाय ॥
गडलखमणरै हींगळू१८०१ , हुवो भीड़ तिम हाय ॥११ ॥

सहाय१महाय२अन्त्यानुप्रासः१॥

काका अजयतणी कनी, प्रभावती १८४।१ करि पेस ॥
बूंदीनृप वरसिंह १८४।१ नूँ, अपणायो नय एस ॥१२ ॥
जाणो तो सगपणजुड़े, समकुळ १ वळ २ अनुसार ॥
सुता जनक जै हीणसब, दो भी अधिक उदार ॥ १३ ॥
पृथीपाळ १५६ नृप परणियो, चाहुवाण चीतोड़ ॥
उत्तम राउळ अंगजा, माथेधरि जसमोड़ ॥ १४ ॥
सेनपाल १५७ तिण भूपसुत, किरणादीत कुमार ॥
सरसौंतजियो मूँडि सिर, सीह पछाड़ि सिकार ॥१५॥
कहणाँ जिणकुळरो किसूँ, विरुद १ सुजस २ वाखाण ॥

रावण के समान १हठ करनेवाले ने. सिंह की २भांति ॥९॥ ३कुलमार्ग४आ[illegible]
५आहड़*(अहाड़ा)६मारकर७पराक्रम ॥१०॥ ८सहाय (मदत) ॥११॥अजयसिं[illegible]
की९पुत्री ॥१२॥१३॥उत्तम रावल की१० पुत्री ॥१४॥११गिराकर ॥१५॥१२कथ[illegible]

*आहड़ नामक नगर में राज्य करने के कारण गुहिलोत अर्थात् सीसोदिये क्षत्रियों को आहड़, अहा[illegible]
और आहड़ा कहते हैं ॥

ब्याह नहोतो तो बळे, पूँचै लखता पाण ॥ १६ ॥
नृपहालू १८२।१ आयो नथी, सहि हायन ज्वरसंग ॥
बुंदीनृप बरसिंह १८४।१ सो, आयो मिलण उमंग ॥ १७ ॥
जिण कुवैण सहियो जिको, रहियो बैठो राव ॥
लाल १८४।२ सु चुप अग्रज लखे, ऊफणियो अणमाव ॥१८॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

लखि चुप अग्रज१८४।१लाल१८४।२जन्य १ मत सुहि दुल्लह२जुत ॥
स्वसुता हल्लुव १८२।१ सटि दई सुनि सहि कही न द्रुत ॥
बारू जब बिप्फुरिय कहन संकल्प तबहि किय ॥
पै लोहठ निजपात्र लाल १८४।१ पहिलैं सु ओढिलिय ॥
कुलद्दुव समान ब्याहनकहे तदनंतर खिन कहन तकि ॥
संबोधि कवि सु बारू सहज कहिय लाल१८४।२इम छोह छकि॥१९॥
बारू कुळगति बदहु गर्ब न बदहु बांलिसगति ॥
कविकुल सच्चहि कहत मच्चि तुम रीति सुपै स्रति ॥
चित्तोड्हु तब चबिय कढत प्रतिमा सु च्यारि ४ कर ॥
कवन रानसन कहत सूर१ दायक २ अग्रेसर ॥
बरजन त्रि ३ लोक कर त्रि३क बिहित कर चोथो ४ गलधरि गहत
जो होइ अपर २ हम्मीरजिम मम्कर ममसिर छेदमत ॥ २० ॥
जंपि रान गुन जुग २ हि सच्चि तुम सबन सिरोमनि ॥

॥१६॥ एक१वर्ष से ज्वर सहन करके ॥१७॥१८॥२बरातवालों का मत था सोही दुलहे का देखकर३अपनी पुत्री हालू के४बदले में ५क्रोधित हुआ तभी कहने का विचार किया था परन्तु अपने६पोलपात्र लोहठ ने लालसिंह से पहले ही उस बात को७झेलली. उस बारू बारहठ को८सम्बोधन करके९क्रोध से परिपूर्ण होकर ॥१९॥ हे बारू! चारण लोग सदैव सत्य बोलते हैं इसीप्रकार तुमको भी अपने कुल की रीति के अनुसार सत्यकहना चाहिये१०सूर्य के समान११ कहा था. चार हाथवाली१२मूर्ति निकलने पर१३दातार१४दूसरा ॥२०॥

सिरकट्टन दिय *सपथ भार प्रतिमा जड़ पैं भनि ॥
छिति रजपूतन छाइ रचैं घरघर +बितरन १ रन २ ॥
जिनमैं वंहु रानजिम बढत बहु जिम ÷विटपी बन ॥
श्रद्धाउपेत बढि रानसन जैहैं बहु हम सक्खि जँहँ ॥
कट्टैंन सीस प्रतिमा स्वकरैं तुमहु निवाहक बचन तँहँ ॥२१॥
वारूँ प्रत्ययैं विदित लेहु ताको हमसौं लहुँ ॥
इतहु सूरपन१ अधिक पै सु सत्रुन सम्मुह पहु ॥
वितरन२मित इतवढत प्रथितँ प्रत्यय तस पावहु ॥
अवहि सीस१ छिति२ इतर३ जोहि मंगहु लेजावहु ॥
मंगनहिं मत्थं जो हहु हम कट्टि न दैहैं तो कुलहिं ॥
लग्गहिंकलंक संवर्त्तलग तन१ जाचक२ तुलना तुलहिं ॥२२॥
मस्तक१ अरु भुव२ मैंहु देत मंगहु इक१वा दुव२ ॥
जामातांविनु जुद्ध३ होहु तउ हम दाताहुव ॥
अव मंगहु इक१हु न होहु तो निजकुल वाहिर ॥
दैहैं न जु कहि देन हमहु वाहिर कुलतैं किर ॥
रानके रहहु जो वारहठ प्रधनैं१ दान२ तो अव परखि ॥
कै कट्टि सिरहिं१रक्खहु कथित कै ओढह तियपट२करखि॥२३॥

दोहा ॥

कै प्रतिमासौं उचित कहि, स्वकरैं कटावहु सीस३ ॥
नतो विंडारहिं संढनिंभ कत्थन रान कवीस ॥ २४ ॥

---

* सोगंद (सौगन्द) + दान. यन मैं एक से एक ÷ वृक्ष पढकर होते हैं ऐसे. जिसके हम १ साक्षी हैं. २ मूर्ति ३ अपने हाथ से अपना मस्तक नहीं काटसकती सो उस वचन के निवाहक तुम हो ॥ २१ ॥ ४ हे बारू! इसका प्रसिद्ध ५ सुबूत हमसे ६ शीघ्र लो ७ प्रसिद्ध. मस्तक ८भूमि और ९ अन्य भी १० मस्तक ही मांगना है तो ११ प्रलय के समय तक ॥ २२ ॥ १२ जमाई के विना १३ निश्चय ही हम भी कुल से बाहिर हैं १४युद्ध और दान की अब परीक्षा करो॥२३॥१५अपने हाथ से१६निकालेंगे१७नपुंसक की भांति॥२४॥

बरज्यो नृप वरसिंह१८४११ बहु, ए आसव जड़ अत्थ ॥
बारू पनबोरन बदिय, तदपि लाल१८४१२ धक्कि तत्थ ॥ २५ ॥
अग्रजसन किन्नीअरज, कहत न तुम तियकानि ॥
कन्या कानि न मैं करत, पन *ऋत१ अमृत२ प्रमानि ॥ २६ ॥
जामाता मैं तजत जँहँ, कन्यादित करिबो न ॥
अक्खहिं बुधजन निंदि इम्स, लग्नढिगहिं लरिबो न ॥ २७ ॥

षट्पात् ॥

अग्रज१८४११ मति इम अक्खि पुनि सु बुल्लिय बारूप्रति ॥
ससिर१ विभव२ मम सकल मंगिलेहु ब प्रतीत मति ॥
हठु न जो देहौं न१ समरलैहौं न२ रानसन ॥
तुम चारन तो तकहु परख दातार१ सूरपन२ ॥
लेहु१ कि नलेहु२ हमहिं सु हठ न रान बिकत्थन मोघ रचि ॥
रक्खिय अयोग्य भतिमा पर सु बढ्ढहु सिर रहनौं न बचि ॥२८॥

दोहा ॥

उठि ३अतृप्तहि असनैंसन, रुठि सु बर१ रु बरात२ ॥
सब निंदत आये सिबिरैं, वदत लाल१८४१२ यहबात ॥२९॥
बारुव सोंदा मद्यबस, अति लाघव आपन्न ॥
रक्खिथाल पठयो स्वसिरें, छेदि पटालय छिन्न ॥ ३० ॥

॥ २५ ॥ प्रतिज्ञा का सत्य * करना अमृत के समान है ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ १ मस्तक सहित राणा को विशेष कहने के वचन २ निरर्थक ॥२८॥ ३ भूखा ४ भोजन से ५ डेरों में ॥ २९ ॥ बारू नामक ६ सोंदा बारहठ शाखा के चारण, अत्यन्त ७ शीघ्र ८ आपद्ग्रस्त बारू ने १० डेरे में छाने काट कर ९ अपना मस्तक* थाल में रखकर भेजदिया ॥ ३० ॥

---

*यह कथा वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में जिस प्रकार लिखीहुई है, तिसकी हम यहां पर नकल करदेते हैं. वह यह है. "महाराणा क्षेत्रसिंह के देहान्त का हाल इसतरह पर है, कि जब हांमां हाड़ा के बेटे लालसिंह की बेटी का विवाह इनके साथ करार पाया, तो यह बड़ी धूमधाम से शादी करने को बुन्दी की ओर सिधारे, यह शादी बुंदी में हुई थी, रीति पूर्वक विवाह होचुकने बाद एक दिन दर्बार होरहा था,

उस समय महाराणा खेता ने बातें करते समय बारहठ बारू की निस्बत फरमाया कि हमारे पिता महाराणा हम्मीरसिंह ने इनको अपना बारहठ बनाया है, और इन्हींकी माता बरवड़ी की बरकत से, जोकि देवीका अवतार थी, महाराणा के कब्जे में पीछा चीतोड़ आया, परन्तु यह बारू हमारा किसहुआ अजाचक है. इसपर बारू ने कहा कि मैं राजपूतों को मांगनेवाला हूं और महाराणा के सिवाय मुझको कोई राजपूत पृथ्वीपर दिखाई नहीं देता इसलिये इनके सिवाय दूसरों से नहीं लेता, यह बात हाड़ा लालसिंह को बहुत नागवार गुजरी, परन्तु उस वक्त तो मौका न देखकर कुछ न बोला और जब अपने महलों में गया उस समय बारू को कोई सलाह पूछने के बहाने से अपने पास बुलाया और एक मकान में बन्द करके कहा कि हम भी राजपूत हैं तुमको हमारे पास से कुछ लेना चाहिये यदि नहीं लोगे तो हम तुमको स भोगे. बारू बारहठ ने देखा, कि इस वक्त मैं इनके कबजे में हूं ऐसा न हो कि महाराणा साहिब मेरी मदद करें उससे पहले ही ये बेइज्जती कर बैठें, यह सोचकर उसने दिल में मरना ठानलिया और जवाब दिया, कि आप जो देवें वह मुझे इस शर्त पर लेना मंजूर है कि जो कुछ मैं दूं उस को पहि आप लेवें यह बात लालसिंह ने मंजूर की, तब बारू ने एक भाट के लड़के को जोकि उसकी खिदम में रहता था, कहा कि मैं अपना सिर काटकर तुझे देता हूं यह हाडा को जाकर देदेना, इस सेवा एवज तुझको महाराणा देवेंगे (मशहूर है कि उस भाट के लड़के को महाराणा लाखा ने बारू बार के कहने के मुताबिक चीकलवास गांव दिया) उस लड़केने पहिले तो इनकार किया परन्तु आखिर बारू के समझाने से मंजूर किया, और बारू ने तलवार से अपना सिर काटडाला, उस लड़के (! लड़के की औलाद के भाट उदयपुर के नजदीक चीकलवास गांव में मौजूद हैं) ने बारू के हुक्म के मु फिक उसका मस्तक कपड़े में लपेट कर लालसिंह को जादिया, मस्तक देखकर लालसिंह को बड़ी चिंताहुई सारा वृत्तान्त उस लड़के ने महाराणा से जाकहा, इस पर महाराणा ने निहायत नाराज होकर को घेरलिया, और कई दिनों तक लड़ाई होतीरही, निदान जब बुन्दी का किला फतह न हुआ तो म या खुद किले की दीवार पर जाचढ़े, जहां परये भीतरी लोगोंके हथियारों से मारेगये, लालसिंह व महाराणाकी सेना के शूरवीरों ने मारलिया और हाडा बरसिंह अपना प्राण बचाकर भागा, इस व हाराणी हाडी महाराणा के साथ सती हुई "

इस इतिहास में मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास और बुन्दी के इतिहासकर्ता ठाकु र्यमल्लमें मत भेद है परन्तु हमारी समझ में श्यामलदास का लिखना सत्य है; क्योंकि इतिहास व सामग्री कविराज श्यामलदास को मिली वह सूर्यमल्ल को नहीं मिली थी तथापि इन दोनों इतिह चाहे जिसको सत्य समझें हम इसमें विशेष हठ करना नहीं चाहते क्योंकि अन्तिम परिणाम दोनों क ही है केवल बड़ा भेद इतना ही है कि मेवाड़ के इतिहास में लालसिंह का उसी युद्ध में मा लिखा है और बुन्दी के इतिहास में लालसिंह का जीवित रहना लिखा है परन्तु कर्नल टॉड वगैरा इतिहासकर्ताओं की सम्मति मेवाड़ के इतिहास से मिलीहुई है ॥

लाल१८४।२निकिय सोकहु सु लखि, ओक१हु असुर२हु अनेक ॥
बुल्लिय जे चुक्कत बचन, उनकौं हितगति एक ॥३१॥

पद्धपात् ॥

सु सुनि भूप बरसिंह१८४।१ उपालंभेंहि अनुजहिं दिय ॥
खेत्तलं सुनतहिं खिज्जि स्वसुर मारन संधा लिय ॥
उज्झि मिलन१ आगमन२ स्वसुरगृह सनय३ असन४ सह ॥
ंडि बिबिध मोरछन दियउ रनहुक्रम दुराग्रह ॥
ासीरं रक्खि तोपन निकर गैनोली दिय दल गर्द ॥
रसिंह१८४।१नृपहु समुझाइ बहु हुव दुर्मन छोरी न हद ॥३२॥
दासीन दल अप्प रक्खि तँहँ कहिय धर्मरत ॥
ो न दुलहि लैजाइ मरन१ मारन२ इच्छैं मत ॥
न दुल्लह २ इत अनुज २ वीर तो जुग२ हिं बचावहु ॥
ाकहि बुंदिय भ्रात चबियं बर तुमुल रचावहु ॥
हिं समर्थ २ तोपन हनहिं कुमरहिं इम सुभटन कहिय ॥
ान अलातें लागिलागि तदनु दिसादिस पुर परिसरं दहिय ॥३३॥
ा बारहठ मरन सुनत अंतर अति सोचिय ॥
सुत प्रति लिखिदियउ कियउ खेल हड्ड कुलोचिय ॥

में ही २ उरहना (ओलम्भा) ३ क्षेत्रसिंह ४ प्रतिज्ञा ५ छोडकर ६ आग. ंका ७ समूह रखकर गैनोली नगर के ८ घेरा लगाया ॥३२॥ ९ कहा १० १समर्थ १२ अग्नि. पुर के १३समीप की भूमि॥३३॥पुत्र के नाम १४पत्र* ा१५दुष्ट हाडा ने१६बुरा किया

---

* अपने पुत्र के नाम महाराणा का पत्र लिखना लिखा सो अनुचित है क्योंकि महाराणा हम्मीरसिं तो पहिले ही देहांत होचुका था और महाराणा क्षेत्रसिंह चित्तोड़ के राज्यासन पर बैठे पीछे यह करने को बुन्दी गये थे और यहां ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने यह युद्ध गैणोली में होना लिखा सो भी ीं है क्योंकि मेवाड़ के इतिहासकर्ता कविराज श्यामलदास, कर्नल टॉड, बीकानेर का नैणसी मह इतिहसकर्ताओं ने इस युद्ध को बुन्दी में होना लिखा है कई अनुमानों से भी इन्हीं लोगों का सत्य पायाजाता है क्योंकि प्रथम तो छोटा भाई अपनी बहिन बेटी का विवाह राज्यमहलों में वा में करना अपना इज्जत समझता है जिसका बर्त्ताव इस समय पर्यंत चला आता है इसके उप

तू जो है ममतनय बेर बारूभव बालहु ॥
तब आवहु चित्तोर लहैं चारेनगति लाल १८४१२ हु ॥
कुमरहिं कहाइ इम निजकटैक पठयो खिल्ल गैनोलिपुर ॥
लाल १८४१२ हु रचाइ तोपन लरन परैन मरन मंडिय प्रचुर ।३४।

॥ दोहा ॥

हम्मू १८२१२ नृप तिहिंकालहो, खट्वागेत ज्वरखीन ॥
चवि नृपंकृत सुतचंद १८३१ सौं, पठये स्वभट प्रवीन ॥ ३५॥
बाहिर १ तैं सौंप्रिकैं विरचि, कट्टतहुव ते क्रुद्ध ॥
पुर २ तैं लाल १८४१२ बरातपर, जोरयो तोपन जुद्ध ॥ ३६ ॥
इम जुज्झत हुव अब्दइक १, तजिय रान तनु तत्थ ॥
सुनिं खित्तल ठहे रान सब, जोधन बुल्लिय जत्थ ॥ ३७ ॥
बिगरयो तोपन पुरबरन, पग पग मग तिम पाइ ॥
कल्हि तुरंगनं बीचकरि, हह्नहिं लैहिं गहाइ ॥ ३८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह कुमंत्र आलोचि विखम रजनी सु बहाइय ॥
सुनत बरातिनसौंह कालितैं यह लाल १८४१२ कहाइय ॥

१चारण की गलति हुई सोढी लालसिंह की होनी चाहिये "यह बारू चारहठ चारणों की सोदाबारहठ शाखा के मूल पुरुष और इस टीकाकार (बारहठ कृष्णसिंह) के सोलहवीं पीढी के पुरषा थे" २ सेना ३ शत्रुओं का ४ बहुत ॥ ३४ ॥ ज्वर से दुर्बल होकर ५ चारपाई पर पड़ाहुआ था ६ युवराज बनायेहुए राजा अपने पुत्र चन्द्र से कहकर ॥३५॥ ७ रसियाहं देकर ॥ ३६ ॥ ८ शरीर ॥ ३७ ॥ ९ शहर कोट (शहर पनाह) १० घोड़ों को ११ पकड़ा लेवेंगे॥३८॥ १२ विचार कर १३ प्रसिद्ध

रांत महाराणा जैसे महाराजाओं का आतिथ्य भी बुन्दी में सुगमता के साथ गैणोली जैसे छोटे ठिकाने में होना कष्टसाध्य है इसकारण बुंदी में ही हुआ होगा. तीसरा सूर्यमल्ल ने एक वर्ष पर्य्यंत इस युद्ध का होना लिखा सो भी बुंदी के लिये ही संभव है क्योंकि गैणोली जैसे छोटे नगरमें रहकर इतनेबड़े महाराजाधिराज से एकवर्ष पर्यंत युद्ध करना कैसे संभव होसकता है क्योंकि न तो गैणोली में ऐसा गढ था और न लालसिंह का इतना परिकर था कि वह वहां रहकर महाराणा से एक वर्ष पर्यंत लड़सके इत्यादि कारणों से कविराजा श्यामलदासादि का लिखना ही सत्य है.

ममसम्मुह *जामात आनदेहुन ÷पटु तुम आति ॥
क्यों हत्याबस करहु मरहु तुम टरहु +प्रसभ मति ॥
दुल्लहहु होत दिनकर उदय स्वसुरउक्त इम बचनसुनि ॥
सुभटन निवारि दै निजसपथ[1] पनालिय लाल१८४१२हिं हननपुनि३९
नृपबरसिंह १८४१ हु नियत[2] मरन तिनको बिचारि मन ॥
बुंदीसन चढि बहुरि उभय २ साधक हुव अप्पन ॥
प्रबदिय[3] रानहिं प्रथम जई तुम १ न हम २ रहैं जिम ॥
हडुन हारि हकाइ ससुख प्रविसहु अगाँर इम ॥
बारू कविंद बदलै बहुरि भैंर्म लहहु बपु तुल्य भैंर ॥
आसानकरहु हडुन उपरि तो तुमसों हम चकिततर ॥ ४० ॥
सुनि ममविन्नति सदँय जाहु निजगृह दुलहीजुत ॥
दुहिता बिच को दोस नारि तुमरी कुलीन नुतं ॥
बरसिंह १८४१ हिं इम बिदित खिजि बुल्लिय सठ खित्तल ॥
महिलाजित[9] तुम मंदं[10] मैं न तिम नियत[11] महाबल ॥
प्रभावति १८४१ लत्तं[12] सहि तू सभय रहत तिम न कुलनृप रहैं ॥
बरसिंह १८४१ नयन इतनी बदत दवजग्गिय[13] जनु सब दहैं ॥४१॥
बुंदियपति खिजि बदिय प्रथित[14] तावकं[15] नृपत्वंपन[16] ॥
जनकमाइ[17] जिम जाइ सीर[18] हंकिय १ पटुतासन ॥
सिंचिय २ खेतन सलिल[19] स्वकुल नारिन जीवन सम ॥

---

* जमाई को ÷ चतुर + हठ की बुद्धि से अपनी १ सौगंद (शपथ) देकर ॥ ३९ ॥ २ निश्चय ही मारना जानकर. प्रथम राणा से ३ कहा अपने४ घर(चित्तोड) में. फिर बारूकवीन्द्र के बदले में उनके ६ भार के बराबर ५ स्वर्ण लेलो ॥ ४० ॥ ७दया पूर्वक ८ स्तुति योग्य ६ स्त्रीजित १०मूर्ख ११ निश्चय ही तुम्हारी स्त्री प्रभावती की १२ लात (ठोकर). नेत्रों में अग्नि १३ जलने लगी "अग्नि शब्द पुल्लिंग है परन्तु लोक भाषा में स्त्रीलिंग से व्यवहार किया जाता है" ॥४१॥ १४प्रसिद्ध है १५ तुम्हारा १६ राजापन. तुम्हारे १७ पिता की माता ने चतुराई से १८ हल हांका था. खेतों में १६ पानी सींचा था उसके

तास उदर तवतात हुव सु कुलता न भजैंहम ॥
इतनी सुनाइ रानहिँ उचित भूप १ अनुज २ सत्थियँ भयो ॥
आदित्य चढत घटिका उभय २ लरन चाव दुवरदिस लयो ॥ ४२ ॥
सह बरात सीसोद सप्ति नक्खिय पुरसम्मुह ॥
पानिप वीरश्नं प्रसरि भयो भीरुश्न दुस्सह दुहँ ॥
लखि वरसिंह१८४१ रु लाल१८४१२ दोर सज्जुन पुर दव्वन ॥
हल्लू१८२११ भटगन सहित अभय इंकिय निज अव्वन ॥
विच मिलत बाढ खग्गन वजिग लालहि१८४१२खित्तल आत लखि॥
वलसौंहु अग्गै अभिमन्न्यु विधि अंतिकं तस वढिगो अनखि।४३।

दोहा ॥

सेसँ अरिन वरसिंह किय, रोध जयद्रथ रीति ॥
विरचि तुंमुल भेले विचहि, जन्यँ प्रवीरनँ जीति ॥ ४४ ॥
रतनसिंह रठोर अरु, संभर रूपर सवेग ॥
दुलह१ सत्थ पहुँचे दुवरहि, त्रयश सँय वज्जिय तेग ॥ ४५ ॥
इतर वरातहिँ रोकि इत, सह वंबावद सेन ॥
रचि वरसिंह१८४१हु सिंह रन, अखिलकरे जिम ऐन ॥४६॥

पद्पात् ॥

मिलि इम खित्तलकुमर लाल१८४१२ स्वसुरहिँ समीपलिय ॥
रतनसिंह१ रठोर लाल१८४११ उर भल्ल दुसह दिय ॥
लाल१८४१२ तुपक कर लै सु रतन१ विनुमान गिरायउ ॥

उदर से तुम्हारा १ पिता हुआ था. छोटे भाई का २ साथी हुआ. दो घड़ी ३ दिन चढने पर ॥ ४२ ॥ ४ घोड़े उठाये ५ पराक्रम ६ फैलाकर ७ दुःख ८ घोड़ों को ९ चेलसिंह को. अभिमन्यु की भांति १० सेना से भी आगे ११समीप ॥४३॥ १२बाकी सेना को बरसिंह ने जयद्रथ की भांति रोकी १३. युद्ध १४ बरात के १५ वीरों को विजय करके॥४४॥चहुवाण १६ रूपसिंह. तीनों के १७ हाथ से ॥ ४५ ॥ १८ अन्य १९ हरिण ॥ ४६ ॥

पिसि हय ऊँधोपरत ऊपर परलोक निशायउ ॥
लै काल अवधि पुंखन हुलह स्वसरं स्वसुर हिय तकि हन्यौं॥
हयभाँल लागि सु गलपारहै बामक सय भेदक बन्यौं ॥४७॥

दोहा— परतपरत हय लाल१८४१२ पहु, छुट्टी संगि उछारि ॥
हुल्लह छत्तिय वेधि द्रुत, माहिप रान लिय मारि ॥ ४८ ॥
सुभट भूप बरसिंह१८४१२को, रन दाहिम बलराम१ ॥
अड्डिय बोरमर रानभट, कटि हुवर आये काम ॥ ४९ ॥
पंद्रहसत१५०० इत१उतर परे, समर हड्ड१ सीसोदर ॥
साजि बरात चित्तोरलिय, बिगारिय ब्याह विनोद ॥ ५० ॥
खित्तलसुत वय वरस खट६, नृपहुव लखपति नाम ॥
लिय पनँ बुंदिय लैनको, इहिं सिसुपन उद्दाम ॥ ५१ ॥
बपु नरेस बरसिंह१८४१२कैं, इत छह६घाय लगि अंग ॥
लिय पाटव उपचार लहि, भायो नन रन भंग ॥ ५२ ॥

परलोक को १समीप लिया. २पुंखवारों को कान पर्यन्त लेकर हुल्लह ने ३अपना तीर श्वशुर के हृदय में तक कर मारा सो घोड़े के ४ललाट में लगकर उसके गले में निकल कर बाएं ५हाथ को भेदनेवाला हुआ ॥४७॥४८*॥४९॥५०॥ ६ लाखा नामक ७ प्रतिज्ञा ८निरंकुश॥५१॥ ९नैरोग्यता१०इलाज करने से॥५२॥

*महाराणा क्षेत्रसिंह और हाडा लालसिंह के युद्धमें बंबावदा के राजा हल्लू के बीमार होने के कारण उस के युवराज चंद्रराज को लालसिंह की सहायता पर भेजना लिखकर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने इस पंचमराशि के तेरहवें मयूख के ४२ वें छंद में संवत् १४११ में हल्लू का देवी को अपना मस्तक चढादेना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि उदयपुर के कविराज श्यामलदास ने कई प्रमाणों सहित मेवाड़ के इतिहास वीरविनोद में महाराणा क्षेत्रसिंह के इस युद्ध का संवत् १४३९ लिखा है सो बीकानेर के नेणसी म हता की ख्याति आदि कई इतिहासों से भी उक्त संवत् ही सिद्ध होता है इसकारण सूर्यमल्ल के लिखे हुए इस समय को हम असत्य मानते हैं इसके अतिरिक्त कुंवर क्षेत्रसिंहकी सगाई महाराणा हम्मीरसिंह के समय में बुंदी के राव हामा का करना लिखकर सम्वत् १३९३में हामा का राज्य छोडकर अपने पुत्र बरसिं ह को राज्य देना लिखा सो भी नहीं बन सकता, क्योंकि १३९३ में तो क्षेत्रसिंह का जन्म ही नहीं हुआ था किंतु संवत् १४०० के पीछे महाराणा हम्मीरसिंह ने चित्तोड़ पीछा लिया जिस पीछे लालसिंह का संबंध होना संभव होसकता है सो इस भूल का कारण या तो बड़वाभाटों की लिखीहुई ख्याति से अथवा बुंदी की निज समय की लिखीहुई ख्याति से प्राचीन लेख का कल्पित संवत् लिखना पायाजाता है ॥

लाल१८४।२ स्वसुर जो जयलह्यो, सुगिनि पराजय सोहि ॥
मारक मैं जामातको, दुमन रह्यो इम द्रोहि ॥ ५३ ॥
कृष्णाकुमरि जिहिँ निजकनी, पावक करत प्रवेस ॥
आचर वर तीरथ अखिल, लाल१८४।२ दहिय अघ लेस ॥५४॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यव्याख्यानवेलाव्याहार्यस्वानुजलालसिंह१८४।२ सहितबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह १८४।१चरिते प्रथमप्रणीतपाणिपीडनचतुष्क ४ हायनपञ्चक ५ पूर्वसमुद्भावितलल्लाऽभिधानस्वौरसीक १ पुत्रराणाकुमारक्षेत्रलगैणोलीपुराधीशहड्डलालसिंह१८४।२ पुत्रीपरिणयन १, चतुर्थ ४ दिनसहजग्धिसमासीनापानमदपरवशराणाभटराष्ट्रकूटरत्नसिंहहल्लू१८२।१जीवननिमित्ततदुपयामसमाख्यापन२,प्राक्तनतरडैडुरीपृथापरिणयनप्रक्षिप्तगर्हणाचारणबारू २ तत्समर्थन ३, द्वयश्लाघोद्युक्तरूचपकुमारक्षेत्रलजकुट२जल्पितानुमोदन४,ज्ञाततूष्णीकवरसिंह१८४।१ लाल १८४।२ सौदर्यमल २. तत्मतोलीपालचारणलोहठपृथ्वीराज १७६।१ सैन्यपाल १७६ रत्नसिंह १७६ वङ्गदेव १७९ हल्लू १८२।१प्रभृतिस्वीयस्वामिसामर्थ्यसमुत्कर्षपुरस्सरनानादृष्टांतदुर्धर्षकोटिवाक्यजन्यादिजनप्रसभापातितनिजनिन्दानिराकरण ५, तदनन्तरस्वी

---

१ जमाई का ॥ ५३ ॥ अपनी २ पुत्री को ३ अग्नि में ॥ ५४ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के बचनों में अपने छोटे भाई लालसिंह सहित बुन्दीनरेन्द्र बरसिंह के चरित्र में प्रथम चार विवाह करने पर और पहले जन्मे हुए पांच वर्ष के लाला नामक औरस पुत्र होने पर भी राणा के पुत्र क्षेत्रसिंह का गैणोली पुर के अधीश हाडा लालसिंह की पुत्री से विवाह करना, चौथे दिन भोजन पर बैठे हुए, मतवाल (पानगोष्ठी) में मद्य के वशीभूत राणा के उमराव राठोड़ रत्नसिंह का हल्लू के जीवन में इस विवाह को मुख्य कारण जतलाना, प्राचीन

कृततदधिकशौर्यौ १ दार्य २ लालसिंह १८४१२ राणाशौर्यौ१दार्य२ साम्याभावप्रत्ययप्रक्षिप्तप्रतिमोपरिशीर्षशातनशपथबारूस्वककर्त- नौचित्यसमर्थन ६, प्रत्युतप्रत्यवसानप्रतीपप्राप्तपृतनाप्रपातजन्यजन प्रच्छन्नचारणबारूकरकृत्तस्वशीर्षलालसिंहा१८४१२ र्थप्रेषण७,श्रुतै तदुदन्तराणाहम्मीरबारूवैरवालनवर्जितस्वसूनुसमागमसंरोधन ८, हायनैक १ जीर्णज्वरजर्जरहल्लू १८२१ प्रबोधितपुत्रचन्द्रराज१८३११ प्रेषितभटसौप्तिकादिवहीरणजन्यजनव्यग्रीकरण९, कृतैका १ ब्द कलहप्रेष्यमुखप्रज्ञातपितृपरासुत्वप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यपुनरागत्यबु- न्दीशबरसिंह १८४११ प्रबोधप्रत्यनीकराणाचैत्रश्वशुरशातनार्थगै णौलीदङ्गाभिमुखस्वसप्तिसैन्यसम्पातन१०, बरसिंह १८४१ संरुद्ध स्वसेनरत्न १ रूप २ सुभटद्वय २ सहितराणाचैत्रश्वशुरसहसंयो

डिड्डुर वंशवाली पृथा के विवाह से क्षेपक निन्दा को चारण बारू का पुष्ट क रना, दोनों के प्रशंसा करने पर दुल्लह कुमर चैत्रसिंह का दोनों के कथन को अनुमोदन करना, बरसिंह और छोटे भाई लालसिंह को मौन धारण किये देखकर उनके पोलपात चारण लोहठ का पृथ्वीराज, सैन्यपाल, रत्नसिंह, यज्ञ देव और हल्लू आदि अपने स्वामियों की सामर्थ्य की श्रेष्ठता को आगे करके अनेक दृष्टान्तों से दुर्धर्ष कोटि के वाक्यों से बरातके लोगोंसे हठसे कीहुई अपनी निन्दाको दूर करना, जिस पीछे उनकी उदारताको स्वीकार करके लालसिंहका राणाकी वीरता और उदारतासे बराबरी न करनेकी प्रतीति करानेवाली गडी हुई प्रतिमाके ऊपर मस्तक काटनेका शपथ खानेवाले बारूके लिये अपना मस्तक काटने का समर्थन करना,भोजन करते समय भी उठकर सेना के पड़ाव में पहुंच कर बराती लोगों के छाने चारण बारू का अपने हाथ से मस्तक काटकर लालसिंह के पास भेजना, यह वृत्तान्त सुनकर राणा हम्मीर का बारू के वैर को लिये विना अपने पुत्र को वापिस आने से रोकना, एक वर्ष के जीर्णज्वर से दुर्बल हल्लू के समझाये हुए पुत्र चन्द्रराज के भेजेहुए वीरों का रात्रिवाह आदि युद्धों में बरात के लोगों को व्याकुल करना, एक वर्ष तक युद्ध करके दूतों द्वारा पिता का देहान्त सुन, चित्तोड़ का स्वामिपन पाकर और फिर आकर बुन्दीश बरसिंह के समझाने के विरुद्ध राणा चैत्रसिंह का अपने श्वशुर के मारने के अर्थ गैणोली नगर के सन्मुख अपनी घुड़सवार सेना

धन ११, सोढरत्नैक १ रोपतुपक१ तुरगन्युब्जापात २ संस्थापितर त्न १ रूप २ जामातृजिम्हगविद्धमूर्द्धपतत्सप्तिसादिलालसिंह १८४। २ कासूकृतकालखञ्जजामातृच्चेत्रलसंहरण१२, बुन्दीशसुभटदाधि मवलराम १ राणाप्रवीरभट्टिवीरमदेव १ परस्परप्रहारनिपातन १३, सार्द्धसहस्र १५००स्व १ पर २ सुभटशूरशय्याशयन १४, ज्ञातलाल १८४।१ कासूलीढप्रभुप्राणम्लानमुखजन्यजनविज्ञापितपोतत्वप्रति श्रुतबुन्दीविध्वंसच्चेत्रलकुमारलक्षपतिचित्रकूटाधिपत्यप्रापण १५, प्राप्तक्षतपक्ष ६ बुन्दीशवरसिंह १८४१ पटूपचारपाटवप्रसाधन १६, जामातृमरण १ सुतासहगमन २ संकुचितप्रायश्चित्तपरलालसिंह १८४।२तीर्थाचरणं १७ द्वादशो १२ मयूखः ॥१२॥

आदित एकोनषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥१५९॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

को डालना, वरसिंह से अपनी सेना के रोके जाने पर रत्नसिंह और रूपसिंह दोनों सुभटों सहित राणा चेत्रसिंह का श्वशुर के साथ युद्ध करना, रत्नसिंह के एक भाग को सहकर बन्दूक से उसके मरेहुए घोड़े के अधोमुख गिरने से नीचे दबकर रूपसिंह के मरे पीछे जमाई के बाण से बेधेहुए मस्तकवाले गिर तेहुए घोड़े के सवार लालसिंह का बर्छी से कलेजा बेधकर जमाई को मारना, बुन्दीश के उमराव दाहिमा बलराम और राणा के वीर भाटी वीरमदेव का परस्पर के प्रहारों से माराजाना, अपने और पराये पन्द्रह सौ वीरों का काम आना, मलिन मुखवाले बरात के लोगों से लालसिंह की बर्छी से अपने स्वामी का प्राण जाना और बुन्दी का नाश होना सुनकर बालकपन में चेत्रसिंह के कुमर लाखा का चित्तोड़ का आधिपत्य लेना, छः घाव पायेहुए बुन्दी के पति वरसिंह का उत्तम इलाज, कराने से नैरोग्य होना, जमाई के मरने से और बेटी के सती होने से सिटाकर प्रायश्चित्त करने के लिये लालसिंह का तीर्थ यात्रा करने का बारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १२ ॥ और आदि से १५९ मयूख हुए ॥

पीछैं खित्तल पट्टपति, रहिय लक्ख[1] सिसु रान ॥
तक्क्यो जिहिं मृत तातको, नृप बरसिंह१८४१ निदान[2] ॥ १ ॥
सबनकहिय बुंदीस जो, बढि रोकैं न बरात ॥
गैनोलीपति संगि[3]करि, तो न मरैं तुमतात ॥ २ ॥
मन्नि हड्डनृप मंतु[4] इम, लक्ख रान हठलग्गि ॥
लिय पन बुंदिय लैनकौं, जिहिं सिसुपन रिसजग्गि ॥ ३ ॥
कहिय दंतधावन[5] करौं, बुंदिय काल्हि बिगारि ॥
तो खित्तल ममतातहै, नहिं असती तस नारि ॥ ४ ॥

षट्पात् ॥

पंचन यह पन जानि कहिय बुंदिय बहुकोसन ॥
हठी लरन पुनि हड्ड रचहु बय वल यह रोस न ॥
लंघि[6] तदपि नृप लक्ख दुमन कहिय दूजो[7]दिन ॥
तब किय कपट बितानँ बालबंचन[8] मिलि मंत्रिन ॥
बुंदिय सदुर्ग कृत्रिम[9] विरचि भट बिच परिचँय[10] रहित भरि ॥
तिन कहिय सज्जि तोप रु तुपक रवि जुगोलन वाहहु बिथँरि[11] ॥ ५ ॥
कै[12]तिन तत्थ यहकहिय बालनृप कुतुक[13] विधायक ॥
कोऊ आश्रितकहहु हड्ड तिहिंदुग्ग सहायक ॥
तनुजहिं दै जबताजिय राज्य हल्लु१८२१ मरिबे रन ॥
कुंभकरन१८३१२ तसकुल्लर मन्नि अग्रज अवनीमन ॥
अप्पबल भिन्न खँट्टन[14] इला रान पटा लहि तँहँ रह्यो ॥
भ्रातन समान जिहिं भाग दिय चंद्रराज१८३१ सोहु न चह्यो ॥ ६ ॥

दोहा ॥

---

१ लाखा २ कारण ॥ १ ॥ ३ बर्छी से ॥ २ ॥ ४ अपराध ॥ ३ ॥ ५ दातुन ॥ ४ ॥ ६ लंघन (उपवास) करके. छल से ७ डेरे खड़े किये. बालक को ८ ठगने के लिये ९ बनावटी. विना १० पहिचान के ११ फैलाकर ॥ ५ ॥ १२ कितने ही लोगों ने १३ खेल के लिये. जुदी भूमि १४ उपार्जन (खाटवा) करने के लिये

हुव जु रान हम्मीरकै, सहआदर *सामंत ॥
वीर सु गो न वरात विच,असहन विरस उदंत ॥७॥
इत१ मृत हुव हम्मीर१ अरु, उत२ खित्तल२ वस आयु॥
चित्तै निज प्रारब्धवल, जँहँ सुधाहु न न जायु ॥ ८ ॥
रान लक्ख तव भट्ट रहि, लिय पन बुंदिय लैन ॥
कुम्भ१८३१२हिं तँहँ प्रतिभट करन, सीसोदन किय सैनं ॥ ९ ॥

पट्पात् ॥

कुम्भकरन१८३१२तँहँ कहिय स्वीय संमत सीसोदन ॥
नृप सिसुत्व सव निरखि इष्ट सव्वहिं लहि ओदनं ॥
हेतु नाँहिं यँहँ हट्ठ१ नाँहिं सीसोद निहारहु ॥
कृत्रिम बुंदिय कलह विजय रुपि दे सु विचारहु ॥
इक१ हट्ठ मैंहु लिन्नों इहां हिंगुलु१८०१२जिम आश्रय हरखि ॥
ध्वंसनं अभीप्ट मम तो धरहु कृत्रिम बुंदिय करकरखि ॥१०॥

दोहा ॥

सिसु लखि जो संमुभ्झइवो, नृपको तो नहि नीति ॥
इतर भटन रक्खहु इहाँ, पालहु जो इत प्रीति ॥११॥

पट्पात्

सीसोदन नर्मसह प्रसभ वल कुंभ१८३१२ पठायउ ॥
सो कछु तोपनसहित अनखि कत्रिम गढ आयउ ॥
गोले न दये गैल पटकि तोपन तव पैसे ॥
किय सम्मुह जयकरन अखिल संग्रह सजि ऐसे ॥
सत्थसोंकह्यो तुपकन सवहि गोली दुवरदुव२ गेरिकैं ॥
इक१ रानटारि मारहु अरिन हित बुंदिय जय हेरिकैं ॥१२॥

॥ ६ ॥ * उमराव ॥ ७ ॥ ८ ॥ १ मुकाविला करनेवाला २ इशारा ॥ ९ ॥ ३ भात ४ नाश अर्थात् मुझे ही मारने की इच्छा है तो ५ हाथ खींच कर ॥ १०॥ ६हँसी (मस्करी) के साथ ७ हठ से ॥ १२॥

दोहा ॥

लरन संग पठवनलगे, इतरहु सुभट अनेक ॥
कुंभ १८३।१ बहुत मैंही कहि रु, आयो न लयो एक ॥१३॥

षट्पात् ॥

मनबिचारि दृढ मरन सत्थ कुंभ१८३।१हु निज सज्जिग ॥
रुट्ठि चढत सिसु रान बंब१ आनक२ उत बज्जिग ॥
गोलन विनु नालिगन चले सीसोद चलावत ॥
नगये जोलौं निकट इतहु तोलौं तिम आवत ॥
लहि ढिग बचाय सिसु लक्खकौं दहन तोप१तुपकन२ दगिय॥
ताम्रपर्न विद्ध नर१गज२तुरग३लोटि लुत्थि लुत्थिन लगिय॥१४॥

दोहा ॥

सोई होतहि इक१ सकल, सहँस१००० चमूँ इक१संग ॥
गो भजिहू रहि रानगज, जुत खिल बल तजि जंग ॥ १५ ॥
कढि गढतैं सु१८३।२हु आसि कराखि, परयो सभट तसपिट्ठि ॥
सावधान सीसोदव्है, हुतहि मुरे धारदिट्ठि ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

किते कहत यँहँ कुंभ१८३।२ कामआयउ तिलतिलकटि ॥
जंपहिं कति यहजानि रान जननी सिराह रैटि ॥
स्वभट१ सूनु२ समुझाइ बीर यह कुंभ१८३।२ बचायउ ॥
रक्खत तदनु रह्यो न अनंखि बंबावद आयउ ॥
ज्वरखिन्न जनक हल्लू१८२।१हु जिहिं अंस थप्पि लिय लाइउर॥
नृपरामं२०३।४लखहु कुलरीति निज पहु हड्डन पानिपं प्रचुर॥१७॥

दोहा ॥

---

१३ ॥ १नगारे २ढोल ३तोपें और बन्दूकें ४लाल होकर ॥१४॥१५॥१६॥ ५ कहकर ६जिसपीछे ७ क्रोध करके ८ पिता ९कन्धा १० हे राजा रामसिंह! ११ पराक्रम १२बहुत ॥१७॥

कृत्रिम बुंदिय ढाहि किय, रुचि भोजन इत गान ॥
इत रहोरन अव उदय, पिक्खहु *नियति प्रमान ॥ १८ ॥

प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

सचरणगद्यम् ॥

पहली अठी खेड़रोठाकुर राठोड़ बीरमदेव सळखाउत भतीज जगमालरोकाढियो ग्राम सेलावारा माँगळिया ठाकुर राणगदेवरे वास आपरी पूर्वपत्नी चावोड़ी १ सहित देवराज १ प्रमुख आपरा च्यारि४ही पुत्राँनूं राखि तिकणरी पुत्रीनूँ बिवाहि साथलेर सिंधु देसरे अंतर्गत भाड़ंगनेररा जोइयाँरे जाइ आश्रितरहियो ॥

सो उठारे अधीस दलैनामजोइये आपरा बैभवसमेत आधीआ वनी देर आगैं कीधो आपराबचावणरो उपकार बिचारि बडाआ दररैसाथ भेलियो तोभी महामूढ वारूणीरैवसीभूत अनेक उपद्र व मचाइ ऊबटही वहियो ॥

उठेही इणरे माँगळियाँणी मैं पुत्र चूँडारोजन्महुवो जिकणरीही वधाईमैं जाणैं ढोलाँरैं आँटैं जवनाँरी निमाजगाहरा फरासबढाइ १कवराँरैमाथै वाराहविणासि२ दलाराधावड़नूँमारि३एक१दुर्ग उ पेतँ आधीहूँ अधिक इळा अपणाइ४ अपराध संग्रहमैं उधारि न राखी ॥

जरैं स्वामीरा सम्मत बिहूणाँ भी जोइया जिकणनूँ मारणा च लाया जठेजठेही दलै उणारोकीधो उपकार चौंताइ रोकियाँ केड[१०] आपरो जामाता[११] मारिलीधो५ तोभी समस्तहूँ सहणीरी[१२] भाखी ।१९।

देऊनाम दलारीपुत्रीरा पतिरो प्राणलीधो जरैंतो जोइयाँ जमा ईरो वैरवाळणरैकाज आपरा प्रभूरैप्रच्छन्न प्रहररैप्रभात बीरमदेव

---

* निश्चय ॥ १८ ॥ १ आदि २ आधीन ३ बिना मार्ग ४ निमाज पढने की जग ह (मसजिद) में सूवरों को ५ मारकर ६ दूध चूँखनेवाले बालक को ७ स हित ८बाकी ९बिना १०पीछे ११जमाई को १२सहन करने के लिये कहा॥१९॥

नूँ जाइघेरिलियो ॥

जठै बढणा१*चाढणा २ नूँ बुलावणारो बंब बाजियो सुणि माँ गळियाँणी मालिकरा माथारो उसीसो हुवो आपरो वामेतर बाहू अवेरियो ॥

हाथकढताँही निद्रानिवारि सस्त्रादिक संगररी सामग्रीमैं सजहोइ उणहीसमय सळखाँउत बीरमदेव समाधि बड़वाँरी पीठिआयो ॥

अर आपरी रजपूताँ उपेत पाहुणाँ नूँतो मानणारो दुंदुभी दिवाइ बडेवेग साम्हों चलायो ॥ २० ॥

जिणसमय राठोड़ चंद्रहासँ चलावणमैं कुमीं न कीधी परंतु महापापाँरा करणहारतो श्री परमेस्वररा प्रपंचमैं जीतीहूँ न जावै ॥

जिणथी स्वतंत्र संभवमैं एक आपरा आलयहूँ काढिदेणरो उपकार करि जिकणरा सीलिंयाँमैं सहियो न जाइ इसड़ा अनेक अनर्थ कुमाइ मनेंमत्ते बहै तिकणरो अंततो इसड़ो खटावै ॥

जिणकारण जुड़ताँही अनेकाँ साथै वारहोइ संगरमैं सबठाम आपरा अनीकरा उत्तमंग उडता जोइ जोइयाँपहली आपरी सिखाई घोड़ी समाधिनूँ गेहररा ढोलरै नाचलगाइ अरिनूँ आयत्तकरि समीपलीधो ॥

अर धीरण१हाँसूर२अरड़कमल्ल ३ जीवराज ४ बीजाबैरियाँनूँ बाँढै चखावता समीपजाइ जगमालरैछानैं काढिदेणारा एक१उपकार माथै खँमिया आपरा अनेक प्रत्युपकार चीताइ आवर्त १ मनुख

---

*मरने मारने को १ उपधान (तकिया) २दहिना हाथ ३ सलेटा ४ सलखा का पुत्र. समाधि नामक ५ घोड़ी की पीठ पर चढा ६ नगारा॥२०॥ ७खड्ग ८संसार में ९.जन्म सफल करके; अथवा यश सहित १० बदले में; वा प्रत्युपकार में ११ स्वतन्त्र चले. अपनी सेना के १२ मस्तक १३ वश (काबू) में १४ तलवारों की धारोंका स्वाद चखातेहुए १५सहन कियेहुए १६ स्मरण कराके १७गोल कुंडा (गोलाकार घूमना) आदि

अनेक *अनुकरणांरा नाचकरती × अर्वतीनूँ विश्रामरो बोलदेर जोइये धीरण राठोड़रैकंठ खड्गरो आघातदीधो ॥ २१ ॥

धीरणरा पाणिरा महारणहूँ वीरमदेवरो मुंड अछंट उडिपड़ियो तोभी राठोड़रो रुंड अनेक म्लेच्छाँरा मुंड मेतारा झुंडरै उपहार करि नीठिनीठि चेष्टा विहूंण थियो ॥

सो सुणताँही तिणही अवसेस तमीरा अंधकारमैं माँगळियाँणी स्वकीयसुत चूँडासमेत आपरी वसीरो एक १ जाट ओठीपै साथ आयो तिकणरै वांसंत वैठि वडेवेग देसरो मार्गलियो ॥

देसमाँहि आवताँही ओठीनूँ सीखदेर विपत्तिरा मैंहार्णवमैं भैग्न माँगळियाँणी पुत्रसहित वेसरो विपर्यासकरि कैराऊ ग्रामरा ठाकुर रोहड़ियावारहठ आल्हारै वास जाइरही अर थोड़ादिनाँमैं वडाविश्वासरैसाथ मैंहानसरी मालिकहोइ चारणरी चाकरीमैं चित्तलगाइ चातुराईरी रीझ चही ॥ २२ ॥

अठी वीरमदेवनूँ जवनाँरा मारियाजाणि ग्रामसेनावाहूँ चलाइ राठोड़ गोगे वीरमदेवोत आपरा वापरा वाढणहारनूँ विसाँरि वि

*अनेक प्रकार के नाच करतीहुई×घोड़ीको ठहर ने के बोल देकर ॥२१॥१होथ के २ दूर जापड़ा (उत्तम प्रहार के होने से दो टुकड़े होकर खड्ग के रक्त की छांट नहीं लगे उसको मरुभाषा में अछंट कहते हैं) ३ भेट. चेष्टा ४ विना ५हुआ. पाकी की ६ रात्रि के अन्धकार में ७ अपने पुत्र ८ वसती का ९ ऊंट पर "ओठी नाम ऊंट के सवार का है परंतु यहां लक्षणा से ऊंट का ग्रहण किया है" १०ऊंट पर वैठकर ११ वडे समुद्र में १२ डूबीहुई. वेश १३ वदलकर १४ आल्हा नामक रोहड़िया वारहठ शाखा के चारण के *केराऊ नामक ग्राम में जा रही १५ रसोई की ॥२२॥ पिता के १६ मारनेवाले को १७ भूलकर

*इस गांव का नाम काळाऊ भी प्रसिद्ध है जिसके प्रमाण में स्वयं आल्हा का कहा एक दोहा है ॥

दोहा ॥ चूंडा नाँव चीत, काचर काळाऊतणाँ ॥ भड़ थायो भैं भीत, मंडोउररामाल्हियां ॥१॥

मंडोउर लिये पीछे चूंडा आल्हा वारहठ को भलगया था जिसपर आल्हा ने चूंडा के नाम यह दोहा लिखभेजा था जिसपर आल्हा का वडा मान वढाया गया ॥

दोहा शब्द स्त्री लिंग है परंतु लौकिक में पुल्लिंग से व्यवहार किया जाता है इसकारणसे पुल्लिंग लिखा है.

नाँही अपराध *भाजड़मैं भीत संकटरहेहैं सपत्नीकसूता जोइया

दलानूँ जाइ हँणियो ॥

सोभी आततांइनूँ उबारि बापरो बचावणहार बाढियो तोभी

अद्वितीय २ वारैं हुवा सुणि किताक कविलोकाँ तिकणराही प्रहा

ररो प्रकर्षणाँ भणियो ॥

जूँड़ा १ जोड़ाँ २ पर्यंक ३ पेषणी ४ पांत्र ५ पुंजैं काटि करवाल

पुहँवीमैं पैठो तोभी मंतु बिहूणा जनकरो मिल मारणमैं म्हाँरोतो

मन आघातरा उत्कर्ष नमानैं ॥

पछै जिणानूँ जिसड़ी दीसै सो आप आपरा अन्तहकरणमैं इसड़ी

ही गहानैं ॥२३॥

जिणकेड़ै जोइयाँरी बरात आइ दलारो मरणासुणि तिकणनूँ

मण्डोदर बाँसैलागि गोगानूँ मारगमैंही जाइलीधो ॥

अर आपसमैं चन्द्रहास चलाइ दो २ ही तरफरा प्रबीराँ उठैही

देहरो त्याग कीधो ॥

अठी बारहठ आल्है किताककाळमैं माँगळियाँणानूँ बीरमदेव

री जोड़ीयत जाणि तिकणरा पुत्र चूँडानूँ द्वादस१२ ग्रामाँरा अधी-

स आपरा जजमान ईंदा पड़िहाररी पुत्री बिबाही ॥

अर ईंदाँहीं आपरा जमाईरै साथहोइ पहली हाडानरेस हालू

१८२१राजीतिया ब्रह्महत्यारा करणहार पड़िहार राजाहम्मीरनूँ धुरै

हवाल काढि राव चूँडानूँ मंडोउररो महीप करि एकता निबाही॥२४॥

*भगने में भय पायेहुए अपनी स्त्री सहित १ छकड़े (गाडी) के नीचे सोयेहुए २मारा ३*वधोद्यत (मारनेवाला) ४प्रहार ५ श्रेष्ठता कही ६ जूआ (बैल जुतने का काष्ठ) ७ स्त्री पुरुष दोनों ८ चारपाई ९ चक्की और १० थाली के ११ समूह कटकर १२ खड्ग १३ भूमि में घुसगया तो भी बिना १४ अपराध. प्रहार की १५ अधिकता. जिसको१६ जैसी दीखे वैसी १७ कहै ॥ २३ ॥ १८ छीन करके १९ बिवाहिता स्त्री २० बुरी तरह ॥ २४ ॥

*श्लोक ॥ अग्निदो गरदश्चैव शस्त्रपाणिर्धनापहः । क्षेत्रदारापहारी च षडेते ह्याततायिनः ॥१॥

जेंरैं हम्मीरतो जेसलमेरा भाटियाँरी सीमामैं वारू १टेकरे २ नाम नगर जाइ निवासकियो ॥

पछैं तिणरोही वंस वघड़ाउताँरो विध्वंसकरि सोही हड्डाधिराजरो स्वसुरकुळ नागोध१ ऊँचाहेड़ा२ पर्यंत पूर्वरोप्रांत दावि उठीही प्रवर्त्तथियो ॥

इणरीति हम्मीर कढियाँकेड़े राठोड़ रावचूँडो बीरमदेवोत मंडोउरनगरमैं आपरी राजधानी जमाइ रहियो ॥

गाधिपुर छूटाँपछे इणसमयसूँहीं फेर राठोड़ाँ प्रतिदिन वर्द्धमान राजपाइ चीतोड़१ नरउर२ आमेर३ अजमेर४ पाटण५ दसोर ६ वंवावदा७रे समान भूपभाव गहियो ॥ २५ ॥

दोहा ॥

लीधो मंडोउर लड़े, इम चूँडेनृप एँण, ॥
पुत्र सता१रणमल२प्रमुख, जणिया चउदह१४जेण ॥ २६ ॥

सचरणगद्यम् ॥

जिणसमय अठी म्हाँरावंसरा विरोचन मिश्रण चंडकोटिरा कुळमैं प्रपितामह विजैसूर मंडोउरथी आथमणीदिसा वाढमेर १ कोटड़ा२ कनैं वोधन्यायी १ भाद्रेच २ नाम नगर निवासकरै जठै खड़रो महादुकाळ पड़ियो जाणि आपरी वसीरा लोकाँसहित छकड़ाँमैं भारघलाइसकुटुँब सिरोही१ जाळोर२ गुजरात३रै काँकड़ेंरैं तृण नेपै देखि आइरहिया ॥

जठै सरवहियाँरा वारहठ वीटी समुद्रसिंहरा साँसण हूँता जिकण सुणताँही मिलणनूँ डेरैआय समतारा गिनायत जाणि प्रीति

१जय२ये गूजर, जिनकी कथा आगे आवेगी३नाश४कन्नोज५वढताहुआ (वड़ा) ६मंडोउर में चूंडा का राज्य होने का सम्वत् मारवाड़ के इतिहास में १४५१ लिखा है सो इसग्रंथ के लिखेहुए संवत् से नहीं मिलता'६राजापन॥२५॥७इस चूंडे ने८ आदि॥२६॥९तृण का१०सीमा पर११उत्तम पैदाइश१२घाटी शाखा के चारण.

रा पेचैमैं गाढा गहिया ॥
बाटी समुद्रसिंह आपरी सीमाँ मैं बसीरा लोकाँसहित मोसणाँ
रो गोळै दिवाइ गिनायताँनूं आदररैसाथ राखिया ॥
अर जळ१ जीमण२ आखेट३ आदि बिहारक्रीड़ामैं सामिलरहि
स्नेहरा उदर्करा अनेक अमोघफळ चाखिया ॥ २७ ॥

॥ सौराष्ट्री दोहा ॥

हद समुद्ररो हेत, बिजयसूर दीठाँ वळे ॥
स्व बहिणि देय समेत, बाटीनूँ दीधी बिदित ॥ २८ ॥
बिजयसूररी बाम, आठ ८ मासहूँ दिन अधिक ॥
धारियो गर्भ सुधाम, वणियो ताँदि भावी बिखम ॥ २९ ॥

॥ षट्पात् ॥

एकसमय आखेट वळे साळा१ बहणोई२ ॥
आवे हणि ससे एक१ प्रीति मनुहारि पंजोई ॥
सो लेजावण सदन पुंणो मीसण१ बाटीरप्रति ॥
उठै सिद्धपळै अम्हैं मंगि जीमण चहियो मति ॥
बंदियो समुद्र कीजै बिबिध एक महानसैं आपरै ॥
हूँ आइ गोळसामिल हुवाँ कराँ असणाँ इम मनकरै ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

जदि मीसण लै सस जिको, आप गोळ द्रुत आइ ॥
बणावायो जिण पळै बिबिध, मेळणाँ उचित मिळाइ ॥ ३१ ॥
बाटी घरपूगाँ वळे, आवण आळस आणि ॥

---

१ दाव में २ पड़ाव (डेरा) ३ शिकार ४ भविष्यत् काल के भाग्यफल ॥ २७ ॥ ५ फिर अपनी बहिन को दहेज सहित बाटी को दी ॥ २८ ॥ ६ स्त्री ७ उस समय ॥ २९ ॥ ८ आये. एक ९ खरगोस मारकर १० प्राप्त की ११ कहा. पकाहुआ १२ मांस १३ मैंने १४ मांगकर १५ कहा. आपकी १६ रसोई में १७ भोजन ॥ ३० ॥ १८ शीघ्र १९ मांस २० मुसाला ॥ ३१ ॥

गेहकरणा सस मंगियो, जीमण दंपति२ जाणि ॥ ३२ ॥
कढ़ियो मीसण सस सकळ, चूल्हाँ दीध चढाइ ॥
अब नवणै भोजन उठे, अठै कृपाकरि आइ ॥ ३३ ॥

॥ सचरणागद्यम् ॥

इणरीति मीसण विजयसूररो वचनसुणि वाटीरै अनुचर पाछो जाइ जथातथ वातकही ॥

सो सुणतांही भावीरैप्रमाण वारूणीरै वसीभूत हुवे समुद्रसिंघ त्रिपरीत व्यवहार वतावणरी टेक गही ॥

गोळमैं कहाई कै तो पळरा देगचा उठाइ म्हाँरा आदेसरै आधीन हुवो मीसण वडे वेग अठै आवै ॥

नहींतो वळसमाहि म्हाँनूं चोड़ेखेत चंद्रहास चखावै ॥ ३४ ॥

इसड़ी कहि धरारोधणी वाटी समुद्रसिंह आपरासाथनूं सज्जक रि उणहीं सैंझ्यैरैसमय मीसणाँरा गोळऊपर चलायो ॥

जरैं विजैसूरभी भावीनूँ दोसदेर आपरा आउधीक पूँतांरि सा म्हाँही आयो ॥

वाटियाँ १ रा वीस २० मीसणाँ २ रा पंद्रह १५ प्रवीर पड़ियाँ पछैं वहणोईरा महारथी साळारो सीस उडियो तोभी विजयसूररो रुंड तीन ३ वैरियाँनूँ वाढि खेतपड़ियो ॥

तिणपछैं गोळरोलोकभी मोरछामांडि तुपक १ तीराँ २ रो वेझो वणाइ पहरदोइ २ सूधो लड़ियो ॥ ३५ ॥

आसवरो उतारहुवाँ समुद्रसिंहनूँ तो उणरा पुरोहित१मोतीसरैं२

---

१ स्त्री पुरुष के जोड़े से जीमने के लिये ॥ ३२ ॥ २ सम्पूर्ण खरगोस को ॥ ३३ ॥ ३ जैसी थी वैसी ४ मद्य के ५ हठ पकड़ा ६ मांस का ७ पकाने के पात्र विशेष ८ हुक्म के ॥ ३४ ॥ उस ९ भूमि का स्वामी.१० संध्या के समय ११आयुध धारण करनेवाले लोगों को १२ ललकार कर (उत्साह बढाने के वचन कहकर)१३निशाना बनाकर॥३५॥१४चारणों के याचकों में एक जाति है.

प्रमुख संकोचरा लोकाँ बीचमैं आइ पाछो मोड़ियो ॥

अर प्रभात हुवाँ केड़ै गर्भवती पत्नी आपरा अनुगाँनूँ[2] काठाँचा ढणारो निदेस देर धणीरा अंचैळहूँ[3] अंचळजोड़ियो ॥

जिको सुणि पूरा पछितावासमेत समुद्रसिंह आपरी पत्नी इसड़ी विजयसूररी बहिणी बरजणानूँ गोळमैं भेजी जिकण कहियो बाभी पहिली मोनूँ मारि पछैं चितारीतरफ चरणादीजै ॥

अर नहींतो बीररो वंस राखि प्रसूतिकाळरै अनंतर वेदरा वचनरै अनुसार विधानपूर्वक सहगमण कीजै ॥ ३६ ॥

इसड़ो बचन सुणि बिरोधरो क्रोध बिसारि विजयसूररी जोड़ायत करमैं कटार झालि साहस[4] ठवणरैकाज रीढकरै[5] समीप आपरी पीठ फाड़ि नेत्रमूढ[6] मूर्छितबाळकनूँ काढि नणादरै हाथदीधो ॥

अर अब इणारो पाळणो थारै अधीन इसड़ी कहि बाळकरो नाम पीठहवो रखाइ सहगमणकीधो ॥

जिण बाळकनूँ आपरी भुवा मँजारोदूध[7] देर नीठिनीठि पाळि दस १०वर्षरा वयमैं आणियो ॥

जिण अर्भक[8] लाडमैं मत्त एकणदिन कंदुकरी[9] क्रीड़ाकरताँ आघातरो अपराधमानि कोई ग्राम्यस्त्रीरा कहणहूँ फूँफा समुद्रसिंहनूँ आपरा बापरो मारणहार जाणियो ॥ ३७ ॥

जरैं उठाहीसूँ पीठहव भुवारो भवनछाँडि कोईक ओघड़ अतीताँरी[10] जमातिरैसाथ वेड़ीरै[11] बळ खाडीलाँघि हिंगुलाजदेवीरै धाम पूगियो ॥

---

१ सेवकों को २ जलाने का हुक्म देकर. पति के ३ वस्त्र से वस्त्र (गठजोड़ा) लगाया ॥ ३६ ॥ साहस ४ ठहरने के कारण ५ पीठ की हड्डी के पास से पीठ को फाड़कर ६ मिचेहुए नेत्रवाला ७ बकरी का दूध देकर ८ बालक ९ गैंद खेलते समय ॥ ३७ ॥ १० संन्यासी विशेष जिनको खाखी भी कहते हैं उनकी जमात के साथ ११ नाव के बल से

अर अनन्यभक्तिरा प्रभावकरि जगदंबारो प्रसाद पाइ बारह१२ वर्षरा वयमैं पाछोआइ फूँठा समुद्रसिंहनूँ मारि आपरा पिता विजेसूररो वैर लियो ॥

पीठव बारोठनूँ मारि तिकणरो मस्तक ले ढोलियो जाणि म दापतिकता आपरी भुवा सहगमणरेकाज मांगियो तोभी मस्तक पाछो देर न आयो ॥

जरै सतीरासापहुँ कलेवरमैं कोढपाइ पुष्कर१ प्रयाग२ प्रमुख तीर्थोंमैं न्हाइ औरभी औषधादिक अनेक उपाय करिथाको परंतु पाटव न पायो ॥ ३८ ॥

इणसमय अठी कुँवर जगमालरो काको वीरमदेवरो अग्रज परमेश्वररा परमभक्त राठोड़ जैतमाल सळखाउत सुमियाणैराज करै जिकण बाळकपणरैहीं चारणनूँ उरसौ लगाइ मिलणरो पैण लीधो जिकणथी बारहठ वंशरा बाळकभी दीठाँ गळेलगाइ पिता रै प्रमाण प्रीतिधरै॥

जिणसमय पंद्रह १५ वर्षरा वयमैं मीसण पीठव भ्रमतैकोढ सुनियाणै आयो जिकणनूँ राठोड़ जैतमाल नटताँनटताँभी प्रेमरो प्रवाहजणाइ उठि मिळियो ॥

१ पादान; वा मस्तक २ चला ३ सती होने के लिये ४ शरीर में ५ आदि ६ औषधना ॥३८॥ ७ मलण्या का पुत्र ८ हृदय से लगाकर ९ नियम. चारणों में १० बारहठ संज्ञा केवल सौदा बारहठों और रोहड़िया * बारहठों को ही है परन्तु यहां सामान्य दृष्टि से सम्पूर्ण चारणों को बारहठ लिखे हैं.

*सीसोदिया क्षत्रियों के नेग सौदाबारहठ शाखा के चारणों के और राठोड़ क्षत्रियों के नेग रोहड़िया शाखा के चारणों के होने के कारण इन्हीं दो शाखाओं को बारहठ (द्वारपर हठपूर्वक नेग लेने) की पदवी मिली है जिसके लिये यह दोहा भी प्रसिद्ध है ॥ दोहा ॥ सोदा नैं सीसोदिया, रोहड़ नै राठोड़ ॥ दुरसावत नैं देवड़ा, ठाना ठाकीठोड़ ॥ १ ॥ इसमें देवड़ा शाखा के चहुवाणों के नेग दुरसा के वंशवाले आढ़ा शाखा के चारणों के हैं उपरोक्त दोनों शाखा गौण होने के कारण दुरसावतों को बारहठ पदवी नहीं है और अन्य क्षत्रियों के नेग भी प्रायः चारणों के ही हैं परन्तु किसी क्षत्रिय वंश के साथ ऐसा दृढ़ नियम नहीं है कि जैसा सीसोदियों के साथ सोदाबारहठों और राठोड़ों के साथ रोहड़िया बारहठों का है इसकारण बारहठ संज्ञा इन्हीं की है.

जिणमहाभक्तरो अंगसंगहोताँहीं आपरोकोढ गमियो जा
भीसण राठोड़नूँ दसमाँ१०सालिग्राम१ इसड़ो बिरुददियो ॥३९॥
भक्तिरै प्रभाव जैतमाल औरभी इसड़ा अनेक दुष्कर क
करि आपरो नाम ख्यातकीधो सो अजेभी भक्तलोकाँरी नामाव
ळीमैं प्रधानता जणावै ॥
किताक काळपछैं अठी वंबावदारै नरेस हालू १८२।१ अने
उपायकरिथाको तोभी रणमरण न पायो जाणि प्रतिदिन बाद्र्ध
कनूँ बर्द्धमान देखि वर्षतीन३रा निरंतर ज्वरथी पाटवँ पाइ
राज विक्रमरा चउदहसैएगारह१४११रा सकमैं आपरो सीस जो
गिणीनाम देवीनूँ चढाइ दीधो ॥
जिणकेड़ै इणरा पुत्र चन्द्रराज १८३।१ रो राज सीसाड़ाँ चो
तरफसूँहीं दावणरो बिचारकीधो ॥ ४० ॥

दोहा ॥

सक तेरह इगुणीस१३१९ सक, हालू१८२।१ संभव होण ॥
भू नव गुण ससि१३१९ भाँजियो, भड़ मंडोउर भोण ॥ ४१
सक मयंक भू सक्करी१४११, देवीनूँ सिर दीध ॥
कीधा जिण पगपग कळह, लेख इसै सृत लीध ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वी ९
चराडासि १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडास्थिपाल १५५ वंश्य नु
श्यविहितव्याख्यावेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवरसिंह १८४।१

१ परमेश्वर के दसवें अवतार का बिरुद दिया (जैतमाल के वंशवाले राठोड़ को चारण लोग अब भी दसवां शालिग्राम कहते हैं)॥३९॥ २ बुढापे को ब त हुआ देखकर ३ नैरोग्यता पाकर ॥ ४० ॥ विक्रम के शक के तेरह सौ के ४ सम्वत् में ५ जन्म हुआ ६ भवन ॥ ४१ ॥४२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी च ण कुल वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की

मयकप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यराणालक्षपतिं १ राष्ट्रकूटवीरमदेव २ तत्पुत्रचुण्ड ३ तत्पितृव्यकजैत्रमल्ल ४ द्वारहठमिश्रणपृष्ठभव ५ प्रवृत्तिप्रस्तवनेशैशवमूढराणालक्षपतिबुन्दीविध्वंसानन्तरात्यवसानसन्धास्वीकरण१, भट १ मन्त्रि २ वर्गकल्पितबुन्दीदुर्गमध्यस्वाश्रितपूर्वहल्लू १८२।१ द्वितीय २ पुत्रकुम्भकर्ण १८३।२ सप्रसभस्थापन २, कृत्रिमबुन्दीपराजयमुमूर्षुकुम्भ १८३।२ राणावर्णितसहस्र १००० वाहिनीविध्वंसन३,पलायितप्राप्तस्वास्थ्यप्रत्यभिमुखराणानीककल्पितबुन्दीविजयकुम्भकर्ण १८३।२ मरण १ जीवन २ संदिग्धपक्षद्वय २ प्रख्यापन४, कथितपूर्वभाड़ंगनगराधीशयवनविशेषाश्रितनीननिखिलनेम १ राष्ट्रकूटवीरमदेव १ चुण्ड२ नामस्वपुत्रजननानन्तरतज्जामातृमारणादिमन्तुपञ्चक५प्रमुखानेकानर्थार्जन ५, स्वप्रभुप्रच्छन्नयवनपरिकरविधिविशेषविश्रामितवाजिनीविकलवीरमदे

था बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र बरसिंह के समय में होनेवाला चीतोड़ के स्वामिपन को प्राप्तहुआ महाराणा लाखा, राठोड़ वीरमदेव, उसका पुत्र चूंडा, उसका काका जैत्रमल्ल, बारहठ मीशण पीठवा, इन की प्रवृत्ति के प्रस्ताव में बालकपन के कारण मूढ राणा लाखा का बुन्दी का विनाश किये पीछे भोजन करने की प्रतिज्ञा को लेना, (कृत्रिम बुन्दी को बिगाड़ने और महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा लेने की कथा मेवाड़ के इतिहास में नहीं है). उमराव और मन्त्रि वर्ग से कल्पित कियेहुए बुन्दी के गढ में पहिले अपने आश्रित हल्लू के दूसरे पुत्र कुम्भकरण को हठ पूर्वक रखना, कृत्रिम बुन्दी को पराजय करने पर मरने की इच्छावाले कुंभकर्ण का राणा की बनाई सहस्र सेना को भगाना, भागकर और स्वास्थ्य पाकर फिर साम्हने आईहुई राणा की फौज के कल्पित बुन्दी को विजय करने पर कुम्भकर्ण के मरने और जीने इन दोनों पक्षों के सन्देह की सूचना करना; पहिले कहेहुए भाड़ंगनगर के अधीश यवन विशेष के आश्रित सम्पूर्ण में से आधा राज्य प्राप्त करके राठोड़ वीरमदेव का चूंडा नामक अपने पुत्र के जन्म के पीछे उस यवन के जमाई को मारने आदि पांच अपराधों को आदि लेकर अनेक अनर्थों को इकट्ठा करना, अपने मालिक के छाने यवन की परगह का किसी प्रकार से घोड़ी को ठहराकर

ग्रामजनताकञ्चविकुलपरपुरुषविजयशूरतत्रत्यरैवतराजशरवधिको पटङ्किचालुक्यविशेषप्रतोलीपात्रवार्तिकसमुद्रसिंहस्वसीमस्थापन-१३, मिश्रणस्वलघुभगिनीवार्तिकपरिणायनानन्तरपरिणायनोत्तर दिनान्तराच्छोटनमारितैक १ मृदुलोमकप्रत्यागतानुचितविरोधजामिप१ शाला २ समरच्छिन्नमूर्द्धविजयशूररुरुडशत्रुत्रि ३ भटीपातनानन्तरपतन१४, निवारणागतनिजननान्दृकरसमर्पितविदारितपृष्ठमार्गनिष्कासितपृष्ठभवनामाङ्कितस्वभ्रूणविजयशूरसुचरित्रासहधर्मिणीसहगमन१५, ज्ञातस्वजनध्वंसकसमुद्रसिंहत्यक्ततत्परस्त्यप्राप्तहिंगुलाजाम्बिकाप्रसादप्रत्यापातहतसमुद्रपितृभगिनीप्रार्थनप्रतीपद्वादश१२ वर्षवयस्कपृष्ठभवतन्मस्तकानर्पण१६, सहगामिनीसतीशापप्राप्तकुष्ठकृताऽनेकोपचारपञ्चदश १५ वर्षवयस्कपृष्ठभवपरमभागवतराष्ट्रकूटजैत्रमल्लसंस्पर्शतद्रुजोल्लाघीभवन१७, मिश्रणमहाभक्तमहिपविरुदविशेषवसुधेशवर्गविख्यापन १८, द्विनवति ९२ वर्षवयस्कयो-

पूर्वजन्म में गयेहुए अपने ग्राम के लोगों सहित ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के पर पुरुष विजयशूर को वहांवाले रैवत के राजा सरवहिया पदवीवाले किसी सोलंखी के पोळपात बादी समुद्रसिंह का अपनी सीमा में स्थापित करना, मीसण का अपनी छोटी बहिन को बादी को ब्याहने के कुछ दिनों पीछे शिकार में एक खरगोस मारकर पीछे आने पर अनुचित विरोध से बहिनोई का साले के मस्तक को युद्ध में काटना और मस्तक कटने पर भी विजयशूर का शत्रुओं के तीन वीरों को मारकर गिराना, रोकने के लिये आई हुई अपनी ननँद के हाथ में पीठ को चीरकर निकालेहुए 'पीठवा' नामक अपने बालक को देकर विजयशूर के साथ पतिव्रता स्त्री का सती होना, समुद्रसिंह को अपने पिता का मारनेवाला जानकर, उसका घर छोडकर, हिंगुलाज देवी का वरदान पाकर, पीछे आकर, समुद्रसिंह को मारकर, पिता की बहिन की प्रार्थना के विरुद्ध बारह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का उसके मस्तक को नहीं देना, साथ गमन करनेवाली सती के शाप से कोढ पाकर अनेक इलाज कराकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का परम भगवद्भक्त राठोड़ जैत्रमल्ल के पास जाकर उसके स्पर्श से उस रोग से नैरोग्य होना, मिश्रण का महाभक्त राजा को राजाओं के समूह में विशेष विरुद से प्रसिद्ध

जिणमहाभक्तरो अंगसंगहोताँहीं आपरोकोढ गमियो जाणि भीसण राठोड़नूँ दसमों१०सालिग्राम१ इसड़ो बिरुददियो ॥३९॥

भक्तिरै प्रभाव जैतमाल औरभी इसड़ा अनेक दुष्कर काम करि आपरो नाम ख्यातकीधो सो अजेभी भक्तलोकाँरी नामावळीमैं प्रधानता जणावै ॥

किताक काळपछैं अठी वंबावदारै नरेस हालू १८२।१ अनेक उपायकरिथाको तोभी रणमरण न पायो जाणि प्रतिदिन वार्द्धकनूँ बर्द्धमान देखि वर्षतीन३रा निरंतर ज्वरथी पाटव पाइ प्रामार राज विक्रमरा चउदहसैएगारह१४११रा सकमैं आपरो सीस जोगिणीनाम देवीनूँ चढाइ दीधो ॥

जिणकेड़ै इणरा पुत्र चन्द्रराज १८३।१ रो राज सीसाड़ाँ चो ४ तरफसूँहीं दावणरो विचारकीधो ॥ ४० ॥

दोहा ॥

सक तेरह इगुणीस१३१९ सक, हालू१८२।१ संभव होण ॥
भू नव गुण ससि१३१९ भाँजियो, भड़ मंडोउर भोण ॥ ४१ ॥
सक मयंक भू सक्रसी१४११, देवीनूँ सिर दीध ॥
कीधा जिण पगपग कळह, लेख इसै मृत लीध ॥ ४२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचराडासि १ बीजयवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यावेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रबरसिंह १८४।१ समानस

---

१ परमेश्वर के दसवें अवतार का बिरुद दिया (जैतमाल के वंशवाले राठोड़ों को चारण लोग अब भी दसवां शालिग्राम कहते हैं)॥३९॥ २ बुढापे को बढता हुआ देखकर ३ नैरोग्यता पाकर ॥ ४० ॥ विक्रम के शक के तेरह सौ उन्नीस के ४ सम्वत् में ५ जन्म हुआ ६ भवन ॥ ४१ ॥४२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण कुल वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की क-

मयकप्राप्तचित्रकूटाधिपत्यराणालक्षपतिं १ राष्ट्रकूटवीरमदेव २ त त्पुत्रचुण्ड ३ तत्पितृव्यकजैत्रमल्ल ४ द्वारहठमिश्रणपृष्ठभव ५ प्रवृ त्तिप्रस्तवनेशैशवमूढराणालक्षपतिबुन्दीविध्वंसानन्तरभत्यवसानस- न्धास्वीकरण१, भट १ मन्त्रि २ वर्गकल्पितबुन्दीदुर्गमध्यस्वाश्रि तपूर्वहठ १८२।१ द्वितीय २ पुत्रकुम्भकर्ण १८३।२ सप्रसभस्थाप न २, कृत्रिमबुन्दीपराजयमुमूर्षुकुम्भ १८३।२ राणावर्णितसहस्र १००० वाहिनीविध्वंसन३,पलायितप्राप्तस्वास्थ्यप्रत्यभिमुखराणानी ककल्पितबुन्दीविजयकुम्भकर्ण १८३।२ मरण १ जीवन २ संदि धपक्षद्वय २ प्रख्यापन४, कथितपूर्वभाडंगनगराधीशयवनविशेषा श्रितनीतनिखिलनेम १ राष्ट्रकूटवीरमदेव १ चुण्ड२ नामस्वपुत्रजन [illegible]नन्त[illegible]तज्ज[illegible]ातृमारणादिमन्तुपञ्चक५प्रमुखानेकानर्थार्जन५, स्व [illegible]सुप्रच्छन्नयवनपरिकरविधिविशेषविश्रामितवाजिनीविकलवीरमदे

[illegible] बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र वरसिंह के समय में होनेवाला चीतो [illegible] के स्वामिपन को प्राप्तहुआ महाराणा लाखा, राठोड़ वीरमदेव, उसका पुत्र [illegible], उसका काका जैत्रमल्ल, बारहठ मीशण पीठवा, इन की प्रवृत्ति के प्र- [illegible] में बालकपन के कारण मूढ राणा लाखा का बुन्दी का विनाश कियेपा [illegible] भोजन करने की प्रतिज्ञा को लेना, (कृत्रिम बुन्दी को बिगाड़ने और मह [illegible] लाखा की प्रतिज्ञा लेने की कथा मेवाड़ के इतिहास में नहीं है). उमराव [illegible] मन्त्रि वर्ग से कल्पित कियेहुए बुन्दी के गढ में पहिले अपने आश्रित [illegible] के दूसरे पुत्र कुम्भकरण को हठ पूर्वक रखना, कृत्रिम बुन्दी को पराजय [illegible] पर मरने की इच्छावाले कुंभकर्ण का राणा की बनाई सहस्र सेना को [illegible], भागकर और स्वास्थ्य पाकर फिर साम्हने आईहुई राणा की फौज कल्पित बुन्दी को विजय करने पर कुम्भकर्ण के मरने और जीने इन दोनों [illegible] के सन्देह की सूचना करना; पहिले कहेहुए भाडंगनगर के अधीश यव विशेष के आश्रित सम्पूर्ण में से आधा राज्य प्राप्त करके राठोड़ वीरमदेव चूंडा नामक अपने पुत्र के जन्म के पीछे उस यवन के जमाई को मारने [illegible] दि पांच अपराधों को आदि लेकर अनेक अनर्थों को इकट्ठा करना, अपने [illegible] के छाने यवन की परगह का किसी प्रकार से घोड़ों को ठहराकर

वविध्वंसन ६, स्वौरसपुत्रचुण्डसहितपलायितत्पत्नीमाङ्गलिकीप्र तिहारघातोखीपालधन्वदेशस्थचारणठाऽऽल्लसमाख्यवशबहुवर्षविहा न ७, चारणठप्रत्यभिज्ञातचुण्डेन्दोपदाढ्यप्रतिहारभेदविशेषप्रधानपरि णायनानन्तरहट्टेशहल्लू १८२।१ जितपूर्वप्रतिहारपृथ्वीशहम्मीरनि स्सारणपुरस्सरवीरमदेवभिमण्डपपुराधिपीकरण ८, श्रुतजनकध्वंस वीरमदेवद्वितीय २ पुत्रगोगराजदत्ताख्यनिर्मन्तुम्लेच्छमारणांकरवा लप्रहारयाथातथ्यश्लाघा १ गर्हा २ सूचन ९, प्रत्यागतसजन्यजन परिखोतम्लेच्छराजपुत्र १ मार्गमिलितगोगराज २ मिथोमरण १०, बाहू १ ठेकरा २ रूपनगरन्युषितपलायितप्रतिहारराजहम्मीरवंशी- यविशेषव्याघ्रटपुत्रव्यापादनानन्तरपूर्वदेशान्तरुच्चखेडाग्रामान्तसमा क्रमणसंज्ञापन ११, प्राप्तमण्डपपुरराष्ट्रकूटराजचुण्डसकुत्रवणचुश ल्लय १ रणमल्ल २ दिपुत्रचतुर्दशक १४ भाविप्रादुर्भावप्राप्तिनिवेद न १२, ज्ञातस्वदेशार्थदुष्कालगोर्जरजनपदपूर्वप्रान्तप्राप्तसर्वीय

भिक्षक वीरमदेव को मारना, अपने औरस पुत्र चूँडा सहित भगीहुई उस (वी रमदेव) की स्त्री मांगलियाणी का प्रतिहार के जंगल मारवाड़ देश में रहने वाले आल्हा नामक चारण के वश में बहुत वर्ष बिताना, ईंदापदवीवाले पड़िहारों की किसी शाखा के प्रधान का चारण से पहिचान करायेहुए चूँडा को अपनी पुत्री ब्याहकर हाडों के पति हल्लू से प्रथम विजय कियेहुए प्रतिहा र राजा हम्मीर को निकाल कर आगे वीरमदेव के पुत्र को मंडोवर का राजा करना, पिता को मराहुआ सुनकर वीरमदेव के द्वितीय पुत्र गोगराज का द त्ता नामक निरपराधी म्लेच्छ को मारने में खड्ग के प्रहार की यथार्थ स्तुति और निन्दा की सूचना करना, ब्याहकर पीछे आयेहुए बरात के लोगों सहि त म्लेच्छराज के पुत्र और मार्ग में मिलेहुए गोगराज का परस्पर माराजाना, बाहू और ठेकरा नामक नगर में वास करके भगेहुए प्रतिहार राजा हम्मीर के वंशवालों का बघड़ावतों को मारकर पूर्व देश में 'ऊंचाखेडा' आदि ग्रामों को दबाने की सूचना करना, मंडोवर लेकर राठोड़राज चूंडा के पुत्र चाणुशल्य, रणमल्ल आदि चौदह पुत्रों के आगे आनेवाले समय में जन्म हो ने की प्राप्ति बताना, दुष्काल में तृण की दुर्लभता जानकर गुजरात देश के

ग्रामजनताकच्छविकुलपरपुरुषविजयशूरतत्रत्यरैवतराजशरवाधिकोपटाङ्किचालुक्यविशेषप्रतोलीपात्रवार्तिकसमुद्रसिंहस्वसीमस्थापन-१३, मिश्रणस्वलघुभगिनीवार्तिकपरिणायनानन्तरपरिणायनोत्तरदिनान्तराच्छोटप्रमारितैक १ मृदुलोमकप्रत्यागतानुचितविरोधजामिप१ शाल २ समरच्छिन्नमूर्द्धविजयशूररुसडशत्रुत्रि ३ भटीपातनानन्तरपतन१४, निवारणागतनिजननान्दृकरसमर्पितविदारितपृष्ठमार्गनिष्कासितपृष्ठभवनामाङ्कितस्वभ्रूणविजयशूरसुचरित्रासहधर्मिणीसहगमन१५, ज्ञातस्वजनध्वंसकसमुद्रसिंहत्यक्ततत्पस्त्यप्राप्तहिंगुलाजाम्बिकाप्रसादप्रत्यायातहतसमुद्रपितृभगिनीप्रार्थनप्रतीपद्वादश१२ वर्षवयस्कपृष्ठभवतन्मस्तकानर्पण१६, सहगामिनीसतीशापप्राप्तकुष्ठकृताऽनेकोपचारपञ्चदश १५ वर्षवयस्कपृष्ठभवपरमभागवतराष्ट्रकूटजैत्रमल्लसञ्चरस्पर्शतद्रुजोल्लाघीभवन१७, मिश्रणमहाभक्तमहिपविरुदविशेषवसुधेशवर्गविख्यापन १८, द्विनवति ९२ वर्षवयस्कयो-

पूर्वप्रान्त में गयेहुए अपने ग्राम के लोगों सहित ग्रन्थकर्त्ता (सूर्यमल्ल) के पर पुरुष विजयशूर को वहांवाले रैवत के राजा सरवहिया पदवीवाले किसी सोलंखी के पोळपात वाटी समुद्रसिंह का अपनी सीमा में स्थापित करना, मिश्रण का अपनी छोटी बहिन को वाटी को व्याहने के कुछ दिनों पीछे शिकार में एक खरगोस मारकर पीछे आने पर अनुचित विरोध से बहिनोई का साले के मस्तक को युद्ध में काटना और मस्तक कटने पर भी विजयशूर का शत्रुओं के तीन वीरों को मारकर गिराना, रोकने के लिये आई हुई अपनी ननँद के हाथ में पीठ को चीरकर निकालेहुए 'पीठवा' नामक अपने बालक को देकर विजयशूर के साथ पतिव्रता स्त्री का सती होना, समुद्रसिंह को अपने पिता का मारनेवाला जानकर, उसका घर छोडकर, हिंगुलाज देवी का वरदान पाकर, पीछे आकर, समुद्रसिंह को मारकर, पिता की बहिन की प्रार्थना के विरुद्ध बारह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का उसके मस्तक को नहीं देना, साथ गमन करनेवाली सती के शाप से कोढ पाकर अनेक इलाज कराकर पन्द्रह वर्ष की अवस्थावाले पीठवा का परम भगवद्भक्त राठोड़ जैत्रमल्ल के पास जाकर उसके स्पर्श से उस रोग से नैरोग्य होना, मिश्रण का महाभक्त राजा को राजाओं के समूह में विशेष विरुद से प्रसिद्ध

गिनीनामोपहारीकृतस्वमूर्द्धहड्डाधिराजहल्लू १८२।१ जन्म १ मरणा २ दिशकसूचन १९, तत्पुत्रपृथ्वीशचन्द्रराज १८३।१ पृथ्वीप्रत्यनीकचक्राक्रमणविचारणं २० त्रयोदशो १३ मयूखः ॥ १३ ॥

आदितः षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६० ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

सक बिक्रम सिव सक्वरी १४११, हल्लू १८२।१ मरन निहारि ॥
बैरिनको जिततित बहुरि, बढत प्रताप विचारि ॥ १ ॥
दिल्लीसहिँ दब्बन दुजन, अप्रगल्भ लखि ईहँ ॥
गिरिसिर तारादुर्ग किय, बुंदियनृप बरसीह ॥ १८४।१ ॥ २ ॥
सीमा पुब्बँ १ तड़ागसौँ, चामुंडा २ लग चाहि ॥
तारागढ तिम समय तकि, बंधिय बिरुद निबाहि ॥ ३ ॥
साहमुहुम्मद १५ मरिग सक, बाजि ब्योम चउ चंद्र १४०७ ॥
तखतलह्यो, फीरोज १६ तँहँ, तुगलक ३ साह अतंद्र ॥ ४ ॥
दयाप्रमुख बहुगुन बिदित, यामैं तदपि अनेक ॥
बंगा १दिक सूबा प्रबल, टरे पक्करि समटेक ॥ ५ ॥
अज्जँ १ जवन २ जिततित अधिप, लग्गे परँ भुवलैन ॥
यातैं नृप बुंदिय अचलँ, अंकिय दुर्गम ऐन ॥ ६ ॥
प्रथम १ ब्याह बरसिंह १८४।१ पटु, अजयसिंहजा आनि ॥

करना, बानवे ९२ वर्ष की अवस्था में अपने मस्तक को योगिनी नामक देवी की भेट करनेवाले हड्डाधिराज हल्लू के जन्म मरण आदि के सम्वत् की सूचना करना, उसके पुत्र राजा चन्द्रराज की भूमि को शत्रुओं के समूह का दाबने का विचारने का तेरहवां १३ मयूख समाप्त हुआ ॥ १३ ॥ और आदि से १६० मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १निर्बुद्धि २ चेष्टा; अथवा उद्योग ॥ ३ ॥ ३ पूर्व की सीमा ॥३॥ ४॥ बराबर होने का.४ हठ ग्रहण करके ॥ ५ ॥ ५ आर्य ६ पराई भूमि को लेने लगे. बुन्दी के ७ पर्वत पर ८ घर (गढ) खड़ा किया ॥३॥ अजयसिंह की ९ पुत्री

प्रभावती १८४।१ गुन सील पटु, किय *दायिता हितकानि ॥७॥
जो +महिषीहुव हम्म १८३।१ जव, कासीनिवसन कीन॥
क्रम दूजो २ उपयम कियउ, पुनि इहिँसमय प्रवीन ॥ ८ ॥
सो खुसाल कूरमसुता, जंवारेगढ जाइ ॥
अहिजनकुमरि १८४।२ सनाम यह, ब्याहिय त्याग बढाइ ॥९॥
पुनि अनुपम प्रामारकी, कन्या छत्रकुमारि १८४।३ ॥
गो ब्याहन मंचोरगढ, वल बुंदीस विथारि ॥ १० ॥
कछवाहीके ब्याहके, अंतरही नृप एह ॥
पंतो ब्याहन मंचपुर, गढ प्रामारन गेह ॥ ११ ॥
करि विवाह दै वसु कविन, दलत अरातिन दर्प ॥
दुलही जुग २ सेवित दुलह, आयउ बुंदिय अप्प ॥ १२ ॥
पट्टरागिनी १८४।१ के प्रसव, नभयो चिरहु निहारि ॥
सक रवि सक्वरि १४१२ इम सुपहु, ब्याह्यो उभय २ बिचारि ।१३।
तनय छ ६ हायनलग तदपि, हुव दुव २ तेहु रहेन ॥
नियति नामपुव्वहि मरन, किय इम प्रथम १ कहेन ॥ १४॥
सक अट्ठारह सक्वरी१४१८, अव विक्रमभव आत ॥
कछवाही१८४।२ कै हुव कुमर, वैरिसल्ल१८५।१विख्यात॥१५॥
तीजे३ अब्दहि अनुज तस, नृपसुत जावदु१८५।२ नाम ॥
प्रकट्योकछवाही प्रसव, दूजो२ गुनउद्दाम ॥१६॥
भो तीजो३ प्रामारि १८४।३ भव, निम्मदेव१८५।३ जस जुत्त॥
वोद्धकमैं वरसिंह १८४।१ नृप, पाये इम त्रय३ पुत्त ॥१७॥
लंक्खरान इत सुत लहिय, अनघ चुंड अभिधान ॥

---

* प्यारी ॥ ७ ॥ + पटरानी ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ १ गया ॥ ११ ॥ २ धन ३ शत्रुओं का ४ दर्प (घमंड) ॥ १२ ॥ ५ पटरानी के ६ बहुत समय पर्यन्त ॥१३॥ छः ७वर्ष पर्यन्त ८तोभी९भाग्य के वश१०नामकरण होने से पहले ही मरगये ॥१४-१५-१६॥११वृद्धावस्थामें॥१७॥राणा१२लाखाने१३पापरहित. चुंडा१४नाम

बरनिय छहे ६ रासि बहु, जगजस बिदित सुजान ॥१८॥
अब्द बीस२० लग अंतर सु, बिनु पूर्वा१पर२ बोध ॥
तिनसौं अंतर अधिक तब, बत्तम समय बिरोध ॥१९॥
तिम अनिरुद्ध १९८ चरित्त तक, ऐसो अंतर आइ ॥
जँहँ न असंगत जानिये, संभव उचित सुहाइ ॥२०॥
कहि इक्क१ रु अपर२हिं कहैं, कहुँक अनंतर काल१ ॥
कहुँ अंतर२ समकाल३ कहुँ, पै संभव महिपाल ॥ २१ ॥
कहुँ पहिली १ पीछैं कहुँक, पीछैं २ हुव पहिलैं २ सु ॥
बढि पै हायन बीस २० सौं, होइ जु पुब्ब नहैंसु ॥ २२ ॥

॥ षट्पात् ॥

इत मंडपपुर ईस चुंडसुत काहिय चउद्दह १४ ॥

क ॥ १८ ॥ पूर्वापर का १ ज्ञान नहीं होने के कारण इन कथाओं में बीस वर्ष का अन्तर है और यदि इससे अधिक समय का अन्तर होवे तो कथा में समय का विरोध होसक्ता है ॥ १९ ॥ जिस प्रकार अनिरुद्धसिंह के चरित्र तक इसी प्रकार का अन्तर आवेगा जिसको असंगत नहीं जानना चाहिये जहां जैसा सम्भव होवै तहां तैसा जानलेवैं ॥ २० ॥ एक को कहकर दूसरे को किसी दूसरे समय में कहते हैं और कहीं एक समयवाले को दूसरे समय में कहते हैं, परन्तु हे राजा रामसिंह! उसके होने में सन्देह नहीं है ॥ २१ ॥ कहीं तो पहली कथा पीछे है और कहीं पिछली कथा पहिले है, परन्तु बीस वर्ष से बढकर आगे अन्तर नहीं है ॥ २२ ॥

---

*यहां ग्रंथकर्ता सूर्यमल्ल ने पूर्वापर का बोध नहीं होने के कारण बुन्दी के रावराजा अनिरुद्धसिंह के समय पर्यंत कथाओं में बीस वर्ष का अंतर होना लिखा है, परंतु कई स्थानों पर सौ सौ वर्ष के अंतर पायेजाते हैं; इसका कारण ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वीराजरासा के कारण पृथ्वीराज के संवत् में सौ वर्ष का अंतर होगया है और पृथ्वीराजरासा के उस संवत् को सही मानकर पिछले बड़वाभाटों ने अपनी वहियों में पृथ्वीराज के पिछले राजाओं के कल्पित संवत् लिखकर पृथ्वीराजरासा के उस कल्पित संवत् से पिछले संवतों को श्रेणीवद्ध करदिये हैं. यदि पृथ्वीराजरासा की उस भूल को, पिछले समय के बड़वाभाट समझ लेते तो यह सौ वर्ष का अंतर नहीं आता परंतु पृथ्वीराजरासा के संवत को सत्य समझने के कारण ही राजपूताने के संपूर्ण राजाओं की वंशावलियों में उक्त सौ वर्ष का अंतर हुआ है और ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल)भी पृथ्वीराजरासा की अनेक कथाओं का मिथ्या होना सिद्ध करने पर भी

सत्रुसल्ल तिम सवन महंत बरनिय विरोधमहं ॥
जास अनुज रनमल्ल २ सोहु अनई अग्रजसम ॥
तात अनंतर सत्रुसल्ल १ भो भूप कहेक्रम ॥
रनमल्ल २ समर हनि सिंधुलन लरि सोझतिपुर दब्बिलिय ॥
सह सट्ठित्रिसत३६०निवसथ सकल करि अधीन तँहँ राज्यकिय२३
सत्रुसल्ल १ नृप सूनु नाम नरवद २ हुव निर्दय ॥
इक अंह तात १ तनूंज २ मंत्र मिलि किय अधर्ममय ॥
करि महिमानी कपट बुलि रनमल्ल १ जुत्त वल ॥
रत्ति हनहिं जब रहहिं तब सु सोझत अप्पन तल ॥
इम मंत्रि तत्थ पठयो यहहि नरवद २ सुत बुल्लन अनुज ..
नृपराम२०३लखहु कलिकेनृपन भक्खनं वंसखुजातभुज॥२४॥

॥ दोहा ॥

अनई चिंतिय अप्पउर, रनमल्ल १ हु सुहिरीति ॥
हनन उतारयो थानहित, प्रकटि भतीजहिं प्रीति ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

समयरत्ति तस सिविरँ भेजि नानाविध भोजन ॥

१बड़ा. विरोध में भी२बड़ा ३न्याय रहित. पिता के ४पीछे५ सिन्धुल क्षत्रियों को मारकर ६ ग्राम ॥ २३ ॥ एक ७ दिन ८ पिता और ९ पुत्र ने १० सेना सहित ११ रात्रि में १२ हे राजा रामसिंह!. वंश के १३ खाने में भुज खुजला ते हैं ॥ २४ ॥ १४ मारने को ॥ २५ ॥ १५ डेरे में

संवत् वही सत्य मानलिया है; इसीकारण से इस ग्रंथ (वंशभास्कर) में चतुर्थराशि में पृथ्वीराज के चरित्रों से लेकर सप्तमराशि में अनिरुद्धसिंह पर्यंत कई स्थानों में इन्हीं सौ वर्षों की भूल हुई है इसमें कहीं पर सत्य संवत् भी मिलते हैं परंतु अधिकतर उक्त अंतर ही पायाजाता है. यद्यपि हमारे पास राजपूताना की सब ही रयासतों के इतिहास विद्यमान हैं जिसमें शुद्ध संवत् लिखेहुए हैं; परंतु वे सभी अंतर यहां लिखेजावें तब तो इस ग्रंथ की अधिक कथाओं को बदल देना पड़े, परंतु ऐसा करना हमारा अभी नहीं है केवल बड़ी बड़ी भूलों पर नोटकरदिये गये हैं और आगे भी यथाशक्ति करदिये जावेंगे; परंतु यहां पर उक्त भूल का कारण दिखाकर केवल दिशा दर्शन करदिया है सो पाठक लोग स्वयं समझलेवें ॥

मंदिरापाइ प्रमत्त जास किन्न न वह को जन[1] ॥
बलि लै निजभटवर्ग रत्ति काका सौप्तिकरचि[2] ॥
कट्टिय भ्रातृज[3] कटक्क बीच नरबद रहिगो बचि ॥
प्रहरन[4] प्रहार दृग[5] तस दुव २ हि गयेफुट्टि कटि गातहू[6] ॥
बहु घाय लग्गि परिगो बिकल जियहित लोचन जातहू॥२६॥

॥ दोहा ॥

कपटफेन[7] निजबदनकरि, ब्याकुल स्वास बढाइ ॥
सठ लग्गो कर १ पय २ घिसन, हुत असु जात हढाइ[8] ॥ २७॥

॥ षट्पात् ॥

नरबद मरतनिहारि भटन जामिक[9] धरि निर्भय ॥
लिय बैभव तस लुट्टि दीप प्रद्योत बीतदय[10] ॥
महलआइ रनमल्ल सयन किन्नों पतनीसह ॥
कछुउपाय इत कढि अंध भग्गो नरबद यह ॥
सो ग्राम सीरवादे प्रबिसि घुसि निबस्यो इक जट्टघर ॥
रविउदय सुन्यौं रणमल्लजागि सो भतीज कढिगो सडर ॥२८॥
दयो भटन तिन्ह दंड जिते रक्खे तिहिं जामिक ॥
सजि निजकटक्क समत्थ गयो बासर[11] आगामिक[12] ॥
बल मंडपपुर[13] बेढि लूटमंडत प्रबिस्यो लरि ॥
राजद्वार निज रक्खि आनि मारिय अग्रज अरि ॥
दहि सत्रुसल्ल रनमल्ल हुत[14] मंडोउर भूपति भयो ॥
नरबद दुरयो सु खोजन निपुन प्रचुर[15] दूत गन प्रेसयो[16] ॥ २९ ॥

१कौन मनुष्य है यह नहीं जानसका; अथवा मदिरा पाकर उसको प्रमत्त किया जहां कोई अन्य मनुष्य नहीं था. २रातिवाह ३भतीजे की सेना को ४शस्त्रों के प्रहार से उसके दोनों ५नेत्र फूटगये. और ६शरीर भी कटगया ॥२६॥ अपने मुख में कपट के ७झाग बनाकर ८प्राण निकलना ॥२७॥ ९पहरायत रखकर. उस के वैभव को दीपकों (मशालों) के प्रकाश में उस १०निर्दय ने लूटलिया ॥२८॥ १२ आनेवाले ११ दिन में १३ घेरकर १४ शीघ्र १५ बहुत १६ भेजा ॥ २९॥

॥ दोहा ॥

कुमरीइक १ रनमल्लकै, क्रम चोवीस २४ कुमार ॥
अक्खयराज १ रु करन २ इम, अनुजनिं चंप ३ उदार ॥ ३० ॥
सुत खंधिल ४ रनधीर ५ नर, सब कलिकृत्य सुबोध ॥
इत्यादिक कतिकन अनुज, जोध १ नाम रनजोध ॥ ३१ ॥
इत बंबावद गढ अधिप, चंद्रराज १८३।१ चहुवान ॥
हल्लु १८२।१ सुत जाकों कहिय, अपर २ चंच१८३।१ अभिधान।३२।
आयुभुग्गि विधिउचित इहिं, दिय तजि चंद्र १८३।१हु देह ॥
तनय धीर १८४।१ अभिधान तस, अधिपभयो तँहँ एह ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदिपपति वरसिंह १८४।१ सुनत उपयंम इत सब्बिय ॥
पल्लहनगढ प्रामार हेरि अप्पन समता हिय ॥
पट्टिमदेवी १८५।१प्रथम १सुता दलसाह सयानी ॥
बैरिसल्ल १८५।१ वह व्याहि कमनआनी कुमरानी ॥
चालुक्की सदाकुमरि१८५।२।१सु प्रथम१जनक विवाह्योजावदुव।
भुवभागपाइ पीछैं यहहु त्रय ३ विवाह पुनि करतहुव ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

परन्यौं दूजी २ पट्टलहि, बैरीसल्ल १८५।१ बहोरि ॥
दहर भारमल्लहसुता, मानकुमरि १८५।२ हितजोरि ॥ ३५ ॥
निम्बदेवं १८५।३ कुमरहिं नृपति, पुरवालेर पठाइ ॥
सीता १८५।३।१ हरिदासिंसुता, परिनायउ समपाइ ॥ ३६ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

हल्लाधिराज वरसिंह १८५।१ नैं मध्यमकुमार ज.वद १८५।१ कौं वसुधाकेविभागमैं वंसीपुरदयो ॥

१ छोटा २ चांपा (इसके वंश के चांपावत कहाते हैं) ॥३०॥ ३ युद्ध के कामों में चतुर ॥३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ४ विवाह ५ सुन्दर ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

सोही अपनौं आवास[1]राखि जाबदू १८५।२ महाधाटी[2]धर गबदू नाम भिल्लकौं भंजि अनेक आँहवनमैं प्रसंसापाइ बुंदीसौं छ ६ कोस ईसान[3] आँसानपर नंदननाम निवसथ बसावतभयो ॥

ताकेबंसके समस्तही हड्डनमैं एगारम ११ भेद पाइ जाबदूके १।७।११ कहाये ॥

जहाँ जाबदू १८५।२ कै सारन १८६।१ अरु सेव १८६।२ दो २ पुत्रभये तिनमैं सारन १८६।१ कै सामंत १८७।१ सेव १८६।२ कैं मेव १८७।१ भयो तिनकरि निजनिजकुल सामंतके ११।१ मेवाउत्त ११।२ऐसैं जाबदू १८५।२ के जनैनके द्वै २ ही भेद प्रसिद्ध पाये ॥३७॥

॥ दोहा ॥

जाबदु १८५।२ कुल इम भेद जुग २, द्विरदंन तोरन दंत ॥
कहियत नृप सामंतके ११।१, मेवाउत्त ११।२ महंत ॥ ३८ ॥
निम्म १८५।३ हिं दियउ बिभाग नृप, नगरनाम नवगाम ॥
पुरबुंदियसन पच्छिम २ जु, बसहि त्रि ३ कोस बिराम ॥ ३९ ॥
निम्मदेव१८५।३संतति निखिल, निम्माउत्त ।५।२।८।१२ कहाइ
हड्डनभेद सु बारहम १२, यहँसंख्या मिति आइ ॥ ४० ॥

॥ षट्पात् ॥

बुंदियपति बरसिंह १८४।१ जरठ गंगा १ सूकर २ जँहँ ॥
पत्तो पहु कछुपर्व त्रय ३ हि रानिन उपेत तँहँ ॥
सुबरन पंचसहस्र ५००० सुरभि सतपंच ५०० सुलच्छन ॥
विप्रनहित दिय बंटि पारि बिस्मय परपंच्छन ॥
यह खिननिहारि तोमर अमर स्वभट अचानक सज्जि सब ॥
पहिलैंजु हम्म१८३।१जित्यो प्रथित वह दक्खिय पुर टुंक अब ॥

---

१ निवासस्थान. गबदू नामक बडे२धाड़ायती (डाकू) भील को मारकर. ईशान३ दिशा पर ४ग्राम५वंश के ॥३॥६हाथियों के दांत तोड़नेवाले ॥३८॥ तीन कोस के७विश्राम पर ॥३९॥४०॥८बुढापे में. गङ्गा के९सोरमघाट पर गया।१०शत्रुओं को

॥ दोहा ॥

भीम नैनवापति *दभिक, सा हरिसुत लै संग ॥
पुरडंगीपति अमर इम, दव्विय टुंक सु दंग ॥ ४२ ॥

॥ षट्पात् ॥

अमर टुंक अंगमि रु आइ बुंदिय घन घेरिय ॥
नैननगरके नाह दभिक ÷तदुचित सहायदिय ॥
मंडिय कुमरन अमित सजि तारागढ संगर ॥
घनतोपन निर्घात पटकि व्याकुल किन्नैं पर ॥
इत लालसिंह १८४१२ नृपकेअनुज गैनोलीसन वीरगति ॥
द्रुत१ आइ असह रतिवाहदिय किय मंद्रुत लिय मारि कति॥४३॥
दहिया १ तोमर २ दुव २ हि मिले भजत विगारिमुख ॥
निट्ठिनिट्ठि नैनपुर जाइ मन्निय जीवनसुख ॥
बुंदिय पुनि वरसिंह १८४१२ आइ कुमरन सिराहि अति ॥
दियउ रीझि सोदरहिं दुर्ग मक्खीद महामति ॥
दल सजि निखिल विजई दुसह लोचनपुर द्रुत विंटिलिय ॥
सकुटुंब दभिक१ तोमर२ सहित कढि आलंबन टुंककिय ॥४४॥

॥ दोहा ॥

लरि करउर जिम हम्म१८३।१ लिय, पहिलैं दहियन पेलि ॥
लोचनपुर वरसिंह १८४।१ लिय, खेल असिन तिमखेलि ॥४५॥
निजथानाँ धरि नैनवा, रच्छक वीर विसेस ॥
चिंतिय नृप अग्गैं चलन, दव्वन टुंक प्रदेस ॥ ४६ ॥
भाखिय तँहँ अप्पन भटन, दुर्लभ जय विधिदिन्न ॥
उयउ टुंक तिहिं सटि गढ, लोचनपुर २ तुमलिन्न ॥ ४७ ॥

॥ ४१ ॥ * दहिया ॥ ४२ ॥ ÷ उसके उचित सहाय दी. १ भगाये ॥ ४३ ॥ २ नैणवा नामक नगर ३ आधार ॥ ४४ ॥ ४ तलवारों का खेल खेल कर ॥४५ ॥ ४६ ॥ ५ बदले में ६ नैणवा को ॥ ४७ ॥

खिच दाहिम १ चालुक्क २ बहुत, नृप इंगरंग मिराइ ॥
अग्गैंबजते मित्र अब, रिपुहुव सीस भिराइ ॥ ४८ ॥
दाहिम १ तोमर २ मिलि दुहु २न, साज्जिग हुक्क सिपाह ॥
अहेबहु लग्गहिं अप्पनैं, नेरैंचलहु नरनाह ॥ ४९ ॥
अक्खियनृप बार्द्धक उचित, मरनदेहु रनमाँहिं ॥
प्रसभ मोरि आन्यौं तदपि, जोधन लंघिनं जाँहिं ॥ ५० ॥
बंबावद धीर १८४।१ जु बदिय, चंद्र १८३।१ तनय चहुवान ॥
जाकोनाम क्षितिपि२ जग, कहत जु चंच कथानें ॥ ५१ ॥
पहिलैं अरिन उपायकिय, दब्बन चंच१८३।१ प्रदेस ॥
दीस्यो तब रोधक दुसह, रिपु बरसिंह१८४।१ नरेस ॥ ५२ ॥
अंग तजिय बरसिंह१८४।१ अब, जय संभव इम जानि ॥
धरनी दब्बन धीर१८४।१की, अरिगन लग्गे आनि ॥ ५३ ॥
बसु रस गुन भू१३६८ मित बरस, जँहँ बिक्रम सक जात ॥
भयो नृपति बरसिंह१८४।१ भवँ, पुरबुंदिय तँहँ प्रात ॥ ५४ ॥
गुन नव तेरह१३९३ साकगत, धरिय छत्र सिर धीर ॥
तारागढ बंधिय तिमहि, सिव चउदह१४११ सक सीरं ॥ ५५ ॥
सुत संभवँ चिरलौं चहत, गहिय न रानिय गंभ ॥
गवि चउदह१४१२ सक तव रचे, दुव२ पुनि ब्याह अदंभ ॥ ५६ ॥
सक बसु ससि चउदह१४१८ समय, बय पचास५०समँ बित्ति ॥
पायउ सुत त्रय३ बृद्धपन, किय बितरन१ रन२ कित्ति ॥ ५७ ॥
सकात्रि बेद चउ इक्क१४४३ समँ, जनक आस्थिलैजाइ ॥

१नैणवापुर को नजदीक लेकर ॥४८॥ बहुत २दिन. हे राजा अपने ३नगरचलो ॥४९॥ ४ बुढापे के ॥५०॥ ५ कथाओं में ॥५१॥ ६ रोकनेवाला ॥५२॥५३॥ ७ जन्म ॥ ५४ ॥ ८ बुन्दी के गढ का नाम तारागढ है. चौदह सौ ग्यारह का सम्वत् ९ शामिल होने पर ॥ ५५॥ पुत्र का १०जन्म ११बहुत समय से १२ गर्भ १३ बडे(उत्तम)॥५६॥ पचास १४ वर्ष की अवस्था बीतने पर १५ दान में ॥ ५७ ॥ १६ वर्ष में. पिता की १७ हड्डियां लेजाकर

सूकर डारे सुरसरित, वितरन१ न्दान२ विधाइ ॥ ५८ ॥
ता१४४३हि वरस रचि रन तुमुल, भीम १ रु अमर२ भजाइ॥
लोचनपुर चिरगत लयो, जितातित अरिन लजाइ ॥ ५९ ॥
वरस बयासी८२ भुग्गि बय, नभ सर सकरि१४५० मानं ॥
सक जावत वरसिंह१८४।१नृप, सुरपुर पत्त सुजान ॥ ६० ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रंचराडासि १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यवुन्दीनरेन्द्रवरसिंह १८४।१ चरिते सूचितशकसमयदिल्लीशमुहम्मदा१५नन्तरप्राप्तपट्टफीरोजसाह १६ सामन्तगणप्रातीप्यप्रबुद्धसमालोचितदेश १ काल २ वरसिंह १८४।१ तारादुर्गनिर्माणसमयानन्तरवार्द्धकछुप्तानपत्यनृपकोर्मी १ प्रामारी २ पत्नीद्वय२ परिणयन १, समसूनिश्चयवारसिंहिवैरिशल्य १८५।१ जावडु १८५।२ निम्मदेव १८५।३ कुमारत्रय ३ समुद्भवन२, चित्रकूटाधिराजराणालत्तधीरज्येष्टकुमारचुण्डप्रादुर्भवन३, समय

१सोरनघाट* पर २ गङ्गा नदी में ३ दान ॥ ५८ ॥ ४ भयङ्कर ५ बहुत समय से ॥ ५९ ॥ ६ प्रमाणवाले सम्वत् के जाने पर. स्वर्ग ७ गया ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में बुंदीनरेश बरसिंह के चरित्र में जिसके शक समय को सूचित किया है ऐसे दिल्लीश मुहम्मद के पीछे फीरोजशाह के तख्त पर बैठने पर उमराव गणों के विरुद्ध होने से चेतेहुए और देश काल को विचारनेवाले बरसिंह का तारागढ बनाने के समय के पीछे बुढापे के छूने पर अर्थात् वृद्ध होने पर सन्तान न होने के कारण कछवाही और प्रामारी दो स्त्रियों से विवाह करना, माना सहित निश्चय कियेहुए बरसिंह के पुत्र वैरिशल्य, जावडु और निम्मदेव तीन कुमारों का जन्म होना, चीतोड़ के राजा राणा लाखा के ज्येष्ठ कुमर चूंडा का जन्म होना, समय के विरुद्ध वृत्तान्त वर्णन करने के कारण भू

* पुराणों में कथा है कि वराह अवतार ने सोरमघाट पर शरीर छोड़ा था इस कारण इसका नाम सूकर क्षेत्र हुआ है.

विरुद्धवृत्तान्तवर्णनबीजसन्देहसङ्गतिसमाधानावधिसूचन ४ ,मण्ड-पपुराधिराजराष्ट्रकूटचुण्डतनुत्यागानन्तरप्राप्तपट्टतत्पुत्रशत्रुशल्य १ स्वीयकुमारनरबद २ समाहूतरणमल्लमारणरहस्यालोचन५, प्राप्त सोभ्कतपुराधिपत्यस्वानुजरणमल्लाकारणार्थशत्रुशल्यस्वपुत्रप्रेषण६, प्रत्युतप्रतीपरणमल्लमदिष्ठामत्तभ्रातृजशिरस्सौप्तिकपातन ७, ज्ञात म्रियमाणावस्थाग्रजात्मजन्यस्तजामिकसमात्तशिबिरसर्वस्वरणम-ल्लशयनसमयान्धीभूतनरबदप्राप्तच्छिद्रपलायन ८, योत्स्यमानम ण्डपपुरप्रविष्टनिपातितस्वाग्रजशत्रुशल्यरणमल्लतदाधिपत्यसमादा-न ९, रणमल्लौरसात्तयराज १ कर्ण २ चम्पा ३ दिचतुर्विंशति २४ सूनुसमर्थकियदनुजयोधनामकुमाराधिकयोधनाऽभिरुचिस्वज्ञापन-१०,बम्बावददुर्गाधिराजचंचा १८३।१८परं २ नामचन्द्रराज१८३।१मर णानन्तरतत्पुत्रधीरदेव १८४।१ पितृपट्टप्रापण ११ , नरेन्द्रबरसिंह-१८४।१ कुमारत्रय ३ क्रमप्राप्तप्रामारी १ चालुक्की २ दाधिमी३पत्नी त्रय ३ परिणायन १२, जनकमरणानन्तरवैरिशल्य१८५।१ जाबदु

त सन्देह की सङ्गति के समाधान की अवधि की सूचना करना, मंडोवर के राजा राठोड़ चूँडा के देहान्त के पीछे उसके पुत्र शत्रुशल्य का गद्दी बैठकर अप ने पुत्र नरबद को बुलाकर रणमल्ल को मारने का एकान्त में विचार करना, सोभ्कतिपुर के स्वामिपन को प्राप्त हुए अपने छोटे भाई रणमल्ल को बुलाने के लिये शत्रुशल्य का अपने पुत्र को भेजना, उलटा शत्रु बनकर रणमल्ल का म दिरा में मत्त भतीजे के ऊपर रतिवाह देना, बडेभाई के पुत्र को मरने की अवस्था में जानकर उस पर पहरायत रखकर डेरों में से सर्वस्व हरनेवाले रणम ल्ल के शयन करने के समय अन्धे नरबद का छिद्र पाकर भागना, युद्ध करने वाले रणमल्ल का पुर में प्रवेश करके अपने बडेभाई शत्रुशल्य को मारकर उसका आधिपत्य लेना, रणमल्ल के अक्षयराज, कर्ण और चम्पा आदि चौबीस औरस पुत्रों में से समर्थ कितनों ही से छोटे जोधा नामक कुमर की युद्ध कर ने में अधिक रुचि होने की सूचना करना, बम्बावदा गढ के राजा चंच दूसरे नाम से चंद्रराज के मरने पीछे उसके पुत्र धीरदेव का पिता का पाट पाना, न रेन्द्र बरसिंह के तीन कुमारों का क्रम पूर्वक प्रामारी १ सोलंखिनी २ और दाहिमी३इन तीन स्त्रियों से विवाह करना, पिता के मरे पीछे वैरिशल्य और

१८५।२ क्रमैक १ त्रय ३ भाविविवाहकरणकथन१४, विभागप्रा-
प्तवंशीपुरव्यापादितगवद्दाख्यभिल्लसंवासितनन्दननामनिवसथजाव
दु १८५।२ सन्तानजावदूको १।७।११ पटङ्क्येकादश ११ हड्डभेदसमा
सादन १५, भाविजावदवसारण १८६।१ सेव १८६।२ द्वय २ सुतसा
मन्त १८७।१ मेव १८७।२ द्वय २ सन्तानस्वभेदान्तर्भूतपृथक्पृथक्
सामन्तक११।१ मेवाउत्त ११।२ भेदयुग्मा २ धिगमन १६, दायलब्ध
नवग्रामनगरनिम्मदेव १८५।३ सन्ततिनिम्माउत्तो १।८।१२ पटङ्क्द्वा
दश १२ हड्डभेदप्रकटन १७, राज्ञीत्रयो ३पेतशूकरक्षेत्रगङ्गासङ्गतब
रसिंह १८४।१ नरेन्द्रपर्वान्तरपुण्यसमयसुरभिशतपञ्चक ५००सहि
तस्वर्णसहस्रपञ्चक ५००० समुत्सर्ज्जन१८, नयननगरनाथदभिक
भीमसहायप्राप्तावसरसमाक्रान्तटोङ्कपुरसन्नद्धतोमराऽमरसिंहबुन्दीद्र
ङ्गवेष्टन१९, तारादुर्गाधिष्ठितवैरिशल्या १८५।१ दिकुमारत्रय ३ प्रा
रब्धनालीयन्त्रावमर्दविहस्तलालसिंह १८४।२ सौप्तिकसन्त्रस्ततोम
र १ दभिक २ नयनपुरपलायन २०, प्रत्यागतप्रशंसितस्वसूनुकस

जावदू का क्रम से एक और तीन आगे होनेवाले विवाह करने का कथन करना, बंट में बंसीपुर पाकर गवदू नामक भील को मारकर नंदन नामक गांव बसा कर जावदू की सन्तान का 'जावदूका' इस पदवी से हाडों में ग्यारहवें भेद का ग्रहण करना, आगे होनेवाले जावदू के पुत्र सारन और सेव के दो पुत्र सामन्त और मेव, इन दोनों पुत्रों की सन्तान का अपने ग्यारहवें भेद के अ न्तर्गत जुदे जुदे 'सामन्तक' और 'मेवाउत्त' इन दो भेदों को प्राप्त होना, बंट में नवगाँवाँ नामक नगर पाकर निम्मदेव के वंश का 'निम्माउत्त' पदवी से हा डों में बारहवें भेद का प्रकट होना, तीन रानियों सहित गङ्गा में सोरमघाट पर राजा बरसिंह का किसी पर्व के पुण्य समय में पांचसौ गौओं के साथ पांच हजार मुहरों (अशर्फियों) का देना, नैणवानगर के पति दहिया भीमसिंह की सहाय से समय पाकर टोंकपुर को लेकर सज्जीभूत हुए तँवरों के राजा अमरसिंह का बुन्दी नगर को घेरना, तारागढ में स्थित वैरिशल्य आदि ती न कुमारों से तोपों का युद्ध प्रारंभ करके प्रवीण लालसिंह के रतिवाह से भयभीत होकर तँवर और दहिया का नैणवापुर को भागना, पीछे आकर

होदरार्थप्रसाददत्तमल्लीददुर्गनिष्कासिततोमर १ दभिकर२ द्वय२ व योवृद्धबरसिंह १८४१२ नयननगरसमाक्रमण२१, लब्धबुन्दीन्द्रमर णावसरशत्रुमण्डलबम्बावदाधिराजधीरदेव १८४१२ देश १ दुर्गाऽऽ दानप्रारम्भण २२, हड्डाधिराजबरसिंह १८४१२ जन्म १ राज्य २ प्रा प्तिश्तारादुर्गनिर्माण २ पत्नीद्वय २ पाणिपीडन ३ पुत्राधिगम ४ गङ्गोपरागदान ५ नयननगराक्रमण ६ तनुत्याग ७ शकसूचनं २३ चतुर्दशो १४ मयूखः ॥ १४ ॥

आदित एकषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

जवनराज फीरोज १६ जो, किन्न कवेल जब काल ॥
तखत गयासुद्दीन ७ तस, साह रह्यो इक १ साल ॥ १ ॥
सर चउ चउ ससि १४४५ सक समय, जो१७हु मरत जवनेस ॥
दिल्लीपति अष्टादशम १८, अबूबकर १८ हुव एस ॥ २ ॥
कातिकमास सो १८ राज्यकरि, हुव बिधिबस बपुहीन ॥
ता १४४५ हि बरस बैठो तखत, दुर्मति नासुरुद्दीन १९॥ ३ ॥
सक ख पंच चउ ससि१४५० मृत सु, पंच ५ बरस असुपाइ ॥
तखत हुमायोंसाह २० तब, बैठो स्वमत बनाइ ॥ ४ ॥

प्रशंसा युक्त अपने पुत्र और छोटे भाई के लिये रीझ में मल्लीदगढ देकर तोमर और दहिया दोनों को निकालनेवाले वृद्ध अवस्थावाले बरसिंह का नैणवानगर लेना, बुन्दी के राजा के मरने का समय पाकर शत्रुमंडल का बम्बावदा के राजा धीरदेव से देश और गढ लेने का आरम्भ करना, हड्डाधिराज बरसिंह के जन्म १ राज्यप्राप्ति २ तारागढ को बनाना३ दो स्त्रियों से विवाह करना ४ पुत्रों का होना ५ ग्रहण में गंगा पर दान देना ६ नैणवानगर को लेना ७ और शरीर छोडने ८ के सम्वत् की सूचना करने का चौदहवां मयूख समाप्त हुआ ॥१४॥ और आदि से १६१ मयूख हुए ॥

१ ग्रास ॥ १ ॥ २ ॥ २ खोटी बुद्धिवाला ॥ ३ ॥ ३ जीवित रहकर ॥ ४ ॥

ता १४५० हि वरस मृत सो२० हु तव, विगरत समय विसेस॥
दिल्लीपति महमूद २१ हुव, आगम मुगलद्दन एस ॥ ५ ॥
तसहु नासुरुद्दीन २१ तिम, यह दूजो २ अभिधान[3] ॥
सोहु सम्हारि न घर सक्यो, भजि प्रमाद मितभान ॥ ६ ॥

॥ प्रायो मरुदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

हुवो मरण वरसिंह १८४।१ रो, जिणही समय सजोर ॥
एक मुगल वधियो अठी, गंजे कावल १ गोर २ ॥ ७ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

इणहीसमय अठी समरकंददेसरा एक मुगल अमीररोपुत्र तैंमूरवेग २२ प्रारब्धरेजोर वधियो तिकण समरकंद १ वकर २ गोर ३ फारस ४ तातार ५ कावल ६ प्रमुख देसाँरो विजयकरि एक आपराभरोसारो भड़ मुगल रमजानवेग दिल्लीरो वळ देखणरैकाज अटकरै वार भेजियो ॥

जिकण कसमीर १ मुलतान २ दो २ ही देस लूटिया जाणि पंजावरा ओलाँ देस ऊजड़हुवा सुणि दिल्लीसहित प्रतीची ३ दिसारो आधो आर्यावर्त्त चळविचळ थियो ॥

एकवीसमाँ महमूदा २१ऽपर २ नाम नासुरुद्दीन २१ रै दिल्ली मैं राजकरताँ इण तैंमूर २२ कावलरैअधीस आपरो विस्वासपात्र मुगल रमजानवेग करतोयारै ओलैतट पेलियो ॥

जिकण पंजावमैं दरोळैंपाड़ियो तौभी दिल्लीरै अधिराज महमूदा २१ऽपर २ नाम नासुरुद्दीन २१ साम्हैं चलावणरो इच्छाह

मुगलां का[1]आना इसीसे हुआ ॥५॥ [2]नाम. आलसी अथवा प्रमादी [3]होकर [4]अविचारी ॥६-७॥ [5]आदि [6] अटक नदी के इधर [7] इधर के (उरली तरफ के) [8] पश्चिम दिशा का [9] दूसरे नाम से [10] अटक नदी के [11] इधर के किनारे [12]भेजा [13] उपद्रव

भी नधारियो ॥

जिणथी दिसादिसारानरेसाँ मुगलाँरैसाम्हैं अनेक उपहार[1] भेजि आपसरी इळाँ[2] आपआपरेंहेठै लेणरो प्रयत्न नधारियो ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

लाळे बरस बतीस ३२ वय, संभर वैरीसाल १८५।१ ॥
जनकछल धरियो जठे, चींतावे[3] कुळचाल ॥ ९ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी रणजानबेग पंजाबरो विजयकरि महमूद २१ नूँ निर्बळनि-हारि पाछोजाइ आर्यावर्त्तनूँ आँगमणरैकाज तैमूर २१ नूँ अटकन दीरैवार आणियो ॥

जिणथी दो २ हीवार लड़ाईमैं पराजयपाइ भागै प्रसादरैअधीन भागहीण जवनाँरै अधिराज नासुरुद्दीना २१ऽपरनाम महमूद २१ तीजो ३ वार साम्हैंचलाइ रणरोरस चाखणरो मनोरथभी नजाणि यो ॥

अठी हाडाँरैअधीस वैरीसाल १८५।१ बूंदीहूँचलाइ पातोररा द हड़ भारमल्लरी कन्या मानकुमरि १८५।२रै साथ दूजो २ बिवा-ह कीधो ॥

अर अठी सत्रुमंडळरा सीमाड़ाँ बंबावदारा नरेस धीरदेव १८४। १ रा देस दावणरो[4] निवाह कीधो ॥ १० ॥

पहली बरसिंह १८४।१ जीवताँ जिकाँरो जोर न लागो तिकाँ अब एक १ तो बूंदीसरामरणरोसहाय पायो ॥

अर दूजाँ २ तैमूर २२ रै आगम दिल्लीस महमूद २१ नूँ दबि योदेखि २ खीचियाँ १ झालाँ २ माभाराँ ३ सहित सीसोदियाँ ४ भी हाडाँरी धरादाबणनूँ मन चलायो ॥

---

1 नजराना 2 भूमि ॥ ८ ॥ 3 स्मरण करके 4 दबाने के लिये ॥ १० ॥

अठीतो भाणपुरा खीची भरतसेण १ रै पोतै जयमल्ल ३ तो आपरीतरफरी सीमारा खेड़ी १ रत्नगढ २ प्रमुख बंबावदारा गढ गंजि भैंसरोड़ ३ सूधी आइ अमलजमायो ॥

अर झालाँ १ प्रमाराँ २ नूँ प्रचारि सीसोदियाँ ३ भी केथोली १ सींघोली २ जावद ३ अठाँणाँ ४ बींझोली ५ आदिक देस १ दुर्ग २ दाबि वेघम ६ रै माथै तोपाँरो ताव धमायो ॥ ११ ॥

नरेस बैरीसाल१८५।१ दूजो २ विवाह करणरैकाज पातोरपूगो ॥

जिकणहीसमय वेघमरैऊपर जोरपड़ताँ आपरै एक १ बंबावदो १ ही रहतोजाणि चाँचाउत्त ४।१ धीरदेव १८४।१ दूलहनरेस बैरीसाल १८५।१ नूँ अवनीजावणरो पत्रदीधो ॥

सो आजरा बैरियाँरो व्रात आसंगियोनजाइ जिणथी प्रपिताम ह समरसिंह १८१।७ रो विरुदविचारि सहायरो अवलंबदीजै इण रीति अरजीमैं प्रणतीरो प्रसादकीधो ॥

मिरजा पातसाह तैंमूरबेग२२रै आगम आर्यावर्त मैं दिसादिसा दरोळैपड़तो देखि नरेस बैरीसाल१८५।१भी दुलहीनूँ बडैबेग लेर बूँदीपधारियो ॥

अर धीरदेव १८४।१ नूँ सहायदेण वेघमरैमाथै फौजबंधीकरण मैं विलंब नधारियो ॥ १२ ॥

जठै आपरा सुभट १ मंत्रियाँ २ एकलहोइ अरजकीधी इणास मय वेघम हालियाँतो बुंदीभी घरे रहणमैं द्वापरहीदिखावै ॥

अर दिल्लीस महमूद २२ नूँ निर्बळ निहारि आर्यखंड आँगमण नूँ तैंमूर २२ अटकरैवार आवियो तिको असेसही आर्य अवनीसाँ नूँ अवसरदेर आपसरा देसदावणाँ सिखावै ॥

आपरा परिकररी इसड़ी अरज मानि नरेस बैरीसाल १८५।१

१समूह २ दृष्याने(हिम्मत) में नहीं आवे ऐसा ३उपद्रव ॥१२॥४संदेह५दबाने को

धीरदेव १८४।१ रैसहाय तीनहजार ३००० सेना भेजी जिकी पूगियाँपहलीही सीसोदियाँ दुर्गसमेत वेघमपुर छुडाइलीधो ॥ अर उठीरा देसमैं शणालाखारो अमलजमाइ वंबावद जाइ आहवरो प्रारंभकीधो ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सक चोवन चउदह १४५४ समा, मुगल अठी तैंमूर २२ ॥
समर गंजि दिलीस २१ नूँ, साह्नहुवो अतिसूर ॥ १४ ॥

॥ षट्पात् ॥

तातारी दळ अतुळ साजि रमजान १ कुतुब २ सह ॥
मुगल साह तैंमूर २२ आइ दिल्ली जयआग्रह ॥
सक चोवन चउ सोम १४५४ हाँकि संका विणु हैंबरं ॥
पाणिपथ लग पूगि धणिवणियो आरिजंधर ॥
महमूद २१ मीर निरखे निबळ कचरंघाण घमसोण करि ॥
मंडियो तखत दिल्ली मुगल कातर बंस पठाण करि ॥१५॥
साणकरि १ ठाणकरि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

नीड़े दिल्लीनैररै, लाखउभै २००००० मित लोक ॥
कत्तिहेठै करि कतल, अमलकियो सब ओक ॥ १६ ॥
पंद्रह १५ दिन रहियाँपछैं, मुगल मीर तैंमूर २२ ॥
क्रम इण मंडळ जीतकरि, गो गृह पोरिप पूर ॥ १७ ॥
ऑरिज राजाँ समय इण, जठीतठी अड़ि जुद्ध ॥
आपसरी दावे इळा, राखी अवसर रुद्ध ॥ १८ ॥

॥ १३ ॥ १४ ॥ १ अपार २ घोड़े उठाकर ३ आर्यों की भूमि का ४ नाश "काचरों को घाणी (कोल्हू) में पीरहने के समान पीरह डालने को कचरघाणकहते हैं" ५ युद्ध में ॥ १५ ॥ ६ समीप ७ तलवार की धार नीचे ८ घरों में ॥१६॥ पूर्ण ९ पराक्रमवाला ॥१७॥१० आर्य राजाओं ने ॥ १८ ॥

हूँता भड़ १ जे नृप २ हुवा, हूँता जे नृप १ हारि ॥
हळ खेती ठाकुर २ हुवा, बैलाँ सींचण बारि ॥ १९ ॥
अधिप किता वधिया अधिक, गंजे परगढ १ गेह २ ॥
वरताणोँ इसड़ो विखम, आगम मुगल अनेह ॥ २० ॥
वंबावद रचि वैरियाँ, समर अठी बळसीर ॥
धीरदेव १८४१ हणियो धणी, बूँदीदळ सहवीर ॥ २१ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी तैंमूरवेग २२रै पाछोगयाँ केड़े एक दिल्लीरैअमीर इकबा-लखान पातसाहीरो प्रबंध आपरैअधीन कीधो ॥

अर पराजयरैप्रसंग साणाहीणहुवो महमूदसाह २२ पाछो आयो तिकणनूँ प्रामाररैसाथ प्रतिमामात्र पातसाह रहणनूँ अवसरदीधो ॥

पंद्रह १५ दिन रहियाँ बावीसमाँ २२ पातसाह तैंमूर २२ रै गयाँ केड़े प्रतिमामात्र सोळह १६ वरस रहियाँ एकवीसमाँ २१ पातसाह महमूद २१ रै मरियाँपाछे विक्रमरा व्योम बाजी वेद विधु १४७० सम्मित साहरै समय मुलतानरा सूबादार सय्यद मलिकसुलैमानरै पुत्र खिजरखान २२ नाम तेवीस २३मैं पातसाह दिल्लीरो अधिराज भाव गहियो ॥

सोभी अटकपाररा पातसाह तैंमूर ११ रा पुत्र साहरुखरो सिक्को ही रुपियाँमैंराखि जगतनूँ जणावणनैं तिणराही हुकमरै अधीनहोइ रहियो ॥

अठी चीतोड़रा अधीस राणा लाखारा पट्टपकुमार चूँडाथी पुत्री

जो १ उमराव थे वे राजा होगये और जो राजा थे वे हल चलाकर बैलों से २ पानी सींचकर खेती करनेवाले ठाकुर होगये ॥ १९ ॥ मुगल के आने का ऐसा कठिन ३ समय बर्ता ॥ २० ॥ २१ ॥ ४ मूर्ति के समान ॥ २२ ॥

रो संबंधकरणरैकाज मंडोउररैनरेश राठोड़ रणमाल आपरा पोळि पात्र भेजिया ॥

तिकाँ राणारी सभामैंजाइ समतारासंबंधरा सूचक[1] पत्रदिया ॥

राणाँ समानवयरा बिबाहरो नर्म[2] कीधो सुणि कुमारचूँडै वडा प्रसभ[3]रैप्रमाण पितारो संबंध करवाइ आप चीतोड़रीगादी छोडणरो लेखकरि मारवाड़ाँरै अधीनकीधो ॥

अर तिकोही माँग पितानूँपरणाइ तटस्थभाव धारि अपूर्व जस लीधो ॥ २३ ॥

इणग्रंथमैं छठो ६ रासि पहली निर्माण[4]हुवो जिकणमैंभी प्रसंग पाइ कुमारचूँडारी सपूती विसेसजणाई ॥

अर राणाँरै दूजो २ पुत्र राठोड़ाँरोभाणोज मोकल हुवो तिकण पितारैअनंतर चूँडानूँ काढि नाँनाँरा पक्षरो विस्वासकरि बाळकथकैही चीतोड़री गादीपाई ॥

पछैं मोकलरैमाथै विस्वासघात विचारियो जाणि चूँडै चीतोड़माथै चढि राव रणमाल १ नूँ मारि कुमार जोधा २ नूँ भगायो ॥

अर जाटराघरथी पाटराधणी नरबद आँधानूँ बुलाइ मंडोउर लैजाइ उणदेसमाँहै तिकणरो हुकमलगायो ॥ २४ ॥

१जतानेवाला २ * हँसी ३ हठकरके ॥ २३ ॥ ४ बनाया ॥ २४ ॥

---

* मंडोउर से राव चूंडा की पुत्री की सगाई कुमर चूंडा से करने को मंडोउर के भले आदमी चीतोड़ गये थे उनसे महाराणा लाखा ने हँसी में कहा कि जवानों की सगाई करना सभी कोई चाहते हैं हमारे जैसे बुड्ढों का विवाह कौन करै? जिसपर चूँडा ने अपनी सगाई का निषेध करके पिता को विवाह देने का हठ किया इस पर मंडोउर के भले आदमियों ने कहा कि रणमल्ल की पुत्री के महाराणा लाखा से जो पुत्र होवेगा वह तुम्हारा सेवक समझाजावेगा इस कारण हम महाराणा को विवाहना नहीं चाहते इस पर चूंडा ने चीतोड़ का राज्य छोडदिया. इस कथा को वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास में अन्य प्रकार से लिखी है सो वीरविनोद के ३०७ की पृष्ठि में देखो

पहली जैतारणरै साँखलै राजा महेराज कुमारपणौँ नरवदहूँ णपरी वडीपुत्रीरो संबंधकीधो ॥

पछैं सोझतिरा संगरमैं नरवदनूँ मरियोजाणि पालीरा पड़िहार वीँदारा कुमार नरसिंहदेवहूँ तिकणा कन्यारो बिवाह करिदीधो ॥

पछैं इणकारण माँगरैआँटै थोड़ाहीबरसाँ मैं नरवद १ नरसिंह २ दो २ ही साँचैमन ऊजळालोहाँ काम आया ॥

जरैं रणमालरै चोवीसाँ २४ मैं केहीसूँ छोटैपुत्र जोधै मंडोउर आइ पाछा आपरा नीसांण घुराया ॥ २५ ॥

॥ दोहा ॥

कांमिणि आरत्ती करण, नरवद १ रै सुणि नाह ॥
रहियो इम नरसिंह २ रण, सह अरि अंध १ सिपाह ॥ २६ ॥

॥ सचरणगद्यम् ॥

अठी बाळहीवयमैं राणैं मोकल आपरा अग्रज चूँडानूँ पाछो

१प्रहार करने में खड्ग पर रक्त नहीं ठहरे उसको ऊजळालोह कहते हैं २ नगारे बजवाये ॥ २५॥ *अपनी ३ स्त्री का नरवद की आरती करना सुनकर ॥ २६ ॥ महाराणा४×मोकल ने

---

* नरवद की मांग सुपियारदे की शादी नरसिंह बींदावत के साथ करदीगई थी, फिर मांग का दावा करने पर सुपियारदे की छोटी बहिन नरबद को इस शर्त से व्याहीगई कि, सुपियारदे नरवद की आरती करेगी, नृसिंहदेव ने अपनी स्त्री को आरती करने से मना किया, परन्तु उसने अपने पीहरवालों के प्रार्थना करने पर नरवद की आरती की, यह खबर पाकर नृसिंहदेव ने सुपियारदे को बहुत कष्ट दिया, जिसका वृत्तान्त सुपियारदे ने नरवद को लिख भेजा, जिसपर सुपियारदे को छाने निकालकर नरवद लेभगा, तिस पर परस्पर में युद्ध होकर नरवद का भाई मारागया और स्त्री को नरवद लेगया. यहां इस कथा में कुछ भेद है

× रावरणमल्ल को महाराणा मोकल के समय में रावत चूंडा का मारना लिखा सो ठीक नहीं; क्योंकि रावरणमल्ल राठोड़ महाराणा कुम्भा के समय में मारागया था, जिसका वृत्तान्त इस प्रकार है कि रणमल्ल का भानजा महाराणा मोकल चाचा और मेरा नामक पासवानियों के हाथसे मारेगये थे उन दोनों को मारकर रणम ल्ल ने अपने भानजे महाराणा मोकल का वैर लिया, फिर मालवा के बादशाह महमूद को युद्ध में पकड़ कर महाराणा कुम्भा के आधीन किया, इन सेवाओं के कारण महाराणा कुम्भा ने रणमल्ल को प्रधान बना कर मेवाड़ का सम्पूर्ण कार्य उसके हाथ में देदिया जिसपीछे रणमल्ल का विचार महाराणा कुम्भा को मा

राजरो लेदेणाहारि जाणि तिकणरा भुजाँ चीतोड़रो भार झलाइ मेवाड़मैं अकंटक अमलकीधो ॥

अर चाँचाउत्त धीरदेव १८४।१ नूँ मारियाँकेड़ै तिकणराभाई १ बेटाँ २ नूँ मंडणगढरा सात ७ ग्राम देर बेघम १ बंबावदा २ सूधी चीतोड़रो थाँणो जमाइदीधो ॥

अठी महमूदसाह २१ नूँ जीति दिल्लीपैं पंद्रह १५ दिन पातसाहीकरि आर्यावर्त्तरा केही अधीसाँनूँ दंडि मीर तैंमूरबेग २२ रै पाछोगयाँकेड़ै दिल्लीरासूबादार जठीतठी आपआपरै मत्तै रहणढूका।

अर सिंधुदेस १ रा सूबादार जवन करीमखान १ जिसा अनेक अधिकारी सीमारासमीपी नरेसाँहूँ उपहार लेर तिकाँनूँ आपरैअधीन बणाइ सूबादारीरो अनादरकरि पातसाहीपदनूँ वहणढूका ॥ २७ ॥

माळवारैसूबादार नवाब बाजबहादुर १ त्रो माँडूसहरनूँ राजधानीबणाइ धारा १ भूपाल २ सागर ३ सीहोर ४ राजगढ ५ राघवगढ ६ गुगैर ७ सोपुर ८ गागरूणि ९ गंगराड़ १० भाणपुर ११ दसोर १२ जीरण १३ रामपुर १४ प्रमुखँ राजाँहूँ उपदालेर बुंदी १ चितोड़ २ भी उँपायन सहित आइ मिलणरा फरमाणदीधो ॥

अर दक्खिणरैपातसाह अहमदसाह २ आपरा अग्रज फीरोजसाहसूँ गादीपाइ गुजरातमैं अहमदाबाद नाम नगरबसाइ अठैही आपरी राजधानी राखि माँडवी १ जामनगर २ हलवद ३ मोरवी

---

१ माडलगढ जिला के. २ रहनेलगे ३ धारण करने लगे ॥ २७ ॥ ४ आदि ५ नजराना ६ नजराने सहित

रकर मेवाड़ का राज्य दबा लेने का हुआ, यह भेद खुल जाने पर महाराणा कुम्भा ने अपने पिता के बडे भाई रावत चूंडा को मांडू से लाने बुलाकर राव रणमल्ल राठोड़ को चीतोड़ पर मरवाडाला और रणमल्ल का पुत्र जोधा भागकर मारवाड़ में चलागया इस वृत्तान्त को सविस्तर देखना होवै तो वीरविनोद नामक मेवाड़ के इतिहास की ३२१ की पृष्टि से देखें.

४ अणिहलपुर ५ कोकिलपुर ६ बालेस ७ ईडर ८ सिरोही ९ जाळोर १० बाढमेर ११ जूनाँगढ १२ समेत पच्छिमरोप्रातभी आप रैही अधीनकीधो ॥

पहली ग्यारहाँ ११ पातसाह अलावुद्दीन ११ रै अनंतर केही सूबादार दिल्लीहूँ पलटिया तिकाँमैं किताक पाछा दिल्लीरा तावा दार हुँता तिकाँभी तैंमूरबेग २२ रो विजयदेखि फेरि महमूद ना सुरुद्दीन १२ री तथा खिजरखान १३ री आसंगमैं नआइ जुदैजुदै ठिकाणैं आपआपरो अमलजमायो ॥

पहली दिल्लीरा पँद्रहाँ १५ पातसाह अलफखाना १५ऽपर२ नाम मुहम्मद १५ तुगलकरै समय दक्खिणमैं कांई गणकराज बिप्रो चाकर एक १ हुसन १ नाम जवन हुवो तिकण प्रारब्धरैजोर दक्खिणरी पातसाही पाइ अलावुद्दीन १ नाम कहाइ कुलबर्ग १ दौलताबाद २ दोही सहर आबादकरि दो२ हीठाम आपरा राजधानी वणाई तिकणारा वंसमैं इणसमय फीरोजसाह ८।१ अहमदसाह ८।२ दो २ ही कुलबर्ग १ दौलताबादमैं नामी हुवा तिकाँमैं वडो फीरोजसाह८।१ पहली विजयपुररा बारडनरेस रणधवलहूँ रणमैं हारियो तिकणरी लाजपाइ आपरा अनुज अहमदसाह ८।२ नूं गादीदेर दक्खिण१ पच्छिम२ रो पातसाह कीधो तिकण अहमदसाह ८।२ इणसमय दक्खिण १ मैं गोलकुंडा १ नाम गढबणाइ गुजरात२ मैं अहमदाबाद२ नाम नगर वसाइ सोही आपरी राजधानी राखि दो२ ही दिसारो राजमंडळ नँमायो ॥२८॥

अठी बुंदीरा नरेस बैरीसाल १८५।१ रै अखैराज १८६।१ चूंडो १८६।२ उदैसिंह १८६।३ सुभांडदेव १८६।४ सौंडदेव १८६।५ लोहठ १८६।६ कर्मचंद्र १८६।७स्यामदास १८६।८ स्यामाकन्या१८६।९ ए नव ९ ही संतान आप आपरै समय प्रसूत हुवा ॥

१ पीछे २ काबू में ३ दूसरा नाम ४ ज्योतिषी ५ झुकाया ॥२८॥

तिकाँमैं सुभांडदेव १८६।४ सोंडदेव १८६।५ दोर२ ही कुमारां बासठि ६२ बरसरा बयमैं वृद्धहुवा हड्डाधिराजहूँ छोटीराणी दाहड़ी २ मैं जोड़ै २ ही जन्मलीधो तिकाँहीं पछैं बुंदीपाइ चीतोड़रा अधीस कूँभारा भाँजिया हुवा ॥

तिकाँरै अनंतर दाहड़ी२ मैं लोहठ१कर्मचंद्र २ आमारी१ मैं स्यामदास१ स्यामा२ ए च्यारि४ही संतान बुंदीस बैरीसाल १८५।१रै बयमैं पैंसठि ६५ माँ वर्षपर्जंत प्रकाटिया ॥

अर अखैराज १ बूंडो २ उदैसिंह ३ ए तीन ३ ही कुमार हड्डाधिराजरै चाळीस४० वर्षरा बयथी बडीराणी पाटिमदेवी १८५।१मैं प्रसूतथिया ॥ २९ ॥

दोहा ॥

दूजो२ नाम सुभांड १८६।४रो, भारमल्ल१८६।४ निबहंत ॥
स्यामदास१८६।८अभिधा अपर२, केसवदास१८६।८कहंत ॥३०॥
तनय भूपरा तीन३ही, पहिला जोबनपाइ ॥
रुचि जिमतिम लग्गो रहण, भाव निरंकुस भाइ ॥ ३१ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

हेमसाहि कछवाहकी, कन्या नंदकुमारि१८६।१ ॥ १ ॥
अक्खयराज१८६।१कुमारकौं, नृप ब्याहिय निरधारि ॥ ३२ ॥
रामसाहि प्रतिहारकी, कन्या राजकुमारि १८६।२।१ ॥
अधिप कुमर बुंड१८६।२ हिं यहै, ब्याही सुमह बढारि ॥ ३३ ॥
कन्या मानकबंधकी, राजकुमारि १८६।३।१ अभिधान ॥
सुता गौड़ सुरतानकी, स्यामाकुमरि १८६।३।२सुजान ॥ ३४ ॥
ए उभय२ हि तीजे३ तनय, उदयसिंह १८६।३ के अत्थ ॥

---

१ समूह ॥ २९ ॥ २ नाम ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३ श्रेष्ठ उत्सव करके ॥ ३३ ॥ ४ मानसिंह राठोड़ की पुत्री ॥ ३४ ॥

परिनाई बुंदी सुपहु, *श्रुतिविधान१ मह२ सत्थ ॥ ३५ ॥
कुमरपनहि खटपुर१ कियउ, अक्खयरज १८६।१ अधीन ॥
सुतदूजे२ चुंड १८६।२ हिं सुपहु, ढंग वरुंधनि२ दीन ॥ ३६ ॥
तीजे३ सुत उदय १८६।३हिं वितरि, नृप पिप्पलादा ३ नैर ॥
मंडूपतिसन मंडयो, वेरीसल्ल १८५।१ हु वैर ॥ ३७ ॥
पायो नहिं इन राजपद, तीन३न कुव्यसन तानि ॥
व्है हैं सिसुहि सुभांड१८६।४ नृप, जब मरिहै भूजानि ॥ ३८ ॥
कुल सब अक्खयराज१८६।१ को, अक्खाउत्त१।९।१३ कहाइ॥
इहनमैं हुत्र तेरहम१३, प्रकट भेद क्रमपाइ ॥ ३९ ॥
कुमर चुंड१८६।२ संतति सकल, अरिन करन उच्छेद ॥
चुंडाउत्त २।१०।१४ चउद्दहम१४, भो इहन कुल भेद ॥ ४० ॥
ऊदाउत्त३।११।१५ कहाइ इम, उदयसिंह१८६।३ कुल एह ॥
इहन अभिधा पंद्रहम१५, नृप जानहु जुतनेह ॥४१॥
भेद सबहि भावी भनिय, वर्तमान पुनि वत्त ॥
सुपहु राम२०३।४ धारहु श्रवन, अन्वय जस अनुरत्त ॥४२॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचंपूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचाहुवाण१वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवैरिशल्य १८५।१ चरित्रे पूर्वंनृपवरसिंह १८४।१ मरणसमयसमीपमुगलजातीयतैमूर २२-नामम्लेच्छकावला१प्रभृतिप्रत्यन्तप्रभभवन १, तत्प्रेरणाधीनकरतोया

* वेद के विधान से बड़े उत्सव के साथ ॥३५॥३६॥ १ देकर ॥३७॥ २भूप॥३८॥ ॥३९॥४०॥ ३नाम(भेद) ॥४१॥ ये सब भेद आगे होनेवाले कहे हैं हे रावराजा रामसिंह! ४वंश के यश में ५प्रीति करके अब वर्तमान की वार्ता सुनो ॥४२॥ श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश, वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में वैरिशल्य के चरित्र में पहले राजा वरसिंह के मरने के समय के समीप मुगल जाति के तैमूर नामक म्लेच्छ का

वारातनिर्णीतदिल्लीयाथातथ्यलुण्ठितकश्मीर १ मुलतान २गृहीतविविधार्योपहारप्रतिगतयवनरम्जानतैमूरा२२र्यावर्तसीमासमानयन २, प्राप्तपितृपट्टहड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ पातोरपतिपुत्रीदाहड़ीमानकुमरी १८५।२ परिणयन ३, सीमाशत्रुवर्गबम्बावदेशधीरदेव१८४।१सम्पूर्णराज्यसमाक्रमण ४, समरसंस्थापितधीरदेव १८४। १ सन्तत्यर्थमाण्डनदुर्गसम्बन्धिग्रामसप्तक ७ समर्पण ५, पराभूतप्रद्रावितदिल्लीशमहमूदनासुरुद्दीन २१ मारितनिर्मन्तुतद्देशीयलोकलक्षद्वय २०००२० तैमूर २२ पक्षैक १ दिल्लीराज्यकरण ६, तदवसरप्रबुद्धयत्तदार्यराजकपरस्परपृथ्वीसमाक्रमण ७, तैमूर २२ प्रतिगमनानन्तरपराजितप्रत्यायातमूर्तिमात्रपातसाहमहमूद २१ षोडश १६ वर्षजीवितावधितत्सचिवेकबालखानसर्वराज्यकार्यसाधनानन्तरमुलतानसूबापतिसय्यदसुलैमानपुत्रखिजरखान २३ सूचितशकसमयदिल्लीपट्टप्रापण ८, चित्रकूटशशोषार्दिलक्ष

काबुल आदि म्लेच्छ देशों का पति होना, उसकी प्रेरणा के अधीन अटक नदी के इधर का दिल्ली का सत्य वृत्तान्त जानकर कश्मीर और मुलतान को लूटकर आर्यों से नाना प्रकार की भेट लेकर पीछे गयेहुए यवन रम्जान का तैमूर को आर्यावर्त की सीमा पर लाना, पिता का पाट पाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का पातोर के पति की पुत्री दाहड़ी मानकुमरी से विवाह करना, सीमा के शत्रुओं के समूह का बम्बावदे के पति धीरदेव के सम्पूर्ण राज्य को दाबना, युद्ध में स्थापित धीरदेव के पुत्रों के लिये मांडलगढ सम्बन्धी सात गांव देना, पराजित होकर भगेहुए दिल्ली के बादशाह महमूद नासुरुद्दीन के देश के निरपराधी दो लक्ष लोगों को मारकर तैमूर का पन्द्रह दिन तक दिल्ली में राज्य करना, उस समय में चेते हुए इधर उधर के आर्य राजाओं का परस्पर की पृथ्वी को दाबना, तैमूर के पीछे जाने पर हारकर पीछे आयेहुए नाममात्र के बादशाह महमूद के सोलह वर्ष तक जीने की अवधि में उस के सचिव इकबालखान के सब राज्यकार्य साधने के अनंतर मुलतान के सूबापति सय्यद सुलैमान के पुत्र खिजरखान का ऊपर जनायेहुए शक समय में दिल्ली का पाट पाना, चित्तोड़ के पति शीसोदिया लाखा का कुमर

कुमारचुराडसंबन्धार्थसमागतमराडपपुरमहीपराष्ट्रकूटरणमल्लविश्व स्तवर्गमध्यगणावयःसाम्यविवाहनर्मविधान ९, श्रुतैतदुदन्तत्यक्तपैतृकराज्यसहिततत्सम्बन्धकुमारचुराडतत्कन्यापितृपरिणायन १०, लक्षमरणानन्तरनिर्वासितचुराडबाल्याविवेकराणामोत्कलमातुलपक्षविश्वसन ११, श्रुतमोत्कलजिघांसुमारववर्गप्रच्छन्नप्रत्यागतमारितरणमल्लद्रावितततत्पुत्रयोधचुराडचित्रकूटराज्यस्वानुजमोत्कलाधीनीकरण १२, मराडपपुरराज्यपितृव्यरणान्धनरवदार्थप्रत्यर्पण १३, त्याजितपूर्व १ सम्बन्धाऽपरसम्बन्धपरिणीतशाङ्खलीसुप्रियकारदेवीनिमित्तराष्ट्रकूटनरवद १ प्रतिहारवरसिंह २ परस्परणमरण १४, श्रुतैतद्वृत्तमराडपपुरप्रत्यागतकत्यनुजराणमल्लियोधसिंहतद्राज्यसमासादन १५, दिल्लीशसूबाधिकारिवर्गस्वामिद्रोहसमाचरणसमयदक्षिणयवनेन्द्रप्रतापप्रकर्षपुरस्सरमालव १ सिन्धु २ देशा २ धिकारिद्वय २

चूंडा के सम्बन्ध के लिये आयेहुए मंडोउर के राजा राठोड़ रणमल्ल के विश्वासपात्र लोगों में समान अवस्था न होने से विवाह करने की हँसी करना, वह वृत्तान्त सुनकर पिता के राज्य सहित उस सम्बन्ध को छोड़कर कुमार चूंडा का उस कन्या को अपने पिता को व्याहना, लाखा के मरे पीछे चूंडा को निकालकर बाल्यावस्था के अविचार से राणा मोकल का मामा के पक्ष पर विश्वास करना, मोकल को मारने की इच्छावाले मारवाड़ों को सुनकर छाने पीछे आयेहुए चूंडा का रणमल्ल को मारकर उसके पुत्र जोधा को भगाकर चीतोड़ का राज्य अपने छोटे भाई मोकल के आधीन करना, काका का युद्ध में अन्धेहुए नरवद को पीछा मंडोउर का राज्य देना, पहले सम्बध को छोड दूसरे सम्बन्ध का विवाह करने पर सांखली सुपियारदे के कारण राठोड़, नरवद और पड़िहार वरसिंह का परस्पर युद्ध में माराजाना यह वृत्तान्त सुनकर मंडोउर में पीछा आकर कितनों ही से छोटे रणमल्ल के पुत्र जोधा का उसके राज्य को लेना, दिल्ली के बादशाह के सूबों के अधिकारी वर्ग के स्वामिद्रोह करने के समय दक्षिण के बादशाह के बड़े प्रतापसे मालवा और सिंधुदेश के दोनों अधिकारियों का हठ पूर्वक बादशाह होना, विजय नगर के पति पारड़ रणधवल का पराजय करके सज्जीभूत होकर दक्षिण के पति फीरोज

प्रासभ्यपातसाहीभवन १६, विजयनगराधिपआरडरणधवलपराजय सज्जितदक्षिणाधिराजफीरोजसाह १ स्वानुजाऽहमदसाह २ ऽर्थस्व राज्यवितरण १७, तदहमदसाह २ दक्षिणाऽन्तरगोलकुण्ड १ दुर्गस हितगौर्ज्जरान्तरनिजनामाङ्कितनव्य २ नगरनिर्माण १८, बुन्दीन्द्रह ड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ सन्तानपुत्र्येक १ पुत्राऽष्टक ८ समुद्भव न १९, नृपमध्यवयोजातत्रिक ३ वार्द्धकजातषट्क ६ सन्तानप्रत्येक मातृनिश्चयसहयुग्मै २ क १ सहजनिसूचन २०, नरेन्द्रकुमाराक्षय राज १ कौर्मी १ चुण्ड २ प्रातिहारी २ तृतीयो ३ दयसिंह ३ राष्ट्र कूटी १ गौड़ी २ युग्म १ परिणायन २१, प्रथम १ कुमाराऽर्थ २ ष टूपुर १ द्वितीया २ र्थवरूंधणि २ तृतीया ३ र्थपिप्पलादा ३ स्थानवि भजन २२, कुमारत्रय ३ व्यसनविमनस्कनृपचतुर्थ ४ कुमारसुभा णडदेवा १८६।४ र्थस्वानन्तरभाविनीराज्यप्राप्तिनिर्दिशन २३, कुमार त्रय ३ भाविसन्तानाऽक्खाउत्त १।१।१३ चुण्डाउत्ता २।१०।१४ दावुत्तो ३।११।१५ पटाङ्कित्रयोदश १३ चतुर्दश १४ पञ्चदश १५ भाविहड्डभेदा

शाह का अपने छोटे भाई अहमदशाह के अर्थ अपना राज्य देना, उस अहमद शाह का दक्षिण के भीतर गोलकुण्डा गढ सहित गुजरात के भीतर अपने नाम से नवीन नगर बसाना, बुन्दीन्द्र हड्डाधिराज वैरीशाल के संतान में एक पुत्री और आठ पुत्रों का जन्म होना, राजा के मध्य वय में उत्पन्न हुए तीन और बुढापे में उत्पन्न हुए छः सन्तानों की प्रत्येक माताओं के निश्चय के साथ एक साथ उत्पन्न होनेवाले दो बालकों की सूचना करना, राजा के कुम र अक्षयराज का कछवाही, चूंडा का प्रतिहारी और तीजे उदयसिंह का रा ठोड़ी और गौड़ी दोनों से विवाह करना, पहले कुमार के अर्थ खटकड़ दूसरे के अर्थ बरूंधणी और तीसरे के अर्थ पीपलदा स्थान बांटना, तीनों कुमारों क व्यसनी होने से उदास राजा का चौथे कुमार सुभांडदेव के अर्थ अपने पीछे आगामी राज्यप्राप्ति को दिखाना, तीनों कुमारों के आगे होनेवाली सन्तान से अक्खाउत्त, चूंडाउत्त, ऊदाउत्त पदवीवाले तेरहवें चौदहवें और पन्द्रहवें आगे होनेवाले हाडों के भेद की सूचना करने का पन्द्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १५ ॥

विश्रावसूचनं २४ पञ्चदशो १५ मयूखः ॥ १५ ॥

आदितो द्विषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा॥

पादाकुलकम् ॥

मंडोउर इत जोधमहीपति, सुत बारह १२ पाये निजसंतति ॥
पहिलो १ सूरजमल्ल १ पट्टधर, भयो जनकपीछैं सुहि भूवर ॥१॥
ऊदा२वलि दूदा ३ जसउत्तम, कर्मसिंह४रतनेस५जथाक्रम ॥
जिम वीका६वीदा७सेखा८जुत, सेसनँ सह बारह१२प्रकट सुत॥२॥
निजनिजकुल इनके इन नामन, अग्ग उत्तपद भजत प्रथितपन ॥
वीका६भिन्नराज्य निजबंधिय, सोहु अग्ग अैहैं क्रमसंधिय ॥ ३ ॥
गय वीदा७हु सहज तस संगहि, जंगलधर खट्टिय जिन्ह जंगहि ॥
इत आमेर नगर बर अंहति, पृथ्वीराज नाम हुव भूपति॥ ४ ॥
सो यह चंद्रसेन नृपको सुत, जाकै सुत बारह१२हुव जसजुत ॥
अग्रज भारमल्ल१हुव इनमैं, खिलँ११हु भये कुलधर बढि खिनमैं॥५॥
मुकल इत चित्तोर महीपति, मुलक सम्हारन अटतँ महामति॥
क्रम मुकाम बग्घोर द्रंग किय, लहिखिनखलन तत्थतसअसुंलिय॥६॥
दासीभव याके काकादुव२, हे नृप चाच१रु मेर२दुष्ट हुव ॥

और आदि से १६२ मयूख हुए ॥

१ राजा हुआ ॥ १ ॥ २ बाकी के सहित ॥ २ ॥ ३ प्रसिद्धपन से ॥ ३ ॥ श्रेष्ठ ४ दानी ॥ ४ ॥ ५ बाकी के भी ॥ ५ ॥ ६ मोकल ७ फिरता था ८ बागोर नामक पुर में ९ समय पाकर १० प्राण लिया ॥ ६ ॥ इसके दो काका चाचा*

*यहां पर चाचा और मेरा को दासी के पेट से उत्पन्न होना लिखा सो ठीक नहीं है; क्योंकि ये दोनों खातिन के पेट से उत्पन्न हुए थे. इनसे बागोर के मुकाम पर महाराणा मोकल ने एक दरख्त के लिये पूछा कि काकाजी इस दरख्त का नाम क्या है? इस पर चाचा और मेरा ने विचारा कि वृक्षों के भेद खातीलोग जानते हैं और हम भी खातिन के पेट से उत्पन्न हैं इसकारण महाराणा ने सबके सन्मुख हमारी निंदा सूचक हँसी की है इस द्वेष के कारण रात्रि में महाराणा के डेरे पर जाकर उनको दगा से उन दोनों ने मारडाला और वहां से भगगये यह खबर सनकर मंडोवर के राव राठोड़ रणमल्ल ने अपने भानजे का वैर लेनेको उदयपुर से पश्चिम दिशा में 'पेई' के पर्वतों में जाकर चाचा और मेरा दोनों

बिरचि दगा तिन्ह रान बिनासिय, तेहु बहुरि चुंडासन त्रासिय ॥७॥
मंलि१भट२न अंतर कतिमासन, बिरचि चाच१अरु मेर२बिनासन ॥
मुक्कल सूनु सिसुहि कोबिदमति, कुंभ किय‌उ मेवार महीपति ॥८॥
कुंभलमेरु दुर्ग जिहिं किन्नौं, दान अमित कवि१बिप्र२न दिन्नौं ॥
ताकेदये अबहु दुखत्रासन, सुकवि१बिप्र२भुग्गहिं बहु सासन ॥९॥
रानौं यहहु भयो दुर्जय रन, चुंड पितृव्य सधर्म धराधन ॥
॥ १० ॥

षट्पात् ॥

॥११॥

॥१२॥

॥१३॥

॥१४॥

॥१५॥

रायमल्ल हुव कुंभरानसुत, जो सिसुपनहि कुमर सबगुन जुत ॥१६॥

दोहा॥

कहत चाच१मेर२हिं किते, जाठर खत्तनि जात॥
तिनकिय पुच्छत जाति तरु, पापिन रान निपात ॥१७॥

और मेरा नामक दासी के पुत्र थे जिन्होंने दगा करके महाराणा को मारडाला जिससे फिर वे भी चूंडा ? से डरे ॥ ७ ॥ बुद्धि में २ परिडत ३ कुम्भा को मेवाड़ का राजा किया ॥ ८ ॥ ४ सासण (उदक) ॥ ९ ॥ युद्ध में ५ विजय नहीं कियाजावे ऐसा ६ राजा ॥१०॥ १६ ॥ ७ खातिन (बढइन) के पेट से पैदा हुए थे उनसे महाराणा ने पूछा कि इस वृक्ष की जाति क्या है? इस पर उन पापियों ने महाराणा को इस बिचार से मारडाला कि हमको खाती जान कर वृक्षों की जाति पूछी है, जिससे सब के सन्मुख हमारा अपमान हुआ ॥ १७ ॥

भाइयों को मारडाला औरवे वहां से चित्तोड़ आकर राज्यकार्य करने लगे, जिसका वृत्तान्त पहले नोट में आचुका है.

बाजबहादुर साहवनि, मंडूपति इत मिच्छ¹ ॥
बुंदी उप्पर वाहिनी², आनी लुंटन इच्छ ॥१८॥
नृप नमाइ सब निकटके, पहिलैं इहिं बलपान ॥
दिय बुंदिय¹चित्तोर²द्रुत, मिलनकेर फरमान ॥ १९ ॥

पट्पात् ॥

मुकल³ नृप मेवार मिच्छफरमान न मन्निय ॥
नमिलन उचित निहारि कुंभरानहु साहस किय ॥
वैरीसल्ल१८५।१हु वीर सोहु हठ आडर⁴ समाइयो ॥
ताके दूतन तरजि दुष्ट मिच्छन उरदाहियो ॥
तातैं सु पुव्व⁵ चित्तोरतजि बाजबहादुर सजि बल⁶ ॥
द्रुत आइ देस लुंठत दुसह बुंदिय किय वेढन⁷ बिकल ॥२०॥
धकि तोपन धमचक्क अग्गि लग्गिय धर¹अंबर² ॥
ओलनगति⁸ दुहुँ²ओर असह गोलन आडंबर ॥
सलिल निवानन सुक्कि तजत पत्रन भुरसे⁹ तरु ॥
देस अनूपहुँ¹⁰ दहत महत झंखर¹¹ बनिगो मरु¹² ॥
हहु चलाइ रोके अहितैं¹³ तारागढसम तोपतति¹⁴ ॥
किन्नों बिहाल मंडुव कटक गजवडारि पवि¹⁵पात गति ॥२१॥

दोहा ॥

दूर लखत दर्पन¹⁶ हगन, नृप अरिसेन निहारि ॥
सुरभि¹⁷वैल²कट्टत सतन¹⁸, रत¹⁹ न रह्यो तिहिंरारि ॥ २२॥

---

१ म्लेच्छ २ सेना ॥ १८ ॥ १९ ॥ मेवाड़ के ३ मोकल ने म्लेच्छ के फ़रमान नहीं माने थे ४ धमकाकर. इस कारण५पहले चित्तोड़ को छोड़कर ६ सेना ७ घेरे से वा युद्ध से ॥२०॥ ८ ओले पड़ने के समान. वृक्ष ९ जलगये १० जलप्राय देश था सो बड़ा ११ झंखर (पत्र विहीन) बनकर १२ मारवाड़ (निर्जल) होगया १३ शत्रुओं को. तोपों की १४पंक्ति ने १५वज्रपात के समान २१॥ १६दूरबीन से १७गौएं१८सैकड़ों. उस प्रकार का युद्ध करने में १९प्रीति

कहिय भूप भोजनकरहिं, अप्पन बुंदिय ऐन[1] ॥
कट्टि द्वारहिं गो निकर[2], सु अनय पिक्खिसकैन ॥ २३ ॥

॥ षट्पात् ॥

मंडुपुरपति मिच्छ घोर संगर पुरघेरिय ॥
याके अमित अनीक[3] हनन हड्डुन हितहेरिय ॥
तोपन रन रचि तदपि निकट[4] आवन देते नन[5] ॥
पै गोबध यह पिक्खि मरन१जित्तन२चिंतैं मन ॥
जो परैं खेत हम तो सजव सब अंतहपुर[6] सिसुनसह ॥
तुम देहु कढि रहन न उचित,जानि जवन अतिबल असह॥२४॥
नसह१असह२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

भूप कतिक बिस्वस्तभट[7], रक्खे पुर इम आक्खि ॥
मरनचल्यो सेसन सहित, सबिता[8] कँहँ करि सक्खि[9] ॥ २५ ॥
अक्खय१८६१।तिम चुंड१८६।२रु उदय१८६।३.मूरख त्रय३हि कुमार
रहे दुरे[10] निजानिज निलयें[11], भिरन न बंटिय भार ॥ २६ ॥
नृप आक्खिय आये नहीं, ममसहाय सुत मूढ ॥
तिनहिं न रक्खहु पट्ट तुम, रहहिं सुभांड१८६।४प्ररूढ[12] ॥२७॥
अखिल करावहु याहितें, प्रेत कर्म बिधिपाइ ॥
मरन महीपति आक्खि इम,अरर[13] खुलाये आइ ॥२८॥
साक गगन निधि बेद ससि१४९०,बिक्रमसक गतबेर ॥
बाजबहादुर सैन्यबिच,किन्न हय जयकेर ॥ २९ ॥

नाराचः ॥

नहीं रही ॥ २२ ॥ १ घर में २ समूह ॥ २३ ॥ ३ सेना ने. समीप ४नहीं आने देते ५ शीघ्र बालकों सहित ६ जनाने को ७ भरोसे के वीरों को ८ सूर्य को ९ साक्षी करके ॥ २५ ॥ १० छिपे. अपने अपने ११ घरों में ॥ २६ ॥ १२ अधिक प्रसिद्ध ॥ २७ ॥ १३ किवाड़ ॥ २८ ॥ २९ ॥

नमात भू हमल्ल हल्ल वैरिसल्ल१८५।१ निक्कस्यो ॥
खुलाइ द्वारके किंवार आजि फार उल्लस्यो ॥
कसे दुतंग ऐंड अंग दंग रंग दंडते ॥
चले तुरंग ज्यौं कुरंग यौं मलंग मंडते ॥ ३० ॥
करीनपैं खुले निसान लंबमान लोलव्है ॥
दिसादिसान खानखान वर्द्धमान बोलव्है ॥
समग्ग खग्ग संभरी करग्ग नग्ग संग्रह्यो ॥
अनीक अग्गव्है उदग्ग ऐंचि वंग्ग उम्मह्यो ॥ ३१ ॥
रहे कुमार३दैट्टि द्वार जे अगार जत्थही ॥
सजे स्वभ्रात जावदू १८५।२ रु निम्मदेव१८५।३सत्थही ॥
सलज्ज सज्जरज्ज कज्ज अज्ज१मिच्छ२अंकुरे ॥
घटा सकज्ज छज्ज गज्ज वज्ज तज्जने घुरे ॥ ३२ ॥
चलंत चक्कं होत हक्क रीझि अंक रुक्कयो ॥

हमल्लों से भूमि को झुकाता हुआ हल्ला करके वैरीसाल निकला और द्वार के किवाड़ खुलाकर १युद्ध में अत्यन्त हर्षित हुआ. घोड़ों के दुतङ्ग कसकर शरीर में २घमण्ड भरकर नगर से युद्ध में दण्ड देता हुआ चला, और हरिणों के समान कूदते हुए३ घोड़े चले ॥३०॥ हाथियों पर बड़ी बड़ी ४ ध्वजाएं चपल होकर खुलीं और दिशाओं में खाओ खाओ ऐसा ५ बढता हुआ वचन हुआ खङ्ग के ६ सब मार्गों (पट्टाबाजी) सहित चहुवाण ने ७ हाथ में ८ नग्न खङ्ग लिया और सेना के आगे ९ उदग्र (निरंकुश) होकर घोड़े की १० बाग * खैंचकर उत्साहित हुआ ॥ ३१ ॥ जो कुमर घर में थे वे द्वार ११ बन्द करके वहीं रहे और अपने भाई जावदू और निम्मदेव साथ तय्यार हुए, लज्जा सहित सज्जीभूत होकर १२ राज्य के १३ लिये १४ आर्य और म्लेच्छ उठे. कार्य के साथ घटा के समान गर्जना से शोभायमान होकर उस युद्ध से उत्पन्न होनेवाले वाद्य बजे ॥३२॥ १५ सेना के चलते समय हाक होते ही प्रसन्न होकर १६सूर्य रुक गया और धक्के लगने की झटक से नासिका पकड़कर शेष नाग

---

*घोड़े को शीघ्र दौड़ाने के समय उसके गिरजाने के भय से बाग को खींचे रहते हैं इससे बाग का खींचना तेज दौड़ाने का चिन्ह है

झटक्क धक्क पक्क नक्क सप्प मक्क झुक्कयो ॥
झरी कृपान यों खनंकि ज्यों झनंकि झल्लरी ॥
ढरैं प्रबीर पोत[2] तीर होत चीर ढल्लरी ॥ ३३ ॥
वृखेसपैं[3] चढे महेस १ पब्बई २ मृगेसपैं[4] ॥
निहारिबे लगे पधारि रीझ ते नरेसपैं ॥
पचासद्वै ५२ रु च्यारिसट्ठि ६४ पत्त[5] रत्त पूरिकैं ॥
मिरा[6] समान मंडि पान मत्त भान भूरिकैं ॥ ३४ ॥
सनंकि पिच्छ अंतरिच्छ गिद्ध १ चिल्लह २ संकुले[7] ॥
खलक्कि अस्र[8] खाल लाल ताल नालसे खुले ॥
इते मुरारि इष्टधारि गंगवारि आंचमैं[9] ॥
निगाह लाह राह दै उतैं इलाहको[10] नमैं ॥ ३५ ॥
कितेक रुंड झेलि झुंड व्याम[11] दौरते करैं ॥
कबंध जातुधान के समान प्रान संहरैं ॥
कृपान तंति फेन भंति सेन पंतिमैं कढैं ॥

---

१ शङ्कित होकर; अथवा अपने स्थान से सरक (हठ) कर झुक गया; झनकार होकर तलवार इस प्रकार चली जिसप्रकार झालर का झनकार होता है, तीरों से २ विधकर बीर गिरते हैं और ढालों की चीरें होती हैं ॥ ३३ ॥ ३ बैल पर महादेव और सिंह पर ४ पार्वती चढी और युद्ध में आकर बुन्दी के राजा पर प्रसन्न होते हुए युद्ध देखने लगे, बावन भैरव और चौसठ योगिनियां रक्त से ५ पात्र पूर्ण करके ६ मद्य के समान पीकर मस्त होने से चेत भूलने लगे. ("भूरिकैं" इस शब्द में 'ल' के स्थान में 'र' किया है) ॥ ३४ ॥ पंखों का सनंकार शब्द होकर आकाश में गिद्ध और चीलहें ७ भर गईं ८ रक्त के खाल बहकर लाल रङ्ग के तालाब के नाले के समान खुले, इधर परमेश्वर का इष्ट धारण करके गङ्गा का नीर ९ पीते हैं और परलोक के लाभ की ओर दृष्टि देकर उधर १० खुदा को नमते हैं ॥ ३५ ॥ कितने ही रुंड समूहों को झेलकर दौड़ते हुए ११ भुज फैलाते हैं वे कितने ही कबन्ध राक्षस के समान प्राणों का संहार करते हैं, जिसभांति झागों में तांत निकले तिसभांति सेना की पंक्ति में तलवारें निकलती हैं, और कितने ही मार पड़ने पर मार

परंत भार वारपार मारमार के पढैं ॥ ३६ ॥
लुभाइ साकिनीन गोद मोद डाकिनी २ लहैं ॥
सपीति कज्ज रीतिसों पिसाच ३ रत्त संग्रहैं ॥
सु सार के दुसार केक अद्धपार सेल ठहै ॥
महंत भार धार ज्यों तुला मकार मेलठहै ॥ ३७ ॥
कहीं कितेक फारि कोच अग्ग संगि अग्गठहै ॥
मनों कि लालमीन वाल झीनजाल मग्गठहै ॥
वडे करीन मत्थ हत्थ वैरिसल्ल १८५।१ के वहैं ॥
रुलैं तदुत्तमंग रंग पाय चो ४ रुपेरहैं ॥ ३८ ॥
झिलैं कितीक येर वेर फेर भुम्मिपैं झुकैं ॥
लगे स्वपान आनमैं चढाक आनमैं लुकैं ॥
कितेक छिन्न वावदूक जावदूक १८५।२ कित्तिकैं ॥
जई कितेन लेत खेत निम्मदेव १८५।३ जित्तिकैं ॥ ३९ ॥

मार करते हुए इधर से उधर निकल जाते हैं ॥ ३६ ॥ मांस के ऊपर शाकिनियां लोभायमान होती हैं और डाकिनियां मोद पाती हैं (शाकिनी और डाकिनी ये देवी की दासियां हैं) पान करने के (मतवालके) लियें पिशाच रीति से रक्त का संचय करते हैं, कितने ही श्रेष्ठ वेधन करनेवाले भाले पार निकल जाते हैं; और कितने ही शरीरों में आधे घुसते हैं, सो वडे भार को धारण करनेवाली तकड़ी के समान होते हैं ॥ ३७ ॥ कहीं पर कितने ही कवचों को फाड़कर सांग (वर्छी) के अग्रभाग आगे निकलते हैं सो मानों कि लाल मछली का वालक वारीक जाल के मार्ग से निकसता है, वडे हाथियों के मस्तक पर वैरीसाल के हाथ चलते हैं जिससे उनके १ मस्तक लुढकते हैं और युद्ध में शरीर चारों पैरों से खड़े रहते हैं ॥ ३८ ॥ वे कितने ही शरीर कितनेक समय तक ठहर कर फिर भूमि पर झुकते हैं, उन पर चढनेवाले अपने प्राणों की रक्षा में लगेहुए अन्य में छिपते हैं, कितनेक कटे हुए २वहुत वकनेवाले *जावदू की कीर्ति करते हैं और विजयी निम्मदेव रणक्षेत्र में कितनों

*यहां वावदूक शब्द के अनुप्रास के लिये जावदू नाम के साथ स्वार्थ में क प्रत्यय करके जावदूक शब्द किया है.

करंत काज अज्जराज मिच्छराजपैं क्रम्यों ॥
दु २ पास तास दंति खास चंद्रहासतैं दम्यों ॥
समत्थ तत्थ हत्थि हत्थ बाजिमत्थ संग्रह्यो ॥
रच्यो दु २ मग्ग खग्गदै करग्ग लग्ग जो रह्यो ॥ ४० ॥
भई सु छिन्नि सुंडि है सिरोधि वेढि यौं भली ॥
करी कि याल बाल त्रान काल व्यालकुंडली ॥
कटंत सुंडि छंडि रारि चीहपारि गो करी ॥
कियो स्ववाह और साह भो निगाह सो करी ॥ ४१ ॥
बितंड पिट्ठि जातजात खग्ग भूपको बह्यो ॥
रनंकि टोप कट्टिगो रु सीस चट्टिगो रह्यो ॥
गजद्वितीय २ पिट्ठिपान इट्ठि साह निट्ठिगो ॥
दुरंत होद कोद जो समोद भूप दिट्ठिगो ॥ ४२ ॥
चल्यो तदीय लैन जीय खग्ग स्वीय चंडलै ॥
दुचाल दुष्टजालपैं मनौं कि काल दंडलै ॥

को जीत लेता है ॥३९॥ इसप्रकार के कार्य करता हुआ आर्यों का राजा म्लेच्छों के राजा पर चला उसके दोनों ओर के खासा हाथी खड्ग से मारेगये और वहां उसके समर्थ हाथी ने सूंड से घोड़े का माथा पकड़ लिया, वह सूंड घोड़े के लगी हुई थी जिसके खड्ग से दो टुकड़े करदिये ॥ ४० ॥ इस प्रकार घोड़े की गर्दन को घेरनेवाली सूंड भले प्रकार से कट गई, सो किधों घोड़े की अयाल (केसवाली) रूपी सर्पों के बच्चों की रक्षा करने के लिये काले सर्प ने कुण्डली की है, सूंड कटते चीख मारकर हाथी युद्ध से चलागया उस समय बादशाह की निगाह में जो अन्य हाथी आया उसीको उसने अपना बाहन बनालिया ॥ ४१ ॥ उस दूसरे हाथी की पीठ पर जाते जाते राजा का खड्ग बहा सो टोप को काटकर और सीस को चाटकर रह गया; दूसरे हाथी की पीठ पर प्राण की इच्छा रखनेवाला बादशाह कठिनाई से गया और वहां दूर है अन्त जिसका ऐसा बादशाह होदे के कोने में आनन्द के साथ राजा को दीखगया ॥ ४२ ॥ उसका जीव लेने को अपना भयङ्कर खड्ग लेकर गया सो मानों बुरे चालवाले दुष्टों के जाल पर यमराज दण्ड लेकर चला उस बाद

दये सु पत्रवाह साह हड्डनाह वच्छ द्वै २ ॥
मनौं तनुत्र जाल अच्छ पच्छ वेग मच्छ द्वै २ ॥ ४३ ॥
सही प्रवीर तीर पीर गोसु मीर सम्मुहो ॥
प्रसंस हड्डवंस लेन अंसहू परम्मुहो ॥
सम्मुहो १ रम्मुहो २ अन्त्यानुप्रासः १ ॥
हन्यौं करीम अब्दुलादि १ मिच्छ जत्थ हड्ड है ॥
वन्यौं सु भूप भूप गूढ जानि व्यूढ बड्डहै ॥ ४४ ॥
तजैं न जंग जो भजैं न संग जो भजैं तहाँ ॥
जु भुम्मि वाह वाह हड्डनाह आरुह्यो जहाँ ॥
करीम अब्दुलादि१को तुरंग भूप कट्टिकैं ॥
दयो चिराइ खग्गसौं गिराइ सोहु दट्टिकैं ॥ ४५ ॥
चढाइ वान सेनखान२ल्हाँ चुहानपैं चल्यो ॥
दयोन जान जावदू १८५।२सु पै कृपानतैं दल्यो ॥
दुश्वाह मिच्छको सु वाह अप्प नाहको दयो ॥

...ह ने हाडों के राजा की छाती में दो बाण दिये वे कवच में ऐसे अच्छे दी खे मानों जाल में पांखों के वेगवाले दो मच्छ घुसे हैं ॥ ४३ ॥ वह वीर तीर की पीड़ा सहकर बादशाह के सन्मुख गया, प्रशंसनीय हाडों का वंश लेशम त्र भी पराङ्मुख नहीं होता वहां अब्दुलकरीमनामक म्लेच्छ ने हाड के घोः को मारा जिससे वह राजा भूप अर्थात् पृथ्वी पर पैर रखनेवाला (पैदल होगया; और उस म्लेच्छ को बडी व्यूह रचना में छिपा हुआ जाना ॥ ४४ वह म्लेच्छ उस युद्ध को नहीं छोडता और नहीं भगता तो वहीं पर उर राजा का साथी होजाता, प्रशंसा की जाती है, कि हाडों के पति ने भूमि रूपी वाहन का आरोहण किया (पैदल हुआ) और उस राजा ने अब्दुलकरी म के घोड़े को मारकर उस अब्दुलकरीम को भी दबाकर खड्ग से चीरडाल ॥ ४५ ॥ वहां पर सेनखां बाण चढाकर चहुवाण के ऊपर चला जिसको ज वदू ने नहीं जाने दिया और खड्ग से मारलिया, उस दोनों हाथों से प्रहार रनेवाले (यह मरुभाषामें वीर का विशेषण है) जावदू ने म्लेच्छ का श्रेष्ठ वाहन अप

नरेस तास अस्वबार जुद्ध फार निर्मयो ॥ ४६ ॥
गुलाम हैदरादि३कौं सबाजि आजि गंजिकैं ॥
रहीम४भंजिकैं लयो निराइ साह रंजिकैं ॥
कमाल५नूर६भूपपैं कृपान हत्थ सत्थके ॥
करे सिरस्क दारि फारि भाग च्यारि४मत्थके ।४७।
स्वसीस बंधि भुम्मिपाल सो कमाल५संहरयो ॥
कृपानघात निम्म१८५।३भ्रात पात नूर६को करयो ॥
तदग्ग ऐंचि बग्ग निम्म १८५।३खग्ग साहपैं तज्यो ॥
भयो सत्रान खंध हान खान प्रानपैं भज्यो ।४८।
महीप अब्बपैं इते झुक्यो घुमाइ मोहसौं ॥
लही मही सु नाँटिक्यो छक्यो अचेत लोहसौं ॥
अचेत भू रह्यो बहोरि ह्वै सचेत उठ्ठयो ॥
प्रलैसमैं भयो प्रमानि रुद्र जानि रुठ्ठयो ॥ ४९ ॥
हुसेनखान७मिच्छ तत्थ मत्थ भूपको हरयो ॥
सु जानि जावदूक१८५।२आनि सोहु मिच्छ संहरयो ॥

पति को दिया उस पर सवार होकर राजा ने बहुत युद्ध रचा॥४६॥ हैदरगुलाम को घोड़े सहित युद्ध में मारकर रहीम को भांजकर प्रसन्नता के साथ बादशाह को समीप लिया वहां कमाल और नूर ने एक साथ राजा पर तलवार के हाथ किये सो टोप को काटकर मस्तक के चार भाग कर दिये ॥ ४७ ॥ अपने मस्तक को बांधकर राजा ने उस कमाल को मारलिया और भाई निम्मदेव ने खड्ग के प्रहार से नूर को गिरादिया उसके आगे घोड़े की बाग खींचकर निम्मदेव ने बादशाह पर खड्ग चलाया जिससे कवच सहित कन्धा कटगया और उसका प्राण खा लेता, परन्तु वह भगगया ॥४८॥ इधर घोड़े पर मूर्छा से घूमकर राजा झुका सो शस्त्रों से छककर अचेत होकर भूमि पर गिरा, ठहर नहीं सका, भूमि पर अचेत होकर रहा, फिर सचेत होकर उठा सो मानों प्रलय के समय क्रोध कियेहुए रुद्र के समान हुआ ॥४९॥ वहां पर हुसेनखां नाम क म्लेच्छ ने राजा का मस्तक काटा, सो जानकर जावदू ने आकर उस म्लेच्छ को भी मारा, राजा के मस्तक के चार भाग खड्ग से खुल गये तो

खुल्ले महीस सीसके विभाग च्यारि४ खग्गसौं ॥
मच्यो तथापि रुंडको रच्यो प्रघात मग्गसौं ॥ ५० ॥
हृदाख्य नैन पाइ ग्रैन सैन जावनी हनैं ॥
जितैं जितैं चलैं तितैं तितैं बजारसे बनैं ॥
अनुत्तमंग भिन्न अंग रंग द्वै२ घरी रच्यो ॥
विमत्थ व्है न नाथ तो सु साहको कहैं बच्यो ॥५१॥
भरैं दुहत्थ अप्पनैं तथापि धाइ झुंडमैं ॥
महीप लत्त घत्त की घनैंन वच्छ१मुंड२मैं ॥
किते पदाति सत्रु घाय रायपाय२हू कटे ॥
अमत्थ१साख४पिंडकेहु अंग जंगको अटे ॥ ५२ ॥
गिरंत भूप जावदू१८५१२प्रघात स्वामिता गही ॥
मलेच्छ मुंड पट्टिकैं मतीर खेत की मही ॥
समान१निम्म२जावदू३अमान खान संहरे ॥
पठानके सहस्र१०००चाहुवानके छसै६००परे ॥ ५३ ॥
घटी छ६सेस घस्रपैं नरेस कढ्ढि नैरसौं ॥

भी धड़ से युद्ध के मार्गों को रचकर प्रहार मचाया ॥ ५० ॥ हृदय के स्थान में नेत्र पाकर यवन की सेना को मारने लगा, जिधर जिधर राजा चलता है उधर उधर सेना में अवकाश होकर बजार के समान बनता है, विना मस्तक और कटेहुए शरीर से दो घड़ी तक युद्ध किया, राजा विना मस्तक नहीं होता तो बादशाह को बचाहुआ कौन कहता? ॥ ५१ ॥ अपने दोनों हाथ गिरगये तो भी शत्रुओं के झुण्ड में दौड़ कर राजा ने बहुतों के हृदय और मस्तक में लात का प्रहार किया, कितने पैदल शत्रुओं के घाव से राजा के चरण भी कटगये तो भी विना मस्तक और विना हाथ पैर केवल पिंड से ही शरीर युद्ध में फिरा ॥ ५२ ॥ राजा के गिरने से जावदू ने प्रहारों से स्वामिपन लिया और यवनों के मुंडों से छाकर मतीरों के खेत की भूमि होवे वैसी बना दी, मानसिंह के सहित निम्मदेव और जावदू ने अमानखान को मारा, पठान के एक हजार और चहुवाण के छःसौ वीर खेत पड़े ॥ ५३ ॥ छः घड़ी दिन बाकी रहे राजा नगर से निकला और सूर्य के छिपते समय लेशमात्र वैर को

बन्यो दिनेस गुप्ति एस लेस लेस वैरसौं ॥
निहारि मिच्छ जैभयैं वरोध को निकासिबो ॥
तथासु दीह अंत लै रच्यो अराति त्रासिबो ॥ ५४ ॥

दोहा—परे नृपाऽनुज हुव२प्रहत, रहत आयुबल रक्खि ॥
मारि छ६खान समान१मृत, चालुक छत नव९चक्खि॥५५॥

षट्पात् ॥

परिग बिजय प्रामार सत्रु अष्टक८रन संहरि ॥
परिग कुम्भ गोपाल३कतल सत्रह१७जवनन करि ॥
भट तेरह१३अरि भंजि हड्ड लक्खन४।२८५मुग्घल१८२हर॥
परिग भीम५प्रतिहार सद्धि बारह१२खल संगर ॥
जद्दव सुमेरु६हनि दस १० जवन खंडि अमर७सीसोद खट ६॥
पिरथल बघेल हनि नव ९ परिग भट्टिय संकर च्यारि ४ भट ।५६।

॥ दोहा ॥

जैताउत ६ खांधिल १०।१८१ जई, मृत सोलह १६ खलमारि ॥
छितिप परत दिनकर छिपत, तँहँ धप्पिय तरवारि ॥ ५७ ॥
एकादस११मुख्य रु इतर, पंद्रह तदनु पचीस२५॥
एकावन ५१ हनि परिग इम, सुपहु ससीस १ असीस२ ॥ ५८ ॥
भ्रात जावद्दुव१८५।१निम्म१८५।३भट, पंद्रह १५ सत्रह१७पारि॥
बिसम लोह छकि परि बचे, ध्रुवहि आयु खिल धारि ॥५९॥
स्वसत पिक्खि पुरके सुजन, इनकौं जानि अचेत ॥
लाइ दुराये समय लहि, निज कहुँ गूढ़निकेत ॥ ६० ॥

बाकी रखकर आप भी अपने शरीर से लेशमात्र बना (यहां वैर शब्द में श्लेष है अर्थात् वैर और शरीर दोनों का वाचक है जिसका अभिप्राय है कि अपने शरीर को थोड़ा ही बाकी रक्खा) म्लेच्छों की विजय होना देखकर जनाने को निकाला और इसीप्रकार दिन का अन्त लेकर शत्रुओं ने त्रास देना रचा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १ मरा २ राजा ३ सूर्य ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ १ बाकी ॥ ५९ ॥ ५ भूमिगृह (तहखाने) में ॥ ६० ॥

पुर प्रविसे नृपके परत, तव अरि अरर तुराइ ॥
लग्गे लुट्टन लोभलगि, पथ वजार पृथु पाइ ॥ ६१ ॥
भूपति जे विश्वस्त भट, आयउ रक्खि अगार ॥
अरि प्रविसत तुट्टत अरर, किय तिन कथित प्रकार ॥ ६२ ॥
सह परिगह रानिन सिसुन, वलि कुमर न निर्वाहि ॥
तारागढकों छन्न तजि, चल्ले नैयनपुर चाहि ॥ ६३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम ५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रवैरिशल्य १८५।१ चरित्रे मण्डपपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराजौरससूर्यमल्ला १ दिद्वादश१२ पुत्रप्रादुर्भवन १, तत्तन्नामोपटङ्कितत्कुलभेदप्रकटन२, तथाऽऽमेरनरेन्द्रचान्द्रसेनिकूर्मपृथ्वीराजौरसभारमल्ल १ प्रभृतिकुलधरकुमारद्वादशक १२ समुद्भवन ३, चित्रकूटाऽधिराजशीर्षोद्भौजिष्येयपितृव्य १ चाचा १ मेरा२ व्याघ्रपुरविश्वस्तराणामोकलनिपातन ४, प्राप्ततत्पट्टनिवद्धकुंभिलमेरुदुर्गसमुत्पादितसूनुराजमल्लमोकलिरा-

---

१किवाड़ तुड़वाकर २वड़ा ॥ ६१ ॥ ३भरोसे के वीरों को. पहिले ४कहा था उसीप्रकार किया ॥ ६२ ॥ ५ नैणवापुर जाना चाहकर ॥६३॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज के वंश और अनुवंश की कथा वनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र वैरिशल्य के चरित्र में मंडोवर के पति राठोड़ों के राजा जोधा के सूर्यमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का जन्म होना, उन उनके नाम की पदवी से उन उनके कुल के भेद प्रकट होना, तथा आमेर के नरेन्द्र चन्द्रसेन के पुत्र कछवाहे पृथ्वीराज के कुल को धारण करनेवाले भारमल्ल आदि बारह औरस पुत्रों का होना, चीतोड़ के पति सीसोदिया राणा मोकल को पासवानिये काका चाचा और मेरा का बागोर पुर में विश्वासघात से मारना, उसका पाट पाकर कुम्भिलमेर गढ वनाकर रायमल्ल पुत्र को उत्पन्न करनेवाले मोकल के पुत्र राणा कुम्भकर्ण की वीरता और उदारता की प्रशंसा करना, राजधानी मांडू पुर से आकर बुन्दी और चीतोड़ की विरुद्धता के क

णाकुम्भकर्णशौर्यौं १ दार्य २ प्रशंसन ५, मराड्ढद्रङ्गस्कन्धावारबुन्दी १ चित्रकूट २ प्रातीप्यप्रतिकूलमालवाधिराजयुयुत्सुयवनेन्द्रबाजबहादुरबुन्दीवेष्टन६, मुकुरोपदृग्दृष्टगोवर्गवधतदुपेक्षितनालीयन्त्र-युद्धज्ञातकुमारत्रय ३ सहायानागमपट्टार्हीकृतचतुर्थ ४कुमारनिरर्गलीकृतगोपुराररहड्डाधिराजवैरिशल्य १८५।१ सूचितसम्बत्समयमुक्तेतरशस्त्रशत्रुसैन्यसंबोधन७, कर्त्तितनिजार्वशिरोधिवेष्टितम्लेच्छराजगजहस्तनरेन्द्रापरगजारोहन्म्लेच्छपरिशिरस्कखड्गकर्तन८, म्लेच्छान्तरसोढनिषादिम्लेच्छराजबाणद्वय २ हड्डाधिराजहयनिपातन९, पदाभूतनरेन्द्रखड्गप्रहारसतुरङ्गतत्प्रतिघातन१०, जावदु १८५।२ निजनिपातितयवनान्तरसप्तिस्वस्वामिसमर्पण११, तत्तुरगारूढ-संहृतससप्तियवनयुग्म २ बुन्दीशमस्तकयवनानन्तरद्वय २ खड्गयुगपत्प्रहारचतुर्धा ४ विभजन १२, वस्त्रबद्धस्वशीर्षहड्डेशस्वप्रहारककमालाख्यप्रोज्झासन१३, प्रमथितद्वितीयप्रहारक निम्मदेव१८५।३

रण प्रतिकूल हुए युद्ध करने की इच्छावाले मालवा के पति बादशाह बाजबहादुर का बुन्दी घेरना, दूरबीन से गौओं के समूह का वध देखने के कारण तोपों के युद्ध को छोडकर तीन कुमरों का सहायतार्थ आना जानकर चौथे पुत्र को पाट के योग्य करके शहर के द्वार के किवाड़ खुलाकर हड्डाधिराज वैरिशल्य का सूचना कियेहुए सम्वत् के समय में अमुक्त अर्थात् तलवार से शत्रुसैन्य के साथ युद्ध करना, अपने घोड़े की गर्दन को घेरनेवाले बादशाह के हाथी की सूंड को काटकर दूसरे हाथी पर चढेहुए म्लेच्छ के टोप को राजा का खड्ग से काटना, हाथी के सवार बादशाह के दो प्रबल बाणों को सहनेवाले हड्डाधिराज के घोड़े को किसी म्लेच्छ का मारना, पैदल हुए राजा का खड्ग के प्रहार से घोड़े सहित उसको मारना, अपने मारेहुए किसी यवन के घोड़े को जावदू का अपने स्वामि को देना, उस घोड़े पर चढकर घोड़े सहित दो यवनों को संहार करनेवाले बुन्दीश के मस्तक का किसी दो यवनों के एक साथ खड्ग के प्रहार से चार भाग होना, वस्त्र से अपने मस्तक को बांधकर हड्डेश का अपने ऊपर प्रहार करनेवाले कमाल नामक म्लेच्छ को मारना, दूसरे प्रहार करनेवाले को मारकर निम्मदेव का कन्धत्राण सहित आयुष्यवाले

सस्कन्धत्राणसायुष्कम्लेच्छराजांसविदारण १४, हुसैननाम यवनमूर्छितवाजिपतितोत्थितयुध्यमानमहीपकन्धराकर्तन १५, जावद्१८५।२परासूकृततन्म्लेच्छपूर्वकर्तितसङ्कुलावमर्दमर्दितमहीशमूर्द्धभागचतुष्क ४पृथक्पृथग्विशरण १६, घटिकाद्वय २ मण्डितावमर्दनिपातितैकपञ्चाश५१त्पारिपन्थिकराजरुण्डकरचरण २ दिमतीकशकलीभवन १७, संहृतपञ्चदश १५ सप्तदश १७ सपत्नदुस्सहप्रघातजर्जरिताङ्गसायुष्कजावद् १८५।२ निम्मदेव १८५।३ रङ्गपतन १८, समाना १ द्यब्दुलकरीमा २दिशतषट्क ६०० सहस्र १०००सम्मिताऽऽर्य१ म्लेच्छ २ शूरशय्याशयन १९, पौरजनगूढगृहानीतजावद् १८५।२निम्मदेव १८५।३ क्षतपूर्त्तिहितोपचारप्रवर्तन २०, त्रोटिताररपुरप्रविष्टयवनानीकलुन्दीविप्लवविस्तरण २१, दृष्टतदुपद्रवशुद्धान्तद्वारस्थापितविश्वस्तसामन्त १ भट २ स्वशिशुवर्गशुद्धान्तजननैणवनगरप्रस्थापनप्रारम्भणं २२ षोडशो १६ मयूखः ॥ १६ ॥

आदितस्त्रिषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६३ ॥

बादशाह के कन्धे को काटना, हुसैन नामक यवन का मूर्छित होकर घोड़े से पड़कर उठेहुए युद्ध करनेवाले राजा की गर्दन को काटना, जावद् से मारे हुए उस म्लेच्छ के पहिले काटेहुए और अवकाश रहित युद्ध में मर्दित राजा के मस्तक के चारों भागों का जुदा जुदा बिखरना, दो घड़ी तक युद्ध रच कर इक्कावन ५१ शत्रुओं को मारकर राजा के धड़ के हाथ पैर आदि अंगों का टुकड़े टुकड़े होना, पन्द्रह और सत्रह शत्रुओं को मारकर दुःसह प्रहारों से जर्जर अङ्ग होकर आयुष्यवाले जावद् और निम्मदेव का युद्ध में पड़ना, समान आदि छःसौ६०० आर्य और अब्दुलकरीम आदि हजार यवनों का काम आना, पुर के लोगों का जावद् और निम्मदेव को तहखाने में लाकर घावों की पूर्ति के इलाज में लगना, किवाड़ तोड़कर पुर में घुसीहुई यवन सेना का लुन्दी में लूट फैलाना, इस उपद्रव को देखकर जनानी ड्योढी पर रक्खेहुए विश्वासवाले उमराव और वीरों का अपने बालकों के समूह सहित जनाने लोगों को नैणवा नगर में स्थापित करने के प्रारम्भ का सोलहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १६ ॥ और आदि से १६३ मयूख समाप्त हुए ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

पादाकुलकम् ॥

सारन१८६।१मेव१८६।२उभय२जावद्दु१८५सुत,
जैत्रसिंह१८५।१गैनोलीपति जुत ॥
अनुज तास नवब्रह्म१८५।२वीर इम,
तोग१८६।१हु निम्मदेव१८५।३नंदन तिम ॥ १ ॥
भ्रात बिजय १८६।१ नवरंग १८३।२ वंसभव,
बलि ह्प्प१८२।२ रु डुंगर १८२।४ कुलबंधव ॥
निज र्‍हीं जात सकै न निहारिहु, रुक्ष१कृतांत२प्रचारैं रारिहु ॥२॥
पहुँचैं जे भूपति अंतहपुर, धरे भ्रात ऐसेप्रकोष्ठे धुर ॥
निज कुमार एक१हु आयो नन, भोरयो इम लिक३नैहिं भूप मन॥३॥
थिर बिस्वस्त सुभट कति थप्पिय, अंतहपुर रच्छा जिन्ह अप्पिय॥
गिनियत तेहु सुनहु सह परिग्रह, सुंदरदास१गोर गिरधर२सह ॥४॥
धीर३कबंध कुम्म बंसीधर४, सल्ह५प्रमार त्रिविक्रम६सैंगर ॥
चापोत्कट देव७रु हरि८चालुक, कलह सबहिं पलचरन कृपालुक५

षट्पात् ॥

अट्ठ८बंधु भट अट्ठ८जत्थ कति सहँस चमूँजुत ॥
पहु अवरोध प्रकोष्ठ रक्खि फुल्लत सिंधुन रुत ॥
कहि इम बाहिर कढिय परैं जो हम तो तुम पट्ठु ॥
नारि१न सिसु२न निकासि कुसलजिमि जाहु पिक्खि कट्ठु
सुहि हुवनरेस१८५।१तिलतिल समरपारि जवन घन भरिपरयो
जवनेस सेस दल लहि बिजय सजि पुर लुट्टन संचरयो ॥ ६ ॥

१ पुत्र ॥ १ ॥ २ लज्जा ३ यमराज को ॥ २ ॥ राजा के ४ जनाने में. प्रथम ५ड्योढी पर ६ रक्खा ॥ ४ ॥ युद्ध में सब ७मांस खानेवालों पर कृपा करनेवाले ॥ ५ ॥ ८ जनानी ड्योढी पर. सिन्धवी रागनी के ९शब्द से फूलता हुआ १० कट पड़ा ११ चला ॥ ६ ॥

पुर खल करतप्रवेसि विक्खि सारन १८६।१ मुख बांधव ॥
सुंदर १ आदिक सुभट जानि बहुविघ्न बड़ेजव ॥
दलहिं पुव्व दौराइ जैतगढ संरनि जमायउ ॥
तारागढसन तियन निकर ध्रुवदिस निकसायउ ॥
जँहँ सवनमध्य रानी जुगल हुव प्रामारिय१८५।१दाहरिय १८५।२
अर्भक छ ६ जुत्त चल्लिय२उभय२ निखिल वेढ जिम नाहरिय।७।
सिसु सुभांड१८६।४अरु सौंड१८६।५सहज नव९समवय सोदर॥
क्रम लघु लोहठ १८६।६ कर्मचन्द्र १८६।७ सिसु तेहु सहोदर ॥

सोदर १ होदर २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

प्रामारी १८५।१ भवे छ्थुंक स्याम स्यामा१८६।१ इन्ह वय सम॥
ए चउ ४ धातिनंअंक चले सहसा भयेचंक्रम ॥
यहसुनत मिच्छ लगि पिठ्ठि अँर सोधतहुव रजनीसमय ॥
विधिलिखितकोन टारनप्रवल आयति पर अय१वा अनय२।८।
बहुल नृजान१न बैठि गूढ निकसन बनी न गति ॥
हेषाकेभय न हय २ संग इक्क १ हु किम संहति ॥
ओरहु प्रवँहन अखिल हत्थि ३ आदिक परवसहुव ॥
यातैं सव अंवरोध भजिग पायन परसतभुव ॥
दीपनप्रकास नैंकन दुरैं छपां तिमिर निकसे छिपन ॥
निजगंम्य मन्नि अंवकनंगर जानलगे गिरिमग्ग जन ॥ ९ ॥

१ देखकर २ आदि ३ दौड़ाकर. जैतगढ के ४ मार्ग में. स्त्रियों के ५समूह को उत्तर दिशा में. छः ६ बालकों सहित ७ सम्पूर्ण. सिंहनी ८ घेर कर चले जिस प्रकार चली ॥७॥ प्रमारी रानी से ९उत्पन्न हुए १०बालक ११धायों की गोद में१२भय से इधर उधर भ्रमते हुए १३शीघ्र१४ब्रह्मा के लिखेहुए कर्मफल के कल्याण और अकल्याण को कौन टाल सकता है? ॥८॥१५हींसने के डर से साथ में एक भी घोड़ा नहीं लिया फिर१६समुदाय कैसे? और हाथी आदि १७ वाहन१८शत्रुओं के वश में होगये१९जनाना२०रात्रि के अन्धेरे में २१ अपने जाने योग्य २२नैणवा नगर को जानकर २३पर्वतों के मार्ग में जाने लगे ॥९॥

॥ दोहा१मदनावतार२योर्द्विभंगिका ॥

कुमरस्याम १८६।१ स्यामा।१८६।१कंनी, इनसह धाइ उभै २ हि॥
रयंहत डुलि पीछैं रहत, भो तिन्ह आगि सु भैहि ॥
भै सु तिन्हैं आनि गढ अद्रि मध्यहि भयो ॥
लखत इतउत फिरत भेद जवनन लयो ॥
भेदअनुसार पहुँचे रु अतिद्रोहभरि ॥
पोतं धात्रिउन सहित द्वै २ हि आनैं पकरि ॥ १० ॥
कहनलगी ते करि कपट, बनिकनके ए बाल ॥
तदपि लये पहिचान तिन्ह, भोग्य नियत लिपिभाल ॥
भाग्यलिपि भोग्य न मिटैं सु बेदहु भनैं ॥
बेसं नृपसिसुन किम और कहतहिं बनैं ॥
स्याम १८६।१ स्यामा १८६।१ पकरि लुट्टि पथ सेसकौं ॥
जाइ रोवत दये द्वै २ हि जवनेसकौं ॥ ११ ॥
जँहँ कटकहिं सुद्धांतजन, मिले भटनजुत मग्ग ॥
सोधन तँहँ लग्गे सबन, उत्तरि घंटिय अग्ग ॥
त्वरित गति लंघि निज अद्रिघंटिय तहाँ ॥
*
चर्क्राबिच लै सबन बाहनन चढाये ॥
पाक दुव २ तेहि तँहँ रंकंनिधि न पाये ॥ १२ ॥
प्रचुर दीपिका जोरि पुनि, हारे जिततित हेरि ॥
पै नलखे ते दुव २ पृथुकं, टिके छिनक तिन्ह टेरि ॥
टेरि कछुकाल तँहँ बीरपंच ५ हि टरे ॥
कटकसह नैनपुर सेस चललेकरे ॥

१कन्या२वेगहत होकर३बालक ॥१०॥४ललाट के लेख से५पहनावा(लिबास) ॥११॥ आगे की६घाटी उतर कर. अपने७पर्वत की घाटी को८सेना के बीच में लेकर९बालक१०रङ्कके धन के समान ॥१२॥११मशालें(चिरागें)लगाकर१२बालक

* यहां मूल में त्रुटि है सो दो प्रतियों में एक सी ही मिली है ॥

देखि ग्रामारि १८५।१ दुख भ्रात सहजात दुव २ ॥
सोंधि वे[3] सिसुरन लग्गे मुरन भूपसुव ॥ १३ ॥

॥ षट्पात् ॥

सहज सुभांड१८३।४रु सोंड१८६।५अनखि हेरन मुरिआवत
निष्ठिन भटन निहोरि लये गहि संग लजावत ॥
सह अवरोध निसीथ ग्राम दुवलान चमू गय ॥
इत भट पंचक५कियउ पिक्खि तारागढ पव्वय ॥
कुमरी१कुमार२पाये कहुँन सुनि उदंत पुनि भूत सव ॥
गतनक्क जानि मिच्छर्न ग्रसन तिन चिंतियरतिवासे तव॥१४॥

कर्पूरकम् ॥ उल्लालइत्येके ॥

जावदु१८५।२तनूज सारन१८६।१जई,
लाल१८५।२तनय नवलज्ञ१८६।२लहुँ ॥
रट्ठोरधीर१. चालुक हरि २ रु, सहित त्रिविक्रम३संगरहु।१५।
पंच५हि विचारि रतिवाह पटु, प्रवल जाइ इततैं परे ॥
उततैंकुमारउद्दल१८६।३अनखि,कनकनरंनजबननकरे ।१६।

दोहा ॥

काम जनक आयो कलह, उदयसिंह१८६।३सुनि एह ॥
पिप्पलदा सन सज्जि पुनि, आयो रजनि अनेह[12] ॥ १७ ॥
जानि कढे अवरोध जन, पठयो चर[13] तिन्हपास ॥
पंथ १ मिल्यो भट पंचक५हिं, सिव केदार[14] निवास ।१८।
जंपियँ[15] तिन अवरोधसन, इत पठये दुवलान ।

१एक साथ जन्मे हुए २ दोनों ३ राजा के पुत्र ॥१३॥ ४आधी रात को ५वृत्तान्त६आगे गुजरा हुआ ७ नाक कटा हुआ जानकर ८ म्लेच्छों के पकड़ने से ९ रात्रि को छापा देना विचारा ॥ १४ ॥ १० शीघ्र॥ १५ ॥ ११ उदयसिंह॥१६॥ रात्रि के १२समय ॥१७॥ १३ हलकारा १४ केदारनाथ नामक शिव के स्थान पर ॥ १८ ॥ उन्होंने १५कहा ॥ १९ ॥

पै स्याम१रु स्यामा२पकारि, मिच्छन लिय सहमान ॥१९॥
षट्पात्-कहिय दूत पंचक५हिँ उदय१८६१३कुमरहु खिजि आवत॥
तासौं मिलि सब तुमहु परहु निंद्रित खल पावत ॥
सुनि यह दूतहिँ संग मोरि लाये सारन१८६१सुख ॥
मिलि उद्दल१८६१३सन मग्ग दुसह तिन चाविय भूत३दुख ॥
कुप्यो सु सुनत सोदर कुगति पावक जनु बारूदपरि ॥
तुरकन अनीक उप्पर अतल किपउ हल्ल हरि साँक्खिकरि॥२०॥
वलि सारन१नवब्रह्म२वीर हरि३धीर४त्रिविक्रम५ ॥
सजिसजि निजनिज सत्थ सद्धि पंच५नसहँ संक्रम ॥
बजत विनायकवाग जत्थ जवनेस विजैजुत ॥
सोवत निर्भय सिविर दाव तापर लगाइ द्रुत ॥
पटके तुरंग हल्लन प्रथितँ रैयनि अद्ध जात रु रहत ॥
चलविचलकिन्न मिच्छनचमू मिल्यो पैन इच्छित महत॥२१॥
बाजबहादुर बालँ बखसि अभिमत बहिकाये ॥
हियलगाइ करिहेत सयन निजढिगहि सुवाये ॥
बाह रचिग रतिबाह आय हल्लन इहिँ अंतर ॥
जनु कलविंकन जात पातकिय स्येन घातपर ॥
सारन१वजीर२मार्यो सहज उदकुमर१रोसन२अली ॥
नवब्रह्म१हन्यों तूसीन जबर२बलि हरि१कम्मन२काबली॥२२॥
ए चउ४गिरत अमीर प्रहत सत्रुन छुट्टे पग ॥
निम्म१८५१३घाय नतखंध साहलग्गिय मंडुव मग ॥
तजेन दुवरसिसु तदपि खास गज तिन्ह चढाइ खल ॥

१सोते हुओं पर२कहा ३ बीताहुआ दुःख ४ दुर्गति. विष्णु भगवान् को ५ साक्षी करके ॥ २० ॥ उपरोक्त पांचों वीरों के ६ साथ ७ प्रसिद्ध. आधी ८ रात्रि जाते और आधी बाकी रहते समय ॥ २१ ॥ ९ बालकों को १० इच्छानुसार देकर ११ चिड़ियों पर सिकरा पक्षी पड़े जिस प्रकार ॥ २२ ॥

वंटउव्वट भजि वेग निठ्ठि मालव लिय निर्बल्ल ॥
हनिनृपहि तासभुव भोग हित दुजनन फंडे गड्डिदिय ॥
भिरितत्थउदय१८६।३सारन१८६।१प्रभृतिलहि जय बुंदिय रक्खिलिय

दोहा

कुमरउदय१८६।३उनमत्त क्रम, चलो निसीथं सु घत्तं ॥
जननी जुगरवंदनं विनुहि, पिप्पलदा पुनि पत्तं ॥ २४ ॥
सिसु निग्रहं जावदु१८५।२ सुन्यौं, हो पुरमैं जँहँ हार्य ॥
असु छोरे उठ्ठत अनखि, घटं फट्टे सव घाय ॥ २५ ॥
अप्पन दल दुवलान इत, जवन पलायित जानि ॥
तजि अंबकंपुर गमन तव, महा कुसल लिय मानि ॥ २६ ॥
पै गिनि जयसु पराजयहि, निग्रह सिसुन निदानं ॥
अंतहपुर आन्यौं अखिल, बुंदिय जतन विधान ॥ २७ ॥

॥ कर्पूरकम् ॥ उल्लालइत्येके ॥

बुंदीस पट्टरानी विकल, प्रामारी १८५।१ अनसनपकरि ॥
इम तजिय देह सव लघु उभय२, कीलितं औरसं ध्यानकरि।२८।

पकरि १ नकरि २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

निंदि मरत प्रामारि १८५।१ निज, जेठे त्रय ३ तनुजात ॥
भूप सोतिसुतंहा भन्यौं, वर सुभांड १८६।४ विख्यात ॥ २९ ॥

१मार्ग और,विना मार्ग२आदि॥२३॥३आधी रात को४घात. दोनों माताओं को ५नमस्कार किये विना ही फिर पीपलदे ६गया ॥२४॥ वालकों को ७पकड़ने का वृत्तान्त सुनकर ८ खेद का वचन९प्राण छोड दिये१०शरीर के सव घाव फट गये ॥२५॥ ११ भगाहुआ जानकर १२ नैणवानगर का जाना छोडकर ॥ २६ ॥ वालकों को पकड़ने के१३कारण. सव१४ जनाने को ॥२७॥१५खान पान का त्याग करके१७अपने उदर से उत्पन्न हुए वालकों को १६कैद करने का विचार करके ॥ २८ ॥१८ पुत्रों को१९सौत के पुत्र को ही राजा होना श्रेष्ठ कहा॥२९॥

सधंन कह्यो याकेहि सयं, निज मृतिकृत्य निसेस ॥
मनि १ हाटक २ भू ३ गज ४ प्रमुख, विप्रन वितरि विसेस ।३०।
हुव सारन १८६।१ अरु धीर १ हरि २, जुज्झत घायल जंग ॥
तातैं जाबदु१८५।२ कृत्य तिम, सद्धिय सेव१८६।२ सअंग ॥३१॥
निम्म १८५।३ सहित इत घायल४न, उचित ठानि उपचार ॥
क्रम सँत्वर पाटवकियउ, आगमविधि अनुसार ॥३२॥
प्रजा पलायित बुल्लि पुनि, सचिव१न भट२न समान ॥
दै बिसवास बसाइदिय, थिर अप्पिय सुखथान ॥ ३३ ॥
मरनकढत बुंदियमहिप, भन्यौं सुभांड १८६।४ हिं भूप ॥
पै जनकहि मृत सुनत पुनि, उदय १८६।३ लख्यो अनुरूप।३४।
भारमल्ल१८६।४सिसु राज्यभर, निवहै समयसु नाँहिं ॥
मन्न्यौं जो नृप मंतु सो, उदय१८६।३मैं न अब आँहिं ॥३५॥
यहविचारि बुल्ल्यो उदय १८६।३, पै बय १ जाड्य २ प्रमत्त ॥
नीचजनन निरत सु नट्यो, वदि जंजाल सु वत्त ॥ ३६ ॥
आकारन सुनि उदय १८६।३ को, अक्खयराज१८६।१ हु एह ॥
गद्दिय चाहि गुरुत्व गिनि, आयउ कृत्यअनेह ॥ ३७ ॥
ताहि गोरि चुंड१८६।२हिं तरजि, उदय१८६।३नट्यो आलोचि॥
किय प्रमान निजप्रभु कथित, समय१देस२ गति सोचि ॥३८॥

---

१ करने को २ हाथ से ३ प्रेतकर्म ४ स्वर्ण ५ दिया ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ६ इलाज ७ शीघ्र ८ नैरोग्य किया ९ वैद्यक ग्रन्थों की रीति के अनुसार ॥ ३२ ॥ १० भगी हुई प्रजा को ११ बराबर ॥ ३३ ॥ जब १२बुन्दी का राजा मरने को निकला तब सुभांड को राजा करना कहा था. अपने उदयसिंह नाम के स्वरूप के १३ अनुसार ॥ ३४ ॥ १४ राज्यभार १५ अपराध. उदयसिंह में वह दोष अब नहीं १६है ॥ ३५॥ अवस्था और १७मूर्खता से. नीच लोगों से१८प्रीतियुक्त होने के कारण राज्य करने को जंजाल कहकर नटगया ॥३६॥ १९ बुलाना. अपने को २०बड़ा जानकर२१प्रेत कार्य के समय पर आया ॥ ३७ ॥ २२ विचारकर. अपने स्वामि का २३ कहना ॥ ३८ ॥

खेतहिँ हारे खोजि पै, नृपवंपु पायउ नाँहिँ ॥
लगेहोन समरुंड लखि, मंत वहु पंचनमाँहिँ ॥ ३९ ॥

॥ षट्पात् ॥

निम्मदेव १८५।३ नृपअनुज परयो घायल प्रासादहि ॥
जिहिं झंझट यह जानि कुणप खोजिन पठईकहि ॥
नृप १ कमाल २ तँहँ हनिय मैं १ हु नूर २ सु जँहँ मारिय ॥
जँहँ प्रकुप्पि जावदुव १ कँवल कंकन हुसैन २ किय ॥
जवनेस हत्थि कर अग्ग जँहँ पिक्खहु नृप कर्तित परयो ॥
मिच्छपंति अंसे कट्टि रु हमहु कलंह जत्थ अद्भुत करयो ।४०।

॥ दोहा ॥

जँहँ समान १ मैं २ जावदुव ३, परे लखे तुमपास ॥
हमतैं दिस दक्खिन ढिगहि, अँजि तुमुल तँहँ ग्रास ॥ ४१ ॥

॥ षट्पात् ॥

फट्टिय सिर चो ४ फार तेग द्वै २ परि नृपको तँहँ ॥
पुनि हुसैन असि पाइ जोहु खुलि खंड परयो जँहँ ॥
मस्तकरहित मुहूर्त भिरत कर १ पय २ पुनि भग्गे ॥
ढँरयो विकसि ढक्करहुँ लोह अगनित तस लग्गे ॥
कर१पय२कटे रु सिर३के सकल चतुर तत्थ पहिचानिकैं ॥
[कि]रि निचित दाह तिनको करहु पहु सुभांड१८६।४लेहु पानिकैं।४२।

दोहा ॥

पहिलैं कछु हमसैं परैं, रुंडपनहु रचि रारि ॥

राजा का शरीर२विचार३पञ्चों में ।।३६।।४ महलों में५परस्पर का यह झोड़
[जा]नकर ६ मुर्दों की तलाश करने वालों को. कंक पक्षियों का ७ ग्रास. बा[द]
[]शाह के हाथी की कटीहुई ८सूंड के आगे राजा ९कटाहुआ पड़ा है सो दे[ख]
[]लो १०यादशाह के ११ कन्धे को १२ युद्ध ।। ४० ।। भयङ्कर १३युद्ध हुआ
४१ ॥ १४ दो घड़ी तक १५गिरा १६ कलेवर (धड़)१७ टुकड़े १८ तहां १९ शीघ्र

प्रभुंप्रतीक तँहँ पायहो, निश्चय निपुन निहारि ॥ ४३ ॥

षट्पात् ॥

निम्म१८५।३कथित सुनि नरन खेत मति गति पुनि खोजिय ॥
अंग निचिंत किय अखिल जाहि भास्यो सम जो जिय ॥
सबनतैंहु पुनि सोधि कतिक नृप अंग निकारे ॥
कतिक नपाये कलह टूक लघुलँघु असि टारे ॥
सिर सकल द्वैरु कर१पय२सकल रजानि गूढ ढँढ्ढ२३दलित ॥
कर निज सुभांड१८६।४चय तासकरि कथितरीतिदग्धसुकलित।४४।
पच्छिमदेवी१८५।१प्रान तजिय बासर वसु८अंतर ॥
यातैं बीस२०हि अहन नियत हुव कृत्य निरंतर ॥
मनि१हाटक२मातंग३सप्तिँ४सुरभी५भू६मुख सब ॥
दये द्विजन सुभदान तिन्हहिं अभिमंत भोजन तब ॥
सह प्रीतिपाइ भोजन सवन इकबीसम२१आवंत अह ॥
बैठोसु पट्ट नव९अब्द बय महिप सुभांड१८६।४महंतमहँ ।४५।

॥ दोहा ॥

घायमिटत सब घायलन, लिय बुलाय हियँलाय ॥
हय१गज२ग्राम३अतीवँहित, बखसे मानबढाय ॥ ४६ ॥

रुचिरा ॥

जवन इतसु लजि बाजबहादुर भजि मंडुव पुर जातभयो ॥
निम्म१८५।१निसित असिभिन्नबिकृतनिजअंस अहनसिकवातभयो
रहिंगय जास सिबिर उपहारहु तिन्ह लुंटन पुर जनन तन्यों ॥

॥४२॥ १ प्रभु के शरीर के अवयव ॥४३॥ सब अङ्गों को २इकट्ठे किये ३ टुकड़े ४ धड़ ॥४४॥ बीस५दिनों तक ६निश्चय ७ घोड़े ८ गौएं ९ आदि १० अभीष्ट (वांछित)११दिन. नौ१२वर्ष की अवस्था में. बड़े १३ उत्सव से ॥४५॥१४हृदय से लगाकर १५ अत्यन्त स्नेह से ॥ ४६ ॥ निम्मदेव के तीखे १६ खड्ग से १७ कटेहुए अपने १८कन्धे को १९दिनों तक सिकवाता रहा २०रहगई२१सामग्री

जयविच लहि सहसा सु पराजय बलि बुंदियसिर कुपितबन्यो॥४७॥
गो पहुंपाक जुगल२गहिकैं गृह भानि तिहिं प्रति हित अहित भरचो॥
उरखललाइ असन निजअप्पिरुजिहिंसिसुजकुंट२हिजवनकरचो॥
तिन दोउ२न विस्वास वढैं तिम दये निजन अधिकार दयो ॥
पहुंइतपृथुकसुभांड१८६।४सुहुव परगुनसहन१सुदोसत्व२गयो ।४८।

दोहा ॥

विदित यहै आधारवस, उचित१रु अनुचित२आहि ॥
जोगि१ न गुन अति सहन२ जो, सुपहु१ न दोस२सदाहि ॥४९॥
कोउन जानैं दैवक्रम, हिय विद्या निधि होहु ॥
व्है हैं नृप साधारनहु, सवन नजानी सोहु ॥ ५० ॥
सक वसु सासि चउदह१४१८समय, वैरिसल्ल१८५।१हुव वीर॥
नभ सर सक्करि१४५०सक नियत, धरिय छत्र जिहिं धीर॥५१॥
ख निधि चउद्दह१४९०साक खिन, इम बुंदिय रन एह ॥
वरस वहत्तरि७२ पाइ वय, देत भयो तजि देह ॥ ५२ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर१ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४चरित्रे तारादुर्गाद्रिपर२पार्श्वप्रस्थापितपूर्वबल १ वाह २ वर्गसहपरिग्रहसारणा १८६।१ दिवान्धवाऽष्टकसुंदरा १ दिसुभटाऽष्टक ८ नयनपुरनेतव्यसशिशुशुद्धान्तजनानिष्कासन १, प्राप्तप्रत्ययपृष्ठलग्न

॥ ४७ ॥ १ राजा के दो बालकों को. बालकों के २ जो हे को. इधर सुभांड बालक ही ३राजा हुआ जिसमें सहनशीलता का गुण था परन्तु वह अधिक होने के कारण दोष होगया ॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पूके पूर्वायणके पञ्चमराशिमें अग्निवंशी चहुवाणवंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपालके वंश और अनुवंश की कथा बनाने के समय के वचनों में सुभांडदेव के चरित्र में तारागढ के पर्वत की परली ओर स्थापन कीहुई पहले की सेना और वाहन वर्ग सहित परगह सारण आदि आठ

लुण्टाकयवनाऽनीकहतवेगमार्गमूढधात्रीजनधृतस्ववशीकृतश्याम १८६।८ श्यामा १८६।१शिशुद्वय २ म्लेच्छराजोपायनीकरण २, यानारोहणस्थानालब्धशिशुद्वय २ प्रसभप्रतिप्रस्थापितसाऽनुजसुभाण्ड १८६।४ गम्यमार्गगामितसानीकरक्षणीयवर्गप्रत्यागमशोधितशैलालब्धलभ्यसमवगतयथाभूतोदन्तसम्मतसौप्तिकचिकीर्षाचंक्रम्यमाणसपरिग्रहसारण १८६।१ नवब्रह्म १८६।२ धीर ३ हरि४ त्रिविक्रम ५ सामन्तपञ्चक ५ केदारेश्वरसद्मसमीपपिप्पलदाधीशकुमारोदयसिंह१८६।३सम्प्रेषितसन्देशहारकसम्मिलन३, प्रत्यानीततद्दूतसम्मेलितसर्वसङ्घातसम्पातन ४, सारणो१दय २ नवब्रह्म ३ हरिसिंह ४ तदमात्यादिसुभटचतुष्क ४ संहरण ५, समाश्वासनविश्रम्भसार्थीकृतशिशुद्वय २ सोढांसक्षतव्यथयवनाधिपबाजबहादुरमण्डूपुरपलायन ६, जननीजकुट २ दर्शन १ वन्दना २ दिवि

वांधव और सुन्दर आदि आठ उमरावों का नैणवापुर को लेजाने योग्य बालकों सहित जनाने लोगों को निकालना, सुबूत पाकर पीठ लगीहुई लुटेरी यवन सेना का थकेहुए, मार्ग भूलेहुए और धायों के उठायेहुए श्याम और श्यामा दो बालकों को अपने वश में करके बादशाह की नजर करना, सवारियों पर चढने के स्थान में दोनों बालकों को न पाकर और छोटे भाई सहित सुभांड को जाने योग्य मार्ग में हठ से पीछा भेजकर, सेना सहित रक्षा करने योग्य समूह को अर्थात् जनाने को रवाना करके पीछे आकर पर्वत को शोधने पर भी लभ्य वस्तु को न पाकर यथार्थ वृत्तान्त को जानकर, सलाह करके रातिवाह देने की इच्छा से चलाईहुई अपनी परगह सहित सारण १ नवब्रह्म २ धीर ३ हरि ४ और त्रिविक्रम५ इन पांचों सामन्तों का केदारेश्वर के मंदिर के समीप पीपलदा के पति कुमर उदयसिंह के भेजेहुए हलकारे से मिलना, उस दूत को पीछा लाकर सब समूह को मिलाकर छापा देना, सारन १ उदयसिंह २ नवब्रह्म ३ और हरिसिंह ४ का उस (बादशाह) के मन्त्री आदि चार सुभटों को मारना, धैर्य देने से विश्वास पायेहुए दोनों बालकों को साथ में लेकर कन्धे के घाव की पीड़ा को सहनेवाले बादशाह बाज बहादुर का मण्डूपुर को भागना, दोनों माताओं के दर्शन और नमस्कार

मुखमहोन्मत्तोपमानकुमारोदयसिंह १८६।३ स्वस्थानपिप्पलदाप्रतिप्रस्थापन७, शिशुयुग २ निगडनश्रवणसमकालसंरम्भसमुत्थानशीर्णक्षतसन्धानजावदु १८५।२तनुत्यजन ८, श्रुतशत्रुपलायनसेवा १८६।२ दिवन्धुवर्गसकुशलशिशु १ शुद्धान्त २ जनबुन्दीपुरप्रत्यानयन ९, धीर १ हरि २ सहितसारण १८६।१ क्षतपारवश्यप्राप्तावसरसेव १८६।२ जावदु१८५।२ प्रेतकर्मप्रणयन १०, निश्चितनृपनिर्दिष्टापराधनिवारणसुभट १ सचिव २ समाकारितनीचजनानुमतरतोदयसिंह १८६।३राज्यानङ्गीकरण ११, राज्यरक्षिवर्गविज्ञाततद्वृत्तकृत्यसमयसमागतसन्नद्धसैन्यसानुजज्येष्ठकुमाराऽक्षयराज१८६।१ निराकरण १२, सचिव १ सामन्त २ स्वीकृतस्वामित्वसुभाण्डदेव १८६।४ सक्षतस्वपितृव्यकनिम्मदेव १८५।३ सूचितसमरस्थानगवेषणसम्पादितपृथ्वीशप्राप्यप्रतीकस्वकरसमीरसखसंस्करण १३, दिनाऽष्टका ८ ऽनन्तरपट्टराज्ञीपद्मिमदेवी १८५।१ तनुत्यागकारणवासरविंशति २० पितृप्रेतकृत्यानुष्ठान १४, प्राप्तैकविंश २१ वासर

आदि से विमुख और महा उन्मत्त के सदृश कुमर उदयसिंह का अपने स्थान पीपलदे को वापिस जाना, दोनों बालकों का कैद होना सुनने के साथ ही जोश आने से घावोंका मिलना फटकर जावदू का शरीर छोडना, शत्रुओं को भगेहुए सुनकर सेव आदि बान्धव वर्ग का बालकों और जनाने के लोगों को कुशलता पूर्वक बुन्दीपुर में पीछा लाना, धीर और हरि सहित सारन घावों से परवश होने के कारण समय पाकर सेव का जावदू के प्रेतकर्म करना, राजा के कहेहुए अपराध के निवारण का निश्चय करके उमराव और सचिवों के बुलाने पर भी नीच लोगों की सलाह में प्रीति रखनेवाले उदयसिंह का राज्य से इनकार करना, राज्य की रक्षा करनेवाले समूह का उसका वृत्तान्त जानकर प्रेतकर्म के समय सेना सजकर आयेहुए छोटे भाई सहित बडे कुमर अक्षयराज का अनादर करना, मन्त्री और उमरावों से स्वामिपन को स्वीकार करके सुभांडदेव का घायल काका निम्मदेव को सूचना कियेहुए युद्धस्थल में ढूंढ कर राजा के पाने योग्य अंगों को इकट्ठा करके अपने हाथ से अग्नि संस्कार करना, आठ दिन के पीछे पाटवी रानी पद्मिमदेवी के शरीर छोडने

वसरसर्वसम्मतनव ९ वर्षवयस्कभूपभारमल्ल १८६।४ पितृपट्टप्रापण १५, प्रापितप्रघातपाटवसभासमाकारितवीरवर्गपट्टादिपूजन १६, प्रकृतिविप्लुतशिबिरोपहारनिम्म १८५।३ खरखड्गखिन्नांसमण्डूपुरप्रविष्टपुनर्निश्चितबुन्दीविरोधबाजबहादुरसम्पादितसमुचिताधिकारबुन्दीन्द्रबौलद्वय २ यवनीकरण १७, पौगण्डवयप्राप्तपट्टभूमीभुजङ्गभारमल्ला १८६।४ तिसहनगुण १ दोषीभाव २ भाविताभाषण १८, बुन्दीन्द्रवैरिशल्य १८५।१ जन्म१ पट्टप्राप्ति२ शूरशय्याशयन ३शकसूचनं १९ सप्तदशो १७ मयूखः ॥१७॥

आदितश्चतुष्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६४ ॥

॥ प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥.

॥ दोहा ॥

अक्खप१८६।१तिमचुंड१८६।२रु उदय,१८६।३,नमिल्यो पट्ट निहारि
दब्बन लग्गे देस द्रुत, बालक नृपहिं बिचारि ॥ १ ॥
जानि तज्यो हम पट्ट जब, भोगन दारिदभाव ॥
क्यों पावहिं इम चिंतिकैं, उदय १८६।३ हु किय उफनाव ॥२॥

के कारण बीस दिन तक पिता और माता का प्रेतकर्म करना, इक्कीसवें दिन का समय प्राप्त होने पर सबकी सलाह से नौ वर्ष की अवस्थावाले राजा भारमल्ल (सुभांड का दूसरा नाम है) का पिता का पाट पाना, घाव पायेहुए वीरों के समूह के नैरोग्य होने पर सभा में बुलाकर उनका पट्टा आदि देने से सत्कार करना, डेरों की सामग्री को प्रजा के लूट लेने पर निम्मदेव के तीक्ष्ण खड्ग से कटे कन्धेवाले बाजबहादुर का मण्डूपुर में प्रवेश करके फिर बुन्दी पुर के विरोध का निश्चय करके उचित अधिकार देकर ग्रहण कियेहुए बुन्दीन्द्र के दोनों बालकों को यवन बनाना, दश वर्ष की अवस्था पाकर भूपति भारमल्ल का अत्यन्त सहनशीलता के गुण का दोषभाव को सेवन करना अर्थात् गुण का दोष होना, बुन्दीन्द्र शत्रुशल्य के जन्म १ पाट पाने २ और काम आने के सम्वत् की सूचना करने का सत्रहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १७ ॥ और आदि से १६४ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ २ ॥

निजनिज ढिगके वरनगर[1], अंगमि[2] प्रसभ अकूट ॥
लिय छिन्न रु रोधक[3] लखत, लगे मचावन लूट ॥ ३ ॥
पट्टनि १ जयथल २ खेट ३ पुनि, लक्खैरी ४ रु लवान ५ ॥
खटपुरपति दव्वे अखय १८६।१, उद्धतपन अभिमान ॥ ४ ॥
पुव्वहु यह लंपट[4] प्रथित[5], भयो सु सुनि खिजि भूप ॥
निजप्रसाद बाहिर नियत, रक्ख्यो अघ अनुरूप ॥ ५ ॥
चुंड १८६।२ हु लखि अग्रज चलन, लग्गो छोरन लज्ज ॥
देसमैं सु वर्जन दुसह, कैं तर्जन १ मद २ कज्ज ॥ ६ ॥
विगरनके दिन बाहुरत, विक्खैं सुभ १ विपरीत २ ॥
नीचजनन उदय १८६।३ हु निरंत[6], प्रकट सु मत्त प्रतीत ॥ ७ ॥

॥ मदनावतारः ॥

वुल्लयो याहि जब पट्ट बैठारिबे,
धरनि अधिराँजपन[7] छत्त सिरधारिबे ॥
हेयँ[8] कुल सचिव चम्मार[9] याकै हुतो ॥
स्वामि संबोधि[10] लग्गोहि अटकन सुतो ॥ ८ ॥
वदिय इम स्वामि तुम भूप जब वज्जिहो ॥
गरुँव[11] भरँ[12] नम्रसिर इमन तव गज्जिहो ॥
लैन लखि जाचकन हैन कहि लज्जिहो ॥
सैनंसर[13] पै न इम मैंनंसुख[14] सज्जिहो ॥ ९ ॥

दोहा॥

चर्मकार[15] जो इम चविय, उदय १८६।३ सु मन्नि असेस ॥

---

१ श्रेष्ठ नगर. सत्य हठ से २ दबाकर ३ रोकनेवालों के ॥ ३ ॥ ४ ॥ ४ व्यभिचारी ५ प्रसिद्ध ॥ ५ ॥ ६ ॥ ६ प्रीतियुक्त ७ स्वामिपन का ८ त्यागने योग्य कुलवाला ९ चमार (चर्मकार). स्वामि को १० समझाकर ॥ ८ ॥ ११ बडे १२ भार से सिर झुकाओगे और इस प्रकार गर्जना नहीं करोगे. लेनेवाले याचकों को मेरे पास नहीं है ऐसा कहकर लज्जित होओगे १३ शय्या के ऊपर इस प्रकार १४ कामदेव का सुख नहीं साधोगे ॥ ९ ॥ १५ चमार ने जो यह कहा

पायो अबुध[1] न भूप पद, दब्बहिं अब प्रभुदेस ॥

॥ मदनावतारः ॥

दब्बिपुर द्वै २ रु कृति २० गाम निज दे
कतिक लिय नानता १ प्रमुख के .. को
होजु मक्खीद १ गैनोलिपतिको हर्‍यो,
और भ्रातन सनहु जोर अति अहर्‍यो

॥ दोहा ॥

निम्मान१ रु लोहित २ नगर, खीनाँ३ इब्भिय
चुंड १८६।२ हु लग्गिय चट्टिबे, कोन घटैं अघ क
रोहितपुर दिनसत १०० रह्यो, नियत अमल नि
नृप दैनकि हल्लू १८२।१ कुलहिं, लिय पच्छे खि
बुंदिय बल प्रबयौ[3] बच्यो, निम्मदेव १८५।३ बिनु
नृपके सिसुपन इम निजहु, सुरनलगे मनमाँहिं
चले क्यौं न पँर[4]चित्त जब, घरहीं मैं पहघाट ॥
तकत छिद्र अभिमत[5] तन्यौं, बन्यौं मुलक दहबा[6]
नृप १ हिं मराइ गहाइ निज, अनुज २ रह्यो भजि
भाग्यहीन यह भूप है, अक्खैं इमहु अनेक ॥ १६

षट्पात् ॥

पौगंडहुँ बय पाइ इम न सहिबो व्है औरन ॥
सरल निसर्ग्ग सुभांड१८६।४जनन बचनहु दै ज
इतरहु तब अंगामि रु भ्रात लग्गे दब्बन भुव॥

---

१ मूर्ख ने राज्य नहीं पाया और अब स्वामी के देश को दब
॥ ११ ॥ पाप करनेवाला २ नीच ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ३ वृद्ध
ओं के चित्त क्यों नहीं चलें ५ अभीष्ट (वांछित) ६ बरबा
७ दश वर्ष की अवस्था पाकर इस प्रकार सहनशीलता
नहीं होती ८ स्वभाव

असगोत्रहु भट अवर हड्ड सहना प्रतीपहुव ॥
सीमा अराँति लखि यह समय रहे दब्बि जितजित धरनि ॥
जँह बढत द्रोह इक१गृह जननँ सत्रु मनन सुहि तँहँ सरँनि ॥१७॥
नृपति पितृव्यक निम्म१८५।३तजिय द्वि२समाँ अंतर तनुँ ॥
जिहिँ सब लुब्धहु जानि मन न मोर्यो भीषम मनु ॥
बुंदिय रन छतँविकल पंटुहु खिन्नँहि रह्योसु पुनि ॥
बोधितकिय जिहिँ बिमुख सोहु उपदेस तज्यो सुनि ॥
अब निम्म१८५।३मरत प्रवयाँ न इक१परे स्वामिढिग सब प्रँवय ॥
असगोत भटन कति उब्बरे जिनतैं नबन्योँ बिमुख जय।१८।
अमरदुर्ग१इत दब्बि पाइ झज्झोल२प्रमोदन ॥
संकरगढ३लग सहज सीम प्रसरिय सीसोदन ॥
इत खिच्चिन आटोनि १ लियउ बाराँ२बड़ोद३लग ॥
बप्पाउर ४ वररोद ५ प्रमुख पुहवी दब्बी पग ॥
इत हम्म१८३।१विजितँ डोडन अनखि लग रहलावनि१दब्बिलिय॥
इक१होइदभिक१तोमर२अरिन इत उत्तर भुव अंगमिय॥१९॥
उन्नयपुर१लहि इनहु गंजि आमा२हनुमतगढ३ ॥
लोचनपुर१हुत लग्गि रारि मंडिय प्रलोभ रँढ ॥
जँहँ नृपमातुल जैत दहर गढपति हो दुस्सह ॥
दिय भजाइ जिहिँ दुजन मारि गोलन प्रसारि मह ॥
नैनपुर टिकत उतके निखिल रँदतुट्टत अँहिजिम रहे ।
इत निजनमँहु बह्पुर अखय१८६।१दब्बि निजाहि कुलजन दहे।२०।

हाडे की सहनशीलतासे१ विरुद्ध होगये२शत्रु३वंशमें. शत्रु के मन भी उसी४मार्गमें जाते हैं॥१७॥५काका. दो६ वर्ष पीछे७शरीर. सबकोद्लोभी जानकर भी आपने अपने स्वामि से मन नहीं मोड़ा.बुन्दी के युद्ध में९घावों से विकल होकर१०नैरोग्य होने पर भी११दुखी रहा. एक भी१२वृद्ध नहीं रहा. सब१३वृद्ध लोक अपने स्वामी शत्रुशल्य के पास काम आगये॥१८॥ हामा के१४विजय कियेहुए डोडिया क्षत्रियों ने क्रोध करके॥१९॥ लोभ के१५हठ से१६दांत टूटेहुए१७सर्प के समान।२०।

दोहा ॥

पट्टनि१से पुर लिय प्रथम, गिनि प्रभुता निजगेह ॥
मरत निम्म१८५।३रोध न मिल्यो, अधिक बढयो तब एह ॥२१॥
जास तोग१८६।१अभिधान जग, बिदित पराक्रम बोध ॥
निम्मदेव१८५।३सुत जिहिं निपुन, जनक पट्ट लिय जोध॥२२॥
हल्लू१८२।१बिनु जिम तुच्छहुव, बंबावद सु बढंत ॥
बैरिसल्ल१८५।१पीछैं सु बिधि, हुव बुंदियभुव हंत[2] ॥ २३ ॥

षट्पात् ॥

खित्तल बनिक[3] खटोर हुतो नृप सचिव स्वामि हित ॥
प्रतिभा[4]मंत्र २ प्रगल्भ[5] दूरदरसी सकुं[6]नोदित३ ॥
बिख[8] सु राज्यबिच बढत हेरि सबसुख रोकत हुव ॥
जिनजिन लिय जोजोहि भयो तिनतिन अप्पतभुव ॥
सारन१८३।१रु जैत१८५।१समुचित[9] समुझि अनुमत[10] निज लैएउभय
नृपपैलगाइदिन्नैं निखिल उज्झि[11] अखय१८६।१चुंड१८६।२रुउदय१८६।३

दोहा ॥

निजनिज दब्बी दै निखिल, लाये नृपपय लुब्ध[12] ॥
लाल१८४।२निम्म१८५।३जाबदु१८५।२कुलहि, सुमतिरहेतहँसुब्ध२५
गहत उदय१८६।२मकखीद१गढ, जैत१८५।१बिचारिय जंग॥
सचिव निवारयो सोहु साँमि[13], रच्यो स्वामिहित रंग ॥ २६ ॥
अरिन जिते सब अंगमैं, गये तिते पुर१ग्राम२ ॥
निज प्रतीप[14] रक्खे निजहिं, सचिव दुधाँ[15] रचि साँम[16] ॥

---

१ रोकनेवाला ॥ २१ ॥ २२ ॥ २ हानि; अथवा खेद का वचन ॥ २३ ॥ खेता नामक खटोर जाति का ३ बनिया ४ बुद्धि ५ सलाह में ६ कुशल ७ शकुनी. राज्य में ८ जहर बढता देखकर ९ उचित. अपनी १० सलाह में लेकर ११ छोडकर ॥ २४ ॥ १२ लोभियों को ॥ २५ ॥ १३ शान्त करके ॥ २६ ॥ अपने १४ विरुद्ध लोगों को भी अपने बनाकररक्खे १५ दोनों ओर १६ मिलाप

॥ षट्पात् ॥

वय नृप सोलह१६वर्ष हुवहु न *छमा छोरत हुव ॥
सरलपनहु ÷सचिवोक्त धारि निजहित मन्न्यौं ध्रुव ॥
राव सूर खदिराटें जनन चालुक्य जाजपुर ॥
तनया कमला १८४१४तास धरन प्रकटी साध्विन धुँर ॥
उपयामें प्रथम रानी यहै पहु सुभांड १८६१४ आनी परनि ॥
संबंधि नृपन न दई सुता धम्मिं घटत अविरत धरनि ॥ २८ ॥

॥ दोहा ॥

कर्नीनाम अनुपमकुमारि १८६१२, अमरकबंध अगार ॥
उपयम दूजे २ सो अधिप, परन्यौं कथित प्रकार ॥ २९ ॥
राजकोट चालुक रतन, कन्या स्यामकुमारि १८६१ ॥
सोंड १८६१५ विवाह्यो सो सती, नियति लेख निरधारि ॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

जुग ७ सोदर सहजात विविध महसह विवाहि वर ॥
सचिव सु खित्तलसाह घनैं जस जुत लायो घर ॥
लघु इनतैं लोहठ १८६१६ रु कर्मचंद्रक १८६१७ वय बालहु ॥
हुव अनूढ मृत हात कहुँक असहन छेम कालहु ॥
सुत दुव२उपेत मृत दुव२सुतन दुख अनंत किय दाहरिय१८५१२
तिन्ह प्रेतकर्म विधिमत वितत करि द्विजजन घनघन करिय॥३१॥

॥ दोहा ॥

सक मुनि नव चउदह १४९७ इमसु, बिरचि भ्रात जुग२व्याह ॥
वन्यौं थंभ खित्तलवनिक, राज्यथंभि नयराह ॥ ३२ ॥

---

* छमा ÷ सचिव का कहाहुआ. १ खैराड़ प्रदेश में सालंखियों के २वंश में ३ पतिव्रताओं की धुर खींचनेवाली ४ विवाह ५ धर्मा लोग ६ निरन्तर ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ७ जोड़ला (एक साथ उत्पन्न होनेवाले) ८उत्सव सहित ९ विना विवाहे किसीके हाथ से मरा. काल १०समर्थ है ११ विस्तृत (फैला) करके बहुत ब्राह्मणों को द्रव्य कर दिया ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

पीछैं निजनिज समयपर, तनया इक १ सुत तीन ३ ॥
भारमल्ल १८६।४ नृपकैभये, पथ निज चलन प्रवीन ॥ ३३ ॥

॥ षट्पात् ॥

तँहँ जो जेठोतनय सूर नारायनदास १८७।१ सु ॥
*तानक स्वकुल द्वितीय २बिदित नरवद१८७।२ +बितरन ÷बसु॥
ससु १ बसु २ अन्त्यानुप्रासः ॥
प्रभुके जिहिं परपुरुख वंस यह बहुल बढायउ ॥
॥
नरसिंह१८७।३नामतीजो३निपुनकुमरजन्यौंअनुपमकुमरि१८६।२॥
जिन्ह पिछ्छिमदनकुमरी१८७।१जनीकमल्ला१८६।१बाईकभावकरि॥

॥ दोहा ॥

संतति न भई सोंड १८६।५ कैं, निर्यति उदर्क निदान ॥
क्रम संभव ए चउ ४ कहिय, सुपहु हड्ड संतान ॥ ३५ ॥

॥ पादाकुलकम् ॥

मंडोउर इत जोधमहीपति, औरस कुल बिस्तरि भैवया अति॥
बिक्रमसक पंद्रह तिथि१५१५बित्तत्त, सुक्क बिसद एकादसि११सम्मत
भुव निजनाम रहन कछु भायउ, ॥
सोदर बीका१बीदा२तससुव,भाग्य लखँन गय दुव२जंगलभुव।३७।
देवीदास तनय इक १ दुव्वर, पाइ जनक कटुबैन अनखपर ॥
आयउ हड्डवतीं जर्नपद वह,स्वभटकियउ खिच्चिन पुनिहितसह।३८।
भो पित्थल जाको नाती भट, मातुल मारि बढ्यो जो उब्बट ॥
जिहिंकुल अब गागरनीं जानहु, प्रभुंभ्राता ब्याह्योसु प्रमानहु।३९।

॥३३॥ अपने कुल को*फैलानेवाला+देनेवाला÷धन१हेरावराजा रामसिंह आपके पर पुरुषों का वंश जिसने २ बहुत बढाया ३ वृद्ध अवस्था में ॥३४॥४ भाग्य के ५ फल से ॥ ३५ ॥ ६ वृद्ध अवस्था में ॥ ३६ ॥ भाग्य ७देखने के लिये ॥ ३७ ॥ हाडोती ८देश में ॥ ३८ ॥ ९ पोता १० हे रावराजा रामसिंह आपका भाई

लखि *खिन रान अमरगढ जव लिय, कोउक बंधु दुर्गपति तँहँ किय॥
बुंदियधर जिहिं लूट बढाई, +प्रचुर प्रजा पँहँ आहि पढाई ॥ ४० ॥
सोलह १६ ÷सम नृपवय जवहीसौं, त्रासन अरिन चिंति तवहीसौं॥
×वंर्मितवलखिजिंचढ़नाविचारिय, निजअमात्यतवतंवसु निवारिय४१
जिनजिन भुव दव्वी निज जोधन, पठये ते इम नीतिप्रवोधन ॥
आगस मिटन वेर यह आगत, जो वह जोर अरिनसिर जागत।४२।
मनविनु तेहु गये रिपुमारन, वाहिर १ अंतर २ भेद बिथारन ॥
क्रम१लघुतम२हेला१गुरु२कारन, कहुँक लरैंहु मिटीसु पुकार न।४३।
रुकारन १ पुकारन २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
हनैंइनहिंजिन छद्मप्रहारन, संग नदियइमंजैत१८५।२रुसारन१८६।६॥
जे सागस पहुँचे निज जारन, पायउ तँहँ तिन परन प्रतारन ।४४।
वसुधा निज प्रभुकीहि विगारन, धी कुटिलसु लगैं किम धारन॥
विफल मुरे लखि विमुख न वारन, हुव नृप विमन पुकार हजारन॥४५॥
रुकिय अग्ग गणकन उच्चारन, प्रानतजहिं नृप हेतिप्रहारन ॥
सु वचन चिंति खित्तल१रु सारन२, नृपकोकरहिं सेसौंह निवारन।४६।
रहत सदाहि छमा १ प्रभुता २ रन, वढैं छमा १तउ कित्तिविगारन॥
जुज्झैं इमहुव नृप साधारन, वेलोचित कृति जानि विचारन ॥४७॥

वहां व्याहा है ॥ ३९ ॥ * समय देखकर महाराणा + बहुत ॥ ४० ॥ राजा सोलह ÷वर्ष की अवस्था में हुआ जब से ही × कवच धारण कीहुई सेना के ॥ ४१ ॥ १ अपराध ॥ ४२ ॥ २ छोटे कदमों से चलकर ३ लम्बी आवाजें देनेवाले फर्श्ी पर खड़े उस कारण से वह पुकार नहीं मिटी ॥ ४३ ॥ ४ छल की घात से ५ इस कारण से ६ बुन्दी की भूमि को गुप्त रीति से भोगने वाले ७ धोखा देने को ॥ ४४ ॥ कुटिल ८ बुद्धिवाले ९ तलवारों की धारों से. भागने में १० समय नहीं लगा; अथवा प्रवृत्ति के विघातक पीछे फिर गये ११ उदास ॥ ४५ ॥ राजा जाने लगा जिसको भविष्यत् वाणी से १२ ज्योतिषियों ने रोकदिया १३ शस्त्रों के प्रहार से १४ शपथ दिलाकर ॥ ४६ ॥ प्रभुता सदैव क्षमा और युद्ध से रहती है इनमें क्षमा बढजाती है तो भी कीर्ति को बिगाड़ती है १५ समय के उचित ॥ ४७ ॥

जौ गुन१बच्यो बाल्य अंतर जब,ओगुन१छमा२दया३सह सो अब॥
प्रभुता १ जँहँ ऐसे छबि पावैं, दुष्टन तो इन्ह परखि दबावैं ॥४८॥
धुत्त १ धिट्ठ २ बंचन तँहँ धारैं, पचांऽगन जँहँ मंत्र २ प्रचारैं ॥
जँहँ लेसहु उच्छाह३न जग्गैं, भिदि तँहँ कृत्य उपक्रम भग्गैं ॥४९॥
तिक ३ जो इक ह्वैहै प्रभुता १ ही, दब्ब सबन तोहु सठ दाही ॥
नृपमैं सक्ति त्रय३हि भास्यो नन,जातैंन दबिरहे निज१पर२जन॥५०॥
सारन१सोंड२ जैत ३ खित्तल ४ सह, ए चउ ४ ह्वैन रहै न पट्ट यह ॥
निम्म१८५।३तनयतोगहुभटनामी,सिरहिसदामन्नैंनिजस्वामी॥५१॥

॥ दोहा ॥

तिमनवब्रह्म१८५।२रूसेव१८६।२तँहँ,अमर१८६।१बिजय१८६।१ चउ४एहु
निज मनकरि इच्छै नृपहि, जुरे इतर निँज जेहु ॥ ५२ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वरबीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडास्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानाऽवसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४ चरित्रेऽग्रामराज्याऽत्ययराजा १८६।१ द्यग्रजत्रय ३ बुन्दीदङ्गदुर्गादि २

बाल्यावस्था के पीछे क्षमा गुण रहा सो अब वही गुण दया के १ साथ होकर अवगुण होगया ॥ ४८॥ २ धूर्त और ढीठ लोग वहां ३ ठगाई करते हैं कि जहां * पांच अङ्गों सहित मन्त्र का प्रचार नहीं होता, जहां पर राजा की उत्साह नामक तीसरी शक्ति नहीं जगती तहां आरम्भ में ही कार्य का नाश होजाता है ॥ ४९ ॥ यदि प्रभुशक्ति १ मन्त्र शक्ति २ और उत्साहशक्ति ३ ये तीनों एक होती हैं तो वहां पर ही प्रभुता होती है और वही राजा सबको दबाकर दुष्टों को जलानेवाला होता है. ये तीनों शक्तियां इस राजा में नहीं दीखतीं इसकारण से अपने और पराये लोग दबे नहीं रहे ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ४ अपने लोग थे सो भी ॥ ५२ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरि

---

*सहाया: साधनोपाया विभागो देशकालयो: ॥ विनिपातप्रतीकार: सिद्धि: पञ्चाङ्ग इष्यते ॥१॥

सप्रसंभसमाक्रमण १, चर्मकारपारवश्यानङ्गीकृताऽऽधिपत्योदयसिंह १८६।३ बुन्दी १ कोटा २ गैणोली ३ पुर १ ग्राम २ प्रकरसमासादन २, ज्ञातयुवावस्थबुन्दीशतितिक्षातिशयपृथ्वीपरिलुब्धस्व १ पर २ सामन्तस्वस्वसीमावृद्धिविस्तारण ३, दृष्टेतराऽपूर्वलाभप्रत्युततत्प्राप्तिप्रतीपपृथ्वीशपितृव्यकगाङ्गेयगृहीतधुरधारकमहामनोनिम्मदेव १८५।३ प्रधनप्रहरणप्रघातप्राप्तिपंञ्चोङ्कितीयां २ऽब्दावसान समयतनुत्यजन ४, राणाकुम्भकर्णाऽमरदुर्गा २ दिबुन्दीसीमाप्रदेशसमाक्रमण ५, खिचि१ डोड२द्विपक्षप२ बुन्दीवशाऽऽटोणि१रहलावणि २ प्रभृतिप्रान्तप्रभूभवन ६, मनोविभक्तलब्धिनेमैकी १ भूतप्रान्तोन्नयनपुर १ प्रमुखपत्तनप्रदेशदभिक १ तोमर २ द्वेषिद्वन्द्व २ दृग्दङ्गवाहिनीवेष्टन ७, तद्दुर्गपतिबुन्दीशमातुलदहडजैत्रमल्लतत्प्रत्यनीकपृतनाप्रद्रावण ८, रोधकनिम्मदेव १८५।३ मरणाऽनन्तराऽक्षय राज १८६।२ पुनःपुनःप्रभुपृथ्वीपरिच्छेदन ९, निम्मदेव १८५।३ नन्दनतोगनाथ १८।१ विभागप्राप्तपितृपदनवग्रामपुरस्वामितासमा-

---

ध में राज्य नहीं मिलने से अक्षयराज आदि तीन बडे भाइयों का बुन्दीनगर और गढ आदि को हठ सहित दबाना, चमार के वशीभूत होकर राजापन को अस्वीकार करके उदयसिंह का बुन्दी, कोटा और गैणाली के पुर और ग्रामों के समूह को लेना, युवावस्था में बुन्दीश की अत्यन्त क्षमा को जानकर पृथ्वी के लोभी अपने और पराये उमरावों का अपनी अपनी सीमा को बढाना, दूसरों का अपूर्व लाभ देखकर उलटा उस प्राप्ति के विरुद्ध भीष्म की ग्रहण कीहुई धुर को धारण करनेवाले राजा के काका बडे उदार मनवाले निम्मदेव का युद्ध में शस्त्रों के घाव पाये पीछे दूसरे वर्ष के अन्त समय में शरीर छोडना, राणा कुम्भकर्ण का अमरगढ आदि बुन्दी की सीमा के प्रदेश को लेना, खीची और डोड दोनों शत्रुओं का बुन्दी के वशवर्ती आटोण और रहलावण आदि प्रान्तों का मालिक होना, इकट्ठे मिलेहुए प्रांत को और उणियारा आदि नगर के प्रदेशों को मन से आधा आधा बांट कर दहिया और तोमर दोनों शत्रुओं का नैणवा नगर को सेना से घेरना, उसके किलादार बुन्दीश के मामा दहड़ जैत्रमल्ल का उन शत्रुओं की सेना को भगाना, रोकनेवाले निम्मदेव के मरे पीछे अक्षयराज का वारम्वार मालिक की भूमि को कार

सादन १०, विभ्रष्टबुन्दीराज्याऽवशिष्टरक्षकसमालोचितदेश१ काल २ ज्ञातगतदौर्लभ्यतत्तदर्थप्रत्यर्पितमनोमालाऽवमतस्वस्वसामन्तसमाक्रान्तप्रान्तस्वामिधर्मसेवनसमर्थसारण्ण १८६।१ जैत्र १८५।१ सम्मतिसङ्गतप्रतिभा १ प्रगल्भमन्त्र २ महोदधिशाकुन ३ सुज्ञानवर्तिष्यमाण४दूरदर्शिमहामात्यमन्त्रिमणिवणिक्क्षेत्रल१बन्धुत्रय३ वर्जितविमुखीभूतसमस्तस्वभटवर्गस्वामिसभासमानयन ११, तिरस्कृताग्राह्यलब्धिलोभलाल १८४।२ निम्म १८५।३ जाबदु१८५।२ सन्तानस्वामिसेवासमुत्कर्षसूचन १२, वैश्यसचिवोदय १८६।३ परिच्छिन्नपूर्वस्वपितृप्राप्तमक्षिपददुर्ग१प्रतिनिनीषुजैत्रसिंह १८६।३ निवारण १३, मन्त्रिराजक्षेत्रल १ समनृपानङ्गीकारसमयसीमासामीप्यवर्तिसामन्तापत्यचालुकी १८६।१ राष्ट्रकूटी १८६।२द्वितीयाद्वय २नरेन्द्रभारमल्ल १८६।४ परिणायन१४, नृपाऽनुजसोगड १८६।५ राजकोटनामग्रामैकग्रामणीचालुकरत्नसिंहकन्याश्यामकुमारी

ना, निम्मदेव के पुत्र तोगनाथ का विभाग में आयेहुए पिता के स्थान नवगांवां नगर का स्वामिपन प्राप्त करना, बुन्दी के राज्य को भ्रष्ट हुआ देखकर बाकी के राज्य की रक्षा करने के लिये देश काल को समझ, गयेहुए का मिलना दुर्लभ जान, जो जो प्रांत जिन जिनने दबाये थे उन उनको वे वे प्रांत केवल मन से अपमान कियेहुए अपने उमरावों को पीछे देकर स्वामि धर्म का सेवन करने में समर्थ सारण और जैत्र की सम्मति के साथ बुद्धि में प्रबल, सलाह के महा समुद्र, शकुन के श्रेष्ठ ज्ञान में वर्तनेवाले, दूरदर्शी, प्रधान मन्त्रिशिरोमणि वैश्य क्षेत्रल का तीन भाइयों को छोडकर बाकी के विरुद्ध हुए सब उमरावों के समूह को स्वामि की सभा में लाना, अग्राह्य लाभ के लोभ का तिरस्कार करके लाल, निम्मदेव और जावदु की सन्तान का स्वामि सेवा में बडप्पन दिखाना, वैश्य सचिव का पहले अपने पिता को मिलेहुए उदयसिंह के छीनेहुए मक्खींदगढ को पीछा लेने की इच्छावाले जैत्रसिंह को मना करना, बराबर के राजाओं के अस्वीकार करने के समय में मन्त्रिराज खेता का अपनी सीम के समीपवर्ती सामन्त की पुत्री चालुकी और दूसरी राठोड़ी दोनों से नरेन्द्र भारमल्ल का विवाह करना, राजा के छोटे भाई सोगड का राजकोट नाम एक ग्रामकेपति सोलंखी रत्नसिंह की कन्या श्यामकुमारी से

१८६।२पाणिग्रहण१५, विवाहशकज्ञापनाऽनन्तरानूढलोहठ १८६। ६कर्मचन्द्र १८६।७कैशोर्यसंस्थासूचन १६, भूभुजङ्गभारमल्ला१८६। ४ ऽपत्यचतुष्क ४ सम्भवाऽवसरकुमारनारायणदास १८७।१ नरवद १८७।२ कन्यामदनकुमारी १८७।१ तोकत्रय ३ चालुकी १ प्रसवन १ कुमारैकनरसिंह १८७।३ राष्ट्रकूटी २ जनन २ विख्यापन १७, परिणीतचालुकी१कशोण्ड १८६।५ सन्तानाभावसमर्थन१८, मण्डपपुरराजराष्ट्रकूटयोधराजनिजनामाङ्कनवीनयोधपुरनामनगर निर्म्माणसम्वत्सरसङ्ख्यान १९, योधराजपुत्रवीक १ वीद २सोदर द्वय २ जाङ्गलप्रदेशप्रस्थान २०, तत्तृतीय ३ पुत्र देवीदास ३ हड्डवतीजनपदसमीपखिच्चिवाटदेशाधिपतिखिच्चिराजाश्रितीभवन २१, तद्भाविपौत्रपृथ्वीराजवंश्याद्यावधिगागरणीपुरप्रवर्तमानदेवीदासपौत्रराष्ट्रकूटकुलप्रभुकनिष्ठभ्रातृश्वाशुर्यसम्बन्धितास्फुटीकरण २२, चित्रकूटायत्तामरदुर्गाध्यक्षबुन्दीसीमान्तरविप्लव—

१विवाह करना, विवाह के सम्वत् की सूचना किये पीछे विना विवाहे लोहठ और कर्मचन्द्र के किशोर अवस्था में मरने की सूचना करना, भूपति भारमल्ल के चार सन्तानों के जन्म के समय कुमार नारायणदास, नरवद और कन्या मदनकुमारी तीनों बालकों का चालुकी से प्रकट होने और एक कुमर नरसिंह का राठोड़ी से जन्म होने की प्रसिद्धि करना, चालुकी को व्याहने वाले शोण्ड की सन्तान के अभाव को पुष्ट करना, मण्डोवर के राजा राठोड़ जोधा का अपने नाम से नवीन नगर योधपुर बसाने के सम्वत् की गणना करना, जोधा के पुत्र बीका और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जाङ्गल देश में जाना, उसके तीसरे पुत्र देवीदास का हाडौती देश के समीप खीचीवाड़ा देश के पति खीची राजा के आश्रित होना, उसके आगे होनेवाले पौत्र पृथ्वीराज का वंश इस समय तक गागरणी पुर में वर्तमान है उस देवीदास के पौत्र के राठोड़ कुल में प्रभु (रावराजा रामसिंह) के छोटे भाई के ससुराल के सम्बन्ध को स्पष्ट करना, चित्तोड़ के वशवर्ती अमरगढ के अध्यक्ष का बुन्दी की सीमा के भीतर लूट खसोट फैलाना, उसको मारने की इच्छावाले राजा के प्रस्थान को रोककर मन्त्रिराज के भेजेहुए उमरावों का कार्य के विना वि

विस्तरण २३, रुद्वतज्जिघांसुनृपप्रस्थानमन्त्रिराजप्रस्थापिताकृतकार्यविमुखभटवर्गप्रत्यागमन २४, शक्तित्रय ३ विहीननृपक्षमा १ दया २ गुणदोषीभावप्रकटन २५ मन्त्रिराजक्षेत्रल १ समुपेतसारणादिदायाऽष्टक ८ साधारणस्वामिनृपतानिर्वाहण २६मष्टादशो १८मयूखः ॥ १८ ॥

आदितः पञ्चषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६५ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

विधिबिलासित जानैंन जग, रक्खैं हित अनुराग ॥
कति सुभांड १८६।४ लखि अब कहैं, भू रहिहै जों भाग ॥१॥

॥ पादाकुलकम् ॥

अधिपहुमरनजातयह अक्खी,स्वामि सुभांड१८६।४करहु सबसक्खी
सिसुकी ह्वै न परख सब सच्ची, कति इम बत्त गई रहि कच्ची ॥ २ ॥
समरअग्रज १ हु अचल अनुज२सम, तदपि यहैं दोउ२न अंतरतम ॥
नृप१८६।४रनआनिबनैंतँहँनिबहैं,सोंड१८६।४निजनदुखदूरहु नसहैं ३
यातैं जबजब सचिव अटक्किय, तबतब तासकथित हित तक्किय ॥
नृप१को कथितहु अनुज२निबाहयो,सचिव मानि संकोचहु साह्यो।४।
जो नृप १ होतो अनुज २ सुद्ध जम, करतो तो मरि१मारि२कुलक्रम
नृप१रु सचिव२अब पाइ नियंत्रिक,धूनैं सिर मनमारि सदा धक।५।
मेवारन यह डमर मचावत, आतिपुकार जनपैंजन आवत ॥
वनिक हुतो जब कछुक ब्याधिबस, रन खिन तब नृपकैं रचाइ रस ॥

मुख होकर पीछा आना, तीन शक्तियों के विना राजा के क्षमा और दया गुण का दोष होना प्रकट करना, मन्त्रिराज क्षेत्रल सहित सारण आदि आठ भाइयों का साधारण स्वामि के राजापन को निबाहने का १८ अठारहवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १८ ॥ और आदि से १६५ मयूख हुए ॥

॥ १ ॥ १ साची ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ २ शासन करनवाले ३क्रोध ॥५॥ ४ उपद्रव

सेना सजि हंकिय दुव २ सोदर, पर्‍यो कलह थाँनाँपुर परिसर ॥
हिंडोली लुट्टन श्रमहारे, मिले तत्थ जावत मेवारे ॥ ७ ॥
सुनिसारन१८६।१पहुँच्योवंसीसन,जैत१८५।१नपूगिसक्योखट६जोजन
जो मगमाँहिं सु संगतोग१८६।१भट, सत्रु मिलत बेढे अतिसंकट ।८।
दिन अवसेस रहत घटिकादस१०, रच्यो प्रवीरन रन समुचित रस॥
मिलिमैंननइकसहँस१०००चमूउत,सहँसच्यारि४००००सुभटनइतसंजुत
दिट्ठिजुरत वज्जिग असि दारुन, रनहुव अचल इक्क कोपारुन ॥
फेर इक्क १ तुपकन कछु फुट्टे, खापन तदनु कालअहि खुट्टे ॥१०॥
मिलताहिं विकल भजे खल मैंनें, प्रचुर सहे न गये असि पैनें ॥
भजत गमार लगे अरि भज्जन,लुट्टन१पट्टु जुट्टन२जिन्ह लज्जन।११।
दव्वतही एडिन इन्ह दोरत, एहु मुरे कति लज्ज अहोरत ॥
वज्ज्योप्रखरतहाँबालिअसिवर,परिगविभिन्नलुत्थि लुत्थिनपर ।१२।
आयउ काम गोरि गिरधर१इत,जु लखि सोंड पहुँच्यो घाटिपति जित॥
वाहुलँ तस तरवारि विदारिय,याके असि तस सीस उतारिय ।१३।
सुंदर १ गोर गोरि अरि सत्तल २, मोर्‍यो गिरधर वैर महाबल ॥
वंसीधर १कूरम म्रत हय वढि,चपल घाटिपति वाह लयो चढि।१४।
माधव१भ्रात इक्क हरि२मार्‍यो, वलिय तोग१तस वाजि विदार्‍यो॥
लुंटाक१रुसत्तल२हरि३लोटत,घोटकजुग२मोटकपगघोटत ॥१५॥
पुनि मेवारभटन छुट्टे पग, मारे इन्ह वहु पहुँचि पहुँचि मग॥
धीर१सल्ह२सारन३ अग्गैं धाँपि, अड्डैं मग ठट्ठे जय आलँपि।१६।
रिपु विच परे मरे बहु मारत१, मरे कतिक२कातर मातर मत ॥

॥ ६ ॥ थाणापुर के १समीप की भूमि में ॥ ७ ॥ २ घेरे ॥ ८ ॥३ मीणों की ॥ ९ ॥ ४ क्रोध से लाल. म्यानों से ५ काले सर्प के समान खड्ग निकले ॥ १० ॥ ६ मीणे ७ तीक्ष्ण ८ मूर्ख ९ एडियों को दबाते हुए अर्थात् साथ के साथ दौडे. लज्जा से १० फेरे हुए ११तीक्ष्ण ॥ १२ ॥ १२ घाड़ायतियों का पति जिधर था. १३वाहुत्राण ॥१३॥१४॥ १४लूटनेवाले ॥ १५ ॥ १५ दौड़कर. अपनी विजय १६कहकर ॥ १६ ॥

गाढचकितअरिअठ्ठ८लयेगहि,बुल्ल्योनृपअबचलहुबिजयबहि।१७।
जंपिय सोंड१८६।५नैर प्रभु जावहु, सेना बलि निजसंग सिधावहु॥
हम सतपंच५००अमरगढ हंकहिं, इक जो जतन बनैं तो अंकहिं[2]।१८।
जतनकोनसारन१८६।१खिजिजंपिय, पहुअनुजा[3]तसुसुनतपयंपिय॥
तुम१हम२चलिगढद्वारनिसातम,कैदिनअरिनखुलाइ अररंक्रम।१९।
पैठैं सहज दुर्ग निज पावैं, नृप आगस इम सफल बनावैं॥
अंसथप्पि[6]सारन१८६।१मन्नीयह,आनिइतैंजैत१८६।१हुपहुँच्योवह।२०।
मंत्र सु मान्नि चलन किन्नौं मन, नृप तब कहिय हमहु जैहैं नन॥
जैत१८५।१ कहयो इतनौं दल जावैं,नृपको हठ तब हमहिं नसावैं।२१।
तदपिन नैंक महिप मन्नी तब, जैत सबन पहुसंग दयो जब॥
संग न जानलगो हठि सोहू, तिन दिय सपथँ[7] संगकिय तोहू॥२२॥
काका१जाइ भतीज३मरे कॅलि, बिजयभये लै जस अछुत्त बलि॥
यह न उचित हमरेमन अहैं, जदपि सबन टारे टरि जैहैं॥ २३॥
भनि इम जैत १८५।१मुरयो लै भूधन, आये सब निजनाह आयतन[11]
भट सतपंच५००साजि उत भू पर, सारन १८६।१सोंड१८६।५तोग-
१८६।१ अग्गेसर॥ २४॥
अरि जे अठ्ठ८ गहे कातर[12] अति, पटादैन इततैं कहि तिन प्रति॥
पहुँचत अमरदुर्ग[13] पुर परिसर[14], बढे अग्ग तजि हयन बीर बर॥२५॥
अरि अठ्ठ८न कटिपट[15] गहि सह आसि, हिय जमदढ्ढ[16] छुवात चले हासि।
॥२६॥
जंपिय ढिग अप्पन पहुँचे जब, तुम इम श्रमित[17] देहु हेला तब॥
हनन आत हइन हम हारे, अररं[18]खुल्लि लेहुब रखवारे॥ २७॥

१प्रास करके॥१७॥२हमारे नाम से जानाजावे ऐसा करेंगे॥१८॥ राजा के३छोटे भाई ने४कहा५किवाड़ खुलाकर ॥१९॥६कन्धा थापकर ॥२०-२१॥७सौगन देकर साथ किया ॥२२॥ ८ युद्ध में ९ अछूता (अपूर्व) यश ॥२३॥१०राजा को११स्थान पर ॥२४॥ १२ कायर१३अमरगढ के १४समीप भूमि ॥२५॥१५कमरबन्ध (पटुका) को पकड़ कर १६ कटार ॥ २६ ॥ १७थकेहुए १८ किवाड़ खोलकर ॥ २७ ॥

चविहो इम न तो सु मन चुरि हैं, मोरि बसु८न लुट्टत बसु मुरि हैं ॥
पटा कथित२ नहिंतो तुम पैहो, बनि हमरे सुख आयु बितैहो ॥२८॥
इमकहि धरि मेवार पग्घ इन, डिंगरहिं बंधि सिसिर ऋतु डंछिन ॥
तमीरहत इक१जाम निविडतम, दुर्गद्वार पहुँचे दायक दमं ॥ २९॥
कथितरीति अट्ठ८न हेलाकिय, बदलि गिरा एकति तिम बुल्लिय ॥
जामिकें सुनि प्रतिहार जगायो,अक्खिय तिहिंगढपतिनन आयो॥३०॥
किम ताविजु अब खुलैं किंवारहु, प्रातहि सब तससंग पधारहु ॥
गढपति हनिय कह्यो तिन्ह गाढैं,बच कतिक हम तिन्ह अबबाढैं॥३१॥
लाइ निसैंनिन गढ अरि लैहैं, अंदर जो न लरन हम ऐहैं ॥
विक्खि निजन तिन अरैं विछोरे, द्वारखुलत प्रविसे भट दोरे॥३२॥
कछुक हुते रच्छक ते कट्टिय, द्वार किंवार पैठिगढ दट्टिय ॥
भटनघुराइअभयजयभेरिय,फवतसुभांड१८६।४आनपुनिफेरिय॥३३॥
अट्ठ८न तिन इततैं कछु आदर, पायउ इक१इक१ग्राम बचनपर ॥
बुंदिय कहि लिय दूत बधाई, पुहवि उचित जित्ते तिन्ह पाई ॥३४॥
किल्लादार तत्थ तोग१८६।१हि किय,सारन १८६।१ सोंड १८६।१
बुलाये बुंदिय ॥
तोग१८६।१सुभटसतपंच५००सहिततिम,कियबिप्लुतमेवारमुलकजिम
भिंछहड़ा१लग लुट्टि रानभुव, धनिकैं बनिक गहि बहु आनैं धुव ॥
मंडनदुर्ग२सहित पुरमंडल३, विंझोली४ बेगम ५ लुट्टिय बल ॥३६॥
सत्रु धरनि इम धुम्मि निम्म१८५।३सुव, हाहाकारकार दुजननहुव॥
गढचित्तोर पुकार असह गत, कुंभरान सज्जिय जन कुक्कत ॥३७॥

१धन लूटकर. पहिले २कहे अनुसार ॥२८॥३मार्ग में ही ४दाढियें बांधी. एक प्रहर ५ रात्रि बाकी रहते ६ अत्यन्त अन्धेरे में ७ दण्ड देनेवाले ॥ २९ ॥ ८ आवाज बदल कर ९ सिपाही ने १० द्वारपाल को ॥ ३० ॥ ३१ ॥ १२अपने लोगों को ११ देखकर १३ किवाड़ खोलदिये ॥ ३२ ॥ पीछे किवाड़ १४ लगादिये १५ विजय के नगारे बजाये ॥ ३३ ॥३४॥ १६ उपद्रव युक्त ॥३५॥१७ धनवान् बनियों को ॥३६॥ निम्मदेव का१८पुत्र हाहाकार१९करानेवाला॥३७॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्ल रानसुत कहिय हमछत प्रयान किम ॥
देहु हमहिं आदेस[1] जित्ति हड्डन अग्गैं[2] जिम ॥
अमरदुर्ग[3] अपनाइ हड्ड तोग १८६।१ हिं संगरहनि ॥
अहैं लहि जस अतुल तात मानस[4] सम्मदं[5] तनि ॥
तस अरज एह मुकलतनय[6] सुनि सिराहि गृह रक्खि सुव[7] ॥
करि छल अनीक इक१ठाम करि हड्डन हनन परुष्टहुव ॥३८॥

॥ दोहा ॥

थोरोथोरो थप्पिकैं, मंडनगढ दल मेलि ॥
कुंभ छन्न प्रस्थानकिय, हनिवे हड्डनहेलि[8] ॥ ३९ ॥
कंमत[9] रान पतनी कह्यो, अहो कव प्रभु अत्थ ॥
अक्खिय अहाँ हड्डहनि, तीज ३ श्रावनि[10]कं तत्थ ॥ ४० ॥
दंपति २ कैं हो प्रेमहढ, परिवृढ[11] इम अतिप्रीत ॥
कलित[12] सपथ[13] पुनिपुनि कह्यो, तीज ३ न होहिं अतीत[14] ॥४१॥
रानी अक्खिय रानसौं, किन्न सपथ समकालि ॥
तो मृत[15]गिनि जरिहौं तुमहिं, जत्थ अनागत[16] जानि ॥ ४२ ॥
पतनीप्रति करि इम सपथ, प्रस्थित[17] निस प्रच्छन्न[18] ॥
हयनडाक द्रुत आइ हुव, सूचित[19] गढ संपन्न[20] ॥ ४३ ॥
कुहकभाव करि कुंभको, प्रकट न भो प्रस्थान ॥
तोग १८६।२ भीर करतो नतो, चतुरंगहिं चहुवान ॥ ४४ ॥

---

१ आज्ञा २ आगे जीते थे इसी मुवाफिक जीतकर ३ अमरगढ. पिता के ४ मन में ५ हर्ष फैलाकर ६ मोकल के पुत्र (महाराणा कुम्भा) ने ७ पुत्र को ॥ ३८ ॥ हाडों के ८सूर्य को मारने के लिये ॥३९॥ राणा के ९चलते समय १० सावन की तीज पर ॥ ४० ॥ इस कारण से ११ अधिप ने १३ सौगन १२ करके १४ व्यतीत नहीं होवेगी ॥४१॥ १५ मरेहुए जानकर १६नहीं आया जानकर ॥ ४२॥ १७गमन किया १८छुपके १९ऊपर जतायेहुए मांडलगढ में २०शामिल ॥ ४३ ॥ ४४ ॥

कछुकहुँकछुकहुँ इम किय‍उ, इतउत थित दल अद्ध[1] ॥
मंडनगढ तिम नेमे[1] निज, बलजोरयो हठवद्ध ॥ ४५ ॥
कामिनिअग्गैं सौंहकरि, अब मंडनगढ आइ ॥
चाहत जय व्हाँतैं चल्यो, स्वीयनैं[2] गम्यं[3] सुनाइ ॥ ४६ ॥

॥ षट्पात् ॥

अमरदुर्ग उद्देस समय ग्रीखम सायंतन[4] ॥
करि दल सब एकत्र रान हंकिय इकत रन ॥
अखिलरत्ति[5] वहि अध्वँ[6] पाइ उद्दिष्ट प्रभातहि ॥
वढ्यो तोपन व्रात जोरि जंजीरन जातहि ॥
पठई छह तोप भूपहु प्रथम तोग १८६।१ अमरगढ स।ज ।तन ॥
रजगुन उफान अंदर रुप्यो, कंदरजिम केहरि कठिन ॥ ४७ ॥
चउदह १४ दिन धमचक्क तोग १८६।१ मंडिय दारुनतम[6] ॥
नदये आवन निकट कुंभ जोधन रोधनक्रम ॥
सारन १८६।१ के जिहिं समय जग्यो विधिवस संतत[7] ज्वर ॥
मारि असिन मक्खीदहुर्ग जैत १८५।१ सु लिय दुद्धर ॥
लाल१८४।२ सुत गत्त[8] जिहिं रन लगिय दुसह हेति[9] आघात दुव २॥
भंजिकैं तदपि उद्दल १८६।३ भटन हुइ बिजय जसहेतहुव ।४८।

॥ दोहा ॥

लग्गो जावन सोंड १८६।१ लघु, दै तँहँ सपथ निदान ॥
बरज्यो निठि सु नृपर बनिकर, अक्खि तोग १८६।१ आव्हानँ[10]।४९।

॥ षट्पात् ॥

दल तोग १८६।१ हु इम दियउ लरहिं द्वैपर[11] जिन लावहु ॥
पै उपहार[12] प्रनष्ट प्रचुर अन्नादि पठावहु ॥

---

१ आधी सेना मांडलगढ में रक्खी ॥४५॥ २ अपने लोगों को ३ जाने की जगह सुनाकर ॥४६॥ ४ सायंकाल के समय. ५ सब रात्रि ६ मार्ग में चलकर ॥४७॥ ६ अत्यन्त भयंकर ७ निरंतर ८ शरीर में ९ शस्त्र के प्रहार ।४८। १० बुलाना ।४९। ११ संदेह १२ सामग्री

पत्रलिखित पठयेहु पैरन लुट्टे लखि पैद्धति ॥
बारबार सुहिबनत गिनैं सब पंथ रुद्धगति ॥
पठई लिखाइ तब तोग१८६।१प्रति निरखि वसँर आवहु निकसि ॥
सुनिसोक१त्रपा२बहिनिम्म१८५।३सुवहुवधुवरनजुज्झारहसि ।५०।

॥ दोहा ॥

प्रथम अठ ८ जे लिय पकरि, गिनि निज अप्पिय ग्राम ॥
कढ्ढि छिन्न ते मुक्कले, बुंदिय सुख विस्राम ॥ ५१ ॥
हल्लू १८२।१ कुल संतान हे, मंडनगढँ हदमाँहिं ॥
क्रमत कुंभ हड्डन हनन, निखिल रहे तँहँ नाँहिं ॥ ५२ ॥
आइ तोग१८६।१ प्रति कहिय इन, आवन रानउँदंत ॥
पुव्वहि किय अवधान पटु, अद्धरजानि खिन अंत ॥ ५३ ॥
कढ्ढनलग्गो तिनहुकों, स्वीकृत वसु ८ अरिसंग ॥
हड्ड हमहु उन उच्चरिय, रचिहैं प्रभुमत रंग ॥ ५४ ॥
सपथ करिहु न कढ समुझि, बीच भटन बैठाइ ॥
सप्तअग्ग पंचहि सत ५०७ न, पूजे भुज महपाइ ॥ ५५ ॥
पट १ भूखन २ आयुध ३ प्रमुख, अप्पिय सबनहि आनि ॥
केसर रंग दुकूल करि, मरन सज्यो सुभमानि ॥ ५६ ॥
रमत असिन मारत १ मरत २, जैहाँ कढि तो जोग्य ॥
रहौं नतो ढिग रानके, भव्य त्रिदिवँ चहि भोग्य ॥ ५७ ॥
हड्डनकुलहिं कलंक व्है, जब छन्नैं भजिजाइ ॥
तथा बनैं किम तोग १८६।१ सौं, लज्ज प्रिया हियलाइ ।५८।
इम हढकरि खट ६ तोप वे, गड्डि धरानि कहुँ गूढ ॥

---

१ शत्रुओं ने २ मार्ग में ३ समय देखकर ४ लज्जा ५ पुत्र ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ६ माण्डलगढ की ॥ ५२ ॥ राणा के आने का ७ वृत्तान्त ८ सावधान होने में ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ९ वस्त्र ॥ ५६ ॥ १० स्वर्ग ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

करि गंगोदक न्हान क्रम, रंजिय प्रमद प्ररूढ ॥ ५९ ॥
अहं पहिलैं किन्नौं असन, अनसन सबबिधि अज्जं ॥
लग्गे दिनकी संभलग, सभट भयो रनसज्ज ॥ ६० ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चमराशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनर्वीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेंद्रसुभाण्डदेव १८६।४चरित्रे संदिह्यमानस्वप्रजाऽवनसामर्थ्यमहीप १ तदनुज २शौर्यमहदन्तरद्योतन१, स्वामि१सचिव२ संरोधन्हीणशौण्डदेव१८६।५वैमनस्यविख्यापन २, श्रुतस्वदेशराणापक्षीयवर्द्धितविप्लुतपूत्कारनिश्चितरुङ्मांद्यवणिक्प्रधानपारवश्यविप्लववर्द्धिष्णुयुयुत्सुसन्नद्धसैन्यशौण्ड१८६।५स्वाग्रजप्रस्थापन ३, बुन्दीवरूथिनी १ हिण्डोलीशृगालीश्रान्तप्रतिगम्यमानलुण्टाकगण २ स्थानाख्यपुरपरिसंप्रधनप्रारम्भण ४, प्रेक्षितपलायमानस्वसहायीभूतान्त्यजाविद्रुतवैरिवलभूयोविनिवर्तन ५, परपक्षयोधान्तर १ बुन्दीवीरगौडिगिरिध

१गङ्गाजल से ॥५९॥ पहिले२दिन३निराहार४आज५संध्या पर्यन्त१वीरों सहित

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखा की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेन्द्र सुभाण्डदेव के चरित्र में अपनी प्रजा की रक्षा करने में संदेह युक्त सामर्थ्यवाले राजा और राजा के छोटे भाई की वीरता में बड़ा अन्तर होने की सूचना करना, स्वामी और सचिव के रोक ने से लज्जित शौण्डदेव के उदास होने की प्रसिद्धि करना, महाराणा के पक्षवालों का अपने देश में उपद्रव मचाने की पुकार सुन, बनिया जाति के प्रधान को रोग के वश जान, उपद्रव बढानेवालों से युद्ध करने की इच्छावाली सेना को सज्जीभूत करके शौण्ड का अपने बड़े भाई राजा को रवाना करना, बुन्दी की सेना का हिंडोली को लूटकर पीछे जानेवाले थकेहुए लुटेरों के समूह से थाणा नामक पुर के पास की भूमि में युद्ध प्रारम्भ करना, देखते ही भगनेवाले अपने सहायक अन्त्यजों के भगते ही वैरियों की सेना का पीछा लौट जाना, शत्रुओं के वीरों में से किसी सुभट का बुन्दी के वीर गौड़ गिरधर को मारना, शौण्ड का उस धाड़ायतियों (डाकुओं)के पति

र २ संहरण ६, शोरड १ तद्वाटिधरमुख्यवैरि २ व्यापादन ७, गौडसुन्दरदास १ पारिपन्थिकसत्तल २ समापन ८, प्राप्तसंस्थार्वकूर्मवंशीधर१ डमरकरस्वामिसप्त्या २ रोहण ९, नवरंग १८३।२ वंशीयमाधव १ प्रतियोधिहुल्लहरि २ हनन१०, निम्मदेव १८५।३ नन्दनतोगनाथ १ तद्वाजि २ विध्वंसन११, पलायितपरबलनासीरप्राप्तकार्मध्वजधीर १ प्रमारसल्ह २ हड्डसारण ३ प्रत्यनीकप्रतिरोधन १२, शातितानेकशात्रवबुन्दीवीरवर्गलुण्टाकभटाऽष्टक ८ निग्रहण १३, सार्थीकृतजैत्र १८५।० शिक्षा१शपथ २ स्वीकारितसद्मसरणिप्रतिमोटितवाहिनीकबुन्दीशसहायसङ्गीभूतशूरशतपञ्च५०० कसन्दानिताऽभियात्यऽष्टक ८ संगतिच्छलामरदुर्गलिनीषुविन्यस्तमेदपाटदेश्यवेशोष्णीषपद्गीभूतदत्तलोभ १ भय २ व्याजवाग्विवक्षितसंरुद्धसपत्नशोरड १ सारण २ तोग ३ त्रय ३ याम १ यामिन्यवशिष्टसन्तमससमयसमाक्रामिष्यमाणदुर्गसमीपसंक्रमण१४,सन्दानितासहनकपटसंलापितदुर्गद्वाःस्थ १ यामिका २ ऽपावृतबल

मुख्य वैरी को मारना, गौड़ सुंदरदास का शत्रु सत्तल को मारना, घोड़े का नाश होने पर कछवाहे वंशीधर का धाड़ायतियों(डाकुओं) के पति के घोड़े पर चढना, नवरङ्ग के वंशवाले माधवसिंह का शत्रु हुल्लजाति के क्षत्रिय हरि को मारना, निम्मदेव के पुत्र तोगनाथ का उसके घोड़े को मारना, भगेहुए शत्रुओं के आगे जाकर राठोड़ धीर, प्रमार सल्ह और हाडा सारण का शत्रुओं को रोकना, अनेक शत्रुओं को मारकर बुन्दी के वीरों के समूह का लुटेरों के आठ भटों (वीरों) को पकड़ना, शिक्षा और शपथ से जैत्रसिंह को साथ दे, सेना को पीछी लौटाय, घर के मार्ग को पीछा जाना स्वीकार करनेवाले बुन्दीश की सहायता के लिये इकट्ठे हुए पांच सौ वीरों से कैद कियेहुए आठ शत्रुओं को साथ लेकर छल से अमरगढ को लेजाने की इच्छा से मेवाड़ देश का वेष और पगड़ी पहनायेहुए, पैदल कियेहुए, लोभ और भय दियेहुए कैद कियेहुए शत्रुओं से कपट की वाणी बोलना स्वीकार कराकर शौंड, सारण और तोग इन तीनों का एक प्रहर रात्रि बाकी रहते अन्धकार के समय में गढ लेने की इच्छा से उस(गढ)के समीप जाना, कैदियों की असह्य कपट की वाणी से द्वारपाल और चोकीदार के किवाड़ खोलने पर बुन्दी की फौज

जवुन्दीवलविशन १५, श्रुतशातिततत्पशत्रुवर्गसंरुद्धाऽष्टकं ८ सर्व रनार्थसमर्पितैकै१क १ ग्रामदुर्गाक्रामकस्वकीयसामन्तसंघविहितोचितमसादतत्कोट्टाध्यत्तीकृततोग १८६।१ भूमीभुजंगभारमल्ल १८६।४ शौण्ड १ सारण २ बुन्दीमत्याकारण १६, पुनःपुनर्लुण्टितमेदपाटजनपदपु१र्ग्राम २ मकरस्वदुर्गसमानीतानिगडितानेक धनिकवणिग्जनतोग १८६।१ त्रस्तप्रजाप्रभुपार्श्वपूत्करण १७, वारितसन्निनत्सुस्वसूनुराजमल्लस्वयमभिषेणयिषुराणाकुम्भकर्ण १ स्वकीयसहधर्मिणी २ समक्षश्रावणीकतृतीया ३ समयप्रत्यागमनसन्धास्वीकरण १८, प्राणप्रियप्रभ्त्वनागमप्रेष्टापावकप्रवेशप्रतिश्रवण १९, मण्डनदुर्गसम्मेलितनानापद्धतिप्रस्थापितसमस्तसैन्यसंगतसन्नद्धप्रच्छन्नप्रस्थितकुम्भकर्णाऽमरदुर्गवेष्टन २०, प्रारब्धप्रगुणीकृतप्रभुप्रेषितषड्नालीयन्त्रयुद्धतोग १८६।१ चतुर्दश १४ दिनावऽधिसपत्नसैन्यसमीपसंक्रमसंरोधन २१, तत्समयसारण १८६।१ वि

का घुसना, वहांवाले शत्रुओं को मारकर पकड़े हुए आठ शत्रुओं को एक एक ग्राम देकर गढ लेनेवाले अपने वीरों के समूह को उचित पारितोषिक देकर उस कोट (गढ) का अध्यक्ष तोग को बनाकर राजा भारमल्ल का शौण्ड और सारण को बुन्दी बुलाना, वारम्वार मेवाड़ देश के पुर और ग्रामों को लूट करके अपने गढ में लाकर अनेक धनवान् बनिये लोगों को कैद करने से तोग से डरी हुई प्रजा का अपने स्वामी के पास पुकार करना, गर्जना करतेहुए अपने पुत्र रायमल्ल को रोककर, स्वयं युद्धयात्रा की इच्छावाले राणा कुम्भकर्ण का अपनी स्त्री के आगे श्रावण की तीज के समय पीछा आने की प्रतिज्ञा स्वीकार करना, प्राणप्यारे पति के नहीं आने पर प्यारी का अग्निप्रवेश की प्रतिज्ञा करना, मांडलगढ में शामिल कीहुई अनेक मार्गों से भेजी हुई समस्त-सेना सहित सन्नीभूत होकर चुपके से प्रस्थान करनेवाले कुम्भकर्ण का अमरगढ को घेरना, अपने स्वामी की भेजीहुई भाग्य से सफलहुई छः तोपों से युद्ध करके चौदह दिन पर्यन्त शत्रु सेना के समीप आने को रोकना, उस समय सारण के विषम ज्वर से रोगी होने की सूचना करने के साथ शस्त्र के दो प्रहार पायेहुए जैत्रसिंह का अपने पहिले के मक्सीदगढ को लेकर उदयसिंह की सेना को विजय करना, शौण्ड की युद्धयात्रा को रोक

षमज्वरापाटवप्रख्यानपूर्वकप्राप्तप्रहरणप्रहारयुग्म २ प्रातनीतस्वकीयपूर्वमन्त्रिपदंदुर्गजैत्रासिंहो २८५।१ दयसिंह१८६।३ बलविजयन२२, रुद्रशौराडा १८६।५ ऽभिषेणबुद्धप्रेष्यपदार्थविघ्नमहीप १ मन्त्रि २ प्रनष्टोपहारतोग १८६।१ प्रत्याकारण २३, वाचिततत्पत्रप्रच्छन्नबुन्दीप्रेषितपरपूर्वस्वीकृतभटाऽष्टक ८ तोग १८६।१ संग्रामसन्धासमादान २४, तिरस्कृतमेदपाटनिवासविज्ञापितराणागमाऽवमतपिहितनिष्कसनहल्लू १८२।१ वंशीयवीरपञ्चक ५ तोग १८६।१ सहायीभवन २५, ह्यःकृताऽशनभूषणाऽऽदिसमर्चितवीरवर्गबाहुकौङ्कुमीकृतदुकूलगूढनिखातगोपितनालीयन्त्रविहिताऽऽहवमुमूर्षुविधेयतोग १८६।१ शर्वरीसमयसङ्ग्रामसज्जीभवन२६मेकोनविंशो १९ मयूखः ॥१९॥ आदितष्षट्षष्ट्युत्तरैकशततमः ॥६६॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

मुक्कलसुतपँहँ मुक्कल्यो, अप्पन चर[1] इम अक्खि ॥
आवत हड्ड रंग[2] अब, रुपहु प्रमाद[3] नरक्खि ॥ १ ॥
काल निसाँगत जो कहहु, कालनिसा तुमकाँहि ॥
सहँसन तुम हम पंचसत ५००, यह अंतर कछु याँहि ॥ २ ॥

भजन योग्य पदार्थों में विघ्न जानकर राजा और मन्त्री का नष्ट हुई सामग्री वाले तोग को पीछा बुलाना, उस पत्र को पढकर पहले अपनाये हुए शत्रु के आठ भटों को छाने बुन्दी भेजकर तोग का युद्ध की प्रतिज्ञा लेना, मेवाड़ के निवास को छोडकर राणा के छाने आने की सूचना करनेवाले हल्लू के वंश के पांच वीरों का छाने निकलना नामंजूर करके तोग के सहायक होना, पहले दिन भोजन और आभूषण आदि छोड, वीरों के समूह के भुजों को पूज, केसर में वस्त्र रङ्गकर, तोपों को भूमि में दबाकर, युद्ध में मरने की इच्छावाले, कर्तव्य कर्म करनेवाले तोग का रात्रि के समय युद्ध में सज्ज होने का उन्नीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ १९ ॥ और आदि से १६६ मयूख हुए ॥

१ हलकारा २ युद्ध में ३ आलस्य वा असावधानी नहीं रखकर ॥१॥ ४ रात्रि का समय कहोगे तो वह ५ कालरात्रि तुमको ही है ॥ २ ॥

सावधान रानहु सुनत, चढि चढाइ चतुरंग ॥
सज्ज लखैं हड्डन सरनि, जयभनि धरनि भुजंग ॥ ३ ॥
चटकप्लुतिः ॥ हरिरित्येके ॥ पर्यस्तकुमारललितेत्यपरे ॥
सुनि कुंभ रान सज्ज्यो, गहिरे अनीक गज्ज्यो ॥
सहँसैं अलात सक्खी, रन माहताव रक्खी ॥ ४॥
छह मुहूर्त चंद छायो, उततैंसु तोग १८६।२ आयो ।
माल द्व २ हरोल मज्झी, दव खग्ग भुम्मि दज्झी ॥ ५ ॥
भिरतैं किवान भासी, कढि चंद्रकी कलासी ॥
हय १ सूर २ लेत हल्ली, चपला कि अद्रि चल्ली ॥ ६ ॥
बहु ओक सोक वग्गी, सिवकी समाधि जग्गी ॥
॥ ७ ॥
चलि आइ चौंकि चंडी, रमि सट्ठि च्यारि ६४ रंडी ॥
गन डाकिनीन गोलैं, डिगरी विहीन डोलैं ॥८॥
क्रमि रत्त मत्त केई, थरकैं पिसाच थेई ॥
दुवपंच ५२ वीर दोरैं, मुरकी अनीन मोरैं ॥९॥
त्रहके टमंकि त्रंबी, विथुराइ नाद वंबी ॥
रदं वज्जि भीरु रोरी, हिममैं कि नीर होरी ॥ १० ॥
खिरिजात सूर सोहैं, भिरिजात मुच्छ भौंहैं ॥
हसिकैं चुरेल हुंकैं, भजि दूत भूत भुंकैं ॥ ११ ॥

---

१ मार्ग ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ २ खड्ग ॥ ६ ॥ ७ ॥ चौसठ ३ योगिनी ॥ ८ ॥ ४ रक्त से ५ नाच का अनुकरण है. बावन वीर दौड़कर भगी हुई ६सेना को पीछी फेरते हैं ॥ ९ ॥ ७नगारे और ८ तासे बजते हैं ९ नगारों का शब्द फैलने के ११भय से कायरों के १०दांत बोलते हैं सो मानों हेमंत ऋतु में पानी की होली (फाग) खेलने से बोलते हैं ॥ १० ॥ फटकर गिरते हुए वीर शोभा पाते हैं और मूछें भौंहों से भिड़ती हैं, चुड़ैलिनें (देवी की दासियें) हँसकर हुंकार करती हैं और दूत रूपी भूत भगकर भूकते हैं ॥ ११ ॥

बढिजात मार बत्ती, कढिजात पार कत्ती ॥
घट फुट्टि केक घुम्मैं, झट जुट्टि कंठ झुम्मैं ॥ १२ ॥
धरि ब्याम रुंड धावैं, गन सम्मुहे गिरावैं ॥
खिजि केक लग्गि खेधैं, बरछीन बीर बेधैं ॥ १३ ॥
तरवारि तोग१८६।१वारी, दल संहरैं दुधारी ॥
महि रुंड १ मुंड २ पट्टैं, घन नास स्वास घट्टैं ॥ १४ ॥
पल जात तेग पंती, तिरछी कि सब्बु तंती ॥
मिलि अच्छरीन माला, झुकि खेत देत झाला ॥ १५ ॥
गज १ बाजि २ भार गैली, फनमाल ब्याल फैली ॥
ढहि कोल दंत ढीले, लजि कुम्म अंग लीले ॥ १६ ॥
फटि फीलमत्थ फाँकैं, ढरि कुंभ छोनि ढाँकैं ॥
किलकैं बिरूप काली, लहि गत्त रत्त लाली ॥ १७ ॥
असिधार झार इक्खे, तरकैं फुलिंग तिक्खे ॥

प्रहारों की वार्ता बढती है और १ तलवारें पार निकलती हैं. शरीर फूटकर कितने ही घूमते हैं और शीघ्र जुट करके कंठों में झूमते हैं ॥ १२ ॥ रुंड २ हाथ फैलाकर दौड़ते हैं और साम्हने के समूह को गिराते हैं. कितने ही क्रोध करके ३ पीछे वा युद्ध में लगकर वीरों को बरछियों से बेधते हैं ॥ १३ ॥ तोग की दुधारी तलवार शत्रुओं का नाश करती है और रुंड और मुंडों से भूमि को छा देती है और बहुतों की नासिका से श्वास घटते हैं ॥ १४ ॥ ४ मांस में तलवार की ५ पंक्ति जाती है सो मानों ६ साबुन में तांत के समान तिरछी जाती है. अप्सराओं की पंक्ति मिलकर झुककर युद्ध के खेत में ७ झाले (बुलाने के लिये हाथ के इशारे) देती है ॥ १५ ॥ मार्ग में हाथी और घोड़ों के भार से ८ शेषनाग की फणमाला फैलती है (केवल ब्याल शब्द से सर्प का ही बोध होता है, परंतु फणमाला के योग से शेषनाग का ग्रहण है) वाराह के दंत ढीले होकर ९ गिरते हैं और लज्जा युक्त होकर १० कूर्म अपने अंगों को ११ गिटता (समेटता) है ॥ १६ ॥ १२ हाथियों के मस्तक की चीरें होती हैं और उनके कुंभस्थल गिरकर पृथ्वी को ढांकते हैं १३ शरीर से १४ रक्त की लाली लगने से विरूप होकर काली किलकारें करती है ॥ १७ ॥ तलवार की

जिंत रान हत्थि जान्यौं, तित तोग जंग तान्यौं ॥ १८ ॥
ढिग गो वढाइ वाजी, उलटात व्रात आजी ॥
इक सत्रु मिच्छ १ आयो, रन चो४गुनौं रचायो ॥ १९ ॥
जुव २ दाव घाव जोरयो, तस सीस तोग १८६।१ तोरयो ॥
जिहि लैंन रुद्द जावैं, मॅहसैं सिखा नपावैं ॥ २० ॥
बलभद्र २ रानवंधू, गिरि अंध अध्व अंधू ॥
रन तोग १८६।१ कौं निरायो, गलकट्टि सो गिरायो ॥ २१ ॥
चहुवान इक्क १ चीनौं, तस तंग दॅारिदीनौं ॥
झुकि आइ कोउ झल्ला४, रचि हड्डसीस हल्ला ॥ २२ ॥
वढिकैं किंवानें वाही, सुन तोग १८६।१ व्हाँ-सिराही ॥
छमें खग्गवार छुट्टयो, लगि झल्ल ४ धूरिलुट्टयो ॥ २३ ॥
गज रान ५ केर गड्डो, ठनकात घंट ठड्डो ॥
लखि तोग १८६।१ वागलिन्नी, असि रान५अंसें दिन्नी ॥२४॥
छुवि खंधत्रान छेद्यो, तिल अंसभाग भेद्यो ॥

॥ २५ ॥

धार की ज्वाला दीखती है और तीक्ष्ण अग्निकण तड़कते हैं. १ जिधर महाराणा के हस्ती को जाना उधर ही तोग ने युद्ध फैलाया ॥ १८ ॥ घोड़ा बढ़ाकर २ युद्ध में समूह को उलटाता हुआ तोग महाराणा के समीप गया ॥ १९ ॥ ३ शिव उस यवन का मस्तक लेने को गये परन्तु ४ चोटी नहीं पाने से ४ हँसने लगे अर्थात प्रसन्न तो हुए परंतु यवन का सिर जानकर उसको नहीं उठाया ॥ २० ॥ ६ मार्ग के ७ कुए में गिराया. ८ समीप लिया ॥२१॥ चहुवाण ने एक वीर को देखा जिसके ९शरीर को १० काट डाला. फिर कोई झाला राजपूत आया जिसने तोग पर हल्ला किया ॥२२॥ और बढ़कर ११तलवार चलाई जिसकी तोग ने प्रशंसा की उस झाले पर तोग के खड्ग का १२ समर्थ (बल का) प्रहार छूटा जिससे वह झाला धूल में लौट गया ॥२३॥ महाराणा का दृढ हाथी घोरघंट बजाता हुआ खड़ा था जिसको देखकर तोग ने अपने घोड़े की बाग उठाई अर्थात घोड़े को उडाया और राणा के १३ कन्धे पर तलवार मारी ॥ २४ ॥ उसने कंधे का त्राण (झालर, कवच) काटकर तिल

छिति जात टापै ढ्वैगो, यह बध्य डोडँ६ व्है गो ॥
सतच्यारि ४०० बीर सत्थी, इम तोग१८६१ जुद्ध अ३त्थी ॥२६॥
असिझारि रारि अच्छी, कढिजान किन्न कच्छी ॥
इक बीर रानवारे, मिलि तत्थ बैनमारे ॥ २७ ॥
सतइक्क १०० संटि सूरे, करि प्रान लोभ कूरे ॥
किम अस्थिपाल १५५ केरे, अब भज्जिजात एरे ॥ २८ ॥
सुनतैं सु छोहछायो, हय मोरि सम्मुहायो॥
हगकन्न पिठि दोरयो, मनु पुच्छको मरोरयो ॥ २९ ॥
सतद्वै२०० निकास सिक्खे, पलटे तितेहि पिक्खे ॥
मनजे अराति जीके, बर अच्छरी बनीके ॥ ३० ॥
जिनमैं सु तोग १८५१ जैसैं, उडुबृंद चंद ऐसैं ॥
बकतैं असह्यबानी, पलटे उदस्त्रपानी ॥ ३१ ॥
मरिबेहि बाजि मोरे, जिम अग्ग खग्गजोरे ॥
लखि रान भीतिलायो, द्विप दिट्ठितैं दुरायो ॥ ३२ ॥
झुकि तोग १८६१ तेगझारी, बहुबेर फोजफारी ॥
अतिमान रानवारे, पखरैत केकपारे ॥ ३३ ॥

वह घोड़ा भूमि पर उतरा तब उसके १ पैर के मात्र कंधे को काटा ॥२५॥ युद्ध का ३ अर्थी (वीर) स्पर्श से २ डोडिया जाति का क्षत्रिय मारागया. उस समय ॥ २६ ॥ तोग ने ४ घोड़ा निकालना चाहा अर्थात् भगना चाहा, राणा के एक वीर ने वहां पर बचन मारा (ओलाबोला) कि ॥ २७ ॥ सौ वीरों को बदले में देकर (मरवाकर) प्राण का लोभ करके ५ अस्थिपाल के वंश वाले हे नीच तोग! अब भगकर जाता है ॥ २८ ॥ यह सुनते ही वह तोग क्रोध में छकाहुआ घोड़े को मोड़ कर सन्मुख आया. मानों पूंछ मरोड़ा हुआ ६ सर्प पीछे दौड़ता है ॥ २९ ॥ दो सौ मनुष्य जो भगनेवाले थे वे सब तोग को (मुड़ाहुआ) देखकर पीछे फिरे जिनके मन अपने जीव के शत्रु (मरने में उद्यत) और अप्सरा रूपी दुलहिनों के बर थे ॥ ३० ॥ जिसमें तोग ७ तारात्रों के वृंद में चंद्रमा के समान था. राणा के वीरों के असह वचन बोलते ही (वे वीर) हाथों में ८ अस्त्र उठाये हुए पीछे फिरे ॥३१॥ ९ हाथी की पीठ पर छिप

हिय रान *भ्रांतिहेरयो, गज इक्क भुम्मिगेरयो ॥
अरि तीस ३० छेदि छक्कयो, जब तोग १८६।४ निठ्ठि जक्कयो ॥३४॥

दोहा ॥

हयतैं इक१तिथि१५ हत्थतैं, पहिले रन रिपुपारि ॥
वेलि पच्छोमुरि बोलपैं, तीस३०न सीसउतारि ॥ ३५ ॥
करि सक्खी करवालकों, रानअंसं कछु रेखि ॥
गजइक१ पीछैं गेरियो, द्रोहिपके भ्रम देखि ॥ ३६ ॥
सूरपरे उतके त्रिसत ३००, सतदुव २०० इतके सर्वं ॥
परयो तोग१८६।१ मुरि वैनपर, इम करि कित्ति अखर्वं ॥ ३७ ॥
घायल सत १०० छकि घुम्मते, बुंदिय पत्ते वीर ॥
क्रम समुचितँ उपचारकिय, सव उल्लाघं सरीर ॥ ३८ ॥
हल्लू १८२।१ के कुलके हुते, सवघायल तिनसंग ॥
पटामाँहिं उनकों सुपहु, दिय डिभिय मुख दंग ॥ ३९ ॥
वेंढ्ढे १ अरु घायल बचे २, औंर जिते तिन्हअत्थे ॥
उचित अप्प किन्नैं अधिप, सव मन लरन समत्थ ॥ ४० ॥
तनय तोग १८६।१ के हो न तस, अनुजहि गंग१८६।२उदार ॥
पहुं किय पुर नवगाम पहुं, भुवधारि बुन्दियभार ॥ ४१ ॥

षट्पात् ॥

अमरदुर्ग अपनाइ थप्पि अंदर पुनि थानाँ ॥
किय बुंदियासिर कुच्च रोसफुल्लत अहि रानाँ ॥
सुक्र चउद्दसि १४ सुभ्र रक्खि नवगामप तिहिं रन ॥

गया ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ महाराणा के हाथी के *भ्रम से ॥३४॥ १ फिर ॥३५॥ २ खड्ग को. राणा के ३ कन्धे को ४ शत्रुओं के पति के भ्रम से ॥३६॥ ५ बहुत ॥३७॥ ६पहुँचे ७उचित ८इलाज ९ नैरोग्य ॥३८॥३९॥ १०मरे. उनके ११ लिये. लड़ने में १२ समर्थ किये ॥४०॥१३राजा ने. नवगांवां का१४पति किया ॥ ४१ ॥ १५ अमरगढ को १६सर्प के समान१७ज्येष्ठ सुदी १४ के दिन नवगांवां के पति को

करि दस १० तत्थ मुकाम पूर सज्ज्यो गढ तोपन ॥
प्रतिमल्लैं हड्ड हत्थन परखि लार खिल्लैंहु बल्ल बुल्लिलिय ॥
आसाढ असित कंदर्प अह १३ क्रमि बुंदियपुर बेढ्ढकिय ॥४२॥
समुचित जँहँजँहँ सिबिर रान बेढिय बिधानरचि ॥
पृतना पतन प्रतीप बिसम अचलादि रहेबचि ॥
तेरसि १३ अह प्रत्यूष लोल गोलन झरलग्गिय ।
उडत सार दुरहुँओर ज्वलन कीलाकुल जग्गिय ॥
तारंकादुर्ग दगि तोप तति दुजन निकट रहन न दये ॥
गज्ज१रु अलात२अयपिंड३गन छिति१अंबर२संकुल छये ॥४३

॥ मनोहरम् ॥

होत फैर फैरनपैं तापके अमाप जव,
डिगि डिगि शृंग आपआपके अंगरमैं ॥
गोलनचलात १ परगोलनके पात २ भांत,
तारागढ जान्योंजात जगरमगरमैं ॥
जा रन प्रजारन हजारन अलात फैले,
बाखरि१मैं बीथी .२ मैं बजार ३ मैं बगर ४ मैं ॥

युद्ध में मारकर १ तहां २ शत्रुओं ने हाडों के हाथों की परीक्षा करके ३ बाकी की सेना को भी साथ बुला ली. आषाढ वदि ४ तेरस * के दिन चल कर बुन्दी के ५ घेरा लगाया ॥ ४२ ॥ ६ डेरे खडे करके ७ शत्रुओं की सेना के पड़ाव से. तेरस के ८प्रभात चपल गोलों की झड़ी लगी ९अग्नि की ज्वाला उठी१०तारागढ से. तोपों की११पङ्क्ति. गर्जना, अग्नि और लोह के गोलों के समूह पृथ्वी और आकाश में १२ अवकाश रहित छागये ॥ ४३ ॥ अपने अपने १३घर में१४प्रकाश अथवा शोभा १५अग्नि की ज्वाला की चकाचौंध (झगामग) में उस युद्ध में जलाने के लिये हजारों १६ अङ्गारे (निर्धूम अग्नि) १७ ÷ मकानों में १८ गली में बजार में १९ बगड़ (चौक) में फैले

* ज्योतिष में तेरस तिथि का पति कामदेव को मानते हैं.

÷ ब्रजभाषा में घर को बाखरि कहते हैं और मरुभाषा में घर की सामग्री को बाखर कहते हैं.

कालिकाकी वालिकालौं ज्वालिकावमंत बनी,
नालिका दगत दीपमालिका नगरमैं ॥ ४४ ॥

॥ घनाक्षरी ॥

फोजनतैं ओजेन १ तैं जोजन कढत दूर,
अर्चिनके ओजनतैं जो पै रहैं रुकिरुकि ॥
पाउसके अभ्रसे अखंड धूमंडलमैं,
तापनतैं तापन तपायो लज लुकिलुकि ॥
विस्मय प्रलैविनु त्रि ३ लोक ओकओक आनैं,
चौंकि चंद्रचूड़हु समाधि जात चुकिचुकि ॥
कालके से टोला गुरुगोला गिरिवैतैं मही,
व्यालफेन दोलौं चढी झोलालेत झुकिझुकि ॥ ४५ ॥

॥ मनोहरम् ॥

स्याम सुचि तेरसि १३ तैं सावनअमा ३० अवधि ३३,
वासर व्यतीतभये घोर घमसानकौं ॥
कारनेंउलंघि जेत १८५।१ सारन १८६।१ हु आये पर,
देदेरतिवाह सोंड १८६।५ सोस्यो परप्रानकौं ॥
सोही दावदीनौं दुव २ वेर चुंड १८६।२ ओ उदय १८६।३,
कीनौं कितो तोपन अनीक अवसानकौं ॥

---

१ उगलतीहुई ॥ ४४ ॥ २ प्रताप से ३ अग्नि की ज्वाला के ताप से वर्षा ऋतु के ४ मेघ के समान. अग्नि की ताप से तपाया हुआ ५ सूर्य ६ छिपछिप कर लज्जित हुआ. विना ही प्रलय तीनों लोकों के जीव ७ घर घर में आश्चर्य करने लगे और ८ शिव भी समाधि भूल भूल कर ८ चिमकगये १० बड़े गोले ११ शेषनाग के फण के १२ हिंडोले पर चढीहुई भूमि ॥ ४५ ॥ १३ आषाढ वदि तेरस से श्रावण वदि अमावास्या तक के तेंतीस दिन भयङ्कर १४ युद्ध के वीते. नहीं आने का १५ कारण था तो भी उसका उल्लंघन करके १६ शत्रुओं पर १७ शत्रुओं के प्राणों को सुखाये.

बुंदीपुर पावनकी पद्धति न पाई इतैं,
आई तीज ३ सावनकी जावनकी रानकौं ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

बनि दुर्मन[2] सुभटन बुंदिय, रान रसिक स्मररंग ॥
तीज ३ परब पहुँचैं न तो, पतनी[6] जरन प्रसंग ॥ ४७ ॥

॥ षट्पात् ॥

बुल्ले भट हमबहुत पग्घ निज रक्खि पधारहु ॥
जिहिंअग्गैं सब जुरहिं १ नमहिं २ संदेह न धारहु ॥
मन्नि सुनत सुहि मूढ गूढ हयडाक गयो गृह ॥
पटगृह रक्खिय पग्घ सुपहु ऐसो रत सस्पृह ॥
तोपनचलाइ जिम पुब्बतिम कतिक रहे डमरहु करत ॥
बुंदिय बिनाह[11] लग्गे बढन मेवारे मारत १ मरत २ ॥ ४८ ॥

॥ दोहा ॥

दृढ निश्चयहुव दोजि २ दिन, रक्खि पग्घ गय रान ॥
काढि जुज्झन मत सुनत किय, चाहि अवसर चहुवान ॥ ४९ ॥

॥ षट्पात् ॥

सारन १ जैत २ रु सचिव ३ अरज नृपप्रति किन्नी यह ॥
जिम छुद्रहि[12] रनजात स्वामि बरजे हम साग्रह[13] ॥
तिम यहै न अब तुमुल[14] रान महिमान पधारत ॥
जाकी पग्घहु जोहि बनत तस भाव[15] बिचारत ॥
कै पग्घ गहहिं १ दलजित्तिकैं मरनठाम उग्गहिं[16] मरन २ ॥

बुन्दीपुरी प्राप्त होने का १मार्ग नहीं मिला ॥ ४६ ॥ २ उदास होकर ३ कहा ४ कामदेव के रङ्ग का रसिक ५समय पर ६ स्त्री जल जावेगी ॥४७॥ ७डेरे में ८पगड़ी रखकर. रत करने का ९लोभी १० उपद्रव (लूट खसोट) ११ बिना मालिक के ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ १२ छोटे युद्ध में जातेहुए १३ हठ करके हमने आपको रोके थे. उसप्रकार अब यह १४ घोर युद्ध नहीं है. जिनकी पगड़ी है वह स्वयं उनका १५होना ही है. मरना १६प्रसिद्ध होवेगा

सन्नद्ध विरचि*ध्वजिनी सकल करहु हल्ल जग जसकरन।५०।
सोंड १८६।५ सिराहिय सुनत त्रय ३ हि कहि वाहवाह तब ॥
बुल्लि सेव१८६।२नवब्रह्म१८५।२अमर१८६।१गंग१८६।२रुमाधव अव
भार खंध जिन भटन पानि मुत्तिन तिन पुज्जहु ॥
जिम पिक्खहिं प्रतिजाम समर कौतुक रुकि सुज्जहु ॥
अनुजात कथित करि वत्त यह साधुसाधुकहि भटनसह ॥
बुंदिय त्रपा सु गरबंधिकैं आधिप इहु सज्जिय असह ॥ ५१ ॥
नसह १ असह २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

जंपिय सारन१ जैत२ प्रति, गदकृस रहिये गेह ॥
तिन अक्खिय हो गद तव सु, अगद बन्यौं अब एह ॥ ५२ ॥
राजादिन निजरोधकन, इम सहसपथ निवारि ॥
हुव संगहि दायाद दुव२, ध्रुव व्याधि न कछु धारि ॥ ५३ ॥

षट्पात् ॥

परपृतनाके पिट्ठि पिहितैं दल अद्ध पठायउ ॥
अद्धकटकसह अप्प अरिन सम्मुह उफनायउ ॥
रजनि घटीदुव२ रहत स्वस्थ निर्भय सीसोदन ॥
पहुँचि परे पविपात मंडि मंडिय अनुमोदन ॥
राजा१ रु जैत२ सारन ३ रुजित हंकिय लय३ आरूढ हय ॥

सब *सेना को सज्ज करके ॥५०॥ उनके १हाथ मोतियों से पूजो२छोटे भाई का ३कहना४श्रेष्ठ है श्रेष्ठ है. बुन्दी की५लज्जा को गले से बांधकर ॥५१॥६कहा७रोग से दुर्बल हो इस कारण घर पर ही रहो८नैरोग्य ॥५२॥९राजा आदि को लेकर १०अपने रोकनेवालों को११सौगनों से निवारण करके. दोनों१२भाई१३निश्चय ही रोग को कुछ नहीं विचारकर साथ हुए ॥५३॥१४शत्रु सेना की पीठ पर१५ छाने आधी सेना भेजी. आधी सेना के साथ शत्रुओं के साम्हने आप१६वढा १७ वज्र पड़ने के समान १८ रोग युक्त थे इस कारण घोड़ों पर चढकर सके

दल[1] खिल पदाति[2] उभयरहि अनिन[3] पारंभिय मंडन प्रलय। ५४।
गोटे दलविच गेरि प्रथम बारूद प्रजारित ॥
बंधन हयन बिछोरि दये लरवाइ विदारित ॥
होत अचानक हक्क[4] जूह[5] निदित कति जग्गत ॥
कति गुल्मन[6] नित्यकरि लुब्भि[7] इष्टन पयलग्गत ॥
गीतादि पढत कति बीरगन कतिक कोन[8] १क्यौं२ किंम३ करत ॥
गज[9] रिपुन पैठि हरि[10] हड्ड गग्ग अरि१ यातैं२ इम३ उच्चरत ।५५।
तुल्लि मिलत तरवारि झकट[11] जिततित रचि झारिय ॥
करजोहुव[12] सुहि कतिन प्रखर[13] उततैंहु प्रहारिय ॥
पै यह अतुलप्रमाद[14] बनत जान्यौं बिरले बल ॥
खुल्लिहय जुट्टत[15] खिनहु प्रचुर[16] पाये मैंचित पल ॥
उठि उठि प्रमत्त ते भट अखिल मगलग्गिय लै जिय बिमद[17] ॥
सम्मुहचलाइ कट्टिय सकल हड्डन रक्खिय बिरुद[18] हद ॥ ५६ ॥
सेव१ छ६अरि संहरिय खल्ल माधव२ चउ४ खंडिय ॥
अमर३ च्यारि४ अंगमिय[19] कुणप[20] नवब्रह्म४ सत्त७ किय ॥
नवक९ गंग५ हठि हनिय ग्लान[21] सारन६ चउ४गेरिय ॥
लुंचि[22] त्रि३सिर जैत७ लिय नवक९ असु[23] सौंड८ निबेरिय ॥
कोणिका[24] खास सोधनकरत गोहिल हरि९ पग्ध सु गहिय ॥

आकी की १सेना २पैदल. दोनों ३अग्नियों ने)सेना के अग्रभाग को; अथवा सेना के टुकड़े को मरुभाषा में अणीं कहते हैं)॥५४॥ ४ हाक ५ समूह ६रक्षार्थ(रिजर्व) सेना, वा रक्षार्थ सेना रहने के स्थानों में नित्य नियम करके. परलोक का ७ लोभ करके. कितने ही कौन है? क्यों? ८ कैसा हुआ? शत्रु रूपी ९ हाथियों में १० सिंह रूपी हाडे घुसगये॥ ५५॥ ११ युद्ध में १२ जो हाथ में आया उसीको लेकर १३ तीक्ष्ण. अत्यन्त १४ गफलत से. घोड़े के१५लड़ते समय१६ बहुत से मनुष्य नेत्र मिचे हुए आये १७ मद रहित होकर १८यश वा स्तुति की हद हाडों ने रक्खी ॥ ५६ ॥१९मारे२०मुर्दे२१रोगग्रस्त सारण ने. जैत्र ने तीन मस्तक २२ काटे २३ प्राण. खास २४डेरे में (छोटे डेरे का नाम कोणिका है)

इम आतआत सिखरी उदय लुट्टिसिविर जस थिर लहिय।५७।

दोहा ॥

मिली पग्घ सुनताहि मुररि, अनखि सिविर पुनि आइ ॥
मेवारे द्वैसत२०० मरे, दारुन हत्थ दिखाइ ॥ ५८ ॥
मारे नृप तिनमाहिसों, वानन पंच५ प्रवीर ॥
कट्टि उभय२ असितैं करे, सत्त७न कुणप सरीर ॥ ५९ ॥
पहुआश्रित खटसत६०० परे, अरि तेरहसत१३०० अत्थ ॥
आहव बंब घुराइ इम, हल्लन किय जय हत्थ ॥ ६० ॥

मनोहरम् ॥

ग्रीखम१तैं पाउस२लौं वाहिनी वलय बंधि,
रोपी रारि रानाँ कुंभकरन प्रतीपनैं ॥
ताराचल नालिन निघातकरि कंप्यो सोहु,
चेदिपै ज्यौं चंप्यो चतुरंग सह श्रीपनैं ॥
परिकर राखि जपि हित सु निकेत पूगो,
काटि सो पै कीनौं जे कृसानुकुलदीपनैं ॥
संप्रयोगैं सहल सअंग्घ सुधराइ उतैं,
पग्घ पधराई इतैं महल महीपनैं ॥ ६१ ॥

॥ दोहा ॥

इत जयबंब घुराइ इम, पुर करि भूप प्रवेस ॥
लघु पाटवकिय घायलन, वीरन अप्पि विसेस ॥ ६२ ॥

सूर्य के उदय १गिरि पर आते आते (यहां उदय गिरि के सम्बन्ध से सूर्य का ग्रहण है) २ डेरे ॥ ५७ ॥ ३ क्रोध करके ॥ ५८ ॥ ४ बाणों से ॥ ५९ ॥ ५ राजा के आश्रित लोग ६ यहां ७ नगारे बजवाकर ॥ ६० ॥ ८ घेरा ९ शत्रु ने १० तारागढ का पर्वत ११ तोपों के १२ शिशुपाल के समान सेना सहित १३ दबाया १४ श्रीकृष्ण के समान बुन्दी के राजा के १५ घर को गया १६ अग्निकुल के प्रकाशक १७ रत को १८ आदर पूर्वक ॥ ६१ ॥ १९ शीघ्र २० नैरोग्य ॥ ६२ ॥

मेवारेहु बिगारि मुख, पत्ते जब पहुँपास ॥
लज्जित रान सक्यो न लखि, अंतर निबसि उदास ॥ ६३ ॥
कुंभ तज्यो सुहि सोककरि, बपु द्वव २ मास बिताइ ॥
रायमल्ल तब रानहुव, पट्ट जनकधृत पाइ ॥ ६४ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितवृत्तान्तव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४चरित्रे पूर्वप्रेषितस्वदूतप्रख्यापितनिजाऽभिसम्पातसावधानसज्जीकारितसपत्नसैन्यतोग १८६।१ शुक्रशुभ्रचतुर्दशी १४ निशीथनिकटवैरिबलसम्मुखसमभिषेणन १, संहृतपञ्चदश १५ सपत्नसाम

---

१ गये. अपने २ प्रभु के पास ३ जनाने में उदास रहकर ॥ ६३ ॥ ४ कुम्भकर्ण ने इसी शोक से दो *महीने पीछे ५ शरीर छोडा ६ पिता के धारण कियेहुए पाट को पाकर ॥ ४६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चम राशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दीनरेंद्र सुभाण्डदेव के चरित्र में पहिले अपना दूत भेजकर अपने युद्ध की सूचना करके शत्रु की सेना को सचेत और सज्जीभूत कराकर तोग का जेठ सुद१४ को आधी रात के समीप शत्रु सेना के सन्मुख युद्धयात्रा करना, शत्रुओं के पंद्रह वीर और उमरावों का

---

*बुंदीवालों का महाराणा की पगड़ी लेजाना और इसी लज्जा से दो महीने पीछे महाराणा कुम्भा का मरना लिखा सो असत्य है. यह इतिहास बून्दी की ख्याति से अथवा बून्दी के बड़वाभाटों की पुस्तकों के लेख से लिखना पाया जाता है; जिन्होंने बढावे से कल्पित कहानी लिख दी है; क्योंकि कुम्भलगढ पर सम्वत् १५१७ मार्गशीर्ष कृष्णा पञ्चमी की खुदी हुई मामादेव के कुण्ड ऊपर की प्रशस्ति में महाराणा कुम्भा के लिये लिखा है कि "हाडोती को विजय करके वहां के स्वामि से दण्ड लिया" इस प्रशस्ति के खुदने से ८ वर्ष पीछे तक महाराणा जीवित रहे थे, इससे पगड़ी लेजाने आदि इतिहास असत्य प्रतीत होता है, इसके अतिरिक्त जिन महाराणा ने मांडू और मालवा के बादशाहों को दण्ड दिया उनका बूंदी विजय नहीं होने के कारण लज्जा से मरना नहीं सम्भवता. ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) की सत्यता पर हम कलंक लगाना नहीं चाहते परन्तु बुंदी की ख्याति अथवा बड़वाभाटों के लेख पर विश्वास कर लेने के कारण ऐसा लिख देना पाया जाता है.

न्त १ शूर २ करवालकृत्तसस्कन्धत्राणराणांसस्तोकभागविशीर्ण विपक्षवाहिनीकप्राप्तप्रत्यनीकान्तरवाक्प्रतोदनिर्यियासुतोग १८६। १ पुनरवमर्दप्रत्यारम्भण २, मेदपाटमहीपमारीचभ्रान्तिपातितमत ङ्गजान्तरपुनःपरासूकृतत्रिंश ३०त्प्रतीपसाध्वसप्रतापितप्रत्यनीक परिवृढतोग १८६।१ शूरशय्याशयन ३, पक्षद्वय २ प्रवीरशतपञ्चक ५०० परलोकप्रापण ४, नरेन्द्रसुभाण्डदेव १८६।४ बुन्द्यागतस्वकी यक्षतखिन्नपटूकृतशूरशतक १०० यथातथसत्करण ५, प्राप्तप्रचुरप्र हारस्वबन्धुहल्लू १८२।१ वंशीयप्रवीरपञ्चक ५ डाभी १ प्रभृतिपत्त- न १ प्रतिवसथ २ प्रकरपट्टप्रसादन ६, निष्प्रजतोगा १८६।१ऽनुज गङ्गा १८६।२ऽ पर २ नामयशःकर्ण १८६।२ स्वाग्रजपदनवग्राम- पुरप्रभूभवन ६, न्यस्ताऽमरदुर्गसनालीयन्त्र १ रक्षिवर्ग २ तत्सीम- न्युषितदिनदशक १० समाकारिताखिलसैन्यप्रस्थितराणाशुचिश्या मलत्रयोदशी १३ प्रत्यूषबुन्दीवाहिनीवेष्टन ७, श्रुतैतदुदन्ताऽवमत क्षत १ ज्वर २ खेदजैत्र १८५।१ सारण १८६।१ स्वामिसहायबुन्दी

संहार कर, खड्ग से राणा के कन्धत्राण को काट,कंधे के थोड़े से भाग को वि दीर्ण कर, शत्रु की सेना को बिखेर कर निकलने की इच्छावाले तोग का प्रा प्त हुई शत्रु सेना में से किसी शत्रु के वचन रूपी चाबुक लगाने से फिर युद्ध प्रारम्भ करना, मेवाड़ के महीपति की सवारी के हाथी की भ्रान्ति से किसी हाथी को मार, फिर तीस शत्रुओं को मारने से शत्रुओं की सेना को भय से तपाकर बलवान् तोग का माराजाना, दोनों पक्ष के पांच सौ वीरों का परलो क को प्राप्त होना, नरेन्द्र सुभाण्डदेव का बुन्दी में आयेहुए घायल सौ वीरों को नैरोग्य करके उनका यथार्थ सत्कार करना, बहुत प्रहार पायेहुए अपने बन्धु हल्लू के वंश के पांच वीरों को डाभी आदि पुर और गामों का समूह पटा में देना, विना सन्तानवाले तोग के छोटे भाई गङ्ग दूसरे नाम से यशक र्ण का अपने बडे भाई के स्थान नवग्राम पुर का पति होना, तोपों सहित रक्षा करनेवाले समुदाय को अमरगढ में रख, उसकी सीमा में दश दिन निवास करके बाकी की सेना को बुलाकर प्रस्थान कियेहुए राणा का आषाढ वदि १३के प्रभात बुन्दी को फौज से घेरना, यह वृत्तान्त सुन, प्रहार और ज्वर के

पुरीप्रविशन ८, पुनःपुनःश्रुतशौगड १८६।५ समनुष्ठितसौप्तिकचुण्डो १८६।२ दय १८६।३ युग्म २ द्विःकृत्वोरात्रिप्रघातपातन ९, श्रावणिकदर्श ३० पर्यन्तसम्प्रहाराऽप्राप्तबुन्दीविजयनिजसामन्तसङ्घसम्मत स्वस्थानस्थापितोष्णीषराणाकुम्भकर्णप्रच्छन्नचित्रकूटप्रविशन१०, ज्ञाततद्वृत्तान्तसारण१सचिवा२दिस्वसम्वर्द्धितोत्साहशौगड१८६।५ समेधितशौर्यसमाहूतयशःकर्ण१ऽपरनामगङ्ग१माधवा२ दिदायादसंदोहबुन्दीन्द्रसुभाणडदेवो१८६।४ष्णीषस्वामिचित्रकूटचमूसंग्रामसंक्रमण११,स्वसुहृद्वर्ज्जनविपरीतप्रसभविमतस्वरुक्पाधिवेगसहप्रस्थित हयारूढसारण १८६।१ जैत्र १८६।५ स्वामिसहायीभवन १२, परपृतनापरप्रान्तप्रस्थापितपङ्क्तीकृतसैन्यार्द्ध ¹₂ सार्थीकृतपत्तिनेमा ³ नीकसमारूढसप्तिहड्डाधिराज १ प्रक्षेपितपूर्वबारूदवर्त्तकविद्धाभवित्रोटित बन्धनवैरिबलवाजिविद्रावण १३, मुहूर्तैक १ रात्रिशेषसमयबुन्दीगढ वाहिनीसौप्तिकसम्पातकोलाहलावबुद्धप्रमत्तप्रद्रुतप्रत्यनीकप्रकरप्रतिमुटितकियत्सपत्नसामन्तसम्मुखसंयोधन १४, सेव १८६।२ माध

खेद को न गिनकर जैत्र और सारण का स्वामि की सहायता के लिये बुन्दी में प्रवेश करना, वारम्वार शौगड का रातिवाह देना सुनकर चुण्ड और उदय दोनों का दो बार रातिवाह देना, श्रावण की अमावास्या पर्यन्त के युद्ध से बुन्दी की विजय नहीं मिलने से अपने उमरावों के समूह की सलाह से अपने स्थान में पगड़ी रखकर राणा कुम्भकर्ण का छाने चित्तौड़ जाना, यह वृत्तान्त जानकर सारण और सचिव आदि के निजउत्साह को बढाने से और शौंड की भलीभांति बढाई हुई वीरता से यशकर्ण दूसरे नाम से गङ्ग, माधव आदि भाइयों के समूह को बुलाकर बुन्दीन्द्र सुभाणडदेव का, पगड़ी ही है स्वामि जिसका ऐसी चीतोड़ की सेना से युद्ध करने को चलना, अपने सुहृदों के मना करने के विरुद्ध हठ से अपने अपने रोग के वेग को न गिनकर घोड़ों पर चढ, प्रस्थान करनेवाले सारण और जैत्र का अपने स्वामि की सहाय होना, शत्रुसेना के पीछे आधी पैदल सेना को भेजकर आधी पैदल सेना को अपने साथ करके घोड़े पर सवार होकर हड्डाधिराज का प्रथम बारूद के पीपों से चोभ होने के कारण बंधन तुड़वाकर शत्रुओं की सेना के घोड़ों को

वा १८६।२ ऽमर १८९।२नवब्रह्म १८५।२ गङ्ग १८६।२ सारण१८३। १ जैत्र १८५।१ शोणड १८६।५ प्रभृतिबुन्दीवीरविपोथितवैरिवर्गसंख्यासूचन१५, दिवाकरोदयाऽधिसमस्तशिबिरसामग्रीसंग्रहणावसरभूपभटगोभिल्लहरिसिंह १ हस्तमेदपाटमहीपमूर्द्धमण्डनमिलन १६, श्रुततदुदन्तप्रत्यागतपरप्रवीरद्विशती २०० पुनःप्रत्याघातप्रवर्तन १७, खड्गखण्डितद्वेपिद्वय २ पृशत्कपरासूकृतप्रतीपपञ्चक ५ पृथ्वीशप्रोत्साहितप्रवीरतच्छेष १६३ निषूदन १८, संस्थापितपरपत्तत्रयोदशशतक १३००सुभाण्डदेव १८३।४सुभटषट्शतक ६०० शूरशय्याशयन १९, निर्घोपितविजयवाद्यप्रद्रावितपारिपन्थिकसत्त्वतस्वभटकारितोचितोपचारयथातथप्रसारितप्रवीरहड्डाधिराजशत्रुशीर्षोष्णशिरोवेष्टनस्वसद्मसमानयन २०, पलायनप्रत्यागतनिजानीकिनीप्रेक्षणपराङ्मुखतत्त्रपानिगूढन्युपितमासयुग्म २ राणाकुम्भकर्णतनुत्यागानन्तरतत्पुत्रराजमल्लपितृपट्टप्रापणं २१ विंशतितमो २०मयूखः ॥२०॥

भगाना, दो घड़ी रात्रि बाकी रहते समय बुन्दीन्द्र की सेना के रतिवाह के कोलाहल से जगकर गाफ़िल भगेहुए शत्रुओं के समूह में से पीछे मुड़ेहुए शत्रु के कितने ही उमरावों का सन्मुख युद्ध करना; सेव, माधव, अमर, नवब्रह्म, गङ्ग, सारण, जैत्र और शोणड इन बुन्दी के वीरों से मारेहुए वैरिवर्ग की संख्या की सूचना करना, सूर्योदय के समय समस्त डेरों की सामग्री हरण करने के समय राजा के उमराव गोभिल हरिसिंह के हाथ मेवाड़ के महीप की पगड़ी मिलना, यह वृत्तान्त सुनकर शत्रु के दो सौ वीरों का पीछे आकर फिर युद्ध करना, दो शत्रुओं को खड्ग से और पांच शत्रुओं को बाणों से मारकर राजा के उत्साहित वीरों का बाकीके शत्रुओं को मारना, तेरह सौ शत्रुओं को मारकर सुभाण्डदेव के छः सौ सुभटों का माराजाना, विजय के वाद्य बजवाय, शत्रुओं को भगाय, घायल हुए अपने वीरों का उचित इलाज कराकर यथातथ उनकी फैलाईहुई वीरता से हड्डाधिराज का शीर्षोदिया शत्रु की पगड़ी को अपने घर में लाना, भगकर पीछी आई हुई अपनी सेना के देखने में पराङ्मुख, उस लज्जा से गुप्त निवास करने वाले राणा कुम्भकर्ण के शरीर छोड़े पीछे उसके पुत्र रायमल्ल का अपने पिता के पाट पाने का बीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २० ॥

आदितः सप्तषष्टयुत्तरैकशततमः ॥१६७॥
प्रायोब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

अनुज सोंड१८६।५हित दिय उचित, नरपति करउर१नैर ॥
तँहँ रहि चिंत्यो हनि तुरक, बालन स्वजनक बैर ॥ १ ॥
पच्छेलिय पट्टनि१ प्रमुख, अक्खय १८६।१ दब्बे अग्ग ॥
अग्रज को तँहँ किय अमल, लोभ न रंचक लग्ग ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

सारन १ जैत२ सहाय सोंड३ लै अग्रज दल सन ॥
चुंड १८६।२उदय१८६।३चँपीहु अवनि पच्छीलिय अप्पन ॥
जैताउत ६ खंधिल १८५।१जु मारि सोलह १६ सुतो महि॥
तस भूयांग१८६।१तनूँजलई उदय१८६।३सु सक्यो न लहि ॥
वाकोहु अमल करवाइ उत नानता१दि ग्रामन निपुन ॥
चहि जनकबैर लग्गो चढन मंडुवपुर पृतना प्रगुन ॥३॥
इहिँ निहोरि नृप अग्ग जैत १ सारन २ लाये जब ॥
अग्रज १ सचिव २ उपेत ताहि च्यारि ४ हु बुल्ले तब ॥
मंडुवपति वह मिच्छ प्रचुरदल साह बजत पहु ॥
अज्जन्नृपन गंजि अरु लेत आब्दिक सबतैं लहु ॥
संगर न ताहि अंगमि सकैं उज्झहु लाल कुमंत्र यह ॥
छिन्नी स्वकीय बिमुखन छिति जु सुहि दब्बहु उद्यम असह॥४॥

॥ दोहा ॥

और आदि से १६७ मयूख हुए ॥

१ लेने को २ अपने पिता का ॥ १ ॥ ३ आदि ॥ २ ॥ ४दबाईहुई ५ भूमि को ६पुत्र ७विशेष गुणवाली ॥३॥ मन्त्री ८सहित ९बड़ी सेना १०बादशाह ११आर्य राजाओं को १२सालाना खिराज सब से शीघ्र लेता है १३दबासकेंगे. हे लाल! यह १५खोटी सलाह १४छोडो १६अपनी भूमि को शत्रु लोगों ने छीन ली है उसीको दबाओ ॥ ४ ॥

सो मन्त्री जिम सोंड १८६।५ सुनि, दिनकछु ठहरि उदार ॥
छिन्नी १ अरु रक्खी २ जु छिति, लिन्नी विमुखन लार ॥५॥
परतभार न सह्यो क पर, परैं काम जिन पोचि ॥
उनतैं सब छिन्नी अवनि, उचित दमन आलोचि ॥ ६ ॥
सुपहु १ जैत २ सारन ३ सचिव, सोंड१८६।५हि निछि निहोरि॥
पच्छी दिय ही जु कु प्रथम, तिन्ह मन कानि न तोरि ॥ ७ ॥
तिनमैं हो सु लिउविक्रम १ हु, सँगर विमुख कुसंग ॥
सो अपमान न जिहिं सह्यो, जो तिलतिलहुव जंग ॥ ८ ॥
भारपरत जिनजिन भटन, निर्वह्यो टारि नरेस ॥
दव्वे स्ववस प्रदेस जे, अप्पे तिनहिं असेस ॥ ९ ॥

॥ मदनावतारः ॥

तोग १८६।१ अनुजात जो गंग १८६।२ नवगामपति,
जास अभिधानं जसकर्ण १८६।२ दूजो २ जगति ॥
सुरथपुर १ दै रु उडुंदुर्गपति सो करयो,
अप्पासिर तोग १८६।१ कृत ऋन सु इम उद्धरयो ॥ १० ॥
भिरत घुग्घुल १८१ हरं जु टूक लक्खन १८५ भयो,
अमर १८६ तसपुत्र जिहिं खेट १ पुर अप्पयो,
हुड नवरंग १८३।२ कुल भ्रात माधव १८६।१ हितैं ॥
अरुल १ निज जुत्त अरनिठ २ अप्पिय इतैं ॥११॥

॥ दोहा ॥

मोरत बल मेवारको, सबन गिन्यों कछु सत्वं ॥
विमुखन दव्वी लेत वैलि, पिक्ख्यो उचित नृपत्व ॥ १२ ॥

॥५॥ भार पड़ते समय जिन्होंने १ मस्तक पर भार सहन नहीं किया और काम पड़ने पर पोचे होगये उन्हींको २ दण्ड देना उचित विचार कर सब भूमि छीन ली ॥ ६ ॥ ३ पृथ्वी ॥ ७ ॥ ८ ॥ ४ निर्वाह किया ॥ ९ ॥ तोग का ५ छोटा भाई ६ नाम ७ तारागढ का किलादार बनाया ॥ १० ॥ घुग्घुल ८का पोता ९अरणेठा नामक ग्राम दिया ॥११॥ १०पराक्रम ११फिर १२राजापन ॥१२॥

इक्खैं कोउन परत अब, संबे अचानक सीस ॥
मन औरैं कछु चिंत मन, जोरैं कछु जगदीस ॥१३॥
सौंड १८।१।५ गिनी नृप १ वा सुभट २, मंडू जाइ न मूर ॥
मैं दावा करि मिच्छसौं, करूँ सु व्याकुल कूर ॥ १४ ॥
करउरही यहमंत्रकरि, सादी चउसत ४०० सज्जि ॥
मालव जो मंडूमुलक, गो लुट्टन तिहिं गज्जि ॥ १५ ॥

॥ मदनावतारः ॥

हड्डनृप छन्न इम सौंड १८६।५ सजि हंकियो,
ढार खुरमार रजभार रवि ढंकयो ॥
पुब्ब १ लक्खैरि १ पुनि जाइ पट्टनि २ परयो ॥
आपगा थाग कोटा ३ सु क्रमि उत्तरयो ॥ १६ ॥
भ्रात भूखांग १८६।१ महिमानि मह मंडयो,
द्वै २ दिवस रक्खि उपहार इच्छित दयो ॥
मन्नि इम कोउ आजाइ जिन मोरिबे,
द्रुतहि चढिगो सु जनकोरि भुव दोरिबे ॥ १७ ॥
भूध्र दर लंघि मग लुट्टि खिच्चीन भू,
खुंदि किय पट्टनि १ रु भानपुर २ खीन भू ॥
रक्खि अपसव्य चंद्रावतन रामपुर,
पैठिगो देस आवंत्य भय दे प्रचुर ॥ १८ ॥
कन्हड़ १ हिं खुंदि सारंगपुर २ कुट्टिकैं,
लिन्न करि खिन्न उज्जैन ३ लग लुट्टिकैं ॥

यह किसीने नहीं जाना कि अब मस्तक पर अचानक १ वज्र गिरेगा ॥१३॥ २ समझी ॥ १४ ॥ ३ सवार ॥ १५ ॥ ४प्रथम ५ नदी ६ जिस नदी में पैदल चलकर मनुष्य पार होसके उसको थाग (थाह) कहते हैं ७ चलकर ॥ १६ ॥ ८ उत्सव ९ नजराना १० पीछा फेरने को ११ पिता के शत्रु की भूमि को लूटने के लिये ॥ १७ ॥ १२ पर्वत के १३मार्ग को लांघकर (कोटा से बारह कोस पर दरा नामक स्थान है)१४दाहिनी ओर १५उज्जैन के देश में १६बहुत ॥१८॥

इंद्रपुर ४ घुम्मि इत जागपुर ५ अंगम्यौं ॥
दब्बि रवनीज ६ इतकौं मऊ ७ लौं दम्यौं ॥ १९ ॥
दै बसी ८ त्रास सीतामऊ ९ दंडयो ॥
खुंदि सुरनैर १० हरिदुर्ग ११ इत खंडयो ॥
पिप्पलोदा १२ रु समखेट १३ जय पट्टिकैं,
दंडि अरुनोद १४ निंबोद १५ लिय दट्टिकैं ॥ २० ॥
वाहिनी साहकी पिट्ठिलग्गी बही,
संग जिम छाँह तिम रंग इच्छित सही ॥
सौंड १८६१५ जयलैंन दिन अैंन कछु सैंनकैं,
नैंक निसमैं न मिलि चैंन दुव २ नैंनकैं ॥ २१ ॥
धर्म आपत्तिके तुल्य चैर्या धरैं,
अर्व आरूढ कहुँ भोज्य सब अद्दरैं ॥
जानि इम बात भजिजात अरि जानिहैं,
तुल्लि असि मोंध खल मुच्छ कर तानिहैं ॥ २२ ॥
सोधि यह अप्प निंबोद १५ सन संक्रम्यौं,
जंगहर दंग रुचिरंग दोउ २ न जम्यौं ॥
भांत दल भ्रांत दुव २ प्रातपहिलैं भले,
चीरते दंसैं १ पैंल २ हड्ड ३ असि व्हाँचले ॥ २३ ॥
सत्रु बहु निंदगत भानैं लहि नाँ सके,
छिप्रं निसअंत तम लोह हड्डन छके ॥

॥१९॥ २० ॥ १ सेना. जिस प्रकार शरीर के साथ छाया रहती है तिस प्रकार २ युद्ध की इच्छा करतीहुई सेना साथ रही. शौंएड ने जय लेने के लिये दिन के ३ स्थान में कुछ ४ शयन किया परन्तु रात्रि में दोनों ५ नेत्रों को जराभी आराम नहीं मिला ॥२१॥ आपद्धर्म के समान ६आचरण किया. घोड़े पर ७सवार. दुष्ट लोग ८ निरर्थक खड्ग उठाकर मूछ खींचेंगे ॥ २२ ॥ ९ भला १० शोभायमान सेना के ११ समूह १२ कवचों को और १३ मांस को चीरतेहुए ॥ २३ ॥ १४ निद्रा में होने से १५ चेत नहीं सके १६ शीघ्र

खान परवेज अरि मुख्य भिरतहि खप्यो ॥
धीर चहुवान परप्रान पीवत धप्यो ॥ २४ ॥
मरत सेनाधिपति पाय मिच्छन मुरे,
आहनैं[1] केक नासीर बढि अंकुरे ॥
पार दलकेर हुव २ बेर हय प्रेरये,
गाहि भुजपीनं[2] सततीन ३०० खल गेरये ॥ २५ ॥
जुग्गिनी १ वीर २ पलचार[3] ३ जयकारलैं ॥
फोज सुरमाँइ घनघाइ जस फेरलैं[4],
बंब घुरवाइ[5] छकछाँइ ठट्टो बली ॥
वाह जग पाइ जुरवाइ उत अंजली ॥ २६ ॥
जत्थ तरफत लखे मिच्छ घायल जिते,
तानि बहुजान कहुँ थानपठये तिते ॥
झारि असि रारि सतइक्क १०० निजहू झरे,
अट्ठ अरु बीस २८ तिनमाँहिं परि उव्वरे ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

तिन्ह डोलिन बैठारि तब, मुररि सोंड १८६।५ अतिमान ॥
कियउ साह हय लैनकौं, पुर दसपुर[9] प्रस्थान ॥ २८ ॥
मंडूपतिकी मंदुरा[10], ताजिनकी[11] इक १ तत्थ ॥
दंग नदीतट जिनदिनन, सुखित रहैं रुचिसत्थ ॥ २९ ॥
सत्तुन[12] मोदक १ दधि २ सिता[13] ३, असन[14] लहैं जे अर्व ॥
सुगम न्हान ग्रीखम समय, सरितातट इम[15] सर्व ॥ ३० ॥
दिनमैं खसखानन दुरैं, छिति १ टट्टि २ न छिरकाइ ॥

॥ २४ ॥ १ आगे बढकर २ पुष्ट भुजों से ॥ २५ ॥ ३ मांस खानेवालों से ४ पीछे फेरकर ५ बहुत नगारे ६ बजवाकर ७ उत्साह में छाकर ८ हाथ जुड़वाकर ॥ २६ ॥ २७ ॥ ९ मन्दसोर पुर को ॥२८॥ १० हयशाला ११ घोड़ों की ॥२९॥ १२ सत्तू के लड्डू १३ शक्कर जो घोड़े १४ खाते हैं १५ इस कारण से नदी के तट पर थे ॥ ३० ॥

निसवाहिर बंधैं निखिल, प्रतिठानन रुचि पाइ ॥ ३१ ॥

॥ षट्पात् ॥

बाजबहादुर बाजि खास ताजिक नतं[2] खंधन ॥
इम दसपुर सतइक्क १०० विहितं[3] तटिनीतट[4] बंधन ॥
तिनहिलेन हढतक्कि सोंड १८६।५ सतत्रय ३०० भट सादिन[5] ॥
अद्दरजनि खिन आइ मारि तिन्ह लानं[6] प्रमादिन ॥
सब्बन दुरबंध[7] करि छिन्न सब लोल[8] हयन धारि अग्ग लिय[9]॥
संजेत[1] लुट्टि हंकत सतंत[10] दरेगिरि[11] पैठि मिलानदिय[12] ।३२।
भ्रात सु सुनि भूणांग १८६।१ हुलसि पहुँच्यो सहायहित ॥
बल खिच्चिन तिहिं बेर सुनत बाहिरहुव संचितं[13] ॥
दसपुरतैं मिच्छ[14] १० दल सहँसइक १००० पिट्ठिलग्यो सैरि[15] ॥
पहुँचि मिल्यो अगंपार[16] कलह खिच्चिरन सीरी[17] करि ॥
दर रुक्कि झारि तुपकन दुहुँरन इन संगर मंडिय असह ॥
भूणांग[1]भिरिगँ सतदुव२००भटन सोंड[2]जुरिग सततीन३०० सह ॥

असह[1]नसह[2]अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

भ्रात दरेढिग अरिनमारि मोलिन[18] पगमोरे ॥
सहँस१००० मिच्छदुवसहँस२००० असह खिच्चीरहु अंहोरे[19] ।३३।
तिन्हमुकाम तहँ जानि सवर हक्कारि उँभैसत २०० ॥
रक्खि दरेपर लरन रिक्थैं[21] बहु अप्पि करे रतं[22] ॥
तिन रुपि निसंक भिल्लन तवहि जुरि रोके खिच्चिय[1] जवन[2] ॥
सहभ्रात[1] सोंड[2] कोटा क्रमियँ[23] हेतिनँ[24] करि अहितन हवनं[25] ।३४।

१सब ॥ ३१ ॥ २झुकेहुए कन्धोंवाले३कियेहुए४नदी के किनारे५सवार६उन घोड़ों की१रक्षा करनेवाले७अगाड़ी पिछाड़ी के दोनों बन्धन८चपल ९सामान लूटकर१०निरन्तर११पर्वत के दरे में१२मुकाम किया ॥३२॥ १३इकट्ठे १४म्लेच्छ सेना १५चलकर १६पर्वत के पार १७भिड़ा ॥ ३३ ॥ १८मोलां (खुदा) को माननेवालों के१९रोके. दो२०सौ भीलों को बुलाकर२१धन देकर२२प्रीतियुक्त किये २३चला२४शस्त्रों से शत्रुओं का २५होम करके ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

दोहा ॥

कानि रक्खि भूपांग१८६की, हित कोटा चउ४रत्ति ॥
हय किय भेट सुभांड१८६।४रहि, घरघर पुर जसघत्ति ॥३५॥
उपालंभ जैत१ रु अधिप२, सारन३ सचिव४ समेत ॥
दिन्नौं कहि आन्यौं दुखहि, बुंदिय भय समवेत ॥ ३६ ॥

पादाकुलकम् ॥

जोधतनय बीका इत जंगल, बढ्ढि संखुल१न प्रधन महाबल ॥
भट्टि२न जित्ति तत्थ निर्जलभुव, हद निजनाम ढंग बिरचतहुव॥३७॥
बिक्रमसकमुनिद्दगतिथि१५२७वित्ततसनि३वैसाख४तीज३सितसंगत
पहुँ बिक्रम१जंगल जयपायो, बर पुर बीकानेर१ बसायो ॥ ३८ ॥
तँहँ तदनुज बीदा२हु बीरतर, स्वाभिध खेट रच्यो बीदासर२॥
जबतैं बीकानेर सु जंगल, बन्यो राज्य बढ्ढिबढ्ढिइतनैंबल ॥ ३९ ॥
बदत किते सर चउतिथि१५४५संवत,सो बहुहेतुन परत असंगत ॥
वृद्ध जोध जोधपुर बसायउ, पहिलैं तस बीका जनु पायउ ॥४० ॥
बीस२०बरसबयकेनिकटहिबलि,कियजंगलधरअमलजित्तिकलि ॥
अरु पुंगलपति पुत्री उद्वहि, बिरच्यो ढंग बहु तँहँ बेगहि ॥ ४१ ॥

१ उलहना (ओलम्भा) २साथ ॥३६॥ ३ युद्ध में ॥ ३७ ॥ ४शुक्ल पक्ष ५ राजा बीका ने ६ श्रेष्ठ पुर ॥ ३८ ॥ ७ उसका छोटा भाई ८ अपने नाम से ९ खेड़ा (छोटा ग्राम) ॥३९॥ १०बहुत कारणों से असङ्गत मालूम होता है क्योंकि जोधसिंह ने वृद्धाऽवस्थामें जोधपुर बसाया था जिससे पहिले ही बीका ने जन्म पालिया ॥ ४० ॥ ११ युद्ध १२ विवाह करके ॥ ४१ ॥

* यहां पर ग्रंथकर्ता (सूर्यमल्ल) ने बीकानेर के बसने के संवत् १५४५ का खंडन करके संवत् १५२७ में बीकानेर का बसना लिखा है सो ठीक नहीं है, क्योंकि बीकानेर का बसना सम्वत् १५४५ के वैशाख शुक्ल २ शनिवार के दिन प्रसिद्ध है सो ही बीकानेर के नैणसी महता, कर्नल टॉड और उदयपुर के महामहोपाध्याय कविराजा श्यामलदास ने माना है. जैसलमेर के इतिहास में संवत् १५४२ में बीकानेर का बसना लिखा है सो भी असत्य है. यह संवत् १५२७ से बहुत दूर और ४५ के संवत् से अधिक समीप है. परंतु अधिक मत के कारण हम संवत् ४५ को ही सत्य मानते हैं. बीका का पहिले पुंगल के पति की पुत्री से विवाह करना और फिर करनी माता की आज्ञा से सेखा नामक भाटी को

दोहा ॥

करिनिज सक्ति निदेसकरि, धरिबीका लहि धीर ॥
सेख भूप भट्टिय सुता, ब्याह्यो पुंगल वीर ॥ ४२ ॥
करत सक्तिके कथित करि, अबलों विहित उछाह ॥
पहिलैं बीकानैर पहु, इम पुंगल उद्वाहैं ॥ ४३ ॥
पहु सूजा२ हुव जोधपुर, परत जोध१ तस पुत्त॥
तस कुमरहिं मृत वग्घ३ तँहँ, जनि गंग४हिं जसजुत्त ॥ ४४ ॥
अधिप परत सूजा२हु अब, सब नत्ती यह तास ॥
कुमर वग्घ३को जो कुमर, अधिप गंग४ तँहँ आस ॥ ४५ ॥
राज्यकरत आमेर इत, भारमल्ल भूमान ॥
प्रतपे गढ चित्तोर पहु, रायमल्ल इत रान ॥ ४६ ॥
मंडूपतिके जिहिं समय, अस्व खास सत१०० आनि ॥
नृपहित सोंड१८६।५ निवेदये, जे दुखहेतु न जानि ॥ ४७ ॥

षट्पात् ॥

सु सुनि कुप्पि हुव असह मिच्छ वह बाजबहादुर ॥
वन्हिं मनहु बारूद अनखि उद्धत प्रजरयो उर ॥
बुन्दिय लैन विचारि कटक निज अखिल सज्जकिय ॥
गन तोपन बहु प्रगुन कलह जय उदय कज्ज किय ॥

१करनी माता की२आज्ञा से ॥४२॥ शक्ति के ३उस३कथन को करने से अब तक उ त्साह पूर्वक बीकानेर के राजा पूङ्गल में प्रथम४विवाह करते हैं ॥४३॥ जोधा की ५मृत्यु होने पर ॥४४॥ ६पोते(पौत्र)७हुआ ॥४५॥८भूपति ॥४६॥४७॥९अग्नि में

पुत्री से दूसरा विवाह करना लिखा सो तो सब सत्य है परंतु यह विवाह बीस वर्ष की अवस्था में ही लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि बीकानेर की ख्याति में बीका का जन्म विक्रमी सम्वत् १४९५ में, एवं जोधपुर की ख्याति में १४९७में होना लिखा है इन दोनों में से कोई भी सत्य होवै, परंतु बीका ने पुंगल के राव शेखा की पुत्री से संवत् १५३५ के पीछे विवाह किया है सो बीका की अवस्था उस समय ४० वर्ष से न्यून नहीं थी और जोधपुर का राव जोधा भी उस समय विद्यमान था क्योंकि रावजोधा का देहांत संवत् १५४५ में ६१वर्ष की अवस्था में होना लिखा है. बीकानेरवाले जोधा का देहांत १५३७ में लिखते हैं परंतु बहु मत से ऊपर का संवत् ही सत्य पायाजाता है ॥

वीरन पटाहु बढते बखसि थप्प्यो मंड्डवभारभुज ॥
किय मंत्र नियत पकरन कुटिल अधिपसुभांड१हि सह्अनुज२॥४८॥
जवनकरे गृहजाइ दुष्ट पहिलैं बालकदुव२ ॥
तिनमैं स्याम१ सु तास पास बिस्वासपात्र हुव ॥
प्रपा[2]१ महानस[3]२ प्रमुख[4] दुलभ बिल्ला[5] तिहिं दिन्नौं ॥
सोवत इकनिस सवन पिहित[6] जागि साह क पिन्नौं ॥
पात्री सु उदंचन बिनुहि पुनि रक्खि आइ पल्यंक रहि ॥
स्याम१हिं जगाइ रिस तासिर करिय पिलावहु आब कहि।४९।

दोहा ॥

स्याम१ रु केसवदास२ तस, हुव२ कुलनाम दुराइ ॥
समरकंद१ अभिधान तिहिं, मिच्छ दियउ मुदलाइ ॥ ५० ॥
जवन सु ताहि बिबाह जिहिं, बंध्यो स्वहित बिसास ॥
तनय खानदाऊद[12]२ तस, इक१ किसोरबय आस[13] ॥ ५१ ॥
समरकंद१ सन तिहिंसमय, जलमंगिय जवनेस ॥
पात्री उठि न लखी पिहित[14], उहाँ चकितहुव एस ॥ ५२ ॥
मिच्छकह्यो रे मैं मरत, अतुल पिपासा आइ ॥
समरकंद१ कंपत तब सु, बुल्ल्यो ताहि बताइ ॥ ५३ ॥
याकै नाँहिं उदंचनहु, इम पाऊँ किम आब ॥
आनूँ नूतन डारि इहिं, स्वामिन जतन हिसाब ॥ ५४ ॥
भनि इम पात्री मंजि भरि, लाइ कह्यो अब लेहु ॥
मंगिमंगि जंपिय जवन, उचित भृत्य गिनि एहु ॥ ५५ ॥

पादाकुलकम् ॥

---

१ निश्चय ॥ ४८ ॥ २ पाणेरा (आबखाना) ३ रसोईघर ४ आदि ५ अधिकार ६ छाने ७ पानी पिया ८ पानी की मटकी (पात्र) को ९ ढक्कन दिये बिना ही १० सेज पर आकर सो रहा ११ पानी पिलाओ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ १२ दाऊदखाँ सौलह वर्ष की अवस्था में ही १३ हुआ ॥ ५१ ॥ १४ ढकी हुई नहीं देख कर ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥

जान्यौं श्याम१ कटक ध्रुवजैहैं, लरि सत्वर बुंदियधर लैहैं ॥
यातैं जनकभुवँहि मंगौं वह,सोधि इम सु बुल्ल्यो अंजलिसह॥५६॥
किंकरपर जो साह महरकिय, बखसहु ततो व प्रभु वह बुंदिय ॥
जान्यौं साह यह न बदलैं जन, ममहु लैन बुंदिय निश्चय मन॥५७॥
तो सुहि दे इहिं मुदितकरौं तिम, इक्क१पंथ दुव२कज्ज बनैं इम ॥
यहबिचारिबुंदियतिहिंअप्पिय, थिरदलमैंहुमुख्यसुहिथप्पिय ॥५८॥
इकल १ साह रह्यो गढअंदर, पिल्ल्यो कटक्क सर्व बुंदीपर ॥
इंकिय समरकंद१रन जयहित, आत भानपुर जानिपरी इत ॥५९॥

दोहा ॥

सट्ठिसहँस ६०००० दल संक्रमत, जितजित जग भजिजात ॥
अंधजनन अग्गैं १ उंदक २, पीछैं १ इचिक्किल २ पात ॥६०॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१ऽयणे पञ्चम५राशौ वीतिहो लवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरव्याहार्यबुन्दीभूपालभारमल्ल १८६१४ चरित्रे स्वाग्रजप्रसादवसुधाविभागप्राप्तकरपुर १ पत्तनसारण १ जैत्रसहायसमिद्धसैन्यसङ्गतसन्नद्धशोण्ड१८६१५ पूर्वत्रय ३ परिच्छिन्नपूर्व

सेना १ निश्चय ही जावेगी २ शीघ्र. पिता की३ भूमि को ही ४ हाथ जोड़कर बोला ॥ ५६ ॥५७॥ ५८॥ ६ चलते समय ६ मार्ग के लोगों को. आगेवालों को ७ पानी और पीछेवालों को ८*कीच मिलता है ॥ ६० ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के राजा भारमल्ल के चरित्र में बड़े भाई की प्रसन्नता से भूमि के विभाग में करउर नगर पाकर सारण और जैत्र की सहायता से युद्ध में बडी सेना को साथ ले, सज्जीभूत शौंड आदि तीनों का छिनीहुई पहली पृथ्वी को पीछी लेना, जैत्र और सारण का भूणंग के अर्थ गयेहुए कोटा आदि गामों को पीछा दिवाकर मयदू के पति म्लेच्छराज को मार, वैर लेने को प्रस्थान करने की इच्छावाले शौयड को हठपूर्वक बुंदी

*"जंबालचिकिलौ पंकः कर्दमश्च निषद्वरः" इति हैमः॥

पृथ्वीपत्याक्रमण १, जैत्र १ सारण २ भूणाङ्ग १८६।१ र्थप्रतिदापि
तगतकोटाग्रामादिकमराडूमहीशम्लेच्छराजमारणवैरिवाञ्छनप्रति-
ष्ठासुशोराड १८६।५ समरसभबुन्दीप्रत्यानयन २, नृप १ सचिवा२ऽऽ
दिचतुष्टय ४ सम्बोधितशोराड १८६।५ स्वस्वामिभटवर्गसाहससमा
क्रान्तप्रान्तप्रत्यादान ३, कलहकार्यशेमुषीशिथिलप्रेरणाप्रतीपसर्व-
थाविमुखसगर्वसर्वस्वहरणावसरस्वामिसेनासम्मुखसन्नद्धसाङ्गरत्रि
विक्रम १ प्रधनपरासूभवन ४, नृपा १ दिचतुष्टय ४ कृतप्रभुकार्यर
णरसिकनियोगाऽनुकूलस्ववीरवर्गार्थपरिच्छिन्नसमस्तप्रतिदापन
५,नरेन्द्रस्वप्रसादप्रापितसुरथपुरतोगा १८६।१ऽनुजयशःकर्णा१८६
२ऽपर २ नामगङ्ग १८६।२ ताराटुर्गाध्यक्षीकरण ६, बुन्दीमराडूप-
तिमृधमृतघुग्घुल १८१।१ वंशीयलक्ष्मण १८५।१ तनुजन्माऽमरसिं
हा १८६।१ऽर्थखेट १ नामपुरपट्टाऽर्पण ७, नवरङ्ग१८३।२ वंशीयमाध
वसिंहा १८६।१ऽर्थस्वारोहसप्ति७ सहिताऽरणिष्ठ २ नामनिवेशनवि
तरण ८, स्वस्थानीयकरपुरसन्नद्धचतुःशत ४०० सादिसङ्घशोराड

में पीछा लाना, राजा और मन्त्री आदि चारों के समझाने पर शौंड का अप
ने स्वामि के सुभटवर्ग के हठ से लियेहुए प्रान्तों को पीछा लेना, युद्ध के कार्य
में शिथिल बुद्धिवाले, प्रेरणा से विरुद्ध, सर्वथा विमुख ऐसे सैंगर त्रिविक्रम
का गर्व के साथ सर्वस्व हरने के समय स्वामिसेना के सन्मुख सन्नद्ध होकर
युद्ध में माराजाना, राजा आदि चारों का प्रभु का कार्य करनेवाले, रणरसिक
आज्ञानुकूल अपने वीरवर्ग के अर्थ छीनेहुए सब गाम आदि पीछे देना, राजा
की प्रसन्नता से तोग के छोटे भाई यशकर्ण दूसरे नाम से गंग को सुरथपुर
देकर तारागढ का किल्लादार बनाना, बुन्दी में मराडूपति के युद्ध में मरेहुए घु
ग्घुल के वंशवाले लक्ष्मणसिंह के पुत्र अमरसिंह के अर्थ खेड़ा नामक पुर का
पट्टा देना, नवरंग के वंशवाले माधवसिंह के अर्थ अपने चढने के घोड़े सहित
अरणेठा नामक स्थान देना, अपने रहने के करवर नगर में सज्ज होकर चार
सौ सवारों के समूह सहित शौंड का मालवा लूटने को जाना, कोटा में द
दिन बिताकर भाई भूणंग का आतिथ्य स्वीकार करके मार्ग में आयेहुए पा
न, भाणपुरा आदि खीचियों के देश लूटकर हाडा का मालवा की सीम

१८६।५ मालवलुराटनप्रस्थान ९, कोटाविहापितदिनद्वय २ स्वीकृत भ्रातृभूणाङ्ग १८६।१ऽऽतिथ्यविप्लुतमार्गागतपट्टणि १ भानुपुर २ प्रभृतिखिच्चिखराडहङ्गमालवसीमसङ्क्रमण १०, विप्लुतविशाले १ न्द्रपुर २ यागपुरा ३ऽऽदिमालवोदग्भागसमाचरिताऽऽपद्धर्मचर्यशौराड देव १८६।५ स्वसमापनसज्जसंमुखसमागतमराड्पतिचमूपरिसौप्ति-कसम्पातन ११, व्यापादितसेनाऽध्यक्ष १ सहितसपत्नशतत्रय ३०० निर्घोपितविजयनिःशाणदशपुरप्राप्तनृपाऽनुजबलात्कारविलुरिट-तवैरिवाजिशतक १०० स्वसद्मसरणिसमानयन १२, ज्ञातखिच्चि १ यवन २ शत्रुसैन्यद्वय २ समभिषेणनसानुमत्सन्धिपुटान्तरायातसहा यसम्मिलितभूणाङ्ग १८६।१ समुपेतकृतकियत्कलिकौतुकप्रत्यनी कप्रतिमल्लीकारितसमाकारितप्रसारितशबरशतद्वय २००चतूरात्रस्वी कृतकोटापतिसत्कारबुन्दीसमागतशौराड १८६।१ तत्तुरगशतक १०० स्वाग्रजोपायनीकरण १३, नृप १ जैत्र २ सारण ३ सचिवा ४ दिनृ पाऽनुजोपालम्भन१४, योधपुराधिराजराष्ट्रकूटयोधराजतनूजविक्रम

में जाना, विशालपुर, इन्द्रपुर और यागपुर आदि मालवा के उत्तर भाग को लूटकर आपद्धर्म का आचरण करनेवाले शौराडदेव का अपने मारने को सजकर सन्मुख आईहुई मराड्पति की सेना पर रातिवाह देना, सेनाध्यक्ष को तीन सौ शत्रुओं के साथ मारकर विजय के नगारे बजाकर मंदसोर पुर में आकर राजा के छोटे भाई का बल पूर्वक वैरी के घोड़ों को लूटकर अपने घर के मार्ग में लाना, खीची और यवन दोनों शत्रुओं की सेना का युद्धयात्रा करना जान, पर्वत की सन्धि (दरा) में आय, सहाय के अर्थ मिलेहुए भूणंग सहित कुछ युद्ध कौतुक कर, शत्रुओं से मुकाबिला करनेवाले दो सौ भीलों को बुलाय उनको वहां रोपकर पीछे कोटा के पति का चार रात्रि तक सत्कार स्वीकार करके बूंदी में आयेहुए शौराड का उन सौ घोड़ों को अपने बडे भाई की भेट करना; राजा, जैत्र, सारण और सचिव आदि का राजा के छोटे भाई को उपालम्भ देना, जोधपुर के पति राठोड़ जोधा के पुत्र विक्रम और बीदा दोनों सहोदर भाइयों का जंगल देश को लेना, युद्ध में सांखला प्रामारों को मारकर भाटी यादवों को अपने हुक्म के वश करके शक्ति की आज्ञानुसार पुंगल के

बिद्र २ सोदरद्वय २ जङ्गलजनपदसमाक्रमण १५, रणाशातितशङ्कु
ल १ प्रामारशासनवशीकृतभट्टि २ यादवशक्तिशासनाऽनुसारसमनु
ष्ठितपुङ्गलपतिभट्टिभूपसेखसुतापाणिपीडनविक्रम १ सूचितसंवत्स
यस्वसञ्ज्ञासम्बद्धविक्रमनगर १ नामनव्यनगरनिर्माण १६, प्रमाण
शून्यमतान्तरसंवन्निरास १ बिद्र २ रचितबिद्रासर २ स्थानीयसूचना
समेतदेवीनिदेशवशजाङ्गलाधिराजविक्रम १ वंशपट्टधरप्रथम १ पु
लपतिकुलपतिपुत्रीपाणिग्रहणनियमविख्यापन १७, योधराज
१ नन्तरकृतकियत्कालराज्यतत्पट्टपपुत्रसूर्यमल्ल २ संस्थावसरत
नूजमुख्यव्याघ्रराज ३ योधपुराधिपत्यप्रापण १८, चित्रकूटाधिरा
राजमल्ला १ ऽऽमेरनगरनरेशभारमल्ल २ समयशोणड १८६।५ मण
पतिवाजिविप्लवसूचन १९, श्रुतैतदुदन्तकालकुपितपुनर्बुन्दीसं
चिक्रमयिषुम्लेच्छराजबाजबहादुर १ सुप्रसादितसैन्यसज्जीकरण २
निग्रहीतपूर्वशिशुश्यामाऽऽयत्तीकृतप्रपा १ महानसा २ द्यधिकार
ऽयन्तरपिपासाऽवबुद्धप्रच्छन्नपीतजलाऽपिहिततत्पात्रप्रत्यागतकप

पति भाटियों के राजा सेख की पुत्री से विवाह करके बीका का ऊपर ह
ना किये हुए सम्वत् के समय में अपने नाम से बीकानेर नामक नवीन न
बसाना, प्रमाण से शून्य ऐसे मतान्तर के सम्वत् का खंडन और बीदा के
चे हुए बीदासर स्थान की सूचना समेत देवी की आज्ञा के वशवर्ति जांग
देश के पति बीका के वंश के पाट धारण करनेवालों का पुंगल पति के कुलपति
पुत्री से विवाह करने का नियम प्रसिद्ध करना, जोधा के पीछे कितनेक सम
राज्य करके उसके पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल (सूजा) के देहान्त समय पर उस
र्यमल्ल) के पाटवी पुत्र व्याघ्रराज (बाघा) का जोधपुर का स्वामी होना, चि
ड़ के राजा रायमल्ल, आम्बेर नगर के राजा भारमल्ल के समय शौण्ड
मण्डूपति के घोड़े लूटने की सूचना करना, यह वृत्तान्त सुनकर समय
फेर से कुपित हुए बाजबहादुर का फिर बुन्दी लेने की इच्छा से कृपापा
सेना को सज्ज करना, पहिले पकड़े हुए बालक श्याम के पाणेरा (जलघर) अ
रसोईघर आदि अधिकारों को वश में करके रात्रि में प्यास से जगकर छ
जल पीकर पानी के पात्र को बिना ढकाहुआ रखकर पीछे आयेहुए यवने

टक्रुद्धयवनेन्द्रस्वप्रतिबोधितश्याम१सकाशवामार्गणा२१, गोपितश्याम१केशवपूर्वनामद्वय२प्राक्कालपरिणीतयवनपुत्रीकसमुत्पादितदावूदा१ऽऽदिदायादप्रभुप्राप्तसमरकन्द१स्वनामद्वद्धपूर्वतद्यवनपुनरानीतानिवेदन२२, स्वसेवासावधानताप्रसन्नम्लेच्छपतिमिमार्गयिषितसमरकन्द१बुन्दीराज्ययाचन२३, दत्तप्रार्थितसेनाऽध्यक्षीकृतसमरकन्द१स्वयमात्तदुर्गाश्रयम्लेच्छमहीपषष्टिसहस्र६०००० सर्वसैन्यबुन्दीविजयप्रस्थापन२४, मार्गपुर१ ग्रामा२ दिप्रजाप्रद्रावकभानुपुरसमीपसमागतपरिपंथकपृतनाशुद्धिबुंदीवास्तव्यवर्गसमाकर्णन २५ मेकविंशो २१मयूखः ॥ २१ ॥ आदितोऽष्टषष्ट्युत्तरैकशततमः ॥ १६८ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सुनि बुंदिय खित्तल सचिव, इम मंडुवदल आत ॥
किय रहस्य एकत्रकरि, विदित बंधु १ भट २ व्रात ॥ १ ॥
सोंड १८६।५कहिय लघु सिंह १ व्है, दंती २ व्है गुरुदेह ॥
तदपि विदारै कुंभ तस, आलोचहु दृढ एह ॥ २ ॥

का कपट से क्रोध करके अपने जगायेहुए श्याम से जल मांगना, पहिले के श्याम और केशव इन दोनों नामों को छिपाकर पहिले समय में विवाह की हुई यवन पुत्री से दाऊदखां आदि पुत्र उत्पन्न करके स्वामि से पायेहुए अपने समरकंद नामवाले पहिले के हाडे उस यवन का फिर लायेहुए(जल)का निवेदन करना, अपनी सेवा की सावधानता से प्रसन्न म्लेच्छपति से मांगने की इच्छावाले समरकन्द का बुन्दी के राज्य की याचना करना, उसकी प्रार्थना को स्वीकार करके उसीको सेनापति बनाकर स्वयं किले का आश्रय लेकर म्लेच्छ महीप का साठ हजार सेना बुन्दी को विजय करने को रवाना करना, मार्ग के पुर, ग्राम आदि की प्रजा को भगानेवाली शत्रु की सेना का भाणपुर के समीप आने की बुन्दी के वीरों का खबर सुनने का इकीसवां मयूख समाप्त हुआ ॥ २१ ॥ और आदि से १६८ मयूख हुए ॥

१सलाह २ समूह ॥ १ ॥ ३ हाथी ४बडे शरीरवाला होता है तो भी ५विचारो

द्वीपी१ लघु गुरु देहके, गवय२ गवल३ बल गंजि ॥
दुसह गज्जि पारत दहल, भिरतहि डारत भंजि ॥ ३ ॥
यातैं लखहु न बहु१अलप२, सजहु इक्क १ मन सर्व ॥
अनीभवँर हम अग्ग ह्वै, खंडहिं दुजन अखर्व ॥ ४ ॥

॥ षट्पात् ॥

गहत इक्क१आमँगुन तानि कीट२हु तिहिं तोरत ॥
बहुगुनजुरि बंधैं सु १ इंभ२हु मदमत्त अहोरत ॥
यातैं सब मनइक्क१होहु कबहुन तो हारहिं ॥
समरकंद१सह सेन बंदन हरि आन बिगानहिं ॥
बढि अग्ग जित्ति मालव बलन रोधकको सूर न रहत ॥
जो मिच्छ भजहिं दू२थनि जनित बिनु सूथनि गूथनि बहत ॥ ५॥
इम न ततो हम अलस जोति सीरहु नन जानैं ॥
असन१ बसन२ की आस मनन मनन तब प्रमानैं॥
मिलि यातैं इक्क१ मन तुरग नक्खहु तिन्ह लासहिं ॥
मथि हम बिसिख समुद्र नियत जयरत्न निकासहिं ॥
यहसुनत अमर माधव २ मुखन कियसराह तस बाद कहि ॥
जहँ नृप१रु जैत२सारग३सचिव ४ चवी चउ४न नय एसनहि॥

१ बघेरा (दोगला सिंह) छोटा होता है तोभी बडे देहवाले २ रोझ और ३ आरण्य(वन के) भैंसे के बल को दबाकर ॥ ३ ॥ ४ सेना के दुल्लह होकर ॥ ४ ॥५ कच्चे तन्तु को ६ कीड़ा भी खैंचकर तोड़ डालता है. अस्तु ७ हाथी को ८रोक लेते हैं ९ मुख १० बन्दर ११ दो स्तनवाली के जनेहुए (मरूभाषा में स्त्रिया स्त्री को दूथणी कहते हैं जिसके जनेहुए) अर्थात् स्त्रियों से. बिना १२सूथनों (पाजामों) के होकर अर्थात् उनके पाजामे फट जावेंगे और १३ बिष्टा १४ करदेंगे ॥ ५ ॥ यह नहीं होवे तो हम आलसी १५ हल भी नहीं हांक जानते तब मन में वस्त्र और भोजन की आशा भी प्रमाण नहीं करैं १६ बिना शिखावालों (यवनों) के समुद्र को मथ कर १७ निश्चय ही १८ आदिक ने १९ कहा यह नीति नहीं है ॥ ६ ॥

कहाँ अयुतखट६००००कटक कहाँ अप्पन छसहँस६०००किंर
तकि भुवलेन तहाँहु आतस्याम १ हिँ वनि आसिर ॥
लाय हयन तुम लाल वीज विपदामय वाँविय ॥
यहफल तास अमोघ अवहि पकिवेपर आविय ॥
पूगै न लरन अप्पन परन मन्नहु इम सबको मरन ॥
को तब उपाय छितिहित करन रहहिँ वंस बीजहु धर न ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

हे हड्डे अग्गे इहाँ, बीजहु गो ब विलाइ ॥
करनो यहहि कथानिका, जुरहु समुख तो जाइ ॥ ८ ॥

॥ षट्पात् ॥

यह मंडुवपति अज्ज अखिल दक्खिन बलि अँचत ॥
इहिँ मंडुवपति अग्ग खग्ग कोउन रुपि खैँचत ॥
मङ्गैँपुव्वहि महिप अज्ज आब्दिक इहिँ अप्पहिँ ॥
यह दिल्लियबल उदधि थाहि नैँकन मन थप्पहिँ ॥
आश्रय१रु द्वेध २ यातैँ उभय २ अब कुल रक्खन अनुसर
रहिजाइ जबहि दल अलप रिपु कदनै तबहि छलबल करहिँ

॥ दोहा ॥

भायो सुहि मत१ भूपको, सारन२ जैत३ सहाय ॥
भटन चव्वि ओठन भनिय, हरख दव्वि तब हाय ॥ १० ॥
सहाय १ वहाय २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रचत मंत्र यह रुठ्ठि तरजि गय उठ्ठि चउ ४ हि तब ॥

---

१ किल (निश्चय ही) २ असुर (यवन) ३ हे लाल ! तुमने घोड़े लाकर ४ बोए ५ खाली नहीं जानेवाली ॥ ७ ॥ ६ कथा ॥ ८ ॥ मांगने से पहिले ही ७ आर्य राजा ८ सालाना खिराज देते हैं ९ नीति के छः गुणों में से आश्रय और द्वैधीभाव से अपने कुल को रक्खो १० नाश ॥ ९ ॥ १० ॥

माधव१८६।१गंग१८६।२रुअमर१८६।१सोंड१८६।५कातरगिनि ए सव
सारन १ जैत २ रु सचिव ३ बिहित लैकैं इततैं वलि ॥
बनि सु संधि[1] बिग्रहिक[2] मिले सम्मुह जँहँ चम्मलि ॥
उपदा निवेदि तीन ३ न अरज करिय स्याम१प्रति जोरिकर ॥
हम अनुग[3] सिरहिं धारत हुकम मन्नि उचित मंडहु महर ॥ ११॥
हमछिन्नि लिय हयहु सोंड १८६।५ सिसुपन हठसंग्रहि ॥
वे हाजरि सब अत्थ नैंक संतुहु[4] नृपमैं नहिं ॥
समरकंद १ इम सुनत कह्यो छोरहु बुंदीकँहँ ॥
लहि सुभांड १८६।४ दुवलान १ तथा समुचित बिलसहु तँहँ ॥
संवसैथ इतर बारह १२ सहित करि सु स्वीय सद्दहु हुकम ॥
वलि ग्राम पंच ५ सोंड१८६।५हिं वखसि[6] दैहैं सवन अधीस हम१

॥ दोहा ॥

तवहि पटा लिखवाइ तिन्ह, सचिव १ वंधु २ लहि संग ॥
दै उपदा[7] पच्छेसुरहि, आये रहित उमंग ॥ १३ ॥
दिय दुराइ[8] पुब्वहिं पिहिंत, वसु[9] १ भूखन २ मुखं[10] आंत[11] ॥
तजि बुंदिय दुवलान तब, पत्तो नृप कहि प्रात ॥ १४ ॥
निज गज १ तुरग २ रु नालिका[12] ३, सबदिय बुंदिय संग ॥
मन यातैं कातर[13] समुझि, रच्यो जवन हितरंग ॥ १५ ॥
तोग १८६।१ अनुज जसकर्ण १८६।२ तँहँ, तारा दुर्ग तजैंन ॥
सुपहु ताहि दै निजसपथ[14], आन्यौं उज्झि[15] सु ऐंन ॥ १६ ॥
सोंड १८६।५ हिं गूढ बिचारि सुहि, मिलि इन कठिन मनाइ
पंच ५ ग्राम तक्कुल्ल[16] १ प्रमुख[17], स्वीकारित[18] समुझाइ ॥ १७ ॥

१सन्धि करनेवाले बन कर २विग्रह करनेवालों से मिले ३सेवक ॥११॥ ४अप
राध ५ग्राम ६पति ॥१२॥ ७नजराना ॥१३॥ ८गुप्त ९धन १०आदि ११ सम्मूह
॥१४॥१२तोपें १३कायर जानकर ॥१५॥ १४अपनी सौगन दिलाकर. वह स्थान
१५छुडाकर ॥१६॥ १६ताकला नामक ग्राम१७आदि १८ स्वीकार कराया॥१७

इम सु स्याम १ हुव आइकैं, पुरबुंदिय छितिपाल ॥
सूनु खानदाऊद १ सह, बुल्ले बेगम २ बाल ३ ॥ १८ ॥
बुन्दी जनपद वाहिनी, मिच्छन विचरि महंत ॥
समरकंद१वस करि करे, सब हाजरि सामंत ॥ १९ ॥
सीमाहर सत्रुहु सकल, लघु तस पयन लगाइ ॥
छिन्नी नव लिन्नी सु छिति, सासनबस समुझाइ ॥२०॥
बुंदी त्रि३ सहँस३०००रक्खि बल, मान अतुल जयमत्त ॥
करि प्रबंध खिलँ जो७५०००कटक, पच्छो मंडुत्र पत्त ॥२१॥
बुल्लैं जब गृहतैं सबन, समरकंद१स्वसमाज ॥
माधव१सौंड२रु गंग४मुरि, आत खिल१रु अधिराज२॥२२॥
पुनि स्वनामं लेखित पटा, अखिलन नूंतन अप्पि ॥
जे बुंदियभट पुव्व जिम, थिर रक्खे निज थप्पि ॥२३॥
सनैं सनैं तिन्ह संहरन, अबहि धीरधर एह ॥
स्वांतै१अहित२बाहिर१सहित२, नरन दिखावत नेह ॥२४॥

॥ षट्पात् ॥

समरकंद१लिय समुझि आत सौंड१न उनमत्त सु ॥
क्यों माधव२ जसकर्ण२पटा मम लहि न आत पसु ॥
इहिं आगसैं बलबंधि अनखि तिन२ पैं उफनायउ ॥
जैत१८५१२रुजितैं तिन्ह जंपि छलन तब चलन छमायउ ॥
मिस खैनं१अरसैं२कोऊसमय दोऊ२ समय दिखाइदिय ॥
तुम जो असक्त भेजहु तनय कहि इम मिच्छहु माफकिय ॥२५॥

॥ दोहा ॥

॥ १८ ॥ १ देश में २ सेना ३ उमरावों को ॥१९॥ ४सीमा को हरनेवाले ५शीघ्र ६ नवीन ॥ २० ॥ ७ बाकी की सेना को ८भेजी ॥ २१ ॥२२॥ ९अपने नाम के लिखे हुए पट्टे. सबको १०नवीन देकर ॥ २३ ॥ ११ मारना१२मन में शत्रु और बाहिर से मित्र ॥ २४ ॥ इस १३अपराध से १४ रोगी होना कहकर १५ घपरोग १६ मस्सा (बवासीर) ॥ २५ ॥ २६ ॥

अक्खिय तिन सुत सिसु अबहि, ऐहैं लहि बय अत्थ ॥
काय१बचन२मन३ करि करहिं, सेवन प्रभु हितसत्थ॥२६॥
*जरासिथिल्ल इत अति ×जरठ, दिय जैत१८६हु तजि देह॥
स्वामी हुव तस मुख्यसुत, गैनोली निजगेह ॥२७॥
सारन१८६।१माधव१८६।१हे सबल, पै नृप-दिन प्रतिकूल॥
एहु मरे बिधिबस उभय२, सोहुव सब हिय सूल ॥२८॥
बंसीपति हुव छ१समं बय, सारन१८६।१सुत सामंत१८७।१॥
बाल जदपि मति वृद्ध बुध, इच्छैं बढन उदंत ॥ २९ ॥
भो माधव१८७।१सुत इत भरत१८७।१,निडर लाडपुर नाह॥
सोंड१९६अमर२गंग३रु सचिव४,रहे चउ४हि नृपराह॥३०॥

॥ षट्पात् ॥

खित्तल बनिक खटोर सचिव कोविद सकुनागम[3] ॥
परि है नृपहि बिपत्ति कहिय जब भोन अतिक्रम[4] ॥
द्रंग सु अब दुबलान रहैं सेवन पति हित रत ॥
जिहि पुब्बहिं लिय जानि बिखम परिहै दुकाल बत ॥
संबत कु बेद तिथि१५४१गत समय अक्खिय नृपहिं भतीप अह ॥
आगामि अब्द[10] सब संहरन[11] अब दुकाल परि है असह ॥३१॥

॥ दोहा ॥

बित्त१रु जे भूखन२बसन३, ए सब दै लै अन्न ॥
निखिल मरहु कुट्ठार[12] नृप, समय घोर संपन्न[13] ॥ ३२ ॥
प्रत्ययहो[14] अग्गहिं नृपहिं, सचिव न चवहिं[15] असत्य ॥
हिय सोच्यो अब जानि हम,ठहै किम छमहु असत्य ॥३३॥

*बुढापे से शिथिल. अत्यन्त×वृद्ध ॥२७॥२८॥छः १वर्ष की अवस्था में वृत्तान्त ॥२९॥३०॥ ३ शकुनशास्त्र में पण्डित. इस ४उपात्यय (उलटापलटी)के होने से पहिले ही उसने कहदिया था ५ नगर ६ दुर्भिक्ष पड़ने की वार्ता ७ उलटे ८ दिन ९ आनेवाला १०वर्ष. सब का ११संहार करनेवाला ॥ ३१ ॥ १२कोठार घोर समय के १३साथ ॥ ३२ ॥ १४ भरोसा. झूठ नहीं १५बोलेगा ॥ ३३ ॥

षट्पात्

छमा१दया२निधि छितिप अखिल संसृति उपकारक ॥
इम उदार३ आलोचि सवन विपदा संहारक ॥
इतउततैं आकारि प्रचुर बानिज विक्रयपर ॥
मंत्रीकथित प्रमान कियउ निजपुर अन्नाकर ॥
व्यय विरचि दम्म लक्खन वहुन क्रम लक्खनमन धान्यकरि
खातिकां ६ खात७गहिरे खनित भवन ९कुसूल४हु दिन्न भरि।३४।

दोहा—अधिपति पुव्वहि चेति इम, मतिसंख मंत प्रमानं ॥
जगहिं जिवावन जो भयो, धन १ दै धान्य २ निधान ॥३५॥
संबंधी निज तेहु सब, चतुर दये चेताइ ॥
न दयो बुंदिय भेद नृप, जानि अवहु भजिजाइ ॥ ३६ ॥
जितनैं सचिव कही जु ही, वनी अचानक बत्त॥
दुवचालीसम ४२ अब्द दृढ, पुहवि दुकाल सु पत्त ॥ ३७ ॥

॥ षट्पात् ॥

जिन गृह बल जान्यौं न प्रचुर तिनकैं हु पठायउ ॥
बुंदियभट करि विभैय अखिल जनपैद अपनायउ ॥
लघु भूपहु कति चलित सहज लिय भोलि प्रजा सह ॥
जन लक्खन यहजानि आनि नृपढिग कट्टे अंह ॥
इम जग जिवाइ करुनाउदधि धवल बह्यो अर्म्मीढधुर॥
धैंनपति निधान निज जनु धरिय पूरि नव९हि दुवलानपुर ।३८।

॥ दोहा ॥

---

१ संसार का २ विचार कर ३ बुलाय ४ बेचने को ५ अन्न की खान ६ ाइयें (धन के खजाने) ७ खात (अन्न का खजाना) गहरे ८ खुदेहुए ९ कोठ ॥ ३४ ॥ १० मन्त्री की सलाह ११ प्रमाण करके १२ धन ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ १३ भय रहित १४ देश को १५ दिन १६ अजमीढ राजा की धुर को धारण की; अथवा जिसकी बराबरी में दूसरे नहीं लगसकैं ऐसी धुर को धारण की. दुबलानपुर में मानों नव निधि सहित १७ कुबेर ने अपना धन धरा ॥ ३८ ॥

समरकंद १ तँहँ धान्यसुनि, अक्खिय बेचहु एस ॥
कछुकदयो आसानकरि, नलयो अर्घ नरेस ॥ ३९ ॥
कति सत्रुहु आसानकरि, जिनको कुकृत जताइ ॥
बखसि अन्न थंभे बिकल, प्रनतिपत्र तिन्ह पाइ ॥ ४० ॥

॥ मनोहरम् ॥

भो जैंडैल भूपैं परे तिन्हैं थंभि भिस्सा याग,
ब्याज लैंन बुंब दीसे राह बहु रोहे जे ॥
याके आदिपदन चतुर्दस १४ बरन आदि,
दल दोहा पहिलीके होत सब सोहे जे ॥
पंथपंथ पृच्छक पठाइ बुलवाये व्रातें,
जातें १ तातें २ जार्या ३ जननी ४ जन ५ विछोहे जे ॥
भारमल्ल १८६१४ भूप दुबलानाँ यौं खजानाँ खोलि,
मानव मतंगज मलीदनतैं मोहे जे ॥ ४१ ॥

१मूल्य (कीमत) ॥३९॥ २बुरा कार्य ३ नम्रता के पत्र (अरजियें) लेकर ॥४०॥ ढ-कलों (ढेलों) के समान भूमि पर पड़े हुओं को भिक्षा के यज्ञ से भोजन करा कर थांभा और बुन्दी को पीछी लेने के मिस से बहुत मार्गों को जिसने रोके अर्थात् भूखों को नहीं जाने दिये. इस चरण के आदि पदों के आदि के चौद ह अक्षरों का आधा *दोहा अर्थात् पूर्वार्द्ध होता है. मार्ग मार्ग पर ४पूछनेवा लों को भेजकर ५ समूहों को बुलाये ६ पुत्र ७ पिता ८स्त्री, माता और अपने मनुष्यों से वियोग पायेहुओं को. इसप्रकार राजा भारमल्ल ने दुबलाना ग्राम में खजाना खोलकर मनुष्य रूपी ९ हाथियों को १०मलीदों से मोहित किये "यहां मलीदा शब्द में श्लेष है, अर्थात् मनुष्यों के लिये सीरा (हलवा) और हाथियों के सामान्य भोजन का नाम मलीदा है" ॥ ४१ ॥

*दोहा शब्द स्त्रीलिंग है परन्तु लौकिक में पुल्लिंग से व्यवहार कियाजाता है जिस कारण हम भी पुल्लिंग ही लिखते हैं इस मनहर छन्द के आदि के चरण के चौदह पदों के आदि के चौदह अक्षरों से मरु भाषा के दोहे का पूर्वार्द्ध निकलता है जिसके निकालने का यह क्रम है कि ॥ सुप्तिङन्तम्पदम् ॥ अर्थात् सुप् तिङ् आदि विभक्ति जिसके अन्त में होवे उसको पद कहते हैं सो ये इसप्रकार हैं ॥ भो, जैंडैल, भूपैं परे, तिन्हैं, थम्भि, भिस्सा, याग, ब्याज, लैंनें, बुम्ब, दीसे, राह, बहु ॥ इन उपरोक्त १४ पदों से आदि के अक्षरों से दोहे का यह पूर्वार्द्ध निकलता है "भोजै भूपति थम्भिया वालैं बुन्दी राव॥" अर्थ-बुन्दीके प्यारे राजा राव ने भोजन कराकर ठहराये; अथवा ठहराकर भोजन कराता है ॥

दोहा—सो दोहा नृपसमयको, मारव बानी माँहिं ॥
जँहँ लकार१८अधबिंदुजुत, अंत्य व२३दंत्य हु आँहिं ॥४२॥
सोलह १६ मासन इम सुपहु, दै लक्खन जियदान ॥
किय तटस्थ १अरि३मित्र४कुल, अबिरत जस१आसान२॥४३॥
आधे १ दूजे २ अब्दलौं, रक्खे कातिक नरेस ॥
पाथेयहु तिन्ह अर्थ पुनि, दै पठये निजदेस ॥ ४४ ॥

॥ मनोहरम् ॥

वेची स्वीय संतति सवित्री १ सविता २ हू जहाँ,
पति १ पतनी २ की प्रियतापैं हरि हीनकी ॥
घाँघाँ घर घुम्मत घरट्टनको घोर मिट्यो,
चुल्लिनमैं छाई तंतुमाला मर्कटीनंकी ॥
खाल खिल सूके पंके मैंडुक मिलानैं बाग१,
विपिनं २ बिलानैं द्रुम छाँह छबि छीनकी,
देसकी गिनैं को ऐसे समय सुभांड १८६१४ देखो,
पोखि परदेसकी प्रजाकों परिपीनंकी ॥ ४५ ॥

॥ षट्पात् ॥

मंगिय वहुरिहु मिच्छ कहिय तवतव नृप कारन ॥
अव खैंहो वहुअन्न वढत लक्खन जन वारन ॥

सो दोहा १ मरुभाषा में राजा भारमल्ल के समय का बनाहुआ है जिसमें 'ल' तो आधे अनुस्वार सहित है और अन्तिम 'व' दन्त्य अर्थात् 'व' है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ २ मार्ग का व्यय (रस्ताखर्च) ॥ ४४ ॥ ३ अपनी सन्तान को ४ माता और ५ पिता ने भी वेच दी. जहां पर पति और स्त्री के ६ प्यार को हरण करके हीन कर दिया, और घरों में ७ ठाम ठाम घूमतीहुई घरटियों का शब्द मिटकर ८ चूल्हों में १० मकड़ियों के ९ जाले छागये और बाकी के नाले सूखकर १२मैंडक ११कीचड़ में मिलगये, बाग और १३वन मिटकर वृक्षों की छाया की शोभा क्षीण होगई, ऐसे समय में देश की तो क्या कहैं? देखो राजा सुभाण्ड ने परदेश की प्रजा को पालन करके १४पुष्ट की ॥४५॥ १५खायो

तदपि हजारन ताहि जानि *प्रतिघस्त्र जिमावत ॥
स्वीय कतिन कछु सैंन **पिहित गेहहु पहुँचावत ॥
हमकौं न देत इम सोधि हिय मारन पुब्बहिँ जास मत ॥
तिहिँ समरकंद१उर बैर१तकि बाहिर हित२मंडिय ***बितत॥४६॥

दोहा ॥

आनि असूया१ ईरखा२, जानि मिले सब जत्थ ॥
बसुधा हड्डनबंसतैं, इच्छत लैंन अनत्थ ॥ ४७ ॥
अधिप१ सोंड२ गंग३ रु अमर४, मारे चाहत मिच्छ ॥
ते चउ४ चाहत हनन तिहिँ, अंतर प्रीति अनिच्छ ॥४८॥युग्मम्॥

॥ षट्पात् ॥

भूपहिँ खित्तल भनिय अप्प अंकिय दुकाल इम ॥
ममनामहु छितिमाँहिँ करहु कछुरीति रहैं किम ॥
सुनिनृप पंद्रहसहँस१५००० कढ्ढि रुप्पय निजकोसन ॥
बिक्खि समय सुभ बुद्धि निपुन सिल्पिन निर्दोसन ॥
दुबलानतैं जु पवमानदिस२ पाइ उचितथल कोस१पर ॥
कासार३ रचिय तसनामकरि बिदित सु खित्तोलाव२बर ॥४९॥

दोहा ॥

नाम भवानीपुर नियत, अब निबसथ४ जँहँ आस५ ॥
देवी खित्तोला६ सदन, ताल गिनहु वह तास ॥ ५० ॥
निबसथ रचिय सुभांड१नृप, भंडाहेर१सु भव्य७ ॥
सुंडाहेर१ सु सोंड२ किय, निज१निज२ नामन नव्य८ ॥ ५१ ॥
नृपकुमार नारायन१८७१ सु, पंद्रह१५ सम९ बयपाइ ॥
बिदया प्रहरन१०१ बाहन२न, लिन्नी सब मनलाइ ॥५२॥

---

* प्रतिदिन ** छाने *** विस्तार से ॥ ४६ ॥ १ अनर्थ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ २ वायुकोण में ३ तालाव ॥ ४९ ॥ ४ ग्राम ५ है ६ खेतोला देवी का मन्दिर है ॥ ५० ॥ ७ सुन्दर ८ नवीन ॥५१॥ ९ वर्ष की अवस्था १० शस्त्रविद्या

त्रय३पीढिन नृप हम्म१८३।१ तैं, *आयति विधिबस एक ॥
पुत्र लहे जिन वृद्धपन, जीवनहार जितेक ॥ ५३ ॥
पाये तिमहि सुभांड१८६ पहु, जुव्वन जव ढरिजात ॥
कुमर तीन३ इक्क१ सु कनी, ÷मथित आयुबल पात ॥ ५४ ॥
नारायन१८७।१ तिनमैं निपुन, अग्रज सूर१ उदार२ ॥
जनक पुव्व चिंतैसु जुरि, बुंदिपलैंन बिचारि ॥ ५५ ॥
म्लिच्छचहैं इन्ह मारिवो, एहु चहैं तिन्ह अंत ॥
दाव नलग्गैं द्वै२हि दिस, मनकरि जदपि मिलंत ॥ ५६ ॥
आयति नृप१की अनुज२की, हुव ध्रुव बिगरनहार ॥
इच्छत बुंदिय आक्रमन, जेहि मरत जुझार ॥ ५७ ॥
जैत१८५।१ अनुज नवब्रह्म१८५।२जिम, अमर१८६।१ अलोद अधीस ॥
पुनि गंग१८६।२हु नवगामपति, सुपहु भार जिन्हसीस ॥ ५८ ॥
अरु सेव१८६।२जु सारन१८६।१ अनुज,इन४हु लह्यो क्रम अंत ॥
तिम समाप्त अग्रज लि३कहु, इम यह होन उदंत ॥ ५९ ॥

षट्पात् ॥

समरकंद१ छलसज्जि हनन हड्डुन हिंडोलिय ॥
परिगहसंह खल पहुँचि पिहिंत विस्वासघात पिय ॥
अंगजें निज दाऊद२ कलित कछु मँह निमित्त करि ॥
रचिय गोठि अभिराम विविध व्यंजन गन विस्तारि ॥
सुत तीन३ इक्क१ सोदरसहित दै निमंत्र दुवलानतैं ॥
अनुगनसमेत वुल्ल्यो अधिप मिल्यो कुहकं वहुमानतैं ॥६०॥

दोहा ॥

जदपि निवारयो जात जँहँ, पैंहु वहु बनिकप्रधान ॥

॥५२॥*भाग्य ॥ ५३ ॥ ÷ प्रसिद्ध ॥५४॥ ५५ ॥ ५६ ॥ १भाग्य २ निश्चय ही. जो बुन्दी ३लेना चाहते हैं वे ही वीर मरतेजाते हैं ॥५७॥१-॥५८॥४ छाने ५पुत्र६ विदित७उत्सव८न्यौता देकर ९ सेवकों सहित१०कपटी ॥ ६० ॥ ११राजा को.

गयो तदपि *अंतकग्रसित, भोरो अरि हितभान ॥ ६१ ॥
सिसु नरबद१८७१ नरसिंह१८७२सह, जावनलग्गो जत्थ ॥
जेठसुत१८७१ जुत सचिव जिन्ह, हठिरोके गहिहत्थ ॥ ६२ ॥
आयो सोंड१८६५हु मिलन इत, जोहु नट्यो तँहँजान ॥
सोहु लयो नृप दै सपथ, देखत हितहि निदान ॥ ६३ ॥

षट्पात् ॥

मिल्यो दुरहुन आतिमान समरकंद १ सु रचि संसद ॥
अबजु आहि सरसेतु पंतिहुव तास सीमपद ॥
अक्खिय भूप १ हिं अनुज २ जवन मारौं यँहँ जिम्मत ॥
बदिय भूप खल बहुत बनत भावी नटरैं बत ॥
आपान बिरचि करि तब असन करधावन सानुज २ करत ॥
बहराम१ कुतब २ पति सैंनबस बाहिय असि हसि बिप्फुरत॥६४॥

॥ दोहा ॥

पैठो नृपके अंसपरि, असि उपवीत उतार ॥
तदपि हन्यौं बहराम २ तिहिं, कर निज झारि कटार ॥ ६५ ॥

॥ षट्पात् ॥

कुतबखान १ खग्गकरि सोंड २ उडिजात स्वीयसिर ॥
कंटिसन कढ्ढि कृपान चंड रन रुंड रच्यो चिर ॥
परि समाज प्रद्रवन जवन चढि तरुन बचे जँहँ ॥

---

* काल का ग्रसाहुआ भोला शत्रु को हित जानकर ॥६१॥ ॥६२॥ ६३ ॥ १ सभा. जहां अब तलाव की पाल २ है उसके नीचे की सीमा में पंक्तिहुई ३ पानगोष्ठी (मतवाल). छोटे भाई सहित ४हाथ धोनेलगे स्वामि के ५इशारे से ॥ ६४ ॥ ६ कन्धे पर गिरकर ७ खड्ग ८एक कन्धे पर लगकर दूसरी ओर की पसलियों में जनेऊ के आकार घाव उतार देवे उसको जनेऊ उतार अथवा उपवीत उतार कहते हैं ॥६५॥ ९ अपना मस्तक १० कमर से तलवार निकाल कर ११ बहुत समय तक १२ पलायन (भगना) १३वृक्षों

हिय अंखिन मनु हड्ड तक्कि छ ६ अराति हनैं तँहँ ॥
पैंतीस ३५ भजे सहसा[2] प्रधन[3] पंद्रह १५ भट नृपके परे ॥
नृप१सोंड२सहितसत्तह१७नरनकतलमिच्छछ६छ६गुन३६करे॥६६॥

॥ दोहा ॥

सचिव छन्न आवत सु सब, मुख्यकुमर १८७١ सुनि मग्ग ॥
पच्छोमुरि दुंवलानपुर, ऑलय पत्त उदग्ग ॥ ६७ ॥
दंहल वढी सवदेसमें, सुनि नृप पक्खिन सोहि ॥
कढि निवास परसीमकिय, वन्यों रहनवल कोहि ॥ ६८ ॥
सांरन १ सोदर सेव२सुत, तजि वसुदारी तत्थ ॥
गो मेव १८७١ हु खटपुर गहन, जानि रहन थिर जत्थ ॥ ६९ ॥
गिरिसकोंन ८ खट दंगतैं, मेध्यासरित समीप ॥
ग्राम विरचि अभिनव गुढा, निवस्यो पैरन प्रतीप ॥ ७० ॥
नृप १ सानुज २ पायो जनैंन, महि वसु सकरि १४८१ मान ॥
नवति चतुर्दस १४९० पट्ट निज, वैठो उचित विधान ॥ ७१ ॥
वेद वेद तिथि १५४४ मित वरस, विक्रम संवत वेर ॥
हिंडोली वपुद्दान किय, ढाहि छतीस ३६ न ढेर ॥ ७२ ॥
वंदिय अग्ग गणोंकन विदित, नृपको सस्त्र निपात ॥
सोहिभई सारकंसठन, भेजि परे दुव २ भ्रात ॥ ७३ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनवीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवं-

पर १ शत्रुओं को २ अचानक ३ युद्ध से ॥ ६६ ॥ ४ घर में ५ गया ॥६७॥ ६ भय ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ खटकड़ नामक पुर से ७ ईशान कोण में ८ मेझ नदी के पास ९ नवीन १० शत्रुओं के विरुद्ध ॥ ७० ॥ ११ जन्म ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ १२ज्योतिषियों ने १३ मूर्खों की प्रवृत्ति ॥ ७३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं

श्यविहितऽपाख्यावेलाऽव्याहार्यबुंदीवसुधापतिसुभाराडदेव १८६।४ चरित्रे श्रुतसीमासमीपसमरकन्दा १ भिषेणालसामन्त १ सचिव २ नृप ३ निःशलाकमन्त्रावमाननोद्युक्तशोराड १८६।५ नानालघु १ गुरु २ कृश १ स्थूल २ दृष्टान्तदर्शनसङ्ग्रामसमर्थन१, निरस्तमाधवा २ऽमरकृततदनुमोदनरणानिश्चितवंशनाशनृप१जैत्र२सारण३सचिव ४शत्रुशासनस्वीकारसूचन२, समवज्ञातनृपा१दि४सन्धिसम्मतताजिं तकथितकातरीभूतसन्धिमन्त्रिकसमाजदर्शितपार्थक्याऽमर१माधव २गङ्ग३शोराड४स्वस्वस्थानगमन३, निश्चिताऽनुकूलाऽवसरम्लेच्छ मारणानृपा१नुमोदितप्रगुणीकृतोपायनस्वीकृतशत्रुशासनचर्मण्वत्य वधिसमभिसृतनिवेदितोपदमानितम्लेच्छमतसारण १जैत्र२सचिव ३बुन्दीविहानस्वीकरण४, लेखितनृपा१र्थद्वादशो१२पवसथोपेतदुर्ब लान१दङ्गशोण्डा २ऽर्थतर्ककुला१दिग्रामपञ्चक५पट्टप्रत्यागततत्त्रय ३वसुधेश१बुन्दीवहिर्निःसरणोपदेशन ५, परागोचरगोपितवसु१भूष

की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी के भूपति सुभाराडदेव के चरित्र में सीमा के समीप समरकन्द की युद्धयात्रा सुनकर उमराव, सचिव और राजा के एकांत में कियेहुए मन्त्र की अवज्ञा करके उद्युक्तहुए शौराड का अनेक छोटे बड़े दुर्बल और मोटे दृष्टान्तों को दिखाकर युद्ध को पुष्ट करना, माधव और अमर के कियेहुए उसके अनुमोदन का तिरस्कार करके युद्ध में निश्चय ही वंश का नाश जानकर राजा, जैत्र, सारण और सचिव का शत्रु की आज्ञा को स्वीकार करने की सूचना करना, राजा आदि चारों की सन्धि की सम्मति को न मानकर कायर कहकर सन्धि करनेवाले मंत्रिसमाज को धमकाकर पृथक् पन दिखाकर अमर, माधव, गंग और शौंड का अपने अपने स्थानों को जाना, अनुकूल समय में म्लेच्छ को मारने का निश्चय करके राजा के अनुमोदन से सरलता पूर्वक नजराना ले शत्रु की आज्ञा स्वीकार करके चामल नदी तक सन्मुख जाकर नजराना भेट करके म्लेच्छ के मत को मानकर सारण, जैत्र और सचिव का बुन्दी छोड़ने को स्वीकार करना, राजा के अर्थ द्वादश गामों सहित दुबलान पुर और शौण्ड के नाम ताकला आदि पांच ग्रामों का पट्टा लिखाकर पीछे आकर जैत्र आदि तीनों का राजा को बुन्दी से बाहर निकलने की सम्मति देना, शत्रुओं से नहीं जानेहुए धन और आभूषण के समूह को छिपाकर हाथी घोड़े और

ण २ व्रातत्यक्तसगज १ तुरग २ नालिका ३ निकरबुन्दीनगरब-लात्कारनिष्कासितताराटुर्गाऽध्यक्षनरेन्द्रदुर्बलानप्रविशन ६, सारण १ सचिवा २ दिप्रसभप्रबोधितशोरड १८६।५ ग्रामपञ्चकस्वीकारण ७, समाहूतपत्नी १ पुत्रा २ दिपरिकरसमरकन्द १ सीमान्तबुन्दीराज्यस्वीकरण ८, जितवशीकारितसीमासपत्नबुन्दीस्थापितत्रिसहस्र ३००० वलखिलसैन्यमरुडूप्रतिगमन ९, समाहूतसमागतमाधवा १ऽऽदित्रय ३ वर्जितनृपा १ दिसामन्तसंघार्थस्वावसरसंजिहीर्षुयवनपृथक्पृथङ्निजनामलेखितपट्टाऽर्पण १०, निश्चितनृपाऽनुजोन्मत्तभावबुन्दीशमाधव १ गंगा २ऽनागमकारणपृच्छावसरजैत्र १८५।१ यक्ष्मा १ऽर्शो२ मिषत्कोपनिवारण ११, क्षान्तमन्तुस्वसेवनपुत्रप्रेषणादत्तनियोगकदाचिद्दृष्टकपटाऽऽमयाविद्युग २ स्वस्वसूनुशैशवनिवेदन १२, जैत्र १ सारण २ माधव ३ त्रय ३ स्वस्वसमयसंस्थासमादानाऽवसरतत्पुत्रगैणोल्या१ दिस्वस्वस्थानीयस्वामीभवन १३, स्वस्वामिसेवासावधानदुर्बलान १ वास्तव्यनीति १ निमित्त २ निपुणमन्त्रिराजवणिक्क्षेत्रलस्वप्रभुसमक्षाऽऽगमिष्यमाण

तोपों के समूह सहित बुन्दी नगर को छोडकर तारागढ के किल्लेदार को कठिनता से निकालकर राजा का दुबलान पुर में जाना, सारण और सचिव आदि का हठ पूर्वक समझाकर शौंड को पांच गांव स्वीकार कराना, स्त्री पुत्रादि परगह को बुलाकर समरकन्द का सीमा पर्यन्त बुन्दी के राज्य को अपने अधिकार में करना, सीमा के शत्रुओं को विजय और वश में करके बुन्दी में तीन हजार सेना रखकर बाकी की सेना का पीछा मरुडूपुर जाना, बुलाने से आयेहुए माधव आदि तीनों को छोडकर राजा और उमरावों के समूह के अर्थ अपने अवसर पर मारने की इच्छावाले यवन का अपने नाम से लिखकर जुदे जुदे पट्ट देना, राजा के अनुज माधव और गङ्ग के उन्मत्त भाव का निश्चय कराकर बुन्दी नहीं आने का कारण पूछने के समय जैत्रसिंह का क्षयरोग और बवासीर के मिस से कोप मिटाना, अपराध को सहन करके अपने सेवन में पुत्रों को भेजने की आज्ञा देने पर कदाचित् कपट देखकर दोनों रोगियों का अपने अपने पुत्रों का बालकपन निवेदन करना; जैत्र, सारण और माधव तीनों के अपने

वर्षदुर्भिक्षविज्ञपन १४, परीक्षाप्रतीतसचिवसावधानीकृतविहितभर्म- १ भूषणा २ दिविनिमयदयालुनरेन्द्र १ सर्वजनजीवनसमानधान्य सम्भारसञ्चयन १५, प्राप्तसूचितशकसंगतद्विचत्वारिंशा ४२ऽब्दमहा- दुर्भिक्षाऽऽगमयवनयाच्यमानदत्तसम्मितधान्यमूल्यानिनीषुसुभाराड देव १८६१४ सपत्नावधिशुष्यमाणासंख्यजनतासंजीवन १६, तत्र त्यमनोहरवृत्तप्रथम १ पादादिचतुर्दश १४ शब्दपूर्वपूर्वैकै १ का १ क्षरयोगतत्कालीनप्राक्तनीदोहापूर्वा १ र्द्ध संघटन १७, पुनर्मार्गणा प्राप्तधान्यसमरकन्द १ सार्द्धैक ३समावधिनिर्वोढसर्वजनजीवनसपरि ग्रहसुभाराड २ परस्परछद्मघातविचारणा १८, मन्त्रिक्षेत्रलप्रार्थितन रेन्द्र १ सूचितस्थानविहितपंचदशसहस्र १५००० रौप्यव्ययवाणिङ् नामसूचकनव्यकासारनिर्मापणा १९, सुभाराड १ शोराड २ स्वस्वाऽ भिधानाऽङ्कितभाराडखेट १ शोराडखेट २ नामनवीननिवसथयुग्म २ निवासन २०, नृपहम्मा १८३१ऽर्वाग्वैरिशल्या १८५१ऽवधिनृपत्र

अपने समय में देहान्त होने के अवसर पर उनके पुत्रों का गैणोली आदि अपने अपने स्थानों का पति होना, अपने स्वामि की सेवा में सावधान दुब- लानपुर निवासी नीति और शकुन में निपुण मन्त्रिराज बणिया खेता का अपने स्वामि के सन्मुख आनेवाले सम्वत् में दुर्भिक्ष होने की जानकारी क रना, परीक्षा से प्रतीति कियेहुए सचिव के सावधान करने से उचित, स्वर्ण और भूषण आदि देकर दयालु राजा का सब जीवों के जीवन के समान धान्य का समूह संचय करना, सूचना कियेहुए ४२के सम्वत् के साथ प्राप्त हुए महाद र्भिक्ष आने के समय यवन के याचना करने पर मूल्य नहीं लेकर कुछ धान्य देकर सुभाण्डदेव का शत्रुओं तक शुष्क हुए असंख्य मनुष्यों को जिलाना, वहांके मनोहर छन्द के प्रथम चरण के चौदह शब्दों के प्रत्येक पद के प्रथम के एक एक अक्षर के मिलाने से उस समय के प्राचीन दोहे के पूर्वार्द्ध की रचना, फिर मांगने पर धान्य के नहीं मिलने से डेढ वर्ष की अवधि तक सब जनों का निर्वाह करनेवाले परिग्रह सहित सुभांड को परस्पर छल घात करके मारने का विचारना, मन्त्री क्षेत्रल के प्रार्थना करने पर राजा का जनाये हुए स्थान पर पन्द्रह हजा र रुपये खरच करके बनिये के नाम को जनानेवाले नवीन तालाब को बना ना, सुभाण्ड और शौण्ड का अपने अपने नामों से जाने जावैं ऐसे भांडखेड़ा

य ३ वार्द्धकवयोराज्यधरप्रसूतिप्राप्तिसूचनापुरस्सरसुभाण्डदेव१८६। ४ यौवनाऽवतरणसमयसन्ततिचतुष्टया ४ऽधिगमसूचन २१, हेतिः हया २.दिविद्याविदग्धज्येष्ठकुमारनारायणदास १८७।१ पितृपरोक्ष म्लेच्छमारणविचारण२२, नृपनियतिप्रातिकूल्यपरतन्त्रम्लेच्छमार णतन्त्रोद्यतनवब्रह्मा।१ऽऽदिनृपबन्धुनवक९स्वस्वसमयसमापन २३, हिण्डोलीपुरप्राप्तसपुत्रसमरकन्द१ कल्पितमहान्तरगोष्ठीभोजनव्या जसमाहूतमन्त्रिवारणगृहन्यस्तकुमारसाहससार्थीकृताऽनुजसुभांड देव १८६।४ सूचितस्थानगमन २४, भोजनाऽवसानसमरकन्द १ सूचनासञ्जिहीर्षुयवनयुगसुभाण्ड १८६।४ शौण्ड १८६।४ भ्रातृद्वय २ दलन२५, तिर्यक्कृत्तवामकरकृष्टकट्टारनरेन्द्र१स्वमारकबहराम २ संहरण २६, छिन्नमूर्धकरकृतकृपाणशौण्ड १ द्वेषिषट्क ६निषू दन २७, नृपपक्षीयपञ्चदश १५ परपक्षीयषट्त्रिंश ३६ तुमुलसम्मि तसमापन२८, मार्गश्रुततदुदन्तस्वस्थानप्रत्यागतकुमारनारायणदास

और शौण्डखेड़ा नामक नवीन दो गाम बसाना, राजा हम्मीर से पीछे वैरि शल्य तक तीनों राजाओं के वृद्ध अवस्था में राज्य को धारण करनेवाली सन्तान की प्राप्ति होने की सूचना पूर्वक सुभाण्डदेव के यौवन उतरने के समय चार सन्तान होने की सूचना करना, शस्त्र और हय विद्या में पण्डित बडे कुमार नारायणदास का पिता के परोक्ष म्लेच्छ को मारने का विचार करना, राजा के उलटे भाग्य की परतन्त्रता से म्लेच्छ को मारने के तन्त्र में उद्युक्त होनेवाले नवब्रह्म आदि राजा के नव भाइयों का अपने अपने सम य पर मरना, हिण्डोली पुर में पहुंच कर समरकन्द के कल्पित उत्सव की गोठ के मिस से बुलायेहुए मन्त्री के रोकने से कुमार को घर में छोडकर हठ पूर्वक छोटे भाई को साथ लेकर सुभाण्डदेव का सूचना कियेहुए स्थान को जा ना, भोजन के अन्त में समरकन्द की सूचना से मारने की इच्छावाले दो य वनों का सुभाण्ड और शौण्ड दोनों भाइयों को मारना, खड्ग से तिरछा कट ने पर हाथ से कटार निकाल कर राजा का अपने मारनेवाले बहराम को मार ना, मस्तक कटे पीछे हाथ में खड्ग लेकर शौण्ड का छः शत्रुओं को मारना, रा जा के पक्ष के पन्द्रह और शत्रु के पक्ष के छत्तीस शत्रुओं का युद्ध में मार

१८७।१बन्धुवर्गपरजनपदपलायन२९, षट्पुरगहनसम्प्राप्तसेव१८६।२ सूनुमेव १८७।२ नव्यनिर्मितगुढा १ रूपग्रामनिवसन ३०, सानुज १ जन्म १ पट्टप्राप्ति २ तनुत्याग ३ शकसमासङ्ख्यासूचनं ३१ द्वाविंशो २२ मयूखः ॥ २२ ॥

आदित एकोनसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १६९ ॥

॥ प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ षट्पात् ॥

बरज्यो जावत बनिक तास करि कानि रह्यो तब ॥
पुनि नारायन १८७।१ पिहितें जोग्य अवसर हंकिय जब ॥
इक्कल १ हय आरूढ जानि न सकैं अमात्यजिम ॥
नगर बरोदानिकट अध्व कुलनास सुन्यों इम ॥
पच्छो सु आइ दुबलानपुर हेयर१तजिरुबिधि१करतहुव २ ॥
बैरिन सराँह बाहिय१बदत२स्वांत१निगूढ२सुभांड१८६।४ सुव ॥

॥ दोहा ॥

संतति न हुती सोंड १८६।५ कै, यातैं कुमर उदार ॥
जनक १ पितृव्यक २ कृत्य जुग २, सद्धिय बिधि अनुसार ॥२॥
कानिंकरन आवैं अखिल, इम भाखैं तिन्हअग्ग ॥
करी उचित मारे कुटिल, मतिबिनु चलत कुमग्ग ॥ ३ ॥

जाना, मार्ग में यह वृत्तान्त सुनकर कुमर नारायणदास का अपने घर पर आना और बन्धुवर्ग का पराये देश में भागना, खट्पुर के गहन बन को पाकर सेव के पुत्र मेव का नवीन बसायेहुए गुढा नामक ग्राम में निवास करना, छोटे भाई सहित राजा के जन्म, पट्टप्राप्ति और शरीर छोडने के विक्रम के सम्वत् की गणना सूचन करने का २२वां मयूख समाप्त हुआ।२२। और आदि से १६९ मयूख हुए।

१ नारायणदास २ छाने. अकेला घोड़े पर ३चढकर४ मन्त्री नहीं जानसकै इस प्रकार ५ मार्ग में ६ त्यागने योग्य को त्यागकर. ऊपर के मन से शत्रुओं की ७प्रशंसा करता रहा ८मन में बैर को छिपारक्खा ॥ १ ॥ २ ॥ ९ आलस्पुर सी १० कुमार्ग ॥३॥

स्वामीको हनिवो *सतत, चाहतहै दुव २ चित्त ॥
सहत सहत अति **आगसन,भरि ***आमुख किय भित्त॥४॥
समरकंद काका सु पहु, अब है जनक २ उदार ॥
वेगम १ काकी माइ २ वलि, हमरे पालनहार ॥ ५ ॥
सुनि बुंदिय पहवत्त सव, जवन तिन्हैं निजजानि ॥
वेगम १ सिसु २ पठये विहसि, करन अग्रंजन २ कानि ॥ ६ ॥
नारायन १ सु नरायन २ हु, दीसत सव्द द्वि २ रूप ॥
इन दोउ २ न करि विदित इम, भाख्योजात सु भूप ॥७॥

॥ षट्पात् ॥

दुमनं नरायनदास अरज वेगमप्रति अक्खिय ॥
तुम १ माता१वे१तात२प्रथितं पालक निज पक्खिय॥
उरलगाइ सुनि वहहु अभय अप्पि रु गृहआई ॥
अप्पन पतिके अग्ग वहुत किय तास वडाई ॥
कुमरहु इतं सु सव कृत्यकरि नीतिनिपुन मिच्छन नयो ॥
विगनित जिमाइ दिन वारहम १२ भूपपट्ट पावत भयो ॥८॥
वुंदिय आइ वहोरि नीतिकोविदं अपुव्व नामि ॥
समरकंद १ संसंद सु स्वांतं गोपित वैठो सामि ॥
अंतहपुर आदेस जानि हित चहत दयो जव ॥
वेगमपास वहोरि तास नुतिकरि आयो तव ॥

---

* निरन्तर ** अपराधों से *** मुख पर्यन्त ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ १ बड़े भाइयों की मातमपुरसी करने के लिये ॥ ६ ॥ २ नारायण और नरायण ये शब्द दो रूप से दीखते हैं परंतु इन दोनों नामों से वह राजा प्रसिद्ध था इस कारण इस ग्रंथ में ऐसे लिखा है ॥७॥ ३ उदास होकर; अथवा बाहिर से मित्र और भीतर से शत्रु इसभांति दो तरह के मनवाले नारायणदास ने ४ पिता ५प्रसिद्ध ६पक्ष करनेवाले ७नमस्कार किया; वा उन म्लेच्छों से नम्रता की ८ गणना रहित ॥८॥ नीति में ९पण्डित १०सभा में ११ मन को छिपाकर १२ सहन करके १३ जनाने में जाने की आज्ञा १४ स्तुति करके

उपबसंथ ताहि बारह १२ अधिक द्रोहमिटन मिच्छप दये ॥
जैनकारि अनुग इम जानि जग भूपहिं बहु निंदतभये ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

इम बारह १२ निवसथ अधिक, पुब्ब पटासन पाइ ॥
पहु-आयो दुबलानपुर, मिच्छन हितहि मनाइ ॥ १० ॥
समरकंद १ कहँ सुत २ सहित, चाहत मारन चित्त ॥
जिम सल्लैं काका १ जनक २, घर घल्लैं बलवित्त ॥ ११ ॥

॥ षट्पात् ॥

तहँ नृप मातुलतनय बग्घ चालुक्क बीरनबर ॥
लहि अवसर दुबलान मिलनआयो हित मंथर ॥
मनं संकलप सु महिप कह्यो तासन सहकारन ॥
बग्घ निपुन तब बंदिय मित्त न बनैं तस मारन ॥
पुच्छत निदान अक्खिय पुनिहु अंधुछाहँजिम मंत्र उर ॥
रक्खैं सु हनैं ऐसे रिपुन धारि न सक्कैं और धुर ॥ १२ ॥
बदिय भूप तुव बंधु १ सुहृद २ मामक मामकसुत ॥
हम १ तुम २ अंतर हैन इम नजानैं इत २ अो उत ॥
बग्घ कहिय व्है बंधु तदपि नकहहु अब तासों ॥
अवसर लह्हु इष्ट रक्खि ब्यवहित रचनासों ॥
व्है जब अनेह बुल्लहु हमहिं देहैं मेटि कलंक दुव ॥
हड्डनं अधीस मारक हनि१९ भुग्गहु बुंदिय राज्य भुव ॥ १३ ॥

दोहा ॥

जंपि इम सु गय जाजपुर, बीर निजालय बग्घ ॥

ग्राम२म्लेच्छों के पति ने बैर मिटाने के लिये दिये ३ पिता के शत्रु का सेवक जानकर ॥ ९ ॥ ४ ग्राम ॥ १० ॥ ५सालते हैं (दुख देते हैं) ६ सेना रूपी धन ७ मामा का बेटा ८बाघसिंह सोलंखी ९ हित जनानेवाला १० मन का विचार ११तिससे १२कहा १३हे मित्र १४कारण पूछने पर १५कुए की छाया के समान मन में विचार रखनेवाला ॥ १६ मेरे १७मामा के पुत्र १८ गुप्त १९ समय होवै तब २० हाडों के पति को मारनेवाले को मारकर ॥ १३ ॥ २१ अपने घर

दुस्सह वित्ते मासदस १० अधिपहिँ निठ्ठि अनग्घं[1] ॥ १४ ॥
पुनि नृप लग्गत ऋतुमसल[2], मृगसिरमास समत्थ ॥
वग्घादिक निज बुल्लिकैं, सत्त ७ लये तँहँसत्थ ॥ १५ ॥
जोध इतर[3] सतच्यारि ४०० जिन्ह, राजा गोपुर[4] रक्खि ॥
स्वसँह[5] अठ्ठ ८ मविसन मथम, उचित गिनैं फल अक्खि ॥१६॥

षट्पात् ॥

चढि मातहि चहुवान वेग आयउ पुरबुंदिय ॥
विरचत रन बुलबुलन[6] हसत पिक्ख्यो निर्भय हिय ॥
गोल्हावापिय[7] गाह महल्ल पच्छिमदिस मंडित ॥
तोरनबाहिर[8] तत्थ मथित[9] बैठो छलंपंडित[10] ॥
सिसु १ पुत्त १ पौत्र२काजी३सहित परिजन अल्प[11] प्रमोदपगि
वटछाँहँ सभा वेदियँ[12] विरचि लखत समाह्वय[13] खेल लगि ॥१७॥
अक्खय१८६।१सुत अभिधान जास संग्राम१८७।१ सोहु जँहँ ॥
खटपुरपति मिलि खलन हुतो हाजरि पापी पँहँ[14] ॥
पहु तजि हय गय पास कलितँ[15] अंजलि मुजराकरि ॥
कहि१ रु पुच्छि२ हित कुसल धीर बैठो अग्गैं धरि ॥
जुज्झत सकुंतँ[16] बुलबुल जकुटँ[17]२ पिक्खत जवन प्रसक्तँपन[18] ॥
दिय सैनँ[19] सत्त७वग्घा१दिकन मारन तिन्ह चल्ल्यो न मन ॥१८॥
तबहि काढि तरवारि निडर झारिय नारायन१८७।१ ॥
चकित अंखि[20] चकचुंधि घरन नँठ्ठे[21] विनु घायन ॥

१घाघ रहित ॥१४॥ २हेमन्त ऋतु ॥१५॥ ३अन्य वीर ४ शहरके द्वार पर रख कर ५ अपने सहित ॥ १६ ॥ ६ बुलबुल पक्षियों को लड़ाताहुआ ७गोल्हा बावड़ी के स्थान पर पश्चिम दिशा में महल बनता था उसके ८ बाहिर के दरवाजे से बाहिर ९ प्रसिद्ध १०छल करने में चतुर ११अपने थोड़े लोगों सहित. वट वृक्ष की छाया में१२चबूतरी बनाकर१३पक्षियों के युद्धके खेल में लगा ॥ १७ ॥ उस पापी के १४पास १६ हाथ १५ जोड़कर १७पक्षियों का१८जोड़ा १९आसक्त होकर २० इशारा ॥ १८ ॥ २१ नेत्रों में २२ भागे.

समरकंद१ अरि अंस[1] चक्खि तिरछो कढिचल्ली ॥
सघन मेघ असि असित[2] बाढ चमकत घनबल्ली[3] ॥
उडिपरिय तास कर्तित[4] अवनि मुंड बिसिख[5] भ्रमि चक्क मग ॥
कुट्ट[6] जँनु[7] कुलाल[8] खरतंति[9] करि उडत चक्कसँन[10] किय अलग॥१९॥
इतर सत्रु आयुधिक अट्ठ८ जुज्झे गहि आउधँ[11]॥
भंजे खट६ नृप भटन उभयर अप्पाहिं वढ्ढे बुध ॥
अंदर गिनि दाऊद२चल्यो महलन सीढी चढि ॥
सु लगि पिट्ठि संग्राम१८७१ बेग नृप हनन गयो बढि ॥
पहु राजमहल सीढीन पर पहुँचत जानि कुबंधुपर[12] ॥
झुकिपलटिझारि उलटोहिअसि धँकि[13]डारिय सिर तासधर॥२०॥
उदासीन गिनि याहि जवन कहत न हन्यों जब ॥
पै बनि सत्रुनपुत्त आत मारन पिक्खयो अब॥
पलटि खग्ग इमँ[14] प्रबल कंठ झारिय उलटेकर ॥
कट्टि सु दक्खिन कुंडय[15] प्रखर[16] पैठो लागि पत्थर ॥
सिर१ रुंड२ उभय२संग्राम१८७१के गये अँरर[17]लागि बेग धुँरि[18] ॥
पहुँच्यो महीप अंगनअवधि जँहँ बीबिन किय प्रस्न जुरि॥२१॥
जबलग तिन जानी न सौधँ[19] हक्कहि केवल सुनि ॥
इम नृपसम्मुह आइ कूककारन पुच्छिय पुनि ॥
बदिय अप्प हनि बंधु मियाँ मोकँहँ अब मारत ॥
ढुंरिहों[20] जँहँ दाऊद२ रहैं बिनु मंतु[21] बिदारत ॥
उनकहिय गयो फजरहि वहै बहरी१ बाज२ सिकार बन ॥

१कन्धे को चखकर २श्याम ३बिजुली ४कटाहुआ ५बिना शिखावाला ७मानों ८कुम्हार ने ९तीखी तांत से ६घटको फिरतेहुए १०चाक से उतारा ॥१९॥११ शस्त्र १२ खोटे भाई संग्रामसिंह पर १३ क्रोध करके ॥ २० ॥ १४ इसकारण से. दाहिनी ओर की१५दीवार में१६तीक्ष्ण १७किवाड़ तक१८गुड़क (लुढक) कर ॥२१॥ १९महल में केवल हाका होना ही सुना२०छिपूंगा. बिना२१अपराध

रहि तू अरोहि अधिरोहिंनी बनत हर्म्य तँहँ भय अब न ।२२।
रवन१ अवन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

सुत१ नंत्ती२ लखि इतर सिसु, अधिप दया तिन्ह आनि ॥
हर्म्य नव्य जँहँ होतहो, पत्तो तँहँ असिपानि ॥ २३ ॥
जन्मदिवस महँ होत जँहँ, राजमहल नृपराम २०३ ॥
सौध वनितहो तास सिर, लघु तिनदिनन ललाम ॥ २४ ॥
तँहँचढि निश्रेनीहु तस, अँची उप्पर अप्प ॥
रुचिर गोख ठढोरह्यो, दलि कुलघातक दप्प ॥ २५ ॥
निजभट मुख्यमकोष्ठ नृप, वेग लये सब बुल्लि ॥
कह्यो विडारहुँ खलनकँहँ, खीजहि जिततित खुल्लि ॥ २६ ॥
अज्ज मिले नृपमें अखिल, मिच्छ२ रहे खिल मानि ॥
निखिल निकासे नैरतैं, तर्जन१ ताड़न२ तानि ॥ २७ ॥
पुरढिग भट चउसत४०० पिहितैं, आयो रक्खि अधीस ॥
आये ते मंडत अमर्ल, सेसन खंडत सीस ॥ २८ ॥
सिसु १ महिला२दिक सत्रुके, जन कढ्ढे बिनु जान ॥
भिल्ल१ जवन२ तँहँ दुव २ भये, सज्ज रचन घमसान ॥ २९ ॥

॥ पट्पात् ॥

महा धनुर्द्धर मिच्छ दास १ अरु डेल्ल २ भिल्ल दुव २ ॥
कर चउ४टंकँ कमान पिट्ठि द्वि २ कलाप धरैं ध्रुव ॥

---

१ चढकर २ नीसरनी पर ३ महल बनता है तहां ॥ २२ ॥ ४ पोता ५नवीन ६ हाथ में खड्ग लिये गया ॥ २३ ॥ जहां पर अब जन्म दिन का७उत्सव होता है८ हे राजा रामसिंह ९ शीघ्र १०सुन्दर ॥२४॥ ११अपने कुल को मारनेवाले का १२ दर्प ॥२५ ॥ १३ मिरे ड्योढी पर १४ निकालो ॥२६॥ १५ आर्यलोग सब राजा में मिलगये १६ नगर से ॥२७॥ १७ छिपाकर १८ अधिकार १९ बाकी के लोगों के ॥२८॥२०स्त्री आदि ॥२९॥ एक तो म्लेच्छ का चाकर और दूसरा २१ डालिया नामक भील २२चार टंक की कमान हाथ में लिये (कमान की ताकत का एक तोल है. पूर्ण ताकतवाली कमान १८ टंक की होती है) २३भाथा

बोध्यं[1] सु द्रुम चलं[2] १ बेधि अचल २ गुंजाहु[3] उतारत ॥
सद्द[4] ३ श्रवनअनुसार पंदर[5] तनु सार प्रहारत ॥
अंज[6] १ अद्ध १/२ दलित १/२ आढक[7] २ असन चित्त प्रसन मल्लन चहैं ॥
रहि इत्थं उमर परदेस रचि रित्थ[9] अमर लावत रहैं ॥ ३० ॥
मंडुवपति करि मिच्छ अग्घ १ आदर २ जिन्ह अप्पिय ॥
अरिगन पाहुन इंठ धिठ काहु न रन धप्पिय[10] ॥
पहिलैं इनहिं कुपाइ बैर अनुसरि कछु बोली ॥
मन असोक पामार बहैं साध्वस[11] बिंभोली ॥
मंडुवमहीस जिन्हकरि जवन बहुदिन रक्खि स्वपास[12] वलि ॥
दिय समरकंद १ संगहि दुसह बुंदिय दब्बन करन केलि[13] ॥३१॥

दोहा ॥

हसन १ चंदखाँ २ नामहुव, जिनके बिदित जिहान ॥
गो त्रिसहँस ३००० दल सोहु ग्रह, परखि जिन्हैं अतिमाँन[14] ।३२।
इहाँ समर १ रक्खे इतर, कति १ ते हनि २ कति १ कढ्ढि २ ॥
इम बुंदिय लिन्नी अधिप, द्विपंअरि[15] केहरि[16] दढ्ढि ॥ ३३ ॥
भिल्ल १ जवन २ तहँ द्वै २ हि भट, हुव नन निमकहराम ॥
निजग्रहतैं बुल्ल्यो[17] नृपहिं, निडर चंदखाँ १ नाम ॥ ३४ ॥

---

१ पीपल (यहां लक्षणा से पीपल का पत्ता जानना चाहिये) २ हिलते हुए निसाने में पीपल के पत्ते को और ठहरे हुए निसाने में ३ चिरमी को भी उतार देते हैं ४ शब्द सुनने के अनुसार ५ तीर से शरीर को बेधने का प्रहार करते हैं. आधा ६ बकरा और आधा ७ आढक (बत्तीस सेर का नाम द्रोण है और द्रोण के चतुर्थांश अर्थात् ८ सेर को आढक कहते हैं अर्थात् ४ सेर भोजन करते हैं) ८ यहां रह कर पर देश में लूट करके. कभी नहीं खूटे ऐसा ९धन लाते रहते हैं ॥३०॥ १० यहां उन धीठों को युद्ध में किसीने तृप्त नहीं किये. बीझोलियां का पति अशोक नामक प्रमार मन में ११ भय मानता है १२ अपने पास १३ युद्ध करने को ॥ ३१ ॥ १४ अत्यन्त बलवान् ॥३२॥ १५हाथी रूपी शत्रुओं को उस १६सिंह ने खाकर ॥३३॥ १७ बोला ।३४।

बुंदिय जो लिय भाग्यवल, तो झेलहु इक तीर ॥
निहचै हम मरिहैं नतो, वढ़न पिल्लहु वीर ॥ ३५ ॥
वचिजैहों इक १ वानतैं, तो हम आयुध तोरि ॥
व्है फकीर तुमरे रहहिं, जुग २ आश्रित करजोरि ॥ ३६ ॥
गोलीअंतरै ताहि गिनि, भूप कुतूहल भाइ ॥
वदिय खान इक १ वान तू, चंद १ हु लेहु चलाइ ॥३७॥

पट्पात्

चाप विसिख धरि चंद १ करखि कुंडलकिय आक्रमि ॥
लायो एडिय लपन नटी मानहु उलटी नमि ॥
कठिन तानि आकर्न तज्यो गोलिय इक १ अंतर ॥
कढि सु सव्य भुज १ कंख २ संधि पर थंभ लग्यो सर ॥
कछु ग्राव सकल जिहिं भिन्न किय सकलँ भये विस्मित स्वजन
वचिगो सु पिक्खि चंद१ हु वदिय पिक्खहु अव कमनैतपन।३८।
जोरि करन इम जंपि संधि धनुगुन द्वितीय २ सर ॥
गन छागिन वामगिरि तक्कि चउ ४ बुरज दुर्गतर ॥
मत्त छगल तिन्हमध्य इक्क १ सतिलक दगआवत ॥
प्रकर लंवि पल्लवन खरो दु २ पयन रहि खावत ॥
तस गोधि[2] तिलक कहि वेध्य तव विसिख विसिख दूजो२दयो
अंजलत कुलट महलनअवधि भुवप्रदेस आवतभयो ॥

मारने को वीर १ भेजो ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ २ बन्दूक की गोली के एक टप्पे पर (यहां तोड़ादार बन्दूक की गोली का टप्पा समझना चाहिये ॥३७॥ ३ विना चोटीवाले चांदखां नामक यवन ने धनुष को खींचकर कुण्डलाकार किया और एडी के समीप मुख लाया ४ कान तक ५ पत्थर का ६ टुकड़ा ७ सब ॥ ३८ ॥ बुन्दी के बाईं ओर के पर्वत पर चौबुरजे के नीचे ८ बकरियों का समूह चरताहुआ देखा. मस्त ९बकरा १० तिलकवाला. हाथों (अगले पैरों को लंबे करके ११ पत्तों को. उसके १२ललाट के तिलक को १३ निसाना कह कर. उस १४ यवन ने दूसरा १५बाण मारा. वह १६बकरा कुलांचें खाताहुआ १७भूमि पर

॥ दोहा ॥

इम सु मिच्छ वह मारि अज, अरज करतहुव एह ॥
बचि मोतैं प्रभु भाग्यबल, अब भुग्गहु भुव एह ॥ ४० ॥

॥ सौराष्ट्रीदोहा ॥

इमकहि दोउ २ न आइ, *हेतिनतोरि फकीरव्है ॥
प्रभुता नृपकी पाइ, आश्रय लिय जीवित अवधि ॥४१॥
नृप तिन दोउ२न नाम, चोकी धरिरक्खे अचल ॥
इक१ सिवदिस अभिराम, दूजी२ इत मंडूकदर ॥ ४२ ॥
इम बुंदिय अपनाइ, समरकंद१ मारयोसुनत ॥
सुत दाऊद२ रिसाइ, मृगयातजि आयो भरन ॥ ४३ ॥

षट्पात् ॥

इषुधि[3] पिट्ठि१ कटि२ उभय२ प्रगुन[4] दुव२ बाँजि दु[6]२पासन ॥
इम दु२ओर दुव२[7]आस सज्ज कर इक्क१ सरासन ॥
कटि जहरी आसि१ कदर२ बाज१ बहरी२ विहाइ बन ॥
पयचंपत जिम पुच्छ पलटि पन्नग फुलाइ फन ॥
आयो सु रहत त्रि३मुहूर्त अह बैरचहत अतिमद बहंत ॥
दृग कोप महत मानहु दहत कोन जनक[11]मारक कहत ॥ ४४ ॥

दोहा ॥

गोपुर जिततित रुद्ध[12] गिनि, सहहय[13] व्है गिरिसानु[14] ॥

॥ ३९ ॥ ४० ॥ * शस्त्रों को तोड़कर फकीर होकर १ जीवन पर्यंत ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ २ शिकार छोड़कर ॥४३॥ पीठ और कमर पर दो ३ भाथे और ५घोड़े के ६दोनों ओर ४ प्रकृष्ट गुण (विशिष्ट प्रत्यंचा) वाले दो ७ धनुष और हाथ में एक सजा हुआ (चढाहुआ) ८धनुष और कमर में विष के पानवाली जहरी तरर और छुरोंवाला बाज और बहरी (शिकारी पक्षि विशेष) को वन में छोडकर पैर से दबेहुए सर्प के समान फण को फुलाताहुआ छः घड़ी९दिन बाकी रहते बड़े कोप से जलताहुआ अत्यन्त मद को १० धारण करताहुआ मेरे ११ पिता को मारनेवाला कौन है ? यह कहताहुआ वह (दाऊद) पलटकर आया ॥४४॥ शहर के दरवाजों को सब ओर से१२बंद जान कर१३घोड़े सहित१४पर्वतके शिखर

उत्तरि पुर ढिगगो सु इम, भिंटन हड्डनभानु ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

निकट चतुर्भुजनाथ सदन जँहँ अब *शृंगाटक ॥
आवत तँहँ अटक्यो सु छोहउद्धत मदके छक ॥
भट **रोधक चउ४ भंजि लांघि गोल्हाबापी लग ॥
आत कहाई अधिप मरहु अबही न लेहु मग ॥
मंडुव पुकारि लै दल महत पुहवि लेहु पुनि हमहिँ हनि ॥
दाऊद२वदियजत्थसु***जनक१तत्थहिसुत२करत०यतनि ।४६।
काहू भट इमकहत तुपक झारिय छन्नैं तकि ॥
सिर गोलिय लगि दुसह छोनि हयतैं सु परयो छकि ॥
जँहँ मारे चउ४ जोध घाय खट६ तँहँ लग्गे घट ॥
बलि सिर गोलिय विद्ध भुव सु परि तदपि उट्ठि भट ॥
असिकढि आत तोरनअवधि उज्झि परयो दाऊदअर२सु ॥
किय तुपकघात ताकँहँ तरजि पहु निंयो बहु अक्खि पसु ।४७।
अच्युत चउभुज अग्ग कवर तिन दुहुन कहावत ॥
समरकंद१ दक्खिन१ सु उदग२ दाऊद२ गोरगत ॥
समरकंद१ सुंदरिय२ नाम निज करन धाम जुत ॥
विरच्यो बावनवाइ१ जारि निर्बसथ बापी२जुत ॥
इत लहि गई सु पच्छी अवनि राजमहल संसदं विराचि ।
पहिलैं सु पट्टबैठो सुपहु मैंह१तूँर२न अभिसेक मचि ॥ ४८ ॥
सत्रह१७ समैं नृपसीस सौध जिहिँ हुव अभिसेचनं ॥

पर होकर ॥ ४५ ॥ जहां अब *चौहट्टा बजार (चौराहा) है, **रोकनेवाले चार वीरों को मारकर जहां***पिता मारागया है तहां पर ही ॥ ४६ ॥ महलों के बाहिर के १ दरवाजे तक २ छोडकर ३ प्राण ॥ ४७ ॥५चतुर्भुज४विष्णु भगवान् के आगे ६ उत्तर दिशा में ७ कबर में गया ८ ग्राम ९ बावडी सहित १० सभा ११ उत्सव १२ नगारे बजवाकर ॥ ४८ ॥ सत्रह १३ वर्ष की अवस्था में. जिस १४महल में १५ अभिषेक हुआ

तबतैं नृप तँहँ करत पर्व हायन दल पूजन ॥
उम्मेद१९८१५हु अभिसिक्त तत्थ प्रभुके प्रपितामह ॥
भद्रासन तँहँ भजत अप्प इम अब्दगंठि अह ॥
ढुरवाइचमर१ तँहँ छत्र२धरि पुर फेरिय निजआन पहु ॥
संग्राम१८७११कट्टि पैठो जु सिल आसि तस ठहै अर्चन अबहु ।४९।

दोहा ॥

जननीजुग२ अनुजातजुत२, परिजन१ सचिवउपेत ॥
बुंदीपुर दुबलानतैं, बुल्ले सब समवेत ॥ ५० ॥
नारायन१८७११तैं नरबद१८७१२ सु, जुग२हायन लघुजात ॥
नरबद१८७१२तैं नरसिंह१८७१३लघु, अंतर बरस छ६आत ॥५१॥
नृप१ नरबद२ सोदर स्वसा, कन्या मदनकुमारि१८७११ ॥
सो लघुबय नरसिंह१८७१३तैं, पंच५ समा बिच पारि ॥ ५२ ॥
बलि अवसर नृप ब्याहिहै, याकौं गढ सुभियान ॥
निरखि भामता उचित नृप, कर्मध्वज कल्यान १॥ ५३ ॥
निज इम राज्य जमाइ नृप, स्वजन गये परसीम ॥
जे सब बुल्ले प्रीतिजुत, भासि अरातिन भीम ॥ ५४ ॥
रायमल्ल १ इत रान मृत, सुत नृप हुव संग्राम ॥
पट्ट बग्घ१को जोधपुर, लिय सुत गंग २ ललाम ॥५५॥

वर्ष भर में १दो बार पूजन होता है. उम्मेदसिंह का२आभषेक वहीं कियागया ३ रावराजा रामसिंह के प्रपितामह. आप सिंहासन पर४बैठते ही५वर्षगांठ के दिन. संग्रामसिंह को काटकर जो खड्ग ६ पत्थर में घुसा उसका अब भी७पूजन होता है ॥४९॥ दोनों८छोटे भाई९शामिल ॥५०॥ १०वर्ष ॥५१॥ ११ बहिन १२ वर्ष ॥ ५२ ॥ १३ बहिनोईपन के उचित १४ राठोड़ ॥ ५३ ॥ १५ शत्रुओं को भयंकर दीखकर ॥ ५४ ॥ १६ गांगा* ॥ ५५ ॥

---

*सं१५४४में नारायणदास का बूंदी की गद्दी पर बैठना लिखकर। चित्तोड़-पर महाराणा सांगा, जोधपुर पर राव गांगा और आमेर पर राजा भगवंतदास का उसी समय में गद्दी बैठना लिखा सो ठीक नहीं है क्यों कि इन राजाओं के गद्दी बैठने के सम्वतों में जो कुछ अंतर है वह निम्न लिखित लेख से स्पष्ट सिद्ध है और ये संवत् अपने अपने राज्यों के इतिहासों से स्पष्ट कियेहुए हैं जिनमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है

भारमल्ल १ भूपालके, अंगज इत भगवंत २ ॥
पट्ट लहिय आमेरपुर, अवसर स्वजनक अंत ॥ ५६ ॥

इतिश्रीवंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानवेलाव्याहार्यबुन्दीनरेन्द्रहड्डाधिराजनारायणदास१८७।१ चरित्रे मार्गश्रुतपितृद्वय २ निपातसत्वरप्रतिनिवृत्तदुर्बलानप्रत्यागतविख्यापितस्वयङ्गर्हितस्वपक्षसापराधत्वसाधितपितृ१ पितृव्यौर२ ध्र्वदैहिकमनोनिगूढमन्तव्यबहिर्दर्शितयवनानुकूल्यकृतकप्रेममातृभावमतसमागतयवनयोषित्कनारायणदास १८७।१ पितृपट्टप्रापणं १, स्वस्त्रीकृतश्लाघास्निग्धसमरकन्द१ समाहूतबुन्द्यागतसूचितस्वाऽसहनस्वामित्वप्रह्वताप्रगुणसंसत्सम्मिलितोपविष्ट - नारायण १८७।१ सपत्नीकसपत्नप्रसादग्रामद्वादशक १२ पुनःप्रापणं २, स्वसद्मायातनिजमातुलपुत्राऽग्रम्लेच्छमारणमनोमतप्रका

॥५६॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी नरेन्द्र हड्डाधिराज नारायणदास के चरित्र में मार्ग में काका और पिता दोनों का माराजाना सुनकर शीघ्र पीछा फिरकर दुबलान पुर में आकर उनकी स्वयं निन्दा करके अपने पक्ष को अपराधवाला विख्यात करके पिता और काका की और्ध्वदैहिक क्रिया करके अपराध को अपने मन में छिपाकर बाहिर यवन से अनुकूलपन दिखाकर घर पर आईहुई यवन स्त्री के साथ बनावटी प्रेम से माता भाव दिखाकर नारायणदास का पिता के पाट को प्राप्त करना; अपनी स्त्री की कीहुई प्रशंसा से स्निग्ध समरकन्द के बुलाने पर बुन्दी में आकर जनाई हुई अपनी असह स्वामिभक्ति और नम्रता के विशेष गुण से सभा में शामिल बैठकर नारायणदास का स्त्री सहित शत्रु की प्रसन्नता से बारह गामों को फिर प्राप्त कर

महाराणा सांगा विक्रमी संवत् १५६५ में चित्तोड़ की गद्दी पर बैठे हैं; रावगांगा सं१५७२में जोधपुर की गद्दी पर बैठे हैं; आमेर के राजा भगवंतदास संवत्१६३०में जयपुर के राज्यासन पर बैठे हैं इसकारण उपरोक्त तीनों राजाओं की और बुन्दीके राव नारायणदास की गद्दीनशीनी एक ही समय में नहीं बनसकती

शलप्रतीपचालुक्यव्याघ्रदेव १ कार्याऽवधितन्त्रमूकीभावोपदेशन ३, मासदशका १० नन्तरसहायसार्थीकृतसमाहूतव्याघ्रदेवा१ दिविश्व स्तबन्धुसप्तक ७गोपुरसमीपगूढस्थापितस्वभटचतुःशतक ४०० बुन्द्या ऽऽगतनरेन्द्रनारायणदास १८७१स्वल्पसार्थसंसत्स्वास्थ्यसमुपविष्ट पक्षिमधनप्रेक्षमाणयवनसमरकन्द १ संहरण ४, दाऊद २ गवे षमाणराजसौधश्रेढीसमारूढगतपृष्ठागतमिमारयिषुबान्धवाधमस- ङ्ग्रामकन्धरनृपखड्गदक्षिणकुडयप्रस्तरप्रभेदन ५, परिपन्थिपत्नी पृच्छाप्रतीतमृगव्यगतदाऊद२ दयोज्झितशत्रुशिशुवर्गसमारूढनव्य निर्मीयमाणहर्म्यमूर्द्धभूमसमाकृष्टनिःश्रेणीकबुन्दीशसमाहूतस्वसु भटसङ्घसन्त्रस्तपरपक्षिजननिष्कासन ६, पुरप्रविष्टगोपुरबाहिर्वर्ति शूरशतचतुष्क ४०० नृपाज्ञाप्रवर्तनपुरस्सरम्लेच्छमतमात्रनिःसा रणसमयशबरपूर्वयवनबन्धुद्वय २ मुमूर्षण७, मराडूपतियवनीकृतद त्तादरसामन्तभावविरोधविक्षोभितविन्ध्यावलीप्रमारमहाधनुर्द्धरब हुधाविप्लुतपरप्रान्तसमरकन्द १ सहायबुन्दीवास्तव्यमृधमुमूर्षुहस-

ना, अपने घर पर आयेहुए अपने मामा के पुत्र के आगे म्लेच्छ को मारने का विचार प्रकाश करने के विरुद्ध सोलंखी व्याघ्रदेव का कार्य करने की अवधि पर्यन्त सलाह को गुप्त रखने का उपदेश देना, दश मास के पीछे सहाय के लिये बुलायेहुए व्याघ्रदेव आदि विश्वासवाले सात बान्धवों को साथ लेकर शहर के दरवाजे पर अपने चार सौ वीरों को गुप्त रखकर बुन्दी में आयेहुए राजा नारायणदास का अपने अल्प साथ के साथ सभा में स्वस्थता पूर्वक बैठकर पक्षियों के युद्ध को देखनेवाले यवन समरकन्द को मारना, दाऊद को हेरने के लिये राजमहल की सीढी पर चढेहुए पीठ लगेहुए को मारने की इच्छावाले अधम बान्धव संग्रामसिंह के गले को और दक्षिण दीवार के पत्थर को राजा के खड्ग का काटना, शत्रु की स्त्री से पूछने पर दाऊद के शिकार जाने की प्रतीति होने पर दया से शत्रु के बालकों को छोडकर नवीन बनतेहुए महल पर चढकर निसरणी को ऊपर की छत पर खींचकर बुन्दीश का अपने सुभटों के समूह को बुलाकर डरेहुए शत्रु के पक्ष के लोगों को निकालना, पुर में प्रवेश करके शहर के दरवाजे से बाहिरवाले चार सौ वीरों का राजा की आज्ञा प्रवृत्त करने से पहिले म्लेच्छ मत के सम्पूर्ण लोगों को निकालने के समय पहिले के भील

न १ चन्द २ यवनयुग २ स्वैकाऽऽशुगशरव्यताशौभारिड १८७१ स्वीकारण ८, ज्ञातनृपकक्षासन्धिनिःसृतच्युतस्वसहायक १ द्वितीय२मदरविदसव्यसानुमच्छिखरचरन्मञ्जागणमध्यस्थवर्करगोधितिलकचन्दस्वधानुष्कताविख्यापन ९, नरेन्द्रत्रोटितशस्त्रकाषायवस्त्रस्वशरणागतयवनयुग २ तन्नामनिर्मितसूचितस्थानस्थापन १०, श्रुतजनकमारणोत्पथागतनिपातितभटचतुष्कमहामनोदावूद २ राज्यस्थानतोरणातनुत्यजन ११, यवनयुग २ निखातपातनसूचनासहितयवनीनिवासितवापीविशिष्टग्रामविशेषविख्यापन १२, राजसौधविहितसमाजसमभिषिक्तसमाहूतस्वजननारायणदास १८७१ यथापूर्वबुंदीराज्यसमाचरण १३, प्रतिवर्षसमाप्तितद्वंश्यतत्सौऽधाभिषेचनसूचना१सहितनृपखड्गप्रभिन्नप्रस्तरपूजनरूढिप्रज्ञापन२पुरःसरनृपा१दिभ्रात३भगिनी१चतुष्क ४ व

यवनक दो बंधुओं का मरनेकी इच्छा करना,मण्डूपतिके यवन कियेहुए और आदर सहित उमरावपन दियेहुए विरोध से बीजोलियांके प्रमार को क्षोभ देनेवाले महाधनुर्द्धर बहुत करके शत्रुओं के देश को लूटनेवाले समरकन्दकी सहायता पर बुन्दी में रहनेवाले और युद्ध में मरने की इच्छावाले सहन और चांदखां नाम दो यवनों का अपने एक बाण से निशाना मारने का सुभाण्डदेव के पुत्र नारायणदास को स्वीकार कराना, राजा की कांख की संधि में से बाण का निकलजाना जानकर अपने सहायक दूसरे बाण से बाएं हाथ के पर्वत के शिखर पर बकरियों के मध्य में चरतेहुए बकरे के ललाट के तिलक में चांदखां का अपनी धनुर्विद्या को प्रसिद्ध करना, शस्त्रों को तोड़कर भगवां वस्त्र पहनकर अपने शरण आयेहुए दोनों यवनों को राजा का उनके नाम से सूचना कियाहुआ स्थान बनाकर उस स्थान में स्थापन करना, पिता का मारना सुन उलटे मार्ग(कुपरवाड़े)से आ चार वीरों को मारकर बड़े मनवाले दाऊद का महलों के बाहिर के द्वार पर शरीर छोड़ना, दोनों यवनों को कबर में गाडने की सूचना सहित यवन की स्त्री के बसायेहुए बावड़ी सहित ग्राम विशेष के बसाने की प्रसिद्धि करना, राजमहल में कीहुई सभा के लोगों से अभिषेक कियेहुए नारायणदास का अपने लोगों को बुलाकर पहिले के समान बुन्दी का राज्य करना, प्रति वर्ष की समाप्ति (वर्षगांठ) पर उसके वंशवालों की उस महल में अभिषेक

षान्तरविवेचन १४, शीर्षोद्दसंग्राम १ कबन्धगङ्ग २कूर्मभगवत्तिंसह ३ नृपत्नय ३ स्वस्वपितृपट्टप्रापणां १५ त्रयोविंशो२३ मयूखः ॥२३॥

आदितः सप्तत्युत्तरैकशततमः ॥१७० ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप बरसिंह१८४१ अनेहँ लौं, अक्खे दिल्लिय ईस ॥
भये बहुरि अब भाखियत, साह अजसुव सीस ॥ १ ॥

षट्पात् ॥

मुगल अग्ग तैमूर २२ प्रतपि दिल्लिय दिन पन्द्रह १५ ॥
श्रुति सर चउ ससि१४५४साक सदनँ पुनि गो सु बिजयसह॥
प्रतिमाजिम आइ पुर साह महमूद २१ रह्यो सिटि ॥
बिभव खानइकबाल गंजि जिम कवल लयो गिटि ॥
तनुतजिय साह महमूद२०तब बिनु रोधक सठ अभय बाहि ॥
इकबालखान स्वच्छंद इम लग्गो रहन अभीष्ट लाहि ॥ २ ॥

दोहा ॥

किते सिकंदरनाम करि, कहत साह याकौंहु ॥
बदत किते गद्दी बिनाँ, अधिप होत कहुँ यौंहु ॥ ३ ॥
हाकिम जिम अप्पन हुकम, इम दिल्लिय सुनि याहि ॥
खिजरखान२३ तस सीस खिजि, आयो हनन उमाहि ॥ ४ ॥

षट्पात् ॥

होने की सूचना सहित राजा के खड्ग से कटेहुए पत्थर के पूजन की रूढि की सूचना के आगे राजा आदि तीन भाई और एक बहिन चारों के वर्षों के अन्तर का विवेचन करना, शीशोदिया संग्रामसिंह, राठोड़ गांगा, कछवाहा भगवन्तसिंह इन तीनों राजाओं का अपने अपने पिता के पाट पाने का २३ वां मयूख समाप्त हुआ ॥ २३ ॥ और आदि से १७० मयूख हुए ॥

१ समय से २ आर्यावर्त पर ॥ १ ॥ ३ घर (ईरान) ४ मूर्ति के समान ५ इकबालखां ६ ग्रास के समान ७ निगल गया ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

सूबापति सय्यद जु हुतो मुलतान रेट्ट हद ॥
सुलैमानसुत सज्जि सजव आयो सु दुरासद ॥
बदत हनन१ इकबाल कतिक कीलन २ भज्जन३ कति ॥
पै दिल्लिय जयपाइ भवलहुव खिजर२३ पट्ट पति ॥
वीरत्व१ दया२ सहनां३दि वहु पावत गुन जाके प्रचुर ॥
वह खिजरखान२३हुव साह इम धरि दिल्लिय भुवभार धुर ॥ ५ ॥

गिर्वाणभाषा ॥ पथ्यावक्त्रमनुष्टुप् ॥

तवारीखफिरस्ता१दिम्लेच्छितेभ्यो विनिश्चितम् ॥
तथाऽकबरनामा२दियवनानीभ्य उद्धृतम् ॥ ६ ॥
दिल्लीशानां प्रतिग्रन्थमायाति महदन्तरम् ॥
अद्भुतं यन्मतैक्ये१ऽपि गीरैक्ये२ऽप्युरुधा लिपिः ॥ ७ ॥
प्रभूतमतमासाद्य दिल्लीराड्यवनावली ॥
उद्देशेनोदिताप्याहो द्वापरालम्बनं कंचित् ॥ ८ ॥
इंग्रेजैर्निश्चितापीयं संशेते ह्यन्तरान्तरा ॥
सर्वेषां स्वस्ववृत्तान्ते वास्तवी स्याद्विवेचना ॥ ९ ॥
इंग्रेजैर्वृत्तमार्याणामार्यावर्तनिवासिनाम् ॥

मुलतान१देश की सीमा में. कितने ही २ कैद करना कहते हैं और कितने ही भगना कहते हैं ३सहनशीलता आदि ४अत्यन्त ॥५॥ मैंने "तवारीख फिरस्ता" आदि म्लेच्छों के ग्रंथों से निश्चय किया है; तैसे ही 'अकबरनामा' आदि जो यवनों की भाषा में ग्रंथ हैं उनसे भी लिया है ॥ ६ ॥ दिल्ली के बादशाहों के हरएक ग्रन्थ में बड़ा अन्तर (फर्क) आता है, यह आश्चर्य है कि एक मत और एक भाषा होने पर भी नाना प्रकार का लेख है ॥ ७ ॥ बहुतों की सम्मति लेकर मैंने निर्णय के साथ दिल्ली के यवन बादशाहों की पीढियों का निर्णय किया है, तो भी आश्चर्य है कि कहीं सन्देह ही है ॥ ८ ॥ अङ्गरेजों ने यवन वंशावली का निश्चय किया है तो भी बीच बीच में सन्देह ही है. अप ने अपने वृत्तान्तों में सब की खोज सत्य होती है ॥ ९ ॥ जैसे-अङ्गरेजों ने आर्यावर्त (भारत वर्ष) के रहनेवाले आर्य लोगों का वृत्तान्त राजाओं की पीढियों के साथ निर्णय करके लिखा है परन्तु उसमें भी बहुत से वृत्तान्त

सराजावलि निर्णीतं याथातथ्यच्युतं बहु ॥ १० ॥
तथैव यवनोद्देशे सन्देग्धि स्वीकृतौ मनः ॥
आर्यवृत्ताद्दतत्वं स्यात्तत्र सामीप्यतोऽधिकम् ॥ ११ ॥
तथापीङ्गजलोकैर्या निर्णीता यवनाऽऽवली ॥
तेषां धीमत्त्वमान्यत्वादुग्राह्याबहुमता हि सा ॥१२॥
यावनीगी१र्लिवि२ग्रन्थेषूक्तेषु यवनैरपि ॥
दिल्लीभुङ्म्लेच्छवृत्ता१ऽऽख्या२सङ्ख्या३सु न सदृक्क्रमः ।१३।
केचिन्निगडितं १ केचिद्धतं २ केचित्पलायितम् ३ ॥
दिल्लीशं ४ मन्वते केचित्त्रयोविंशं २३ सिकन्दरम् ॥१४॥
नैवात्र ब्रुवतेऽन्ये तु समूलं हि सिकन्दरम् ॥
नापीङ्ग्रेजैर्मतोऽत्रासौ महमूदा२१त्सिकन्दरः ॥ १५ ॥
वृत्तान्त १ नाम २ सङ्ख्या३दि यद्यथाभूत्तथास्तु तत् ॥
ख्यापितं मतबाहुल्यं पक्षोऽस्माकं न कुत्रचित् ॥ १६ ॥
बहुभिः खिजरः२३प्रोक्तो महमूदा२१दनन्तरम् ॥

यथार्थ नहीं हैं ॥१०॥ तैसे ही यवनों का क्रम मानने में भी मन को सन्देह होता है, तहां पर आर्यों के वृत्तान्तों से अधिक सत्यता होती है; क्योंकि आर्यों का वृत्तान्त यवनों के वृत्तान्त से अधिक समीप है ॥ ११ ॥ तो भी अङ्गरेजों ने जिस यवन वंशावली का निर्णय किया है, अङ्गरेजों की बुद्धिमानी के कारण वह बहुमान्य है इससे, उसीको मानना चाहिये ॥ १२ ॥ यवनों की भाषा में और यवनों की लिपि में यवनों के बनायेहुए ग्रन्थ हैं तो भी उनमें दिल्ली को भोगनेवाले म्लेच्छों के वृत्तान्त, नाम और संख्या में एक सा क्रम नहीं है ॥ १३॥ सिकन्दर को कितने ही तो कैद हुआ मानते हैं कितने ही मरा मानते हैं, कितने ही भगाहुआ मानते हैं और कितने ही दिल्ली का २३ वां पादशाह मानते हैं ॥ १४ ॥ और अन्य लोग तो सिकन्दर का होना समूल ही नहीं कहते; अङ्गरेजों ने भी महमूद के पीछे सिकन्दर को नहीं माना है ॥ १५ ॥ इनके वृत्तांत, नाम और गिनती आदि जो जैसा हुआ है वह वैसा रहै हमने केवल मतभेद कह दिया है. हमारा पक्ष किसीमें नहीं है ॥ १६ ॥ बहुत लोगों ने महमूद के पीछे खिजर को कहा है, तिस कारण से २३ वीं संख्या खिजर

तत्त्रयोविंश२३ता नीता खिजरं२३ न सिकन्दरम्॥१७॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥
॥ वेतनामयावनीवृत्तम् ॥

भयेनाँ सिकंदर१किते यौं भनैं,हन्यौं२के भज्यो३केगह्यो४के*मनैं।
भनी जो रहो वात क्योंहूभई,खिजरखान२३÷पैं पातसाही लई॥१८॥
पहै नीति १ईमान २ नेकी३ भर्यो, विनाँ कंत दिल्ली सुनेता वर्यो॥
पहै दूरदर्सी सवरं आनिकैं,रह्यो साहरुख १कौं जवर जानिकैं॥१९॥
तने साहरुख१नाम तैमूर२२को, दमैं मत्त जाकौं गिनैं दूर को ॥
करैं पातसाही अटक्क पार जो, हरैं सत्रुहू जंग हुसियार जो॥२०॥
खिजर२३संक ताकी गिनी खाँमसौं,न सिक्का चलायो स्वयं नामसौं॥
सदा साहरुख१दास हम यौं कहैं,मिलैं नोकरी सोहि करते रहैं॥२१॥

॥ दोहा ॥

नियत साहरुख १ नामको, रुप्पय सिक्का रक्खि ॥
उर१ स्वतन्त्र२ वाहिर१ अनुग२, अप्पहिं तस वस अक्खि॥२२॥
वनत साह दिल्लिय विभव, पुरजन १ सुभट २ प्रधान ३ ॥
आनैं नन मन ईरखा, जिम किय खिजर२३ सुजान ॥ २३ ॥

॥ युग्मम् ॥

उपदा पुनिपुनि भेजि इहिं, पाइ साहरुख १ प्रीति ॥
मोहितकरि निजजनन मन, रचिय राज्य नयरीति ॥ २४ ॥
कैर न प्रजासन लिय कठिन, उत सव करि आवाद ॥
रीति विमुख सासक रह्यो, मेटत नरन प्रमाद ॥२५॥
वेरिसल्ल १८५१ बुंदीसके, समय हुतो यह साह ॥
ताहीछत गय छोरि तनु[11], लहि उदर्क[12] अयं[13] लाह ॥ २६ ॥

की है सिकन्दर की नहीं ॥१७॥*मानते हैं ÷परन्तु॥१८॥१पत्ति २ श्रेष्ठ हुकूमत करनेवाला ३ सन्तोष ॥ १९ ॥ मस्तों को ४ दण्ड देता है ५ कौन ६ सावधान ॥ २० ॥ ७ कचाई से ॥ २१ ॥ ८ सेवक ॥२२॥ २३ ॥ ९नजराना ॥ २४॥ १० इंसिल ॥ २५॥ ११ शरीर १२ आनेवाले समय के १३ शुभ कर्म फल का लाभ लेने को, अर्थात् यह बादशाह नेक था इस कारण स्वर्ग भोगने का लाभ लें

सक हय मुनि चउ ससि१४७७समय, खिजरखान२३बपु खोइ॥
पावत गति *अर्जित प्रजा, रहिय हारि सब रोइ ॥ २७ ॥

॥ षट्पात् ॥

साह मुबारिक २४ खिजर२३सूनु हुव स्वभुव दुक्खहरि ॥
जग जिहिं मोजुद्दीन २४ कहत दूजी २ अभिधा करि ॥
सुघर यहहु सुलतान भयउ रन परन भयंकर ॥
जनकसौँहु बढि जास बिदित फैलिय जस बिस्तर ॥
ससि अंक बेद भू१४९१मान सक स्व सचिव निमकहराम सठ ॥
मारयो जु साह चाहत मुलक होतहि पापिन पाप हठ ॥२८॥

दोहा ॥

पहिलेबरस सुभांड १८६।५पहु, छितियभयो धरि छत्र ॥
बरस द्वितीय२ मुबारिक२४ सु, पत्तो अनसु परत्र ॥ २९ ॥
दया१ छमा२ रु बदान्यता३, रनपाटव४ बीरत्व५ ॥
नयपटुता६ इतिमुख गुनन, तक्यो मुबारिक२४ तत्व ॥ ३० ॥
बल१ सूबा२पति जे बिमुख, तिनहु लह्यो तस त्रास ॥
बहु बिमुखहु नृप पहु स्वबस, किन्ने स्वजय प्रकास ॥ ३१ ॥
पगधारि अग्ग पितासौँ, सबन दयो सुख साह ॥
रोइ प्रजा ताके मरत, इम किय सोक अथाह ॥ ३२ ॥

षट्पात् ॥

साह मुबारिक२४ सूनु मीरहुव खानमुहुम्मद२५ ॥
सो इहिं हनिय समर्थ बप्पमारक मंत्री बद ॥

ने के लिये शरीर छोड़ा ॥ २६ ॥ * जैसा संचय किया था तैसी गति पाने के लिये ॥ २७ ॥ दूसरे १ नाम से २ विस्तार ॥२८॥ ३ बिना प्राण होकर ४ परलोक गया ॥ २९ ॥ ५ अधिक उदारता ६ युद्ध की चतुरता ७ नीति की चतुराई ८ इत्यादि ॥३०॥ ३१ ॥ ३२॥ ९ पिता के मारनेवाले बुरे मन्त्री को

इक लोदी अफगान इमहि बहलोल१नाम इत ॥
हुवसु साह लाहोर देस पंजाव *बलोदित ॥
सरहिंदमुलक याको वतन सो पठान यह इहिंसमय ॥
वलपाइ साह लग्गो वजन अटक१सत्तद्रू२बिच अभय ॥३३॥

दोहा ॥

तजिय मुहम्मदसाह२५ तनु, मही ख तिथि१५०१ सक मान ॥
तनय अलावुद्दीन२६ तस, स्वपुर भयो सुलतान ॥ ३४ ॥
रचिय अलावुद्दीन२६ इहिं, नगर बदाऊँ१ नाम ॥
वरस पंच५ दिल्ली सु वसि, धर्षित गय तिहिं धाम ॥ ३५ ॥

षट्पात् ॥

सक रस नभ तिथि१५०६ समय बीर लोदी बहलोल सु ॥
हंकिय तजि लाहोर वंटि वीरन अभीष्ट वसु ॥
अतिजव दिल्लिय आइ गंजि सय्यद लिय गाद्दिय ॥
दुमन अलावुद्दीन२६ कड्ढि खिल सब अधीन किय ॥
निज रचित बदाऊँ१ नवनगर रह्यो सु सय्यद२६ आमरन ॥
बहलोल२८साह दिल्लीसवनि कज्ज दुकर लग्गो करन ॥३६॥
जोनपुर२हु जिहिं जित्ति कियउ निजतंत्र फतैकरि ॥
सरित अटक१ सन सीम वंग२ जनपद लग विस्तरि ॥
अर्ज्ज१ जवन२ नृप ओर निखिल पयलाइ नमाये ॥
मालव१ गुज्जर२ मीर द्वै२ हि प्रतिभट दरसाये ॥
जे बढिग अग्गहीसों जबर पातसाह वज्जत प्रबल ॥
उनतैं उदीचिदिस जो अवनि तिंहिं लोदी लिय अप्पतल ॥३७॥

---

*बल से उदय पाया हुआ; अथवा सेना से प्रकाशित ॥३३॥३४॥
१धमकाया हुआ(डरकर) ॥३५॥ वांछित२धन देकर३मरण पर्यंत ४दुष्कर(कठिनतासे बनै ऐसा)कार्य करने लगा॥३६॥-अटक नदी५से६बंगाला७देश, तक८आर्य ९मुकाबिला करनेवाले(शत्रु)१०उत्तर दिशा की भूमि को११अपने नीचे ली॥३७॥

दोहा ॥

तनु सुभांड१८६१४ नृप जब तजिय, वाहि बरस अफगान ॥
तजिय साह बहलोल२७ तनु, नियति उदर्क[1] निदान ॥ ३८ ॥
बेद बेद तिथि१५४४ सक बरस, दिल्लिय इम उद्दाम[2] ॥
साहभयो बहलोल२७ सुत, निपुन सिकंदर२८ नाम ॥ ३९ ॥
अभिधाकरि[3] महमूद२८ इत, जो अहमदकुल जात[4] ॥
पुर अहमद आबाद१ पहु, गज्जैं धर गुजरात ॥ ४० ॥
बाजबहादुर सुत बिदित, दृढ इत मंडुव[5] दंग[6] ॥
नाम मुदाफर जो निडर प्रतपैं स्वबल प्रसंग ॥ ४१ ॥

पादाकुलकम् ॥

धीरसाह बहलोल २७ पट्टधर, सासन दिल्लिय करत सिकंदर२८॥
याहिअनेहँ[6]नृपतिनारायन१८८।१,हन्यों समरकंद१सुजिहिँहायन[7] ४२
मनकिय तबहि बिचार नीतिमत, करहिँ पुकार सत्रुजन कुक्कत॥
पृतना[8] जो पिल्लहिँ[9] मंडूपति, समर दुरघा नबनैं तब संगति ॥४३॥
यातैं जाइ करहिँ आराधन, मुरहिँ कदापि मुदाफरको मन ॥
मुरहिँजो न तो तँहँ तिहिं मारौं,निखिल[11] सल्य[12] मैं मारिहु निकारौं॥४४॥
द्वैरहीओर मरन जब दीसैं, जो को रिपुहिँ तजैं तब जीसैं ॥
करत सहाय न साह सिकंदर२८, दौउरन इन्हैं प्रत्युत[13] मन्नैं दर[13]॥४५॥
इमबिचारि परिकर[15]१अनुजात[16]२न,गदियँ[17] अभीष्ट कबहु थिर गात[18] न
सब तुमबुंध[19]अवसरपराहितसह,मदनकुमारि१८७।२बिबाहहुअतिमह[20]
आयुसेस जो तो ध्रुव ऐहौं, जोधनैं[21] पै न संग लैजैहौं ॥

---

१ आनेवाले समय के भाग्य फल भोगने के कारण ॥ ३८ ॥ २निरंकुश ॥ ३९ ॥ ३ नाम से ४ उत्पन्न ॥ ४० ॥ मख्डू ५ पुर में ॥ ४१ ॥ इसी ६ समय में ७ वर्ष ॥ ४२ ॥ ८ सेना ९ भेजेगा ॥ ४३ ॥१०सेवन ११सब का १२ साल ॥ ४४ ॥ १३ उलटा १४ भय ॥ ४५ ॥ १५ परगह १६छोटे भाइयोंको १७कहा १८ शरीर स्थिर नहीं है १९पण्डित. अत्यन्त २० उत्सव से ।४६।परंतु २१ वीरों को

इक्कल१जावन भटन अटकिय,सादी सत१००तव हठन सत्थलिय।४७।
मंडूपुर इम पत्त महीपति, पठई नम्र साहप्रति विन्नति ॥
जवनराज संवाहक[2] इकजन, धीसख[3] किय ताकों कछु दै धन ।४८।
ताके कर पहुँची सु अरज तँहँ; कहिय मुदाफर बंचि अनुगकँहँ[4] ॥
वदहुतासअासय१वल२विक्रम३, समुचितअनुगकहेतवमनसम।४९।
जवहो करत मुदाफर भोजन, बुल्ल्यो तवहि असस्त्र धराधन[5] ॥
पिहित[6] इक्क१छुरिका[7] धरि भूपति, मंडूपति ढिग पत्त[8] महामति ॥५०॥
दै उपहार[9] पुरटमुंद्रा[10] दस१०, तिम सक्किय करतव्य उचित तस ॥
भनिय साहस्यों हमहिं भुल्लि मनि,हमरो समरकंद१डार्यो हनि।५१।
वदिय नृपहु पंहु हमहु विपन्नहु[11], मन१वच२काय३रावरे मन्नहु ॥
परैं काम तँहँ मरन पठावहु, लहि जय दुलभ महर इत लावहु ।५२।
समरकंद१मम जनक हन्यों सठ,हन्यों[12] कुंइक काका२हु छद्म[13] हठ॥
वाहुजकुल[14] यहरीति रही वनि,हनैं जनक तिहिं लघुहु[15] रहैं हनि॥५३॥
कुल कुपुत्र नहनैं सु कहावत, गतपुरुखन अघ१गारि२गहावत ॥
जाति अंगुलिन ताहि जतावैं,पुनि समकुल[16] न सुता[17] परिनावैं ॥५४॥
ताहि न देत अंग संगहु तिय[18], जंपि वंभ्र[19] जननीहु जरैं जिय ॥
यातैं समरकंद१मारयो अरि, पुत्र२[20]तदीय मर्यो चहि हठ परि॥५५॥
इच्छित व्है सु करहु हजरत अव, सासनवस[21] हाजरि हहैं सव ॥
वंदिय साह मम जनक हनैं विनु,वदि तू सुत किम तैंस परनैं[22] विनु।५६।

साथ नहीं लेजाऊंगा १ सवार ॥ ४७ ॥ २ अंग मर्दन करनेवाले को ३ मन्त्री किया ॥ ४८ ॥ ४सेवक को ॥ ४९ ॥ ५राजा को६छिपी हुई ७ छुरी ८ गया ॥ ५० ॥ ९ नजराना १० सोने की मुहरें ॥ ५१ ॥ ११ विपद्ग्रस्त ॥ ५२॥ १२ जालसाज ने १३ छल के हठ से १४ क्षत्रियों के कुल में १५ शीघ्र ही मारकर रहते हैं ॥ ५३ ॥ १६ समान कुलवाले १७ पुत्री को नहीं व्याहते हैं ॥ ५४ ॥ १८ स्त्री भी अंग का स्पर्श नहीं करने देती १९ बांझ कहकर २०उसका पुत्र ॥ ५५ ॥ २१आज्ञा के अधीन. बादशाह ने कहा कि मेरे पिता ने तुम्हारे दादा को मारा था सो मेरे पिता को मारे विना. २२ उसका विवाह कैसे हुआ

हनैंबिनु १ रनैंबिनु २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

सुपहु कहिय हजरत*असुस्वामी, इतर सकल प्रभुके+अनुगामी

तुम प्रभु रीझ१खीज२छम तातैं, खल को चिंतहिं बैर खुदातैं॥५७॥

कोउन दै प्रभु दंड कलंकहु, परनैं इम जुग२ब्याह पितापहु ॥

मनप्रसन्न हसि सु सुनि मुदाफर,कहिय तुमहु हमरे जो हितकर५८

आवहु समरकंद१जिम तो अब, सहभोजनकारि हरहु भ्रांति सब ॥

॥ ५९ ॥

जान्यौं नृप गाहक यह जीको, नुत पुनि मरन धर्मपर नीको ॥

हैतो सहमरिबो जसहीको, छिप्र खलहिं करि इक्क१ छुरीको ॥६०॥

जातजात ढिग अरि बरजैं तो, भली तबहु असु यहहु भजैंतो ॥

रजैंतो१भजैंतो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

इमगिनि बिरचि बाँहपट ऊँचे, पानिन मोरि परस्पर पूँचे ॥ ६१ ॥

जावत निकट जवन बरज्यो जो, तब गोपित नृप हठहु तज्यो जो ॥

रज्योजो१ तज्योजो२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

साहमुदाफर स्वकहि सराह्यो, चित्त समरकंद१हिंसम चाह्यो॥६२॥

दोहा ॥

पुनि लिखाइ बुंदिय पटा, नृपहिं अप्प जवनेस ॥

सिक्ख मरावत१ द्विरद२ सह, दिय आवन निजदेस ॥ ६३ ॥

बिगरीबत्त सुधारि सब, नृप नारायनदास१८७१ ॥

इम बिलसे पुनि आइकैं, बुंदिय बिभव बिलास ॥ ६४ ॥

सुपहु रचिय निजनामसह, नारायणपुर१ नाम ॥

पुरतैं पच्छिम३ दुव२ रु दल१, गव्यूतिनं नवग्राम ॥ ६५ ॥

और उसके विवाह हुए विना तू पुत्र कैसे हुआ?॥ ५६ ॥ *प्राणनाथ+सेवक ॥५७॥ ॥५८॥५९॥ १ लेनेवाला २स्तुति योग्य ३साथ मरना ४शीघ्र ही इस दुष्ट को भी एक ही छुरी से मारलूंगा ॥६०॥५ प्राण ६धारण करैं ॥६१॥७छिपाहुआ८अपला कह कर ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ९ भोगे॥६४॥ ढाई १० गव्यूति (पांच कोस) पर॥ ६५ ॥

अधं रवास अनुचित यह१८७।२हि, रन दुक्खद तजि राज ॥
गिरिनितंब निवस्यो दुगम, साजि नव सौध समाज ॥ ६६ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वायणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रवसुधेश्वर १ बीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल१५५वंश्यानुवंश्यविहितवर्णनाऽवसरव्याहार्यबुन्दीभूभुजंगनारायणदास१८७।१चरित्रे मुगलतैमूर २२ प्रतिगमनानन्तरमर्जितम्लेच्छराजमहमूद २१ मरणाऽर्वाक्खिजरखाना २३ दिसिकन्दरा २८ न्तषट् ६ यवनराड्दिल्लीशासनसूचन १, परमतवृत्ताऽल्पज्ञसर्वजनस्वस्वमतवस्तुविवेचनायाथातथ्यविख्यापन २, प्रत्यन्तराजतैमूरिशाहरुख १ सेवकायमानसय्यदखिजरखान २३ तन्नामाङ्कमुद्राप्रवर्तन३, मन्त्रिमारितयवनेन्द्रमुबारिक २४ पुत्रदिल्लीशमुहम्मद २५ स्वसवितृसंहारकधीसखाऽधमध्वंसन ४, निष्कासिततत्तनूजदिल्लीशाऽलावुद्दीन २६ प्राप्ततत्पट्टजितजोनपुरादिजनपदलोदिपठानबहलोल २७ कर्तृकाऽटक १ बङ्गा ३ ऽन्तरदिल्लीसीमाशासन५, तत्पुत्रसिकं

१नीचे के महलों में रहना २ पर्वत के शिखर पर, नवीन ३ महलों का समूह रचकर रहा ॥ ६६ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में बुन्दी की भूमि के पति नारायणदास के चरित्र में मुगल तैमूर के पीछा जाने के अनन्तर बादशाह महमूद के मरने से इधर खिजरखां को आदि लेकर सिकन्दर तक इकट्ठे ही छः बादशाहों का दिल्ली की हुकूमत करने की सूचना करना, दूसरों के मत के वृत्तान्त में थोड़ा ज्ञान होने के कारण सब लोगों की अपने अपने मत से वस्तु के विवेचन में सत्यता न होने की सूचना करना, म्लेच्छराज तैमूर के पुत्र शाहरुख का सेवक होकर सय्यद खिजरखां का उसके नाम का सिक्का जारी रखना, मन्त्री के मारेहुए यवनेन्द्र मुबारिक के पुत्र दिल्लीश मुहम्मद का अपने पिता के मारनेवाले अधम मन्त्री को मारना, उसके पुत्र को निकाल कर दिल्लीश अलाउद्दीन का उसका पाट पाने पर जौनपुर आदि देशों को जीतकर लोदी पठान बहलोल का अटक नदी से बङ्गाल तक दिल्ली की सीमा का शासन करना, उसके पुत्र

दर २८ नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ युग्म २ सूचितैक १ स मास्वस्वस्वामितासमासादन ६, तत्समयदिल्लीपतिप्रत्यनीकपृथ ग्यवनेन्द्रीभूतपूर्वपरपुरुषमालवमराडू १ पुरराजधानीकम्लेच्छरा जमुदाफर १ गौर्जराहमदाबादस्थानीयस्कन्धावारक्षितिप २ यवनराण्महमूद २ यवनेशयुग्म २ भिन्नभिन्नशासकता सामर्थ्यसङ्कथन ७, निपातितसपुत्रसमरकन्दसमाक्रान्तस्वरा ज्यनिश्चितनिखिलार्यशल्यनिष्कासनमराडूप्राप्तपरिकरपिहितैक १ छुरिकबहिरशस्त्रदृश्यमाणमुमूर्षुनरेन्द्रनारायणदास १८७।१ भोजनस मयम्लेच्छराजमुदाफरसविधसङ्गमन ८, दत्तप्रश्नापराधव्यावर्त्तको त्तरसहभोजनाकारकम्लेच्छमारकीभूतनिकटायान्तनृपनिवारणा-ऽनुकूलसमर्पितप्रतिलेखितपृथ्वीपट्ट १ पीलु २ प्रभृतिमहन्मान्यत्व पार्थिवप्रागल्भ्यप्रसन्नमराडूपरिवृढम्लेच्छराजमुदाफरबुन्दीन्द्रप्रतिप्र स्थापन ९, सद्मसमायातबुन्दीशनिजनामैक १ नवीननिवसथनिर्मा

सिकन्दर और बुन्दी के राजा नारायणदास इन दोनों का जनाभेहुए एक स म्वत् में अपने अपने स्वामिभाव को ग्रहण करना; उस समय, पहले समय में जिनके पुरुषा बादशाह थे और जिनकी मालवे में मराडूपुर राजधानी थी ऐसे दिल्ली पति के शत्रु बादशाह मुदाफर और गुजरात की अहमदाबाद नामक राजधानी में दूसरे बादशाह महमूद दोनों यवनेशों की जुदी जुदी हुकूमत और ताकत का कथन, पुत्र सहित समरकन्द को मार, अपने राज्य को ले, सम्पूर्ण आर्य लोगों के शल्य को निकालने का निश्चय करके मराडूपुर में पहुंच, परग ह के छाने एक छुरी ले, बाहर से विना शस्त्र दीखते हुए मरने की इच्छावा ले नरेन्द्र नारायणदास का भोजन के समय बादशाह मुदाफर के समीप जा ना, प्रश्न के अपराध को मिटानेवाला उत्तर देकर, साथ भोजन करने को बु लानेवाले म्लेच्छ को मारने को तय्यार हुए समीप आतेहुए राजा के समीप आने से अनुकूल होकर भूमि का पट्टा पीछा लिखाकर हाथी आदि देकर ब ड आदर के साथ राजा की बुद्धिमानी से प्रसन्न मराडूपुर के पति म्लेच्छराज मुदाफर का बुन्दीन्द्र को पीछा भेजना, घर पर आकर बुन्दीश का अपने ना म का एक नवीन ग्राम बसाने के साथ तारागढ के पर्वत के शिखर पर महल

था १ सहिततारादुर्गाद्रिनितम्बप्रणीतप्रासादावस्थान २ सूचनं १८
चतुर्विंशो २४ मयूखः ॥ २४ ॥

आदित एकसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७१ ॥
प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

रायमल्ल इत रान मृत, अक्खिय पुव्व उदंत ॥
कहियत तत्थ विसेस कछु, जीवन तस परजंत ॥ १ ॥

॥ षट्पात् ॥

रायमल्लके कुमर प्रथित हुव त्रय ३ हि बलीपन ॥
जेठो पृथ्वीराज १ अपर २ नामक सुहि उड्डन १ ॥
जिहिं अनेहँ इकजवन लल्ल अभिधाकारि लंपट ॥
दिल्लीपति दयिता सु भेदि पातुरि लायो भट ॥
तिहिं आइ नगर टोडा तबहिं वेढि बिरचि तोपन बिकल ॥
दे त्रास कढ्ढि चालुक दरित विजित किन्न गढ अप्पबल ॥२॥
तिहिं उड्डन १ रानसुत बंस चालुक सहायबनि ॥
पहुँचि वेग प्रतिमल्ल हल्ल लल्लसु पठान हनि ॥
करि टोडा जय कलह सु पुनि अप्पिय सोलंखिन ॥
उड्डन वज्जिग अप्प पाइ अतिजँव मतिपंखिन ॥
इम जित्ति सिरोहीपुर अधिप स्वीयस्वसा दुख संहरिय ॥
नृप सुनहु वैरकारन निखिल कुमर कुप्पि जिम यह करिय॥३॥

नाकर निवास करने की सूचना करने का २४ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२४॥
और आदि से १७१ मयूख हुए ॥

१ वृत्तान्त पहिले कहा. जीवन २ पर्यन्त ॥ १ ॥ ३ प्रसिद्ध. जिसका दूसरा नाम ४उडना था ५समय ६लल्ला नामक ७व्यभिचारी ८प्यारी ९घेर कर १० डरेहुए सोलंखियों को निकालकर ॥ २ ॥ ११शत्रु. यहां से आप उडना १२प्रसिद्ध हुआ. पक्षियों के समान अत्यन्त १३वेग पाकर १४ अपनी बहिन का दुःख मिटाया १५ हे राजा रामसिंह ॥ ३ ॥

रायमल्ल करि रान सुता[1]संबंध सिरोहिय ॥
बरन देवरा[2] बुल्लि कथित बिधि सह बिबाहकिय ॥
जत्थ दैत्त[3] गुरुजनन मिलित दंपति [4]करमोचत ॥
हमसु सिरोही दत्त कहिय उड्डन[5] अति उद्धत ॥
बरकहिय मम सु उड्डन १ बदिय[6] लेतो मैं वह छिन्नि [7]लहु ॥
अब मैं दई सु लैहौं न इम बिलसि सिरोही नृपबजहु ॥ ४ ॥
यहे सुनत धर्कि[8] असह तोरि अंचल[9] बंधन तव ॥
दुलही लैगय दुलह स्वपुर प्रतिकूल सद्धि सब ॥
उरधरि मंचंक[10]अंघ्रि दैनलग्गो सु तियहिँ दुख ॥
पिहित[11] बंचि तस पत्र रुट्ठि उड्डन अंतक[12]रुख ॥
निसजाइ छन्न भगिनी निलय[13] सोवत भाम[14] जगाइ स्वक ॥
बुल्ल्यो कटार उरधरि बदहु तव भगिनी१प्रभु२ मैं१भृतक[15]२॥५॥
तुंग[16]महल्ल लै ताहि द्रंग[17] हेलाहु दिवायउ ॥
अज्ज[18]अवधिलग अम्ह[19] प्रान ईस्वरबल पायउ ॥
राणाकुमर करि करुणा[20] अप्पि मोकहँ अबतैं असु[21]१ ॥
सहर२ सिरोही सहित बिदित बक्खसे नृपता३ बसु[22]४ ॥
इम बहु पराइ[23] हेला रु इहिं छोरयो जियत कुमार छम[24] ॥
बहिनिहिं न दुक्ख अब देहु बदि करिजय आयो बिजयक्रम ॥६॥

---

१ पुत्री का सम्बन्ध २ देवड़ा शाखा के चहुवाण को. जहाँ बड़े लोग ३ देते हैं ४ हथलेवा छूटते समय ५ पृथ्वीराज ने कहा कि हमने सिरोही दी. तब दुल्लह ने ६कहा कि वह तो मेरी ही है तिस पर पृथ्वीराज ने कहा कि मैं ७ शीघ्र छीन लेता ॥ ४ ॥ ८ क्रोध कर के ९ गठजोड़ा तोड़ कर १० माँचे का पाया छाती पर रखकर ११ छाने १२ यमराज की भांति. बहिन के १३ घर. अपने १४ बहिनोई को जगाकर. तब बहिन के पति ने कहा कि मैं आपका १५ चाकर हूं ॥ ५ ॥ उसको १६ ऊंचे महल पर ले जाकर १७ नगर में आवाज दिलायी १८ आज पर्यन्त १९ मैंने २० करुणा करके. २१ प्राण २२धन. आवाज २३दिलाकर २४समर्थ कुमार ने ॥६॥

दोहा ॥

पृथ्वीराज१ कुमार पहु, उड्डन१ पर२ अभिधान ॥
कुमरपनहिं वपु हान किय, जिहिं जिम नियति निदान ॥७॥
उड्डन१ सों द्वै दुव२ अनुज, मध्यम तँहँ जयमल्ल२ ॥
अरु संग्राम३ कनिष्ठ इम, सोदर रिपुकुल सल्ल ॥ ८ ॥
मर्यो प्रथम१ उड्डन१ कुमर, रायमल्ल पुनि२ रान ॥
जयमल्ल१ रु संग्राम२ जँहँ, घुमँडि भिरे घमसान ॥९॥
हनि अग्रज जयमल्ल१ कहै, सुपहु अनुज संग्राम२ ॥
प्रतप्यो गढ चित्तोरपर, अँय१ नय२ जय३ उद्दाम ॥ १० ॥

षट्पात ॥

इत नारायन १८७१ अधिप दंगबुंदिय दुर्जनदम ॥
वेदकथित विधि निवहि कियउ उपयम चतुष्क४ क्रम ॥
तँहँ संग्राम पितृव्य जेष्ट उड्डनतनुजाई ॥
चंपा१८७१ गढ चित्तोर प्रथम१ इहहिं परिनाई ॥
तिम राजकुमरि १८७१२चंद्राउतिसु मलयसुता दूजी२सुमति ॥
परनैं वहोरि दुव२ जोधपुर पहु बुंदिय१ चित्तोर२पति ॥ ११ ॥

दूसरे १नाम से २ भाग्य के ३ कारण ॥ ७ ॥ ४ थे ॥ ८ ॥ ५ कुमर पृथ्वीराज पहिले मरा ६ * युद्ध ॥ ९ ॥ ७ प्रारब्ध ८ नीति और जय में ९ निरंकुश ॥ १० ॥ १० शत्रुओं को दण्ड देनेवाला ११ विवाह १२काका संग्रामसिंह (सांगा) ने. वडे भाई पृथ्वीराज की १३ पुत्री को. वुन्दी और चित्तोड़ के पति १४ दोनों राजा जोधपुर व्याहे ॥ ११ ॥

*यहां कुमर पृथ्वीराज का पहिले मरना और संग्रामसिंह का वडे भाई जयमल्ल को मारकर राजा होना लिखा सो ठीक नहीं है क्योंकि इन तीनों भाइयों की लड़ाई कुमर पृथ्वीराज की विद्यमानता में पहले ही होचुकी थी जिसमें घायल तो हुए परन्तु कोई भाई मारा नहीं गया और कुमर जयमल्ल राव सुल्तान सोलंखी के साले सांखला रत्नसिंह के हाथ से मारागया इस पीछे कुमर पृथ्वीराज ने लल्ला पठान को मारकर टोडा विजय किया जिसका सविस्तर वृत्तान्त देखना होवे तो 'वीरविनोद' नामक मेवाड़ के इतिहास और 'टॉड राजस्थान' में देख लेवें. और लल्ला पठान को मारने के कारण वडी शीघ्रता के साथ टोडे पहुँचे इसीकारण उसी दिन से कुमर पृथ्वीराज का नाम उडना पृथ्वीराज प्रसिद्ध हुआ था. ॥

दोहा ॥

कन्या बग्घ कबंधकी, भ्रात गंग भूपाल ॥
नाम धना१ खेतू२ निपुन, ब्याही दै स्वबिसाल ॥ १२ ॥
धना१ रान *संग्रामधन, आयो परनि उमाहि ॥
नाराधन१८७१२खेतू१८७१३सु निज, बलि किय तीजी३ब्याहि॥१३॥
क्रम लक्खाउत १ चुंडर२ कैं, सुत३ सुत४ केर सुताहु ॥
सरहकुमारि १८७१४ चुंडाउति सु, ब्याहिय चोथे४ब्याहु ॥१४॥
जाई गुज्जर२ जास जुग२, नत्थी १ लालाँ२ नाम ॥
भूप भुजिष्या३ करि भवन, रक्खी यह अभिराम ॥ १५ ॥
कन्या गुज्जर चंदकी, अतिबल जानी एह ॥
तस जनकहिँ४ करि तुष्ट५ तिम, गिनि अनूढ६ लिय गेह ॥ १६ ॥

षट्पात् ॥

जोध१ नृपति जोधपुर रचिय तससुत हुव बारह १२ ॥
तिनमैं पंचम ५ रतन२ तास सुत रायसिंह३ तह ॥
तनुज रायमल्ल ४ तस तास कल्लयान ५ बीरँतम७ ॥
गिनि ग्रहको लघुग्रास८ बढ्यो मन तास दुष्टदम९ ॥
तृनसम न साह दिल्लीस तकि गंजि समर सुमियानगढ ॥
धुम्मैं सु लुट्टि दिसदिसन धन रावनवारी इक्क१ रढ१० ॥ १७ ॥
दिल्लियदल बहुबेर भंजि कल्लयान भजाये ॥
मिच्छनमन प्रतिमल्ल सल्ल तसगुन न समाये ॥
रारिरसिक रट्ठोर दोरि दिल्लिय दावायत११ ॥
सुनि बुंदिय जससोर ओर तस चुनि हित आयँत१२ ॥

॥१२॥*युद्ध ही जिसके धन है ॥१३॥महाराणा १ लाखा के पुत्र चूंडा के पोते की बेटी ॥१४॥ २गूजर(शूद्र जाति विशेष)३पासवान ॥१५॥ उसके ४पिता को ५ प्रसन्न करके ६कुमारी जानकर ॥ १६ ॥ ७ अत्यन्त वीर ८ घर की जीविका छोटी समझ कर ९ दुष्टों को दण्ड देने को १० हठ ॥१७॥ ११ शत्रु १२ बढा.

निज जामि मदनकुमरी१८७।१निपुन तास बिरचि संबंध तँहँ ॥
लरतहु सु बुल्लि बुंदिय दई ब्याहि बहिनि कल्लयानकँहँ ।१८।
जवहु कल्ल जवनेस कटकँ बेष्टितँ गढतैं कढि ॥
परन्यों बुंदिय पहुँचि वीर साहस दुरूहँ बढि ॥
नवढ़दिन सालकनिलय ह्वै सु धन कविन लक्खदुव२००००
सहदुलही हठसंग हंकि निजगढ प्रविष्टहुव ॥
दिन्नैं भजाइ पुनि गंजि दल पुनिपुनि लग्गे आइ पर ॥
बिनु रन गयो न कल्लयान वय धकि घुम्मत दिल्लीस धर ।१९।
जिम आयउ जगमाल हम्म १८३।१ भूपति दुहिताहित ॥
कल्लहु तिम इककाल अप्प रमंनिय पठाइ इत ॥
घेरापर रचि घात पटकि रतिवाह पाइपथ ॥
सावनतीज ३ निसीथँ अप्प आयउ बुंदी अथ ॥
लै तियहिं जाइ सुमियान लँहु किंकर नापित ढ़ेसकरि ॥
खगगन सु कल्ल तिलतिल खिर्यो जिम हड्डी गय संग जरि।२०।

दोहा ॥

सूनु सिकंदर २८ साहको, जेठे १ अनुज जलाल १ ॥
अवके रनहो मुख्य यह, सेनाबिच रिपुसाल ॥ २१ ॥
सजल १ भुम्मि सुमियानढिग, ऊसर निर्जल २ ओर ॥
दिल्लीदल जलबिनु दहैं, घेरारचि दुखघोर ॥२२॥
नापितहो जु नरेसको, संबाहक सबिसास ॥
किल्लापति वह कल्लँ किय, जानि धर्ममति जास ॥ २३ ॥

अपनी १ बहिन ॥१८॥ उस समय२कल्याणसिंह यवनों की३सेना से४घिरेहुए गढ से निकल कर५कठिनाई से तर्कना में आवै ऐसे साहस को बढाकर. सालेके६घर में७शत्रु ॥१६॥ राजा हामा की ८ पुत्री के लिये. अपनी६पत्नी को१०आधीरात को११शीघ्र१२नाई के वेष से ॥२०॥२१॥२२॥ १३ अङ्ग मर्दन करनेवाला १४ कल्याणसिंह ने ॥ २३ ॥

किल्ला सुहि तिहिं दैनकहि, महुर छप्पि फ़रमान ॥
खल नापित भेद्यो[1] खलन, प्रबलन छलन प्रधान ॥ २४ ॥
नापित अधम निसीथ निस, सत्रुन गढ़ प्रविसाइ ॥
स्वामि कटाइ कृतघ्न सठ, पीछैं फल लियपाइ ॥२५॥
बंधि कुतुपै[2] बारूदके, जवनन भुंज्यो जोहु ॥
कल्ल महिप हनि मिच्छकुल, सतिय[3] बस्यो दिव सोहु ॥२६॥
जीवनलग निजजामिकौं, नगर बरोदा नाम ॥
नृप नारायनदास १८७१दिय, आय बृद्धि अभिराम ॥ २७ ॥
सिखरबंध श्री[6]हरिसदन, मदनकुमरि १८७१जा माँहिं ॥
बिरचि बरोदा किय विदित, अबहु नाम तस आँहिं ॥ २८ ॥
कल्लमरन भावीकथा, वर्तमान अब वत्त ॥
परिनाये बुंदीस पुनि, अनुज उभय २ अनुरत्त ॥ २९ ॥
अर्वराज कछवाहकी, कनी समर्थकुमारि १८७१ ॥
परिनायो भूपति प्रथम, नरबद १८७२ सवय निहारि ॥ ३० ॥
हरि जद्दव तनया बहुरि, सुगुनकुमारि १८७२ सनाम ॥
परिनायउ नरबद १८७२ सु पहु, इम द्वै २ ही उपयाम ॥ ३१ ॥
कनी स्याम सीसोदकी, बल्लभकुमरि १८७१ बिबाहि ॥
किय इक१व्याह नृसिंह१८७१को,नृप हित सहित निबाहि।३२।
अधिक नसाँ अहिफेनको, नृप नारायनदास १८७१ ॥
क्रम बढिबढि लग्गो करन, त्वरितैं[12] भयो बस तास ॥ ३३ ॥
अतिअफीम करि अंगतैं, बिनस्यो दर्पक[13] बोध ॥
परिगो चिर[14]हिं प्रसूति[15]को, रानिनकै इम रोधं[16] ॥ ३४ ॥

उस नाई का १ फोड़ कर अपने में मिला लिया ॥ २४ ॥ २५ ॥ बारूद के २ पीपे से बांध कर ३ स्त्री सहित ४ स्वर्ग में ॥२६॥ अपनी ५ बहिन को ॥ २७ ॥ ६ विष्णु भगवान् का मन्दिर ७ है ॥२८॥२९॥ ८ कन्या ॥३०॥ ९ विवाह ॥३१॥ ॥ ३२ ॥ १०मद ११अमल का १२शीघ्र उस नशे के आधीन होगया ॥ ३३ ॥ १३कामदेव का ज्ञान १४बहुत समय तक १५बालक जनने का १६रोक ॥३४॥

संतति न हुव नृसिंह १८७१३ कै, निज प्रारब्ध निदान ॥
नलयो जिहिं भूभाग[1] निज, मन संतुष्ट प्रमान ॥ ३५ ॥
निवसथ[2] इक्क नृसिंह १८७१३ नैं, नव्य[3] रचिय निजनाम ॥
पट्टनि प्रांत नृसिंहपुर, अवहु विदित अभिराम ॥ ३६ ॥
नरवद १८७१२ कौं भूभाग नृप, दिय माटुंदा ढंग ॥
ताकें संतति पंच ५ तिम, प्रकटिय वेंसर[4] प्रसंग ॥ ३७ ॥

पट्पात् ॥

भये अर्जुन१८८।१ रु भीम१८८।२ उभय२ कछवाही औरस ॥
कन्या कर्मवती१८८।१रु पूर१८८।३ मुकल१८८।४जाहिरजस॥
भगिनी इक१ दुव२भ्रात त्रिक३हि जद्दोंनि जन्यौं तिम ॥
नृप पहिलैं नारवंद प्रजा[5] पंचक ५ उपज्यो इम ॥
हड्डेस रान संग्राम हित कर्मवति१८८।२ सु व्याही कुमरि ॥
याकेहि प्रसव[7] विक्रम१ उदय२कुमर भये लघुकाल[8] करि।३८।

दोहा ॥

कुमर धना१ रट्ठोरिकैं, भोज१ रतन२ दुव२ भ्रात ॥
इनपाछैं विक्रम३ उदय४, जुगल२ कर्मवति२ जात ॥ ३९ ॥
व्याह्यो भोज१कुमार वालि, मीरां[9] मेरतनी सु ॥
कुमरपनहि पति मृत्युकरि, विभु[10]हरिभक्त बनी सु ॥ ४० ॥
तकि इक्कत१ संबंध लिक३, चहि बुंदिय१ चित्तोर२ ॥
नारायन१ संग्राम२ नृप, इक१ मन दुरतन दुरओर ॥ ४१ ॥

पट्पात् ॥

अग्रजजा पति[11]१ ऐंह[12] प्रथित वह२ अनुजसुतापति२ ॥

---

१ भूमि का बंट नहीं लिया ॥ ३५ ॥ २ ग्राम ३ नवीन ॥३६॥४ समय पर ॥३७॥ ५ नरवद की ६ सन्तान ७ विक्रमादित्य और उदयसिंह इसके ही हुए ८थोड़े समय में ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ९ मीरां बाई नामक मेड़तनी को १० व्यापक विष्णु भगवान् की ॥ ४० ॥ ४१॥ ११वडे भाई की पुत्री का पति १२नारायणदास

जुगरहि स्वसुर२ जामात२ मन्नि इतरेतर[2] सम्मति ॥
हालबिंर[3]१इत१ हड्ड१बहुरि उत२ रान२ कुलबिंर२ ॥
सगपन त्रय३ सम्मेल१ तिमहि मनमेल२ अधिकतर[5] ॥
सीसोद१ गिनत बुंदिय२ सदन[6] हड्ड१ तिमहि चित्तोर२ चहि ॥
आह्वानाँबिनुहु आवत उभय२ गादितरीति ऐकत्व१ गहि ॥४२॥
सुरभिसमय[10] संग्राम कबहु बुंदिय आगमकिय ॥
तत्थ बिसद[11] मधुतीज[12]३ माहिप दोउरन महमंडिय[13] ॥
दियउ पातुरिन द्रविन[14] अयुत इक१००००इक१००००इतरेतर[15]॥
आयउ ढक्कुव[16] अत्थ[17] सभा सकलहि उठ्ठिय अर[18] ॥
उठ्यो न भूप[19] पललागि इहाँ तकि ढक्कुव अपमान तँहँ ॥
भनि मृतक[20] नर्म[21] किय रानभट तिंहिं दब्बिय खिजि रान तँहँ ॥४३॥
मानतँहँ१ रानतँहँ२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

दोहा ॥

चेतत पुनि निजकवि चविय[22], नृप[23] ढक्कुव कटु नर्म॥
भ्रात[24]समहु अरितम[25] भनिय, बनिय अप्प जयबर्म[26] ॥ ४४ ॥
नारायन१८७१ अक्खिय निजहु, भ्रात नजानत भाव ॥
बिनासमय बल बाहुजन[27], दुरयोरहत खय दाव[28] ॥ ४५ ॥

षट्पात् ॥

और नारायणदास के छोटे भाई की पुत्री का पति प्रसिद्ध संग्रामसिंह,इस प्रकार दोनों ससुरा और १ जमाई २ परस्पर ३ साली का पति तो हाडा नारायणदास और उधर ४ बडसासू (स्त्री की बडीबहिन) का पति महाराणा सांगा ५अत्यन्त. बुन्दी को अपना ६घर जानते हैं. बिना ७बुलाये ही ८कही हुई रीति से ९ एकता ग्रहण करके ॥४२॥ १० वसन्त ऋतु में ११ शुक्लपक्ष १२ चैत्र मास १३ उत्सव १४ धन१५परस्पर१६मेवाड़ के उमराव कोठारिया के पति पूरबिया चहुवाण का नाम है१७यहां१८शीघ्र१९राजा नारायणदास क्या२०मरगया? यह कह कर२१हँसी की॥४३॥२२कहा २३राजा को २४ भाई के समान है तो भी २५ अत्यन्त शत्रु के समान कहा. आप २६ विजय का कवच पहननेवाला बना ॥ ४४ ॥ २७क्षत्रियों का २८अग्नि ॥ ४५ ॥

सठ ढक्कुव सोहुमुनि बदिय जो तुम बैसंदर[1] ॥
सहितसभा पट सबन अंग किनकरहु भस्म अर ॥
रान जानि इम विरस मुंदि उठ्ठि रु ढवकूमुख ॥
सिविर दई तिहिं सिक्ख रक्खि भट संग प्रबलरुख ॥
सोदा रच्यो जु बिल्लहनसुकवि काव्य बिरुद पुनि श्रवनकिय॥
ताकँहँ प्रसन्न बुंदीस तब दुवरसासनइकलक्ख१०००००दिय॥४६॥
सत्तलसुत सामोर धीर बुंदीस ह्रत्तिधरं ॥
रानाब्रिरुदमय रचिय हड्ड अनुमंत लोहठहर ॥
दिय सुनाइ चोत्थि४ दिन सोहु कविता सीसोदहिं ॥
जुग२ सासन लक्खजुग२००००० रानदिय मन्नि प्रमोदहिं ॥
लग्गो न लेन जिन्ह धीर जव पिक्खि बिमन चित्तोरपति ॥
संकुचि निहोरि भाखत सुपहु मन्निय निठ्ठि उदारमति ॥४७॥
तदनंतर चित्तोर नृपहु गय यह नारायन १८७११ ॥
मिले उभय २ महिपाल करन मिच्छन कारायन ॥
सड्डूं१पुन संबंध मिथेंहि स्वसुर २ रु जामाई ३ ॥
रानी इम रट्ठोरि प्रचुर महिमानि पठाई ॥
दिनइक रान संसँद सदन भद्रासन थित भूप दुव २ ॥
बुंदीस तत्थ अहिफेनवस मँचि पलन हिंडोलुहुव ॥४८॥

दोहा ॥

पूरबियाँ कुठारपति, वह ढक्कू चहुवान ॥

---

१ अग्नि हो तो २ वस्त्र ३ शीघ्र ४ सोदा शाखा के चारण बिल्हण ने ५ उदक ग्राम ॥ ४६ ॥ धीर नामक सामोर शाखा के चारण बुन्दी के ६ पोलपात्र ने. हाड़ा की ७ सलाह से ८ उदास ॥ ४७ ॥ म्लेच्छों को ९ कैद करने के लिये १० साढू (स्त्री की बहिन का पति) पन के सम्बन्ध से ११ परस्पर १२ इस कारण १३ बहुत. महाराणा की १४ सभा में १५ सिंहासन (गादी) पर १६ अमल के वश होकर १७ नेत्र बन्ध करके १८ झोका खाने लगा ॥४८॥ १९ पूरबिया शाखा का चहुवाण कोठारिया नामक

चिंततभो नृपकोबचन, करि रस बिरस कथान ॥ ४९ ॥
तबसु बहुकरी केर तृन, मंगि फरासन मूढ ॥
पिहित गयो नृपपिट्ठिपैं, गदि अग्गिन कहुँ गूढ ॥ ५० ॥
प्रभु मामक कुल परपुरुख, उहाँ भानुअभिधान ॥
बरज्यो सठ ढक्कू बहुत, सो न रुक्यो अवसान ॥ ५१ ॥
तब रानहु ताकौं तरजि, उट्ठयो अटकन अप्प ॥
जोलौं तिहिं ढिगजातहीं, दिय सिर तृन अँतिदप्प ॥ ५२ ॥

॥ षट्पात् ॥

बरजनके सुनि बचन हट्ठ मन सावधानहुव ॥
पैं करि कपट प्रमाद अधिक ऊंघिय सुभांड १८६।१ सुव ।
बैठि पिट्ठि इहिंबीच सत्रु तृनकुंच्च धरयो सिर ॥
बुल्लयो को यह बन्हिं कांडँ इक्क १ हु जरैं न किर ॥
मैंचेहिटगन ढिग तुल्लिमन उलटेकरदिय झारि असि ॥
बसु ८ खंड कट्टि चहुवानबपु धारा कछु गय थंभ धसि ॥५३॥

दोहा ॥

ऐंचे दुव २ पक्खिन असिनैं, रान पिधान कराइ ॥
कहिय अँनय ढक्कूहिकिय, पाप फलहु लिय पाइ ॥ ५४ ॥
बन्यौं सभा रस १ मैं बिरस२, परि हित१माँहिं प्रतीप २ ॥
पिसुन नैर कुट्ठारपति, मारयो इम सु महीप ॥ ५५ ॥

ठिकाने का पति १ कथा ॥ ४९ ॥ २ बुहारी (मार्जनी) के तृण. इस राजा में छिपाहुआ ३अग्नि कहते हैं सो अग्नि होवेगा तो ये तृण जल जावेंगे यह कहकर छिपकर पीठ पर गया ॥ ५० ॥ ४ हे प्रभु रामसिंह! मेरे कुल का ५ अन्त में ॥ ५१ ॥ ६ रोकने के लिये ७ अत्यन्त घमण्ड से ॥ ५२ ॥८ तृणों का कूंचा (समूह). यह कैसा ९ अग्नि है कि जिससे निश्चय ही १० एक तृण भी नहीं जलता११किल (निश्चय ही) ॥५३॥ दोनों पक्षवालों ने १२तलवारें खैंचीं. महाराणा ने १३ म्यान करा दीं १४ अनीति ॥ ५४ ॥ १५उलटा (विरोध) १६ चुगल १७कोठारिया नगर का पति. बुन्दी के१८राजा नारायणदास ने ॥५५॥

परि उकुरूंकी पिंडुरिन, खग्ग अष्ठ ८ अरिखंड ॥
किय धरके जुग २ द्वै २ करन, चउ ४ चरनन इम चंड ॥ ५६ ॥
आवनलग्गो रुष्ठि यह, नारायन १८७११ अवनीस ॥
हत्थजोरि रक्ख्यो हठन, रान समावतरीस ॥ ५७ ॥

॥ पट्पात् ॥

नृपहिं रक्खि वहुदिनन करत मृगयादिक क्रीड़न ॥
विविध गोठि व्यंजनन असनसह होत सईड़न ॥
विजन भूप दुव २ वेठि मंत्र इकदिन इम मंडिय ॥
पच्छिम १ दक्खिन २ पहुन खलन अज्जन मदखंडिय ।
वदि तृनसमान दिल्लीसवल जुग २ हि साह लग्गे वजन ॥
प्रतिअब्द लेत लक्खनप्रमित धरहिं भेट कवलों सु धन ॥५८॥
इक्के वीर अनेक रहत जिनके जयरक्खन ॥
प्रतिहायन प्रतिपानि लेत वेतन वहु लक्खन ॥
सत१००सर चउ४चउ४सरोंधि धनुख त्रय३त्रय३जे धारत ॥
त्रय ३ गोलिन अंतरहु वेधि परवलोंहिं विडारत ॥
कैसो उपाय रोकन करहिं जाइ जवन परिभूत जिम ॥
अज्जन प्रजाहु लुट्टत अटंत पत्रिनैरन पारथ प्रतिमें ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

दइकहिय वुल्लहु हमहिं, सासन अलस सहाय ॥

---

१ ऊकडू (दोनों पगों के वल वैठने को मरुभाषा में ऊकडू वैठना कहते हैं) वैठे हुए की पींडियों पर पड़ कर ॥ ५६ ॥ २ क्रोध को शांत करता हुआ ॥ ५७ ॥
३ शिकार आदि ४ स्तुति सहित ५ एकान्त में ६ राजाओं के ७ आर्यों के ८ सालाना ९ लाखों के प्रमाण से ॥ ५८ ॥ १० सालाना ११ एक एक भुज प्रति अर्थात् दोनों भुजों के दो लाख रुपये १२ तनख्वाह लेते हैं. सौ सौ १३ तीरों के चार चार १४ भाथे और तीन तीन धनुष धारण करते हैं १५ शत्रुओं की सेना को विखेर देते हैं १६ अनादर के साथ १७ आर्य प्रजा को लूटते १८ फिरते हैं १९ वाणों के युद्ध में २० अर्जुन के २१ सदृश हैं ॥ ५९ ॥

फिर करिहैं कछुरीति करि, इक्के अवन उपाय ॥ ६० ॥
दोउ रन किय यह मंत्र हड, रहि कछुदिन अनुरत्त³ ॥
करि सगोल ठक्कू कदैंन, पहुँ छुंदिय इम पत्त⁶ ॥ ६१ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा १ यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहु १ मद्दीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराजास्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयहड्डकुलकोटीरबुन्दीवसुधेश्वरनारायणदास१८७१२ चरित्रे संहृतलल्लनामयवनप्रवीरराणारायमल्लज्येष्ठकुमारोड्डयनपृथ्वीराजटोडापुरपुनश्चालुक्यकुलायत्तीकरण १, विजितशिवपुरीनरेशनिजजामिजानिमोचिततद्दत्तभगिनीकष्टाविद्यमानवप्तृकप्राप्तयौवनकुमारपृथ्वीराजतनुत्यजन २, निपातितनिजाग्रजराणासंग्रामसिंहपितृपट्टप्रापण ३, परिणीतशैषोढी १ प्रभृतिपत्नीचतुष्क ४ स्वीकृतैक १ भुजिष्यनरेन्द्रनारायणदास १८७१२ स्वभगिनीमदनकुमारी १८७१२ तिरस्कृतदिल्लीशसमाक्रान्तसुभियाणादुर्गराष्ट्रकूटराजकल्याणकरग्राहण ४, श्वाशुर्यनिवे

१ निश्चय ही २ विजय करने का ॥ ६० ॥ ३ प्रीति सहित. अपने गोत्रवाले ठक्कू का ४ नाश करके ५ राजा ६ पहुँचा ॥ ६१ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चार हाथ वाले (चहुवाण) के वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य हाडा कुल के मुकुट बुन्दीन्द्र भूपति नारायणदास के चरित्र में लल्ल नामक यवन का नाश करके बडे वीर राणा रायमल्लके ज्येष्ठ कुमर उडना पृथ्वीराज का टोडापुर को फिर सोलंखियों के कुल के आधीन करना, सिरोही के राजा को जीतकर अपनी बहिन के पति के दियेहुए दुःख से बहिन को छुडाकर पिता की विद्यमानता में यौवन प्राप्त होकर कुमर पृथ्वीराज का शरीर छोडना, बडे भाई को मारकर राणा संग्रामसिंह का पिता का पाट प्राप्त करना, सीसोदिनी आदि चार स्त्रियों के विवाह करके एक पासवान करके नरेन्द्र नारायणदास का अपनी बहिन मदनकुमारी का दिल्ली के बादशाह का अनादर करनेवाले सुभियाणा गढको दबानेवाले राठोड़राज कल्याण से विवाह करना, ससुराल में दो लाख रुपये त्याग में देकर हठ के साथ स्त्री सहित घर में आ

शनवितीर्णद्रम्मलक्षद्वय २००००० सप्तसप्तपत्नीकसम्भागतपुनः पुनःपराजितयवनानीकविप्लावितादिल्लीशकर्मध्वजनरेशकल्याणप्रतीपीभूतस्वसंवाहकनापितदुर्गप्रवेशितपरपृतनाप्रधनसहगामिनीसहितपुद्गलप्रहाण ५, बुन्दीशनिजानुजनरवद १८७।१ कौर्मी १ यादवी २ दयिताद्वय २ नृसिंह १८७।३ शैषोद्दी १ पत्न्येक १ परिणयन६, वर्द्धितातिमात्रसमभ्यस्ताऽहिफेनवशीभूततन्मदमत्तमनस्कनरेन्द्रसन्ततिसंरोधचिरसम्भवन ७, विधिवशालब्धसन्तानानङ्गीकृतवसुधाविभागनृपाऽनुजनृसिंह १८७।३ निजनामनव्यनिवसथनिर्माण ८, भूभागप्राप्तमाटुन्दाख्यद्रङ्गनरवद१८७।२ दयिताद्वय२ सञ्जातसुतैक १ सहिताऽर्जुना १८८।१ दिसुतचतुष्क ४ समुद्भवन ९, नरेन्द्रनारायणदास १८७।१ स्वानुजनरवद १८७।२ सुताकर्मवती १८८।१ चित्रकूटेशराणासंग्रामसिंहपरिणायन १०, राणौरसधानेय भोज १ रत्न २ कार्मवतेयविक्रमो १ दय २ कुमारचतुष्क ४ समुद्भवन ११, जीवज्जनकज्येष्ठकुमार भोज १ मरणानन्तरतत्पत्नी

कर यवन सेना को वारम्वार जीतकर दिल्ली के वादशाह के उपद्रव करनेवाले राठोड़ नरेश कल्याण का शत्रु बने हुए अपने शरीर के मालिस करनेवाले नाई से गढ में प्रवेश कराई हुई शत्रु सेना के साथ युद्ध करके अपने साथ गमन करनेवाली स्त्री सहित शरीर छोडना, बुन्दीश का अपने छोटे भाई नरवद का कछवाही और यादवी दो स्त्रियों से और नृसिंह का एक स्त्री शीशोदिनी से विवाह करना, अत्यन्त मात्रा वढजाने के अभ्यास से अमल के वशीभूत उसके नशे में मत्त मनवाले राजा के सन्तान का वहुत समय तक रुकना, दैव वश से सन्तान न पाकर, पृथ्वी के विभाग को न लेकर राजा के छोटे भाई नृसिंह का अपने नाम से नवीन ग्राम वसाना, पृथ्वी के वंट में माटूंदा नामक नगर पानेवाले नरवद के दो स्त्रियों से एक पुत्री के साथ अर्जुन आदि चार पुत्रों का होना, नरेन्द्र नारायणदास का अपने छोटे भाई नरवद की पुत्री कर्मवती को चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह को व्याहना, राणा के धना के उदर से भोज और रत्नसिंह तथा कर्मवती के उदर से विक्रमादित्य और उदयसिंह इन चार औरस कुमरों का जन्म होना, पिता के जीवित समय में ही वड़े कुमार भोज के मरे पीछे उसकी स्त्री राठोड़ी मीरां का जीवन पर्यन्त

शष्ट्रकूटीमीराँयावज्जीवहरिभक्तिसमासादन १२, नरेन्द्रनारायणदास १ राणासंग्रामसिंह २ सम्बन्धत्रय ३ स्निग्धस्वान्तैक्य १ परस्परप्रीतिप्रकटन १३, सुरभिसमयबुन्दीसमागतसभासमुपविष्टदत्तद्वि १ पक्षपणस्त्रीगणार्थद०यायुत१०००० राणास्वकीयभटढक्कूकृतबुन्दीशाहिफेनप्रामाद्यदुर्वचनवारण १४, श्रुतस्वगर्हणसावधानसूचिताकाण्डक्षात्रसत्वकालाग्निगोपनौचित्यबुंदीशविल्हणार्थमुद्रालक्ष १००००० शासनोपवसथद्वय २ विश्राणन १५, प्रसभप्रतारणापतनाप्रपातप्रेषितस्तब्धताप्रागल्भ्यकुत्सकतावमतबुन्दीशबलवैश्वानरत्वस्वशठभटढक्कूकराणाद्वितीय २ दिनावसरबुन्दीशकविधीरार्थसमुद्रालक्षयुग २००००० शासनयुग२ सप्रसभसमर्पण १६, स्नेहोत्कर्षसोत्कण्ठचित्रकूटप्रयातप्राप्तज्येष्ठश्वश्रूप्रेष्यसमज्यासङ्गतविभक्तार्द्धभद्रविष्टरोपविष्टसौभाण्डकृपाणप्रत्यक्प्रहारस्वमूर्द्धखटक्षेपकढक्कूचाहुवाणावपुरष्ट ८ धाकर्तन १७, प्र०ह्वताप्रतिनिवर्त्तितकियत्कालकृतनिवाससमर्थितराणारहस्यस्वीकृतसमयसहाय

ईश्वर भक्ति ग्रहण करना, राजा नारायणदास और राणा संग्रामसिंह का तीन सम्बन्धों के कारण स्निग्ध मन से एकता करके परस्पर प्रीति प्रकट करना, वसन्त समय में बुन्दी में आ, सभा में बैठकर दोनों पक्ष की ओर से वेश्याओं को दश दश हजार रुपये देने पर राणा का अपने उमराव ढक्कू के किये हुए बुन्दीश की अमल के नशे की असावधानी के दुर्वचनों को मिटाना, अपनी निन्दा सुनकर सावधान हुए विना समय क्षत्रियों के पराक्रम रूपी कालाग्नि को छिपाना उचित सूचित करके बुन्दीश का विल्हण नामक चारण के अर्थ एक लाख रुपये और दो गाम उदक देना, घमंड की प्रबलता से बुन्दीश के बलरूपी अग्नि की निन्दा करके अवज्ञा करनेवाले अपने उमराव मूर्ख ढक्कू को बलत्कार से ताड़ना करके डेरे भेजकर राणा का दूसरे दिन बुन्दीश के कवि धीर नामक चारण के अर्थ दो लाख रुपयों के साथ दो उदक ग्राम हठ पूर्वक देना, बड़े स्नेह से उत्कण्ठा सहित चित्तोड़ में जाकर बड़सासू की भेजी हुई महिमानी पाकर सभा में आयेहुए आधे आसन पर बैठेहुए सुभाण्ड के पुत्र का तलवार के उलटे प्रहार से अपने मस्तक पर तृण रखने वाले ढक्कू चहुवाण के शरीर के आठ टुकड़े करना, नम्रता से निवर्तन हुए

नरनाथनारायणदास १८७।१ बुन्द्यागमनं १८ पञ्चविंशो २५ मयूखः ॥ १२५ ॥

आदितो द्विसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७२ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

॥ दोहा ॥

पैसे नेव ९ मित लेत पहु, फैलरोधक अहिफेन ॥
जाकेजय निकस्यो विजित, स्मर पुरतैं सहसेन ॥ १ ॥
वाढ जदपि नृप कायबल, अतिबल तदपि अफीम ॥
रक्ख्यो श्रम आहारपैं, स्मर नठ्ठो तजि सीम ॥ २ ॥

॥ षट्पात् ॥

अच्छोर्टन दिनइक्क १ हडनृप रमि इक्कल १ हय ॥
आवत पुर अति अमल मिचेनैंनन प्रमादमय ॥
इक धूंसरितिय अंध्व कछुक गिनिसुप्त नेमंकिय ॥
कर तस आयसं कुसं सु लोलंहय फैंकि छिन्निलिय ॥
गहि द्रुत नमाइ ताकेहि गल कारि डारी नृप कुंडली ॥
गुरु निगॅड़ तुल्य भॅर बस सु गृह चिर विश्रमिविश्रमि चली ॥

दोहा ॥

कंठीरव गहि वसकरन १, सिंधुर रोकन २ सीम ॥

कुछ समय निवास करके राणा की सलाह का समर्थन करके समय पर सहाय करने का स्वीकार करके राजा नारायणदास के बुन्दी आने का २५ वां मयुख समाप्त हुआ ॥ २५ ॥ और आदि से १७२ मयूख हुए ॥
१ नौ पैसे भर २ संतान रूपी फल को रोकनेवाला ३अमल ४कामदेव, शरीर रूपी पुर से सेना सहित निकलगया ॥ १ ॥ ५ शरीर का बल ६ तो भी ७भ गा ॥ २ ॥ ८ शिकार ९ धूसर जाति की स्त्री ने १० मार्ग में ११ हँसी की १२ लोहे की १३ कुस(भूमि आदि खोदने का शस्त्र)१४चपल घोड़े को १५बड़े बंधन (तोख) के बराबर के१६भार से१७बहुत ठहर ठहर कर; अथवा बहुत श्रम से विश्राम करके ॥ ३ ॥ १८ सिंह को १९हाथी को

इहिँ अमलहु नृपबल अतुल, भूतल मल्लन भीम ॥ ४ ॥
इत धूसर निजनारि वह, कछु निगड़ित[2] कारिती न ॥
लखि सालस[3] गृहकर्म लहु, आनी न्यायअधीन ॥ ५ ॥

॥ षट्पात् ॥

चाक्रिक[4] बिन्नति चविय कहत ममतिय नृप यह किय ॥
सदन कृत्य तासोंहि दार[6] कीलित बनि तजिदिय ॥
द्वै २ हि मनुज हम सदन सिद्धि किमऽहै ब इक्क १ सन ॥
उचित अनुग्रह इक्किब पुव्वजिम करहु करुनपन ॥
सुनि नृप सु कण्ठि तस कंठ सन कुस हो जिम तिम सरलकरि
तिन्ह सौंपि कहिय तव मूढतिय पापसहिय मम हास्यपरि ।६।

॥ दोहा ॥

बुंदीपति प्रतिद्यस्र बढि, इम अहिफेन अधीन ॥
सतत[11] मुंदि दृग मन्निसुख, लग्गो उंघन लीन ॥ ७ ॥

षट्पात्

पौसमास ऋतु प्रसल[12] अधिप रजनी इक अंतर ॥
सोवत जागि लघु[13]सोच करनबैठो बसुधा[14]वर ॥
उंघत लगि पल अप्प तत्थ[15] रहिगो प्रभाततक ॥
रही खरी रठोरि गहेँ तबलौं भृंगारक[16] ॥
याकोहि हुतो बासक[17] उहाँ सीत १ बात २ परिभव[18] सहत ॥
कंपत लखी सु नृप उट्ठिकैं वपु झीनी[19] सारी बहत ॥ ८ ॥

दोहा ॥

कर १ पय२ दुजी२ बेरकारि, सलिल१ मृत्तिका२ सुद्ध ॥

---

१ भयङ्कर॥४॥ २ गले में बंधन होने के कारण ३ आलस्य सहित ४ शीघ्र लाया ॥५॥ ५ उस तेली ने ६ स्त्री ने कैदी बनकर ७ घर में ८ अब. उस कंठ में डालीहुई कुस को ९ सीधी करदी ॥ ६ ॥ १० प्रतिदिन ११ निरन्तर ॥ ७ ॥ १२ हेमंत ऋतु में १३ लघुशंका करने को बैठा १४ राजा १५ तहां १६ स्वर्ण रचित जलपात्र (सोने की झारी) १७ वारी १८ दुःख १९ बारीक साड़ी ओढे ॥ ८॥

रानीप्रति नृप उच्चरिय, यह संकोच *अबुद्ध ॥ ९ ॥
किन चेतायाँ मैंहि कहि१, सेई किन हसनी२ हु ॥
किन बुल्ली परिचारिका३, भुग्गि हिमानी भीहु४ ॥ १० ॥

षट्पात् ॥

भाव परम पति भजन१ लान तनुँ निजहु न तक्कत२ ॥
मंगि कहिय महिपाल मननबिनु रीझ धरैं मत ॥
जोरि तबहि कर जकुंट२ भनत रक्षोरि पयंपियं ॥
ममकर लेहु अफीम देयं जो यह संबहीदिय ॥
आरंभि सु दिन नृपहित अमल रानी खेत् १८७१३ कररहैं ॥
तिलतिल घटाइ वपु तत्त्वपर आनिय इहिं गौरव गहैं ॥ ११ ॥
नृपन रीति यह नियत अटन प्रायिकं अच्छोटन ॥
इकदिन कोलन ओघ बाजिदिय पिट्ठि महाबन ॥
अप्पहु सूकर इक्क छेकि कोसन मारयो छमें ॥
इतनें भो अहिफेनकाल काढि मालं अतिक्कम ॥
ऐंचत तुरंग तंगहिं उतरि पच्छिम गत रवि दृग परयो ॥
आसन उतारि तरु कूकरं तर सयन विकल नृप अनुसरयो ॥ १२ ॥
कूकरछाँह तनु कढि रु परत आतपं नृपमुखपर ॥
कढि इक अहि तँहँ करिय छत्र फनछाँहँ छत्रधर ॥
सहसों छाँहँप्रसंग नैंन नृप खुल्लि निहारयो ॥
भुजगकाल तब भजत धीर करगहि दृढ धारयो ॥
चढिकोप उरग करं चंपताहि दृढदक्कन भूपहिं डस्यो ॥
ततकाल जोस अहिफेन तिम बहु डक्कनें वपुमें बस्यो ॥ १३ ॥

---

*मूर्खता है १अँगीठी का सेवन क्यों नहीं किया (अँगीठी से क्यों नहीं तपीं) २दासी को ३ अत्यन्त शीत का ४भय ॥ १० ॥ ५ सेवन करने में ६ रचा ७शरीर की ८ दोनों हाथ जोड़कर ९कहा १० जो आपको देना है तो ॥ ११ ॥ ११ विशेष करके १२शिकार १३सूवरों के समूह में १४समर्थ १५अमल का समय १६ वन (पहाड़ी भूमि) के १७ उल्लंघन करने से १८ करील के वृक्ष नीचे ॥ १२ ॥ १९ धूप २० सर्प २१ अचानक २२ हाथ से दबाते ही २३ सर्प के डंकों से ॥ १३ ॥

पैसे इक१के प्रमित[1] अमल रानी पति आन्यौं ॥
दर्वीकर[2] गर[3] द्वि२ गुन जोस बढतो मद[4] जान्यौं ॥
सरंधि[5] इक्क१ करि सून्य तीर अन्यत्र बंधि तस ॥
कीलि[6] सु उरग[7] कलाप[8] लग्यो हय चढन गतालस[9] ॥
आयुधिक१अनुग[10]२जोलौं अखिल जिमातिम पहुँचि चमूह जुरि ॥
सूकर लिवाइ मुरि इम सुपहु घरआयउ गर[11] अमल घुरि ॥ १४ ॥
सिक्ख अप्पि निज सवन अप्प गो जब अवरोधन[12] ॥
हो बासक[13] रठोरिकोहि मन्नि सु अनर्थमन ॥
अमलसमय अतिवार[14] त्रासित[15] सब सुरन[16]मनावत ॥
तब पिक्ख्यो वह तोर अजिर[17] घुम्मत नृप आवत ॥
इहिंकहिय कोन मोबिजु अभय अज्ज प्रभुहिं जिहिं दिय अमल्ल
नृपकहिय मिल इक मिलि निपुन द्वि२गुन दयो तुमदेत दल[18] ॥१५॥
रुट्ठि कहिय रठोरि मोहि भुल्लि रु को मित्र सु ॥
सरंधि[19] खुल्लि तब सर्प कर्‌यो कुट्टिम[20] चल चित्रसु ॥
लगिभय रानी लखत अमलतजिबे ढिगआन्यौं ॥
हसि ससौंह[21] नृपकहत पुनिसु गर अभय प्रमान्यौं ॥
तिहिं अमल्ल[22] रत्ति[23] आधान[24] तिहिं धरिय भावि[25] रविमल्ल १८८।२ धन[26] ॥
पुनिहुव सु जोग अवसर प्रसव[27] जगि प्रमोद जनपद्द[28] जनन ॥१६॥

दोहा ॥

बिप्रन धन लक्खन बितरि[29], मह[30] किय अतुल महीप ॥

---

१ प्रमाण २ सर्प का ३ विष ४ नशा. एक ५भाथा खाली करके ६ कैद करके ७ सर्प को ८ भाथे में ९ आलस रहित होकर १० सेवक ११ विष के अमल से छुट कर ॥ १४ ॥ १२ जनाने में १३ वारी १४ उल्लंघन १५ डरतीहुई. सब १६देवताओं को मना रही थी १७ चौक में. तुम १८आधा देती थीं ॥१५॥ १९ भाथे से खोलकर २० भीत पर २१ सौगन सहित. उस २२नशे से २३रात्रि में २४ गर्भ २५ आगे होनेवाले सूर्यमल्ल का २६ स्त्री ने २७जन्म २८ देश के मनुष्यों को ॥ १६ ॥ २९ देकर ३० उत्सव किया

वसु८-गुन घटत *अफीम विधि, दये कुमर कुलदीप ॥ १७ ॥

षट्पात् ॥

मुख्यकुमररविमल्ल १८८।१ अनुजहुव रायमल्ल १८८।२ इम ॥
लघु तासन[1] कल्यान १८८।३ त्रिक३हि रठोरि प्रभवं[2] तिम ॥
भुजिष्या[3] जु इक १ भनिय सहँस १ सत्तल २ द्वै २ तससुव ॥
पुत्र द्वि२विध इम पंच ५ हड्ड नृपकैं प्रवीर हुव ॥
पट्टप कुमार तिनमैं प्रवल सिसुहि वेध्य सद्धैं सरन ॥
पहिलो[4]१कि पत्थ[5]२अबको१कि पुनि पित्थ[6]२कुमर यह धन्विपन[7]।१८।
अति सिसुहो जब एह कुमर तब कबहु रुदित किय ॥
रानी मंजन[8]करंत दासिजन रतन[9] काढूदिय ॥
अटकत रोदन आइ पुच्छि दासी सु प्रतारिय ॥
प्रसूं[10] भ्रामि[11] सिसु पयन सु पय रुधिरांत[12] निसारिय ॥
अहि[13]स्याम गरल[14]मद[15] जात[16] यह रुचिहु स्याम इम हास्यरहि ॥
माता लडाइ उरलाइ मम कारो[17] अतिगर[18] नाग[19] कहि ॥ १९ ॥
इत लोदी अफगान साह दिल्लीस सिकंदर १८ ॥
सक गुन हय तिथि १५७३ समय कियउ तिहिं हान कलेवर[20] ॥
अंगज इब्राहीम २९।१ वडो पट्टप हुव बय वल ॥
दुख निजभ्रातन दैन छिप्प[21] लग्गो सु भरयो छल ॥
जानैं जलाल २ अप्पन अनुज कीलित[22]करि मारयो कुगति ॥

*अमल के आठ गुना घटने पर अर्थात् नौ पैसे भर लेता था सो एक पैसे भर रहने पर ॥ १७ ॥ १ उससे छोटा २ उत्पन्न ३ पासवान ४ मानों पहिले समय का ५ अर्जुन ६ पृथ्वीराज ७ धनुषविद्या में ॥ १८ ॥ ८ सोया ९ स्नान करती थी १० स्तन से दूध पिला दिया ११माता ने. बालक के पैर पकड़कर १२ भ्रमाया सो वह दूध १३रुधिर है अन्त में जिसके वहां तक निकाल दिया १४काले सर्प के १५जहर के मद से१६जन्मा था इस कारण यह बालक भी श्यामरंगवाला हुआ यह हास्य की बात है. मेरा १७काला १८ अत्यन्त जहरीला १९सर्प कहकर ॥१९॥२०शरीर का २१शीघ्र २२कैद करके ॥२०॥

अरु भ्रात अलाउद्दीन३इक गो काबल भजि लखि दुगति॥२०॥

॥ दोहा ॥

कुल संतति तैमूर २२को, इत बाबर अभिधान ॥
काबल जय तिहिंकाल करि, स्वबल भयो सुलतान ॥ २१ ॥

॥ षट्पात् ॥

अंदजान १ पति अग्ग यहहि हुव जनक अनंतर ॥
दब्बि समरकंद १ पुनि बढ्यो सबसिर जब बाबर ३० ॥
भ्रातनबिच परि भेद छोनि यातैं सब छुट्टिय ॥
पै बहुरिहु बलपाइ किन्न भुवबस रिपु कुट्टिय ॥
इम पुनि तातारी उजबकन समरकंद १ जब जित्तिलिय ॥
तब अंदजान१दल सज्जि तिहिं काबल२दब्बि अधीनकिय॥२२॥

॥ दोहा ॥

अंदजान १ काबल २ उभय २, सासैत बाबर ३० साह ॥
इब्राहीम २९।१ सु दुष्ट इत, हुव तब दिल्लियनाह ॥ २३ ॥
अधिकारी दुर्मन[3] अखिल, भये तास लहि भीति ॥
तिम टरिटरि बिस्वासतजि, पावत कहुँन प्रतीति ॥ २४ ॥
भाग्यो अनुज जलाल २ जब, दर्वित अलाउद्दीन ३ ॥
काबल बाबर ३० साहको, लयो सरन भयलीन ॥ २५ ॥

॥ षट्पात् ॥

तहँ सूबा मुलतान खानदौलत अप्पन खत ॥
पठयो बाबर ३० पास स्वीय पक्खिन लिखि सम्मत ॥
खानाँ भयउ खराब इहाँ लोदी अफगानन ॥
इब्राहीम २९।१ हिं अखिल हमहु चाहत अब हानँन ॥
तुम प्रबल आइ इत सुख बितरि हितधरि सब संकटहरहु ॥
यह स्यार कनकगिरितैं अलग करि दिल्लिय अप्पन करहु॥२६॥

॥२१॥पिता के१पीछे यह अंदजान नामक शहर का पति हुआ ॥२२॥२हुकूमत करता था ॥ २३ ॥ ३ उदास ॥ २४ ॥ ४ भगाहुआ ॥ २५ ॥ ५ पत्र६ घर ७ मारना. सुख ८देकर. इस गीदड़ को ९स्वर्ण के पर्वत से दूर करके

बाबर ३० तब इम बंचि खानदोलत*प्रेसित**खत ॥
आयउ जब तरि अटक हुलसि दिल्लियसिर हंकत ॥
सबदल पंद्रहसहँस १५००० ***तंत्र ताके कहिपत तब ॥
जित्ति तदपि पंजाब सजब आयो नमात सब ॥
स्वक[1] वय[2] दुअग्गचालीस४२ सम[3] जुब्बन वय निजपुत्रजुत ॥
पहुँच्यो सु आनि पानीपथहि दब्बत दिल्लियदेस द्रुत[4] ॥ २७ ॥
इब्राहीम२९१ अमीर बदलि तामाँहिं मिले बहु ॥
दल खिल[5] सहदिल्लीस लरन इततैं पहुँच्यो लहु[6] ॥
पानीपथ भुव प्रधन[7] भयउ चलि सस्त्र भयंकर ॥
हनि सुहि इब्राहीम २९१ विजय सासकहुव बाबर ३० ॥
लोदी रह्यो सु बंसु[8]अब्दलग संवत ससि वसु तिथि१५८१समय ॥
तैमूर३२ बंस प्रभुता बितत[9] अब दिल्लिय मुगलन उदय ॥ २८॥
पहिलैं गोरिन५ पाइ भुम्मि दिल्लिय बहु भुग्गिय॥
तिम खलजीर२ कुल तुरक तुरक तुगलक३ इम उग्गिय ॥
सय्यद४ लोदि५न सहित साह बजिबजि नट्ठे सब ॥
दुलहा दिल्लिय दुलह मन्नि मुगल६न आई अब ॥
जोलौं सु साह बैठो न जमि सूबा कछु पलटे सबल ॥
मालव अधीस१ गुज्जर[10]महिप२ पाये दुव२ प्रतिभैंट[11] प्रबल ॥२९॥
बदल्यो दिल्लिय बेस पिक्खि गुज्जर१ मालव२ पति ॥
गंजत जिततित गढन ब्रढे दिसदिस अति उन्नति ॥
वसु आदिंक[12] कछुवरस चढ्यो चित्तोर भरन भनि ॥
अतिबल इक्के उभय२ विदित पठये स्वामीबनि ॥
पहुँचे प्रवीर दुव२ रानपुर[13] विविध फैल१ बानौ२ बहत ॥

*भेजाहुआ **पत्र ***आधीन १ अपनी २अवस्था ३वर्ष की ४ शीघ्र ॥२७॥ ५ पार्की की सेना के सहित ६ शीघ्र ७ युद्ध ८आठ वर्ष तक ९ बीतने पर ॥२८॥ १० गुजरात का राजा ११ शत्रु॥२९॥ १२ साजाना खिराज १३ चित्तोड़ में

करभंगि* अनय ** इच्छित करत रान उर न मावत रहत ॥ ३० ॥

दोहा ॥

कहिरुप्पय इक्कतकरत, रक्खि स्वपाहुन रीति ॥
छिन्न[1] लिख्यो बुंदिय छदनं[2], आवहु लखहु अनीति ॥ ३१ ॥

षट्पात् ॥

बल्लसह दल[3] वह बंचि सुपहु चितोर सिधारिय ॥
गंजन इक१इक१ गढन सूर इच्छित अनुसारिय ॥
मोहिल्ला[3]मगरी सु छेकि रानहु हितमैं छकि ॥
आयो सम्मुह अप्प तुरक इक्क२हु रह्यो तकि ॥
मिलि मग्गतैंहि आचरि[4] उचित प्रासादन[5] गय रान१ पहु ॥
नृप२हुव प्रविष्ट[6] निज पटनिलय[7] बितरत रंकन बित्त बहु ॥ ३२ ॥
पठई कहि रानप्रति मत्त उद्धत दुव[9]२मिच्छन ॥
हद्दुन बुल्लि सहाय अब कि दैनन[10] कर इच्छन ॥
बलि[11] चढाइ बहुबरस बलिहु[12] चयकरन[13] बिलंबहु[14] ॥
प्रधन[15] सहेपरिहै न बजत साहन जय बंबहु[16] ॥
अह[17] अठ ८ अवधि कै सोचि अब कर चढ्योसु हमकर[18]करहु१॥
यह जो न द्वार समुचित अटकि धन लुट्टहिं२ कोसनं[19] धरहु ॥ ३३ ॥
बुंदिय १ इत २ संबंध चउ ४ सु साहहु पहिचानत ॥
तुम सहाय कहि तदपि आन १ जानहु २ भ्रम आनत ॥

*अनीति**इच्छानुसार॥३०॥बुन्दी को छाने १पल लिखा॥३१॥ २पत्र ३दसराधा पर सेना की हाजरी की जावे उसको मोहोला कहते हैं (इस नाम की मगरी हमने चित्तोड़ में नहीं देखी परन्तु सम्भव है कि उन दिनों में किसी टेकरी का नाम होवेगा. उचित ४ व्यवहार करके ५ महलों में ६ प्रवेश. अपने ७डेरों में. रङ्कों को बहुत धन ८देताहुआ ॥ ३२ ॥ ९ दोनों म्लेच्छों ने कहलाया क्या? १०खिराज देने की इच्छा नहीं है? ११खिराज १२फिर भी १३ इकट्ठा करने को १४ देरी करते हो सो १५युद्ध में १६विजय के नगारे बजते हुए तुमसे सहन नहीं होवेंगे ॥ ३३ ॥ आठ १७दिनकी अवधि में १८ हमारे हाथ में दो १९खजाने नहीं धर सकोगे

पाहुन आतहु परत सतन सहँसन *व्यय संगत ॥
वसु ८ दिन जँहँ तुम वदत मास इक१ तँहँ हम मंगत ॥
इमरान कथन मिच्छन उफनि अक्खिय अठ्ठ८हि अवधि **अह॥
इक१मास अवधि तुम तो अवहि अटिअटिपुर लुट्टहिं असह॥३४॥
लुट्टत रंक लुकाइ हमहिं जो लेहु दगा हनि ॥
तोहु सुगति हम तकहिँ तुमहिं कालहि ग्रसिहै तनि ॥
तँहँ पहुँच्यो नृप तदिन इत १ रु उत २ वाद रह्यो इम ॥
जुग २ घटिका निसजात तक्कि सगपन वरोध तिम ॥
रठ्ठोरि धना कहियत कुली करि वहुधन जिहिं नाम क्रम ॥
लघुवहिनि पतिहिं पठयो ललित सव आतिथ्य सनेह सम॥३५॥
सर्पडसन भय संकि तज्यो रानिय अफीम तँहँ ॥
अमल ति३गुन वढि अधिक जात मन वढि अटक्यो जँहँ ॥
पैसे त्रय ३ मित जदपि अमल रहिगो अधिपतिकै ॥
तंद्रित हग मिलि तदपि मोहँ आवतहुव मतिकै ॥
चित्तोरराज रानिय निचितें स्वागत आयउ पटसदन ॥
दीस्यो सु तवहु नृप मैंचिदृग १ वहुउंघत २ व्याँदित वदन॥३६॥
नृपको यहहि निदेस आइ कोऊ खिन उंघ न ॥
तो मुहिं तिमहिं वताइ जवहि चेताइदेहु जन ॥
सवनिदेस वस स्वजन मरन न करन भयमानत ॥
जिन अंतहपुरजनन जवहु जावन दिय जानत ॥
कोउन हरैंहिं तिनमैं कहिय किम इनवल इक्कन १ कैदन ॥
इन्ह राहलखत पहु रान इन्ह दृग१ खुलैंन२ नमिलैं वदन॥३७॥
यहहु लई सुनि अप्प होइ अवहितै तदनंतर ॥

* खरच ** दिन की ॥ ३४ ॥ १ सम्बन्ध जानकर जनाने से २ बडसालू ॥३५॥ ३ ऊंघ से ४अचेताई ५युक्त६ डेरों में ७फटाहुआ ८मुख ॥३६॥ ९आज्ञा, किसी१०समय११धीरी आवाज से१२नाश ॥३७॥१३सचेत होकर१४जिसपीछे

हसि बडसरस्सू *पहितैं सहित सब रक्खि प्रीतिपर ॥
पहु रुप्पय सतपंच ५०० उचित सोदर तिन्ह अप्पिय ॥
मिलि इक्कन २ पुनि गमन +थानसंसद मन थप्पिय ॥
निसरहत जाम१ अप्पहिं ÷नियत अक्खि जगावन अनुचरन ॥
करिचैन असन१ सुखसैन २ किय सूरधर्म रक्खत सरन ॥३८॥
रहतजाम१खिलरत्ति जग्गि१ सुचि २ करि संध्या ३ जप ४ ॥
बिबिध साद्धि ब्यायाम तुलन मल्लन असह्य तप ॥
मनछ्छ ६ लोह मुद्गर१न उछटि हनि अंस उडावत ॥
बिबिध झंप दंड २ बहु ऐंचि अतिबल्ल उफनावत ॥
सत्वरं कसाइ हय साजि सलह बिजय पट्ट बाहुन बिलसि ॥
मनअद्ध सांगि अयमय महिप करझल्लिय सब हेति कसि३९॥
भटनरोकि प्रभुभाव नल्लिय इक्क १हु सहाय नय ॥
इक्कन २ उप्पर इक्क १ हड्ड हंकिय आरुहि हय ॥
उत निमाज १ मुख्ख उचित साद्धि ब्यायाम २ बनावत ॥
दूतन अक्खिय दोरि इक्क १ इक्कल१हय आवत ॥
सत्थके जवन लग्गे सजन तिन्ह निवारि अतिमद धरत ॥
इक१भयउ सज्ज तउ इक१अभय करत हो सु रहिगो करत॥४०॥
कछ्छुक बिंब रवि कढत इक्क १ पिक्खिय नृपआवत ॥
कबहु कुब्जबपु १ कबहु लहरि हांनैं सिर २ लावत ॥
कहिय मिच्छ सिसु कोन इतसु मरिबे किमआवैं ॥
बदिय चरनं बुंदीस उंघि इम अमल उगावैं ॥
तब जानि दम्मं दैन१ न तकिय रान कुहकं छल्ल तकिय रन२॥

* भेजेहुए + सभा में ÷ निश्चय ॥ ३८ ॥ १ कसरत २ छः मन के तोल का ३ कन्धे की टक्कर देकर ४ शीघ्र. आधे मन की ५ साङ्ग (बरछी) ६लोहे की. सब ७ शस्त्र कसकर ॥ ३९ ॥ निमाज ८ आदि ॥ ४० ॥९ कुबड़ा शरीर. कभी झोला खाकर घोड़े के १० हाने पर मस्तक लगाकर ११ हलकारों ने कहा. १२रुपये देना नहीं चाहकर १३छली ने

पै इक१सवार आगम*प्रधन किम इम चिंतिय मिच्छमन।४१।
पहिचानिय दृगपरत निकट आवत नारायन १८७१ ॥
इक्का १ चढि +खिल अटकि ÷हुत्त हंकिय मत्ते मन ॥
सोर१ नकीबन सुनत हेस२ तानत सम्मुह हय ॥
पहुमन१ बुद्ध२हु प्रकट१ भानै२ मंडिय तँहँ निर्भय ॥
क्यौं आत मरन१ ताके कहत भनिय रान रुप्पय भरन२ ॥
विसिख१न किधौं कि संगि२न वदहु रुचत बिसिख तव कौनरन।४

भरन१नरन२ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥

गदियं मिच्छ तव सुगम कलह सुहि लेहु वारकरि ॥
प्रथमवार पाहुनन भूप अक्खिय साहसभरि ॥
तुरगफैंकि तव तुरक हड्डउर कुंत प्रहारिय ॥
भिदि तनुत्र कछुभाग बाहु१ उर२ संधि विदारिय ॥
मानहु अमाप अहिफेनमद होन चेत यह वारहुव ॥
मैं आत सम्हरि इमकहि मुदित सज्जिय संगिं सुभांड१८६।४सुवें।४३।
सरभेंव१ कर संग्रहिय हनन जनुं क्रौंच२ केकिहय ॥
कैं अमोघ कर करिय करन१ जनु आत घटुक्कयँ२ ॥
जातु मनहु इंद्रजित१ पानि पकरिय लक्खन२पर ॥
पिरथं भट किं पुंडीर१ खंभ२ वेधन लिन्नी खर ॥

*युद्ध में +बाकी के लोगों को रोककर ÷ होम होने को चला ॥४१॥१ हींसना फैलाते हैं २ चेत हुआ ३बाणों से वा ४बर्छियों से ५ हे बिना शिखावाले(यवन) ॥ ४२ ॥ ६ कहा ७भालों ८ कवच फूटकर ९ अमल के नशे में १० बर्छी उठाई, सुभाण्ड के ११ पुत्र ने ॥ ४३ ॥ १३ मानों १४ क्रौंच पर्वत का नाश करने को १५ मयूर के वाहनवाले १२ स्वामिकार्तिक ने बर्छी ग्रहण की. अथवा १६ घटोत्कच के आने पर कर्ण ने अमोघ शक्ति हाथ में ली. मानों राक्षस इन्द्रजित ने लक्ष्मण पर शक्ति हाथ में ली १८ किधौं १७ पृथ्वीराज के सामन्त पुण्डीर ने खम्भे को वेधने के लिये तीक्ष्ण शक्ति ली. इस प्रकार बुंदी के राजा नारायणदास ने गरुड़ के वेग से घोड़े को दौड़ाकर घोड़े के मलंग लेते

गहि संगि दपटि हयरय गरुड़ उडत फाल वाहिय उसासि ॥
तस१उर२तुरंग१त्रिक२बेधि तिम निकासि बर्त्ति[2]३गय धरनि धसि४४
असनि[3]१ अटकि मिच्छउर अग्र२ इक१कर धर अंदर ॥
पैठत हय चउ४ पयन खरोरहिगो सह पक्खर ॥
अतिबल बाहत अस्व भयउ नृपकोहु भिन्नकटि ॥
अपर[5]२ इक्क१ सवउज्झि[6] लखत सहसत्थ गयो लँटि ॥
तसतुरग सज्ज थित ठान तकि चढितिहिं नृप पुरसंचरिय ॥
तललखन रान परिगह बलिन अरिसन संगि न उद्धरिय॥ ४५ ॥
अरिहय[10] नृप आरूढ[11] आइ प्रतिरान कहाइय॥
इक्क१ अनसुक्किय अपर[12]२ जवन सवतजि[13] लैगोजिय ॥
अनसुंहु[14] पिक्खन उचित सु चलि पिक्खहु परिगहसह ॥
सुनत चढिग सीसोद मचिग चित्तोर महामह ॥
तुरगहु तज्यो न सुनि आत तिहिं अब बल निजनिज जुत उभय२ ॥
मिलिचलिय चढत छदघटिय मिहिर[15] मिच्छलखन जय मोदमय॥४६॥
दूरहिंसन तिहिं देखि सहय ठह्यो रविकीरुख[16] ॥
कहिय पिसुन[17] ढक्कूज[18] मरन आनैं अरिसम्मुख ॥
नृप सहसपथ[19] जिराइ जथा प्रत्यय[20] लैगो जब
बंदिय वाह बुंदीस अभय तवभुजन करे अब ॥

समय उठाकर बर्छी चलाई जो इक्के के हृदय को और घोड़े की १ कमर की हड्डी को बेधकर २काछें (अरडप्रदेश) में निकल कर वह बर्छी भूमि में घुसगई ॥ ४४ ॥ ३ बर्छी. राजा के घोड़े की भी ४कमर टूट गई ५ दूसरा इक्का पहिले इक्के को ६मुरदा छोडकर देखते ही साथ के लोगों सहित ७ भगगया ८ पुर में गया. बर्छी को नहीं ९ निकाली ॥ ४५ ॥ १० शत्रु के घोड़े पर ११ चढकर राजा ने एक इक्के को विना प्राण करादिया और १२ दूसरा यवन १३ मुरदे को छोडकर जीव लेकर भगगया. वह १४ मुरदा देखने योग्य है १५ सूर्य॥४६॥ १६ सूर्य के साम्हने १७ चुगल १८ ढक्कू के पुत्र ने १९सौगन सहित. समीप जाकर जिस प्रकार २० विश्वास आवै तिसप्रकार

संभर स्वसंगि कढ्ढन कहत रहे करखि थकि रानके ॥
संग्रामचविय कढ्ढहु सुपहु प्रतिबल न तुम प्रमानके ॥४७॥
सु सुनि कहिय संभरिय बाजि मम मृत इहिं बाहत ॥
मिच्छतुरग तउ मिलत हानि नगिनी सु जथा हत ॥
बाहत१थाहत२अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
इतर हय न अैसोहु अन्य यातैं हय आनहु ॥
सुनि रानहु दिय सप्ति चढिय निजतजि चहुवानहु ॥
तिरछो सु फैंकि ठेकन तुरग कढ्ढिय झटकि संगि कर ॥
कटिभग्न वहहु मृत१कतिकहत परि घुटनन गो थकि१अपर॥४८॥

दोहा ॥

इक्कनके द्वै२ हय अपर, बल निज उचित बचाइ ॥
कढ्ढी संगि सु रानके, चढि हय झंप रचाइ ॥ ४९ ॥
अक्खिय तिन्ह उपहार यह, थप्पहु अब निजथान ॥
अैवं उभय लिय हम उचित, रीझ सु मन्नहु रान ॥ ५० ॥
रान कहिय ए अरु इतर, गज१ हय२ हेति३ स्वगेह ॥
वत्त कतिक चित्तोर४ बलि, इहिं आसान अनेह ॥ ५१ ॥

षट्पात् ॥

न आसान नृप कहिय आदिधर्महि अप्पन यह ॥
अैक्खोहिनि मृत अग्ग ओर दुवरकारि अठारह १८ ॥
मिहिकावति वहु महिप गोगै १हित आत अबूफर२ ॥
कंगुरपति१के कज्ज समय केदार२ सिकंदर३ ॥

१खींचकर २राणा के सुभट ३ दूसरा बलवान् तुम्हारे समान बलवाला नहीं है ॥४७॥४अन्य.५ घोड़ा ६ कमर टूट कर. वह भी ७ मरगया ८ कितने ही कहते हैं कि घुटनों के बल गिरकर थकगया. यह ९अन्य लोगों का मत है॥४८॥ १०दूसरा॥४९॥ यह घोड़ा ११निजर है १२घोड़ा॥५०॥ १३शस्त्र.१४समय॥५१॥ आगे दोनों ओर की अठारह१५अक्षौहिणी मरी थीं और अबूफर आया.तब१६ गोगा चहुवाण के लिये मिहिकावती में बहुत राजा मारेगये थे और कांगड़ा के

जिम बहु परेहि आवत जवन प्रपितामह गोपाल१५३हित ॥
महमूद१भ्रात गजनीमुकुट बहु भूपन निपतन बिदित ॥ ५२ ॥

दोहा ॥

जवन सहाबुद्दीन२जब, गौरी जिततित गंजि ॥
आवत इत रन बहु रहे, भूप जवन बहु भंजि ॥ ५३ ॥
अज्जार्य मंडल अग्गसि रु, बनिबैठहु बहोरि ॥
पुनिपुनि दक्खिन१ उदग्ग२पहु, मरत१ देत कै मोरि२ ॥ ५४ ॥
अबहि रावरे गढ अधिप, चउरासिय८४ चित्तोर ॥
रहिय अलाउद्दीन११ रन, इत१ उतर२तिम बहु ओर ॥ ५५ ॥

षट्पात् ॥

कर नृपके इम कहत जोरि संग्राम चविय जँहँ ॥
आसानहिं किय एह तकहिं कोउ न सहाय तँहँ ॥
पहु दुवर इम संलपत४ मिलबाँजिन आये मुरि ॥
सहहि रान प्रासाद जाइ बिष्टर बैठे जुरि ॥
बुंदीस भुजन अर्चन बिहित संभृत सब उपहार सह ॥
मुत्तिय चढाइ आक्खिय महिप अप्प भुजन चित्तोर यह ॥५६॥
स्व१पर२ भटन तँहँ सबन रचिय नृप नजरि१ निछावरि ॥
पूरन१० ढक्कुवपुत्र दुमन सद्धिय निदेस धरि ॥
सुता११ कुलिय१२सस्सू३ हु इम हिँ उपदा१३ उत्तारन१४ ॥

पति केदार का कार्य करने को सिकंदर आया था तब मेरे प्रपितामह गोपाल का हित करने के अर्थ भी बहुत राजा मारेगये थे ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ १आर्य मण्डल को २ दबाकर ३ उत्तर दिशा के राजा ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ इस प्रकार ४वार्तालाप करतेहुए ५ घोड़ों को मिलायेहुए ६साथ ही राणा के महल में जाकर ७ गद्दी पर बैठे ८ पूजन करके ९पूर्ण सामग्री सहित मोती चढाकर ॥ ५६ ॥ १० पूरणमल्ल नारायणदास के छोटे भाई की ११पुत्री जो महाराणा सांगा को विवाही थी १२बडसासू ने १३निजराना १४न्योछावर (यहां यथा क्रम समझना चाहिये अर्थात् बेटी ने नजराना और बडसासू ने न्योछावर)

सह पठये संसदहि नृपहु किय आदि १ निवारन ॥
बलि तत्थ असन उभय२हि विरचि संभर नृप आयउ सिविर ॥
अहिफेन समय पुनि लिय अमल चितवत पातुरि नटन चिर ॥५७॥
पननारिनसह सिक्ख रीझि सतसत१०००० दिय रुप्पय ॥
संध्या१ दिक सब सद्धि समय किय असन महासय ॥
द्विरद इक्क१ वाजि दुव२ मुट्ठि मनिजटित इक्क१ असि ॥
सरधि१ चाप१ सिरुपाव१ पट्ट१ इक१ इक१सु अंत्यससि ॥
अतिप्रीति रान उपहार इम हड्ड सिविर पठयो हुलसि ॥
पठई कहाइ यह अब्दप्रति बुंदियपुर भेजहिं विकसि ॥ ५८ ॥

दोहा ॥

अक्खिय भूपति वाँरि यह, पट्टिस१ खड्ग२ पिधान ॥
पठवहु जुग२ इहिं नर्मपर, रुचिर तेहु दिय रान ॥ ५९ ॥

पट्पात् ॥

दिय चउसत ४०० तिन्ह दम्म रान अनुगन अतिहित रत ॥
आइ रान दिन अपर२ मंत्रकिय सिविर नीतिमत ॥
मालव१ गुज्जर२ मंतु सुनत ऐहैं दुव२ सत्थहि ॥
धनिय रान तव भूप उचित आगम निज अत्थहि ॥

---

१ सभा में साथ ही भेजी जिनमें २ प्रथम (निजराना) को राजा ने माफ करदिया ॥ ५७ ॥ ३ भाथा. एक शिरपेच और ४ अन्त में एक चन्द्रमा. हाडा के ५ डेरे भेजा. और यह कहला भेजा कि इसी माफिक६प्रसन्न होकर सालियाना बुन्दी भेजाकरेंगे ॥ ५८ ॥ राजा नारायणदास ने इस सामग्री को ७ निवारण करके कहा कि ८ कटार और खड्ग का ९ म्यान दोनों भेजो. यह १०हसी(मस्करी)करने पर महाराणा ने वे भी दिये ॥५९॥ राणा के ११सेवकों को १२ दूसरे दिन डेरे में सलाह की कि १३ * अपराध सुनते ही मालवा और गुजरात के दोनों बादशाह साथ ही आवेंगे

---

* यहां पर खिराज के रुपये लेने को दो इक्कों का चित्तोड़ आना और उनमें से एक इक्के को बुन्दी के राव नारायणदास के हाथ से माराजाना लिखा सो सत्य नहीं है. क्योंकि प्रथम तो यह इतिहास कि

बुंदिय जु[1] काम पहिलैं बनैं तो मम आगम होहि तहँ ॥
इम थप्पि निर्यत सबदिन उभय[2] करत रहे दृढप्रीति कँहँ ॥६०॥
पुनिपुनि नृप[3] १ प्रासाद २ नगर३ खुरली[5] ४ हु निहारिय ॥
इम मृगव्य[6] १ आरामर[7]नगर[8] ३ खुरली ४ हु निहारिय ॥
मास १ अवधि महिपाल रहिय चित्तोर निरंतर ॥
सदन पधारन समय सुता पठवन कहि संभर ॥
कर्मवति१८८।१नाम नरबद१८७।२कुमरि आयउ लै बुंदिय अडर ॥
इक्का हन्यौं सु नृप जस अतुल बढि हुव दिसन प्रकास बर[11] ॥६१॥
दोहा—गहत पट्ट दिल्लिय मुगल, सुनि यह बाबर ३० साह ॥
जान्यौं ढिग ऐसे जुरैं, लभैं[12] तब जयलाह ॥ ६२ ॥
सुपहु गंग इत बग्घसुव, किय गोचर[13] जब काल ॥

१जो२निश्चय ॥६०॥ राव नारायणदास ने एक मास पर्यंत चित्तोड़ में रहकर वारंवार ३ राजा (चित्तोड़ के महाराणा संग्रामसिंह) को ४ महल, पुर और ५ खुरली "खुरः लीयते यस्यां सा खुरली" खुर जिसमें लय हो उसे खुरली कहते हैं, अर्थात् हयशाला को देखा और इसीप्रकार ६ शिकार के स्थान ७बाग ८नगर "नगाः वृक्षाः पर्वता वा सन्ति यस्मिस्तन्नगरम्" अर्थात् वन और ९शस्त्रविद्या को भी वारंवार देखा १० चहुवाण ने पुत्री को भेजने के लिये कहा और कर्मवती नामक नर्बद की कन्या को लेकर निर्भय बुन्दी आया ११ श्रेष्ठ १२ मिलें ॥ ६१ ॥ काल ने १३दृष्टि दी (मरा)

ती अन्य पुस्तक में देखने में नहीं आया इसके अतिरिक्त महाराणा साँगा ने कभी किसी बादशाह को खिराज नहीं दिया किन्तु कर्नल टॉड के मतानुसार तो दिल्ली के बादशाह बाबर ने उक्त महाराणा को स्वयं खेराज देना चाहा था सो स्वयं बाबर ने अपनी किताब 'तुजकबाबरी' में भी लिखा है जिसको महाराणा ो स्वीकार नहीं किया क्योंकि वे यवनों को आर्यावर्त्त से निकाल देना ही उचित समझते थे और मांडू े बादशाह को तो उक्त महाराणा ने अपनी कैद में रक्खा था फिर खिराज किसको देते, इससे मालूम ोता है कि यह कल्पित इतिहास बुन्दी के बड़वा भाटों का लिखाया हुआ है, और महाराणा साँगा के मय में ही जोधपुर के राव गांगा की मृत्यु लिखी सो भी ठीक नहीं है क्योंकि राव गांगा की विद्यमान । में महाराणा सांगा का देहान्त होचुका था; क्योंकि उनका देहांत बादशाह बाबर के साथ 'बनाना' की ड़ाई हुए पीछे संवत् १५८४ में हुआ था और राव गांगा को राज्य के लोभी उसके बड़े पुत्र मालदे ने झरोखे से गिराकर संवत् १५८८ में मारा था॥

जनक पट्ट लिय जोधपुर, मालदेव महिपाल ॥६३॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम५राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुम १ द्वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितख्यानावसरख्यापनीयबुन्दीनरेन्द्रनारायणदास १८७।१चरिते हयद्वितीय२क्रीडिताच्छोटनंप्रत्यागम्यमानतावदहिफेनमदमीलितनेत्रबुन्दीशनर्मोपहासिततैलिकरणीकण्ठातिभरलोहकुशकुण्डलीकरण १, तावन्मादकमत्तमहीपमल्ल१मातङ्ग २ मृगेन्द्र ३ संरोधशासनसमर्थबलविख्यापन२, बुन्दीपुरप्राप्तचाक्रिकप्रार्थ्यमानपृथ्वीशतैलिनीकण्ठकुशबन्धनविमोचन३, हेमन्तक्षणलघुशौचाऽऽचरणाऽऽसीनमादकपारवश्यमीलितदृक्प्रातःप्रबुद्धपृथ्वीपरिवृढतदवधिसमात्तसलिलस्वर्णपात्रसपर्यासावधानस्थितप्रार्थनाप्रेरितराज्ञीराष्ट्रकूटीयाचिततद्धस्ताऽहिफेनाऽऽदानाऽभ्युपगमन ४, स्वसहधर्मिणीनिजयुक्तिन्ह्रासरक्षिताऽष्टादश१८मासकमितमात्रामादकमत्तमृ

तसं पिता का पाट जोधपुर में मालदेव ने लिया ॥ ६३ ॥

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंश वर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में विख्यात करने योग्य बुन्दी नरेन्द्र नारायणदास के चरित्र में घोड़ा ही है दूसरा जिसके अर्थात् इकल्ले शिकार खेलकर पीछे आतेहुए अमल के नशे से मिचेहुए नेत्रोंवाले बुन्दी नरेश की मस्करी(हँसी) करने के कारण तेली की स्त्री के कण्ठ में अति भारवाली लोहे की कुस का कुण्डली करना, उस नशे में मस्त राजा का मल्ल, हाथी और सिंहों को रोकने और शासन करने में समर्थ बल की प्रसिद्धि करना, बुन्दी पुर में गयेपीछे तेली की प्रार्थना से राजा का तेली की स्त्री के कण्ठ से कुंस का बन्धन छुड़ाना, हेमन्त ऋतु के समय लघुशंका करने को बैठेहुए नशे के परवश नेत्र मिचजाने से प्रभात समय में जगनेवाले राजा का उस समय तक स्वर्णपात्र में जल लिये सेवा में सावधान खड़ी और प्रार्थना से प्रेरणा कीहुई राणी राठोड़ी के मांगने से उसके हाथ से अमल लेना स्वीकार करना, अपनी विवाहिता स्त्री की युक्ति से घटाकर अठारह मासा रक्खीहुई अमल की मात्रा के नशे से शिकार खेलने में

गयारममाणादंष्ट्रिदलनदूरदोद्रूयमाणाकृतकार्यसमागतमादककाला तिक्रमतमसमास्तीर्णसप्त्यासनसौभाण्डिकरीरकारस्कराधःशयन ५,क्रकरकाण्डच्छायासमपसरणसमयनिःसृतैककालकाकोदरच्छ लोचितोपरिच्छत्रीकृतफणच्छायाप्रबुद्धपृथ्वीशनिगृहीतनागपुनःपुन र्दशन ६, तद्विषवर्द्धितद्वि २ गुणमदमोदमानसम्मिलितसर्वसैन्यस्क न्धावारसमागतप्रभुपृच्छायाथातथ्याऽवबुद्धराज्ञीस्वहस्तमादकदाप नसमुत्सर्जन ७, महीशशपथदूरीकृततद्गरदरस्वास्थ्यसङ्गतराज्ञीराष्ट्र कूटीतद्रात्रिरविमल्ल १८८।१ गर्भधारण ८, वसु ८ वण्टाहिफेनह्रास कुम्भिनीकान्तकुमारराष्ट्रकूट्यौरससूर्यमल्ल १८८।१ राजमल्ल १८८। २ कल्याणमल्ल१८८।३त्रय३ भौजिष्येयसहस्रमल्ल १ सप्तल २ द्वय २ सङ्कलितपञ्चक ५ समुद्भवन ९, प्राक्कालोत्तानशयत्वशालिशैशवस मयसमवगतकृतरोदनकुमारार्कमल्ल१८८।१दासीस्तनपानोदन्तकृत तत्किङ्करीताडनगृहीतपोतपादभ्रामयन्तीराज्ञीरुधिरान्ततत्पोतसर्व

सूवर को मारने के लिये दूर जाकर सूवर को मारने पर अमल खाने का सम य निकल जाने से घोड़े का गदेला बिछाकर सुभाण्ड के पुत्र का करीर वृक्ष के नीचे शयन करना, उस करीर वृक्ष की शाखाओं की छाया निकल जाने के समय बाहिर निकले हुए एक काले सर्प का छत्र के योग्य ऊपर छत्र किये हुए फण की छाया करने पर उस छाया से जगे हुए रा जा के पकड़े हुए सर्प का वारम्वार डसना, उसके विष से दुगुने बढ़े हुए नशे से प्रसन्न राजा को सब सेना मिलने पर राजधानी में आये हुए राजा से रानी के पूछने पर यथार्थ वृत्तांत जानने के पीछे राणी का अमल देना छोड़ना, राजा के सौगन खा ने से उस सर्प के विष का भय दूर होने पर स्वस्थता सहित रानी राठोड़ी का उसी रात्रि में सूर्यमल्ल को गर्भ में धारण करना, आठ हिस्सा अमल घटाने पर भूपति नारायणदास के राठोड़ी के उदर से सूर्यमल्ल, राजमल्ल और कल्याणमल्ल तीनों और पासवान के पुत्र सहसमल्ल, सातल दोनों मिलाकर पांच कुमरों का जन्म होना, पहले समय में सीधे शयन करनेवाले अत्यन्त बालकपन के स मय में रोने से कुमर सूर्यमल्ल को दासी का स्तन पान कराने का वृत्तान्त जान कर उस दासी को धमकाकर बालक के पैर पकड़ कर भ्रमानेवाली रानी का अन्त में रुधिर आया वहां तक उस दासी के दूध को निकालना, सदैव अन्तः

दुग्धनिष्कासन ६, सदैवस्नेहसातिरेकसवित्रीतत्कुमरलालनकाल सर्पसाम्यसम्बोधन१०, सूचितसंवत्समयकृतकायहानदिल्लीपतिलो दिपठानसिकंदर १८ सूनुज्येष्ठेब्राहीम २९११ पितृपट्टप्रापणानन्तर स्वानुजजलाल २९१२ मारणसन्त्रस्तकनिष्ठालावुद्दीन २९१३ काब लपलायन ११, जनकानन्तरप्राप्तान्दजान१ राज्यस्वदोर्जितसमर कंद १ परस्परभ्रातृजनद्रोहभावपरिभ्रष्टपुनःप्राप्तराज्यद्वय २ पुनस्ता तारयुजबकसमाक्रान्तसमरकन्द २मुगलतैमूर२२ वंशीयतदन्दजाना धीशबाबर ३० काबलराज्यसमासादन १२, दिल्लीशसर्वाधिकारि दौर्मनस्यसमयमुलतानसूबाध्यक्षदौलतखानप्रेषितपत्रपूर्वशरणप्राप्ता लावु द्दीन २९१३ समाक्रान्तकाबलप्रत्यन्तपतियवनेन्द्रबाबरा ३०र्थ दिल्लीसमाक्रमणावसरसूचन १३, सज्जपञ्चदशसहस्र १५००० सैन्य द्विचत्वारिंशद् ४२ वर्षवयस्कयुवावस्थस्वसूनुसहितदिल्लीनिनीषुसमु त्तीर्णकरतोयसमायातसम्मिलिताऽनेकपरपक्षीयपानीयपथप्रधन व्यापादितेब्राहीम २९ म्लेच्छमहेन्द्रबाबर ३० दिल्लीपट्टप्राप्तिशक

करण के अत्यंत स्नेह से माता का उस कुमर का लाड करने में कालेसर्प का संबोध न करना, जनायेहुए सम्वत् में दिल्ली के बादशाह लोदी पठान सिकन्दर का देहान्त होने पर उसके बडे पुत्र इब्राहीम का पिता का पाट पाये पीछे अपने छोटे भाई जलाल को मारने से डरकर छोटे अलाउद्दीन का काबुल भागना पिता के पीछे अन्दजान का राज्य पाकर अपने भुजों से समरकन्द को जीतने पर परस्पर भाइयों के द्वेष से राज्य भ्रष्ट होकर दोनों राज्य प्राप्त होने पर फिर तातारी और उजबक दोनों के समरकन्द दबा लेने पर मुगल तैमूर वंशवाले उस अन्दजान के स्वामी बाबर का काबुल राज्य को लेना, दिल्ली के बाद शाह के मुसाहिबों के उदास होने के समय मुलतान के सूबे के पति दौलतखान के भेजे हुए पत्र से पहिले अलाउद्दीन का शरण आना और काबुल को दबा नेवाले म्लेच्छदेश के पति बादशाह बाबर के अर्थ दिल्ली लेने के समय की सूचना करना, पन्द्रह हजार सेना सजकर ४२ वर्ष की अवस्था में युवावस्था वाले अपने पुत्र सहित दिल्ली लेने की इच्छा से अटक नदी को उतरकर आये हुए अनेक शत्रुओं के पक्ष के लोगों के मिलने पर पानीपत के युद्ध में इब्राहीम को मारकर बादशाह बाबर के दिल्ली के पाट पाने के संवत की सूचना

सूचन १४, दिल्लीभोक्तृयवनभेदसूचनापुरस्सरनानासूबापतिसंभेदक मालव १ गौर्जर २ म्लेच्छराजद्वय २ दिल्लीशप्रतिभटभावसाम्यसूचनासंकथन १५, चित्रकूटाधिराजराणासंग्रामसिंहसम्बन्धिप्रत्यब्द सर्वावशिष्टधनर्णीभूतवार्षिककरसमादानार्थमुदाफ़र १ महमूद २ युग्म २ प्रतिबर्ष १ प्रतिभुज १ लक्षशोलायकसाहस्रिक दुर्द्धर्षस्वयमिक्कोपनाममालैकाकित्वप्रसिद्धयवनवीरैकै १ क १ चित्रकूटप्रेषण १६, कथितरूप्यसञ्चयविलम्बप्राघुणकप्रीति सत्कृतम्लेच्छशीर्षोद्दप्रच्छन्नाकारितसैन्यहड्डेन्द्रचित्रकूटगमन १७, समुल्लङ्घितसदैवसम्मुखागमनसीमशीर्षोद्दससत्कारबुंदीशसमानयन १८, ज्ञापितस्वसहायहड्डाऽह्वानकरद्रम्मानर्पणाकृतदिनाऽष्टका ८ वधिमत्तम्लेच्छद्वय २ मर्यादातिक्रमचित्रकूटपुरलुण्टनप्रतिश्रवण १९, तिरोहितसूचितसम्बन्धित्वहेतुबुंदीशागमनराणामार्गितमासै का १ऽवधियवनयुग्मप्रातःपत्तनविपिप्लावयिषाप्रादुष्करण २०, नृपगमनदिनभूतैतन्म्लेच्छ १ शीर्षोद्द २ प्रच्छो १ त्तर २ प

करना, दिल्ली के भोगनेवाले यवनों के भेद की सूचना करने के साथ अनेक सूबा पतियों के भेदनेवाले मालवा और गुजरात के दोनों यवन बादशाहों का दिल्लीश के शत्रुभाव की बराबरी की सूचना का कहना, चित्तोड़ के पति राणा संग्रामसिंह के हर वर्ष के चढ़ेहुए सब खिराज से ऋणी होने के कारण सालाना खिराज लेने को मुदाफ़र और महमूद दोनों का सालाना अपने प्रत्येक भुज के एक एक लाख रुपये लेनेवाले हजार मनुष्यों से लड़नेवाले दुर्धर्ष स्वयं इक्का पदवीवाले अद्वितीयता से प्रसिद्ध एक एक यवन वीर को चीतोड़ भेजना, कहेहुए रुपयों को इकट्ठे करने में विलम्ब होने से प्रीति पूर्वक उन यवन पाहुनों का सत्कार करके सीसोदिया के छाने बुलायेहुए सेना सहित हड्डेन्द्र का चीतोड़ जाना, सदैव की सम्मुख जाने की सीमा को लांघकर सीसोदिये का सत्कार सहित बुन्दीश को लाना; अपनी सहाय के लिये हाडे को बुलाने से राणा का खिराज के रुपये नहीं देना जतलाकर आठदिन की अवधि देकर मयाद निकल जाने पर दोनों मस्त म्लेच्छों का चित्तोड़ पुर को लूटने की प्रतिज्ञा करना, सम्बन्धी होने के कारण बुन्दीश के छाने आने को सूचित करके राणा के एक मास की अवधि मांगने पर दोनों यवनों का प्रभात ही नगर लूटने की इच्छा प्रकट करना, राजा

श्चात्त्वगादात्त्वणबुन्दीशज्येष्ठश्वश्रूराणाराज्ञीराष्ट्रकूटीधनाप्रहित-
स्वागतसहचारिजनान्तरशनैरतिमादकतन्द्रानवहितव्यादितवक्त्रघूर्णा
मानसौभाण्डिकुत्साकरण २१, सहास्यस्वीकृततत्स्वागतप्रापकपरि
जनार्थदत्तद्रम्मपञ्चशती ५०० कसमयसमनुष्ठिताशनसूचितयामि-
नीयाम १ शेषावसरजागरणहड्डेन्दशयनसेवन २२, समयप्रबुद्धविहि
तसन्ध्या १ व्यायाम २ साहससंरुद्धस्वसर्वसुभटसन्नद्धसादीभूतस-
मात्तशक्तिकैकाकिहड्डाधिराजयवनयुग्मो २ परिप्रस्थान २३, दूतवि
ज्ञापितैका १ऽश्ववारागमविधीयमानव्यायामनिवारितसपरिग्रहद्वि-
तीयस्वसहधर्मसन्नद्धसप्तिसमारूढयवनैक १ सम्मुखागमसमयस्वा
न्तसावधानजनादिकोलाहलप्रकटप्रबुद्धमत्सरिराजप्रत्यनीकप्रेष्ठप्र
धनप्रियत्वपृच्छन २४, यवनातिवीरकुन्तकृत्तसकङ्कटकक्षान्तरवेधि-
सवाहवैरिवपुष्कबुन्दीशकालायसकासूकोणाकर १ मात्रपृथ्वीप्रवि
शन २५, यथातथस्थितीकृतससाप्तिकपरासुप्रत्यन्तिप्रवीरत्यक्तातिब
लव्याघातभग्नकटिनिजाश्वनरेन्द्रससार्थपलायितापर २ यवनोचि

के जाने के दिन म्लेच्छ और महाराणा के प्रश्नोत्तर हुए पीछे रात्रि के सम
य बुन्दीश की पडसासू और महाराणा की राणी राठोड़ी धना के महमानी
के लिये भेजेहुए मनुष्यों में से किसीका धीरे बोलकर नशे की ऊँघ से फटे मुख
वाले और घूमते हुए सुभाण्ड के पुत्र (नारायणदास)की निन्दा करना, हास्य
पूर्वक उस सत्कार को स्वीकार करके उसके साथ के लोगों को पांच सौ रुपये
देकर समय पर भोजन करके एक प्रहर रात्रि बाकी रहते समय जगाने की
सूचना करके हाडे का शयन करना, समय पर जगकर सन्ध्या और कसरत
करके हठ से सब सुभटों को रोक कर सज्ज होकर घोड़े पर सवार होके बर्छी
लेकर इकले हड्डाधिराज का दोनों यवनों के ऊपर जाना, दूत से एक असवार
का आना जानकर कसरत करते हुए और अपनी परगह सहित अपने समा
न धर्मवाले(हूके) को रोककर सन्नद्ध, घोड़े पर सवार हुए इके के सन्मुख आ
ते समय मन में सावधान मनुष्यों के कोलाहल से जाहिरा सचेत होकर च
हुवाणराज का शत्रु के प्रिय युद्ध को पूछना, उस अतिवीर यवन के भाले से
कवच सहित कांख कटने पर वेधनेवाले, वाहन सहित शत्रु के शरीर को

ताऽश्वसमारोहण २६, नोद्धृतस्वशक्तिप्रत्यागतसमाहूतस्वसैन्यसङ्ग्रामसम्मिलितसौभाण्डिशक्तिसंस्थितस्थितद्वेषिदर्शनार्थपुनारङ्गस्थलागमन २७, दूरदृष्टसजीवसन्देहकससप्तिस्थितसंस्थितसपत्नढक्कूपुत्रपूर्णमल्लमेदपाटमहीपमारणच्छलख्यापनावसरहड्डेन्द्रयथाप्रत्ययसमीपसमानीतसर्वस्वान्तसन्देहसमपाकरण २८, दृष्टशक्त्युद्धरणाऽसमर्थस्वसामन्तशीर्षोद्दसश्लाघाविज्ञप्तमार्गितराणासप्तिसमारूढशाकम्भरस्वशक्तिसमुद्धरणाऽवसरतत्तुरगध्यसुत्व १ वैकल्य २ विचिकित्साविख्यापन २९, समात्तस्वबलोचितयवनयुगाश्वऽश्वयुग्माश्नङ्गीकृतराणाढौकितसर्वस्वसौभाण्डिशेषशत्रुसर्वोपहारशीर्षोद्दपस्त्यप्रस्थापन ३०, मेदपाटपतिमहोपकारसूचनाऽवसरदर्शितनानापूर्वनृपतिदर्शनसमुपकारलेशशून्यपुष्टीकृतसहायधर्महड्ड १ शीर्षोद्द २ जगतीजानिजकुटर२ प्रत्यागमन ३१, सौधसभासहसमागतसिंहासनाऽऽ

फोड़कर बुन्दीश की लोहे की बर्छी की नोक का हाथ भर पृथ्वी में प्रवेश करना, पहले था उसी स्थिति में घोड़े सहित यवन वीर को मृतक करके अतिबल के आघात से टूटीहुई कमरवाले अपने घोड़े को छोड़कर साथ सहित भगेहुए दूसरे इक्के के घोड़े पर चढ़ना, अपनी शक्ति नहीं निकालकर पीछे आकर अपनी सेना को बुलाकर सङ्ग्रामसिंह से मिलकर सुभाण्ड के पुत्र का शक्ति से मरेहुए और ठहरे हुए शत्रु को दिखाने को फिर युद्ध स्थल में आना, घोड़े सहित खड़े मरेहुए शत्रु को दूर से देखकर जीवित होने के सन्देह से अपने शत्रु ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल का मेवाड़ के महीप को मारने का छल जनाने के समय हड्डेन्द्र का जिसप्रकार विश्वास था तिसप्रकार समीप लाकर सब के मन का सन्देह मिटाना, अपने उमरावों को बर्छी पोछी निकालने में असमर्थ देखकर शीषोदिये के प्रशंसा सहित विज्ञप्ति करने पर राणा से घोड़ा मांगकर उस पर चढ़ेहुए चहुवाण के शक्ति निकालने के समय उस घोड़े के मरने अथवा विकल होने के सन्देह की सूचना करना, अपने बल के उचित दोनों यवनों के दो घोड़े लेकर राणा के भेट कियेहुए सर्वस्व का अस्वीकार करके सुभाण्ड के पुत्र का शत्रु की बाकी की सब सामग्री शीषोदिये के घर में भेजना, मेवाड़ के पति के इस बड़े उपकार की सूचना करने के समय पहिले के अनेक राजाओं के दृष्टान्त दिखाकर उपकार के लेश रहित सहायता करने में धर्म की पुष्टि दिखाकर हाडा और शीषोदिया दोनों राजाओं

सनाऽवसरराणामुक्ता १ दिमहोपहारमत्सरिमहीपदोर्दण्डसपर्या साधन, ३२, वप्तृवैरविज्वलितस्वान्तासंश्रुतस्वामिसाध्वसबहिर्वरिवस्याविधित्सुपौर्विक १ पूर्णमल्लोपेतपक्षद्वय २ परिषत्प्रवीरप्रगुणप्राभृतप्रढौकनपुरस्सरपारियात्रप्रान्तपार्थिवोपरिसमुचितस्वापतेयसमुत्तारण ३३, स्वानुजसुता १ ज्येष्ठश्वश्रू २ श्वश्रू ३ समुचितोपदो २ त्तारण २ पर्षत्प्रेषणक्षणसुतास्वापतेयवर्जितस्वीकृतसर्वसमुचितसम्भारसहभुक्तशिविरागतबुंदीशवारवारविशिष्टाविद्याविलासवेलाद्रम्मायुत १०००० वितरण ३४, समनुष्ठितसायंसन्ध्यादिकबुन्दीस्वामिसमीपराणाभत्यब्दप्रतिज्ञातप्रोक्तप्रमाणपीलु १ प्रथिर २ कृपाणो ३ पासङ्ग ४ प्रदरासन ५ पट ६ पट्ट ७ प्राभृतप्रेषणाऽवसरनिर्मितनर्मावनीशकृपाण १ कट्टार २ रिक्तप्रत्यागारयुग २ याचन ३५, स्वीकृतश्रुततदुदन्तसंग्रामप्रेषितप्रोक्तप्रहरणपिधानयुगम २ प्रापकपरिजनार्थदत्तद्रम्मशतचतुष्क ४०० सौभाण्डिश्वःशिविरागतराणासहनिःशलाकमन्त्रणमतमन्तुम्लेच्छराजयुग्मा २ग.

का पीछा आना, नव्लों की सभा में साथ आकर दोनों के सिंहासन पर बैठने के समय राणा का मोती आदि बडी सामग्री से चहुवाण के भुजों की पूजा करना, पिता के वैर से भीतर से जलते हुए और बाहर से स्वामी के भय से शुश्रूषा करते हुए पूरबिया पूर्णमल्ल सहित सभा के दोनों पक्ष की सभा के वीरों के विशेष गुणवाला नजराना अर्पण करने पर बुन्दी के प्रान्त के राजा के ऊपर उचित न्योछावर करना, अपने छोटे भाई की बेटी और बडसासू तथा सासू के सभा में उचित नजराना और न्योछावर भेजने के समय बेटी के धन को निवारण करके अन्य सब उचित सामग्री स्वीकार करके साथ भोजन करके डेरे में आकर बुन्दीश का विद्या विलास के समय विशिष्ट वेश्या को दश हजार रुपये देना, सायंकाल की सन्ध्या किये पीछे बुन्दी के स्वामि के पास राणा का सालियाना भेजने की प्रतिज्ञा सहित हाथी, घोड़ा, खड्ग, भाथा, धनुष, पक्ष और शिरपेच आदि भेट भेजने के समय राजा का हँसी करके खड्ग और कटार से खाली दो म्यान मांगना, इस वृत्तान्त को सुनकर संग्रामसिंह के भेजेहुए ऊपर कहेहुए शस्त्रों के दो म्यान लानेवाले लोकों के अर्थ चार सौ रुपये देनेवाले सुभाण्ड के पुत्र का अपने डेरे पर आयेहुए राणा के साथ एकान्त में सलाह करके इस अप

मपरस्परसहायस्वीकरण ३६, विहितविविधवर्करविलासचित्रकूट व्यतीतैक १ माससौभाण्डिसौदर्यसुतासंग्रामसहधर्मिणीसहितस्व-स्थानीयसमागमन ३७, विज्ञातविरोधिवीरविध्वंसवृत्तान्तप्राप्तेन्द्रप्रस्थपुरपट्टप्रत्यन्तपरिवृढयवनेन्द्रबाबर ३० सौभाण्डिसदृशस्वसैन्यसहायसाधनसोत्कण्ठीभवन ३८, योधपुरपार्थिवराष्ट्रकूटराजगाङ्गतनुत्यागानन्तरतत्तनूजमालवमरुस्वामित्वसमासादनं ३९ षड्विंशो२६ मयूखः ॥ २६ ॥

आदितस्त्रिसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७३ ॥

प्रायो व्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

नृप पहिलैं नरवद १८७।१ अनुज, पाई संतति पंच५ ॥
तिनमैं चउ४ सूचित तनुज, रन देर न जिन्ह रंच ॥ १ ॥
निज कुमरन सिसुपन नृपति, जुव्वन वय तिन्ह जानि ॥
व्याहे च्यारि४हु नारवंद, पहिलैं उचित प्रमानि ॥ २ ॥

षट्पात् ॥

क्रम गुहिल्लपुत्र कुल दास१ अर्जुन२ अभिधा दुव२ ॥
तनयातस जयवतिय१८८।१ हड्ड अर्जुन१८८।१ व्याहतहुव ॥
सूर कबंध सुताहु ऊढ मीराँ१८८।२ दूजो२ यह ॥

राध से दोनों बादशाहों के आने पर परस्पर सहाय स्वीकार करना, नाना प्रकार के परिहास के विलास से चित्तोड़ में एक मास बिताकर सुभाण्ड के पुत्र का अपनी पुत्री और महाराणा सांगा की राणी हाड़ी सहित अपने स्थान पर आना, अपने शत्रुओं के वीरों का नाश होने की सूचना मिलने पर दिल्ली के बादशाह म्लेच्छराज बाबर का नारायणदास के सदृश राजा का अपनी सेना के सहायक होने की उत्कण्ठा करना, जोधपुर के राजा राठोड़राज गांगा के देहान्त हुए पीछे उसके पुत्र मालदेव का मारवाड़ के स्वामिपन को लेने का २६वां मयूख समाप्त हुआ॥२६॥ और आदि से १७३ मयूख हुए ॥
१कहे हुए ॥१॥२उन नरवद के पुत्रों का३नरवद के पुत्र॥२॥ दो४नामवाला५व्याहा

*सीसउद संग्राम सुता केसरकुमरि१८८।३ सह ॥
भगवंतसिंह **कूरम कनी नाम आयोध्या१८८।४जुत निपुन॥
कियचउ४विवाहअर्जुन१८८।१कुमरनरवद१८८।२सुत÷पाटवप्रगुन३

दोहा ॥

भीम१८८।२ कुमर दूजौ२ भन्यौं, ×चवहिँ व्याह तसच्यारि ४॥
दुजनसिंह तोमर सुता, पहलीकुसलकुमारि१८८।१ ॥ ४ ॥
भोजाउत चालुक सुभट, अखयसिंह तनया सु ॥
क्रम व्याह्यो अनुपमकुमारि १८८।२, उपयम दूजे २ आसु॥५॥
कन्या कूरम भीमकी, या १८८।२ हीके अभिधान ॥
व्याह्यो अनुपमकुमरि१८८।३ वलि, व्याह तृतीय३ विधान॥६॥
लालसिंह तनया ललित, व्याहि चतुर्थ ४ विवाह ॥
अखयकुमारि १८८।४ मामारि इम, लिन्नौं नृप जसलाह ॥ ७ ॥

॥ षट्पात् ॥

तीजो ३ नरवद१८७।२ तनय जुग२ हि अभिधान विदित जस॥
पूरनमल्ल १८८।३ रु पूर १८८।३ त्रय ३ हि उपयंम किन्नँ तस ॥
अखयराज सीसउँद कनी पहिलैं १ राजकुमरि १८८।१ ॥
सदाकुमरि १८८।२ सोलंखि मान तनया वलि लिय वरि ॥
सुंदर कवंध तनया सुघर तीजी ३ फुल्लकुमारि १८८।३ तिम॥
मुकल१८८।४चतुर्थ४व्याह्यो महिप उपयम चउ४सुनिये वँ इम॥८॥

॥ दोहा ॥

कर्मध्वज[12] सेढू कनी, उदयकुमारि १८८।१ वरि आसु ॥
वरि सूंगारकुमारि १८८।२ वलि, चालुक ढोल्ल सुता सु ॥ ९ ॥

---

* शीपोदिया **कछवाहे की पुत्री ÷ चतुराई ॥ ३ ॥ × कहेंगे ॥ ४ ॥
१ विवाह २ शीघ्र ॥ ५ ॥ उसी ३ नामवाली (अनोपकँवर) ४ फिर ॥ ६ ॥ ७ ॥
दो ५नाम ६ विवाह ७ शीपोदिया ८ पुत्री ९ मानसिंह की पुत्री १०चतुर ११ अथ ॥ ८ ॥ १२ कमधज (राठोड़) ॥ ९ ॥

जद्दव[1] मदन सुताहु जिम, रूपकुमरि १८८।३ अभिरूप[2] ॥
बर मुकुल १८८।४ तीजी३ बरिय, भ्रातृज[3] मह किय भूप ॥१०॥
उग्रसेन सुत कुम्म[4] इम, अक्खयराज जु आँहि[5] ॥
कन्या तस सुंदरकुमरि १८८।४, बर चोथी४ लिय ब्याहि ॥११॥
सब ब्याहे पहिलेसमय, नरबद १८७।२ सुत नरनाह ॥
सुरज्जपकुमर[6] रविवल्ल[7] १८८।१ के, बलि[8] किय च्यारि४ बिवाहि ॥१२॥
नृप झल्ला[9] पुरनिंबड़ी, किर[10] कल्ल्यान कनी सु ॥
प्रथम१ समर्थकुमारि १८८।१ पहु, पट्टकुमर १८८।१ परनी सु ॥१३॥
सुपहु उदय कूरम सुता, केसरकुमरि १८८।२ कुमार ॥
दूजे २ उपयम यह दुलह, परन्यौं सुमह[11] पसार ॥ १४ ॥
सुता रामपुर ईसकी, नाम समानकुमारि १८८।३ ॥
चंद्रावति तीजी ३ चतुर, ब्याह्यो सुजस बिथारि ॥ १५ ॥
उदयसिंह १ सारंग २ इम, जुग[12] २ अभिधा[12] स्फुट[13] जास ॥
नृप प्रमारकुल श्रीनगर, तनया दुव २ हुव तास ॥ १६ ॥
रानकुमर[14] पट्टप[15] मरत, भोज २ जु प्रथम अन्यौं सु ॥
रतनसिंह २ पट्टप रह्यो, श्रीनगरहु परन्यौं सु ॥ १७ ॥

॥ षट्पात् ॥

सुता बडी सारंग रानकुमरहिं परिनाई ॥
राजकुमारि रविमल्ल १८८।२ परनि अनुजा[16] तस पाई ॥
पंच ५ हि कुमरन सुपहु मह[17] न एकोनबीस १९ मित ॥
बिरचे रुचिर बिबाह अनुज[18] सिरको[19] भर लै इत ॥
बाबर ३० अधीस दिल्लिय बन्यौं उपयम[20] तासौं पुब्ब[21] इम ॥

१यादव २सदृश ३भतीजे का ॥१०॥ ४कछवाहा ५है ॥ ११ ॥ ६पाटवी कुमर ७सूर्यमल्ल के ८फिर ॥ १२ ॥ ९झाला १०किल (निश्चय) ॥ १३ ॥ ११श्रेष्ठ उत्सव फैलाकर ॥१४॥ १५ ॥ दो १२नाम १३स्पष्ट॥ १६ ॥ १४महाराणा का २५पाटवी कुमर ॥१७॥ १६छोटी बहिन १७उत्सव १८छोटे भाई के मस्तक का १९भार लेकर २०विवाह बाबर बादशाह दिल्ली का स्वामि बना जिससे २१पहले

आये न स्मरन ल्हौं तव इहाँ जंपिय भूत१प्रवृत्त२जिम ॥१८॥

॥ दोहा ॥

संक हायन पैंसठि ६५ तैं, कढत लंग्नहित केर ॥
अर्जुन१८८।१ अरु त्रय३ तस अनुज, ब्याहे निजनिज बेर ॥१९॥
सक इकऊन असीति ७९ लग, सोलह १६ सम अरिसल्ल ॥
क्रम इम चपारि४विवाह किय, मुख्य कुमर रविमल्ल १८८।१॥२०॥
किते कुमर रविमल्ल१८८।१के, बरनंत पंच५ बिवाह ॥
चालुकजा।५ तँहँ पंचमी५, ते मन्नंत नरनाँह ॥ २१ ॥
इम सहस्रमल्ल१रु अनुज, सप्तल२ समय विसेस ॥
सुता नृपन तिन्ह वर्णसम, ब्याही दुव२ वसुधेस ॥ २२ ॥
संतति अब कहियत सबन, कति हुव१ पूरबकाल ॥
कतिक होत२ व्है हैं३ कतिक, पै सब सुनहु नृपाल ॥२३॥
कुमर खट६ रु इक१ कन्यका, सप्त७हि कुल संतान ॥
क्रम पाये जेठेकुमर, अर्जुन१८८।१ प्रधन अमान ॥२४॥

षट्पात् ॥

सुर्जन१८९।१ अक्खयराज१८९।२राम१८९।३जेठी१८९।१कुमरानिय
जिम मीराँ१८८।२ रठोरि जनत खंधिल१८९।४ इक१ जानिय ॥
जुग२हि जनैं सीसोदनी१८८।३कुसरन१८९।५रु लवनकरन १८९।६
कछवाही१८९।४भव कुमरि इक१ गौरी१८९।१लघु सब सनैं॥
पहिलेकुमार कुलधर ग्रंथित तीन३ भये प्रभु राम२०३।४लँहँ ॥
खिलैं चउ४अपत्यैं लघुवय खँपिय करहु श्रवन खिल बंसकँहँ॥२५॥

यहाँ याद नहीं आये इस कारण से १ गयाहुआ वृत्तान्त कहा ॥ १८ ॥
२ विक्रम के शक के ३ समय ॥ १९ ॥ ४ उनासी का सम्वत्. सोलह
५वर्ष की अवस्था में शत्रुओं के साल ६ सूर्यमल्ल ने ॥२०॥ ७ हे राजा ॥२१॥
८ राजा ने ॥ २२ ॥ २३ ॥ ९ युद्ध में ॥ २४ ॥ १०से११प्रसिद्ध१२हैं प्रभु रामसिंह १३ बाकी के१४ सन्तान १५मरगये ॥ २५ ॥

दोहा ॥

जे गद्दीपतिके अनुज, बदे सबन तिन्ह ब्याह ॥
भेदमात्र कुलके भनैं, तिन्ह पुत्रन *नरनाह ॥ २६ ॥
अब नारायन१८७।१ कुल इहाँ, व्है हैं गद्दिय हीन ॥
सुर्जन१८९।१ यह सुरतान१८९।१ **सन, पैहैं राज्य प्रबीन ।२७।
यातैं नरबद१८७।१ ***अंगजन, बरनैं सबन बिबाह ॥
प्रभुको यह कुलपरपुरुख, रचि स्वधर्म निर्बाह ॥ २८ ॥

पादाकुलकम् ॥

अर्जुन१८८।१अनुजभीम१८८।२जोजानहुप्रभुतसपुत्राहिपंच५प्रमानहु
सिंह१८९।१अमान१८९।२नामतँहँद्वै२सुतजनैंपूबीरतोमरी १गुनजुत
इक१सुतकन्ह१८६।३चालुकी२औरसतीजी३सुत्तिय१८९।४जगन्नाथ१८९।५तस
मरैअनूढअनुजचउ४मानियतिनमैंज्येष्टसिंह१८९।१कुलतांनिय।३०।
अभिधाअपर२अर्जुन१८९।१हुयाकी,तिमजगअबहुकिंत्तिधुर्वताकी
अर्जुन१८८।१कुलव्हैहैंप्रभुयातैं,मुख्यासिंह१८६।१नरबद१८८।२कुलतातैं
नाम जैतगढ ताहि निवेसंन, दायभाग दिन्नौं धरनीधन ॥
सिंहोलाव१स्वनामैंसरोवर,बिरच्योतत्थसिंह१८९।१जगहितबर।३२।
अरु प्रासाद२ जैतगढ अंतर, बिरच्यो अद्रिकटक सह बिस्तर ॥
इहुनतसकुलभेदसोलहम१६सिंह१भीम२पोते१६कहियतसम।३३।
है यहकुल चर्म्मलि परतट हद, अब हतोर१ बिल्लहैंडि२उकावद३
भीम१८८।२अनुजपूरन१८८।३जोभाखियकहियजथाउपयमैंत्रय३जिमिकिय
जाकैमान१८९।२कुमरहुवगुनजुतसीसोदनि१औरसइक्क१हिसुत ॥

---

*हे राजा ।२६। सुलतान **से ।२७। नरबदके***पुत्रोंके ॥२८॥१हे प्रभु ॥२९॥ २सोलंखिनी के उदर से ३विना विवाहे४फैलाया ॥३०॥५नाम ६दूसरा ७कीर्ति ८निश्चय ६ बुन्दी का स्वामि होवेगा इस कारण से ॥ ३१ ॥ १०रहने के लिये ११राजा ने१२अपने नाम का तालाव ॥३२॥ १३ पर्वत के शिखर पर१४विस्तार से ॥ ३३ ॥ १५ चामल नदी के उस पार १६ छोटा भाई १७ विवाह ॥३४॥

नव बुंदिय पाईनृपसुर्जन१८९१, पुरकोटालियभंजिपठानन ॥३५॥
तँहँ यह बीरमान १८९१ पूरन १८८।३ सुत,
व्हैं जय *हेतु भयो **हेतिन *** हुत ॥
पातैं मान१८९।१कुल सु विरुदावत, कोटारन जयकार कहावत॥३६॥
हम्मीर१९०।१हिइक१मान१८९।१तनयँहुव, दान१कृपान२वँहीजिहिंधुरदुव ॥ ३७ ॥
जंव सुपुत्र कुलमैं निपजैं जो, वंसहि सब तस नाम बजैं ज्रो ॥
पूराउत१७उपपद धारक ध्रुव, इङ्गन भेद सत्रहम १७ जो हुव ।३८।
ता कुलके तवतैं छक छज्जत, वलि हम्मीरके१७हि सब बज्जत ॥
पायउपुरहिंडोलियपूरन१८८।३विरचेहम्म१९०।१महल१सर२उपबन३
तत्थहिप्रभुअवराम२०३।४वंसतस, रन१वितरन२अनुपमचक्खनरस
पूर१८८।३अनुजचोथो४मुक्कल१८८।४पटुकियाविबाहचउ४जिहिंसंपेत्तनकटु
दायँ द्रंगँ जिहिं जक्खमूल दिय, पुत्र विदित ताकै खट६प्रकटिय ॥
रायमल्ल ८९। पित्थल१८९।२विजयीरन,सुतदुव२हुवरङ्गोरि प्रसबसन
इक१गोपाल१८९।३चालुकी२औरस,तीजी३चउभुज१८९।४राजसिंह१८९।५तस
इक१हम्मीर१८९।६ जन्यौं कछवाही४,हुव इम खट६द्रोहिन रनदाही

॥ दोहा ॥

कुल पित्थल१८९।२ गोपाल१८९।३ के, उभय२चले अवनीस॥
च्यारि४नके बंस न चले, असे स्थल बिधि ईस ॥ ४३ ॥
प्रभिधा मुक्कलपौत्र १८ पद, कुल सब तास कहात ॥

॥ ३५ ॥ विजय का *कारण ** शस्त्रों से *** होम हुआ १कोटा के युद्ध का २ विजय करने वाला ॥ ३६ ॥ ३ पुत्र. धुर ४ धारण करी ॥ ३७ ॥ ५ पदवी ॥ ३८ ॥ ६ कहलाते हैं ७ बाग ॥ ३९ ॥ ८हे प्रभु रामसिंह ९दान में १० छोटा भाई ११शत्रुओं को कडुआ लगनेवाला ॥ ४० ॥ १२ दाय भाग में १३ नगर ॥४१॥ १४ चतुर्भुज १५ शत्रुओं को युद्ध में जलानेवाला ॥ ४२ ॥ १६हे राजा १७ ब्रह्मा ही मालिक है ॥ ४३ ॥ १८ नाम

हड्डनमैं अट्ठारहम १८, यह साखा स्फुट ख्यात ॥ ४४ ॥
मुकल १८८।४ को नेत्ती[2] सुमैन[3], बैरिसल्ल १९०।१ हुव बीर ॥
बैराउत्त १८ हु इम बजत, साखा यह समसीर[4] ॥ ४५ ॥
बहु देवालय बापिका[5]२, सौध[6] ३ बेल[7] ४ व्यय[8] सत्थ ॥
किय मुक्कल१८८।४अरु तास कुल१८,जक्खमूल पुर जत्थ॥४६॥
संतति इम नरबद १८७।१ सुतन, बरनी प्रभु[9] सविबेक[10] ॥
सुनिये अब रविमल्ल[11]१८८।१सुत, अधम[12] बंसअरि[13] एक१ ॥४७॥
कुमरानी तीजी ३ कहिय, चन्द्राउति ३ क्रम चाहि ॥
कुमर इक्क१ रविमल्ल १८८।१ कै, हुव तामैं तँहँ दाहि[14] ॥४८॥
जानैं[15] को को लग्न १ जँहँ, को खिन २ कोन कुजोग ३ ॥
किन्हबल[16] हाँ[17] प्रविसैं जठर[18], रानिन ऐसे रोग ॥ ४९ ॥
कुमर कुमर रविमल्ल१८८।१ कै,तस अभिधा[19] सुरतान१८९।१॥
जैहँ बुंदिय जाहिसौं, व्हैहैं प्रभुता हान ॥ ५० ॥
सर हय तिथि१५७५सक हुव सुमति,सुर्जन१८९।१अर्जुन१८८।२सून
नभ गज तिथि१५८०नृपसूनु[20]कै, इत सुरतान१८९।१सुऊन[21]॥५१॥
सक्क मिति एकासीति ८१ सौं, इत्यादिक बहु आदि ॥
उपजे १ अरु कछु होरहिं अब, सूचित क्रम संपादि ॥ ५२ ॥
तिहिं अवसर दिल्लिय तखत, बाबर ३० मुगल बइट्ठ ॥
ताही अवसर हड्ड १ तँहँ, इक्क २ हनिय रन इट्ठ[22] ॥ ५३ ॥
बइट्ठ १ नइट्ठ २ अन्त्यानुप्रासः ॥ १ ॥
सो ससि बसु तिथि १५८१ सकसमय.इत लग्गत अवनीसैं[23] ॥

१प्रसिद्ध ॥४४॥ २ पोता ३श्रेष्ठ मनवाला ४बरायर हिस्सेदार ॥४५॥ ५ बावड़ी ६ महल ७ बाग ८ खरच से ॥ ४६ ॥ ९ हे प्रभु १० विचार पूर्वक ११सूर्यमल्ल का १२ नीच १३ वंश का शत्रु ॥ ४७ ॥ उसको १४ जलानेवाला ॥ ४८ ॥ १५ कौन जाने उस समय कौन लग्न था और किस समय में किस खोटे योग में १६ किनके बल से १७ खेद है कि १८ पेट में प्रवेश होते हैं ॥ ४९ ॥ जिसका१९ नाम सुरताननसिंह था ॥ ५० ॥ २० राजा के पुत्र सूर्यमल्ल के २१ क्रम ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ २२ इष्ट (अनुकूल) ॥५३॥ २३ हे राजा रामसिंह ॥५४॥

हड्डन जयमय विदित हुव, सुजसछत्र भुवसीस ॥ ५४ ॥

इतिश्री वंशभास्करे महाचम्पूके पूर्वा१यणे पञ्चम ५ राशौ वीतिहोत्रचतुर्बाहुमद् १ वीज्यवर्णनबीजहड्डाधिराडस्थिपाल १५५ वंश्यानुवंश्यविहितव्याख्यानावसरविख्यापनीयबुन्दीवसुधावरहड्डाधिराजनारायणादास १८७।१ चरित्रे सूचितसम्वत्समयपूर्वबुन्दीशस्वसन्ततिपाणिपीडनपूर्वस्वानुजनरवद१८७।२ प्रौढपुत्रचतुष्क ४ परिणायन १, ज्येष्ठकुमाराऽर्जुन १८८।१ गुहिलपुत्रीजयवत्या १८८।१ दिपत्नीचतुष्टय४ द्वितीय२ भीम १८८।२ तोमरी १८८।१प्रभृतिजायाचतुष्क ४ तृतीय ३ पूर्णमल्ल१८८।३ शैशोदी १८८।१ प्रमुखजायात्रिक ३ चतुर्थ ४ मोक्कल१८८।४ राष्ट्रकूटी १८८।१ पुरोगभार्याचतुष्टयी ४ सानुक्रमपरिणायन२, तदनन्तरहड्डाधिराजसमयप्राप्तयुवयस्कस्वकीयपट्टपतिकुमारसूर्यमल्ल१८८।१मंकुवाणी १८८।१ प्रभृतिसहधर्मिणीचतुष्क ४ पाणिग्रहण ३, तत्पञ्चम५ विवाहसन्देहसूचनापुरस्सरभोजिष्येयसहस्रमल्ल १ सप्तल २सोदरद्वय

श्रीवंशभास्कर महाचम्पू के पूर्वायण के पञ्चमराशि में अग्निवंशी चहुवाण वंशवर्णन के कारण हड्डाधिराज अस्थिपाल के वंश और वंश की शाखाओं की कथा बनाने के समय के वचनों में प्रसिद्ध करने योग्य बुन्दी के भूपति नारायणदास के चरित्र में जनायेहुए सम्वत् के पूर्व बुन्दीश का अपनी सन्तान के विवाह करने से पहले अपने छोटे भाई नरवद के बलिष्ठ चार पुत्रों का विवाह करना, बडे कुमर अर्जुन को गुहिल पुत्री जयवती आदि चार स्त्रियें, तीसरे पूर्णमल्ल को शीशोदिनी आदि तीन स्त्रियें और चौथे मोकल को राठोड़ी आदि चार स्त्रियें अनुक्रम से व्याहना, जिस पीछे हड्डाधिराज का समय पर युवावस्था प्राप्त होने पर अपने पाटवी पुत्र सूर्यमल्ल को झाली आदि चार स्त्रियें व्याहना, पांचवें विवाह में सन्देह की सूचना करने के साथ पासवान के पुत्र सहसमल्ल और सातल को अपने अपने वर्ण की कन्या विवाहना, नरवद के ज्येष्ठ कुमर अर्जुन के औरस पुत्रों की प्रत्येक माताओं की प्रतीति के साथ उनमें प्रथम हुए और आगे होनेवाले सुर्जन करण आदि पढे तीन कुमरों

स्वसवर्णकन्यायुगरकरग्राहणा४, नारवदज्येष्ठकुमाराऽर्जुनौ१८८।१ रसप्रत्येक १ प्रसूप्रतीतिप्रथमोपेतभूत १ भावि २ सुर्जन १८९। १ कर्ण १८९।१ दिज्येष्ठकुमारत्रय ३ वंशप्रवर्तिष्यमाणत्व १ शिष्टचतुष्टय ४ निस्सन्ततिसंस्थास्यमानत्व २ शंसनसहितप्राप्स्यमानपुत्रपार्थिवत्वनिदानककुमारार्जुना १८८।१ऽनुजत्रय ३ प्रत्येक१ पाणिपीडनसंख्यासमर्थन५, दायप्राप्तजैत्रदुर्गद्वितीय २ नारवदभीम १८८।२ सुतसिंह१८९।१ सन्तानसिंहभीमपुत्रो १६ पटंकिहड्डकुलषोडश१६ भेदभाविताभाषण६, वराटविभक्तहीराडोलीनिवेशतृतीय ३ नारवदपूर्णमल्ल १८८।३ वंशतत्पुत्रहम्मीर १९०।१ हेतुकहम्मीरको१७ पटंकिहड्डकुलसप्तदश१७ भेदप्रवर्तिष्यमाणत्वप्रकटन७,वसुधाविभागाप्तयाक्षमूलचतुर्थ४नारवदमोत्कला१८८।१ऽन्वयस्वान्तर्भूतभविष्यद्भेदान्तसहितमोत्कलपौत्रो१८ पपदकहड्ड१ वंशाष्टादश१८भेदभविष्यमाणताख्यापन८,हड्डाधिराजमुख्यकुमारसूर्यमल्लौ १८८।१ रसैक १ कुमाराऽधमसुरत्राण१८९।२ हड्डवतीराज्य

के वंश की प्रवृत्ति और बाकी के चारों के निस्सन्तान जाने के कथन के साथ इसका पुत्र राज पावेगा इस कारण कुमर अर्जुन के तीनों भाइयों के प्रत्येक विवाह की गणना का समर्थन करना, जैत्रगढ पानेवाले नरवद के दूसरे पुत्र भीम के पुत्र सिंह के सन्तान का 'सिंहभीमपोता' इस पदवी से आनेवाले समय में हाडों के कुल में सोलहवें भेद का कथन, बंट में हिंडोली पानेवाले नरवद के तीसरे पुत्र पूर्णमल्ल के वंश में उसके पुत्र हम्मीर के कारण 'हम्मीरका' इस पदवी से हाडों के कुल में सत्रहवें भेद की प्रवृत्ति प्रकटना, भूमि के विभाग में जक्खमूल पानेवाले नरवद के चौथे पुत्र मोकल के वंश में अपने भीतर आगे होनेवाले भेद सहित 'मोकलपोता' इस पदवी से हाडों के वंश में अठारहवें भेद की सूचना करना, हड्डाधिराज के पाटवी कुमर सूर्यमल्ल के एक औरस अधम पुत्र सुरताण से आगे आनेवाले समयमें हाडोती के राज्य की हानि दिखाना, कथा के सम्वत् से पहले सत्रय में जनायेहुए अपने अपने सम्वत् में उत्पन्न भिन्न अवस्था के अन्तर से सुर्जन का सुरतान से पहले होना और बाकी सन्तान का सुरताण के जन्म सम्वत् से पीछे जन्म होने का समर्थन करना, बुन्दीश के कु

हानोदर्कदर्शन ९, कथाऽवधिशकप्राक्समयसूचितस्वस्वशकसमु नूतविविक्तवयोन्तरसुजन१८९।१ सुरत्राण्या १८६।१ दिप्राथम्यपूर्व कखिलसन्ततितच्छकार्वाचीनकालसमुद्भवनसमर्थनं१०, बुन्दीश कुमारकुमारसुरत्राण्या १८९।१सम्भवशकानन्तरवर्षयवनेन्द्रमुगलबा बर ३० दिल्लीपट्टप्रापणसमकालहड्डराडिक्कोपटंकियवनप्रवीरप्रति घातनं ११ सप्तविंशो २७ मयूखः ॥ २७ ॥

आदितश्चतुःसप्तत्युत्तरैकशततमः ॥ १७४ ॥

प्रायो ब्रजदेशीया प्राकृती मिश्रितभाषा ॥

दोहा ॥

सूचित सक १५८१ लग्गत सभय, वैरिन कारि द्दहवट्ट ॥
माधव२ऋतु बाबर ३० मुगल, पायो दिल्लिय पट्ट ॥ १ ॥
तदनंतर ग्रीखम तपत, सुनि मिच्छन बल सोर ॥
हड्ड१ नृपति इक्का १ हन्यौं, चढि इक्कलै३ चित्तोर ॥ २ ॥

घनाक्षरी ॥

अनुजसुता जो रान रानी नाम कर्मवति १८८।१,
व्हाँही ताहि बुंदिय लिवाइआयो चहुवान ॥
ताके आनिवेकौं बीच पाउसँ बिताइ समैं,
सारद सहस्रपंच ५००० पृतनाँ पठाई रान ॥
अब्दप्रति अंगीकृत कीनौं उपहार सोहू,
संगहि पठायो गज १ तुरग २ असि ३ प्रधान ॥

मर सूर्यमल्ल के कुमार सुरताण के जन्म के सम्वत् से पीछे यवनों के बादशा ह मुगल बाबर का दिल्ली के पाट पाने के समय में हड्डुराज का इक्का प दवी वाले यवन वीर को मारने का २७ वां मयूख समाप्त हुआ ॥२७॥ और आदि से १७४ मयूख हुए ॥

१ घरघाद २ वसन्त ऋतु में ॥ १ ॥ ३इक्कले ने चढकर इक्के को मारा ॥ २ ॥ ४वर्षा ऋतु बिताकर ५शरद ऋतु में ६ सेना ७सालाना ८स्वीकार किया ९नि जराना तलवार का १०स्थान

सामंत १ रु सचिव २ सु लैकैं इहाँ आये विजै-
दसमी१० के दिवस निवेद्यो सबै सनमान ॥ ३ ॥
आयो संग रानको सनाभि बंधु सूर सोहू,
रीझत रमायो मृगया १ दिक घनैं प्रकार ॥
पच्छैं इक १ राखि प्रिय पाहुनैं प्रचुरैं प्रेम,
दीनी सखि अनुजसुताकों दै विभव वार ॥
ओरओर जोर जवननको निरखि घोर,
दीनों संग सोदरकोअर्जुन१८८।१ वडो कुमार ॥
विक्रम १ उदय २ दो २ हू दोहिते लगाइ उर,
चित्रकूट पठये चमू प्रसरैं मंदचार ॥ ४ ॥
राखिकछु बुंदीकी चमूकों सीखदेत सारो,
अर्जुन १८८।१ कुमार राख्यो नीठिन निहोरि रान ॥
रायपुर पत्तनसों पैंसठिसहँस ६५००० पटा,
हठन झिलायो स्वीयैं सौंहैं प्रतिभू प्रमान ॥
बिन्नतिलों बुंदिय कहाइ नृपसम्मतिसों,
ताको अवरोधैंहु बुलायो चित्रकूटथान ॥
सुर्जन १८९।१ प्रमुखैं च्यारि ४ पहिले निवारि प्रजों,
अर्जुन१८८।१कै इतरैं तहाँही भई हढदान ॥ ५ ॥
इक्का एक १ मार्यो दूजो २ प्रान दै प्रतार्यो सुनि,
उरतैं उभैरही जवनेस लायैं लाय लाइँ ॥
साजिदलबद्दलबिताइबरखाकोंनीठि,चालेमहमूद१रुमुदाफर२धरैंधुजाइ

१उमराव॥३॥२सपिंडभाई३पन्द्रह दिनतक४बहुत स्नेह से५समूह६सेना७फैला
कर८धीरे चलनेवाली अर्थात् युद्धमें नहीं भगनेवाली॥४॥रायपुर नामक९नगर
देकर१० अपनी११ सौगनों की १२ जमानत देकर १३ राजा की सलाह से.
उसके१४जनाने को भी चित्तोड़ बुलाया. सुर्जन १५आदि पहिले की चार १६
सन्तानको छोड़कर १७अन्य॥५॥दूसरे इक्के को प्राण देकर १८निकाला सुनकर
हृदय में १९ अग्नि अग्नि २० लाकर २१ भूमि को धुजातेहुए

तोपनतैं गैल गढ लोपन करत दोहू २,
आवत मिले यों पंच५ जोजनपैं प्रीतिपाइ ॥
मोतिके खजानाँ खोलिवेकौं महिमान होइ,
चित्रकूट १ बुंदी२के चलाये छम छोनीछाइ ॥ ६ ॥
मानों आयो चित्रकूट१ लखि पाहुनैं प्रथम१पंथ,
लैन महिमानी पहिले १ की पहिलैं१ कैं ख्यात ॥
बुंदी२कों वहोरि देखिवेकहि अहोरि ओघ,
जोरि जिह्मगावृत्त प्रसार्‌यो पृतनाको पात ॥
अंहमदनेर१ मंडू२ अर्णाव उभय२ फूटि,
आये मेदपाट भर भीकर भ्रमन भातं ॥
ज्वाला जैरदायो दुर्ग रानको बिहानैं वेढ्यो,
मानों गरदायों मेरु दैत्य १ दनुजात २ जात ॥ ७ ॥
आतेजानि अरिन बुलायो चहुवान १ रान २,
पाइ कछु कारन विलंबि सोंपे नरनाह ॥
अद्ध १ वलँ बुंदीराखि अनुज बडे १८७।२ सहित,
नीठि निजपुत्र रविमल्ल १८८।१ हि अति उछाह ॥
दैल १ दल सज्जि गो इतेमैं नृप नारायन १८७।१,
थप्पि वीर वाहिर कितेक देन रतिवाह ॥
झारि तरवारि वारि वैरिनकी फारि पूगो,
जैसैं जुग २ सिंहनमैं विक्रम वली वराह ॥ ८ ॥

१मार्ग के गढों को मिटाते हुए २ समर्थ ३ पृथ्वी को छाकर ॥ ६ ॥ ४ सर्प के समान पलेटा लगाकर५सेना का पड़ाव फैलाया६ अहमदाबाद और मांडू रूपी दोनों ७ समुद्र फूट कर दमेवाड़ में ९ भयङ्कर भ्रमियों से १० शोभा पाते हुए ज्वाला से११ जड़े हुए अर्थात् अग्नि रूपी कवच को धारण करनेवाले राणा के गढ को १२ प्रभात में ऐसा घेरा मानों दैत्य और दानव सुमेरु पर्वत को घेरैं ॥७॥ १३राजा नारायणदास ने. आधी १४सेना सहित१५आधी सेना सझकर १६ घाड़ को तोड़कर १७ सूवर ॥ ८ ॥

दिल्लीदल देबो कह्यो संभर१ सहाय हित,
भाख्यो रान २ उचित नहीं जय जवन जोर ॥
स्वीकरि सबन सोही जंत्रन[1] जमायो जुद्ध,
ज्वाल बिकराल छायो संतत[2] सिलगि सोर ॥
राति १ मैं हवाई माहताब ज्यौं दिखात दिन २,
नैंन चकचौंधैं उल्का[3] अँर्चिनतैं[4] ओरओर ॥
प्रानवाद रान १ तुरकांन २ कैं मँडानौं तापैं,
एक १ मास ऐसैं घुमडानौं घमसान[5] घोर ॥ ९ ॥
दिल्ली पातसाह सुनि बावर३० समर एह,
उरमैं अमाये प्रतिमल्लनपैं[6] रचि रीस ॥
अज्जैं[7] अपनावन चल्यो चढि सु सुनि तासौं,
पुब्ब[8] लरिबेको मत[9] मंलि उभै २ अवनीस ॥
सेनासह पिहितैं[10] पदाति[11] रजनीमैं काढि,
सोवत प्रमत्त परे सत्रुन सिबिरैं[12] सीस ॥
द्वै २ दलैं[13] अचानक अचाह्यो अँबमर्द[14] होत,
चौंकपरे काय कपि[16]कच्छू[15] ज्यौं कसत कीसैं ॥ १० ॥
पैठत अचानक कपोत[17]कुल स्येनैंनसे[18],
हेतिनैं[19] मच्यो झर झुकावत झकट्टैं[20] झुंड ॥
प्रचुर प्रहार मंडि मृत्युके बजार वार,
पार अति धार लसैं लोहितैं[21] कलित[22] कुंड ॥
चीरठ्है हयन धीर बीरठ्है बयन टूक,

---

१ तोपों से २निरन्तर ३अग्नि की४ज्वाला से ५ युद्ध ॥ ९ ॥ ६ शत्रुओं पर ७ आयौं को ८ प्रथम ९ सलाह करके १० छाने ११ पैदलों को. शत्रुओं के १२ डेरे पर. दोनों१३सेनाओं से. विना चाहा १४घोर युद्ध होते ही१६बन्दर अपने शरीर पर१५कैंवँच की फली की रगड़ लगते ही चिमके इस प्रकार चौंक पड़े ॥१०॥१७ कपोतों के समूह में १८शिकरे(बाज)पक्षी घुसैं तिस प्रकार घुसते ही १९शस्त्रों का झड़ मचगया२०युद्ध में२१रक्त के२२प्रसिद्ध कुण्ड शोभा पाते हैं

चीरऽहै चलैं कर मतीरऽहै उडत मुंड ॥
स्वासन समेटैं चंद्रहासनके भेटैं भिन्न,
लंबं गज लेटैं पोगैरनमैं पलेटैं रुंड ॥ ११ ॥
बाहिर अनीक अर्द्ध राख्यो रतिवाहकाजैं,
सहायकऽहै सोहू इतेविच उलटि आइ ॥
बुंदी सीम भूलौं बढि आयो इतैं बावर ३० हू,
साम्हैं गज १ तुरग २ निवेदे नरबद १८७।२ जाइ ॥
आधी राति यौं इत अचानकही कट्टा होत,
सत्यसंध बानाबंध सस्त्रन सजे सम्हाइ ॥
वीर उतहूके काचचूरीलौं भरे पै इहाँ,
अज्जनको पुराय यौं रहे ए खरे खेतपाइ ॥१२॥
दस १० दस १० द्वार सज्ज तुरग तितेकन लै,
वैठि महमूद १ रु मुदाफर कढे लै प्रान ॥
तदपि घरीद्वै २ नग्गी बग्गी तरवारि भूत—
नकी भँग्गी लग्गी कालिका किलकिलान ॥

घोड़ों की चीरें होती हैं और वचनों पर धीर वीरा के टुकड़े होते हैं और चीरें हो कर हाथ चलते हैं जिनके मतीरों(तरबूजों)के समान मुंड उडते हैं और श्वासों को समेटकर१खड्गों से मिलकर२कटेहुए३लम्बे लटेहुए रुण्डों को हाथी अपनी४सुण्डों के अग्रभागों में पलेटते हैं ॥११॥ आधी फौज को रतिवाह देने के लिये बाहिर रक्खी थी वह भी आमिली, इधर बुन्दी की सीमा की भूमि तक बादशाह बाबर भी आया बुन्दी से जिसके सन्मुख जाकर नरबद ने हाथी और घोड़े नजर किये और इधर आधी रात्रि को कतल होते ही ५ सत्य प्रतिज्ञा वाले ६ वीरों के वेष को धारण करनेवाले; अथवा युद्ध से नहीं भागने की प्रतिज्ञा के चिन्ह को रखनेवाले ७ सम्हलकर शस्त्रों से सजे उधर के वीर भी काच की चुड़ी के समान टुकड़े होगये परन्तु यहां ८ आर्यों का पुराय था ९ इस कारण युद्ध का खेत पाकर ये ही खड़े रहे ॥ १२ ॥दश ही दिशाओं का मार्ग लेकर इतने ही(दश दश)घोड़े लेकर महमूद और मुदाफर प्राण लेकर निकले तो भी दो घड़ी तक नंगी तलवार बजी जिससे भूतों की१०भूख भगी

अर्जुन १८८।१ कुमार घाय अष्टादस १८ पाय मारि,
मंडूकेवजीरहिं परयो जो आयु बलवान ॥
ढक्कुसुत*पूरन बिचारयो चूक व्हाँ सो जानि,
पूरन८८।३ कुमार लीनौं कीनौं नृप सावधान ॥ १३ ॥
मालिक कढैंहू मीर प्रथित प्रबीर केही,
बानैंकी त्रपासौं खग्ग खेरत खिरत खेत ॥
साकिनिन सूई महमूदके चमूपति व्हाँ,
बुंदीभट मारे सोढा संकर दहर नेत२ ॥
अनुज नरेसके नृसिंह८७।३सौं भिरयो सो पुनि,
सोये सूर दोहू२ टूकटूक व्है रननिकेत ॥
आली गन जोगिनि कपाली उपहार आनैं,
लोहितकी लाली लीन काली नचैं ताली देत ॥१४॥
शान पंच५ मारे तँहँ गुर्ज्जर अमीर उभै२,
मालवके बीर असुहीनैं दये तीन३ डारि ॥
सीसउद अमर२ गिराये खट६ बानैंबंध,

और कालिका कोलाहल करनेलगी * कोठारिया के राव ढक्कू के पुत्र पूर्णमल्ल ने नारायणदास पर वहां चूक करना विचारा था सो कुमर१ पूर्णमल्ल ने जानकर राजा को सावधान करदिया ॥ १३ ॥ मालिक बादशाहों के निकल जाने पर भी २ प्रसिद्ध कितने ही वीर ३ वीरों के बिलास धारण करने की लज्जा से खड्गों को खेरतेहुए खेत में खिरपड़े शाकिनियों के ४ र सोईदार रूपी महमूद के सेनापति ने वहां पर बुन्दी के भट सोढा वंश के क्षत्रिय शङ्कर और ५ दहड़ वंश के क्षत्रिय नेत को मारा, फिर राजा के छोटे भाई नरसिंह से आकर भिड़ा सो दोनों वीर युद्ध के स्थान में कटकर गिरपड़े. जोगिनियों के गण की ६ पङ्क्ति; अथवा योगिनियों की सखियों का समूह वीरों के मस्तक ७शिव की८भेट लाती है और९रक्त की ललाई में लीन होकर कालिका ताली देकर नाचती है ॥ १४ ॥ महाराणा ने पांच शत्रुओं को मारे जिनमें दो मीर १० गुजरात के और तीन मालवा के ११ प्राण रहित किये. छः १२ बानाबंध वीरों को